पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

शब्दब्रह्म-नादब्रह्म



www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शब्द ब्रह्म–नाद ब्रह्म

सम्पादक
ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान
मथुरा - २८१००३

© सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण १९९८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



मूल्य १२५)

मुद्रक
जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ मातरं भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ।।

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकायुगले वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ।।

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ।।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ।।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

मनन करने से जो त्राण करे उसे मंत्र कहते हैं । मंत्र विद्या का विस्तार असीम है । उसमें अनेकानेक शब्द गुच्छक हैं । अनेक शब्दों में मंत्रो का विस्तार हुआ है । उनके जप तथा सिद्धिपरक अनेकानेक योगाभ्यास भी हैं, कर्मकाण्ड भी किन्तु उन सबके मूल में एक ही ध्वनि आती है–वह है ओंकार । यही शब्द ब्रह्म–नाद ब्रह्म की धुरी है । शब्द ब्रह्म यदि मंत्र विज्ञान की पृष्ठभूमि बनाता है तो नाद ब्रह्म की साधना नाद योग का आधार बनती है । ओंकार के विराट ब्रह्माण्ड में गुंजन से ही सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, यदि यह कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी । नाद या शब्द से सृष्टि की उत्पत्ति व ताप, प्रकाश, आदि शक्तियों का आविर्भाव उसके बाद होता चला गया । इस प्रकार सृष्टि का मूल–इस निखिल ब्रह्माण्ड में संव्याप्त ब्राह्मी चेतना की धुरी यदि कोई है तो वह शब्द का नाद ही है ।

परम पूज्य गुरुदेव ने इस अनूठे किन्तु जटिल विषय पर जिस सरलता से प्रतिपादन प्रस्तुत किया है, वह देखकर–उसे पढ़कर आश्चर्यचकित होकर रह जाना पड़ता है । समस्त योगाभ्यासों का मूल ही–यहाँ तक कि परमात्मा तक पहुँचने के मार्ग का द्वार ही शब्द ब्रह्म–नाद ब्रह्म है । इसे समझ कर उसे कैसे आत्मसात किया जाय, कैसे अपने अंदर छिपे पड़े प्रसुप्त के जखीरे को जगाया जाय, यह सारा मार्ग दर्शन वाङ्मय के इस खण्ड में है ।

शब्द ब्रह्म–नाद ब्रह्म की विधा भारतीय अध्यात्म की एक महत्त्वपूर्ण धारा है । जहाँ शब्द ब्रह्म में मंत्र–जप,नामोच्चारण, प्रार्थना, सामूहिक साधना आदि की महत्ता है वहाँ नाद ब्रह्म में नादयोग एवं संगीत की । यह तो मोटा वर्गीवरण हुआ । शब्द ब्रह्म जहाँ अपनी प्रार्थना पुकार मंत्र शक्ति के माध्यम से परमात्मा तक पहुँचाने की विधा है वहाँ नाद ब्रह्म परब्रह्म का सन्देश हम तक पहुँचाने की विधा है जो नादानुसंधान द्वारा–दिव्य ध्वनियों के श्रवण द्वारा हम तक पहुँचता रहता है । शब्द विधा के जटिलतम पक्षों को सरल बनाकर पूज्यवर लिखते हैं कि ध्वनि का अभीष्ट उद्देश्य के अनुरूप उत्पादन व प्रयोग यहाँ **मंत्र योग** है वहाँ सूक्ष्म जगत की हलचलों को पकड़ने समझने और उनके सहारे अविज्ञात संभावनाओं से परिचित होने की विधा **नादयोग या नादानुसंधान है** । नादयोग से ग्रहण और **मंत्र योग** से प्रेषण की क्षमता उत्पन्न होती है । नादयोग व मंत्र योग की दोनों ही धाराएँ मिलकर शब्द ब्रह्म की समग्र क्षमता प्रस्तुत करती है । शब्द ब्रह्म और नाद ब्रह्म (परब्रह्म) यह दोनों ही भगवान के नित्य और चिन्मय शरीर हैं । कुण्डलिनी जागरण साधना में मंत्राराधन एवं नादानुसंधान के रूप में शब्दशक्ति की इन धाराओं का ही प्रयोग करना पड़ता है ।

इस खण्ड में शब्द ब्रह्म की साधना व नाद ब्रह्म की साधना के जटिल पक्षों को खोला गया है एवं जन–जन के लिए उसे सुगम बनाने का प्रयास किया गया है । वे लिखते हैं कि जब व्यक्ति वाणी को परिष्कृत कर उसे ''वाक्'' बना लेता है तो शब्दोच्चार के साथ–साथ उच्चारण कर्त्ता का उत्कृष्ट व्यक्तित्व व प्रचण्ड मनोबल भी जुड़ जाता है । गहन श्रद्धा और पवित्र अन्तरात्मा के समन्वय की शक्ति ही मंत्र की शब्द शृंखला में प्राण भर शब्द बंध की–लक्ष्य बंध की–शाप–वरदान की भूमिका निभाने का कार्य करती है । इस परिशोधित ''वाक्'' को स्वर भी कहते हैं–साम भी और सरस्वती भी । यदि इसे शुद्ध व स्थिर कर लिया गया तो फिर मंत्र के चमत्कार निश्चित ही प्रकट होकर रहेंगे । परा, पश्यन्ति, मध्यमा में तीनों ही वाणियाँ जब वाक् शक्ति के रूप में परिष्कृत प्रयोग में आती है तो असंभव को भी संभव कर दिखाने वाला कार्य संभव होने लगता है । बैखरीवाणी जब साधना संपन्न होकर वाक् बनती है तो उसका विस्तार श्रवण क्षेत्र तक न सीमित रहकर तीनों लोकों की परिधि तक फैल जाता है । वाक् शक्ति रूपा है । उसकी क्षमता का शब्द–ब्रह्म–नाद, ब्रह्म साधना के द्वारा उपयोग करने से वह सब जीता जा सकता है जो जीतने योग्य है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

ध्वनि तरंगो को जब संगीत की जीवन दायिनी सामर्थ्य के रूप में विभिन्न रागों में प्रयुक्त किया जाता है तो उससे अनेकानेक प्रयोजन सधते देखे जाते हैं । अब भारत में भी व विश्वभर में रागों से ध्वनि उपचार द्वारा रोगों की चिकित्सा, वृक्ष वनस्पतियों की-फसलों की वृद्धि में तथा जीवजगत के अनुदान प्राप्त करने के निमित्त प्रयोग संपन्न हो रहे हैं । यह बताते हैं कि यदि संगीत की सृजनात्मक सामर्थ्य का उपयोग किया जा सके तो शब्द शक्ति की प्रभावोत्पादकता से बहुत कुछ कार्य स्थूल व सूक्ष्म दोनों ही जगत में संपन्न हो सकता है । संगीत विद्या संबंधी सारा विस्तृत विवेचन पाठकगण इसमें पढ़ सकेंगे ।

हंसयोग-सोऽहम् साधना की चर्चा शब्द ब्रह्म के साथ कुण्डलिनी योग व अजपा गायत्री के परिप्रेक्ष्य में आती है । सोऽहम् की ध्वनि जो श्वांस-प्रश्वांस के साथ-साथ स्वयमेव होती रहती है, उसी को प्रयत्नपूर्वक विधि विधान से किया जाय तो वह हंस योग कहलाता है । ह कार शिवरूप व सकार शक्ति रूप कहलाता है । ह कार से सूर्य स्वर व सकार से चन्द्र स्वर की उत्पत्ति होती है । हंसयोग में इन दोनों ही स्वरों में समता स्थापित करने पर साधक को क्षेत्रज्ञ की उपमा मिल जाती है ।

शब्द ब्रह्म-नादब्रह्म संबंधी प्रस्तुत खण्ड ब्रह्माण्ड में संव्याप्त अनहतनाद-ओंकार नाद का अपने अंदर साक्षात्कार कराने का ज्ञान विज्ञान समझाता है व इसे पढ़ने पर साधना संबंधी अनेकानेक आयाम खुलते चले जाते हैं । निश्चित ही पाठक इसका अवगाहन कर अपने जीवन दर्शन को परिष्कृत कर शब्द व नाद के सुनियोजन का मर्म जान सकेंगे, ऐसा विश्वास है ।

ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है । परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्ज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है । परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी मां शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही है । उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया । आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं है किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानी गणों के, वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है ।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगे किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देख सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये । इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबा कर लिखा गया हो । हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता मन को, विचारों को बदलता चला जाता है । लाखों करोड़ों के मनों के अंत:स्थल को छू कर उसने उनका कायाकल्प कर दिया । रूसो के प्रजातंत्र की, कार्ल मार्क्स के साम्यवाद की क्रांति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है । उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्‌बोधन से एक विराट गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े रहते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाय, कैसे छन्दबद्ध, लिपिबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को ।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता । वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता-श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आसपास के दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्‌भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंत:करण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था । साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा । जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे । छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे । किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुत: अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी । जाति-पाँति का कोई भेद नहीं । जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवाकर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ । नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की, उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था ।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं । औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किन्तु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभा सम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है । हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी । वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय, अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जांय, यह सिखाया ।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजा स्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में । उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में संपन्न क्रिया कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषि सत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं । चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष के चौबीस महा- पुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था । २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रांति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना ।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया । पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि ''प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ । दो बातें गुरु सत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गई, संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो विशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी । वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया । सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा ।''

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी । उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने तोड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख सुन कर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं । इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था । १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद पैदल लम्बा रास्ता पारकर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

भी गये । छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई । जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अंग्रेजी सीखकर लौटे । आसन- सोल जेल में वे श्री जवाहर लाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से-मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना । यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश ।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जन आक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रांतिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था । नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं । बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये । जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्य चकित रह गये । उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्त जी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधी जी के समक्ष पेश किये गये । बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए । कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुज में सम्मानित किया । उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधान मंत्री राहत फण्ड, हरिजन फण्ड के नाम समर्पित कर दीं । वैरागी जीवन का, सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है ?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरु हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये । सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रह कर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया । प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अतः पुनः सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमशः उनके अध्यवसाय घर-घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदय स्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है ।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ, स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे । पुस्तकों का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंतः स्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही । साथ देने आ गयीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी । उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुखी था–पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं । यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रांति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी ।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ । गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परम वंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी । धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपो भूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है । १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है । १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५८ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया । कार्त्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देश भर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं । संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था । तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की अपनी रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं । हिमालय से लौटते ही उनमें महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूल थाती को पुनर्जीवन दिया । परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञान सम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं ।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ । तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तपःपूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था । तपोभूमि में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों, यज्ञायोजनों के द्वारा विचार क्रांति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए । स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों में विशेष कार्य भार सौंप, परम वंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़ कर स्वयं हिमालय चले गये । एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया पद्धति बतायी । ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्त्तन संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये ।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे । इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट् परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक । इसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी बूटी, यज्ञविज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञान सम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युग शिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- सुसंस्कारिता, आस्तिकता संवर्धन एवं जन जागृति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञा संस्थान — शक्तिपीठ-प्रज्ञामण्डल-स्वाध्याय मंडल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तप साधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी को दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नव निर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरु सत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युगसंधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेध महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नव निर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रांति के निमित्त सौर ऊर्जा के दोहन द्वारा विशिष्ट प्रयोगों के माध्यम से विशिष्ट मंत्राहुतियों द्वारा सम्पन्न किये गये इन अश्वमेधों ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेध यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेध यज्ञ शिकागो (यू. एस. ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु संपन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी जा रही है। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो सत्तर खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हो रहा है। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जायेंगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़-चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेंगे' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुक्रमणिका

शब्द ब्रह्म—नाद ब्रह्म

शब्द ब्रह्म का साक्षात्कार एवं उसकी चमत्कृतियाँ १.१
शब्द तत्व की अद्‌भुत एवं आश्चर्यजनक शक्ति १.३
शब्द शक्ति के भले—बुरे प्रभाव १.९
दूरवर्ती वातावरण को प्रभावित करने की प्रक्रिया १.१५
शब्द शक्ति की प्रभावोत्पादकता सन्देह से परे १.१७
सात्विक शब्दों की प्रचण्ड शक्ति १.१८
बुरे शब्दों के उच्चारण से मानसिक बीमारियाँ १.१९
शब्द की महान् शक्ति १.२१
शब्द योग १.२३
शब्द शक्ति की ऊर्जा से परिचालित काया की सशक्त प्रयोगशाला १.२४
श्रवण शक्ति की दिव्य क्षमता और उसका विकास १.२९
काया की स्थूलपरक एवं ध्वनि प्रयोग १.३२
शब्द शक्ति से होगी, अब रोगों की चिकित्सा १.३४
वैदिक स्वर प्रक्रिया-साय गान १.३७
वैदिक स्वरों के उच्चारण में कठिनाई १.३९
स्वर चिह्नों में पाया जाने वाला अन्तर १.३९
भाव विज्ञान एवं गान विद्या १.४०
सामवेद का अर्थ और स्वरूप १.४३
भाटक और साम के अन्तर्सम्बन्ध १.४५
सामवेद का शाखा विस्तार १.४६
साम गान के स्वर १.४७
साम के विभाग १.४८
सामवेद के ब्राह्मण एवं सूत्र ग्रंथ १.४९

शब्द ब्रह्म—मंत्र विज्ञान

शब्द तो ब्रह्म है मंत्र उसकी पराशक्ति २.१
शब्द की प्रचण्ड शक्ति और मंत्र साधना २.७
मंत्र विद्या का स्वरूप और उपयोग २.१४
मंत्र शक्ति का रहस्य २.१६
जप का महत्त्व २.२४
प्रकार २.२४
जप की सहयोगी प्रक्रियायें २.३०
शब्द-साधना का महत्व २.३१
वैज्ञानिक प्रक्रिया २.३१
नियम २.३२
मंत्र साधना और ताप शक्ति का सम्बन्ध २.३२
मंत्र शक्ति ही देव माता—कामधेनु है २.४१
मंत्र शक्ति और देवसत्ताओं का तारतम्य २.४५
मंत्र जप शब्द शक्ति का आद्‌भुत चमत्कार २.४७
जप प्रक्रिया का वैज्ञानिक आधार २.५१
मन्त्र विद्या ध्वनि विज्ञान पर आधारित है २.५८
मन्त्र साधना के आधार और चमत्कार २.६४
यान्त्रिकी और यांत्रिकी का सुव्यवस्थित सुनियोजन ५.६८
मन्त्र की प्रचण्ड शक्ति और उसके प्रयोग का रहस्य २.७२
मन्त्र विद्या और उसकी सुनिश्चित सामर्थ्य २.७७
मन्त्र शक्ति का चमत्कारी प्रतिफल २.८४

शब्द ब्रह्म की सार्थक साधना

शब्द ब्रह्म की साधना वाक् शक्ति से ३.१
वाक् शक्ति : एक दैवी सम्पदा ३.१०
शाप और वरदान का दैवी उपक्रम ३.१३
मेजर कार्लडिक को एक साधु का श्राप ३.१६
मन्त्र साधना में वाक् शक्ति का विनियोग ३.२२
मन्त्र में निहित शक्ति एवं उसकी जागृति ३.२४
मन्त्र-सिद्धि के प्रमुख आधार स्तम्भ ३.२८
मन्त्र साधना के आधार और चमत्कार ३.३६
मन्त्रों की चमत्कारी शक्ति के दो उद्‌गम स्रोत: जिह्वा और हृदय ३.४२
वाक् शक्ति एवं मन्त्र सिद्धि ३.४९
शब्द ब्रह्म की सिद्धि ३.५२
मन्त्र शक्ति का अद्‌भुत चमत्कार ३.५४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शब्द शक्ति और वातावरण संशोधन ३.५९
सामूहिक मन्त्र साधना की महान् फलश्रुति ३.७१

नाद ब्रह्म की साधना—नादयोग अनाहत नाद ब्रह्म

अनाहत नाद ब्रह्म की साधना ऊँकार के माध्यम से ४.१
प्रकार ४.७
नाद ब्रह्म-'ओउम्' शब्द की प्रचण्ड शक्ति ४.१६
सृष्टि की उत्पत्ति विद्युत से हुई या नाद से ४.१९
अन्तरिक्ष के शब्द संकेतों की श्रवण सामर्थ्य ४.२४
ब्रह्माण्ड में कान लगाइये मनोवांछित खबरें पाइये ४.३१
शब्द ब्रह्म की साधना के दो चरण ४.३७
नाद साधना का क्रमिक अभ्यास ४.४४
नाद योग—दिव्य सत्ता के साथ आदान-प्रदान ४.५०
नाद योग से दिव्य-क्षमताओं और दिव्य-भावनाओं का विकास ४.५३
नाद योग द्वारा दिव्य अनुभूतियों की उपलब्धि ४.५६
नादयोग के ध्वनि संकेत ४.५८

संगीत की जीवनदायिनी सामर्थ्य

स्वर से "अक्षर" की अनुभूति ५.१
संगीत एक महाशक्ति ५.४
संगीत शब्द ब्रह्म की स्वर साधना ५.६
संगीत-विश्व का प्राण है ५.१०
जीवन-शक्ति का अजस्र स्रोत-संगीत ५.१४
संगीत अर्थात् नाद ब्रह्म की शक्ति एवं उत्पत्ति ५.१६
संगीत और आत्मोत्कर्ष ५.२०
संगीत द्वारा संवेदना-संचार ५.२३
संगीत और आध्यात्मिकता का सम्बन्ध ५.३०
संगीत से सरसता की अभिवृद्धि ५.३४
संगीत सृष्टि का भाव भरा उल्लास ५.३३
संगीत की सामर्थ्य ५.३८
नाद ब्रह्म की प्रभवाकोत्पादक सामर्थ्य ५.४१
शब्द शक्ति से होगी अब रोगों की चिकित्सा ५.४४
संगीत का विज्ञान क्षेत्र में उपयोग ५.४७
संगीत की जीवनदात्री सामर्थ्य ५.५१
संगीत उपचार की सम्भावनाएँ ५.६०
.संगीत का प्रबल प्रभाव ६.१
स्वास्थ्य का मनोरंजक श्रेष्ठ साधन-संगीत ६.१
राग-रागिनियाँ आन्दोलित करती हैं शरीर व मन को ६.३
संगीत की सृजन सामर्थ्य एवं उसका उपयोग ६.९
संगीत को जीवन में स्थान दीजिये ६.११
संगीत कला विहीनः साक्षात पशुः पुच्छ हीनः ६.१३
संगीत का प्राणियों और वनस्पतियों पर प्रभाव ६.१४
नादयोग एवं संगीत की प्रभावोत्पादक सामर्थ्य ६.२२
स्वर साधना, जन जागरण का माध्यम भी ६.२६
संगीत की भावधारा से युग चेतना जुड़ें ६.२९
युग संगीत का जन-जागरण में योगदान ६.३३
संगीत विद्या का सदुपयोग होना चाहिए ६.३५
विनोद वृत्ति के पतनोन्मुखी प्रवाह को रोका जाय ६.३८
संगीत को शालीनता की दिशा मिले ६.४१
संगीत के दुरुपयोग की निन्दा भर्त्सना ६.४२
शब्द शक्ति के दुरुपयोग का दुष्परिणाम ६.४७
शब्द ब्रह्म और नाद ब्रह्म की साधना ६.४८
शब्द ब्रह्म की साधना और उसका प्रशिक्षण ६.५१

हंस योग—सोऽहम् साधना

सोऽहम् साधना का तत्वज्ञान ७.९
आत्मबोध का प्रथम सोपान "सोऽहम् साधना" ७.१०
प्राणयोग का उच्चस्तरीय प्रयोग सोऽहम् साधना ७.१३
सोऽहम् साधना द्वारा प्राणतत्व का परिपोषण ७.१५
सोऽहम् जप-भावोत्कर्ष एवं शक्ति आकर्षण की साधना ७.१७
सोऽहम् साधना का विधि-विधान ७.२१
संत कबीर की 'सो ऽहम्' साधना ७.२३
बिन्दुयोग ७.२४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शब्द ब्रह्म की असीम सामर्थ्य

शब्द ब्रह्म का साक्षात्कार एवं उसकी चमत्कृतियाँ

शब्दाद्वैतवाद के अनुसार शब्द ही ब्रह्म है। उसकी ही सत्ता है। सम्पूर्ण जगत शब्दमय है। शब्द की ही प्रेरणा से समस्त संसार गतिशील है। महती स्फोट की प्रक्रिया से जगत की उत्पत्ति हुयी तथा उसका विनाश भी शब्द के साथ होगा । इन्द्रियों में सबसे अधिक चंचल तथा वेगवान मन को माना गया है। 'मन के तीन प्रमुख कार्य हैं'—स्मृति, कल्पना तथा चिन्तन। इन तीनों से ही मन की चंचलता बनती है। लेकिन यदि मन को शब्द का माध्यम न मिले तो उसे चंचलता नहीं प्राप्त हो सकती है। सारी स्मृतियाँ, कल्पनाएँ तथा चिन्तन शब्द के माध्यम से चलते हैं।

दैनन्दिन जीवन में काम आने वाले शब्दों को दो भागों में बाँटा जा सकता है—व्यक्त और अव्यक्त। जैन पन्थी इन्हें अपनी भाषा में जल्प और अन्तर्जल्प कहते हैं। जो बोला जाता है उसे जल्प कहते हैं। जल्प का अर्थ है—व्यक्त स्पष्ट मन्तव्य। जो स्पष्टतः बोला नहीं जाता, मन में सोचा अथवा जिसकी मात्र कल्पना की जाती है वह है—अन्तर्जल्प। मुँह बन्द होने—होठ के स्थिर होने पर भी मन के द्वारा बोला जा सकता है, जो कुछ भी सोचा जाता है, वह भी एक प्रकार से बोलने की प्रक्रिया है तथा उतनी ही प्रभावशाली होती है जितनी कि व्यक्त वाणी।

शब्द अपनी अभिव्यक्ति के पूर्व चिंतन के रूप में होता है। अपनी उत्पत्ति काल में वह सूक्ष्म होता है पर बाहर आते-आते वह स्थूल बन जाता है। सूक्ष्म है वह हमारे लिए अश्रव्य है। जो स्थूल है वही सुनाई पड़ता है। ध्वनि विज्ञान ने ध्वनियों को दो रूपों में विभक्त किया है—श्रव्य और अश्रव्य अश्रव्य—अर्थात्—अल्ट्रासाउण्ड—सुपरसोनिक। हमारे कान मात्र २०,००० कम्पन आवृत्ति को ही पकड़ सकते हैं। वे न्यूनतम २० कम्पन आवृत्ति प्रति सैकिण्ड तथा अधिकतम २० हजार कम्पन आवृत्ति प्रति सैकिण्ड को पकड़ने में सक्षम हैं। पर उनसे कम तथा अधिक आवृत्ति वाली ध्वनि तरंगों का भी अस्तित्व है। श्रवणेन्द्रियों की मर्यादा अपनी सीमा रेखा को चीर नहीं पाती। फलस्वरूप वे ध्वनियाँ सुनाई नहीं पड़तीं। कान यदि सूक्ष्मातीत ध्वनि तरंगों को पकड़ने लगें तो मालूम होगा कि संसार में नीरवता कहीं और कभी भी नहीं है। कमरे में बन्द आदमी अपने को कोलाहल से दूर पाता है। पर सच्चाई यह है कि उसके चारों ओर कोलाहल का साम्राज्य है।

समूचा अन्तरिक्ष ध्वनि तरंगों से अलोड़ित है। उनमें से थोड़ी-सी ध्वनियाँ मात्र मनुष्य के कानो तक पहुँच पाती हैं। प्रकृति की अगणित घटनाएँ सूक्ष्म जगत में पकती रहती हैं। घटित होने के पूर्व भी उनकी सूक्ष्म ध्वनि तरंगें सूक्ष्म अन्तरिक्ष में दोलयमान रहती हैं। उन्हें पकड़ा और सुना जा सके तो कितनी ही प्रकृति की घटनाओं का, पूर्वानुमान लगा सकना सम्भव है। मनुष्येत्तर कितने ही जीव ऐसे हैं जिन्हें प्रकृति की घटनाओं का भूकम्प, तूफान आदि विभीषिकाओं का पूर्वाभास हो जाता है। सूचना मिलते ही उनका व्यवहार बदल जाता है। अपनी आदत के विरुद्ध वे अस्वाभाविक आचरण करने लगते हैं। कितने ही सुरक्षा के लिए सुरक्षित स्थानों की ओर दौड़ने लगते हैं। सूक्ष्म ध्वनि स्पन्दनों के आधार पर ही वे सम्भाव्य विभीषिकाओं का अनुमान लगा लेते हैं।

जो कुछ भी बोला अथवा सोचा जाता है वह तुरन्त समाप्त नहीं हो जाता, सूक्ष्म रूप में अन्तरिक्ष में विद्यमान रहता, तरंगित होता रहता है। हजारों लाखों वर्षों तक कम्पन उसी रूप में रहते हैं। ऐसे प्रयोग भी वैज्ञानिक क्षेत्र में चल रहे हैं कि भूतकाल में जो कुछ भी कहा गया है ईथर में विद्यमान है उसे यथावत् पकड़ा जा सके। सदियों पूर्व महा-मानवों ऋषि कल्प देव पुरुषों ने क्या कहा होगा, उसे प्रत्यक्ष सुना जा सके ऐसे अनुसन्धान प्रयोगावधि में हैं। अभी सफलता तो नहीं मिल पायी है पर वैज्ञानिक आश्वस्त हैं कि आज नहीं तो कल वह विद्या हाथ लग जायेगी। निस्सन्देह यह उपलब्धि मानव जाति के लिए महत्वपूर्ण तथा अद्वितीय होगी अब तक की वैज्ञानिक उपलब्धियों में वह सर्वोपरि होगी। सम्भवतः इसी आधार पर कृष्ण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्वारा कही गयी गीता एवं राम-रावण सम्वादों को अपने ही कानों से सुनना सम्भव हो सकेगा।

रेडियो, टेलीविजन, राडार की भाँति प्राचीन काल के आविष्कारों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा चमत्कारी खोज थी—मन्त्र विद्या। मन्त्र ध्वनि विज्ञान का सूक्ष्मतम विज्ञान था। इसके अनुसार जो कार्य आधुनिक यन्त्रों के माध्यम से हो सकते हैं वे मन्त्र के प्रयोग से भी सम्भव हैं। पदार्थ की तरह अक्षरों तथा अक्षरों से युक्त शब्दों में अकूत शक्ति का भाण्डागार मौजूद है। मन्त्र कुछ शब्दों के गुच्छक मात्र होते हैं पर ध्वनि शास्त्र के आधार पर उनकी संरचना बताती है कि एक विशिष्ट ताल, क्रम एवं गति से उनके उच्चारण से विशिष्ट प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न होती है। प्राचीन काल में ऋषियों ने शब्दों की गहराई में जाकर उनकी कारण शक्ति की खोज-बीन के आधार मन्त्रों एवं छन्दों की रचना की थी। पिछले दिनों ध्वनि विज्ञान पर अमेरीका, पं. जर्मनी में कितनी ही महत्वपूर्ण खोजें हुयी हैं। साउण्ड थेरेपी एक नयी उपचार पद्धति के रूप में विकसित हुयी है। ध्वनि कम्पनों के आधार पर मारक शस्त्र भी बनने लगे हैं। ब्रेन वाशिंग के अगणित प्रयोगों में ध्वनि विद्या का प्रयोग होने लगा है। अन्तरिक्ष की यात्रा करने वाले राकेटों, स्पेस शटलों के नियन्त्रण संचालन में भी शब्द विज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है। पर वैज्ञानिक क्षेत्र में ध्वनि विद्या का अब तक जितना प्रयोग हुआ है, वह स्थूल है, सूक्ष्म और कारण स्वरूप अभी भी अविज्ञात अप्रयुक्त है जो स्थूल की तुलना में कई गुना अधिक सामर्थ्यवान है। मन्त्रों में शब्दों की स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म एवं कारण शक्ति का अधिक महत्व है। मानवी व्यक्तित्व की गहरी परतों—मन एवं अन्तःकरण को मन्त्र की सूक्ष्म एवं कारण शक्ति ही प्रभावित करती है। व्यक्तित्व का रूपान्तरण—विचारों में परिवर्तन उसके प्रभाव से ही होता है।

यों तो वेदों के हर मन्त्र एवं छन्द का अपना महत्व है दीखने में गायत्री महामन्त्र भी अन्य मन्त्रों की तरह सामान्य ही लगता है, जो नौ शब्दों तथा २४ अक्षरों से मिलकर बना है। पर जिन कारणों से उसकी विशिष्टता आँकी गयी है वे हैं—मन्त्र के विशिष्ट क्रम में अक्षरों एवं शब्दों का गुंथन प्रवाह, उनका चक्र-उपत्यिकाओं पर प्रभाव तथा उसकी महान प्रेरणाएँ। हर अक्षर एक विशिष्ट क्रम में जुड़कर असीम शक्तिशाली बन जाता है। २४ रत्नों के रूप में अक्षरों के नवनीत का एक मणि मुक्तक बना तथा आदिकाल में प्रकट हुआ। ब्रह्म की स्फुरणा के रूप में गायत्री मन्त्र का प्रादुर्भाव हुआ तथा आदि मन्त्र कहलाया, सामर्थ्य की दृष्टि से इतना विलक्षण एवं चमत्कारी अन्य कोई भी मन्त्र नहीं है। दिव्य प्रेरणाओं की उसे गंगोत्री कहा जा सकता है। संसार के किसी भी धर्म में इतना संक्षिप्त, पर इतना अधिक सजीव एवं सर्वांगपूर्ण कोई भी प्रेरक दर्शन नहीं है जो एक साथ उन सभी प्रेरणाओं को उभारे जिनसे महानता की ओर बढ़ने तथा आत्मबल सम्पन्न बनने का पथ-प्रशस्त होता है।

ब्रह्म की अनुभूति शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म के रूप में भी होती है जिसकी सूक्ष्म स्फुरणा हर पल सूक्ष्म अन्तरिक्ष में हो रही है। सृष्टि का सूक्ष्म निरूपण करने वाले तत्ववेत्ताओं ने बतलाया है कि परा-प्रकृति के अन्तराल में महदाकाश में—अनाहत स्वर की थरथराहट उत्पन्न होती है और उस आदि स्वर सूर्य के भी सात अश्व गतिशील होते हैं। सूर्य के रथ में सात रंग के सात घोड़े जुड़े हैं। स्वर ब्रह्म भी महदाकाश का नाद-ब्रह्म है। जब वह अक्षर से क्षर बनता है तो उसकी परिणति सात विखण्डों में सप्त-स्वरों में दृष्टिगोचर होती है। प्रकृति और पुरुष का अनवरत संयोग—मिलन—आघात-प्रत्याघातों के रूप में स्वसंचालित पेण्डुलम गति से नियत निर्धारित क्रम से चलता रहता है। इसी से ब्रह्माण्ड की घड़ी के समस्त कल-पुर्जे घूमते हैं और विश्वव्यापी विभिन्न हलचलें गतिशील होती हैं।

इस विराट् ब्रह्माण्ड में नाद ब्रह्म अर्थात् ॐकार की ध्वनि गुंजित है। सृष्टि के आदि में घड़ियाल में मोंगरी की चोट मारने पर उत्पन्न होने वाली झनझनाहट की तरह ॐकार नाद हुआ था। उसी के कारण ताप, प्रकाश और ध्वनि का आविर्भाव हुआ। तदुपरान्त अनेक सूक्ष्म शक्तियाँ गतिशील हुयीं और उनकी हलचलों से विभिन्न शब्द होने लगे।

प्रकृति के रहस्यों, हल-चलों एवं सम्भावनाओं को जानने के लिए नादयोग का अभ्यास किया जाता है कर्ण कुहर बन्द कर लेने पर कई प्रकार की ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं। झींगुर बोलने, बादल गरजने, शंख बजने, वंशी निनाद होने जैसे कितने ही शब्द आरम्भ में सुनाई पड़ते हैं और नादयोग का अभ्यासी उन ध्वनियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के सहारे यह जानने की चेष्टा करता है कि अलग जगत में क्या हो रहा है और क्या होने जा रहा है। भूत, वर्तमान और भविष्य की कितनी रहस्यमयी जानकारियाँ नाद ब्रह्म की साधना से अवगत होती हैं।

नाद ब्रह्म की अन्तिम सीमा ॐकार ध्वनि की सुनाई पड़ती है। उसे उपनिषदकारों ने 'उद्गीथ विद्या' कहा है। मध्यकालीन सन्त सम्प्रदाय के लोग उसे सुरत योग कहते रहे हैं। गोरख सम्प्रदायों में इसी की प्रमुखता है। कबीर पन्थ में भी साधना का लक्ष्य इसी को माना है ॐ कहा है जब ॐकार ध्वनि स्पष्ट हो जाती है तो मन उसी में लय हो जाता है और समाधि जैसी स्थिति बन जाती है। यह सब नाद ब्रह्म के भेद हैं। शब्दयोग की परिधि में स्वाध्याय और समस्त गद्य-पद्य रूप में होने वाली प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं।

शब्द ब्रह्म और नादब्रह्म यह दोनों ही सर्वव्यापी हैं। मनुष्य के कण-कण में समाये हुए हैं। इन्हें उजागर करना भगवत् प्राप्ति के लिए आवश्यक है।

शब्द ब्रह्म अर्थात् मन्त्र विद्या का असीम विस्तार है। उसके अनेकानेक शब्द गुच्छक हैं। अनेक शब्दों में मन्त्रों का विस्तार हुआ है। उनके जप तथा सिद्धि प्रक्रिया के अनेक योगाभ्यास कर्मकाण्ड भी हैं, पर उनके मूल में एक ही ध्वनि आती है, किन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि उन सब का मूल 'ॐकार' ही है। किसी मन्त्र का उच्चारण या जप करना हो तो उनके आदि में ॐकार अवश्य लगाना चाहिए। इस प्रकार वह भी नाद ब्रह्म की साधना के अन्तर्गत आ जाता है।

शब्दयोग अर्थात् ज्ञानयोग—वाणी का सदुपयोग। सर्वसाधारण को परमार्थ का महत्व बताना और उस मार्ग पर चलने की शिक्षा देना। अपने आप में शब्दयोग का अभिवर्धन सद्ज्ञान की अधिकाधिक अभिवृद्धि तर्क, विवेक और अनुभव के द्वारा—स्वाध्याय सत्संग एवं चिन्तन मनन द्वारा सम्भव होती है। लोग कर्मकाण्ड मात्र से अध्यात्म लक्ष्य की प्राप्ति करना चाहते हैं। यह एकांगी प्रयास सफल नहीं होता। उपासना क्रिया-कृत्यों का रहस्य ज्ञानपूर्वक समझना चाहिए और उन्हें करते समय तद्विषयक भावनाओं को प्रदीप्त करना चाहिए। अन्यथा कर्मण्ड का मात्र शरीर श्रम एवं वस्तुओं की उलट-पुलट मात्र बनकर रह जायगा और उनका वह प्रतिफल न मिलेगा जो शास्त्रकारों द्वारा बताया गया है। शब्द ब्रह्म का तात्पर्य मन्त्र विद्या को ज्ञानपूर्वक सम्पन्न करने उनके साथ विचारणा एवं भावना का समावेश करने से है।

नादयोग का मोटा अर्थ गायन वादन—संगीत कीर्तन है। प्रवचन परामर्श के साथ इसका भी संयोग रहता है। यह सामान्य परिवारी है। कथा-कीर्तन इसी आधार पर सम्भव होते हैं और वे ज्ञानयोग की नादब्रह्म की आवश्यकता पूरी करते हैं।

अपनी कहना और दूसरे की सुनना, इसी प्रक्रिया से वार्तालाप का आदान-प्रदान होता है। शब्द ब्रह्म अपनी-अपनी श्रद्धानुभूति को दूसरों के अन्तःकरण में प्रवेश कराया जाता है। यह एक पक्ष हुआ दान का। पर इसके लिए अपने पास सम्पदा का संचय भी होना चाहिए।यह प्रयोजन नादयोग के अभ्यास से पूरा होता है। उसके द्वारा हम परब्रह्म का सन्देश सुनते हैं। इस अवधारणा के उपरान्त ही ज्ञानीजन अन्यान्यों को ब्रह्मज्ञान की शिक्षा देने में समर्थ होते हैं।

शब्द ब्रह्म—नाद ब्रह्म का योग शास्त्रों में विशेष वर्णन है। नाद ब्रह्म से संगीत उपजा, सात स्वरों का आविर्भाव हुआ। सात लोक भी यही हैं। शब्द ब्रह्म में मन्त्र, जप नामोच्चार का प्रकरण हाता है। यह सारा परिकर नादयोग से ही आविर्भूत हुआ है। उसमें प्रकाशान्तर से हर क्षेत्र की ऋद्धियों और सिद्धियों का समावेश है जो इसके उपासक को उपलब्ध होती हैं।

शब्द तत्व की अद्भुत एवं आश्चर्यजनक शक्ति

सामान्यतः मनुष्यों को जल, भाप, अग्नि, विद्युत, वायु, गैस आदि की शक्ति का तो अनुभव हुआ करता है, परन्तु 'शब्द' में भी कोई ऐसी शक्ति होती है, जो स्थूल पदार्थों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डाल सके, इस पर उनको शीघ्र विश्वास नहीं होता। वे यह तो मान सकते हैं कि मधुर शब्दों से श्रोता का चित्त प्रसन्न होता है, कठोर शब्दों से विपण्णता उत्पन्न होती है, भावयुक्त संगीत-लहरी से हृदय का तार-तार झनझना उठता है, वीरतापूर्ण गीत जब आवेश-युक्त स्वर में गाया जाता है तो सैनिक मरने-कटने को उछलने लगते हैं। पर ये सब ऐसे भावनात्मक प्रभाव हैं, जिनका अनुभव प्रत्येक व्यक्ति समान रूप से नहीं कर सकता। कोई भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करुणोत्पादक गीत कोमल और कठोर हृदय वाले दो भिन्न व्यक्तियों पर एक-सा प्रभाव नहीं डाल सकता । इसी प्रकार कोई श्रृंगाररसपूर्ण गायन एक सद्यविवाहित नवयुवक और वृद्ध संन्यासी को एक समान प्रभावित नहीं कर सकता ।

पर अब अनेक वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा इस बात को सिद्ध कर रहे हैं कि शब्दों का प्रभाव केवल भावनात्मक ही नहीं होता वरन् उनके द्वारा जो अदृश्य तरंगें वातावरण में उत्पन्न होती हैं, उनसे प्रणियों सहित अनेक पदार्थों को निश्चित रूप से प्रभावित किया जा सकता है । उदाहरण के लिए यदि किसी काँच के गिलास को हल्की चोट द्वारा बजाकर उसके साथ उसी से मिलती ध्वनि, 'पियानो' या सारंगी आदि किसी वाद्य-यन्त्र द्वारा लगातार बजाई जाय तो कुछ देर में वह गलास उन शब्द-तरंगों की शक्ति से चूर-चूर हो जायेगा ।

जर्मनी के प्रथम महायुद्ध के पश्चात् वहाँ के वैज्ञानिकों ने जो युद्ध सम्बन्धी आविष्कार किये थे, उनमें शब्द-शक्ति द्वारा सेनाओं का संहार करने वाले एक यन्त्र का विवरण भी ज्ञात हुआ । उसके आविष्कारक का कहना था कि जब उक्त यन्त्र द्वारा प्रति-सैकिण्ड दस लाख से भी अधिक कम्पनों की ध्वनि उत्पन्न की जायगी तो वह इतनी तीव्र होगी कि मनुष्य के ज्ञानतन्तु उसके कारण तुरन्त नष्ट हो जायेंगे और उसकी मृत्यु में एक सैण्किड भी नहीं लगेगा । वे शब्द-तरंगें जिन व्यक्तियों पर केन्द्रित की जायेंगी, वे बिजली से स्पर्श होने वाले प्राणी की तरह तुरन्त प्राणहीन जो जायेंगे । पर युद्ध-सम्बन्धी आविष्कार सदैव अत्यन्त गुप्त रखे जाते हैं, इसलिए आगे चलकर यह पता नहीं लगा कि वह वैज्ञानिक अपने यन्त्र को कहाँ तक व्यावहारिक रूप दे सका और सैनिक अधिकारियों ने उसके सम्बन्ध में क्या निश्चय किया ?

वस्तुत: शब्द संसार की महत्वपूर्ण शक्तियों में से एक है, जिसके बारे में जानकारी बहुत ही कम है । सामान्यतया इतना ही समझा जाता है कि परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करने में वार्तालाप के माध्यम से शब्द का उपयोग होता है । या फिर प्रकृति की—प्राणियों की—यन्त्र वाहनों की हलचलों से शोर कोलाहल होता रहता है । यह सब सामान्य प्रतीत होता है, पर है निश्चित रूप से असाधारण ।

सृष्टि का आरम्भ कैसे हुआ इस सम्बन्ध में तत्वज्ञान का प्रतिपादन है कि सर्वप्रथम प्रकृति और पुरुष के मिलन में घड़ियाल पर हथौड़ी की चोट पड़ने पर उत्पन्न होने वाली झन-झनाहट सहित ॐकार जैसा ध्वनि प्रवाह उत्पन्न हुआ । उससे प्रकृति में हलचल उत्पन्न हुई, गतिशीलता ने छोटे-बड़े पिण्ड गोलक बनाये और फिर उत्पादन, अभिवर्धन और परिवर्तन का चक्र चल पड़ा । इस प्रकार सृष्टि की उत्पत्ति शब्द से ठहरी ।

वैज्ञानिक पदार्थ की गहरी खोजबीन करते हुए अब बहुत आगे बढ़ गये हैं । कभी पदार्थ की सबसे छोटी इकाई परमाणु थी । फिर परिवार परिकर का मध्यवर्ती 'नाभिक' को वह श्रेय मिला । बाद में शक्ति तरंगें प्रमुख मानी गईं और कहा गया कि उन तरंगों का समुच्चय ही परमाणु है । अस्तु तरंगें प्रमुख हैं । तरंगों में शब्द, प्रकाश और ताप को तीन विभागों में विभाजित किया । अन्तत: अब उन तीनों में प्रमुख शब्द होने की मान्यता अग्रणी है और इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा रहा है कि यह प्रकृति विस्तार फलत: शब्द तत्व की परिणति है ।

योगाभ्यास में नाद ब्रह्म, शब्द ब्रह्म, सुरति योग, स्वरयोग, मन्त्रयोग लय होगा, आदि के माध्यम से शब्द साधना को प्रमुखता दी गयी है । मन्त्र विज्ञान का समूचा आधार ही ध्वनि शक्ति के विभिन्न उपयोगों, उपचारों, निर्धारणों पर ही ठहरा हुआ है । मन्त्रों की सरंचना में भाषा विज्ञान और व्याकरण अनुबन्धों का उतना ध्यान नहीं रखा गया है जितना कि अक्षरों के पारस्परिक गुंथन क्रम के आधार पर उत्पन्न होने वाले ध्वनि प्रकार के स्तर एवं प्रभाव का । गायत्री मन्त्र की प्रमुखता न उसके अर्थ पर निर्भर है और न व्याकरण शास्त्र की दृष्टि से उसकी परख की गई है । उसके उच्चारण क्रम में ही वह विशेषता है जिसके आधार पर अन्तराल के प्रसुप्त चक्रों उपत्यकाओं में जगाने का उद्देश्य पूरा होता है । अदृश्य जगत की हलचलों पर भी उसका प्रभाव पड़ता है । ऐसे-ऐसे रहस्यमय कारण ही मन्त्र विज्ञान की आधारशिला हैं ।

शब्द शक्ति का उपयोग अब विज्ञान के क्षेत्र में बढ़ चढ़ कर होने लगा है । यन्त्र मानव (रोवोट) शब्द को समझता है उसका उत्तर देता है तथा आदेशानुसार हलचल करने लगता है । अन्तरिक्ष को सबसे अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रभावित करने वाली रेडियो तरंगों तथा लैसर किरणों के मूल तत्व को अब शल्य परक माना गया है। उनकी प्रत्यक्ष क्षमता है, शब्द मूलक मानी गई है। भले ही वे अपने प्रभाव ऊर्जा के रूप में प्रकट करती हों।

प्राचीन काल में मन्त्र शक्ति का—शब्द शक्ति का—प्रयोग विभिन्न प्रकार की ऊर्जाएँ उत्पन्न करने तथा प्रकृति प्रयोजनों के लिए उपयुक्त माध्यम माना गया था। यह उत्पादन में सरल सस्ती होने के कारण प्रभाव क्षेत्र में भी अद्‌भुत अद्वितीय है। अन्य प्रकार की ऊर्जाएँ उत्पन्न करने के लिए मँहगे उपकरण चाहिए साथ ही बहुमूल्य ईंधन भी प्रचुर परिमाण में हो। ईंधन चुक सकता है। उपकरण घिसते-बिगड़ते रहते हैं। जबकि शब्द मानव शरीर की प्रयोगशाला में ही अभीष्ट स्तर एवं क्षमता के उत्पन्न किये जा सकते हैं। समझा जाना चाहिए कि मनुष्य शरीर ऐसा अद्‌भुत यन्त्र उपकरण है जिसमें प्रकृति जगत और चेतना जगत को प्रभावित करने—सम्पर्क साधने और आदान-प्रदान के लिए आवश्यक क्षमता अभीष्ट परिमाण में विद्यमान है। यही कारण है कि योग और तप द्वारा शरीर यन्त्र और मनःतन्त्र का इस प्रकार परिशोधन परिष्कार किया जाता है कि उससे उपयुक्त ध्वनि प्रवाह उत्पन्न किये जा सके और मन्त्र विद्या से प्रतिपादित लाभ उठाये जा सके।

शब्द विद्या का सामान्य उपयोग भी कम नहीं है उसमें पदार्थों और प्राणियों को प्रभावित करने की अद्‌भुत क्षमता विद्यमान है। गद्य का उपयोग प्रवचन परामर्श, वार्तालाप आदि में होता ही रहता है। पद्य की क्षमता उससे भी बढ़कर है। संगीत में ताल और लय का उपयोग होता है। इन दोनों के समुच्चय को ही स्वर विज्ञान कहते हैं, थपकी ताल कहलाती है और अलाप को स्वर कहते हैं। यों दोनों कि मिलन से समान संगीत बनता है, पर उनका पृथक-पृथक उपयोग भी है। यह बात सामान्य गायन वादन के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष है। संगीत के द्वारा रोग निवारण, भावनात्मक अभ्युदय, उत्साह सम्बर्धन, प्राणि विकास, वनस्पति उन्नयन जैसे काम लिए जाने लगे हैं। अब संगीत मात्र मनोविनोद की सीमा तक ही सीमित नहीं है। उसके माध्यम से मनःक्षेत्र में आनन्द उल्लेख उत्पन्न किया और सम्वेदनाओं को भाव-तरंगों के साथ जोड़ते हुए मनुष्य को आनन्द विभोर किया जा सकता है। अन्य प्राणियों पर तथा प्रवृत्ति प्रवाह पर भी यह उपचार अपना असाधारण प्रभाव छोड़ता है।

संगीत शास्त्र में ध्वनि प्रवाह के अनेकानेक प्रभावों का उल्लेख है। बुझे हुए दीपकों को जला देने वाला दीपक राग—बादलों को बरसने के लिए विवश करने वाला मेघ मल्हार—हिरन स्तब्ध कर देने वाली गज-गति, साँपों को लहरा देने वाला मोहन राग—मदोन्मद हाथियों को वश में करने वाला राग शंकर—सूखे पेड़ों को हरा करने वाला श्रीराम—किस प्रकार अपना प्रभाव उत्पन्न करता है इसका वर्णन मिलता है। लोक व्यवहार में मधुर वचनों की अनुकूल और कटु वचनों की प्रतिकूल प्रतिक्रिया का प्रत्यक्ष प्रमाण, हर किसी को अपने इर्द-गिर्द ही मिल सकता है। अब विज्ञान ने इस ओर ध्यान देना आरम्भ किया है तो यह सम्भावना अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है कि संगीत का शब्द शक्ति का महत्व प्रकृति की अन्यान्य सामर्थ्यों से किसी भी प्रकार कम नहीं हैं।

ध्वनि वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि किसी नर्तकी की पायल ध्वनि लय ताल से बँधकर एक प्रवाह में बहने लगे तो इतने भर से वह नृत्य का बड़ा हाल नीचे ढह सकता है।

नेपोलियन के समय में एक ऐसी ही दुर्घटना हुई। उसकी सेना एक पुल पर होकर कदम से कदम मिलाये चल रही थी कि पदचाप के क्रमबद्ध हो जाने से पुल हिला और नीचे ढह गया पूरी टुकड़ी नदी में बह गई। कारण तलाश करने पर यह क्रमबद्ध पद्‌चाप का प्रभाव निकला। तब से पुल पर चलना हो तो सेना को तितर-बितर चलने का नियम बना। जिसका अभी भी पालन किया जाता है।

भूकम्पों में जो विनाश शक्ति देखी जाती है उसका कारण मात्र विस्फोट नहीं वरन् पृथ्वी के भीतर से उठने वाले क्रमबद्ध कम्पन हैं। यदि उतना विस्फोट मानवी प्रयासों से किया जाय तो बहुत कम विनाश होगा। किन्तु ऐसे अवसरों पर धरती के भीतर जो क्रमबद्ध ध्वनि प्रवाह उठते हैं उन कम्पनों से प्रभावित क्षेत्रों को भारी हानि उठानी पड़ती है।

वाशिंगटन क्षेत्र के टेकोमा नदी पर प्रायः एक किलोमीटर लम्बा और १२ मीटर चौड़ा पुल बँधा था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

वह ४४ सेन्टीमीटर मोटे लोहे के रस्सों पर टँगा था। नियमानुसार उस पर १८० किलोमीटर प्रति घन्टे की चाल से चलने वाले तूफान का भी कोई असर नहीं होना चाहिए, किन्तु ७ नवम्बर १९४० को हवा कुछ तेज तो जरूर थी पर ऐसा कुछ नहीं था, जिसे तूफान कहा जा सके। अचानक पुल ने काँपना आरम्भ किया। वह तेज हिलोरें लेने लगा। ऊपर उचका और धड़ाम से नदी में जा गिरा ।

ठीक ऐसी घटनाएँ अन्यत्र भी हो चुकी हैं। फ्रान्स का लाहोक बर्नार्ड पुल सन् १८५२ में ठीक इसी प्रकार गिरा था। उसे फिर से बनाया गया तो दुबारा भी ठीक वही घटना घटी और १८७१ में फिर वैसा ही धराशायी हुआ।

अमेरिका की ओहियो नदी का पुल भी इसी प्रकार सन् १८५४ में बैठा था। नियाना जल प्रपात का झूला मजबूत पुल भी इसी प्रकार दो बार धराशायी हुआ। एक बार सन् १८६४ में, दूसरी बार १८८९ में। कारण तलाश करने पर न निर्माण सामग्री में कोई खराबी पाई गई न बनाने वालों की विधि व्यवस्था में। फिर इन दुर्घटनाओं का क्या कारण हो सकता है इसकी गहरी खोज-बीन करने पर यह निष्कर्ष निकला कि धरती के भीतर उत्पन्न हुए भूकम्प की नगण्य सी हलचल ने तालबद्ध ध्वनि तरंगें उत्पन्न कीं और उसके प्रभाव से यह अनर्थ होते रहे ।

बारूद विस्फोट का इन दिनों बहुत उपयोग होता है। पहाड़ों को गिराने या पोला करने में आमतौर से यह प्रक्रिया काम में लाई जाती है। विस्फोटों की आवाजें भी बहुत होती हैं। पर उससे समीपवर्ती क्षेत्र में मकान गिरने जैसी कोई दुर्घटना नही होती। देखा गया है कि ५० टन बारूद का विस्फोट मात्र २०० मीटर की दूरी पर बने हुए मकानों को काई क्षति नहीं पहुँचाता । १३० किलो बारूद यदि फट पड़े तो उससे ३५० मीटर दूर के मकानों की किवाड़ें भर खड़ा-खड़ा सकती हैं। साधारण भूकम्पों में उन्हीं मकानों को क्षति पहुँचती है जो सामग्री या बनावट के नियमों की दृष्टि से दोषपूर्ण होते हैं।

उपरोक्त दुर्घटनाओं के लिए धरती के भीतर ध्वनि कम्पन्न उत्तरदायी ठहराये गये हैं। यह प्रचण्ड शक्ति तब उत्पन्न होती है जब उनमें एक निश्चित गति से उत्पादन हो और वह एकीभूत होकर एक दिशा में प्रवाहित हो। यह प्रवाह सामान्य घटनाओं से, यहाँ तक कि घड़ी के पेण्डुलम की खट-खट को तालबद्ध कर देने तक से उत्पन्न हो सकते हैं और कोई भयानक दुर्घटना उत्पन्न कर सकते हैं।

न्यूयार्क की वेस्टिंग हाउस प्रयोगशाला में कुछ समय पूर्व ऐसा ही परीक्षण किया गया, जिससे लगातार और क्रमबद्ध रूप से किये जाने वाले काम की प्रचण्ड शक्ति का पता चलता है। प्रयोगशाला में आधा टन भारी, ८ फुट लम्बा लोहे का गार्डर बीचों बीच एक जन्जीर में बाँध कर छत में लटकाया गया, उसमें पास ही आधा औंस भारी बोतलें बन्द करने के काम आने वाला कॉर्क एक धागे में बाँध कर लटकाया गया, साथ ही यह व्यवस्था बनाई गई कि कॉर्क एक नियत क्रम से लोहे के गार्डर से टकराता रहे। मोटेतौर से यही समझा जा सकता है कि इतनी भारी चीज पर इतनी अधिक हल्की वस्तु के टकराव का भला क्या असर हो सकता है? किन्तु परिणाम भिन्न प्रकार का दृष्टिगोचर हुआ। १५ मिनट बाद ही गार्डर में कँपकँपी उठती पाई गई और एक घण्टे बाद वह घड़ी के पेण्डुलम की तरह अपने आप आगे-पीछे हिलने लगा। इस प्रक्रिया को यदि कुछ समय तक और जारी रखा जाता तो लोहे का भारी गार्डर तो गिरता ही, उसके कम्पन से छत भी गिर सकती थी।

इस सन्दर्भ में प्राय: पिछले दिनों इतना ही समझा जाता रहा है कि शब्द के माध्यम से कुछ जानकारियों की प्राप्ति होती है। कान आवाजों को सुनते हैं, उन्हें मस्तिष्क तक पहुँचाते हैं और मस्तिष्क यह अनुमान लगाता है कि यह किस घटना क्रम अथवा विचार प्रवाह का संकेत है। इस आधार पर जानकारी बढ़ती है और उसका उपयोग अभीष्ट प्रयोजन में किया जाता है। यह शब्द का मोटा मूल्यांकन हुआ।

सूक्ष्म पर्यवेक्षण से "शब्द" एक शक्ति के रूप में सामने आता है। विद्युत, ताप, प्रकाश आदि की ही तरह शब्द की भी अति प्रचण्ड तरंगें होती हैं और वे अपने सम्पर्क में अति महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ती हैं।

ध्वनि का मूल रूप 'कम्पन' है। वस्तुओं पर विभिन्न प्रकार के आघात लगने से कम्पन उत्पन्न होते हैं, उन्हें हवा की लहरें अपने साथ उड़ा ले जाती हैं। वे हमारे कानों तक पहुँचते हैं। वहाँ के श्रवण स्नायु उन्हें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जैसा अनुभव करते हैं वैसी सूचना मस्तिष्क को देते हैं। इस अनुभूति को हम आवाज के रूप में सुनते हैं।

यदि हवा न हो तो हम कोई आवाज न सुन सकेंगे। जल जन्तु ही पानी के साथ बहने वाले ध्वनि प्रवाह को सुन सकते हैं। अपने कानों की एक श्रवण सीमा है, कम से कम १६ और अधिक से अधिक बीस हजार कम्पन प्रति सैकिण्ड की गति से जिन ध्वनियों के हो रहे होंगे उन्हीं को वे सुन सकेंगे। इससे कम या ज्यादा होंगे तो उनका सुन सकना हमारे लिए सम्भव न हो सकेगा। १६ से कम गति वाले प्रवाह कम्पनों को विज्ञान की भाषा में इन्फ्रासोनिक और अधिक प्रवाह को अल्ट्रासोनिक कहते हैं। १६ से कम प्रवाह वाली महत्वहीन हैं उनका कोई विशेष उपयोग नहीं, पर अधिक वाली बहुत शक्तिशाली होती हैं और उनसे अब कितने ही प्रकार के काम लिए जाने लगे हैं। डाक्टर इन इन्फ्रासोनिक आवाजों को एक शक्ति के रूप में प्रयुक्त करते हैं और रक्त संचार की गति तेज करने—सड़े-गले ऊतकों को काटकर बाहर निकालने, कीटाणुओं को मारने आदि कार्यों में उनकी सहायता लेते हैं। आसमान में छाई धूल या धुंध को उनके द्वारा छाँटा जाता है। लकड़ी तथा धातुओं की मजबूती इन्हीं के सहारे परखी जाती है। प्रवाही पदार्थों को गाढ़ा करने के काम में भी वे आती हैं। इनसे क्या-क्या लाभ उठाये जा सकते हैं इस सम्बन्ध में निरन्तर प्रयोग हो रहे हैं।

ध्वनि को तीन हिस्सों में बाँट सकते हैं—स्वर, शोर और धमाका। क्रमबद्ध ध्वनि प्रवाह को स्वर, अव्यवस्थित और परस्पर घुले मिले कम्पनों को शोर और पटाखा फटने जैसी ध्वनि को धमाका कहते हैं। यह बात भी ध्यान रखने की है कि प्रकाश गति की तुलना में ध्वनि गति काफी मन्द होती है। यही कारण है कि दूरी पर तोप चले तो उसका धुँआ पहले दिखाई देगा और आवाज बाद में सुनाई देगी। बिजली पहले चमकती है और उसकी कड़क पीछे सुनाई पड़ती है। यद्यपि अपने उद्गम स्थान पर दोनों कार्य एक ही समय होते हैं। ध्वनि की गति प्रति सैकिण्ड १०८८ फुट होती है। आवाज कितनी दूर तक जा सकेगी यह उसकी शक्ति पर निर्भर है। सन् १८८३ में इण्डोनेशिया में एक ज्वालामुखी फटा था उसकी आवाज पाँच हजार मील तक सुनी गई थी।

ध्वनि किसी समतल दीवार से टकरा कर वापस लौट सकती है। प्रतिध्वनि इसी का नाम है। बिजली कड़कती है तो बादलों में उसकी प्रतिध्वनि उत्पन्न होती है उसी को हम गड़गहाट के रूप में सुनते हैं। तेज हवा में ध्वनि प्रवाह बिखर जाता है और बहाव की उलटी दिशा में वह मन्द पड़ जाता है। बड़ी इमारतों, हालों या गुम्बदों में प्रतिध्वनि गूँजती है इसका कारण आवाज के प्रवाह में रुकावट उत्पन्न होना और उसका वापस लौटना ही है।

ध्वनि को रेडियो तरंगों के साथ मिला देने पर उसका प्रवाह, १,८६,००० मील प्रति सैकिण्ड हो जाता है यही कारण है कि रेडिया स्टेशनों से सैकिण्डों में पृथ्वी के एक सिरे से दूसरे तक अपने सन्देश पहुँचा दिये जाते हैं। आवाज की एक विचित्रता यह है कि वह कुछ दूर तक साफ सुनी जाती है फिर कुछ दूरी तक गायब हो जाती है और उसके उपरान्त फिर सुनाई देने लगती है। सन् १९२० में मास्को का प्रसिद्ध धमाका ३० मील तक सुना गया था फिर ६० मील गायब हो गया, फिर उसके बाद ६० मील तक दुबारा सुनाई दिया।

दो कान इसलिए हैं कि इनसे आवाज का दिशा बोध होता है। यदि एक ही कान हो तो सभी शब्द एक ही ओर से आते सुनाई पड़ेंगे। कई व्यक्तियों के कान तो ठीक होते हैं, पर उनसे सम्बन्धित मस्तिष्क क्षेत्र गड़बड़ा जाता है, अस्तु वे कुछ नियत प्रयोजनों के लिए बोले हुए शब्द ही ठीक तरह सुन, समझ सकते हैं। अन्य प्रकार का वार्तालाप उनकी समझ में नहीं आता।

हमारे कान ध्वनि का एक मध्यवर्ती प्रवाह ही पकड़ पाते हैं। उस पकड़ से बहुत नीची और बहुत ऊँची—असंख्य ध्वनियाँ हैं उन्हें सुन समझ पाने में हम सर्वथा बहरे रहते हैं। इससे क्या—संसार में वे ऊँचे-नीचे प्रवाह तो अपनी जगह पर काम करते ही रहते हैं।

जो कान की पकड़ सीमा से बहुत ऊँची हों उन ध्वनि तरंगों को 'अल्ट्रासाउण्ड' कहते हैं। इन्हें यन्त्रों की सहायता से पकड़ा जा सकता है और शक्तिशाली ऊर्जा की तरह उनका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपयोग किया जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अब इस ध्वनि प्रवाह का उपयोग रोगों के निदान और उपचार के लिए होने लगा है। आर्थ्रा-इटिस और वर्साइटिस रोगों की चिकित्सा में तो इनसे अद्‌भुत सफलता मिली है। 'एक्सरे' द्वारा शरीर की भीतरी स्थिति का पता लगाने वाला प्रयोग अब पुराना साथ ही पिछड़ा हुआ माध्यम है। ऐक्सरे, फोटोग्राफी शरीर में कोई धातु का टुकड़ा धँसा होने की—हड्डी के टूट जाने की बात तो सही बता देती है, पर सामान्य रोग विकृति के सम्बन्ध में फोटो जो सूचना देते हैं उनके सहारे डाक्टर की स्थिति को ऐसी कल्पना करनी पड़ती है जिसके सुनिश्चित होने की गारंटी नहीं। अल्ट्रासाउण्ड प्रणाली इससे कहीं अलग पद्धति है। उसमें तीरतुक्का नहीं लड़ाना पड़ता वरन् स्थिति सही रूप से सामने आ जाती है।

डेनवर के अस्पताल में एक मरीज मुद्दतों से कमर के दर्द से चिल्लाता रहता था। तरह-तरह के निदान और उपचार उसे कुछ राहत न दे सके। उसकी जाँच अल्ट्रासाउण्ड विधि से की गई तो पता चला कि उसे पथरी की शिकायत है। आपरेशन से पथरियाँ निकाल दी गईं और रोगी अच्छा होकर चला गया।

प्रो. डसिक की शोधों ने सन् १९५० में धातुओं का खरा-खोटापन जाँचने के लिए इन्हीं तरंगों के आधार पर 'पल्स इको' पद्धति सामने आई। स्वीडन में एल. लेक्सेल द्वारा—इंग्लैण्ड में, जे. सी. टेलर द्वारा—जापान में ताशिओ बागाइ नामक डाक्टर ने अल्ट्रासाउण्ड का उपयोग मस्तिष्कीय रोगों के सम्बन्ध में बहुत ही सफलता के साथ सम्पन्न किया। इस पद्धति से ८० प्रतिशत शिर शूल के रोगी चंगे किये जा सके। उपचार के लिए प्रयुक्त होने वाला यन्त्र 'इको-एन्सेफेलोग्राफ' इन्हीं दिनों विनिर्मित हुआ। पीछे 'ट्रांस्ड्यूसर' आदि और भी यन्त्र बने। इन किरणों में एक्सरे जैसे खतरनाक विकरण का झंझट नहीं है अस्तु गर्भस्थ भ्रूण की स्थिति को देख समझ सकना भी इससे सरल हो जाता है।

इन तथ्यों पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि शब्द एक शक्ति है। उसका उपयोग जानकरियों के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है वरन् वह वस्तुओं और व्यक्तियों को भी प्रभावित कर सकने में समर्थ है। कटु और मधुर शब्दों का दूसरों पर प्रभाव पड़ता है। परामर्शों के आधार पर लोग अपनी अन्तः स्थिति में हेर-फेर करते हैं। एक की सम्वेदनाएँ दूसरे को प्रभावित करती हैं यह शब्द की प्रभाव शक्ति हैं। विचार शब्दों पर सवार होकर प्राणियों के बीच आदान-प्रादान का माध्यम बनते हैं। एक दूसरे के साथ जोड़ने हटाने में—मित्रता, शत्रुता के बीज बोने में बहुत बड़ी भूमिका शब्दों को ही निवाहनी पड़ती है। लौकिक जीवन में शब्द शक्ति के चमत्कार हम प्रत्यक्ष देखते हैं। गूँगे, बहरे शब्द शक्ति का लाभ नहीं उठा पाते अस्तु वे शरीर के समस्त कल पुर्जे ठीक रहते हुए भी अपंग स्थिति में जीवनयापन करते हैं।

शब्द शक्ति का आध्यात्मिक महत्व और भी अधिक है। मन्त्र विद्या की आधारशिला शब्द शक्ति ही है। यों उसके साथ साधक का चरित्र और मनोबल भी जुड़ा रहता है, पर मूल आधार शब्द से ही बनता है। मन्त्रों में शब्द गुंथन इस प्रकार किया गया होता है कि उनसे जपकर्त्ता के शरीर में विशिष्ट प्रकार की शक्ति तरंगें उत्पन्न होती रहती हैं जिनके प्रभाव से निरन्तर प्रभावित रहकर वह अपने सूक्ष्म व्यक्तित्व को अतीव शक्तिशाली बना लेता है। उस आधार पर अपना और दूसरों का भला कर सकता है।

शब्द का अवांछनीय उद्‌भव एवं प्रयोग कोलाहल कहा जाता है। सर्वविदित है कि शोर स्वास्थ्य पर अवांछनीय प्रभाव छोड़ता है। इसी प्रकार कटु शब्द, दुर्भावनापूर्ण अभिव्यक्तियाँ भी दूसरों को हानि पहुँचाती हैं। तान्त्रिक प्रयोगों में दूसरों को हानि पहुँचाने की भी क्षमता रहती है। वैज्ञानिकों ने बताया है कि शोर का दुष्प्रभाव अन्य हानिकारक परिस्थितियों की ही भाँति कष्टकारक होता है। तान्त्रिक मन्त्र प्रयोगों से मारण, मोहन, वशीकरण स्तम्भन, उच्चाटन आदि के हानिकारक प्रहार इसी प्रकार होते रहते हैं। मधुर संगीत लाभदायक और कर्कश कोलाहल हानिकारक है, उसी प्रकार शब्द शक्ति के भले और बुरे दोनों ही उपयोग हो सकते हैं।

शोर नापने की इकाई है—'डेसिवल'। राष्ट्रसंघ द्वारा स्टॉक होम में आयोजित परिवेश सम्मेलन में शोर के सम्बन्ध में कहा गया कि यदि १४० डेसिवल शोर में मनुष्य को लगातार रहना पड़े तो उसका मानसिक सन्तुलन गड़बड़ा सकता है। उसकी सहन शक्ति अधिक से अधिक १२० डेसिवल की है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तरिक्ष राकेट छोड़े जाते समय १४० मिली के साइरन बजने का शोर १५०, मोटर-साइकिलों की फटफट १००, घरेलू वाद विवाद या घड़ी का अलार्म ८०, टेलीफोन की घण्टी तथा मामूली बातचीत ६० डेसिवल शोर उत्पन्न करते हैं।

परिवेश सम्मेलन की रिपोर्ट में कहा गया है कि जल और वायु के प्रदूषण के खतरों को समझा जा रहा है और उनकी रोकथाम की ओर ध्यान दिया जा रहा है किन्तु न जाने शोर की ओर से क्यों उपेक्षा की जा रही है। आज का बढ़ता हुआ कोलाहल मनुष्य जीवन के लिए किसी भी प्रकार कम संकट पूर्ण नहीं है। शहरों में निरन्तर चलने वाले मोटर जैसे वाहन, कल-कारखाने, लाउडस्पीकर तथा दूसरी तरह के कोलाहल उन क्षेत्रों को इतना हानिकारक बनाते हैं जिसमें स्वास्थ्य सन्तुलन बनाये रहना अति कठिन है। शब्द तत्व असाधारण क्षमताओं एवं सम्भावनाओं से भरा-पूरा है, उसका रहस्य समझा जा सके और उपयोग सीखा जा सके तो मनुष्य के हाथ सामर्थ्य का विशिष्ट स्रोत हाथ लग सकता है। प्राचीनकाल की तरह इस सामर्थ्य की शोध में संलग्न होकर उज्जवल भविष्य की एक नई सम्भावना को हस्तगत किया जा सकता है।

शब्द शक्ति के भले बुरे प्रभाव

स्थूल ध्वनियाँ श्रव्य होती हैं । श्रव्य ध्वनियों का अपना एक प्रसार क्षेत्र होता है। हम उन्हीं ध्वनियों को सुन सकते हैं, जो इस सीमा क्षेत्र के अन्तर्गत आती हों प्राय: यह प्रसार क्षेत्र २० से २०,००० कम्पन प्रति सैकिण्ड होता है, अर्थात् हमारी कर्णेन्द्रिय उन्हीं तरंगों को ग्रहण कर सकती है, जो उक्त दायरे में हों । इससे कम अथवा अधिक आवृत्ति वाली ध्वनियों को सुनने की सामर्थ्य हमारे कानों में नहीं होती। ऐसी ध्वनियाँ जिनकी बारम्बारता २० हर्ट्ज से कम है, इन्फ्रासोनिक तथा २०,००० हर्ट्ज से अधिक वाली ध्वनियाँ अल्ट्रासोनिक कहलाती हैं :

ध्वनियाँ प्राय: व्यक्ति और वस्तु को आसाधारण रूप से प्रभावित करती हैं। स्थूल व श्रव्य ध्वनियों का प्रभाव तो प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है; पर अश्रव्य और सामान्य समझी जाने वाली ध्वनि तरंगें भी कोई कम प्रभावित नहीं करतीं ।

वियेना के प्रो. गावरॉड "मारसिल्स" नामक इन्स्टीट्यूट में इंजीनियर थे। वे जब भी अपने कक्ष में जाकर बैठते तो उन्हें बड़ी बेचैनी अनुभव होती । प्राय: उस कक्ष में उन्हें मिचली सी आती रहती, यद्यपि कमरा पूर्णत: साफ था और वायु आवागमन की अच्छी व्यवस्था थी । फिर ऐसा क्यों होता है? उनकी समझ में नहीं आ रहा था। उन्होंने विभिन्न यंत्र-उपकरणों से कारण का पता लगाने की कोशिश की पर निष्फल रहे। एक दिन वह दीवार के सहारे बैठे हुए थे कि उन्हें अत्यन्त सूक्ष्म कम्पन का आभास हुआ । खोजबीन से पता चला कि यह कम्पन नजदीक के ही एक एयरकंडिशनिंग संयंत्र का है। इसी से पूरा कमरा इन्फ्रासोनिक ध्वनि तरंग से कम्पायमान था। कम्पन को जब रिकार्ड किया गया, तो यह ७ हर्ट्ज पाया गया। ज्ञातव्य है कि जब वह अपने कक्ष से बाहर होते, तो उन्हें किसी प्रकार की तकलीफ महसूस नहीं होती, किन्तु कमरे में तरंग का असर द्विगुनित हो जाता ।

इस घटना के बाद प्रो. गावरॉड ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया और फिर सूक्ष्म तरंगों पर अनुसंधान कार्य में जुट पड़े । कुछ आरम्भिक सफलताओं के बाद वे यह जानने को उत्सुक हुए कि अश्रव्य तरंगों का मानवी शरीर-मन पर कैसा असर पड़ता है। इसके लिए उन्होंने एक विशालकाय इन्फ्रासोनिक मशीन बनायी । उसका प्रथम परीक्षण एक प्रायोगिक पशु पर किया । मशीन चालू होते ही वह गिरा और तड़प कर मर गया। जब उसका पोस्टमॉर्टम किया गया तो पता चला कि उसके सारे आंतरिक अवयव तरंग की मार से अर्धतरल में परिवर्तित हो गये थे ।

इस हादसे के बाद प्रो. गावरॉड परीक्षण में अधिक सावधानी बरतने लगे । इस बार उन्होंने खुले मैदान में प्रयोग करने को सोचा, अत: कुछ पर्यवेक्षकों को कंक्रीट बंकर में रख कर मशीन धारे-धीरे चालू करना शुरू किया । कुछ ही देर में परीक्षण स्थल से आधे मील की परिधि में जो भी इमारतें थी, उनकी सारी खिड़कियाँ चकनाचूर हो गईं और मकानों की नींव हिल गई। पर्यवेक्षकों से जब इस दौरान का अनुभव पूछा गया तो उन्होंने बेचैनी, उद्विग्नता और सिर दर्द की शिकायत की।

अब तो लो-फ्रीक्वेंसी के ऐसे यंत्र भी विकसित हो गये हैं जिनके सहारे विशालकाय गगनचुम्बी इमारतों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

को भी क्षण में ही ध्वस्त किया जा सकता है। ये सारे उदाहरण सूक्ष्म ध्वनियों की शक्ति दर्शाते हैं।

भूकम्प से पूर्व भी पृथ्वी के गर्भ में चल रही हल-चल की जानकारी ऐसी ध्वनियाँ दे जाती हैं। सर्वविदित है कि ऐसी आपदाओं से कुछ घण्टे पूर्व मानवेतर प्राणियों यथा—कुत्ते, बिल्ली, खरगोश, तिलचट्टे आदि में विचित्र भाग-दौड़ दिखायी पड़ती है। वस्तुतः उनमें सूक्ष्म तरंगें ग्रहण करने की अद्‌भुत सामर्थ्य होती है। इसके माध्यम से उन्हें आगत घटनाओं का पूर्वाभास मिल जाता है और समय रहते वे सुरक्षित स्थानों में चले जाते हैं। जापानी लोग इस विपदा से बचने के लिए गोल्डफिश का सहारा लेते हैं। जब भूकम्प आने को होता है तो इस मछली में एक अजीब बैचैनी दिखायी पड़ती है। इसे देखकर लोग अपने-अपने घरों से बाहर निकल आते हैं और प्राण रक्षा करते हैं। कुछ हद तक ऐसी सूक्ष्म तरंगों के प्रति महिलाएँ और बच्चे भी संवेदनशील होते हैं। पुरुष की तुलना में वे ऐसी ध्वनियाँ अधिक सक्षमता से पकड़ते हैं।

कुछ वर्ष पूर्व रूस ने ऐसी ही सूक्ष्म तरंगों के माध्यम से अमरीकी सुरक्षा योजना बनाने वाले वैज्ञानिकों को परेशानी में डाला था । बाद में जब उन्हें रूसियों के इस कारनामे की जानकारी मिली, तो उन्होंने इसके दुष्प्रभावकारी असर को मिटाने के लिए प्रति तरंग को रूस की ओर प्रेषित करना शुरू किया।

अभी थोड़े दिन पूर्व बम्बई के एक ऐसे व्यक्ति की खबर अखबारों में छपी थी, जिसने दावा किया था कि कुछ अज्ञात व्यक्ति उसे परेशान करने के उद्देश्य से सूक्ष्म रेडियो सिगनल्स भेजते हैं। उसका कहना था कि जब उसे सिगनल्स प्रेषित किये जाते है, तो वह अशांत व बेचैन हो उठता है और बार-बार आत्महत्या करने का विचार आता है।

कहा जाता है कि दक्षिणी इजियन के सैण्टोरिनी द्वीप में कोई भी पर्यटक एक दिन से अधिक नहीं रुक पाता । वहाँ पहुँचते ही उन्हें एक अज्ञात भय, नैराश्य, उदासीनता व विचित्र निष्क्रियता घेर लेती है। कुछ लोगों का विश्वास है कि वर्तमान सैण्टोरिनी वही स्थल है, जहाँ कभी एटलाण्टिस था । ई. यू. १४५० में उसका अधिकांश भाग जलप्लावित हो गया तभी से वहाँ पर भूगर्भीय उथल-पुथल के कारण बराबर एक सूक्ष्म ध्वनि क्रियाशील रहती है, जिसकी उपस्थिति का पता भूकम्पमापी यंत्र बताते हैं।

कुछ भी हो, इन्फ्रासाउण्ड स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है, यह अब एक सत्यापित तथ्य हैं किन्तु हर प्रकार की पराध्वनियाँ दुष्प्रभावजन्य होती हैं, ऐसी बात नहीं है। अनेक पशु-पक्षियों में ऐसी आश्रव्य ध्वनियाँ पायी गयी हैं। इसी के माध्यम से वे अपने दूरवर्ती साथी को आवश्यक संदेश सम्प्रेषित करते हैं। चमगादड़ अपने मार्ग के अवरोधों का पता अल्ट्रासोनिक तरंग द्वारा ही लगाता है। फिन ह्वेल मीलों दूर ऐसी तरंगों द्वारा सूचना भेज सकती है। अब हाथियों में भी ऐसी ही सूक्ष्म तरंगों का पता चला है। इस खोज से ही यह रहस्योद्‌घाटन हो सका, क्यों अचानक उनका झुण्ड किसी निर्दिष्ट दिशा की ओर चल पड़ता है। गायत्री मन्त्र के मानसिक जप में भी एक प्रकार का सूक्ष्म कम्पन उत्पन्न होता है, जो कि चक्रों, उपत्यिकाओं और ग्रन्थियों को प्रभावित करता है।

वस्तुतः हम पराध्वनियों के विशाल सागर में रह रहे हैं, जो जाने-अनजाने हमारे शरीर-मन को प्रभावित करती रहती हैं। सृष्टि का आरम्भ शब्द-शक्ति से ही हुआ माना जाता है। कहा जाता है कि सुदूर हिमालय में अब भी वैदिक ऋचायें सूक्ष्म कर्णेन्द्रियों के माध्यम से उसी प्रकार सुनी जा सकती हैं, जैसे हजारों वर्ष पूर्व ऋषियों ने सुनी थीं। रहस्यवादियों के अनुसार किसी भी घटनाक्रम का ब्लूप्रिण्ट, घटित होने से काफी समय पूर्व वातावरण में सूक्ष्म कम्पन के रूप में आ जाता है। विज्ञान कहता है कि हम जो कुछ भी बोलते हैं उसका विनाश नहीं होता, वह सूक्ष्म ध्वनि तरंगों के रूप में विद्यमान रहता है। उसका दावा है कि महाभारत के दौरान कृष्ण ने अर्जुन को जो गीता सुनायी थी, तथा भीष्म-पितामह के शर-शैय्या पर पड़े द्रौपदी को जो उपदेश दिये थे, उन्हें आज भी सुना जा सकता है, यदि उन सूक्ष्म तरंगों को खोज कर हम पकड़ सकें ।

सृष्टि का आविर्भाव शब्द से हुआ बताया जाता है। शब्द शक्ति के द्वारा ही विश्व-ब्रह्माण्ड का, कार्य सत्ता का सारा क्रिया व्यापार चलता है। विज्ञान ने मैग्नेटिक रेजोनेन्स इमेजिंग (एम. आर. आई.) एन. एम. आर. तथा सोनोग्राफी आदि के द्वारा निदान-चिकित्सा में महत्वपूर्ण सफलताएँ उपलब्ध कराई हैं। यदि इसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकार शब्द शक्ति रूपी ईंधन का प्रयोग सूक्ष्म कार्य संयंत्र के विभिन्न घटकों को विकसित करने हेतु किया जा सके तो इस नगण्य-सी दृश्यमान काया से असम्भव दीख पड़ने वाले कार्य भी सम्भव हो सकते हैं। पुरातन काल में इसी शक्ति का प्रयोग कर ऋषि, मुनि उच्चस्तरीय योग की सिद्धियाँ हस्तगत करते थे। आज तो विज्ञान रूपी माध्यम भी उसके पास है। यदि सही दिशा में इस शक्ति का सुनियोजन किया जा सके तो महत्वपूर्ण उपलब्धियों से मानव समाज को लाभान्वित किया जा सकता है।

शब्द शक्ति एक ओर जहाँ जीवनदायनी है। वहीं दूसरी और वह मरणकाल भी उपस्थित कर सकती है। होना तो यही चाहिए था कि इस महाशक्ति का सदुपयोग होता, परन्तु अभी तो सर्वत्र इसके विपरीत ही प्रतिक्रियायें देखी जाती हैं । आज भौतिक प्रगति और वैज्ञानिक उन्नति के लिए जो सरंजाम खड़े किये गये हैं उनमें यह ध्यान ही नहीं रखा है कि मानव को समुन्नत स्तर का बनाये रखने के लिए वातावरण को कोलाहलपूर्ण न बनाया जाय। अन्यथा प्रगति के नाम पर जो कुछ हाथ लगेगा, वह बहुत महँगा पड़ेगा । घने शहर बसते जा रहे हैं और विशालकाय कल-कारखानों का विस्तार हो रहा है। रेलों का जाल बिछ रहा है और मोटरों की घुड़दौड़ अधिकाधिक विस्तृत होती जा रही है। इन सबको मिलाकर ऐसी विक्षुब्ध परिस्थितियाँ बन रही हैं जिन्हें एक प्रकार का आतंकवाद ही कह सकते हैं। धन और ठाठ-बाट का विस्तार इससे भले ही होता है जीवन विकाश की मूलभूत आवश्यकताओं का एक प्रकार से वेतरह विनाश ही होता चला जा रहा है।

शहरों में सड़कों के किनारे मोटरों की भगदड़ से प्राय: ६०-८० डेसीवल का शोर उत्पन्न होता है । बड़े कारखानों की मशीनें १०० डेसिवल तक का, कोलाहल करती हैं। सामान्य हवाई जहाज भी इतने ही दहाड़ते हैं। जेट विमान तो गजब ही करते हैं उनकी दहला देने वाली आवाज १५० डेसिवल तक जा पहुँचती है । इसका प्रहार इतना होता है मानो किसी ने तानकर घूँसा मारकर तिलमिला दिया हो।

दूरदर्शी देशों में यह प्रयत्न किया जा रहा है कि १०० डेसिवल से अधिक की आवाज पर तत्काल प्रतिबन्ध लगा दिया जाय और उसे अधिकाधिक नीचे लाने के लिए क्रमिक प्रयत्न किया जाय। लाउडस्पीकरों पर अनावश्यक शोर करने की किसी को भी छूट न हो। बिना सन्तोषजनक कारण बताये लाउडस्पीकरों का उपयोग करने की इजाजत किसी को भी न मिले । विशेषतया रात्रि को जबकि निद्रा के लिए कोलाहल रहित वातावरण की आवश्यकता रहती है।

शान्त जलाशय में ढेला फेकने पर लहरें उत्पन्न होती हैं और वे किनारे की ओर बढ़ती चली जाती हैं। इसी प्रकार आकाश में भरे हुए ईंथर तत्व में कोई आवाज होने पर ध्वनि तरंगें उत्पन्न होती है। पानी की लहरें केवल सतह पर बहती हैं । पर ध्वनि तरंगें हर दिशा में गोल गेंद जैसा घेरा बनाकर बढ़ती चली जाती हैं। यह ध्वनि लहरें आन्दोलन या कम्पन कहलाती हैं। पानी में बड़ा पत्थर अधिक जोर से फेंकने पर लहरें अधिक तथा प्रबल उठती हैं, यदि ढेला छोटा या हल्का हो तो लहरें भी हल्की होंगी। ठीक इसी प्रकार शब्द का आवेश जैसा हल्का भारी होगा उसी के अनुसार ध्वनि तरंगों की शक्ति भी न्यूनाधिक रहेंगी ।

एक सैकिण्ड में कितनी ध्वनि तरंगें उठीं, इस आधार पर शब्द शास्त्री अपना लेखा-जोखा रखते हैं। मनुष्य के कानों की रचना इस प्रकार की है कि वे एक सैकिण्ड में २० से कम और २० हजार से अधिक कम्पन गति को नहीं सुन सकते । आमतौर से एक हजार और पाँच हजार के बीच की ध्वनि तरंगें ही आसानी से सुनी जाती हैं। कई पशु-पक्षी इससे न्यून तथा या अधिक ध्वनि प्रवाहों को भी सुन सकते हैं। चमगादड़ २० हजार से ऊँचे कम्पन भी सुन सकती है। मछली के कान नहीं होते उसका मस्तिष्क बिना कानों के ही शब्द प्रवाह के आधार पर आवश्यक जानकारी प्राप्त कर लेता है ।

मंद से मंद ध्वनि जो मनुष्य के कानों से सुनी जा सकती है उसे 'शून्य डेसिवल' इकाई माना गया है। कानाफूँसी की घुस-फुस प्राय: १० से २० डेसिवल तक की होती है। १४० डेसिवल की ध्वनि मनुष्य के कान के पर्दे फाड़ सकती है और उसे बहरा कर सकती है, १५० पर तो शरीर में भारी विक्षोभ उत्पन्न हो सकता है और मृत्यु तक हो सकती है। यों शरीर ७५ को ही असह्य मानकर उसके विरुद्ध विद्रोह करने लगता है। तेज शोर के बीच रहने वाले लोगों की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति मंद या तीव्र रोगों की ओर बढ़ती जाती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हवाई जहाज इतना शोर करते हैं कि यदि १०० फीट दूरी से उनकी आवाज सुनी जाय तो सिर चकराने लगेगा । हवाई जहाजों के भीतर बैठे यात्रियों और चालकों को यह शोर कष्ट न दे इसलिए भीतर ध्वनि अवरोधक यन्त्र लगे होते हैं, पर बाहर आकाश में तो वह शोर होता ही है। इस ध्वनि का प्राणियों पर क्या प्रभाव होता है यह जाँचने के लिए गिनीपिग चूहों को जेट इंजन के शोर में रखा गया । कुछ ही मिनट में वे सब झुलस कर मर गये। तेज ध्वनियों का मानव शरीर पर बुरा असर पड़ता है यह भली प्रकार अनुभव कर लिया गया है। वैज्ञानिकों ने अब इतनी तीव्र ध्वनियों का आविष्कार कर लिया है कि उनके शोर मात्र से बारूद या पेट्रोल की तरह देखते-देखते भयंकर अग्निकाण्ड हो सकता है।

आस्ट्रिया के ध्वनि विज्ञानी डॉ. ग्रिफिथ का कथन है कि कोलाहल में रहने वाले अपेक्षाकृत अधिक जल्दी बूढ़े होते हैं। इंग्लैण्ड की स्वास्थ्य रिपोर्ट में शोर वाले क्षेत्र में एक चौथाई लोगों को न्यूरोसिस, सनक की मस्तिष्कीय विकृति में ग्रस्त पाया गया । अमेरिका के आवाज करने वाले कारखानों में एक चैथाई के कान अपनी स्वाभाविक क्षमता गँवाते चले जा रहे हैं।

सुपर मगनक लड़ाकू विमानों की दहलाने वाली आवाज ने केन्योन की ऐतिहासिक गुफाओं में दरारें डाल दीं। ब्रिटेन और फ्रांस के सहयोग से बने कनकार्ड जेट ने लन्दन के सेन्टपाल गिरजाघर और पार्लमेन्ट भवन तक के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया था। फलतः उस क्षेत्र में उसके उड़ने पर प्रतिबन्ध लगाया गया । डाक्टरों ने उस विमान की भंयकर आवाज के सम्बन्ध में यह भी चेतावनी दी थी कि उसकी उड़ान मार्ग के इर्द-गिर्द १०० मील तक के हृदय रोगियों का जीवन संकट में पड़ जायेगा ।

मनुष्य के कान २५-३० डेसिवल तक की आवाज को सहन कर सकते हैं। इससे अधिक कोलाहल जहाँ भी होगा वहाँ कान के जरिये अवांछनीय तनाव मस्तिष्क पर पड़ेगा और फिर वह उत्तेजना शरीर के विभिन्न अवयवों पर बुरा असर डालेगी। सेनफ्रांसिस्को के कैलीफोर्निया मेडीकल कॉलेज द्वारा ध्वनि प्रवाह के विभिन्न परिणामों का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला है—विषैली जलवायु की तरह ही कोलाहलयुक्त वातावरण भी स्वास्थ्य पर घातक प्रभाव डालता है।

सन् १९६६ में रूस के गोर्की नगर में अनाभ्यस्त शोर का प्रभाव पशुओं पर क्या पड़ता है इसका परीक्षण किया गया तो यही पाया गया कि वे कर्कश ध्वनियों को सुनने के कारण अपनी सामान्य दिनचर्या छोड़ बैठते हैं और उद्विग्न रहने लगते हैं। उनकी कार्यक्षमता घट जाती है और अस्वस्थता आ घेरती है। पालतू पक्षी भी शोर से घबराते हैं। जो पालतू नहीं हैं वे कोलाहल से हटकर अन्यत्र अपने घोंसले बनाने की तैयारी करते हैं।

टैक्सास के एक शोध संस्थान 'कैलियर हियरिंग एण्ड स्पीच सेन्टर' द्वारा की गई ध्वनि प्रतिक्रिया शोध का निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए उसके निर्देशक डॉ. ग्लोरिंग डलास ने बताया कि अधिक शोर करने वाले कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों में से अधिकांश को आंशिक बहरापन आ घेरता है। साथ ही उनकी कार्यक्षमता एवं सहनशीलता घट जाती है। चैकोस्लोवाकिया में शोर करन वाले और शोर रहित व्यवस्था वाले कारखानों की उत्पादन शक्ति का लेखा-जोखा लिया गया तो प्रतीत हुआ कि शान्ति के वातावरण में शारीरिक और मानसिक श्रम कहीं अधिक मात्रा में सम्भव हो सकता है।

हारवर्ड विश्वविद्यालय के प्रो. वैरोल विलियम्स ने सुविस्तृत क्षेत्र में दीर्घकालीन पर्यवेक्षण करके यह निष्कर्ष निकाला है कि मनुष्य की जीवनी शक्ति को नष्ट करने और उसे अकाल मृत्यु का ग्रास बनने के लिए बाध्य करने में कोलाहल का बहुत बड़ा हाथ है। बड़े शहरों में सड़क के किनारे बने हुए घरों में जो लोग रहते हैं दौड़ती हुई मोटरों की आवाजें उसके मस्तिष्क को क्षुब्ध करती रहती हैं। फलतः अन्य मुहल्लों में रहने वालों की अपेक्षा वे अनिद्रा, घबराहट, धड़कन, बधिरता, रक्त-चाप, अपच जैसे रोगों से कहीं अधिक अनुपात में बीमार पड़ते हैं।

जार्जिया विश्वविद्यालय के डॉ. विलियम एफ. गेवर ने चूहों को कोलाहल भरे वातावरण में रखकर देखा तो वे दिन-दिन दुबले होते गये और उन दिनों गर्भ में आये लगभग सभी बच्चे किसी न किसी बीमारी से ग्रसित एवं अविकसित अंग लेकर जन्मे पाये गये।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओहियो के शरीर शास्त्री लीस्टर डबल्यू. सानतांग ने गर्भवती महिलाओं में से जो शोर ग्रस्त क्षेत्र में रहने वाली थीं उन्हें दुर्बल और रुग्ण सन्तान को जन्म देने वाली पाया।

सन् १९६३ में लेनिनग्राड के निकटवर्ती क्षेत्र में वुलडोजरों की सहायता से ऊबड़-खाबड़ जमीन साफ की गई। इन दैत्याकार यन्त्रों का प्रभाव समीप के मुर्गी फार्मों पर बहुत बुरा पड़ा। इन पक्षियों के पंख इस बुरी तरह झड़े कि वे विचित्र तरह के कुरूप हो गये। उदास रहने लगे और अण्डे देना रुक गया। असह्य शोर से मुर्गियाँ घबराने लगीं और उनकी सामान्य दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो गई।

वातावरण का कोलाहल असंदिग्ध रूप से मनुष्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। उसमें निवास करते हुए मात्र पौष्टिक आहार-विहार के अथवा दवादारू के आधार पर सामान्य स्वास्थ्य संरक्षण भी सम्भव नहीं हो सकता है। जिन्हें धन ही सब कुछ प्रतीत होता है वे भले ही घने शहरों में या गहरे समुद्रों में रहें, पर जिन्हें जीवन की समस्वरता से प्यार है उन्हें अपना निवास प्रकृति के सान्निध्य में—शान्त वातावरण में व्यतीत करना चाहिए। कोलाहल किसी को सह्य अथवा प्रिय ही क्यों न प्रतीत होता हो, पर वस्तुतः उसकी विषाक्तता इतनी घातक है कि उसके दुष्परिणामों से बचा नहीं जा सकता।

ठीक इसी प्रकार मानसिक उद्विग्नता का बुरा प्रभाव भुगतना पड़ता है। चिन्ता, भय, आशंका, निराशा, क्रोध, आवेश, ईर्ष्या, ललक, लिप्सा का कोलाहल जिनके मन मस्तिष्क में निरन्तर उद्विग्नता पैदा करता रहता है उन्हें चैन की—शान्ति और सन्तोष की सुखद घड़ियाँ कदाचित ही मिल सकें। वातावरण का कोलाहल शरीर और मन को विक्षुब्ध करता है। चिन्तन क्षेत्र का कोलाहल मनुष्य को एक प्रकार से विक्षिप्त ही बनाकर रख देता है। ऐसा जीवन जीकर भला क्या कोई सुखी रह सकता है।

यह एक तथ्य है कि ध्वनि में स्वस्थ करने की शक्ति विद्यमान है। वह चैतन्यता की अवस्थाओं को बदल सकती है। साथ ही यह भी सत्य है कि क्षति पहुँचाने, मन को मोड़ने, मनोभावों को उत्तेजित करने तथा मन को विह्वलता की पराकाष्ठा तक पहुँचा देने का कार्य भी ध्वनियाँ कर दिखाती हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि, ध्वनियों का प्रभाव बुरी तरह से कभी-कभी अहितकर रूप में भी दिखाई पड़ता है। जहाँ-कहीं ध्वनि उच्च-स्तर की होती है, वहाँ उच्च-स्तर की मानसिक अस्वस्थतायें होती हैं। उच्च-शोर वाले उद्योग हृदय-रोग, सिरदर्द एवं श्वसन-शिकायतों के लिए उत्तरदायी माने गए हैं।

"मेसाचुसेट्स इन्स्टीट्यूट ऑफटेक्नॉलाजी" के डॉ. डेलहटीस के अनुसार तेज आवाज रक्त के कणों की कोएगुलेशन (सघनता) में वृद्धि करती है, जो बाद में धमनियों के कठोरीकरण एवं सकरे होने में सहायता दे सकती है। तीखी आवाज स्नायुविक विकारों में वृद्धि करती है। वायुयान, जेट और सुपरसोनिक की आवाजें खतरनाक स्तर की होती हैं। हीथ्रो एअरपोर्ट के समीप इस संबंध में अध्ययन किया गया। इस रिपोर्ट में यह प्रदर्शित किया गया है कि, ३१ प्रतिशत उच्चतर स्नायविक विकारग्रस्त लोग शोर वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं।

"यू. सी. एल. ए. स्कूल ऑफ इंजिनियरिंग एण्ड एप्लॉयड साइंस" के एक वायु ध्वनिक अध्ययन में बताया गया कि लॉसएञ्जिल्स के ३ मील के विस्तृत लक्ष्य क्षेत्र के ८० हजार निवासियों में २९ प्रतिशत से अधिक मृत्यु दर थी। ४० प्रतिशत लोग उच्चतर विनाशक आघात से ग्रसित थे एवं ६ मील के घेरे में निवास करने वाले लोगों में अधिकांश व्यक्ति यकृत की विकृति के शिकार बने। इस क्षेत्र में जन्म लेने वाले बच्चे जन्मजात शरीरगत असामान्यता लिए पैदा हुए। तरुण लोग जो बहुधा डिस्को तथा पॉप संगीत गोष्ठियों में जाते हैं, वे क्रमशः एवं उत्तरोत्तर अपनी श्रवण शक्ति को खोते जाते हैं। एक ध्वनि विज्ञानी डॉ. जॉन डायमण्ड तो कहते हैं कि "पॉप संगीत की एक विशिष्ट प्रतीकात्मक ताल डा, डा, डा दो तिहाई पेशियों की शक्ति को नष्ट करती है। यह "इलेक्ट्रॉनिक स्ट्रेन-गेज" के परीक्षण के बाद बताया गया।

ध्वनि प्रदूषण उस समय पर्यावरण विशेषज्ञों के लिए चिन्ता का विषय है, जब यह रोग से संबंधित विपत्ति को फैलाती है। ताल और सुर की गति क्रमबद्ध हो तो अन्तरात्मा को स्वस्थ तथा बलवान बनाती है, न होने पर तन्त्रिका तन्त्र को अपंग, शरीर को विकृत कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देती है। मानवीय मस्तिष्क और शरीर उत्तमता से समस्वरित हैं, और उन्हें सरलतापूर्वक तीव्र और कर्कश लय से अनुकूलता उत्पन्न कर बाहर किया जा सकता है।

ध्वनि कंपन है। जब संगीतज्ञ वाद्य-यंत्र को झंकृत करता है तब हवा के चारों ओर यह झंकार सिकुड़कर फिर फैल जाती है। हमारा सम्पूर्ण शरीर ध्वनि की प्रतिक्रिया है। मनुष्य एक जैव-दोलक है। ठीक वैसे ही जैसे कि "एक रेडियो"। वैज्ञानिकों के अनुसार जब हम सुरबद्ध स्थिति में होते हैं, तब आदर्श कार्य करते हैं। ध्वनि को मापने की इकाई को डेसिवल कहते हैं। १८० डेसिवल ध्वनि प्राणघातक होती है। १४० से १५० डेसिवल जेट-प्रस्थान के समय की ध्वनि शारीरिक और मानसिक क्षति पहुँचाने में समर्थ है। १३० डेसिवल ध्वनि तन्त्रिकाओं के लिए कष्टदायक है। ११० से १२० डेसिवल की विस्तृत ध्वनि चरम स्थिति की है। इतनी ध्वनि नुकसान करने के लिए पर्याप्त है। इसके नीचे के स्तरों की ध्वनियाँ मध्यम किन्तु परेशान करने वाली मानी गई हैं। १० डेसिवल की मन्द, हल्की ध्वनि मानवी श्वासोच्छ्वास की तरह मंद मानी गई है। नादयोग इसी श्रेणी में आता है।

ध्वनि और संगीत में व्यक्ति को स्वस्थ करने की क्षमता है। तनावों को शान्त करने, तन्त्रिकाओं को शिथिल करने और शरीर को निरापद एवं यथावत करने में ध्वनि और संगीत उपयोगी है। अधिकांश शास्त्रीय संगीत और प्राकृतिक ध्वनियाँ शक्तिशाली और समर्थ बनाती हैं एवं लाभकारी होती हैं।

"डायरेक्टर ऑफ स्पैक्ट्रम रिसर्च इन्स्टीट्यूट कैलीफोर्निया" के मि. स्टेवेन हैपर्न के अनुसार हम सभी ध्वनि के महासागर के मध्य निवास करते हैं। कुछ निश्चित ध्वनियों के कंपन भी अत्यधिक लाभदायी हैं। इसी परिप्रेक्ष्य में बल्गेरिया के डॉ. गार्गी खोजानोव ने पाया कि "जब विशेष ताल का उपयोग किया गया, तब सामान्य अवस्था गहरी शिथिलीकरण यॉने समाधि अवस्था जैसी स्थिति में बदल गई।" जुरिच के डॉ. हैन्स जैनी ने अपने ग्रंथ "सिमेटिक्स" में कहा है कि "तरंगें पदार्थों के निर्माण का कार्य तथा रूपान्तरण भी करती हैं।" उसने अपने एक प्रयोग में स्टील की चकतियों को द्रव पदार्थ में बिखेरा। प्लास्टिक, धातुओं के चूर्ण तथा पावडर को भी उसी में मिला दिया। फिर उसने उस मिले हुए मिश्रण को एक नियंत्रित साधन से ध्वनि-कम्पन प्रदान किया। उसने देखा कि, लोहे के चकतियों के ऊपर के प्रतिरूप बदल जाते हैं। यह संवादी पैमाने के अनुसार होता है। उन्होंने एक "टेनोस्कोप" बनाया है। इस माइक्रोफोन में जब मुँह से ध्वनियाँ छोड़ी जाती हैं तो वे ध्वनियाँ दृश्य प्रतीक के रूप में पर्दे पर निर्मित हो जाती हैं।

उन्होंने यह खोज की है कि, ॐ एक मन्त्र है जो रेखागणितीय रूप प्रस्तुत करता है। साधारणतया प्रतिदिन के बोल चाल के शब्द अव्यवस्थित होने के कारण कुछ भी प्रभाव नहीं डाल पाते। वे कहते हैं कि वह बहुत आश्चर्यचकित हुए कि "पूर्वार्त्त धर्मों के लोगों ने बहुत अधिक महत्वपूर्ण खोज संगीत के रूप में की है। अधिक महत्वपूर्ण मन्त्रों को आलाप सहित गाकर सुनाना अपने आप में एक चिकित्सा है।'

अर्वाचीन पश्चिमी शरीर वैज्ञानिकों के कार्य यह विश्वास दिलाते हैं कि कम्पन एण्डोक्राइन, ग्लैण्ड पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं । वियना के डॉ. लोसर लेसारियो के साउण्ड थिरैमी के प्रयोग से उसके सेनिटोरियम के बहुत से रोगी अपने स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त करके अपने घरों को लौट गये। यौगिक प्राणायाम में श्वासोच्छ्वास के समय ॐ का प्रयोग, निस्तब्धता और मन को शान्ति प्रदान करता है, यही मानकर उन्होंने ॐकार का जप कराया।

ध्वनि कंपनों से दीवालें तक टूट सकती हैं। बाइबिल बतलाती है कि जेरिको की तुरहियों की ध्वनि से एक समूचा नगर नष्ट हो गया था। केरुसो लगातार स्वर प्रयोग करके शराब की बोतलें फोड़ा करता था। उसने अपने एक स्वर-प्रयोग में कोलगन नामक एक बड़े चर्च के एक हिस्से को ढहा दिया था। ध्वनि अत्यधिक शक्तिशाली होती है। स्वस्थ बनाने या विनाश हेतु किसी भी रूप में इसका प्रयोग किया जा सकता है। रविशंकर के शास्त्रीय सितार वादन का लता गुल्मों पर प्रभाव ध्वनि की समर्थता व्यक्त करता है, जिसमें पौधे संगीत के प्रभाव से वाद्य-यन्त्र की ओर उन्मुख होते तथा पुष्पित होते देखे गये।

अधिकांश ध्वनियाँ हमारे नियंत्रण के बाहर हैं। उन ध्वनियों पर नियंत्रण करने की आवश्यकता है, जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवी स्वास्थ्य के लिए विपत्ति स्वरूप हैं। हमें लाभदायी ध्वनियों के बारे में भी ध्यान देना चाहिए जो मानव जीवन को समृद्ध बनाती हैं। पूर्वार्त्त और पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत तथा प्राकृतिक ध्वनि जैसे पक्षियों का गीत, समुद्री तरंगें, वायु तरंगें एवं पेड़ों की सरसराहट आदि की ध्वनियाँ लाभदायी हैं। प्राचीन काल के पूर्वज यह विश्वास करते थे कि "शब्द ब्रह्म एक सेतु है, जिसका संबंध सभी वस्तुओं से है।" आज का विज्ञान भी अब यह कहता है कि "प्रत्येक वस्तु जो प्रकृति के अन्तर्गत है वे सभी एक कम्पन में स्पन्दित होने वाली तरंगें हैं।"

दूरवर्ती वातावरण को प्रभावित करने की प्रक्रिया

सामान्यतया आवाज एक सीमित दूरी तक ही सुनाई पड़ती है। जैसे-जैसे दूरी बढ़ती जाती है, ध्वनि भी घटती या समाप्त होने लगती है। यही बात गर्मी के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। वह समीपवर्ती क्षेत्र को गरम करती है। निकट रहने पर ताप अधिक होता है और दूर हटने पर गर्मी भी घटते लगती है।

किन्तु विशेष उपाय उपचारों के माध्यम से आवाज, गर्मी, रोशनी आदि को भी दूर-दूर तक भेजा जा सकता है। तार, रेडियो, टेलीविजन आदि उपकरणों द्वारा यह तथ्य निरन्तर सामने आता रहता है। रेडियो स्टेशन से प्रसारित हुए शब्द सम्वाद क्षण भर में सहस्रों मील की यात्रा करते हुए कहीं से कहीं जा पहुँचते हैं। बिजली के तारों द्वारा गर्मी-रोशनी भी कहीं से कहीं पहुँचाई जा सकती हैं।

अब इस सन्दर्भ में कुछ नये आविष्कार सामने आये हैं। किसी स्थान से प्रसारित तरंगें किसी विशेष क्षेत्र में भेजी जा सकती हैं और वे वहाँ रहने वालों के मस्तिष्कों में इच्छित उथल-पुथल पैदा कर सकती हैं। अभी तक यह प्रयोग मात्र किन्हीं को रुग्ण या विक्षिप्त बनाने के सम्बन्ध में किये जाते रहे हैं। उसे शत्रु पक्ष की कार्यक्षमता नष्ट करने में मनःस्थिति विकृति के काम में लाया गया है, पर इस आधार पर यह सम्भावना भी बनती है कि यह प्रयोग उत्कर्ष और समाधान के हितकर एवं उच्चस्तरीय उद्देश्यों के लिए किया जाय तो उससे श्रेष्ठ स्तर का प्रयोजन भी सध सकता है। अभी प्रयोग किस निमित्त हुआ, इस पर अधिक ध्यान न देकर सोचना यह चाहिए कि इस माध्यम को श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिए नियोजित करने से कल्याणकारी प्रयोजनों की पूर्ति भी तो हो सकती है।

कुछ समय पूर्व संसार भर के अखबारों में एक ऐसी रूसी आविष्कार का समाचार छपा था जिसमें एक विशेष प्रकार की रेडियो किरणों द्वारा कनाडा के उत्तरी भाग में बसे व्यक्तियों के मस्तिष्कों को ध्वनि आवृत्ति के माध्यम से अक्षम बना देने की चर्चा थी।

यह शिकायत कनाडा ने अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर उठाई। इस राष्ट्र के कई क्षेत्रों में ऐसा महौल बना कि हर आदमी उदासी से ग्रसित हो गया। अपने को अस्वस्थ और अक्षम अनुभव करने लगा। इन लोगों की अपने दैनिक कार्य निपटाने की क्षमता भी घट गई और कारखानों-दफ्तरों में नियत समय पर न पहुँच कर गैरहाजिर रहे।

कनाडा के दो खदान नगरों के श्रमिकों पर लगातार कई दिन तक यह शामत छाई रही। अधिकांश काम पर गये ही नहीं। जो गये वे अपनी ड्यूटी सही तरह देने के स्थान पर कुछ का कुछ करने लगे। सिर दर्द, अनिद्रा, थकावट, बेचैनी, मितली, उदासी उन पर बेतरह छाई रही। कुछ को चित्र-विचित्र आवाजें कानों में सुनाई पड़ती रहीं।

एक साथ लाखों लोगों का एक ही प्रकार की विपन्न मनोदशा से ग्रसित हो जाना, आश्चर्य की बात थी। कनाडा ने अनुमान लगाया कि यह रूस द्वारा छोड़ी गयी किसी रेडियो विकिरण की तरंगों का प्रभाव है। यों इसके पक्ष में प्रमाण प्रस्तुत कर सकने, जैसा कुछ उसके पास नहीं था। फिर भी अनुमान ने अफवाह का रूप धारण किया और वह संसार भर के समाचार पत्रों में छपा। ऐसा हो सकने की सम्भावना पर अनेक अनुमान लगाये गये और वैज्ञानिक तर्क प्रस्तुत किये गये।

एक बार ऐसी ही शिकायत अमेरिका ने भी की थी। उत्तर-पश्चिम के एक क्षेत्र अलास्का पर रूस ने ऐसा ही प्रयोग परीक्षण किया है। एक बार दोनों देशों में इसी कारण तनाव बढ़ गया व युद्ध की-सी स्थिति आ गयी थी।

इस सन्दर्भ में कहा जाता है कि शत्रु क्षेत्र को निष्क्रिय बनाने के लिए इस प्रकार की रेडियो तरंगों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयोग परीक्षण बहुत समय से चला आ रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति लिण्डन जानसन के समय में भी वहाँ ऐसा ही आविष्कार होने की चर्चा छपी थी। चौकन्न होकर रूस भी उस दिशा में मुड़ा और एक ऐसे अस्त्र का अन्वेषण करने में जुट गया जिससे किसी क्षेत्र विशेष के सैनिकों व नागरिकों को अस्थायी रूप से शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से अक्षम बना दिया जाय। वे साहस खो बैठें, अस्वस्थता अनुभव करें और आत्मसमर्पण की बात सोचें। उत्साह और साहस गिर जाने पर—शरीर और मस्तिष्क के साथ न देने पर प्रायः ऐसी ही स्थिति हर किसी की हो सकती है।

अब तक के युद्ध आयुधों में यह सबसे कम हानिकारक हथियार है। बड़े युद्धों में धन जन की तात्कालिक हानि तो होती ही है, उससे भी बड़ी समस्या होती है अपंगों और अनाथों के निर्वाह की। नष्ट-भ्रष्ट इमारतें तथा कारखाने फिर खड़े करने की। यह सब युद्ध से भी मँहगा पड़ता है। प्रस्तुत रेडियो विकिरण के आधार पर यह हो सकता है कि शत्रु पक्ष को अस्थायी रूप से असमर्थ बना दिया जाय। आत्मसमर्पण को पूरा करा लिया जाय। इसके उपरान्त उन्हें निर्वाह योग्य स्थिति में रहने देकर उस झंझट से बचा जाय जो युद्धोपरान्त की समस्याओं के रूप में संकट बनकर सामने आते हैं। अस्तु इस अस्त्र को सामान्य होते हुए भी असामान्य महत्व का माना जा रहा है और उसके प्रहार से बचने या लाभ उठाने के लिए सभी पक्ष चौकन्ने हैं।

इस गुप्त अस्त्र के बारे में कहा गया है कि आविष्कृत तरंगें रेडियो स्तर की तो हैं, पर हैं उससे सर्वथा भिन्न। यह वेरी हाई फ्रीक्वेन्सी-अल्ट्रा हाई फ्रीक्वेन्सी—माइक्रो-फ्रीक्वेन्सी एवं रेडार टेलीविजन तरंगों से भी भिन्न है। वे बिना मध्यवर्ती परावर्तकों के भी किसी भी वांछित क्षेत्र पर सीधी फेंकी जा सकती हैं।

रेडियो तरंगों में यह कठिनाई है कि वे किसी ट्रान्जिस्टर जैसे माध्यम से ही पकड़ी जा सकती हैं। वह माध्यम न हो तो फिर प्रसारणों को सुन सकना कठिन है किन्तु यह बात इन नवीन आविष्कृत तरंगों के सम्बन्ध में नहीं है। उन्हें मानव मस्तिष्क की विद्युतीय क्षमता एवं तरंगों की आवृत्ति से तालमेल बिठाते हुए इस प्रकार का बनाया गया है कि जिस क्षेत्र विशेष में वे पहुँचे वहाँ के सभी निवासी इन्हें अनिच्छुक होते हुए भी अपनाने के लिए बाधित हों। रेडियो का बटन बन्द करके उसकी आवाज बन्द की जा सकती है, किन्तु मस्तिष्क को ऊपर चढ़ाने योग्य ऐसा कोई आवरण नहीं खोजा जा सका जो इन प्रेरित तरंगों के आक्रमण से बचाव कर सके।'

यह तरंगें क्या हो सकती हैं, इस सम्बन्ध में लॉसऐन्जल्स के विकिरण विशेषज्ञ जोसेफ टॉड ने कहा है कि यह इन्फ्रा रेडियो स्तर की तरंगें हैं और किसी भी क्षेत्र को हल्के रूप में अथवा पूरी तरह अशक्त तथा अक्षम बना सकता है। वे कम समय के लिए अथवा सर्वदा के लिए ऐसे रोग उत्पन्न कर सकती हैं जिनसे मनुष्य जीवित रहने पर भी कोई बड़ा पुरुषार्थ न कर सके।

मनुष्य शरीर एक समूची वैज्ञानिक प्रयोगशाला के समान है। उसमें प्रकृति को प्रभावित करने वाले सभी उपकरण भली-भाँति सुसज्जित हैं। वैज्ञानिक प्रयोजनों के लिए जो उपकरण काम में लाये जाते हैं वे सभी प्रसुप्त स्थिति में मानवी काय-कलेवर के अन्तर्गत विभिन्न शक्ति संस्थानों में विद्यमान हैं।

महामानवों ने समय-समय पर अपनी प्रचण्ड शक्ति से वातावरण बदला है और लोक चिन्तन के प्रवाह को आश्चर्यजनक मोड़ दिया है। सम्पर्क क्षेत्र के व्यक्तियों को परामर्श एवं दबाव से सुधारे बिगाड़े जाने की बात सभी जानते हैं। उसी जानकारी में यह तथ्य भी सम्मिलित किया जाना चाहिए कि दूरवर्ती कुछ लोगों को ही नहीं, व्यापक क्षेत्र के निवासियों को भी दिशा विशेष में चलने बदलने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है।

मनस्वी महामानवों में यह शक्ति पुरातन काल से प्रखर रही है अब उस शक्ति को फिर से उभारने की आवश्यकता है ताकि बिगड़े हुए लोक चिन्तन को सुधारा और सत्प्रयोजन के लिए उभारा जा सके। रूस के आविष्कारक क्षेत्र विशेष के लोगों को जिस आधार पर अस्त-व्यस्त करने में एक सीमा तक सफल हुए हैं, उसी आधार पर मानवी सत्ता की समर्थ प्रयोगशाला में लगे उपकरणों द्वारा व्यापक क्षेत्र के जनमानस को सुधारा सम्भाला भी तो जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शब्द शक्ति की प्रभावोत्पादकता : संदेह से परे !

भौतिक जगत में अनेकानेक शक्तियाँ हैं, जिनमें मान्यता प्राप्त पाँच हैं। ये हैं—विद्युत, ताप, प्रकाश, चुम्बकत्व एवं ध्वनि। कहा गया है व दैनन्दिन जीवन में देखा भी जाता है कि ये परस्पर एक दूसरे में बदल भी जाती हैं । सृष्टि का एक शाश्वत नियम है कि शक्ति कभी नष्ट नहीं होती, एक ऊर्जा मात्र दूसरी ऊर्जा में बदल जाती है।

जब हम चेतन जगत की चर्चा करते हैं, तो पाते हैं कि ब्राह्मी चेतना के मूल में भी एक ही शक्ति सक्रिय है, जो भिन्न-भिन्न रूपों में चेतन घटकों में गतिशील देखी जाती है। यह मूलभूत शक्ति है—शब्द की। यह चेतना क्षेत्र का ईंधन है, जो परोक्ष जगत में सक्रिय हो प्रगति हेतु मूलभूत भूमिका निभाती देखी जा सकती है। शब्दशक्ति—ध्वनिऊर्जा—अनहत नाद—शब्द एवं नाद ब्रह्म—इन सब नामों से इसे जाना जाता है। इसके कई रूप हैं, किन्तु जो प्रत्यक्ष है, वह वैखरी वाणी—प्रत्यक्ष वार्तालाप के रूप में दैनिक जीवन में नित्य गतिशील देखी जा सकती है। इसी की भली व बुरी प्रतिक्रियाएँ भी देखी जा सकती हैं। वाणी सत्परामर्श के रूप में भी प्रयुक्त हो सकती है, शिष्ट हास्य के रूप में भी व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति तथा कुमार्ग पर चलने की प्रेरणा के रूप में भी। शब्द एक से होते हुए भी उनकी प्रतिक्रिया इस आधार पर भिन्न हो सकती है कि उन्हें किस स्तर के व्यक्ति ने किस भाव से कहा ?

उत्साह और प्रेरणा के दो शब्द रणक्षेत्र में जा रहे सैनिकों में नये प्राण फूँक देते हैं। द्रौपदी द्वारा कौरवों के प्रति व्यंग्य में कही गयी एक पंक्ति महाभारत की विभीषिका रच सकती है। अच्छे खासे साहसी व हट्टे-कट्टे व्यक्ति का मनोबल मात्र दो शब्द गिरा सकते हैं। शब्दों में वस्तुतः चमत्कारी शक्ति भरी पड़ी है। यह मात्र इस बात पर निर्भर है कि किसने इस सामर्थ्य का कितना, किस रूप में, किस उद्देश्य के लिए सुनियोजन किया। शाप और वरदान इस शब्द शक्ति के ही दो चमत्कारी रूप भर हैं।

वैज्ञानिकों के अनुसार वाणी और ध्वनि के लिए मनुष्य के मस्तिष्क में ५० से ६० प्रतिशत स्थान सुरक्षित है। लेखन व हाथ की अन्य क्रियाओं को दूसरा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। ये क्रमशः "ब्रोकाक" क्षेत्र तथा हाथ का कर्म क्षेत्र कहलाते हैं। यह प्रतिनिधित्व एनाटामी की दृष्टि से है, किन्तु क्रिया की दृष्टि से यह अनुपात रूप में अच्छा खासा महत्वपूर्ण स्थान घेरे बैठा है।

पुरुषार्थ और साहस जब व्यक्ति की वाणी से अभिव्यक्ति लेते हैं तो गजब कर दिखाते हैं। सुभाषचन्द्र ने जब कहा "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा," तो एक बड़ा जन समुदाय उनके पीछे हो लिया। "नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था—आल्प्स पर्वत यदि तू मेरा रास्ता रोकेगा, तो तुझे चीर कर यह नेपोलियन आगे बढ़ जायगा।" इन शब्दों के पीछे पुरुषार्थ की शक्ति थी।

लोकमान्य तिलक ने कहा—"आजादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे।" इन क्रान्तिकारी शब्दों के पीछे मात्र नारा नहीं व्यक्ति का परम पुरुषार्थ ही बोलता है और उसी का प्रभाव जनता पर पड़ता है। यही शक्ति अन्तः के प्रसुप्त सामर्थ्य को उभारती, मनस्विता को जगाती एवं उसे चमत्कारी महामानव बनाती है। इंग्लैण्ड के सम्राट् पंचम का भारतीय ब्रिटिश सरकार को निर्देश था कि उनका कोई वायसराय या उच्च अधिकारी महात्मा गाँधी से आमने-सामने न मिले। उनकी आँखों के तेज से फिरंगी डरते थे। उन्हें भय था कि कुल ९६ पौण्ड का दुबला-पतला किन्तु मनस्वी महापुरुष कहीं हिप्नोटाइज कर किसी उच्चाधिकारी को अपने पक्ष में न कर ले। कार्यालय से केवल पत्र ही उनके नाम भेजे जाते थे, क्योंकि उनकी आत्मशक्ति का तेज उनके बिना बोले भी सामने वाले व्यक्ति को प्रभावित करता था।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब इंग्लैण्ड की पराजय हुई, तो वहाँ के तत्कालीन प्रधानमन्त्री चर्चिल ने टूटे मनोबल को बढ़ाने के लिए एक नया नारा दिया "वी फार विक्ट्री" इस नारे को उन्होंने बड़े पैमाने पर दीवारों, पाठ्य-पुस्तकों, पोस्टरों पर लिखवाया और प्रचारित किया था। फलतः इसका प्रभाव भी अनुकूल साबित हुआ।

नेपोलियन के जीवन की एक घटना है। उनकी लगातार पराजय हो रही थी। सैनिकों के मनोबल बुरी तरह टूट चुके थे। इस पर नेपोलियन ने एक युक्ति निकाली उन्होंने अपने सैनिकों को इकट्ठा किया और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा—आओ, अपने आराध्य देव से पूछें कि इस बार हमारी जीत होगी या नहीं। पूछने का तरीका सिक्का उछालने का रखा गया। उन्होंने सैनिकों से बताया कि यदि हैड निकला, तो इसमें देव की सहमति जीत की होगी और यदि टेल निकली तो इसका अर्थ पराजय होगा। सिक्का उछाला गया। हैड को देख कर सैनिक प्रसन्न हो उठे। दूसरी बार पुनः सिक्का उछाला गया। इस बार फिर हैड निकला। इससे सैनिक खुशी से उछल पड़े। उन्हें यह दृढ़ विश्वास हो चुका था कि देव वाणी मिथ्या नहीं हो सकती। सब युद्ध के लिए निकल पड़े और सचमुच इस बार उनकी विजय हुई। युद्ध के बाद इस विजय का रहस्योद्घाटन करते हुए नेपोलियन ने सैनिकों से कहा—"इसमें न तो देवता का कोई आशीर्वाद था, न भविष्यवाणी जैसी कोई बात। वस्तुतः यह उस देव-वाणी का ही परोक्ष प्रभाव है, जिसने जीत की बात कर सैनिकों को उत्साहित किया और उनका मनोबल बढ़ाया।" इसके बाद नेपोलियन ने सिक्का दिखाते हुए कहा—यह ऐसा सिक्का है, जिसमें दोनों ओर ही हैड बने हुए हैं। टेल इसमें है ही नहीं। यह देख सैनिक आश्चर्य में पड़ गये। उन्हें सही अर्थों में वाणी की सामर्थ्य का असर इसके बाद मालूम पड़ा।

शब्द शक्ति माहात्म्य के कई प्रसंग आर्ष वाङ्मय में भी देखने को मिलते हैं। एक घटना राजा दशरथ से संबंधित है। महाराज दशरथ पुत्रेष्ठि यज्ञ कराना चाहते थे। यज्ञ संचालन कार्य पारंगत कुलगुरू वशिष्ठ जी ने स्वयं न लेकर श्रृंग ऋषि को अनुरोध पूर्वक दिया। उनकी परिमार्जित वाक्शक्ति का प्रभाव था, कि दशरथ का यज्ञ सफल हुआ और राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन, जैसे चार पुत्रों की प्राप्ति हुई। सुपात्र द्वारा प्रयुक्त वाणी की शक्ति में ही वह बल होता है, जो किसी भी महान प्रयोजन को पूरा कर दिखाता है। इन्हीं श्रृंगी ऋषि की वाणी में शाप देने की भी शक्ति थी। राजा परीक्षित आखेट करते हुए एक बार जंगल में घूम रहे थे, ध्यानस्थ लोमेश ऋषि से रास्ता पूछने लगे। कोई उत्तर न पाकर खीज उठे तथा एक मरा हुआ साँप उनके गले में डालकर आगे बढ़ गये। जब उनके पुत्र श्रृंगी ऋषि ने अपने पिता का यह अपमान देखा तो शाप दिया—जिस किसी ने भी यह अपमान मेरे पिता का किया है, हे सर्प! तू जाकर उसे डस ले इतना कहते ही तक्षक जी उठा और चल दिया अपने निर्देशित लक्ष्य को पूरा करने। सातवें दिन उसने राजा को काट खाया। यहाँ मरे साँप के जीवित होने की या अनजान को पहचानने की कहानी नहीं कही जा रही, वरन् प्रयुक्त किये इन वाक्यों के पीछे उस ऋषि की प्रचण्ड शब्द शक्ति का प्रभाव बतलाया जा रहा है जिसकी वाणी से वरदान और अभिशाप दोनों निकले और फलीभूत हुए थे।

शब्दों का स्थूल उपयोग भाषा में है। ज्ञान और अनुभव के आदान-प्रदान में वार्तालाप में सत्यता, नम्रता और शिष्टता का अपना प्रभाव है और कटुता या स्वार्थपूर्ण वार्ता का अपना। वस्तुतः वाक् ऊर्जा एक प्रकार का ऐसा शक्तिशाली ईंधन है जो शरीर के सूक्ष्म शक्ति केन्द्रों को प्रभावित करता है। जप जैसे कृत्यों में शब्दों का प्रभाव षट्चक्रों तथा ग्रन्थियों के सूक्ष्म संस्थानों पर भी पड़ता है एवं मन और आत्मा की शक्तियों का विकास करता है, दूसरी ओर बनावटी, स्वार्थी और कपटपूर्ण शब्दों का अभ्यास अन्तःकरण पर मलीनता की पर्त चढ़ाता है।

यह भलीभाँति समझा जाना चाहिए कि वाणी एक महत्वपूर्ण सामर्थ्य है, जो परिशोधित होने पर अमृत बन सकती है और विकृत होने पर विष का भी काम कर लेती है। शोधित वाणी ही वस्तुतः वाक् शक्ति है—जो इस तथ्य को हृदयंगम करते और तदनुरूप प्रयास अभ्यास करते हैं, वही हर क्षेत्र में सहयोग-सहकार अर्जित कर पाते हैं। इसके लिए स्थूल परिमार्जन और बाह्य अनुशासन ही आवश्यक नहीं है, आन्तरिक और सूक्ष्म परिष्कृत भी अनिवार्य है, तभी वाणी में वह बल पैदा हो सकता है, जो महामानवों और महापुरुषों में दिखाई पड़ता है।

सात्विक शब्दों की प्रचण्ड शक्ति

आधुनिक मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि जो-जो शब्द जानकर या अनजाने में अपने ही मुख से उच्चारण करते हैं, वे हमारे जीवन, हमारी आदतों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। मनुष्य अनजाने में कुछ न कुछ बोलता रहता है। किन्हीं शब्दों का प्रयोग कर बैठता है। कुछ ही कह देता है, पर हम यह नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझते कि हमारे इन शब्दों में जीवन को बनाने या बिगाड़ने की शक्ति छिपी हुई है। शब्दों के दो रूप हो सकते हैं, शुभ और सात्विक शब्द जैसे "महाशय, देवियों" महाराज, बन्धुवर, महात्मा, प्रियवर, राम, कृष्ण, हरि, ओऽम् इत्यादि। दूसरी ओर अशुभ और कुत्सित शब्द जैसे दुष्ट, राक्षस, पापात्मा, बदमाश, शरारती तथा असंख्य गालियाँ। हम नहीं जानते कि दैनिक जीवन में किस वर्ग के शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं तथा उनका क्या प्रभाव होगा?

स्मरण रखिए आपके मुख से निकलने वाला हर एक शब्द, प्रत्येक स्वर, (चाहे उसका कुछ भी अर्थ हो) हमारे समग्र शरीर को चलायमान कर देता है। हमारी सूक्ष्म नाड़ियाँ झंकृत हो उठती हैं। हमारे मुखमण्डल के अवयव विशेष रूप से तनते या ढीले पड़ते रहते हैं। हमारे ओष्ठ हिलते हैं, पर साथ ही हमारे नेत्र, हमारे कपोल, हमारा मुखमण्डल एक विशेष तरह से देदीप्यमान हो उठता है।

प्रत्येक शब्द के साथ भावों और नाना अर्थों का एक विपुल संसार जुड़ा हुआ है। जब हम अपना प्रिय शब्द बोलते हैं, तो गुप्त रूप से उससे संयुक्त समस्त भाव, विचार, कथाएँ और प्रभाव हमारे शरीर में एक बार ही घूम जाते हैं। उनसे हमें गुप्त आत्मिक बल मिलता है। जब महात्मा गान्धी जी को गोली लगी तो उनके मुख से "हे राम!" शब्द निकले और वे इन शब्दों के साथ धड़ाम से पृथ्वी पर ढेर हो गये। इन शब्दों का उच्चारण कर गाँधी जी ने गुप्त आत्मिक शक्ति का अनुभव किया था। हिन्दू सेनाएँ "महावीर हनूमान की जय" बोलकर अनेक युद्धों में विजय प्राप्त करती रही हैं। अनेक व्यक्ति "शिव" का प्रयोग करते हैं। कुछ "हरिकृष्ण" शब्द बोलते हैं, कुछ "राधाकृष्ण" कहते हैं। हिन्दू देवी-देवताओं के नाम बोल-बोलकर भारतीय जनता प्राचीन काल से शक्ति संग्रह करती चली आई है। "सत्यनारायण देगा, गुरू रक्षा करेगा, सत्य श्री अकाल, प्रभु देगा" आदि-आदि अनेक शब्द हम दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं। प्रत्येक शब्द के साथ संयुक्त विचार गुप्त मन में भर जाते हैं।

इन सात्विक शब्दों के उच्चारण से, एक शक्तिशाली पवित्र विचारधारा और शुद्ध सात्विक भाव हमारे मानसिक जगत् में फैल जाते हैं। पूरा मानसिक वातावरण उसी स्वर और विचार से आच्छादित हो उठता है। शरीर का अणु-अणु उसी शब्द से काँप उठता है, उसी के अनुसार नए सिरे से ढलने लगता है।

आप कोई शब्द पूरे विश्वास से उच्चारण कीजिए और साथ ही दर्पण में अपने मुख की आकृत्ति भी देखिए। उस शब्द के उच्चारण से आपके मुख पर क्या क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं? आप पायेंगे कि उस शब्द के भाव या अर्थ के अनुसार ही आपकी आकृति भी बनती बिगड़ती जा रही है। जैसे ही क्रोध, आवेश, गाली-गलौज या कुत्सित उत्तेजना का कोई शब्द आपके मुख से निकलता है, वैसे ही आपका मधुर चेहरा तन जाता है, ओठ काँपने लगते हैं, सम्पूर्ण शरीर में अजीब थरथराहट सी उत्पन्न हो जाती है, नेत्र लाल होकर चढ़ जाते हैं। इन बाहरी परिवर्तनों के अलावा शरीर के अन्दर समग्र मानसिक जगत् में अजीब कोलाहल, कसक और तेजी पैदा हो जाती है। जितनी देर तक क्रोध के ये कटु शब्द मुख से निकलते रहेंगे, उतनी देर तक आन्तरिक मानसिक संस्थान में भी सर्वत्र भयंकरता छाई रहेगी। वैसी ही कटु और अस्थिर अन्तर स्थिति बनती जायगी। आपका हृदय क्रोधाग्नि में फुँकने लगेगा। दिल की धड़कन बढ़ जायेगी। शरीर में गर्मी, खुश्की और वायु का प्रकोप प्रतीत होगा। देर तक क्रोध के शब्दों का उच्चारण करने से सिर में भारीपन आ जायेगा और कमर में दर्द रहने लगेगा।

बुरे शब्दों के उच्चारण से मानसिक बीमारियाँ

स्वर विज्ञान बतलाता है कि बुरे, कटु, अशुभ और वासना-मूलक गन्दे शब्दों की जड़ें मनुष्य के गुप्त मन में बैठ जाती हैं। जो व्यक्ति गाली देते हैं, उनकी अश्लीलता उनके गुप्त मन में मौजूद रहती है। दीर्घकाल से मन में जमी हुई वासना का मैल ही इन कुशब्दों और गालियों से बार बार निकला करता है।

प्रत्येक शब्द एक प्रकार का विचार बीज है। जो शब्द मन में एकबार जम जाता है, वही धीरे-धीरे अपने गुण रूपी अंकुरों को चारों ओर फैलाया करता है। ये जड़ें पुनः-पुनः वही शब्द बोलने या व्यवहार में लाने से बढ़ पनप कर वृक्ष बन जाती हैं। पहले आदमी इन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

शब्दों (विशेष रूप से गालियों) का अर्थ नहीं समझता, पर धीरे-धीरे यह शब्द ही अच्छे या बुरे फल प्रकट करते हैं।

जो व्यक्ति या असभ्य जातियाँ मुँह से कुशब्द, गालियाँ, क्रोध और घृणा सूचक कुशब्दों का उच्चारण किया करते हैं, उनके बच्चों के चरित्रों को नीचे गिराने में इन कुशब्दों का विशेष हाथ होता है। बच्चा तो कोमल दूध के समान निष्कपट स्वच्छ मन का होता है। वह जो अश्लील या गन्दे शब्द अपने माँ बाप, पास पड़ौस या निकट वातावरण से सुनता है, वह उन्हें ही उचित समझ कर ग्रहण कर लेता है। बड़ा होने पर इन्हीं शब्दों का गन्दा तात्पर्य समझ कर उधर ही ढुलक उठता है। इन्हीं शब्दों के अनुसार उनके जीवन ढलने लगते हैं और वे सदा के लिए पतन के मार्ग पर पड़ जाते हैं।

मनोविज्ञानवेत्ता बतलाते हैं कि प्रत्येक बोला हुआ शब्द गुप्त मन पर प्रबल संस्कार छोड़ता है। उस संस्कार से वातावरण बनता है। यह वातावरण जीवन का निर्माण करता है। अतः हमारी जिह्वा से निकलने वाले शब्दों का जीवन में भारी महत्व है। शब्द ही मनुष्य के भाग्य-निर्माता हैं। अच्छे शब्द, प्रेरक शब्द, धर्म भावनाओं और पवित्र संकल्पों से भरे हुए शब्द संसार-संघर्ष में सफलता या विफलता देने वाले हैं।

मधुर शब्द जीवन को सरस या नीरस बनाता है। धार्मिक और वेद के वाक्यों से नूतन विचारों, भव्य भावनाओं और उन्नत संस्कारों की उपलब्धि होती है।

प्रेरक शब्द से मनुष्य कठिनाइयों और उत्तेजना के अनेक क्षणों में विजय पाने में समर्थ हुआ है। विचारकों, महर्षियों, महान् कवियों, धर्मोपदेशकों और महापुरुषों के शब्द अनेक व्यक्तियों के जीवन में नया मोड़ उत्पन्न करने वाले होते हैं। शब्द (अर्थात् यह विपुल साहित्य) ही संग्रहीत न रहें, तो मनुष्य जाति में जो श्रेष्ठ है, वही लुप्त हो जाये। तम के निगूढ़तम क्षणों में भव्य शब्दों द्वारा प्रकाश की अभिनव प्रभा का उदय होता है।

शब्द साधना से सुप्त मानवीय शक्तियाँ जागती हैं। मनुष्य में नई शक्ति और अद्भुत सामर्थ्य का उदय होता है। निष्प्राण जैसे व्यक्ति में नई जान और नई आशा का विकास होता है। कालिदास प्रारम्भ में मूढ़ थे, पर मार्मिक शब्दों ने ही नए ज्ञान का उद्रेक किया था। भारतीय मनीषियों ने इसी मनोवैज्ञानिक तथ्य को आधार मान कर मन्त्र-विज्ञान नामक प्रक्रियाओं को जन्म दिया है। भारतीयों के मुख से निकलने वाले मन्त्र वास्तव में कुछ ऐसे चुने हुए सशक्त, सप्राण और प्रखर शब्द हैं, जो अपना विशेष अर्थ रखते हैं। हमारे आचार्यों ने ये शब्द बड़े अनुभव और ज्ञान के बल पर बनाये हैं और जीवन भर का सारा निचोड़ थोड़े से शब्दों में भर दिया है। मन्त्रों में प्रयुक्त शब्दों का साकार हो जाना, जीवन में पूरी तरह उतर आना और जीवन का उन्हीं के अनुसार चलने लगना मन्त्र सिद्धि होना कहा जाता है। जो इन मन्त्रों की सिद्धि कर लेता है, भारतीय पद्धति के अनुसार उसके जीवन का कायापलट हो जाता है।

यदि मन्त्र विज्ञान को छोड़ भी दिया जाय तो भी सामान्य स्वरों का शरीर और मन पर पड़ने वाले प्रभावों को दैनिक जीवन में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। शब्दोच्चारण में प्रत्येक व्यंजन के साथ किसी स्वर का संयोग होता है। स्वरों की रचना हमारे सूक्ष्मदर्शी ऋषियों ने ऐसी दूरदर्शिता के साथ की है कि उसका प्रभाव हमारे शरीर और मन पर बड़ा ही उत्तम होता है। संसार की अन्य किसी भाषा की अपेक्षा भारतीय भाषा में यह विशेषता है कि इस भाषा को बोलने से एक प्रकार का सूक्ष्म योगिक व्यायाम होता चलता है जिसके कारण बोलने वाले के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ता है। ऐसी ही विशेषताओं के कारण भारतीय भाषा को देव भाषा कहा जाता है। नीचे स्वरों संबंधी विशेषताएँ दी जाती हैं।

'अ'—का उच्चारण कण्ठ द्वारा होने से हृदय पर प्रभाव पड़ता है, अतएव जितनी बार 'अ' का उच्चारण किया जायेगा, उतनी ही बार हृदय का संचालन शीघ्रता के साथ होगा। शरीर में रुधिर शुद्ध होने की क्रिया हृदय में ही होती है, क्योंकि किसी विकृत अंग के लिये जो रुधिर जाता है, उसके भेजने वाला हृदय ही है। यदि यह रुधिर उस विकृत अथवा रोगी अंग में पहुँचने के पूर्व शुद्ध कर दिया जाय, तो उसका प्रभाव यह होगा कि रोग दूर हो जायेगा। इसके विपरीत यदि अशुद्ध अथवा दूषित रुधिर को शरीर में दौड़ने दिया जाये, तो विकृत अथवा रोगी अंग अच्छा होने के बजाय और अधिक रोगी हो जायगा। 'अ' स्वर प्रत्येक अक्षर में

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शुद्ध रक्त का संचार करता है। मन्त्र-शास्त्र में 'अ' स्वर रचनात्मक शक्ति-सम्पन्न माना गया है।

'आ'—स्वर के उच्चारण से फेफड़े के ऊपरी भाग तथा सीने पर प्रभाव पड़ता है। वह ऊपरी तीन पसलियों को बलवान बनाता, खाना ले जाने वाली नली की शुद्ध, दिमाग को संचालित, आलस्य का दूर तथा फेफड़ों को उत्तेजित करके उनके ऊपरी भाग को शुद्ध करता है। इसके अभ्यास से दमा और खाँसी के रोग अच्छे होते हैं। इस स्वर का अभ्यास उन लोगों को तो अवश्य ही करना चाहए, जिन्हें क्षयी रोग होने की सम्भावना हो और जो झुककर अंधेरे में काम करते हैं।

'इ'—'ई'—के लम्बे उच्चारण का प्रभाव गले व मस्तिष्क पर पड़ता है। इसके उच्चारण से गले, तालू, नाक और दिल के ऊपरी भाग की क्रिया विशेष रूप से उत्तेजित होती है। श्वासेन्द्रिय का कफ, बलगम एवं आँतों में जमा हुआ मल निकल कर इन अंगों की सफाई हो जाती है। इसका प्रभाव शरीर के ऊपरी भाग पर भी पड़ता है और सिर दर्द तथा दिल के रोगों के लिये लाभदायक है। विशेष कर ऐसे लोगों पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ता है, जो उदास वृत्ति और क्रोधी स्वभाव के होते हैं।

'उ'—'ऊ'—का प्रभाव जिगर, पेट और अन्तड़ियों पर पड़ता है ओर पेडू के भार को कम करता है। जो स्त्रियाँ पेडू के निम्न-भाग के रोग से पीड़ित रहती हैं, उन्हें 'उ-ऊ' के उच्चारण से बड़ा लाभ होता है। कितने ही दिनों का कठिन कब्ज क्यों न हो, इसके द्वारा दूर किया जा सकता है। यह स्त्रियों की कोख के लिये भी बहुत उपयोगी है।

'ए'—'ऐ'—के उच्चारण का प्रभाव गले और श्वास-नलिका के उद्भव स्थान पर पड़ता है और गुर्दे को उत्तेजित करता है। इसका बारम्बार का उच्चारण मूत्र सम्बन्धी सब रोगों को दूर तथा पेशाब उतारने की औषधि का काम करता है। इस स्वर के प्रयोग का लाभ विशेष रूप से गाने वालों, अध्यापकों तथा अधिक देर तक बोलने वालों को होता है और नलियों के अन्दर की लुआबदार झिल्ली को स्वस्थ बनाता है।

'ओ-औ'—का प्रभाव उपस्थेन्द्रिय और जननेन्द्रिय पर होता है और वह उसको स्वाभाविक रूप से काम करने में सहायता देता है। जब इसके उच्चारण का अच्छा अभ्यास हो जायेगा तब यह अनुभव होगा, कि जो आँतें तथा नसें सुस्त थीं, वह खुल कर स्वाभाविक कार्य करने लगी हैं। यह सीने के मध्य भाग को उत्तेजित करता है और निमोनिया तथा प्लुरेसी के लिये बहुत लाभदायक है।

'अं'—के उच्चारण से नासिका द्वारा ली हुई साँस के साथ जो ऑक्सीजन या प्राणावायु शरीर के भीतर जाता है, वह दूषित रुधिर को शुद्ध तथा लाल बनाता है। नासिका द्वारा साँस लेने में नासिका और श्वास नलिका काम में आती हैं, इसलिये इन अंगों को विकार रहित एवं निरोग होना अत्यावश्यक है, और इसी अभिप्राय से हमारे महर्षियों ने प्रत्येक बीज मन्त्र के अन्त में 'म्' अथवा अनुस्वार को रखा है तथा उसका देर तक लम्बा उच्चारण करना बतलाया है। स्वरों के उच्चारण करने में मुख खुलता है और अनुस्वार या 'म्' के उच्चारण को ओष्ठ बन्द हो जाते हैं। मानो प्रथम स्वरों के उच्चारण द्वारा शरीर के समस्त विकारों को दूर कर 'म्' द्वारा ओष्ठरूपी किवाड़ बन्द कर लिये जाते हैं, जिससे वह विकार पुनः प्रविष्ट न हो सके।

'अः'—का उच्चारण जिह्वा तथा तालू के अग्रभाग को छूता है, जिसका प्रभाव यह होता है कि मस्तिष्क में संचालन उत्पन्न होने से एक प्रकार का रस स्रवित होता है, जो कि कण्ठ द्वारा भीतर जाकर शरीर के सब विकार दूर करता है। सीने और गले में उत्तेजना होती है और वह सबल और पुष्ट बनते हैं।

इस प्रकार यह स्वर शरीर के हृदयादि मुख्य अंगों को संचालित और उत्तेजित कर रुधिर को शुद्ध कर समस्त विकारों को दूर कर देते हैं। जब नाड़ियाँ और इन्द्रियाँ रुधिर के तीव्र संचार के कारण अपना-अपना काम स्वाभाविक रूप से करने लग जाती हैं, तब वह केवल बाह्य रूप से रूप, स्वरूप, आकार-प्रकार तथा बल में ही उन्नति को प्राप्त नहीं होती, बल्कि आन्तरिक गुणों में सहिष्णुता और रोगनाशक शक्ति में भी उन्नति करती हैं और साथ-साथ आध्यात्मिक विषय में भी प्रवृत्ति होती है।

शब्द की महान शक्ति

प्रोफेसर डाबसन बहुधा कहा करते थे और अनेक विद्वानों का भी विश्वास है कि मनुष्य की प्राकृतिक और प्रारम्भिक बोली पद्य है, गद्य नहीं। इसके समर्थन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप वे अपना अनुभव सिद्ध दृष्टान्त देते थे कि उन्होंने अनेक बार जर्मन भाषा की कविता फ्रेंच बालकों को और फ्रेंच भाषा की कविता जर्मन बालकों को सुनाई, तो उस भाषा का ज्ञान न होते हुए भी बालकों ने स्पष्ट रूप से बतला दिया कि कविता का तात्पर्य क्या था। इस दृष्टान्त के अन्तर्गत पंचतत्वों की धारा बह रही है। मनुष्य मात्र का सम्बन्ध तत्वों से है और तात्विक धारायें चाहे किसी भी रीति से उत्पन्न की गई हों किन्तु अवश्य अपना प्रभाव दिखलाती हैं । पहले यह देखना है कि वाक्शक्ति का पंचतत्वों से क्या सम्बन्ध है और तब यह अपने आप प्रकट हो जायेगा कि कविता उच्चारण करने से किस प्रकार कविता का भाव समझ में आ जाता है।

विज्ञान बतलाता है कि ध्वनि एक प्रकार का कम्पन है। विविध प्रकार की ध्वनि उत्पन्न करने के लिए कम्पन भी अनेक प्रकार के होने चाहिए। अनेक प्रकार के कम्पन से आशय यह है कि एक मिनट या एक सैकिण्ड में भिन्न-भिन्न संख्या के कम्पन होने चाहिये। यदि मोटी आवाज के लिए एक सैकिण्ड में ११२ कम्पन होते हैं तो दूसरी आवाज के लिए इससे कम या अधिक कम्पन प्रति सैकिण्ड पैदा होना जरूरी है। कम्पन किसे कहते हैं? यह प्रत्यक्ष देखने के लिए एक ढोल पर डंका मारिए और ढोल की खाल को ध्यान से देखिए, खाल पर लहरें दौड़ती दीखेंगी। प्रति मिनट ऐसी लहरें कितनी पैदा होती हैं इसी पर ध्वनि का निर्माण अवलम्बित है। संगीत यन्त्रों का निरीक्षण करने पर आप को पता लगेगा कि यह कम्पन कभी हवा में पैदा किये जाते हैं, कभी तार में और कभी धातु को छोटी छोटी पत्तियों में, और इन कम्पनों की प्रति मिनट संख्या को बदलने के लिए सितार पर अंगुली चलाई जाती है, बांसुरी के छेद बन्द किये जाते हैं इत्यादि।

हमारा कण्ठ भी संगीत यन्त्र से कम नहीं है और इसका निर्माण उन यन्त्रों से भी अधिक मनोरंजक है। इसका विशेष विवरण तो ध्वनि शास्त्र के आचार्यों का अथवा डाक्टरों का विषय है, किन्तु इतना बतलाये बिना तो काम भी नहीं चलेगा कि गला एक प्रकार की नली है जिसमें सितार अथवा वीणा के तार की भाँति दो मोटे तन्तु हैं जिनमें कम्पन उत्पन्न होता है। साधारणतया ये इतने नरम हैं कि इनमें किसी प्रकार का कम्पन उत्पन्न नहीं होता। किन्तु अपतत्व की धारा इन्हें कड़ा बना देती है और कम्पनशील भी कर देती है । कम्पन उत्पन करने वाली अपतत्व को धारायें केवल बाहर से ही नहीं आती हैं। वरन् आत्मा से भी मस्तिष्क में होती हुई आ सकती हैं और इस तरह से हम अपने विचार ध्वनि द्वारा प्रकट कर सकते हैं। संगीत यन्त्रों के अधिकतर आवाज गुंजाने के लिये एक पोला तूंबे के आकार का अथवा लम्बी हवा का वाक्स भी रहता है, हमारे मुँह और नाक का निर्माण उसी आधार पर है । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि जब हमें खांसी अथवा जुकाम हो जाता है तो हमारी ध्वनि भी विकृत हो जाती है मानो सितार का तुम्बा फूटा हो।

यह तो सच है कि ध्वनि का जन्मदाता अपतत्व ही है किन्तु दूसरे तत्वों की उपस्थिति ध्वनि को प्रभावित किये बिना नहीं रहती। इस तरह से मनुष्य ने ४९ भिन्न-भिन्न स्वरों का अनुभव किया है। प्रथम सात स्वर हैं—इनमें तीव्र और कोमल भी हैं, और एक-एक स्वर के फिर भेद हैं । इन सब स्वरों से आठ राग बनते हैं, और एक एक भाग में अनेक रागनियाँ हैं । इस प्रकार ध्वनि के अगणित भेद हो गये हैं किन्तु ध्यान रहे इन सब का जन्मदाता अपतत्व है। और उसकी शक्ति पर अथवा दूसरे तत्वों का मिश्रण पर भिन्न-भिन्न ध्वनि का निर्माण अवलम्बित है।

प्रत्येक ध्वनि का तात्विक प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है। अनेक रोग इन प्रभावों से दूर किये जा सकते हैं और अच्छी या बुरी प्रकृति भी बनाई जा सकती है। यदि कोई गीत अग्नि तत्व से रंगा हुआ है तो प्राण को वह लाल बना देगा। इसी प्रकार वायु नीला और सफेद, आकाश काला और पृथ्वी पीला रंग देती है। अग्नि से रंगा हुआ गीत गर्मी करता है, गुस्सा दिलाता है, नींद लाता है और भोजन पचाता है । आकाश से रंगा हुआ गीत डर पैदा करता है और भूलने की बान डालता है। गीतों द्वारा ऐसे ही प्रेम, शत्रुता, भक्ति नीति और अनीति की ओर प्रेरणा होती है।

दूसरी ओर लीजिये। यदि हमारे उच्चारण किए हुए शब्द अग्नि से प्रभावित हैं तो इसकी गर्मी हमारे शरीर को जलावेगी, हमें दुबला और कमजोर बना देगी और अनेक रोग हमें आ दबाबेंगे। यदि हमारे शब्द प्रेम, भक्ति, दया और नीति से भरे हुए हैं जिनसे सुनने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वालों को प्रसन्नता सन्तोष होता है तो इस पृथ्वी और आपके प्रभाव से हम भी लोकप्रिय और सज्जन बन जावेंगे। वाक् शक्ति को सच्चे रास्ते पर रखना भी एक बड़े योगाभ्यास से कम नहीं है।

शब्द-योग

वेद में कहा है कि उसने इच्छा किया कि मैं एक से अनेक हो जाऊँ और इसी में सारा संसार उत्पन्न हो गया। ब्रह्म ने वेद के अनुसार सृष्टि के आदि में कहा था कि मैं एक हूँ अनेक हो जाऊँ बस सारे संसार की उत्पत्ति हो गई। इंजील में भी कहा है कि आदि में वचन था और वचन से सब कुछ हुआ। कुरान में भी खुदा ने कहा कि हो जा (कुन) बस सब कुछ हो गया। तात्पर्य कहने का यह है कि सारा संसार शब्दों से उत्पन्न हुआ है। अब भी जो कुछ हो रहा है उसके कारण शब्द ही है। किसी कार्य को लीजिये उसका कारण शब्द ही है। संसार की बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ शब्दों ही के कारण हुई हैं। सुलह भी शब्दों ने ही किया। प्रेम और विरोध सबका कारण शब्द है। बिना इच्छा के कुछ नहीं होता और इच्छा स्वयं शब्दों में हुआ करती है। इच्छा का प्रत्यक्ष रूप शब्द है। शब्द इच्छा को व्यक्त करके और अपने धक्के से सारे संसार को हिलाकर इच्छा को पूर्ण कर लेता है। पानी की इच्छा हुई कि वह इच्छा शब्द के रूप में मुँह से निकल पड़ी बस निकलते ही [illegible]र ने पानी उपस्थित किया। मुँह में पहले पानी शब्द आया और बाद को पानी स्वयं आ पहुँचा।

सच्ची बात यह है कि इच्छा स्वयं अर्थ रूप है। जिसकी आप इच्छा करते हैं उसके मिलने में जरा भी संदेह नहीं है। जिसकी आप इच्छा करते हैं वह इच्छा स्वयं वह वस्तु है। इच्छा सफलता की वह सीढ़ी है जिसके बाद सफलता स्वयं खड़ी रहती है। इच्छित वस्तु को प्राप्त करने में देरी नहीं लग सकती। पर न मिलने का कारण यह है कि इच्छा के जो शब्द हमारे भीतर से उठते हैं उन पर हम स्वयं विश्वास नहीं करते। हमें स्वयं विश्वास नहीं होता। हमें स्वयं शंका हो जाती है। हम इच्छा करते ही कह देते हैं कि इसका मिलना कठिन है, यह मिलेगा नहीं। हमारे अविश्वास के शब्द इच्छा के शब्दों की हत्या करा डालते हैं, नहीं तो मनुष्य के शब्दों में ब्रह्म की शक्ति है।

जो शब्द भीतर दृढ़ता से उठें, विश्वास के साथ उठें व मुँह से बाहर निकलें उन शब्दों में ब्रह्म की शक्ति है। कहिये और विश्वास के साथ कहिये कि हम निरोग हैं आप निरोग हो जायेंगे। कहिये कि हम अमर हैं—मृत्यु आपके वश में हो जावेगी। विश्वास के साथ कहिये कि हमें वह वस्तु अवश्य प्राप्त होगी उसके मिलने में देरी न लगेगी। चाहे देरी भी लगे पर मिलेगी अवश्य। आप अपना भाग्य, अपना कर्म, अपना संसार, अपनी परिस्थिति और अपने लिए संसार की सारी सामग्री, अपने शब्दों और अपनी आज्ञाओं से बुला सकते और बना सकते हैं। आपको जिस समय अपने शब्दों की शक्ति का पता लगेगा उस समय आप विधाता का मुँह नहीं ताकेंगे।

ईश्वर आपके भीतर है। आप स्वयं ईश्वर हैं। आपकी आज्ञा, आपके शब्द ईश्वर की आज्ञा और ईश्वर के शब्द हैं। आप विश्वास के साथ आज्ञा दीजिये वह अवश्य हो जायगा। बोले हुए शब्दों से संसार के परमाणुओं में धक्का लगता है और उससे जो लहर उत्पन्न होती है वह तब तक शान्त नहीं हो सकती जब तक कि वह अंत तक जाकर पूरी न हो जाय। पर हमारा अविश्वास इसका बहुत बड़ा विरोधी और नाशक है। हमारे शब्दों से जो लहर उत्पन्न होती है वह विराट रूप ईश्वर की आत्मा को कँपा देती है। वह निरर्थक नहीं हो सकती। एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वालों ने यह देखा कि जगह-जगह वहाँ पर बर्फ के चट्टान और बादल जमे हुए हैं। वहाँ पर एक शब्द भी जरा जोर से बोल देने पर चढ़ने वालों के ऊपर बहुत बड़ी आफत आ जाती है। बोलने से एक-एक फर्लांग का हिमखंड (बर्फ की चट्टान) ऊपर से खिसक पड़ती है और सम्भव है कि सब चढ़ने वाले उसी के नीचे दब जाएँ। बोलने से वहाँ के जमे हुए बादल भी हिल जाते हैं और बरसने लगते हैं। बोलने से आकाश में लहर उत्पन्न होती है उसी से यह सब हुआ करता है। शब्द स्वयं अपने अणुओं में वह शक्ति रखते हैं जिससे इच्छित पदार्थ बन जाएँ हम जिस वस्तु की इच्छा या कल्पना करते हैं वह इच्छा स्वयं वही वस्तु है, मन इच्छा व वस्तु हमारी कल्पना से बाहर नहीं हैं। कल्पना से स्वप्न में सारा संसार बन जाता है। स्वप्न में मन द्वारा बिना रोड़े के सड़क पिट जाती, बिना वृक्षों के बाग लग जाता और हजारों मकान बनकर तैयार हो जाते हैं। मन स्वयं वस्तु रूप और संसाररूप है। यह संसार की सारी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चीजों को बात की बात में बना सकता है। समाधि के समय इच्छा का अद्‌भुत चमत्कार क्षण में प्रत्यक्ष देखने में आता है। योगी ने इच्छा किया नहीं कि वह बना नहीं। समाधि के समय योगी जिस वस्तु की इच्छा करता है वह वस्तु उसी समय बनकर तैयार हो जाती है।

स्थूल संसार भी स्वप्न के समान मनोमय और कल्पनामय है। स्वप्न की सृष्टि और जाग्रत अवस्था की सृष्टि में कुछ भेद अवश्य है। पर मन और कल्पना का प्रभाव सर्वत्र है। इस पर हम अपने दूसरे लेखों में बहुत कुछ लिख चुके हैं। प्लेग की कल्पना होते ही, प्लेग से भयभीत होते ही ज्वर और गिल्टी दिखलाई देने लगती है। यदि कल्पना से ज्वर बढ़ जाता है तो क्या कल्पना से उतर नहीं सकता? यदि हमारा यह विचार, यह भय कि ऐसा न हो कि हमें गिल्टी हो जाय गिल्टी उत्पन्न कर सकता है, तो क्या हमारी निर्भयता और हमारा यह विचार कि हमारे गिल्टी नहीं हो सकती व हमारी गिल्टी अभी अच्छी हो जायेगी हमारा कल्याण नहीं कर सकता? हमारी इच्छा में, हमारी कल्पना में या हमारे शब्दों में बनाने और बिगाड़ने की पूरी शक्ति है।

"यथा मनसा मनुते तथा वाचा वदति" जैसा मन में विचार करता है वैसा ही वचन से बोलता है। मनुष्य अधिकतर कुछ न कुछ मनन किया करता है। इसका मतलब यह हुआ कि मनुष्य भीतर अपने मन में, अपने मन से, बातचीत किया करता है; कुछ न कुछ बोला करता है। देखने में आया है कि इन अव्यक्त शब्दों का प्रभाव शरीर पर पड़ता जाता है। मनुष्य के मनन करते हुए चेहरे का उतार-चढ़ाव और रंग इस प्रकार से बदलता है कि बिना बोले ही योगी अभ्यासी व इस विद्या के जानने वाले बतला देते हैं कि यह मनुष्य अमुक बात सोच रहा है। भावनाओं के अनुसार मुख की आकृति और वर्ण बदलता जाता है। सोचते समय कभी मनुष्य का चेहरा पीला पड़ जाता है; कभी प्रसन्न हो जाता है, कभी ललाट का चर्म सिकुड़ जाता है, कभी भृकुटी तिरछी हो जाती और कभी दोनों कपोल लाल हो जाते हैं। इसके सिवाय और भी कई तरह के रूपान्तर और परिवर्तन हुआ करते हैं। इन रूपांतरों को देख कर किसी के भीतर का भाव या मन का विचार जान लेना कठिन नहीं है।

पूर्वोक्त बातों से यह सिद्ध होता है कि हमारे प्रत्येक शब्द का और प्रत्येक विचार का हमारे शरीर पर अद्‌भुत रूप से प्रभाव पड़ता है। अतः आपको अपने शरीर का जो अंग जिस प्रकार का बनाना हो अपनी आज्ञा से बना सकते हैं। आप नित्य उठकर अपने शरीर को आज्ञा दीजिये कि हमारे शरीर का अमुक अंग ठीक हो जाय इस आज्ञा का व आपके इस वाक्य और शब्द का प्रभाव कुछ दिनों में प्रत्यक्ष देखने में आवेगा। जिस अंग के लिये आप जो आज्ञा देंगे वह अवश्य पूरा होगा। मनुष्य के शब्दों में रचना करने की व विधाता बनने की पूरी शक्ति है।

यदि कोई मनुष्य दरिद्री है तो उसे नित्य उठकर कहना चाहिये कि हमारी दरिद्रता मिट जाय हम धनी हो जाएँ। यह भी सोचना चाहिये कि हम धनी होगये और हमारे चारों तरफ रुपया और सोना चाँदी पड़ा हुआ है। सब सन्दूक रुपयों से भरी हैं। इससे अवश्य दरिद्रता मिट जायगी। यदि किसी का दिमाग ठीक नहीं है तो पेट पर हाथ फेर कर नित्य पेट को आज्ञा देनी चाहिये कि ठीक हो जा पेट ठीक हो जायगा। जीवन में आपको जो अभाव है दृढ़तापूर्वक कहिए कि मुझे अमुक वस्तु चाहिए मैं उसे प्राप्त करूँगा। आपके वह शब्द अदृष्ट से टकरा कर वह वस्तु सामने उपस्थित कर देंगे जिसे आप चाहते हैं।

आपके शरीर का रचयिता कोई दूसरा नहीं है, आप स्वयं अपने शरीर के रचयिता हैं। आपके भाग्य का रचयिता कोई दूसरा नहीं है अपने भाग्य के विधाता आप स्वयं हैं। विधाता के वचन में जो शक्ति है वही शक्ति आपके वचन में है। विश्वास के साथ जो कहियेगा अवश्य पूरा होगा।

शब्द शक्ति की ऊर्जा से परिचालित काया की सशक्त प्रयोगशाला

मानवी काया का स्थूल रूप उतना ही है जो खाने-पीने, सोने के काम आता है, जो रोने-हँसने और मरने-जीने के गतिचक्र में बँधा हुआ अपना समय व्यतीत करता है। मस्तिष्क का मन और बुद्धि भाग इस गाड़ी को धकेलता रहता है। कल पुर्जे अन्न, जल का ईंधन पाकर गतिशील बने और निर्वाह विनोद के साधन जुटाने में लगे रहते हैं। इससे आगे की गहराई वहाँ से प्रारम्भ होती है जहाँ 'चित्त' (अचेतन मन) और अहंकार अन्तःकरण (सुपर चेतन) का क्षेत्र आरम्भ होता है। यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन:क्षेत्र की बात हुई। कार्य क्षेत्र में षट् चक्र, ग्रन्थि त्रय, नाड़ी त्रय, चतुर्विंशत् उपत्यिकाएँ, पंचकोश, कुण्डलिनी, सहस्रार के रहस्यमय शक्ति भण्डारों की साज-सज्जा है।

यह समूचा क्षेत्र सामान्यत: निष्क्रिय पड़ा रहता है। न मन:क्षेत्र की अचेतन, सुपर चेतन क्षमताएँ काम आती हैं और न षट्चक्र, पंचकोश आदि से कोई वास्ता पड़ता है। अप्रकट अस्तित्व को ही रहस्य कहते हैं। इसलिए मन:क्षेत्र और कार्य क्षेत्र की इन सर्वसाधारण की पहुँच से बाहर की अविज्ञात विशिष्टताओं को भी रहस्य लोकदिव्य लोक कहा जाता है। इसे ही प्राचीन काल में शोध प्रयत्नों के लिए प्रयुक्त किया जाता था। खर्चीले, कष्ट साध्य और आये दिन ईंधन मरम्मत मांगने वाले वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण करने की अपेक्षा यह अच्छा समझा गया कि ईश्वर प्रदत्त सर्वांगपूर्ण काया में ही जब पृथ्वी लोक ही नहीं ब्रह्म होक को भी खोजने-खींचने, घसीटने की क्षमताएँ विद्यमान हैं तो बाहर क्यों भटका जाय? कस्तूरी हिरन की तरह क्यों उपहासास्पद बना जाय।

ऋषियों का समग्र प्रयास एक ही रहा है कि काय कलेवर को एक सर्वांगपूर्ण, समग्र, सुन्दर सहज उपलब्ध प्रयोगशाला माना जाय। साथ ही उसी क्षेत्र में सन्निहित स्रष्टा के उत्तराधिकार में उपलब्ध अनन्त ऋद्धि-सिद्धियों को बीज रूप में ही पड़े न रहने देखकर उन्हें उगाने और विशाल वृक्ष में परणित करने का प्रयास किया जाय। इस प्रयास को योग एवं तप की संज्ञा दी गई है। उसमें किसी अन्यत्र रहने वाले देवी देवता की मनुहार नहीं है वरन् आत्मदेव के अंग उपांगों का ही न्यास उपचार करने का विधान है। वृक्ष की खुराक आसमान से नहीं, जड़ों से मिलती है। मानवी सत्ता का चरम विकास उसके अन्त: क्षेत्र को उभारने से ही सम्भव होता है। आकाश के देवताओं को किसी का मनुहार सुनने और निहाल करने के लिए उपहार का टोकरा लिए-लिए फिरने की फुरसत कहाँ है?

पेट भरने के लिए अपना ही मुँह चलाना पड़ता है। पढ़ने के लिए अपनी ही बुद्धि लड़ानी पड़ती है। दूसरे के मुँह से किसका पेट भरा है, दूसरों की बुद्धि का सहारा लेकर कौन विद्वान बना है। आत्मिक प्रगति की आकांक्षा भी अपने ही साधनात्मक पुरुषार्थ से पूरी होती है। उसमें बेचारे देवताओं का अनुग्रह ही एक सीमा तक पात्रता के अनुरूप में हो सकता है। बात पात्रता पर आई तो उसे भी पुरुषार्थ ही कहा जायेगा। आत्म क्षेत्र के गहन मन्थन को ही साधना, उपासना आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

प्राचीन काल में अनेकों दिव्य अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग होता था। तन्त्र शास्त्र में प्राय: इसी प्रकार के उपचारों की भरभार है। उसी क्षेत्र में ऐसी उपलब्धियों की भरमार थी जो क्षमताओं, सुविधाओं और सफलताओं के भण्डार सामने ला खड़ी करती थी। इस प्रकार के उपायों को योग-तप कहा जाता था। उनके द्वारा भौतिक क्षेत्र में ऋद्धि-सिद्धियों को हस्तगत किया जाता था। साथ ही अन्त:क्षेत्र को आनन्द-उल्लास से भरे रहने वाले स्वर्ग मोक्ष का लाभ मिलता था। यह समूचा उपार्जन अन्त:क्षेत्र का है। विशाल ब्रह्माण्ड में जो कुछ है वह अपने कायपिण्ड में बीज रूप में विद्यमान है। उसमें उसे जो उपयोगी हो उसे उभारने का पुरुषार्थ करना ही आत्मसाधना का उद्देश्य रहा है। जहाँ तथ्यों का ध्यान रखते हुए—विद्या को निष्ठापूर्वक अपनाते हुए प्रयास चले हैं वहाँ अभीष्ट सफलता भी मिली है। ऋषि युग का इतिहास इसका साक्षी है।

कायिक और मानसिक क्षेत्र की संरचना एक सर्वांगपूर्ण यन्त्र उपकरणों से भरी-पूरी प्रयोगशाला के समान है। उसे अभीष्ट उत्पादन में समर्थ फैक्ट्री भी कहा जा सकता है। इस तथ्य से अवगत होने के उपरान्त दूसरा प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस कारखाने को चलाने के लिए ऊर्जा कहाँ से मिले? ईंधन कहाँ से जुटे। बिजली, भाप, ताप आदि का कोई स्रोत साधन तो होना ही चाहिए। अन्यथा बहुमूल्य मशीनें भी तनिक-सी हलचल नहीं कर सकतीं। उपकरणों को ऊर्जा ही तो चलाते हैं। इस ऊर्जा के लिए भी कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है। वह भी प्रचुर परिमाण में उसी समर्थ सृष्टा ने हस्तान्तरित कर दी है, जबकि इतना बहुमूल्य शरीर क्षेत्र रूपी बहुमूल्य अनुदान मनुष्य को बनाया गया।

यह ऊर्जा ईंधन क्या है? इसका संक्षिप्त किन्तु समग्र उत्तर है—"शब्द शक्ति"। काया से जो शब्द निकलते हैं। सामान्यतया वे विचारों के आदान-प्रदान में काम आते हैं। यही उसका मोटा काम चलाऊ उपयोग है। इससे ऊँचे स्तर की शब्द शक्ति वह है जो जीभ से नहीं मुखाकृति, मस्तिष्क एवं अन्त:करण से निकलती है। इन्हें मध्यमा, परा और पश्यन्ति कहते हैं। वार्तालाप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परामर्श में प्रयुक्त तो वैखरी वाणी ही होती है पर उसकी नगण्य-सी क्षमता में समर्थता, प्रखरता तब उत्पन्न होती है, जब मध्यमा, परा, पश्यन्ती का भी उच्चारण के साथ ही समन्वय समावेश होता रहे। इसके लिए परिष्कृत वाणी चाहिए जो समूचे व्यक्तित्व के हर पक्ष को उत्कृष्टता से अनुप्राणित कर सके। यदि वक्तृता का आनन्द लेना हो, उसे चमत्कारी सफलता प्रस्तुत करने में समर्थ देखना हो तो फिर जिह्वा तक सीमित न रहकर अन्य तीन रहस्यमयी वाणियों को मुखर करने के लिए साधनात्मक अभ्यास की आवश्यकता समझनी चाहिए। वाणी की कला भी अपने स्थान पर उपयोगी है, पर उतने भर से लोक-मानस की दिशाधारा निकृष्टता से उलटकर उत्कृष्टता की ओर मोड़नी हो तो उसके लिए उच्चस्तरीय शब्द शक्ति चाहिए।

साधना क्षेत्र में शब्द शक्ति के बारे में अधिक गम्भीरता के साथ सोचा जाना चाहिए एवं उस प्रतिपादन पर ध्यान देना चाहिए जिसमें शब्द और नाद ब्रह्म की महिमा शास्त्रकारों ने अनन्त रूपों में और गम्भीरता के साथ प्रस्तुत की है। शब्द ब्रह्म अर्थात् गद्य उच्चारण, नाद ब्रह्म अर्थात् ताल स्वर पर आश्रित गीत वाद्य। मन्त्र विज्ञान को इसी क्षेत्र की महान उपलब्धि कहा जा सकता है। मन्त्र में शब्द गुंथन की विशेषता भी एक तथ्य है पर उससे भी कहीं अधिक विशिष्टता मांत्रिक की निजी जीवनचर्या के साथ जुड़ी रहती है। मन्त्र शक्ति में वाणी का उच्चारण विधान ही पर्याप्त नहीं माना जाता। इसकी प्राण-प्रतिष्ठा उस साधना द्वारा होती है जिसमें मन्त्र को सिद्ध करने के लिए भाव भरे पुरश्चरण किए जाते हैं। इस प्रक्रिया का तात्विक स्वरूप इतना ही है कि मांत्रिक को, साधक को अपनी जीवनचर्या में उत्कृष्टता का सघन समावेश करना चाहिए। उसे ऋषिकल्प होना चाहिए। यहाँ दशरथ की पुत्र प्राप्ति अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए किए गए पुत्रेष्टि यज्ञ का स्मरण करना चाहिए जिसमें वशिष्ठ ने राज्यधान्य खाने के कारण मन्त्र शक्ति उत्पन्न करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की थी। वाणी की प्रखरता वाले श्रृंगी ऋषि उस कार्य के लिए बुलाये गये थे तब प्रयोजन पूर्ण हुआ था। मन्त्र का रहस्य, साधक की जीवन साधना के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है।

सामान्य लोग जीभ चलाते और बकवास करते रहते हैं। वरिष्ठ व्यक्ति सारगर्भित, आदर्शों का पक्षधर, जीवन में प्रयुक्त-अनुभूत, श्रद्धा विश्वास से भरा-पूरा शब्दोच्चार, करते हैं। वस्तुतः यह मन्त्र प्रयोग ही होता है। मन्त्र विचार को ही कहते हैं। तपः पूत उच्चारण को मन्त्र कहा जाता है। यह जप अनुष्ठान में, शाप-वरदान में भी काम आते हैं पर सामान्यतया उन्हें सम्भाषण के रूप में भी प्रयुक्त किया जाता देखा जाता है। लेकिन यदि परिवर्तन भावना क्षेत्र का होना है, लोक मान्यताओं में घुसी हुई अवांछनीयता को उलटकर उस क्षेत्र में औचित्य की नये सिरे से प्राण-प्रतिष्ठा होनी है तो ऐसी दशा में उसके उपयुक्त साधन सामग्री ही खोजनी होगी। वह भी ऐसी जिसके लिए जहाँ-तहाँ हाथ पसारते ने फिरना पड़े। मानव मात्र का काय कलेवर एक सर्वांगपूर्ण प्रयोगशाला की तरह प्रयुक्त करने के लिए परिष्कृत स्तर का बनाना पड़ेगा। परिष्कृत अर्थात् पवित्र, प्रखर। उसके लिए संयम साधना और परमार्थ परायणता के दोनों ही प्रयोग साथ-साथ चलने चाहिए। इस अवलम्बन के बिना आत्मसत्ता इस योग्य नहीं बनती कि वह उच्चस्तरीय शक्तियों का अवतरण एवं अवधारण सहन कर सके।

जीवन साधना से मानवी काया एक उच्चस्तरीय यन्त्र उपकरण से भरी प्रयोगशाला का काम देने लगती है। ऊर्जा की आवश्यकता शब्द शक्ति होगी। उच्चारण को मन्त्र स्तर तक पहुँचाना पड़ेगा। परिष्कृत जीवन अर्थात् गाण्डीव। मन्त्र अर्थात् शब्द वेधी बाण। अर्जुन की तरह इन सभी उपकरणों के प्रयोग का अभ्यास करने और प्रवीण होने के लिए हर साधक को कटिबद्ध, अग्रसर होना चाहिए। ऐसी प्रयोगशाला हर मनुष्य में सृष्टा की अनुकम्पा से अनायास ही उपलब्ध है।

जैसा कि कहा जा चुका है मनुष्य का अपना शरीर एक सर्वांगपूर्ण प्रयोगशाला है। ऋषि तपस्वी अपनी इसी आध्यात्मिक प्रयोगशाला में अनुसंधानरत रहते और ऋद्धि-सिद्धियों के मणि-मुक्तक ढूँढ़ निकालते हैं। मनुष्य की अपनी काया अनंत शक्तियों का भांडागार है। इसका सूक्ष्म ढाँचा वीणा एवं सितार के ढाँचे से बिल्कुल मिलता जुलता है। जिस प्रकार काष्ठ एवं तारों से बनी वीणा एवं सितार के भिन्न-भिन्न अंग हैं, ठीक उसी प्रकार हमारे शरीर में सिर, जिह्वा, उदर,

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तंत्रिकायें, स्पर्श, शब्द तथा त्वचा आदि अंग-अवयव हैं। संगीत में जिसे स्वर कहा गया है 'गात्र-वीणा' में उनकी संज्ञा 'चक्र'-प्लेक्सस से है। स्वर साधक काष्ठ निर्मित सितार के तारों को छेड़ते और उन से सुमधुर स्वर लहरियाँ एवं विविध राग-रागिनियाँ निकालते तथा उनका भरपूर आनंद उठाते हैं। इसी तरह योग-विद्या के ज्ञाता नाद ब्रह्म की साधना से अपने आंतरिक तारों को झंकृत कर षट्चक्रों को जगाते और उनकी प्रवृत्तियों को रूपांतरित कर उनमें सन्निहित क्षमताओं को विकसित करके ऋद्धि-सिद्धियों के स्वामी बनते हैं। अपने इसी शरीर में सप्तदेव, सप्तऋषि, सप्तलोक, सप्तसागर, सप्तमेरु, सप्ततीर्थ, सप्तसाधना के रूप में—सप्त-स्वरों के—सप्त झंकृतियों के रूप में प्रतिक्षण तरंगित होते रहते हैं जिससे सारा अंतर्जगत संगीतमय बना रहता है। इन तरंगों में असाधारण शक्ति भरी पड़ी है। नाद ब्रह्म की साधना द्वारा यदि इन्हें नियमित, सुव्यवस्थित एवं लयबद्ध बना लिया जाय तो न केवल शारीरिक और मानसिक जगत की सूक्ष्म शक्तियों को जगाया और उनसे लाभ उठाया जा सकता है, वरन् आत्मिक जगत की विभूतियों से भी लाभान्वित हुआ जा सकता है।

टोरंटों के मूर्द्धन्य वैज्ञानिकों ने इस संदर्भ में गहन अध्ययन एवं अनुसंधान किया है। उनने एक ऐसा साउंडप्रूफ कक्ष तैयार किया है जिसमें सांस लेने छोड़ने की व्यवस्था तो है, परंतु यदि कोई व्यक्ति इसके अंदर जाकर बैठे तो उसे अपनी श्वास-प्रश्वास की गतियाँ, हृदय की धड़कन, पाचन तंत्र की क्रियायें आदि सब कुछ घड़ी की टिक-टिक की तरह स्पष्ट सुनाई पड़ने लगती हैं। इस आधार पर व्यक्ति स्वयं ही आंतरिक हलचलों का निरीक्षण परीक्षण कर अपने आंतरिक वीणा से झंकृत होने वाली स्वर लहरियों का पता लगा सकेगा। चिकित्सा विज्ञानी अंदर की इन्हीं ध्वनियों को विशेष यंत्रों के माध्यम से सुन और देख कर रोगों का पता लगाते और उपचार का तारतम्य बिठाते हैं। अध्यात्म में आंतरिक ध्वनियों एवं नादयोग के रूप में पराध्वनियों का उपयोग आत्मिक विकास के लिए प्रयुक्त करने की व्यवस्था है। नादयोग के अभ्यास द्वारा न केवल शारीरिक मानसिक विकृतियों को दूर किया जा सकता है, वरन् जीवात्मा को परमात्मा से मिलन की अनुभूति भी प्राप्त की जा सकती है।

शरीर-वीणा की सूक्ष्म ध्वनि तरंगों को यदि सुना और उन्हें लयबद्ध किया जा सके तो जीवन के उस गुहा रहस्य को जाना-समझा जा सकता है जिसके लिए उच्चस्तरीय तप एवं योग साधनाओं की कष्ट साध्य प्रक्रिया का अवलंबन लेना पड़ता है। मूर्द्धन्य भौतिक विज्ञानी चार्ल्स जी. वान राइपर ने अपनी पुस्तक "ऐन इन्ट्रोडक्सन टू जनरल अमेरिकन फोनेटिक्स" में जीवनोपयोगी ध्वनि विज्ञान की इस क्षमता पर प्रकाश डालते हुए बताया है कि शरीर में समाविष्ठ स्वर लहरियों के अविरल प्रवाह को समझे बिना मनुष्य चेतना की रहस्यमय परतों से अनभिज्ञ ही बना रहेगा और उसकी विलक्षण क्षमताओं से कोई लाभ नहीं उठा सकेगा। अब तो कानों से सुनी जा सकने वाली तथा न सुनी जा सकने वाली ध्वनियों के अध्ययन-अनुसंधान के लिए "श्रौत ध्वनि विज्ञान" नाम से एक पृथक शाखा ही बन चुकी है जिसमें श्रवण और श्रवणातीत दोनों ही प्रकार की ध्वनि तरंगों का वैज्ञानिक ढंग से विवेचन-विश्लेषण किया जाता है। राइपर का कहना है कि ध्वनि एक निश्चित भौतिक प्रक्रिया एवं सृष्टि की एक महत्वपूर्ण शक्ति है। जिस प्रकार प्रकृति और प्राणि जगत में प्रकाश, गर्मी, चुम्बकत्व एवं गुरुत्वाकर्षण शक्तियों का प्रभाव होता है और उससे उनके शरीर बढ़ते पुष्ट और स्वस्थ बनते हैं, उसी प्रकार ध्वनि में भी तापीय और प्रकाशकीय ऊर्जा होती है और वह प्राणियों के विकास में उतना ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है जितना वायु, अन्न और जल। रक्ताभिसरण, श्वास-प्रश्वास, आकुंचन-प्रकुंचन का शरीर में निरंतर चलने वाला क्रिया कलाप विभिन्न प्रकार की स्वर लहरियाँ उत्पन्न करता है और उन्हीं के तरंग प्रवाह से जीवन गतिमान रहता है।

मांसपेशियाँ देखने में भले ही रक्त माँस के रेशे भर लगती हों पर उनसे निकलने वाली ध्वनियाँ इतनी अद्भुत एवं आश्चर्यजनक होती हैं जिन्हें सही प्रकार से सुनने-समझने पर काया की विलक्षणता का रहस्य सहज की खुल जाता है। इनके फैलने और सिकुड़ने की क्रिया सम्पन्न होते समय कुछ ध्वनि तरंगें निकलती हैं, जिन्हें यदि कानों को हाथ के दोनों अंगूठे से बंद करके सुना जाय तो वे स्पष्ट सुनाई देती हैं। अब तो कई ऐसे वैज्ञानिक यंत्र उपकरण भी आविष्कृत कर लिये गये हैं जिनके माध्यम से शरीर के किसी भी हिस्से की ध्वनि कम्पनों को देखा, सुना और मापा जा सकता है। शारीरिक स्वस्थता एवं मानसिक प्रसन्नता अथवा ध्यान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आदि दशा में ये ध्वनियाँ दिव्य वीणा से निकलने वाली मधुर स्वर लहरियों की तरह सुनने में कर्णप्रिय लगती हैं, किन्तु उत्तेजना, तनावग्रस्तता आदि की स्थितियों में वे बेसुरी हो जाती हैं और कोलाहल जैसी प्रतीत होती हैं। सामान्यतया ये ध्वनियाँ कानों को २५ हर्टज् (साइकल प्रति सैकिण्ड) तक की सुनाई देती हैं। यह सब 'आहत' ध्वनियाँ हैं, जो कानों से सुनी जा सकती हैं। विज्ञान की पकड़ में अब वे ध्वनियाँ भी आ गयी हैं जिन्हें हमारे खुले कान नहीं सुन सकते। इन्हें 'पराश्रव्य' ध्वनियाँ कहते हैं।

आधुनिक युग की नव विकसित तकनीकी के फलस्वरूप वैज्ञानिकों ने शारीरिक मांसपेशियाँ की स्वर लहरियों को सुनने-समझने में बहुत कुछ सफलता प्राप्त कर ली है। माउंट सिनाई स्कूल आफ मेडीसिन के सुप्रसिद्ध चिकित्सा विज्ञानी डॉ. जोशुआ एफ. जैफे ने मैकेनिकल इलेक्ट्रॉनिक स्टेथोस्कोप के माध्यम से १,००० हर्टज् तक की ध्वनि तरंगों को पकड़ा है जिसके अंतर्गत हृदय की 'लप-डप-लपडप वाली लय-ताल युक्त मधुर गुनगुनाहट और फेफड़ों की घुरघुराहट को सरलतापूर्वक सुना-समझा जा सकता है। यह प्रकृतिगत ध्वनियाँ हैं। कर्णेन्द्रियों की पकड़ से बाहर होने के कारण ही इन्हें सूक्ष्म कहा जाता है, अन्यथा यह स्थूल ही हैं, क्योंकि यंत्रों के माध्यम से उन्हें हमारे कान भी सुन सकते हैं। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के गणितज्ञ जी. आई. टेलर ने 'आटोकोरिलेशन' जैसी नवविकसित गणितीय प्रणाली के माध्यम से इन ध्वनियों की गणना करने में सफलता प्राप्त की है। इस तरह प्रिन्स्टन यूनिवर्सिटी के वरिष्ठ अनुसंधान-कर्ता जेम्स डब्ल्यू. कूली ने कम्प्यूटर की फास्ट फोरियर ट्राँसफार्म्स तकनीकी द्वारा मांसपेशियों की लयबद्ध और क्रमबद्ध रूप से निकलने वाली ध्वनि तरंगों को रिकार्ड करके दिखाया है। उनका कहना है कि हमारे शरीर की स्वर लिपियाँ संगीत में मामूली सा व्यतिरेक उत्पन्न होने पर भी समूचा कायतंत्र लड़खड़ाने लगता है। शरीर की इन स्वर लहरियों को यदि समझा जा सके तो आंतरिक अवयवों की हलचलों, रक्त प्रवाह, हृदय की धड़कन, पाचन संस्थान आदि की सूक्ष्म जानकारी बिना किसी यंत्र-उपकरण के भी आसानी से प्राप्त की जा सकती है और तदनुरूप उपाय-उपचार किया जा सकता है।

इटली के वैज्ञानिक फ्राँसिस्को मैरिया ग्रिमाल्डी ने अपनी कृति "फीजीकोमैथिस डी लूमाइन" में शरीर-वीणा से निकलने वाली ध्वनि तरंगों की रहस्यपूर्ण जानकारी दी है। उन्होंने इसका संबंध मानवी मस्तिष्क एवं उसको आन्दोलित करने वाली विचारणाओं एवं भावनाओं से जोड़ा है। भारतीय तत्ववेत्ता ऋषियों ने इसे ही प्राण चेतना के नाम से संबोधित किया है और उसके परिष्कार एवं अभिवर्धन के लिए विविध-विधि साधनात्मक उपाय उपचारों को सृजन किया है। विज्ञानवेता भी अब इसी तथ्य की पुष्टि कर रहे हैं। ब्रिटेन कि विख्यात, भौतिक विज्ञानी एवं रसायन शास्त्री विलियम हाइडे वोलेस्टन ने भी अपने अनुसंधान निष्कर्षों में बताया है कि शरीर की समस्त हलचलों और गतिविधियों का संचालन प्राण चेतना द्वारा ही होता है। यदि उसकी लयबद्धता को अभ्यास द्वारा नियमित बना लिया जाय तो जीवन की रहस्यमय विलक्षणताओं को, जिन्हें अतींद्रिय क्षमतायें भी कहा जाता है, साक्षात्कार किया जा सकता है। उनके अनुसार अंदर की सूक्ष्म ध्वनियों को सुनने के लिए सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय को विकसित करने की आवश्यकता है। तभी हम ब्रह्मांडीय चेतना से उद्भुत होने वाली अनाहत ध्वनि-अर्थात् नाद ब्रह्म से भी अपना संबंध जोड़ने में सक्षम हो सकते हैं।

कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी के डॉ. नेल्सन की गणना मूर्द्धन्य प्राणिशास्त्रियों में की जाती है। उन्होंने अपने प्रयोग-परीक्षणों से यह सिद्ध कर दिखाया है कि मानवेत्तर प्राणियों में भी उनके शरीर से निकलने वाली ध्वनि तरंगों का विशेष महत्व है। उन्होंने पाया है कि पानी के भीतर रहने वाली शार्क मछलियाँ संकटग्रस्त परिस्थितियों में एक-दूसरे की मांसपेशियों की सूक्ष्मतर ध्वनि कंपनों को सुगमता से सुन लेती हैं और उससे एक दूसरे को बचाने का उपाय ढूँढ़ती और उसमें सफल भी होती हैं। इसी तरह के अनुसंधान ब्रिटेन के माटरेट ए विन्सी ने किये हैं। जापानी बटेर के अंडों पर किये गये अनुसंधान के आधार पर उनने यह निष्कर्ष निकाला है कि चूजा निकलने के चार दिन पूर्व ही अंडे की ध्वनियाँ जन्मदात्री को स्पष्टत: सुनाई देने लगती हैं। इतना ही नहीं उन्होंने यह भी सिद्ध कर दिखाया है कि भ्रूण को पारदर्शी प्लास्टिक में रखकर यदि किसी ऐसे अंडे के पास रखा जाय जिसमें से बच्चा निकलने का प्रयत्न कर रहा हो, पर कुछ अड़चनों की वजह से बाहर निकलने में असमर्थ रहा हो, तो उस भ्रूण की मांसपेशियों की लयबद्ध ध्वनियों को सुनकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह अपने कवच को सुगमतापूर्वक तोड़कर बाहर निकल आता है। जन्तु विज्ञानी जी. गौल्डपिंक के अनुसार यह सारा खेल प्राणी के अंदर विद्यमान सचेतन प्राण विद्युत का है जो निखिल ब्रह्मांड में संव्याप्त विश्व चेतना का एक छोटा सा घटक है।

अध्यात्म साधनाओं में आसन-प्राणायाम से लेकर ध्यान-धारणा तक की समस्त प्रक्रियायें व्यष्टि चेतना को ब्रह्मांडीय चेतना से ऐक्य स्थापित करने के लिए विनिर्मित हुई हैं। स्फूर्ति उत्पन्न करने वाली अपने अंदर की ध्वनि कंपनों स्वर लहरियों को जिन्हें विज्ञानवेता 'फीजियोलॉजिकल ट्रैमर' के नाम से संबोधित करते हैं, उन्हें हर व्यक्ति सुन और क्रमबद्ध कर सकता है। इससे न केवल जीवनी शक्ति की अभिवृद्धि की जा सकती है, वरन् चेतना के उच्च सोपानों पर आरूढ़ हुआ जा सकना संभव है। मन्त्र-जप में इन्हीं स्वर लहरियों का तादात्म्य सूक्ष्म जगत की ध्वनियों से बिठाया जाता है, फलस्वरूप सूक्ष्म जगत की हलचलों को आसानी से सुना जा सकता है।

शरीर की स्थूल ध्वनियों को व्यवस्थित एवं लयबद्ध कर लेने पर न केवल शारीरिक आरोग्य लाभ प्राप्त किया जा सकता है, वरन् मानसिक एवं आत्मिक स्तर की प्रतिभा और विभूतियाँ अर्जित की जा सकती हैं, क्योंकि सृष्टि के विभिन्न क्रिया-कलापों को संचालित करने वाली भौतिक शक्तियाँ तथा भावनात्मक अभिव्यंजनायें सूक्ष्म प्रकृति के अंतराल में मूलतः ध्वनिप्रवाह बन कर ही कार्य कर रही हैं। यह ध्वनि हर व्यक्ति के शरीर से भी उत्पन्न होती है, पर बहिर्मुखी प्रवृति होने के कारण हम उन्हें सुन नहीं पाते। यदि अभ्यास किया जाय और नाद योग-साधना से सूक्ष्म कर्णेन्द्रियों की शक्ति को जगाया जा सके, तो अनंत ब्रह्मांड के सूक्ष्म रहस्यों को आसानी से जाना समझा जा सकता है। नादयोग सूक्ष्म ध्वनि प्रवाह को सुनने समझने की क्षमता का विकास करने की विधा है। इसके नित्य नियमित अभ्याससे स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर का विकास होता है और जीवन की सफलता का रहस्य खुलता जाता है।

श्रवण शक्ति की दिव्य क्षमता और उसका विकास

संसार का सबसे संवेदनशील 'रेडार' मनुष्य का कान है। ध्वनि कम्पनों को वह कितने अच्छे भेद प्रभेद के साथ पकड़ता है इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है, कि कोलाहल रहित स्थान में मक्खी की भिन्न-भिनाहट जैसी बारीक आवाज छै फुट दूरी से सुनी जा सकती है।

न्यूजर्सी की टेलीफोन प्रयोगशाला में एक कमरा इस तरह का बनाया गया कि उसमें कोई बाहरी आवाज तनिक भी प्रवेश न कर सके। इसमें प्रवेश करने पर कुछ ही समय में मनुष्य को सीटी बजने, रेल चलने, झरने गिरने, आग जलने, पानी बरसने के समय होने वाली आवाजों जैसी ध्वनियाँ सुनाई पड़ती थीं। इस प्रयोग को कितने ही मनुष्यों ने अनुभव किया, बात यह थी कि शरीर के भीतर जो विविध क्रिया कलाप होते रहते हैं उनसे ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं। वे इतनी हल्की होती हैं कि बाहर होते रहने वाले ध्वनि प्रवाह में वे एक प्रकार से खो जाती हैं। नक्कार खाने में तूती की आवाज की तरह यह भीतरी अवयवों की ध्वनियाँ कानों तक नहीं पहुँच पातीं, पहुँचती हैं तो वायु मण्डल में चल रहे शब्द कम्पनों की तुलना में अपनी लघुता के कारण उनका स्वल्प अस्तित्व अनुभव न होता हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। पर जब बाहर की आवाज रोक दी गई और केवल भीतर की ध्वनियों की मुखरित होने को अवसर मिला तो वे इतनी स्पष्ट सुनाई देने लगीं मानो वे अंग अपनी गति विधियों की सूचना चिल्ला-चिल्ला कर दे रहे हों।

रक्त संचार, श्वास-प्रश्वास, आकुंचन प्रकुंचन, ग्रहण विसर्जन, स्थगन-परिभ्रमण, विश्राम, स्फुरणा, शीत-ताप जैसे परस्पर विरोधी अथवा पूरक अगणित क्रिया कलाप शरीर के अंग अवयवों में निरन्तर होते रहते हैं। हर हलचल ध्वनि तरंगें उत्पन्न करती हैं। ऐसी दशा में उनका शब्द प्रवाह उपयुक्त स्थिति में कानों तक पहुँच ही सकता है और संवेदनशील कर्णेन्द्रिय उन्हें भली प्रकार सुन भी सकती है।

कान जैसा कोई इलेक्ट्रॉनिक मनुष्य द्वारा बन सकना सम्भव नहीं। क्योंकि कान में ऐसी सम्वेदनशील झिल्ली लगाई गई है जिसकी मोटाई एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इंच का २,५०० विलियन (एक विलियन बराबर दस लाख) है। इतनी हल्की साथ ही इतनी संवेदनशील ध्वनि ग्राहक वस्तु बन सकना मानवीय कर्तृत्व से बाहर की बात है। सुनने के प्रयोजन में काम आने वाले मानव निर्मित यन्त्रों की तुलना में कान की संवेदन-शीलता दस हजार गुनी है। हमारे कान लगभग ४ लास प्रकार की' आवाज पहचान सकते हैं और उनके भेद प्रभेद का परिचय पा सकते हैं। सौ वाद्य यंत्रों के समन्वय से बजने वाला आरकेस्ट्रा सुन कर उनसे निकलने वाली ध्वनियों का विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले कान कितने ही संगीतज्ञों के देखे गये हैं। शतावधानी लोग सौ शब्द श्रृंखलाओं के क्रमबद्ध रूप से सुनने और उन्हें मस्तिष्क में धारण कर सकने में समर्थ होते हैं। कहते हैं कि पृथ्वीराज चौहान ने घण्टे पर पड़ी हुई चोट को सुनकर उसकी दूरी की सही स्थिति विदित करली थी।

कानों की झिल्ली आवाज की बिखरी लहरों को एक स्थान पर केन्द्रित करके भीतर की नली में भेजती है। वहाँ वे तरंगें विद्युत कणों में बदलती हैं। इसी केन्द्र में तीन छोटी किन्तु अति सम्वेदनशील हड्डियाँ जुड़ती हैं; वे परस्पर मिलकर एक पिस्टन का काम करती हैं। इसके आगे लसिका युक्त घोंघे की आकृति वाले गह्वर में पहुँचते आवाज का स्वरूप फिर स्पष्ट हो जाता है। इस तीसरे भाग की झिल्ली का सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से है। कान के बाहरी पर्दे पर टकराने वाली आवाज को लगभग ३,५०० कणिकाओं द्वारा आगे धकेला जाता है और मस्तिष्क तक पहुँचने में उसे सैकिण्ड के हजारवें भाग से भी कम समय लगता है। मस्तिष्क उसे स्मरण शक्ति के कोष्टकों में वितरित विभाजित करता है। वह स्मरण शक्ति पूर्व अनुभवों की आवाज पर भी यह निर्णय करती है कि यह आवाज तुरही की है या घड़ियाल की सुनने की प्रक्रिया को अन्तिम रूप यहीं आकर एक बहुत बड़ी—किन्तु स्वल्प समय में पूरी होने वाली प्रक्रिया के उपरान्त मिलता है।

कितने ही जीवों में मनुष्य की अपेक्षा अधिक दूर की आवाजें सुनने की शक्ति है। घोड़े को ही लें, उसके कानों के बाहरी पर्दे में १७ पेशियाँ होती हैं जबकि मनुष्य में उनकी संख्या ९ है। इसी अनुपात से घोड़ा मनुष्य की अपेक्षा अधिक दूरी की ओर अधिक हल्की आवाजें सुन सकता है।

नेपोलियन बोनापार्ट की स्मरण शक्ति बहुत तीव्र थी। अपनी सेना के प्रायः हर सिपाही का नाम उसे याद रहता था और आवाज सुनने भर से बिना देखे वह यह बता देता था कि कौन बोल रहा है। इसी प्रकार सिकन्दर की श्रवण शक्ति विलक्षण थी। एक बार रात को उसने एक गाना सुना। निस्तब्ध नीरवता में वह गीत बहुत दूर से आ रहा था पर सिकन्दर ने उसे सुन ही नहीं याद भी कर लिया। कई दिन वह संगीत प्रवाह उसी तरह उसी समय पर सुनाई पड़ता रहा। सिकन्दर ने अपने कर्मचारियों को उस गायक की दिशा और दूरी बताकर बुला लाने के लिए भेजा। पांच मील दूरी पर नीरव जंगल में वही व्यक्ति गाया करता था जिसकी आवाज सिकन्दर ने सुनी।

मस्तिष्क के साथ नाक, कान, आँख, जीभ, इन्द्रियाँ जुड़ी हैं। उन सभी के कार्यों का संचालन सन्तुलन रखने में मस्तिष्क की शक्ति विभक्त रहती है और खर्च होती है। यदि इनमें से कोई एक इन्द्रिय कुण्ठित हो जाय तो उस पर होने वाली क्षमता अन्य इन्द्रियों पर या इन्द्रिय विशेष पर लग जाती है। इसी कारण अन्धों में विशिष्ट प्रतिभा विकसित देखी जाती है। अन्य इन्द्रियों के कुण्ठित होने का भी दूसरी इन्द्रियों को शक्ति बढ़ने का लाभ होता है पर चूँकि नेत्रों में सबसे अधिक शक्ति नियोजित है इसलिए अन्धों में गायन, स्मरण आदि की विशेषताएँ अधिक मात्रा में विकसित देखी जाती हैं।

अभ्यास से दुर्बल व्यक्ति भी पहलवान बन जाते हैं। कालिदास मूर्ख थे पर विद्याध्ययन में निरन्तर श्रम संलग्न रहने से वे उच्च कोटि के कवि और विद्वान बन गये। इन्द्रियों की शक्ति का यदि अभिवर्धन अभ्यास किया जाय तो उनकी क्षमता में असाधारण और आश्चर्यजनक वृद्धि हो सकती है। कर्णेन्द्रिय का रिकास इतना अधिक हो सकता है कि वह सिकन्दर की तरह दूरगामी, हल्की आवाजें भी अच्छी तरह सुन ले। भीड़ के चहल-पहल के सम्मिश्रित शब्द घोष में से अपने परिचितों की आवाज छाँट और पकड़ ले। घुसफुस की—कानाफूसी की आवाजों को भी कर्णेन्द्रिय की प्रखरता को तीव्र बनाने पर सुना जा सकता है। ऐसी विशेषताएँ कइयों में जन्म-जात होती हैं किन्हीं में प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करने से विकसित होती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह तो स्थूल कर्णेन्द्रिय के निकटवर्ती उच्चारणों को सुनने, समझने की बात हुई। इससे भी बढ़कर बात यह है कि सूक्ष्म और कारण शरीरों में सन्निहित श्रवण शक्ति को यदि विकसित किया जा सके तो अन्तरिक्ष में निरन्तर प्रवाहित होने वाली उन ध्वनियों को भी सुना जा सकता है जो चमड़े से बने कानों की पकड़ से बाहर हैं।

सूक्ष्म जगत की हलचलों का आभास इन ध्वनियों के आधार पर हो सकता है। कराहने की आवाज सुन कर किसी के शोक ग्रस्त होने, दर्द से छटपटाने, सताये जाने आदि की स्थिति का—दूरी का — नर नारी का —बाल वृद्ध का अनुमान लगा लिया जाता है उसी प्रकार कर्णेन्द्रिय की पकड़ से बाहर की सूक्ष्म ध्वनियों को यदि सुना जा सके तो विश्व में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न स्तर की घटित होने वाली घटनाओं का विवरण जाना जा सकता है, सम्भावनाओं का पता लगाया जा सकता है, तथा लोक लोकान्तरों में हो रही हलचलों को समझा जा सकता है। सर्व साधारण के लिए अविज्ञात जानकारियाँ सूक्ष्म शरीर की कर्णेन्द्रिय के विकास द्वारा नितान्त सम्भव है।

तन्त्र विद्या में 'कर्ण पिशाचिनी' साधना का महत्वपूर्ण प्रकरण है। रेडियो, टेलीफोन तो निर्धारित स्थान से निर्धारित स्थान पर ही सन्देश पहुँचाते हैं उन्हें विशेष यन्त्रों द्वारा ही प्रेषित किया जाता है और विशेष यन्त्र ही सुनते हैं। कर्ण पिशाचिनी विद्या से कहीं पर भी हो रहे शब्द प्रवाह को सुना जा सकता है। स्थूल शब्दों के अतिरिक्त अन्य घटना क्रमों की हलचलें विद्युत के रूप में अन्तरिक्ष में विद्यमान रहती हैं, उन किरणों को प्रकाश रूप में देखा जा सकता है और शब्द रूप में सुना जा सकता है। तांत्रिक साधना से इस सिद्धि को उपलब्ध करने वाले अपने ज्ञान भण्डार को असाधारण रूप से बढ़ा सकते हैं और उस स्थिति से विशेष लाभ उठा सकते हैं।

नाद योग सूक्ष्म शब्द प्रवाह को सुनने की क्षमता विकसित करने का साधना विधान है। कानों के बाहरी छेद बन्द कर देने पर उनमें स्थूल शब्दों का प्रवेश रुक जाता है। तब ईथर से चल रहे ध्वनि कम्पनों को उस नीरवता में सुन समझ सकना सरल हो जाता है। नाद योग के अभ्यासी आरम्भ में कई प्रकार की दिव्य ध्वनियाँ कानों के छेद बन्द करके मानसिक एकाग्रता के आधार पर सुनते हैं। शंख, घड़ियाल, मृदंग, वीणा, नफीरी, नूपुर जैसी आवाजें आती हैं और बादल गरजने, झरना झरने, आग जलने झींगुर बोलने जैसी क्रमबद्ध ध्वनियाँ भी सुनाई पड़ती हैं। आरम्भ में यह शरीर के अन्तरंग में हो रही हलचलों की ही प्रतिक्रिया होती है पर पीछे दूरवर्ती घटना क्रमों के संकेत प्रकट करने वाली अधिक सूक्ष्म आवाजें भी पकड़ में आती हैं। अनुभव के आधार पर उनका वर्गीकरण करके यह जाना जा सकता है कि इन ध्वनि संकेतों के साथ कहाँ किस प्रकार का—किस काल का घटना क्रम सम्बद्ध है। आरम्भिक अभ्यासी भी अपने शरीरगत अवयवों की हलचल, रक्त प्रवाह, हृदय की धड़कन, पाचन संस्थान आदि की जानकारी उसी भाँति प्राप्त कर सकता है जिस तरह कि डाक्टर लोग स्टेथेस्कोप आदि उपकरणों से हृदय की गति, रक्त चाप आदि का पता लगाते हैं अपने ही नहीं दूसरों के शरीर की स्थिति का विश्लेषण इस आधार पर हो सकता है और तदनुकूल सही निदान विदित होने पर सही उपचार का प्रबन्ध हो सकता है।

सूक्ष्म शरीर की कर्णेन्द्रिय को विकसित करके संसार में घटित होने वाले घटना क्रम को जाना जा सकता है। कारण शरीर का सम्बन्ध चेतना जगत से है। लोगों को मनःस्थिति के कारण उत्पन्न होने वाली अदृश्य ध्वनियाँ जिसकी समझ में आने लगें वह मानव प्राणी की — पशुपक्षियों और जीव-जन्तुओं की मनःस्थिति का परिचय प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार बिना उच्चारण के एक मन से दूसरे मन का परिचय, आदान-प्रदान होता रह सकता है। विचार संचालन विद्या के ज्ञाता जानते हैं कि मनः स्थिति के अनुसार भावनाओं के उतार-चढ़ाव में एक विचित्र प्रकार की ध्वनि निसृत करते हैं और उसे सुनने की सामर्थ्य होने पर मौन रह कर ही दूसरों की बात अन्तःकरण के पर्दे पर उतरती हुई अनुभव की जा सकती है और अपनी बात दूसरों तक पहुँचाई जा सकती है।

कारण शरीर की कर्णेन्द्रिय साधना, दैवी संकेतों के समझने, ईश्वर के साथ वार्तालाप और भावनात्मक आदान प्रदान करने में समर्थ हो सकती है। साधनात्मक पुरुषार्थ करते हुए अपने इन दिव्य संस्थानों को विकसित करना— अपूर्णता से पूर्णता की ओर बढ़ना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यही तो योग साधना का—आत्म साधना का उद्देश्य है।

काया की स्थूल परत एवं ध्वनि प्रयोग

पिछले पृष्ठों में स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों के परिशोधन की चर्चा आत्मिक प्रगति के सन्दर्भ में की गयी है। प्रत्यक्ष रूप से यह कार्य तो क्रिया शुद्धि से ही होता है, किन्तु इतना भर पर्याप्त नहीं है। अंतः की बीच-शक्ति उभारने के लिए विशेष साधनात्मक प्रयोग किये जाने की आवश्यकता है। शरीर रक्षा के लिए आहार-विहार की व्यवस्था अनिवार्य है, पर इतने भर से कोई विद्वान, वैज्ञानिक या इंजीनियर-डॉक्टर नहीं बन जाता। इसके लिए विशेष, अध्ययन-अभ्यास करना होता है। आहार-विहार की विधि-व्यवस्था एवं विशिष्ट शिक्षा दोनों का सुयोग-संयोग आध्यात्मिक प्रगति हेतु अभीष्ट है। अकेली ईंटों से दीवार नहीं खड़ी हो जाती। उन्हें परस्पर जोड़ने के लिए चूना-सीमेन्ट-लोहा आदि भी चाहिए। इसी प्रकार गाड़ी के दो पहियों की तरह व्यवहार शुद्धि और साधनात्मक उपचार दोनों की ही अपनी जगह अनिवार्यता एवं महत्ता है।

त्रिवेणी की तीन धाराओं की तरह, ब्रह्मा-विष्णु-महेश रूपी त्रिदेवों की तरह—लोक त्रिधा की तरह मानवी सत्ता भी तीन भागों में विभक्त है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण। तीनों पृथक भी हैं और समन्वित भी। तीनों का समावेश होने पर एक पूर्णता विकसित होती है। किन्तु सही स्थिति में तीनों को ही होना चाहिए, अन्यथा असन्तुलनजन्य विकृति उत्पन्न हो सकती है। चर्म, मांस और अस्थि का ढाँचा तभी तक सही है, जब तक तीनों अपने-अपने स्थान पर सही रूप से अवस्थित हैं। इनमें से एक का भी गड़बड़ाना उस क्षेत्र की स्वास्थ्य-सुडौलता को आघात पहुँचाता है।

स्थूल शरीर रासायनिक पदार्थों से बना हुआ है। उसमें किसी प्रकार की हलचल उत्पन्न करने के लिए प्रहार की आवश्यकता पड़ती है। प्रत्यक्ष आघात तो हथौड़े जैसे उपकरणों से पहुँचाये जाते हैं, किन्तु अदृश्य जगत में यह कार्य शब्द के द्वारा संभव होता है। सभी जानते हैं कि आघात लगने पर शब्द होता है, पर तथ्य यह भी है कि शब्द से आघात लगता है। किसी वस्तु के गिरने-टूटने-टकराने से शब्द होता है। तोप-बन्दूक चलने से धमाका होता है पर यह भी सत्य है कि शब्द की भयंकरता भी अनर्थ कर सकती है। तोपों के गर्जन, बमों के विस्फोट गर्भधारियों के गर्भ गिरा देते हैं। धड़कते हृदय को बन्द कर देते हैं। कान बहरे हो जाते हैं। कोलाहल की अधिकता से अन्य प्रकार के शारीरिक-मानसिक उपद्रव खड़े होते हैं और अदृश्य वातावरण में भी एक तरह का असन्तुलन आ जाता है। प्रदूषण बढ़ जाता है। जेटयानों की कम्पन लहरें जिधर होकर गुजरती हैं उधर अस्थिरता, अस्वाभाविकता उत्पन्न करती हैं। रात में भयानक पक्षी ध्वनि करते हैं तो डर लगता है और नींद उड़ जाती है। फौजी सिपाही तालबद्ध कदम मिलाकर चलें तो उस आवाज से वह लोहे का पुल टूट सकता है जिस पर से लोग गुजरते थे। देखा तो यहाँ तक गया है कि किसी मजबूत हाल में लोहे का मजबूत गर्डर लटका दिया जाय और उस पर क्रमबद्ध रूप से हल्का प्रहार एक छोटे से पेण्डुलम से करते रहा जाय तो वह गर्डर टूट सकता है एवं छत फट सकती है।

यह ध्वनि की प्रहार प्रक्रिया हुई। उसका रचनात्मक उपयोग भी है। अमुक स्तर का संगीत बजाकर रोगियों की मानसिकता, जीवन-क्षमता, भाव-संवेदना लहराई जाती है। इस उभार के आधार पर रोग विषाणुओं का समापन एवं आरोग्य को वापस लाने वाले तत्वों का उन्नयन होता है। संगीत-चिकित्सा अब अपने आप में एक स्वतंत्र चिकित्सा पद्धति बनती जा रही है। पुरातन काल में उसका उपयोग मेघ-मल्हार गाकर वर्षा कराने में, दीपक राग गाकर दीपक जलाने के रूप में होता था। बहेलिए मृगों को, सपेरे साँप को संगीत के आधार पर वशीभूत करते और उन्हें पकड़ते थे। आधुनिक वैज्ञानिक पशु-पक्षियों और जलचरों की क्षमता विकसित करने में लयबद्ध ध्वनि प्रवाह का उपयोग करते हैं। पाया गया है कि इस प्रकार से गायें अधिक दूध देने लगीं। मुर्गियों से अधिक अण्डे-बच्चे मिले और मछलियाँ जल्दी परिपुष्ट हुईं और अपेक्षाकृत कहीं अधिक प्रजनन करने लगीं। यह प्रयोग पेड़-पौधों पर भी हुआ है। वे इस आधार पर अधिक तेजी से बढ़े और असामान्य रूप से फूले-फले। कृषकों और उद्यान मालिकों ने अपनी फसलों को संगीत सुनाकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिक परिपुष्ट करने में सफलता पाई। मानवी मनोरंजन में गायन—वादन—अभिनय का असाधारण स्थान है। उससे उत्साह बढ़ता है। घोड़े नाचने लगते हैं। मेघ गर्जन की ध्वनि पर भाव-विभोर होकर मोर नाचते देखे गये हैं।

प्रकृति के अन्तराल में तीन प्रमुख शक्तियाँ काम करती हैं —(१) ध्वनि, (२) ताप, (३) प्रकाश। इन्हीं की सूक्ष्म तरंगें इस समूचे ब्रह्माण्ड में बिखरी पड़ी हैं। उन्हीं के द्वारा रेडियो, टेलिविजन आदि उपकरण चलते हैं। एक्स किरणें, रेडियो किरणें, लेसर किरणें, गामा किरणें आदि के रूप में इन तरंगों का महत्वपूर्ण एवं आश्चर्यजनक उपयोग भी किया जाने लगा है। तरंगें ही सघन होकर अणु-परमाणुओं के रूप में परावर्तित होती हैं और अनेक नाम रूपों वाले पदार्थों की संरचना करती हैं। इस प्रकार यह समझा जा सकता है कि समस्त विश्व की अनेकानेक हलचलों को यह ध्वनि प्रवाह ही हिलाता-डुलाता, मोड़ता- मरोड़ता रहता है। इसी आधार पर उत्पादन- अभिवर्धन-परिवर्तन की रीति-नीति सर्वत्र चलती रहती है। उत्साह, उमंग और उल्लास के रूप में तीनों शरीरों को भी सूक्ष्म ध्वनियाँ अपने ढंग से यथा अवसर प्रभावित करती रहती हैं। जीवन और मरण, उत्थान और पतन बहुत कुछ उन्हीं के ऊपर अवलम्बित है।

त्रिविधि तरंगों में से स्थूल शरीर को ध्वनि तरंगें प्रभावित करती हैं। सूक्ष्म शरीर को ताप तरंगें और कारण शरीर को प्रकाश तरंगें। यों अनायास भी यह संयोग बनता बिगड़ता रहता तथा अनेकानेक प्रभाव उत्पन्न करता रहता है, किन्तु यदि उनका योजनाबद्ध रूप से वैज्ञानिक प्रयोगों की तरह उपयोग किया जा सके तो इसके इच्छित परिणाम भी होते हैं। बारूद जला देने पर धमाका तो होता है, पर उसमें अस्त व्यस्तता रहती है, किन्तु उसी को बन्दूक या तोप की नली में डालकर किसी लक्ष्य पर केन्द्रित करके दागा जाय तो निशाने को धराशायी करने की प्रत्यक्ष परिणति दृष्टिगोचर होती है। ध्वनि तरंगों का उपयोग स्थूल शरीर को प्रभावित कर उसमें अभीष्ट सुधार कर परिवर्तन करने के निमित्त किया जा सकता है।

स्थूल शरीर को प्रभावित करने के लिए मन्त्र-योग का, सूक्ष्म शरीर के लिए प्राण-योग का और कारण शरीर में उपयोगी उभार लाने के लिए ध्यान-योग का उपयोग किया जाता है। यों साधनायें अनेकों प्रकार की हैं। परम्परा भेद से उनका उपयोग-उपचार अनेक विधि-विधानों के रूप में किया जाता है। इस प्रकार साधना विज्ञान के अनेकानेक भेद और उपभेद बन जाते हैं। इनमें से जिन्हें अपनी अभिरुचि के अनुरूप अपनाना होता है, वे उसका प्रयोग करते रहते हैं। देश, भाषा, परम्परा आदि भेदों के कारण तत्व दर्शन अनेक भागों में विभक्त हो गया है। पर इसे एक दूसरे के प्रतिकूल मानना भूल होगी। एक ही नगर में पहुँचने के लिए विभिन्न दिशाओं के यात्री अलग-अलग मार्ग अपनाते हैं। इतने पर भी वे सभी उस एक ही लक्ष्य तक पहुँच ही जाते हैं।

संसार भर में प्रचलित अनेकानेक योगाभ्यासों को तीन भागों में ही विभक्त किया जा सकता है। बहुलता को सीमा बद्धता में बाँटा जा सकता है। मन्त्र-योग प्राण-योग और ध्यान-योग की सीमा में प्रायः सभी साधना विधानों को बाँधा जा सकता हैं। मनोविकार और अनैतिक आचरण भी लोभ, मोह, अहंता की पृष्ठभूमि पर उगते हैं। साधनाएँ भी साहस, संकल्प और संवेदना का अवलम्बन लेकर आगे बढ़ते और तीनों शरीरों को प्रभावित करते हैं।

पदार्थ परिकर को ध्वनि तरंगों से प्रभावित परिवर्तित, पारष्कृत करने के लिए "मन्त्र योग" का उपयोग करना होता है। मन्त्र में तीन तत्व जुड़ते हैं (१) शब्दों का गठन, (२) साधक का व्यक्तित्व, (३) तथ्य को अन्तःकरण की गहराई तक पहुँचा देने वाला अविचल विश्वास। इन तीनों का जब भी, जहाँ भी, जितना भी समावेश हो वहाँ उसकी उपयोगी प्रतिक्रिया मिश्रित रूप से परिलक्षित होगी। किन्तु यदि इनमें से एक भी कम पड़ा या त्रुटिपूर्ण रहा तो उसका अभीष्ट प्रतिफल उत्पन्न होना संदिग्ध हो जायगा।

मन्त्र का गठन दूरदर्शी अनुभवी योगाभ्यासियों द्वारा किया जाता है। वे शब्दों को समझने में अर्थ को प्रधानता नहीं देते, वरन यह देखते हैं कि किस क्रम से अक्षरों का गुंथन हुआ और उनके उच्चारण में किस प्रकार का ध्वनि प्रवाह उत्पन्न हुआ। इस मन्त्र निर्धारण में प्रायः उनके सृजेताओं को अन्तः स्फुरण-मार्ग दर्शन मिलता है। इसलिये वे उसे आकाशवाणी द्वारा—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ईश्वरी—चेतना द्वारा उद्भूत भी कहते हैं। गायत्री मन्त्र, कलमा-शरीफ, बपतिस्मा, णामोंकार मन्त्र, मणि पद में हुँ, ऐसे ही सनातन कहे जाने वाले मन्त्र हैं।

तंत्र योग के अन्तर्गत एकाक्षर मन्त्रों का भी निर्धारण किया गया है। देवनागरी लिपि के कुछ प्रभावशाली अक्षरों के ऊपर अनुस्वार (ं) लगाकर उन्हें विशेष प्रयोजनों में काम आने वाला विशेष मन्त्र बना दिया गया है (कं, खं, गं, घं, यं, छं, जं, झं, पं, फं, बं, भं) आदि की रचना इसी दृष्टि से हुई है। श्री, क्लीं, ह्रीं, हुं फट् आदि की भी गणना एकाक्षरी मन्त्रों में ही होती है। अर्थ सहित मन्त्रों की व्याख्या विवेचना हो सकती है। उनसे शिक्षा ले सकते हैं, पर एकाक्षरी मन्त्र बीज रूप है। उनमें शक्ति की प्रधानता है। अभिव्यक्ति नहीं खोजी जा सकती। इन सबके अपने अपने प्रभाव हैं। उनका उच्चारण यों कंठ, होठ, जीभ, दाँत, तालु आदि के माध्यम से ही होता है, पर जो ध्वनि प्रवाह समन्वित रूप से बनता है वह स्थूल शरीर के अन्तराल में रहने वाली विशाल ग्रंथियों से टकराता है, उस प्रतिक्रिया को समूचे व्यक्तित्व में वितरित करता है। शरीर के अन्तराल में अनेक गुच्छक, उपत्यिकाएँ, चक्र-भ्रमर, अन्तःस्रावी ग्रंथियों का समुदाय है। इनमें से कुछ के क्रियाकलापों की जानकारी हो गई है, पर कुछ अभी तक शरीर शास्त्रियों द्वारा समझे नहीं जा सके हैं। माइक्रोलीटर की मात्रा में स्रवित होने वाले हारमोन द्रव्यों की विलक्षणता प्रत्यक्ष है। उनका प्रभाव काया तक ही सीमित नहीं रहता वरन् स्वभाव और व्यक्तित्व को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार अनेकानेक ग्रंथियों को संतुलन में लाने, विकसित करने के लिए मन्त्र प्रयोगों का आश्चर्यजनक परिणाम उत्पन्न होते देखा गया है।

आहार आदि की तरह संसार के अन्यान्य पदार्थ भी मनुष्य को प्रभावित करते हैं। वे पास आते, दूर भागते हैं। अनुकूल एवं प्रतिकूल बनते हैं। इस असंतुलन को इच्छानुरूप बनाने में भी शब्द शक्ति कार्य करती है। यह शक्ति वरदान एवं अभिशाप के रूप में भी अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करती देखी जाती हैं।

शब्द शक्ति से होगी, अब रोगों की चिकित्सा

ध्वनि अपने आप में एक बहुत महत्वपूर्ण शक्ति है। जहाँ प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर यह एक ओर नादब्रह्म, शब्द-ब्रह्म संगीत का रूप लेकर मनुष्य की आत्मिक प्रगति का पथ प्रशस्त करती है, वहाँ दूसरी ओर प्रकृति के विरुद्ध होने पर यह मनुष्य को पागल बना सकती है, प्रलय ला सकती है, ध्वनि प्रदूषण द्वारा समष्टिगत हानि पहुँचा सकती है। शब्द शक्ति को, ध्वनि को चेतना की ऊर्जा-ईंधन माना गया है। कभी इससे मात्र जानकारी प्राप्त करने व आदान प्रदान का प्रयोजन भर पूरा होता था, किन्तु अब विज्ञान के विकास ने उसे एक उच्चस्तरीय शक्ति के रूप में ला खड़ा कर दिया है। शब्द शक्ति को लेसर से भी अधिक सामर्थ्य भरा शक्तिपुंज कहा गया है, एवं इसी के आधार पर विज्ञान ने खगोल जगत में ब्रह्माण्डीय आदान-प्रदान की तथा काय जगत में सूक्ष्म तत्वों की जानकारी एवं चिकित्सा की शोध उपलब्धि अर्जित की है।

वार्तालाप-परामर्श में प्रयुक्त वैखरीवाणी का प्रसंग छोड़ हम ऊँचे सोपान पर चढ़ मध्यमा, परा, पश्यन्ती का साधना क्षेत्र के परिप्रेक्षय में विवेचन करें, तो पाते हैं कि इन्द्रियातीत, अनाहत, बिन्दु रूप में शब्द-ब्रह्म, नाद-ब्रह्म के रूप में शास्त्रकारों ने इसकी महिमा को बड़ी गंभीरता से प्रस्तुत किया है। उनका यह विवेचन पूर्णतः विज्ञान सम्मत भी है। शब्द-ब्रह्म अर्थात् गद्य उच्चारण, नाद-ब्रह्म अर्थात् संगीत के रूप में ताल बद्ध वादन-गायन। मन्त्र विज्ञान इसी क्षेत्र से उद्भूत विधा है, जिसका अवलम्बन लेकर आत्मिक प्रगति का पथ प्रशस्त किया जाता है। यही शक्ति शाप व वरदान के रूप में परिलक्षित होती देखी जा सकती है। प्राचीनकाल में जिन दिव्य अस्त्र शस्त्रों का प्रयोग होता था, उनमें शब्द शक्ति की ऊर्जा से चालित उपचारों के प्रयोगों का उल्लेख होता है कि यह कितनी सूक्ष्म किन्तु सामर्थ्यवान शक्ति है।

ओम शब्द का आर्षवाँग्मय में महत्वपूर्ण स्थान है। ओम शब्द के उच्चारण से सूक्ष्म किन्तु शक्तिशाली तरंगों की उत्पत्ति होती है, जिसे मौलिक ध्वनि माना गया है। अ, उ एवं म से मिलकर बना ओम शब्द इस घटाकाश, निखिल ब्रह्माण्ड का बोध कराता है। यह अविनाशी परब्रह्म सत, रज, तम रूपी तीन गुणों; तीनों कालों एवं ब्रह्मा, विष्णु, महेश त्रिदेवों का परिचायक भी है। प्रत्येक मन्त्रोच्चार ॐकार के बिना अपूर्ण है। इसके बिना शब्द शक्ति की चर्चा ही अपूर्ण है।

मन्त्र शक्ति एवं संगीत शक्ति इन दोनों का ही विशिष्ट माहात्म्य के साथ विज्ञान सम्मत विवेचन हमारे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आर्ष ग्रन्थों में हुआ है। वस्तुतः शब्द विज्ञान की इन दो महत्वपूर्ण विधाओं को इस मन्त्र युग में जाना एवं महत्व नहीं दिया गया है। यदि चेतना के इस अनुसंधान की गहराई में जाना संभव हुआ तो मनुष्य को इतने महत्वपूर्ण रत्न हस्तगत हुए होते, जिनकी तुलना भौतिक वैभव से कभी भी नहीं की जा सकती। ऋग्वेद और सामवेद के साथ-साथ आयुर्वेद एवं गांधर्ववेद का उल्लेख इस प्रसंग में किया जाता है। आयुर्वेद ऋग्वेद का उपवेद है, एवं गांधर्ववेद सामवेद का। आयुर्वेद के पितामह माने जाने वाले अश्विनी कुमार विरचित भैषज तंत्र में इस संबंध में महत्वपूर्ण संकेत दिये गये हैं।

भैषज तंत्र में चार प्रकार के भैषज बताये गये हैं—पवनौकष, जलौकष, वनौकष और शाब्दिक। इसमें अंतिम शाब्दिक भैषज से द्विदेवों का आशय है—मन्त्रोच्चारण एवं लयबद्ध गायन। जहाँ आयुर्वेद के प्रमुख ग्रन्थ चरक संहिता, सुश्रुत संहिता आदि में सन्निपात, ज्वर, दमा, मधुमेह, हृदयरोग, ट्यूबरकुलोसिस, पीलिया, अल्पमंदता आदि रोगों में मन्त्रों से उपचार का उल्लेख हुआ है, वहाँ सामवेद में ऋचाओं के गायन द्वारा रोग-मुक्ति का माहात्म्य बताया गया है। मन्त्रोच्चार से उत्पन्न ध्वनि प्रवाह व्यक्ति की समग्र चेतना को प्रभावित करता है और उसके कम्पन अंतरिक्ष में बिखर कर समष्टि चेतन सत्ता को प्रभावित कर परिस्थितियों में अनुकूलन लाते हैं। कण्ठ, जिह्वा, तालू आदि मुख्य अवयवों को सोद्देश्य विरचित, सुगठित शब्द उच्चय के उच्चारण में भिन्न-भिन्न प्रकार की हलचलें करनी पड़ती हैं, जिनका प्रभाव स्थूल शरीर के अंग-प्रत्यंग पर तो पड़ता ही है, सूक्ष्म शरीर स्थित उपात्यिकाओं, नाड़ी गुच्छकों, विद्युत्प्रवाहों पर भी इनका प्रभाव पड़ता है। कोई भी शक्ति सबसे पहले अपनी उत्पादन स्थली को प्रभावित करती है। आग जहाँ जन्मती है, गरमी पहले वहीं जन्मती है, विस्तार उसका पूरे क्षेत्र में बाद में होता है। इसी प्रकार मन्त्रोच्चारण से उद्भूत ऊर्जा से साधक का व्यक्तित्व सबसे पहले एवं सर्वाधिक प्रभावित होता है। मन्त्र शक्ति को शब्द बेधी बाण की तरह माना जा सकता है जो कायसत्ता के सूक्ष्म अवयवों से टकराते व उन्हें प्रभावित करते हैं। किस अवयव को किस सीमा तक प्रभावित किया जाय, यही ध्यान रखते हुए मन्त्रों का गठन एवं उच्चारण द्वारा सुनियोजन किया जाता है।

वैज्ञानिकों ने पाया है कि समवेत स्वर में उच्चरित मन्त्र पृथ्वी के आयन मण्डल को घेरे विशाल भू चुम्बकीय प्रवाह शुमेन्स रेजोनेन्स से टकराते व लौटकर समग्र पृथ्वी के वायुमण्डल को प्रभावित करते हैं। यह एक विचित्र साम्य है कि शुमेन्स रेजोनेन्स के अंतर्गत जो गति तरंगों की रहती है, वही गति मन्त्रोच्चारण करने वाले साधकों की एकाग्रतातन्मयता की स्थिति में मस्तिष्क से रिकार्ड की जाने वाली अल्फा तरंगों की (७ से १३ सायंकाल प्रति सैकिण्ड) होती है। व्यक्ति चेतना व समष्टि चेतना में कितना सघन तादात्म्य है, इसकी साक्षी यह वैज्ञानिक उपलब्धि देती है। यही नहीं अध्यात्म विज्ञान के प्रवक्ता मन्त्र द्वारा शाप-वरदान-रोग-मुक्ति, मारण, मोहन, उच्चाटन, अभिचार, कृत्याघात आदि प्रयोगों का दावा करते हैं एवं कर भी दिखाते हैं।

लय-ताल बद्ध गायन संगीत के रूप में दूसरी शब्द शक्ति की महत्त्वपूर्ण विधा है, जिसका यदि सुनियोजन किया जा सके तो प्रकृति में वांछित परिवर्तन एवं काय सत्ता को रोग मुक्त करना संभव है। संगीत न केवल तनाव शैथिल्य लाता है, अनेकानेक मनोविकारों के उपचार की एक विज्ञान सम्मत विधा भी है। ताल और लय के समुच्चय को ही स्वर विज्ञान कहते हैं। थपकी ताल कहलाती है और आलाप को स्वर कहते हैं। दोनों के मिलन से समग्र संगीत बनता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की घराना परम्परा के अन्तर्गत विभिन्न राग रागिनियों का आलाप एवं वीणा, सितार, तबला, तानपूरा, मृदंग आदि यंत्रों के माध्यम से गायन-वादन का क्रम काफी समय से चलता आया है। इसका मध्यकाल में प्रायः मनोरंजन हेतु प्रयोग होता था, नहीं तो इसमें अपरिमित सामर्थ्य विद्यमान है। संगीत के सुनियोजन से रोग निवारण, भावनात्मक अभ्युदय, स्फूर्ति-वर्धन, वनस्पति उन्नयन एवं प्राणियों की कार्यक्षमता में विकास जैसे महत्वपूर्ण लाभ संभव हैं। इस माध्यम से आनन्द भरी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर संवेदनाओं को भाव-तरंगों से जोड़कर मनःस्थिति में वांछित परिवर्तन भी लाया जा सकता है। जड़-चेतन सभी पर संगीत शक्ति का प्रभाव पड़ता है, यह अब प्रमाणित किया जा चुका है।

गायन-वादन के अंतर्गत संगीत के छह प्रमुख राग हैं, जिनका गान्धर्ववेद में उल्लेख आता है—ये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है—श्रीराग, भैरवराग, हिंडोल राग, मालकौंस राग, विहार राग एवं मेघराग। इन्हीं की पाँच से छह तक भिन्न जातियाँ एवं पुत्र राग भी हैं। इनके अतिरिक्त भी विभिन्न विद्वानों ने समय-समय पर भिन्न रागों के सम्मिश्रण से नये राग तैयार किये हैं। इन्हें कब, किस समय, किस ऋतु में बजाया जाय, इसका शास्त्रोक्त विधान है। वांछित प्रतिफल तभी मिलता है, जब इन नियम उपनियमों का पालन किया जाय। यही नहीं गायक की पात्रता एवं पवित्रता भी उतनी ही अनिवार्य है। गान्धर्ववेद में कहा गया है—

जपादि अष्टगुणम ध्यानः ध्यानादि अष्ट गुणं तपः।
तपसा अष्ट गुणम् गानम् गानात परत्परम्॥

वक्ता और श्रोता दोनों के ही चेतना के स्तर का विकसित होना गायन की सफलता के लिये अनिवार्य माना गया है। यही सब शर्तें पूरी होने पर प्राचीन काल में संगीत शास्त्र के ध्वनि प्रवाहों के प्रभाव भी देखे जाते थे। दीपक राग से बुझे दीपक जल जाते थे, मेघमल्हार राग बादलों को बरसने के लिये विवश कर देता था, मोहन राग साँपों को लहराता व हिरनों को स्तब्ध कर देता था, राग शंकर मदोन्मत्त हाथियों को वशवर्त्ती करने में समर्थ था, श्रीराग सूखे वृक्षों को हरा बनाने की सामर्थ्य रखता था। यह सब लोकोक्ति नहीं, वास्तविकता है। अब तो रोगोपचार में गान्धर्ववेद के विभिन्न प्रयोगों का अनुसंधान भी किया जाने लगा है। इससे लगता है आने वाले वर्षों में सम्भवतः डिस्क आडियो कैसेट बनाने वाली कम्पनियाँ भिन्न-भिन्न रोगों के लिये वैदिक सूक्तों को रागों में लयबद्ध कर प्रस्तुत करने लगें एवं सैनिटेरियमों में उनका उपयोग होने लगे। यह प्रयोग ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान द्वारा तो किये ही जा रहे हैं, भारत में महर्षि गान्धर्व वेद विश्वविद्यापीठ तथा विदेश में भी विभिन्न विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हो रहे हैं।

रोग निवारण में संगीत शक्ति किस प्रकार अपनी भूमिका निभाती है, इसका स्पष्टीकरण करते हुए विद्वान बताते हैं कि जिस प्रकार आयुर्वेद में वात, पित्त, कफ की मान्यता द्वारा निदान किया जाता है, उसी प्रकार गान्धर्ववेद में वात की "सम्यक् तारता" पित्त की "सम्यक् तीव्रता" एवं कफ के "सम्यक् माधुर्य" का प्रावधान है। जिस प्रकार कायगत वायु, अग्नि एवं जल में असंतुलन से भिन्न रोग उत्पन्न होते बताये जाते हैं, उसी प्रकार विभिन्न रागों का सुनियोजन कर मानव की प्रकृति का सही निदान एवं उपचार किया जाना संभव है। यही नहीं वैद्यक एवं संगीत की जानकारी रखने वाला विशेषज्ञ आयुर्वेद एवं गान्धर्ववेद का पर्याप्त संतुलन बनाये रख मात्र वनौषधि सेवन एवं संगीत शक्ति से असाध्य से असाध्य रोगों की चिकित्सा कर सकता है। संभवतः इसीलिए शास्त्रों में वैद्यों के लिए संगीत का ज्ञान अनिवार्य बताया गया है।

विद्वान बताते हैं कि कफ के कुपित होने से संभावित रोगों में राग भैरवी, मानसिक चंचलता एवं क्रोध की स्थिति में राग मल्हार सौरत एवं जैजैवन्ती तथा रक्त की अशुद्धि की स्थिति में राग आस्सावरी का प्रयोग होना चाहिए। श्वास संबंधी असह्य कष्ट, तपेदिक, खासी-दमा आदि में राग भैरवी के प्रयोग का तथा मेदा वृद्धि यकृतप्लीहा वृद्धि में राग हिंडोल का प्रावधान है। जठराशय संबंधी रोगों से मुक्ति हेतु पंचम राग गाये जाने का उल्लेख है। कहा जाता है कि तानसेन के गुरुभाई बैजूबावरा ने राग पूरिया सुनाकर राजा राजसिंह को अनिद्रा रोग से मुक्ति दिलाई थी। भारत के प्रसिद्ध संगीतज्ञ औंकारनाथ ठाकुर ने इटली के तानाशाह मुसोलिनी, जिसे अनिद्रा रोग था, को अपने गायन से ही सुला दिया था। यही बात पंडित पलुस्कर एवं डागर बंधु के बारे में भी कही जाती है।

एलोपैथी ने अल्ट्रासाउण्ड को मान्यता देकर शब्द-शक्ति की महत्ता तो मान ली है किन्तु वे उसकी उतनी गहराई तक नहीं पहुँच पाये हैं, जहाँ तक हमारे ऋषि गण मन्त्र विद्या एवं संगीत शक्ति के माध्यम से पहुँचने में सफल हुए थे। अमेरिका के पिट्सवर्ग शहर के समीप डॉ. राल्फ लॉरेन्स ने भी संगीत से रोग निवारण की आर्ष पद्धति के आधार पर एक आश्रम की स्थापना कर अनेक रोगियों को कष्टों से मुक्ति दिलाई है। डॉ. पोडोलोस्की एवं डा. बर्नर मैकफेडेन भी इस विधा में सक्रिय हैं एवं वे सारा उपचार सोनोथेरेपी के माध्यम से ही करते हैं।

वस्तुतः शब्द तत्व में असाधारण जीवनदात्री क्षमता है। मन्त्रोच्चारण एवं संगीत द्वारा इनका सही उपयोग यदि किया जा सके तो विज्ञान की प्रगति की दिशा में अग्रसर मानव को चेतना को मथ देने वाली

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक महत्वपूर्ण शक्ति का स्रोत हाथ लग सकता है। हम इस चिरपुरातन किन्तु विज्ञान सम्मत पद्धति को अपनाकर निश्चित ही उज्ज्वल भविष्य की नई संभावनाएँ विनिर्मित कर सकते हैं।

वैदिक स्वर प्रक्रिया—सामगान

वेदों में विशेषकर सामवेद में वर्णित विविध प्रकार के ज्ञान और उनकी विशेषतायें ध्वनिविज्ञान पर आधारित हैं। अत: यहाँ वैदिक स्वर-प्रक्रिया के सम्बन्ध में कुछ शब्द कह देना आवश्यक है क्योंकि अनेक सज्जन वेदों के सम्बन्ध में अधिक जानकारी न रखने के कारण वैदिक स्वर चिह्नों को एक अद्‌भुत चीज समझते हैं और ऐसी कल्पना करते हैं कि इन स्वर-चिह्नों के बिना वेद लिखे या पढ़े ही नहीं जा सकते हैं। वेद की संहिताओं में मन्त्राक्षरों में खड़ी तथा आड़ी रेखायें लगाकर उनके उच्च, मध्यम या मन्द स्वर उच्चारण करने के संकेत किये गये हैं। इनको उदात्त, अनुदात्त और स्वरित के नाम से अभिहित किया गया है। ये स्वर बहुत प्राचीन समय से प्रचलित हैं और महामुनि पातंजलि ने अपने महाभाष्य में इनके मुख्य-मुख्य नियमों का समावेश किया है।

इस सम्बन्ध में अनेक विद्वानों द्वारा प्रकट किये गये विभिन्न विचारों पर मनन करने पर दो मुख्य बातें सामने आती हैं। एक तो यह कि प्राचीन काल में जब बड़े यज्ञ किये जाते थे तो वहाँ के वातावरण को संगीतमय बनाने के निमित्त वेद मन्त्रों का मधुर-ध्वनि से गायन किया जाता था। 'सामवेद' के ही अनेक सूक्तों में इन्द्र को प्रसन्न करने के लिये वृहत् साम के गायन का उल्लेख है। इस संगीत में अनेक गायक (स्तोता) सम्मिलित रूप से भाग ले सकें और उनके उच्चारण में एकलयता और एकतानता बनी रहे, इसके लिये स्वर के उतार-चढ़ाव सम्बन्धी नियमों का निश्चित होना आवश्यक था। दूसरी बात यह भी कही जाती है कि वैदिक शब्द अनेकार्थवादी हैं। कितने ही शब्दों के तो दस बीस अर्थ मिलते हैं। स्वर चिह्नों से यह विदित हो सकता है कि अमुक स्थान पर अमुक शब्द का कौन सा अर्थ ग्रहण किया जाय। इस दृष्टि से भी अनेक विद्वान स्वर-चिह्नों का ज्ञान होना अनिवार्य मानते हैं।

५२ जिस प्रकार संस्कृत के व्याकरण को विभिन्न काल वैयाकरण विद्वानों ने अपनी-अपनी शैली पर विकसित करके, इतना अधिक विस्तृत, जटिल और कठिनता से बोधगम्य बना दिया है कि उसके विषय में छोटे बड़े विद्वानों में प्राय: मतभेद और विवाद हुआ करता है और घोर परिश्रम करने पर भी अन्तिम निर्णय अधिकांश में विवादास्पद ही बना रहता है, उसी प्रकार वैदिक स्वरों के सम्बन्ध में भी प्राचीन और नवीन सभी तरह के विद्वानों में इतनी अधिक मत-भिन्नता और शैली-भेद पाया जाता है कि इस सम्बन्ध में एकवाक्यता होना लगभग असम्भव जान पड़ता है। अभी इस सम्बन्ध में एक पुस्तक "वैदिक-स्वर मीमांसा" जिसके लेखक गुरुकुल की शिक्षा प्राप्त संस्कृत के एक बड़े विद्वान हैं, उन्होंने पुराने और नये सभी स्वर-शास्त्र के ज्ञाताओं के मतों की जो आलोचना की है, उसे पढ़ने से ऐसा जान पड़ता है कि प्राचीन काल में भी इस विषय के जो विद्वान हुये हैं, उन्होंने भी स्वर के निर्णय में अनेक स्थानों पर बड़ी-बड़ी भूलें की हैं सायणाचार्य के सम्बन्ध में तो लेखक ने जो मत व्यक्त किया है, उसे यदि यथार्थ माना जाय तो सायण का स्वर-सम्बन्धी ज्ञान बहुत ही न्यून और त्रुटिपूर्ण मानना पड़ेगा। पाठकों की जानकारी के लिये हम उनकी सायण सम्बन्धी सम्मति को यहाँ ज्यों का त्यों उद्धृत करते हैं—

"सायणाचार्य ने अपने ऋग्वेद-भाष्य के आरम्भ में यथासम्भव प्रतिमन्त्र स्वर-क्रिया का निर्देश किया है। यद्यपि उसे ऊपर से देखने पर सायण का स्वर-शास्त्रज्ञ होना प्रतीत होता है, पर उसके वेद-भाषा के गहरे अनुशीलन और उसके पूर्ववर्ती भट्ट-भास्कर द्वारा निर्दिष्ट स्वर-प्रक्रिया के साथ तुलना करने पर प्रतीत होता है कि सायण का स्वरशास्त्र विषयक ज्ञान अति स्वल्प है। वह प्राय: भट्ट-भास्कर की स्वर प्रक्रिया की प्रतिलिपि करता है और वह भी आँखें मूँद कर। इतना ही नहीं सायण जहाँ-जहाँ स्वतन्त्र रूप से स्वर प्रक्रिया लिखता है, वहाँ वह प्राय: ५० प्रतिशत भूल करता है। उसकी प्रति सूक्त व्याख्या में ४-५ भूलों का उपलब्ध होना साधारण सी बात है।"

आगे चलकर लेखक ने ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त में आये 'दोषा वस्त:' शब्द का उदाहरण देकर बतलाया है कि स्वर-सम्बन्धी भूल के कारण उस शब्द का अर्थ (अग्नि के स्थान पर सायं प्रात:) सायण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ने भी नहीं वरन् वैंकटमाधव तथा भट्ट—भास्कर जैसे प्रमुख स्वर शास्त्रज्ञों ने भी गलत लिख दिया है। उनका कथन है कि—

"सायण निःसन्देह अच्छा विद्वान् था, पर स्वर-वैदिक प्रक्रिया में वह निरा बालक है। ऋग्वेद भाष्य में उसने जो स्वर-प्रक्रिया दर्शाई है, उसमें पदे-पदे भूलें हैं । स्वर-प्रक्रिया में वह प्रायः तैत्तिरीय संहिता के भाष्यकार भट्ट-भास्कर का अनुकरण करता है। 'दोषावस्तः' का जो अर्थ और स्वर सायण ने लिखा है, वह उसने भट्ट-भास्कर के 'तैत्तिरीय संहिता भाषा' से लिखा है।"

"भट्ट-भास्कर का अर्थ 'तैत्तिरीय संहिता" १।५।६।२ में उपलब्ध होता है। वहाँ भट्ट-भास्कर लिखते हैं कि "दोषावस्तः—रात्रि और दिन में, सायं प्रातः।" श्री निवास झा ने भी 'स्वर सिद्धान्त चन्द्रिका' में ९। २। २७ की व्याख्या में भट्ट-भास्कर का ही अनुकरण किया है। डा. लक्ष्मण स्वरूप द्वारा संपादित वैंकट के 'लघु भाष्य' में भी इस पद का अर्थ 'सायं प्रातश्च' ही किया गया है।"

"सायण से भी अधिक आश्चर्य हमें वैंकट—माधव पर है। वैंकटमाधव ऋग्वेदज्ञों में मूर्धा-भिषिक्त है। वैंकट स्वर-शास्त्र का असाधारण ज्ञाता है। यह उसकी स्वरनुक्रमणी और ऋग्वेद के वृहद् भाष्य से स्पष्ट है। वैंकट स्वर नियात आदि विषयक अनुक्रमणियाँ उसके लघु भाष्य के ही अंश हैं। इससे हमें सन्देह होता है कि कहीं उसके 'लघु भाष्य' का पाठ भ्रष्ट न हो गया हो।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन से प्राचीन और प्रसिद्ध विद्वानों ने स्वर-शास्त्र में इतनी भिन्नता उत्पन्न कर दी है कि साधारण पाठक तो क्या अधिकांश विद्वान भी सहज में यह निर्णय नहीं कर सकते कि इनमें कौन सा अर्थ शुद्ध और निभ्रान्त है। 'वैदिक-स्वर-मीमांसा' के लेखक ने अपनी पुस्तक में प्राचीन स्वर-विद्वानों की भूलें ही नहीं बतलाई हैं वरन् वर्तमान समय में भी जिन दो-चार विद्वानों ने स्वर प्रक्रिया के सम्बन्ध में कलम उठाई है, उनके मतों का खण्डन करके उनकी भूलें प्रकट की हैं। वे लिखते हैं कि—

"वैदिक स्वरांकन का परिचय देने का प्रयत्न अनेक विद्वानों ने किया है। उनमें श्री पद्मनारायण आचार्य, श्री पं. घारेश्वर शास्त्री, श्री पं. सातवलेकर जी और श्री पं. विश्वबन्धु जी शास्त्री प्रमुख हैं। इन महानुभावों ने स्वरांकन, परिचय की जो पद्धति अपनाई है, वह भारतीय शास्त्रानुकूल नहीं है। कतिपय अंशों में शास्त्र विरुद्ध है। श्री पं. पद्मनारायण आचार्य और श्री पं. विश्वबन्धु शास्त्री का परिचय प्रकार योरीपीय पद्धति पर आश्रित है। शास्त्रीय पद्धति के परित्याग से अथवा योरोपीय पद्धति का आश्रय ग्रहण करने से साधारण से साधारण विषय न केवल क्लिष्ट और संदेह-युक्त हो जाता है अपितु उसके आधार पर वेद का सूक्ष्मार्थ भी नष्ट हो जाता है।"

इस परिस्थिति में मेरे स्वभावतः यह प्रश्न उपस्थित होता है कि स्वर-सम्बन्धी निर्णय में किस आधार को ग्रहण किया जाए? अभी तक जो वेदसंहितायें प्रकाशित हुई हैं, उनका आधार अधिकांश में सायण-भाष्य है। आधुनिक युग में वेदों का सर्वप्रथम अन्वेषण करने वाले मैक्स-मूलर साहब को बीस वर्ष तक अथक परिश्रम तथा अपार धनराशि व्यय करने पर भी केवल सायणाचार्य का भाष्य ही सर्वांगपूर्ण स्थिति में प्राप्त हो सका था। उसी के आधार पर उन्होंने सैकड़ों भारतीय पण्डितों की सहायता से लुप्त प्रायः वेदों को संसार के सम्मुख मुद्रित ग्रन्थ के रूप प्रकट किया था। इसके पश्चात् अधिकांश वेद-प्रकाशकों ने मैक्समूलर साहब के संस्करण से ही सहायता लेकर अपना काम चलाया है। इधर जो सूचनायें प्राप्त हुई हैं, उनसे विदित हुआ है कि आधुनिक खोज करने वालों ने वेदों का एकाध और भाष्य उपलब्ध किया है और उसे प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई है पर जिस सायण भाष्य का आधार लेकर विभिन्न भारतीय भाषाओं में अब तक वेदों का प्रकाशन किया गया है, उसे "वैदिक-स्वर-मीमांसा" के लेखक ने 'स्वशास्त्र' की दृष्टि से 'निरा बालक' बतलाया है और उनके कथनानुसार जहाँ सायण ने स्वतन्त्र रूप से स्वर-निर्णय किया है, उसमें लगभग आधी अशुद्धियाँ हैं । लेखक महोदय के कथन से प्रतीत होता है कि ये स्वर-सम्बन्धी अशुद्धियाँ हैं और भिन्नतायें आर्य समाज द्वारा अजमेर से प्रकाशित वेदों में भी पाई जाती हैं जिनमें से अथर्ववेद का संशोधन उन्होंने स्वयं छटे संस्करण में किया है। इन सब बातों पर विचार करके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि हम यह कहें कि इस समय स्वर-चिह्नों की दृष्टि से वेदों का पूर्णतः शुद्ध संस्करण मिल सकना असम्भव है तो इसे अत्युक्ति नहीं समझनी चाहिये।

वैदिक स्वरों के उच्चारण में कठिनाई

जैसा हमने ऊपर बतलाया है वैदिक मन्त्रों का सस्वर-उच्चारण यज्ञों में अति प्राचीन काल में प्रचलित था। अनेक विद्वानों का मत है कि उस समय स्वरों की संख्या आजकल की भाँति तीन ही न थी वरन् १८ थी। उस समय के कुशल स्तोतागण (मन्त्रों का पाठ करने वाले) उन सबका शुद्ध उच्चारण कर लेते थे। पर समय बीतने पर जैसे जैसे मनुष्यों के आहार-विहार में अन्तर पड़ता गया और वे फल, दूध आदि प्राकृतिक भोजन के स्थान पर अग्नि द्वारा पकाई गई भाँति-भाँति की स्वादिष्ट और कृत्रिम भोज्य-सामग्रियों-व्यंजनों का उपयोग करने लगे वैसे वैसे ही उनके कण्ठ स्वर में भी अन्तर पड़ने लगा और वैदिक स्वरों की समस्त सूक्ष्म ध्वनियों को शुद्ध रूप में प्रकट कर सकना उनके लिये कठिन हो गया। तब स्वरों की संख्या घटा कर सात कर दी गई अर्थात् (१) उदात्त, (२) उदात्ततर, (३) अनुदान, (४) अनुदात्ततर, (५) स्वरित, (६) स्वरितोदात्त, (७) श्रुति। कुछ समय पश्चात् जब इनमें भी अशुद्धि होने लगी तब स्वरों की संख्या तीन रह गई। फिर भी यज्ञ-संचालकों ने तब यह अनुभव किया कि स्वर-प्रक्रिया के अनुसार शुद्ध रूप से वेद-मन्त्रों का पाठ कर सकने वाले बहुत कम मिलते हैं तो उन्होंने 'एक श्रुति' में ही पाठ करने का विधान कर दिया। शांखायान, आश्वलायन और कात्यायन आदि श्रोत सूत्रों में यज्ञ-कर्म में मन्त्रों का एक श्रुति में उच्चारण विहित माना है। इन शाखाओं के ग्रन्थों का रचना काल अब से लगभग ५ हजार वर्ष पूर्व समझा जाता है। इससे प्रकट होता है कि महाभारत समय से पूर्व ही वैदिक-स्वरों का यथार्थ रूप में उच्चारण करने वाले ऋत्विज दुर्लभ होने लगे थे।

अन्य लोगों ने इस कठिनाई को दूर करने के लिये एक दूसरी विधि यह निकाली कि कण्ठ-स्वर ऊँचा-नीचा करने के वजाय हाथ को ऊँचा-नीचा करके, उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि स्वरों का संकेत किया जाय। वर्तमान समय में इस सम्बन्ध में जिन विद्वानों ने खोज की है, उनका कहना है कि इस समय, भारतवर्ष में शायद ही दस-पाँच महाराष्ट्रीय ऋग्वेदी पण्डित वेद मन्त्रों के तीन स्वरों का कण्ठ से उच्चारण करने में समर्थ हों, अन्यथा सब लोग हाथ द्वारा संकेत करके ही काम चलाते हैं।

स्वर-चिह्नों में पाया जाने वाला अन्तर

स्वरों को प्रकट करने के लिए अक्षरों के ऊपर नीचे जो खड़ी और आड़ी रेखायें लगाई जाती हैं, उनके स्वरूप के विषय में भी कम मदभेद नहीं है। प्राचीन काल में भी जो ग्रन्थ अब तक मिले हैं, उनमें विभिन्न शाखाओं के ग्रन्थों में प्रयुक्त चिह्नों में बहुत अन्तर है। ऋग्वेद आदि में स्वरित के लिये अक्षर के ऊपर खड़ी रेखाएँ लगाई जाती हैं, पर मैत्रायणी संहिता में उसे उदात्त का चिह्न मानकर लगाया गया है। इसी प्रकार अधिकांश संहिताओं में अनुदात्त के लिये अक्षर के नीचे जो आड़ी रेखा लगाई जाती है, शतपथ ब्राह्मण में उसे उदात्त के चिह्न के रूप में प्रयुक्त किया गया है। इन्हीं सब भिन्नताओं को अनुभव करके 'वैदिक स्वर मीमांसा' के लेखक ने यह स्वीकार किया है कि—

"वैदिक वाङ्मय के जितने ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं, उनमें उदात्त, अनुदात्त और स्वरित स्वरों का अंकन (संकेत चिह्न) एक प्रकार का नहीं है। उनमें परस्पर अत्यन्त वैलक्षण्य है। एक ग्रन्थ में स्वरित का चिह्न है, वहीं दूसरे ग्रन्थ में उदात्त का चिह्न माना जाता है। इसी प्रकार किसी ग्रन्थ में जो अनुदात्त का चिह्न है, वह अन्य ग्रन्थ में उदात्त का चिह्न होता है। साम-संहिता का स्वरांकन प्रकार सबसे विलक्षण है। उसके पद पाठ का स्वरांकन संहिता के स्वरांकन से भी पूर्णतया मेल नहीं रखता। इसलिये वेद के विद्यार्थी को पदे-पदे संदेह और कठिनाई उपस्थित होती है।"

"वेदाना सामवदोऽस्मि" कहकर गीता उपदेशक ने सामवेद की गरिमा को प्रकट किया है। साथ ही इस उक्ति के रहस्य की एक झलक पाने की ललक हर स्वाध्यायशील के मन में पैदा कर दी है। यों तो वेद के सभी मन्त्र अनुभूतिजन्य ज्ञान के उद्घोषक होने के कारण लौकिक एवं आध्यात्मिक रहस्यों से लबालब भरे हैं, फिर सामवेद में ऐसी क्या विशेषता है, जिसके कारण गीता ज्ञान को प्रकट करने वाले ने यह कहा कि 'वेदों में मैं सामवेद हूँ।'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यहाँ स्मरण रखने योग्य तथ्य यह है कि ऋषियों ने 'वेद' सम्बोधन किसी पुस्तक विशेष के लिए नहीं किया है, उसका अर्थ है दिव्य साक्षात्कार से उद्भूत ज्ञान। इस आधार पर 'वेद' कोई पुस्तक नहीं, ज्ञान की एक विशिष्ट परिष्कृत धारा है, तो सामवेद को भी मन्त्रों का एक संग्रह न कहकर ज्ञान की अभिव्यक्ति या उपयोग की एक विशिष्ट विधा ही कहा जा सकता है। इस दृष्टि से **'वेदानां सामवेदोऽस्मि'** का भाव यह निकलता है कि वेद की सामधारा या विधा को समझ लेने से 'मुझे' (परमात्म-चेतना को) भी समझा जा सकता है।

यहाँ ज्ञान के साथ भावना के संयोग का महत्व समझाया गया है। यह सत्य है कि ज्ञान दृष्टि से ईश साक्षात्कार किया जा सकता है, किन्तु भावना के बिना ज्ञान दृष्टि भी अपूर्ण ही रहती है। यह सत्य है कि **'भावे हि विद्यते देवाः तस्मात् भावो हि कारणम्'** अर्थात् भावना ही देवों का निवास है, अतः उनके साक्षात्कार का मुख्य आधार भावना ही है; किन्तु भावना एक उफान है, उसे भटकने से बचाकर दिशाबद्ध तो, ज्ञान ही, विवेक ही करता है। इसीलिए ज्ञान एवं भावना का युग्म ही ईश साक्षात्कार का सुनिश्चित आधार बनता है।

संत तुलसीदास ने इसीलिए श्रद्धा एवं विश्वास के रूप में भवानी-शंकर की वंदना करते हुए कहा है कि इनके योग के बिना सिद्ध पुरुष भी अपने अंतःकरण में विराजमान ईश तत्व का साक्षात्कार नहीं कर पाते—

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम्॥

— मानस

ज्ञान की परिपक्वता से विश्वास उपजता है तथा भावना की परिपक्वता श्रद्धा है। ज्ञान और भावना के संयोग से ईश से साक्षात्कार संभव है, यह तथ्य निर्विवाद है। सत्य से ईश्वर का बोध हो सकता है—यह मानने वाले अगले चरण में यह भी अनुभव करते हैं कि सत्य ही ईश्वर है; इसी तरह यह अनुभवगम्य है कि परिष्कृत ज्ञान और उत्कृष्टतम भावना का संयोग ईश्वरत्व ही है।

वेद है ज्ञान, साम है गान। गान का सीधा-सीधा सम्बन्ध भाव-संवेदना से है। अनुभूति की अभिव्यक्ति में शब्दों की सामर्थ्य छोटी पड़ जाती है। वेद अनुभूतिजन्य ज्ञान हैं, उसे व्यक्त करने में भी शब्द शक्ति अपर्याप्त है। ऋषि ने अनुभूतिजन्य ज्ञान को शब्दों में व्यक्त करने का प्रयास किया, किन्तु जब देखा कि पूरे प्रयास के बाद भी अभिव्यक्ति अनुभूति के स्तर की नहीं बन सकी, तो उसने ईमानदारी से कह दिया 'नेति-नेति'—'यह बात पूरी नहीं हो सकी'।

शब्दों द्वारा अभिव्यक्ति की तीन धाराएँ हैं—गद्य, पद्य एवं गान। ज्ञान की किसी भी धारा को इन्हीं माध्यमों से व्यक्त किया जाता रहा है। कोई भी देश-काल हो, अभिव्यक्ति के माध्यम तो यही हैं।

वेद का ज्ञान का मूल स्रोत ऋषियों ने ईश्वर को ही माना है। ज्ञान की सार्थकता-पूर्णता तभी है, जब वह पुनः अपने उद्गम तक जा पहुँचे। ईश्वर तक पहुँचने के लिए भावना का योग चाहिए। भाषा को भावपूर्ण बनाने के प्रयास में ही मन्त्र बने। गद्य की अपेक्षा पद्य में भाव-संयोग एवं उभार की क्षमता अधिक पाई गई। पद्य को भी जब गान विद्या से जोड़ा गया, तो भावना का प्रवाह अधिक पूर्णता से खुला—इस तथ्य को सभी जानते हैं।

जब वेद के पद्यबद्ध मन्त्रों को गान विद्या से अनुप्राणित किया गया, तो 'सामवेद' बन गया। मानवीय क्षमता के अंतर्गत ज्ञान और भावना का सर्वोत्कृष्ट संयोग होने से इसे सर्वश्रेष्ठ प्रयोग कहना सब प्रकार युक्तिसंगत है।

भाव विज्ञान एवं गान विद्या

सृष्टि क्या है? सृजेता की आत्माभिव्यक्ति ही तो है। भावमय परमात्मा द्वारा रची गई यह सृष्टि भी भावमय ही है। अंतरंग जीवन हो या बहिरंग, हम उसमें अपनी भावनाओं को ही प्रतिबिम्बित या प्रतिफलित होते देखते हैं। मन की कल्पनाओं, बुद्धि के विचारों और कर्म की हलचलों के ताने-बाने भावनाओं के आधार पर ही बनते-बदलते रहते हैं।

तरंगें चुम्बक की हों या विद्युत् की, वे अपना चक्र (सर्किट) पूरा करती हैं। भाव तरंगों के साथ भी ऐसा ही होता है। जिस तरह की भाव तरंगें हम विश्व चेतना में छोड़ते हैं, उसी के अनुरूप भाव तरंगें किसी न किसी माध्यम से हम तक पहुँचती रहती हैं। ऋषियों ने यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विज्ञान समझा और सिद्ध किया था इसीलिए वे विश्वव्यापी भाव-प्रवाहों को परिष्कृत करते रहने में सफल होते रहते थे। आज के जमाने में भी मनोवैज्ञानिकों ने इस तरह के कुछ प्रयोग सम्पन्न किये, जिससे भावप्रवाहों के प्रतिफलित होने की बात प्रमाणित होती है। उदाहरण के लिए एक प्रयोग के दौरान मनोविद् लारेंस डी. वैलेस ने तनाव, आशंका, भयजनित पीड़ाओं से ग्रस्त कुछ ऐसे व्यक्तियों को लिया, जिनका संसार दुःख से भरा था। उन्हें सामूहिक रूप से इस भाव में विभोर होने को कहा गया—समूची सृष्टि शान्ति-प्रेम व आनन्द की तरंगों से भरी है। ये तरंगें स्वयं में समा रही हैं और व्यक्तित्व को इन्हीं भावों से भर रही हैं। धीरे-धीरे स्वयं के अस्तित्व के रोम-रोम से यही भाव निकलकर सारे समाज में फैल रहे हैं। इन भावों की गहराई में स्वयं को समाहित करने में शुरुआत में थोड़ी कठिनाई हुई, ईर्ष्या-द्वेष की विक्षुब्धता एवं मन के बिखराव ने बाधा डाली, किन्तु तीन-चार दिनों में सभी को इसमें रस आने लगा। स्वयं में परिवर्तन की भी अनुभूति हुई। इस प्रयोग में लिये गये पचास व्यक्तियों ने धीरे-धीरे जीवन रस को अनुभव किया। जिस जिन्दगी से वे निराश हो गये थे, उसमें अमृत-रस-वर्षण की अनुभूति हुई।

लारेन्स डी. वैलेस ने अपने इन्हीं प्रयोगों की श्रृंखला में एक और प्रयोग किया। इसमें समूह के स्थान पर व्यक्ति का चयन किया गया। ऐसे व्यक्ति जो किसी व्यक्ति विशेष से आशंकित अथवा भयग्रस्त थे, इनसे उपर्युक्त भाव में तल्लीन होने के साथ यह निर्देश दिया गया कि स्वयं के अस्तित्व से विकसित होकर ये भार उस व्यक्ति विशेष में प्रवेश कर रहे हैं। उसका व्यक्तित्व घृणा-विद्वेष के स्थान पर शान्त प्रेम-आनन्द से भर रहा है। इस प्रयोग के परिणाम उन्हें प्रयोग में लिए गये व्यक्तियों के मन की समर्थता के क्रम में प्राप्त हुए। जिस व्यक्ति का मन जितना अधिक समर्थ था, उसने उतनी ही गहनता से इन भावों को सम्प्रेषित किया। जिस व्यक्ति में सम्प्रेषण किया गया था, उसने स्वयं की भावनाओं में परिवर्तन की अनुभूतियाँ कीं। कई बार तो ये अनुभव स्थायी प्रेम में बदल गये।

इन सफलताओं के क्रम में वैलेस ने एक आयाम विकसित किया। इस क्रम में लगभग एक मनःस्थिति के भाव-सम्पन्न लोगों को लेकर कई शहरों में स्थान-स्थान पर शांति-सभाओं का आयोजन किया, जिसमें प्रयोगकर्त्ताओं ने शान्ति-प्रेम, आनन्द की भाव-तरंगों को धारण-सम्प्रेषण का प्रयोग गहरी तल्लीनता-तन्मयता के साथ किया। प्रयोग के पहले उन स्थानों की अपराध दर, आत्महत्या दर, जैसे ऑकलन किये गये थे, बाद में इनके घटते क्रम की सुखद अनुभूति हुई। इन सभी प्रयोगों में वैज्ञानिक विधि का पूरा-पूरा पालन किया गया। परिणामों का ऑकलन भी सांख्यकीय गणना प्रणाली से किया गया।

उक्त प्रयोग ऋषियों द्वारा किये गये प्रयोगों की तुलना में चाहे जितने हल्के कहे जायें, किन्तु उनसे अब भी-प्रवाहों की क्षमता तो, प्रमाणित हो ही जाती है। प्रकृति की इस व्यवस्था का लाभ आज भी इस विद्या को विकसित करके उठाया जा सकता है।

भावों को उभारने और सम्प्रेषित करने में गायन का महत्व हमेशा रहा है और आज भी है। वेद ने भी इसीलिए उसका उपयोग विशेषज्ञता के साथ किया है। अभिव्यक्ति के तीन माध्यमों (१) गद्य, (२) पद्य और, (३) गायन में, गायन को भावविद्या में सबसे अग्रणी देखकर उसे विशेष महत्व दिया गया। ज्ञान की अभिव्यक्ति की उक्त तीन विधाओं के कारण वेद को तीन प्रवाहों-युक्त "वेद त्रयी" कहा गया। यह विभाजन इन तीन विधाओं के आधार पर है, न कि पुस्तकाकार संकलनों के आधार पर। पुस्तकाकार संकलन विषयानुसार भले ही चार भागों में किये गये हैं, किन्तु वे इन्हीं तीन धाराओं के अंतर्गत आ जाते हैं।

भाषा कोई भी हो, उसमें अभिव्यक्ति के तीन ही विभाग हैं—गद्य, पद्य और गान। यथार्थ में कहा जाय, तो यह जाने-अनजाने वैदिक परम्परा का अनुगमन ही है। यजुर्वेद में जो पादबद्ध मन्त्र ऋग्वेद या अथर्ववेद से लिये गये हैं, वे पद्य के समान नहीं बोले जाते, बल्कि गद्य की तरह बोले जाते हैं अर्थात् वे ही मन्त्र ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में पद्य के अनुसार छंदों में बोले जाते हैं और वे ही यजुर्वेद में बोलने के समय गद्य के समान बोले जाते हैं। पाठ की इस परिपाटी का निर्वाह अतिप्राचीन समय से होता आया है।

त्रयी हो या चतुष्टयी, वेद मन्त्रों की गणना में कोई अंतर नहीं। वेदत्रयी में भाषा की रचना प्रमुख है और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेद चतुष्टयी में प्रतिपाद्य विषय की प्रधानता है। इसको इस ढंग से भी समझ सकते हैं—वेदत्रयी अर्थात्—पद्य मन्त्र, गद्य मन्त्र एवं गान के मन्त्र। वेद चतुष्टयी—अर्थात् गुण वर्णन के मन्त्र, यज्ञ कर्म के मन्त्र, गान के मन्त्र और ब्रह्म ज्ञान के मन्त्र।

इन सबमें भाव-तरंगों के रहस्यमय दिव्य प्रयोगों को सम्पन्न करने वाले गान के मन्त्रों को अपेक्षाकृत कहीं अधिक महत्वपूर्ण माना गया है। तभी इसके प्रयोग प्रत्येक शुभ कर्म के प्रारम्भ में करने का स्पष्ट निर्देश है। बात भी सही है, पद्य गद्य और गायन में से मन पर "गायन" का विशेष प्रभाव पड़ता है। इसका अनुभव हम सबको सामान्य जीवन क्रम में भी होता रहता है। गायन से पीड़ित हृदय को शान्ति और संतोष मिलता है। इससे मनुष्य की सृजन-शक्ति का विकास और आत्मिक प्रफुल्लता बढ़ती है। सच कहें, गायन की अमूल्य निधि देकर परमात्मा ने मनुष्य की पीड़ा को कम किया है। मानवीय गुणों में प्रेम और प्रसन्नता को बढ़ाया है।

शास्त्रकारों ने स्पष्ट स्वरों में घोषणा की है—

"स्वरेण संल्लीयते योगी" स्वर साधना के द्वारा योगी अपने को तल्लीन करते हैं। एकाग्र की हुई मनःशक्ति को विद्याध्ययन से लेकर जीवन के किसी भी क्षेत्र में लगाकर चमत्कारी सफलताएँ अर्जित की जा सकती हैं। इसलिए यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि इससे मनुष्य की क्रिया शक्ति बढ़ती और आत्मिक आनन्द की अनुभूति होती है। वेद के प्रणेता ऋषि-महर्षियों ने इस तत्व की अनुभूति बहुत पहले ही कर ली थी, तभी तो उन्होंने अपने शोध-निष्कर्ष में कहा—**"अभिस्वरन्ति बहवो मनीषिणो राजानमस्य भुवनस्य निंसते"**। (ऋ ९.५८.१३) अर्थात्—'अनेक मनीषी विश्व के महाराजाधिराज भगवान की ओर संगीतमय स्वर लगाते हैं और उसी के द्वारा उन्हें प्राप्त करते हैं।'

एक अन्य मन्त्र में बताया है कि ईश्वर प्राप्ति के लिए भक्ति-भावनाओं के विकास में गायन का योगदान असाधारण है—**"स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ....।"** (ऋ ८.३३.२) अर्थात् "हे शिष्य! तुम अपने आत्मिक उत्थान की इच्छा से मेरे पास आये हो। मैं तुम्हें ईश्वर का उपदेश देता हूँ। तुम उसे प्राप्त करने के लिए संगीत के साथ उसे पुकारोगे, तो वह तुम्हारी हृदय गुहा में प्रकट होकर अपना प्यार प्रदान करेगा।"

संगीत के दृश्य-अदृश्य प्रभावों के अनुसंधान में रत ऋषियों को ऐसी चमत्कारी शक्तियाँ-सिद्धियाँ और अध्यात्म का इतना विशाल क्षेत्र उपलब्ध हुआ, जिसे वर्णन करने के लिए एक पृथक् वेद की रचना करनी पड़ी। सामवेद में भगवान की संगीत शक्ति के ऐसे रहस्य प्रतिपादित और पिरोये हुए हैं, जिनका अवगाहन कर मनुष्य अपनी आत्मिक शक्तियों को तुच्छ से महान—सूक्ष्म से विराट् बना सकता है, विश्वात्मा से मिल सकता है। अब तो पाश्चात्य विद्वानों की मान्यताएँ भी उनके समर्थन में मुखर हो उठी हैं। उनके कथन से, जो निष्कर्ष मिलते हैं, उनसे वही साबित होता है कि यदि मानवीय गुणों और आत्मिक आनन्द को जीवत रखना है, तो मनुष्य स्वयं को गायन से जोड़े रहे। उन्होंने संगीत की तुलना प्रेम से की है। दोनों ही समान उत्पादक शक्तियाँ हैं। इन दोनों का प्रकृति और जीवन दोनों पर चमत्कारी प्रभाव पड़ता है। संगीत आत्मा की उन्नति का सबसे अच्छा साधन है, इसलिए हमेशा वाद्य यंत्र के साथ गाना चाहिए। यह पाइथागोरस की मान्यता थी, पर डॉ. मैक फेडेन ने अकेले गायन को भी प्रभावोत्पादक और लाभकारी बताया है। इस सम्बन्ध में कविवर रबीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में कहें तो—"स्वर्गीय सौन्दर्य का कोई साकार रूप और सजीव प्रदर्शन है, तो उसे संगीत ही होना चाहिए।"

अलग-अलग प्रकार की सम्मतियाँ, वस्तुतः अपनी-अपनी तरह की विशेष अनुभूतियाँ हैं, अन्यथा गायन में शरीर, मन व आत्मा तीनों को बलवान बनाने वाले तत्व परिपूर्ण मात्रा में विद्यमान हैं। यही कारण था—ऋषियों ने विशिष्ट मन्त्रों का संकलन कर गायन की पद्धति विकसित की। आधुनिक विद्वान् भी इस तथ्य को स्वीकार करने लगे हैं कि समस्त स्वर, ताल, लय, छंद, गति, मन्त्र, स्वर-चिकित्सा, राग, नृत्य, मुद्रा, भाव आदि सामवेद से ही निकले हैं।

संगीत रत्नाकर में इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए नाद को २२ श्रुतियों में विभक्त किया गया है। ये श्रुतियाँ कान से अनुभव की जाने वाली विशिष्ट शक्ति तरंगें हैं। इसका प्रभाव मानवीय काया और चेतना पर होता है। इन बाईस शब्द श्रुतियों के नाम हैं—(१)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तीव्रा, (२) कुमुद्वति, (३) मंदा, (४) छंदोवती, (५) दयावती, (६) रंजनी, (७) रतिका, (८) रौद्री , (९) क्रोधा, (१०) वज्रिका, (११) प्रसारिणी, (१२) प्रीति, (१३) मार्जनी, (१४) क्षिति, (१५) रक्ता, (१६) सांदीपिनी, (१७) अलापिनी, (१८) मदन्ती, (१९) रोहिणी, (२०) रम्या, (२१) उग्रा और, (२२) क्षोभिणी—ये बाईस ध्वनि शक्तियाँ ही सप्त स्वरों के रूप में सम्बद्ध हैं। यह विभाजन इस प्रकार है—

षड्ज—(स) तीव्रा, कुमद्वति, मन्दा, छन्दोवती।

ऋषभ—(रे) दयावती, रंजनी, रतिका।

गान्धार—(ग) रौद्री, क्रोधा।

मध्यम—(म) वज्रिका, प्रसारिणी, प्रीति, मार्जनी।

पंचम—(प) क्षिति, रक्ता, सांदीपिनी, अलापनी।

धैवत—(ध) मदन्ती, रोहिणी, रम्या।

निषाद—उग्रा, क्षोभिणी।

इन बाईस श्रुतियों को गायन के द्वारा उत्पन्न होने वाले भौतिक एवं चेतनात्मक प्रभाव ही समझना चाहिए। औषधियाँ जिस प्रकार मूल द्रव्यों के रासायनिक सम्मिश्रण से उत्पन्न होने वाले अतिरिक्त प्रभाव के कारण विभिन्न रोगों पर अपना प्रभाव डालती हैं। उसी प्रकार इन बाईस शक्तियों का उनके सम्मिश्रण का वस्तुओं तथा प्राणियों पर प्रभाव पड़ता है। इस सारी शोध का मूल स्रोत सामवेद ही है। वैदिक काल में इस रहस्यमय विज्ञान के ज्ञाता, मन्त्र गायन, भाव मुद्राओं के और रसानुभूतियों के आधार पर अपने अन्तराल में दबी हुई शक्तियों को जगाते थे और सम्पर्क में आने वाले प्राणि-मात्र की व्यथा-वेदना हरते थे। जड़चेतन प्रकृति को प्रभावित करके वे अवांछनीय परिस्थितियों को बदलकर, अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने में चमत्कारी सफलता प्राप्त करते थे।

स्वर विज्ञान का, मंच का, गायन-वादन अर्थात् संगीत का इतना व्यापक प्रभाव चर-अचर प्रकृति पर क्यों होता है? इस प्रश्न का सही उत्तर वह योगी दे पाते हैं, जिन्होंने समाधि की गहराई में उतरकर यह अनुभव किया है कि यह सृष्टि लयबद्ध-संगीतमय है। अलौकिक संगीत का एक दिव्य प्रवाह समूची सृष्टि में सतत संचरित होता रहता है। इसे अनाहत या अनहद नाद के रूप में वर्णित करने का प्रयास भी किया जाता रहा है। ओंकार की ध्वनि 'प्रणव' भी इसी दिव्य संगीत को कहा गया है। इसीलिए शास्त्रों में स्थान-स्थान पर प्रणव की महत्ता गायी गई है। गीता में **'प्रणवः सर्ववेदेषु'** (गीता ७.८) तथा महाभारत में भी **'ओंकारः सर्ववेदानाम'** (अश्वमेध पर्व ४४.६) कहा गया है। इन उक्तियों से सामवेद का महत्व घटता नहीं, बढ़ता ही है। ओंकार का गान और उद्गीथ समानार्थक हैं। उद्गीथ को साम का अविच्छिन्न अंग माना गया है, छान्दोग्योपनिषद् (१.१.२) का कथन है—

"वाचः ऋग्रसः, सामरसः साम्नः, उद्गीथो रसः।"

अर्थात् 'वाणी का रस ऋचा है, ऋचा का रस साम है और साम का रस उद्गीथ है।' आगे और भी कहा गया है—**'सामवेद एव पुष्पम्'** (छा. उ. ३.३.१) 'वेदों में सामवेद ही पुष्प है।' पुष्प छोटा दिखे भले ही; किन्तु वह वृक्ष की सार्थकता का प्रतीक माना जाता है। सामगान के माध्यम से मन को सूक्ष्मतर बनाते हुए दिव्य संगीत-प्रवाह के साथ संयुक्त करने में ऋषियों ने सफलता प्राप्त की थी। साम का—शब्द को—ब्रह्म की गायन रूपी मूर्ति कहा जा सकता है।

सामवेद का अर्थ और स्वरूप

अपनी अनेकानेक विशेषताओं के कारण इसके अनुशीलन का आकर्षण स्वाभाविक है। तनिक इसके अर्थ व स्वरूप पर भी विचार करें—सामवेद का अर्थ सिर्फ मन्त्र संग्रह है अथवा गान भी। इसके उत्तर में छान्दोग्योपनिषद् (१.३.४) का कथन है—

या ऋक् तत् साम॥ अर्थात् 'जो ऋचा, है वही साम है', यह ठीक भी है। ऋचा गेय पद है—गान उन्हीं का हो सकता है। आगे एक स्थान पर कथन है—**ऋचि अध्यूढं साम॥** (छा. उ. १.६.१) "साम ऋचा पर आधारित होते हैं। साम ऋचा को छोड़कर और किसी आश्रय में नहीं रह सकता। ऋग्वेद और सामवेद के युग्म को पति-पत्नी के युग्म की तरह माना गया है। ऐसा कहा भी गया है—

अमोऽहमस्मि सा त्वं, सामाहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्। ताविह संभवाव, प्रजामाजनयावहै।
(अथ. १४.२.७११; ऐत. ब्रा. ८.२७; बृ. उ. ६.४.२०)

'मैं पति "अम" हूँ और तू स्त्री "ऋचा" है, "साम" मैं हूँ, ऋचा तू है, "द्यौ" मैं हूँ और "पृथिवी" तू है, हम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दोनों यहाँ मिलकर उत्पन्न होते रहें, प्रजा उत्पन्न करें।' इसमें साम शब्द की व्युत्पत्ति दी है। **सा + अमः = सामः**। 'सा' का मतलब है ऋचा और 'अम' का मतलब है आलाप, अतः साम का अर्थ है— "ऋचाओं के आधार पर किया गया गान।"

ऋग्वेद और अथर्ववेद में पादबद्ध मन्त्र हैं और इसका गान होता है। "ऋचा रूपी स्त्री और सामगान रूपी पुरुष का विवाह हुआ है। पति-पत्नी के समान साम और ऋचा का सम्बन्ध है उपनिषदों ने इनका एक और सम्बन्ध बताया है—

"वाक् च प्राणश्च, ऋक् च साम च।"

(छा. उ. १.१.५)

"वागेव सा प्राणोऽमस्तत्साम॥"

(छा. उ. १.७.१)

"वाणी और प्राण क्रमशः ऋक् और साम हैं। वाणी ऋचा है और प्राण साम है।" वाणी और प्राण का जैसा सम्बन्ध है, वैसा ही सम्बन्ध ऋचा और साम का है।

ऋचा का मतलब है—चरण युक्त मन्त्र। इन मन्त्रों का षड्ज, मध्यम आदि स्वरों में आलाप होता है। जैमिनि सूत्र में कहा है—

गीतिषु सामाख्या॥

(जै. सू. २.१.३६)

वेद मन्त्रों के गान की संज्ञा साम है। न केवल मन्त्र पाठ को ही साम माना जा सकता है और न सिर्फ गाने की ही; बल्कि इन दोनों के मिश्रण को ही 'साम' कहा गया है। छान्दोग्य-उपनिषद् में शालावत्य व दाल्भ्य संवाद में वर्णित है—**का साम्नो गतिरिति? स्वर इति होवाच।** (छा. उ. १.८.४) "साम की गति क्या है? स्वर-आलाप ही साम की गति है।" स्वर अथवा आलाप के बिना साम नहीं होता। बृहदारण्यक उपनिषद् के शब्दों में —**तस्य हैतस्य साम्नो यः स्वं वेद, भवति हास्य स्वं तस्य वै स्वर एवं स्वं..। (१.३.२५)।** "साम का स्वरूप आलाप है।"

अतः निश्चित है कि साम शब्द से हमें उन गानों को समझना चाहिए, जो भिन्न-भिन्न स्वरों में ऋचाओं पर गाये जाते हैं। साम शब्द की बड़ी सुन्दर निरुक्ति बृहदारण्यक उपनिषद् में दी गई है—**सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्** (बृ. उ. १.३.२२)। 'सा' शब्द का अर्थ है—ऋक् और अम् शब्द का अर्थ है— गान्धार आदि स्वर। अतः साम शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ हुआ—ऋक् के साथ सम्बद्ध स्वर प्रधान गायन।

'तया सह सम्बद्धः अमो नाम स्वरः यत्र वर्तते तत्साम।'

जिन ऋचाओं के ऊपर ये साम गाये जाते हैं, उनको वैदिक लोग "साम योनि" नम् से पुकारते हैं। यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि जिसे साम-संहिता कहा गया है, वह इन्हीं सामयोनि ऋचाओं का संग्रह है। यही सामवेद के रूप में पुस्तकाकार संकलित है।

सामवेद के दो प्रधान भाग हैं—आर्चिक तथा गान। आर्चिक का शाब्दिक अर्थ है ऋक् समूह, जिसके दो भाग हैं—पूर्वार्चिक तथा उत्तरार्चिक। पूर्वार्चिक में ६ प्रपाठक या अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में अनेक खण्ड हैं, जिन्हें 'दशति' भी कहा गया है। 'दशति' शब्द से प्रतीत होता है कि इनमें ऋचाओं की संख्या दस होनी चाहिये; परन्तु किसी खण्ड में यह संख्या दस से कम, कहीं दस से अधिक है। इन खण्डों में मन्त्रों का संकलन छंद तथा देवता की एकता पर निर्भर है।

प्रथम प्रपाठक या अध्याय को आग्नेय काण्ड (या पर्व) कहते हैं। इसमें अग्नि विषयक ऋक् मन्त्रों का समन्वय उपस्थित किया गया है। दूसरे से लेकर चौथे अध्याय तक इन्द्र की स्तुति होने से यह ऐन्द्र पर्व कहलाता है। पञ्चम अध्याय पावमान पर्व है। इसमें सोम विषयक ऋचाएँ संकलित हैं। जो पूरी तरह से ऋग्वेद के नवम मण्डल से ली गई हैं। छठे अध्याय को आरण्य पर्व कहा गया है। इसमें देवताओं तथा छंदों की भिन्नता होने के बावजूद गान विषयक एकता विद्यमान है। पहले से लेकर पाँचवें अध्याय तक की ऋचाओं को तो ग्राम गान कहते हैं, लेकिन छठे अध्याय की ऋचाएँ अरण्य में गेय होने के कारण "अरण्य गान' कही जाती हैं। अन्त में परिशिष्ट रूप से 'महानाम्नी' नामक ऋचाएँ दी गई हैं। इस तरह पूर्वार्चिक के मन्त्रों की संख्या ६५० है।

उत्तरार्चिक में प्रपाठकों की संख्या नौ है। पहले पाँच प्रपाठक में दो-दो भाग हैं। जो प्रपाठकार्ध कहे जाते हैं, जिन्हें अध्याय भी माना गया है। अंतिम चार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रपाठकों में तीन-तीन अर्ध हैं। यह गणना राणायनीय शाखा के अनुसार है। कौथुम शाखा में इस अर्ध को अध्याय तथा दशतियों को खण्ड कहने का चलन है। नौवें प्रपाठक में तीन अर्ध हैं, किन्तु प्रथम एवम् द्वितीय अर्धों को मिलाकर एक ही अध्याय माना गया है। इस प्रकार प्रथम पाँच प्रपाठकों के दस अध्याय, ६, ७ एवम् ८ प्रपाठकों के तीन-तीन अर्थात् नौ अध्याय तथा नौवें के दो अध्याय इस प्रकार कुल २१ अध्याय हैं। उत्तरार्चिक के सारे मन्त्रों की कुल संख्या बारह सौ पच्चीस (१२२५) है। अतः दोनों आर्चिकों की सम्मिलित मन्त्र संख्या अठारह सौ पचहत्तर (१८७५) है।

ऊपर बताया जा चुका है कि साम ऋचाएँ ऋग्वेद से ली गई हैं, लेकिन फिर भी कुछ ऋचाएँ पूरी तरह भिन्न हैं, अर्थात् उपलब्ध शाकल्य संहिता में ये ऋचाएँ बिल्कुल नहीं मिलतीं। यह भी ध्यान देने की बात है कि पूर्वार्चिक के २६७ मन्त्र (लगभग तीन हिस्से से कुछ ऊपर ऋचाएँ) उत्तरार्चिक में फिर से लिए गए हैं। अतः ऋग्वेद की वस्तुतः १५४० ऋचाएँ ही सामवेद में उद्धृत हैं। सामान्यतया ७५ मन्त्र अधिक माने जाते हैं; परन्तु वास्तविक संख्या इससे अधिक है। ९९ ऋचाएँ एकदम नयी हैं। इनका संकलन शायद ऋग्वेद की अन्य शाखाओं का संहिताओं से किया गया होगा। इस तरह-ऋग्वेद की ऋचाएँ १५०४ + पुनरुक्त २६७ = १७७१, नवीन ९९ + पनुरुक्त ५ = १०४ साम संहिता की सम्पूर्ण ऋचाएँ- १८७५।

ऋक् और साम के अन्तर्सम्बन्ध

ऋग्वेद तथा सामवेद के पारस्परिक सम्बन्धों को स्पष्ट किये बगैर, बात अधूरी रह जायेगी। वैदिक विद्वानों की यह धारणा है कि सामवेद में उपलब्ध ऋचाएँ ऋग्वेद से ही गान के निमित्त संगृहीत की गई हैं; परन्तु कुछ ऐसे प्रमाण भी मिलते हैं, जो इस धारणा पर पुनर्विचार किये जाने के लिए प्रेरित करते हैं।

(१) कहीं-कहीं सामवेद की ऋचाओं में ऋग्वेद की ऋचाओं से केवल आंशिक साम्य ही देखने को मिलता है। ऋग्वेद का **'अग्ने-युक्ष्वा हि ये तवाऽश्वासो देव साधवः अरं वहन्ति मन्यवे।** (६.१६.४३) सामवेद में —**अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वा सो साधवः। अरं वहन्त्याशवः** रूप में पठित है। इस आंशिक साम्य के तथा मन्त्र के पादव्यत्यय के अनेकों उदाहरण सामवेद में यत्र-तत्र बिखरे हैं। यदि इन ऋचाओं को लिया गया होता, तो इन्हें उसी रूप व क्रम में निहित होना था, पर ऐसा नहीं है।

(२) इन ऋचाओं को यदि गायन के लिए सामवेद में लिया गया है, तो सिर्फ उतने ही मन्त्रों का ऋग्वेद से संकलन करना चाहिए था, जितने मन्त्र गान या साम के लिए अपेक्षित होते। इसके उल्टे दिखाई यह देता है कि साम-संहिता में लगभग ४५० ऐसे मन्त्र हैं, जिन पर कोई गान नहीं है। ऐसे गान हेतु अनपेक्षित मन्त्रों के संकलन की जरूरत क्यों पड़ी?

(३) यदि साम मन्त्रों को ऋग्वेद से लिया गया है तो इसका रूप ही नहीं, स्वर निर्देश भी तदनुरूप होना चाहिए था। ऋक् मन्त्रों में उदात्त-अनुदात्त तथा स्वरित स्वर पाये जाते हैं। जबकि सामवेद में उनका निर्देश एक, दो तथा तीन अंकों द्वारा करने की प्रथा है। ये नारदीय शिक्षा के अनुसार क्रमशः मध्यम, गान्धार और ऋषभ स्वर हैं। इन्हें अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा अंगुलियों के मध्यम पर्व पर अंगुष्ठ का स्पर्श करते हुए दिखाया जाता है। साम मन्त्रों के उच्चारण में ऋक् मन्त्रों के उच्चारण में पर्याप्त भिन्नता है।

(४) यदि सामवेद, ऋग्वेद के बाद की रचना है, जैसा कि आधुनिक विद्वानों की मान्यता है, तो ऋग्वेद के अनेक स्थानों पर साम का उल्लेख नहीं मिलना चाहिए। जबकि ऋग्वेद के अनेक स्थलों पर साम का उल्लेख देखा जा सकता है। यथा—**अंगिरसां सामभिः स्तूयमानाः** (ऋक्. १.१०७.२) **उद्गातेव शकुने साम गायसि** (२.४३.२) **इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत्।** (८.९८.१) आदि मन्त्रो में न केवल सामान्य साम का बल्कि बृहत् साम का उल्लेख भी है। ऐतरेय ब्राह्मण (२.२३) का तो स्पष्ट कथन है कि सृष्टि के आरम्भ में ऋक् और साम दोनों का अस्तित्व था **(ऋक च वा इदमग्रे साम चास्ताम्)**। इतना ही नहीं यज्ञ की सफलता-सम्पन्नता के लिए होता, अध्वर्यु तथा ब्रह्मा नामक व्यक्तियों के साथ उद्गाता का काम साम गायन ही तो है; तब साम को अर्वाचीन किस आधार पर माना जाय?

(५) जब साम का नामकरण विशिष्ट ऋषियों के नाम पर किया गया मिलता है तो क्या ये ऋषि इन सामों के कर्त्ता नहीं हैं? इसका जवाब है कि जिस साम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

से सर्वप्रथम जिस ऋषि को इष्ट प्राप्ति हुई, उस साम का वह ऋषि कहलाता है। ताण्ड्य ब्राह्मण में इस तथ्य के द्योतक स्पष्ट प्रमाण देखने को मिलते हैं—**"वृषा शोणो अभिकन्क्रिदत्"** (ऋ ९.९७.१३) ऋचा पर साम का नाम 'वसिष्ठ' होने का यही कारण है कि विडु के पुत्र वसिष्ठ ने इस साम से स्तुति करके अनायास स्वर्ग प्राप्त कर लिया (**वसिष्ठं भवति वसिष्ठो वा एतेन वैडवः स्तुत्वाऽञ्जसा स्वर्गलोकमपश्यत्—ताण्ड्य ब्रा. ११.८.१३**) **तं वो दस्म मृतीषहं** (८.८८.१) मन्त्र पर नौधस साम के नामकरण का ऐसा ही कारण अन्यत्र कथित है (ताण्ड्य ब्रा. ७.१०.१०) फलतः इष्ट सिद्धि निमित्तक होने से ही सामों का ऋषिपरक नाम है, उनकी रचना हेतुक नहीं।

इन बिन्दुओं पर गहन चिन्तन करने पर यह मानना पड़ता है कि साम संहिता के मन्त्र ऋग्वेद से उधार लिए नहीं प्रतीत होते। ये उतने ही स्वतंत्र हैं, जितने के ऋग्वेद के मन्त्र, साथ ही उतने ही प्राचीन भी। वेदों के अधिकारी विद्वान् पं. दुर्गादत्त त्रिपाठी ने भी 'सिद्धांत' पत्रिका वर्ष १३ में प्रकाशित अपने लेख "ऋक् साम सम्बन्ध पर कुछ विमर्श" में इसी तथ्य की सत्यता बतायी है। अतएव यही कहना होगा कि साम संहिता की अपनी स्वतंत्र सत्ता है।

सामवेद का शाखा विस्तार

वायु पुराण, भागवत पुराण, विष्णु पुराण के अनुसार भगवान वेदव्यास ने अपने शिष्य जैमिनि को साम की शिक्षा दी। ये ही साम के आद्य आचार्य के रूप में माने जाते हैं। इस अध्ययन परम्परा में जैमिनि से उनके पुत्र सुमन्तु सुमन्तु, से उनके पुत्र सुन्वान्, सुन्वान् से स्वकीय सूनु सुकर्मा दीक्षित हुए। इस संहिता के व्यापक विस्तार का श्रेय इन्हीं सामवेदाचार्य सुकर्मा को है। इनके दो पट्ट शिष्य हुए (१) हिरण्यनाभ कौसल्य तथा (२) पौष्यञ्जि, जिससे साम गायन की प्राज्य तथा उदीच्य दो धाराओं का विकास हुआ। प्रश्न उपनिषद् (६.१) में हिरण्यनाभ को कोसल देश का राजकुमार बतलाया गया है। भागवत (१२.६.७८) सामगानों की दो परम्पराओं का उल्लेख किया है, प्राच्य सामगाः एवं उदीच्य सामगाः। इस नाम निर्देश का कारण भौगोलिक भिन्नता है।

भागवत में भी सुकर्मा के दो शिष्यों का जिक्र आया है। (१) हिरण्यनाभ (या हिरण्यनाभी) कौसल्य (२) पौष्यञ्जि, जो अवन्ति देश के निवासी होने से आवन्त्य कहे गये हैं। इनमें से अंतिम आचार्य के शिष्य उदीच्य सामगाः कहलाते हैं। हिरण्यनाभ कौसल्य की परम्परा वाले सामग प्राच्य सामगाः के नाम से प्रसिद्ध हुए। हिरण्यनाभ का शिष्य पौरव वंशीय सन्नतिमान राजा का पुत्र कृत था, जिसने साम संहिता का चौबीस प्रकार से अपने शिष्यों द्वारा प्रवर्तन किया। इसका वर्णन मत्स्य पुराण (४९.७५-७६), हरिवंश (२०.४१-४४), विष्णु (४.१९-५०); वायु (४१.४४) ब्रह्माण्ड पुराण (३४.४९-५०) तथा भागवत (१२.६.८०) में समान शब्दों में किया गया है। वायु तथा ब्रह्माण्ड में कृत के चौबीस शिष्यों के नाम भी दिये गये है। कृत के अनुयायी होने के कारण ये साम आचार्य कार्त नाम से प्रख्यात हुए—

चतुर्विंशतिधा येन प्रोक्ता वै साम संहिता।
स्मृतास्ते प्राच्य सामानः कार्ता नामेह सामगाः॥

— मत्स्य पु. ४९.७६

इनके लौगाक्षि, मांगलि, कुल्य, कुसीद तथा कुक्षि नामक पाँच शिष्यों के नाम श्रीमद्भागवत (१२.६.७९) में दिये गये हैं। जिन्होंने सौ-सौ साम संहिताओं का अध्यापन प्रचलित कराया। वायु तथा ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार इन शिष्यों के नाम तथा संहिता में पर्याप्त भिन्नता दीख पड़ती है। इनका कहना है कि पौष्यञ्जि के चार शिष्य थे—लौगाक्षि, कुथुमि, कुसीदी तथा लांगलि। इनकी विस्तृत शिष्य परम्परा का वर्णन-विवरण इन पुराणों में विशेष रूप से दिया गया है। नाम-धाम में चाहे कुछ भिन्नता दिखाई पड़े, पर इतना तो निश्चित है ही कि सामवेद की हजार शाखाओं से मंडित होने में सुकर्मा के ही दोनों शिष्य-हिरण्यनाभ तथा पौष्यञ्जि प्रधान कारण थे।

पुराणों में जो विवरण मिलता है, उससे सामवेद की एक सहस्र शाखाएँ होने की जानकारी मिलती है। इसी की पुष्टि व्याकरण महाभाष्य के प्रणेता पतञ्जलि के **'सहस्र वर्त्मा सामवेदः'** वाक्य से भली-भाँति होती है। सामवेद गान प्रधान है। अतः संगीत की विपुलता तथा सूक्ष्मता को ध्यान में रखकर विचार करने पर यह संख्या कल्पित नहीं प्रतीत होती। लेकिन पुराणों में कहीं भी इन शाखाओं की पूरी नामावली देखने को नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिलती। यही कारण है कि कुछ आलोचकों ने 'वर्त्म' शब्द को शाखावाची न मानकर केवल सामगायनों की विभिन्न पद्धतियों को सूचित करने वाला माना है। जो कुछ भी हो, साम की विपुल बहुसंख्यक शाखाएँ किसी समय जरूर थीं, परन्तु दैव-दुर्योग से उनमें से अधिकांश का लोप इस ढंग से हो गया कि उनके नाम भी विस्मृति के गर्त में विलीन हो गये।

आजकल प्रपंच हृदय, दिव्यावदान, चरणव्यूह तथा जैमिनि गृह्य सूत्र को देखने पर १३ शाखाओं का पता चलता है। सामतर्पण के अवसर पर इन आचार्यों के नाम तर्पण का विधान मिलता है। इन तेरह में से तीन आचार्यों की शाखाएँ मिलती हैं— (१) कौथुमीय, (२) राणायनीय , (३) जैमिनीय।

एक बात ध्यान देने लायक है कि पुराणों में उदीच्य तथा प्राच्य सामगों के वर्णन होने पर भी इन दिनों उत्तर व पूर्वी भारत में साम शाखाओं का प्रचार देखने में नहीं आता है, लेकिन दक्षिण व पश्चिम भारत में आज भी इन शाखाओं का थोड़ा-बहुत स्वरूप देखने को मिल जाता है। संख्या तथा प्रचार की दृष्टि से कौथुम शाखा विशेष महत्व की है। इसका प्रचलन गुजरात के ब्राह्मणों में विशेषकर नागर ब्राह्मणों में देखने को मिलता है। राणायनीय शाखा महाराष्ट्र में, जैमिनीय शाखा कर्नाटक तथा सुदूर दक्षिण के तिन्नेवली एवं तंजौर जिले में देखने को जरूर मिलती है, परन्तु इसके अनुयायी कौथुमों की अपेक्षा बहुत कम हैं।

(१) कौथुम शाखा—आद्य शंकराचार्य ने वेदान्त भाष्य के अनेक स्थानों पर इसका नाम निर्देशन किया है। इसी से इसके गौरव व महत्व का पता चलता है। इसी की संहिता सर्वाधिक लोकप्रिय है। पच्चीस काण्डात्मक विपुलकाय ताण्ड्य ब्राह्मण इसी शाखा का है।

(२) राणायनीय शाखा—इसकी संहिता कौथुमों जैसी ही है। मन्त्र गणना की दृष्टि भी दोनों में समान है। सिर्फ उच्चारण में कहीं-कहीं भिन्नता देखने को मिलती है। कौथुमीय लोग जहाँ 'हाऊ' तथा 'राई' कहते हैं, वहाँ राणायनीय गण 'हावु' तथा 'रायी' का प्रयोग करते हैं। इनकी एक अवान्तर शाखा 'सात्यमुग्रि' है, जिसका एक उच्चारण विशेषता भाषा विज्ञान की नजर से ध्यान देने योग्य है। आपिशली शिक्षा में—**'छान्दोगानां सात्यमुग्रि राणायनीया ह्रस्वानि पठन्ति'** कहकर तथा महाभाष्यकार ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि सात्यमुग्रि लोग एकार तथा ओकार का ह्रस्व उच्चारण किया करते थे। आधुनिक भाषाओं के जानकारों को यह याद दिलाने की जरूरत नहीं है कि प्राकृत भाषा तथा आधुनिक प्रांतीय अनेक भाषाओं में ए तथा ओ का उच्चारण ह्रस्व भी किया जाता है। यह विशेषता इतनी प्राचीन है, इसे भाषा विज्ञानी समझ सकते हैं।

(३) जैमिनीय शाखा—इस मुख्य शाखा के समग्र अंश काफी प्रयत्नों के बाद आज उपलब्ध हो सके हैं। संहिता, ब्राह्मण, श्रौत तथा गृह्य सूत्र—इनकी खोज निश्चित ही सराहनीय है। जैमिनीय संहिता में मन्त्रों की संख्या १६८७ है। अर्थात् इसमें कौथुम शाखा से १८२ मन्त्र कम हैं। दोनों में कई तरह के पाठ भेद भी हैं। उत्तरार्चिक में कई ऐसे नवीन मन्त्र हैं, जो कौथुमीय संहिता में नहीं मिलते हैं। परन्तु जैमिनीयों के सामगान कौथुमो से लगभग एक हजार अधिक हैं। कौथुम गान सिर्फ २७२२ हैं, जबकि जैमिनि गान ३६८१ है।

ब्राह्मण तथा पुराणों के अध्ययन से पता चलता है कि सामगन्त्रों—उनके पदों तथा सामगानों की संख्या आज के उपलब्ध अंशों से बहुत अधिक थी। शतपथ में सामगन्त्रों के पदों की गणना चार सहस्र बृहती बतलाई गई है—यथा—**अथेतरौ वेदों व्योहत। द्वादशैव बृहती सहस्राणि अष्टौ यजुषा चत्वारि साम्नाम्** (बृह. १०.४.२.२३) अर्थात् ४०००×३६ =१,४४,००० । इस तरह साम मन्त्रों के पद एक लाख चौवालीस हजार थे। पूरे सामों की संख्या थी आठ हजार तथा गायनों की संख्या थी चौदह हजार आठ सौ बीस। अनेक स्थलों पर बार-बार उल्लेख होने से इसकी प्रामाणिकता पर संदेह नहीं किया जा सकता।

साम गान के स्वर

सामयोनि मन्त्रों का आश्रय लेकर ऋषियों ने गान मन्त्रों की रचना की है। ये गान चार तरह के हैं—(१) ग्राम गेय गान—जिसे प्रकृति गान तथा वेय गान भी कहते हैं, (२) आरण्यक गान, (३) ऊह गान , (४) ऊह्य गान या रहस्य गान। इन गानों में वेय गान पूर्वार्चिक के प्रथम पाँच अध्याय के मन्त्रों के ऊपर होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। अरण्य गान, आरण्य पर्व के निर्दिष्ट मन्त्रों पर, ऊह और ऊह्य उत्तरार्चिक में उल्लिखित मन्त्रों पर मुख्यतया होता है। भिन्न शाखाओं में इन गानों की संख्या भिन्न है। सबसे अधिक गान जैमिनीय शाखा में मिलते हैं।

	कौथुमीय गान	जैमिनीय गान
वेय गान	१११७	१२३२
अरण्य गान	२९४	२९१
ऊह गान	१०२६	१८०१
ऊह्य गान	२०५	३५६
कुल योग	२७२२	३६८०

भारतीय संगीत शास्त्र का मूल इन्हीं साम गानों पर आधारित है। भारतीय संगीत कितना सूक्ष्म बारीक तथा वैज्ञानिक है, यह तत्व मर्मज्ञों से छिपा नहीं है। लेकिन मूर्धन्यों की अवहेलना के कारण उसकी इतनी बड़ी दुरवस्था आजकल उपस्थित है कि उसके मौलिक सिद्धांतों को समझना एक समस्या हो गई है। साम गान की पद्धति का ज्ञान उसी तरह दुरूह है। एक तो यों ही साम के जानने वाले कम हैं, तिस पर साम गानों को ठीक स्वरों में गाने वालों की संख्या तो अँगुलियों में गिनने लायक है। यदि गायक के गले में लोच हो और वह उचित मूर्छना, आरोह, अवरोह का विचार कर साम गायन करे, तो मन्त्रार्थ न जानने पर भी भावों की दिव्य अनुभूति हुए बिना नहीं रहती।

नारद शिक्षा के अनुसार साम के स्वर मंडल इतने हैं— ७ स्वर, ३ ग्राम, २१ मूर्छना, ४९ तान। इन सात स्वरों की तुलना वेणु स्वर से इस प्रकार है—

साम	वेणु
१. प्रथम	मध्य/म
२. द्वितीय	गान्धार/ग
३. तृतीय	ऋषभ/रे
४. चतुर्थ	षड्ज/सा
५. पंचम	निषाद्/नि
६. षष्ठ	धैवत/ध
७. सप्तम	पञ्चम/प

साम गानों में ये ही सात तक के अंक तत्तत् स्वरों के स्वरूप को सूचित करने के लिए लिखे जाते हैं। सामयोनि मन्त्रों के ऊपर दिये गये अंकों की व्यवस्था दूसरे प्रकार की होती है। सामयोनि मत्रों के सामगानों के रूप में ढालने पर अनेक संगीतानुकूलशाब्दिक परिवर्तन किये जाते हैं। इन्हें साम विकार कहते हैं। जिनकी संख्या ६ है—

(१) **विकार**—शब्द का परिवर्तन 'अग्ने' के स्थान पर औग्नायि।

(२) **विश्लेषण**—एक-एक पद का प्रथक्करण, यथा— वीतये के स्थान पर वोयितोया २ यि।

(३) **विकर्षण**—एक स्वर का दीर्घकाल तक विभिन्न उच्चारण जैसे—ये या ३ यि।

(४) **अभ्यास**—किसी पद का बार-बार उच्चारण, यथा-तोयायि का दो बार—उच्चारण।

(५) **विराम**—गायन में सुविधा के लिए किसी पद के बीच में ठहर जाना यथा—गृणानो हव्यदातये में 'ह' पर विराम ले लेना।

(६) **स्तोभ**—ओ, होवा, आउवा आदि गानानुकूल पद।

साम के विभाग

साम गायन की पद्धति बहुत कठिन है। उसकी ठीक-ठीक जानकारी हो सके, इसके लिए बहुत सूक्ष्म अध्ययन अपेक्षित है। साधारण ज्ञान के लिए यह जान लेना काफी है कि साम गान के पाँच भाग होते हैं—

(१) **प्रस्ताव**—यह मन्त्र का प्रारम्भिक भाग है, जो 'ह' से प्रारम्भ होता है। इसे प्रस्तोता नामक ऋत्विज गाता है।

(२) **उद्गीथ**—इसे साम का प्रधान ऋत्विज उद्गता गाता है। इसके आरम्भ में ओम् लगाया जाता है।

(३) **प्रतीहार**—इसका मतलब है, दो को जोड़ने वाला। इसे प्रतिहर्ता नामक ऋत्विज गाता है। इसी के कभी-कभी दो टुकड़े कर दिये जाते हैं।

(४) **उपद्रव**—जिसे उद्गाता गाता है।

(५) **निधन**—जिसमें मन्त्र के दो पद्यांश या ओम् रहता है। इनका गायन तीनों ऋत्विज, प्रतोता, उद्गाता,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिहर्त्ता एक साथ करते हैं। उदाहरण के लिए सामवेद का प्रथम मन्त्र लें —

अग्न आयाहि रीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

(सामवेद-१)

(१) हुं ओग्याइ (प्रस्ताव)

(२) ओम् आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये (उद्गीथ)

(३) नि होता सत्सि बर्हिषि ओम् (प्रतिहार)। इसी प्रकार के दो भेद होंगे जो दो प्रकार से गाये जायेंगे ।

(४) निहोता सत्सि बर्हिषि (उपद्रव)

(५) बर्हिषि ओम् (निधन)

साम वेद के ब्राह्मण एवं सूत्र ग्रन्थ

(१) ताण्ड्य ब्राह्मण (प्रौढ़ अथवा पंचविंश ब्राह्मण) , (२) षड्विंश ब्राह्मण, (३) साम विधान ब्राह्मण, (४) आर्षेय ब्राह्मण, (५) देवताध्याय ब्राह्मण, (६) उपनिषद् ब्राह्मण, (संहितोपनिषद् ब्राह्मण अथवा मन्त्र ब्राह्मण) , (७) वंश ब्राह्मण आदि सामवेद के ब्राह्मण हैं। षड्विंश ब्राह्मण ताण्ड्य ब्राह्मण का २६वाँ भाग है, इसलिए पहला भाग पंचविंश ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध है और उत्तर भाग षड्विंश ब्राह्मण और छांदोग्य उपनिषद् मिलकर ताण्ड्य महाब्राह्मण होता है। षड्विंश ब्राह्मण में अद्भुत कथाओं का संग्रह होने के कारण उसे अद्भुत ब्राह्मण भी कहते हैं। सामवेद के दूसरे ब्राह्मण का नाम अनुब्राह्मण भी है। जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण में "केनोपनिषद्" है।

इस जैमिनीय शाखा का दूसरा नाम तवल्कार शाखा भी है, इसलिए केनोपनिषद् को तवल्कारीय केनोपनिषद् भी कहते हैं।

(१) मशक कल्प सूत्र (२) क्षुद्र सूत्र (३) लाट् यायन सूत्र (४) गोभिलीय गृह्य सूत्र और राणायनीय शाखा के (१) द्राह्यायण श्रोत सूत्र (२) खादिर गृह्य सूत्र (३) पुष्प सूत्र। ये सामवेद के सूत्र ग्रंथ "प्रातिशाख्य" के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। वैदिक स्वरों के प्रयोग में अनेक कठिनाइयों और भूल चूक होने की संभावना रहती है। अतः उपरोक्त तथ्यों को भलीभाँति हृदयंगम कर लेने पर इससे बचा जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शब्द ब्रह्म—मन्त्र विज्ञान

शब्द तो ब्रह्म है मन्त्र उसकी पराशक्ति

न्यूयार्क का माउण्ट सिनाई हॉस्पिटल। एक जख्मी युवक आता है, दुर्भाग्य से उसने अत्यधिक तेज वोल्टेज वाले तार का स्पर्श कर लिया था। औषधि से काफी हिस्सा नियन्त्रण में आ गया किन्तु हाथ की कुछ उँगलियाँ इतनी भयंकरता से जली थीं कि उनको काट देने के अतिरिक्त कोई उपाय सम्भव नहीं दीख रहा था तब कुछ डाक्टरों ने मन्त्र शक्ति (?) का सहारा लिया। मन्त्र से भयंकर जली हुई उँगलियाँ भी ठीक हो गईं।

"एचीव्स आफ फिजिकल मेडिसिन एण्ड रिहैबिलेटेशन" पत्रिका में ही छपी एक अन्य घटना—एक महिला स्नायु की गड़बड़ी से हाथ की उँगलियों की जख्मी हो गई थी। वह उँगलियों से हाथ की हथेली भी नहीं छू सकती थी उसका मन्त्र (?) से इलाज किया गया और वह महिला कुछ ही दिन में सामान्य काम-काज तथा उँगलियों से जूतों के फीते तक बाँधने में समर्थ हो गई। "नर्व्स" के ऐसे ९० प्रतिशत रोगी इस प्रकार ठीक हुए हैं।

मस्से के लाइलाज रोगियों पर जर्मन के एक डाक्टर ने मन्त्र शक्ति (?) का प्रयोग किया और पाया कि १५ दिन के प्रयोग से मस्से का नाम निशान तक ऐसे ग़ायब हो गया जैसे "गधे के सिर से सींग"।

पेरिस के सालपेट्री—पेट्री हॉस्पिटल में पहली बार कटे हुए शरीर के २७ रोगियों पर मन्त्र शक्ति (?) का प्रयोग किया गया और उसमें से १९ पूर्णरूप से अच्छे हो गये शेष ८ आंशिक। ज़र्मनी के ही कुछ डाक्टरों ने कान के १६ रोगियों पर प्रयोग किया मन्त्र शक्ति (?) का, यह वह रोगी थे जिन्हें न तो शल्य चिकित्सा ठीक कर सकती थी और न ही औषधियाँ। इस नई चिकित्सा पद्धति से इन रोगियों में से ६ तो तुरन्त अच्छे हो गये ६ आंशिक ठीक हुए, कुल ४ ही ऐसे थे जिन पर उसका कुछ प्रभाव नहीं पड़ा जबकि डाक्टर यह मान रहे थे कि एक दिन हम अवश्य हीड्ज़ २४ कान के कठिन से कठिन रोगों का ८० प्रतिशत सफल इलाज कर लेंगे, २० प्रतिशत के लिए ही कुछ अधिक समय लग सकता है।

एक बार अमरीका के राष्ट्रपति कैनेडी कनाडा गये। एक वृक्षारोपण समारोह में वृक्ष लगाने के तुरन्त बाद उन्हें अकड़न और दर्द अनुभव हुआ। उनके डाक्टर जानेट ट्रावेल ने जब देखा कि सामान्य औषधियों से उपचार सम्भव नहीं तो आधुनिक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि शब्द शक्ति (?) की ओर उनका ध्यान गया। उसी के प्रयोग से राष्ट्रपति कैनेडी अच्छे भी हुए।

आज जर्मनी स्केनडीनवीया, फ्रांस, ब्रिटेन और अमरीका में इस शक्ति का प्रयोग हो रहा है; और उसके आश्चर्यजनक परिणाम सामने आ रहे हैं।

ऊपर जिस मन्त्र शक्ति का उल्लेख किया गया है वह वास्तव में भारतीय पद्धति से प्रयोग की गई मन्त्र शक्ति नहीं है। उसे मशीनों द्वारा उत्पादित पराध्वनि (अल्ट्रासाउण्ड) चिकित्सा कहते हैं तथापि उसमें जो सिद्धान्त प्रयुक्त होता है उसमें और भारतीय मन्त्र विद्या के सिद्धान्त में कोई अन्तर नहीं है। अन्तर कुल इतना है कि भारतीय योगी और तत्वदर्शी मनुष्य—शरीर को ही एक परिपूर्ण यन्त्र और भावनाओं को उच्च शक्ति वाली विद्युत शक्ति मानते हैं जबकि भौतिक विज्ञान शब्दों के अति सूक्ष्म कम्पन मशीनों द्वारा पैदा करता है और विद्युत-स्रोत के लिए विद्युत-उत्पादी-डायनमो का प्रयोग करता है।

मन्त्र शक्ति भारतवर्ष की एक चिर-परिचित पराशक्ति है और आज भी उसका प्रयोग अनेक रोगों के उपचार और सिद्धियों—सामर्थ्यों की प्राप्ति में किया जाता है। सर्प के काटने जैसे भयंकर विष को गाँवों के तान्त्रिक ठीक कर लेते हैं। बिच्छू, गोह और कुत्तों के काटने का, पाण्डु रोग, मूर्छा, मिर्गी, टाइफाइड का इलाज भी मन्त्र शक्ति से होता है। दिसम्बर, १९६७ की कादम्बिनी में पेज १८ में "शब्द ब्रह्म का प्रतीक मन्त्र"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शीर्षक से लेखक श्री गोविन्द शास्त्री ने एक घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि एक पाण्डु रोगी को एक मन्त्रज्ञ द्वारा ठीक करते मैंने अपनी आँखों से देखा। मन्त्रज्ञ ने काँसे की थाली में हाथ रखवाकर मन्त्र बोलना शुरू किया। थाली में पानी भरा था। जैसे-जैसे वह मन्त्र फूँकता था थाली का पानी पीला होता गया और रोगी अच्छा होता गया। कुल दो दिन के उपचार से रोगी पूर्ण रूप से स्वस्थ ओर चंगा होकर घर लौट गया।

योग वशिष्ठ में मन्त्र की चिकित्सा शक्ति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है—

यथा विरेक कुर्वन्ति हरीतक्यः स्वभावतः।
भावनावशतः कार्य तथा परलवादयः॥

—६।१।८।१।३९

अर्थात्—जैसे हर्र खाने से पाचन संस्थान में तीव्र गति होती है और दस्त लग जाते हैं उसी प्रकार दृढ़ भावना से यरलव आदि मन्त्रों के अक्षर शरीर पर असर करते हैं।

शब्द शक्ति और भारतीय योगियों द्वारा उसके अद्‌भुत ज्ञान का उल्लेख करते हुए लिखा है कि वेद में मन्त्रों के अशुद्ध अच्चारण का निषेध किया गया है और उनसे अनिष्ट की सम्भावना व्यक्ति की गई है। यह बात इस बात का प्रमाण है कि भारतीय शब्द शक्ति की महान महत्ता से अतीत काल से ही परिचित रहे हैं। जर्मन विद्वान बेवर ने भी इसी प्रकार मंतव्य प्रकट किया है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि "शब्द" या 'ध्वनियाँ' हर व्यक्ति को प्रभावित करती हैं। किसी बच्चे ने कभी शेर की दहाड़, हाथी की चिंघाड़ न सुनी हों और उसे एकाएक सुनने को मिल जायें तो वह घबरा जायेगा हालांकि उसे यह पता नहीं होगा कि शेर कोई हिंसक जीव है। कोयल की कूक से प्रसन्नता और कौवे की काँव-काँव से कर्कशता का स्वतः भान होता है। शब्द एक प्रकार का आलोड़न है जैसे कोई पानी को मथे और काई को दूर कर दे उसी प्रकार शब्दों के कम्पन न केवल विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करते हैं वरन् वह कम्पन "संवहन" की शक्ति भी रखते हैं और काई के समान ही विजातीय द्रव्य को खींचकर बाहर भी निकाल सकते हैं। शरीर में कुछ ऐसे चक्र ग्रन्थियाँ, गुच्छक और उपत्यिकायें होती हैं जो शब्दों की ध्वनियों को अपने-अपने ढंग से प्रभावित और प्रसारित करती हैं। भाव विज्ञान के ज्ञाता मन्त्रज्ञ इन स्वर लहरियों को ही रोग निवारक शक्ति के रूप में प्रयोग करते रहे हैं। यद्यपि आज इस विद्या के जानने वाले लुप्तप्रायः हो चले तथापि मन्त्र विज्ञान अपने आप में सुदृढ़ स्तम्भ की भाँति जीवित है। आधुनिक विज्ञान ने उसे प्रमाणित कर फिर से इस महाशक्ति के प्रयोग की सम्भावनाओं का क्षेत्र खोल दिया है।

पराध्वनि का प्रयोग विज्ञान जगत का एक सूक्ष्म सिद्धान्त है। घण्टा एक बार बजने के बाद बड़ी देर तक झनझनाता रहता है उसका कारण है घण्टे के परमाणुओं में तीव्र कम्पन। ध्वनि सुनाई देना बन्द हो जाती है तो भी कम्पन चलते रहते हैं। हमारे कानों की बनावट ऐसी है कि हम उनसे २०००० साइकिल प्रति सेकण्ड की ध्वनि सुन सकते हैं, उससे अधिक की नहीं। इस लेख के प्रारम्भ में कुछ बीमारों के अच्छे होने के उदाहरण दिये गये हैं वह एक विशेष प्रकार के यन्त्र द्वारा प्रयुक्त अत्यन्त सूक्ष्म पराध्वनि (अल्ट्रासाउण्ड) से ठीक हुए हैं। यह ध्वनि ८००००० से १००००००० साइकिल प्रति सैकिण्ड तक सूक्ष्म और तीव्र होती है। उस समय वह इतनी सशक्त होती है कि शरीर की ही नहीं रत्नों तक की भी चीर-फाड़ कर सकती है। रूसी तो इन दिनों कपड़ों की धुलाई से लेकर भारी उद्योगों तक में इस पराध्वनि शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। यह सब शब्द शक्ति के चमत्कार ही हैं। अत्यन्त गतिशील (सुपर-फास्ट) ध्वनि तरंगें शरीर की कोशिकाओं को अणु सन्देश देकर रक्त तथा तरल रक्त की पूर्ति करती हैं और उसे गति देती हैं जिससे रोग कीट या तो बाहर छन जाते हैं या मर जाते हैं। कई बार इनके नियन्त्रित प्रयोग से बड़े ही विस्मयबोधक परिणाम दिखाई देते हैं। अमरीका में एक बार ९० बच्चे पोलियो और संधिवात के शिकार हो गये। उन पर पराध्वनि का प्रयोग किया गया और वह अच्छे हो गये। पेरिस के एक वकील को कमर का बहुत दर्द था। वह खड़ा भी नहीं हो सकता था। पराध्वनि के इलाज ने कुल पाँच मिनट में ही उसे अच्छा कर दिया। भारतीय योगी मन्त्र शक्ति से दूरवर्ती वस्तुएँ किसी भी स्थान में किसी भी समय प्राप्त कर लेने की क्षमता रखते हैं। लास ऐंजिल्स (अमरीका)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

और जर्मनी के डाक्टरों ने इन ध्वनियों के साथ अवरक्त किरणों (इन्फ्रारेड रेज) तथा इन्जेक्शन के साथ प्रयुक्त करके इस बात की सम्भावनाओं को भी सत्य सिद्ध कर दिया है। हमें अपने शरीर की क्षमता और भावों की प्रबलता को अनुभव करने भर की बात है। यदि उसे सीख पायें तो मन्त्र शक्ति का लाभ हर व्यक्ति प्राप्त कर सकता है।

यह सारा संसार अति सूक्ष्म शब्द कम्पनों का विराट समुद्र है। पृथ्वी के चलने की ध्वनि से लेकर सौर घोष (सोलर न्वायज) तक और उल्कापात से लेकर अनेक नीहारिकाओं में विस्फोट तक के हजारों, लाखों कम्पन विराट अन्तरिक्ष को कम्पायमान करते रहते हैं। इन सब शब्दों की एक सम्मिलित शब्द शक्ति उत्पन्न होती है उसे ही महा प्रणव या "ऊँ" कहते हैं। कानों की अतीन्द्रिय क्षमता या सूक्ष्म श्रवण शक्ति जागृत कर इस शब्द की ब्राह्मी शक्ति से सम्बन्ध जोड़ा और उसका प्रयोग न केवल आत्म-कल्याण वरन् हजारों अन्य लोगों के उपकार के रूप में भी किया जा सकता है। विज्ञान द्वारा उत्पादित पराशक्ति तो "ब्राजीलियन क्राट्र्ज" के आधा इञ्च टुकड़े और बिजली के तारों की क्षमता पर आधारित होती है उसके प्रयोग से ही जब असाध्य बीमारियाँ दूर हो सकती हैं तब शब्द के अथाह शक्ति सागर से सम्बन्ध स्थापित करने के लाभ का तो कहना ही क्या? उसके प्रयोग से भारतीय योगी आश्चर्यजनक चमत्कार दिखाते रहे हों तो आश्चर्य क्या? शब्द तो ब्रह्म है। उससे ब्रह्म की ही सृजन शक्ति का प्रदर्शन किया जाये तो उसमें कोई रहस्य वाली बात नहीं वरन् उसे एक वैज्ञानिक तथ्य ही मानना चाहिए।

शब्द ब्रह्म की सामर्थ्य को परखने के लिए वैज्ञानिकों ने कितने ही प्रयोग किये हैं। पिछले दिनों आस्ट्रेलिया में कुछ ऐसे ही प्रयोग किये गये।

'स्टार्ट'—एस, टी, ऐ, आर, टी कुल पाँच अक्षरों का उच्चारण करना भी था कि पाँच-सात मन भार की कार धड़-धड़-धड़-धड करने लगी। 'गो' अगला शब्द एक व्यक्ति के मुख से निकला और जी तथा ओ इन दो शब्दों ने न जाने क्या चमत्कार दिखाया कि स्वामिभक्त सेवक की भाँति कार सड़क पर चल पड़ी। देखते ही देखते कार पूरी स्पीड में में थी। बिना किसी ड्राइवर के कार यों खुली सड़क पर जा रही थी, तभी सामने से कोई वाहन आता दिखाई दिया और तभी एकान्त में बैठे उन्हीं सज्जन ने आदेश दिया 'हाल्ट'।— एच, ए, एल, टी कुल चार अच्छरों से एक कोई जादू निकला और कार जहाँ थी, वहीं जाम होकर खड़ी की खड़ी रह गई।

यह पंक्तियाँ पढ़ने तक किसी भी पाठक को भ्रम हो सकता है कि कहीं किसी जादू या हाथ की सफाई का खेल दिखाया जा रहा होगा, यह वर्णन उसी समय का होगा पर वस्तुस्थिति यह नहीं। यह एक विधिवत् सम्पन्न कार्यक्रम था जिसे ग्राहम और नील नामक दो आविष्कारकों ने प्रस्तुत किया था। प्रदर्शन आस्ट्रेलिया के मेलबोर्न नगर की एक भारी भीड़ वाली सड़क पर हुआ था। शब्द में कितनी सामर्थ्य है, यह देखने के लिए लाखों की भीड़ एकत्रित थी।

एक व्यक्ति के शब्दों और संकेतों पर निर्जीव कार काम कर रही थी, उसके पीछे विज्ञान का एक सिद्धान्त काम कर रहा था। शब्द की सामर्थ्य काम कर रही थी। प्रदर्शनकारी के हाथ में एक माचिस की तरह की डिब्बी जैसा ट्रांजिस्टर था। इस ट्रान्जिस्टर का काम इतना था कि वह कार स्वामी की आवाज को एक निश्चित फ्रीक्वेन्सी पर विद्युत शक्ति के माध्यम से कार में 'डैशबोर्ड' के नीचे लगे नियन्त्रण कक्ष (कन्ट्रोल यूनिट) तक पहुँचा देता था। उसी के आगे 'कार-रेडियो' नामक एक दूसरा यन्त्र लगा था, जब शब्द की विद्युत चुम्बकीय तरंगें उसमें टकरातीं तो कार के सब कल-पुर्जे अपने आप काम करने लगते। इन्जन ही नहीं, हार्न, बत्तियाँ, बाइपर आदि यन्त्र भी इशारे पर काम करते। लोगों ने देखा और आश्चर्य भी व्यक्त किया पर जो जानते थे, उन्होंने इसे वाक् शक्ति के अकूत भण्डार का स्फुल्लिग मात्र माना।

शब्द की सामर्थ्य सभी भौतिक शक्तियों से बढ़कर, सूक्ष्म और विभेदन क्षमता वाली है, इस बात की निश्चित जानकारी होने के बाद ही मन्त्र-विद्या का विकास भारतीय तत्व-दर्शियों ने किया। यों हम जो कुछ भी बोलते हैं, उसका प्रभाव व्यक्तिगत और समष्टिगत रूप से सारे ब्रह्मांड पर पड़ता है, तालाब के जल में फेंके गये एक छोटे से कम्पन की लहरें भी दूर तक जाती हैं, उसी प्रकार हमारे मुख से निकला हुआ प्रत्येक शब्द आकाश के सूक्ष्म परमाणुओं में कम्पन उत्पन्न करता है, उस कम्पन से लोगों में अदृश्य प्रेरणायें जागृत होती हैं, हमारे मस्तिष्क में विचार न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाने कहाँ से आते हैं, हम समझ नहीं पाते पर मन्त्र-विद जानते हैं कि मस्तिष्क में विचारों की उपज कोई आकस्मिक घटना नहीं वरन् शक्ति की पर्तों में आदिकाल से एकत्रित सूक्षम कम्पन हैं, जो मस्तिष्क के ज्ञान-कोषों में टकराकर विचार के रूप में प्रकट हो उठते हैं, तथापि अपने मस्तिष्क में एक तरह के विचारों की लगातार धारा को पकड़ने या प्रवाहित करने की क्षमता है। एक ही धारा में मनोगति के द्वारा एक सी विचारधारा निरन्तर प्रवाहित करके सारे ब्रह्माण्ड के विचार जगत् में क्रान्ति उत्पन्न की जा सकती है, उसके लिए आवश्यक नहीं. कि उन विचारों को वाणी या सम्भाषण के द्वारा व्यक्त ही किया जाये।

एक दिन महर्षि रमण आश्रम में बहुत से सम्भ्रान्त लोग एकत्रित थे। अरुणाचलम् का वह स्थान जहाँ महर्षि का आश्रम था, पर्वतीय भाग से जुड़ा हुआ था। वहाँ अनेक तरह के जीव-जन्तु रहा करते थे। एक बन्दरिया वहाँ आकर खों-खों करने लगी। बड़ी देर तक वह ऐसे ही करती रही, किसी के मना करने और भगाने पर भी वह भागी नहीं तब महर्षि रमण ने हँसकर बताया—"इसका पति दल का राजा है, बन्दरों के मुखिया को यह अधिकार होता है कि वह एक से अधिक रानियाँ भी रखे। उसने किसी और बन्दरिया को भी रानी चुन लिया है, यह बात इस पहली रानी को पसन्द नहीं। बन्दरिया वही शिकायत करने आई है।" इसके बाद महर्षि थोड़ा ध्यानावस्थित हुए फिर थोड़ी देर में राजा-बन्दर वहाँ आया और ऐसा लगा मानो किसी ने उसे जबर्दस्ती समझा दिया हो, वह अपनी पहली रूठी हुई रानी को वहाँ से मना ले गया।

मूक सत्संग और प्रेरणाओं की ऐसी अनेक घटनायें वहाँ आये दिन घटती रहती थीं। उसका लाभ बिना वाणी सैकड़ों लोगों ने प्राप्त किया। ऐसे सूक्ष्म प्रेरणा प्रवाहों का लाभ केवल अति-संसारिक व्यक्ति ही नहीं ले पाते अन्यथा अपने मस्तिष्क को थोड़ा भी विचार-शून्य करके ध्यानावस्थित हुआ जाए तो अभी भी पूर्व पुरुषों के अदृश्य और अपने काम के विचार किये जा सकते हैं।

यों कहने को स्वतन्त्रता संग्राम में विजय का श्रेय कुछ थोड़े से काँग्रेसी नेताओ को है पर एक समय वह आयेगा, जब विज्ञान बतायेगा कि उन नेताओं में से एक भी ऐसा नहीं था, जो महर्षि अरविन्द जैसी महान आत्माओं द्वारा सूक्ष्म रूप से प्रेरित और अनुप्राणिसत न किया गया हो।

विचारों की सूक्ष्म सामर्थ्य से मनोमय जगत् में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये जा सकते हैं तो शब्द की सामर्थ्य से स्थूल जगत् में, पदार्थ और आकाश स्थित पिण्डों में जबर्दस्त विस्फोट किया जा सकता है। यहीं नहीं ग्रह नक्षत्रों में पाई जाने वाली सूक्ष्म-प्राण विद्युत-प्रकाश, गर्मी आदि को आकर्षित किया जा सकता है और उसके लिए इस कार में लगे नियन्त्रण कक्ष और ट्रान्जिस्टर की तरह शब्दों का चयन एवं उनका नियन्त्रित प्रयोग आवश्यक है, इस बात की गहनतम जानकारी के आधार पर ही मन्त्र और वैदिक ऋचाओं का निर्माण हुआ है। देखने में शब्द और प्रार्थनायें लगने वाले मन्त्र और ऋचायें एक प्रकार के यन्त्र हैं, जिनका विधिवत् प्रयोग यदि कोई कर सके तो वह सारे संसार का स्वामित्व प्राप्त कर सकता है है। आज इस बात को भौतिक विज्ञान अच्छी तरह जानता चला जा रहा है।

पचास वर्ष पूर्व तक रेडियो, टेलीफोन जैसे यन्त्रों को ही शब्द शक्ति चमत्कार के रूप में माना जाता था पर जब कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध भूगर्भ शास्त्री डा. हर्बर्ट हूबर ने शब्द कम्पनों द्वारा एक ऐसी बारीक और नाजुक हड्डी पर लगे मैल और मिट्टी को साफ करके दिख दिया, जिस पर कैसा भी हल्का ब्लेड चलाया जाता तो हड्डी टूटे बिना न रहती। पीछे तो शब्द शक्ति का ऐसा विकास हुआ कि औद्योगिक जगत् में एक नई क्रान्ति मच गई। इन दिनों बड़ी-बड़ी मोटी इस्पात की चादरों को काटने, कपड़ों की धुलाई करने, शहर की आवाज से शहर के लिए विद्युत शक्ति तैयार कर लेने जैसे भारी कामों में भी शब्द शक्ति का उपयोग होने लगा है। अभी तक एक्स-रे को ही ऐसा सूक्ष्म यन्त्र समझा जाता था, जो शरीर के भीतरी हिस्सों की स्थिति का भी पता दे देता है पर उसके द्वारा खींचे गये फोटोग्राफ इतने स्पष्ट नहीं आते कि स्थिति का पूर्णतया सही अनुमान लगाया जा सके, शब्द की सामर्थ्य ने अब इस कार्य को भी अति आसान बना दिया है। यह कार्य अब 'अल्ट्रा साउण्ड' द्वारा सम्पन्न होने लगा है।

'अल्ट्रासाउण्ड' उस ध्वनि को कहते हैं, जो मनुष्य के कान से किसी भी स्थिति में न सुनी जा सके।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अति सूक्ष्म कम्पनों को जब विद्युत-आवेश प्रदान किया जाता है तो उनकी भेदन क्षमता इतनी बढ़ जाती है कि सघन से सघन वस्तु के परमाणुओं का भी भेदन करके, उसकी आन्तरिक रचना का स्पष्ट फोटोग्राफ प्रस्तुत कर देती है।

उदाहरण के लिए शिकागो की एक महिला की डाक्टरी परीक्षा की गई पर डाक्टर यह नहीं निश्चय कर पाये कि इसके पेट में ट्यूमर की गाँठ है अथवा गर्भ। एक्सरे पर एक्सरे खींचे गये पर स्थिति का सही पता नहीं चल सका। तब अल्ट्रासाउण्ड का प्रयोग किया गया और यह साफ प्रकट हो गया कि महिला के पेट में गर्भ विकसित हो रहा है। यूटा (अमेरिका) में एक व्यक्ति से धोखे में गोली चल गई । छर्रा एक छोटे बच्चे की आँख में धँस गया डाक्टरों ने पचासों प्रयत्न किये पर यह पता नहीं ही चल पाया कि कारतूस का टुकड़ा किस स्थान पर डट गया है।

आखिरकार बच्चे को वाशिंगटन के सरकारी अस्पताल में भेजा गया। वहाँ 'अल्ट्रासाउण्ड' का प्रयोग किया गया तो पीतल के टुकड़े का साफ चित्र आ गया और बात की बात में डाक्टरों ने उसे निकालकर बाहर कर दिया।

अभी तक किसी ऐसी विधि का आविष्कार नहीं हो पाया था, जो शरीर के अति कोमल 'ऊतकों' की जाँच कर सकें। शरीर छोटे-छोटे कोश (सेल्स) से बना है। बहुत से कोश मिलकर ऊतक बनते हैं जिनसे शरीर के विभिन्न अंगों का निर्माण होता है पर अमेरिका के कोलोरेडो विश्वविद्यालय के चिकित्सा शास्त्री डॉ. जोऐफ होम्स ने अल्ट्रासाउण्ड के प्रयोग द्वारा ऊतकों के साफ अध्ययन की सफलता भी प्राप्त कर ली। यह कार्य जिस यन्त्र से सम्पन्न होते हैं, उसे 'ट्रांस्डूसर' कहते हैं, इस यन्त्र में विद्युत-ऊर्जा को ध्वनि-ऊर्जा में बदला जाता है। एक सैकिण्ड में बीस हजार से भी अधिक की गति से ध्वनि-तरंगें प्रसारित करता है, यह तरंगें आगे जाकर जिस माध्यम से टकराती हैं उस वस्तु का परावर्तित कम्पनों से चित्र तैयार कर देती हैं। कम्पन की गतियों के नियन्त्रण और विस्तार की प्रणाली हर कार्य में अलग होती है। पर अन्ततः सिद्धान्त एक ध्वनि-तरंगों के अति सूक्ष्म प्रसारण का है।

विज्ञान की यह उपलब्धियाँ यह बताती हैं, क्रमबद्ध ध्वनि-कम्पनों में जबर्दस्त सामर्थ्य है, मन्त्रों में इन्हीं सिद्धान्तों का समावेश है। मनोगति के सम्मिश्रण के द्वारा यह शक्ति और भी बढ़ जाती है और जब मनुष्य उस पर पूरा-पूरा नियन्त्रण—मन्त्र सिद्धि प्राप्त कर लेता है तो वह ऐसे ही आश्चर्यजनक प्रयोग कर सकता है, जैसे कि ऊपर बताये गये हैं।

उपरोक्त पंक्तियों में जिस अल्ट्रासाउण्ड के 'ट्रान्स्डूसर' नामक अति सूक्ष्म ध्वनि कम्पन यन्त्र का विवरण दिया गया है, वह न केवल रोगों का पता लगाने में वरन् कैंसर और टी. बी. आदि रोगों के उपचार में भी प्रयुक्त होने लगा है। शब्द-कम्पनों को एक चीमटी की आकृति में बदलकर बारीक से बारीक कीटाणुओं और विषाणुओं को भी पकड़कर खींचा जा सकता है।

एक लड़के की आँख में पीतल का बहुत बारीक कण घुस गया। किसी भी धातु की चीमटी से धोखा हो सकता था, आँख में चुभ जाने का नया संकट उत्पन्न हो सकता था, उस स्थिति में ध्वनि-कम्पनों द्वारा बनाई गई यह चीमटी प्रयोग में लाई गई और उससे १० सैकिण्ड में ही वह टुकड़ा निकाल लिया गया। यह कार्य डा. नैथेनिबल ब्रान्सन द्वारा सम्पन्न हुआ। डा. ब्रान्सन मैनहैटन (अमेरिका) में आँख कान और गले के रोग के विशेषज्ञ हैं।

अल्ट्रासाउन्ड का उपयोग वियेना के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. कार्ल टी. डसिक ने सर्वप्रथम १९४२ में किया यद्यपि इसकी जानकारी एक्सरे की खोज सन् १८९५ के कुल दो वर्ष बाद ही हो गई थी। इन दिनों इंग्लैंड, अमेरिका, स्वीडन तथा जापान आदि देशों में मस्तिष्कीय जानकारी के लिए अल्ट्रासाउण्ड पर विस्तृत खोजें की जा रही हैं। पश्चिम ज़र्मनी के डूशल डोर्फ के डाक्टर डब्लू. ब्लाइफील्ड और डा. स्वेन एफर्ट ने कोई १०००० व्यक्तियों के शरीरों के विभिन्न अल्ट्रासाउण्ड के चित्र उतारे और उनके अध्ययन के द्वारा अनेक नये तथ्यों का पता लगाया।

चिकित्सा जगत् में शब्द के सूक्ष्मतम प्रयोग की यह उपलब्धियाँ बताती हैं कि यदि भारतीय तत्वदर्शियों ने मन्त्र विद्या की इतनी जानकारी कर ली हो कि शब्दों के कम्पनों द्वारा विष-निवारण, रोग-निवारण अदृश्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्तियों का आकर्षण, मनोगति द्वारा मारण, मोहन, उच्चाटन आदि प्रयोग सफलतापूर्वक होते रहे हों तो उसे अतिशयोक्ति न माना जाय। महाभारत काल में प्रेरित शास्त्रों की मार होती थी, उससे परमाणु-बमों से भी भयंकर ऊर्जा उत्पन्न होती थी, उसका बड़ा सधा हुआ उपयोग सम्भव था। उस शक्ति से सैनिकों के समूहों को भी नष्ट किया जा सकता था और हजारों की भीड़ में छिपे केवल एक ही किसी व्यक्ति को भी मारा जा सकता था । यह सब उस शब्द विज्ञान का ही चमत्कार था, जिसकी क्षीण-सी जानकारी भौतिक विज्ञान जान पाया है ।

बात कहने की नहीं, अब सभी पढ़े-लिखे लोग जान गये हैं कि प्रत्येक ध्वनि को चित्रित किया जा सकता है। ध्वनि कम्पनों के इस चित्रण को 'स्पेक्ट्रोग्राफ' कहते हैं। हम जो कुछ भी बोलते हैं, उन शब्द तरंगों को 'स्पेक्ट्रोग्राफ' टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों के रूप में प्रस्तुत कर देता है। न्यूयार्क (अमेरिका) की बेल टेलीफोन लैबोरेटरी के वैज्ञानिक डा. लारेन्स केर्स्टा ने अनेकों लोगों की आवाज का 'स्पेक्ट्रोग्राफ' खींचकर देखा तो पाया कि हर व्यक्ति के ध्वनि कम्पनों से जो रेखायें बनती हैं, वे चाहे एक ही वाक्य बोलें, रेखाओं का प्रकार अलग-अलग तरह का होता है पर किसी व्यक्ति द्वारा एक ही वाक्य स्वस्थ, अस्वस्थ, जुकाम, अधिक या कम तापमान (टेम्परेचर) वायुदाब (प्रेसर) आदि में सदैव अपरिवर्तित रहता है। इसका अर्थ यह हुआ कि ध्वनि-तरंगों में इतनी सामर्थ्य होती है कि प्राकृतिक परिवर्तन—तूफान, वर्षा, तापमान, हवा के दबाव अदि का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। प्रत्येक अवस्था में लकीरें एक व्यक्ति की एक ही तरह की होगी। इसी तरह प्रत्येक मन्त्र का तरंगों के रूप में विस्तार एक ही तरह का होता है, लकीरों की आकृति भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा भले ही भिन्न हो अर्थात् यदि एक व्यक्ति एक वाक्य बोलता है तो आगे बढ़ने और पीछे लौटने वाली लकीरें तो लम्बी या छोटी हो सकती हैं पर उनकी आवृत्ति एक ही तरह की होगी।

सामान्य रूप में बोली जाने वाली तरंगें थोड़ा आगे बढ़कर सारे विश्व भर के परमाणुओं में फैल जाती हैं और जैसे छुई-मुई को छूते ही सारी पत्तियाँ बात की बात में हलचल करती हुई मुरझा जाती हैं, उसी प्रकार यह कम्पन सारे विश्व के विस्तार को कुछ ही सैकिण्डों में पार कर प्रतिक्रिया सहित वापस लौट आती हैं। परावर्तित कम्पनों में उसी तरह के अनेक और विचार भागे चले आते हैं, यही कारण है कि जब कोई क्रोध में बड़बड़ाता है तो उसी तरह के विचार दौड़े चले आते हैं पर जब कोई प्रेम और करुणा-जनक शब्द बोलता है तो वैसे ही मिठास भरे कोमल विचार मस्तिष्क में चले आते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि बोला हुआ प्रत्येक शब्द मन्त्र है, मनुष्य को बहुत सम्भालकर केवल मीठा और आशयपूर्ण ही बोलना चाहिए। कड़वा, तीखा और निरर्थक की बकवाद की प्रतिक्रिया वैसे ही तत्वों को और बढ़ा देती हैं , जिससे मन में अशान्ति ही बढ़ती है ।

मन्त्र का विज्ञान इससे भिन्न प्रकार का है। अभी तक हम जिन शब्द-तरंगों की बात करते रहे हैं, उनका आकार प्रकार विद्युत-शक्ति द्वारा निश्चित और प्रयुक्त होता रहा है। प्रश्न यह उठता है कि मन्त्र में जबकि किसी प्रकार की बाह्य शक्ति उन शब्द-तरंगों को रूपान्तरित नहीं करती तो उनसे विज्ञान की तरह के लाभ कैसे प्राप्त हो सकते हैं? इस प्रश्न का उत्तर 'रेट्रोमीटर' यन्त्र के आविष्कार के साथ सम्भव हो गया है। इस यन्त्र में बाहरी शक्ति-स्रोत की आवश्यकता नहीं पड़ती वरन् ध्वनि में सन्निहित ऊर्जा ही विद्युत ऊर्जा का काम करती है। रेट्रोमीटर का आविष्कार न्यूमा ई, थामस नामक अमेरिकी वैज्ञानिक ने किया है। श्री थामस लेंगले स्थित 'नेशनल एरोनोटिक्स एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन' रिसर्च सेन्टर के अन्वेषक हैं। इस यन्त्र में किसी भी माध्यम के प्रकाश फोटोसेस्टिव सेल में भेजकर विद्युत ऊर्जा में बदल दिया जाता है और फिर रिसीवर यन्त्र में विद्युत ऊर्जा में बदली तरंगों को ध्वनि में बदलकर सुन लिया जाता है ।

इस सिद्धान्त से यह निश्चित हो गया है कि कर्णातीत तरंगों का स्वभाव लगभग प्रकाश तरंगों जैसा ही होता है। कर्णातीत तरंगों का तरंगदैर्ध्य जितना कम होता है, यह समता उतनी ही बढ़ती है, इससे पता चलता है कि कर्णातीत तरंगों को बड़ी ही सुविधापूर्वक आवर्तित और परावर्तित किया जा सकता है। इनका व्यवहार भी प्रकाश तरंगों से ठीक उल्टा होता है, इसीलिए इन तरंगों से विभिन्न प्रकार के प्रकाश-स्रोतों की शक्ति को प्रतिक्रिया द्वारा आसानी से अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है। ऐसा इसलिए होता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कि कर्णातीत तरंगें किसी सघन पदार्थ में तो तेजी से चलती हैं पर विरल माध्यमों में वे मन्दगति से चलने लगती हैं।

वेदों में प्रयुक्त प्रत्येक मन्त्र का कोई न कोई देवता होता है। गायत्री का देवता सविता है, अर्थात् गायत्री उपासना से जो भी लाभ यथा—आरोग्य, प्राण, धन-सम्पत्ति पुत्र और अपनी महत्वाकांक्षायें आदि पूर्ण होती हैं, उसकी शक्ति अथवा प्रेरणा सूर्य लोक से आती हैं। किसी भी मन्त्र का जब उच्चारण किया जाता है, तब वह एक विशेष गति से आकाश के परमाणुओं के बीच बढ़ता हुआ, उस देवता (शक्ति-केन्द्र) तक पहुँचता है, जसका उस मन्त्र से सम्बन्ध होता है। मन्त्र-जप के समय आवश्यक ऊर्जा मन की शक्ति के द्वारा प्राप्त हाती है, इस शक्ति के द्वारा जप के समय की ध्वनि तरंगों को विद्युत तरंगों के रूप में प्रेक्षित किया जाता है । वह तेजी से बढ़ती हुई कुछ ही क्षणों में देव-शक्ति से टकराती है, उससे अदृश्य सूक्ष्म-परमाणु मन्दगति से परावर्तित होने लगते हैं, उनकी दिशा ठीक उल्टी होती है। सूक्ष्म और स्थूल दोनों तरह के परमाणु दौड़ पड़ते हैं और साधक को शारीरिक लाभ और मानसिक प्रेरणायें देने लगते हैं। यह शक्ति ही मनुष्य को कमशः उन्नत जीवन और अनेक अप्रत्याशित लाभों की ओर अग्रसर करती रहती है ।

प्रारम्भ में आदान-प्रदान, आवर्तन-परावर्तन की यह क्रिया थोड़ा धीमी होती है पर जैसे-जैसे मानसिक एकाग्रता बढ़ती है, प्रतिक्रिया भी तीव्र होती है और सूक्ष्म आत्म-सत्ता भी तेजी से उन प्रकाश-परमाणुओं से सुसज्जित होने लगती है, जो देव-शक्ति से आकर्षित होते हैं।

उदाहरण के लिए सूर्य सम्पूर्ण सौर मंडल की आत्मा है, अर्थात् सूर्य की किरणें सम्पूर्ण ग्रह-नक्षत्रों को देखती हैं। सूर्य के प्रकाश परमाणुओं की किरणें सर्वदर्शी होती हैं, यह प्रकाश-परमाणु गायत्री उपासक में जितना अधिक विकसित होते जाते हैं, वह उतना ही अधिक स्पष्ट भविष्यदर्शी, सार्थक स्वप्न देखने वाला और चमत्कारिक प्रेरणायें प्राप्त करने वाला हो जाता है। उसी प्रकार स्थूल ऊर्जा का लाभ स्वास्थ्य सुधार में होता है। अनेक रोगी गायत्री उपासक रोगमुक्त होते देखे गये हैं, वह सूर्य की किरणों की इस परावर्तित प्रतिक्रिया का ही परिणाम होता है। मन्त्र का लाभ इसीलिए अश्रद्धा होने पर भी अवश्य मिलता है। यद्यपि श्रद्धा और विश्वास के प्रगाढ़ होने पर लाभ भी द्रुतगामी होते हैं पर यदि ऐसा न हो तो साधक मन्त्र जप के लाभ से कभी वंचित नहीं होता।

शब्द की प्रचण्ड शक्ति और मन्त्र साधना

मुख की अग्निचक्र कहा गया है। मोटे अर्थों में उसकी संगति जठराग्नि से मिलाई जा सकती है। मंदाग्नि, तीव्राग्नि का वर्णन मुँह से लकर आमाशय अन्त्रिसंस्थान एक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई पाचन ग्रन्थियों की निष्क्रियता-सक्रियता का परिचय देने के रूप में किया जाता हैं। मुँह चबाता है और पचाने का प्राथमिक कार्य अपने गह्वर में पूरा करता है। आगे चलकर आहार की पाचन क्रिया अन्यान्य रूपों में विकसित होती जाती है। अग्निचक्र की—मुख में अवस्थित ऊष्मा की स्थूल चर्चा ही पाचन प्रक्रिया के रूप में की जा सकती है। वस्तुतः उस संस्थान को यज्ञाग्नि का दिव्य कुण्ड कह सकते हैं, जिससे पाचन का ही, नहीं वाक् शक्ति का भी उद्भव होता है। वाणी की शक्ति का जीवन के उत्कर्ष-अपकर्ष में कितना अधिक योगदान है। इसकी जानकारी किसी गूँगे और ओजस्वी वक्ता की स्थिति की तुलना करके देखने से मिल सकती है। सम्भावना का आदान-प्रदान कितना प्रभावी है इसका इसलिए पता नहीं चलता कि वह ढर्रा सहज अभ्यास में चलता रहता है और हम उससे कुछ विशेष निष्कर्ष नहीं निकाल पाते। यदि हम किसी मूँक योनि के प्राणी रहे होते और बातचीत का आनन्द एवं लाभ लेने वाले मनुष्य की सुविधा का लेखा-जोखा लेते तो पता चलता कि यह कितनी बड़ी उपलब्धि है।

मुख का अग्निचक्र स्थूल रूप से पाचन का—सूक्ष्म रूप में उच्चारण का और कारण रूप में चेतनात्मक दिव्य प्रवाह उत्पन्न करने का कार्य करता है। उसके तीनों कार्य एक से एक बढ़कर हैं। पाचन और उच्चारण की महत्ता सर्वविदित है। दिव्य प्रवाह संचार की बात कोई-कोई ही जानते हैं। जपयोग का सारा विज्ञान इसी रहस्यमयी सामर्थ्य के साथ सम्बद्ध है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शब्दों का उच्चारण मात्र जानकारी ही नहीं देता वरन् उनके साथ अनेकानेक भाव अभिव्यंजनाएँ—संवेदनाएँ, प्रेरणाएँ एवं शक्तियाँ भी जुड़ी होती हैं। यदि ऐसा न होता तो वाणी में मित्रता एवं शत्रुता उत्पन्न करने की सामर्थ्य न होती। दूसरों को उठाने गिराने में उसका उपयोग न हो पाता। कटु शब्द सुनकर क्रोध का आवेश चढ़ आता है और न कहने योग्य कहने तथा न करने योग्य करने की स्थिति बन जाती है। चिन्ता का समाचार सुनकर भूख-प्यास और नींद चली जाती है। शोक संवाद सुनकर मनुष्य अर्ध मूर्छित जैसा हो जाता है। तर्क तथ्य, उत्साह एवं भावुकता भरा शब्द प्रवाह देखते-देखते जन समूह का विचार बदल देता है और उस उत्तेजना से सम्मोहित असंख्य मनुष्य कुशल वक्ता का अनुसरण करने के लिए तैयार हो जाते हैं। द्रौपदी ने थोड़े से व्यंग-उपहार भरे अपमानजनक शब्द दुर्योधन से कह दिये थे। उनका घाव इतना गहरा उतरा कि अठारह अक्षौहिणी सेना का विनाश करने वाले महाभारत के रूप में उसकी भयानक प्रतिक्रिया सामने आई। इन तथ्यों पर विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि वाणी का काम जानकारी देना भर नहीं है। शब्द प्रवाह के साथ-साथ उनके प्रभावोत्पादक चेतन तत्व भी, जुड़े रहते है और वे ध्वनि कम्पनों के साथ घुले रहकर जहाँ भी टकराते हैं वह चेतनात्मक हलचल उत्पन्न करते हैं। शब्द को पदार्थ विज्ञान की कसौटी पर भौतिक तरंग स्पन्दन भर कहा जा सकता है, पर उसकी चेतना को प्रभावित करने वाली संवेदनात्मक क्षमता की भौतिक व्याख्या नहीं हो सकती। वह विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक है।

जपयोग में शब्दशक्ति इसी आध्यात्मिक प्रभाव को छानकर काम में लाया जाता है। नीबू का रस निचोड़ कर उसका छिलका एक ओर रख दिया जाता है। दूध में से घी निकालकर छाछ को महत्वहीन ठहरा दिया जाता है। जपयोग में ऐसा ही होता है। उसके द्वारा ऐसी चेतन शक्ति का उद्भव होता है, जो जपकर्त्ता के शरीर एवं मन में विचित्र प्रकार की हलचलें उत्पन्न करती है और अनन्त आकाश में उड़कर विशिट व्यक्तियों को, विशेष परिस्थितियों को तथा समूचे वातावरण को प्रभावित करती है।

मन्त्रों का चयन ध्वनि-विज्ञान को आधार मान कर किया गया है। अर्थ का समावेश गौण है। गायत्री में की सामर्थ्य अद्भुत है। पर उसका अर्थ अति सामान्य है। भगवान से सद्बुद्धि की कामना भर उसमें की गई है। इसी अर्थ प्रयोजन को व्यक्त करने वाले मन्त्र श्लोक हजारों हैं। हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में ऐसी कविताओं की कमी नहीं जिनमें परमात्मा से सद्बुद्धि की प्रार्थना की गई है। फिर उन सब कविताओं को गायत्री मन्त्र के समकक्ष क्यों नहीं रखा जाता है और उनका उच्चारण क्यों उतना फलप्रद नहीं होता? वस्तुतः मन्त्र सृष्टाओं की दृष्टि में शब्दों का गुंथन ही महत्वपूर्ण रहा है। कितने ही बीज मन्त्र ऐसे हैं जिनका खींचतान के ही कुछ अर्थ भले ही गाढ़ा जाय पर वस्तुतः उनका कुछ अर्थ है नहीं। ह्री, श्री, क्ली, ऐं, हूं, यं, फट् आदि शब्दों का क्या अर्थ हो सकता है, इस प्रश्न पर माथापच्ची करना बेकार है। उनका सृजन यह ध्यान में रखते हुए किया गया है कि उनका उच्चारण किस स्तर का शक्ति कम्पन उत्पन्न करता है और उनका जपकर्त्ता बाह्य वातारवण तथा अभीष्ट प्रयोजन पर प्रभाव पड़ता है?

मानसिक, वाचिक एवं उपांशु जप में ध्वनियों के हल्के भारी किये जाने की प्रक्रिया काम में लाई जाती हैं वेद मन्त्रों के अक्षरों के साथ-साथ उदात्त-अनुदात्त और स्वरित क्रम से उनका उच्चारण नीचे-ऊँचे तथा मध्यवर्ती उतार-चढ़ाव के साथ किया जाता है। उनके सस्वर उच्चारण की परम्परा है। यह सब विधान इसी दृष्टि से बनाने पड़े हैं कि उन मन्त्रों का जप अभीष्ट उद्देश्य पूरा कर सकने वाला शक्ति प्रवाह उत्पन्न कर सके।

मन्त्र जप की दुहरी प्रतिक्रिया होती है। एक भीतर, दूसरी बाहर। आग जहाँ जलती है उस स्थान को गरम करती है, साथ ही वायुमण्डल में ऊष्मा बखेर कर अपने प्रभाव क्षेत्र की भी गर्मी देती है। जप का ध्वनि प्रवाह—समुद्र की गहराई में चलने वाली जलधाराओं की तरह तथा ऊपर आकाश में छितराई हुई उड़ने वाली हवा की परतों की तरह अपनी हलचलें उत्पन्न करता है। उनके कारण शरीर में यत्र-तत्र, सन्निहित अनेकों 'चक्रों' तथा 'उपात्यिका' ग्रन्थियों में विशिष्ट स्तर की शक्ति संचार होता है। लगातार के एक नियमित क्रम से चलने वाली हलचलें ऐसा प्रभाव उत्पन्न करती हैं, जिन्हें रहस्यमय ही कहा जा सकता है। पुलों पर सैनिकों को पैरों को मिलाकर चलने से उत्पन्न क्रमबद्ध ध्वनि उत्पन्न न करने के लिए इसलिए मना किया जाता है कि इस साधारण-सी क्रिया से पुल तोड़ देने वाला असाधारण प्रभाव उत्पन्न हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जप लगातार करना पड़ता है और एक ही क्रम से इस प्रक्रिया के परिणामों को विज्ञान की प्रयोगशाला में अधिक अच्छी तरह समझा जा सकता है। एक टन भारी लोहे का गार्डर किसी छत के बीचों-बीच लटका दिया जाय और उस पाँच पर ग्राम भारी हलके से कार्क के लगातार आघात लगाने प्रारम्भ कर दिये जायें तो कुछ ही समय में वह सारा गार्डर काँपने लगेगा। यह लगातार—एक गति से—आघात क्रम से उत्पन्न होने वाली शक्ति का चमत्कार है। मन्त्र जप यदि विधिवक्त किया गया है तो उसका परिणाम भी यही होता है। सूक्ष्म शरीर में—अवस्थित चक्रों और ग्रन्थियों को जप ध्वनि का अनवरत प्रभाव अपने ढंग से प्रभावित करता है और उत्पन्न हुई हलचल उनकी मूर्छना दूर करके जागृति का अभिनव दौर उत्पन्न करती है। ग्रन्थिभेदन तथा चक्र जागरण का सत्परिणाम जपकर्त्ता का प्राप्त होता है। जगे हुए यह दिव्य संस्थान साधक में आत्म-बल का नया संचार करते हैं। उसे ऐसा कुछ अपने भीतर जगा, उगा प्रतीत होता है जो पहले नहीं था। इस नवीन उपलब्धि के लाभ भी उसे प्रत्यक्ष ही दृष्टिगोचर होते हैं।

टाइपराइटर के उदाहरण से इस तथ्य को और भी अच्छी तरह समझा जा सकता है। उँगली से चाबियाँ दबाई जाती हैं और कागज पर तीलियाँ गिर कर अच्छर छापने लगती हैं। मुख में लगे उच्चारण में प्रयुक्त होने वाले कलपुर्जों को टाइपराइटर की कुन्जियाँ कह सकते हैं। मन्त्रोच्चार उँगली से उन्हें दबाना हुआ। यहाँ से उत्पन्न शक्ति प्रवाह नाड़ी तन्तुओं की तीलियों के सहारे सूक्ष्म चक्रों और दिव्य ग्रन्थियों तक पहुँचता है और उन्हें झकझोर कर जगाने, खड़ा करने में संलग्न होता है। अक्षरों का छपना वह उपलब्धि है जो इन जागृत चक्रों द्वारा रहस्यमयी सिद्धियों के रूप में साधक को मिलती है। यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि यदि जपयोग को विधिवत् साधा गया होगा तो उसका सत्परिणाम उत्पन्न होगा ही।

पुलों पर होकर गुजरती हुई सेना को पैर मिलाकर चलने से ध्वनि प्रवाह उत्पन्न करने की मनाही कर दी जाती है। पुलों पर से गुजरते समय वे बिखरे हुए—स्वेच्छापूर्ण कदम बढ़ाते हैं। कारण यह है कि लेफ्टराइट के ठीक क्रम से तालबद्ध पैर पड़ने से जो एकीभूत शक्ति उत्पन्न होती है उसकी अद्‌भुत शक्ति के प्रहार से मजबूत पुलों में दरार पड़ सकती है और भारी नुकसान हो सकता है। मन्त्र जप के क्रमबद्ध उच्चारण से उसी प्रकार का तालक्रम उत्पन्न होता है और उसके फलस्वरूप शरीर के अन्त: संस्थान में विशिष्ट हलचल उत्पन्न होती है। यह हलचलें उन अलौकिक शक्तियों की मूर्छना दूर करते हैं जो जागृत होने पर सामान्य मनुष्य को असामान्य चमत्कारों से सम्पन्न सिद्ध कर सकती हैं।

हाथों को लगातार थोड़ी देर तक घिसा जाय तो वे गरम हो जाते हैं। रगड़ से गर्मी और बिजली पैदा होती है, यह नियम विज्ञान की प्रथम कक्षा में पढ़ने वाले छात्र भी जानते हैं। जप मे अनवरत उच्चारक्रम एक प्रकार का घर्षण करता है। पत्थर पर रस्सी की रगड़ पड़ने से घिसाव के निशान बन जाते हैं। श्वांस के आवागमन तथा रक्त की भाग-दौड़ से शरीर में गर्मी उत्पन्न होती है और उसी पर जीवन अवलम्बित रहता है। डायनमो में पहिया घूमने से बिजली उत्पन्न होने की बात सभी जानते हैं। जप में जो घर्षण प्रक्रिया गतिशील होती है, वह दौड़ लगाने पर शरीर के उत्तेजित हो जाने की तरह सूक्ष्म शरीर में उत्तेजना पैदा कर रही है और उस गर्मी से मूर्छित पड़ा अन्तर्जगत नये जागरण का अनुभव करता है। यह जागरण मात्र उत्तेजना नहीं होती उसके साथ-साथ दिव्य उपलब्धियों की सम्भावना भी जुड़ी रहती है।

ध्वनियाँ उतनी ही नहीं हैं जितनी की कानों से सुनाई पड़ती हैं। कान तो एक निश्चित स्तर के ध्वनि कम्पनों को ही सुन पाते हैं। उनकी पकड़ से ऊँचे और नीचे कम्पनों वाले भी असंख्य ध्यान प्रवाह होते हैं जिन्हें मनुष्य के कान तो सुन नहीं सकते, पर उनके प्रभावों को उपकरणों की सहायता से प्रत्यक्ष देखा जाना जा सकता है। इन्हें 'सुपर सोनिक' ध्वनि तरंगें कहते हैं।

मनुष्य की ग्रहण और धारण शक्ति सीमित है। वह अपनी दुबली-सी क्षमता के लिए उपयुक्त शब्द प्रवाह ही पकड़ सके, इसी स्तर की कानों की झिल्ली बनी है। किन्तु यह संसार तो शक्ति का अथाह समुद्र है और इसमें ज्वार-भाटे की तरह श्रवणातीत ध्वनियाँ गतिशील रहती हैं। अच्छा ही हुआ कि मनुष्य की ग्रहण शक्ति सीमित है और वह अपने लिए सीमित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रवाह ही ले पाता है अन्यथा यदि श्रवणातीत ध्वनियाँ भी उसे प्रभावित कर सकतीं तो जीवन धारण ही सम्भव न हो पाता।

शब्द की गति साधारणतया बहुत धीमी है। वह मात्र कुछ सौ फुट प्रति सैकिण्ड चल पाती है। तोप चलने पर धुँआ पहले दीखता है और धड़ाके की आवाज पीछे सुनाई पड़ती है। जहाँ दृष्य और श्रव्य का समावेश है वहाँ हर जगह ऐसा ही होगा। दृश्य पहले दीखेगा और उस घटना के साथ जुड़ी आवाज कान तक पीछे पहुँचेगी।

रेडियो प्रसारण में एक छोटी-सी आवाज को विश्वव्यापी बना देने और उसे १ लाख ८६ हजार मील प्रति सैकिण्ड की चाल से चलने योग्य बना देने में इलेक्ट्रो मैगनेटिक तरंगों का ही चमत्कार होता है। रेडियो विज्ञानी जानते हैं कि 'इलेक्ट्रो- मैगनेटिक वेव्स' पर साउण्ड का सुपर कम्पोज रिकार्ड कर दिया जाता है और वे पलक मारते सारे संसार की परिक्रमा कर लेने जितनी शक्तिशाली बन जाती हैं।

इलेक्ट्रोमैगनेटिक तरंगों की शक्ति से ही अन्तरिक्ष में भेजे गये राकेटों की उड़ान को धरती पर से नियन्त्रित करने, उन्हें दिशा और संकेत देने, यान्त्रिक, खराबी दूर करने का प्रयास किया जाता है। वे 'लैसर' स्तर की बनती हैं तो शक्ति का ठिकाना नहीं रहता। एक फुट मोटी लोहे की चद्दर में सूराख कर देना उनके बायें हाथ का खेल है। पतली वे इतनी होती हैं कि आँख की पुतली के लाखवें हिस्से में खराबी होने पर मात्र उतने ही टुकड़े का निर्धारित गहराई तक ही सीमित रहने वाला सफल आपरेशन कर देती हैं। अब इन किरणों का उपयोग चिकित्सा क्षेत्र में भी बहुत होने लगा है। केन्सर, आन्त्रशोथ, यकृत की विकृति, गुर्दे की सूजन, हृदय की जकड़न जैसी बीमारियों की चिकित्सा में इनका सफल उपयोग हो रहा है।

'सुपरसोनिक' तरंगों को जप प्रक्रिया के द्वारा उत्पादन और समन्वय होता है। जप के समय उच्चारण किये गये शब्द—आत्म-निष्ठा, श्रद्धा एवं संकल्प शक्ति का समन्वय होने से वही क्रिया सम्पन्न होती है, जो रेडियो स्टेशन पर बोले गये शब्द—विशिष्ट विद्युत शक्ति के साथ मिलकर अत्यन्त शक्तिशाली हो उठते हैं और पलक मारते समस्त भूमण्डल में अपना उद्देश्य प्रसारित कर देते हैं। जप प्रक्रिया में एक विशेषता यह है कि उससे न केवल समस्त संसार का वातावरण प्रभावित होता है, वरन् साधक का व्यक्तित्व भी झन झनाने, जगमगाने लगता है। जबकि रेडियो स्टेशन से प्रसारण तो होता है, पर कोई स्थानीय विलक्षणता दिखाई नहीं पड़ती। लैसर रेडियम किरणें फेंकने वाले यन्त्रों में कोई निज प्रभाव नहीं देखा जाता। वे उन स्थानों ही प्रभावित करते हैं जहाँ उनका आघात लगता है। जप-प्रक्रिया में साधक को और वातावरण को प्रभावित करने की वह दुहरी शक्ति है—जो नव वैज्ञानिकों के सामान्य यन्त्र उपकरणों में नहीं पाई जाती।

शब्दोच्चारण को प्राय: जानकारियों के आदान-प्रदान का एक माध्यम भर समझा जाता है। उसके दिव्य प्रवाह संचार की बात से कम व्यक्ति ही परिचित होते हैं। शब्दों के साथ अनेकानेक भाव अभिव्यंजनाएँ-सम्वेदनाएँ, प्रेरणाएँ एवं शक्तियाँ भी जुड़ी होती हैं। यदि ऐसा न होता तो वाणी में मित्रता एवं शत्रुता उत्पन्न करने की सामर्थ्य न होती। दूसरों को उठाने अथवा गिराने में उसका उपयोग न हो पाता। प्राय: देखा यह जाता है कि कटु शब्द सुनते ही क्रोध तथा आवेश उभर आता है और न कहने योग्य कहने और न करने योग्य करने की स्थिति बन' जाती है। शोक सम्वाद सुनते ही भूख, प्यास और नींद मारी जाती है, मनुष्य अर्ध मूर्छित जैसा हो जाता है। भावुकता भरे उद्बोधन तर्क, तथ्य और प्रमाण के आधार पर देने पर देखते हीं देखते जन समूह की विचार धारा बदल जाती है और उस उत्तेजना से सम्मोहित भीड़ कुशल वक्ता का अनुकरण करने के लिए बिना आगा-पीछा सोचे तैयार हो जाती है। महाभारत की कथा प्रसिद्ध है कि द्रौपदी के थोड़े से व्यंग्य-उपहार भरे अपमानजनक शब्द—'अन्धों के अन्धों होते हैं', की प्रतिक्रिया इतनी गम्भीर हई कि महाभारत के ऐतिहासिक युद्ध का सूत्रपात हो गया, जिसमें अठारह अक्षौहिणी सेना मारी गई। इन तथ्यों पर विचार करने पर स्पष्ट हो जाता है कि वाणी का प्रयोजन मात्र जानकारी देना नहीं है। शब्दों के उच्चारण में प्रभावोत्पादक चेतन तत्व भी जुड़े होते हैं। वे ध्वनि कम्पनों के साथ घुले रहकर जहाँ भी टकराते हैं, वहाँ विलक्षण चेतनात्मक हलचलें उत्पन्न करते हैं।

पदार्थ विज्ञानियों ने शब्द को भौतिक तरंगों का स्पन्दन भर कहा है, पर उसकी चेतना को प्रभावित करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाली सम्वेदनात्मक-वैचारिक क्षमता की भौतिक व्याख्या नहीं हो सकी है। आधुनिक मनोविज्ञान ने पदार्थ विज्ञान से एक कदम आगे बढ़कर वाणी के वैचारिक प्रभाव की गरिमा को स्वीकारा है तथा मानसोपचार में उस क्षमता के छोटे-मोटे प्रयोग भी होने लगे हैं। इतने पर भी शब्द की विभिन्न प्रकार की सामर्थ्यों से वे भी अपरिचित हैं। शब्द की वैचारिक एवं सम्वेदनात्मक क्षमता, भौतिक विज्ञान एवं मनोविज्ञान का विषय वस्तु न होकर वस्तुतः आध्यात्मिक है।

जपयोग में मन्त्रशक्ति के इसी आध्यात्मिक प्रभाव का उपयोग करके काम में लाया जाता है तथा आन्तरिक परिवर्तनों के हेतु नियोजित किया जाता है। जपयोग की प्रक्रिया में ऐसी चेतन शक्ति का उद्‌भव होता है जो साधक के शरीर एवं मन में विचित्र चैतन्य हलचलें उत्पन्न करती है तथा अनन्त अन्तरिक्ष में उड़कर विशिष्ट व्यक्तियों एवं परिस्थितियों को ही नहीं समूचे वातावरण को प्रभावित करती है।

मन्त्रों में उनके अर्थ का उतना महत्व नहीं होता जितना कि ध्वनि विज्ञान का। गायत्री मन्त्र को ही लें तो मालूम होगा कि अर्थ की दृष्टि सेवा सामान्य है, पर सामर्थ्य की दृष्टि से उसे अद्‌भुत एवं सर्वोपरि मन्त्र बताया गया है। इस मन्त्र में भगवान से सद्‌बुद्धि की कामना भर की गई है। इसी अर्थ को व्यक्त करने वाले मन्त्र श्लोक हजारों हैं। हिन्दी तथा अन्य कितनी ही भाषाओं में ऐसी कविताएँ—छन्द आदि ढूँढ़ने पर सहस्त्रों मिल जायेंगे जिनमें परमात्मा से सद्‌बुद्धि की प्रार्थना की गई है, पर उनका उच्चारण उतना फलप्रद नहीं हो पाता। न ही उनसे गायत्री मन्त्र जैसी शक्ति उत्पन्न हो पाती है। कारण स्पष्ट है कि मन्त्र सृष्टा ऋषियों की दृष्टि में अर्थ नहीं शब्दों का गुंथन महत्वपूर्ण रहा है। कितने ही बीज मन्त्र ऐसे हैं जिनका कोई विशिष्ट अर्थ नहीं निकलता। पर वे सामर्थ्य की दृष्टि से अद्‌भुत हैं। ह्रीं, श्रीं, क्लीं, ऐ हूँ, यं, फट् आदि बीज मन्त्रों का अर्थ निकालने की माथापच्ची करने पर भी कुछ सफलता नहीं पाती। वस्तुतः उनका सृजन यह ध्यान रखते हुए किया गया है कि उनका उच्चारण किस स्तर का कितनी सामर्थ्य का शक्ति कम्पन उत्पन्न करता है तथा जपकर्त्ता अभीष्ट प्रयोजन एवं समीपवर्ती वातावरण पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है ?

जपयोग की प्रक्रिया दुहरी प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है—एक भीतर, दूसरी बाहर। जिस स्थान पर आग जलती है उस स्थान को तो गरम करती ही है, साथ ही वायुमण्डल में भी उष्मा बिखेरकर अपने प्रभाव क्षेत्र का परिचय देती है। जप के ध्वनि प्रवाह से शरीर में यत्र-तत्र सन्निहित अनेकों चक्रों तथा उपत्यिकाओं में एक विशिष्ट स्तर का शक्ति संचार होता है। इस विशिष्ट शक्ति संचार की अनुभूति उपकर्ता अपने भीतर करता है। बाहर प्रतिक्रिया यह होती है कि लगातार एक नियमित क्रम में किये जाने वाले मन्त्र जप से निकली विशिष्ट प्रकार की ध्वनि तरंगें निखिल अन्तरिक्ष में विशेष तरह का स्पन्दन पैदा करती हैं जो प्राणिमात्र और समस्त वातावरण को प्रभावित करती हैं।

एक क्रम एक गति से निरन्तर किये जाने वाले सूक्ष्म आघात का चमत्कार वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में देखा जा चुका है। इस प्रयोग की पुष्टि हो चुकी है कि एक टन भारी लोहे का गार्डर किसी छत के बीचों-बीच में लटका दिया जाय और उस पर पाँच ग्राम नगण्य वजन वाले कार्क का निरनता आघात एक गति, एक क्रम से कराया जाय तो कुछ ही समय बाद गार्डर काँपने लगेगा। पुलों पर से होकर गुजराती सेना को पैर मिलाकर चलने से रोक दिया जाता है। कारण यह है कि लेफ्ट-राइट के ठीक क्रम से तालबद्ध पैर पड़ने से जो एकीभूति शक्त उत्पन्न होती है उसकी सामर्थ्य इतनी अद्‌भुत एवं प्रचण्ड होती है कि उसके प्रहार से मजबूत पुलों के भी टूटकर गिर पड़ने की सम्भावना बन जाती है। मन्त्र जप के क्रमबद्ध उच्चारण से इसी प्रकार का तापक्रम उत्पन्न होता है। फलस्वरूप शरीर के अन्तः संस्थानों में विशिष्ट प्रकार की हलचलें उत्पन्न होती हैं जो आन्तरिक मूर्छना को दूर करने एवं सुषुप्त अन्तःक्षमताओं को जागृत करने में सक्षम रहती हैं।

रगड़ से गर्मी, बिजली पैदा होने के सिद्धान्त से विज्ञान वेत्ता भली-भाँति परिचित हैं। जप में अनवरत उच्चारण एक प्रकार का घर्षण उत्पन्न करता है। निरन्तर पत्थर पर रस्सी की रगड़ पड़ने से घिसाब के निशान पड़ जाते हैं। श्वांस के शरीर में आवागमन तथा रक्ताभिसरण से शरीर में गर्मी उत्पन्न होती है। जीवन का व्यापार उपार्जन उसी ऊर्जा के सहारे चलता है। जप में जो घर्षण प्रक्रिया गतिशील होती है वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तर्निहित दिव्य शक्ति संस्थानों को उत्तेजित एवं जागृत करके दिव्य उपलब्धियों का मार्ग प्रशस्त करती है।

जपयोग का दूसरा लाभ है अन्तरिक्ष में प्रवाहित होने वाले दिव्य चैतन्य प्रवाह से अभीष्ट परिमाण में शक्ति खींच कर उससे लाभ उठाना। मन्त्र जप से उत्पन्न होने वाली सूक्ष्म तरंगें विश्व ब्रह्माण्ड में प्रवाहित ऊर्जा प्रवाह को खींच लाती हैं। जिस प्रकार तालाब में डेला फेंकने पर लहरें उठती हैं और धीरे-धीरे तालाब के अन्तिम छोर तक जा पहुँचती हैं, उसी प्रकार मन्त्र जप में भी चुम्बकीय विचार तरंगें उत्पन्न होती हैं। यह विश्व ब्रह्माण्ड भी एक तालाब है, पर इसकी आकृति गोल है। इसलिए इसका अन्तिम छोर वही स्थान होता है जहाँ से ध्वनि तरंगों का संचरण आरम्भ हुआ था। इस तरह जप से पैदा होने वाली ऊर्जा तरंगें धीरे-धीरे बहती-बढ़ती चली जाती हैं और अन्ततः एक पूरी परिक्रमा करके अपने मूल उद्गम स्थान—जपकर्ता के पास शब्द वेधी बाण की तरह लौट आती हैं।

परन्तु तरंगों की यह यात्रा चुपचाप नहीं पूरी होती; तरंगों की चुम्बकीय शक्ति बहुत कुछ ग्रहण-विसर्जन भी करती चलती है। यह तरंगें जिस क्षेत्र से सम्पर्क बनाती हैं उसे प्रभावित करती और स्वयं प्रभावित होती हैं। यह प्रभाव सजातीयता के सिद्धान्त पर चलता है। समान वर्ग के पदार्थ अथवा प्राणी एक-दूसरे से प्रभावित व आकर्षित होते हैं। मस्तिष्क से निकलने वाले भले-बुरे विचार अपने साथ सजातियों का एक पूरा झुण्ड लेकर अपने उद्गम स्थान पर अपेक्षाकृत अधिक बलवान होकर लौटते हैं। इस प्रक्रिया के अनुसार मनुष्य अपनी विचार सम्पदा से जहाँ असंख्यों को लाभान्वित करता है वहाँ उनसे बहुत कुछ प्राप्त भी करता है। इस तरह अपने विचार दूसरों को कम एवं स्वयं को कहीं अधिक प्रभावित करते हैं। अशुभ विचारों के साथ भी यही बात लागू होती है। वे दूसरों को भी हानि पहुँचाते हैं, किन्तु वापस लौटने पर उनकी बढ़ी-चढ़ी घातक शक्ति की हानि स्वयं को ही अधिक भुगतनी पड़ती है। परिभ्रमण एवं परिपोषण का यह सिद्धान्त सर्वत्र देखा जा सकता है।

मन्त्र जप से उत्पन्न होने वाली सूक्ष्म विचार तरंगों की यात्रा भी इसी प्रकार आरम्भ होती है। वे अपने साथ सजातीय शक्तियों एवं अनुभवों के अनुदान लेकर वापस लौटती हैं तथा अपनी चैतन्य विशेषताओं से साधक की सामर्थ्य को कई गुनी बढ़ा देती हैं। सजातीयों का एकत्रीकरण प्रकृति का भी नियम है। भूगर्भ की खदानें इस सिद्धान्त पर ही बनती और बढ़ती हैं कि अमुक स्थान पर एकत्रित खनिज एक संयुक्त चुम्बकत्व उत्पन्न करते हैं। उस आकर्षण का प्रभाव जितने क्षेत्र में होता है वहाँ से उसी जाति के बिखरे कण खिंचते हुए चले आते है । जितनी बड़ी व सम्पन्न खदान होती हैं उतना ही सशक्त चुम्बकत्व और फिर उतने ही सुदुर क्षेत्र तक उसकी आकर्षण प्रक्रिया, यही वह आधार है जिसके सहारे धातु आदि की खदानें धीरे-धीरे अपना आकार बढ़ाती रहती हैं।

रेडियो प्रसारणों में एक सामान्य सी आवाज को विश्व-व्यापी बना देने तथा उसकी असामान्य गति बढ़ा देने में इलेक्ट्रोमैगनेटिक तरंगों का ही चमत्कार होता है। पदार्थ विज्ञान के विशेषज्ञ जानते हैं कि इलेक्ट्रोमैगनेटिक वेक्स पर साउण्ड को सुपर इम्पोज कर रिकार्ड कर लिया जाता है। फलस्वरूप वे पलक मारते ही सारे संसार की परिक्रमा कर लेने जितनी शक्ति प्राप्त कर लेती हैं। इन शक्तिशाली तरंगों के सहारे ही अन्तरिक्ष में भेजे गये राकेटों की उड़ान को धरती पर से नियन्त्रित करने, उन्हें दिशा देने, उनकी यान्त्रिक खराबी दूर करने का प्रयोजन पूरा किया जाता है। लेसर स्तर की बनी शक्ति किरणें और भी अधिक सामर्थ्यवान होती हैं। एक फुट मोटी लोहे की चादर में सूराख कर देना उनके लिए एक सामान्य बात है। चिकित्सा जगत में उपचार के लिए इन किरणों का प्रयोग होने लगा है। सुपर- सोनिक स्तर की तरंगों का जप प्रक्रिया के द्वारा उत्पादन और समन्वय होता है। जप के समय उच्चारण किये गये शब्द एवं उसके साथ आत्म-निष्ठा, श्रद्धा एवं संकल्प के समन्वय से वही क्रिया उत्पन्न होती है जो रेडियों स्टेशन पर बोले गये शब्दों में होता है। कुछ ही क्षणों में वे शक्तिशाली होकर समस्त भू-मण्डल पर प्रसारण का उद्देश्य पूरा करते हैं। जपयोग से न केवल समस्त संसार का वातावरण प्रभावित होता है वरन् साधक का व्यक्तित्व भी परिष्कृत होकर जगमगाने लगता है। रेडियों स्टेशनों से प्रसारण तो होता है, पर स्थानीय स्तर पर कोई विलक्षणता नहीं दिखायी पड़ती। लेसर किरणें फेंकने वाले यन्त्रों में निजी प्रभाव नहीं देखा जा सकता। वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उन स्थानों को ही प्रभावित करती हैं जहाँ उनका आघात होता है। जप प्रक्रिया के साथ ऐसी बात नहीं है। इसमें साधक और वातावरण को प्रभावित करने की दुहरी शक्ति होती है। जप के साथ जुड़ी इन मर्यादाओं एवं वैज्ञानिक विधि-विधानों का सही ढंग से पालन किया जा सके तो उससे चमत्कारी लाभ उठाया जा सकता है।

शब्द की शक्ति पर विचार करते हुए हमारा ध्यान भारतीय मन्त्रशास्त्र की तरफ जाता है। हमारे प्राचीन धर्मग्रंथ मन्त्रों की महिमा से भरे पड़े हैं और आज भी करोड़ों व्यक्ति मन्त्रों के जप और प्रयोग द्वारा अपनी तरह-तरह की कामनाओं को पूरा करने का उद्योग करते रहते हैं। यहाँ की साधारण जनता का तो मन्त्रों में अटल विश्वास है, पर आधुनिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति मन्त्र-शक्ति का कोई तर्क और बुद्धि-युक्त प्रमाण न मिलने से, उनको मानने से इन्कार करते हैं। वे कहते हैं कि यह कैसे हो सकता है कि एक व्यक्ति द्वारा कुछ शब्दों के उच्चारण करने से दूसरे व्यक्ति का सिर का दर्द मिट जाय या बिच्छू आदि का विष उतर जाय? मन्त्र द्वारा सन्तान होना, शत्रु पर विजय प्राप्त करना या लक्ष्मी की प्राप्ति आदि अनेक ऐसी बातें हैं, जिनके सम्बन्ध में लोगों में मतभेद दृष्टिगोचर होता है और प्रायः वाद-विवाद भी होने लगता है। एक मन्त्र-शक्ति का पूर्णतः समर्थन करता है और दूसरा उसे कोरा बहम या कल्पना बतलाता है।

मन्त्र-शास्त्र का समर्थन करने से हमारा आशय यह नहीं कि आजकल जो ओझा, स्याने-भोपा आदि 'मन्त्र' का व्यवसाय करते हैं, वे सब उसके जानकार हैं और जो कुछ क्रिया वे करते हैं, वह पूर्णतया सच्ची होती है। जिस प्रकार आजकल सभी प्राचीन विद्याओं का लोप हो गया है और उनमें वास्तविकता के बजाय ढोंग और छल का प्रवेश अधिक हो गया है, वही दशा मन्त्र-शास्त्र की भी समझनी चाहिये। लोग न तो उसके तत्व को समझते हैं और न परिश्रमपूर्वक पूरा विधि-विधान करते हैं, उन्होंने तो इसे केवल पेट भरने का धन्धा बना लिया है। अन्यथा जिस प्रकार विदेशों के विद्वान् पुरुष विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की खोज कर रहे हैं और वास्तविकता का पता लगाने के लिये तन, मन, धन सब कुछ अर्पण कर देते हैं, उसी प्रकार यदि हमारे यहाँ शब्द-विज्ञान और उसके अन्तर्गत मन्त्र-विज्ञान की खोज की जाती तो सैकड़ों ऐसे आश्चर्यजनक तथ्यों का पता लगता, जिससे हमारा व्यक्तिगत कल्याण होने के साथ ही भारतीय-संस्कृति का भी मुख उज्ज्वल होता।

भारतीय-दर्शन के मत से शब्द की शक्ति सबसे अधिक है, क्योंकि वह आकाश-तत्व से सम्बन्धित है, जो सर्वाधिक सूक्ष्म होता है और सूक्ष्म-तत्व की शक्ति, स्थूल-तत्व की शक्ति की अपेक्षा कहीं अधिक होती है। बारूद या किसी अन्य स्फोटक पदार्थ को जब विशाल शक्ति के रूप में परिणित करना होता है, तो उसमें चिनगारी लगाकर उसे स्थूल से सूक्ष्म गैस के रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है। आज हम आश्चर्य करते हैं कि प्राचीन ऋषि-मुनि किस प्रकार किसी मन्त्र या कुछ गूढ़ शब्दों का उच्चारण करके विनाश और निर्माण के बड़े-बड़े काम क्षणमात्र में कर दिखाते थे ? इसका रहस्य यही था कि आज जिस प्रकार वैज्ञानिकों ने पिछले सौ वर्षों में स्फोट करने वाले स्थूल पदार्थों की खोज करते-करते भयंकर बम और घण्टे में आठ हजार मील दौड़ने वाले राकेट बना डाले, उसी प्रकार भारतीय ऋषि-मुनियों ने स्थूल पदार्थों के बजाय सबसे सूक्ष्म तत्व आकाश से उत्पन्न शब्द-शक्ति का अनुसन्धान किया था और उसके प्रयोग की ऐसी-ऐसी विधियाँ मालूम की थीं कि जिसके प्रभाव से विश्व-ब्रह्माण्ड में भी हलचल उत्पन्न की जा सकती थी। आज भी जो लोग इस विद्या की एकाध छोटी-मोटी विधि को भली प्रकार सीख लेते हैं, वे आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाते हैं।

मन्त्र की क्रिया में केवल उसकी ध्वनि का ही (चाहे वह सुनने में आवे और चाहे भीतर ही उच्चारण किया जाय) प्रभाव नहीं पड़ता वरन् उसकी भावना तथा संकल्प शक्तियाँ भी काम करती रहती हैं। इन दोनों के मिल जाने से मन्त्र की शक्ति बहुत बढ़ जाती है। एक विद्वान् के कथनानुसार "भारतीय लिपि और अक्षर पूर्णतः वैज्ञानिक हैं और उसकी ध्वनियों में एक विशेष रहस्य छिपा है। मन्त्र में 'आस्था' भी एक प्रबल तत्व होता है, जिसे मानने में कितने ही लोग आना-कानी करते हैं। वैसे बिना 'आस्था' या भावना के भी मन्त्र-शक्ति का अनुभव किया जा सकता है, पर उसमें विलम्ब अधिक लगता है। इसीलिये किसी मन्त्र को सिद्ध करने के लिये दस हजार बार या लाख बार जपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का विधान बनाया गया है। इससे उसकी 'आस्था' हृदय में बद्धमूल हो जाती है।"

इस सबका निष्कर्ष यही है कि शब्द की शक्ति से अनेक बड़े महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं। हमारे पूर्वजों ने तो इस तथ्य को पूर्णरूप से हृदयंगम करके उसे 'शब्द-ब्रह्म' की संज्ञा दी थी और 'ऊँ' के रूप में उसको सृष्टि का उत्पादक माना था। ऐसी महान् शक्ति से अपरिचित रहना या उसकी उपेक्षा करना अपने हित पर स्वयं कुठाराघात करना है। हमको इस घातक प्रवृत्ति से बच कर शब्द ब्रह्म की उपासना करके उससे अधिकाधिक लाभ उठाना चाहिये। जैसा कि मलेशिया (दक्षिण-पूर्व एशिया) में वर्षा को रोकने के लिये जादूगरनियों की मन्त्र-शक्ति से काम लिया जाता है। वहाँ की भाषा में इनको 'वमोह' कहते हैं और आश्चर्य इस बात का है कि इनसे काम कराने वाले होते हैं, योरोप और अमरीका के आधुनिक नवशिक्षित व्यक्ति। अभी कुछ वर्ष पूर्व राष्ट्र-मण्डल की क्रिकेट-टीम जब खेलने के लिये मलाया गई तो उसके 'मैच' में वर्षा से बाधा न पड़ने देने के लिये एक 'वमोह' को बुलाया गया था।

परिणाम यह हुआ कि जब 'कुआलालम्पुर' (मलाया की राजधानी), में सब जगह मूसलाधार वर्षा होती रही, खेलने का मैदान बिल्कुल सूखा रहा। इसी प्रकार अमरीका की एक फिल्म कम्पनी जो मलाया में 'शूटिंग' करने आई थी, उसने भी इन जादूगरनियों की सहायता से ही अपना कार्यक्रम सकुशल पूरा किया। मन्त्र में निहित शब्द-शक्ति का यह चमत्कार हजारों व्यक्तियों ने अपनी आँखों से देखा है। चाहे वे शब्द की सूक्ष्म शक्ति को न जानने के कारण जादूगरनियों की शक्ति पर तरह-तरह के सन्देह करते हों, पर उसका प्रत्यक्ष परिणाम देखकर उनकी सचाई को मानना ही पड़ता है।

मन्त्र विद्या का स्वरूप और उपयोग

स्वामी रामतीर्थ ने एक बार कहा था—ईश्वर बना जा सकता है उसे देखा या दिखाया नहीं जा सकता। सूक्ष्म तत्व के बारे में भी यही बात है। ईथर तत्व में शब्द प्रवाह के संचार को रेडियो मन्त्र अनुभव करा सकता है, पर "ईथर" को उसके असली रूप में देखा जा सकना सम्भव नहीं। गर्मी, सर्दी, सुख, दुःख की अनुभूति होती है उन्हें पदार्थ की तरह प्रत्यक्ष नहीं देखा जा सकता। मन्त्र में उचित शब्दावली मन्त्र की मूल शक्ति नहीं वरन् उसको सजग करने का उपकरण है। किसी सोते को हाथ से झकझोरकर जगाया जा सकता है, पर यह हाथ "जागृति" नहीं। अधिक से अधिक उसे जागृति का निमित्त होने का श्रेय ही मिल सकता है। मन्त्रोच्चार भी अन्तरंग में और अन्तरिक्ष में भरी पड़ी अगणित चेतन शक्तियों में से कुछ को जागृत करने का एक निमित्त कारण भर है।

किस मन्त्र से किस शक्ति को किस आधार पर जगाया जाय। इसका संकेत हर मन्त्र के साथ जुड़े हुए विनियोग में बताया जाता है। वैदिक और तान्त्रिक सभी मन्त्रों का विनियोग होता है। आगम और निगम शास्त्रों में मन्त्र विधान के साथ ही उसका उल्लेख रहता है। जप तो मूल मन्त्र का ही किया जाता है पर उसे आरम्भ करते समय विनियोग को पढ़ लेना अथवा स्मरण कर लेना आवश्यक होता है। इससे मन्त्र के स्वरूप और लक्ष्य के प्रति साधना काल में जागरूकता बनी रहती है और कदम सही दिशा में बढ़ता रहता है।

मन्त्र विनियोग के पाँच अंग हैं— १. कृषि, २. छन्द, ३. देवता, ४. बीज, ५. तत्व। इन्हीं से मिलकर मन्त्र शक्ति सर्वांगपूर्ण बनती है। "ऋषि" तत्व का संकेत हैं—मार्गदर्शक गुरु; ऐसा व्यक्ति जिसने उस मन्त्र में पारंगतता प्राप्त की हो। सर्जरी, संगीत जैसे क्रिया-कलाप अनुभवी शिक्षक ही सिखा सकता है। पुस्तकीय ज्ञान से मन्त्र नौकानयन नहीं सीखा जा सकता, इसके लिए किसी मल्लाह का प्रत्यक्ष पथ प्रदर्शन चाहिए। चिकित्सा ग्रन्थ और औषधि भण्डार उपलब्ध रहने पर भी चिकित्सक की आवश्यकता रहती है। विभिन्न मनोभूमियों के कारण साधना पथिकों के मार्ग में भी कई प्रकार के उतार-चढ़ाव आते हैं, उस स्थिति में सही निर्देशन और उलझनों का समाधान केवल वही कर सकता है जो उस विषय में पारंगत हो। गुरु का यह कर्त्तव्य भी हो जाता है कि शिष्य को न केवल पथ प्रदर्शन करे वरन् उसे अपनी शक्ति का एक अंश अनुदान देकर प्रगति पथ के सरल भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनायें। अस्तु ऋषि का आश्रय मन्त्र साधना की प्रथम सीढ़ी बताई गई है।

छन्द का अर्थ है—लय। काव्य में प्रयुक्त होने वाली पिंगल प्रक्रिया के आधार पर भी छन्दों का वर्गीकरण होता है, यहाँ उसका कोई प्रयोजन नहीं। मन्त्र रचना को काव्य प्रक्रिया अनिवार्य नहीं है। हो भी तो उसके जानने न जानने से कुछ बनता बिगड़ता नहीं। यहाँ लय को ही छन्द समझा जाना चाहिए, किस स्वर में किस क्रम से, किस उतार-चढ़ाव के साथ मन्त्रोच्चार किया जाय यह एक स्वतन्त्र शास्त्र है। सितार में तार तो उतने ही होते हैं, उँगलियाँ चलाने का क्रम भी हर वादन में चलता है, पर बजाने वाले का कौशल तारों पर आघात करने के क्रम में हेर-फेर करके विभिन्न राग रागनियों का ध्वनि प्रवाह उत्पन्न करता है। मानसिक, वाचिक, उपांशु, उदात्त, अनुदात्त-स्वरित ही नहीं मन्त्रोच्चार के और भी भेद-प्रभेद हैं जिनके आधार पर उसी मन्त्र द्वारा अनेक प्रकार की प्रतिक्रियायें उत्पन्न की जा सकती हैं।

ध्वनि तरंगों के कम्पन इस लय पर ही निर्भर हैं। साधना विज्ञान में इसे यति कहा जाता है। मन्त्रों की एक यति सब के लिए उचित नहीं। व्यक्ति की स्थिति और उसकी आकांक्षा को ध्यान में रखकर यति का, लय का—निर्धारण करना पड़ता है। साधक को उचित है कि मन्त्र साधना में प्रवृत्त होने से पूर्व अपने लिए उपयुक्त छन्द की लय का निर्धारण करले।

विनियोग का तीसरा चरण है—देवता। देवता का अर्थ है—चेतना सागर में से अपने अभीष्ट शक्ति प्रवाह का चयन। आकाश में एक ही समय में अनेकों रेडियो स्टेशन बोलते रहते हैं पर हर एक की फ्रीक्वेन्सी अलग होती है। ऐसा न होता तो ब्राडकास्ट किये गये सभी शब्द मिलकर एक हो जाते। शब्द धाराओं की पृथकता और उनसे सम्बन्ध स्थापित करने के पृथक माध्यमों का उपयोग करके ही किसी रेडियो सेट के लिए यह सम्भव होता है कि अपनी पसन्द का रेडियो प्रोग्राम सुने और अन्यत्र में चल रहे प्रोग्रामों को बोलने से रोक दे। निखिल ब्रह्माण्ड में ब्रह्म चेतना की अनेक धारायें समुद्री लहरा की तरह अपना पृथक अस्तित्व भी लेकर चलती हैं। भूमि एक ही होने पर भी उसमें परतें अलग-अलग तरह की निकलती हैं। समुद्रीय अगाध जल में पानी की परतें तथा असीम आकाश में वायु से लेकर किरणों तक की अनेक परतें होती हैं। इसी प्रकार ब्रह्म चेतना के अनेक प्रयोजन के लिए उद्‌भूत अनेक शक्ति तरंगें निखिल ब्रह्माण्ड में प्रवाहित होती रहती हैं। उनके स्वरूप और प्रयोजनों को ध्यान में रखते हुए ही उन्हें देवता कहा जाता है।

साकार उपासना पक्ष देवताओं की अलकांरिक प्रतिमा भी बना लेता है और निराकार पक्ष प्रकाश किरणों के रूप में उसको पकड़ता है। सूर्य की सात रंग की किरणों में से हम जिसे चाहें उसे रंगीन शीशे के माध्यम से उपलब्ध कर सकते हैं। एक्सरे मशीन अल्ट्रा वायलेट उपकरण आकाश में से अपनी अभीष्ट किरणों को ही प्रयुक्त करते हैं। हंस दूध पीता है, पानी छोड़ देता है। इसी प्रकार किस मन्त्र के लिए ब्रह्म चेतना की किस दिव्य तरंग का प्रयोग किया जाये इसके लिए विधान निर्धारित है। स्थापन, पूजन, स्तवन आदि क्रियायें इसी प्रयोजन के लिए होती हैं। निराकारी साधक ध्यान द्वारा उस शक्ति को अपने अंग-प्रत्यगों में तथा समीपवर्ती वातावरण में ओत-प्रोत होने की भावना करते हैं। किसके लिए देव सम्पर्क का क्या तरीका ठीक रहेगा यह निश्चय करके ही मन्त्र साधक को प्रगति पथ पर अग्रसर होना होता है। दबी हुई प्रसुप्त क्षमता को प्रखर करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। यन्त्रों को चलाने के लिए ईधन चाहिए। हाथ या पैर से चलने वाले यन्त्रों के लिए न सही, उन्हें चलाने वाले हाथ पैरों को काम करते रहने के लिए ऊर्जा की जरूरत रहती है। यह तापमान जुटाने पर ही यन्त्र काम करते हैं। मन्त्रों की सफलता भी इसी ऊर्जा उत्पादन पर निर्भर है। साधना विज्ञान का सारा कलेवर इसी आधार पर खड़ा किया गया है। आयुर्वेद में भी नाड़ी शोधन के लिए वमन, विरेचन, स्नेहन, स्वेदन नस्व यह पञ्च कर्म शरीर शोधन के लिए हैं। मन्त्र साधन में व्यक्तित्व के परिष्कार के अतिरिक्ति पाँच आधार—ऋषि, छन्द, देवता, बीज और तत्व हैं। जो इन सब साधनों को जुटा कर मन्त्र साधन कर सके उसे अभीष्ट प्रयोजन की प्राप्ति होकर ही रहती है।

मन्त्र योग साधना का एक ऐसा शब्द और विज्ञान है कि उसका उच्चारण करते ही किसी चमत्कारिक शक्ति का बोध होता है। ऐसी धारणा है कि प्राचीन काल के योगी, ऋषि और तत्वदर्शी महा पुरुषों ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन्त्रबल से पृथ्वी, देव-लोक और ब्रह्माण्ड की अनन्त शक्तियों पर विजय पाई थी—मन्त्र शक्ति के प्रभाव से वे इतने समर्थ बन गये थे कि इच्छानुसार किसी भी पदार्थ का हस्तान्तरण, शक्ति को पदार्थ और पदार्थ को शक्ति में बदल देते थे। शाप और वरदान मन्त्र का ही प्रभाव माना जाता है। एक क्षण में किसी का रोग अच्छा कर देना, एक पल में करोड़ों मील दूर की बात जान लेना, एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र की जानकारी और शरीर की ७२ हजार नाड़ियों के एक-एक जोड़ की जानकारी तक मन्त्र की ही अलौकिक शक्ति थी। इस लिए भारतीय तत्वदर्शन में मन्त्र शक्ति पर जितनी शोधें हुई हैं, उतनी और किसी पर भी नहीं हुईं । मन्त्रों के आविष्कार होने के कारण ही ऋषि मन्त्र दृष्टा कहलाते थे। वेद और कुछ नहीं एक प्रकार के मन्त्र विज्ञान हैं जिनमें विराट् ब्रह्माण्ड की उन अलौकिक सूक्ष्म और चेतन सत्ताओं और शक्तियों तक से सम्बन्ध स्थापित करने के गूढ़ रहस्य दिये हुए हैं, जिनके सम्बन्ध में विज्ञान अभी "क ख ग" भी नहीं जानता।

मन्त्र का सीधा सम्बन्ध उच्चारण या ध्वनि से है। इस लिए इसे "ध्वनि विज्ञान" भी कह सकते हैं। अब तक इस दिशा में जो वैज्ञानिक अनुसंधान हुए और निष्कर्ष निकले हैं वह यह बताते हैं कि सामान्य भारतीय मन्त्र शक्ति पर भले ही विश्वास न करें पर वैज्ञानिक अब उसी दिशा में अग्रसर हो रहे हैं। वह समय समीप ही है जब ध्वनि विज्ञान की उन्नति ऋषियों जैसे ही कौतूहलवर्द्धक कार्य करने लगेगी। उदाहरण के लिए "ट्रान्स्डूयसर" यन्त्र से सूक्ष्म आपरेशन किया जा सकता है। वह शब्द की कर्णातीत शक्ति का ही फल है। प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री डा. फ्रिस्टलाव ने "अल्ट्रासोनोरेटर' नामक एक ऐसा यन्त्र तैयार किया है जो दो रासायनिक द्रव्यों को थोड़ी ही देर में मिला सकता है। इस पद्धित में एक "खे" का उपयोग किया जाता है। कर्णातीत ध्वनि डा. खे को प्रभावित करती है। खा इतनी तीव्रता से कम्पन करता है कि भारी मात्रा में भरा हुआ जल कड़ाही में खौलते पानी की तरह मन्थन करने लगता है।

शब्द शक्ति का स्फोट मन्त्र शक्ति की रहस्यमय प्रक्रिया है। अणु विस्फोट से उत्पन्न होने वाली भयावह शक्ति की जानकारी हम सभी को है। शब्द की एक शक्ति सता है। उसके कम्पन भी चिरन्तन घटकों सम्मिश्रण से बनते हैं। इन शब्द कम्पन्न कटकों का विस्फोट भी अणु विखण्डन की तरह ही हो सकता है। मन्त्र योग साधना के उपचारों के पीछे लगभग वैसी ही विधि व्यवस्था रहती है। मन्त्रों की शब्द रचना का गठन तत्वदर्शी मनीषी तथा दिव्यदृष्टा मनीषियों ने इस प्रकार किया है कि उसका उपात्मक, होमात्मक तथा दूसरे तप साधनों एवं कर्मकाण्डों के सहारे अभीष्ट स्फोट किया जा सके। वर्तमान बोलचाल में विस्फोट शब्द जिस अर्थ में प्रयुक्त होता है लगभग उसी में संस्कृत में स्फोट का भी प्रयोग किया जाता है। मन्त्राराधन वस्तुतः शब्द शक्ति का विस्फोट ही है।

शब्द स्फोट से ऐसी ध्वनि तरंगें उत्पन्न होती है जिन्हें कानों की श्रवण शक्ति से बाहर की कहा जा सकता है। शब्द आकाश का विषय है। इसलिए मान्त्रिक का कार्यक्षेत्र आकाश तत्व रहता है। योगी वायु उपासक है। उसे प्राणशक्ति का सञ्चय वायु के माध्यम से करना पड़ता है। इस दृष्टि से मान्त्रिक को योगी से भी वरिष्ठ कहा जा सकता है। सच्चा मान्त्रिक योगी से कम नहीं वरन् कुछ अधिक हैं शक्तिशाली हो सकता है।

मन्त्राराधना में शब्द शक्ति का विस्फोट होता है, विस्फोट में गुणन शक्ति है। मन्त्र में सर्वप्रथम देवस्थापन की सघन निष्ठा उत्पन्न की जाती है। यह भाव चुम्बकत्व है। श्रद्धा शक्ति के उद्भव का प्रथम चरण है। इस आरम्भिक उपार्जन का शक्ति गुणन करती चली जाती है और छोटा सा बीज विशाल वृक्ष बन जाता है। विचार का चुम्बकत्व सर्वविदित है। इष्टदेव की—मन्त्र अधिपति की शक्ति एवं विशेषताओं का स्पवन, पूजन के साथ स्मरण किया जाता है और अपने विश्वास में उसमें सर्वशक्तिसत्ता एवं अनुग्रह पर विश्वास जमाया जाता है। निर्धारित कर्मकाण्ड विधिविधान के द्वारा तथा तप साधना कष्टसाध्य तितीक्षा के द्वारा मन्त्र की गुह्य शक्ति के करतलगत हो जाने का भरोसा दीर्घकालीन साधना द्वारा साधक के मनक्षेत्र में परिपक्व बनता है। यह सब निष्ठायें मिलकर मन्त्र की भाव प्रक्रिया को परिपूर्ण कुम्बकत्व से परिपूर्ण कर देती हैं।

मन्त्र से दो वृत्त बनते हैं एक को भाववृत्त और दूसरे को ध्वनि वृत्ति कह सकते हैं। लगातार की गति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्ततः एक गोलाई में घूमने लगती है। ग्रह नक्षत्रों का अपने-अपने अयन वृत्त पर घूमने लगना इसी तथ्य से सम्भव हो सका है कि गति क्रमशः गोलाई में मुड़ती चली जाती है।

तन्त्र जप में नियत शब्दों को निर्धारित क्रम से देर तक निरन्तर उच्चारण करना पड़ता है। जप यही तो है। इस मति प्रवाह के दो आधार हैं। एक भाव और दूसरा शब्द। मन्त्र के अन्तराल में सन्निहित भावना का नियत निर्धारित प्रवाह एक भाववृत्त बना लेता है, वह इतना प्रचण्ड होता है कि साधक के व्यक्तित्व को ही पकड़ और जकड़कर उसे अपनी ढलान में ढाल ले। उच्चारण से उत्पन्न ध्वनिवृत्त भी ऐसा ही प्रचण्ड होता है कि उसका स्फोट एक घेरा डाल कर उच्चारणकर्ता को अपने घेरे में कस ले। भाववृत्त अन्तरंग वृतियों को शब्दवृत बहिरंग प्रवृत्तियों पर इस प्रकार आच्छादित हो जाता है कि मनुष्य के अभीष्ट स्तर को मोड़ा-मरोड़ा या ढाला जा सके।

मन्त्र शक्ति का रहस्य

मन्त्र या जप के प्रभाव को समझने के लिए शब्द विज्ञान, मनोविज्ञान, वायु तथा विद्युत विज्ञान की कुछ सहायता लेनी होगी। अनेक धर्मों में शब्द का महत्व ऊँचा माना गया है आर्य तो शब्द को ब्रह्म रूप मानते हैं। शब्द चाहे जड़ का हो या चेतन का—चेतन में भी मानव का हो या पशु पक्षी का—सभी का प्रभाव न केवल प्राणियों पर किन्तु प्रकृति पर भी अवश्य पड़ता है। इस तथ्य को मूर्ख से भी मूर्ख स्वीकार करेगा। मेघ गर्जन विजली की कड़क का प्रभाव पशु पक्षियों पर ही नहीं मानवों पर भी अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार पड़ता है। होमियोपैथिक प्रणाली के अनुसार इन शब्दों से प्रकृति विशेष के रोगियों का रोग घटता-बढ़ता है। नदी के कल-कल का प्रभाव कवियों तथा प्रकृति के इतर पुजारियों पर पड़ता ही है। सिंह गर्जन सुनकर किसीको भय और किसी को उत्तेजना और वीर भाव उत्पन्न होता है। कोकिल या मयूर के गाने से किसी को भय की भावना नहीं होती। शब्द से ही हम दूसरे मनुष्यों को प्रभावित करते हैं। किसी में क्रोध उत्पन्न कर देते हैं तो किसी में प्रेम किसी में कामना तो किसी में वात्सल्य प्रेम या वैराग्य! फिर शब्द शैली और शब्द योजना की विभिन्नता से भिन्न-भिन्न प्रकार के भावों तथा रसों का प्रादुर्भाव होता है। शब्द क्या शब्द के रचना करने वाले अक्षरों से भी भिन्न-भिन्न रस उत्पन्न होते हैं। करुण रस में तथा श्रृंगार रस में कोमल कान्त पदावली अभीष्ट होता है किन्तु वीर, रौद्र और वीभत्स रसों की शब्दाबलि विपरीत होती है। संसार की सभी भाषाओं के छन्दालंकार शास्त्र ने शब्दाक्षर विन्यासानुपात और उनके विपर्यय तथा तारतम्य के प्रभाव को स्वीकार किया है।

युद्ध सम्बन्धी प्राचीन कार्यों में कितने कर्णकर्कश शब्दाक्षरों का प्रयोग होता था। शब्दों ही से युद्ध छिड़ जाता है। शब्दों ही के कारण प्राण हास्य और रुदन करने लगते हैं। यदि हमारे शब्दों में वास्तविक शक्ति हो तो दौड़ता हुआ विषधर सर्प भी रोका जा सकता है और वश में किया जा सकता है। चञ्चल मृगों को अपनी ओर आकृष्ट करके निश्चल और शान्त कर सकते हैं और पागल हाथी की उन्मत्ता को भी दूर कर सकते हैं।

मन्त्रों की शक्ति को थोड़े समय के लिए अभी दूर रहने दीजिए। संगीत ही में वशीकरण और रोगशमन की शक्ति आज भी पाई जाती है। संगीत से शिर पीड़ा और वमनोद्रोग रुकते मैंने देखा है। यह है केवल शब्द विज्ञान की लीला। उसके साथ भावना की पुट दे दीजिए, मनोविज्ञान की सहायता से लीजिए, सोने में सुहागा हो गया। मानव विशेष युक्त शब्दों का क्या प्रभाव होता है, इसके प्रमाण जीवन के पल-पल में प्राप्त हैं। कुत्ते, बिल्ली आदि में तो मानव बुद्धि नहीं है परन्तु प्रेम, मय शब्दों को और घृणा क्रोध भरे शब्दों को वे भी पहिचानते हैं तथा उन्हीं भावनाओं के परिणामस्वरूप कार्य भी करते हैं। हमारी विचार शक्ति और आन्तरिक इच्छा शक्ति का प्रतिबिम्ब शब्दों द्वारा विलक्षण रीति से मनुष्यों पर तो पड़ता ही है, पशु-पक्षियों क्या वृक्षों तक पर पड़ता है। फिर एक ही शब्द पृथक्-पृथक् भावनाओं से उच्चारण करने पर पृथक-पृथक प्रकार के फल को प्रकट करता है। जैसे "क्यों वे बदमाश" क्रोध में कहने से क्रोध और घृणा का अभिभावक होता है अपने बच्चे के प्रति प्रेम से कहने पर प्रेमोल्लास प्रकट करता है। एक ही स्त्री को कोई बेटी, कोई माता, कोई भगिनी, कोई प्रियताम कहकर पुकारता है परन्तु प्रत्येक पुकार में विविध भावनाओं को तंग का प्रादुर्भाव होता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है और प्रतिक्रिया में भी भिन्नता होती है। मेस्मरेजम या हिपनोटिज्म में यद्यपि मन्त्रों का प्रयोग नहीं होता है किन्तु वहां भी शब्द योग और इच्छा शक्ति योग के सम्पर्क से काम लिया जाता है। बड़े बड़े रोग अच्छे हो जाते हैं। मनुष्यों के स्वभाव तक में परिवर्तन किसी-किसी अवस्था में होते देखा गया है। तात्पर्य यह है कि विशेष शब्दविन्यास में जब विशेष भावनाओं का रस मिश्रण किया जाय है तो दूसरों पर जन पर उनका प्रयोग किया जाता है, विशेष प्रभाव पड़ता है। यह भी एक स्वीकृति तथ्य है कि प्रत्येक प्राणी में आकर्षण या विद्युत शक्ति है क्योंकि सभी प्राणी जगदात्मा के एक सूत्र की मणियां हैं या कहिये सभी में एक ही विद्युत् तरंग के कण वर्तमान हैं, ऐसा न होता तो अहंतुक और तात्कालिक प्रेम तथा घृणा के भाव जो संसार में दृष्टिगोचर होते हैं न होते। स्वाभाविक द्वेष तथा प्रेम इसके प्रमाण हैं।

आप शब्दों का उच्चारण जोर से न भी करें केवल मन से ही उन शब्दों को किसी के प्रति लक्ष्य करके अभ्यासरूप से दुहरावें तो उन मूक शब्दों का विचार तरंग द्वारा उस पर प्रतिबिम्ब पड़ता है और उसके मन में उसी प्रकार से उद्वेलन होगा। यह एक अनुभव की बात है कि आप किसी घोर दुष्ट वासनायम स्त्री पुरुष के पास जाकर चुपचाप भी बैठे रहें तो भी उसके मूल विचारों का आप पर अवश्य प्रभाव पड़ेगा और यदि आपके विचार उससे विपरीत हैं तो आप घबराकर वहां से भाग जायेंगे। उसी प्रकार अच्छे विचारों के सज्जनों के पास बैठने से भी मूक विचारों का असर पड़ता है। शब्द भावना और प्राकृतिक विद्युत शक्ति से हम दूसरों पर सत् तथा असत् प्रभाव डाल सकते हैं। अब देखना यह है कि शब्दों तथा विचारों का प्रभाव वायु के स्तरों में तथा आकाशमण्डल में कहां, कितना और किस प्रकार पड़ता है। हमारे संगीत शास्त्र में राग-रागनियों के स्वरूप तथा गुणादि का बड़े विस्तार से वर्णन है। उनके प्रभावों का भी दिगद्दर्शन कराया गया है। प्राचीन पुस्तकों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि दीपक राग के गाने से दीपक जल जाते थे। मेघराज से वर्षा हो जाती थी। पर आज हमारी आंखें पाश्चात्य सभ्यता तथा विदेशी गौरव से चौंधियाई हुई हैं। हम इन बातों के अनुसन्धान में समय नष्ट नहीं करना चाहते न इन पर विश्वास करते हैं। हां, यदि कोई पाश्चात्य विद्वान इन तत्वों तथा तथ्यों का पोषणा मात्र करदे तो हम उसके अन्धविश्वासी हो सकते हैं। मैंने पढ़ा है कि इसी शताब्दी में कई बार गायकों द्वारा प्रयोग करके देखा गया है कि विविध राग-रागनियों की तान अलापने पर परदों पर तथा चूर्ण विशेष विस्तृत वायुमण्डल में उनकी रूपरेखा नाचती दिखाई और गान समाप्त होते ही वे रूप अन्तर्हित हो गये। एक बार लार्ड लिटन के कमरे में प्रसिद्ध अन्वेषिका श्रीमती बाट्स इन्स द्वारा यह प्रयोग देखा गया।

एक प्रकार के राग से एक ही प्रकार की आकृति प्रकट हुई दूसरे से दूसरी। फ्रान्स में भी एक बार लेडीलेंग ने एक राग छेड़ने पर देवी मैरी के दर्शन क्राइस्ट को गोद में लिए हुए। किए। भैरवराग छेड़ने पर भैरव जी के दर्शन हुए इटली में भी इसका प्रयोग किया गया है और वहाँ गायका के स्वरों के प्रभाव से रेत में चित्र बनते देखे गये। वह चित्र माता सरस्वती जी पुस्तक धारिणी वीणा धारिणी का था। शब्द के संघर्ष की शक्ति विद्युदाच्छान्न आकाशमण्डल में हजारों मीलों तक विस्तृत होती है। इसके वैज्ञानिक प्रमाण रेडियो और बेतार के तार हैं। आधुनिक काल में विशेष यन्त्रों द्वारा हमारी वाणी इतनी दूर पहुँचाई जा सकती है। प्राचीन काल में सिद्ध पुरुष बिना किसी यन्त्र के अपने योग बल से केवल अपनी वाणी का ही प्रसार सुदूरस्थ प्रदेशों में ही न कर वरन् एक स्थान में स्थित अपने शरीर द्वारा हजारों कोसों दूर पर स्थूल क्रियाएँ भी प्रदर्शित कर सकते थे। वे क्रियाएँ आज भी संभव हो सकती हैं। यदि हम यौगिक क्रियाओं की ओर अपना गम्भीर ध्यान दें और विस्मृत क्रियाओं और उनके उपेक्षित तत्वों का अनुसन्धान करने और उनकी साधना करने में समय तथा शक्ति का व्यय करें। हम यदि यह समझते हों कि हमारी वाणी का प्रसार बिना यन्त्र के केवल वहीं तक हैं जहाँ तक वह सुनाई देती हो तो हम भूल करते हैं। एक बड़े जलाशय में भाप एक छोटा सा कंकड़ डालें तो देखेंगे कि उस छोटे से कंकड़ की ताड़ित संघर्षण में जल में चक्र बनकर समस्त तड़ाग के घेरे में पड़ता ही जायेगा ठीक इसी प्रकार जो शब्द हमारे कण्ठ से निकलता है वह सारे वायुमण्डल में फैलकर अपनी तरंगों का प्रभाव डालता है। हमारी मानसिक शक्ति का प्रसाद और संघर्ष बल इससे भी अधिक है क्योंकि मन की प्रगति और बल शरीर से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अत्यन्त प्रबल और तीव्र है। हम यहां बैठे-बैठे संसार के किसी व्यक्ति विशेष को ध्यान में लाकर उस पर अपनी प्रवल इच्छा शक्ति द्वारा अपने विचारों का प्रभाव डाल सकते हैं। इसका यदि हम स्वयं परीक्षण करें तो हमें विश्वास प्रत्यक्ष रूप से हो जावेगा। निकट स्थान पर ही इस तत्व का परीक्षण करके देखिए। आप से कितने ही महानुभावों को कह अनुभव कई बार हुआ होगा कि आप एक विषय पर अपने मित्र से वार्तालाप करने के लिए विचार करते हुए गए, पहुँचने पर आप तो विचार करते ही रहे और जो विचार आपके हृदय में थे वे ही आपके मित्र ने प्रकट कर दिए। आप किसी से कई प्रश्न करने को उद्यत हुए कि उसने उसका उत्तर आपको पहिले ही दे दिया। बाह्य विद्युतशक्ति का बल कहीं अधिक है।विचार विनियम शब्दों से नहीं, हृदयान्तरित तार से ही हो जाता है। हमें इसके प्रमाण दैनिक में ही प्राप्त होते हैं परन्तु हम उन पर ध्यान नहीं देते।

जब शब्द, भाव, विचार, वायु, विद्युत तथा आकाश का पृथक् पृथक् तथा सम्मिलित प्रभाव हमारे जीवन के साधारण व्यवहार से पशु-पक्षी प्रकृति तथा मानवजाति पर नित्य पड़ना प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध है तो इसमें क्या आश्चर्य की बात है कि हमारे ऋषि-मुनियों ने आत्मयोग द्वारा विशेष साधनों से शब्द-विज्ञान मनो-विज्ञान आदि के अनुसन्धानित आधार पर विशिष्ट शब्दविन्यास की योजना से मन्त्रों की रचना करके उनकी विधिवत् सिद्धि द्वारा संसार का कल्याण किया। इन्हीं तत्वों की विवेचना के आधार पर यह निश्चित धारणा स्थिर हुई है कि मन्त्र द्वारार अनेक सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। रोग आपत्ति और संकटों का शमन होता है और इष्टदेव के दर्शन से कामनाएँ पूर्ण होती हैं। एक विचार को आप बारम्बार हृदय में दुहरावें और उसका अभ्यास करें तो वह विचार आपके मतिस्क में ऐसा अंकित हो आता है कि वह आपके स्वभाव में परिणित हो जाता है और उसका एक अंग बन जाता है और उस स्वभाव तथा संस्कार से वाह्य जगत प्रभावित है। इसी प्रकार किसी मन्त्र या मन्त्रों के स्रोत्र के पुरश्चरण से सिद्धियां प्राप्त करके संसार का कल्याण निश्चय रूप से किया जा सकता है।

शब्दोचारण भी कई प्रकार का है। एक शब्द वह जो दूसरों की सुनाई देता है उसमें कण्ठ जिह्वा वह अन्य शरीरांग का योग होता है दूसरा वह शब्द है जिसमें जिह्वा का आश्रय न लेकर केवल कण्ठ से ही उच्चारण होता है। तीसरा वह शब्द जिसमें केवल आपकी श्वाँस ही कार्य करती है। चौथा शब्द है जिसको आप हृदयान्तर अथवा अन्तःकरण से ही उच्चारण करते हैं, परन्तु उसकी भीमकाय तरंगें सारे ब्रह्माण्ड को आप्लावित कर देती हैं। पांचवां शब्द अनहद शब्द है जिसका उच्चारण आप वास्तव में करते ही नहीं। इन सब तथ्यों के विज्ञानों महर्षियों तत्वदार्शियों ने लोक कल्याण के लिए मन्त्रों का निर्माण गुप्त दिव्य शक्तियों की मन्त्रणा से और साधन से किया था। उनका सूक्ष्मतर मननयोग जो मन्त्रों में वैज्ञानिक क्रियाओं से सन्निहिततेवाह्य वायु तथा विद्युत के अभ्यन्तर सूक्ष्मस्तर की तरंगों द्वारा जड़ और जंगम पर यदि अपना अचूक प्रभाव डालता है तो क्या आश्चर्य है। किसी मन्त्र का जप हो या ईश्वर भजन प्रार्थना मन्त्र का कीर्तन हो उपरोक्त वैज्ञानिक तत्वों की प्रतिक्रिया उन सब में प्रगाढ़ रूप से दृष्टिगोचर होती है और उनके प्रभाव का विस्तार अनन्तु होकर के तार द्वारा हृदयों में प्रवेश करता है।

शब्द केवल जानकारी ही नहीं और भी बहुत कुछ देता है। इसकी शक्ति पर जितना गहरा चिंतन किया जाय उतनी ही उसकी गरिमा और विलक्षणा स्पष्ट होती चली जाती है। बादलों की गरज से ऊँची इमारतें फट जाती है। आज की यांत्रिक सभ्यता जितना शोर उत्पन्न कर रही है, उसके दुष्परिणामों से मानव जाति को पूरी न हो सकने वाली क्षति उठाना पड़ेगी, इस तथ्य से सारा संसार चिंतित है। अतिस्वन और जेट विमान आकाश में जितनी आवाज करते हैं उससे उत्पन्न होने वाली हानिकारक प्रतिक्रिया को सर्वत्र समझा जा रहा है और इन विशालकाय द्रुतगामी वायुयानों को कोलाहा रहित बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

शब्द की सामर्थ्य सभी भौतिक शक्तियों से बढ़कर सूक्ष्म और विभेदन क्षमता वाली है। इस बात की निश्चित जानकारी होने के बाद ही मन्त्र विद्या का विकास भारतीय तत्वदर्शियों ने किया। यों तो हम जो कुछ भी बोलते हैं उसका प्रभाव व्यक्तिगत और समष्टिगत रूप से सारे ब्रह्मांड पर पड़ता है। तालाब के जल में फेंके गए कंकड़ की लहरें भी दूर तक जाती है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी प्रकार हमारे मुख से निकाला हुआ प्रत्येक शब्द आकाश के सूक्ष्म परमाणुओं में कंपन उत्पन्न करता है और इस कंपन से लोगों में अदृश्य प्रेरणाएँ-जागृत होती हैं। हमारे मस्तिष्क में विचार न जाने कहाँ से आते हैं, हम समझ नहीं पाते पर मन्त्र विद जानते हैं कि मस्तष्कि में विचारों की उपज कोई आकस्मिक घटना नहीं वरन् शक्ति के परतों में आदि काल से एकत्रित, सूक्ष्म कंपन है, जो मस्तिष्क के ज्ञान कोषों से टकराकर विचार के रूप में प्रकट होते हैं।

कहा जा सकता है कि राडार हमारे शरीर में भी विद्यमान है और वह यन्त्रों द्वारा बने हुए राडार की तरह काम करता है। उसे जागृत, सशक्त और सक्रिय बनाने के लिये मन्त्र विद्या का उपयोग किया जाता है। शब्द विद्या के तथ्यों को ध्यान में रखते हुए मन्त्रों के अक्षरों का चयन होता है। मन्त्र रचना कविता या शिक्षा नहीं है। शिक्षा भी उनमें हो सकती है पर वह गौण है। प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र २३ ही अक्षर हैं। जबकि छन्द शास्त्र के अनुसार उसमें २४ होने चाहिये। इस दृष्टि से उसे साहित्य कसौटी पर दोषयुक्त भी ठहराया जा सकता है। पर शक्ति तत्व का जहाँ तक समबन्ध है वह सौ टंच खरा है। उसकी सामर्थ्य का कोई पारावार नहीं।

मन्त्र विद्या में दो तत्वों का समावेश है। (१) शब्द शक्ति का सूक्ष्म चेतना विज्ञान के आधार पर उपयोग (२) व्यक्ति की आन्तरिक पवित्रता एवं भावोल्लास से उत्पन्न दिव्य क्षमता का समन्वय। इन दोनों के मिलन से एक तीसरी ऐसी अद्भुत शक्ति उत्पन्न होती है जो कितने ही बड़े भौतिक साधनों से उपलब्ध नहीं हो सकती।

मन्त्रों में अक्षरों के क्रम का तथा उनके उच्चारण की विशेष विधि-व्यवस्था का ही अधिक महत्व है। कण्ठ, तालू, दाँत, होठ, मूर्धा आदि जिन स्थानों से शब्दोच्चारण होता है उनका सीधा सम्बन्ध मानव-शरीर के सूक्ष्म संस्थानों से है। षट्चक्र, उपात्मक एवं दिव्य वादियों, ग्रन्थियों का सूक्ष्म शरीर संस्थान अपने आप में अद्भुत है। इन दिव्य अंगों के साथ हमारे मुख यन्त्र के तार जुड़े हुए हैं। जिस प्रकार टाइपराइटर की चाबियाँ दबाते चलने से ऊपर अक्षर टाइप होते चलते हैं ठीक इसी प्रकार मुख से उच्चारण किये हुए विशेष वैज्ञानिक प्रक्रिया के साथ विनिर्मित मन्त्र गुम्फन का सीधा प्रभाव उपरोक्त संस्थानों पर पड़ता है और वहाँ तत्काल अतिरिक्ति शक्ति तरंगों का एक प्रवाह चल पड़ता है। यह प्रवाह मन्त्र विज्ञानी को स्वयं लाभान्वित करता है। उसकी प्रसुप्त क्षमताओं को जगाता है। भीतर गूँजते हुए वे मन्त्र कम्पन यही काम करते हैं और जब वे बाहर निकलते हैं तो वातावरण को प्रभावित करते हैं, सूक्ष्म जगत में अभीष्ट परिस्थितियों की सम्भावनाओं का सृजन करते हैं और यदि किसी व्यक्ति विशेष को प्रभावित करना है तो उस पर भी असर डालते हैं। मन्त्र विद्या इन तीनों प्रयोजनों को पूरा करती है।

साधारणतया ध्वनि चारों दिशाओं में फैलती है पर मन्त्रों में शब्द इस प्रकार गुम्फित होते हैं कि उसकी ध्वनि तरंगें विशेष प्रकार की हो जाती है। गायत्री मन्त्र की ध्वनि तरंगें तार के छल्ले जैसी ऊपर उठती हैं और यह सूक्ष्म अन्तराल के परमाणुओं के माध्यम से सूर्य तक पहुँचती हैं और जब यही ध्वनि सूर्य के अन्तराल में प्रतिध्वनित होकर लौटती हैं तो अपने साथ प्रकाश अणुओं की गर्मी, प्रकाश व विद्युत सहित फौज जप करने वाले के शरीर में उतरती चली जाती है। साधक उन अणुओं से शरीर ही नहीं मन और आत्मा की शक्तियों का विकास करता चला जाता है। और कई बारवह लाभ प्राप्त करता है जो सरिक प्रयत्नों द्वारा कभी भी संभव न हो सकें।

मन्त्र की जो कुछ महिमा है उसका आधार वाणी को 'वाक्' के रूप में परिणत कर देना है। इसके लिए मन, वचन और कर्म में ऐसी उत्कृष्टता का समन्वय करना पड़ता है कि वाणी को दग्ध करने वाला कोई कारण शेष न रह जाय। इतना करने के उपरान्त इसके द्वारा जपा हुआ मन्त्र सहज ही सिद्ध होता है और उच्चारण किया हुआ शब्द असंदिग्ध रूप से सफल होता है। परिष्कृत जिह्वा मे वह शक्ति रहती है जिसके बल पर कोई मन्त्र प्रचन्ड प्रभावशाली हो उठता है। उसके द्वारा उच्चरित शब्द मनुष्यों के अन्तस्तल को, असीम अन्तरिक्ष को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। ऐसी परिष्कृत वाणी वाक् को अध्यात्म का प्राण कह सकते हैं। उसे साधक की कामधेनु एवं तपस्वी का ब्रह्मास्त्र कहने में तनिक भी अत्युक्ति नहीं। इसी परिमार्जित जिह्वा को "सरस्वती" कहते हैं। साधना क्षेत्र में प्रवेश करने वाले व्यक्ति को इस मन्त्र शक्ति की-दीक्षा को महत्ता समझनी चाहिए। मन्त्र सिद्धि में चार तथ्य सम्मिश्रित रूप से काम करते हैं—(१) ध्वनि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विज्ञान के आधार पर विनिर्मित शब्द शृंखला का चयन और उसका विधिवत् उच्चारण (२) साधक की संयम द्वारा निग्रहीत प्राण शक्ति और मानसिक एकाग्रता का संयुक्त समावेश (३) उपासना प्रयोग में प्रयुक्ति होने वाले पदार्थ उपकरणों की भौतिक किन्तु सूक्ष्म शक्ति (४) भावना-प्रवाह, श्रद्धा, विश्वास एवं उच्चस्तरीय लक्ष्य दृष्टकोण। इन चारों का जहाँ जितने अंश में समावेश होगा वहाँ उतने ही अनुपात से मन्त्र शक्ति का प्रतिफल एवं चमत्कार दिखाई पड़ेगा। इन तथ्यों की जहाँ उपेक्षा की जा रही होगी और ऐसे ही अन्धाधुन्ध—गाड़ी धकेली ही जा रही होगी जल्दी-जल्दी वरदान पाने की धक लग रही होगी वहाँ निराशा एवं असफलता ही साथ लगेगी।

ईथर तत्व के परमाणु अत्यन्त सूक्ष्म और अति सम्वेदनशील हैं। वे एक सैकिण्ड में ३४ अरब तक कम्पन उत्पन्न कर सकते हैं। जब यह कम्पन चरम सीमा पर पहुँचते हैं तो उनसे एक अखण्ड प्रकाश की किरणें निकलने लगती हैं।

इन किरणों में अद्भुत गतिशीलता होती है, वे एक सैकिण्ड में प्रायः एक करोड़ मील चल लेती हैं। वायु के कम्पन नष्ट हो जाते हैं पर ईथर के कम्पनों का कभी नाश नहीं होता। वे सदा अमर रहते हैं। जैसे-जैसे वे पुराने होते जाते हैं वैसे-वैसे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की सतह पर जाकर स्थिर हो जाते हैं। जहाँ वे बलिष्ठ होने पर अपने समान धर्मी अन्य कम्परों को अपनी ओर खींचते हैं अथवा दुर्बल होने पर दूसरों की ओर खिंच जाते हैं। इस प्रकार जीर्ण होने पर भी एक नई चेतना को संघ शक्ति के आधार पर जन्म देते हैं और ऐसे चुम्बकत्व का सृजन करते हैं जो उन शब्दों के साथ जुड़ी हुई चेतनाओं से मनुष्यों को प्रभावित कर सके। यहाँ भी सहधर्मिता का नियम लागू होता है। जिन मनुष्यों के मस्तिष्क की स्थिति उन प्राचीन किन्तु संगठित शब्द कम्पन शक्ति से मिलती-जुलती होगी। असमानता की स्थिति में कोई विचार या शब्द प्रभाव किसी को प्रभावित नहीं कर सकता केवल अपनी उपस्थिति का परिचय दे सकता है।

धर-पकड़ द्वारा बलात्कार पूर्वक उच्चस्तरीय मनः-स्थिति बनाने के काल को ही साधना काल कहते हैं, जब वह स्थिति सहज बनी रहने लगे तो समझना चाहिए कि सिद्धावस्था प्राप्त हो गई।

मन्त्र सिद्धि के लिए साधक के शरीर को पोषण देने वाली, उसका रक्त और ओजस् बनाने वाली वस्तुओं का विशेष महत्व है। आहार से शरीर और विहार से मन परिपुष्ट होता है। पदार्थों में परसंचालित शक्ति है जिसे स्वसंचालित शक्ति के सहारे गतिशील किया जा सकता है। कोयला, तेल और पानी में भाप बनाने की शक्ति है, पर वह आग एवं प्रयोक्ता की स्वसचालित शक्ति के सहारे ही प्रकट हो सकती है। पदार्थों की शक्ति को भी साधना काल में प्रयोग किया जाता है। अनेक विधि निषेध एवं वस्तु प्रयोग इसी दृष्टि से बने हैं कि किस मन्त्र की सिद्धि के लिए किन पदार्थों से हवन किया जाय। आहार में क्या वस्तुएँ प्रयुक्त की जायें । पूजा के उपकरणों में किस स्तर को प्रधानता दी जाय, आदि की विधियाँ—परसंचालित शक्ति को स्वसंचालित शक्ति का साथ देने के लिए उभारने के लिए हैं। इन्जन में भाप बनाने और उसे पहिये घुमाने में लगाने की प्रक्रिया इसी प्रकार सम्पन्न होती है।

मन्त्र की शक्ति का विकास जप से होता है। जितनी अधिक घिसाई-पिसाई की जाती है उतनी ही पदार्थ की शक्ति उभरती है। ढेले को तोड़ते-तोड़ते उसे अणु की स्थिति में ले जाया जाय तो वह अणु ढेले की तुलना में अत्यधिक सामर्थ्यवान होगा। घोटने तथा पीसने की प्रक्रिया बहुत समय चलते रहने पर ही आयुर्वेदिक दवायें गुणकारी होती हैं। बार-बार घिसने से गर्मी पैदा होती है। बार-बार रगड़ने से चमक उत्पन्न होती है। इस तथ्य को हर कोई जानता है। मन्त्र की शक्ति उसके क्रमबद्ध रूप से बहुत समय तक जप करने से उभरती है। अनुष्ठान एवं पुरश्चरण विज्ञान का यही रहस्य है।

मन्त्र का प्रत्यक्ष रूप ध्वनि है। ध्वनि भी क्रमबद्ध, लयबद्ध और वृत्ताकार क्रम से निरन्तर एक ही शब्द विन्यास का उच्चारण किया जाता रहे तो उसका एक गति-चक्र बन जाता है। तब शब्द तरंगें सीधी चलने की अपेक्षा वृत्ताकार घूमने लगती हैं। रस्सी में पत्थर का टुकड़ा बाँधकर उसे तेजी से चारों ओर घुमाया जाय तो उसके दो परिणाम होंगे एक यह कि वह एक गोल घेरा जैसा दीखेगा। रस्सी और ढेले का एक स्थानीय स्वरूप बदलकर गतिशील चक्र रूप में बदल जाना एक दृश्य चमत्कार है। दूसरा परिणाम यह होगा कि उस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वृत्ताकार घुमाव से एक असाधारण शक्ति उत्पन्न होगी। इस तेज घूमते हुए पत्थर के छोटे टुकड़े से किसी पर प्रहार किया जाय तो उसकी जान ले सकता है। इसी प्रकार यदि उसे फेंक दिया जाय तो तीर की तरह सनसनाता हुआ बहुत दूर निकल जायगा। मन्त्र जप से यही होता है। कुछ शब्दों को एक रस, एक स्वर, एक लय के अनुसार बार-बार दुहराते रहने से उत्पन्न हुई ध्वनि तरंगें—सीधी या साधारण नहीं रह जातीं। वृत्ताकार उनका घुमाया जाना अन्तरंग पिण्ड में तथा बहिरंग ब्रह्माण्ड में एक असाधारण शक्ति-प्रवाह उत्पन्न करता है। उसके फलस्वरूप उत्पन्न हुए परिणामों को मन्त्र का चमत्कार कहा जा सकता है।

जप में शब्दों की पुनरावृत्ति होते रहने से उच्चारण का एक चक्र-व्यूह-सर्किल बनता है। क्रमिक परिभ्रमण से शक्ति उत्पन्न होती है। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। उस परिभ्रमण से आकर्षण शक्ति तथा भूलोक में सन्निहित अनेक स्तर की क्षमताएँ उत्पन्न होती हैं। यदि पृथ्वी का परिभ्रमण बन्द हो जाय तो उस पर घोर नीरवता, निर्जीवता एवं अशक्तता छा जायगी। शक्ति उत्पादन के लिए परिभ्रमण कितना आवश्यक है इसे 'डायनमो' के प्रयोगकर्त्ता जानते हैं। घुमाव बन्द होते ही बिजली बनना बन्द हो जाती है। स्थूल और सूक्ष्म शरीर में विशिष्ट स्तर के विद्युत् प्रवाह उत्पन्न करने के लिए विशिष्ट शब्दों का—विशिष्ट गति एवं विधि से उच्चारण करना पड़ता है। मन्त्र जप का सामान्य विज्ञान यही है।

जप में एक शब्दावली को एक क्रम और एक गति से बिना विश्राम दिये गतिशील रखा जाता है। साधारण वार्तालाप में अनेकों शब्द अनेक अभिव्यक्तियाँ लिये हुए अनेक रस और भावों सहित उच्चारित होते हैं। अस्तु इसमें न तो एकरूपता होती है न एक गति। कभी विराम, कभी प्रवाह, कभी आवेश व्यक्त होते रहते हैं, पारस्परिक वार्तालाप में प्रतिपादन का एक केन्द्र या एक स्तर नहीं होता। अतएव उससे वार्तालाप जन्य प्रभाव भर उत्पन्न होता है, कोई विशिष्ट शक्तिधारा प्रवाहित नहीं होती। जप की स्थिति इसमें सर्वथा भिन्न है। उसमें सीमित शब्दावली ही प्रयुक्त होती है और वही लगातार बोली जाती रहती है। रेखागणित के विद्यार्थी जानते हैं कि एक रेखा यदि लगातार सीधी खींची जाती रहे तो वह अन्ततः उसी केन्द्र से आकर जुड़ जायगी, जहाँ से आरम्भ हुई थी। प्रत्येक गतिशील पदार्थ गोल हो जाता है। पृथ्वी गोल है। ग्रह-नक्षत्र सभी गोल हैं। भौतिक जगत का छोटा घटक परमाणु और चेतन जगत का छोटा घटक जीवाणु दोनों ही गोल हैं। गोलाई पर चलते रहा जाय तो उसका अन्त आरम्भ वाले स्थान पर ही होगा। ग्रह-नक्षत्रों की भ्रमण कक्षाएँ इसी आधार पर सुनिश्चित रहती हैं। सीधी रेखा में हम पृथ्वी की परिक्रमा करने निकल पड़े तो-लौटकर वहीं आ जायेंगे, जहाँ से चले थे। इस सिद्धान्त के अनुसार मन्त्र-जप की परिणति एक गतिशील शब्द चक्र की स्थापना के रूप में होती है।

कहा जाता है कि वाल्मीकि ऋषि ने उलटा मन्त्र जपा था अर्थात् "राम-राम" के स्थान पर "मरा-मरा" कहा था। वस्तुतः यह सुनने-समझने वालों का ही भ्रम रहा होगा। लगातार एक ही गतिक्रम से राम-राम कहते रहने पर उसकी गति गोल हो जायगी और उसे आसानी से मरा-मरा समझा जा सकेगा। इसी प्रकार मरा-मरा मन्त्र का संकल्प लेकर किया गया उच्चारण भी राम-राम प्रतीत होने लगेगा। असल में होता यह है कि एक शब्दावली को अनवरत गति से बोलने पर उसमें आदि अन्त का भेद नहीं रहता, पूरी शब्दावली एक गोलाई में घूमने लगती है और शब्द-चक्र बनाती है। मन्त्र जप के विधान का निर्देश करते हुए "तैलधार वत्" सूत्र में कहा गया है कि जिस तरह तेल को एक गति से गिराने पर उसकी धारा बँध जाती है, उसी प्रकार मन्त्रोच्चारण का क्रम एक ही गति से चलाना चाहिए। न उसके प्रवाह क्रम में अन्तर आवे और न उच्चारण स्तर में। रुक-रुक कर—कभी धीमे, कभी तीव्र, कभी उच्च स्वर, कभी मन्द ऐसा जप में नहीं हो सकता। वेदमन्त्रों के सस्वर उच्चारण की बात दूसरी है। वे छन्द हैं इसलिए पाठ करते समय उन्हें स्वरबद्ध अनुशासन का ध्यान रखते हुए गाया जाना अथवा पाठ करना उचित है। जप की व्यवस्था इससे सर्वथा भिन्न है। गायत्री, मृत्युन्जय आदि वेद मन्त्रों को भी जप करते समय स्वर रहित ही जपा जाता है, साथ ही धारा जैसी एक रस-एक सम गति बनाये रखी जाती है। इसमें कोई अन्तर तो नहीं पड़ा इसकी जाँच-पड़ताल माला के आधार पर की गई गणना से होती है। गायत्री मन्त्र जप में साधारणतया एक घण्टे में १०-११ माला होती हैं। नित्य वही क्रम चला या नहीं, इसकी जाँच-पड़ताल घड़ी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और माला के समन्वय से हो सकती है। प्रत्येक माला पूरी होने में समान समय लगना चाहिए तभी मन्त्र शक्ति का वैज्ञानिक आधार बन गया ऐसा समझा जा सकता है। भक्ति-विभोर होकर बिना गति का ध्यान रखे भी जप हो सकता है, पर वह भावनात्मक प्रक्रिया हुई उसका परिणाम भावना की शुद्धता और गहराई पर निर्भर है। ऐसे जप को शब्द-शक्ति के आधार पर उत्पन्न होने वाले मन्त्र-जप से भिन्न स्तर का समझा जाना चाहिए। ब्लडप्रेशर नापने की मशीन रोगी की बाँह पर बाँधकर डाक्टर घड़ी पर निगाह लगाये रहते हैं, हवा का दबाव बढ़ाते रहते हैं, कान में स्टेथिस्कोप में धड़कन गिनते रहने हैं, तभी वे समझ पाते हैं कि रक्त-चाप कितना है। घडी और मालागणना पर ध्यान लगाये रहकर नये साधक को अपने जप की गति को एक रस—एक सम बनाना पड़ता है। उतना बन पड़े तो समझना चाहिए कि शब्द गति का चक्र बन गया और उसके आधार पर मन्त्र विज्ञान के विशिष्ट परिणाम उत्पन्न होंगे विशेष पुरश्चरणों में जप विद्या के निष्णात साधक इसीलिए बिठाये जाते हैं कि उनकी सही क्रम-प्रक्रिया, सही परिणाम उत्पन्न कर सके।

गति जब गोलाई में घूमने लगती है तो उससे उत्पन्न होने वाले चमत्कार हम अपने दैनिक जीवन में नित्य ही देखते रहते हैं। बच्चे छोटी 'फिरकनी' अथवा लट्टू जमीन पर घुमाने का खेल-खेलते हैं। एक बार होशियारी से घुमा देने पर यह खिलौने देर तक अपनी धुरी पर घूमते रहते हैं और गिरते नहीं। जबकि गति बन्द होते ही वे जमीन पर गिर जाते हैं। यह गति का चमत्कार ही है कि एक बार का धक्का देर तक काम देता है और उत्पन्न गति प्रवाह को देर तक चलते रहने की स्थिति उत्पन्न करता है। जप के द्वारा उत्पन्न गति भी साधना काल के बहुत पश्चात् तक चलती रहती है और साधक की आत्मिक विशेषता को गतिशील एवं सुस्थिर बनाये रहती है।

मशीनों का बड़ा पहिया 'फ्लाईह्वील' एक बार घुमा देने पर मशीन के अन्य पुर्जों को न केवल गतिशील ही करता है, वरन् उनकी चाल को नियन्त्रित भी करता है। आरी का उपयोग हाथ से आगे पीछे की गति से करने पर भी लकड़ी कटती तो है, पर यदि गोलाई में घुमा दिया जाय तो वही आरी कई गुनी शक्तिशाली सिद्ध होगी और अधिक मात्रा में अधिक जल्दी कटाई कर सकेगी। आरा मशीनें यही करती हैं। वे मोटे-मोटे लट्ठे और कठोर जड़ें आसानी से चीर-चारकर रख देती हैं जबकि आगे पीछे करने पर उसी आरी के लिए वही लकड़ी काटना काफी कठिन पड़ता। यह सब गोलाई में घूमने वाले गति प्रवाह का चमत्कार है।

तेजी के साथ गोलाई का घुमाव "सैन्ट्री फ्यूगल फोर्स" उत्पन्न करता है। गोफन में कंकड़ रखकर घुमाने और उसे छोड़कर पक्षी भगाने का कार्य पकी फसल रखाने के लिए किसानों को बहुधा करना पड़ता है। ज्वार, बाजरा, मक्का जैसे खुले दाने की फसलों को अक्सर तोते, कौए खराब करने लगते हैं, तब यह गोफन घुमाकर कंकड़ फेंकने की प्रक्रिया रखवाली के काम आती है। यह घुमाव से उत्पन्न हुई शक्ति ही है जो कंकड़ को गोली जैसी गति के साथ दूर तक फेंकती है। वह कंकड़ इतनी तेजी पर होता है कि कोई पक्षी उसका निशाना बन जाने पर ढेर होकर ही रहता है।

देहाती मेलों में हवाई जहाज उड़ने अथवा घोड़े दौड़ाने का मजा देने वाले झूले आते हैं। बच्चे उन पर बैठकर मजा लेते हैं। यह झूले अक्सर इन्जन या मोटर से चलते हैं। घुमाव पकड़ते ही नीचे लटकने वाले घोड़े या जहाज पंख फैलाने लगते हैं। खड़े होने पर झूले का घेरा ३० फुट था तो तेजी से घूमने पर वह चाल के अनुपात से ७०-८० फुट तक चला जाता है। फैलाव तो होता ही है और साथ ही बैठने की सीटें तिरछी हो जाने पर भी बच्चे गिरते नहीं। यहाँ तक कि तिरछेपन के कारण गिरने का डर भी उन्हें नहीं लगता और अनुभव करते हैं कि वे सीधे सड़क पर चल रहे हैं।

सरकसों में एक लकड़ी के घेरे पर मोटरसाइकिल घुमाने का खेल अक्सर देखा जाता है, इसे मौत का कुँआ कहते हैं। दर्शक चकित रह जाते हैं कि साइकिल सवार बिल्कुल तिरछा घूम रहा है फिर भी गिरता नहीं।

लोटे में पानी भरा जाय, उसकी गरदन में रस्सी बाँधकर घुमाया जाय तो पानी उस लोटे में ही भरा रहेगा, गिरेगा नहीं।

घुमाव की शक्ति के यह आश्चर्यचकित करने वाले परिणाम साधारणतया देखने में आते रहते हैं। जप के माध्यम से गतिशील शब्द शक्ति का प्रतिफल भी वैसा ही होता है। झूले पर बैठे बच्चों को जिस तरह अधिक बड़े दायरे में तेजी से घूमने का और गिरने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की आशंका होने पर भी न गिरने का आनन्द मिलता है, उसी प्रकार अन्तःचेतना की सीमा परिधि छोटी सीमा से बढ़कर कहीं अधिक व्यापक क्षेत्र तक अपना विस्तार देखती है और दुर्भावनाओं एवं दुष्प्रवृत्तियों के कारण अधःपतन की जो आशंका रहती है, उसके बचाव की सहज सम्भावना बन जाती है। गोफन द्वारा फेंके गये कंकड़ की तरह साधक अभीष्ट लक्ष्य की ओर द्रुतगति से दौड़ता है और यदि फेंकने वाले के हाथ सधे हुए हैं तो वह ठीक निशाने पर भी जा लगता है। घुमाव की स्थिति में रहने पर तिरछा हो जाने पर भी लोटे का पानी नहीं फैलता। उसी प्रकार अपने भीतर भरे जीवन तत्व के, संसार के अवांछनीय आकर्षणों में गिर पड़ने का संकट घट जाता है। लोटा धीमे घुमाया गया हो तो बात दूसरी है, पर तेजी का घुमाव पानी को नहीं ही गिरने देता। जप के साथ जुड़ा विधान और भावना-स्तर यदि सही हो तो आन्तरिक दुष्प्रवृत्तियों से आये दिन जूझने और कदम-कदम पर असफल होने की कठिनाई दूर हो जाती है।

मौत के कुँए में मोटरसाइकिल घुमाने वाला सवार तिरछेपन और दौड़ने के लिए स्थान कम होने के कारण संकट उत्पन्न होने की आशंका से बचा रहता है। जप साधना का साधक भी प्रगति के मार्ग में उत्पन्न होते रहने वाले अनेक अवरोधों पर विजय प्राप्त करता है और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आगे बढ़ता चला जाता है।

औजारों से जो प्रयोजन सिद्ध होते हैं उनमें मात्र उन यन्त्रों, मशीनों, पुर्जों, उपकरणों का ही महत्व नहीं होता, उन्हें चलाने वाली शक्ति की भी अनिवार्य आवश्यकता रहती है। मशीनें स्वसंचालित या कितनी भी कीमती क्यों न हों, बिजली, भाप की—हाथ की या अन्य किसी प्रकार की शक्ति उन्हें चलाने के लिए चाहिए ही, इसका प्रबन्ध न हो सका तो बहुमूल्य मशीनों से सुसज्जित कारखाने में भी कुछ उत्पादन न हो सकेगा। जप आदि कर्मकाण्डों को औजार, उपकरण, मशीन आदि कहा जा सकता है। साधक का व्यक्तित्व उसका चरित्र, लक्ष्य, दृष्टिकोण एवं भावना स्तर मिलकर चेतनात्मक शक्ति के रूप में परिणत होता है और उसका बल पाकर शारीरिक हलचल मात्र दीखने वाले कर्मकाण्डों में दिव्य चेतना का संचार होता है। इसी समन्वय के आधार पर साधना को सिद्धि बनने का अवसर मिलता है।

जप का महत्व

जप-साधना प्रत्येक धर्म के आध्यात्मिक कर्मकाण्ड का मेरुदण्ड है। इससे सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। इसलिए भगवान कृष्ण ने इसे सब यज्ञों से श्रेष्ठ कहा है और अपनी विभूति माना है। "यज्ञानो जप यज्ञोऽस्मि" यज्ञों में जप-यज्ञ मैं हूँ। भगवान मनु (२/८७) ने अपने अनुभव से कहा है—"और कुछ करें या न करें, केवल जप से ही ब्राह्मण सिद्धि पाता है।" महाभारत (अश्व. ४४/८) में कहा है "यज्ञों में आहुति देकर सिद्धि प्राप्त करने वाला यज्ञ उत्तम है और यही वैदिक कर्मकाण्ड वालों का मत है। परन्तु भक्तिमार्ग में हविर्यज्ञ की अपेक्षा नामयज्ञ का विशेष महत्व है।"

इसीलिए शास्त्रकारों को यह घोषणा करनी पड़ी कि दर्श पौर्णमास, ज्योतिष्टोम, राजसूय आदि यज्ञ, वैश्वदेव, बलिकर्म, नित्यश्राद्ध, अतिथि भोज आदि सत्कर्म भगवन्नाम नाथ के अथवा गायत्री रूपी यज्ञ के १६ वें भाग के भी तुल्य नहीं माने जाते।

गोस्वामी श्री तुलसीदास ने भी जप की महिमा का गान किया है—

नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ,
जपहि नामु जन आरत भारी।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी॥

जप एक आध्यात्मिक व्यायाम है, एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसका हमारे मानसिक और बौद्धिक क्षेत्र पर सुनिश्चित प्रभाव पड़ता है। इससे अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। साधक का मनोबल दृढ़ होता है। विचारों में विवेकशीलता आती है, बुद्धि निर्मल व पवित्र बनती है, आत्मा में प्रकाश आता है। इसके अमिट प्रभाव को देखते हुए शास्त्रकारों ने इसकी अपार महिमा का गान किया है। लिंग पुराण ८/५/१२४, १२५ में लिखा है "जप करने वाले का कभी अनिष्ट नहीं होता। यक्ष, राक्षस, पिशाच, भीषण ग्रह उसके पास कभी फटक नहीं सकते। इससे जन्मजन्मांतरों के पाप नष्ट हो जाते हैं, सुखों व सौभाग्यों की वृद्धि हो जाती है और मुक्ति की प्राप्ति होती है।" गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा—"त्रायते महतो भयात्" जप, साधक का महान भय से त्राण करता है। मनुस्मृति ४/१४६ में कहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है—"जप करने वालों का कभी पतन नहीं होता।" भगवान मनु ने एक और स्थान पर कहा है कि जप से अन्त:करण पर-ब्रह्ममय हो जाता है।

जप की महिमा बताने वाले कुछ प्रमाण नीचे दिये जाते हैं—

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम्।
यज्ञानां जपयज्ञोस्मि स्थावराणां हिमालय:॥

"मैं महर्षियों में भृगु और वाणियों में ओंकार, यज्ञों में जपयज्ञ तथा स्थावरों में हिमालय हूँ।"

ये पाक यज्ञश्चंत्वारो विधियज्ञ: समन्वित:।
सर्वे ते जप यज्ञस्य कला नाहिन्ति पादृशीम॥

मनु. ५.-८६

"होम बलिकर्म, नित्यश्राद्ध, अतिथि-भोजन आदि पाक यज्ञ और विधि-यज्ञ दर्शपौर्णमासादि ये समस्त मिलकर भी जपयज्ञ की सोलहवीं कला के समान नहीं हैं।"

समस्त सप्ततन्तुभ्यो जपयज्ञ पर: स्मृत:।
हिंसान्ये प्रवर्तन्ते जपयज्ञे न हिंसया॥
यावन्त: कर्म यज्ञाश्च दानानि च तपांसि च।
ते सर्वे जप यज्ञश्च नाहेति षोडशीकलां।
जपने देवता नित्यं स्तूयमाना प्रसीदति॥
प्रसन्ना विपुलान् भोगान् दधान्मुक्तिन्च शाश्वतीम्।
यक्ष राक्षस वैताल: भूतप्रेतपिशाचक:।
जपाश्रयीं द्विजं दृष्टा, दूरंते यान्ति भीतित:॥
तस्माज्जप: सदा श्रेष्ठ: सर्वस्मत्पुरायसाधानात्।
इत्येषं स्वर्था ज्ञात्वा विप्रो जपपरो भवेत्॥

—भारद्वाज गायत्री व्याख्या

"समस्त यज्ञों से जप अधिक श्रेष्ठ है। अन्य यज्ञों में तो हिंसा होती है, जपयज्ञ हिंसा से नहीं होता है। जितने भी कर्म, यज्ञ दान, तप हैं वे समस्त जपयज्ञ की सोलहवीं कला के समान भी नहीं होते हैं। जप द्वारा स्तुति किये गये देवता प्रसन्न होकर बड़े-बड़े भोगों को तथा अक्षय शक्ति को प्रदान करते हैं। जप जप करने वाले द्विज को दूर से देखते ही राक्षस, वैताल, भूत, प्रेत, पिशाच आदि भय से भयभीत हो भाग जाते हैं। इस कारण समस्त पुण्य-साधनों में जप सर्वश्रेष्ठ है। इस प्रकार जानकर ब्राह्मण को सर्वथा जप-परायण होना चाहिए।

मास शतत्रयं विप्र: स्वान्कामानवाप्नुयात्।
एवं शतोत्तरं जप्त्वा सहस्त्रं सर्वमाप्नुयात॥

"इस प्रकार एक मास तक ३०० मन्त्र प्रतिदिन जप करने पर सब कार्यों में सिद्धि प्राप्त करता है। इसी प्रकार ग्यारह सौ नित्य जपने से सब कार्य ही सम्पन्न हो जाते हैं।"

रुद्धा प्राणमपानं च जपोन्मासं शतत्रयम्।
यदिच्छेतदवाप्नोति सहस्त्रात्परमाप्नुयात्॥

"प्राण अपान वायु को रोककर एक मास तक प्रतिदिन एक सहस्त्र मन्त्र जपने से इच्छित वस्तु की उपलब्धि होती है।"

एक पादो जपेदूर्ध्व बाहूरुद्धानिल वश:।
मास शतमवाप्नोति यदिच्छेदिति कौशिक:॥

"आकाश की ओर भुजायें उठाये हुए एक पैर के ऊपर खड़ा होकर साँस को यथाशक्ति अवरोध कर एक मास तक १०० मन्त्र प्रतिदिन जप करने से अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होती है।"

एवं शतत्रंय जप्त्वा सहस्त्रं स्र्ववमाप्नुयात्।
निमज्ज्याप्सु जपेन्मासं शतमिष्टमवाप्नुयात्॥

"जल के भीतर डुबकी लगाकर एक मास तक १३०० मन्त्र प्रतिदिन जप करने से अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति होती है।"

लाभ—

जप आरम्भ करते ही साधक के अन्त:करण में एक हलचल मचती है और उसकी विलक्षण शक्ति से आंतरिक क्षेत्र में अनेकों सूक्ष्म परिवर्तन होते हैं। बुरे विचार, भाव और स्वभाव घटने लगते हैं और सत्य, प्रेम, न्याय, ईमानदारी, सन्तोष, शांति, पवित्रता, नम्रता, संयम, सेवा और उदारता जैसे सद्गुण बढ़ने लगते हैं। मन:क्षेत्र प्रभावित होने से विवेक, दूरदर्शिता, तत्वज्ञान और ऋतम्भरा बुद्धि को प्राप्ति होती है, जिससे दु:खों का कटना और सुख:शान्ति का प्राप्त होना अनिवार्य परिणाम है। जप से मलिनताओं का पर्दा हटकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सद्गुणों का विकास होता है और महानता के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। दुर्गुण और दोष कम होने लगते हैं और साधक धीरे-धीरे निर्मल चरित्र की साक्षात् प्रतिमा बन जाता है। वह असत् से सत्, अन्धकार से प्रकाश, मृत्यु से अमरत्व, निराशा से आशा, सीमित से असीम, शिथिलता से दृढ़ता, नरक से स्वर्ग, तुच्छता से श्रेष्ठता और कुबुद्धि से सुबुद्धि की ओर कदम बढ़ाता है।

मन्त्र-जप से शक्ति उत्पन्न होती है। शक्ति ही सिद्धि का दूसरा नाम है। योगदर्शन ४।१ में स्पष्ट कहा है कि मन्त्र-जप से सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। अन्तःकरण की पवित्रता तो सर्वश्रेष्ठ सिद्धि है जो जप का स्वाभाविक लाभ है। योगदर्शन १/२८ में तो यहाँ तक कह दिया गया है कि जप साधक धीरे-धीरे इतना ऊँचा उठ जाता है कि वह इसी साधना से समाधि-अवस्था तक पहुँच जाता है। आगामी सूत्र २९ में महर्षि ने निर्देश दिया है कि साधना-काल में आए विघ्नों का इससे नाश होता है और अन्तरात्मा के स्वरूप का ज्ञान होता है। ईश्वर के साक्षात्कार का मार्ग खुल जाता है और साधक नित्य आनन्द में मस्त रहता है, उसे कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता, उसे किसी वस्तु का अभाव नहीं लगता, वह सम्राटों का सम्राट बनकर सर्वोच्च आसन पर अवस्थित हो जाता है। स्वामी रामतीर्थ इसी स्थिति पर पहुँचकर अपने को राम बादशाह कहा करते थे। हर साधक साधना-तपश्चर्या द्वारा इस साम्राज्य का सर्वोच्च अधिकारी बन सकता है, यदि वह शास्त्रों में वर्णित नियमों के अनुसार साधना करता रहे। पर यह अवस्था लम्बे समय के अभ्यास के बाद आती है, जैसा कि योग-दर्शनकार ने १।१४ में लिखा है—"वह अभ्यास बहुत काल तक लगातार विधि-व्यवस्था से ठीक-ठीक किया जाने पर दृढ़ अवस्था वाला होता है।"

जप से आध्यात्मिक लाभ ही प्राप्त हो, ऐसी बात नहीं है, भौतिक उपलब्धियाँ भी इसकी विशेषता है। कठिनाइयाँ और आपत्तियाँ तो हर एक के जीवन में आती हैं, मनोबल की वृद्धि से जपसाधक उनको हँसते-हँसते झेलता है, पहाड़ जैसे कष्ट उससे फूल समान लगते हैं। आत्मिक शक्ति के बढ़ने से उसका साहस भी बढ़ता है। आर्थिक अभाव, विवाह, सन्तान, मुकदमे, शत्रुता, सघर्ष आदि आपत्तियों का ऐसा सरल समाधान हो जाता है कि वह चमत्कार-सा ही दिखाई देता है। तपस्वी साधक अपने लिए ही नहीं, वरन् दूसरे को लाभ पहुँचाने की स्थिति में रहते हैं। यह किसी अनुग्रह से अनायास प्राप्त नहीं हो जाते वरन् जप द्वारा प्राप्त शक्ति के ही चमत्कार होते हैं ।

जप द्वारा आयु-वृद्धि के लाभों की वैज्ञानिक व्याख्या भी विद्वानों ने की है। २४ घण्टे में प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति २१६०० बार श्वांस लेता है अर्थात् १ मिनट में १५ बार श्वांस लेना-स्वाभाविक है। यदि किसी उपाय से इन श्वांसों की संख्या कम हो जाये तो आयु-वृद्धि सुनिश्चित है। प्राणायाम ऐसी योग की सशक्त क्रिया है, जिससे श्वांस-प्रश्वांस क्रिया का नियमन किया जाता है। जप से भी ऐसा होता है। जप के समय श्वांसों की संख्या स्वाभाविक रूप से कम हो जाती है। यह एक मिनट में १५ के स्थान पर ७-८ रह जाती है। यदि साधक एक घण्टा प्रतिदिन जाप करता है, तो लगभग ५०० श्वांसों की आयु-वृद्धि हो गई। इस तरह से यदि वह इस प्रक्रिया को निरन्तर जारी रखता है, तो जीवन में कई वर्षों की वृद्धि हो सकती है। यह किसी देव-दानव की कृपा से नहीं, अपने पुरुषार्थ का फल है।

अर्थ—

जप धातु का एक अर्थ है—'जप व्यक्तायां वाचि' स्पष्ट बोलना और दूसरा 'जप मानसे च' मन में उसे कहना। मन्त्र के बार-बार उच्चारण को जप कहते हैं। अग्नि-पुराण में इसकी व्याख्या इस प्रकार से की गई है—

जकारो जन्म विच्छेदः पकारः पाप नाशकः।
तस्याज्जप इति प्रोक्तो जन्म पाप विनाशकः॥

अर्थात् "ज" का अभिप्राय जन्म का विच्छेद और 'प' का अर्थ हृदय में भगवान का नाम लेने को भी जप कहते हैं। एक है पापों का विनाश जिससे जन्म, मरण और पापों का विनाश हो—वह जप कहलाता है।

एक विद्वान् ने इसका अभिप्राय भगवान को प्रत्यक्ष करना बताया है और कहा है—"इसकी अत्यावश्यक परिभाषा है—निर्बाध अन्तःकरण प्रकाश।" यह सूक्ष्म करुणाद्र अन्तःकरण की विशुद्ध दीप्ति है इस निर्णायात्मक स्थिति में सारे बन्धन छिन्न हो जाते हैं।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्री रामकृष्ण परमहंस ने जप का अर्थ किया है—"एकान्त में बैठकर मन-ही-मन भगवान का नाम लेना।"

प्रकार—

जप विभिन्न प्रकार का होता है, उसका संक्षिप्त विवेचन यहाँ किया जाता है—

१. नित्य जप—जैसे स्थूल शरीर के लिए बाह्य पवित्रता, स्नान, व्यायाम, भोजन और नियमित मल-विसर्जन आवश्यक क्रियायें हैं, उसी तरह सूक्ष्म शरीर के लिए नियमित रूप से उसके अनुरूप पवित्रता के साधन, उसके पोषण और विकास के लिए आध्यात्मिक व्यायाम जप और मन पर चढ़े मल-विक्षेपों को दूर करने के लिए नित्य अभ्यास आवश्यक है ताकि पुराने संस्कारों का शमन होता रहे और नए आसुरी आक्रमणों के मुकाबिले की तैयारी होती रहे। अपने इष्टदेव का जो रुचिकर और गुरु प्रदत्त मन्त्र हो, उसका जाप नित्य ही करना चाहिए। रोग या यात्रा की अवस्था में इसकी नित्यता में बाधा न आना चाहिये। संख्या और विधि-विधान में कुछ शिथिलता भले ही आ जाए परन्तु इसकी नियमितता में कोई अन्तर नहीं आनी चाहिए। यह नित्य जप कहलाता है। नियमित रूप से करने के कारण इससे शीघ्र ही सूक्ष्म शक्ति का विकास होता है।

२. नैमित्तिक जप—कृतज्ञता की भावना का विकास करना हमारी संस्कृति की महान विशेषता है। हम मानते हैं कि आत्मा अजर-अमर है। इसका नाश नहीं होता, केवल शरीर में परिवर्तन हो जाता है। अतः पितृ-ऋण से उऋण होने के लिए हम पितृ-श्राद्ध आदि कर्म करते हैं, जिससे पितर जहाँ भी हों, उनके सूक्ष्म शरीर को बल मिलता है और प्रसन्नता हो जाती है। आशीर्वाद देते हैं। वे देव पितरों के सम्बन्ध में जो जप किया जाता है, उसे नैमित्तक जप की संज्ञा दी जाती है। यह पितृपक्ष में तो किया ही जाता है। इसके अतिरिक्त पर्व तिथियों में अथवा अमावस्या, पूर्णिमा, एकादशी, शिवरात्रि, रामनवमी, नवरात्रि, गणेश चतुर्थी, कृष्णाष्टमी व ग्रहणादि पर्वों पर भी किया जाता है। इस जप से पितरों की सद्गति होती है।

३. काम्य-जप—जप-साधना विभिन्न प्रकार के प्रयोजनों से की जाती है। साधक का मत सकाम और निष्काम—दोनों प्रकार का हो सकता है। मन के स्तर के अनुकूल ही साधना चलती है। जिस तरह आरम्भिक साधक के लिए मूर्ति-पूजा और अन्य बाह्य उपकरणों की आवश्यकता रहती है क्योंकि उसके लिए ईश्वर के निराकार रूप की कल्पना करना सहज नहीं है, उसी तरह पशु-भाव के साधक को ईश्वराधन की ओर आकर्षित करने के लिए पहले भौतिक सिद्धियों की उपलब्धि में सहयोग दिया जाता है, जिससे उसके विश्वास में दृढ़ता हो और आत्म-कल्याण की साधना की अगली सीढ़ी पर चढ़ने के लिए तैयार हो। किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिए जो सकाम साधना की जाती है, वह काम्य-जप कहलाता है। इससे देव-शक्तियों को आकर्षित किया जाता है, जो अभीष्ट सिद्धि में सहायक होती हैं।

४. निषिद्ध-जप—साधक किसी भी क्षेत्र में साधनारत हो, उसका कुछ भी उद्देश्य हो उसके विधि-विधान का महत्व होता है यदि उसकी उपेक्षा की जाती है, तो पूर्ण सफलता में सन्देह ही रहता है। आध्यात्मिक साधना में तो इसका विशेष ध्यान रखा जाता है। पवित्रता, संयम, ब्रह्मचर्य, मिताहार, यम-नियमों का पालन, मनोनिग्रह जप-साधना में आवश्यक बताए गए हैं। यदि किसी भी साधना के नियमों का पालन पूर्ण रीति से नहीं किया जाता है, तो देव-कृपा संदिग्ध रहती है। अनाधिकारी गुरु से दीक्षा लेकर अशुद्ध उच्चारण के साथ अपवित्र अवस्था में और निकृष्ट स्थान पर यदि अविधिपूर्वक जप किया जाए तो वह निषिद्ध जप कहलाता है, जिसमें देवता और मन्त्र में भी अनुकूलता न हो और श्रद्धा विश्वास का अभाव हो, ऐसी साधना से कोई लाभ नहीं होता। केवल निराशा ही साथ लगती है।

५. प्रायश्चित जप—मानव-शरीर धारण करने से पूर्व हमें १४ लाख योनियों से होकर आना पड़ता है, जिसमें विभिन्न प्रकार की पशु-योनियाँ होती हैं। उनके संस्कार हमारे मानस-पटल कर अंकित रहते हैं। छोटा-सा उत्तेजक कारण मिल जाने पर हमसे बड़े-से-बड़े दोष, अपराध अथवा पाप हो जाते हैं, जिनके लिए बाद को मन में पश्चाताप भी होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दोष और त्रुटि मानव स्वभाव का एक अंग है। पिछले संस्कार और सांसारिक परिस्थितियाँ इसका कारण बन जाती हैं। इन दोषों के परिष्कार के लिए आवश्यक उपाय अपनाना बुद्धिमानी है, क्योंकि हर कर्म की प्रतिक्रिया होती है, जो योग और प्रारब्ध के रूप में हमारे सामने आती है। संचित प्रारब्ध कर्मों से ही हमारा जीवन दुःखमय प्रतीत होता रहे तो इन भौतिक दुःखों में भी कमी की जा सकती है। पिछले प्रारब्ध-कर्मों को योग अथवा अन्य साधनाओं द्वारा कम किया जाए और आगे सावधानी बरती जाए, यही ऋषियों का आदेश है। आचार्यों ने संचित व नित्य दोषों के प्रभाव को दूर करने के लिए अनेकों प्रकार के उपायों का दिग्दर्शन किया है, उनमें से एक प्रायश्चित जप है। इसका स्पष्ट अर्थ है—अपने दोष और अपराध को स्वीकार करना। पाप की गाँठ उसके स्वीकार करने से ही खुलती है। इसे स्वीकार न करने से वह और दृढ़ होती है। अतः जाने व अनजाने पापों के परिमार्जन के लिए जो जाप किया जाता है। उसका प्रायश्चित किया जाता है।

६. अचल जप—अभीष्ट सिद्धि के लिए कुछ विशिष्ट साधना भी आवश्यक होती है। नियम, संयम और संकल्प भी इसके आवश्यक अंग हैं। बिना संकल्प के कोई भी काम निश्चित समय में पूर्ण नहीं हो पाता। कठिन कार्यों के लिए तो संकल्प अनिवार्य होता है। जपसाधना में समय और संख्या की विशेषता रहती है। जब साधक यह निश्चय करता है कि नित्यप्रति वह इतना समय लगाकर इतना जप करके ही आसन से उठेगा-वह अचल जप कहलाता है। इससे साधक की मनोभूमि में दृढ़ता आती है और किसी भी बड़ी से बड़ी साधना के लिए साहस बटोर सकता है।

७. चल जप—अन्य जप तो विधिपूर्वक आसन पर बैठकर किए जाते हैं, परन्तु चल जप किसी भी परिस्थिति में किया जा सकता है। चलते-फिरते, यात्रा में कहीं भी यह हो सकता है। इसके लिए किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है। खाली मन को शैतान का घर कहा गया है, तो उसमें विभिन्न प्रकार के अनावश्यक विचार चक्कर लगाते रहते हैं। कमजोर मन पर आसुरी विचार अपना नियन्त्रण जमा लेते हैं, तो उसके कार्य भी उसी के अनुकूल होने लगते हैं। इससे बचने के लिए आवश्यक है कि मन में बुरे विचारों का आगमन न हो। यह तभी हो सकता है, जब मन खाली न हो और सदैव उसे व्यस्त रखा जाए। अपने इष्ट देवता के स्मरण के अतिरिक्त और कौन-सा श्रेष्ठ साधन हो सकता है ? मन्त्र-जप का साधन हर समय चलता रहे, तो आसुरी वृत्तियों के पोषण विकास का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि मन की पवित्रता की बनाए रखने के लिए निरन्तर साधन चलता रहता है। इस साधना में प्रदर्शन घातक सिद्ध होता है। प्रदर्शन के बिना यह साधना चलती रहे, तो इसमें अपूर्व सफलता मिलती है।

८. वाचिक जप—भगवान मनु ने इस जप की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है कि यह विधि-यज्ञ से दस गुना श्रेष्ठ है। जिस मन्त्र-उच्चारण को अन्य व्यक्ति भी सुन सकें, उसे वाचिक-जप कहते हैं। आरम्भ में साधक के लिए यही ठीक रहता है क्योंकि अन्य जप अभ्यास साध्य हैं। यह जप निम्न कोटि का जाना जाता है। फिर भी शब्द-विज्ञान की महत्ता स्वीकार करते हुए इसकी उपयोगिता को स्वीकार करना ही होगा। योगियों का कहना है कि इसमें वाक् सिद्धि होती है और षट् चक्रों में विद्यमान वर्णबीज शक्तियाँ जाग्रत होती हैं।

९. उपांशु जप—मनुस्मृति २।८५ के अनुसार उपांशु-जप उसे कहते हैं कि मन्त्र का उच्चारण होता रहे, होठ हिलते रहें परन्तु पास बैठा व्यक्ति भी उसे सुन न सके, जापक स्वयं ही उसे सुने। भगवान मनु ने इसे विधि-यज्ञ की अपेक्षा सौ गुना श्रेष्ठ बताया है। इस जप के प्रभाव से स्थूल में सूक्ष्म शरीर में प्रवेश होता है और बाह्य वृत्तियाँ अन्तर्मुख होने लगती हैं, एकाग्रता बढ़ने लगती हैं, एक अद्भुत मस्ती प्रतीत होती है, जो अनुभव की ही वस्तु है।

१०. भ्रमर-जप—भ्रमर के गुन्जारव की भाँति गुन-गुनाना इस जप की विशेषता है। इसमें होठ और जिह्वा नहीं हिलानी पड़ती। जिस तरह वंशी बजाई जाती है, उसी तरह प्राणवायु के सहयोग से मन्त्रावृत्ति की जाती है। योग-विज्ञान का मत है कि जो साधक मनोलय के लिए नादानुसंधान की साधना करते हैं, यदि भ्रमर जप में वह सफलता प्राप्त कर लें, तो उनकी अनाहत नाद की साधना सरल हो जायगी। इस जप से यौगिक तन्द्रा की वृद्धि होती है और षट्चक्रों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धीरे-धीरे जागरण होने लगता है, प्रकाश की अनुभूति होती है, आन्तरिक तेज की वृद्धि होती है।

११. मानसिक-जप—मानसिक जप में होठ और जिह्वा कुछ भी नहीं हिलते। मन्त्र के पद और अक्षरों के अर्थ पर मन में विचार किया जाता है। इसकी महत्ता मनुस्मृति २।८६, विष्णुपुराण ५६।९, वृहद् पाराशर ४।५७ में वर्णित की गई है। उसके अनुसार विधि-यज्ञ की अपेक्षा मानसिक जप सहस्र गुना श्रेष्ठ स्वीकार किया गया है।

मानसिक जप की उपयोगिता पर पं. दीनानाथ शास्त्री लिखते हैं "स्पष्ट बोलने से वाणी स्थूलता में रहती है और उसका प्रभाव भी सीमित स्थल में रहता है। पर मन के द्वारा मन्त्र के उच्चारण से वह वाक् सूक्ष्म हो जाती है। पारा, पश्यन्ती, मध्यमा—यह तीन वाक् भी सूक्ष्म होती है। उनके द्वारा नाभि प्रदेश आदि में प्रयत्न होता है, उससे विद्युत प्रकट होती, उसका प्रभाव अपेक्षित स्थल है। सूक्ष्म की शाक्ति स्थूल की अपेक्षा अधिक होती है। पर स्थूल-वाक् की अपेक्षा अधिक पड़ता मन्त्र में 'मत्रि गुप्त भाषणे धातु है, मन्त्र का मन्त्रत्व गुप्त इसी भाषण मानस जपने से होता है। उसका प्रभाव भी बहुत पड़ता है। मानस जप का प्रभाव सारे आकाश में व्याप्त हो जाता है, अपेक्षित स्थल पर तो पड़ता ही है।"

१२. अखण्ड-जप—इसका अभिप्राय इसके नाम से ही स्पष्ट है। शरीर को धारण करने के लिए जो आवश्यक कृत्य करने होते हैं, उतना समय इनमें तथा शेष साधना में लगाकर यह अनुभवजन्य है कि हर जप करना सम्भव नहीं है। थकावट भी होती है और मन भी उचटता है। परिवर्तन से मन लगता है, इसलिए गुरुजनों ने यह आदेश दिया है कि जब जप से मन उचट जाए, तो ध्यान करना चाहिए। ध्यान की भी एक सीमा होती है। जब ध्यान से मन उचटने लगे, तो आत्मचिंतन करना चाहिए, आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए। इस तरह से मन को हर समय लगाए ही रहना चाहिए, उसे एक क्षण के लिए भी स्वतन्त्र न छोड़ना अखण्डता की परिभाषा में आता है। शास्त्र का भी यही आदेश है—

जपाच्छान्तः पुनर्ध्यायेद् ध्यानाच्छान्तः पुनर्जपेत्।
जपध्यानपरिश्रान्त आत्मानं च विचारयेत्।

"जब करते-करते जब थके तो ध्यान करना चाहिए, ध्यान से थकें, तो पुनः जप करें। इन दोनों से जब थकें तो आत्म-तत्त्व का चिंतन करें।"

१२. वर्ष की इस अखण्ड साधना को तप की संज्ञा दी गई है। इससे महासिद्धि की उपलब्धि होती है।

१३. अजपा जप—यह जप माला के बिना ही होता है। श्वासोच्छ्वास की क्रिया हमारे शरीर में बराबर स्वाभाविक जप . से होती रहती है, जो एक अहोरात्र में २१६०० की संख्या में होती है। जो श्वांस बाहर निकलता है, उसकी ध्वनि 'हम्' की तरह होती है और जो अन्दर आता है उसकी ध्वनि 'सः' की तरह होती है। इस तरह से 'हंस' मन्त्र का जप हमारे शरीर में अपने आप होता रहता है। इसे अजपा गायत्री भी कहते हैं। अतः श्वांसोच्छ्वास के साथ मन्त्रावृत्ति अजपा जप कहलाती है। योग की भाषा में कहा जाए, तो 'सः' ध्वनि का सम्बन्ध प्राण से और 'हं' ध्वनि का अपान से सम्बन्ध है। प्राण-अपान की क्रिया बराबर चलती रहती है। यही अजपा विद्या कहलाती है। इस जप की यही विशेषता है कि यह अपने आप होता रहता है, इसके लिए कुछ करना नहीं पड़ता। केवल दृष्टा रूप में इसकी स्वाभाविक क्रिया को देखना होता है। इस जप को अजपा-गायत्री व हंस विद्या के अतिरिक्त आत्म-मन्त्र और प्राण-यज्ञ भी कहा जाता है। गीता के चौथे अध्याय में कहा गया है—"प्राणानि प्राणेषु जुह्वति।" यही प्राणयज्ञ है। इस प्राणयज्ञ को श्रीधर स्वामी ने अपनी टीका में अजपा साधन बताया है। नाथ सम्प्रदाय में तो यह विशेष रूप से प्रचलित है। नाथ साहित्य में इसकी महिमा का वर्णन आता है। बौद्ध मत में जो साधना 'आना-पानसति' के नाम से प्रसिद्ध थी, वह आचार्यों की दृष्टि में अजपा साधन का ही एक भाग थी।

हंसोपनिषद् (५) में हंस मन्त्र की स्वाभाविक क्रिया का वर्णन करते हुए कहा है—

सर्वेषु देवेषु व्याप्त वर्तते यथा ह्यग्निः काष्ठेषु तिलेषु तैलमिव। त दिवित्वा नमृत्युमेति।

"समस्त देहों में यह जीव हंस-हंस जपता हुआ व्याप्त रहता है, उसी प्रकार जैसे काठ में अग्नि रहती है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और तिलों में तेल रहता है। इसके जान लेने वाला मृत्यु को उल्लंघन कर जाता है।"

१४. प्रदक्षिणा जप—इसकी प्रक्रिया नाम से ही स्पष्ट है। बट, औदुम्बर व पीपल के वृक्ष को पवित्र माना जाता है। जप करते हुए परिक्रमा करनी पड़ती है। ज्योतिर्लिंग-मन्दिर की प्रदक्षिणा का भी विधान है। साथ में ब्रह्म-भावना का रहना आवश्यक होता है। इससे भी विशेष लाभ होता है।

जप की सहयोगी प्रक्रियायें

जप का लाभ तभी होता है जब वह एकाग्रतापूर्वक किया जाए, वृत्तियाँ अन्तर्मुखी हों, यदि जप-साधन में माला घुमाने के साथ-साथ विचार अन्यत्र घूमते रहते हैं, तो शक्ति का विशेष विकास नहीं हो पाता। एकाग्रता के लिए ध्यान किया जाता है, जो शक्ति का विशेष साधन है। ध्यान की सफलता में जप की सफलता निश्चित है। जप के साथ अर्थ-चिंतन को भी आवश्यक बताया गया है। इष्टदेव के मन्त्र का जब उच्चारण किया जाता है, तो मन-मस्तिष्क में इष्टदेव के गुण-रूप का एक सजीव चित्र बन जाता है, जो कालांतर में संस्कार का रूप ग्रहण कर लेता है और पूर्व संस्कार का शमन करता है। पूर्व संस्कारों में जो काम, क्रोध, मद, लोभ, द्वेष, ईर्षादि की भावनाएँ भरी पड़ी हैं, उनको धीरे-धीरे समाप्त करना जप-साधन की विशेषता है। विचारों में परिवर्तन होता है, मस्तिष्क-कोष प्रभावित होते हैं, उन पर चिह्न बनते हैं, संस्कार जमते हैं और स्थायित्व आता है।

मन ऐसा ही भूत है जो जब भी निरर्थक बैठता है, तभी कुछ-न-कुछ खुराफात करता है। इसलिए यह जब भी काम से छुट्टी पाए, तभी इसे जप पर लगा देना चाहिए। जप केवल समय काटने के लिए ही नहीं है, वरन् वह एक बड़ा ही उत्पादक एवं निर्माणात्मक मनोवैज्ञानिक श्रम है। निरन्तर पुनरावृत्ति करते रहने से मन में उस प्रकार का अभ्यास एवं संस्कार बन जाता है जिससे वह स्वभावतः उसी ओर चलने लगता है।

पत्थर पर बार-बार रस्सी की रगड़ लग जाने से गढ़ा पड़ जाता है। पिंजड़े में रहने वाला कबूतर बाहर निकाल देने पर भी उसी में वापस आ जाता है। गाय को जंगल में छोड़ दिया जाए तो वह भी रात को स्वयमेव लौट आती है। निरन्तर अभ्यास से मन भी ऐसा अभ्यस्त हो जाता है कि अपने दीर्घकाल तक किए गए कार्यक्रम में अनायास की प्रवृत्त हो जाता है।

अनेक निरर्थक कल्पना-प्रपञ्चों में उछलते-कूदते फिरने की अपेक्षा आध्यात्मिक भावना की एक सीमित परिधि में भ्रमता करने के लिए जप का अभ्यास करने से मन एक ही दिशा में प्रवृत्त रहने लगता है। आत्मिक क्षेत्र में मन का लगा रहना, उस दिशा में एक दिन पूर्ण सफलता प्राप्त होने का लक्षण है। मन रूपी भूत बड़ा बलवान है। यह सांसारिक कार्यों को भी बड़ी सफलतापूर्वक करता है और जब आत्मिक क्षेत्र में जुट जाता है, जो भगवान के सिंहासन को हिला देने में भी नहीं चूकता। मन की उत्पादक, रचनात्मक एवं प्रेरक शक्ति इतनी विलक्षण है कि उसके लिए संसार की कोई वस्तु असम्भव नहीं। भगवान को प्राप्त करना भी उसके लिए बिल्कुल सरल है। कठिनाई केवल एक नियत क्षेत्र में जमने की है, सो जप के व्यवस्थित विधान से वह भी दूर हो जाती है।

हमारा मन कैसा ही उच्छृंखल क्यों न हो, पर जब उसको बार-बार किसी भावना पर केन्द्रित किया जाता रहेगा, तो कोई कारण नहीं कि कालांतर में उसी प्रकार का न बनने लगे। लगातार प्रयत्न करने से सरकस में खेल दिखाने वाले बन्दर, सिंह, बाघ, रीछ जैसे उद्दण्ड जानवर मालिक की मरजी पर काम करने लगते हैं, उसके इशारे पर नाचते हैं तो कोई कारण नहीं कि चञ्चल और कुमार्गगामी मन को वश में करके इच्छावर्ती न बनाया जा सके। पहलवान लोग नित्यप्रति अपनी नियत मर्यादा में दण्ड-बैठक आदि करते हैं, उनकी इस क्रिया-पद्धति से उनका शरीर दिनों-दिन हृष्ट-पुष्ट होता जाता है और एक दिन वे अच्छे बलवान बन जाते हैं। नित्य का जप एक आध्यात्मिक व्यायाम है, जिससे आध्यात्मिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ और सूक्ष्म शरीर को बलवान बनाने में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है।

एक-एक बूँद जमा करने से घड़ा भर जाता है। चींटी एक-एक दाना ले जाकर अपने बिलों में मनों अनाज जमा कर लेती है। एक-एक अक्षर पढ़ने से, थोड़े दिनों में विद्वान बना जा सकता है। एक-एक कदम चलने से लम्बी मञ्जिलें पार हो जाती हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक-एक पैसा जोड़ने से खजाने जमा हो जाते हैं। एक-एक तिनका मिलने से मजबूत रस्सी बन जाती है। जप में भी वही होता है। माला का एक-एक दाना फेरने से बहुत जमा हो जाता है—और इतना जमा हो जाते है कि उससे आत्मा का कल्याण हो जाता है इसलिए योग-ग्रंथों में जप को यज्ञ बताया गया है। उसकी बड़ी महिमा गाई गई है और आत्म-मार्ग पर चलने की इच्छा करने वाले पथिकों के लिए जप करने का कर्तव्य आवश्यक रूप से निर्धारित किया गया हैं।

शब्द-साधना का महत्व

जप साधना-विज्ञान में शब्द का विशेष महत्व रहता है। सृष्टि का मूल और तत्व भी इसे ही माना गया है। शास्त्र का वचन है—

वागेव विश्वा भुवनानि जज्ञे वाच इत्सर्वममृतं यच्च मर्त्यम्।

शब्देष्वेवापिता शक्तिर्रिस्वास्यास्य निबन्धनो।

जब शब्द को सृष्टि का मूल माना गया है, तो इसके बाहर जाने के लिए इसी को आधार बनाना पड़ेगा। यह कारण है कि जप-योग से शब्दातीत परब्रह्म पद में स्थित होने की घोषणा की गई है। इस विज्ञान पर प्रकाश डालते हुए योगियों ने कहा है कि योगशास्त्र के अनुसार चार प्रकार की वाणियाँ होती हैं—बैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती और परा। स्थूल शब्द को बैखरी कहते हैं। इस साधक की वृत्ति बहिर्मुखी ही रहती है। वृत्तियों को अन्तर्मुखी करने के लिए सूक्ष्म और सूक्ष्मतर वाणियों का सहारा लेना आवश्यक माना गया है। बैखरी से मध्यमा, पश्यन्ती और परा को और बढ़ाना ही साधना की सफलता है। अन्तिम सीढ़ी पर चढ़ने के लिए तो इसके भी आगे जाना होता है। बैखरी से मध्यम भूमि पर अवस्थित होने के लिए जप एक सरल मार्ग है। दो किनारों के बीच के स्थान को मध्य कहते हैं। बैखरी और पश्यन्ती के मध्य स्थिति को ग्रहण करने वाली को मध्यमा कहा गया है। यही इसका कार्यक्षेत्र है। पशु-भाव में से दिव्य-भाव में जाने के लिए इस मध्यमा का अवलम्बन अपेक्षित रहता है। योगियों का मत है कि सहस्त्रकमल के दल से हृदय तक इसका विस्तार-क्षेत्र है। यह माया के जाल काटने की क्षमता रखती है। अन्तिम अवस्था तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील साधक पश्यन्ती और परा की और बढ़ता है और फिर इनका भी अतिक्रम करता हुआ आगे बढ़ा है, क्योंकि परब्रह्म को शब्दातीत कहा गया है। इसलिए शास्त्रकारों ने घोषणा की है कि शब्द में निष्णांत होने पर परब्रह्म की उपलब्धि होती है।

शब्द ब्रह्माणि निष्णांतः पर ब्रह्माधिगच्छति।

इन सभी उपलब्धियों के लिए जप-साधन को श्रेष्ठ स्वीकार किया गया है क्योंकि शब्द ही उसकी क्रिया का माध्यम है।

वैज्ञानिक प्रक्रिया

शास्त्रकारों ने जिन लाभों का वर्णन किया है, उसका विशेष वैज्ञानिक कारण है। स्थूल शरीर की तरह ही सूक्ष्म शरीर में भी नाड़ीतन्तुओं का जाल बिछा रहता है और सभी एक-दूसरे से सम्बन्धित रहते हैं और उनके सुसञ्चालन के लिए अनेकों केन्द्रों की व्यवस्था की गई है, जहाँ से सम्बन्धित क्षेत्रों का नियन्त्रण होता है। जब जप आरम्भ होता है, तो सूक्ष्म शरीर में एक अद्‌भुत प्रक्रिया का श्रीगणेश होता है। जिस तरह कि वीणा से एक प्रकार की स्वर-लहरी उत्पन्न होती है, उसी तरह की जप से भी सारे शरीर में एक झंकार उत्पन्न होती है, जिसका विशेष प्रभाव उन शक्ति-केन्द्रों पर पड़ता है जो सूक्ष्म शरीर की शक्तियों के प्रतिनिधि नियुक्त किये गये हैं। इस बार-बार के आघात-प्रतिघात से वह जाग्रत होते हैं और साधक अपने में अपार शक्ति की अनुभूति करता है। वह समझता है कि यह शक्तियाँ उसे दैव-कृपा से प्राप्त हुई हैं, परन्तु वास्तव में यह उस वैज्ञानिक प्रक्रिया का सुफल है, जो जप आरम्भ करते ही शुरू हो जाती है। शब्द की शक्ति को आधुनिक विज्ञान ने भी स्वीकार किया है और उससे लाभ उठाने की विभिन्न विधियाँ खोज निकाली हैं। भारतीय विज्ञान ने तो शब्द-शक्ति का प्रयोग आध्यात्मिक उत्थान के लिये किया था कि यहाँ का हर नागरिक इसका श्रद्धा और विश्वासपूर्वक अभ्यास करता था और अपना नैतिक उत्थान करता हुआ देवता की श्रेणी में पहुँच जाता था, तभी तो भारत में ३३ करोड़ देवताओं की कल्पना की गई है। विधि-व्यवस्था और मन्त्र आज भी हमें उपलब्ध हैं, उन पर चलकर हम भी पशुत्व से ऊँचे उठकर सच्चे अर्थों में मानव बन सकते हैं और देवत्व की भूमिका में प्रवेश कर सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नियम

जप के जितने लाभ ऊपर वर्णित किये गये हैं, वह तभी प्राप्त होने सम्भव हैं, जब साधना नियमपूर्वक की जाए। अतः शास्त्रों में जप के कुछ नियम बताए गए हैं, जिनका दृढ़तापूर्वक पालन करना आवश्यक है।

शरीर की शुद्धि करके धुले और स्वच्छ वस्त्रों को पहनकर साधना पर बैठना चाहिये। पालती मारकर सीधे ढंग से बैठना चाहिये। कष्टसाध्य आसनों से चित्त में अस्थिरता रहती है। प्रातः पूर्व की ओर, मध्याह्न को उत्तर की ओर, शाम को पश्चिम की ओर मुँह करके बैठना चाहिए। मल-मूत्र त्याग या किसी अनिवार्य कार्य के लिए बीच में उठना पड़े तो हाथ-पैर धोकर पुनः बैठना चाहिए। शिखा खोलकर, पगड़ी या कुर्ता पहनकर, पैर फैलाकर, नंगे होकर, व्यग्र, चित्त से, क्रोध में और जूतादि पहनकर जप करना निषिद्ध है। साधक का आहार-विहार सात्विक होना चाहिए। तन्त्र-सार के अनुसार मन की शुद्धि, पवित्रता, संयम, शौच, वैराग्य, मन्त्रार्थ-चिंतन, अव्यग्रता-यह जप-सिद्धि की प्रधान सम्पत्तियाँ हैं। कुलार्णव तन्त्र के अनुसार अपवित्रता, राग-रोष, नग्नशिरता, बहिरलाप, अनवधानता, अन्यमनस्कता साधना में बाधक माने गये हैं। साधक को पराया अन्न नहीं खाना चाहिए। वह जिसका अन्न खाता है, उसी को फल मिलता है।

जप न धीरे धीरे हो, और न ही अधिक तीव्र—स्वाभाविक गति से चलना चाहिये। सिद्धि के लिये मन, शिव, शक्ति और आयु का संयम आवश्यक है। यह न होने पर शास्त्रों के अनुसार कल्पपर्यन्त जप करने पर भी सिद्धि प्राप्त करना सम्भव नहीं है। साधनास्थल को पूर्ण रूप से सात्विक रखना चाहिए। वहाँ पर तामसिक व राजसिक वृत्ति वाले व्यक्तियों को न आने देना चाहिए। महापुरुषों और देवताओं के चित्रों और प्रेरणाप्रद वाक्यों से वह स्थान सुसज्जित होना चाहिये। साधक को अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना आवश्यक है। इससे शीघ्र लाभ होता है। उत्तम विधि को एक साधक ने इस तरह बताया है—

नाम ही जप शून्य मन धरै, पाँचों इन्द्रिय वश में करै।
ब्रह्मा अग्नि में होमै काया, ता कें विष्णु पखारैं पाँया॥

जप के समय मन्त्र के अर्थ का चिन्तन करना चाहियें। मन्त्रार्थ में जिन गुणों का वर्णन किया गया हो वह गुण हममें ओत-प्रोत हो रहे हैं, यह दृढ़ भावना करनी चाहिये। मन्त्र-जप से जो एकाग्रता और शक्ति उत्पन्न होती है, उससे उन गुणों को अपने अन्तःकरण में स्थापित करने से सहायता मिलती है और धीरे-धीरे साधक उस मन्त्र के साक्षातरूप होता जाता है, यही सिद्धि के लक्षण हैं। योग-दर्शन १। २८ में इस तथ्य का समर्थन करते हुए लिखा गया है कि मन्त्र का जप और अर्थ विचारने से समाधि-लाभ होता है। पूर्ण मनोयोग के साथ साधना करने वाले साधक इस स्थिति तक पहुँच ही जाते हैं।

जप के लिए उपयुक्त स्थान का होना आवश्यक है। लिंगपुराण ८५।१०६ के अनुसार घर में किए जप का फल साधारण होता है। नदी तट पर किए जप का फल लाख गुना और भगवान के श्री विग्रह के सामने किये जप का फल अनन्त होता है। लिंग-पुराण ८५।१०७-१०८ के अनुसार पवित्र आश्रमों, देवालयों, पर्वत-शिखर पर, देव-हृदय पर, समुद्र तट पर यह लाभ करोड़ गुना हो जाता है। ध्रुवतारा, सूर्य के अभिमुख होकर और गौ, अग्नि, दीपक और जल के सामने जप करने का भी फल श्रेष्ठ माना गया है। सुविधा के लिये घर का स्वच्छ और सात्विक स्थान लेना अभीष्ट है।

मन्त्र साधना और ताप शक्ति का सम्बन्ध

योगी अरविन्द ने कहा है ग्रह नक्षत्रों की संरचना से लेकर विज्ञान के अनेकानेक रहस्यों का उद्घाटन करके निस्सन्देह मनुष्य ने बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त की है। किन्तु यदि हमारे पास मनुष्य की आत्मा को समझ सकने वाला यन्त्र रहा होता तो प्रतीत होता कि उस महत्व के सामने पदार्थ विज्ञान की समस्त उपलब्धियाँ अत्यन्त ही नगण्य हैं।

मनुष्य की प्रकट और अप्रकट शक्तियों में से एक अति महत्वपूर्ण शक्ति है उसकी वाणी। वाणी के सहारे वह ज्ञानार्जन करता है, एक की जानकारी दूसरे को मिलती है और विविध-विधि सांसारिक क्रिया-कलाप चलते हैं। वाणी रहित मनुष्य-समाज की कैसा गई गुजरी स्थिति होती इसकी कल्पना मात्र से सिहरन उत्पन्न होती है। वाणी का भौतिक महत्व असन्दिग्ध है। दूसरों को मित्र और शत्रु बनाने का उल्लास और रोष उत्पन्न करने का जितना काम वाणी करती है, उतना कर सकने वाला संसार में और कोई आधार नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाणी का आध्यात्मिक आधार और भी अधिक महत्वपूर्ण है। मन्त्राराधना इसी प्रकार की रहस्यमयी प्रक्रिया है जिसके आधार पर मनुष्य की सर्वतोमुखी प्रगति और दूसरों की सहायता की पृष्ठभूमि बनती है। मन्त्रशक्ति के लाभ और प्रभाव से हम सभी परिचित हैं। यदि यह साधना ठीक प्रकार की जा सके तो उस रहस्यमयी शक्ति का प्रचुर परिमाण में उत्पादन किया जा सकता है जो मनुष्य के भौतिक और आत्मिक क्षेत्रों को आश्चर्यजनक सफलताओं से भर सकती है। मन्त्रशक्ति में चमत्कारों का प्रधान आधार है—शब्द । शब्द शक्ति का स्फोट। इसके साथ ही साधक की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्थिति की पृष्ठभूमि जुड़ी हुई है। इन सब के समन्वय से ही वह प्रभाव उत्पन्न होता है जिसे मन्त्र शक्ति का चमत्कार कहा जा सके।

शब्दोच्चारण में जिह्वा, ओष्ठ, दाँत, तालू, कण्ठ आदि मुख से सम्बन्धित कई अवयवों का संचालन होता है तब कहीं पूर्ण ध्वनि निकलती है। केवल जिह्वा का ही अवलम्बन हो तो मनुष्य भी पशु-पक्षियों की तरह थोड़ी सी ही ध्वनियों का उच्चारण कर सके। मन्त्रों का गठन शब्द विद्या के गूढ़ रहस्यों को ध्यान में रखकर किया गया है। उनके शब्दोच्चार से मुख अवयव ही गति नहीं करते वरन् उनकी हलचल सूक्ष्म शरीर के रहस्यमय केन्द्रों को भी प्रभावित करती है। षट् चक्र, तीन ग्रन्थियाँ, तीन नाड़ियाँ, दश प्राण, चौवन उपत्यिकायें आदि को सूक्ष्म शरीर के अति महत्वपूर्ण संस्थान कहना चाहिये। उनको सक्रिय एवं जागृत बनाने में मन्त्र के अक्षरों का प्रवाह महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता है।

टाइपराइटर यंत्र की कुन्जियों पर उँगली दबाते ही दूर रखे कागज पर तीलियाँ गिरनी आरम्भ हो जाती हैं और अक्षर छपने लगते हैं। हारमोनियम की कुन्जियों पर उँगली रखते ही रीड़ खुलती हैं और स्वर गूँजने लगते हैं। ठीक यही प्रक्रिया मन्त्रोच्चार में होती है। मुख में होने वाली हरकत सूक्ष्म शरीर के विभिन्नशक्ति संस्थाओं पर प्रहार करके उनमें विशिष्ट हलचल उत्पन्न करती है तदनुसार साधक की अन्तःसत्ता में जागरण एवं स्फुरण के ऐसे दौर आते हैं जिनके सहारे चमत्कारी दिव्य शक्तियाँ जागृत हो सकें और साधक व्यक्ति ऐसी विभूतियों से भर सकें जैसी कि सर्वसाधारण में नहीं पाई जातीं।

मोटे तौर से शब्द का प्रयोजन कर्णेन्द्रिय के माध्यम से कतिपय प्रकार की जानकारियाँ मस्तिष्क तक पहुँचाना भर समझा जाता है पर बात इतनी छोटी नहीं है। शब्द की शक्ति पर जितना गहरा चिन्तन किया जाय उतनी ही उसकी गरिमा और विलक्षणता स्पष्ट होती चली जाती है। बादलों की गरज से ऊँची इमारतें फट जाती हैं। आज की यांत्रिक सभ्यता जितना शोर उत्पन्न कर रही है उसके दुष्परिणामों से मानव जाति को पूरी न हो सकने वाली क्षति उठानी पड़ेगी। इस तथ्य से समस्त संसार चिन्तित है। अतिस्वन और जेट विमान आकाश में जितनी आवाज करते हैं उससे उत्पन्न होने वाली हानिकारक प्रतिक्रिया को सर्वत्र समझ रहा है और इन विशालकाय द्रुतगामी वायुयानों को कोलाहल रहित बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। यंत्र भी ऐसी कर्णातीत ध्वनियाँ उत्पन्न करते हैं जो आश्चर्यजनक और अप्रत्याशित परिणाम उत्पन्न कर सकें।

संगीत अब मनोरंजन मात्र नहीं रहा वरन् उसे एक महत्वपूर्ण शक्ति स्वीकार कर लिया गया है। संगीत की अमुक ध्वनि, लहरें मानसिक और शारीरिक रोगों के निवारण में चमत्कारी लाभ प्रस्तुत कर रहे हैं। संसार के सुविकसित अस्पतालों में संगीत ध्वनि प्रवाह का पूरा-पूरा लाभ रोगियों को दिया जा रहा है। पशुओं का दूध बढ़ाने में—पौधों को अधिक विकसित करने में संगीत का प्रयोग उत्साहपूर्वक किया जा रहा है। जापान में बच्चों में सहृदयता और अनुशासनप्रियता बढ़ाने के लिये आरम्भिक स्कूलों में ही संगीत का प्रशिक्षण किया जा रहा है। रणभेरी बजने का—सामूहिक लोक नृत्यों का कैसा उत्साहवर्धक प्रभाव उत्पन्न होता है यह सर्वविदित है। संगीत वस्तुतः ध्वनि प्रवाह एक एक विशेष क्रम मात्र है। मन्त्र को भी इसी आधार पर विनिर्मित समझना चाहिये। उनके अक्षरों के चयन का क्रम तथा उच्चारण का अनुशासन दोनों को मिलाकर एक प्रकार से विशिष्ट संगीत का ही प्रादुर्भाव होता है। उसके द्वारा साधक को अतिरिक्त विशेषताओं से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्पन्न बनने का अवसर मिलता है। इसका आत्मबल प्रचण्ड बनता है और अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति का पथ प्रशस्त होता है।

मन्त्रों की विशेषता शब्दों के एक विशेष क्रम से चयन गुंथन में है। वे ध्वनि विज्ञान के एक विशेष नियम क्रम के अनुरूप गढ़े होते हैं जिनका एक ही प्रवाह से देर तक उच्चारण करने से एक विशेष स्तर की ऊर्जा उत्पन्न होती है। शब्दों के एक ही क्रम प्रवाह को लागतार जारी रखना अपने आप में एक अद्‌भुत प्रयोग है। हाथों को एक ही गति से रगड़ने पर वे बात की बात में गरम हो जाते हैं। कुछ एक शब्दों को एक ही क्रम में एक ही गति से एक ही स्वर से उच्चारित किया जाय तो उसकी प्रतिक्रिया से न केवल उस व्यक्ति का शरीर और मन वरन् समीपवर्ती वातावरण भी उत्तेजित हो जायगा। व्यक्ति में मन्त्र की प्रतिक्रिया की समुचित मात्रा उत्पन्न होना आवेश कहा जाता है। इनकी अनुभूति शरीर या मन में किसी विशेष स्फूर्ति, उत्साह एवं विश्वास के रूप में होती है। किसी-किसी को मन्त्र देवता का साक्षात्कार होता है और सफलता का आशीर्वाद सुनाई पड़ता है। यह स्थूल कानों से स्थूल आँखों से नहीं होता वरन् पूर्णतया सूक्ष्म होता है। सूक्ष्म इन्द्रियाँ ही उसकी अनुभूति करती हैं फिर भी कई बार उसमें इतनी प्रखरता होती है कि उस घड़ी स्थूल जैसा ही दर्शन या श्रवण अनुभव में आता है। आवश्यक नहीं कि हर मन्त्र सिद्धि से हर किसी को श्रवण या दर्शन मिले, पर विश्वास और निष्ठा को परिपक्वता, उत्साह एवं मनोबल का अनुभव अवश्य होता है। सफलता व्यक्त करने वाली प्रसन्नता चेहरे पर और विजय उपलब्धि की चमक साधक की आँखों में चमकती हुई स्पष्ट देखी जा सकती है। इन सफलता सूचक अनुभूतियों को स्फोट कहा गया है।

मन्त्र की भाव भूमिका चुम्बकत्व उत्पन्न करती है और स्फोट उसे असंख्य गुना विस्तृत एवं सशक्त बनाता है। अणु का आरम्भिक विस्फोट सामान्य होता है उसके चारों ओर घिरा वातावरण ही गुणन शक्ति उत्पन्न करके उसे अति भयंकर बनाता है। यही प्रक्रिया मन्त्र में भी होती है। मन्त्र में सन्निहित भावना, कर्मकाण्ड के साथ जुड़ी श्रद्धा, तप साधना से उत्पन्न शब्द शक्ति का प्रचण्ड प्रवाह जैसी अनेकों रहस्यमयी मन्त्राराधन की विशेषतायें मन्त्र को जागृत करती हैं और निष्ठावान साधकों को सिद्ध मस्तिक के स्तर पर ले जाकर पहुँचा देती हैं।

यहाँ एक बात और ध्यान रखने योग्य है कि मन्त्राराधना में प्रयुक्त होने वाले हर उपकरण में—पदार्थ में अवयव में—दिव्य सत्ता का आह्वान करना पड़ता है और उसे सामान्य पदार्थ न रहने देकर देव आयुध के रूप में प्रतिष्ठापित करना पड़ता है। स्नान के जल में तीर्थों का, आत्मा का अवतरण कराने वाले मन्त्रों का उच्चारण जल में वरुण देव सहित अन्य देवों का आह्वान है। इस प्रकार श्रद्धासिक्त जल से स्नान करने पर साधक की निष्ठा में गहरा पुट लगता है। आसन, माला, पन्चपात्र, दीपक, चन्दन, पुष्प आदि उपकरणों के प्रयोग में मन्त्रोच्चारण एवं अमुक क्रम विधान अपनाने की जो परम्परा है उसे निरर्थक नहीं माना जाना चाहिए। यथाक्रम करने से वे सामान्य लगने वाली वस्तुयें उस विशेष चेतन स्तर की बनती हैं जिसकी कि मन्त्र प्रयोग में आवश्यकता है। इष्टदेव की प्रतिमा में प्राण-प्रतिष्ठा—षोडसोपचार पूजा जैसी व्यवस्थायें उसी दृष्टि से हैं कि गहन श्रद्धा का आरोपण उस पार्थिक प्रतीक को समर्थ सत्ता का प्रतिनिधि बनाकर प्रचण्ड प्रेरणा देने का प्रयोजन पूरा कर सके।

साधक को अपने अंग-प्रत्यंग में न्यास मन्त्रों द्वारा विविध देव शक्तियों की प्रतिष्ठापना करनी पड़ती है। पवित्रीकरण, आचमन प्राणायाम, न्यास का प्रयोजन सूक्ष्म स्थूल और कारण शरीरों को परिशुद्ध बनाता है। साधना विज्ञान का अभिमत है कि देव बनकर ही देवाराधना करनी चाहिए। शरीर और मन का परिमार्जन करने के लिए मन्त्र जप आरम्भ करने से पूर्व कई तरह के कर्मकाण्ड, विधि-विधान करने होते हैं इनमें से बहुत से अपने में देव भाव की स्थापना के लिये होते हैं। यह प्रयोग साधन में प्रयुक्त होने पर उपकरणों को सफलता में सहायक करने योग्य बनाते हैं।

ध्वनि की ऊर्जा विज्ञान-सम्मत है। यदि श्रव्य-ध्वनि औडिबल साउन्ड लागतार चालू रखी जाय तो उससे कुछ ही समय में पानी खौलने जितनी गर्मी पैदा हो जायगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन्त्र में भावनायें और विचारणायें जुड़ी रहती हैं और एक ही विचारधारा को लगातार मस्तिष्क में स्थान देते रहने से वह चिन्तन विचार प्रक्रिया पर सवार हो जाता है और एक चिरतन प्रवाह का रूप धारण करता है। यह मार्ग मस्तिष्कीय प्रशिक्षण एवं परिवर्तन की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी है। इससे मन को किसी विशेष भूमिका में रमण करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है, विकृतियों को सुधारा जा सकता है और अभिरुचि तथा प्रकृति में परिवर्तन लाया जा सकता है। यह अर्थ मन्त्र चिन्तन को स्थान देते हुय मन्त्रानुष्ठान का सामान्य लाभ हुआ।

शब्दशक्ति का स्फोट मन्त्रशक्ति की रहस्यमय प्रक्रिया है। अणु विस्फोट से उत्पन्न होने वाली भयावह शक्ति की जानकारी हम सभी को है। शब्द की एक शक्ति सत्ता है। उसके कम्पन भी चिरन्तन घटकों के सम्मिश्रण से बनते हैं। इन शब्द कम्पन घटकों का विस्फोट भी अणु विखण्डन की तरह ही हो सकता है। मन्त्र योग साधना के उपचारों के पीछे लगभग वैसी ही विधि-व्यवस्था रहती है। मन्त्रों की शब्द रचना का गठन तत्वदर्शी मनीषी तथा दिव्यदृष्टा मनीषियों ने इस प्रकार किया है कि उनका जपात्मक, होमात्मक तथा दूसरे तप साधनों एवं कर्मकाण्डों के सहारे अभीष्ट स्फोट किया जा सके। वर्तमान बोलचाल में विस्फोट शब्द जिस अर्थ में प्रयुक्त होता है लगभग उसी में संस्कृत में स्फोट का भी प्रयोग किया जाता है। मन्त्राराधन वस्तुत: शब्द शक्ति का विस्फोट ही है।

शब्द स्फोट से ऐसी ध्वनि तरंगें उत्पन्न होती हैं जिन्हें कानों की श्रवण शक्ति से बाहर की कहा जा सकता है। शब्द आकाश का विषय है। इसलिये मान्त्रिक का कार्यक्षेत्र आकाश तत्व रहता है। योगी वायु उपासक है। उसे प्राण शक्ति का संचय वायु के माध्यम से करना पड़ता है। इस दृष्टि से मान्त्रिक को योगी से भी वरिष्ठ कहा जा सकता है। सच्चा मान्त्रिक योगी से कम नहीं वरन् कुछ अधिक ही शक्तिशाली हो सकता है।

मन्त्राराधना में जहाँ शब्द शक्ति का विस्फोट होता है। विस्फोट में गुणन शक्ति है। मन्त्र में सर्वप्रथम देवस्थापन की सघन निष्ठा उत्पन्न की जाती है। यह भाव चुम्बकत्व है। श्रद्धा शक्ति के उद्भव का प्रथम चरण है। इस आरम्भिक उपार्जन का शक्ति गुणन करती चली जाती है और छोटा सा बीज विशाल वृक्ष बन जाता है। विचार का चुम्बकत्व सर्वविदित है। इष्टदेव की, मन्त्र अधिपति की शक्ति एवं विशेषताओं का स्तवन, पूजन के साथ स्मरण किया जाता है और अपने विश्वास में उसमें सर्वशक्तिसत्ता एवं अनुग्रह पर विश्वास जमाया जाता है। निर्धारित कर्मकाण्ड, विधि-विधान के द्वारा तथा तप साधना कष्टसाध्य तितीक्षा के द्वारा मन्त्र की गुह्य शक्ति के करतल-गत हो जाने का भरोसा दीर्घकालीन साधना द्वारा साधक के मन: क्षेत्र में परिपक्व बनता है। यह सब निष्ठायें मिलकर मन्त्र की भाव प्रक्रिया को परिपूर्ण चुम्बकत्व से परिपूर्ण कर देती हैं।

मन्त्र से दो वृत्त बनते हैं। एक को भाववृत्त और दूसरे को ध्वनि वृत्त कह सकते हैं। लगातार की गति अन्तत: एक गोलाई में घूमने लगती है। ग्रह नक्षत्रों का अपने-अपने अयन वृत्त पर घूमने लगना इसी तथ्य से सम्भव हो सका है कि गति क्रमश: गोलाई में मुड़ती चली जाती है। कोई मनुष्य नाक की सीध चलता ही चला जाय तो वह अन्तत: उसी स्थान पर आ जायगा जहाँ से कि चला था। ऐसा पृथ्वी की गोलाई के कारण होता है। पिण्ड ब्रह्माण्डों की गति तथा आकृति गोल है उसका कारण गतिशीलता है। पहाड़ों से टूटे शिलाखण्ड नदी प्रवाह में बहते-बहते गोलाकार बनते जाते हैं और छोटे बनने वाले बालू कणों के रूप में परिणित हो जाते हैं।

मन्त्रजप में नियत शब्दों को निधारत क्रम से देर तक निरन्तर उच्चारण करना पड़ता है। जप यही तो है। इस प्रति प्रवाह के दो आधार हैं एक भाव और दूसरा शब्द। मन्त्र के अन्तराल में सन्निहित भावना का नियत निर्धारित प्रवाह एक भाववृत्त बना लेता है वह इतना प्रचण्ड होता है कि साधक के व्यक्तित्व को ही पकड़ और जकड़कर उसे अपनी ढलान में ढाल ले। उच्चारण से उत्पन्न ध्वनिवृत्त भी ऐसा ही प्रचण्ड होता है कि उसका स्फोट एक घेरा डालकर उच्चारणकर्ता को अपने घेरे में कस ले। भाव वृत्त अन्तरंग वृत्तियों को शब्द वृत्त बहिरंग प्रवृत्तियों पर इस प्रकार आच्छादित हो जाता है कि मनुष्य की उभयपक्षीय चेतना को अभीष्ट स्तर का मोड़ा-मरोड़ा या ढाला जा सके। मन्त्र विद्या को व्यक्तित्व का स्तर बदलने के लिये सफलतापूर्वक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयोग किया जा सकता है। कितने ही दोष दुर्गुण, हटाये और मिटाये जा सकते हैं। सद्गुण सत्कर्म और सत्स्वभाव के अभिवर्धन का लाभ मिल सकता है। शारीरिक और मानसिक रुग्णताओं से मुक्ति दिलाने में मन्त्र विद्या का आशातीत उपयोग हो सकता है।

ज्ञानवृत्त और शब्दवृत्त दोनों ही अपने-अपने ढंग की शक्तियाँ संजोये हुये हैं। वे ऐसी भी हैं कि अन्यान्य व्यक्तियों को तथा परिस्थितियों के प्रवाह को उलट-पुलट सकें। विष्णु के हाथ में लगा हुआ चक्र सुदर्शन आत्मबल की प्रचण्ड क्षमता की ओर ही इंगित करता है। मन्त्र की वृत परिधियाँ दूसरों के मनः स्तर को बदलने में और परिस्थितियों के कारण बने हुये वातावरण को पलटने में भी चमत्कारी सफलता उत्पन्न कर सकती हैं।

चेतना का अनन्त सागर वृत्तियाहै, आवृत्तियों और पुरावृत्तियों की लहरों में लहलहा रहा है। इन्हीं के चक्रव्यूह में इच्छा, क्रिया और कर्मफल बनकर हमें कहीं से कहीं घसीटे फिरती है। इसी चक्र जाल को बेधन करके हम जीवनमुक्त बनते हैं। इसी भाव उन्मुक्त स्थिति का नाम आत्म-साक्षात्कार आत्मानुभूति, आत्मज्ञान है। यही जीवन का परम लक्ष्य है। इस दिशा में चलने वाले को भवबाधाओं की झाड़ियाँ काटते हुए चलना पड़ता है। यह प्रयोजन भी मन्त्र विद्या द्वारा पूरा हो सकता है। मन को समझने से जिस तथ्य को वह हृदयगंम कर पाता उसे मन्त्रशक्ति का वृत्त, ट्रैक्टर या बुलेडोजर के पहियों की तरह काटता चला जाता है।

मन्त्रानुष्ठानों में प्रायः अग्निहोत्र एक आवश्यक अंग होता है। सुगन्धित सामग्री जलाकर वायु को सुवासित कर लेना अलग बात है और यज्ञानुष्ठान दूसरी। यज्ञानुष्ठान में प्रयुक्त होने वाली समिधा, हव्य सामिग्री, अग्नि चाहे जहाँ से चाहे जैसी नहीं ली जा सकती। उसके लिए पात्र चाहे जहाँ से नहीं लिये जा सकते हैं। उन्हें संकल्पित, अभिमन्त्रित एवं चिरपोषित होना चाहिए। जिस वृक्ष को जिस डाली की समिधा के लिए प्रयुक्त करना है उसकी स्थिति और पवित्रता को परखना पड़ता है। शुभ घड़ी में शुद्धतापूर्वक उसे अभिमन्त्रित कुल्हाड़ी से काटकर लिया जाता है। उसे शुद्ध जल से धोने और छाया में सुखाने का विधान है। सूखी डाली को नियत लम्बाई मोटाई में यज्ञकर्ता ही काटते हैं और अग्नि में डालने से पूर्व उनमें फिर प्राण-प्रतिष्ठा करते हैं तब कहीं वे लकड़ियाँ समिधा कहलाने योग्य बनती हैं। जहाँ-तहाँ से ज्यो-त्यों लकड़ी लेकर हवन कुण्ड में झोंक देना तो ईंधन जलाने जैसा हुआ। उसके द्वारा प्रज्ज्वलित अग्नि में कोई चमत्कार नहीं देखा जा सकेगा।

अग्नि होत्र में प्रयुक्त होने वाले हव्य पदार्थों के बारे में भी यही बात है। उन्हें विधान श्रृंखला के माध्यम से पवित्र बनाया जाना चाहिए। अग्नि को भी इसी प्रयोजन के लिए विधि साक्षी प्रज्ज्वलित करके कुण्ड में प्रतिष्ठापित किया जाना चाहिए। फॉस्फोरस जैसे घृणित अस्थिसार एवं पोटास, गन्धक जैसे दुर्गन्ध युक्त पदार्थों से बनी माचिस की तीली से यदि कुण्ड में अग्नि प्रज्वलित की जाय तो उसे अग्निदेव की पवित्र स्थापना कर उद्देश्य पूरा न होगा। यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले पात्र अमुक काष्ठ के अमुक आकार-प्रकार के बनते हैं । यह झंझट अकारण नहीं है। होत्रा को स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहनकर बैठना पड़ता है और अमुक अनुशासन में रहकर ही आहुति देने का क्रम पूरा करना पउता है। निर्धारित यज्ञ प्रक्रिया एवं मन्त्रोच्चार की विधि व्यवस्था को अपनाना पड़ता है। इन प्रयोजनों में स्वेच्छाचार वर्जित है। कारण कि यह वैज्ञानिक प्रक्रिया है। उसमें विधि व्यवस्था का उल्लंघन न केवल श्रम को व्यर्थ बना देता है वरन् कई बार तो अवांछनीय प्रतिक्रया उत्पन्न करता है।

अग्निहोत्र की चर्चा यहाँ इसलिए की गई है कि वह भी मन्त्राराधन के अन्तर्गत ही आता है। उसी का एक विशेष प्रयोग है। यज्ञोच्चार के विभिन्न पक्षों में जिस प्रकार पवित्रता, सतर्कता रखी जाती है और भावसिक्त दिव्य प्रतिष्ठापना की जाती है उसी प्रकार मन्त्राराधन के प्रत्येक पक्ष में बरती जानी चाहिए—मात्र जप करने में ही जुट पड़ना और उसके साथ जुड़ी हुई पूर्वापरिसंगतियों को निरर्थक मानकर उपेक्षा करना ठीक न होगा।

मन्त्र शक्ति अध्यात्म विज्ञान की अद्भुत उपलब्धि है। किन्तु सामान्यतः उसका लाभ साधक की अपनी सीमा तक ही सीमित रहता है। प्रसुप्त शक्तियों का जागरण, मनोनिग्रह, अन्तराल का उदात्तीकरण जैसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लाभ जपकर्ता को ही मिलते हैं क्योंकि उस उपचार की हलचलें प्रयोक्ता के अपने शरीर मस्तिष्क तक ही प्रतिक्रिया उत्पन्न कर पाती हैं। यदि इस प्रयोग को व्यापक बनाना हो, अन्यान्यों को भी इसका लाभ देना हो तो उसके साथ विस्तृतीकरण का नया माध्यम संयुक्त करना होगा। मनुष्य के मुँह से हल्की-सी आवाज निकलती है। लाउडस्पीकर की बिजली साथ में जुड़ जाने से वह असंख्य गुनी बढ़ जाती है। जिसे मुश्किल से पचास सौ व्यक्ति सुन सकते थे उसे लाखों भली प्रकार सुन लेते हैं। यह आवाज के साथ विद्युत ऊर्जा के समावेश का चमत्कार है। इसी प्रकार रेडियो स्टेशनों पर लगे ट्रान्समीटर वक्ता की आवाज को क्षण भर में समस्त भूमण्डल में बखेर देते हैं। बेतार के तार की यह पद्धति कितनी अद्‌भुत है। उसके माध्यम से न केवल शब्द वरन् चित्र भी दूर-दूर तक भेजे जा सकते हैं। टेलीविजन पर यह चमत्कार भली प्रकार देखा जा सकता है।

मन्त्रशक्ति का विस्तृतीकरण करने के लिए एम्लीफायर—ट्रान्समीटर दोनों का काम यज्ञाग्नि के द्वारा सम्पन्न होता है। परिष्कृत वाणी से उत्पन्न की गई मन्त्र शक्ति को किसी विशेष व्यक्ति या व्यक्तियों के लिए भेजना हो तो मिसाइलों की तरह उसे लक्ष्य तक पहुँचाया जा सकता है। शब्दवेधी बाण इसी को कहते हैं। वह जिस तरकस से छोड़ा जाता है। लक्ष्य वेधने के उपरान्त उसी स्थान पर वापस लौट आता है। ऐसी विशेषताओं वाले धनुष बाण तो कहीं नहीं देखे गये किन्तु शब्द विज्ञान की इस विशेषता के सम्बन्ध में वैज्ञानिक आश्वस्त हैं कि समर्थ विचार एवं शब्द ईथर के माध्यम से प्रकाश गति से दौड़ते हैं। लक्ष्य वेधन कर अन्ततः प्रेषक के पास ही वापस लौट आते हैं। मन्त्र शब्द को शब्दवेधी बाण की तरह प्रयोग करना हो तो यह कार्य उसके साथ यज्ञीय ऊर्जा का समावेश करने से ही सम्भव होता है। यज्ञायोजन में दिव्य अग्नि और मन्त्रशक्ति का समन्वय रहने से ऐसी विशिष्ट ऊर्जा उत्पन्न होती है जो समूचे वातावरण के प्रवाह को प्रभावित कर सकें। फलतः उसका विपत्ति निवारण एवं समृद्धि सम्वर्धन के रूप में समस्त संसार को मिल सकता है।

संगीत के ताल एवं लयबद्ध स्वर प्रवाह का प्रभाव परिणाम मनुष्यों की भाव सम्वेदना को तरंगित करने में ही नहीं अन्यान्य क्षेत्रों में भी आश्चर्यजनक कार्य करता देखा गया है। प्राणियों को एक स्थान पर खींच बुलाना, उनकी मनः स्थिति बदल देना, प्रजनन शक्ति बढ़ जाना, जैसे सफल प्रयोग थलचरों, जलचरों, नभचरों पर किये जाते रहे हैं। दुधारू पशुओं का दूध इस माध्यम से काफी बढ़ा है। खूँखारों का स्वभाव नरम किया गया है। इसी प्रकार वनस्पतियाँ संगीत सुनकर जल्दी बढ़ी हैं। वृक्षों ने अधिक फल दिये हैं। प्राचीनकाल से संगीत के ऐसे ही लाभों के सम्बन्ध में कितनी ही किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। बीन की आवाज सुनकर साँप एवं हिरन का मोहित हो जाना, मेघ-मल्हार से बादल बरसने लगना, दीपक राग से बुझे दीपक जल जाना आदि अनेकों बातें सुनने को मिलती रहती हैं। उन्हें छोड़ भी दिया जाय तो भी आज के युग में संगीत की शक्ति से न केवल भावना लहराने का वरन् अन्य प्रकार के भौतिक लाभों को भी प्राप्त किया जा रहा है। रोग निवारण में संगीत ने, ध्वनि ऊर्जा ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करनी आरम्भ कर दी है और लगता है कि अगले दिनों औषधि उपचार, शल्य क्रिया आदि की तरह चिकित्सा प्रयोजनों में एक नया प्रयोग संगीत का भी सम्मिलित हो जायगा। मानसिक रोगों के निवारण में तो उसका और भी अधिक चमत्कारी परिणाम देखा गया है। यह संगीत कण्ठ और वाद्य यन्त्रों के समन्वित उपयोग से निस्तृत होता है। अध्यात्म विज्ञान में यही कार्य अधिक शक्तिशाली रूप से मन्त्र शक्ति एवं यज्ञीय ऊर्जा के संयुक्त उपचार से बन पड़ता है।

यज्ञ के सूक्ष्म आधारों की यहाँ चर्चा न करके केवल भौतिक विज्ञान की दृष्टि से भी देखा जाय तो भी प्रतीत होगा कि उसमें ध्वनि और ताप की दोनों ही शक्ति धाराओं का उच्चस्तरीय उपयोग एवं समन्वय किया गया है। मन्त्रोच्चार में ध्वनि विज्ञान के रहस्यमय सिद्धान्तों का समावेश किया गया है। अग्निहोत्र प्रक्रिया में ताप शक्ति का विशिष्ट प्रयोग कहा जा सकता है। इन दोनों शक्तियों को भौतिक विज्ञान की प्रधान धारा माना गया है। इनका समन्वय करके अध्यात्म उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उस संयुक्त शक्ति को लगा दिया जाय तो उसका सत्परिणाम वैसा ही होता है जैसा कि यज्ञ विज्ञान के जन्मदाताओं ने सुविस्तृत फल श्रुति के रूप में प्रस्तुत किया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ताप की शक्ति का परिचय मनुष्य को बहुत पहले से मिल रहा है। उसकी जानकारी और उपयोग पद्धति का अनुभव क्रमिक विकास के अनुरूप बढ़ता आया है। इस सन्दर्भ में अब तक बहुत कुछ जानकारी मिल भी चुकी है किन्तु जो जानना शेष है वह प्रस्तुत उपलब्धियों से कहीं अधिक है। घर्षण से अग्नि उत्पन्न करने और ईंधन के सहारे उसे प्रज्ज्वलित करने की विधि अब से लाखों वर्ष पूर्व मनुष्य के हाथ लग गई थी। उससे चमत्कारी प्रकटीकरण के वह नित नूतन लाभ उठाता चला आ रहा है। भोजन पकाने, सर्दी से बचने, धातु पिघलाने, कूड़ा-करकट समाप्त करने, अशक्तता में शक्ति उत्पन्न करने, प्रतिपक्षियों से जूझने, रोशनी का लाभ लेने जैसे असंख्यों उपयोग आग के हैं। यदि यह उपलब्धि हाथ में न आई होती तो आदि मानव की स्थिति से बहुत आगे बढ़ सकना सम्भव न हुआ होता।

यज्ञीय ऊर्जा या ताप के साथ ध्वनि के विज्ञान को भी जानना आवश्यक है। सर्वविदित है कि अन्य प्राणी मात्र प्रकृति प्रेरणा से ही ध्वनि उत्पन्न कर पाते हैं। छोटे जीवधारी शारीरिक हलचलों से ध्वनि उत्पन्न करते हैं और विकसित प्राणी कुछ भावनाओं को व्यक्त कर सकने योग्य थोड़ी-सी नपी-तुली अर्थहीन ध्वनियाँ कर सकते हैं। मनुष्य ही एक ऐसा है जो मुख गह्वर के विभिन्न विन्यास बनाकर कितने ही प्रकार के शब्द उत्पन्न करता है और उनसे विचारों के आदान-प्रदान का, अभिव्यक्तियों के प्रकटीकरण का काम लेता है। पदार्थों में टकराव उत्पन्न करके भी उसे कितने ही तरह के संगीत, शोरगुल जैसी आवाजें पैदा करने का अनुभव है। जीभ की संरचना के अनुरूप शरीर में तथा आघातों के अभ्यास से जो ध्वनियाँ उत्पन्न की जा सकती हैं, उनमें से भी सब का अनुभव कर सकना मनुष्य के बूते की बात नहीं है। प्रकृति ने कानों की सामर्थ्य बहुत सीमित रखी है। उनसे उसी स्तर की आवाजें सुनी जा सकती हैं जो जीवन निर्वाह के लिए उपयोगी एवं आवश्यक हैं। यदि इससे अधिक सुन सकना सम्भव रहा होता तो फिर इतनी गड़बड़ी मचती कि वर्तमान स्तर के मस्तिष्क कुछ सुन समझ ही न पाते और कानों में घोर कुहराम मचा रहता।

यह नहीं समझा जाना चाहिए कि हम जितने शब्द सुनते हैं उतने ही ध्वनि प्रवाह इस सृष्टि में उत्पन्न होते हैं। ताप का क्षेत्र अत्यन्त सुविस्तृत है। मनुष्य के परिचय और उपयोग में तो उसका एक बहुत छोटा अंश ही आता है। इसी प्रकार ध्वनि कम्पन का क्षेत्र भी असीम है। इतना असीम जिसे कल्पना से बाहर का कहा जा सकता है। इस विशाल अन्तरिक्ष में हल्की-भारी ध्वनियों के अगणित प्रवाह कम्पन चलते रहते हैं। इन्हें विज्ञान की भाषा में श्रवणातीत ध्वनियाँ कहा जाता है । आश्चर्य यह है कि इन अविज्ञात ध्वनियों में से कितनी ही इतनी अद्‌भुत और इतनी सक्षम होती हैं कि उनके स्वरूप की कल्पना मात्र से आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है।

ध्वनि विज्ञान के शोध सन्दर्भ में जो तथ्य सामने आये हैं, उन्होंने इन श्रावणातीत ध्वनियों को मानवी उपयोग के अनेकों कार्यों में प्रयुक्त कर सकना सम्भव बना दिया है। कुछ प्रवाह सृष्टि की अन्यान्य हलचलों के कारण स्वयमेव उत्पन्न होते रहते हैं। उनके आधार पर प्रस्तुत परिस्थितियों और भावी संम्भावनाओं के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त की जा सकती है। अन्तरिक्ष में परिभ्रमण करने वाले मनुष्य प्रेषित राकेटों, गुब्बारों, यानों से मौसम सम्बन्धी कितनी ही जानकारियाँ मिलती हैं । रेडियो, टेलोफोनों का प्रबन्ध बन पड़ता है। आकाश में उड़ने वाले वायुयानों, प्रक्षेपास्त्र का पता रैडारों पर उतरने वाली प्रतिध्वनि छाया के सहारे पता चल जाता है। तूफान, भूकम्प आदि की जानकारी इन उपकरणों के माध्यम से मिल जाती है।

यह वह क्षेत्र है जिसमें प्रवाहमान सूक्ष्म ध्वनियों के माध्यम से वे जानकारियाँ मिलती हैं जो सामान्य साधनों के सहारे जानी नहीं जा सकतीं। यह भी एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी उपलब्धि है। ध्वनि विज्ञान के सहारे रेडियो टेलीफोन ही नहीं, वातावरण को शान्त एवं उत्तेजित करने जैसे प्रयोजन भी इस आधार पर पूरे करने की सम्भावनाएँ सामने आ रही हैं।

नया प्रयोग अपनी शताब्दी का यह है कि अभीष्ट प्रयोजन के लिए अभीष्ट स्तर की श्रवणातीत ध्वनियाँ उत्पन्न की जा सकती हैं और उन स्व निर्मित कम्पनों का आश्चर्यजनक लाभ उठाया जा सकता है। ध्वनि उत्पन्न करके उसकी प्रतिध्वनि से लाभ उठाने का सिद्धान्त तो समुद्र की गहराई में चलने वाली

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पनडुब्बियों की हलचलों का पता लगाने की विधि हाथ में आ जाने के समय से ही विदित हो गया था, पर उसका अन्य क्षेत्रों में उपयोग कर सकने की विधियाँ अब बहुत शोध संशोधन के उपरान्त प्राप्त हुई हैं। यह प्रयोग चिकित्सा क्षेत्र में बहुत आगे बढ़े और बहुत सफल हुए हैं।

वियना के प्रो. डसिक ने मस्तिष्क के अन्तराल में चल रही हलचलों और विकृतियों का पता लगाने के लिए श्रवणातीत ध्वनियों का सर्वप्रथम सहारा लिया था। उत्पन्न की हुई ध्वनि रोगी के मस्तिष्क में घुसी और टकराकर वापस लौटी तो उसने सारा भेद खोलकर सामने रख दिया। एक्सरे द्वारा जो भोंड़ी तस्वीरें भीतरी स्थिति की खिंचती थीं, उससे औंधे-सीधे अनुमान ही लग पाते थे। इन श्रवणातीत ध्वनियों के विवरण कहीं अधिक स्पष्ट, विस्तृत और सही प्राप्त हुए। शोध और भी अधिक उत्साह के साथ चली। विज्ञानी लेकसल—लैजेविन, हर्ज एडलामान्ट, हेगेज, डोनाल्ड जैसे मनीषियों ने न केवल मस्तिष्क का वरन् शरीर के प्रत्येक अवयव के अन्तराल की सही स्थिति समझने में श्रवणातीत ध्वनियों को माध्यम बनाया और आशातीत सफलता पाई। पोलैण्ड में तो गर्भस्थ भ्रूणों की हृदयगत धड़कन और रक्ताभिषरण की अतीव मन्दगामी स्थिति का भी सही-सही लेखा-जोखा प्राप्त कर लिया। सही निदान विदित हो जाने पर चिकित्सा से कितनी सुविधा हो सकती है इसे सहज ही समझा जा सकता है। चिकित्सा उपचार में भी उनका उपयोग किया गया और अत्यन्त गहराई में धँसे हुए रोगों को उखाड़कर ऊपर लाना और आँख की पुतली जैसे मर्मस्थानों के अति बारीक आपरेशन कर सकना सम्भव हो गया।

ऐसे-ऐसे अनेकों आधार हैं जिनके सहारे यज्ञीय क्रिया-कृत्य में उच्चारण किये गये मन्त्रोचार से न केवल उपयोगी ध्वनि तरंगें उत्पन्न होतीं वरन् उस आयोजन में सम्मिलित होने वाले लोगों को लाभदायक सत्परिणाम प्रस्तुत करती हैं। उसमें से बड़ी उपलब्धि श्रवणातीत ध्वनियों की है जो शब्द और ताप दोनों के समन्वय से उत्पन्न होती हैं। उनसे सुविस्तृत क्षेत्र का वातावरण प्रभावित होता है। फलतः प्राणवान मेघवर्षा से लेकर अन्यान्य कई प्रकार के ऐसे आधार खड़े होते हैं जो सर्वतोमुखी सुख-शान्ति में सहायता कर सकें। सूक्ष्म वातावरण के परिशोधन और उसके फलस्वरूप सुख-शान्ति की परिस्थितियाँ उत्पन्न करने वाले वातावरण का सृजन भी यज्ञ विद्या का अति महत्वपूर्ण प्रतिफल है। ऐसे ही कारणों को ध्यान में रखते हुए भारतीय धर्म में यज्ञ को उच्चकोटि का श्रेय-सम्मान दिया गया है।

यज्ञ के इस विज्ञान को समझने के लिए पृथ्वी और ब्रह्माण्ड की जिन शक्तियों के अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है, वह हैं—(१) शब्द सामर्थ्य-मन्त्रशक्ति, (२) अग्नि तत्व और उसका प्रकीर्णन, (३) सूर्य और उसकी सहस्रांशु शक्ति (गायत्री यज्ञों के परिप्रेक्ष्य में), (४) पदार्थ परिवर्तन के मौलिक सिद्धान्त और, (५) भावना विज्ञान। इनमें से सम्पूर्ण या कुछ की आंशिक जानकारी से भी यज्ञ सम्बन्धी भारतीय दर्शन को अच्छी प्रकार समझा और उसका भरपूर लाभ उठाया जा सकता है।

शब्द की सामर्थ्य की माप कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के मूर्धन्य भूगर्भवत्ता डा. गैरीलेन ने की। उन्होंने स्फटिक के प्राकृतिक क्रिस्टल और स्फटिक की ही बहुत पतली पट्टिका के माध्य से एक ऐसा यंत्र बनाया एवं उसकी अश्रव्य ध्वनियों के माध्यम से ऐसी शक्ति का निर्माण किया, जिसके द्वारा शल्य-चिकित्सा, रोगाणुओं का विनाश, मोटी-मोटी इस्पात की चादरों को काटना, धुलाई, कटाई आदि भारी से भारी काम और नाजुक से नाजुक कार्य भी सम्पन्न करने में बड़ी सहायता मिली। आज विश्व के प्रायः सभी देशों में औद्योगिक क्षेत्रों एवं चिकित्सकीय कार्यों में कर्णातीत ध्वनि के उपयोग ने क्रान्ति मचा दी है।

शब्द की दूसरी विशेषता उसकी संवहनीयता है। वह ठोस माध्यम से भी चल सकता है और विद्युत चुम्बकीय तरंगों के रूप में सारे ब्रह्माण्ड का भ्रमण भी कर आता है। इन सब बातों का अर्थ होता है कि शब्द की सामर्थ्य अपरिमित होती है। पृथ्वी पर अनेक हलचलें शब्द के द्वारा ही होती हैं, फिर भारतीय शब्दशास्त्र तो और भी वैज्ञानिक है उनसे एक प्रकार की ऐसी ध्वनि उत्पन्न होती है जो किसी भी स्थान पर व्यापक हलचल उत्पन्न कर सकती है।

गायत्री महामन्त्र की ध्वनि शक्ति तो इन सबसे विलक्षण है। गायत्री यज्ञों में जब सामूहिक रूप से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सस्वर मन्त्रोच्चारण किया जाता है, तो वह अपने सामान्य सिद्धान्त के अनुसार कुण्डलाकार गति से ऊपर की और तरंगें बनाता हुआ बढ़ता है। यज्ञों में प्रज्ज्वलित अग्नि के इलेक्ट्रॉन उन तरंगों को वहन कर लेते हैं और उनकी पहली प्रतिक्रिया तो उस क्षेत्र में ही फैलती है, अर्थात् यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले घृत आदि पदार्थ स्थूल से गैस रूप में फैलते हैं। आग की गर्मी से उन औषधियों के इलेक्ट्रॉन्स अपने-अपने पथों पर इतनी तीव्रता से दौड़ने लगते हैं कि आपस में लड़खड़ा जाते हैं और छितरकर स्थूल पदार्थों से अलग होकर वायुमण्डल में फैल जाते हैं। यज्ञ के समय फैलने वाली धूम सुवास उसी का एक स्थूल रूप है।

अग्निहोत्र और मन्त्रोच्चारण के उससे भी सूक्ष्म विज्ञान को समझने के लिए 'अयन मण्डल' आयनोस्फियर का अध्ययन आवश्यक है। धरती सतह से ३५ से ४५ मील तक ऊँचाई के ऊपर वायुमण्डलीय भाग को आयनोस्फियर कहते हैं। अपनी पृथ्वी वायु के समुद्र में डूबी हुई है, अयन मण्डल उसका सबसे अधिक ऊँचा और विशाल क्षेत्र है, लेकिन वहाँ हवा की कुल मात्रा वायुमण्डल की तुलना में दो-सौवें भाग से भी कम है। यथार्थ में पृत्वी पर प्राकृतिक परिवर्तनों और ब्रह्माण्ड के अदृश्य लोकों से सम्पर्क का मूल अध्याय यहीं से आरंभ होता है। कुछ दिन तक अयन मण्डल वैज्ञानिकों के लिए एक पहेली था, लेकिन अब यह पता लगा लिया गया है कि बहुत ऊँचाई पर अंतरिक्ष में ऐसे बहुत से गुण हैं जो धरती की हवा में नहीं होते।

उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव प्रकाश, प्रचण्ड चुम्बकीय आँधी, बेतार तंरगों के परावर्तन जैसी घटनायें आयनोस्फियर से ही आरंभ होती हैं। सूर्य और चन्द्रमा आदि की अनेक नियमित क्रियाओं का भी पता वैज्ञानिकों ने लगा लिया है और कहा है कि इन प्रक्रियाओं के फलस्वरूप पृथ्वी के आकर्षण वृत्त में परिवर्तन होते हैं।

यहाँ यह भी जान लेना आवश्यक है कि हवा में मिश्रित गैसें छोटे-छोटे अणुओं से बनी होती हैं? यह अणु परमाणुओं में विभक्त होते रहते हैं जो स्वयं भी इलेक्ट्रॉन, प्रोटान, न्यूटान जैसे छोटे कणों से बने होते हैं जिन्हें शक्ति तरंगें कहा जा सकता है। इनका सूक्ष्म अयन मण्डल भी पृथ्वी की जलवायु एवं वातावरण पर असर डालता है और यहाँ के शब्द प्रवाह को कर्णातीत बनाकर आकाश की ओर फेंकता है। सूर्य का विकिरण भी इस अयन मण्डल को प्रभावित, परिवर्तित करता है। परिवर्तन की यह स्थिति अच्छी बुरी गैसों के अनुरूप होती है, इसलिए यज्ञ से जो प्राण प्रवाह उत्पन्न होता है, वह स्थूल दृष्टि से प्रकृति और जन स्वास्थ्य पर बड़ा अनुकूल प्रभाव डालता है। यज्ञ से उत्पन्न हुई प्राण वर्षा में ही वह शक्ति है जो आज के परमाणु विस्फोटों से विषाक्त वातावरण का परिशोधन कर सके। इसलिये वर्तमान समय में यज्ञों की अनिवार्यता असंदिग्ध है।

यजुर्वेद २३-४२ में कहा है—"ब्रह्म सूर्य समज्योतिः" अर्थात् वह सूर्य ब्रह्मतत्व ही है, उन्हीं की शक्ति और बाहरी महिमा से जीवन का विकास हो रहा है। पृथ्वी में आँधी तक सूर्य की इच्छा से आती है। इसे सूर्य की तापीय व्यवस्था कहें या प्राण-प्रक्रिया, पर निश्चित है कि यज्ञ और मन्त्र की ध्वनि शक्ति उस प्राण या ऊष्मा में खलबली मचाकर अधिक मात्रा में जीवन तत्वों का विस्फोट अवश्य करा लेती है। जहाँ भी यज्ञ होते हैं, वहाँ प्रकृति बहुत अनुकूल रहती है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं। यह एक तथ्य भी है कि पृथ्वी सूर्य से ही सर्वाधिक प्रभावित है।

मन्त्र का भावना विज्ञान उससे भी विलक्षण शक्ति वाला है। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है—"कि संसार में किसी भी वस्तु का अभाव नहीं है, भले हम उसे न जानते हों।" यह ज्ञान इतना समर्थ है कि विश्व के किसी भी भूभाग में हलचल उत्पन्न कर सकता है। प्राचीन ऋषि, मनीषी इस तथ्य से भलीभाँति परिचित थे कि यज्ञों के माध्यम से प्रकट होने वाली भावना शक्ति सामान्य भावों की अपेक्षा शब्द शक्ति और अग्नित्व से प्रेरित होने के कारण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में फैलकर अपने अनुरूप शक्तियों को खींच लाती है। हम यह समझ नहीं पाते कि अदृश्य सहायता या इच्छापूर्ति कैसे हुई, पर यह सब भावनाओं द्वारा एक प्रकार के तत्वों के अणुओं के आकर्षण की ही वैज्ञानिक पद्धति है, उसमें रहस्य जैसी कोई बात नहीं है।

भावना वस्तुतः अल्ट्रा एवं इन्फ्रासोनिक ध्वनि तरंगों का और भी सूक्ष्म स्वरूप है, क्योंकि हम जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ सोचते हैं, वह आत्मा या चेतन सत्ता द्वारा एक प्रकार का बोलना ही है। इसलिए कर्णातीत ध्वनि की समस्त शक्तियों से उसे ओतप्रोत होना ही चाहिए। यज्ञ तो एक प्रकार से उस यंत्र की तरह है जो अभीष्ट इच्छा के गन्तव्य तक उस शक्ति को पहुँचाने और वहाँ से आवश्यक परिस्थितियाँ खींच लाने में मद् करता है।

अग्निहोत्र का प्रतिफल अन्न आदि के उत्पादन, अयन मण्डल में शक्ति तत्वों का विकास और जलवायु तथा वातावरण की अनुकूलता के रूप में दिखायी देता है, तो यज्ञकर्ताओं की श्रद्धा भक्ति भावनात्मक स्तर पर मनोवांछित सफलतायें प्रदान करने वाली होती हैं। स्थूल की प्रतिक्रिया स्थूल तो सूक्ष्म की प्रतिक्रिया सूक्ष्म भी हाथों-हाथ देखने को मिलती है। यद्यपि यह दोनों ही बातें मिली-जुली हैं, इसलिये भावना को विज्ञान विज्ञान को भावना के माध्यम से जाग्रत और प्राप्त किया जा सकता है।

मन्त्र शक्ति ही देवमाता-कामधेनु है

श्रुति कहती है—

देरी वाचमजनयन्त देवास्तां,
विश्वरूपाः पाशवो वदन्ति।
सा नो मंद्रेष्षमूर्गं दुहाना,
धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुवैतु॥

परावाक् देवी है। विश्व रूपिणी है। देवताओं की जननी है। देवता मान्त्रात्मक ही हैं । यही विज्ञान है। इस कामधेनु वाक् की शक्ति से हम जीवित हैं। उसी कारण हम बोलते और जानते हैं।

शब्द के दो रूप हैं। एक वह जो जीभ से बोला जाता है, कान से सुना जाता है, जिसके अर्थ का बोध होता है एवं उस शब्द के साथ जुड़ा हुआ रूप या प्रसंग स्मृति-पटल पर प्रस्तुत होता है। वैसे उच्चारित शब्दों को बैखरी संज्ञा दी जाती है। लोक प्रयोजन में वाणी का यही व्यवहार होता है ।

दूसरा वह जिसे परावाक् कहते हैं। यह अन्तःकरण में भावना के—ज्ञान एवं इच्छा के —रूप में अवस्थित रहती है। यह शक्ति रूप है। इसमें प्रेरणा भरी पड़ी है। बुद्धि इसी की अनुचरी है, मन सी का सेवक—चित्त इसी का पार्षद है। अन्तरंग मर्मस्थल में जो भाव उमड़ते हैं, उन्हें साकार करने के लिए—साधन जुटाने के लिए मन और बुद्धि को लगा रहना पड़ता है। शरीर इन्हीं दोनों का अनुचर है। अस्तु उसे भी उसी दिशा में चलना पड़ता है। जिसमें कि अन्तरंग में अवस्थित परावाक् की प्रेरणा से मन और बुद्धि दिशा ग्रहण करते हैं। मनुष्य जो कुछ सोचता है—करता है—बनता है—पाता है उसे परावाक् का ही प्रसाद कहना चाहिए ।

शरीर के आहार विहार को स्वस्थ समुन्नत बनाया जाता है। मन, मस्तिष्क, अध्ययन, सान्निध्य, चिन्तन एवं अनुभव के आधार पर विकसित होता है। अन्तःकरण की अभिव्यजना — परावाक् — को स्वस्थ शुद्ध समुन्नत एवं सशक्त बनाने के लिए साधना करनी पड़ती है । साधना शारीरिक बलवर्धन के लिए भी होती है और मस्तिष्क को विकसित करने के लिए भी। व्यायाम, अध्ययन आदि को शरीर एवं मन की साधना कह सकते हैं । यदि इनका अवलम्बन न लिया जाय तो वे दोनों अविकसित पड़े रहेंगे । भगवान के अनेक क्षमताओं से सम्पन्न शरीर और अनेक सम्भावनाओं से युक्त मन हमें दिया है पर यदि उन्हें व्यवस्थित एवं समुन्नत बनाने के लिए प्रयत्न न किया जाय तो वे अवांछनीय दिशा में चलकर विकृत, भ्रष्ट एवं अधःपतित भी हो सकते हैं। रोग-शोक से घिर सकते हैं। इसी प्रकार अन्तःकरण की उसकी ऊर्जा—परावाक् को परिष्कृत न किया जाय तो वह अधोगामी ही असुरता ग्रस्त हो सकती है। जिस प्रकार आलसी और प्रमादी अपने शरीर तथा मन को रुग्ण कर लेते हैं उसी प्रकार अन्तःकरण को सुसंस्कृत, परिष्कृत, समुन्नत बनाने का प्रयास छोड़ देने से मनुष्य, पशु एवं पिशाच जैसी स्थिति में जा पहुँचता है। असुरता से आच्छादित अन्तःकरण दुर्भावनाओं से — दुर्बुद्धि एवं दुष्प्रवृत्तियों से भरा रहता है। स्वयं उद्विग्न रहता और दूसरों को कष्ट देता है।

शरीर और मन को समुन्नत स्थिति में रखने के लिए किये जाने वाले विवध विध प्रयासों से बी अधिक आवस्यकता अन्तःकरण के सुधार परिष्कार की है। यही प्रयोजन परावाक् साधना से पूरा होता है। मन्त्र विज्ञान का यही प्रयोजन है। उससे परावाक् के मर्मस्थल का स्पर्श किया जाता हैऔर परिष्कार का साधना जुटाया जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रुति कहती है—

पाक्का नः सरस्वती वाजभिर,

वाजिनीवती, धोनामावित्र्यवतु।

तप से पवित्र हुई वाक् पवित्रता, पुष्टि, प्रतिभा, प्रज्ञा तथा प्रेरणा प्रदान करती है। परावाक् के तप प्रयोजन को ही मन्त्र साधन कहते हैं। स्थूल बैखरी वाणी से उच्चारित और मध्यमा से ध्यान सम्बद्ध सूक्ष्म परा पशन्ती वाणियों को जागृत करता है। इस प्रकार जब चारों वाणियाँ सक्रिय हो उठती हैं और ऊर्ध्वगामी बनती हैं तो जीव ही ब्रह्म बन जाता है। ब्रह्म देवता के चार मुख हैं। उन्होंने चारों वेदों का सृजन प्रवचन किया। यह चतुर्धा प्रकटीकरण वस्तुतः बैखरी, मध्यमा, परा और पशन्ती वाणियों का ऊर्ध्वागामी उभार मात्र है। यह ब्रह्म देवता के लिए भी सम्भव है और आत्म-देवता के लिये भी। पुराणों में कथा है कि विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमल नाल पर ब्रह्मा जी कई बार उतरे और चढ़े। मन्त्र साधन में यही होता है। स्थूल शब्द उच्चारित होकर अन्तःकरण के मर्म-स्थल की गहराई में उतरता है और उस शक्ति स्रोत की ऊर्जा से सम्पन्न होकर ऊपर आता है। जब वह ऊपर आता है तो बैखरी में पशन्ती का जैसा ही प्रभाव होता है वैसे बिजली के सम्पर्क से धातु के तार में । वह मन्त्रपूत शब्द समस्त सृष्टि में हलचल उत्पन्न करता है, सूक्ष्म जगत को स्पन्दित करता है और व्यक्ति को व्यक्ति मात्र न रखकर उसे दैवी शक्ति-सम्पन्न बना देता है।

हम सब गायत्री का जप करते हैं पर यह स्थूल बैखरी वाणी का स्पन्दन मात्र होकर रह जाता है। फलतः उसका व प्रभाव नहीं होता जो होना चाहिए महर्षि विश्वामित्र ने इसी गायत्री मन्त्र की स्थापना की। उस शक्ति का साक्षात्कार किया और वैसी ही सामर्थ्य से सम्पन्न हो गये जैसी कि इस महाशक्ति के महात्मय में बताई गई है। मन्त्र साधना वाणी का ताप है। स्थूल की सूक्ष्म में परिणति है। अन्तर्दर्शन के क्षेत्र में प्रवेश करना है। कुएँ में घड़ा फाँसना और खींचना तप है। जल भरा हुआ घड़ा हाथ में आता है तब वह सिद्धि है। साधना और सिद्धि का यही अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। मन्त्र साध्य को मन्त्र साध्य मनाने की इस अनूठी प्रक्रिया का रहस्य जो जानते हैं वे भौतिक उपकरणों को —साधनों को मान्त्रिक प्रक्रिया द्वारा जो पाया जाना सम्भव है उसे मान्त्रिक साधना पद्धति से प्राप्त कर लेते हैं। उनका साधना तप ही लौटकर सिद्धि भाण्डागार के रूप में परिलक्षित होता है।

शब्द को 'ब्रह्म' कहा गया है। यह शब्द ब्रह्म —परावाक् का मर्मस्थल है। यह प्रायः क्षीर सागर में प्रसुप्त पड़ा रहता है पर जब जागृत होता है तो उसके सपन्दन से यह सारा विश्व गतिशील हो उठता है। श्रुति वाक् को हृदयस्पर्शी बताते है। स्पर्शानुभव में—रूपानुभव में आने वाली बताती है। यह हृदयस्पर्सी स्वरूप स्वर्ग, मुक्ति तथा ब्रह्म निर्वाण है। यह स्पर्श अनुभव की संभूति ऋद्धि-सिद्धियों का भणडार है। यह रूप अनुभव देवताओं का साक्षात्कार अनुग्रह एवं वरदान है। यह सब वाक् शक्ति की ही प्रतिक्रिया—प्रतिध्वनि है।

वाक् रूप, रस, गंध, स्पर्श का अनुभव करता है। शब्द रूपी आकाश से ही वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी तत्व का आविर्भाव हुआ है। इसी से वाक् को विश्वरूपिणी—बहु रूपिणी और देव शक्तियों की उसे अधिष्ठात्री कहा जाता है। अग्नि भू लोक है। वायु—भुवः लोक और वरुण स्वः लोक। बैखरी जब मन्त्र साधन द्वारा सूक्ष्म होती चलती है तो तीनों लोकों पर उसका अधिकार होता चला जाता है। लोक लोकान्तर में जो कुछ विद्यामान है उसके सम्बन्धित होती है—प्रभावित करती, नियन्त्रण रखती है और संचालन करती है परिष्कृत परावाक्। जिह्वा से उच्चारित बकवास में प्रयुक्त होती रहने वाली प्रक्रिया जब उलटकर मन्त्र साधना में लगती है तब वह शक्ति रूप होती है। शक्ति भी ऐसी जिसकी परिधि में वह सब आ जाता है जिसे अद्भुत एवं महान कह सकते हैं।

यह परिष्कृत वाक् जब यज्ञाग्नि से संयुक्त होती है तब उसकी प्रचण्ड शक्ति को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। घृत को अग्नि में डालते ही उसकी परिणति ज्वाला के रूप में होती है। परावाक् जब यज्ञ कर्मों में जुटती है तो उसकी दीप्ति से अन्धकार में भटकता हुआ जगत् दिव्य आलोक का लाभ प्राप्त करता है और शोक-संतापों से छूटकर श्री, समृद्धि, शान्ति और प्रगति की ओर अग्रसर होता है। यज्ञ का सूक्ष्म रूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है—परामार्थ—लोक मंगल। जब साधना संतृप्त वाक् को परमार्थ प्रयोजन में लगाया जाय तो सच्चे अर्थों में उसे ब्रह्मयज्ञ कहना चाहिए। ब्रह्म अग्नि में बह्म हवि देने की चर्चा गीता में इस सन्दर्भ में की गई है। ऐसे ब्रह्म यज्ञ से सुख-शान्ति भर पर्जन्य बरसते हैं। चरु यज्ञों द्वारा भौतिक प्रयोजन पूरे होते हैं—भौतिक समृद्धि के मेघ भी बरसते हैं पर श्रुति ने जिस पर्जन्य वर्षा की ओर संकेत किया है उसे विश्व शान्ति और लोक कल्याण की उपलब्धियों के रूप में ही देखा, समझा जाना चाहिए ।

विश्वव्यापी स्थूल ऊर्जा विद्युत, चुम्बक, गर्मी, प्रकाश आदि के रूप में देखी जा सकती है। शक्ति के कम्पन परमाणु को प्रभावित करते हैं और उसके कारण दृश्य जगत की विभिन्न हलचलों का क्रिया-कलाप चलता है। जीवाणु भी किन्हीं दिव्य विद्युत शक्तियों से प्रवाभित होते है। मानवी चेतना में जो दीप्तिमान अंश है उसे दिव्य सत्ता का स्पन्दन कहना चाहिए। यह स्पन्दन ब्रह्म सत्ता प्रवाहित भी होते हैं और आत्म सत्ता प्रवाहित भी। ईश्वर की इच्छा से यहाँ सब कुछ होता है। यह कहते हुए हमें यह भी समझना होगा आत्म-सत्ता का परिष्कृत रूप ब्रहम सत्ता ही है। निर्विकार—साक्षी और दृष्टा ब्रह्म संसार में इच्छा बनकर जो कुछ करता है वस्तुत: वह उसके समतुल्य आत्म सत्ता का ही प्रवाह होता है। मन्त्र तप से साधित परावाक् अपनी विशुद्धता एवं प्रखरता के कारण ब्रह्मइच्छा ही बन जाती है। उसके स्पन्दन जगत के जीवाणुओं को स्पन्दित करते हैं। तदनुसार लोक प्रवाह की दिशा बदल जाती है। देवदूत, अवतारी महामानव यही करते हैं। इनके कर्तृव्य से ईश्वर की इच्छा या इनकी इच्छा से ईश्वर का विधान जुड़ा देखा जा सकता है। सिद्ध तपस्वियों की यही स्थिति होती है। उनकी परावाक् उच्चारण का ही नहीं संचालन और नियन्त्रण का भी प्रयोजन पूरा करती है।

जिस तरह ब्रह्माण्ड का बीज पिण्डाण्ड है, उसी प्रकार व्यष्टि का विराट् रूप समष्टि भी है। व्यक्ति की सत्ता को ब्रह्माण्ड की परिस्थितियों द्वारा विनिर्मित माना जाता है। साथ ही यह भी कहा गया है कि बीज जैसा पिंण्ड विकसित रूप में ब्रह्माण्ड बन जाता है। दोनों के बीच वृक्ष और बीज जैसा सम्बन्ध है। यह ठीक है कि बीज से वृक्ष बनता है पर यह भी गलत नहीं कि वृक्ष पर बीज उत्पन्न होता है। ब्रह्माण्ड की परिस्थितियों ने व्यक्ति को बनाया पर व्यक्ति का चरम विकास भी विराट् ब्रह्माण्ड होता है। छोटा गुब्बारा फूलकर बड़ा बनता है। परावाक् उसी वायु का नाम है जो व्यक्ति जैसे छोटे गुब्बारे को फुलाकर विराट् बना देती है और ब्रह्मा की तुलना में ला खड़ा करती है। परमाणु की शक्ति बड़ी है पर जीवाणु की शक्ति उससे भी बड़ी है। इंजन बड़ा है पर ड्राइवर उससे भी बड़ा है। परमाणु जिन शक्तियों से स्पन्दित होते हैं उन्हें स्पन्दन करने की क्षमता उस चेतनशक्ति में सन्निहित है जिसे जीवाणु की विराट् सत्ता कहा जा सकता है। श्रुति कहती है—

विष्णुमुखा वै देवाइछन्दोभि रिमान्लोकानन

पजप्यमभ्यजपन्।

देवता विष्णु मुख हैं। वे छन्द रूप हैं। उन्होंने हटाया जा सकने वाला हटाया है और न जीता जा सकने वाला जीता है। यह मन्त्रात्मा और विश्वात्मा की एकता प्रकट करने वाला प्रतिपादन है।

मन्त्रों के शब्दार्थ से उनकी महत्ता सम्बन्धित नहीं। कोई अति शक्तिशाली मन्त्र अर्थ की दृष्टि से अति सामान्य हो सकता है। कोई भाषा गीत ऐसी अभिव्यक्ति युक्त हो सकता है जो मन्त्रों में दृष्टिगोचर नहीं होती हो। पर इससे मन्त्र का महत्व कम नहीं होता। अभिव्यक्ति नहीं, मन्त्र की महत्ता उसकी शक्ति संरचना से समाविष्ट है। मन्त्रों को स्वर शास्त्र या ध्वनि शास्त्र माना जाना चाहिए। उसके उच्चारण से जो स्पन्दन गतिशील होते हैं उन्हीं में उनकी महिमा समाई हुई है। विभिन्न धर्मों में उनके परम्परागत मन्त्रों से ही उपासनायें तथा कर्मकाण्डात्मक प्रक्रियायें सम्पन्न होती हैं। इसमें शब्द-विन्यास की ही प्रधानता है। अर्थ की दृष्टि से उस शब्दावली को सामान्य अथवा स्वल्प सार भी कह सकते हैं।

मन्त्रों में चार शक्तियाँ मानी गई हैं—(१) प्रामाण्य शक्ति, (२) फल प्रदान शक्ति,(३) बहुलीकरण शक्ति (४) आयात यामता शक्ति। इसका विवेचन महर्षि जैमनी ने पूर्व मीमांसा में किया है। उनके कथनानुसार मन्त्रों की प्रमाण्य शक्ति वह है जिसके अनुसार शिक्षा, सम्बोधन, आदेश का समावेश रहता है। इसे शब्दों से सम्बन्धित कह सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुण्ड समिध, पात्र पीठ, आज्यचरु, हवि, पीठ आदि को अभिमन्त्रित करके उनके सूक्ष्म प्राणों को प्रखर करने का विधान, मन्त्रोच्चार, कर्मकाण्ड, न्यास, ऋत्विजों का मनोयोग, ब्रह्मचर्य तप, आहार आदि—विधि-विधान से मन्त्र की फलदायिनी शक्ति सजग होती है। सकाम कर्मों में मन्त्र की यही शक्ति विभिन्न क्रिया-कृत्यों के सहारे सजग होती है और अभीष्ट प्रयोजन पूरे करती है।

तीसरी शक्ति है 'बहुलीकरण' अर्थात् थोड़े को बहुत बनाना। यज्ञ में होमा हुआ जरा-सा पदार्थ वायुभूत होकर समस्त विश्व में फैल जाता है। पानी के ऊपर जरा-सा तेल डाल देने से पानी की सारी सतह पर फैल जाता है। तनिक सा विष सारे शरीर में फैल जाता है। उसी प्रकार साधक का शरीर, मन्त्रोच्चार एवं साधन में काम आने वाले अंग, जरा से होते हैं पर उनके घर्षण से उत्पन्न शक्ति, दियासलाई से निकलने वाली चिनगारी की तरह नगण्य होते हुए भी दावानल बन जाने की सामर्थ्य से ओत प्रोत रहती है। एक व्यक्ति की मन्त्र साधना अनेक व्यक्तियों को तथा पदार्थों को परमाणु जीवाणुओं को प्रभावित करती है तो यह बहुलीकरण शक्ति ही काम कर रही होती है।

चौथी 'आयातयामता शक्ति, किसी विशेष क्षमता सम्पन्न व्यक्ति द्वारा विशेष स्थान पर, विशेष व्यक्ति की सहायता से, विशेष उपकरणों के सहारे, विशेष विधि-विधान के साथ मन्त्रोपासना करने पर विशेष शक्ति उत्पन्न होती है। विश्वामित्र और परशुराम ने गायत्री मन्त्र की साधना, विशेष प्रयोजन के लिए, विशेष विधि-विधानों के साथ की थी और उससे उन्होंने अभीष्ट परिणाम भी प्राप्त किये। दशरथ जी का पुत्रेष्ठि यज्ञ वशिष्ठ जी पूरा न करा सके तब शृंगी ऋषि ने उसे सम्पन्न कराया यह शृंगी ऋषि की अयातयामता शक्ति ही थी।

मन्त्र साधक का शरीर संयमी और मन एकाग्र होना चाहिए। बिखरती शक्तियों वाला साधक छूँछ होता है और वह मन्त्र तेज को अपने गर्भ में धारण नहीं कर सकता। रुग्ण स्त्री को गर्भपात होते रहते हैं वह स्वस्थ बालक को जन्म नहीं दे पाती। यही गति असंयमी साधक की होती है। महाभारत की कथा है कि अश्वत्थामा और अर्जुन ने मन्त्र चालित 'सन्धान अस्त्र' छोड़े। उनकी भयंकरता को देखकर व्यासजी बीच में आ खड़े हुए और दोनों से अपने अस्त्र वापस कर लेने को कहा। अर्जुन ने ब्रह्मचारी होने के कारण वापिस कर लिया पर अश्वत्थामा असंयमी होने के कारण असफल रहा।

शतपथ का एक उपाख्यान है नृमेध और यरुच्छेप में विवाद हुआ कि दोनों में कौन सफल मान्त्रिक है। नृमेध के कण्ठ से धुँआ भर निकला पर यरुच्छेप ने मन्त्रोच्चार करके गीली लकड़ी में अग्नि प्रकट कर दी। उस पर यरुच्छेप ने कहा तू मन्त्रोच्चार भर जानता है, मैंने उसकी आत्मा का साक्षात्कार किया है।

कौत्स मुनि ने मन्त्रों को अनर्थक माना है। अनर्थक का अर्थ यह है उन्हें अर्थ को नहीं ध्वनिप्रवाह को, शब्द गुंनथन को महत्व दिया जाना चाहिए। ह्रीं, श्रीं, क्लीं, ऐं आदि बीज मन्त्रों के अर्थ से नहीं ध्वनि से ही प्रयोजन सिद्ध होता है। नैषध चरित्र के १३ वें सर्ग में उसके लेखक ने इस रहस्य का और भी स्पष्ट उद्घाटन किया है। संगीत का शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य पर जो असाधारण प्रभाव पड़ता है उससे समस्त विज्ञान जगत परिचित है। एक नियत गति से शीशे के गिलास के पास ध्वनि की जाय तो वह टूट जायगा। पुलों पर चलते हुए सैनिकों को कदम मिलाकर चलने की ध्वनि नहीं करने दी जाती। उस तालबद्ध ध्वनि से पुल गिर सकता है। इंडेन में 'स्टेन हैन्ज' के पुराने अवशेष मध्यम स्वर बजने पर काँपने लगते हैं। इसलिये वहाँ न केवल बजाना वरन् गाना भी निषिद्ध है क्योंकि वह तालबद्धता उन अवशेषों को गिरा सकती है। इसी ध्वनि विज्ञान के आधार पर मन्त्रों की रचना हुई है। उनके अर्थों का उतना महत्व नहीं। इसी से कौत्स मुनि ने उन्हें 'अनर्थक' बताया है।

अग्नि शक्ति का केन्द्र है। अग्नि का प्रयोग सीखकर ही मनुष्य इतना समर्थ बना है। अग्नि के भय से हिंसक सिंह, व्याघ्र तक भागते हैं। अग्नि से रेल चलती है, जहाज उड़ते हैं, कारखाने चलते हैं, अस्त्र चलते हैं, भोजन पकता है, बिजली बनती है। यदि अग्नि का अस्तित्व न हो तो जीवन ही न रहे। अग्नि का ही दूसरा नाम जीवन है। इसलिए मन्त्र साधना में अग्नि का उपचार सम्बद्ध किया जाता है। यज्ञशालाओं में अखण्ड अग्नि, जप में अखण्ड दीपक तथा अनुष्ठान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की पूर्ति कर अनुपातिक यज्ञ करने का विधान है। विभिन्न पर्वों तथा धर्मानुष्ठानों के अवसर पर अग्निहोत्र की आवश्यकता इसीलिए है कि उस सन्दर्भ में प्रयुक्त होने वाली मन्त्र शक्ति अपना समुचित चमत्कार दिखा सके।

मन्त्र शक्ति और देवसत्ताओं का तारतम्य

मन्त्र शब्द की व्युत्पत्ति कई प्रकार से होती है। निरुक्त में 'मन्त्रा मनात्' मन से संचारित होने वाली प्रक्रिया को मन्त्र कहा गया है। 'मन्त्रि गुप्त भाषणे' रहस्यमय सम्भाषण को मन्त्र कहते हैं। शतपथ ब्राह्मण में 'वाग्वै मन्त्रः' परिष्कृत वाणी से उच्चारित शब्द शृंखला को मन्त्र बताया गया है।

मनुष्य सत्ता दो भागों में विभक्त है—शरीरगत और मनोगत। शरीर क्रिया करता है और मन चिन्तन। दोनों से ही अपने-अपने ढंग के विद्युत-प्रवाह निसृत होते हैं। शरीर में घर्षणात्मक क्रिया होती है। हृदय की धड़कन, नाड़ी समूह में रक्ता का आवागमन—फेफड़ों द्वारा श्वांस का ग्रहण विसर्जन—मांस—पेशियों का आकुंचन-प्रकुंचन एक प्रकार का घर्षण उत्पन्न करता है और उन हलचलों से जो गर्मी उत्पन्न होती है उसे शरीरगत ऊर्जा कह सकते हैं। इसी के बल पर शरीर यन्त्र विभिन्न प्रकार के क्रिया-कृत्य करने में समर्थ होता है। इसे घर्षणपरक विद्युत कहा जाता है।

मस्तिष्क से चुम्बकीय विचार तरंगें उत्पन्न होती हैं। तालाब में ढेला फेंकने पर लहरें उठती हैं और वे धीरे-धीरे बहती हुई तालाब के अन्तिम छोर तक जा पहुँचती हैं । यह विश्व-ब्रह्माण्ड भी एक प्रकार का तालाब है किन्तु है गोल। इसलिए इसका अन्तिम छोर भी वही स्थान होता है जहाँ से संचरण क्रिया आरम्भ हुई थी। मस्तिष्क से ताप—प्रकाश की तरह ही विचारों की विद्युत तरंगें निकलती हैं। वे आगे-आगे बहती बढ़ती चली जाती हैं। अन्ततः वे एक पूरी परिक्रमा करने के बाद अपने मूल उद्गम स्थान पर शब्द वेधी बाण की तरह लौट आती हैं।

यह यात्रा चुपचाप नहीं होती रहती, वरन् इनकी चुम्बकीय शक्ति बहुत कुछ ग्रहण विर्सजन भी करती चलती है। यह तरंगें जिस क्षेत्र से सम्पर्क बनाती हैं उसे प्रभावित करती और स्वयं प्रभावित होती हैं । यह प्रभाव प्रक्रिया सजातीयता के आधार पर चलती है। समान वर्ग के पदार्थ अथवा प्राणी एक दूसरे से प्रभावित और आकर्षित होते हैं। पालतू पक्षी उड़ा दिया जाय तो वह अपनी ही जाति के पक्षियों के झुण्ड में जा मिलेगा। अन्य जाति के पक्षियों की उपेक्षा करता हुआ वह सजातीयों को ढूँढ़ेगा और वे जहाँ भी मिलें, वहीं अपने रहने का प्रबन्ध करेगा। विचार भी एक प्रकार के पक्षी हैं। वे अपनी ही जाति के विचार प्रवाहों के साथ रिश्ता बनाते और आदान-प्रदान करते हैं।

कुछ जाति के पक्षी ऋतु परिवर्तन का लाभ लेने के लिए अपने जन्म-स्थान से बहुत दूर उड़ जाते हैं किन्तु समय पर फिर लौटकर अपनी जगह वापस आ जाते हैं। विचारों की मात्रा भी इसी प्रकार की है। उनकी तरंगें मस्तिष्क से उठती हैं। वे विश्व भ्रमण के लिए निकलती हैं। इस यात्रा में वे पुण्य बटोरती और दान-पुण्य करती तीर्थ-यात्रा जैसी रीति-नीति अपनाती हैं। भले या बुरे विचार घर से निकलते हैं और अपने साथ सजातीयों का एक पूरा झुण्ड लेकर अपने उद्गम स्थान पर अपेक्षाकृत अधिक बलवान होकर लौट आते हैं। इस प्रक्रिया के अनुसार मनुष्य अपनी विचार सम्पदा से—जहाँ असंख्यों को लाभान्वित करता है वहाँ उनसे बहुत कुछ प्राप्त भी करता है। इस प्रकार अपने विचार वस्तुतः दूसरों को कम और अपने को अधिक प्रभावित करते हैं। खेत में बोया हुआ बीज बढ़ता और फलता है। उस फसल का लाभ बोने वाले किसान को ही मिलता है। अपने मस्तिष्क रूपी खेत में हम विचारों के बीज बोते हैं और उनकी फसल स्वयं ही काटते हैं। अशुभ विचारों से दूसरों को भी हानि होती है किन्तु वापस लौटने पर उनकी बढ़ी-चढ़ी घातक शक्ति की हानि अपने को ही अधिक भुगतनी पड़ती है। यह बात सद्विचारों के सम्बन्ध में भी है। वे भी सारा वातावरण प्रभावित करते हैं, जिधर से गुजरते हैं, उधर ही सुगन्धित शीतल वायु जैसा उत्तम प्रभाव छोड़ते हैं और अन्ततः अनेक गुने परिपुष्ट होकर जब लौटते हैं तो उसका लाभ सृजेता को ही मिलता है। गाय सबेरे जंगल में चरने जाती है और शाम को वापस लौटती है इस वापसी में घास से पेट भरने के साथ-साथ थनों में दूध भरकर भी घर आती है। विचार दुधारू गाय की तरह हैं वे जहाँ से निकलते हैं वहाँ मात्र विचार होते हैं, पर परिभ्रमण के बाद उनकी स्थिति काफी सुदृढ़ हो चलती है। तदनुसार उसका परिणाम भी उद्गम स्थल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को मिलता है। बादल समुद्र से उठते हैं। दूर देशों में बरसते हैं। वर्षा का जल नदी-नालों में होकर-समुद्र में फिर वापिस जा पहुँचता है, पर इस वापिसी में पृथ्वी में रहने वाले अनेक खनिज पदार्थ भी उसके साथ घुले होते हैं। उन्हीं के कारण समुद्र का पानी क्रमशः अधिक खारी और अधिक गाढ़ा होता जाता है। मस्तिष्क रूपी समुद्र, विचार रूपी बादलों को आकाश में उड़ाता है, वे लौटते हैं तो सजातीय अनुभवों एवं अनुदानों की पोटली अपनी अभिनव कमाई के रूप में अपने साथ लादे हुए होते हैं।

शब्द के साथ ऊर्जा लिपटी होती है। यदि कोई हलकी-सी ध्वनि लगातार एक वर्ष तक जारी रखी जाय और उसकी ऊर्जा संग्रहीत रखी जाय तो उससे इतनी गर्मी मिलेगी जो एक कटोरी पानी को खौला सके।

शरीर द्वारा शब्द की उत्पत्ति का मोटा विवरण यह है कि बाहर की वायु अन्तर के अमुक स्नायु संस्थानों से टकराती है और उस आघात से शब्द उत्पन्न होता है। इस उत्पत्ति में भी शारीरिक अवयवों की हलचल अपने आप नहीं हो जाती वरन् मन का पूरा नियन्त्रण रहता है। बाहरी हवा का कितना दबाव किस अवयव पर किस उतार-चढ़ाव के साथ पड़े और उससे किस स्तर का ध्वनि प्रवाह निसृत हो, किन्हीं शब्दों को सौम्य, आवेशयुक्त, अपेक्षित गद्य अथवा पद्य शैली में भिन्न-भिन्न प्रकार से बोला जा सकता है। यह भिन्नता मन जनित है। जब हम चाहते हैं तब इच्छा शक्ति द्वारा नियोजित वे हलचलें आरम्भ होती हैं जो बाहरी वायु को खींचने भीतरी से टकराने— स्नायुगत हलचल उत्पन्न होने और ध्वनि प्रवाह चल पड़ने तक की लम्बी किन्तु क्षण भर में सम्पन्न होने वाली क्रिया का उपक्रम बन जाती हैं ।

शब्द में शरीरगत घर्षण विद्युत का सामावेश होता है क्योंकि वह अवयवों की हलचल से उत्पन्न होता है। किन्तु साथ ही मन का सहयोग भी उसमें पूरी तरह जुड़ा होता है। इसलिए धारावाहिक विद्युत का भी सहज समन्वय हो जाता है। इसलिए शब्द में उभय-पक्षीय विद्युत संचार जुड़े हुए देखे जा सकते हैं। सहज धकलने में मात्र शारीरिक हलचल ने ही काम किया उसमें घर्षण विद्युत ने ही काम किया, किन्तु यदि किसी को क्रोधपूर्वक हलका सा भी चाँटा मारा गया है तो उसकी प्रतिक्रिया कहीं अधिक उग्र होगी क्योंकि सहज धकेल में उतना विद्युतीय प्रवाह नहीं था जितना कि आवेशयुक्त चाँटे में । उसमें शरीर और मनोगत विद्युत का दुहरा रोल रहा इसलिए आघात न केवल शरीर पर ही लगेगा, वरन् मनः क्षेत्र को भी तिलमिला देगा। वायु के भीतर एक और सूक्ष्म तत्व है जिसे 'ईथर' कहते है। शब्द के कम्पन इस ईथर में ही होते हैं। ईथर के कम्पन्न उसकी सूक्ष्मता के अनुरूप अत्यधिक तीव्र होते हैं। उनकी गति भी उसी हिसाब से तीव्र होती है। प्रकाश कम्पनों की गति एक सैकिण्ड में एक लाख छियासी हजार मात्र जबकि ईथर में शब्द के कम्पन एक सैकिण्ड में २३०५७९३००९२ १३६९३९५२ तक पाये जाते है। हमारे कान इतने तीव्र कम्पनों को पकड़ नहीं सकते । उनकी रचना बहुत सीमित ध्वनियों को ही सुन सकने योग्य हुई है। वे मात्र ३२७७० गति के कम्पन सुन सकते हैं। मनुष्य के कानों की पकड़ से मन्द और तीव्र असंख्य ध्वनियाँ इस आकाश में प्रवाहित रहती हैं, पर अपनी सीमित श्रव्य शक्ति के कारण वह सुन नहीं सकते ।

शब्द के कम्पन अपनी चरम स्थति पर पहुँचकर 'क्ष' किरणें एक्स-रेज के रूप में परिणत हो जाती हैं। तब उनकी गति एक करोड़ मील प्रति सैकिण्ड होती है ।

कम्पन कभी नष्ट नहीं होते वे भी अमर होते हैं। वे कुछ समय पर तो आकाश में उड़ते हैं, पर धीरे-धीरे पृथ्वी की आकर्षण शक्ति से खिंचकर नीचे उतरते आते हैं और धरती सतह पर परत की तरह जमते चले जाते हैं। यहाँ भी वे मृत नहीं बन जाते किन्तु सक्रियता जारी रखते हैं। प्रभावित होने और प्रभावित करने का आदान-प्रदान इस स्थिति में चलता रहता है। इस क्षमता का मन्द अथवा तीव्र होना इस बात पर निर्भर रहता है कि विचारकर्त्ता का व्यक्तित्व कितना विद्युतीय था और उसमें किस स्तर की संकल्प शक्ति का प्रयोग हुआ।

सजातीयों का एकीकरण प्रकृति का नियम है। भू-गर्भ में खदानें इस सिद्धान्त पर बनती और बढ़ती हैं कि अमुक स्थान पर एकत्रित-खनिज एक संयुक्त चुम्बकत्व उत्पन्न करते हैं । उसका प्रभाव जितने क्षेत्र में होता है वहाँ से उसी जाति के बिखरे कण खिंचते हुए चले आते हैं और उस जमाव में सम्मिलित होने लगते हैं। उस प्रकार खदान का आकार बढ़ता है साथ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही उसका चुम्बकीय क्षेत्र भी । जितनी बड़ी खदान उतना बड़ा चुम्बकत्व और फिर उतने ही सुदूर क्षेत्र तक उसकी आर्कषण प्रक्रिया का प्रभाव । यही है वह आधार जिसके स्हारे धातु आदि की खदानें धीरे-धीरे अपना आकार बढ़ाती रहती हैं ।

शब्द, ताप आदि की तरह विचार भी एक प्रकार का पदार्थ ही है । कम्पन और गति के साथ जो वस्तु जुड़ी वह पदार्थ बनी । सूक्ष्मता, स्थूलता का अन्तर तो बना ही रहेगा । इससे सत्ता में कोई अन्तर नहीं आता । खदानों की तरह समर्थ गुच्छकों के रूप में विकसित होते रहते हैं । इनका बहुत प्रभाव होता ह। धर्म, सम्प्रदायों के अपने विचार गुच्छक हैं । राजनैतिक क्षेत्र-में साम्यवाद, पूँजीवाद, प्रजातन्त्रवाद, अधिनायकवाद के बड़े प्रचण्ड विचार गुच्छक हैं और वे जिन मस्तिष्कों में अनुकूलता पाते हैं उन्हीं पर चढ़ दौड़ते हैं । अध्यात्म की भाषा में इन्हें 'अधि देवता' कहा गया है ।

हर मन्त्र का एक अधि देवता माना गया है । उसकी अपनी आकृति और प्रकृति का वर्णन है । मन्त्र में शक्ति उसी से आती है और सिद्ध होने पर साधक को उसी से वरदान मिलता है । ध्यान साधना की सुविधा के लिए इन अधि देवताओं को मनुष्य की आकृति दी गई है और शस्त्रों, आभूषणों एवं वाहनों से अलंकृत किया गया है । इससे प्रतीत होता है कि वे कोई मनुष्य जैसे ही देव दानव स्तर के होंगे और मनुष्य की तरह खाते, सोते, बोलते और क्रुद्ध, प्रसन्न होते होंगे । अलंकारिक दृष्टि से इस प्रतिपादन में समझने-समझाने की सुविधा रह सकती है, पर यदि यथार्थता जाननी हो तो इन अलंकारों के पीछे छिपे हुए तथ्यों को जानना पड़ेगा ।

तात्विक दृष्टि से कुछ विशिष्ट प्रकार के विचार गुच्छकों को 'अधि देवता ' कहा जा सकता है । विशिष्ट अर्थात् जिनके पीछे मनस्वी लोगों का अनुमोदन, सघन निष्ठा का समन्वय, उनका कार्यान्वित होना जैसे आधारों का समन्वय । उदाहरण के लिए गायत्री महामन्त्र अति प्राचीन है । उसकी शब्द रचना का निर्धारण—अमुक स्तर के शक्ति कम्पन उत्पन्न कर सकने की विशेषता को ध्यान में रखकर किया गया है । मन्त्र में शब्दार्थ का कम और उसकी शक्ति उत्पादन क्षमता का महत्व अधिक होता है । गायत्री मन्त्र के पीछे अगणित अति मनस्वी लोगों की मानसिक श्रद्धा ऊर्जा सम्मिलित है । साधना—पुरश्चरण प्रक्रिया की असंख्य धाराएँ उसके साथ मिलती चली गई हैं । दैनिक उपासना के रूप में उसे अब तक अगणित व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त किया गया है । इससे उस दिव्य शक्ति की क्षमता युग-युगों से निरन्तर बढ़ती चली आई है और वह अधिदेवता अधिकाधिक परिपुष्ट होता चला आया है । गायत्री की शक्ति अन्य मन्त्रों से अधिक है । इस स्पष्ट तथ्य का कारण उसके अधिदेवता का अधिक शक्ति सम्पन्न होना है । गायत्री एक अधिदेवता भी है । उसका प्रतीक पूजन साधक को इस शक्ति प्रवाह के साथ संयुक्त करने में सहायक सिद्ध होता है । यहाँ यह ध्यान रखने योग्य है कि देवताओं की आकृतियों का निर्धारण, अमुक स्तर के विचार गुच्छकों की क्षमता का प्रतीकात्मक वर्णन ही है । यदि आकृति की वास्तविकता को स्वीकार करने न करने के झंझट में न पड़ा जाय तो साकारवादी और निराकारवादी और दोनों ही समान रूप से इस सृष्टि में चेतनात्मक शक्ति गुच्छकों के अस्तित्व का अनुभव कर सकते हैं ।

प्रत्येक वेद मन्त्र का एक देवता है । हर मन्त्र के साथ उसका परिचय विनियोग जुड़ा हुआ है । हर मन्त्र का एक छन्द—ऋषि और देवता होता है । इनकी व्याख्या ध्वनि प्रवाह—अनुमोदन परम्परा और ऊर्जा गुच्छक के रूप में की जा सकती है । छन्द अर्थात् मन्त्र शृंखला के द्वारा उत्पन्न होने वाले कम्पनों का प्रवाह स्तर ऋषि अर्थात् वह मान्यता और भावना जो उसके साथ चिरकाल से एक परंपरा बनकर चली आ रही है । देवता अर्थात छन्द और महर्षि तत्वों का खाद पानी पाकर परिपुष्ट हुआ मन्त्र बीज का परिपुष्ट वट वृक्ष । इतने आधार हर मन्त्र के साथ जुड़े होते हैं । इसलिए उपासना काल में इन सब को पूजा प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित किया और उनका ध्यान किया जाता है । यह देव सान्निध्य की तथ्य पूर्ण मनो-वैज्ञानिक प्रक्रिया है ।

मन्त्र जप शब्द शक्ति का अद्भुत चमत्कार

मन्त्र की परिभाषा "द्रयामल" में इस प्रकार की गई है:—

मननात् त्राणनाच्चैव मद्रू पस्यावबोधनात् ।
मन्त्र इत्युच्यते सम्यक् मदाधिष्ठानत प्रिये ।

अर्थात्—जिसका मनन करने से संसार का यथार्थ स्वरूप विदित हो, भव बन्धनों से मुक्ति मिले जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सफलता के मार्ग पर अग्रसर करे उसे "मन्त्र" कहते हैं।

इसी प्रकार जप का अर्थ है—

जकारो जन्म विच्छेद : प्रकार पाप नाशक : तस्माज्जय इति प्रोक्तो जन्म पाप विनाशक :

(यम)

"ज" का अर्थ है जन्म का रुक जाना। "प" का अर्थ है पाप का नाश होना। इसीलिए पाप को मिटाने वाले और पुनर्जन्म प्रक्रिया रोकने वाले को जप कहा है।

इन दो श्लोकों में मन्त्र जप की परिभाषा पर ध्यान देने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि मन्त्रजप की फलश्रुति यह है कि साधक को सृष्टि के यथार्थ का ज्ञान हो जाता है। वह इस बात को भलीभाँति समझ लेता है कि आत्मापरम तेजस्वी—ईश्वरीय महिमा और गरिमा से ओतप्रोत अविनाशी तत्व ही वर्तमान दीन-हीन अवस्था में घसीट लाने के कारण जन्म जन्मान्तरों के पाप हैं। निरन्तर जप उन पापों का परिमार्जन कर अन्तर्रात्मा को इतना शुद्ध पवित्र और निरन्जन बना देता है जिससे साधक जन्म मरण के चक्र में न पड़कर अमरत्व का चिरआनन्द प्राप्त करता है।

साधारण दृष्टि से विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि मन्त्र और जप की इन परिभाषाओं के पीछे मात्र मनोवैज्ञानिक दिशा निर्देश है पर यदि "गति" और "शब्द" के विज्ञान पर दृष्टि डाली जाये तो ज्ञात होगा कि किसी भी मन्त्र के बारे में जिस शक्ति की कल्पना की जाती है वास्तव में वह जप के कारण परिपोषण शक्ति का उद्भव है यदि इस शक्ति का समुचित उपयोग करने की जानकारी हो जाय तो साधक वस्तुत: उस तरह के चमत्कार प्राप्त कर सकता है जो हर किसी के लिए किसी भी स्थिति में सम्भव नहीं होते।

"डायनमो" विज्ञान के ज्ञाता जानते हैं कि मोटर के निरन्तर घूर्णन के कारण ही विद्युत शक्ति का संचार होने लगता है। यदि डायनमो का घूमना बन्द हो जाय उसी क्षण विद्युत का उत्पादन भी रुक जावेगा । सृष्टि का प्रत्येक ग्रह नक्षत्र अधर आकाश में लटका हुआ है। यह बात आश्चर्यचकित कर देने वाली है कि पृथ्वी के ऊपर एक नन्हा सा ढेला भी फेंक दिया जाय तो वह भी अधर में लटका नहीं रह जाता। फिर इतने भीमकाय नक्षत्र आकाश में किस तरह लटके रह जाते हैं । यह सर्वसाधारण के लिए अचम्भे की बात हो सकती है। किन्तु विज्ञान के विद्यार्थी के लिए वह शोध का विषय होता है, आश्चर्य का नहीं। अपनी जिज्ञासा के आधार पर ही वैज्ञानिकों ने यह जान लिया है कि तेजी से गोलार्ध के घुमाव से एक प्रकार की शक्ति पैदा होती है जिसे "सेन्ट्रीफ्युगल फोर्स" कहते हैं। यह शक्ति ही उन्हें निर्धारित अक्ष और कक्षा में बाँधकर रखती है। पौराणिक कथा है कि एक बार हिरणाक्ष नामक दैत्य ने इस रहस्य को जान लिया था इस शक्ति का जहाँ केन्द्र बनता है उसे नियंत्रित कर लिया जाये तो नक्षत्र को कहीं का कहीं ले जाया जा सकता है। अपने इसी ज्ञान के कारण वह समूची पृथ्वी को चुरा ले गया था। कथानक में इतना सत्य है यह अन्य विषय है किन्तु उसे इस घुमाव की शक्ति के मर्म का पता निश्चित रूप से चलता है। यदि वह न हो तो संसार एक भी दिन तक चल नहीं सकता ।

गति की यह शक्ति ही नहीं इस तेज घुमाव से एक प्रकार की ध्वनि भी गुंजित होती है। जिसे "रोर" कहते हैं। यह गुंजन प्रत्येक ग्रह-नक्षत्र में अलग-अलग है और उसकी एक सम्मिलित ब्रह्माण्ड ध्वनि बनती है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि सृष्टि की अधिकांश चेतना का नियमन और नियन्त्रण इसी के द्वारा होता है। यदि यह शक्ति न होती तो सर्वत्र नीरवता, निस्तब्धता और अन्धकार का साम्राज्य होता।

प्रत्येक घुमाव में ऐसी ही परिपेषण शक्ति और गुंजन का संचार होता है। मेले-ठेलों में बच्चों को झुलाने वाली एक चकरी सामान्य अवस्था में २०-२५ फुट का दायरा पकड़ लेती है। फिर भी झूलने वाले बच्चों को गिरने के भय की अपेक्षा एक प्रकार की गुदगुदी और आनन्द आता है। यह इस "सेन्ट्रीफ्यूगल" शक्ति का ही चमत्कार है कि रस्सी से बँधे लोटे में पानी भरकर उसे तेजी से गोलाई में घुमाया जाये तो मुँह नीचे हो जाने पर भी पानी गिरता नहीं। गाँव के किसान चिड़ियों को भगाने के लिये 'गोफन' का प्रयोग करते हैं जिससे सामान्य गति की अपेक्षा घुमाकर फेंकने के कारण पत्थर कई गुना अधिक दूर तक सटीक मार करने में समर्थ होता है। अभी पिछले दिनों दिल्ली में भयंकर चक्रवात आया जिसने वहाँ कुहराम मचा दिया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह और कुछ नहीं वायु का एक गोलाई में तीव्र गति से घूमना मात्र ही था। मन्त्र जप का भी सम्बन्ध ठीक इसी प्रकार गोलाई में तेज घुमाव से है। उस कारण मन्त्रों में गुम्फित शब्दों का एक ऐसा सर्किल ऐसा चक्रव्यूह बनता है जो एक निश्चित गोलाई में चक्कर काटकर जप कर्ता के पास लौट आता है पर लौटने के साथ मन्त्र में सन्निहित विचारों भावनाओं की एक इतनी सशक्त फौज अपने साथ लेकर आता है जिसे मन्त्र के देवता की प्रेरणा अदृश्य दैवी सहायता अथवा मन्त्र की शक्ति का चमत्कार कुछ भी कहा जा सकता है। पर होता यही है कि धीरे धीरे उपासक के जीवन का नियमन यह शक्ति ही करने लगती है। व्यक्तित्व के अनुरूप, साधक की श्रद्धा, निर्मलता, निश्छलता जितनी बढ़ी-चढ़ी होती है, यह प्रभाव उतना ही स्पष्ट होता है मन्त्र जप कुछ ही दिनों के बाद साधक को विलक्षण स्वप्न पूर्वाभास, अदृश्य सहायतायें आदि उसी शक्ति में चेतना की घुलनशीलता का परिणाम होता है यह स्थिति जितनी प्रगाढ़ होती है। प्रतिफल उतने ही स्पष्ट और आनन्दायक तथा स्फूर्ति प्रदान करने वाले होते हैं।

गायत्री मन्त्र को ही लें तो उसमें एक और विशेषता यह है कि उसमें परमात्मा से सबुद्धि, ज्ञान और प्रकाश की कामना की गई है। यह विशेषता उसके २४ अक्षरों के शरीर के २४ महत्वपूर्ण स्थानों की प्रतिध्वनि से उत्पन्न विशेष "सर्किल" से इतर होती है। जिससे साधक पर तत्काल दोहरी प्रतिक्रिया प्रारम्भ होती है अर्थात् मन्त्र का सृष्टि के रहस्यों के उद्घाटन का प्रभाव, जप से पापों के क्षय और पुनर्जन्म से मुक्ति के प्रभाव के साथ साथ सांसारिक श्री समृद्धि शक्ति और साधनों का भी लाभ इस तरह मिलने लगता है। जिससे न तो साधक संसार में भटकता है और न सांसारिक वैभव में आसक्त होता है। यह लाभ किसी और मन्त्र में न होने से गायत्री मन्त्र को भारतीय संस्कृति में सर्वोपरि महत्ता प्रदान की गई है।

प्रारम्भ में ही मन्त्र की परिभाषा में यह बताया गया है कि मन्त्र वह है जो सृष्टि के यथार्थ को उजागर करता है, गायत्री मन्त्र के नियमपूर्वक जप से उत्पन्न शब्द शक्ति का चक्रवात अनन्त ब्रह्माण्ड की परिक्रमा करता है। इस यात्रा में जो लहरें या स्पन्दन आगे बढ़ते हैं वे परमात्मा से अभियाचित धियः तत्व की भावना से ओत-प्रोत रहते हैं। यह शब्द शक्ति ब्रह्माण्ड की गोलाई में परिक्रमा करके जब लौटती है तो व्यक्ति के सतोगुणी जीवन के अनेक लाभ पूर्ववर्ती सफल व्यक्तियों के आकाश में घूम रहे इतिहास उनकी विचारणायें प्रेरणायें मन्त्र जप के साथ परिप्रेषित भाव तंरगों के साथ लौटकर साधक के मस्तिष्क से टकराने लगती हैं। गायत्री उपासक के मन में कभी-कभी एकाएक ऐसे विचार पैदा होते हैं जो किसी संकट से बचाने, सफलता के लिये गूढ़ प्रेरणा देने वाले होते हैं। स्वयं उपासक समझ नहीं पाता कि यह विचार कहाँ से आ गया पर ध्वनि और मन्त्र का यही विज्ञान उसका कारण होता है जिससे उपासक को विलक्षण स्वप्न विलक्षण ध्वनियाँदिक दर्शन, पुलक और प्रकाश के दर्शन होते हैं। इस प्रक्रिया में यदि साधक की अपनी मनःस्थिति इस तरह की हो कि वह बुराइयों को संकल्पपूर्वक निकाल फेंकने और मन को पारमार्थिक क्रियाकलापों में लगाकर रखने में शिथिल न पड़े तो वह कुछ ही समय में गायत्री उपासना के चमत्कारी लाभों का अनुभव करने लगता है।

जप मन्त्र में सन्निहित भावनाओं के प्रभाव विराट् सृष्टि के ऐसे रहस्यों का उद्घाटन करने में सक्षम है जो सामान्य कल्पना से परे हों। यदि ऐसा रहा होता तो उच्च शिक्षित वर्ग भी उस तरह की आध्यात्मिक अनुभूतियों से स्वतः ही ओत-प्रोत हो गया होता जबकि देखा यह गया है कि उच्च शिक्षित और विचारक कहे जाने वाले लोग भी सांसारिक माया-जाल से मुक्त नहीं हो पाते जब कि सांसारिक माया-जाल में फँसे गायत्री उपासकों में कम शिक्षित होने पर भी उच्च आत्मिक शक्ति प्रादुर्भूत कोई भी देख सकता है।

मन्त्र में इतनी शक्ति होने पर भी उसकी वैज्ञानिकता को भूलना नहीं चाहिये। विज्ञान का अर्थ है सिद्धान्त का गणितीय होना। इसे निश्चित नियम-बद्धता भी कह सकते हैं। इसमें साधक की आन्तरिक निर्मलता के साथ साथ प्रतिदिन नियत समय जप करना भी आवश्यक है। नियम समय पर जप के साथ जप का समस्वर होना भी आवश्यक है। कभी जल्दी, कभी धीरे-धीरे, कभी आलस्य में, कभी सजग होकर किये गये अस्त व्यस्त जप से परिणाम तो निकलेंगे पर अस्पष्ट और उलझे हुये होंगे। माला से जप का कारण यही है कि एक मन्त्र जप से प्रत्येक दूसरे मन्त्र जप में नियत अन्तर रहे कम अधिक नहीं। सामान्यतः एक घण्टे में १० या ११ माला का जप होता है अतएव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नियम-बद्धता को घड़ी के साथ भी साधा जा सकता है पर मन्त्र जप का परिपूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिये प्रतिदिन नियत समय, नियत स्थान में, नियमित रूप से जप करना आवश्यक होता है। परिस्थितिवश स्थान परिवर्तन करना पड़े तो भी जहाँ तक सम्भव हो समय की नियमितता का पालन तो करना ही चाहिये।

विधिपूर्वक जपे गये मन्त्र से उपासक की अनूभूतियाँ, उसका चिन्तन इतना विस्तृत होता है कि जिससे संसार की यथार्थता समझ में आ जाती है। भौतिक लाभ तो ऐसे हैं जैसे तीर्थयात्रा जाते समय मार्ग में पड़ने वाले किसी नगर से आवश्यक वस्तुयें भी खरीद ली जायें। उनका महत्व नगण्य जैसा ही रहता है। उससे प्रसन्नता तो हो सकती है पर मूल लाभ आत्मा की ईश्वरीय चेतना में परिणति ही है। जिसे यह लाभ मिल जाता है वह वस्तुत: जीवनमुक्त हो जाता है। उसका जीवन सचमुच धन्य हो जाता है।

गायत्री का देवता सविता चेतना-सूर्य है। वह ब्रह्माण्ड व्यापी चेतना-ऊर्जा का उद्गम स्रोत है। उसकी चित्-शक्ति अनन्त अन्तरिक्ष के अज्ञात प्रदेश से प्रतिक्षण पृथ्वी पर बरसती रहती है। इन चैतन्य-ऊर्जाओं की अनुभूति का माध्यम है—श्रद्धा-तत्व। इनसे सम्पर्क की सशक्त प्रक्रिया है—भावपूर्ण स्मृति सातत्य। मन्त्र साधना इसी प्रक्रिया का एक अंग है जिसमें ध्वनि विज्ञान श्रद्धा-शक्ति तथा चेतना विज्ञान का समन्वय है। शक्ति स्तर पर मन्त्राराधन में प्रथम आधार है इच्छा-शक्ति की तीव्रता। दूसरा आधार है ध्वनि विज्ञान। यह हुआ व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले उद्योग का आधार, इन दोनों से ऊपर हैं चेतना विज्ञान के सूक्ष्म नियम! समष्टि-व्यापी चेतना का ही एक अंश है व्यक्ति। किन्तु अपनी बहिर्मुखता में भटका मनुष्य उस समष्टि-चेतना से सम्पर्क के सूत्र भूल जाता है या वे सूत्र छोड़ देता है। उन सूत्रों को पुन: सक्रिय बनाना ही साधना है। मन्त्र-शक्ति भी उनमें से एक सूत्र है।

मन्त्र-शक्ति का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए साधक को सर्वप्रथम आंतरिक धुलाई करनी होती है। परिष्कृत अन्त:करण में ही मन्त्र-शक्ति के प्रभाव से समष्टि-चेतना अपना दिव्य प्रकाश फेंकती है। अत: हृदय की शक्ति का मन्त्र-साधना में सर्वोपरि महत्व है। क्योंकि वह चेतना विज्ञान का उपकरण है। यहाँ हृदय से तात्पर्य रक्तसंचार करने वाली उस थैली से नहीं है जो अहर्निशि धड़कती और कण-कण को पोषण प्रदान करती रहती है। शरीर विज्ञान में 'हृदय' रक्त संचार में संलग्न, मुट्ठी भर आकार वाली थैली को कहा जाता है। किन्तु चेतना विज्ञान क़ा उपकरण-हृदय है भाव संस्थान। भाव संवेदना श्रद्धा-संवेग का जितना उच्चस्तरीय समावेश मन्त्र साधना में होता है, उतना ही सत्परिणाम सामने आता है।

भावना-श्रद्धा की शक्ति के साथ उत्पन्न ध्वनि ही मन्त्र है। जिस मन्त्र का जो देवता होता है, भावश्रद्धा का उसी से सम्पर्क होता है। इस सम्पर्क में ध्वनि-विज्ञान के सिद्धांत भी अपनी भूमिका निभाते हैं। ध्वनि एक प्रत्यक्ष शक्ति है। अणु-शक्ति, विद्युत-शक्ति, ताप-शक्ति आदि की ही तरह उसका भी उपयोग सम्भव है। शब्द और ध्वनियाँ वस्तुत: कम्पन-प्रवाह की स्थिति विशेष हैं जो इच्छापूर्वक उत्पन्न किये जाते हैं।

इच्छा से गति तथा गति से तरंगें उत्पन्न होती हैं। ये ध्वनि कम्पन वायु के भीतर रहने वाले एक सूक्ष्म तत्व 'ईथर' में होते हैं। ईश्वर तत्व के परमाणु अत्यन्त सूक्ष्म और अति सम्वेदनशील होते हैं तथा एक सैकिण्ड में ३४ अरब तक कम्पन उत्पन कर सकते हैं। यद्यपि हमारे कान एक सैकिण्ड में ३२ से ६८ तक ही कम्पन सुन समझ सकते हैं। ३२ से कम नहीं और ६८ से अधिक नहीं। जब ईथर तत्व के परमाणुओं द्वारा उत्पन्न कम्पन चरम सीमा पर अर्थात् ३४ अरब के प्रति सैकिण्ड के आस-पास पहुँचते हैं तो उनसे एक अखण्ड प्रकाश की किरणें प्रवाहित होने लगती हैं। यही प्रकाश किरणें एक्स-रेज कहलाती हैं । ये किरणें अद्भुत गतिशील होती हैं, एक सैकिण्ड में ये प्राय: एक करोड़ मील चल लेती हैं। इसी आधार पर रेडियो, टेलीविजन बने हैं। वायु के कम्पन नष्ट हो जाते हैं, किन्तु ईथर के कम्पन कभी भी नष्ट नहीं होते। हाँ, पुराने होने पर वे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की सतह पर जाकर स्थिर हो जाते हैं। वहाँ वे बलिष्ठ हो जाने पर अपने समान धर्मी अन्य कम्पनों को अपनी और खींचते हैं और दुर्बल होने पर समान धर्मी किन्तु शक्तिशाली अन्य कम्पनों की ओर खिंच जाते हैं। सभी कम्पन-समूह एक विशेष ध्वनि वर्ग का निर्माण करते हैं। यह ध्वनि वर्ग अपने अनुरूप वर्ग के साथ तीव्रता से प्रतिक्रिया करता है। एक से ध्वनि-समूह पर्यावरण में एक प्रकार का दबाव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रभाव उत्पन्न करते हैं। प्राचीन ध्वनि कम्पन संघनित रूप में गुरुत्वाकर्षण सतह में एक विशेष दबाव का निर्माण करते हुए विद्यमान हैं।

इस प्रकार संघ शक्ति के आधार पर ये कम्पन समूह एक चुम्बकत्व का सृजन करते हैं। यह चुम्बकत्व एक चेतना जैसा होता है, जो समान धर्मी चेतना वाले मनुष्यों को प्रभावित करता है। जिन मनुष्यों के मस्तिष्क की स्थिति उन प्राचीन, सुसंगठित शब्दों की कम्पन शक्ति से मिलती-जुलती होगी, उन पर इस चुम्बकत्व शक्ति का इस चेतना का सीधा प्रभाव पड़ेगा। यदि स्थिति, समान न हुई तो समान शब्दों का उच्चारण उस प्रभाव की उपस्थिति का परिचय तो दे सकता है, किन्तु उस पर गहरा प्रभाव नहीं डाल सकता। इसीलिये मन्त्र जपकर्ता की अन्तश्चेतना का परिष्कार अत्यावश्यक है। तभी पूर्वज ऋषियों की चेतना से उसकी सम्वेदना जुड़ सकती है।

संगीत विज्ञान से ज्ञात होता है कि प्रत्येक ध्वनि का आकार होता है, वह मात्र तरंग नहीं है। प्रत्येक को वैसी ही आकृति दी जा सकती है जैसी कि हम एक पत्थर, एक कुर्सी, एक पत्ता आदि की देखते हैं। ध्वनि का परिवर्तन शक्ति के रूप में किया जा सकता है। इस शक्ति को पुनः ध्वनि का रूप दिया जा सकता है। आवाज का परिवर्तन पदार्थ के रूप में किया जा सकता है। प्रत्येक पदार्थ से एक विशेष ध्वनि कम्पन निसृत होता है। मन्त्रों के आधार पर विशिष्ट ध्वनि प्रवाह का जो चित्र बनता है, उसके ही आधार पर उस मन्त्र के देवता की आकृति का आकलन किया गया है। मन्त्र के देवता की आकृति मन्त्र के ध्वनि समूह की आकृति है, जो निरन्तर उसके आवर्तन से बनती है।

जिस प्रकार सितार के तारों पर एक निश्चित क्रम से उँगलियाँ रखने पर सुनिश्चित स्वर लहरियाँ निकलती हैं, उसी प्रकार शब्दों के उच्चारण का एक लय बद्ध क्रम विशिष्ट कम्पनों को उत्पन्न करता है, जो विशेष शक्तिशाली व प्रभावोत्पादक होते हैं। इन शक्तिशाली कम्पनों के संघात से पर्यावरण में उभरने वाले दबाव की आकृति ही मन्त्र देवता की आकृति है। यह मन्त्र विज्ञान में देवता की अभिव्यंजना है। इसीलिए मन्त्रों में महत्व मात्र शब्दार्थ का नहीं, ध्वनि प्रवाह का है। श्रद्धा के उपरान्त मन्त्र-विज्ञान में दूसरी महत्वपूर्ण बात है विशिष्ट ध्वनि प्रवाह की निरन्तर आवृत्ति से उत्पन्न लयबद्धता।

बांसुरी में सात छिद्र होते हैं जिन्हें सात स्वर कहा जाता है। आरोह-अवरोह के एक निश्चित क्रम से वायु को फूँकते हुए छिद्रों का व्यवस्थित संचालन करने पर एक निश्चित स्वर लहरी उत्पन्न होती है। यह ध्वनि-चक्र है। मन्त्र भी एक विशिष्ट ध्वनि-चक्र को जन्म देते हैं। देर तक गायत्री मन्त्र के सतत रूप द्वारा उत्पन्न हुआ शक्तिशाली ध्वनि-चक्र निखिल ब्रह्मांड में परिभ्रमण करता है और वहाँ हलचल उत्पन्न करता है। यह ध्वनि चक्र चेतना-चुम्बकत्व के कारण पूर्व में की गई गायत्री साधना से उत्पन्न चेतना-चुम्बक से जुड़ता है। इस प्रकार वह अनन्त ऊर्जा स्रोत से भी जुड़ जाता है।

मन्त्र का सुदीर्घ काल तक सतत दुहराव अन्तर प्रदेश तथा बाह्य प्रदेश में एक साथ विशिष्ट दबाव पैदा करता है। यह दबाव प्रभाव साधक के अन्तःकरण की शक्ति यानी कारण शरीर की सामर्थ्य के अनुसार न्यूनाधिक होता है। साधक की श्रद्धा तथा निष्ठा जितनी सघन होती है और चरित्र जितना शुद्ध होता है, ऊर्जा उतनी ही प्रखर होती है। यह मन्त्र-ऊर्जा अन्तःकरण की प्रकृति का अंग बनती जाती है। दीर्घकालीन सतत् साधना से साधक मानो मन्त्र की ही मूर्ति हो जाता है। यही मन्त्र-विज्ञान में योनिमुद्रा की स्थिति है, जिसमें मन्त्र रूपी चेतना ऊर्जा प्रविष्ट होकर एक रूप हो जाती है। मन्त्र और साधक का व्यक्तित्व अभिन्न हो जाता है। उसके व्यक्तित्व में से मन्त्र की सामर्थ्य झलकने लगती है। यही सिद्धि है।

स्पष्ट है कि मन्त्र चैतन्य और योनिमुद्रा की स्थिति चेतना-विज्ञान तथा श्रद्धा तत्व को समापने और अपने व्यक्तित्व को तदनुरूप ढालने पर ही प्राप्त हो सकती है। साधना में यह आधार विनिर्मित किया जाना सर्वोपरि आवश्यकता है। तभी गायत्री मन्त्र जप द्वारा ब्रह्माण्ड व्यापी चेतना सूर्य से सघन सम्पर्क में सफलता प्राप्त होती है।

जप प्रक्रिया का वैज्ञानिक आधार

मन्त्र-जप को व्रत-संकल्प को प्रबल-प्रखर बनाने का एक सशक्त माध्यम माना गया है। अतः भौतिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन में उसकी आवश्यकता महसूस की जाती है। यों तो जपयोग कहने का तात्पर्य सामान्यतया अध्यात्म साधना और ईश्वर-उपासना से लिया जाता है, पर जानने योग्य तथ्य यह है कि अध्यात्म क्षेत्र में जितनी इसकी महत्ता-उपयोगिता है, उससे कोई कम भौतिक क्षेत्र में नहीं है।

भौतिक जीवन को समृद्ध बनाने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है, कारण कि किसी व्यक्ति की सफलता-विफलता का मुख्य हेतु अस्थिर और अव्यवस्थित चित्त वृत्तियाँ होती हैं। जो इन्हें संयमित कर लेता अथवा शुभ-अशुभ भाव-संकल्पों के आधार पर अच्छों को सुरक्षित रख बुरों को निकाल बाहर करता है, जीवन में वही सफल हो पाता है। सामान्य जीवन में जपयोग यही कार्य सम्पन्न करता है। वह अनावश्यक संकल्पों को शमित और शुभ संकल्पों को पोषण देकर सुदृढ़ बनाता और अंततः उसकी सिद्धि में सहयोग करता है।

वस्तुतः मानवी चित्त भाव-संकल्पों का विशाल भाण्डागार है। उसमें अनेकानेक प्रकार के शुभ-अशुभ संकल्प भरे पड़े होते हैं, पर अधिकांश लोगों में इसकी स्थिति अव्यवस्थित स्टोर रूप जैसी होती है। वे जिन संकल्पों को पोषण देकर उगाना-बढ़ाना चाहते हैं, प्रायः वे अधिक समय टिक नहीं पाते और जिन्हें बार-बार हटाने-मिटाने की कोशिश करते हैं, वे स्थायी बने रहते हैं। इसी प्रकार जो बातें स्मृति में लगातार बनी रहनी आवश्यक होती हैं, वह विस्मृत हो जाती हैं और अनावश्यक अनुपयोगी बातें बरबस याद आती रहती हैं। ऐसे लोग किसी एक संकल्प पर अपने चित्त को स्थिर नहीं रख पाते। प्रयास तो करते हैं, पर अगले ही पल मन में कई अन्य विचार उमड़ने-घुमड़ने लगते हैं, जिससे आरंभिक संकल्प गौण हो जाता है एवं क्षुद्र लौकिक विचार प्रमुख बन जाते हैं।

ऐसे अस्थिर चित्त को एकाग्र करने का एक कारण उपाय जप है। इसके माध्यम से अंतः के समस्त संकल्प-विकल्पों को निकाल बाहर कर मन को एक निश्चित वृत्ति में लगाकर उसे उस उद्दण्ड भूत की तरह साधा जा सकता है, जो काम नहीं मिलने पर साधने वाले को ही मार डालने की बात करता है। कुछ लोगों का विश्वास है कि एक अन्य उपाय द्वारा भी मन को सुसंस्कृत बनाया जा सकता है। उनका कहना है कि यदि अंतस् की वृत्तियों पर कड़ी नजर रखकर सूक्ष्म दृष्टि से उसके शुभाशुभ का निर्धारण कर लिया जाय, तो इतने भर से चित्त व्यवस्थित हो जायेगा, किन्तु इस विचार में कोई प्राण नजर नहीं आता। इससे इतना तो संभव हो सकता है कि भली-बुरी वृत्तियों की जानकारी मिल जाय, पर इससे अस्त-व्यस्तता समाप्त हो जायगी, ऐसा नहीं कहा जा सकता।

शास्त्रों में नाम-स्मरण का अमोघ उपचार सुझाया गया है। आप्त वचनों के अनुसार इसमें इतनी विलक्षण शक्ति है कि वह चित्त को सदा निर्धारित संकल्प पर स्थिर रखता है। आर्ष ग्रंथों में इसकी महिमा का बखान किया गया है, जिसके पीछे अनुभवगम्य आध्यात्मिक और तर्कसिद्ध बौद्धिक दोनों आधार हैं। अनुभवगम्य इसलिए कि आत्मा की गति सदा सत् संकल्पों की ओर होती है। इस कार्य में भगवान की ओर से भी सहायता मिलती है। यदि इच्छा-शक्ति दृढ़ रही तो उस संकल्प को जीवन में उतरते देखा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, प्रबल संकल्प सदा सिद्धि होकर रहते हैं। उनकी सिद्धि प्रत्यक्ष गतिविधियों पर जितनी निर्भर है उससे कहीं अधिक महत् सत्ता की परोक्ष इन्द्रियातीत शक्ति पर अवलंबित है। यह सत्ता मात्र संकल्प के अनुरूप बुद्धि विकसित ही नहीं करती, वरन् किसी अगोचर विधि द्वारा स्थिति के अनुरूप परिस्थिति भी निर्मित करती है। जप द्वारा इसी का सफल क्रियान्वयन सहज संभव हो पाता है।

वन-उपवन के वृक्ष-वनस्पतियों को यह नहीं विदित होता कि वे बादलों को अपनी ओर आकर्षित कर उन्हें बरसने के लिए किस प्रकार बाधित करते हैं। पर उन्हें इतना अवश्य पता होता है कि इससे पूर्व उनने इसकी आवश्यकता महसूस की थी।

ठीक यही बात मनुष्य के संबंध में भी है। उसे यह नहीं ज्ञात होता है कि ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति अनुकूल कैसे बनेगी, और उसकी इच्छा-पूर्ति कैसे संभव हो सकेगी? यदा-कदा परिस्थितियाँ इतनी विकट होती हैं कि उन्हें देखकर व्यक्ति को नैराश्य घेरने लगता है, पर यदि दृढ़व्रती हो तो न केवल उसके स्वयं के प्रयत्न-पुरुषार्थ से वरन् अन्य अनेक माध्यमों से भी उसे ऐसी सहायता प्राप्त होने लगती है कि प्रतिकूलता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धीरे-धीरे अनुकूलता में बदलने लगती है। जिस किसी के जीवन में ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई हो, आत्म निरीक्षण करने पर उसे इसकी सत्यता का आभास अवश्य होने लगता है। संभव है, वह इस प्रक्रिया की वैज्ञानिकता से अनभिज्ञ हो और इसे पूर्णत: भगवद् कृपा, अपना सौभाग्य अथवा देव-अनुकंपा मान बैठा हो, पर वास्तविकता यह है कि यहे उसके दृढ़ संकल्प, तीव्र अभीप्सा और परमसत्ता के अनवरत स्मरण का ही परिणाम है।

वस्तुत: जब किसी व्रत का, उच्चस्तरीय उद्देश्य का बारंबार स्मरण किया जाने लगता है, तो वह व्यक्ति के मन मस्तिष्क में इस तरह छा जाता है कि तब जो क्रिया-प्रयास बन पड़ते हैं, उनमें न्यूनाधिक मात्रा में उसकी अभिव्यक्ति अवश्य होती है। इस प्रकार ध्यान उस ओर लगा रहने और लगातार प्रयत्न बन पड़ने से उसकी संसिद्धि संभव हो जाती है। छोटे शब्दों अथवा वाक्यों से अभिव्यक्त होने वाले व्रत-संकल्पों का स्मरण तो इस विधि द्वारा संभव है, पर लंबे-चौड़े संकल्पों का निरंतर स्मरण कैसे बन पड़े? इसके लिए शार्टहैण्ड में जिस प्रकार कई-कई वाक्यों को कुछ ही शब्द संकेतों द्वारा व्यक्त कर देने की व्यवस्था है, वही प्रक्रिया अपनाने का निर्देश विशेषज्ञ यहाँ देते हैं। इस प्रकार सुविधानुसार अपने संकल्प का कोई छोटा प्रतीक-प्रतिनिधि शब्द गढ़ा जा सकता है और उसका लगातार स्मरण करते रहकर उस व्रत को परिपुष्ट किया जाता रह सकता है। इसी को मन्त्र जप कहा गया है। अध्यात्म जगत में इसके लिए ॐ हरि ॐ हरि ॐ तत्सत्, सोऽहम् जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यही शब्द भौतिक जगत में संकल्प परिपुष्टि के लिए प्रयुक्त किये जा सकते हैं। यही इसका वैज्ञानिक तरीका है। यह कहना उपयुक्त न होगा कि जो कोई खुदा, अल्लाह, राम आदि का नाम जप रहा है, वह 'ईश्वर' का ही स्मरण कर रहा है वरन् उसकी इस प्रक्रिया का वैज्ञानिक अर्थ मात्र इतना है कि उससे वह मन के किसी संकल्प की सिद्धि प्राप्त कर रहा है। यदि कोई निर्धन जीभ से मात्र राम-नाम जपता है, तो यह समझा जा सकता है कि इसमें उसकी धन की कामना निहित है या दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है, कि वह "ऐश्वर्य" की कामना हेतु जप कर रहा है। इसी प्रकार यदि कोई व्यापारी नाम-जप करता है तो इसमें उसकी व्यापार-सफलता का उद्देश्य छिपा हो सकता है, या यों कहा जाय कि वह 'सफलता' का जप करता है। दोनों के प्रयत्न-पुरुषार्थ भी किसी लौकिक संकल्प की पूर्ति के लिए नियोजित होते हैं।

यहाँ जानने योग्य यह है कि अध्यात्म मार्ग का जपयोग प्रस्तुत जपयोग प्रक्रिया से नितांत भिन्न है। अध्यात्म पथ के पथिकों को इसके लिए कोई शांत-एकांत तलाश कर भगवद् सत्ता का स्मरण और उसमें अपना विलय-विसर्जन करना पड़ता है। इस स्थिति में जपयोग आत्मोन्नति की विशेष साधना बन जाता है, किन्तु सामान्य व भौतिक जपयोग में यह सब कुछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यहाँ इसके द्वारा मात्र उस संकल्प को प्रबल बनाये रखना पड़ता है, जिसकी संसिद्धि हम चाहते हैं। आजकल इसी जप का एक स्वरूप 'नारों' या 'जयघोषों' के रूप में देखा जा सकता है। यह इसका आधुनिक संस्करण है। सार्वजनिक आंदोलनों में अपने लक्ष्य पर जनता का ध्यान एकाग्र करने के लिए एक 'नारा' बना लिया जाता है, ताकि अंत तक जनता उस ध्येय प्राप्ति के लिए अपना संघर्ष जारी रख सके। यह वस्तुत: जपयोग का ही एक प्रकार है। इसकी तुलना निस्संदेह उस 'राम-धुन' के साथ की जा सकती है जो भक्त मंडलियों में गाई-गुनगुनाई जाती है। चूँकि वहाँ इसका उद्देश्य मात्र भक्ति-भावना का उत्पादन करना होता है, अत: इससे अधिक कोई परिणाम वहाँ प्राप्त भी नहीं हो पाता, मगर नारों में निश्चित प्रयोजन, लक्ष्य व संकल्प निहित होने के कारण व अपनी क्षमता का प्रमाण-परिचय स्थूल रूप में परिणति प्रस्तुत कर ही देते हैं।

इस प्रकार जपयोग अथवा नाम स्मरण की प्रक्रिया स्थिर चित्त वृत्ति, और संकल्प सिद्धि का एक वैज्ञानिक आधार है। यह सभी के लिए समान रूप से उपयोगी और लाभकारी हो सकता है। जिस संकल्प संकेत के साथ यह क्रिया आरंभ होती है, उसकी सिद्धि सुनिश्चित हो जाती है। विभिन्न व्यक्ति एक ही नाम का जप कर भिन्न-भिन्न प्रकार के संकल्पों की सिद्धि को प्राप्त होते हैं, यही इस जपयोग की सबसे बड़ी विशेषता है।

गायत्री महामन्त्र के विधि-विधान सहित जप की महत्ता शास्त्रकारों ने बड़े विस्तार से लिखी है। कोई भी ऐसा ग्रन्थ नहीं देखने में आता जिसमें इस मन्त्र के जप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की व्यष्टिगत एवं समष्टिगत फलश्रुतियों का वर्णन न किया गया हो। यदि समुचित विधि से कर पाना सम्भव न भी हो तो भी इसके किसी भी अवस्था में जप व भावनात्मक ध्यान के सत्परिणाम होते बताये गये हैं। इसके पीछे इस मन्त्र में निहित प्रेरणाओं का महत्व तो है ही, छन्द शास्त्र की दृष्टि से शब्द गुच्छकों की महत्ता तो अपनी जगह है ही, इसका मनोवैज्ञानिक आधार भी इतना सशक्त है कि यह एक पूर्णत: विज्ञान-सम्मत प्रक्रिया प्रतीत होती है।

वस्तुत: मनुष्य शरीर एक ऐसी जटिल मशीन है जिसे समझने में सैकड़ों वैज्ञानिक लाखों जीव शास्त्री और करोड़ों चिकित्सा शास्त्री लगे हुए हैं किन्तु अब तक जितना जाना जा सका है वह नगण्य ही है।

योग साधनाओं के द्वारा इस शरीर के सम्बन्ध में जो कुछ जाना गया है, वह विज्ञान की अपेक्षा कई गुना अधिक महत्वपूर्ण है। इन साधनाओं के कठोर अभ्यास के द्वारा चेतना के गहन अन्तराल में प्रविष्ट हो तत्वदर्शी ऋषियों ने इस शरीर को ब्रह्माण्ड की प्रतिकृति के रूप में पाया। इसमें ऐसे-ऐसे चक्र, कोश, उपत्यिकायें नाड़ी, गुच्छक और दिव्य क्षमता सम्पन्न केन्द्र विद्यमान हैं जिन्हें देखकर उन्हें "यत् ब्रह्माण्डे तत्पिण्डे" जो कुछ ब्रह्माण्ड में है वह सारा का सारा इस पिण्ड (देह) में विद्यमान है। १३ करोड़ प्रकाश वर्ष के विराट् क्षेत्र वाले इस ब्रह्माण्ड के माडल शरीर को वस्तुत: सृष्टि की सबसे विलक्षण मशीन कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगी। जब विज्ञान एक ऐसी विद्या है जिसमें "शब्द" को बार-बार दुहरा कर बाँसुरी के छिद्रों में वायु फूँककर उसमें से मधुर ध्वनि निकालने के समान इन शरीरस्थ शक्ति केन्द्रों में से वह क्षमतायें अर्जित कर ली जायें जो साधारण व्यक्तियों के लिये अद्‌भुत् और चमत्कार जैसी लगें। इन शक्तियों को जागृत करने में जप साधना महत्वपूर्ण भूमिका निबाहती है। इसके माध्यम से आत्म-चेतना का उच्चस्तरीय शिक्षण होता है। इसी कारण प्रत्येक धर्म ने चाहे वह हिन्दू हो या सिख, ईसाई बौद्ध, ताओ, इस्लाम या वहाई कोई भी हो अपनी उपासना पद्धति में जप को अनिवार्य रूप से जोड़ रखा है।

जप में गायत्री मन्त्र के जप को प्रधानता जो दी गयी है, इसका कारण यह है कि महाप्रज्ञा का उच्चस्तरीय तत्व दर्शन इसमें समाहित है। सद्‌बुद्धि की प्रेरणा से मानव मात्र का कल्याण सोचने वाले आर्ष कालीन ऋषियों ने इसे अत्यधिक महत्व देते हुए वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता तक कहा है। न केवल हिन्दू धर्म में अपितु अन्यान्य मत सम्प्रदायों में भी इसे उचित स्थान प्राप्त है। गाँधीजी ने इसे भावी विश्व धर्म या संस्कृति का मूल आधार माना था व कहा था कि कभी विश्व-शान्ति आयी तो इसी मन्त्र की प्रेरणा से आ सकेगी।

गायत्री मन्त्र पूर्णत: विज्ञान-सम्मत है एवं इसकी जप प्रक्रिया केवल मनोवैज्ञानिक क्रिया नहीं, अपितु लय-ताल पर आधारित शब्द-शक्ति की वैज्ञानिक विद्या है।

यहाँ विज्ञान की उस जटिलता में जाना अभीष्ट नहीं है। अपितु जंप के माध्यम से आत्म चेतना का उच्चस्तरीय प्रशिक्षण किस प्रकार होता है, उसकी जानकारी देना है। जप व्यक्ति को अपनी अन्तर्चेतना की ओर अभिमुख करने और विराट् चेतना के साथ संगति सामंजस्य स्थापित करने की एक विज्ञान-सम्मत प्रक्रिया है। गायत्री उपासना के प्रारम्भिक स्तर के साधक को मन्त्र जप का मनोवैज्ञानिक आधार समझ में आ जाये तो मन न लगने, ध्यान उखड़-उखड़ जाने वाली कठिनाई का आधा निराकरण तत्काल हो जाता है शेष मंजिल वह कुछ ही समय में पूर्ण कर सकता है।

मनोवैज्ञानिकों ने चेतना को प्रशिक्षित करने के लिए जो चार आधार बताये हैं वह चारों ही तथ्य "जप" में सन्निहित हैं। जप को इन्हीं चार धारणाओं का समुच्चय कह सकते हैं। यह आधार है (१) शिक्षण—बार-बार दोहराना—रटना, (२) जो जाग गया है या जिसे बार-बार दुहराया गया है, उसे स्व-स्वभाव का अंग बना लेना, (३) टूटे सम्बन्धों को फिर कायम करना, बिखरे हुए स्नेह सम्बन्धों को फिर से स्थापित करना और, (४) अपनी आस्था निष्ठा—और विश्वास को अनुभूति और सम्वेदना के स्तर तक प्रगाढ़ बना देना। दार्शनिक शैली में इन्हें ही (१) आत्म-निरीक्षण, (२) आत्म-शोधन , (३) आत्म-निर्माण और, (४) आत्म-विकास कहते हैं। यह क्रमिक सोपान हैं। जप की चार सीढ़ियाँ हैं जिन पर चढ़कर ही आत्मा परमात्मा तक पहुँचती है। इनमें योगाभ्यास जैसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

क्रियायें दिखाई न देने पर भी इतनी सुदृढ़ता है कि मात्र इसी एक आधार को अपनाकर व्यक्ति आत्म-निरीक्षण से आत्मोत्कर्ष तक की उच्च स्थिति तक जा पहुँचता है।

जप की यह महत्ता अकारण रही होती तो गायत्री उपासकों से नियमित रूप से अधिक से अधिक जप की प्रेरणा देकर निरर्थक समय गँवाने के लिये नहीं कहा जाता, इसके पीछे मनोवैज्ञानिक के यही चार सशक्त सिद्धान्त कार्य करते हैं, यह साधक को दीन-हीन अवस्था से उठाकर महा समर्थ अवस्था तक पहुँचाने में पूर्ण सक्षम हैं। अज्ञान की राख से ढ़के आत्मा के अंगार को चमकाने में यही चार आधार हैं। जप प्रक्रिया इन्हीं को पूरा करती है।

'शिक्षण' संस्कार की पहली भूमिका है। संसार में ऐसा कोई शिक्षित व्यक्ति नहीं जिसने इस भूमिका में प्रवेश किये बिना स्कूल की पढ़ाई पूरी की हो। प्रारम्भ में सभी को बार-बार दोहराने की क्रिया से करना पड़ता है। जप साधना में भी मन्त्र को बार-बार दोहराना पड़ता है। उसके बिना अभीष्ट संस्कार उत्पन्न नहीं होते।

गायत्री मन्त्र में परमात्मा से सद्बुद्धि प्रदान करने वाले जिस "धी" तत्व की माँग की गई है वह एक बार कह देने मात्र से संस्कार नहीं बन सकता। मनोभूमि उस ऊबड़-खाबड़ कठोर भूमि की तरह होती है जिसमें जुताई-निराई-गुड़ाई किये बिना बीज बोना उसे निरर्थक गँवा देने की तरह है। साधना का बीज फले-फूले, इसके लिये "जाप" द्वारा उसकी पर्याप्त जुताई आवश्यक होती है। जप के द्वारा व्यक्ति को अपने भीतर झाँकने का अभ्यास होता है जिससे वह अन्तरंग में छिपे कल्मष कषायों को पहचानता है तथा उन्हें नष्ट करने, निकाल बाहर फेंकने की योजना बनाता है। भागवत् संस्कारों को गहराई तक जमाने के लिये इसके अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। जप एक तरह की रगड़, मँजाई, खराद है जिससे मन और अन्तःकरण पर छाई हुई कलुष-कालिमा की धुलाई होती है। भीतर की अन्तरात्मा की चमक उसी से प्रारम्भ होती है। इसीलिये प्रत्येक गायत्री उपासक को प्रतिदिन नियमित रूप से नियत स्थान में और सम्भव हो तो नियत संख्या में भी गायत्री मन्त्र जप का क्रम अपनाना चाहिये। कभी कम कभी अधिक से कहीं वर्षा कहीं सूखा, कहीं बीज कहीं ऊसर की सी उपहासास्पद स्थिति बनती है। यह अभ्यास का क्रम काफी समय तक चलता है तब कहीं सफलता का द्वार खुलता है।

आत्म-विकास की दूसरी सीढ़ी "जानकारी को स्वभाव का अंग बना लेना" अपने दोषों पर जैसे-जैसे दृष्टि साफ होती जाती है, साधक उनके प्रति घृणा भी करने लगता है और उनका परित्याग भी करता है। अकेले आत्म-निरीक्षण से सन्तोष कर लिया जाये तो इसे अधूरा जप माना जायेगा, स्वभाव में जो कमियाँ, कमजोरियाँ और दुराग्रह भरे पड़े हैं उनका निष्कासन जितनी तेजी से होगा इष्ट की समीपता की उतनी ही स्पष्ट अनुभूति होगी। इस अवस्था में आँख-मिचौनी और धूप-छाँव तो चलती है, जन्म-जन्मान्तरों के बुरे अभ्यास, तृष्णा-वासना और अर्हतायें बार-बार गड्ढे में गिराने का प्रयत्न करती हैं पर अब तक साधक जान लेता है कि वह शरीर नहीं आत्मा है। वह जितना लौकिक है पारलौकिक उससे लाख गुना अधिक है सो रत्ती भर स्वार्थ के लिये करोड़ मन परमार्थ की उपेक्षा कोई बुद्धिमानी नहीं अतएव वह अध्यात्म में ही अपना कल्याण देखकर पूरे मन से पीछे लौटता, भूल के लिये प्रायश्चित करता, उसे सुधारता और फिर कभी उसकी पुनरावृत्ति न होने देने का संकल्प लेता है।

मनुष्य का सूत्र संचालक कोई और है। धागे टूट जाने पर जिस तरह कठपुतली के नाच में आनन्द नहीं रह जाता, पिता से बिछुड़कर जिस तरह पुत्र श्रीहीन हो जाता है। विद्युत घर से कनेक्शन कट जाने से जिस तरह बल्ब प्रकाश हीन हो जाता है। उसी तरह परमात्मा से बिछुड़ने के कारण ही आत्मा की दुर्गति हुई है।

चेतना को प्रोन्नत करने के लिये मनोविज्ञान का तीसरा आधार भी जप से ही पूरा होता है। जप काल में चेतना आत्म-केन्द्रित होकर ही अपने परमार्थिक स्वरूप को पहचानती है। जैसे-जैसे यह पहचान घनीभूत होती है, साधक अपने अतीत की स्मृतियों को कुरेदता और भूतकाल की अपनी अवस्था को विचारता है। स्वभावतः यह लगता है कि हम परमात्मा से बिछुड़ गये। अन्त में यह बिछुड़न ही दुःख का मूल कारण है इसलिये वह बारम्बार अपने हितैषी को इस बात के लिये पुकारता है हे माँ! अब मुझे उस अन्ध कूप में गिरने नहीं देना। इस अवस्था में जब शरीर निर्मल

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुआ, मन निर्मल हुआ तो स्वभावत: मन विधेयात्मक विचारणा से, आदर्श कर्तृत्व से भरा हुआ होगा।

चौथी स्थिति आध्यात्म निष्ठा की परिपक्व अवस्था है। जप के द्वारा भी साधक अपने प्रकाश स्वरूप की "सविता" के तेज से संगति बैठाता है जैसे-जैसे यह स्थिति प्रगाढ़ होती है वैसे-वैसे साधक अपने को सविता के तेज के रूप में "अयमात्मा ब्रह्म" "तत्वमसि" "सोहअस्मि" "शिवोऽहं" "चिदानंदोऽहं" की अनुभूति करता है। इसे ही समाधि, तुरीयावस्था अथवा इष्ट सिद्धि कह सकते हैं। आत्म-विकास के इस परिपाक तक पहुँचने के लिये इस तरह जप से ही कार्य चल जाता है। अन्य कठिन योगाभ्यास में पड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती इसीलिये जप को यज्ञ और विज्ञान की संज्ञा दी गई। जप पूर्णता तक पहुँचाने में अकेला ही समर्थ है।

मन्त्र में सन्निहित सामर्थ्य का उपयोग जप द्वारा कर के सृष्टि के ऐसे रहस्यों का उद्‌घाटन भी किया जा सकता है जो अभी वैज्ञानिक बुद्धि में तो नहीं समाते पर सामान्य कल्पनाओं से परे हो सकते हैं। यदि ऐसा रहा होता तो उच्च शिक्षित वैज्ञानिक वर्ग भी इस तरह की आध्यात्मिक अनुभूतियों से स्वत: ही ओत-प्रोत हो गया होता, जबकि देखा यह गया है उच्च शिक्षित, मनीषी और विचारक कहे जाने वाले लोग भी सांसारिक माया-जाल में फँसे रहते हैं जबकि कम शिक्षित पर भावनाशील गायत्री उपासकों में भी उच्च आत्मिक शक्ति प्रादुर्भूत होते देखी जा सकती है।

इसका कारण है मन्त्र की सफलता का मूल आधार "अक्षर विज्ञान"। मन्त्रों में निस्सन्देह अपार शक्ति निहित है कि मन्त्र गुच्छकों में निहित वैज्ञानिकता को हमें भूलना नहीं चाहिये। विज्ञान का अर्थ है सिद्धान्त का गणितीय होना। इसे निश्चित नियमबद्धता भी कह सकते हैं। इसमें साधक की आन्तरिक निर्मलता के साथ-साथ प्रतिदिन नियत समय जप करना भी आवश्यक है। नियत समय पर जप के साथ जप का समस्वर होना भी आवश्यक है। कभी जल्दी, कभी धीरे-धीरे, कभी आलस्य में, कभी सजग होकर किये गये अस्त-व्यस्त जप से परिणाम तो निकलेंगे पर अस्पष्ट और उलझे हुये होंगे। माला से जप का कारण यही है किए एक मन्त्र जप से प्रत्येक दूसरे मन्त्र जप में नियत अन्तर रहे। कम अधिक नहीं। सामान्यत: एक घण्टे में १० या ११ माला का जप होता है अतएव नियमबद्धता को घड़ी के साथ भी साधा जा सकता है पर मन्त्र जप का परिपूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिये प्रतिदिन नियत समय, नियत स्थान में नियमित रूप से जप करना आवश्यक होता है। परिस्थितिवश स्थान परिवर्तन करना पड़े तो भी जहाँ तक सम्भव हो समय की नियमितता का पालन तो करना ही चाहिये। उसके पीछे भी वैज्ञानिक सिद्धान्त हैं।

विधिपूर्वक जपे गये मन्त्र से उपासकों की अनुभूतियाँ उनका चिन्तन इतना विस्तृत होता है कि जिससे संसार की यथार्थता समझ में आ जाती है। भौतिक लाभ तो ऐसे हैं जैसे तीर्थयात्रा जाते समय मार्ग में पड़ने वाले किसी नगर से आवश्यक वस्तुयें भी खरीद ली जायें। मूल लाभ आत्मा की ईश्वरीय चेतना में परिणति ही है जिसे यह लाभ मिल जाता है, वह वस्तुत: जीवन्मुक्त हो जाता है। उसका जीवन सचमुच धन्य हो जाता है। गायत्री मन्त्र की सफलता का यही मुख्य आधार है जिसे प्रयोग कर लाभान्वित होना हर व्यक्ति के लिये सम्भव है।

इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि मनुष्य जीवन की समस्त समस्याएँ दुर्बुद्धि के कारण ही उत्पन्न होती हैं। व्यक्ति के जीवन में और समाज पर आये दिनों संकट व समस्याओं के जो बादल छाये रहते हैं वे सभी अशुभ चिंतन के खारे समुद्र से ही उठते हैं। यही कारण है जिस सद्‌बुद्धि को संसार का सबसे बड़ा वरदान कहा गया है। उस वरदान को प्राप्त करने में गायत्री मन्त्र सर्वाधिक सफल, सक्षम और समर्थ है। इसके अतिरिक्त और भी कई कारण हैं जिनसे गायत्री को सर्वोपरि और सर्वश्रेष्ठ माना गया है। पहला तो यही कि इस महामन्त्र के अक्षरों में बीज रूप से मानवी संस्कृति एवं आदर्शवादिता के सारे सिद्धान्त सन्निहित हैं।

इस मन्त्र को विश्व का सबसे छोटा मात्र २४ अक्षरों का वह ग्रन्थ कह सकते हैं, जिसमें धर्म और अध्यात्म का समूचा तत्व ज्ञान सार रूप से समाविष्ट मिल सकता है। इन अक्षरों की व्याख्या करते हुए जो कुछ मानवी प्रगति एवं सुव्यवस्था के लिए आवश्यक है उस सबका मार्ग-निर्देश प्राप्त किया जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य जीवन की विशेषताओं के सम्बन्ध में विचार किया जाय तो प्रतीत होगा कि सृष्टि के समस्त प्राणियों की तुलना में सबसे श्रेष्ठ और साधन-सम्पन्न शरीर मनुष्य को ही मिला है। बोलने, सोचने, लिखने, करने, मिल-जुलकर रहने और खोजने की जो विशेषताएँ मनुष्य को प्राप्त हैं उन्हीं के बलबूते पर उसने उन्नति के उच्च शिखर तक पहुँचने में सफलता पाई है। जितनी सुविधाएँ मनुष्य को प्राप्त हैं उसका हजारवाँ भाग भी यदि सृष्टि के अन्य किसी प्राणी में रहा होता तो वे अपने को धन्य मानते। आश्चर्य इस बात का है कि इतनी सुविधाएँ रहते हुए भी लोग दुखी क्यों रहते हैं? निरन्तर चिंतित, खिन्न, उदास, क्षुब्ध और अशान्त क्यों हैं ? विचार करने पर इसका एक ही कारण समझ में आता है कि बुद्धि का परिष्कार नहीं हुआ। इसके अभाव में, विचार की अशुद्ध प्रणाली ने ही स्वर्गीय सुविधाओं से सम्पन्न मानव प्राणी को नारकीय परिस्थितियों में—दुख दारिद्रय में पड़े रहने के लिए विवश किया है।

गायत्री मन्त्र की प्रेरणा, शिक्षा, दिशा यह है कि विचारों का परिष्कार वह आवश्यक तत्व है जिसे प्राप्त किये बिना न तो आज तक सुख-शान्ति किसी को मिली है और न आगे मिलेगी ही। वस्तु क्षणिक सुख दे सकती है। वासना और तृष्णा की मदिरा से कुछ क्षण ही उन्मत्त रहा जा सकता है। लेकिन उसकी परिमति दूनी अशान्ति, दूनी हानि और असफलता में ही होती है। इसलिए गायत्री मन्त्र में परमात्मा से यही मांगा गया है कि प्रभु आपने मानव शरीर देकर असीम अनुकम्पा की है। अब सद्बुद्धि देकर हमें उपकृत और कर दीजिए ताकि हम सच्चे अर्थों में मनुष्य कहला सकें और अपने जीवन को सफल बना सकें।

गायत्री मन्त्र की शब्द रचना की विलक्षणता उसके सर्वोपरि होने का दूसरा आधार है। इसी अनुसंधान पर राजर्षि विश्वामित्र को अविलम्ब ब्रह्मर्षि पद पर पदोन्नत कर दिया गया था। समझने वाली बात है कि राजर्षि सामर्थ्य की तुलना राजाओं—महाराजाओं से की जाती है तो ब्रह्मर्षि की शक्ति की तुलना ब्रह्मा से की जाती है। जिसका अर्थ यह हो सकता है कि वह सृष्टि के स्वामी संचालक और नियंत्रक की क्षमताओं से ओत प्रोत होता है।

शब्द विज्ञान, स्वरशास्त्र की सूक्ष्म धाराएँ गायत्री महामन्त्र में जिस उत्तमता के साथ मिली हुई हैं, वैसा संगम अन्य किसी मन्त्र में नहीं हुआ है। साधनारत योगियों और तपस्वियों ने अपने अपने प्रयोग परीक्षणों और अनुभवों के आधार पर जो तुलनात्मक उत्कृष्टता देखी है उसी से प्रभावित होकर उन्होंने इस महाशक्ति की सर्वोपरि स्थिति बताई है। यह निष्कर्ष अभी भी जहाँ का तहाँ है। मात्र जप पूजन से तो नहीं, अभीष्ट साधन प्रक्रिया अपनाते हुए अभी भी कोई इस साधना को कर नहीं सके हैं। यद्यपि शोध अनुसंधान जारी है और इन प्रयासों से जो कुछ जानने में आया है वह कम विस्मयजनक नहीं है। भारतीय मन्त्र विद्या में शब्दों की जिस "संवहन शक्ति" का उपयोग किया जाता है उसका एक छोटा सा रूप पराध्वनि (अल्ट्रासाउण्ड) के रूप में भौतिक शास्त्रियों ने भी जान लिया है और उसके विभिन्न प्रकार के चिकित्सकीय उपयोग होने लगे हैं। इसे चिकित्सा जगत में क्रान्ति की संज्ञा दी गई है।

'एचीव्स आफ फिजिकल एण्ड रिहैबिलेशन" पत्रिका में एक घटना का विवरण है जिसमें एक महिला की उंगलियों को इस तरह लकवा मार गया था कि वह उंगलियों में थोड़ी भी हरकत नहीं कर सकती थी। किन्तु जब उसकी उँगलियों पर पराध्वनि चिकित्सा का प्रयोग किया गया तो उँगलियाँ पूरी तरह ठीक हो गईं और वह जूतों के फीते तक बाँधने में समर्थ हो गई।

"सालपेट्री हॉस्पिटल" पेरिस में ऐसे २७ लाइलाज रोगियों को इस कर्णातीत ध्वनि शक्ति से ठीक किया गया। माउण्ट सिनाई हॉस्पिटल न्यूयार्क में एक ऐसा आग से जला व्यक्ति आया जिसकी उँगलियाँ जलकर पिघल गई थीं। उन्हें काट देने के अतिरिक्ति कोई उपाय शेष नहीं रहा था उस समय "अल्ट्रासाउन्ड" ध्वनि का प्रयोग किया गया और वह व्यक्ति पूरी तरह अच्छा हो गया। अल्ट्रासाउण्ड ध्वनि और मन्त्र शक्ति में इतना ही अन्तर है कि मन्त्र की ध्वनि को चक्रों की विद्युत शक्ति रोग की कठिन स्थिति में भी बेध जाने योग्य बनाती है जबकि "टॉन्सड्यूसर" यन्त्र में कर्णातीत ध्वनि को विद्युत शक्ति यह सामर्थ्य प्रदान करती है। इस यन्त्र द्वारा सामान्यत: २० हजार साइकिल प्रति सेकण्ड से ८० लाख और एक करोड़ साइकिल प्रति सेकण्ड तक बढ़ा दिया जाता है।

मन्त्र शक्ति की इतनी महत्ता होने पर भी सभी लोग वह सामर्थ्य नहीं जुटा पाते यह प्रश्न अक्सर उठा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता है और मन्त्र शक्ति में संदेह का कारण बना रहता है। उसका कारण और कुछ नहीं अन्तःकरण का गहरा और उथला होना ही है। मन्त्र में सन्निहित भावनाओं को प्रखर बनाने के लिए जिस परिष्कृत और समर्थ व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है। वह न जुट पाने से मन्त्र अपना सामान्य प्रभाव ही अभिव्यक्त करके रह जाता है। उससे विशेष कुछ लाभ मिलता नहीं। व्यक्तित्व को ऊंचा उठाने का कार्य वाणी की सत्य-निष्ठा, सरलता और मधुरता से प्रारम्भ होता है और जीवन के प्रत्येक क्रिया-कलाप में छा जाता है। जिस तरह मैले शीशे पर पड़ने वाली प्रकाश की किरणें अपना कोई प्रभाव नहीं दिखा पातीं उसी तरह मलिन अन्तःकरण में पड़ने वाले मन्त्र का प्रकाश केवल मात्र उसी सफाई में ही लगा रहेगा। यदि व्यक्ति की जीवन दिशा अपने दोष, दुर्गुणों को ढूंढ़ निकालने और उनके स्थान पर सद्गुणों की प्रतिष्ठा में लगी हो तब तो इस परिमार्जन का भी महत्व है और उस स्थिति में मन्त्रजप का प्रभाव विलम्ब से ही सही देखने को मिल जाता है। पर यदि आहार-विहार, रहन-सहन, वाणी-व्यवहार द्वारा अन्तःकरण को मल विक्षेप से लादते रहा गया हो तो कितना ही अच्छा और अधिक मन्त्र जप भी कोई प्रभाव परिणाम प्रस्तुत न कर सकेगा।

गायत्री महामन्त्र के जप से उत्पन्न पराध्वनि में सारे वातावरण को प्रभावित कर लेने की क्षमता है। इसकी अपार शक्ति को लाभ कोई भी उठा सकता है, शर्त एक ही है कि वह इन शिक्षाओं पर उस आचरण पर भी चले जिसका इस महामन्त्र के एक एक अक्षर में संकेत है। उन आदर्शों पर चलने से ही अभीष्ट सफलता प्राप्त की जा सकती है। मन्त्रविद्या की सफलता का यही प्रमुख वैज्ञानिक आधार है।

मन्त्र विद्या ध्वनि विज्ञान पर आधारित है

प्राचीनकाल में किसी देश पर कोई दूसरा राजा आक्रमण करता था तो उसकी सैन्य गतिविधियों को जानने के लिए पृथ्वी से कान सटाकर यह पता लगाया जाता था कि हलचल किस दिशा में—कितनी दूरी पर हो रही है। ध्वनि के बारे में यह समझा जाता है कि वह वायु के माध्यम से सुनी जाती है पर तथ्य यह है कि पृथ्वी की ध्वनि ग्राहक और प्रसारक शक्ति वायु से कहीं अधिक है।

आमतौर से शब्दों को सुनने के लिए कानों का प्रयोग किया जाता है। पर कानों की सामर्थ्य बहुत स्वल्प है। इसका एक कारण तो यह है कि ध्वनियाँ एक जैसी नहीं होतीं। कुछ के कम्पन ही ऐसे होते हैं जो हमारे कानों के पर्दों से टकरा कर मस्तिष्क द्वारा अनुभव की जा सकने जैसी हलचलें उत्पन्न कर सकें। जो इस स्तर की होती है उन्हें ही कान सुन सकते हैं। दूसरा कारण यह है कि वे कानों की पकड़ में आ सकने योग्य स्तर की होते हुए भी बहुत दूरी के कारण इतनी हलकी और झीनी पड़ जाती है कि कान उनका ठीक तरह अनुभव न कर सकें। कानों की पकड़ से बाहर की इन ध्वनियों को सुनना कई दृष्टि से आवश्यक है। रचनात्मक प्रयोजनों के लिए इतनी उपयोगिता है साथ ही आपत्ति से बचने के लिए भी इनकी आवश्यकता है।

मेघों की दूरगामी हलचलों को मोर के कान सुन लेते हैं और वह उस पूर्व सूचना की अभिव्यक्ति अपनी प्रसन्नता प्रकट करने, बाली आवाज में बार-बार करता रहता है। मकड़ी को वर्षा का पूर्वाभास होता है और वह अपने जाले बनाने समेटने का उपक्रम उसी आधार पर करती है। मकान गिरने की पूर्व हलचलें बिल्ली के कान आसानी से सुन लेते हैं और वह किसी दीवार के गिरने या छत के बैठने से पहले ही अपने बच्चों को ले भागती है। मनुष्य ने इस आवश्यकता की पूर्ति वैज्ञानिक उपकरणों के ध्वनि संवेदक यन्त्रों के माध्यम से की है।

इस दिशा में वैज्ञानिक प्रगति का प्रथम चरण इसी मान्यता को लेकर आगे बढ़ा था कि वायु की अपेक्षा पृथ्वी की ध्वनि ग्राहक शक्ति अधिक है। द्वितीय महायुद्ध में शत्रु सेना की हलचलों को जानने के लिए के ऐसा यन्त्र बना था जो पृत्वी तल पर थोड़ा गाढ़ दिया जाता था, थोड़ा ऊपर रहता था, इसमें अभ्रक का खोल और भीतर पारा भरा रहता था। दो नलियाँ उससे निकलती थीं और दोनों कानों में लगाई जाती थीं। जिस तरह हृदय की धड़कन जानने के लिए छाती पर 'स्टेथेस्कोप' लगाकर भीतर की स्थिति जानी जाती है, ठीक उसी प्रकार वह यंत्र भूतल पर हो रही दूरवर्ती हलचलों की जानकारी देता था।

पीछे आकाश में भरी विद्युत ऊर्जा और कम्पनों को समझने वाले यन्त्र चले। इनमें प्रमुख

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था—'माइक्रोसफोन' यह आकाश में हो रही हलचलों को पकड़ता था। शत्रुसेना की बारूदी हलचलें इससे सहज ही सुनी जा सकती थीं। बन्दूक या तोप दागने में तीन प्रकार की आवाजें होती हैं। पहली आवाज उस समय होती है जब नली से बाहर गैस निकलती है, दूसरी तब—जब हवा में गोली सनसानाती हुई दौड़ती है, तीसरी तब—जब गोली निशाने से टकराती हैं। इन तीनों का पृथक्करण कानों द्वारा सम्भव नहीं। क्योंकि यह हलचलें इतनी तेजी से होती है कि कान और मस्तिष्क उसका भेद समझने में समर्थ नहीं होते। किन्तु यन्त्रों से यह वर्गीकरण आसानी से हो जाता है और पता चल जाता है कि बारूदी अस्त्र कितनी संख्या में कितनी दूरी पर किस स्तर की गोलाबारी कर रहे हैं।

पृथ्वी और आकाश के अतिरिक्त पीछे जल की सतह पर दौड़ती हुई ध्वनियों द्वारा भी जानकारियाँ प्राप्त करने की चेष्टा की गई और सफलता मिली। पानी के जहाजों और पनडुब्बियों की हलचलें समुद्र की सतह पर दौड़ती हैं। पृथ्वी की भाँति इस जल सतह के साथ जुड़ी हुई ध्वनि प्रेरणा से भी यह जाना जाने लगा कि कहाँ, कितनी दूर पर किस स्तर की क्या हलचल हो रही है, इस जानकारी के स्रोत खुल जाने पर समुद्र युद्ध में सतर्कता बरतने का द्वार खुल गया। जर्मन पनडुब्बियों ने द्वितीय महायुद्ध में जो आतंक खड़ा किया था उससे एक बार ऐसा लगने लगा था कि समुद्र साम्राज्य का अधिपति अब जर्मनी ही बन गया है। किन्तु उस आतंक को विज्ञान की उपलब्धि ने समाप्त कर दिया जिसके कारण पनडुब्बियों की रहस्य-मय हलचलों का न केवल पता ही लगा लिया गया वरन् उन्हें कारगर ढंग से नष्ट भी कर दिया गया। इसके लिए हाइड्राफोन यन्त्र के आविष्कार ने महत्वपूर्ण भूमिका निबाही।

पानी की सतह पर जो ध्वनि कम्पन दौड़ते हैं उनकी प्रतिक्रिया उसी मूल उद्गम की और लौटती है जहाँ से वह उत्पन्न हुई थी। हाइड्रोफोन की विद्युत उसी प्रतिध्वनि का पीछा करती है और यह बता देती है कि प्रस्तुत ध्वनि प्रवाह का उद्गम किस आकृति प्रकृति का है।

अब वायुयान, जलयान ही नहीं धरती के भीतर और ऊपर जो कुछ भी है उसे आँखों से देखने की जरूरत नहीं है। वह सारी जानकारी ध्वनि कम्पनों के आधार पर ही जानी जा सकती है। पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, गर्मी इन सबको अब मात्र जड़ तत्व नहीं समझा जा रहा वरन् उनके साथ चलने वाले ध्वनि प्रवाहों की अपनी महत्ता है, उन प्रवाहों की अभी तो हलचलें हो रही हैं इतना ही जाना जा सका है। यह शोध जैसे-जैसे आगे बढ़ेगी वैसे ही वैसे हर तत्व एक बोलती बात करती इकाई की तरह अपने इर्द-गिर्द छिपे रहस्यों का उद्घाटन करता दिखाई देगा।

घटनाएँ ध्वनि का रूप धारण करती हैं। ध्वनि और प्रकाश दो ऐसे आधार हैं जिनके आधार पर स्थूल को सूक्ष्म में और सूक्ष्म को स्थूल में परिवर्तित किया जा रहा है। अन्तरिक्ष में विविध स्तर के ध्वनि कम्पन निरन्तर गतिशील रहते हैं। यदि किसी को कर्णेन्द्रिय से अधिक उच्च स्तर की श्रवण शक्ति मिल जाय तो वह श्रवणातीत ध्वनियों को सुन समझ सकता है और भूत तथा वर्तमान में घटित हुई दूरवर्ती अथवा समीपवर्ती घटनाओं को जान समझ सकता है। नादयोग के अभ्यासी इसी शक्ति को जगाते हैं और सूक्ष्म जगत में हो रही हलचलों के आधार पर भूत, वर्तमान तथा भविष्य का वह ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं जो सर्वसाधारण की पहुँच से बाहर होता है। ध्यानयोग से यही प्रयोजन प्रकाश के रूप धारणाओं के माध्यम से पूरा किया जाता है।

मन्त्रशक्ति के द्वारा संभव हो सकने वाले चमत्कारों की पृष्ठभूमि में ध्वनि विज्ञान के सिद्धान्त ही काम करते हैं। एक विशेष, मनःस्थिति में—परिष्कृत शरीर स्थिति में—विशेष कर्मकाण्ड एवं विशेष उच्चारण अपने ढंग की एक विलक्षण शक्ति उत्पन्न करते हैं। उसे मन्त्रशक्ति कहा जाता है। इसका प्रयोग कारतूस भरी बन्दूक की तरह किया जा सकता है। सूक्ष्म ध्वनि प्रवाह को समझकर जहाँ रहस्यमय अविज्ञात को ज्ञात बनाया जा सकता है वहाँ इसी ध्वनि शस्त्र का प्रहार करके अवरोधों और दुरित दुर्गमों को भी चूर्ण-विचूर्ण किया जा सकता है। मन्त्रविद्या एक प्रकार से ध्वनि विज्ञान का ही महत्वपूर्ण प्रयोग है।

हारमोनियम या पियानो में 'स्वर सप्तक' कीबोर्ड तथा उनसे जुड़ी हुई रीड़ें होती हैं। कीबोर्ड की रीड़ें दबाते है तो सम्बन्धित केन्द्रों से विभिन्न प्रकार के स्वर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निकलते हैं। उस कुन्जी दबाने के क्रम को यदि लयबद्ध किया जा सके तो इच्छित राग-रागनियाँ बजती हैं। मुख एक प्रकार का की बोर्ड है उसमें से विभिन्न शब्दों के उच्चारण मेरुदण्ड स्थिति षट्चक्रों पर प्रभाव डालते हैं। यों वार्तालाप में असम्बन्ध उच्चारण होता रहता है पर यदि जप की शैली में कुछ नियत शब्द गुंथल बार-बार क्रमबद्ध रूप से दुहराये जाते रहें तो वह जप प्रक्रिया षट्चक्र संस्थानों को तरंगित एवं झंकृत करती है। यही कम्पन्न साधनात्मक क्रिया-कृत्यों की हलचलों के साथ मिलकर एक ऐसी दिव्य चेतन धारा उत्पन्न करते हैं जिसका प्रयोग अभीष्ट प्रयोजनों के लिए सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

ध्वनि अपने आप में एक शक्ति है। कभी उससे जानकारी प्राप्त करने भर का प्रयोजन पूरा होता था, पर अब वैज्ञानिक विकास ने उसे बहुत ही उच्चस्तरीय एक शक्ति के रूप में सिद्ध कर दिया है। कानों से सुनी जाने वाली ध्वनियाँ हमें विभिन्न प्रकार से प्रभावित करती हैं। निन्दा सुनकर क्रोध आता है और प्रशंसा की वार्ता हमें प्रसन्नता प्रदान करती है। अपमानजनक चिन्ता उत्पन्न करने वाले शोक-सम्वाद शब्द हमें विक्षुब्ध कर देते हैं किन्तु सफलता, सुखद सम्भावना के समाचार सुनते ही मन में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है और चेहरे पर मुस्कान छा जाती है। मन ही नहीं, शरीर भी उस शब्द श्रवण की प्रतिक्रिया स्वरूप अपनी गतिविधियों में में हेर-फेर कर लेता है। द्रौपदी के शब्दों की कटुता ने महाभारत खड़ा करा दिया था। नम्र और भावनापूर्ण शब्दों से मनुष्य तो क्या भगवान तक पिघल जाते हैं।

मन्त्रोच्चार से उत्पन्न ध्वनि प्रवाह साधक की समग्र चेतना को प्रभावित करता है और उसके कम्पन अन्तरिक्ष में बिखरते हुए परिस्थितियों को अनुकूल बनाते हैं। कंठ, हाथ, जिह्वा, तालू आदि मुख्य अवयवों को विभिन्न शब्दों के उच्चारण में भिन्न-भिन्न प्रकार की हलचलें करनी पड़ती हैं। इनका प्रभाव स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर के कतिपय अवयवों पर पड़ता है। उपत्यिकाओं, नाड़ी गुच्छकों, विद्युत भँवरों पर इन मन्त्र ध्वनियों का प्रभाव पड़ता है और सूक्ष्म शरीर से चक्र एवं इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना जैसे विद्युत प्रवाह प्रभावित होते हैं। साधक के स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण शरीरों में होने वाले इस मन्त्र ध्वनि प्रवाह से कई प्रकार के उपयोगी परिवर्तन होते हैं। व्यक्तित्व में नये प्रकार के सुधार उत्पन्न होते हैं। कोई भी शक्ति सबसे पहले अपने उत्पादन स्थल को प्रभावित करती है फिर उसकी क्षमता अगले क्षेत्र पर अपना अधिकार जामाती हुई आगे बढ़ती है। आग जहाँ जलेगी पहले वही स्थान गरम होगा बाद में उस गर्मी का विस्तार अगले क्षेत्र में फैलता चलाता जायगा। मन्त्र साधना से सबसे अधिक प्रभावित साधक का व्यक्तित्व ही होता है।

मात्र शब्द प्रवाह ही नहीं, मन्त्र साधना में अन्य विविधि उपचारों का विधान रहता है। प्रयुक्त पदार्थों एवं हलचलों का, विधि-विधानों का, कर्मकाण्डों के क्रियाकलापों का अपना महत्व है। उनकी सम्मिलित प्रतिक्रिया का मन्त्र साधना में अद्‌भुत योगदान रहता है। इस संयुक्त प्रभाव से मन्त्र साधना अपना चमत्कारी प्रतिफल प्रस्तुत कर सकने में समर्थ होती है। साधक की सत्ता को प्रभावित करती हुई यह ध्वनि धारा—रेडियो तरंगों की तरह अन्तरिक्ष में दौड़ना आरम्भ करती है। शब्दवेधी बाण की तरह उसका प्रवाह सूक्ष्म जगत के उन स्थानों से टकराता है, जिन्हें प्रभावित करना साधना का उद्देश्य रखा गया था।

मन्त्र विद्या की सामर्थ्य विज्ञान की आधुनिक शोधों से भी पुष्टि होती है। अब ऐसे यन्त्रों का विकास हो चुका है जिसमें शब्द को सूक्ष्म विद्युत तरंगों में बदलकर मोटर-गाड़ियाँ चलाने के काम लिये जाते हैं। सुप्रसिद्ध अंग्रेजी गायिका श्रीमती वाट्स इग्स ने तो बिना यन्त्र के संगीत द्वारा प्रकृति में परिवर्तन करने के प्रयोग किये हैं।

इन प्रयोगों की प्रेरणा उन्हें एक घटना से मिली। श्रीमती वाट्स हग्स एक बार अपने दरवाजे पर बैठी एक राग गा रही थीं जब जब वे राग गाते तन्द्रित अवस्था (निमग्नता) की स्थिति अनुभव करतीं, उन्हें एक सर्प की आकृति प्रकट होती दिखाई देती। वे समझ न पाती थीं कि वस्तुत: वहाँ कोई सर्प आ जाता है अथवा वह केवल काल्पनिक अनुभूति भर है। परीक्षा के लिये उन्होंने उस स्थान में बहुत बारीक कणों वाली रेत बिछा दी और फिर से वही राग गाने लगीं। राग गाते गाते उन्हें फिर वैसी ही अनुभूति हुई। अब उन्होंने राग बन्द किया और रेत के निकट जाकर देखा कि उसमें एक सर्प की आकृति सचमुच बनी हुई है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

इस आश्चर्य ने उन्हें विविध प्रकार के राग सीखने और उनका विकास करने की प्रेरणा दी। राग में यद्यपि स्वर का आनन्द नहीं मिलता तथापि उसमें भावनाओं को दिशा-विशेष में निक्षेपित करने की प्रबल शक्ति होती है। उससे रस मिलता है। यह भाव तरंगें सूक्ष्म आकाश के परमाणुओं में उपस्थित विद्युत में कम्पन्न उत्पन्न करती हैं। यह कम्पन अपनी-अपनी तरह से परिणाम उपस्थित कर सकते हैं। प्राचीनकाल में सिद्ध गायक मल्हार-राग गाते थे तो वर्षा होने लगती थी, दीपक राग गाने से बुझे हुए दीपक जल उठते थे, मृग रंजनी गाने से जंगल के हिरण और मृग जीवन और मृत्यु का भय त्यागकर विमोहित हुए चले आते थे। संगीत स्वरों से आबद्ध सृष्टि अन्तराल में जबर्दस्त क्रान्ति उत्पन्न करने की एक महान् उपलब्धि भारतीय आचार्यों ने प्राप्त की थी। वाट्स हग्स का यह नन्हा सा प्रयोग उस उपलब्धि की एक क्षीण झाँकी मात्र कही जा सकती है।

गायत्री उपनिषद् की तृतीय कंडिका में महर्षि मैत्रेय ने आचार्य मोदगल्य से पूछा—देव मन और वाक् (ध्वनि) में क्या सम्बन्ध है तो महर्षि उत्तर देते हैं।

मन एवं सविता वाक् सावित्री, यत्र ह्येव मनस्तद्वाक्।

यत्र वै वाक् तन्मन इति एते द्वयोनो एकं मिथुनम्।

मन सविता है वाक् सावित्री। जहाँ मन है वहाँ वाक् है, जहाँ वाक् है वहाँ मन है। ये दोनों दो योनि और एक मिथुन हैं।

दृश्य जगत वस्तुतः सूर्य का ही व्यक्त रूप है। सूर्य न हो तो सारी सृष्टि निष्प्राण हो जाये। प्रकृति की रचना सूर्य ही करता है। यह रचना शब्द द्वारा ही सम्पन्न करने का अभिलेख शास्त्रकार ने किया है अर्थात् मन को शब्द में लय, गति या मन्त्र में बाँधकर स्थूल अणुओं को उसी प्रकार स्थिर किया जा सकता है जिस प्रकार से सूर्य अपनी प्रकृति को स्थिर करता है।

श्रीमती वाट्स हग्स के इस प्रयोग में स्वर को मन से बाँधकर स्थूल परिणाम उपस्थित करना इस शास्त्रीय सत्यता का प्रमाण था। लार्ड लिटन ने इस प्रयोग की बात सुनी तो उन्होंने श्रीमती हग्स को अपने पास बुलाया और उन्हें अपनी सभा का माननीय सदस्य बनाकर वैज्ञानिकों के समक्ष इस प्रकार का प्रयोग करने का आग्रह किया। श्रीमती वाट्स हग्स ने तब रागों के द्वारा विभिन्न आकृति प्रकृति के फूलों-फलों से लदे वृक्ष, सर्पाकार, त्रिकोण, षट्कोण, तारे, समुद्र, पक्षी आदि अनेकों प्रकार की आकृतियाँ बनाकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

आज ऐसे यन्त्रों का विकास हो चुका है जिसमें शब्द को सूक्ष्म विद्युत तरंगों में बदलकर मोटर गाड़ियाँ चलाने के काम लिये जाते हैं पर बिना किसी यन्त्र के प्रकृति में परिवर्तन उत्पन्न करने का यह संगीत-विज्ञान अपने आप में अनोखा था और यह बताता था कि देव शक्तियाँ मन्त्र द्वारा, शब्द विज्ञान द्वारा ही सूक्ष्म-स्थूल जगत का नियमन करती हैं। उन विद्याओं के ज्ञाता भी वैसे ही चमत्कार कर सकने में समर्थ हों तो इसे अतिशयोक्ति नहीं मानना चाहिए। मन्त्र स्वर या शब्द विज्ञान एक ही सत्य के भिन्न रूप हैं।

इटली की एक युवती ने सामवेद की एक ऋचा पर सितार द्वारा अभ्यास किया और उसका प्रयोग कर हजारों दर्शकों को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। कल्याण के साधना विशेषांक में पं. भगवान दास जी अवस्थी ने इस घटना का विवरण दिया है। फ्रांस की मैडम लोंग ने विभिन्न राग गाकर देवी मेरी और ईसा मसीह के अनेक चित्र बनाकर दिखाये और भारतीय मन्त्र शास्त्र के इस सिद्धांत की पुष्टि की कि प्रकृति के हर अणु को मानसिक एकाग्रता और ध्वनि के द्वारा किसी भी क्रम में सजाकर कैसा भी—आग, पानी, आकाश, धरती, प्रकाश, पहाड़ नदी-पक्षी-जीव, जन्तुओं का रूप दिया जा सकता है।

मन्त्र द्वारा शाप, वरदान रोगों से मुक्ति, मारण, मोहन, उच्चाटन, अभिचार, कृत्याघात आदि प्रयोग विराट चेतना शक्तियों द्वारा ध्वनि के माध्यम से उत्पन्न गति जैसे ही क्रिया-कलाप हैं। मन्त्र शक्ति के भंडार होते हैं, यदि मन की एकाग्रता द्वारा शब्द शक्ति प्रयोग की बात मनुष्य सीख ले तो वह साधारण व्यक्तियों की अपेक्षा हजारों गुणा अधिक शक्तिशाली हो सकता है। संगीत तो उसका सबसे सीधा, सरस व सरल प्रयोग मात्र है।

प्रायः ध्वनि को कानों को अमुक प्रकार की जानकारी देने का माध्यम माना जाता है। किसी शब्द

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को सुनकर उसमें सन्निहित अर्थ का बोध प्राप्त किया जाता है। अथवा किसी हलचल का—घटनाक्रम का अनुमान लगाया जाता है। यह सर्वविदित ध्वनि परिचय हुआ किन्तु गहराई में उतरने पर ध्वनि की सामर्थ्य उसकी अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होती है जैसा कि साधारणतया अनुमान लगाया जाता है।

विज्ञान ने ध्वनि को भी ऊर्जा वर्ग में गिना है। यह ऊर्जा आमतौर से कानों के माध्यम से मस्तिष्क तक पहुँचती है और अपने लिए उपयुक्त संस्थानों की तरंगति करके अपने प्रभाव से प्रभावित करती है। इस ज्ञान के सहारे ही जवीन का अधिकांश काम चलता है। ध्वनि के माध्यम से बालकों को अभिभावकों की भाषा सीखने का अवसर मिलता है उसके बाद ज्ञान क्षेत्र की अन्यान्य उपलब्धियों का अधिकांश उपार्जन कान के माध्यम से ही होता है। बधिर व्यक्ति गूँगा भी होता है और उसकी ज्ञान परिधि अन्धे की अपेक्षा भी कम रह जाती है। ग्रहण की तरह प्रेषण भी एक काम है। अभिव्यक्तियों, आवश्यकताओं, प्रेरणाओं का आदान-प्रदान प्राय: ध्वनि की सहायता से ही सम्भव होता है। लेखनी से भी प्रभाव ग्रहण तो किया जाता है, पर उस ग्रहण की अधिकांश पृष्ठभूमि उसके पहले वाणी की सहायता से बन चुकी होती है। लेखनी उस वाणी संचित मनोभूमि से आगे का ही कुछ काम कर सकने में समर्थ होती है।

विज्ञान की शोधों ने इससे आगे की जानकारियाँ प्राप्त की हैं और पता चलाया है कि ध्वनि का कार्य क्षेत्र ज्ञान का संवहन करने तक ही सीमित नहीं है वरन् वे ऐसी प्रचण्ड ऊर्जा से भरी रहती हैं जो मनुष्य के लिए, संसार के लिए हानि और लाभ दोनों ही प्रचण्ड परिमाण में कर सकती हैं। कोलाहल के फलस्वरूप वातावरण इतना विक्षुब्ध हो जाता है कि उस ओजित क्षेत्र में रहने वालों को शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता का सामना करना पड़ता है। मशीनों, वाहनों एवं हलचलों से उत्पन्न अनगढ़ शोर की हानि का दिन-दिन अधिक परिचय मिल रहा है। फलत: उससे बचने के उपायों को गंभीरतापूर्वक सोचा जा रहा है, अन्यथा बढ़ता हुआ कोलाहल सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए भयंकर संकट बन सकता है।

दूसरी ओर उपयोगी एवं सुनियोजित ध्वनियों का उपयोग प्रभाव भी देखा जाता है। सुमधुर संगीत की सृजनात्मक सामर्थ्य की जानकारी क्रमश: बढ़ती जा रही है और सोचा जा रहा है कि इस ध्वनि सम्पदा का लाभ किसी प्रकार अधिक मात्रा में, किस क्षेत्र में—किस प्रकार उठाया जाय।

कर्णेन्द्रिय के माध्यम से समझी जाने वाली ध्वनियाँ समस्त ध्वनि प्रवाह का एक बहुत छोटा अंश होती हैं। कान अपनी बनावट के अनुरूप मध्यम स्तर की ध्वनियों को ही ग्रहण कर पाते हैं। उनकी पकड़ से धीमी या तीव्र ध्वनियाँ भी अनन्त आकाश में परिभ्रमण करती रहती हैं। इनमें से कुछ तो ऐसी होती हैं कि उनका उपयोग प्रचण्ड शक्ति की तरह किया जा सकता है। उनसे ऐसे लाभ उठया जा सकता है जो एक प्रकार से अद्‌भुत या अनुपम ही कहा जा सके।

कनाडा के दो खदान नगरों के पास की खानों में कई दिन तक श्रमिक बहुत बड़ी संख्या में स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से काम पर हाजिर नहीं हुए। जो कुछ व्यक्ति आये, वे शारीरिक स्वास्थ्य और मनोदशा ठीक न होने के कारण सहीं ढंग से काम नहीं कर सके। इन लोगों की आम शिकायतें थीं—सिरदर्द, अनिद्रा, थकावट, काम में मन एकाग्र न होना, चेहरे का संज्ञा रहित हो जाना, मन बेचैन हो जाना, बहुतों की शिकायतें थी कि उन्हें अपने आस-पास रिक्त स्थान में से तरह-तरह की आवाजें सुनाई देती हैं।

कनाडा के ध्वनि वैज्ञानिकों के एक दल ने वैज्ञानिक जाँच के बाद इन परिस्थितियों के लिए रूस पर आरोप लगाया कि उसने कनाडा के इन कगारों पर रेडियों तरंगें जैसी एक खास तरह की शक्तिशाली तरंगों का प्रहार किया है, जिनके प्रभाव से वहाँ के निवासियों का शरीर व मन दोनों ही अस्वस्थ हो गये हैं।

वास्तव में यह अब कपोल कल्पना नहीं रही कि अस्थायी मनोविकारों से ग्रस्त शत्रु सेना आत्म-समर्पण करने को विवश हो जाये व इन मनोविकारों का कारण 'ध्वनि-युद्ध' यानी "साउण्ड वार" हो। यह अब उस शीतयुद्ध की विभिन्न शृंखलाओं में सम्मिलित हो चुकी है, जो पूँजीवादी एवं साम्यवादी देशों के मध्य चल रहा है। इस युद्ध में रूस ने अग्रणी रहकर ऐसा अस्त्र बना लिया है जिसके प्रयोग से नियंत्रित रेडियो तरंगें फेंककर शत्रु सैनिकों के मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव पैदा किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है जिससे वे युद्ध विमुख होकर शस्त्र त्याग करने की मनोदशा से आक्रान्त हो जायें एवं आत्मसमर्पण कर दें। ऐसा होने से शत्रुओं पर भयंकर बम या अन्य संहारक अस्त्रों के चलाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। धन-जन की हानि से बचाव इस नये युद्धास्त्र की एक उपलब्धि होगी।

आखिर ये रेडियों तरंगें क्या हैं ? क्या वस्तुत: ध्वनि तरंगों में इतनी शक्ति होती है। ध्वनि विज्ञान हमारे ऋषि- मनीषियों द्वारा प्रतिपादित पुरातन विद्या है जिसके ऊपर मन्त्रशक्ति आधारित है। हमारे पूर्वजों ने इसी का आश्रय लेकर ऐसी ऋचाओं का आविष्कार किया जिनके माध्यम से वे तरंगें फेंककर सूक्ष्म वातावरण को भी प्रभावित करते थे एवं स्थूल रूप से विश्व के मानव-मस्तिष्क को भी। मनोयोग से लक्ष्य पर फेंकी गई ध्वनि तरंगें प्रभावोत्पादक होती हैं। इसी पुरातन ज्ञान के आधार पर इन्फ्रारेडियो तरंगों का आविष्कार किया गया है।

इन तरंगों को ट्रांसमिशन टावर द्वारा दूरदेश पर रेडियो तरंगों की ही तरह सीधे फेंका जा सकता है। ये तरंगें सूक्ष्म तरंगें पट्टी की आवर्त्तिता में नहीं है बल्कि उन तरंगों में लम्बाई (वेव लेंग्थ) में कहीं ज्यादा लम्बी और प्रतिसैकिण्ड आवर्त्तिता (फ्रीक्वेन्सी) में कहीं कम आवर्त्ती हैं। इनकी लम्बाई और आवर्त्तिता मानव-मस्तिष्क को विविध तरंगों के आसास है और इसीलिए ये मस्तिष्क तरंगों को जगह-जगह छूती हैं, उन्हें काटती हैं, प्रभावित करती हैं और परिणामस्वरूप मन और दिमाग में व्यवधान पैदा करती हैं जिससे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य विकृत हो जाता है। इन तरंगों को 'रेडियो से इस ओर' की तरंगें या इन्फ्रारेड वेत्स कहा जाता है।

हमारे रेडियो सेटों को किसी खास स्टेशन को पकड़ने के लिए उसके लिए ट्यून होना पड़ता है, परन्तु उपर्युक्त मामले में रूस से प्रसारित तरंगों की फ्रीक्वेन्सी मानव मस्तिष्क रूपी रेडियो सेटों की फ्रीक्वेन्सी के आसपास होने से वे स्वाभाविकत: 'इनट्यन' हो गये एवं बजने लगे यानी प्रभावित होने लगे। यह प्रभाव अस्थायी होता है। इसमें मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य इतना ही विकृत किया जाता है कि शत्रु यद्ध से विमुख हो जायें एवं आत्मसमर्पण की मनोदशा में आ जायें। जबकि माइक्रो तरंगों से पैदा होने वाली शिकायतें न केवल ज्यादा खतरनाक बल्कि स्थायी प्रकार की होती हैं। माइक्रो तरंग के शिकार राडार पर काम करने वाले होते हैं। राडार पीड़ितों का एक संगठन अमेरिका में है जिसके सदस्य द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान कुछ ही वर्षों की रेडार साजी के शिकार हो गये हैं। कुछ पर बार-बार हृदय रोग के आक्रमण हुए हैं। कुछ को पक्षाघात, कुछ को मोतियाबिंदु एवं कुछ की प्रजनन शक्ति चली गयी है। इनके बालों का रंग भूरे से लाल हो गया है। इस संगठन के अध्यक्ष जोसेफ टाडने सरकार से आग्रह कर रहे हैं कि माइक्रो तरंगों के बढ़ते खतरों से रक्षा के लिए वह ठोस कार्यवाही करें। ये तरंगें न केवल रक्तरोग पैदा करती हैं अपितु इनसे कैंसर तक हो जाता है।

इन तरंगों के बारे में जो वैज्ञानिक जानकारी हमें उपलब्ध हुई है उससे भय की एक लहर दौड़ जाती है। ये तरंगें मनुष्य को उत्तेजित एवं तुरन्त बाद हताश कर उसे अक्षम बना देती हैं। रूस अकेला ही 'इन्फ्रारेडियो' तरंगों के मामले में आगे नहीं है। अमेरिका भी ऐसा आविष्कार कर चुका है।

इस बात की कल्पना करने की आवश्यकता है कि मानव-मस्तिष्क को नियंत्रित करने वाले ये प्रयोग आखिर मनुष्य को किस श्रेणी में ला देंगे ? इन तरंगों का सदुपयोग विज्ञान ने संचार साधनों के विस्तार हेतु किया, तब तक तो उचित था, पर जब इनका विनाशकारी उपयोग हो रहा है तो इसकी निंदा की जानी चाहिए। दूसरी ओर कुछ वैज्ञानिक ध्वनि तरंगों का उपयोग कर अल्ट्रासोनिक थेरेपी द्वारा मनुष्य की विभिन्न व्याधियों का उपचार करने का दावा करते हैं। ध्वनि का यही सृजनात्मक उपयोग मन्त्रों की विद्या में प्रयुक्त हुआ है। विज्ञान विनाश की ओर न बढ़कर सृजन की ओर बढ़े तो लाखों पीड़ितों की सहायता हो, उन्हें अपने कष्ट से मुक्ति मिले।

मन्त्र शक्ति की विधेयात्मक और निषेधात्मक शक्ति की प्राय: चर्चा होती रहती है। शाप और वरदान की बात असंगत नहीं युक्त है। समर्थ व्यक्तित्व अपनी विशिष्ट सूक्ष्म प्राण शक्ति में घोलकर ऐसा शब्द प्रवाह उत्पन्न कर सकते हैं जो अपने निर्धारित लक्ष्य तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पहुँचकर अभीष्ट प्रभाव उत्पन्न कर सके। शब्दवेधी बाण की चर्चा होती रहती है। कहा जाता है कि यह बाण तरकस से निकलकर उस स्थान पर अचूक निशाना लगाता है जहाँ से अमुक शब्द निसृत हुआ था। इस संदर्भ में प्रमाण के अभाव में कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता है, पर शाप और वरदान की अमोघ शक्ति के बारे में अनेकानेक प्राचीन एवं अर्वाचीन प्रमाण उपलब्ध हो सकते हैं।

मन्त्र साधना से साधक अपनी सामर्थ्य बढ़ाते हैं; दैवी शक्तियों का अनुग्रह प्राप्त करते हैं तथा अन्यान्य व्यक्तियों एवं वस्तुओं को प्रभावित करते हैं। यह न तो कपोल कल्पना है और न अंध विश्वास। इसे शब्द शक्ति का विज्ञान-सम्मत प्रयोग कह सकते हैं। मन्त्र की शब्द संरचना उसकी उच्चारण प्रक्रिया, निर्धारित साधना पद्धति—साधक का मनोबल एवं व्यक्तित्व आदि के सम्मिलित स्वरूप से वह शक्ति निखरती है जिसके आधार पर वे चमत्कारी परिणाम उत्पन्न होते हैं जिनकी मन्त्र योग की साधना से अपेक्षा की जाती है।

ध्वनि शक्ति का परिष्कृत उपयोग ही मन्त्र साधना है। उससे परोक्ष अध्यात्म उद्देश्य ही नहीं—प्रत्यक्षत: शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन के उपयोगी लाभ भी मिल सकते हैं। वैज्ञानिक क्षेत्रों में ऐसे प्रयोगों को चिकित्सा उपचार का महत्वपूर्ण अंग माना जाने लगा है।

ध्वनि विज्ञान का सृजनात्मक उपयोग चिकित्सा क्षेत्र में भी हो सकता है। इसका उदाहरण पश्चिमी जर्मनी के डाक्टरों की वह अनूठी खोज है, जिसमें मूत्राशय या वृक्क की पथरी पर छोड़ी गई ध्वनि तरंगें कुछ ही क्षणों में पथरी को सूक्ष्म-सूक्ष्म कणों में बाँटकर उसे मूत्रमार्ग से बाहर निकाल देती हैं। नियंत्रित ध्वनि निश्चित आवृत्तियों में जब छोड़ी जाती हैं, तब वे आस-पास के ऊतकों को घायल किये बिना पथरी को पीस डालती हैं। बिना आपरेशन के मुक्ति पाने का यह अद्‌भुत उपाय है।

उपकरण के उपयोग की विधि यह है कि रोगी को नहाने के एक टब में बैठाया जायेगा और डेढ़ मीटर की दूरी से ध्वनि तरंगें उसके गुर्दे की पथरी को लक्ष्य बनाकर छोड़ी जावेंगी जो पथरी को चाहे उसका आकार कितना भी बड़ा हो, भस्म कर देती हैं।

इससे पूर्व अल्ट्रासोनिक थेरेपी के द्वारा शरीर के विभिन्न जोड़ों में दर्द आदि की चिकित्सा की जाती रही है। चिकित्सा के अलावा रोगों के निदान में भी ध्वनि व प्रतिध्वनि के सिद्धान्त का आश्रय लिया जाता है। हृदय की विभिन्न व्याधियों में उसके कपाटों द्वारा आने वाली प्रतिध्वनि को ग्राफ बनाकर पढ़ा जाता है व तदनुसार बीमारी जानी जाती है। मस्तिष्क में चोट, रक्तस्राव आदि में भी इसी सिद्धात के द्वारा रोग का निदान किया जाता हैं।

विज्ञान जिस तत्परता के साथ ध्वनि शक्ति को खोजने और उसका सद्‌उपयोग करने का मार्ग निकालने में दत्तचित है उसी प्रकार मन्त्र शक्ति के अनुसंधान में संलग्न होने पर भी उच्चस्तर के लाभ मिल सकने की सम्भावना है।

मन्त्र साधना के आधार और चमत्कार

मन्त्र साधना भी यन्त्र साधना की तरह ही एक विशुद्ध विज्ञान है। यन्त्रों के सिद्धान्त, निर्माण, संचालन, सुधार में दक्षता प्रस्तुत करना ही यन्त्र विद्या का आधार है। यह प्रक्रिया ठीक रहे तो यन्त्रों की क्षमता से समुचित लाभ उठाया जा सकता है। पर यदि इन प्रकरणों में त्रुटि रहे तो मशीनें समय और धन की बर्बादी ही करती हैं। ठीक इसी प्रकार मन्त्र साधना के सभी प्रयोग, प्रकरण सही हों तो उनका लाभ प्राप्त किया जा सकता है अन्यथा अधूरा और अस्त-व्यस्त साधना-क्रम अपनाने पर निराशा और उपहास का ही भाजन बनना पड़ता है।

भौतिक विज्ञान बाह्य जगत को प्रभावित करता है और जड़ प्रकृति में सन्निहित शक्तियों को उपयोग योग्य बनाकर लाभकारी परिणाम उपस्थित करता है। अध्यात्म विज्ञान अन्तरंग क्षेत्र को प्रभावित करता है और चेतन प्रकृति को प्रदीप्त कर उससे सर्वसमर्थ व्यक्तित्व का निर्माण करता है। भौतिक विज्ञान सुख साधनों का उत्पादन करता है। शरीरों को अधिक सुविधाजनक स्थिति में रखने के आधार जुटाता है। यही उसकी परिधि है। अन्त:चेतना तक न तो उसकी पहुँच है और न उस स्तर की क्षमता वह उत्पन्न कर सकता है।

यह जगत जड़ और चेतन का सम्मिश्रण है। प्राणधारियों के भीतर चेतना रहती है और बाहर पञ्च

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भौतिक कलेवर चढ़ा होता है। दोनों के सम्मिश्रण से ही प्राणि जगत की विविध हलचलें दिखाई पड़ती हैं। नदी, पर्वत जैसे सर्वथा जड़ पदार्थों की बात अलग है—जहाँ चेतना है वहाँ इस बात की भी आवश्यकता अनुभव की जाती है कि वस्तुओं और शरीरों की तरह ही चेतना को भी स्वच्छ, स्वस्थ और सुविकसित रखा जाय। इसी क्रिया-कलाप को अध्यात्म कहते हैं।

जड़ प्रकृति की शक्तियों का अधिकाधिक परिचय भौतिक विज्ञान ने सर्वसाधारण के लिए सुलभ किया है। अग्नि, विद्युत, ईथर, अणु-शक्ति तरंगें, चुम्बक आदि भौतिक शक्तियों का उपयोग कितना चमत्कारी परिणाम प्रस्तुत करता है यह सर्वविदित है। चेतन प्रकृति का स्तर और भी ऊँचा है। वस्तुतः चेतन का ही जड़ के ऊपर अधिकार है। जलयान कितना ही बड़ा क्यों न हो चेतन, संचालक के बिना कुछ कर न सकेगा। अन्तरिक्ष में मानव रहित राकेट स्वसंचालित लगते भर हैं वस्तुतः उन्हें धरती पर बैठे हुए वैज्ञानिक ही दिशा देते और नियन्त्रण करते हैं। रेलगाड़ी कितनी ही कीमती क्यों न हो, जीवित ड्राइवर के बिना वह टूटी चट्टान की तरह निरर्थक है। प्राण के बिना शरीर का क्या उपभोग ? उपभोक्ता रहित सम्पदा तो समुद्र तल और भूगर्भ में न जाने कितनी दबी पड़ी है। महत्व उतनी का ही है जितनी कि चेतन प्राणी उसका उपयोग कर सके। जड़ पदार्थों की तरह जड़ विज्ञान भी तभी उपयोगी हो सकता है जब उसका चेतन प्राणी द्वारा नियन्त्रण एवं उपयोग किया जाय। तात्पर्य यह है कि जड़ की तुलना में चेतन का मूल्य महत्व अत्यधिक है। इसी अनुपात से भौतिक विज्ञान से अध्यात्म विज्ञान की महत्ता एवं उपयोगिता बढ़ी-चढ़ी है।

भौतिक विज्ञान के प्रत्यक्षीकरण में प्रयुक्त होने वाले उपकरण 'यन्त्र' कहलाते हैं और आत्म विज्ञान से लाभान्वित होने के माध्यम 'मन्त्र' कहे जाते हैं। यन्त्रों के बिना वैज्ञानिक तथ्यों से लाभ नहीं उठाया जा सकेगा। इसी प्रकार मन्त्र रहित अध्यात्म सिद्धान्त मात्र बनकर रह जायगा उसे प्रत्येक्ष न किया जा सकेगा।

समग्र विज्ञान को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—एक पिण्डव्यापी दूसरा ब्रह्माण्डव्यापी। एक अन्तरंग दूसरा बहिरंग। जिस प्रकार थ्योरी और प्रैक्टिस के आधार पर बहिरंग शिक्षा पद्धति चलती है उसी प्रकार अध्यात्म प्रगति के लिए आस्था और साधना दो माध्यम हैं। आस्था के अन्तर्गत नीति, धर्म, दर्शन, आत्म-ज्ञान, ब्रह्म एवं सूक्ष्म जगत का वर्णन विवेचन आता है। शास्त्रों में उसी का वर्णन है। आत्मबोध, लोक व्यवहार, चिन्तन परिष्कार को अध्यात्म 'निष्ठा' पक्ष में लिया जायगा। संयम, नियम, व्रत, तप, साधन प्रभृति क्रियाकलापों को साधना माना जायेगा। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरी अपूर्ण रह जायगी। ज्ञान कर्म के समन्वय से ही उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं। ज्ञान के बिना कर्म और कर्म के बिना ज्ञान निर्जीव निष्प्राण रहेगा। तत्व दर्शन के बिना तपस्या और तप साधना के बिना तत्व दर्शन समग्र अध्यात्म का प्रयोजन पूरा नहीं कर सकते हैं।

विश्वव्यापी ब्रह्म चेतना के साथ मनुष्य का सघन और सुनिश्चित सम्बन्ध है। पर उसमें मल आवरण विक्षेप जैसे अवरोधों ने एक प्रकार से विच्छेद जैसे स्थिति उत्पन्न करदी है। बिजलीघर और कमरे के पंखे के बीच लगे हुए तारों में यदि कहीं गड़बड़ी उत्पन्न हो जाय तो पंखा और बिजलीघर दोनों ही अपने-अपने स्थान पर वहीं रहते हुए भी सन्नाटा छाया रहेगा। पंखा चलेगा नहीं निःचेष्ट पड़ा रहेगा। इन अवरोधों को साफ करना ही मन्त्र साधना का उद्देश्य है। नाली के प्रवाह में कोई रोड़ा आ जाय तो पानी इधर-उधर फैलेगा और नाली सूखी पड़ी रहेगी। यही बात हमारे जीवन प्रवाह में भी दृष्टिगोचर होती है। अन्न, जल पर जीवित रहने वाला शरीर तो अपना आहार प्राप्त करके गतिशील बना रहता है पर अन्तःचेतना की खुराक न मिलने से वह दिन-दिन दुर्बल एवं मरणासन्न होती चली जाती है। यही है हम सबकी आन्तरिक दयनीय दुर्दशा का कारण।

नवजात शिशु माता के दूध पर अवलम्बित रहता है। आत्मा का पोषण परमात्मा के साथ प्रत्यावर्तन बने रहने पर ही होता है। बादल तभी बरसते हैं जब समुद्र से उन्हें भरपूर पानी मिले। यदि समुद्र से सम्बन्ध टूट जाय तो बादलों का बरसना तो दूर, उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जायगा। तब केवल धूलिकण ही यदा-कदा बदली बनकर घूमते दृष्टिगोचर होंगे। परमात्मा से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्ध टूट जाने पर आत्मा अपना वर्चस्व खो बैठती है, आत्म बल के लक्षण दिखाई नहीं पड़ते, महानता तिरोहित हो जाती है केवल काय-कलेवर ही छिपकली की कटी हुई पूँछ की तरह उछल-कूद करता रहता है। हममें से अधिकांश को शरीर मात्र बनकर जीना पड़ रहा है। आत्मा की गरिमा के वर्णित कोई चिह्न अपने में दीखते नहीं। इसे आत्मा और परमात्मा के बीच गतिरोध ही समझा जाना चाहिए। परित्यक्ता पत्नी की भाँति उस पर उदसीनता ही छाई रहती है।

साधना इन शिथिल सम्बन्धों को पुन: प्रतिष्ठापित करने की सुनिश्चित पद्धति है। मन्त्र साधन उसका कर्म पक्ष है। यों आत्म-ज्ञान भी कम महत्व का नहीं, उसकी अपनी गरिमा है। फिर भी वह पूर्ण नहीं। कोई व्यक्ति विद्वान, ज्ञानी, दार्शनिक, शास्त्रज्ञ, वेदान्ती होने भर से से आत्मबल-सम्पन्न नहीं हो सकता । इसके लिए उसे साधनात्मक कर्मकाण्ड अपनाने की अनिवार्य रूप से आवश्यकता होगी। विश्व चेतना के साथ व्यक्ति चेतना को जोड़ने का यही मार्ग है। मन्त्र साधन इसी राज मार्ग की तरह समझा जाना चाहिए।

मन्त्र का प्रत्यक्ष रूप ध्वनि है। ध्वनि भी क्रमबद्ध— लयबद्ध और वृत्ताकार। एक क्रम से निरन्तर एक ही शब्द विन्यास का उच्चारण किया जाता रहे तो उसका एक गोल चक्र बन जाता है। तब शब्द तरंगें सीधी चलने की अपेक्षा वृत्ताकार घूमने लगती हैं। रस्सी में पत्थर का टुकड़ा बाँधकर उसे तेजी से चारों ओर घुमाया जाय तो उसके दो परिणाम होंगे एक यह कि वह एक गोल घेरा जैसा दीखेगा। रस्सी और ढेले का एक स्थानीय स्वरूप बदलकर गतिशील चक्र के रूप में बदल जाना एक दृश्य चमत्कार है। दूसरा परिणाम यह होगा कि उस वृत्ताकार घुमाव से एक असाधारण शक्ति उत्पन्न होगी। इस तेज घूमते हुए पत्थर के छोटे टुकड़े से किसी पर प्रहार किया जाय तो उसकी जान ले सकता है। इसी प्रकार यदि उसे फेंक दिया जाय तो तीर की तरह सनसनाता हुआ बहुत दूर निकल जायगा। मन्त्र जप से यही होता है। कुछ शब्दों को एक रस, एक स्वर, एक लय के अनुसार बार-बार दुहराते रहने से उत्पन्न हुई ध्वनि तरंगें—सीधी या साधारण नहीं रह जातीं। वृत्ताकार उनका घुमाया जाना अन्तरंग पिण्ड में तथा बहिरंग ब्रह्माण्ड में एक असाधारण शक्ति प्रवाह उत्पन्न करता है। उसके फलस्वरूप उत्पन्न हुए परिणामों को मन्त्र का चमत्कार कहा जा सकता है।

मन्त्रों का शब्द चयन योग विद्या में निष्णात तत्ववेत्ताओं से दिव्य चेतना एवं सघन अनुभूतियों के आधार पर किया होता है। यों उस शब्द विन्यास में कुछ प्रेरणा-प्रद अर्थ और सन्देश भी होते हैं पर उनकी महत्ता उतनी नहीं, जितनी शब्द गुन्थन की। अर्थ की दृष्टि से भी उनसे भी अधिक भाव पूर्ण कविताए हैं और हो सकती हैं। फिर सूत्र जैसे छोटे मन्त्रों में उतनी विस्तृत भाव शृंखला भरी भी नहीं जा सकती जितनी मन:क्षेत्र को प्रभावित करने के लिए आवश्यक है। वस्तुत: मन्त्र की महत्ता उसके 'स्फोट' में है। स्फोट का अर्थ है ईश्वर तत्व में होने वाला ध्वनि विशेष का असाधारण प्रभाव। तालाब में छोटा ढेला फेंकने से थोड़ी और छोटी लहरें उत्पन्न होती हैं पर यदि बहुत ऊँचाई से बहुत जोर से कोई बहुत बड़ा पत्थर पटका जाय तो उसका शब्द और स्पन्दन दोनों ही अपेक्षाकृत बड़े होंगे और उसकी प्रतिक्रिया प्रतिध्वनि भी बड़ी लहरों के साथ दिखाई देगी। मन्त्र विद्या के सन्दर्भ में इसी को स्फोट कहा जाता है। इसकी तुलना बारूद, कारतूस विस्फोट से उत्पन्न ध्वनि के साथ अथवा अणु बम फटने के साथ की जा सकती है। मन्त्र साधक को यह जानना और जताना पड़ता है कि स्फोट की कितनी मात्रा अभीष्ट है। असन्तुलित विस्फोट-बन्दूक या तोप तक को फाड़ सकता है। असंगत साधना से लक्ष्य प्राप्त होना तो दूर उलटा अनिष्ट उत्पन्न हो सकता है।

मन्त्र की तीसरी धारा है लय। उसे किस स्वर में—किस प्रवाह में—उच्चारित किया जाय, इसे लय कहते हैं—साधारणतया मानसिक, वाचिक और उपांशु नाम से लय की न्यूनाधिकता का वर्गीकरण किया जाता है। वेद मन्त्रों में इसे उदात्त, अनुदात्त और स्वरित कहते हैं। साम गान में सप्त स्वरों तथा उनके आरोह-अवरोह को ध्यान में रखा जाता है। यह लय क्रम ही संगीत का मूल आधार है उसकी व्याख्या 'शब्द ब्रह्म' कहकर की जाती है। जानकारी का पता है कि शास्त्र-सम्मत संगीत का शरीर और मन पर ही नहीं बाह्य वस्तुओं और परिस्थितियों पर भी प्रभाव पड़ता है। दीपक राग से बुझे दीपक जलने, मेघ राग से वर्षा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

होने की कथा-गाथाएँ सर्वथा अविश्वस्त नहीं हैं। संगीत के वृक्ष, वनस्पतियों, फसलों और दुधारू पशुओं पर होने वाले प्रभाव को वैज्ञानिक मान्यता मिल चुकी है। रोगों की निवृत्ति में संगीत की भूमिका निकट भविष्य में और भी अधिक मिलेगी और उसे चिकित्सा में प्रमुख स्थान मिलेगा। वैदिक और तान्त्रिक मन्त्रों का सारा वाङ्मय लय तथ्य को अपने गर्भ में छिपाये बैठा है। किसी भी रीति से—किसी भी ध्वनि में मन्त्र साधना भावात्मक आकांक्षा भले ही पूरी करे, उससे वैज्ञानिक लाभों का प्रयोजन पूरा न होगा।

चुम्बक लोहे को अपनी ओर आकर्षित करता है लकड़ी को नहीं। बिजली का प्रवाह भी धातु के तारों के सहारे ही चलता है। रबड़ आदि अधातु पदार्थों में बिजली नहीं दौड़ सकती। इसी प्रकार मन्त्र साधक को अपनी शारीरिक और मानसिक स्वच्छता एवं समर्थता के लिए प्रयास करते हुए अपना व्यक्तित्व इस योग्य बनाना पड़ता है कि अन्तरिक्ष से अवतरित होने वाला शक्ति प्रवाह धारण कर सकना सम्भव हो सके। राज योग से यम नियमों की साधना मानसिक परिष्कार के लिए और आसन प्राणायाम का अभ्यास शारीरिक सुव्यवस्था के लिए है। यदि इन आरम्भिक चरणों को पूरा न किया जाय तो फिर प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि की उच्च स्तरीय साधना सम्भव न होगी। आहार-विहार के प्रतिबन्ध—व्रत, संयम का विधान व्यक्तित्व के परिष्कार के लिए ही है। स्वच्छ दर्पण में ही मुँह साफ दीखता है, साफ कपड़े पर ही ठीक से रंग चढ़ता है। यदि जीवन-क्रम दुष्ट और दुराचारी बना रहे तो फिर मन्त्र साधना का कर्म-काण्ड कितना ही विधि-विधान युक्त क्यों न हो, उसका अभीष्ट परिणाम निकलेगा नहीं।

इसके अतिरिक्त पाँचवी शर्त है—भाव भरी मनःस्थिति। इसे दूसरे शब्दों में श्रद्धा कह सकते हैं। जिस प्रकार भौतिक जगत की प्रमुख शक्तियों में विद्युत अग्रगन्य है उसी प्रकार आत्मिक जगत में सशक्त उपलब्धियाँ श्रद्धा की उत्कृष्टता पर निर्भर हैं। मनोविज्ञानवेत्ता विचारों की क्षमता और संकल्प शक्ति का गुणगान मुक्त कण्ठ से करते रहे हैं। मनुष्य को उठाने, गिराने और बनाने में निष्ठा एवं आस्था का महत्व असाधारण है। आत्मबल और मनोबल का चमत्कार सामान्य व्यक्ति को महामानव के रूप में परिणत कर देने में समर्थ होता है। संसार की महान घटनाओं की पृष्ठभूमि प्रचुर साधनों पर नहीं प्रचण्ड संकल्प शक्ति पर ही रखी गई है। सफलताओं का समग्र इतिहास दृढ़ निश्चय के साथ जुड़े हुए प्रचण्ड पुरुषार्थ की लेखनी से ही लिखा गया है। मैस्मरेजम, हिप्नोटिज्म, क्लेरो वायेन्स, टैलेपैथी आदि योग विद्या के छुटपुट खेल—संकल्प शक्ति की ही फुलझड़ियाँ है। इसी तथ्य को साधना का प्राण कह सकते हैं।

अविश्वासी और अन्यमनस्क व्यक्ति उपेक्षा और उदासीनता के साथ कोई साधन करते रहें तो चिरकाल व्यतीत हो जाने और लम्बा कष्ट साध्य अनुष्ठान कर लेने पर भी अभीष्ट लाभ न होगा। किन्तु यदि भाव-भरी मनोभूमि में थोड़ा भी साधन, विधान अटूट श्रद्धा विश्वास के साथ सम्पन्न किया जाय तो उसका परिणाम तत्काल दृष्टिगोचर होगा। संदिग्ध और आशंका ग्रस्त मनोभूमि मानसिक धरातल को बहुत ही उथला बनाये रखती है उससे कोई बड़े देवी अनुदान सँजोये नहीं जा सकते। साधनात्मक विधि-विधान का अपना महत्व है पर यह तथ्य ध्यान रखने योग्य है कि श्रद्धा को आत्मिक उपलब्धियों का 'प्राण' ही माना जायगा। प्राणरहित शरीर को कितना ही सँजोया, सँभाला जाय तो उससे कुछ काम न बनेगा। भावना रहित मनोभूमि मरुस्थल के समान है जहाँ सफलता की हरी-भरी खेती लहलहाने का स्वप्न कदाचित ही सफल होता है। अस्त साधना की सफलता चाहने वाले साधकों को अपनी प्रकृति और प्रवृत्ति को श्रद्धा सिक्त ही बनाना पड़ता है।

अध्यात्म विधान की गरिमा भौतिक विज्ञान से असंख्य गुनी बढ़ी-चढ़ी है। मन्त्र बहुमूल्य हो सकते हैं पर मन्त्रों की महत्ता से उन्हें तोला नहीं जा सकता। संसार की सम्पदाएँ—आत्मिक विभूतियों की तुलना में नगण्य हैं। जड़ और चेतन की गरिमा में जमीन-आसमान जितना अन्तर है। इसे ध्यान में रखा जाय तो इस निष्कर्ष पर पहुँचना होगा कि हमें भौतिक सम्पदाओं के लिए ही लालायित नहीं रहना चाहिए वरन् आत्मिक विभूतियों को भी उपार्जित करना चाहिए। आत्मबल संग्रह करने के लिए कदम बढ़ाना सूर्य की ओर मुँह करके चलने के बराबर है। इससे सम्पत्ति रूपी छाया पीछे-पीछे चलेगी। किन्तु यदि छाया की ओर मुँह करके दौड़ा जाय तो वह पकड़ में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं आयेगी और जितनी तेज दौड़ होगी वह भी आगे उतनी ही तेजी के साथ दौड़ती चली जायगी। विभूतिवान सम्पत्ति का लाभ अनायास ही उठा लेते हैं जबकि सम्पत्तिवानों को भौतिक विक्षोभ और आत्मिक असन्तोष की दुहरी हानि उठानी पड़ती है।

हम आत्मिक प्रगति के पथ पर बढ़ें। आत्म विज्ञान की सहायता लें। आत्मबोध से दृष्टिकोण परिष्कृत करें और साधना-निरत रहकर विभूतियों के अधिकारी बनें। इस सन्दर्भ में भौतिकी की तरह ही मन्त्र साधना का आश्रय लेना एक प्रकार से अनिवार्य है।

यान्त्रिकी और मान्त्रिकी का सुव्यवस्थित सुनियोजन

जनमानस को श्रेष्ठता की दिशा-धारा अपनाने के लिए अतीत के स्वर्णिम युग में ऋषि-मुनीषियों ने आत्मिकी की समर्थता एवं प्रक्रिया के सहारे लोक मान्यताओं में शालीनता के तत्वों को भर देने में सफलता पायी थी और मनुष्यों ने देवत्य का उदय तथा धरती पर स्वर्ग का अवतरण सम्भव करके दिखाया था। तब आत्मिकी सर्व समर्थ थी। पर आज भौतिकी का ही बोलबाला है। उसकी सामर्थ्य प्रत्यक्ष है। वर्तमान में भौतिक विज्ञान की सैकड़ों धाराओं का प्रशिक्षण होता है और उसके सहारे यह बताया जाता है कि प्रकृति क्या करती है और क्या चाहती है ? मनुष्य उससे क्या लाभ उठा सकता है ? इस सन्दर्भ में अब तक जो निष्कर्ष निकाले गये हैं वे उत्कृटता की आस्थाओं का ही समर्थन नहीं करते, वरन् उच्छृंखलता अपनाने की प्रेरणा देते हैं। इस आधार पर कुबेर जितनी सम्पदा और इन्द्र जितनी सुविधा बटोर लेने पर भी आन्तरिक निकृष्टता मनुष्य को दुख-दारिद्रय की नारकीय आग में जलाती रहती है। इन प्रेरणाओं को उलट सकना तनिक भी कठिन नहीं है। यदि आत्मिकी और भौतिकी के सही स्वरूप को समझा है और दोनों महाशक्तियों में सुनियोजन बिठाया जा सके तो सुखद परिस्थितियाँ सहज ही विनिर्मित हो सकती हैं।

ऋषियों का समस्त चिन्तन, प्रतिपादन और समर्थन इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए हुआ, इसलिए इस समस्त विचार परिकार को ऋचा या मन्त्र कहा गया और आत्मिकी को मन्त्रिकी के नाम से जाना गया। उनका लक्ष्य सदा आध्यात्म और विज्ञान-आत्मिकी और भौतिकी के समन्वय का एवं उस समुद्र मंथन से प्राप्त नवनीत से जनमानस को लाभान्वित कराने का रहा है। यान्त्रिकी और यान्त्रिकी—दोनों ही विषयों में मनीषियों ने गम्भीरतापूर्वक अनुसंधान किया था। एक का क्षेत्र स्वयं का काय-कलेवर तथा दूसरे का पदार्थ जगत था। उन्होंने यह जान लिया था कि यान्त्रिकी की तरह ही मान्त्रिकी भी समर्थ है।

यान्त्रिकी एवं मान्त्रिकी के कार्यक्षेत्र अलग-अलग होते हुए भी दोनों के उद्देश्य एक हैं। प्रकृति के अन्तराल में छिपी हुई भौतिक शक्तियों को प्रत्यक्ष करने तथा प्रयोग में लाने के लिए विभिन्न उपाय और उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है। इन्हें 'यन्त्र' कहते हैं और प्रयुक्त करने की विद्या यान्त्रिकी कहलाती है। चेतना के अन्तराल में छिपी हुई दिव्य शक्तियों के प्रकटीकरण एवं प्रयोग के लिए जिन माध्यमों को अपनाया जाता है उसे 'मन्त्र' कहते हैं। यन्त्र हर प्रयोजन के लिए अलग-अलग प्रकार के बनाने पड़ते हैं, पर मन्त्र में अपना शरीर और मन ही पर्याप्त माना जाता है। इन दोनों की संरचना बड़ी रहस्यमय है। साधारणतया शरीर अपने जीवन धारण और निर्वाह साधन का परिश्रम करने में लगा रहता है, पर यदि उसकी सूक्ष्म संरचना पर ध्यान दिया जाय तो एक नये विलक्षण प्रकार का ढाँचा उसके भीतर फिट किया हुआ परिलक्षित होता है। षट्चक्र, ग्रन्थि संस्थान, उपत्यिकायें, प्राण प्रवाहिनी दिव्य नाड़ियों जैसी अगणित विलक्षणताओं से भरी इस काया में ऐसा तिलिस्म सामने आता है, जिसे खोजने वाले सूक्ष्म जगत में प्रवेश करके अनेक ऐसी विलक्षणतायें एवं विशेषतायें उपलब्ध करते हैं जिन्हें अध्यात्म की भाषा में सिद्धियाँ कहा जाता है।

शरीर की संरचना पंचतत्वों एवं विभिन्न रसायनों के सम्मिश्रण से हुई है। इसलिए इसमें पदार्थ जगत में पायी जाने वाली शक्तियों का समस्त तारतम्य बीजरूप में विद्यमान रहता है। चिनगारी को प्रयत्नपूर्वक प्रचण्ड ज्वाला में प्रकट किया जा सकता है। इसी प्रकार काया में समाहित प्रकृति-शक्तियों के प्रकटीकरण में शरीर साधना के रूप में बने हुए अनेक उपचार काम दे सकते हैं। आसन, प्राणायाम, बन्ध, मुद्रा, नेति, धौति, वस्ति, उपवास, तप-तितीक्षा आदि साधनों का उपयोग इसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्र को निरोग, समर्थ एवं विशिष्ट बनाने के लिए किया जाता है। मान्त्रिकी का यह एक पक्ष है।

अध्यात्म में मान्त्रिकी का दूसरा क्षेत्र है मन। यों मस्तिष्क को भी शरीर के अन्तर्गत ग्यारहवीं इन्द्रिय माना गया है, फिर भी इसकी स्थिति ऊँची है। चेतना को घोंसला इसी में है। वह उन्मुक्त आकाश में उड़ने वाले पक्षी की तरह समस्त काया में और उसके बाहर भी अपने प्रभाव पुरुषार्थ का परिचय देती है। इसलिए घोंसले की रचना क्षमता अन्य अवयवों से भिन्न एवं विशिष्ट मानी गयी है। मूर्धन्य मनोवैज्ञानिकों एवं मस्तिष्कीय विद्या में निष्णात् वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधान निष्कर्षों में बताया है कि मस्तिकीय क्षमता की अभी मात्र तेरह प्रतिशत ही जानकारी मिल सकी है और सामान्य मनुष्य उस क्षमता का ६ प्रतिशत ही उपयोग करता है। शेष सब कुछ प्रसुप्त एवं अविज्ञात स्थिति में पड़ा है। यदि उसे जाना, जगाया और सक्रिय किया जा सके तो आज की तुलना में मानवी सामर्थ्यों में अनेक गुनी अभिवृद्धि हो सकती है।

अतीन्द्रिय समताओं की आश्चर्य भरी चर्चा आये दिन होती रहती है। परामनोविज्ञानवेत्ता भी अब इन विलक्षणताओं को परीक्षण की कसौटी पर कस कर वास्तविकता स्वीकारते और उनके आधार पर तथा कारण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि मनःक्षेत्र की समग्र क्षमता एवं विलक्षणता उससे कहीं अधिक है जितनी कि जानी जा सकी है। ऋषि युग के तत्वदर्शी और प्रयोक्ता इस रहस्यमय क्षेत्र की सूक्ष्म जगत की जानकारी प्राप्त करने में बहुत आगे तक बढ़ गये थे। उनने शरीर और मन की रहस्यमयी परतों को खोजने और प्रत्यक्ष प्रयोग में लाने के लिए अपने ढंग से प्रयत्न किया था। इस पुरुषार्थ को सूक्ष्म जगत की खोज, व्यक्ति की विलक्षणताओं का प्रकटीकरण तथा सामर्थ्य के विशिष्ट स्रोतों की उपलब्धि कहा जा सकता है। आध्यात्म की भाषा में इसे 'साधना' कहते हैं जिसमें काय-कलेवर में सन्निहित प्रसुप्ति को जाग्रत एवं निष्क्रिय को सक्रिय किया जाता है।

भारतीय अध्यात्म-वेत्ताओं ने विज्ञान के इस क्षेत्र को महत्व दिया था। कारण कि काया का एक यन्त्र ही जड़ चेतन जगत के रहस्य लोक में प्रवेश करने के लिए पर्याप्त और सहज उपलब्ध है तो फिर यान्त्रिकी को सामान्य दैनिक उपचारों तक ही सीमित क्यों न रखा जाय ? उच्चस्तरीय प्रयोजनों के लिए क्यों न आत्मिकी को अपनाया जाय ? ऋषि युग को संक्षेप में साधना एवं तपश्चर्या का युग कहा जा सकता है। इस युग की महान उपलब्धियाँ आत्मिकी के विशिष्ट प्रयोगों का ही प्रतिफल हैं। आत्मिकी का प्रत्यक्ष परिचय साधनात्मक उपचारों में मिलता है। साधना में मन्त्र शक्ति की प्रमुखता है। इसलिए उसे "मान्त्रिकी" भी कहते हैं। यांत्रिकी और मान्त्रिकी का उद्देश्य एक ही है—गुह्य रहस्यों का उद्घाटन और अनुपलब्ध पर अधिपत्य।

भौतिकी उत्पांदन भर कर सकती है, पर उसका उपयोग करने के लिए दूसरे बुद्धिमान की आवश्यकता पड़ती है। यह कठिनाई आत्मिकी में नहीं है। प्रयोक्ता अपने शरीर और मन के सदा साथ रहने वाले और बिना खर्च और झंझट के यन्त्रों का विशिष्ट उपयोग करके उच्चस्तरीय सामर्थ्य हस्तगत करता है। उन्हें उच्चस्तरीय इसलिए कहा जाता है कि उससे प्रयोक्ता का व्यक्तित्व देवोपम बनता है और उस सामर्थ्य से दूसरों की चेतना तक को प्रभावित, परिष्कृत किया जा सकता है, जबकि भौतिकी की समर्थता इन दोनों में से एक भी काम नहीं कर सकती। यन्त्र अपने आपको अपने प्रयत्न से उच्चस्तरीय नहीं बना सकता है और न वह अपने निजी प्रयत्न से दूसरे यन्त्रों को अपने समान बना सकने में समर्थ होता है।

आत्मिकी का सर्वोपरि उपचार मन्त्र है, इसलिए उसे मान्त्रिकी कहा जाता है। इसके बिना अन्य साधनायें शारीरिक-मानसिक व्यायाम भर बनकर रह जाती हैं। चेतना के गहन अन्तराल तक पहुँचने और कुरेदने-उभारने में मन्त्रोपचार का आश्रय लिए बिना काम नहीं चलता। मन्त्र मात्र शब्द गुच्छक की रटन-पुनरावृत्ति तक सीमित नहीं है। यह कृत्य करना तो पड़ता है, पर उसके साथ और भी बहुत कुछ रहता है। साधक को आहार-विहार में विशेषतायें सम्पन्न करके शरीर को उन उपचारों के उपयुक्त बनाना पड़ता है और मनःशक्ति को प्रखर करने के लिए उस पर लदी दुर्बुद्धि का निराकरण करना होता है। मन्त्रोपचार में साधक के चरित्र, चिन्तन और स्वभाव की उत्कृष्टत उभारना भी एक अनिवार्य अंग है। इसी प्रकार उस प्रयोग उपचार में एकाग्रता और तन्मयता का समावेश करने के लिए ध्यान, धारणा एवं श्रद्धा-भक्ति क

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पण का अभ्यास करना पड़ता है। व्यक्ति सत्ता के प्रत्यक्ष पक्ष को उभारने में तपश्चर्या का और परोक्ष पक्ष को परिष्कृत करने में 'ब्रह्म विद्या' का आश्रय लेना पड़ता है। इसके अतिरिक्त विधान, अनुशासन एवं उपचार-उपकरणों की इस परम्परा का ध्यान रखना होता है जो अध्यात्मवेत्ता तत्वदर्शियों ने अपने दीर्घकालीन अनुभवों और प्रयोग-परीक्षणों द्वारा निर्धारित की है।

अतीत की गौरव गरिमा के साथ 'आत्मिकी' की उपलब्धियाँ ही जुड़ी हुई हैं। भौतिकी ने प्रकृति शक्तियों के आवरण उघाड़कर उसे नंगा कर दिया है। आज भौतिक की महिमा सर्वत्र बिखरी पड़ी है इतने पर भी सामंजस्य के अभाव में दोनों संकट बनकर रह रही हैं। आत्मिकी के विधान ही लुप्त नहीं हुए, उसे प्रखर बनाने वाली तत्परता और तन्मयता का अभ्यास भी घट गया। दूसरी ओर भौतिकी पर से आत्मिकी का अंकुश उठ जाने से उसने मदोन्मत्त हाथी की तरह स्वेच्छाचार बरतना आरम्भ कर दिया। अत: दोनों ही अपनी गरिमा और महिमा गँवाती चली जा रही हैं।

पदार्थ के बिना प्राणी का निर्वाह नहीं और प्राणी के बिना पदार्थ की उपयोगिता नहीं। दोनों के समन्वय से ही जीवन और जाग्रत का महत्व बना एवं सौन्दर्य निखरा है। पिछले दिनों भ्रान्तियों ने भौतिकी और आत्मिकी को परस्पर विरोधी सिद्ध किया। एक को समग्र और दूसरों को व्यर्थ बताया गया। इस विग्रह ने जहाँ भ्रान्तियाँ पैदा कीं वहाँ असहयोग के कारण प्रगति अवरुद्ध होकर अवगति की ओर मुड़ गयी। आज की अनेक विपन्नताओं, विपत्तियों एवं विभीषिकाओं का यही सबसे बड़ा परोक्ष कारण है। इस भ्रान्ति को मिटाया जाना चाहिए साथ ही साथ आत्मिकी का उपचार अनुशासन एवं उत्तरदायित्व निखरकर सामने आना चाहिए। इसी प्रकार भौतिक समर्थताओं की अभिवृद्धि तो हो, पर उस अध्यात्म का अनुशासन अनिवार्य माना जाना चाहिए जिससे सामर्थ्यों का कोई दुरुपयोग न कर सके। विश्व की वही दो प्रमुख सत्तायें हैं। यदि वे आपस में लड़ती रहीं अथवा लूली-लंगड़ी पड़ी रहीं तो विनाश सुनिश्चित है और यदि अपना-अपना उत्कर्ष करती हुई सहयोगी रहीं तो विकासक्रम चरम सीमा तक उसी प्रकार जा पहुँचेगा जैसे कि पुरातन काल में मनुष्य देवता बनकर रहते थे और इसी धरती को स्वर्गीय परिस्थितियों से भरापूरा रखते थे। आज भी मान्त्रिकी एवं यान्त्रिकी में उपयुक्त समन्वयात्मक तालमेल की सफलता पर ही उज्ज्वल भविष्य की, नवयुग के अवतरण की सम्भावना टिकी हुई है। कारण कि मान्त्रिकी की शक्ति-सामर्थ्य सभी भौतिक शक्तियों से बढ़कर है। इस तथ्य की जानकारी भारतीय तत्वदर्शियों ने प्राचीनकाल में ही प्राप्त कर ली थी। यों तो हम जो कुछ भी बोलते या उच्चारण करते हैं, उसका प्रभाव व्यक्तिगत और समष्टिगत रूप से सारे ब्रह्मांड पर पड़ता है। तालाब में फेंके गये एक छोटे से कंकड़ से उत्पन्न जल तरंगें दूर तक जाती हैं, उसी तरह हमारे मुख से निकला हुआ प्रत्येक शब्द आकाश के सूक्ष्म परमाणुओं में कम्पन उत्पन्न करता है। उस कम्पन से लोगों में अदृश्य प्रेरणायें जाग्रत होती हैं। शब्द की इस सामर्थ्य से स्थूल जगत में पदार्थ और आकाश स्थित पिण्डों में जबर्दस्त विस्फोट किया जा सकता है। यही नहीं ग्रह नक्षत्रों में पायी जाने वाली सूक्ष्म प्राण-विद्युत, प्रकाश, गर्मी आदि को भी आकर्षित किया जा सकता है। आवश्यकता मात्र उनकी जानकारी एवं सह प्रयोग की है। इसी आधार पर मन्त्रों और वैदिक ऋचाओं का निर्माण हुआ है। देखने में शब्द और प्रार्थनायें लगने वाले मन्त्र और ऋचायें एक प्रकार के यंत्र हैं जिनका विधिवत् प्रयोग यदि कोई कर सके तो वह सारे संसार का स्वामित्व प्राप्त कर सकता है।

ध्वनि विज्ञान की आधुनिकतम उलब्धियाँ यह बताती हैं कि क्रमबद्ध ध्वनि की सामर्थ्य असामान्य है। अल्ट्रासाउण्ड जैसी सूक्ष्म कर्णातीत ध्वनि तरंगों को जब विद्युत आवेश प्रदान किया जाता है, तो उनकी भेदन क्षमता इतनी बढ़ जाती है कि सघन से सघन वस्तु के परमाणुओं का भी भेदन करके उनकी रचना का स्पष्ट फोटोग्राफ प्रस्तुत कर देती है। इसी तरह चिकित्सा जगत में सूक्ष्म ध्वनि तरंगों के प्रयोगों से यह सिद्ध हो गया है कि सामान्य से ध्वनि कम्पन में जब इतनी सामर्थ्य है, तो मन्त्रों में, जिनका कि गुम्फन ही विशेष रूप से ऋषियों द्वारा हुआ, कितने शक्तिशाली होंगे। मन्त्र शक्ति से कभी रोग निवारण, विष निवारण, अदृश्य शक्तियों का आकर्षण, मनोगति द्वारा मारण, मोहन, उच्चाटन आदि प्रयोग सफलतापूर्वक सम्पन्न होते रहे हैं। रामायण एवं महाभारत में मन्त्र प्रेरित शस्त्रों की मार होती है। उससे परमाणु बमों से भी भयंकर ऊर्जा उत्पन्न होती थी, इसलिए उसका बड़ा सधा हुआ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उपयोग संभव हो पाता था। उस शक्ति से सैनिकों के समूहों को भी नष्ट किया जा सकता था और हजारों की भीड़ में छिपे केवल एक ही किसी व्यक्ति को भी मारा जा सकता था। यह सब उस शब्द विज्ञान का ही चमत्कार था जिसकी हल्की सी जानकारी ही अभी तक भौतिक विज्ञान को मिल पाई है।

मन्त्रशक्ति से भौतिक और आध्यात्मिक सभी तरह के लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं। प्राचीनकाल के योगी, ऋषि और तत्वदर्शी महापुरुषों ने मन्त्रबल से पृथ्वी, देवलोक और ब्रह्मांड की अनन्त शक्तियों पर विजय पाई थी। मन्त्र शक्ति के प्रभाव से वे इतने समर्थ बन गये थे कि इच्छानुसार किसी भी पदार्थ का हस्तान्तरण, शक्ति को पदार्थ और पदार्थ को ऊर्जा में बदल देते थे। शाप और वरदान मन्त्र का ही प्रभाव माना जाता है। एक क्षण में किसी का रोग दूर कर देना, पल भर में करोड़ों मील दूर की बात जान लेना एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र की जानकारी और शरीर की ७२ हजार सूक्ष्म नाड़ियों के एक-एक जोड़ की जानकारी तक मन्त्र की ही अलौकिक शक्ति थी। इसीलिए भारतीय तत्वदर्शन में मन्त्र शक्ति पर जितनी अधिक शोधें हुई हैं उतनी और किसी पर नहीं हुई हैं। मन्त्रों के आविष्कारक होने के कारण ही ऋषि मन्त्र दृष्टा कहलाते थे। वेद और कुछ नहीं एक प्रकार के मन्त्र विज्ञान हैं जिसमें विराट् विश्व-ब्रह्मांड की उन अलौकिक सूक्ष्म और चेतन सत्ताओं तथा शक्तियों तक से सम्बन्ध स्थापित करने के गूढ़ रहस्य दिय हुए हैं। भौतिक विज्ञानी अभी इस क्षेत्र की मामूली सी जानकारी ही प्राप्त कर सके हैं।

मन्त्र का सीधा सम्बन्ध उच्चारण या ध्वनि से है, इसलिए इसे 'ध्वनि विज्ञान' भी कह सकते हैं। अब तक इस दिशा में जो अनुसंधान हुए हैं और निष्कर्ष निकले हैं, वह बताते हैं कि बुद्धिवादी व्यक्ति मन्त्र शक्ति पर भले ही विश्वास न करें, पर वैज्ञानिक अब उसी दिशा में अग्रसर हैं। न्यूयार्क-अमेरिका के मूर्धन्य अनुसंधानकर्ता वैज्ञानिक डॉ. लॉर्धन्स केर्स्टा ने स्पेक्ट्रोग्राफ जैसे उपकरणों के माध्यम से विभिन्न आयु वर्ग के हजारों लोगों की आवाजों का ग्राफ खींचने और उनक विश्लेषण करने के बाद निष्कर्ष निकाला है कि प्रत्येक व्यक्ति के ध्वनि कम्पन से जो रेखायें बनती हैं, वे अलग-अलग प्रकार की होती हैं। लेकिन किसी व्यक्ति द्वारा बोला गया एक ही वाक्य स्वस्थ-अस्वस्थ, अधिक या कम, ताप या दबाव आदि अवस्थाओं में सदैव अपरिवर्तित बना रहता है। इसका अर्थ यह हुआ कि ध्वनि तरंगों में इतनी सामर्थ्य होती है कि प्राकृतिक परिवर्तनों यथा हवा-तूफान, वर्षा, तापमान आदि का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, प्रत्येक अवस्था में लकीरें एक व्यक्ति की एक ही तरह की होंगी। इसी तरह प्रत्येक मन्त्र का तरंगों के रूप में विस्तार एक ही तरह का होता है। लकीरों-ग्राफ की आकृति-प्रकृति भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा भले ही भिन्न हों, अर्थात् यदि एक व्यक्ति एक वाक्य या मन्त्र बोलता है तो आगे बढ़ने या पीछे लौटने वाली लकीरें लम्बी या छोटी हो सकती हैं, पर उनकी आवृत्ति एक ही तरह की होगी।

सामान्य रूप से बोली जाने वाली ध्वनि-तरंगें थोड़ी आगे बढ़कर समूचे विश्व ब्रह्मांड में फैल जाती हैं और कुछ ही सैकिण्डों में प्रतिक्रिया सहित वापस लौट आती हैं। परावर्तित कम्पनों में उसी तरह के अनेक भाव और विचार भागे चले आते हैं और उच्चारणकर्ता में वैसे ही तत्वों को और बढ़ा देते हैं। इसलिए कहा जाता है कि बोला हुआ प्रत्येक शब्द मन्त्र है, मनुष्य को बहुत सँभलकर केवल मधुर और आशयपूर्ण शब्द ही बोलना चाहिए।

मन्त्र का विज्ञान इससे भिन्न प्रकार का है। जिन शब्द तरंगों की उपरोक्त पंक्तियों में चर्चा की गयी है, उनका आकार-प्रकार विद्युत शक्ति द्वारा निश्चित और प्रयुक्त होता रहा है पर मन्त्र में किसी प्रकार की बाह्य शक्ति उन शब्द तरंगों को रूपांतरित नहीं करती। योग पद्धति में मन्त्र के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि को शब्द शक्ति ही विद्युत प्रदान करती है जब कि मानवीय इच्छा या संकल्पशक्ति उस पर नियंत्रण करके कोई भी कार्य करा सकने में समर्थ होती है। जप और ध्यान नाद-ध्वनि कंपन और बिन्दु साधना का सम्मिलित रूप है, उससे सृष्टि के विराट् से विराट् और सूक्ष्म कर्ण का भेदन भी सम्भव हो जाता है। इसलिए मन्त्र की शक्ति को अकूत माना जाता है और अनुमान किया जाता है कि इस शक्ति का उल्लंघन, ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा कोई अन्य देवता भी नहीं कर सकते। तभी तो मानसकार ने कहा है—मन्त्र परम लघु जासुवश, विधि, हरिहर, सुर सर्व।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भौतिक विज्ञानियों के अनुसार मनुष्य कम से कम २० और अधिक से अधिक २०००० कम्पन वाली ध्वनि सुन सकता है। कुछ व्यक्ति इसके अपवाद हो सकते हैं, अन्यथा इस सीमा से बाहर वाले कर्णातीत ध्वनि कम्पन कानों से सुनी नहीं जा सकती है इतने पर भी इनका अस्तित्व इतना शक्तिशाली होता है कि बादलों के गर्जन से जिस प्रकार सारे प्राकृतिक परमाणु काँप जाते हैं उसी प्रकार यह ध्वनि कम्पन जहाँ से भी गुजरते हैं, तीव्र हलचल उत्पन्न कर देते हैं। जीवों को नष्ट कर देना, परमाणुओं को उछालकर उड़ा ले जाना, उन्हें शक्ति में बदल देना- यह सब कर्णातीत ध्वनि तरंगों की तीव्रता पर निर्भर करता है। मन्त्रों की तीव्रता पर निर्भर करता है। मन्त्रों में भी इन्हीं सिद्धान्तों का समावेश है। मन्त्रोच्चार से भी कर्णातीत ध्वनि तंरगें निकलती हैं। उसे भावनाओं की श्रद्धा-समन्वित मनोगति की विद्युत शक्ति जितनी अधिक मात्रा में मिलती है, उतनी ही तीव्रता से वह अकाश के परमाणुओं को कँपाती हुई ध्यान वाले स्थान तक दौड़ी चली जाती है। यह एक तथ्य है कि आकाश भी शून्य नहीं है। अपने अरबों-खरबों परमाणु बाल्टी में भरे पानी की भाँति भरे और गतिशील हैं। साधारणतया ध्वनि चारों दिशाओं में फैलती है, पर मन्त्रों में शब्द इस प्रकार गुम्फित होते हैं कि उसकी ध्वनि तरंगें विशेष प्रकार की हो जाती हैं। गायत्री महामन्त्र की ध्वनि तरंगें तार के छल्ले जैसी ऊपर उठती हैं और यह सूक्ष्म अन्तराल के परमाणुओं के माध्यम से सूर्य तक पहुँचती हैं और जब यह ध्वनि सूर्य के अंतराल से प्रतिध्वनित होकर लौटती हैं तो अपने साथ प्रकाश अणुओं की गर्मी, प्रकाश व विद्युत जप करने वाले के शरीर में उतारती चली जाती हैं। साधक उन अणुओं से शरीर ही नहीं, मन और आत्मा की शक्तियों का भी विकास करता चला जाता है और कई बार वह लाभ प्राप्त करता है जो सांसारिक प्रयत्नों द्वारा कभी संभव नहीं होते।

वेदों में प्रयुक्त प्रत्येक मन्त्र का कोई न कोई देवता होता है। गायत्री का देवता 'सविता' है, अर्थात् गायत्री उपासना से जो भी लाभ यथा—आरोग्य, प्राण, बल, धन-सम्पत्ति, पुत्र और अपनी महत्वाकांक्षायें आदि पूर्ण होती हैं—उसकी शक्ति अथवा प्रेरणा सूर्य मण्डल से आती है। किसी भी मन्त्र का जब उच्चारण किया जाता है तब वह एक विशेष गति से आकाश के परमाणुओं-इर्थर आदि के बीच बढ़ता हुआ उस देवता या शक्ति केन्द्र तक पहुँचता है, जिसका उस मन्त्र से सम्बन्ध होता है। मन्त्र जप के समय आवश्यक ऊर्जा मन की शक्ति के द्वारा प्राप्त होती है। इस शक्ति के द्वारा जप के समय की ध्वनि तरंगों को विद्युत तरंगों के रूप में प्रेक्षित किया जाता है। वह तेजी से बढ़ती हुई कुछ ही क्षणों में देवशक्ति से टकराती हैं। उससे अदृश्य सूक्ष्म परमाणु मंदगति से परावर्तित होने लगते हैं। उनकी दिशा ठीक उलटी होती है, सूक्ष्म और स्थूल दोनों तरह के परमाणु दौड़ पड़ते हैं और साधक को शारीरिक लाभ तथा मानिसक प्रेरणायें देने लगते हैं। मन्त्र की यह परावर्तित एवं बहुगुणित शक्ति ही मनुष्य को क्रमशः भौतिक सिद्धियों एवं आत्मिक विभूतियों की ओर अग्रसर करती है।

गायत्री महामन्त्र की उपसाना से साधक सूर्य के अंतराल का वेधन करके वहाँ के परमाणुओं में हलचल उत्पन्न कर देता है, फलस्वरूप प्रकाश ऊर्जा-प्राण चेतना एवं प्रेरणाओं की सघन तरंगें साधक पर बरसने लगती हैं। प्रारम्भ में आदान-प्रदान की, आवर्तन-परावर्तन की यह प्रक्रिया थोड़ी धीमी होती है, पर जैसे-जैसे मानसिक एकग्रता बढ़ती जाती है—प्रतिक्रिया भी तीव्र होती जाती है और सूक्ष्म आत्मसत्ता भी तेजी से उन प्रकाश परमाणुओं से सुसज्जित होने लगती है जो देवशक्ति से आकर्षित होते हैं। यह प्रकाश परमाणु, उपासक में जितने अधिक विकसित होते जाते हैं वह उतना ही अधिक स्पष्ट भविष्यदर्शी, सार्थक स्वप्नद्रष्टा और चमत्कारिक प्रेरणाओं को प्राप्त करने वाला होता है। श्रद्धा और विश्वास प्रगाढ़ होने पर लाभ भी द्रुतगामी होता है, पर यदि ऐसा न हो तो भी साधक मन्त्र जब के चमत्कारी लाभ से कभी वंचित नहीं होता।

मन्त्र की प्रचण्ड शक्ति और उसके प्रयोग का रहस्य

मन्त्र विद्या में शब्द शक्ति—मानसिक एकाग्रता— चारित्रिक श्रेष्ठता एवं अभीष्ट लक्ष्य में अटूट श्रद्धा के चार तथ्य का समावेश होता है। मन्त्र शक्ति से कितने ही प्रकार के चमत्कार एवं वरदान उपलब्ध हो सकते हैं यह सत्य है, पर उसके साथ ही यह तथ्य भी जुड़ा हुआ है कि वह मन्त्र उपरोक्त चार परीक्षाओं की अग्नि में उत्तीर्ण हुआ होना चाहिए। प्रयोग करने से पूर्व उसे सिद्ध करना पड़ता है। सिद्धि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

के लिए साधना आवश्यक है। इस साधना के चार चरण हैं इन्हीं का ऊपर उल्लेख किया गया है।

मन्त्र साधक को यम-नियमों का अनुशासन पालन करते हुए चारित्रिक श्रेष्ठता का अभिवर्धन करना चाहिए। क्रूरकर्मी, दुष्ट-दुराचारी व्यक्ति किसी भी मन्त्र को सिद्ध नहीं कर सकते। तान्त्रिक शक्तियाँ भी ब्रह्मचर्य आदि की अपेक्षा करती हैं। फिर देव शक्तियों का अवतरण जिस भूमि पर होना है उसे विचारणा, भावना और क्रिया की दृष्टि से सतोगुणी पवित्रता से युक्त होना ही चाहिए।

इन्द्रियों का चटोरापन मन की चंचलता का प्रधान कारण है। तृष्णाओं में—वासनाओं में और अहंकार तृप्ति की महत्वाकांक्षाओं में भटकने वाला मन मृग-तृष्णा एवं कस्तूरी गन्ध में यहाँ—असंगत दौड़ लगाते रहने वाले हिरन की तरह है। मन की एकाग्रता आध्यात्म क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण शक्ति है उसके सम्पादन के लिए अमुक साधनों का विधान तो है, पर उनकी सफलता मन को चंचल बनाने वाली दुष्प्रवृत्तियों का अवरोध करने के साथ जुड़ी हुई है। जिसने मन को संयत, समाहत करने की आवश्यकता पूर्ण कर सकने योग्य अन्तःस्थिति का परिष्कृत दृष्टिकोण के आधार पर निर्माण किया होगा। वही सच्ची और गहरी एकाग्रता का लाभ उठा सकेगा। ध्यान उसी का ठीक तरह जमेगा और तन्मयता के आधार पर उत्पन्न होने वाली दिव्य क्षमताओं से लाभान्ति होने का अवसर उसी को मिलेगा।

अभीष्ट लक्ष्य में श्रद्धा जितनी गहरी होगी उतना ही मन्त्र बल प्रचण्ड होता चला जायगा। श्रद्धा अपने आप में एक प्रचण्ड चेतन शक्ति है। विश्वासों के आधार पर ही आकांक्षाएँ उत्पन्न होती हैं और मनःसंस्थान का स्वरूप विनिर्मित होता है। बहुत कुछ काम तो मस्तिषक को ही करना पड़ता है। शरीर का संचालन भी मस्तिष्क ही करता है। इस मस्तिष्क को दिशा देने का काम अन्तःकरण के मर्मस्थल में जमे हुए श्रद्धा, विश्वास को है। वस्तुतः व्यक्तित्व का असली प्रेरणाकेन्द्र इसी निष्ठा की धुरी पर घूमता है। गीताकार ने इस तथ्य का रहस्योद्घाटन करते हुए कहा है—**'यो यच्छद्धयः स एव स'** जो जैसी श्रद्धा रख रहा है वस्तुतः वह वही है। अर्थात् श्रद्धा ही व्यक्तित्व श्रद्धा है। इस श्रद्धा को इष्ट लक्ष्य में—साधना की यथार्थता और उपलब्धि में जितनी अधिक गहराई के साथ—तन्मयता के साथ—नियोजित किया गया होगा, मन्त्र उतना ही सामर्थ्यवान बनेगा। मान्त्रिक की चमत्कारी शक्ति उसी उनुपात से प्रचण्ड होगी। इन तीनों चेतनात्मक आधारों को महत्व देते हुए जिसने मन्त्रानुष्ठान किया होगा निश्चित रूप से वह अपने प्रयोजन में पूर्णतया सफल होकर रहेगा।

मन्त्र का चौथा आधार है शब्द शक्ति। अमुक अक्षरों का एक विशिष्ट क्रम से किया गया गुन्थन शब्द शास्त्र के गूढ़ सिद्धान्तों पर तत्वदर्शी अध्यात्मवेत्ताओं ने किया होता है। मन्त्रों के अर्थ सरल और सामान्य हैं। अर्थों में दिव्य जीवन की शिक्षाएँ और दिशाएँ पाई जाती हैं। उन्हें समझना भी उचित ही है। पर मन्त्र की शक्ति इन शिक्षाओं में नहीं उनकी शब्द रचना में जुड़ी हुई है। वाद्य यन्त्रों को अमुक क्रम से बजाने पर ध्वनि प्रवाह निसृत होता है। कण्ठ को अमुक आरोह-अवरोहों के अनुरूप उतार-चढ़ाव के स्तरों से युक्त करके जो ध्वनि प्रवाह बनता है उसे गायन कहते हैं। ठीक इसी प्रकार मुख के उच्चारण मन्त्र को अमुक शब्द क्रम के अनुसार बार-बार लगातार संचालन करने से जो विशेष प्रकार का ध्वनि प्रवाह संचारित होता है वही मन्त्र की भौतिक क्षमता है। मुख से उच्चारित मन्त्राक्षर सूक्ष्म शरीर को प्रभावित करते हैं। उसमें सन्निहित तीन ग्रन्थियों, षटचक्रों—षोडस माष्टकाडों—चौबीस उपत्यिकाओं एवं चौरासी नाड़ियों को झंकृत करने में मन्त्र का उच्चारण क्रम बहुत काम करता है। दिव्य शक्ति के प्रादुर्भूत होने में यह शब्दोच्चार भी एक बहुत बड़ा कारण एवं माध्यम है।

मन्त्र विद्या में मुख से तो धीमे और हल्के प्रवाह क्रम से ही शब्दों का उच्चारण होता है, पर उनके बार-बार लगातार दुहराये जाने से सूक्ष्म शरीर के शक्ति संस्थानों का ध्वनि प्रवाह बहने लगता है। वहाँ से अश्रव्य कर्णातीत ध्वनियाँ या प्रचंड प्रवाह प्रादुर्भूत होता है। इसी में मन्त्र साधक का व्यक्तित्व ढलता है और उन्हीं के आधार पर वह अभीष्ट वातावरण बनता है जिसके लिए मन्त्र साधना की गई। मन्त्र का जितना महत्व है, साधना विधान का जितना माहात्म्य है उतना ही आवश्यक यह भी है कि मान्त्रिक अपनी श्रद्धा, तन्मयता और विधि प्रक्रिया में निष्ठावान रहकर अपना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तित्व इस योग्य बनाये कि उसका मन्त्र प्रयोग सही निशाना साधने वाली बहुमूल्य बन्दूक का काम कर सके।

शब्द शक्ति का महत्व विज्ञानानुमोदित है। स्थूल, श्रव्य, शब्द भी बड़ा काम करते हैं फिर सूक्ष्म कर्णातीत अश्रव्य ध्वनियों का महत्व तो और भी अधिक है। मन्त्र जप में उच्चारण तो धीमा ही होता है उससे अतीन्द्रिय शब्द शक्ति को ही प्रचंड परिमाण में उत्पन्न किया जाता है।

ध्वनि तरंगें पिछले दिनों उच्चारण से उद्भूत होकर श्रवण की परिधि में ही सीमित रहती थीं। प्राणियों द्वारा शब्दोच्चारों एवं वस्तुओं से उत्पन्न आघातों से अगुणित प्रकार की ध्वनियाँ निकलती हैं उन्हें हमारे कान सुनते हैं। सुनकर कई तरह के ज्ञान प्राप्त करते हैं—निष्कर्ष निकालते हैं और अनुभव बढ़ाते हुए उपयोगी कदम उठाते हैं। यह शब्द का साधारण उपयोग हुआ।

विज्ञान ने ध्वनि तरंगों में सन्निहित साधारण शक्ति को समझा है और उनके द्वारा विभिन्न प्रकार के क्रिया-कलापों को पूरा करना अथवा लाभ उठाना आरम्भ किया है। वस्तुओं की मोटाई नापने—धातुओं के गुण, दोष परखने का काम अब ध्वनि तरंगें ही प्रधान रूप में पूरा करती हैं। कार्बन ब्लैर का उत्पादन, वस्त्रों की धुलाई, रासायनिक सम्मिश्रण, कागज की लुगदी, गीलेपन को सुखाना, धातुओं की ढलाई, प्लास्टिक धागों का निर्माण, प्रभृति उद्योगों में ध्वनि तरंगों के उपयोग से एक नया व्यावसायिक अध्याय आरम्भ हुआ है।

वी. एफ. गुडरिच कम्पनी का हामोजिनाइजिंग, दुग्ध संयन्त्र बहुत ही लोकप्रिय हुआ है। जनरल मोटर्स् ने भी 'सोनी गेज' यन्त्र बनाया है। इनके द्वारा ध्वनि तरंगों का उपयोग कई महत्वपूर्ण कार्यों के लिए किया जाता है। आयोवा स्टेट कालेज, अल्ट्रासोनिक कारपोरेशन ने भी ऐसे ही कई उपयोगी यन्त्र बनाये हैं।

ध्वनि तरंगें कम्पन होती हैं, वे रेडियों तरंगों की तरह शून्य में यात्रा नहीं करतीं। मनुष्य के कानों द्वारा सुनी जा सकने योग्य थोड़ी सी ही हैं। जो कानों की पकड़ से नीची या ऊँची है उनकी संख्या कितनी गुनी अधिक है। शब्द को शक्ति के रूप में परिणित करने के लिए जिन ध्वनि तरंगों का प्रयोग किया जा रहा है उन्हें अल्ट्रासोनिक (अस्तिवन) और सुपरसोनिक (महास्वन) संज्ञाएँ दी जाती हैं। यह ध्वनियाँ निकट भविष्य में सरलतापूर्वक विद्युत शक्ति में परिणित की जा सकेंगी और तब उस शब्द स्रोत का ध्वनि प्रवाह का उपयोग मनुष्य जाति के अगणित भौतिक प्रयोजनों के लिए किया जा सकेगा ऐसा वैज्ञानिक मानते हैं।

यह ध्वनि तरंगें देखने, सुनने, समझने में नगण्य सी हैं—उनका छोटा अस्तित्व उपहासास्पद सा लगता है, पर जब उनमें सन्निहित प्रचंड शक्ति का आभास मिलता है तो आश्चर्य-चकित रह जाना पड़ता है। यह ध्वनि तरंगें इतना बड़ा काम करती हैं जितना विशालकाय एवं शक्तिशाली संयन्त्र भी नहीं कर सकते। यन्त्र विज्ञान द्वारा इसी सूक्ष्म शक्ति का प्रयोग किया जाता है।

प्रकाश और ध्वनि के कम्पनों का स्वरूप समझने के लिए हमें समुद्र में उठने वाली लहरों को देखना चाहिए वे ऊपर उठती और नीचे गिरती हैं तथा एक क्रम व्यवस्था की दूरी के साथ अग्रगामी होती हैं। प्रकाश और ध्वनि के कम्पनों का भी यही हाल है। विद्युत चुम्बकीय तरंगें प्रकाश की तरंगों से मिलती-जुलती होती हैं। किन्हीं दो उतार-चढ़ावों के बीच की दूरी को तरंग की लम्बाई कहा जाता है। किसी बिन्दु पर से एक सैकिण्ड में गुजरती तरंग के उतार-चढाव को लहर की फ्रीक्वेन्सी—कम्पनांक कहा जाता है। तरंग की गति में तरंग की लम्बाई का भाग देकर इन कम्पनांकों का नाम निश्चित किया जाता है।

ध्वनि की लहरों का वायु के प्रवाह से भी बहुत कुछ सम्बन्ध रहता है। वे वायु प्रवाह के साथ अधिक सुविधापूर्वक जाती हैं जबकि अवरोध की दिशा में उनका बल बहुत क्षीण रहता है।

रेडियो तरंगें, शब्द तरंगें, माइक्रो लहरें, टेलीविजन और राडार की तरंगें, एक्स किरणें, गामा किरणें, लेसर किरणें, मृत्यु किरणें, इन्फ्रारेड तरंगें, अल्ट्रा वायलेट तरंगें आदि कितनी ही शक्ति धाराएँ इस निखिल ब्रह्माण्ड में निरन्तर प्रवाहित रहती हैं । इस तरंगों की भिन्नता उनकी लम्बाई के आधार पर नापी जाती हैं। मीटर, सेन्टी मीटर, माइक्रॉन, मिली मीटर, आंगस्ट्रोम इनके मापक पैमाने हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह ध्वनि तरंगें अब विभिन्न भौतिक प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त की जाने लगी हैं और उनके अनेकों उपयोगी लाभ उठाये जा रहे हैं।

हानिकारक कीटाणुओं का नाश करने में अश्रव्य ध्वनियों से बड़ी सहायता मिल रही है। दूध में से मक्खन निकालना, धातुओं तथा रसायनों को दूसरे के साथ एक घोंट देना—कोहरा हटा देना—जैसे अनेकों महत्वपूर्ण कार्य ध्वनियाँ करती हैं। युद्ध समय में जलयानों तथा वायुयानों की महत्वपूर्ण जानिकारियाँ राडार तथा ऐसे ही अन्य यन्त्रों से मिलती हैं । कुछ समय पहले बिजली के उपकरणों द्वारा कितने ही रोगों का इलाज किया जाता है था उसकी जगह अब अश्रव्य ध्वनियों का प्रयोग करके सफल उपचार किये जा रहे हैं।

शब्द केवल जानकारी ही नहीं और भी बहुत कुछ देता है। खाद और पानी के बाद अब पौधों के लिए मधुर ध्वनि प्रवाह भी एक उपयोगी खुराक मानी जाने लगी है। यूगोस्लेविया में फसल को सुविकसित बनाने के लिए खेतों पर अमुक स्तर की वाद्य लहरियाँ ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से प्रवाहित की गईं और उसका परिणाम उत्साहवर्धक पाया गया। हालैण्ड के पशु पालकों ने गायें दुहते समय संगीत बजाने का क्रम चलाया और अधिक दूध पाया। निद्रा, उत्तेजना और विकास की त्रिविध प्रक्रियाएँ वृक्ष और वनस्पतियों पर देखी गईं। पशुओं की श्रमशीलता, प्रजनन शक्ति, बलिष्ठता एवं दूध देने की क्षमता को संगीत ने बढ़ाया। मक्का पर संगीत के कतिपय प्रयोग करके उनकी वृद्धि में सफलता प्राप्त करने की दृष्टि से एक अमेरिकी कृषक जार्ज स्मिथ ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।

शब्द शक्ति को ताप में परिणित किया जा सकता है। शब्द जब मस्तिष्क के ज्ञानकोषों से टकराते हैं तो हमें कई प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। यदि उन्हें पकड़कर ऊर्जा में परिणित किया जाय तो वे बिजली, ताप, प्रकाश, चुम्बकत्व के रूप में कितने ही प्रकार का क्रिया-कलाप सम्पन्न कर सकने योग्य बन सकते हैं।

ताप को शक्ति का प्रतीक माना गया है। विभिन्न प्रकार के ईंधन जलाकर अनेकों शक्ति धाराएँ उत्पन्न की जाती हैं। शक्ति और ताप को अब एक ही मान लिया गया है। इस शृंखला में ध्वनि को भी एक शक्ति उत्पादक ईंधन मान लिया गया है। वह दिन दूर नहीं जब शब्द को ईंधन नहीं वरन् एक स्वतन्त्र एवं सर्वसमर्थ शक्ति माना जायगा। तभी मन्त्र शक्ति की यथार्थता ठीक तरह समझी जा सकेगी।

ध्वनियाँ तीन प्रकार की होती हैं (१) वायु द्वारा, (२) जल द्वारा, (३) पृथ्वी द्वारा । वायु की तरंगों द्वारा प्राप्त होने वाली ध्वनि की गति प्रति सैकिण्ड १०८८ फुट होती है। जल तरंगों की गति इससे तेज होती है। उस माध्यम से वे एक सैकिण्ड में ४९०० फुट चलती हैं। पृथ्वी के माध्यम से यह गति और भी तेज होती है अर्थात् एक सैकिण्ड में १६४०० फुट।

प्राणायाम द्वारा वायु तत्व का—स्नान, आचमन, अर्घदान आदि द्वारा जल वायु तत्व का—दीपक, धूपबत्ती, हवन आदि द्वारा अग्नि का प्रयोग करके मन्त्रानुष्ठान से वे त्रिविधि उपचार किये जाते हैं जिनसे शब्द शक्ति को प्रचंड बनने का अवसर मिल सके।

हर ध्वनि अपने ढंग से अलग-अलग कम्पन उत्पन्न करती है उसी आधार पर हमारे कानों के पर्दे अलग-अलग व्यक्तियों की आवाज को आँखें बन्द होने पर भी पहचान लेते हैं। ध्वनि कम्पनों—ध्वनि तरंगों के घनत्व के आधार पर हम असंख्य प्रकार की ध्वनियों की भिन्नता अनुभव करते हैं। अन्धे लोगों को अपने कानों की सहायता से ही समीपवर्ती वातावरण में हो रही हलचलों का—व्यक्तियों तथा प्राणियों के अस्तित्व का पता लगाना पड़ता है। कान इस बात के अभ्यस्त हो जाते हैं कि विभिन्न माध्यमों से उत्पन्न होने वाले ध्वनि प्रवाह का अन्तर कर सकें और स्थिति का अथवा प्राणियों की हलचलों का पता लगा सकें।

नादयोग की साधना द्वारा अनन्त अन्तरिक्ष में निरन्तर बहने वाली ध्वनि तरंगों को सुना जाता है और उनमें से काम की तरंगों के साथ सम्पर्क बनाकर भूतकाल में जो हो चुका है उसकी—भविष्य के लिए जो सम्भावना बन रही है उसकी—तथा वर्तमान में किस व्यक्ति या किस परिस्थिति द्वारा क्या हलचलें उत्पन्न की जा रही हैं उनका पता लगाया जा सकता है। नादयोग की शब्द साधना वस्तुतः मन्त्र विज्ञान का ही एक अंग है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिन ध्वनियों के कम्पन प्रति सैकिण्ड १०० से ३०० तक होते हैं वे मनुष्य के कानों से आसानी के साथ सुने जा सकते हैं। इससे बहुत अधिक या बहुत कम कम्पन वाले शब्द आकाश में घूमते हुए भी हमारे कानों द्वारा सुने समझे नहीं जाते। इस प्रकार के शब्द के शब्द प्रवाह को 'अनसुनी ध्वनियाँ' कहते हैं। उन्हें 'सुपर सोनिक रेडियो मीटर' नामक यन्त्र से कान द्वारा सुना जा सकता है।

इलेक्ट्रोनिक्स के उच्च विज्ञानी ऐसा यन्त्र बनाने में सफल नहीं हो सके हैं जो श्रवण शक्ति की दृष्टि से काने के समान सम्वेदनशील हो। कानों की जो झिल्ली आवाज पकड़कर मस्तिष्क तक पहुँचती है, उसकी मुटाई एक इंच के ढाई हजारवें हिस्से के बराबर है। फिर भी वह कोई चार लाख प्रकार के शब्द भेद पहचान सकती है और उनका अन्तर कर सकती है। अपनी गाय को या मोटर की आवाज को हम अलग से पहचान लेते हैं यद्यपि लगभग वैसी ही आवाज दूसरी गायों की या मोटरों की होती है, पर जो थोड़ा सा भी अन्तर उनमें रहता है, अपने कान के लिए उतने से ही अन्तर कर सकना और पहचान सकना सम्भव हो जाता है। कितनी दूर से, किस दिशा से किस मनुष्य की आवाज आ रही है, यह पहचानने में हमें कुछ कुछ कठिनाई नहीं होती। यह कान की सूक्ष्म सम्वेदनशीलता का ही चमत्कार है। टेलीफोन यन्त्र इतनी बारीकियाँ नहीं पकड़ सकता है।

कान से लेकर मस्तिष्क तक स्वसंचालित तंत्रिकाओं का जाल बिछा है। शब्द के कम्पन इनसे टकराकर प्रतिध्वनि उत्पन्न करते हैं, वह मस्तिष्क में पहुँचती है तब सुनने की बात पूरी होती है। कान में आवाज के घुसने और मस्तिष्क को उसका बोध होने के बीच लगभग एक सैकिण्ड का समय लग जाता है।

मुँह बन्द करे गुनगुनाया जाय तो भी उसकी आवाज मस्तिष्क तक पहँचती है। ऐसी दशा में कान के समीप वाली जबड़े की हड्डी उन शब्दों को सीधे मुँह से मस्तिष्क तक पहुँचा देती है। इससे स्पष्ट है कि कान का कार्य क्षेत्र एक इंच गहरी नली तक ही सीमित नहीं है वरन् जबड़े के इर्द-गिर्द तक फैला है। गाल पर चपत मारने से कान सुन्न हो जाते हैं। इसका कारण उस क्षेत्र की उग्र हलचल का कान पर प्रभाव पड़ना ही है।

कान में प्रवेश करने वाली ध्वनि तरंगों का वर्गीकरण करके उन्हें छने हुए रूप में मस्तिष्क तक पहुँचाने का काम 'यूस्टोक्विओ' नली सम्पन्न करती है। शोरगुल के बीच जब यह नली थक जाती है तो अक्सर बहरापन सा लगने लगता है। इसी तरह की आन्तरिक थकान को दूर करने के लिए जम्हाइयाँ आती हैं।

श्रवण शक्ति का बहुत कुछ सम्बन्ध मन की एकाग्रता से है। यदि किसी बात में दिलचस्पी कम हो तो पास में ही बहुत कुछ बक-झक होते रहने पर भी अपने पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा। किन्तु यदि दिलचस्पी की बात हो तो फुसफुसाहट से भी मतलब की बातें आसानी से सुनी समझी जा सकती हैं।

मनुष्य के कान केवल उन्हीं ध्वनि तरंगों को अनुभव कर सकते हैं जिनकी संख्या प्रति सैकिण्ड २० से लेकर २० सहस्र तक की होती है। इससे कम और अधिक संख्या वाले ध्वनि प्रवाह होते तो हैं, पर वे मनुष्य की कर्णेन्द्रिय द्वारा नहीं सुने जा सके।

इस तथ्य को समझने पर मानसिक जप का महत्व समझ में आता है। उच्चारण आवश्यक नहीं। मानसिक शक्ति का प्रयोग करके—ध्यान भूमिका में सूक्ष्म जिह्वा द्वारा मन ही मन जो जप किया जाता है उसमें भी ध्वनि तरंगें भली प्रकार उठती रहती हैं।

रेडियो यन्त्र केवल कुछ सीमित और सम्बन्धित फ्रीक्वेन्सी पर चल रही ध्वनि तरंगें ही पकड़ पाते हैं। समीपवर्ती फ्रीक्वेन्सी के साथ यदि उसके साथ सम्बन्ध न हो तो वे यन्त्र सुन नहीं सकेंगे। कान की स्थिति उनकी अपेक्षा लाख गुनी अच्छी है। वे अनेक फ्रीक्वेन्सियों पर चल रहे शब्द प्रवाहों को एक साथ पकड़ और सुन सकते हैं।

नाम में जिस स्तर की गन्ध ग्राही शक्ति है उस स्तर की पकड़ कर सकने वाला यन्त्र अभी तक बनाया नहीं जा सका।

नादयोग द्वारा आकाशव्यापी, अन्तर्ग्रही तथा अन्तःक्षेत्रीय दिव्य शक्तियों का सुना जाना सम्भव है और उस आधार पर वैसा बहुत कुछ जाना जा सकता है जो स्थूल मस्तिष्कीय चेतना अथवा उपलब्ध साधनों से जाना सकना सम्भव नही हैं । विश्वव्यापी शब्द

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समुद्र में मन्त्र साधक अपनी प्रचण्ड हलचलें समाविष्ट करता है और ऐसे शक्तिशाली ज्वार-भाटे उत्पन्न करता है जिनके आधार पर अभीष्ट परिस्थितियाँ विनिर्मित हो सकें। यही है मन्त्र विद्या के चमत्कारी क्रिया कलाप का रहस्य।

लोग उथली एकांगी मन्त्र साधना करते हैं फलतः वे उस सत्परिणाम से वंचित रह जाते हैं जो सर्वांग पूर्ण मन्त्र साधना करने से निश्चयपूर्वक प्राप्त हो सकता है। ध्यान रखा जाय मन्त्र विद्या की सफलता के चार आधार हैं—शब्दशक्ति मानसिक एकाग्रता, चारित्रिक श्रेष्ठता एवं लक्ष्य के प्रति अटूट श्रद्धा। चारों आधारों को साथ लेकर चलने वाली मन्त्र साधना कभी निष्फल नहीं होती।

मन्त्र विद्या और उसकी सुनिश्चित सामर्थ्य

मन्त्र विद्या में दो तत्वों का समवेश है (१) शब्द शक्ति का सूक्ष्म चेतना विज्ञान के आधार पर उपयोग, (२) व्यक्ति की आन्तरिक पवित्रता एवं भावोल्लास से उत्पन्न दिव्य क्षमता का समन्वय। इन दोनों के मिलन से एक तीसरी ऐसी अद्भुत शक्ति उत्पन्न होती है जो कितने ही बड़े भौतिक साधनों से उपलब्ध नहीं हो सकती।

मशीनें टूटती-फूटती रहती हैं। उनकी साज-सँभाल के लिए कुशल कारीगर नियुक्त करने पड़ते हैं। ईंधन के बिना उन यन्त्रों का चलना सम्भव नहीं। पर मनुष्य शरीर का यन्त्र जितना सशक्त है उतना ही सरल भी । इंसके चलाने के लिए न करीगर की जरूरत है न रोटी-पानी की स्वाभाविक प्रक्रिया को अतिरिक्त् किसी विशेष ईंधन की। उसे खरीदने को पूँजी चाहिए न लगाने जमाने के लिए फैक्टरी। वह जितना सस्ता और सरल है उतना तुच्छ नहीं। महत्तायें, सिद्धियाँ, और विभूतियाँ उसके रोम-रोम में भरी पड़ी हैं। इस यन्त्र का भौतिक उपयोग सभी जानते हैं। आहार, निद्रा, भय, मैथुन जैसे प्रयोजनों के लिए पशुओं की तरह मनुष्य भी उसका उपयोग करते हैं। पर आत्मिक उपयोग कोई बिरले ही जानते हैं। इसे न जानने के कारण इस मानव काया का नगण्य सा ही उपयोग हो जाता है। जो कुछ दिव्य है उस अधिकांश का तो न ज्ञान होता है न उपयोग। योग विद्या इस हानि से बचाने की प्रक्रिया का ही नाम है।

साधारणतया वाणी का उपयोग बात-चीत करने के—ज्ञान वृद्धि के—एवं जानकारियों के आदान-प्रदान के लिए होता है। यह उसका अति स्थूल प्रयोग है। शक्ति की सूक्ष्म शक्ति और उसके उपयोग की विधि को जाना जा सके तो उसका जितना लाभ आमतौर से उठाया जा सकता है उससे असंख्य गुना उठाया जा सकना सम्भव हो सकता है। मन्त्र विद्या को वाणी की सूक्ष्म शक्ति का उपयोग करने की वैज्ञानिक प्रक्रिया ही समझा जाना चाहिए।

शब्द कितना समर्थ है ? वाणी की क्षमता कितनी अद्भुत है ? आवाज कैसे अद्भुत प्रयोजन पूरे करती है ? उसके साथ जुड़ा हुआ विद्युत प्रवाह कितना प्रचण्ड है। इसे पदार्थ विज्ञान वेत्ता जानते हैं और उस ज्ञान के आधार पर रेडियो टेलिविजन, राडार आदि यन्त्रों का निर्माण संचालन करते हैं। मनुष्य के शरीर की विचारणा की भाव स्थिति की त्रिविधि क्षमताओं का समन्वय करके जो विद्युत प्रवाह प्रस्तुत होता है उसकी क्षमता को अध्यात्म तत्व वेत्ताओं ने समझा और उसी आधार पर मन्त्र-विद्या का आविष्कार किया।

आवाज को मुँह से निकलने वाली 'हवा' मात्र न समझा जाय। वह एक शक्तिशाली पदार्थ की तरह है जिससे कितने ही तरह के प्रयोजन पूरे किया जा सकते हैं।

अन्य पदार्थों की तरह आवाज भी एक ऐसा पदार्थ सिद्ध हो गया है जिसकी नाप-तौल की जा सकती है और तस्वीर खींची जा सकती है। प्लेट रिकार्डों और टैप रिकार्डों के द्वारा मनुष्य की आवाज को अंकित कर लेना और उसे बार-बार सुनाते दुहराते रहना तो रोज ही देखा जाता है। लाउडस्पीकर और टेप रिकार्डर से किन्हीं गीत वाद्यों सम्बन्धी रिकार्ड की हुई ध्वनियों को आये दिन सुनते रहते हैं।

अब आवाज को किसी के अभिभाषण के प्रमाण रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है। इससे पहले ऐसी बात न थी। टेप रिकार्ड अदालतों में प्रामाणिक नहीं माने जाते हैं। उनकी गवाही को मन्यता नहीं मिलती थी। क्योंकि अभियुक्त अक्सर उस आवाज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

को अपनी मानने से मुकर जाते थे। कोई दूसरे की आवाज की नकल भी कर सकता है। इस सन्देह में उन रिकार्डों को प्रामाणिक नहीं माना जाता था।

अँगूठे की उँगलियों की छाप ही अब तक पूर्ण प्रामाणिक मानी जाती थी क्योंकि संसार में किन्हीं दो व्यक्तियों के अँगूठे की रेखायें एक सी नहीं होतीं। दस्तखत तो जाली बन सकते हैं पर अँगूठा छाप की नकल असम्भव है। इसी प्रकार संसार में दो व्यक्तियों की आवाज भी एक सी नहीं होती। अब ध्वनि अंकन को भी वही मान्यता प्राप्त हो गई है। यह आविष्कार डा. कर्स्टा न्यू जर्सी के व्वायस प्रिंट प्रयोगशाला ने किया है। इस पद्धति के अनुसार आवाज को तीन कोणों से अंकन किया जाता है। आड़ा अंकन समय की लम्बाई बताता है। खड़ा—ध्वनि की गति और बुलन्दी का अंकन नक्शे जैसी रेखाओं के रूप में होता है। इस प्रक्रिया के आविष्कर्ता डा. कर्स्टा का कथन है कि बच्चा जब बोलना सीखता है तब उसके ओठ, दाँत, जीभ, तालू, जबड़ा, कण्ठ आदि की मांसपेशियों के सिकुड़ने फैलने का ढंग दूसरों से सर्वथा नहीं मिलता। उसमें कुछ भिन्नता-विशेषता रह जाती है। इसलिए हर व्यक्ति की आवाज में दूसरों की अपेक्षा अन्तर रहता है इस अन्तर को अंकित करके आवाज की अपने ढंग की एक तस्वीर ही बन सकती है।

इस आविष्कार के आधार पर कितने अभियुक्तों को पकड़ा जा सका है और कितने ही अपराधी दण्ड के भागी हुए हैं जिस प्रकार अँगूठे की छाप या अपने फोटो से कोई इन्कार नहीं कर सकता उसी प्रकार अपनी आवाज के अंकन से इन्कार करना भी अब सम्भव नहीं रहा। अब यह प्रमाणित हो गया है कि ध्वनि तरंगों के रूप में फैलती रहने वाली आवाजों को भी स्वरूप एवं पदार्थ के रूप में परिणित किया जा सकता है।

आवाज निस्सन्देह एक पदार्थ है। वाणी दूसरों पर प्रभाव डालती है। विद्यालयों में ज्ञान वृद्धि का माध्यम वाणी है। भावनाओं को उभारने और तरंगित करने का काम संगीत कितनी अच्छी तरह करता है यह सभी को विदित है। अपमानसूचक शब्द कहने से दूसरों को कैसा क्रोध आता है और फलस्वरूप कितना अनर्थ होता है उसका उदाहरण द्रोपदी द्वारा थोड़े से अपमानजनक शब्द कह देने से महाभारत का होना प्रसिद्ध है। यह रोज ही देखा जाता है कि कटुवचन से मित्रों को शत्रु और मधुर वाणी से शत्रुओं को मित्र बनाया जा सकना सम्भव होता है। दुःखद, शोक-संताप की घटना सुनकर कैसा बुरा हाल हो जाता है। शब्दों की भावोत्तेजक क्षमता स्पष्ट है।

इतना ही नहीं उनमें वह सामर्थ्य भी विद्यमान है जो अपने आपको—दूसरों को और समस्त सूक्ष्म जगत को प्रभावित कर सके। मन्त्र विज्ञान द्वारा यही सम्भव होता है। सितार के तारों पर क्रमबद्ध उँगलियाँ रखने से जिस प्रकार विभिन्न प्रकार की स्वर लहरियाँ निकलती हैं उसी प्रकार शब्दों के उच्चारण का एक लयबद्ध क्रम रहने से उसमें भी एक विशेष प्रकार के—विशेष शक्तिशाली— और विशेष प्रभावोत्पादक कम्पन उत्पन्न होते हैं। मन्त्रों में केवल शब्दार्थ का ही महत्व नहीं है। शिक्षा तो गद्य-पद्य से और भी अच्छी तरह दी जा सकती है। मन्त्रों में अक्षरों के क्रम का तथा उनके उच्चारण की विशेष विधि व्यवस्था का ही अधिक महत्व है। कण्ठ, तालू दाँत, ओठ, मूर्धा आदि जिन स्थानों से शब्दोच्चारण होता है उनका सीधा सम्बन्ध मानव-शरीर के सूक्ष्म संस्थानों से है। षट्चक्र, उपात्मक एवं दिव्य वादियों, ग्रन्थियों का सूक्ष्म शरीर संस्थान अपने आपमें अद्भुत है। इन दिव्य अंगों के साथ हमारे मुख यन्त्र के तार जुड़े हुए हैं। जिस प्रकार टाइपराइटर की चाबियाँ दबाते चलने से ऊपर अक्षर टाइप होते चलते हैं ठीक इसी प्रकार मुख से उच्चारण किये हुए विशेष वैज्ञानिक प्रक्रिया के साथ विनिर्मित मन्त्र गुम्फन का सीधा प्रभाव उपरोक्त संस्थानों पर पड़ता है और वहां तत्काल एक अतिरक्त शक्ति तरंगों का प्रवाह चल पड़ता है। यह प्रवाह मन्त्र विज्ञानी को स्वयं लाभान्वित करता है। उसकी प्रसुप्त क्षमताओं को जगाता है। भीतर गूँजते हुए वे मन्त्र कम्पन यही काम करते हैं और जब वे बाहर निकलते हैं तो वातारण को प्रभावित करते हैं। सूक्ष्म जगत में अभीष्ट परिस्थितियों की सम्भावनाओं का सृजन करते हैं और यदि किसी व्यक्ति विशेष को प्रभावित करना है तो उस पर भी असर डालते हैं। मन्त्र विद्या इन तीनों प्रयोजनों को पूरा करती है।

राडार (रेडियो डिक्टेशन एण्ड रेजिंग) शब्द का संक्षिप्त नामकरण है। ध्वनि तरंगें ठोस वस्तुओं द्वारा परावर्तित होती हैं। प्रत्येक ध्वनि प्रतिध्वनि उत्पन्न करती हैं। देखा जाता है कि किसी बड़ी इमारत, गुम्बज,

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पक्का कुँआ आदि की तरफ मुँह करके जोर की आवाज की जाय तो उसकी प्रतिध्वनि होती है और कुछ देर बार वह वहीं लौट आती है जहाँ से कि वह उत्पन्न हुई थी, इस ध्वनि के उच्चारण और वापस के समय का अन्तर यदि ठीक प्रकार ज्ञात हो सके तो दूरी की गणना हो सकती है। इस प्रकार वेग, प्रतिध्वनि के उतार-चढ़ाव के आधार पर उस पदार्थ के स्वरूप एवं अन्तराल को जाना जा सकता है जिससे टकराकर वह वापस आई। रेडियो तरंगें भी तरंगों की तरह ही परावर्तित होती हैं । इनके आधार पर 'राडार' यन्त्र का आविष्कार हुआ है।

एक सैकिण्ड के दस लाखवें भाग को माइक्रो सैकिण्ड कहते हैं। वायुमण्डल एवं शून्य आकाश में रेडियो तरंगें लगभग २·९५,००० किलो मीटर प्रति सैकिण्ड की चाल से दौड़ती हैं। रेडियो प्रेषित ध्वनि तरंगें—बहुत दूरी पर भी अपने लक्ष्य तक पहुँचकर कुछ ही माइक्रो सैकिण्डों में वापस आ जाती हैं। इसलिए आकाश में उड़ने वाले वायुयान आदि की दूरी—चाल, स्थिति का पता आसानी से लगा लिया जाता है और यदि वह शत्रु का हो तो उससे निपटना भी सम्भव हो जाता है। इसी प्रकार इस प्रणाली से जलयानों की भी सही स्थिति का पता चल जाता है। राडार पद्धति बिना सम्पर्क साधे ही दूसरे जहाजों के सन्देश संकेत प्राप्त करने में, समुद्री तूफानों का पता लगाने में, ऋतु परिवर्तन, खगोल विद्या आदि कितने ही महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपनी उपयोगी भूमिका प्रस्तुत कर रही है।

राडार हमारे शरीर में भी विद्यमान है और वह भी यन्त्रों द्वारा बने हुए राडार की तरह काम करता है। उसे जागृत, सशक्त और सक्रिय बनाने के लिए मन्त्र विद्या का उपयोग किया जाता है। शब्द विद्या के तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यन्त्रों के अक्षरों का चयन होता है। मन्त्र रचना कविता या शिक्षा नहीं है। शिक्षा भी उनमें हो सकती है पर वह गौण है। कविता की दृष्टि से भी मन्त्रों का महत्व गौण है। प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र में २३ ही अक्षर हैं। जबकि छन्द शास्त्र के अनुसार उसमें २४ होने चाहिए। इस दृष्टि से उसे साहित्य कसौटी पर दोषयुक्त भी ठहराया जा सकता है। पर शक्ति तत्व का जहाँ तक सम्बन्ध है वह सौ टंच खरा है। उसकी सामर्थ्य का कोई वारापार नहीं।

शब्द मन्त्र विज्ञान में केवल जप उच्चारण ही पर्याप्त नहीं। उनकी शब्द शक्ति को ही सर्वांगपूर्ण नहीं मान लेना चाहिए वरन् उसमें दूसरा पूरक तत्व और भी अधिक महत्वपूर्ण है। इतना अधिक महत्वपूर्ण कि उसके बिना अध्यात्म विद्या की गरिमा प्रत्यक्ष हो ही नहीं सकती। वह तथ्य है मन्त्र साधक की मनोभूमि तथा आन्तरिक स्थिति। मनुष्य के तीन शरीर हैं—स्थूल—सूक्ष्म और कारण। इन तीनों का ही समन्वय होने से मन्त्र शक्ति का समुचित उद्भव होता है। स्थूल शरीर से जप, अनुष्ठान, पूजा, उपचारपरक, कर्म-काण्ड सम्पन्न किये जाते हैं। आहार-विहार, उपवास, ब्रह्मचर्य आदि की बाह्य तपश्चर्या स्थूल शरीर से होती है। यह मन्त्र विद्य का पहला आधार हुआ। दूसरा आधार है— सूक्ष्म शरीर, मन, मस्तिष्क। साधक का दृष्टिकोण उच्च और पवित्र होना चाहिए। उसकी विचारणा, आदर्शवादिता, संयमशीलता, चरित्रनिष्ठा, उदारता, सेवा बुद्धि उत्कृष्ट होना चाहिए। सूक्ष्म शरीर के शब्द का उद्भव इसी तरह होता है। तीसरी शक्ति तीसरे शरीर से—कारण शरीर से उत्पन्न होती है। अन्तःकरण से यह क्षेत्र भावना भूमि है। साधक की भावनाओं में श्रद्धा, विश्वास, भक्ति और तन्मयता का गहरा पुट होना चाहिए। अविश्वासी, व्यग्र, अश्रद्धालु भावनारहित ऐसे ही उद्धत मन से बेगार टालने की तरह उपेक्षापूर्वक उपासना की जाय तो समझना चाहिए कि साधना का एक महत्वपूर्ण अंग छूट गया। ऐसी दशा में सफलता भी संदिग्ध रहेगी।

ऊपर शब्द शक्ति के अतिरिक्त विद्या का दूसरा आधार साधक का व्यक्तित्व बताया गया है। यदि स्थूल शरीर से निर्धारित कर्म-काण्ड, सूक्ष्म शरीर से सद्विचार और सदाचरण, कारण शरीर से भाव भरी श्रद्धा तन्मयता का त्रिविधि समावेश किया जा सके तो साधना का उपयुक्त व्यक्तित्व तैयार हो गया है और उसका अभीष्ट परिणाम निश्चित रूप से होकर रहेगा।

बढ़िया बन्दूक में—बढ़िया किस्म का कारतूस लगाकर ही कुशल निशानेबाज लक्ष्य वेध कर सकता है। मन्त्र विद्या की स्थिति भी यही है। अन्तःकरण की भावनायें मस्तिष्क की नीति निष्ठायें, शरीर की विधि-व्यवस्थायें मिलकर साधना के उपयुक्त व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। उसे बढ़िया बन्दूक कह सकते हैं। शब्द शास्त्र के अनुरूप तत्व ज्ञानियों द्वारा सृजन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया हुआ अनुभूत मन्त्र बढ़िया कारतूस है। इसे यदि मन्त्र साधक विश्वास और तत्परता के साथ प्रयोग कर सके तो असफलता का कोई कारण नहीं। मन्त्र शक्ति—यन्त्र शक्ति की तरह ही सुनिश्चित विज्ञान के आधार पर विनिर्मित है उसका ठीक तरह प्रयोग किया जा सके तो असफलता का कोई कारण नहीं है।

अध्यात्म शब्द विद्या को, मन्त्र विद्या को तत्व ज्ञानियों ने 'वाक्' कहा है। यह वाक् अध्यात्म शक्तिशाली और महत्वपूर्ण है, इसकी विवेचना करते हुए शास्त्रकारों ने कहा है—

प्रावीविपद्वाच ऊर्मि न सिन्धुः।

—ऋग् ९ ।९६ ।७

जिस प्रकार समुद्र में तरंगें उठती हैं उसी प्रकार वाक् की तरंगें भी कम्पन के सहित गति करती हैं।

प्रजापतिर्वा इदमेक आधीतस्य वागेव स्तमासीत् वाग द्वितीया स एक्षते मामेव वाच विसृजा। इयं वा इद सर्वं विभवव्येष्यतीति।

—ताण्ड्य बा. २० ।१४ ।२

प्रजापति अकेले थे उनके अतिरिक्त वाक् ही उनकी अपनी सम्पत्ति थी। उनने इच्छा की कि मैं इस वाक् का सर्जन करूँ। यह वाक् ही सब कुछ हो जायगी।

तद्यत किञ्चार्वाचीनं ब्रह्मणस्तद् वागेव सर्वम्।

—जै. उ. १ ।१३ ।१ ।३

ब्रह्म के पश्चात् जो कुछ है सो वाक् ही है।

वाग् वै त्वष्टा।

—ऐत. २ ।४

वाक् ही त्वष्टा देवता है।

वाक् वैविश्वकर्मर्षिः वाचाहीद सर्वं कृतम्।

—शतपथ ८ ।१ ।२ ।९

यह वाक् ही विश्व कर्मा ऋषि है। इसी से यह सारा संसार रचा गया।

यो बै तां वाचं वेद यस्मा एव विकारः स सम्प्रतिविदकारी वै सर्वा वाक्।

—ऐ. ब्रा. २ ।३ ।६

जो उस आदिमूल वाक् को जानता है वह सम्पत्तिविद् सिद्ध पुरुष कहलाता है।

मन्त्र विद्या की महान् सामर्थ्य को यदि ठीक तरह समझा जा सके और उसका समुचित प्रयोग किया जा सके तो यह आध्यात्मिक प्रयास किसी भी भौतिक उन्नति के प्रयास से कम महत्वपूर्ण और कम लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकता।

भारतीय मनीषियों ने "शब्द" को ब्रह्म कहा है ब्रह्म या परमात्मा एक विराट् तथा सर्वव्यापी तेजस सत्ता का नाम है—जिसकी शक्ति का कोई पारावार नहीं। इस तरह से तत्वदर्शी भारतीयों की सामर्थ्य को बहुत पहले ही जान लिया था। यही नहीं उस पर गम्भीर खोजें हुई थीं और मन्त्र-विज्ञा नाम की एक स्वतन्त्र शाखा की ही स्थापना हुई थी। मन्त्र शक्ति की महत्ता इन्हीं शब्दों सें ज्ञात हो जाती है—

मन्त्र परम लघु जासु बस विधि हरिहर सुरसर्व।

महामन्त्र गजराज कहुँ बस कर अंकुश खर्व॥

जिस शब्द तत्व को इतना समर्थ निरूपित किया गया है वह चाहे जो कुछ, चाहे जैसे मुँह से बोल देने वाले शब्द नहीं। वरन् विशेष गति, लय, क्रम में गुम्फित अक्षरों की विशेष ध्वनि ही यह कार्य करती है। विज्ञान जगत में इस तरह की ध्वनि को "अश्रव्य" ध्वनि कहते हैं। अश्रव्य का अर्थ है जो सुनाई न दे; किन्तु जिसका अस्तत्व हो। विभिन्न प्रकार की विशेष ध्वनियों से इस्पात की मोटी चादरें काटने से लेकर चिकित्सा, कृषि, पशुओं से दुग्ध उत्पादन आदि अनेकों प्रकार के आश्चर्यजनक काम होने लगे हैं। प्रकारान्तर से चिकित्सा जगत फिर से अपने उसी प्राचीन मन्त्र-जन्त्र के सिद्धान्त पर लौट रहा है।

अश्रव्य ध्वनि की महत्ता पहली बार १९१४ में फ्रांस के वैज्ञानिक पाल लैजेविन ने किया था। उन दिनों जहाजों की सुरक्षा के लिए किसी ऐसे यन्त्र का शोध अहं बनी हुई थी जिससे समुद्र के अन्दर भीमकाय जीव-जन्तुओं, प्रवाल द्वीपों, चट्टानों तथा दुश्मन के जहाजों की पूर्ववर्ती जानकारी मिलती रह सके। डा. लैजेविन ने इसका निदान अश्रव्य ध्वनियों से किया। निश्चित गति और शक्ति से प्रक्षेपित ध्वनि तरंगें जब किसी पदार्थ जीव या स्थान से टकराती हैं तो उससे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तुरन्त वापसी दिशा में प्रतिध्वनि हो लौटती हैं इस प्रतिध्वनि के विश्लेषण से उस वस्तु की अन्तःस्थिति का पता चल जाता है।

एक बार तथ्य सामने आ जाने के बाद वैज्ञानिक प्रयोगों की व्यापक शृंखला चल पड़ी । १९४२ से १९५० तक डॉ. उसिक एडला, मुन्त डोनाल्ड लेकसेल हर्ज तथा हगेज आदि ने विभिन्न प्रयोगों में यह पाया कि अश्रव्य ध्वनि का चिकित्सा क्षेत्र में सफल प्रयोग किया जा सकता है। भ्रूण जैसे पहुँच से सर्वथा असम्भव क्षेत्र तथा उसकी बीमारियों के निदान तक में यह अश्रव्य ध्वनि चमत्कार सिद्ध हुई। १९५६ में पित्ताशय के परीक्षण में इसी का प्रयोग हुआ अब तक इस क्षेत्र में सैकड़ों यन्त्र विकसित हो गये हैं जो १२ या उससे अधिक मेगाहर्ट्ज आवृत्ति वाली अश्रव्य ध्वनि तरंगों को शरीर के कोमल ऊतकों (टिशूज) में प्रविष्ट करा कर उनसे वहाँ की स्थिति की जानकारी तथा रोग निवारण में करते हैं। मेगाहर्ट्ज इस ध्वनि को मापने की इकाई होती है एक मेगाहर्ट्ज का अर्थ है शब्द के कम्पन्न को इतना सूक्ष्म और प्रखर बना देना कि उसकी १ सैकेण्ड में १०००००० (दस लाख बार) कम्पन (थरथरी) हो। ध्वनि तरंगें नियमित होने पर शरीर के भीतर की उनसे स्थिर जानकारी मिल जाती है, उससे रोगी को किसी प्रकार का कष्ट अथवा कोई प्रतिकूल प्रभाव भी नहीं होता ।

मन्त्र के सम्बन्ध में भी यही तथ्य काम में आता है ध्वनि को अश्रव्य स्थिति में तीव्र आवृत्ति देने का जो काम यन्त्र करते हैं वह तालू, ग्रीवा आदि से सम्पन्न कर लिया जाता है। भावनाओं द्वारा इन्हें नियन्त्रित किया जाता है और फिर किसी भी स्थान विशेष पर इन तरंगों के विखण्डन संलयन, मार्जन आदि के द्वारा उपचार, प्रताड़न, मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के विभिन्न प्रयोग किये जात हैं। दोनों अवस्थाओं में काम शब्द-शक्ति ही करती है, पर उनकी बनावट, गति और भावनाओं के अनुरूप उनकी शक्ति घट-बढ़ होती है और उसी अनुपात में उसके परिणाम प्रस्तुत होते हैं।

भले ही मन्त्र विद्या के जानकार अब उँगलियों में गिनने लायक ही लोग बचे हों पर इस विज्ञान की सुनिश्चितता से इन्कार नहीं किया जा सकता है। अनुमान है कि उच्च आवृत्ति वाली ध्वनि तरंगों से भविष्य में रुधिर संचार की गतिविधि शरीर के ऊर्जा स्रोतों की जानकारी और उन्हीं से रोगों के निवारण की अन्तः व्यवस्था भी होने लगेगी। इन ध्वनियों का जो चमत्कारिक पक्ष प्रस्तुत होने जा रहा है वह है पदार्थ की संरचना सम्बन्धी गढ़ से गूढ जानकारी। इतना हो जाने के बाद शब्द शक्ति से ही परमाणु विखण्डन पदार्थ को शक्ति में बदलकर उसके मनमाने उपयोग का मार्ग खुल जायेगा। मन्त्र विद्या से ऐसे ही चमत्कारों की परिकल्पना की जाती है जो अब विज्ञान द्वारा साकार होने जा रहे हैं।

शब्द को प्रकाश से भी अधिक समर्थ शक्ति माना जाने लगा है इन दिनों सुपर सोनिक नामक जो माइक्रास्कोप बने हैं। वह प्रकाश—सिद्धान्त पर बने माइक्रोस्कोपों से अधिक शक्तिशाली होते हैं। रचना में ध्वनि तरंग प्रकाश तरंगों से बहुत कुछ मिलती-जुलती होने पर भी गुणों में उनसे ठीक विपरीत होती हैं। प्रकाश-तरंगें उन्नतोदर लेन्स में तो संगठित होकर शक्तिशाली बनती हैं जबकि नतोदर में बिखर जाती हैं किन्तु अश्रव्य ध्वनि तरंगों के बारे में स्थिति ठीक इससे विपरीत रहती है। इस केन्द्रित शक्ति से न केवल शरीर अपितु पौधों, धातुओं आदि के दोषों का पता लगाना सम्भव हो गया है और इस नई शक्ति से औद्योगिकी में व्यापक क्रान्ति आने की सम्भावनाएँ व्यक्त की जा रही हैं।

मन्त्रों में उपरोक्त प्रकार की सम्भावनाओं से भी अधिक समर्थ अपेक्षायें विद्यमान हैं, जो भी शब्द बोला जाता है वह दूसरे को सुनाई ही तब पड़ता है जब हवा में से उसके कम्पन दूसरे कानों तक पहुँचते हैं। हर शब्द से हर दूसरा व्यक्ति प्रभावित होता है, पर जब वही शब्द प्रखर सम्वेगों और भावनाओं से प्रेरित होते हैं तो उसका अर्थ अश्रव्य ध्वनि कम्पनों का निर्माण ही होता है। मन्त्र विद्या के कुछ अन्य पहलू भी हैं जो शब्द उच्चारण में प्रयुक्त होने वाले शरीर यन्त्र से सम्बन्धित हैं तालू, जिह्वा, विवर तथा कुछ विशिष्ट चक्रों, उपत्यिकाओं से भी है जो शब्दों को गति प्रवाह, भ्रमर आदि में बदल देते हैं यह उन यंत्रों की तरह ही हैं जैसे ट्रान्स्ड्यूसर यन्त्र जो ध्वनि को सूक्ष्म आवृत्ति वाला बनाकर उन्हें अति समर्थ बना देते हैं।

मन्त्र विज्ञान एक अति समर्थ तथा सूक्ष्म विज्ञान है उसे समझा तो जाये, पर जिस आधार पर यह शक्तियाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिलती हैं उस आत्मिक धरातल को भी सुदृढ़, विकसित और पवित्र बनाया जाना आवश्यक रहता है उसके बिना मन्त्र विद्या का कुछ अर्थ ही नहीं हो सकता है।

मन्त्र, योग साधना का एक ऐसा शब्द और विज्ञान है कि उसका उच्चारण करते ही किसी चमत्कारिक शक्ति का बोध होता है। ऐसी धारणा है कि प्राचीनकाल के योगी, ऋषि और तत्वदर्शी महा पुरुषों ने मन्त्रबल से पृथ्वी, देव-लोक और ब्रह्माण्ड की अनन्त शक्तियों पर विजय पाई थी। मन्त्र शक्ति के प्रभाव से वे इतने समर्थ बन गये थे कि इच्छानुसार किसी भी पदार्थ का हस्तान्तरण, शक्ति को पदार्थ और पदार्थ को शक्ति में बदल देते थे। शाप और वरदान मन्त्र का ही प्रभाव माना जाता है। एक क्षण में किसी का रोग अच्छा कर देना, एक पल में करोड़ों मील दूर की बात जान लेना, एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र की जानकारी और शरीर की ७२ हजार नाड़ियों के एक-एक जोड़ की जानकारी तक मन्त्र की ही अलौकिक शक्ति थी। इसलिए भारतीय तत्वदर्शन में मन्त्र शक्ति पर जितनी शोधें हुई हैं, उतनी और किसी पर भी नहीं हुई। मन्त्रों के आविष्कारक होने के कारण ही ऋषि मन्त्र दृष्टा कहलाते थे। वेद और कुछ नहीं एक प्रकार के मन्त्र विज्ञान हैं जिनमें विराट ब्रह्माण्ड की उन अलौकिक सूक्ष्म और चेतन सत्ताओं और शक्तियों तक से सम्बन्ध स्थापित करने के गूढ़ रहस्य दिये हुए हैं, जिनके सम्बन्ध में विज्ञान अभी "क ख ग" भी नहीं जानता।

मन्त्र का सीधा सम्बन्ध उच्चारण या ध्वनि से है। इसलिए इसे "ध्वनि विज्ञान" भी कह सकते हैं। अब तक इस दिशा में जो वैज्ञानिक अनुसंधान हुए और निष्कर्ष निकले हैं वह यह बताते हैं कि सामान्य भारतीय मन्त्र शक्ति पर भले ही विश्वास न करें पर वैज्ञानिक अब उसी दिशा में अग्रसर हो रहे हैं। वह समय समीप ही है जब ध्वनि विज्ञान की उन्नति ऋषियों जैसे ही कौतूहलवर्द्धक कार्य करने लगेगी। उदाहरण के लिए "ट्रान्स्ड्यूसर" यन्त्र से सूक्ष्म से सूक्ष्म आपरेशन किया जा सकता है। वह शब्द की कर्णातीत शक्ति का ही फल है। प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री डा. फ्रिस्टलाव ने "अल्ट्रासोनोरेटर" नामक एक ऐसा मन्त्र तैयार किया है जो दो रासायनिक द्रव्यों को थोड़ी ही देर में मिला सकता है। इस पद्धति में एक "खे" का उपयोग किया जाता है। कर्णातीत ध्वनि डा. खे को प्रभावित करती है। खा इतनी तीव्रता से कम्पन करता है कि भारी मात्रा में भरा हुआ जल कड़ाही में खौलते पानी की तरह मंथन करने लगता है। वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि एक दिन वह आयेगा जब कर्णातीत ध्वनि से सृष्टि के किसी भी अदृश्य भाग के प्राकृतिक परमाणु में तीव्र हल-चल उत्पन्न कर किसी भी क्षेत्र को मथ डालना या उसमें परिवर्तन उत्पन्न कर देना सम्भव हो जायेगा। कई कीटाणु ऐसे होते हैं जो किन्हीं रसायनों में इस कदर घुल मिल जाते हैं कि उन्हें किसी बाह्य उपचार द्वारा नष्ट करना सम्भव नहीं होता, कर्णातीत या सूक्ष्म ध्वनि कम्पन उन्हें नष्ट कर देते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि यदि भारतीय तत्वदर्शी मन्त्र शक्ति से किसी के रोग अच्छा कर देने के प्रयोग सफलतापूर्वक करते रहे हैं तो यह कोई आश्चर्य न होकर वैज्ञानिक प्रक्रिया ही है जो धीरे-धीरे प्रकाश में आ रही है।

आज मन्त्र विज्ञान के नाम पर भारी अन्धविश्वास फैला हुआ है और सीधे-सादे भारतीयों का मन्त्रों पर अनादि विश्वास झूठे मन्त्र दृष्टाओं ओझाओं की सहायता करता है। ये ओझा और तथाकथित मंत्रविद जानते कुछ नहीं, लोगों की श्रद्धा का दोहन करते हैं पर सचमुच ही यदि मन्त्र शक्ति के विज्ञान को समझकर उसे प्रयोग करने की विधि जान ली जाय तो जो शक्ति आज लोगों को बरगलाने प्रयुक्त हो रही है, वह लोग-मंगल के काम आ सकती है आज यह बात विज्ञान भी मानता है।

कैलीफोर्निया अमेरिका में हुए एक प्रयोग में एक वैज्ञानिक ने एक सैकिण्ड में पाँच करोड़ से अधिक कम्पन वाली ध्वनि पैदा कर दी। उस क्षेत्र में रुई का टुकड़ा पड़ा था वह अकस्मात् जल उठा। वैज्ञानिकों के कपड़े इतने गर्म हो उठे कि यदि वे कुछ देर के लिए उस क्षेत्र से अलग नहीं हो जाते और ध्वनि का कम्पन थोड़ा और तीव्र हो जाता तो उनके शरीर के कपड़े भी जलने लगते ।

प्रयोग का विश्लेषण करते हुए वैज्ञानिकों ने बताया है कि मनुष्य कम से कम २० और अधिक से अधिक २०००० कम्पन वाली ध्वनि सुन सकता है। कुछ व्यक्ति खासकर वृद्ध लोग इसके अपवाद हो सकते हैं अन्यथा इस सीमा से बाहर वाले कम्पनों की ध्वनि कानों से सुनी नहीं जा सकती पर उसका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अस्तित्व इतना शक्तिशाली होता है कि बादलों के गर्जन से जिस प्रकार सारे प्राकृतिक परमाणु काँप जाते हैं उसी प्रकार यह ध्वनि कम्पन जहाँ से भी गुजरते हैं तीव्र हलचल उत्पन कर देते हैं। जीवों को नष्ट कर देना, परमाणुओं को उछालकर उड़ा ले जाना, उन्हें शक्ति में बदल देना, यह सब कर्णातीत ध्वनि की तीव्रता पर निर्भर करता है। योग पद्धति में मन्त्र के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि को शब्द शक्ति ही विद्युत प्रदान करती है जब कि मानवीय इच्छा शक्ति उस पर नियंत्रण करके कोई भी कार्य कर सकने में समर्थ होती है। जप और ध्यान, नाद (शब्द या ध्वनि कम्पन) और बिन्दु साधना का सम्मिलित रूप है। उससे सृष्टि के विराट् से विराट् और अणु से अणु कण का भेदन भी सम्भव हो जाता है। इसलिए मन्त्र की शक्ति को अकूत माना जाता है और अनुमान किया जाता है कि इस शक्ति का उल्लंघन विधि (ब्रह्मा) विष्णु, महेश तथा कोई अन्य देवता भी नहीं कर सकता !

इंग्लैण्ड की बी. एफ. गुडरचि कंपनी के रिसर्च डाइरेक्टर डा. डब्लू एल सेमान, इस बात का परीक्षण कर रहे हैं कि सूक्ष्म ध्वनि तरंगें प्राकृतिक व कृत्रिम परमाणु की संरचना पर किस प्रकार प्रभाव डालती हैं और इनका उपयोग पृथ्वी के अंतराल ग्रह नक्षत्रों के अन्तराल का पता लगाने में किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है। गायत्री उपासना द्वारा सूर्य के अन्तराल का वेधन करके वहाँ के परमाणुओं में हलचल उत्पन्न होना इसी सिद्धान्त के अन्तर्गत है जैसा कि चमगादड़ के उदाहरण से स्पष्ट है। एक बार इटली के जीव विशेषज्ञ स्पालानजानी ने चमगादड़ को अन्धा करके उड़ाया। चमगादड़ में एक अलौकिक क्षमता यह होती है कि कितने ही तीव्र अन्धकार में बारीक से बारीक धागों की सैकड़ों बाधाओं को पार करता हुआ बराबर एक ही गति से उड़ता रहता है। किसी भी डोरे से टकराता नहीं। स्पालानजानी ने चमगादड़ में मुँह, तथा नाक बन्द करके परीक्षण किये तो एक बात स्पष्ट हो गई कि चमगादड बाधाओं को पर करने में कर्णातीत ध्वनि का उपयोग करता है पीछे इस बारे में नये तथ्य प्रकाश में आये और पता चला कि चमगादड़ भागते समय हल्की चीख निकालता है वह वस्तु से प्रतिध्वनित होकर लौटती है और चमगादड़ के "रेटीक्यूलर फार्मेशन" (मस्तिष्क का वह भाग जहाँ हिन्दू चोटी रखते है) की संवेदनशील नाड़ियों द्वारा उसको यह सूचना दे देते हैं कि वस्तु कैसी है, किस दिशा में है आदि। मन्त्रोच्चारण में कर्णातीत ध्वनि निकलती है। उसे भावनाओं की विद्युत शक्ति जितनी अधिक मात्रा में मिलती है उतनी ही तीव्रता से वह आकाश के परमाणुओं को कँपाती हुई ध्यान वाले स्थान तक दौड़ी चली जाती है। यह जानने वाली—बात है कि आकाश भी शून्य नहीं है । उसमें करोड़ों सूक्ष्म परमाणु बाल्टी में पानी की भाँति भरे और गतिशील हैं। साधारणतया ध्वनि चारों दिशाओं में फैलती है पर मन्त्रों में शब्द इस प्रकार गुम्फित होते हैं कि उसकी ध्वनि तरंगें विशेष प्रकार की हो जाती हैं। गायत्री मन्त्र की ध्वनि तरंगें तार के छल्ले जैसी ऊपर उठती हैं और यह सूक्ष्म अन्तराल के परमाणुओं के माध्यम से सूर्य तक पहुँचती हैं और जब यही ध्वनि सूर्य के अन्तराल से प्रतिध्वनित होकर लौटती हैं तो अपने साथ प्रकाश अणुओं की (गर्मी, प्रकाश व विद्युत सहित) फीज जप करने वाले वाले शरीर में उतारती चली जाती है। साधक उन अणुओं से शरीर ही नहीं मन और आत्मा की शक्तियों का विकास करता है चला जाता है और कई बार वह लाभ प्राप्त करता है जो सांसारिक प्रयत्नों द्वारा कभी भी सम्भव न होते।

साधक के अन्तःकरण में इन्द्रयातीत दृश्यों की अनुभूति, भविष्य की सूचना वाले स्वप्न भी मन्त्र जप के परिणाम होते हैं यही स्थिति एक दिन नाद की उच्चतम अवस्था "'ॐ " कार की स्थिति तक पहुँचा देती है। प्रमाणस्वरूप पिट्सवर्ग (अमरीका) की वेस्टिंग हाउस रिसर्च लैबोरेटरी के इन्जीनियरों सर्व श्री डब्लू. एल. पाकला, जे. एच. थामसन और आर ए लेस्टर द्वारा बनाये उस उपकरण को प्रस्तुत किया जा सकता है जो इन दिनों बिजली के लीकेज का पता लागाने में प्रयुक्त होता है। विद्युत जहाँ से लीक होती है वहाँ हल्का लीलम प्रकाश भी पैदा करती हैं और चटखने की आवाज भी। गति कोई भी हो उसमें स्पन्द के और प्रत्येक स्पन्दन (वाइप्रेशन) की एक सूक्ष्म ध्वनि होती है। पर इसे हमारे कान नहीं सुन सकते हैं। इस यन्त्र में दो २० के लगभग ट्रान्सड्यूगर और टेलेस्कोप लगाये जाते हैं जो उस स्थान पर जहाँ से बिजली लीक होने से कर्णातीत कम्पन पैदा हो रहे थे, इसी ओर स्थिति का ज्ञान करा देते हैं। अर्थात् उस स्थान से शब्दों का आया हुआ कम्पन उस स्थान की स्थिति के दृश्य और शब्दों तक का ज्ञान करा देता है। यही मन्त्र जप के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधकों के साथ भी होता है। आवश्यकता केवल भावनाओं की तीव्रता भर की होती है।

सूक्ष्म ध्वनि शक्ति से इन दिनों चिकित्सा और औद्योगिक क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। चिमनी से निकले धुएँ को ९५ प्रतिशत में बदल देने, रोग ठीक करने, इस्पात की चद्दरों की कटाई, लाण्ड्री, सिंचाई के साधनों में इस शक्ति का उपयोग बिजली की तरह होने लगा है। इससे कोहरा दूर करके यह सिद्ध कर दिया गया है कि शब्द प्रकृति को भी जीत सकता है। इस दिशा में इंगलैण्ड और अमेरिका में तत्परतापूर्वक खोजें हो रही हैं और आशा की जाती है कि कर्णातीत ध्वनि से एक दिन खगोल विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति होगी। इन प्रगतियों ने एक बार फिर से हमें उस स्थान पर लाकर खड़ा कर दिया है जहाँ से आवाज आती है— क्यों न हम अपने मन्त्र विज्ञान को फिर से जागृत कर उसकी महान शक्ति से लाभान्वित हों। इस शक्ति से भौतिक और आध्यात्मिक सभी तरह के लाभ प्राप्त किये गये हैं, किये जा सकते हैं।

मन्त्र शक्ति का चमत्कारी प्रतिफल

वेदों में मन्त्रों की २० हजार ऋचाएँ हैं। इन सभी को विभिन्न छन्दों में विभक्त किया गया है। छन्द अर्थात् गीत गायन। इन सभी गीतों की सीमा मर्यादा है। कौन किस प्रकार गाया जायेगा, इसका ऋषिगणों द्वारा उसी समय निर्धारण हो गया है, जब इनका सृजन हुआ है। इन्हें लयबद्ध गाया जाना चाहिए। मोटा विभाजन तो उदात्त, अनुदात्त स्वरित के क्रम में हुआ है। मन्त्रों के नीचे, ऊपर आड़ी टेड़ी लकीरें जो लगाई जाती हैं, उनमें उच्चारण के संकेत हैं। लेकिन जब इन्हें स्वर समेत गाना हो तो उनके सरगम, सामवेद में दिये गये हैं। वहाँ अंकों के चिह्न हैं। वैदिक सरगम का संकेत १, २, ३, ४ आदि अंकों में अक्षरों के ऊपर दिया जाता है । यह ध्वनियाँ हैं, जिन पर हिन्दी गीतों को कई-कई तरह गाया जाता है। इन गाने के ढंगों को सरगम की भिन्नता के हिसाब में अंकित किया जाता है। आगे वाले इन आड़ी-टेडी लकीरों को हिसाब में अनुमान लगा लेते हैं और छन्दों की उसी क्रम में गाने लगते हैं। एक छन्द को अनेक ध्वनियों में गाया जा सकता है। इन ध्वनियों भिन्नताओं में सरगम के अतिरिक्त आड़ी-टेड़ी लकीरों में संकेत ध्वनि बना देते है। इस प्रकार वेद मन्त्रों में जो ऋचा सामगान के रूप में गायी जाती हैं, तब उनके ऊपर अंक संकेत लगा देते हैं। सामगान की यही परम्परा है। कुछ दिन पूर्ण सामगान की अनेकों शाखाएँ थी, पर अब वे लुप्त हो गईं । जो बची हैं मात्र वे ही उपलब्ध हैं।

इसके अतिरिक्त जटा-पाठ, घनपाठ का भी तरीका है। इनमें से कुछ मिलते हैं, कुछ लुप्त हैं। जो मिलते हैं, उनमें से अधिकांश की श्रुति सम्पदा है। कहना और सुनना अथवा कण्ठस्थ करना वेदों का क्रम था। पर अब इतना परिश्रम लोग करते नहीं। जो लिखित है उसी के सहारे गाड़ी चलती है, आगे भी चलती रहेगी।

शुद्ध उच्चारण के लिए कंठस्थ होना विश्वस्त एवं प्रामाणिक है। गायन की दृष्टि से ही यह लयबद्धता नियोजित नहीं की गई, पर उनके अर्थ और प्रतिफल भी भिन्न हो जाते हैं। किस प्रयोजन के लिए किस मन्त्र को किस लय ध्वनि में गाया जाय, इसका अपना अलग शास्त्र है। मन्त्रों के विभिन्न प्रयोजन हैं। मात्र शब्दार्थ तो मोटी बात है। उसे तो निरुक्त, व्याकरण, शब्दकोष के सहारे सफलतापूर्वक समझा जा सकता है। छन्दों के साथ ऋषि, देवता आदि का भी उल्लेख किया जाता है। इन संकेतों के हिसाब से यह अनुमान लगाया जाता है कि अर्थ किस प्रयोजन के निमित्त किया जायेगा। शब्दार्थों की दृष्टि से एक ही मन्त्र के कई अर्थ भी हो सकते हैं। इस ऋषि को किस प्रसंग का अर्थ अभीष्ट है यह जानने के लिए छन्द ऋषि, देवता का, जो हर मन्त्र के साथ उल्लेख है उसका अवलोकन कर तदनुसार निर्धारण करना होता है।

मन्त्रों का शब्दार्थ ही सब कुछ नहीं है। यह भी दृष्टव्य है कि ध्वनि प्रवाह के आधार पर इसकी प्रतिक्रिया क्या होगी ? प्रतिफल क्या उत्पन्न होगा ?

शब्द का प्रतिफल वार्तापाल में भी भला-बुरा होता है। मीठे और कड़ुए वचन अपने-अपने भले-बुरे परिणाम उत्पन्न करते हैं। इसी प्रकार उच्चारण की प्रतिक्रियाएँ शारीरिक, मानसिक, नैतिक, बौद्धिक क्षेत्रों में अपने-अपने ढंग की अलग-अलग होती हैं। इन्हीं को मन्त्र की परिणति कहते हैं। अमुक विधि में अमुक मन्त्र का प्रयोग करने से अमुक रोग निवारण—अमुक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनोविकारों का शमन होता है। अमुक प्रकार के विचार उठते और अमुक प्रकार की भावनाएँ जन्म लेती हैं। मनुष्य की कई प्रकार की प्रवृत्तियाँ हैं। जो उसे उत्साहित, निरुत्साहित, आनन्दित, उदासीन बनाती हैं। उन मनोवृत्तियों का प्रभाव जीवन के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार का होता है यही मन्त्र परिणति है। मन्त्र बल से धन का पिटारा तो किसी को नहीं मिलता पर ऐसी प्रवृत्तियाँ अवश्य उठती हैं जिनके कारण मनुष्य लाभान्वित होता या घाटा उठाता है।

अदृश्य जगत के अदृश्य प्राणी परोक्ष में कई बार अमुक व्यक्ति से सम्बन्ध बनाकर अच्छी या बुरी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करते हैं। इसमें कुछ अनिष्ट कर हो तो उसका शमन—समाधान मन्त्र बल से हो सकता है। ग्रह-नक्षत्रों का अमुक समय में अमुक व्यक्ति पर श्रेष्ठ या निकृष्ट प्रभाव पड़ना बताया जाता है । इसी को दुर्भाग्य या सौभाग्य कहते हैं। इन परिस्थितियों को मन्त्र बल से अनुकूल किया जा सकना एवं प्रतिकूलताओं का निवारण भलीभाँति सम्भव है।

मनुष्यों की भाँति यह प्रभाव पशुओं पर भी पड़ता है। कई बार मनुष्यों की तरह पशुओं पर भी परिस्थितियों के अनुकूल-प्रतिकूल प्रभाव होते देखे जाते हैं। वे बीमार हो जाते हैं सामर्थ्य गँवा बैठते हैं। बीमारी—महामारी के शिकार होते हैं। ऐसे अनिष्टों को मन्त्र बल से निवृत्त करना सम्भव है, ऐसा तान्त्रिकों का मत है।

संगीत का प्रभाव वैज्ञानिक अनुसन्धानों से मनुष्यों, पशुओं पर ही नहीं वृक्ष-वनस्पतियों पर भी पड़ते देखा गया है। फसल को अधिक उपजाऊ बनाने, फल-फूल अधिक आने का प्रभाव कितने ही परीक्षणों में देखा गया है। संगीत के ही प्रभाव से गाय अधिक दूध देती देखी गयी है। मुर्गियाँ अधिक संख्या में और बड़े आकार के अपेक्षाकृत जल्दी अण्डे देती हैं। मछलियों को टेपरिकार्डर पर संगीत सुनाये गये तो उनने अधिक अण्डे, बच्चे दिये। मानसिक रोगियों को संगीत सुनाया गया तो वे व्यथा से मुक्त हो गये थे। बुद्धि वर्धक प्रयोगों से संगीत का उपचार सही सफल सिद्ध हुआ है। जो कार्य साधारण संगीत के फलस्वरूप हो सकता है वह मन्त्र प्रयोगों के विशेष संगीत से और भी अच्छी तरह हो सकता है। जो लाभ पशुओं, पक्षियों एवं वनस्पतियों को मिल सकता है वह मनुष्यों को न मिले, ऐसी कोई बात नहीं है।

संगीत का ही एक उत्कृष्ट स्वरूप मन्त्र है। वैज्ञानिक खोजों ने सामान्य संगीत की कितनी ही उपलब्धियाँ हस्तगत की हैं और उसे अनेक क्षेत्रों में प्रभावशाली पाया है। संगीत मात्र मनोरंजन ही नहीं है, वरन् उसमें प्रभावोत्पादक शक्ति भी है।

प्रसिद्ध संगीतकारों में कितने ऐसे हुए हैं, जिनके गायन वादन से बुझे हुए दीपक जल जाते थे। मेघ-मल्हार के गायन से बादल बरसने लगते थे। साँप का विष उतारने में भूतोन्माद आदि ठीक करने में विशेष प्रकार के संगीत का तुरन्त विशेष फल तो आज भी देखा जा सकता है। फिर मन्त्रों की शक्ति तो और भी विशेष होनी चाहिए। उसमें तो और भी उच्चस्तरीय संगीत का समावेश है। ऐसी दशा में उसका तो और भी विशेष प्रतिफल होना चाहिए।

मन्त्र शब्द शक्ति का विकसित रूप है । संगीत की ध्वनि सुनकर मृग मोहित हो जाते हैं। सपेरे साँपों को वशीभूत कर लेते हैं। मन्त्र शक्ति के अनेकानेक चमत्कारी प्रतिफलों के सम्बन्ध में किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

मन्त्र विज्ञान के अनेक आधार हैं, जिनमें सर्वप्रथम है उसका शब्द गुंथन और उच्चारण का सम्यक् विधान। कविता की तरह मन्त्र का निर्माण भाव प्रधान या अर्थ प्रधान नहीं है । वरन् उस अधार पर है कि अक्षरों को किस क्रम से सँजोया जाय ताकि उनके क्रमबद्ध उच्चारण से वह ध्वनि प्रवाह निसृत हो जो अभीष्ट प्रयोजन के लिए आवश्यक माना गया है। सितार में तारों का गुंथन एक क्रम विशेष को ध्यान में रखते हुए नियत, निर्धारित रहता है। किसी किस्म का तार कहीं भी फिट कर देने से उनसे ध्वनियाँ एक जैसी निकलेंगी और विभिन्न प्रकार की राग-रागनियाँ निकालना कठिन पड़ जायेगा। इसी प्रकार शब्दों के ध्वनि प्रवाह को—उनकी पारस्परिक संगति को ध्यान में रखते हुए तत्व दृष्टाओं ने मन्त्रों का गुंथन किया है।

उनके उच्चारण का भी विशेष विधान है। सितार के तारों का क्रम ही पर्याप्त नहीं, बजाने वाले की उँगलियाँ किस प्रकार थिरकती हैं यह भी महत्वपूर्ण है। रागों में अन्दर इस अँगुलि संचालन पर भी निर्भर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। मात्र तारों का गुंथन ही सब कुछ नहीं है। मन्त्र का शब्द संधान और साधक की विधिवत् उच्चारण प्रक्रिया इन दोनों का समन्वय अन्तरिक्ष में एक विचित्र प्रकार की स्वर लहरी प्रवाहित करते हैं उनके प्रभाव से सूक्षम जगत में वे परिस्थितियाँ बनने लगती हैं जो मन्त्रानुष्ठान के फलस्वरूप उपलब्ध होती मानी गई हैं।

गायत्री मन्त्र को ही लें। उसके अर्थ में भगवान से सबुद्धि की याचना भर है। इस प्रयोजन के लिए अन्य ढेरों मन्त्र वेदों में भरे पड़े हैं। अन्य भाषाओं में भी ऐसी कविताएँ मौजूद हैं। यदि अर्थ मात्र की ही बात रही होती तो उन कविताओं में और गायत्री में कोई अन्तर न होता । कविता की दृष्टि से गायत्री मन्त्र में छन्द दोष बताया जाता है। आठ-आठ अक्षर के तीन चरण होने पर शुद्ध गायत्री छन्द बनता है। पर प्रख्यात गायत्री मन्त्र में २३ अक्षर हैं। चौबीसवाँ तो 'ण्यं' को 'ण्यम्' उच्चारण करके खींच-तान के सहारे बनता है। रचयिताओं को इस त्रुटि का ध्यान रहा होगा फिर भी उन्होंने शब्द गुंथन से उत्पन्न होने वाले ध्वनि प्रवाह को ही महत्त्व दिया और उस रूप में रचा जैसा कि अब है।

ध्वनि अपने आप में एक शक्ति है। कभी उससे जानकारी प्राप्त करने भर का प्रयोजन पूरा होता था, पर अब वैज्ञानिक विकास ने उसे बहत ही उच्चस्तरीय एक शक्ति के रूप में सिद्ध कर दिया है। कानों से सुनी जाने वाली ध्वनियाँ हमें विभिन्न प्रकार प्रभावित करती हैं। निन्दा सुनकर क्रोध आता है और प्रशंसा की वार्त्ता हमें प्रसन्नता प्रदान करती है। अपमानजनक, चिन्ता उत्पन्न करने वाले, शोक-सम्वाद शब्द हमें विक्षुब्ध कर देते हैं। किन्तु सफलता, सुखद सम्भावना के समाचार सुनते ही मन में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है और चेहरे पर मुसकान छा जाती है। मन ही नहीं, शरीर भी उस शब्द श्रवण की प्रतिक्रियास्वरूप अपनी गतिविधियों में हेर-फेर कर लेता है। द्रौपदी के शब्दों की कटुता ने महाभारत ख़ड़ा कर दिया था। नम्र और भावनापूर्ण शब्दों से मनुष्य तो क्या भगवान तक पिघल जाते हैं।

मन्त्रोच्चार से उत्पन्न ध्वनि प्रवाह साधक की समग्र चेतना को प्रभावित करता है और उसके कम्पन्न अन्तरिक्ष में विखरते हुए परिस्थितियों को अनुकूल बनाते हैं। कंठ, हाथ, जिह्वा , तालू आदि मुख्य अवयवों को विभिन्न शब्दों के उच्चारण में भिन्न-भिन्न प्रकार की हलचलें करनी पड़ती हैं। इनका प्रभाव स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर के कतिपय अवयवों पर पड़ता है। उपत्यिकाओं, नाड़ी गुच्छकों, विद्युत भँवरों पर इन मन्त्र ध्वनियों का प्रभाव पड़ता है और सूक्ष्म शरीर चक्र एवं इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना जैसे विद्युत प्रवाह प्रभावित होते हैं। साधक के स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण शरीरों में होने वाले इस मन्त्र ध्वनि प्रवाह से कई प्रकार के उपयोगी परिवर्तन होते हैं। व्यक्तित्व में नये प्रकार के सुधार उत्पन्न होते हैं। कोई भी शक्ति सबसे पहले अपने उत्पादन स्थल को प्रभावित करती है फिर उसकी क्षमता अगले क्षेत्र पर अपना अधिकार जमाती हुई आगे बढ़ती है। आग जहाँ जलेगी पहले वही स्थान गरम होगा बाद में उस गर्मी का विस्तार अगले क्षेत्र में फैलता चला जायगा। मन्त्र साधना से सबसे अधिक प्रभावित साधक का व्यक्तित्व ही होता है।

मात्र शब्द प्रवाह ही नहीं, मन्त्र साधना में अन्य विविध उपचारों का विधान रहता है। प्रयुक्त पदार्थों एवं हलचलों का, विधि-विधानों का, कर्मकाण्डों के क्रिया-कलापों का अपना महत्व है। उनकी सम्मिलित प्रतिक्रिया का मन्त्र साधना में अद्भुत योगदान रहता है। इस संयुक्त प्रभाव से मन्त्र साधना अपना चमत्कारी प्रतिफल प्रस्तुत कर सकने में समर्थ हाती है। साधक की सत्ता को प्रभावित करती हुई यह ध्वनि धारा-रेडियो तरंगों की तरह अन्तरिक्ष में दौड़ना आरम्भ करती है। शब्दवेधी बाण की तरह उसका प्रवाह सूक्ष्म जगत के उन संस्थानों से टकराता है जिन्हें प्रभावित करना साधना का उद्देश्य रखा गया था।

ध्वनि का वह क्षेत्र तो बहुत स्वल्प है जो हमारे कानों की पकड़ में आता है और जिसे हम सुन सकते हैं। जिन ध्वनियों के कम्पन्न प्रति सैकिण्ड २० से लेकर २० हजार तक होते हैं, उन्हें ही मनुष्य के कान आसानी से सुन सकते हैं। किन्तु ध्यान कम्पन्न तो इससे बहुत कम बहुत अधिक सामर्थ्य के भी होते हैं। उन्हें अनसुनी ध्वनियाँ कहा जाता है । इससे उनकी सामर्थ्य में कमी नहीं होती वरन् सच तो यह है कि कर्णातीत—अनसुनी ध्वनियों और भी अधिक सामर्थ्यवान होती हैं। 'सुपरसोनिक रेडियो मीटर' की सहायता से अन्तरिक्ष में संव्याप्त अगणित ध्वनि प्रवाहों को सुना व जाना जा सकता है। मन्त्र साधना में इन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रवणातीत ध्वनियों का उत्पादन अतिरिक्त रूप से होता है और वे अपने क्षेत्र में असाधारण प्रभाव डालती हैं।

विज्ञान ने श्रवणातीत ध्वनियों को एक अतिप्रभावोत्पादक शक्ति माना है और उनसे अनेक प्रकार के महत्त्वपूर्ण काम लेने की व्यवस्था बनाई है। इन दिनों वस्तुओं की सही मोटाई, गहराई नापने में—धातुओं के गुण, दोष परखने में इनका प्रयोग होता है। कार्बन ब्लैक का उत्पादन, वस्त्रों की धुलाई, रासायनिक सम्मिश्रण वस्तुओं की कुटाई, पिसाई, गीली वस्तुओं को सुखाना, धातुओं की ढलाई, प्लास्टिक धागों का निर्माण जैसे अनेकों उद्योग ध्वनि तरंगों की सामर्थ्य का उपयोग करके चल रहे हैं। अयोवा स्टेट कॉलेज, अल्ट्रासोनिक कारपोरेशन, बी. एफ. गुडरिक कम्पनी आदि कितने ही व्यापार संस्थानों ने ऐसे यन्त्र बनाये हैं जिनमें श्रवणातीत ध्वनियों की सामर्थ्य का उपयोग होता है और उससे महत्त्वपूर्ण लाभ कमाये जाते हैं।

रेडियो तरंगें, माइक्रो लहरें, टेलीविजन और राडार तरंगें, एक्स किरणें, गामा किरणें, लेसर किरणें, मृत्यु किरणें, इन्फ्रारेड तरंगें, अल्ट्रा वायलेट तरंगें आदि कितनी ही शक्ति धाराएँ इस निखिल ब्रह्माण्ड में निरन्तर प्रवाहित रहती हैं। ध्वनि तरंगों में अल्ट्रासोनिक और सुपरसोनिक तो औद्योगिक प्रयोजनों में भली प्रकार काम में आने लगी हैं। इन प्रवाहों में से अन्य असंख्यों को निकट भविष्य में ही मानवोपयोगी बना लिया जायेगा। हानिकारक कीटाणुओं को मारने, दूध से मक्खन निकालने, धोने, रगड़ने, पीसने—कोहरा हटा देने जैसे सामान्य कार्यों में उनका प्रयोग जिस सफलतापूर्वक इन दिनों हो रहा है, उसे देखते हुए वैज्ञानिक उनका उपयोग अन्य उपयोगी कार्यों में करने की विशालकाय योजना बना रहे हैं। पौधों को खाद, पानी देने के तरह ही अब मधुर ध्वनि प्रवाह से भी उनकी अभिवृद्धि का उद्देश्य पूरा हो रहा है। यूगोस्लाविया के किसानों ने कृषि कार्य में इन ध्वनियों का उत्साहवर्धक उपयोग किया है और अच्छा लाभ उठाया है। हालैण्ड के पशुपालक दूध दुहते समय विशेष प्रकार की ध्वनि करते हैं और अधिक दूध पाते हैं। पशुओं की श्रम शक्ति, बलिष्ठता एवं प्रजनन शक्ति को भी इन ध्वनियों के सहारे बढ़ाने में भारी सफलता मिली। अमेरिकी कृषक जार्ज स्मिथ को मक्का की फसल संगीत प्रवाह के आधार पर अत्यधिक बढ़ा लेने में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है।

ध्वनियों को आकाश से पकड़कर उन्हें ऊर्जा के रूप में परिणित करने की तैयारियाँ जोरों से हो रही हैं। उन्हें ताप, प्रकाश, चुम्बक एवं बिजली के रूप में परिणित किया जा सकेगा और इस आधार पर ईंधन का एक सस्ता और सुविस्तृत स्रोत हाथ में आ जायगा। कान के माध्यम से मस्तिष्क में ध्वनियाँ पहुँचती हैं और हमें शब्द श्रवण का लाभ मिलता है। जिनके कानों की झिल्ली खराब हो गई हैं, उन्हें बहरे लोगों की दृष्टि से ध्वनि तरंगों को मस्तिष्क तक पहुँचाने और सुनने का लाभ देने के लिए चल रहे प्रयोग अब सफल होने के निकट पहुँचते जा रहे हैं। इसी प्रकार नाक, कान, आँख और मुँह के छिद्रों का मस्तिष्क से सीधा सम्बन्ध होने के कारण यह माना जा रहा है कि एक में गड़बड़ी होने पर दूसरे के द्वारा मस्तिष्क को आवश्यक जानकारी मिलने का मार्ग मिल जायगा। इस प्रकार गूँगे, बहरे, अन्धे व्यक्ति भी अपनी आवश्यकता अन्य छिद्रों के सहारे पूरा कर लिया करेंगे। राडार जैसे यन्त्र अभी भी बहुमूल्य जानकारियाँ ध्वनि प्रवाह को पकड़कर ही संग्रह करते हैं। भविष्य में यह क्षेत्र और भी व्यापक होने जा रहा है।

मधुर, संयत और सुसंस्कृत वाणी को वशीकरण मन्त्र बताया गया है। उसके आधार पर पराये अपने हो जाते हैं। दूसरों का स्नेह, सम्मान एवं सहयोग अर्जित करना सम्भव होता है। प्रगति के असंख्य द्वार खुलते हैं। वाणी के परिष्कृत प्रभाव का लौकिक जीवन की प्रगति एवं प्रसन्नता में कितना अधिक योगदान होता है, इस पर जितना अधिक विचार किया जाय उतनी ही अधिक उसकी गरिमा स्पष्ट होती जाती है। स्कूली शिक्षा तो अध्यापकों और छात्रों के वाणी-विनिमय आधार पर चलती ही है। ब्रह्म-विद्या का आधार भी वही है। सत्संग, प्रवचन, कथा, कीर्तन पाठ, स्रोत से लेकर जप साधन तक वाणी के माध्यम से ही सम्भव होते हैं। लौकिक क्षेत्र में दूसरों को प्रभावित करके उन्हें उँचे उठाने, आगे बढ़ाने के प्रयोजन पूरे होते हैं। औरों का सद्भाव, सहयोग अर्जित करके व्यक्ति स्वयं भी लाभान्वित होता है। आत्मिक क्षेत्र में मन्त्र विद्या के आधार पर अनेक उच्चस्तरीय विभूतियाँ प्राप्त होती हैं और आत्म-कल्याण के लक्ष्य तक पहुँच सकना सम्भव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता है। परिष्कृत वाणी के समान मनुष्य के पास और कोई उत्कृष्ट शक्ति नहीं है। मन्त्र विद्या का जो कुछ भी चमत्कार कहा, सुना और देखा जाता है; उसे उस 'वाक्' का ही प्रतिफल कह सकते हैं जिसका परिशोधन, सत्य, मौन व्रत आदि माध्यमों से किया जाता है। उसकी अद्‌भूत शक्ति जड़ जगत को हिला सकने और सचेतन जगत में व्यापक भाव प्रवाह उत्पन्न कर सकने में समर्थ होती है। इसलिए 'वाक्' साधना को आत्म-विद्या का प्रधान आधार माना गया है। इसके लिए मन, वचन और कर्म से ऐसी उत्कृष्टता का समन्वय करना पड़ता है कि वाणी को 'दग्ध' करने वाला कोई कारण शेष न रह जाय। इतना करने के उपरान्त ही जपा हुआ—बोला हुआ—कोई भी मन्त्र असंदिग्ध रूप से सिद्ध होता है। यदि वाणी दूषित, कलुषित, दग्ध स्थिति में पड़ी रहे तो उसके द्वारा जप किये हुए मन्त्र भी जल जायेंगे और बहुत संख्या में, बहुत समय तक किये गये जप, स्तवन, पाठ आदि करते रहने पर भी अभीष्ट फल न मिल सकेगा। परिष्कृत वाणी 'वाक्' को अध्यात्म का प्राण कह सकते हैं। उसे साधक की कामधेनु और तपस्वी का ब्रह्मास्त्र कहा जाय तो इसमें तनिक भी अत्युक्ति नहीं है । इसी परिमार्जित वाणी को 'सरस्वती' भी कहा गया है। देवी सरस्वती के अनुग्रह से जो वरदान प्राप्त हो सकते हैं परिष्कृत, वाक् शक्ति भी वे सारे चमत्कार उत्पन्न कर सकती हैं।

ब्रह्म देवता के चार मुख हैं। उन्होंने उन चारों से चार वेदों का सृजन, प्रवचन किया। यह चतुर्धा प्रकटीकरण वस्तुतः वैखरी, मध्यमा, परा और पश्यन्ती इन चार वाणियों के ऊर्ध्वगामी उभार का अलंकारिक वर्णन है। यह कार्य ब्रह्म देवता ने किया सो उसे आत्म-देवता भी सम्पन्न कर सकता है। पुराणों की कथा है कि विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमल नाल पर ब्रह्मा जी कई बार उतरे और ऊपर चढ़े। मन्त्र साधना में यही होता है। उच्चारित होने के उपरान्त स्थूल शब्द अन्तःकरण के मर्मस्थल की गहराई में उतरता है और उस शक्ति स्रोत की ऊर्जा से उत्पन्न होकर ऊपर आता है। जब वह ऊपर आता है, तो वैखरी में पश्यन्ती का वैसा ही प्रभाव होता है जैसा कि बिजली के सम्पर्क से धातु के तार में। वह मन्त्रवत् शब्द समस्त सृष्टि में हलचल उत्पन्न करता है। सूक्ष्म जगत को स्पन्दित करता है और व्यक्ति को सामान्य न रहने देकर उसे दैवीय शक्ति से सम्पन्न बना देता है।

मन्त्र शब्द की व्युत्पत्ति कई प्रकार से होती है। निरुक्त में **"मन्त्रा मनात्'**—मन से संचारित होने से संचरित होने वाली प्रक्रिया को मन्त्र कहा है। शतपथ ब्राह्मण में **"वाग्वै मन्त्रः"**—परिष्कृत वाणी से उच्चारित शब्द शृंखला को मन्त्र बताया गया है। तन्त्र से **"मन्त्रि गुप्त भाषणे"**—रहस्यमय गुप्त संभाषण को मन्त्र कहा गया है। तीनों अर्थों का समन्वय करने से एक बात पूरी होती है। जिसमें मानसिक एकाग्रता एवं निष्ठा का समुचित समावेश हो। परिष्कृत व्यक्तित्व की परिमार्जित वाणी से जिसकी साधना की जाय। जिसकी रहस्यमय क्षमता पर गहन श्रद्धा हो तथा जिसकी अनावश्यक विज्ञापन न करके गोपनीय रखा जाय वे प्रयोग मन्त्राराधन की आवश्यकता पूरी करते हैं।

मन्त्र शक्ति में चार तथ्य काम करते हैं—(१) ध्वनि, (२) संयम, (३) उपकरण, (४) विश्वास । शब्द संरचना और उच्चारण की शुद्धता युक्त ध्वनि ही सार्थक होती है। साधक अपनी शक्तियों को शारीरिक मानसिक असंयम से बचाकर उपासना कृत्य में नियोजित रखे। माला, आसन, मात्र प्रतीक, उपचार, उपकरण आदि में प्रयुक्त हुए पदार्थों में शुद्धता का ध्यान रखा जाय। मन्त्र-साधना के प्रति श्रद्धा-विश्वास की कमी न हो। यह-सभी बातें जहाँ ठीक प्रकार प्रयुक्त हुई होंगी वहाँ आराधना का प्रतिफल निश्चित रूप से दृष्टिगोचर हो रहा होगा। उपासना के आधारों का स्तर गिर जाने से ही उसकी सफलता संदिग्ध होती चली जाती है।

तन्त्र विज्ञान में हृदय को शिव और जिह्वा को शक्ति कहा गया है। इन दोनों को 'प्राण' और 'रयि' नाम भी दिये गये हैं। भौतिकी के अनुसार इन्हें धन और ऋण विद्युत प्रवाह कह सकते हैं। जिह्वा से मन्त्र उच्चारण होता है यह हलचल हुई। इसके भीतर जितनी शक्ति होगी उतना ही बढ़ा-चढ़ा प्रभाव उत्पन्न होगा। यह प्रभाव हृदय के बिजलीघर में उत्पन्न होता है। यहाँ हृदय से तात्पर्य उस भावना स्तर से है जो कृत्रिम रूप से नहीं व्यक्तित्व की मूल सत्ता के आधार पर विनिर्मित होता है। हृदय को अग्नि और जिह्वा को सोम कहा गया है। दोनों के समन्वय से चमत्कारी आत्मशक्ति उत्पन्न होती है। भावना और कर्म की उत्कृष्टता से मन्त्र साधना प्राणवान बनती है इसे रहस्य को यदि समझा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और अपनाया जा सके तो किसी को भी इस क्षेत्र में निराश न रहना पड़े।

मन्त्र शक्ति को फलित करने के लिए उसका उच्चारण एवं विधि-विधान ही पर्याप्त नहीं। साधक के व्यक्ति की प्रखरता का सवावेश होना भी आवश्यक है। महर्षि जैमिना ने पूर्व मीमांसा में मन्त्रशक्ति के विकास की चर्चा करते हुए उसके चार आधार बताये हैं—(१) प्रामाण्य—अर्थात् मनगढ़न्त नहीं विधि के पीछे सुनिश्चित विधि-विधान होना, (२) फलप्रद—अर्थात् जिसका उपयुक्त प्रतिफल देखा जा सके, (३) बहुलीकरण—अर्थात् जो व्यापक क्षेत्र को प्रभावित करे, (४) आयातयामता—अर्थात् साधक के श्रेष्ठ व्यक्तित्व की क्षमता। इन सारे तत्वों का समावेश होने में प्रक्रिया से दैवीशक्ति का समावेश होता है और उसका चमत्कारी प्रतिफल देखा जाता है।

विश्वामित्र, वशिष्ठ, परशुराम आदि ने गायत्री शक्ति की आराधना करके दिव्य प्रतिफल प्राप्त किये थे। किन्तु सामान्य व्यक्ति वैसा नहीं कर पाते। इसमें मन्त्र की श्रेष्ठता एवं उपासना की गरिमा का दोष नहीं। साधक को ओछा व्यक्तित्व अभीष्ट परिणाम उत्पन्न करने योग्य न होने से ही निराशा हाथ लगती है। खिलौना बन्दूक में रखकर बढ़िया कारतूस चलाने पर भी लक्ष्य बेध में सफलता न मिलेगी। उपयुक्त परिणाम उत्पन्न करने में कारतूस ही, सब कुछ नहीं होता, बढ़िया बन्दूक की भी आवश्यकता पड़ती है। दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ का पौरोहित्य करने के लिए अखण्ड व्रतधारी शृंगी ऋषि का सहयोग लेना पड़ा था। महाभारत की कथा है कि अश्वत्थामा और अर्जुन ने मन्त्र चालित 'सन्धान अस्त्र' छोड़े। उनकी भयंकरता को देखकर व्यास जी बीच में आ खड़े हुए और दोनों से अपने अस्त्र वापस लेने को कहा। अर्जुन ने ब्रह्मचारी होने के कारण अपना अस्त्र वापस कर लिया और अश्वत्थामा असंयमी होने के कारण वैसा कर सकने में असफल रहा।

शतपथ ब्राह्मण में यरुच्देव और नृमेध ऋषियों के विवाद का एक कथानक आता है। दोनों अपने को सफल मान्त्रिक सिद्ध करने के लिए अपनी शक्ति का प्रमाण देते हैं। यरुच्देव ने मन्त्रोच्चारण करके गीली लकड़ी में अग्नि प्रकट कर दी जब कि नृमेध के कंठ से धुआँ भर निकलकर रह गया। इस पर यरुच्देव ने प्रतिपक्षी से कहा—आप मन्त्रोच्चारण भर जानते हैं, मैंने उसकी आत्मा का साक्षात्कार किया है।

पर ब्रह्म साक्षी, दृष्टा, निर्विकार है। उसे सूत्र संचालक भर कह सकते हैं। संसार में चेतनात्मक हलचलों के उतार-चढ़ाव जिस ब्रह्म सत्ता द्वारा संभव होते हैं उसे आत्म सत्ता का परिष्कृत रूप ही कह सकते हैं। ईश्वर इच्छा से सब कुछ होता है। इस उक्ति का जहाँ भी वर्णन हो रहा हो समझना चाहिए यह परिष्कृत आत्म सत्ता की इच्छाशक्ति का ही उल्लेख है। मन्त्र तप से साधित परावाक् अपनी विशुद्धता एवं प्रखरता से ब्रह्म इच्छा बन जाती है। उसके स्पंदन विश्व के परमाणुओं और जीवाणुओं को प्रभावित करते हैं। फलतः लोक प्रवाह की दिशा बदल जाती है। देवदूत, अवतारी, महामानव यही करते हैं। इनके कर्तृत्व ईश्वर की इच्छा कहलाते हैं। उनकी इच्छा के पीछे ईश्वर का विधान काम करता है दृष्टिगोचर होता है। सिद्ध और तपस्वी भी अपने स्तर के अवतार ही होते हैं। उनकी परावाक् शक्ति मात्र उच्चारण के ही काम नहीं आती वरन् विश्व के नियन्त्रण, संचालन, अभिवर्द्धन में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।

ब्रह्माण्ड वृक्ष है—पिण्डाण्ड उसका बीज। बीज में वृक्ष की समस्त सम्भावनाएँ सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहती हैं। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड में जो कुछ है उसका सार तत्व पिण्डाण्ड में—मनुष्य में विद्यमान है। प्रश्न प्रसुप्ति को जागृति में परिणित करने का है। बीज को वृक्ष बनाने में माली का श्रम, मनोयोग एवं साधन लगता है। शुक्राणु को बालक रूप में विकसित करने के लिए माता-पिता के अनुदान लगते हैं। इसी प्रकार तुच्छ से पिण्ड की क्षमता को ब्रह्माण्ड को प्रभावित कर सकने योग्य बनाने में 'साधना' की आवश्यकता पड़ती है। इस तप-साधना में 'परावाक्' शक्ति का प्रयोग अनिवार्य रूप से होता है।

यज्ञ प्रकरण में परावाक् का ही गुणानुवाद गाया गया है। बैखरी में तो वायुशोधक अग्निहोत्र भर होता है। नित्यकर्म का विधान भर उससे सम्पन्न होता है। यज्ञाग्नि और परावाक् के संयोग से ज्योति और दीप्ति उत्पन्न होती है। ज्वाला से उसका स्तर भिन्न है। ज्योति की महिमा बताते हुए श्रुति कहती है—उससे शोक-सन्ताप छूटते हैं तथा श्री, समृद्धि, शान्ति एवं प्रगति की उपलब्धि होती है।

गीता में ब्रह्म यज्ञ का वर्णन है। ब्रह्म अग्नि में—ब्रह्म हवि देने का वर्णन है। यज्ञ का अर्थ है—परमार्थ। यज्ञाग्नि सत्प्रयोजनों में संलग्न सत्प्रवृत्ति को कहा गया है। वाक् उत्कृष्ट व्यक्तित्व का सार तत्व घृत है। दोनों के समन्वय से जो वातावरण बनता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसमें भौतिक ऋद्धियों और आत्मिक सिद्धियों के भण्डार भरे पड़े हैं। पानी तो बिना यज्ञ वाले क्षेत्र पर भी बरसते हैं, पर सुख-शान्ति बरसाने वाले पर्जन्य यज्ञ प्रक्रिया के फलस्वरूप ही बरसते हैं।

मन्त्रविनियोग के पाँच अंग हैं—(१) ऋषि, (२) छन्द, (३) देवता, (४) बीज, (५) तत्व । इन पाँच को मन्त्र शरीर का आधारस्तम्भ माना गया है। पाँच तत्वों से स्थूल काया बनी है। पाँच प्राणों से सूक्ष्म शरीर का निर्माण हुआ है। कारण शरीर में पाँच तन्मात्राएँ आधारभूत हैं। वनस्पतियों में पञ्चांग प्रयुक्त होता है। पञ्च गव्य—गो शरीर के पाँच अमृत माने गये हैं रत्नों में पाँच प्रमुख हैं। पाँच देवताओं की उपासना-आराधना प्रख्यात है। पाँच कोशों के जागरण की विद्या गायत्री मन्त्र के पाँच मुख चित्रित करते हुए समझाई गई है। मन्त्रशक्ति को जागृत करने के लिए उपरोक्त पाँच आधारों को उसके विनियोग में समाविष्ट किया गया है।

(१) ऋषि अर्थात् मार्गदर्शक गुरु। उपासना एक महत्वपूर्ण विज्ञान है। उसे एक विशेष शिल्प कह सकते हैं। इसके लिए अनुभवी एवं निष्णात मार्गदर्शक चाहिए। यह मात्र पुस्तक प्रशिक्षण से सम्भव नहीं हो सकता है। ग्रन्थों में हर रोग का निदान एवं उपचार लिखा है तो भी अनुभवी चिकित्सक की आवश्यकता बनी ही रहती है। कारण कि हर रोगी की प्रकृति एवं स्थिति में भिन्नता होती है। उसका तालमेल बिठाते हुए चिकित्सक को स्वतन्त्र बुद्धि का प्रयोग करना पड़ता है और देखना पड़ता है कि उपचार की व्यवस्था किस क्रम से बनाई जाय। नित्य के उतार-चढ़ाव देखते हुए उसे चिकित्सा में नित नये परिवर्तन करने पड़ते हैं। यही बात मन्त्राराधन के सम्बन्ध में भी है। सामर्थ्यवान गुरु—शिष्यों को सामर्थ्य का अनुदान भी देता है और स्थिति के उपयुक्त मार्गदर्शन भी करता है। अस्तु उस प्रयोजन की सफलता के लिए ऋषि स्तर का मार्गदर्शक नियुक्त करना आवश्यक माना गया है।

(२) विनियोग का दूसरा चरण है—छन्द । छन्द अर्थात् स्वर-ताल-लय। मन्त्र को किस स्वर में—किस क्रम से—किस उतार-चढ़ाव के साथ उच्चारित किया जाय। उसकी गति कितनी रहे, मन्त्र विद्या में यह एक स्वतन्त्र शास्त्र है। सितार में तार तो उतने ही रहते हैं और उँगलियाँ चलाने की बात भी हर वादन में रहती है। किन्तु बजाने वाले का कौशल तारों पर आघात करने का क्रम—परिवर्तित होने के कारण विभिन्न राग-रागिनियों का ध्वनि प्रवाह उत्पन होता है। मानसिक—वाचिक—उपांशु—उदात्त—अनुदात्त—स्वा रित—के आधार पर मन्त्र की क्षमता में भारी अन्तर पड़ता है और उसकी प्रतिक्रियाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। सामवेद में लिखित मन्त्रों की कभी एक हजार शाखाएँ थीं । अर्थात् उनमें से प्रत्येक को हजार ध्वनि लय के साथ गाने-बजाने का विधान था। यह मात्र संगीत की दृष्टि से नहीं वरन् शक्ति उत्पादन की दृष्टि से यह सृजन हुआ है। कौन व्यक्ति किस प्रयोजन के लिए किस मन्त्र की—किस लय में आराधना करे, यह विधान जान लेने से उसके प्रभावशाली परिणाम निकलते हैं।

(३) विनियोग का तीसरा चरण है—देवता। देवता का अर्थ है—सूक्ष्म जगत् से चलने वाले शक्ति प्रवाहों में से अभीष्ट परत का चयन। आकाश में एक ही समय में अनेक रेडियो स्टेशन बोलते हैं, पर हर एक की प्रसारण 'फ्रीक्वेन्सी' भिन्न होती है। ऐसा न होता तो ब्राडकास्टों के सभी शब्द मिलकर एक हो जाते और गड़बड़ खड़ी करते। अभीष्ट प्रसारण सुनने के लिए अपने रेडियो की सुई इसी स्टेशन पर लगानी पड़ती है। आकाश के वायुमण्डल में हवा की कितनी ही परतें हैं। समुद्र-जल में भी पानी की परतें और धाराएँ बहती हैं। जमीन खोदने पर भी मिट्टी की भिन्न-भिन्न परतें मिलती हैं। ठीक इस तरह सूक्ष्म जगत में भी भिन्न-भिन्न स्तर के शक्ति प्रवाह बहते हैं। इन्हें ही देवता कहते हैं। सूर्य किरणों में सात रंग होते हैं। रंगीन शीशों के माध्यम से हम जिस रंग का लाभ उठाना चाहें उसे अपने उपयोग के लिए पकड़ सकते हैं। देवाराधन प्रक्रिया का यही उद्देश्य है। मन्त्र को बल देने वाली देव शक्ति से ठीक तरह सम्पर्क किया जा सके तो उसका अभीष्ट परिणाम उपलब्ध होता है।

(४) चौथा चरण है—बीज। बीज अर्थात् उद्गम। स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों में अनेक दिव्य केन्द्र हैं। हारमोन ग्रन्थियों की विलक्षणता स्थूल शरीर में प्रत्यक्ष है । नाड़ी गुच्छक प्लेसेस—मस्तिष्कीय गन्थियाँ अपने में कितनी जादुई सम्भावनाएँ दबाये बैठी हैं, उसे शरीर विज्ञानी भली प्रकार जानते हैं। षट्चक्र, तीन ग्रन्थियाँ—१०८ उपत्यिकाएँ—सहस्रों शक्ति नाड़ियाँ—सूक्ष्म और कारण शरीर में विद्यमान हैं। उन दिव्य संस्थानों को सूक्ष्म शक्तियों के साथ सम्पर्क मिलाने का 'स्विच' कह सकते हैं। स्विच दबाने से बिजली जलने लगती है। किस मन्त्र की सफलता के लिए—किस स्विच को किस प्रकार दबाया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाय। इसके लिए अलग विधान है। तन्त्र में इसके लिए ह्रीं, श्रीं, क्लीं और बीजाक्षरों का विधान है। योग में कुछ विशेष ध्यान, नाद, आसन, प्राणायाम, मुद्रा, बंध आदि का निर्धारण है। इस क्रम व्यवस्था को अपनाने से मन्त्र को जागृत एवं शक्ति-सम्पन्न बनाया जाता है। टेलीफोन डायल के नम्बर बदल देने से अलग-अलग स्थानों से बातें होने लगती हैं। मन्त्रों के साथ बीज एवं सम्पुट बदल देने से उनकी क्षमता एवं दिशा में अन्तर पड़ता है।

(५) विनियोग का पाँचवाँ अंग है—तत्व। तत्व अर्थात् लक्ष्य। किस प्रयोजन के लिए आराधना की जा रही है इसका सकंल्प, उद्देश्य-निर्धारण ही तत्व है। एक ही वृक्ष के विभिन्न अवयवों में विभिन्न प्रकार के गुण होते हैं। एक ही पदार्थ में कई प्रकार के रासायनिक कण मिल सकते हैं। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार खाद्य पदार्थों के भी स्थूल, सूक्ष्म और कारण प्रकृति होती है। स्थूल भाग से रक्त-माँस बनता है। सूक्ष्म भाग से मन, बुद्धि का निर्माण होता है। कारण भाग से गुण, कर्म, स्वभाव, आकांक्षा एवं प्रकृति का निर्माण होता है। योगशास्त्र में यह वर्गीकरण सत, रज, तम के नाम से बताया गया है। मन्त्राराधन में प्रयुक्त उपकरणों में किस तत्व की प्रधानता है इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए उपयोगी सामग्री का निर्धारण करना पड़ता है। भिन्न मन्त्रों में—स्थान आहार, उपचार आदि का जो अन्तर रहता है उसे तत्व प्रक्रिया से सम्बन्धित माना जाना चाहिए। मुहूर्त, ऋतु, तीर्थ, सरोवर आदि के अन्तर भी प्रकृति की तत्व स्थिति के साथ साधना का ताल-मेल बिठाने की दृष्टि से किये जाते हैं।

आयुर्वेद शास्त्र में 'कल्प' उपचार करने से पूर्व—नाड़ी शोधन प्रक्रिया सम्पन्न कराई जाती है। नाड़ी शोधन के पाँच अंग हैं— (१) वमन, (२) विरेचन, (३) स्नेहन, (४) स्वेदन, (५) नस्य। इन, कृत्यों से शरीर में भरे हुए मल निकल जाते हैं और उपचार सफल होने की सम्भावना बढ़ जाती है। राजयोग के पाँच यम और पाँच नियम प्रख्यात हैं। वे ठीक बन पड़ें तो समझना चाहिए कि प्रत्याहार—धारणा—ध्यान—समाधि का पथ-प्रशस्त हो गया। तंत्रयोग के पाँच प्रकार—हठयोग के पाँच प्रयास प्रथमत: किये जाते हैं। सिख धर्म के पाँच प्रतीक प्रख्यात हैं। मन्त्राराधन में जिस आधार पर प्रखरता बढ़ती और सफलता मिलती है उन्हें विनियोग के अन्तर्गत बता दिया गया है। ऋषि, छन्द, देवता, बीज और तत्व। यदि इन पाँचों अंगों को ठीक तरह समझते हुए उनका समुचित प्रयोग करते हुए यदि मन्त्र साधन किया जाय तो उसका सत्परिणाम मिलने में फिर कोई विशेष कठिनाई शेष न रह जायगी।

देवता क्या है? उनका तेज मानव शरीर में किस प्रकार प्रवेश करता है और क्या प्रभाव उत्पन्न करता है? इसकी विवेचना करते हुए श्रुति कहती है—

"विष्णुमुखा वै देवाइछन्दोभिरिमान्लोकानन पजप्यमभ्य जपन्"

अर्थात् देवता विष्णु मुख हैं। वे मन्त्र रूप होते हैं। इन मन्त्र देवताओं ने न हटाये जा सकने वाले अवरोध हटाये हैं और न जीते जा सकने वाले वर्चस्व जीते हैं।

मन्त्र शब्द गुच्छक मन्त्रों की शास्त्रीय विधि से की गई उपासना अपने प्रतिफल उत्पन्न करती है। साथ ही एक तथ्य और भी है कि साद्विचारों को अपनी चेतना में ओत-प्रोत करके तदनुरूप व्यक्तित्व को ढाल लिया जाय तो यह भी प्रत्यक्ष जीवन क्रम में उतरने वाला मन्त्राराधन ही है। सत्प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त की गई—सद्भावना युक्त वाणी भी मन्त्र शक्ति के समान ही फलवर्ती होती है।

सन्त विनोवा ने पंढरपुर सर्वोदय सम्मेलन के एक प्रवचन में वाणी की उपासना पर प्रकाश डालते हुए कहा था—मेरा बोलना जप के लिए है। जिन विचारों को बोलता हूँ वे दृढ़ होते चले जाते हैं। ..... जो किया है, आप लोगों ने किया है। मैने तो जप किया है। भूदान का जप किया तो भूदान मिला। सम्पत्ति दान का जप किया तो सम्पत्ति दान मिला। न तो मैं यज्ञ करता हूँ, न दान करता हूँ, न तप करता हूँ, मैं तो केवल जप ही करता हूँ और मेरे सारे काम बन जाते हैं।

शतपथ ब्राह्मण की उक्ति है कि "जन समाज का मैल धोने वाला शब्द प्रवाह ही सारस्वत मन्त्र है। "जब कल्याण की दृष्टि से किया गया संभाषण एवं प्रदान इस प्रतिपादन के आधार पर मन्त्र साधना के समतुल्य ही प्रभावोत्पादक होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शब्द ब्रह्म की सार्थक साधना

शब्द ब्रह्म की साधना वाक् शक्ति से

शब्द को ब्रह्म कहा गया है। 'शब्द ब्रह्म'—'नाद ब्रह्म' शब्दों का उपयोग शास्त्र में अनेक स्थानों पर आया है। यह उक्ति अलंकार नहीं—वरन् यथार्थ है। हाँ, यदि ध्वनि मात्र को यह उपमा दी जायगी तो उसे उपहासास्पद समझा जायेगा। जिह्वा स्वर यन्त्र है। वाद्य यन्त्र पर उल्टी-सीधी उँगुली से आघात लगाये जायँ तो आवाज भर होगी। क्रमबद्ध, तालबद्ध, राग-रागिनी निकालनी हो तो उसके लिए सधे हाथ एवं प्रशिक्षित मस्तिष्क का भी योगदान आवश्यक है। जिह्वा से बोले गये मन्त्र वाद्य-यन्त्र पर जैसे-तैसे उँगुली चलाने की तरह हैं; उतने भर से दीपक राग या मेघ मल्हार जैसे प्रभावोत्पादक परिणामों की अपेक्षा नहीं की जा सकती। जिह्वा से उच्चरित शब्द सामान्यतया जानकारियों के आदान-प्रदान का उद्देश्य पूरा करते हैं। एक व्यक्ति शब्द माध्यम से अपनी अनिभूत एवं जानकारी दूसरे तक पहुँचा सकता है। इसमें भी आवश्यक नहीं कि जिससे जो कहा गया है वह उसे उसी रूप में स्वीकार कर ले। कारण कि आजकल वचन, छल का दौर-दौरा है। लोग एक-दूसरे को ठगने की दृष्टि से कपट वचन बोलने की कला में प्रवीण हो चले हैं। अस्तु सुनने वाले को फूँक-फूँक कर कदम रखना होता है और देखना पड़ता है कि कथन में छल, प्रपंच की दुरभि सन्धियाँ तो घुसी हुई नहीं हैं। कितना कथन संदिग्ध हो सकता है, इसकी खोज करने में सुनने वाला लगता है। जितना अंश गले उतरता है, उतने पर ध्यान देकर शेष को उपेक्षा के गर्त में फेंक देता है। जब सामान्य व्यवहार तक में वाणी की यह दुर्गति हो रही हो। उच्चारण को अविश्वस्त और अप्रमाणिक मानने की परम्परा चल रही हो तो उससे व्यावहारिक आदान-प्रदान तक की आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं। फिर आध्यात्मिक प्रयोजन तो पूरे हो ही कैसे सकेंगे।

इस कठिनाई को ध्यान में रखते हुए ही मन्त्राराधन में 'वाणी' मात्र से सम्भव हो सकने वाले क्रिया-काण्डों को महत्त्व नहीं दिया गया है। जीभ से तो लोग 'आये दिन कथा, कीर्तन, भजन, पाठ, जप आदि के माध्यम से तरह-तरह के चित्र-विचित्र वचन बोलते रहते हैं। यदि उतने भर से धर्मचर्या के उद्देश्य पूरे हो जाया करते तो फिर सरलता की अति ही कही जाती। छोटे-छोटे लाभ प्राप्त करने के लिए मनुष्य को कठोर श्रम करने, साधन जुटाने एवं मनोयोग लगाने की आवश्यकता पड़ती है। तब कहीं आधी-अधूरी सफलता का योग बनता है। अध्यात्म क्षेत्र जितना उच्चस्तरीय है उतनी ही उसकी विभूतियाँ भी बहुमूल्य हैं। निश्चित रूप से उसके लिए प्रयास भी अपेक्षाकृत अधिक कष्टसाध्य ही होते हैं। यदि उतने बड़े लाभ मात्र जिह्वा से अमुक शब्दावली दुहरा देने भर से प्राप्त हो जाया करते तो उन्हें पाने से कोई भी वंचित न रहता; पर इतना सस्तापन है कहाँ?

महत्त्व की दृष्टि से हर वस्तु का मूल्य निर्धारित है। अध्यात्म उपलब्धियों में शब्द शक्ति की महत्ता बताई और महिमा गाई गई है। मन्त्राराधन के फलस्वरूप मिलने वाले लाभों का वर्णन विस्तारपूर्वक शास्त्रों में भरा पड़ा है; पर उसे शब्द चमत्कार भर नहीं मान लिया जाना चाहिए। यदि उच्चारण ही सब कुछ रहा होता, तो साधन ग्रन्थ पढ़ने वाले से प्रेस कर्मचारी और पुस्तक विक्रेता पहले ही लाभान्वित हो लेते। पाठक को उनका बचा-खुचा ही शायद कुछ हाथ लगता। शब्दोच्चारण में जप के अति सरल कर्मकाण्ड के लिए थोड़ा-सा समय लगा देने में किसी को क्या कुछ असुविधा होगी? उतना तो कोई बालक-नासमझ या वृद्ध अशक्त भी कर सकता है; फिर समर्थ व्यक्ति तो उसे उत्साहपूर्वक करते और भरपूर लाभ उठाते। ऐसा कहाँ होता है? लाभों का महात्म्य विस्तार पढ़ते हुए-भी कुछ करने के लिए कहाँ किसी का उत्साह होता है?

शब्द ब्रह्म-शब्दों में जो गहन रहस्य छिपा है वह यह है कि अध्यात्म प्रयोजनों में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली को उच्चस्तरीय होना चाहिए। वह इतनी परिष्कृत हो कि उसकी पवित्रता, प्रामाणिकता एवं क्षमता को ईश्वर के समतुल्य ठहराया जा सके। इसके लिए कई लोग स्वर विन्यास की बात सोचते हैं और अनुमान लगाते हैं कि मन्त्रों में उच्चारण का जो स्वर क्रम बताया गया है, उसे जान लेने से काम बन जायगा। यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मान्यता भी तथ्य की दिशा में एक छोटा कदम भर ही है। इस चिन्तन में इतनी-सी ही जानकारी है कि हमारे क्रिया-कृत्यों को अनगढ़ नहीं—सुव्यवस्थित होना चाहिए। भले ही वह उच्चारण ही क्यों न हो? वाणी को शिष्टाचार-सन्तुलन-सभ्यता का अंग माना जाता है। जो ऐसे ही अण्ड-वण्ड बोलते रहते हैं वे असभ्य कहलाते और तिरस्कार के पात्र बनते हैं। ऐसी दशा में मन्त्र प्रयोजनों में यदि उनके साथ जुड़े हुए व्यवस्था नियमों का पालन किये जाने का निर्देश है तो उसका पालन होना ही चाहिए। इसमें सतर्कता एवं जागरूकता अपनाये जाने की बात दृष्टिगोचर होती है। यह दिशा उत्साहवर्धक है। इससे प्रमाद पर अंकुश लगने और व्यवस्था अपनाने में उत्साह उत्पन्न होने का बोध होता है, यह उचित भी है और आशाजनक भी।

मन्त्रों का उच्चारण शुद्ध हो। सही हो। गति का ध्यान रहे। स्वर, लय, क्रम, विराम आदि को जाना माना जाय। यह अनगढ़पन से मन्त्रोचार की सभ्यता में प्रवेश करने का कदम है। पूजा, उपचार के अन्य कर्मकाण्डों में भी यह सतर्कता बरती जानी चाहिए। आलसी, प्रमादियों को तरह आधी-अधूरी चिह्न पूजा करने की बेगार भुगत लेने से तो अश्रद्धा ही टपकती है। अन्य मनस्कता एवं उपेक्षापूर्वक किये गये नित्य कर्म तक बेतुके, बेढंगे होते हैं, इस स्वभाव से तो आजीविका उपार्जन जैसे काम तक असफल जैसे बने रहते हैं, फिर अध्यात्म मांग की उपलब्धियों में तो उसका परिणाम अवरोध उत्पन्न करने के अतिरिक्त और कुछ हो ही क्या सकता है?

उच्चारण से लेकर विधि-विधान तक में सुव्यवस्था एवं सतर्कता बरती जानी चाहिए किन्तु इतने भर से ही यह नहीं मान लेना चाहिए कि हमारे उच्चारण 'मन्त्र' बन गये और उन्हें शब्द ब्रह्म या नाद ब्रह्म की संज्ञा मिल गई। इसके लिए वाणी को 'वाक्' के रूप में परिष्कृत करना होगा। यह स्वर साधना नहीं, वरन् जीवन साधना के क्षेत्र में होने वाला प्रयोग है। इसके लिए समूचे व्यक्तित्व को—मन, वचन, कर्म का; गुण; कर्म; स्वभाव को, चिन्तन एवं चरित्र को; उच्चस्तरीय बनाने के भागीरथ प्रयत्न में जुटना होता है। मन्त्रोच्चारण की विधि-व्यवस्था कुछ घण्टों में सीखी जा सकती है। उसका परिपूर्ण अभ्यास कुछ दिनों में हो सकता है। किन्तु व्यक्तित्व की मूल सत्ता का स्तर ऊँचा उठाना काफी कठिन है। उसके लिए प्रबल पुरुषार्थ की आवश्यकता पड़ती है। दूसरों को सुधारने में जितनी कठिनाई पड़ती है, अपने को सुधारना उससे भी अधिक कष्टसाध्य और श्रमसाध्य है।

जिह्वा उच्चारण तन्त्र है। अन्य वाद्य यन्त्रों की तरह उसका सही होना तो प्राथमिक आवश्यकता है। मन्त्र की शब्दावली शुद्ध हो। भाषा की अशुद्धियाँ न हों। प्रवाह एवं स्वर ठीक हो। इसके अतिरिक्त जिह्वा साधना की दृष्टि से सामान्य व्यवहार में उसके रसना प्रयोजन एवं वार्ताक्रम में साधकों जैसी रीति-नीति का समावेश किया जाय। अनीति की, हराम की कमाई न खाई जाय। परिश्रम और न्याय के सहारे जितना कुछ कमाया जा सके उतने में ही मितव्ययतापूर्वक गुजारा किया जाय। चटोरेपन की बुरी आदत से लड़ा जाय और सात्विक सुपाच्य पदार्थों को औषधि भाव से उतनी ही मात्रा में लिया जाय जितनी कि पेट की आवश्यकता एवं क्षमता है। इस दृष्टिकोण को अपनाने वाले के लिए मद्य, माँस जैसे अभक्ष्यों को ग्रहण करने की तो बात ही क्या—उत्तेजक मसाले और नशीले पदार्थों—मिष्ठान्न, पकवानों तक से परहेज करने की जरूरत पड़ती है। अन्न का मन पर प्रभाव पड़ने की बात स्पष्ट है। सात्विक आहार से मनःक्षेत्र में सात्विकता बढ़ती है और उससे अनेकों दोष-दुर्गुण जो अभक्ष्य खाते रहने पर छूट नहीं सकते थे, अनायास ही घटते-मिटते चले जाते हैं। अस्वाद व्रत पालन करने वाले के लिए अन्य इन्द्रियों पर काबू रख सकना सरल हो जाता है।

आहार की सात्विकता का वाणी की पवित्रता पर गहरा असर पड़ता है। अभक्ष्य से जिह्वा की सूक्ष्म शक्ति नष्ट होती है और उसके द्वारा उच्चरित शब्द आध्यात्मिक प्रयोजन पूरे कर सकने की क्षमता से रहित ही बने रहते हैं। वाणी का दूसरा कार्य है वार्तालाप। हमारे दैनिक जीवन में वार्तालाप का स्तर उच्चस्तरीय एव आदर्श परम्पाराओं से युक्त होना चाहिए। कटुता, घृणा, तिरस्कार, छल, असत्य का पुट उसमें न रहे। दूसरों को भ्रम में डालने, कुमार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाले, हिम्मत तोड़ने वाले शब्द न बोलें। यह नियंत्रण मात्र सतर्कता वरतने से नहीं हो सकता है। उपचार में भी बार-बार भूल होती रहती है। वस्तुतः हमारे भीतर सद्भावों का इतना गहरा पुट हो कि वाणी पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता ही न पड़े। जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भीतर होता है वही बाहर निकलता है। यदि हमारे अन्तःकरण में सद्भावनाएँ भरी होंगी—दृष्टिकोण आदर्शवादी होगा तो स्वभावतः वार्त्तालाप में उच्चस्तरीय श्रेष्ठता भरी होगी। सद्भाव सम्पन्न मनुष्यों का सामान्य वार्त्तालाप भी शास्त्र वचन के स्तर का होता है, उनके मुख से निकलने वाले वाक्य 'आप्त वाक्य' कहलाने योग्य होते हैं। इस प्रकार का वार्त्ता—अभ्यास जिह्वा को दैवी प्रयोजनों के उपयुक्त बनाता चला जाता है। उसके द्वारा जिन मन्त्रों की आराधना की जाती है वे सफल ही होते चले जाते हैं।

मन्त्र को धीमे जपा जाता है। शब्दावली अस्पष्ट एवं धीमी रहती है। बहुत बार तो वाचिक से भी अधिक महत्त्व मानसिक और उपांशु का होता है। उनमें तो वाणी नाम मात्र को ही होती है। किन्तु इन मौन जपों में भी मध्यमा, परा, पश्यन्ती वाणियाँ काम करती रहती हैं। यह तीनों वाणियाँ मनुष्य के दृष्टिकोण, चरित्र एवं आकांक्षा से सम्बन्धित रहती हैं । यदि व्यक्ति ओछा, घटिया और दुष्ट है। उसकी आकांक्षाएँ निकृष्ट, दृष्टिकोण विकृत एवं चरित्र भ्रष्ट है तो तीनों सूक्ष्म वाणियाँ निम्नस्तरीय ही बनी रहेंगी और उनका समन्वय रहने में बैखरी वाणी तक प्रभावहीन, संदिग्ध एवं अप्रामाणिक बनी रहेगी उसका सांसारिक उपयोग भी कोई महत्त्वपूर्ण परिणाम उत्पन्न न कर सकेगा फिर उसके द्वारा की गई मन्त्र साधना तो सफल हो ही कैसे सकती है?

मन्त्र जप की सरल विधि के साथ कठिन साधना यह है कि उसके लिए जिह्वा समेत समस्त उपकरणों का परिशोधन करना पड़ता है। जो तथ्य को समझते हैं वे साधनाओं के विधि-विधान तक सीमित न रह कर जीवन-प्रक्रिया को उच्चस्तरीय बनाने की सुविस्तृत रूपरेखा तैयार करते हैं। उस प्रयास में जिसे जितनी सफलता मिलेगी उसके जप, तप उसी अनुपात में सफल होते देखे जा सकेंगे। शब्द ब्रह्म का साक्षात्कार इसी मार्ग पर चलने से सम्भव होता है। समूची आत्मसत्ता को परिष्कृत बनाने से वाणी की परिणति 'वाक्' शक्ति में होती है। वाक् शक्ति का प्रभाव असीम है। उसकी सहायता से असम्भव को भी सम्भव किया जा सकता है।

शतपथ ब्राह्मण में शब्द ब्रह्म का विवेचन करते हुए कहा गया है—'परावाक् उसका मर्मस्थल है' परा वाक् का रहस्योद्घाटन करते हुए बताया है—वह हृदयस्पर्शी है, प्रसुप्त को जगाती है। स्वर्ग, मुक्ति और सिद्धि का आधार वही है। देवताओं के अनुग्रह, वरदान का केन्द्र उसी में है। इस विश्व में जो कुछ श्रेष्ठता है वह वाक् की प्रतिध्वनि एवं प्रतिक्रिया ही समझी जानी चाहिए।

वैखरी वाणी जब साधना सम्पन्न होकर 'वाक्' बनती है तो उसका विस्तार श्रवण क्षेत्र तक सीमित न रहकर तीनों लोकों की परिधि तक व्यापक होता है। वाणी में ध्वनि है, ध्वनि में अर्थ। किन्तु 'वाक्' शक्ति रूपा है। उसकी क्षमता का उपयोग करने पर वह सब जीता जा सकता है जो जीतने योग्य है।

कौत्स मुनि ने मन्त्र अक्षरों के अर्थ की उपेक्षा की है और कहा है कि उनकी क्षमता शब्द गुन्थन के आधार पर समझी जानी चाहिए। उसमें 'वाक्' तत्व ही प्रधान रूप से काम करता है। इस 'परावाक्' का स्तवन करते हुए श्रुति कहती है।

देवी वाचमजनयन्त देवास्तां;
विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मंद्रेष्षमूर्ग, दुहाना,
धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुवैतु॥

परावाक् देवी है।विश्व रूपिणी है, देवताओं की जननी है। देवता मन्त्रात्मक ही हैं। यही विज्ञान है। इस कामधेनु वाक् की शक्ति से हम जीवित हैं। उसी के कारण हम बोलते और जानते हैं।

यह एक तथ्य है कि मुख में से निकलने वाली वाणी अपनी अन्तरंग मनःस्थिति का बाह्य जगत को परिचय देती है और उसे प्रभावित करती है। सामान्य जीवन में उसकी कितनी उपयोगिता है और उस शक्ति के कुण्ठित होने पर कैसी असहाय स्थिति होती है इसे किसी गूँगे और मुखर व्यक्ति के तुलनात्मक अन्तर को देखकर सहज ही जाना जा सकता है।

मधुर संयत और सुसंस्कृत वाणी को वशीकरण मन्त्र बताया है। उसके आधार पर पराये अपने हो जाते हैं, दूसरों का स्नेह, सम्मान और सहयोग अर्जित करना संभव होता है। प्रगति के असंख्य द्वार खुलते हैं। वाणी के परिष्कृत प्रभाव का लौकिक जीवन की प्रगति एवं प्रसन्नता में कितना अधिक योगदान होता है इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर जितना अधिक विचार किया जाय उतनी ही अधिक गरिमा स्पष्ट होती जाती है।

आत्मिक शक्ति संचय की साधना में से वाणी को प्रधान माध्यम ही मानना चाहिए। स्कूली अध्यापकों और छात्रों तक की शिक्षा प्रक्रिया वाणी के आधार पर ही चलती है। विद्या का—ब्रह्म विद्या का आधार भी वही है। सत्संग, प्रवचन, कथा, कीर्तन, स्तवन, जप आदि के लिए वाणी ही माध्यम है।

वाणी का दुरुपयोग भी हो सकता है और सदुपयोग भी। कटु वचन, अपमान, तिरस्कार, व्यंग, निन्दा, चुगली जैसा व्यवहार किया जाय तो शत्रुता बढ़ती है और बैर, विरोध असहयोग एवं संघर्ष का वातारण उत्पन्न होता है। उसकी प्रतिक्रिया अपने लिए विग्रह, उद्वेग एवं अशांति का कारण बनती है।

सदुपयोग से—मधुर—स्नेहसिक्त, हितकर वचन बोलने से सत्य बोलने—सद्भावना व्यक्त करने से—दूसरों को भी प्रगति के पथ पर बढ़ने में—सुख-शांति का आधार प्राप्त करने में—सहायता मिलती है और अपने को भी उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप सम्मान, सहयोग, स्नेह, सद्भाव प्राप्त करने का अवसर मिलता है। यह सुखद स्थिति जीवन में उल्लास एवं आनन्द का ही आविर्भाव करती है।

इससे आगे बढ़कर आत्म-कल्याण—श्रेय साधना के लिए मंत्र विद्या का समस्त आधार वाणी की पृष्ठभूमि पर ही आधारित है। परिष्कृत वाणी के समान मनुष्य के पास और कोई उत्कृष्ट शक्ति नहीं है। 'मन्त्रविद्या' का जो कुछ भी चमत्कार कहा, सुना और देखा जाता है उसका आधार वाणी ही है। सत्य, मौन, अभक्ष्य, अवरोध, जप आदि की साधना पद्धतियाँ सामान्य समझी जाने वाली वाणी को असामान्य 'वाक्' में परिणत करती है। उसकी उद्भूत शक्ति जड़ जगत को हिला सकने और चेतन जगत में व्यापक भाव प्रवाह उत्पन्न कर सकने में समर्थ होती है। इसलिए वाक् साधना को आत्मविद्या का प्रधान आधार माना गया है।

मन्त्र की जो कुछ महिमा है, उसका आधार वाणी को 'वाक्' के रूप में परिणत कर देना है। इसके लिए मन, वचन और कर्म में ऐसी उत्कृष्टता का समन्वय करना पड़ता है कि वाणी को दग्ध करने वाला कोई कारण शेष न रह जाय। इतना करने के उपरान्त उसके द्वारा जपा हुआ मन्त्र सहज ही सिद्ध होता है और उच्चारण किया हुआ शब्द असंदिग्ध रूप से सफल होता है। यदि वाणी दूषित, कलुषित, दग्ध स्थिति में पड़ी रहे तो उसके द्वारा जप किये हुए मन्त्र भी जल जायेंगे और बहुँत संख्या में, बहुत समय तक जप, रतवन, पाठ आदि करते रहने पर भी अभीष्ट फल न मिलेगा। परिष्कृत चिह्वा में वह शक्ति रहती है जिसके बल पर किसी भी भाषा का—कोई भी मन्त्र प्रचंड और प्रभावशाली हो उठता है। उसके द्वारा उच्चारित शब्द मनुष्यों के अन्तस्तल को असीम अन्तरिक्ष को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। ऐसी परिष्कृत वाणी—वाक्—को अध्यात्म का प्राण कह सकते हैं। उसे साधक की कामधेनु एवं तपस्वी का ब्रह्मास्त्र कहने में तनिक भी अत्युक्ति नहीं है। इसी को परिमार्जित जिह्व को 'सरस्बती' कहते हैं। साधना क्षेत्र में प्रवेश करने वाले व्यक्ति को उस मन्त्रशक्ति की—दीक्षा की—महत्ता समझनी चाहिए। मन्त्र की माता उसे ही मानना चाहिए, सिद्धियों का उद्गय स्थल, भगवान को द्रवित एवं प्रभावित कर सकने का माध्यम उसे ही मानना चाहिए। वाक् साधना को अध्यात्म क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए प्रथम चरण मानना चाहिए और समझना चाहिए कि जो इस प्रयोजन को पूरा कर सकेगा, वही मन्त्रविद्या का—प्रार्थना उपासना का लाभ उठा सकेगा। वाणी के अशुद्ध रहते उपासना की सफलता संदिग्ध ही रहेगी; इस तथ्य को ध्यान में रखा जा सके तो जप, अनुष्ठान आदि की प्रक्रिया के साथ-साथ वाणी के परिष्कार की बात भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण समझनी होगी और उसको भी साधना का एक अनिवार्य अंग मानकर चलना होगा। मन्त्र शक्ति की महत्ता का शास्त्रों ने इस प्रकार वर्णन किया है—

तीक्ष्णोष्वो ब्राह्मणा हेतिमन्तो,
यामस्यन्ति शख्यां न सा मृषा।
अनुहाय तपसा मन्युना चोत,
दूरादेव भिनदन्त्येनम्॥

— अथर्व ५।१८।९

जीभ जिसकी प्रत्यंचा है, उच्चारण किया हुआ शब्द जिसका वाण है। संयम जिसका वाणाग्र है, तप से जिसे तीक्ष्ण किया गया है, आत्मबल जिसका धनुष है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसा ब्राह्मण अपने मन्त्र बल से समस्त देवद्रोही तत्वों को वेध डालता है।

जिह्वा ज्या भवति कुल्मलं वाङ्,
नाड़ीका दन्तास्तपसाभिदिग्धाः।
तेभिर्ब्रह्मा विध्यति देवपीयून्,
हृद्वलै र्धनुभि र्देवजूतैः॥

— अथर्व ०५।१८।८

आत्मबल रूपी धनुष, तप रूपी तीक्ष्ण वाण, लेकर तप और मन्यु के सहारे जब यह तपस्वी ब्राह्मण मन्त्रशक्ति का प्रहार करते हैं तो अनात्म तत्वों को दूर से ही वेध कर रख देते हैं।

अस्मानं चिद् ये विभिदुर्वचोभिः।

— ऋग्वेद ४।१६।६

उन शक्ति सम्पन्न उच्चारणों ने पत्थरों को भी फोड़ डाला।

यत् त आत्मनि तन्वां घोरमस्ति .....
सर्वं तदवाचापहन्मों वयम।

—अथर्व १।१८।३

तेरे शरीर में जो अनिष्ट हैं उन्हें मन्त्रपूत वाणी से हम नष्ट करेंगे।

तामेतां वाचं यथा धेनुं वत्सनोपसृज्य प्रत्तां।
दुहीतैवमेव देवा वाचं सर्वान् कामान् अदुहन्॥

— जैमिनीयोपनिषद ब्राह्मण

जिस प्रकार बछड़ा गाय का दूध पीता है उसी प्रकार देव पुरुष दिव्य वाणी का आश्रय लेकर समस्त कामनाएँ पूर्ण करते हैं।

मन्त्र शक्ति की महत्ता 'वाक्' शक्ति पर निर्भर है। इस वाक् को स्वर भी कहते हैं—साम भी और सरस्वती भी। यदि इसे शुद्ध एवं सिद्ध कर लिया गया तो फिर मन्त्र के चमत्कार का प्रकट होना सुनिश्चित है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए मन्त्र से भी बढ़कर 'वाक्' की प्रशंसा की गई है। कारण स्पष्ट है। परिष्कृत वाक् ही मन्त्रों की सार्थकता बनाती है। भ्रष्ट वाणी से किये हुए मन्त्रानुष्ठानों को सफलता कहाँ मिलती है?

अस्थि वा ऋक।

— शतपथ ७।५।२।२५

मन्त्र तो हड्डियाँ मात्र है।

प्राणो वै स्वरः।

—ताण्ड्य ब्राह्मण २४।११।९

प्राण तो स्वर है।

एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुष्ठु प्रयुक्तः स्वर्गे लोके च काम धुग भवति। —श्रुति

एक ही शब्द की तात्विक अनुभूति हो जाने से समस्त मनोरथों की पूर्ति हो जाती है।

वाक्य सिद्धिर्द्विधा प्रोक्ता शापानुग्रह कारिका।

—शक्ति पञ्चकम्

वाक् सिद्धि दो प्रकार की होती है, एक शाप देने वाली दूसरी वरदान देने वाली।

स यो वाचं ब्रह्मेत्वपास्ते यावद्वाचो गतं तत्रास्य यथा कामचारो भवति। —छान्दोग्य ७।२।२

जो वाणी को ब्रह्म समझकर उपासना करता है उसकी वाणी की गति इच्छित क्षेत्र तक हो जाती है।

वाक् को ब्रह्मस्वरूप माना गया है। वही ब्रह्म की ब्रह्मविद्या की अविछिन्न शक्ति है। देवता उसी के वश में रहते हैं। उच्चारण और स्वर में यही अन्तर है कि उच्चारण कंठ, होठ, जीभ, तालु, दाँतों की संचालन प्रक्रिया से निकलता है और वह विचारों का आदान-प्रदान कर सकने भर में समर्थ होता है। पर स्वर अन्तःकरण से निकलता है उसमें व्यक्तित्व, दृष्टिकोण और भाव समुच्चय भी ओत-प्रोत रहता है। इसलिए मन्त्र का स्वर कहा गया है। वेद पाठ में उदात्त अनुदात्त, स्वरित की उच्चारण प्रक्रिया का शुद्ध होना ही इसी ओर संकेत करता है। साधना क्षेत्र में स्वर का अर्थ वाक्शक्ति के माध्यम से किये जाने वाले सशक्त जप अनुष्ठान से ही है।

यामाहुर्वाचं कवयो विराजम्।

—अथर्व ७।२।५

समस्त संसार का निर्माण करने वाली यह विराट् वाक् ही है।

यावद् ब्रह्म विष्ठित तावती वाक्।

—ऋग् १०।११४।८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

३.६ शब्द ब्रह्म—नाद ब्रह्म

जहाँ तक ब्रह्म विस्तृत है, उतनी ही वाक् विस्तृत है।

विराट् वाक्।

—अथर्व ९।१५।२४

यह वाक् विराट् है।

यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्।

- ऋग्वेद १०।१४।८

जितना बड़ा ब्रह्म है, उतनी ही विशाल वाक् है।

तद्यत् किञ्चार्वाचीनं ब्रह्मण स्तद् वागेव सर्वम्।

—जै० उ० १।११।१।३

ब्रह्म के पश्चात् वाक् ही उत्पन्न हुई।

वाग् वै विश्वकर्मषिः वाचा हीदं सर्वं कृतम्।

—यजु १३।५८

वाक् ही विश्वकर्मा ऋषि है। उसी ने यह संसार बनाया।

प्रजापतिर्वा इदमेक आरां तस्य वागेव स्वमासीत् वाग् द्वितीया स ऐक्षतेमामेव वाचं विसृजा। इयं वा इदं सर्वं भिवन्तयेष्यतीति।

—तां० ब्रा० २०।१४

प्रजापति अकेले थे। उनके पास 'वाक्' ही एक सम्पत्ति थी। उनने विचार किया मैं इस वाक् को ही प्रखर करूँ। यही सब कुछ बन जायगी।

तिस्रो वाचो प्रवद ज्योति रभा।

—ऋग्० ७।१०१।१

उस वाक् का ज्योति रूप में दर्शन होता है।

स्वरूप ज्योति रेवान्तः परावागत्तपायिनी।

—महाभारत

यह वाक् ज्योति रूप में परिलक्षित होती है।

आगमोक्तं विवेकाच्च द्विधा ज्ञानं तथोच्यते॥

शब्दब्रह्माऽऽगमयं पर ब्रह्म विवेकजम्।

—अग्निपुराण

एक शब्द ब्रह्म है दूसरा परब्रह्म। शास्त्र और प्रवचन से शब्दब्रह्म और विवेक मनन चिंतन से परब्रह्म की प्राप्ति होती है।

शब्द ब्रह्माणि निष्णांतः पर ब्रह्माधिगच्छति।

—शतपथ

शब्दब्रह्म को ठीक तरह जानने वाला ब्रह्म तत्व को प्राप्त करता है।

वागेव विश्वा भुवनानि जज्ञे वाच इत्सर्वममृतं यच्च मर्त्यम्।

—शतपथ

वाक् यह सृष्टि का मूल तत्व है। यह मनुष्य लोक का अमृत है। शब्दों में जो शक्तियाँ भरी हैं वे अद्भुत हैं।

वाक् शक्ति की आराधना यदि ठीक प्रकार की जा सके तो मन्त्र शक्ति के-प्रार्थना के-वरदान आशीर्वाद के-जड़ चेतन जगत को प्रभावित करने के-सिद्धि साधना के समस्त प्रयोजन उसी तरह पूर्ण हो सकते हैं जैसे कि शास्त्रों में लिखे हैं। वरिष्ठ साधकों की तरह आज भी साधना के वैसे ही प्रतिफल मिल सकते हैं। शर्त केवल एक ही है—वाक् साधना का महत्त्व समझा जाय और उस पर समुचित रूप से ध्यान दिया जाय।

वाणी से उपासना करना पर्याप्त नहीं, उसे 'वाक्' बनाकर ही इस योग्य बनाया जा सकता है कि अध्यात्म पथ पर बढ़ते हुए साधक को कुछ कहने लायक सफलता मिल सके। आयुर्वेद में सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, अभ्रक, पारद आदि की भस्म बनाकर उनके सेवन का विधान है। विषों का भी बड़ा लाभ बताया गया है पर वह सम्भव तभी होता है जब उन विषों को विधान पूर्वक शुद्ध किया जाय। वाणी एक मूल पदार्थ है। शोधित होने पर वह अमृत बन जाती है और विकृत होने पर विष का काम करती है। शोधित वाणी को ही 'वाक्' कहा गया है।

यम-नियमों द्वारा अपने गुण, कर्म, स्वभाव को परिष्कृत करना साधना मार्ग का प्रथम प्रयास है। मात्र वाणी का संयम करने से भी उसे वाक् रूप में परिणित नहीं किया जा सकता। मौन, सत्य, मधुर वचन, सत्प्रयोजन, सन्तुलित एवं स्वल्प सम्भाषण जिह्वा साधना के आवश्यक बाह्योपचार हैं। अन्तः उपचार अन्तःकरण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में उत्कृष्टता और क्रिया-कलाप में आदर्शवादिता का समन्वय करना ही है। प्याज, मूली, शराब, हींग, आदि खाने पर मुख से वैसी ही गन्ध आती है। अन्तःकरण में असन्तुलन भरा हो तो जिह्वा की रोक-बाँध में चूक होती ही रहेगी। वस्तुस्थिति उभरकर जिह्वा के माध्यम से प्रकट होती ही रहेगी। अस्तु वाणी साधना को मात्र शब्द साधना नहीं समझना चाहिए वरन् अन्तःकरण की शुद्धि से उसको 'अन्योन्याश्रय' मानना चाहिए।

मन्त्र शक्ति असीम है। उसकी सामर्थ्य का वारापार नहीं। लोहे से बने, विद्युत सचांलित यन्त्रों का करतव हम प्रत्यक्ष देखते हैं। पर वह होता तभी है जब वे यन्त्र सही लोहे के—सही पद्धति से निर्मित हों और उनमें सही शक्ति संचार की व्यवस्था हो। बच्चों के खिलौने के रूप में रेल, मोटर, हवाई जहाज आदि बने होते हैं पर उनकी बाहरी शक्ल भर बनी होती है निर्माण पद्धति का प्रयोग जैसा चाहिए वैसा न होने से वे खिलौने मात्र रह जाते हैं। वह काम नहीं कर सकते जो असली यन्त्र करते हैं । यन्त्र की तरह ही मन्त्र भी हैं। शब्द शृंलापूर्ण तब होता है जब साधक का व्यक्तित्व अध्यात्म प्रक्रिया पद्धति को अपना लेता है। तभी वाणी का प्रत्यावर्तन 'वाक्' रूप में होता है और तभी उसके द्वारा उच्चारित मन्त्र सफल, सार्थक होते हैं।

ऐसी वाक् शक्ति की शास्त्रों में पग-पग पर महिमा गायी गई है। कहा गया है—

बागक्षरं प्रथमजाऋतस्य वेदानां माताऽमृतस्य नाभिः। —तै. ब्रा. २।८।८।५

ऋत का प्रथम सृजन अविनाशी 'वाक्' है। यही वेदों की माता है। यही अमृत की नाभि है।

क्व द्वाग्वदन्त्य विचेतनानि
राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा।
चतस्रव लर्ज्ज दुदुरे पयांसि
क्व त्विदस्याः परमं जगामै॥

—सरस्वती रहस्योपनिषद्

वाक् विश्वव्यापनी है, समस्त प्राणियों में व्याप्त है। अल्प चेतनों में भी वह विद्यमान है। वह देवताओं का भी संचालन करती है। न जाने हम कब उसे जान सकेंगे।

सः वै वाचमेव प्रथमामत्यवहत् सा यदा मृत्यु-मत्यमुच्यत सोऽग्निरभवत् सोऽयमग्निः परेण मृत्युमतिक्रान्तो दीप्यते। —बृ० उ० १. ३. १२ ।

'वाक्' देवता को प्राण ने मृत्यु से पार किया। यह वाक् अग्नि बनकर अमर हो गई और वह असीम शक्तियों से ओत-प्रोत होकर ज्योतिर्मय हो गई।

मन्त्र की शक्ति का विकास जप से होता है। जितनी अधिक घिसाई-पिसाई की जाती है उतनी ही पदार्थ की शक्ति उभरती है। ढेले को तोड़ते-तोड़ते उसे अणु की स्थिति में ले जाया जाय तो वह अणु—ढेले की तुलना में अत्यधिक सामर्थ्यवान होगा। घोंटने और पीसने की प्रक्रिया बहुत समय चलते रहने पर ही आयुर्वेदिक दवायें गुणकारी होती हैं । बार-बार घिसने से गर्मी पैदा होती है। बार-बार रगड़ने से चमक उत्पन्न होती है। इस तथ्य को हर कोई जानता है। मन्त्र की शक्ति उसके क्रमबद्ध रूप से बहुत समय तक जप करने से उभरती है। अनुष्ठान एवं पुरश्चरण विज्ञान का यही रहस्य है। इसीलिए 'जप' की महिमा प्रतिपादित की जाती है।

यज्ञानां जप यज्ञोस्मि स्थावरणां हिमालयः॥

—गीता० १०।२५

यज्ञ में जप यज्ञ मैं हूँ और पर्वतों में हिमालय हूँ।

शक्तिपातानुसारेण शिष्योऽनुग्रहमर्हति।
यत्र शक्तिर्न पतति तत्र सिद्धिर्न जायते॥

"शक्तिपात न होने से सिद्धि की प्राप्ति नहीं हो सकती। शक्तिपात के अनुसार ही तो शिष्य अनुगृहीत होता है।"

मननात्सर्व भावानां त्राणात्संसार सागरात्।
मन्त्ररूपा हि तच्छक्तिर्म ननत्राण रूपिणी॥

—प्रपञ्च सार तन्त्र

मन, मनन और भावनायें तथा समस्त जगत् का त्राण करने वाली शक्ति का नाम मन्त्र है। वह मूल में एक होते हुए भी प्रयोग में अनेक हो जाती हैं।

मनन त्राण धर्माणो मन्त्राः

—महार्थ मंजरी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनन और त्राण की शक्ति से सम्पन्न शक्ति का नाम मन्त्र है।

देवस्य मन्त्र रूपस्य मन्त्र व्याप्तिय जानताम्।
कृताचंनादिक सर्वं व्यर्थ भवति शाम्भवि॥

देव मन्त्र स्वरूप भी होते हैं मन्त्रों का तत्व समझने से ही साधना सफल होती है।

मननात् प्राणनाञ्चैव मद्रू पस्याववोधनात् मन्त्र मित्युच्यते ब्रह्मन् यद्धिष्ठान तोपि वा।

—योग शिखोपनिषद् २, ७

मनन किये जाने के कारण, प्राणों का उत्थान करने के कारण, मेरे रूप का ज्ञान उत्पन्न करने के कारण, मेरा अनुष्ठान किये जाने के कारण मन्त्र बनते हैं।

जकारो जन्म विच्छेदः पकारः पाप नाशकः।
तस्याज्जप इति प्रोक्तो जन्म पाप विनाशकः॥

—अग्नि पुराण

'ज' अर्थात् जन्म-मरण से छुटकारा, 'प' अर्थात् पापों का नाश। इन दोनों प्रयोजनों को पूरा करने वाली निष्पाप और जीवन मुक्त बनाने वाली साधना को 'जप' कहते हैं।

जप के लिये प्रयुक्त की जाने वाली वाणी का स्तर ऊँचा होना चाहिए। जिह्वा से होने वाले शब्दोच्चारण को वैखरी वाणी कहते हैं। यह केवल जानकारी के आदान-प्रदान से प्रयुक्त होती है। भावों के प्रत्यावर्तन में मध्यमा वाणी काम आती है। इसे भाव सम्पन्न व्यक्ति ही बोलते हैं। जीभ और कान के माध्यम से नहीं वरन् हृदय से हृदय तक यह प्रवाह चलता है। भावनाशील व्यक्ति ही दूसरी की भावनायें उभार सकता है। यह बैखरी और मध्यमा वाणी मनुष्यों के बीच विचारों एवं भावों के बीच आदान-प्रदान का काम करती है।

इससे आगे दो वाणियाँ हैं, जिन्हें परा और पश्यन्ति कहते हैं। परा पिण्ड में और पश्यन्ति ब्रह्माण्ड क्षेत्र में काम करती है। आत्म-निर्माण का—अपने भीतर दबी हुई शक्तियों को उभारने का काम 'परा' करती है। ईश्वर से—देव शक्तियों से—समस्त विश्व से—लोकलोकान्तरों से सम्बन्ध, सम्पर्क बनाने में पश्यन्ति का प्रयोग किया जाता है। अस्तु, इन परा और पश्यन्ति वाणियों को दिव्य वाणी एवं देव वाणी कहा गया है।

स उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः श्रृण्वन्न श्रृणोत्येनाम्। उतो त्वस्मै तन्वां विसस्र जायेव पत्य उशती सुवासाः॥३२॥

—सरस्वती रहस्योपनिषद्

वाणी के चार चरण हैं—(१) परा, (२) पश्यन्ती, (३) मध्यमा (४) वैखरी। इनमें से प्रथम तीन अन्तःकरण रूपी गुफा में छिपी रहती हैं। वैखरी ही बोलने में प्रयोग की जाती है॥२३॥

वाणी की रहस्यमयी शक्ति को कुछ लोग देखते हुए भी नहीं देखते, सुनते हुए भी नहीं सुनते, वे लोग बड़े भाग्यवान हैं जिनके सामने वाणी के नग्न स्वरूप का उद्घाटन होता है॥३२॥

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदु ब्राह्मणों ये मनीषिणः।
गुहा त्रीणि निहिता नेगयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।
ऋक्० १।२२।१।१६४।४०

यह वाणी चरण वाली होती है। उसे विद्वान ब्रह्मवेत्ता ही जानते हैं। इन वाणियों में से तीन तो गुफा में ही छिपी बैठी हैं। वे अपने स्थानों से नीचे नहीं हिलतीं। चौथी वैखरी को ही मनुष्य बोलते हैं।

परायामंकुरो भूय पश्यन्त्यां द्विदलीकृता॥१८॥
मध्यमायां मुकुलिता वैखर्या विकसीकृता।
पूर्वं यथोदिता या वाग्विलोमेनास्तगा भवेत्॥१९॥

—योग कुण्डल्युपनिषद् ३।१८-१९

वाणी का उद्भव परा से होता है। पश्यन्ती में विकसित होकर उसकी दो शाखाएँ फूटती हैं। मध्यमा में वह पुष्पों से लद जाती है और वैखरी में वह फलित होती है। जिस क्रम से उसका विकास होता है उसके उलटे क्रम से वह लय भी हो जाती है।

विधानात्मक कर्मकाण्ड की उपयोगिता भी है और महत्ता भी पर उसे समग्र सर्वंग पूर्ण नहीं मानना चाहिए, उसके साथ जब भावनाओं का—वृत्तियों का—समन्वय होता है तभी उस कर्मकाण्ड से शक्ति उत्पन्न होती है।

बहिर्मुखस्य मन्त्रस्य वृत्तयो याः प्रकीर्त्तिताः।
ता एवान्तर्मुखस्यास्य शक्तयः परिकीर्त्तिता॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन्त्र जब तक बर्हिमुख कर्मकाण्ड पूरक है तब तक उसे 'वृत्ति' कहा जाता है। पर जब वह अन्तर्मुख हो जाता है, उसे शक्ति कहते हैं।

'साम' उसी प्रकार की भाव-विभोर स्वर लहरी को कहते हैं। उत्कृष्ट व्यक्तित्व और उच्च भावनाओं के समन्वय के साथ किया गया मन्त्रोच्चार स्वर है। वेद पाठ में शब्दों के उतार-चढ़ाव को भी 'स्वर' माना गया है पर वह तो भावाभिव्यक्ति की गायन कला मात्र है। वे भाव—जो हृत्तंत्री को झंकृत करते हैं—अन्तःकरण से ही उद्भूत होते हैं। अस्तु भाव संस्थान को ही साम और 'वाक्' द्वारा उच्चारित मन्त्र को ही आत्म-विज्ञान में स्वर माना गया है। इसीलिए मन्त्र की सफलता स्वर पर निर्भर बताई गई है।

वेद मात्र ग्रन्थ ही नहीं हैं। ऋचायें मात्र शब्द शृंखलायें नहीं समझी जानी चाहिए। स्वर आरोह अवरोह तक सीमित नहीं है। शब्द ब्रह्म पठन-पाठन की सीमा में अवरुद्ध नहीं है। वेद ज्ञान का मूल आधार अन्तःकरण है। आन्तरिक परिष्कार-अन्तःकरण में आत्म साक्षात्कार की विधि व्यवस्था ही वास्तविक वेद ज्ञान है। उस ज्ञान को शब्द शृखंला में बाँधने का—पुस्तकाकार निर्माण करने का यही प्रयोजन है। इस तथ्य का स्थान-स्थान पर उद्घाटन भी हुआ है।

वाग्दोहं यो वाचो दोहोऽन्नवान्नादो भवति य
ऐतान्येवं विद्वानुदगीथाक्षराण्युपास्त उद्गीथ इति।

—छान्दोग्य १ ।५

वाणी ही ऋचा है। प्राण ही साम है। ओंकार ही उद्गीथ है। ऋचा वाणी और साम प्राण की जोड़ी प्रख्यात है।

स्वरन्ति घोषं विततं ऋतायवः।

—ऋ० ५ ।५४ ।१२

इस विश्व ब्रह्माण्ड में सर्वत्र संव्याप्त दिव्य घोष को ऋत की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति स्वर युक्त करते रहते हैं।

व्यापिनीव्योम रूपः स्युरनन्ताः स्वर शक्तयः।

—गौतमीय तन्त्र ९-२६

आकाश की तरह सर्वत्र संव्याप्त स्वर की शक्तियाँ असीम, अनन्त हैं।

'सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्।'

— बृहदारण्यक. १ ।३ ।२२

ऋक के साथ स्वर का सम्मिश्रण होने से ही सामवेद की 'साम विशेषता' है।

का साम्नो गति रिति स्वर इति होवाच।

—छान्दोग्य १ ।८ ।४

साम क्या है? इस प्रश्न का उत्तर है, स्वर की गति।

तस्य हैतस्य साम्नो यः स्वं वेद। भवति हास्य स्वं तस्य वै स्वर एव स्वम्।

—वृहदारण्यक १ ।३ ।२५

साम का रूप स्वर है। जो उस स्वर साम को जानता है वह उसे प्राप्त भी कर लेता है।

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः।

—ऋ० ८ ।३३२

भगवान, अन्तःकरण में से बाहर निकलने के लिए भक्ति भरे स्वर के रूप में प्रस्फुटित होते हैं।

स्वरेण सन्धयेद् योगम्।

—ब्रह्म बिन्दूपनिषद्० ७

योग की साधना स्वर के माध्यम से करनी चाहिए।

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः।

ऋग्० ८ ।३३ ।२

उत्कर्ष के लिए प्रयत्नशील मनुष्य—भावना पूर्वक स्वर साधना करते हैं।

स्वरेण सल्लयेद् योगी।

—त्रिपुरतापिन्युपनिषद् ५ ।७

स्वरेण सन्धयेद् योगम्।

—ब्रह्मबिन्दूपनिषद् ७

अर्थात्—स्वर के माध्यम से योग साधना करनी चाहिए।

स्वरन्ति घोषं विततं ऋतायवः।

—ऋ० ५ ।५४ ।१२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र संव्याप्त ब्रह्मघोष को योगवेत्ता स्वर के रूप में परिणित करते हैं।

वाक् शक्ति को ही अग्नि भी कहा गया है। यह अग्नि सर्वत्र तेजस्विता, ऊर्जा, प्रखरता एवम् आभा उत्पन्न करती है। इसलिए वाक् अग्नि भी है—

त्वां पूर्व ऋषयो गीर्भिरायन्
त्वा मध्वरेषु पुरुहूत विश्वे।

—ऋग्वेद० १०।९८।९

पूर्व काल में ऋषि वाणी द्वारा अग्नि को प्राप्त करते रहे हैं।

वैखरी, मध्यमा, परा और पश्यन्ति वाणियों के प्रभाव के अनुरूप उनके नाम वायु, सूर्य, दिग्पाल चन्द्र नाम भी दिया गया है—

अग्निर्वाग् भूत्वा पुंख प्राविशद्वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत् आदित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽएक्षिणी प्राविशद्दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन् ..... चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्।

—ऐतरेय ब्राह्मण २।४।२

अग्नि ने वाक् बनकर मुख में प्रवेश किया। नाक में होकर वायु देवता—प्रविष्ट हुए। सूर्य ने नेत्रों में निवास किया। दिग्पाल कानों में प्रवेश कर गये। चन्द्रमा मन बनकर हृदय में समाया।

यदि हम देव, वेद मन्त्र, वाक्, जप, स्वर के तात्विक स्वरूप को समझ सके तो निस्सन्देह मन्त्र शक्ति के अद्भुत चमत्कार मूर्तिमान होकर सामने खड़े हो सकते हैं।

वाक्शक्ति : एक दैवी सम्पदा

हमारा यह शरीर पंचतत्वों से बनी काया ही नहीं, वस्तुतः देव मन्दिर है। शरीर की विलक्षण संरचना की तो बहुत चर्चा होती है, पर इन देवशक्तियों के संबंध में अधिकांश अनजान बने रहते हैं। इनका मोटा स्वरूप तो सभी जानते हैं किन्तु इनके सूक्ष्म स्वरूप, असीम संभावनाएँ एव प्रसुप्त से जागृति में बदलने पर होने वाली परिणतियों के संबंध में बहुत कम को जानकारी है। इन्हीं देवशक्तियों में से, जो काया के रोम-रोम में संव्याप्त हैं, एक नाम वाक् शक्ति है। यह देवी सरस्वती की प्रतिनिधि सत्ता है। वाक्शक्ति, शब्द शक्ति वस्तुतः एक प्रकार की ऐसी ऊर्जा है जिसे यदि सुनियोजित किया जा सके तो वह चमत्कारी परिणाम दिखाती है।

मोटे शब्दों में मुख मार्ग से निकलने वाले शब्दों को वाणी कहते हैं। विचारों का आदान-प्रदान इसी के माध्यम से होता है। एक-दूसरे के सामने अपनी अभिव्यक्तियों का प्रकटीकरण इसी माध्यम से करते हैं। ज्ञान का प्रमुख स्रोत इसी को बताया गया है। यों संकेतों के सहारे भी थोड़ा बहुत काम चल जाता है। इस प्रकार साहित्य स्वाध्याय से ज्ञान का संकलन नेत्र माध्यम से भी सम्भव है। पर प्रथम आधार वाणी ही है। उसके द्वारा लिपि-भाषा, शब्द-व्याकरण आदि का प्रथम ज्ञान वाणी से ही करना पड़ता है। साहित्य इसके उपरान्त ही काम देता है।

कहने-सुनने के पीछे प्रयोजन भी होते हैं। कई बार विनोद, व्यंग, उपहास के लिए निरर्थक भी बहुत कुछ बोला जाता है। जिह्वा का उपयोग निरन्तर करते रहने पर भी उसकी समग्र शक्ति में कोई-कोई ही परिचित होते हैं। जो परिचित होते हैं वे उसका बहुमूल्य रत्न जैसा उपयोग करते हैं। जो अपरिचित होते हैं वे इस भाण्डागार को ऐसे ही निरर्थक लुटाते गँवाते रहते हैं।

बोलना सरल है। वार्तालाप द्रुतगति से होता रहता है। उसमें कुछ लगता नहीं दीखता। पर सच तो यह है कि उस माध्यम से सामर्थ्य का बहुमूल्य श्रोत खाली होता रहता है। यों हाथ-पैर चलने में थकान आती है, पर जीभ चलने में वैसा भी कुछ लगता नहीं दीखता।

वाणी का एक प्रयोग उथल भर है, जो कंठ, होठ, तालु, दन्त के सहयोग से शब्दों की, भाषणों की झड़ी लगाता रहता है पर इसके पीछे जो कुछ है, वह जानने ही योग्य है।

वाणी के दो विभाग हैं। एक वह जिसे जिह्वा की सहायता से मनुष्य बोलता रहता है, दूसरा वह है जिसके माध्यम से देवता बोलते हैं।

श्रुति वचन है—

आपक्रायन् पौरुषेदनाद् वृणानौद्वप वचः।

एक से मनुष्य बोलते रहते हैं और अपना मन हलका करते रहते हैं। दूसरी वाणी देवताओं की है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसके माध्यम से दिव्य अनुदान लिये और दिये जाते हैं।

मनीषी जानते हैं कि वाणी के चार विभेद हैं। इनमें से तीन रहस्यमय गुफा में छिपे हैं और एक को मनुष्य वार्त्तालाप में बोलते रहे हैं जिसे 'वैखरी' वाणी कहते हैं।

वैखरी वार्त्तालाप में बोली जाती है। यह मनुष्यों की है। देवताओं की तीन वाणियाँ हैं जो रहस्यमय गुफा में छिपी रहती हैं। यह तीन हैं मध्यमा, परा और पश्यन्ति। यह बोली नहीं जाती किन्तु देवताओं द्वारा बोली और प्रकट की जाती हैं। इनमें शब्दोच्चार तो नहीं होता किन्तु शक्तियों का भाण्डागार छिपा रहता है जो उन्हें ग्रहण करते हैं वे धन्य हो जाते हैं।

इन तीन-चार वाणियों से चार वेद बने हैं। इस ब्रह्माण्ड की संचालन व्यवस्था में चार ऋषि काम करते हैं। शतपथ ब्राह्मण में उनके नाम वसु, रुद्र, आदित्य और इन्द्र कहे जाते हैं। रहस्य यही तीन वाणियों का मार्ग जानना हो तो उसकी व्याख्या चारों वेदों की ऋचाओं में और देवताओं के साथ जुड़ी हुई विभूतियों में खोजनी चाहिए। जो देव वाणी का मर्म समझता है विभूतियाँ उसके सम्मुख अपने आपको नग्न रूप में प्रकट कर देती हैं।

मध्यमा, वाणी वह है जिसमें शब्दों का उच्चारण तो नहीं होता पर संकेतों से अभिप्राय प्रकट होता है। चेहरा एक प्रकार का दर्पण माना गया है। उस पर विचारणाय दौड़ती और भावनाएँ छाई रहती हैं। उन्हें पढ़ा जा सकता है और मनःस्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। हाथों की मुद्राएँ भी कुछ सामान्य संकेत करती हैं । भावना की अभिव्यक्ति तो आँखें और होठों के माध्यम से ही प्रधानतया होती है। इस प्रकार से अभिप्राय प्रकट करने वाली मध्यमा वाणी में कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता नहीं पड़ती तो भी व्यक्ति एक दूसरे की मनः स्थिति से अवगत होते रहते हैं। विशेषतया भावनाओं और आकांक्षाओं का प्रकटीकरण तो सहज ही हो जाता है।

पराऽवाणी वह है जो विचारों के रूप में मस्तिष्क में चलती रहती है। इसका प्रत्यक्ष प्रकटीकरण तो मुखाकृति से भी नगण्य होता है, पर उसका प्रभाव दूसरों पर पड़ने में कमी नहीं आती। विचार प्रवाह एक सीमित क्षेत्र पर धूप की तरह फैला रहता है। उसका प्रभाव काम करता है। धूप और छाया के मध्य जो अन्तर पाया जाता है। वही भले-बुरे विचारों का होता है। सत्संग और कुसंग में आवश्यक नहीं कि वार्त्तालाप द्वारा ही सब कुछ कहा सुना जाय। विचारों की विद्युत तरंगें समीपवर्ती लोगों तक पहुँचती हैं और उन्हें परोक्ष रूप से अपनी प्रेरणा से अवगत एवं प्रभावित करती रहती हैं। इसमें अधिक मनस्वी, दुर्बल मन वाले को परास्त करके अपना आधिपत्य जमा लेता है। ऋषियों के आश्रमों में सिंह भी गायों के साथ पानी पिया करते थे। इससे सिद्ध हुआ कि ऋषि की प्रभाव प्रेरणा ने सिंह के स्वभाव को दबोच लिया और उसे वैसा ही व्यवहार करना पड़ा जैसा कि प्रेरणा पुंज द्वारा उसे निर्देशन दिया गया था।

परावाणी प्राण से निकलती है और समीपवर्ती सारे वातावरण में गूँजती है। गुम्बज की आवाज जिस प्रकार गूँजने लगती है उसी प्रकार एक का प्राण दूसरे प्राणों में स्पन्दन उत्पन्न करता है। ऋषियों के आश्रम में गाय सिंह एक घाट पर पानी पीते थे। जितने दायरे में यह प्राण गुंजन रहता है उतने में प्राणियों के बीच अहिंसा वृत्ति और प्रेम भाव बना रहता है। दुष्ट प्राण भी यदि जागृत कर रखा है तो दुर्व्यसनी, व्यभिचारी लोग, अपने समीपवर्ती लोगों को बिना कुछ कहे-सुने ही उस प्रकार की वृत्ति का संचार करते हैं। सन्त सज्जन भले ही वाणी से प्रवचन न करें, पर उनकी अन्तरात्मा अपनी भावनाओं, मान्यताओं, आकांक्षाओं को क्षेत्रवर्ती लोगों के अन्तःकरण तक पहुँचा देती हैं। कितने ही प्राणवान व्यक्ति मौन रहते हैं। उपदेश आदि नहीं करते पर उनके शरीर की विद्युत शक्ति दूसरों तक अपनी विद्युत तरंगों को फैला देती है। इनका स्पर्श करने मात्र से लोग प्रभाव ग्रहण करते हैं। बिना स्पर्श किये भी वातावरण में ऐसी ऊर्जा का संचार होता है यह देव वाणी है जो एक से अनेकों तक पहुँचती है। अपने समान विचार और स्वभाव वाली परतों पर यह प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है। प्रचार माध्यमों में तो कोई आदमी सीमित क्षेत्र में ही अपनी समझाने-बुझाने की समर्थ, तर्क प्रमाण के आधार पर ही प्रभाव छोड़ सकता है। पर परावाणी के माध्यम से असंख्य लोगों को बिना कुछ कहे-सुने ही सुधारा जा सकता है।

उपरोक्त वाणियों में एक से दूसरी का और दूसरी से तीसरी का अधिकाधिक प्रभाव होता है। क्योंकि उनके साथ अधिक ऊर्जा का समावेश होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धनुष की प्रत्यंचा को जितना पीछे खींचा जाता है उसी अनुपात से तीर में दूर तक जाने और गहरा घाव करने की सामर्थ्य होती है। मुख से मनुष्य ऐसे ही बेकार बकवास में अधिक शक्ति व्यय करता है। मखौलबाजी चलती रहती है। भीतर जो है उसके विपरीत भी शब्दाडम्बर प्रकट किया जाता रहता है। विशेषतया धर्म, आदर्श, कर्तव्य, दर्शन आदि के प्रवचन करने वाले लोग ऐसे होते हैं, जो दूसरों को सदुपदेश देने में अपनी प्रवीणता प्रकट करते हैं। कथन को लच्छेदार शब्दों में गूँथकर ऐसा बना देते हैं जो कानों को सरस लगे। इतने पर भी श्रवण कर्त्ताओं पर उसका कोई कारगर प्रभाव नहीं पड़ता। क्योंकि उसके पीछे आन्तरिक विश्वासों की आस्था एवं निष्ठा का पुट नहीं रहता। हाथी का चित्र सुहावना तो लगता है, पर उसमें इतनी शक्ति नहीं होती कि वजन उठाये या किसी को अपनी पीठ पर बिठाये।

आन्तरिक भावनाओं का समावेश मध्यमा में होता है। दर्शक यदि सूक्ष्मदर्शी है तो ही चेहरा पढ़ सकता है और उसके सूक्ष्म उतार-चढ़ावों को समझ सकता है। अन्यथा मन्दबुद्धि लोग भूल भी कर सकते हैं। अपनी मनोवृत्ति के अनुरूप दूसरों की भावनाओं का अर्थ लगा सकते हैं। वाणी और मुद्रा की परिधि सीमित है। कान अपनी सामर्थ्य की दूरी से शब्द सुनते और आँखों की शक्ति आकृति के ऊपर छाई हुई अभिव्यंजना को देख सकती है।

मध्यमा द्वारा निसृत होने वाली विचार तरंगें काफी दूर तक जाती हैं। यह चिन्तक के व्यक्तित्व और प्राण प्रवाह पर निर्भर है कि वह कितनी दूर तक पहुँचे और कितना प्रभाव उत्पन्न करे। इस सम्बन्ध में एक बात और भी है कि समान विचार के लोग परस्पर सरलतापूर्वक आदान-प्रदान कर लेते हैं जबकि प्रतिकूल स्तर के साथ वे टकराकर छितरा जाते हैं और अस्वीकृत, तिरष्कृत होने पर वापस लौट जाते हैं। विश्वामित्र मनस्वी थे। उनके स्वप्न दर्शन का हरिश्चन्द्र पर इतना प्रभाव पड़ा कि वह अपना राजपाट, शरीर, परिवार दान देने के लिए तैयार हो गया। किन्तु ताड़का, सुबाहु, मारीच उनकी इच्छा के विपरीत यज्ञ में विध्न ही डालते रहे। उनसे निपटने के लिए राम-लक्ष्मण को बुलाना पड़ा। कुश्ती का पहलवान अपने क्षेत्र में बाजी जीतता है, पर क्रिकेट से अनभ्यस्त होने पर हार जाता है।

चौथी वाणी पश्यन्ती है। इसमें उपरोक्त तीन वाणियों की तरह न्यूनाधिक मात्रा में भी शब्दों का प्रयोग नहीं करता पड़ता। वरन् इसे जागृत करने के लिए मौन रहने का अभ्यास करना पड़ता है ताकि इस क्षमता को पूरी तरह संग्रहीत करके रखा जा सके। मौन में शक्ति की बचत सबसे अधिक होती है। मनुष्य की प्राण शक्ति निरन्तर वार्त्तालाप करने में बहुत अधिक खर्च हो जाती है। ऐसी दशा में उसके दूरगामी परिणाम उत्पन्न करने जैसी क्षमता शेष नहीं रहती। वाचाल व्यक्ति दूसरों को उच्च प्रयोजनों के लिए प्रभावित नहीं कर सकता।

पश्यन्ती वाणी का भण्डार भरने के लिए साधक को न केवल अधिक समय मौन रहना पड़ता है, वरन् उसे अपने शारीरिक, मानसिक दोष-दुर्गुणों का निराकरण करते हुए सर्वतोमुखी पवित्रता अर्जित करनी पड़ती है।

पश्यन्ती वाणी यदि सामान्य क्षमता की ही हो तो अपने संकल्प बल से समीपवर्ती वातावरण में सद्विचारों का संचार कर सकती है। गिरों को उठा सकती है और उठों को बढ़ा सकती है। उसे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उसका कथन संकल्पमय हो जाता है। अस्तु, अनेको कों श्रेय पथ पर घसीट ले जाने की उसकी क्षमता काम करने लगती है। अरविन्द, रमण जैसे आत्मबल के धनी लोगों ने अपने समय का वातावरण बदल देने में असाधारण स्तर की सफलता पाई थी। गाँधी और बुद्ध प्रभावशाली वक्ताओं में नहीं गिने जाते थे फिर भी उनकी सामान्य वाणी के सामान्य परामर्शों ने अनेकों कठिन मार्ग पर चलने के लिए कितने ही सामान्यजनों को दुस्साहस कर गुजरने के लिए सहमत कर लिया।

पश्यन्ति वाणी आत्मा से निस्रत होती है और आत्माओं को अपने ढाँचे में ढालती चली जाती है। असुरों ने किसी जमाने में पश्यन्ति वाणी के प्रभाव से समूचे लंका जैसे प्रदेश के सभी निवासियों को असुर स्वभाव में ढाल दिया था। इसके लिए कोई विद्यालय उन्हें नहीं बनाना पड़ा था। पश्यन्ति वाणी से सम्पन्न तपस्वी समय को बदलने में असाधारण सफलता प्राप्त करते हैं। अरविन्द, महर्षि रमण जैसे योगियों ने सत्याग्रह आन्दोलन के समय उस स्तर की अनेकों उच्चस्तरीय आत्माएँ विनिर्मित कर दी थीं। रामराज्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की स्थापना के समय ऋषियों का असाधारण योगदान रहा था। लंकादहन में राम-रावण युद्ध की भूमिका काम दे गई थी, किन्तु जब समूची प्रजा का धर्मात्मा बनाने का प्रसंग आया तो उस प्रयोजन के लिए ऋषियों ने पश्यन्ति वाणी के विस्तार का महाअनुष्ठान सम्पन्न किया था। अश्वमेध यज्ञ जैसे प्रयोजनों से वह कार्य सम्पन्न हुआ।

पश्यन्ती वाणी अत्यन्त ओजमय होती है। वह सीमित क्षेत्र में अवरुद्ध नहीं रहती। वरन् उसका प्रभाव दूरगामी और अत्यन्त प्रभावी होता है। व्यापक जनमानस का प्रवाह परिवर्तन करने में वैखरी वाणी काम नहीं आती। वक्ता प्रचारक बहुत कुछ कहते रहते हैं, किन्तु उनके कथन का प्रभाव सीमित ही होता है। किन्तु पश्यन्ती वाणी बिना एक शब्द कहे ही अनेकों को अनुगमन करने के लिए प्रेरित करने में सफल होती देखी गई है।

पश्यन्ती वाणी को उभारने में मौन के अतिरिक्ति यह भी आवश्यक है कि चरित्र और लक्ष्य ऊँचा रहे। आहार और दिनचर्या में उत्कृष्टता का स्तर गिरने न पाये।

पश्यन्ती का उद्‌गम अन्तःकरण है, जिसमें से प्रभावशाली प्रवाह उद्‌भूत करने के लिए यह आवश्यक है कि स्थूल शरीर के क्रिया-कलाप, सूक्ष्म शरीर के चिन्तन और कारण शरीर के सद्‌भाव उच्चकोटि के रहें। इन सब की संयुक्त उत्कृष्टता ही पश्यन्ती वाणी का निर्माण करती है। वह इतनी प्रचण्ड हो सकती है कि अनाचार से लोहा ले सके और सत्प्रवृत्तियाँ दूरगामी क्षेत्र में सफल बनाने की भूमिका निभा सकें।

शेष तीन वाणियाँ, मन, प्राण और आत्मा से निस्रत होती हैं। उन्हीं गुफाओं में वे छिपी रहती हैं। इसलिए उन्हें सशक्त बनाने के लिए उनके स्थानों को योगाभ्यास एवं तपश्चर्या के माध्यम से प्रखर बनाना पड़ता है। ऐसे साधकों को वैखरी वाणी स्तर विशेष रूप से संयम करना पड़ता है। अन्यथा इस मार्ग में शक्तियों का क्षरण होने लगने से शेष तीन देव वाणियों का संशोधन और अभिवर्धन जैसा चाहिए वैसा नहीं हो पाता।

शाप और वरदान से सम्बन्धित अनेकों विभूतियाँ जब चमत्कारी प्रतिफल प्रस्तुत कर रही हों तो समझना चाहिए कि यह परा और पश्यन्ति की साधना का सत्परिणाम है। यह वाणियाँ, मनुष्य का चिन्तन, चरित्र और व्यवहार शुद्ध होने से ही निखरती हैं। व्यक्तित्व जितना मजा हुआ होगा, साधना द्वारा कषाय-कल्मषों का जितना अधिक निराकरण हो चुका होगा उतनी ही यह वाणियाँ तेजस्वी होती चली जाएँगी।

जब मनुष्य मौन हो जाता है तब देवता बोलते हैं। देवता ऋचाओं की भाषा में बोलते हैं। उनके उच्चारण को मन्त्र कहते हैं। मन्त्र सिद्धि के लिए जो साधना की जाती है उसे तीन देववाणियों को प्रखर करने की साधना ही समझना चाहिए।

शाप और वरदान का दैवी उपक्रम

वाणी में अमोघ शक्ति है। उच्चारण करने वाले के व्यक्तित्व के स्तर के अनुसार उसका प्रयोग होने पर वह अपना प्रभाव भी दिखाती है। वाक् शक्ति की प्रखरता प्रचण्ड प्रभावी सामर्थ्य का हवाला शास्त्रों में शाप-वरदान सम्बन्धी अनेकों प्रसंगों में मिलता है। परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैखरी के रूप में इसके चार रूपों की चर्चा समय-समय पर की जाती रही है। जब तपःपूत व्यक्तित्व सम्पन्न वक्ता उच्चारित शब्दों का नियोजन करते हैं तो उसके सुनिश्चित परिणाम देखने को मिलते हैं।

शाप-वरदान के प्रसंग आर्ष साहित्य में ही नहीं, अन्यान्य सभ्यताओं-प्रजातियों में भी देखने को मिलते हैं। अफ्रीका में काला जादू और कुछ नहीं मन्त्र शक्ति का विनियोग ही है। जब वाक् ऊर्जा का पुट ओझा द्वारा उसमें लगा दिया जाता है तो भोक्ता को दुःखदायी परिणामों का सामना करना पड़ता है। मुस्लिम फकीरों के सम्बन्ध में भी ऐसे ही शाप प्रयोगों का विवरण मिलता है। हजरत निजामुद्दीन जिनकी समाधि दिल्ली में बनी है, एक सूफी फकीर थे जिनके काम में विघ्न डाले जाने पर तात्कालीन राजा गयासुद्दीन खिलजी को मृत्यु का शाप मिला था। वह अपने ही दरबारियों की दुरभिसन्धियों के कारण दिल्ली पहुँचने के पूर्व ही मंच ढह जाने के कारण मारा गया। करॉंची में एक शापग्रस्त स्थान पर अमेरिकन एम्बेसी की इमारत बनी है जो खाली पड़ी है। वहाँ कभी किसी फकीर का निवास था। बेदखल किए जाने पर उसने शाप दे दिया एवं तत्पश्चात् उस भवन में कोई रह नहीं पाया। अपना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कौनसुलेट दफ्तर अन्धविश्वास के कट्टर विरोधी अमेरिकनों को कहीं और बनाना पड़ा।

इंग्लैण्ड की एक काउण्टी काउण्ड्रे के राजा सर एन्थोना ने अपने अधीनस्थ इलाके के धर्माचार्यों से अप्रसन्न होकर उन सभी को देश निकाला दे दिया। निकलने वाले साधुओं में से एक एक ने विवाद किया तो उसे विशेष रूप से प्रताड़ित किया गया।

उसने राजा को शाप दे दिया कि उसके परिवार के सदस्यों-सम्बन्धियों की व उसकी स्वयं की मौत आग लगने या पानी में डूबने से हुआ करेगी। देखा गया कि इसके कुछ ही दिनों बाद श्रमिकों की लापरवाही से महल में आग लग गयी। राजा निकल भी नहीं पाया और अपने बच्चों-पत्नी सहित झुलसकर मर गया। राजा के छोटे भाई को शासनारूढ़ किया गया पर वह भी अधिक दिन न टिका। उसका नाम था काउण्ट मान्टेग्यू ह्वाइट। वह एक नदी पार करते समय नाव उलट जाने से डूबकर मर गया। ये दोनों ही घटनाएँ एक वर्ष के भीतर हुईं। सभी ने उन्हें उस साधु का शाप माना। कहते हैं कि उस परिवार में और भी कितनी ही ऐसी दुर्घटनाएँ आगे घटित होती रहीं।

शाप की तरह वरदान की भी ऐसी ही विलक्षण शक्ति मानी गयी है। पुराने राजाओं की प्रथा थी कि वे सिंहासनारूढ़ होते थे तो विद्वानों को आशीर्वाद हेतु समारोह में सम्मान आमन्त्रित करते थे।

सिकन्दर को भारत पर आक्रमण करना था रास्ता दुर्गम था, अजेय होने की महत्वाकांक्षा मन में थी। विजय की सम्भावना सैनिकों के मनोबल को देखते हुए कम ही नजर आती थी। वह लम्बी यात्रा कर गुरु सुकरात के पास गया और जाने की तैयारी तब आरम्भ की जब गुरू का आशीर्वाद भारत की सीमा क्षेत्र तक मात्र पहुँचने का मिल गया। इतिहास साक्षी है कि सिकन्दर ने कितनी ही प्रतिकूलताओं का सामना करते हुए हिमालय के दुर्गम दर्रों को पारकर यहाँ तक विजय अभियान चलाया। इसके आगे वह स्थूल न हो सका क्योंकि वरदान सशर्त्त था।

पुरातन काल में गुरुकुलों में रहकर जब शिक्षार्थी घर आते थे तब गुरु का शुभाशीष लेकर आते थे। वह न मिले तो छात्र को तब तक वहाँ ठहरना पड़ता था जब तक कि गुरु सच्चे मन से आशीर्वाद न दे दें। विद्या की सफलता तब तक मानी नहीं जाती थी। शिष्य के चरित्र, मनोबल एवं व्यक्तित्व व की कड़ी परीक्षा लेकर गुरुजन शिष्यों को कई बार ऐसे आशीर्वाद देते थे जिससे वे धन्य हो जाते थे। आरुणि को १०० गौएँ देकर अकेले जंगल में भेज दिया गया और जब तक एक हजार गौएँ न हो जायें, तब तक वापस न लौटने के निर्देश दे दिये गए। विद्याध्ययन के मध्य यह कठिन पुरुषार्थ भरा व्यवधान उसने सहर्ष स्वीकार किया। पढ़ाई में हर्ज होने की शिकायत किये बिना वन की सारी कठिनाइयों को समझते हुए भी वह चल दिया। सौंपा हुआ काम मनोयोग पूर्वक अल्पावधि में ही पूरा कर वह वापस लौटा। गुरु का आशीर्वाद उसे मिला। इस बल से उसकी विद्या इतनी उच्च श्रेणी की हुई जितनी कि और किसी की भी नहीं थी। उसने ऋषि पद पाया और इतिहास में अमर हो गया।

मानवों को स्वर्गलोक का अधिकारी बनाने—श्रेष्ठता की पराकाष्ठा पर पहुँचाने में देवताओं के वरदान ही बराबर कारगर होते रहे हैं। असुरों ने तप के आधार पर असाधारण वरदान प्राप्त किए एवं वे इसी आधार पर देव शक्तियों पर विजय पा सके। अपनी मनोवृत्ति के कारण ही वे वरदान उनके लिए अन्ततः शाप सिद्ध हुए।

प्राचीनकाल की मान्यता थी कि अपने पुरुषार्थ के समान ही सशक्त गुरुजनों का आशीर्वाद भी सहायक होता है। इसलिए तत्कालीन विज्ञजन पुरुषार्थरत होते हुए भी इस बात का प्रयास जारी रखते थे कि किन्हीं महापुरुषों का आशीर्वाद उन्हें प्राप्त हो सके। जहाँ महापुरुषों का आशीर्वाद और वरदान प्राप्त करने के लिये लोग उनकी सेवा करते थे, अपनी पात्रता सिद्ध करते थे, वहाँ कई बार दुष्ट लोगों को दण्ड देने के लिये शाप का भी आश्रय लिया जाता था।

राजा प्रतापभानु और अरिमर्दन ब्राह्मणों के शाप से ही राक्षस कुल में पैदा हुये थे। परीक्षित को साँप ने काटा और उससे उनकी मृत्यु हो गई, वह भी शापवश ही था। श्रवणकुमार के पिता-माता के शाप का प्रभाव था कि पुत्र वियोग में चक्रवर्ती सम्राट् दशरथ का तड़प-तड़पकर निधन हुआ।

ऐसी सैकड़ों कथायें पुराणों में भरी हैं वहीं आशीर्वादों द्वारा दूसरों को लाभ पहुँचाने के भी अनेक

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उदाहरण हैं। गुरु वशिष्ठ के आशीर्वाद से ही राम रावण को परास्त कर सके। यमाचार्य के आशीर्वाद से नचिकेता महायोगी और महर्षि विश्वामित्र के वरदान ने हरिश्चन्द्र को विश्वविख्यात कर दिया। रावण, कुम्भकरण, भस्मासुर, सहस्रार्जुन आदि ने वरदान ही तो प्राप्त किये थे, योगी की शक्ति और संकल्प बल के अनुरूप एक ही नहीं सैकड़ों व्यक्तियों का कल्याण भी सम्भव है और अकल्याण भी।

अब यह बात पाश्चात्य देश भी मानने लगे हैं। विशुद्ध अन्तःकरण से, आसाहत अन्तःकरण से निकली हुई वाणी प्रायः असत्य नहीं हुआ करतीं, इसलिये कहा जाता है, कि दीन-दुःखी , पीड़ित, अपंग और पिछड़े हुओं को हैरान नहीं करना चाहिये। कहीं 'आह' न लग जाय। महापुरुषों, सन्तों और सच्चे अर्थों में लोक-कल्याण की भावना जाग गई है, जिसकी उनको सेवा करनी चाहिये, उनका न मालूम कौन-सा शब्द वरदान बन जाय। योग-ग्रन्थों में परमात्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखा है—"वह संकल्प स्वरूप है, अपनी संकल्प शक्ति से ही वह विश्व का पालन, सृजन और विनाश किया करता है।" यद्यपि **'प्राणौ वा ब्रह्म'** प्राण ही ब्रह्म भी कहा गया है। पर इस प्रथम सूक्ति में कोई परिभाषायी भेद नहीं, संकल्प मूल है और प्राण माध्यम जिस प्रकार कोई विचार पहले मस्तिष्क में उठता है, फिर उसकी विद्युत तरंगें सारे शरीर के प्राण को कम्पित करती हुई, हाथ को क्रियाशील होने की प्रेरणा देती हैं और हाथ काम करने लगता है, वही सामंजस्य, संकल्प प्राण का है। मूल प्रेरणा संकल्प की होती है और कर्त्ता प्राण होता है। संकल्प की स्थिति के अनुरूप एक तरह के प्राण विशिष्ट प्राणों में कैसे परिवर्तित होते हैं, इसका वर्णन फिर कभी करेंगे, यहाँ इतना ही समझ लेना पर्याप्त है कि वायरस या विषाणु का संसर्ग जब किसी अन्य प्रकार के जीवाणुओं से होता है, तो वे उन सारे जीवाणुओं को अपने स्वरूप में बदल लेते हैं, इस तरह दूसरे प्रकार के अणु भी एक ही तरह का काम करने लगते हैं, इसी तथ्य को सिद्ध करके आर्थर कार्नबर्ग और डॉक्टर आकोआ ने नोबुल पुरस्कार प्राप्त किया था।

मनुष्य भी परमात्मा की तरह का एक छोटा संकल्प है, जिस प्रकार परमात्मा सारे ब्रह्माण्ड को अपने संकल्प में घेरे रहता है, उसी प्रकार एक व्यक्ति एक. निश्चित क्षेत्र के प्राण को अपने संकल्प द्वारा, एक तरह के अणुओं में परिवर्तित कर सकता है । यह संकल्प यदि विध्वंसक हो तो उसकी प्रतिक्रिया भी विध्वंस की हो जाती है और यदि सर्जक संकल्प है, तो वह बुरी परिस्थितियों और वस्तुओं को भी अच्छी परिस्थितियों में बदल सकता है। प्राचीनकाल में ऋषि-आश्रमों में जाकर गाय और सिंह एक घाट पानी पी आते थे, वह संकल्प-शक्ति का ही चमत्कार था। शाप और वरदान के साथ भी यही संकल्प विज्ञान जुड़ा हुआ है। विचार-वेत्ता विद्वान भी संकल्प-शक्ति की इस महान् महत्ता को स्वीकार करते हैं।

"कोई विश्वास क्यों नहीं करेगा? यदि प्रत्यक्ष प्रमाण मिल जाय।" इस कथन की पुष्टि के लिये हम आपको महाराष्ट्र के जिला जलगाँव के अन्तर्गत सोयगाँव ले जाना चाहेंगे। जलगाँव-अजिष्ठा मार्ग पर पहुर नामक एक छोटा सा गाँव है, वहाँ से शेदुर्णी जाने वाली कच्ची सड़क पर ३ मील दूर पर सोयगाँव अवस्थित है। इस गाँव में वाणी सिद्धि का एक अद्भुत चमत्कार नीम का एक पेड़ है। जिसकी प्रत्येक डाल के पत्ते कड़ुवे हैं, किन्तु एक डाल ऐसी है, जिसमें आज भी इस विज्ञान के युग में भी मैठे पत्ते लगते हैं। अनेकों पत्रकार, नेता और भक्त लोग उसका दर्शन करने सोयगाँव जाते और प्रकृति के इस अद्भुत चमत्कार को देखकर आश्चर्य-चकित हो जाते हैं।

इस चमत्कार का रहस्य प्रकृति की विलक्षणता नहीं एक साधु के वरदान का परिणाम है। शेदूर्णी में कड़ोवा महाराज नामक एक सन्त रहते थे। उन्हें भगवान् के दर्शन हुये थे, ऐसा लोगों का विश्वास है, किन्तु पाखण्डी लोग उन्हें द्वेष तिरस्कार से कटु-कटु कहकर चिढ़ाया करते थे।

एक दिन वे सोयगाँव से गुजर रहे थे। इस नीम के पेड़ के नीचे कई लोग बैठे थे। उन्होंने कड़ोवा महाराज को तंग करना प्रारम्भ कर दिया। उनका कहना था— "यदि तुम्हें भगवान् के दर्शन हुए हैं, तो हमें भी कराओ अन्यथा तुम्हारा ढ़ोंग नहीं चल सकेगा।"

महाराज थोड़ा मुस्कराये और निर्विकार भाव से बोले भाई—"भगवान् बड़ा शक्तिशाली, भयंकर और विकराल भी है, पहले उसे देखने का साहस और भाव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उत्पन्न करो। अचानक देख लोगे तो डर जाओगे, मर जाओगे।" पर वे लोग इतने श्रद्धालु होते तो छेड़खानी ही क्यों करते?

इस पर महाराज ने कहा—"अच्छा वह नीम की डाली देखते हो—सबने कहा हाँ। नीम कड़ुवा होता है, पर यदि भगवान् है तो आज से इस डाली की पत्तियाँ जब तक यह वृक्ष रहेगा, मीठी ही रहेंगी।" इतना कहकर कड़ोवा महाराज वहाँ से चले गये। पीछे लोगों ने चढ़कर पत्तियाँ तोड़ीं और चखीं तो वह सचमुच मीठी निकलीं और यह चमत्कार अब तक ज्यों का त्यों है। लोगों को यह भी विश्वास है कि इन पत्तों को खाने से शरीर की बीमारियाँ दूर होती हैं।

अब एक फकीर की 'बद्दुआ' का भी जिक्र समयोचित है। यह घटना स्वतन्त्र भारत के पूर्व की है, किन्तु अभी भी उसका प्रभाव वैसा ही है और उसका परिणाम इस समय पाकिस्तान में करांची स्थित अमेरिकी दूतावास भुगत रहा है।

कहते हैं, इस स्थान पर किसी पीर की मजार थी। उस पीर का एक शिष्य वहाँ बैठकर नित्य-प्रति कुरान शरीफ पढ़ा करता था। वह स्थान काफी दूर तक खुला हुआ था और वहाँ काफी स्थान भी था, इसलिये इमारत बनवाने के लिये श्री सोहराब जी पोतवाला ने यह जमीन खरीद ली और नींव खुदाई प्रारम्भ करा दी।

इस पर फकीर ने मना किया—इस स्थान पर इमारत खड़ी न करिये, यह पीर की मजार है और धार्मिक पूजा-पाठ, उत्सव के लिये सुरक्षित है किन्तु पोतवाला जी ने उसकी एक न सुनी। बिल्डग बननी प्रारम्भ हो गई।

इस पर उस फकीर ने शाप दिया, इस जमीन पर रहने वाला कभी जीवित और चैन से न रहेगा। यह कह कर वह फकीर कहीं अन्यत्र चला गया। कुछ लोग कहते हैं, उसने वहीं साँस चढ़ाकर प्राणान्त कर दिया पर पोतवाला जी ने इन सब बातों को बकवास कहकर मकान का बनवाना जारी रखा।

प्रतिक्रिया चार-छः दिन बाद ही दिखाई देने लगी। एक मजदूर को साँप ने काट लिया और वह मर गया। एक की गर्दन टूट जाने से मृत्यु हो गई। पोतवाला जी ने दुगनी-तिगुनी मजदूरी दी, इसलिये मकान तो बनता रहा, पर एक-एक कर उनके वंश के लोग मरने लगे। एक दिन उनका भतीजा छत से गिरकर मर गया। उसको बचाने के प्रयत्न में स्वयं पोतवाला जी की मृत्यु हो गई। अब उस मकान का स्वामित्व पोतवाला के पुत्र दोराब जी के हाथ आ गया। वे भी अपने पिता के समान ही हठवादी थे, उन्होंने भी मकान बनाना जारी रखा, किन्तु कुछ ऐसा हुआ कि थोड़े ही दिन में एक जंग लगी खिड़की खोलते समय हाथ कट गया। जंग का जहर सारे शरीर में फैल गया और उनकी मृत्यु हो गई। इस तरह मकान तो बन गया, पर उस पर रहने वाला कोई न बचा।

कुछ दिन बाद चार अँग्रेजों ने उस मकान को किराये पर लिया। लोगों ने मना भी किया, किन्तु उन्होंने कहा—"न तो कोई आत्मा होती है, न कोई भूत प्रेत, सब अन्धविश्वास है।" लोगों ने कहा—"भाई, अन्धविश्वास की अपनी सीमा है पर कहीं-कहीं सच्चाई भी होती है। सच्चाई न हो तो अन्धविश्वास फैले कहाँ से?"

उन्होंने किसी की बात न मानी। पर पहले ही दिन चारों ने रात में एक ही स्वप्न देखा कि कोई कह रहा है—"तुम लोग इस घर में रहे तो तुम्हें हवा-पानी, आग और मिट्टी खा जायगी।" चारों विस्मित तो हुये पर उन्होंने कहा यह सब अवचेतन मन की प्रतिक्रिया है। दिन भर इस तरह की चर्चा और विचार करते रहने से ही इस तरह का स्वप्न दिखाई दिया है।

किन्तु थोड़े ही दिन बीते थे कि उसमें से एक अँग्रेज लापता हो गया। बाद में पता चला कि वह एक गड्ढे में गिर गया, मजदूरों ने भूल से ऊपर से और मिट्टी पटक दी, जिससे वह उसी में दबकर मर गया। दूसरा अँग्रेज इग्लैंड लौटते समय हवाई जहाज से गिरकर मर गया। तीसरे के शरीर में आग लग गई और उसकी भी मृत्यु हो गई। चौथे के मुँह में सोड़ावाटर की बोतल फट गई और उसकी मृत्यु हो गई। इस तरह चारों को मिट्टी हवा, आग और पानी ने खा लिया।

अब तक यह मकान पूरी तरह भुतहा घोषित हो गया। बाद में उसे गिरवा दिया गया। किन्तु जब अमेरिका ने अपना दूतावास करांची में खोला तो अधिकारियों ने फिर वही जगह चुनी। लोगों ने मना भी

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया पर अमेरिकन न माने, हाँ जब कई अंग्रेजों और उच्च अधिकारियों ने भी इस बात की पुष्टि की तो उस मजार के स्थान को छोड़ कर मशहूर डिजाइनर जे० न्यूतरासे ने दूतावास की बिल्डिंग का नक्शा बनाया। भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट मेजर जनरल इस्कन्दर मिरजा और अनेक धार्मिक व्यक्तियों ने उस स्थान की पूजा की। तब से कोई मृत्यु तो नहीं हुई किन्तु जब अमेरिका के राष्ट्रपति जान्सन ने पाकिस्तान का दौरा किया, तो उनका विशेषज्ञ भीतर कमरे में अकेला रह गया। न किसी दरवाजे को साँकल लगी, न ताला फिर भी लाख प्रयत्न करने पर दरवाजे न खुले। तोड़कर ही बाहर के लोग अन्दर जा सके। दूतावास के निवासियों को ऐसी अनेक घटनाओं का सामना अभी भी करना पड़ जाता है। उन्हें कई प्रकार की आवाजें भी सुनाई देती हैं, पर चूँकि वे लोग मजार पर पूर्ण श्रद्धा रखते हैं, इसलिये अब कोई मृत्यु नहीं होती, किन्तु अभी लोगों का ख्याल है कि पाकिस्तान में विदेशनीति में परिवर्तन और अमेरिका की ओर से झंझट उस दूतावास पर लगे शाप का ही परिणाम है।

आशीर्वाद और शाप उच्च आत्माओं, पवित्र आत्माओं के लिये कोई बड़ी बात नहीं पर समझदार लोग उससे लाभान्वित भी हो सकते हैं और किसी दीन दुःखी की 'बद्दुआ' से बच भी सकते हैं।

मेजर कार्लडिक को एक साधु का श्राप

सूर्य भगवान् की किरणें नई-नई फूटी थीं। मेजर कार्लडिक अपने नित्य के नियम के अनुसार बरामदे में कुर्सी पर बैठे हल्की धूप में शरीर सेक रहे थे। नौकर चाय बनाकर लाया। चाय पी और विचारों की मस्ती में खो गये।

घटना प्रारम्भ होने से पूर्व यह बता देना आवश्यक है कि यह जो कुछ लिखा जा रहा है, वह न तो कोई गल्प कथा है, न कहानी वरन् सियालकोट छावनी के इतिहास का एक सच्चा प्रसंग है। बात उन दिनों की है, जब पाकिस्तान नहीं बना था। रायल आर्मी मेडिकल कोर उन दिनों सियालकोट में थी। तब अँग्रेज अफसरों के लिये भारतीय अफसरों व जवानों को सबसे अलग निवास के लिये बँगले दिये जाते थे। मेजर कार्ल डिक इसी कोर से सम्बन्धित थे पर अब वे रिटायर्ड हो चुके थे। उनके निवास का प्रबन्ध अब तक भी स्थायी अफसरों की लाइन में ही था।

अभी वे चाय पीकर चुके ही थे कि गेरुये वस्त्र में एक साधु कहीं से आ पहुँचे। साधु की मुख मुद्रा देखने से ही लगता था या तो इन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन किया है या फिर योग की उच्च-स्तरीय भूमिकायें पारकर सिद्धावस्था प्राप्त है उन्हें। मस्तक पर अपूर्व तेज। भिखारियों की तरह विद्रूप मलिनता और आत्म-हीनता का भाव नहीं वरन् हाव-भाव, चाल-ढाल सबमें विलक्षण स्वाभिमान और राम बादशाह की सी मस्ती। कमण्डल के अतिरिक्ति और कोई वस्तु साथ में नहीं, मुख चिर-प्रसन्नता से उद्दीप्त न कोई दीनता का भाव, न थकावट और परेशानी का।

"कई दिन की भूख और प्यास तंग कर रही है, साहब।" साधु ने विनम्र शब्दों में पूछा-"यदि एक-दो रोटी, टोस्ट, चाय या थोड़े से पैसे मिल जाते तो आपकी बड़ी कृपा होती?"

मेजर डिक ने चिलचिलाती गर्मियों में जैसी धूप होती है, आँखों से ऐसी ही ताप बिखेरते हुये, साधु की ओर देका और उपेक्षा में बोले—"जाओ-जाओ और किसी घर में माँग लो, मेरे पास खिलाने का ठेका नहीं।"

भारतीय तब परतन्त्र थे, इसलिये अँग्रेज वैसे ही भारतीयों को बहुत रौब-दौब दिखाया करते थे, साधुओं के बारे में तो उनकी मान्यतायें और भी खराब थीं। इसका कुछ कारण तो साधु आप भी हैं। संन्यास के मर्म को समझे बिना साधना की कठिनाइयों को झेल सकने की क्षमता न होने पर भी वैराग्य का ढोंग करने वाले पलायनवादी श्रेणी के लोग घुसकर साधुओं की संख्या न बढ़ाई होती, भीख माँगना, नशेबाजी करना, आलस्य और प्रमाद में पड़े रहने जैसी अनेक तरह की धूर्ततायें न की होतीं तो यों उपेक्षा और अपमान के दिन देखने को न मिलते। इस तरह तो उन्होंने अपनी कर्म, अपने धर्म और संस्कृति की मिट्टी कहीं अधिक कुटाई।

साधु ने इस उपेक्षा का बुरा नहीं माना। योगी का लक्षण ही है कि वह सुख-दुःख, मान-अपमान में सदैव एक समान रहता है। उन्होंने हँसकर कहा—"साहब! नाराज न हों क्या हिन्दू, क्या ईसाई, सृष्टि तो सभी एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परमात्मा की ही बनाई है। आप भेद क्यों करते हैं, आपसे थोड़े से भोजने की याचना की है। सम्भव हो तो पूरा कर दें । कटु शब्द तो अपने बच्चों से भी नहीं कहना चाहिये।

साहब की सहनशीलता कागज की नाव पानी में डालते ही गल गई। बड़े क्रोध से बोले—जाता है यहाँ से या अभी नौकर को बुलाकर धक्के मारकर बाहर निकलवा दूँ।

साधु की मुख-मुद्रा में अभी भी न तो किसी प्रकार का क्रोध का भाव था, न प्रतिशोध का। लोग समझें न समझें पर इतनी गम्भीरता, पत्थर की तरह दृढ़ता और किसी भी कठिन से कठिन परिस्थिति में इतना धैर्य धारण की क्षमता किसी भारतीय में हो रही है। संसार की किसी भी संस्कृति ने ऐसी सहिष्णुता का पाठ अपने अनुयाइयों को नहीं पढ़ाया होगा। हमारी यह उपलब्धि भी किसी चमत्कार से कम नहीं। हल्के व्यक्ति उसे धारण करने में न कभी समर्थ हुये, न कभी होंगे। साधु ने धीमे से मुस्कराते हुये कहा—महाशय! जहाँ तक मेरे शरीर को अपमानित करने का प्रश्न है, वह कोई महत्त्व नहीं रखता पर आपका सीधा कटाक्ष यह है कि भारतीय योग, तत्व-दर्शन और हम साधुओं का कोई आदर्श अथवा सिद्धान्त नहीं, हमारे धर्म में कोई प्राण नहीं—यह असह्य है, इसलिये अब आप अपने नौकर को बुलाइये, आप देखेंगे कि वह मेरे पास आते-आते पत्थर की तरह अचल हो जायेगा।

मेजर डिक का क्रोध, सीमा पार कर गया। चिल्लाकर नौकर को बुलाया और कहा—"इस मूर्ख को धक्के मारकर निकाल दो।" नौकर भागा-भागा आया और मेजर की आज्ञा-पालन करने के लिये जैसे ही आगे बढ़ा कि उसके पाँव काठ की तरह निश्चेष्ट पड़ गये। आँखें निकल आईं एकटक भयभीत-सा देख रहा था, पर वह एक इन्च भी आगे नहीं बढ़ रहा था । साहब ने बहुतेरा डाँटा पर नौकर ऐसी अनसुनी कर गया जैसे हम किसी पत्थर के आगे कुछ बकते रहते हैं और उस पर रत्ती भर प्रभाव नहीं पड़ता।

साधु ने हँसकर कहा—"साहब! नौकर पर नाराज़ क्यों होते हो वह तो अब मेरी इच्छाओं का वशवर्ती है, कहें तो आपको बाहर निकलवा दें। आप समझते हैं, हमारी योग-साधनायें और तपश्चर्यायें मूर्खता है, आज आप अनुभव करें कि योग में साधारण मनुष्यों को ही नहीं, पर्वत और नदियों को भी इच्छानुवर्ती बना लेने की शक्ति है। हमारा अहंकार न बढ़े इसलिये सामान्य मनुष्य की तरह हम भीख माँग कर खाना खाते और जीते हैं पर आप न भूलें योग की शक्ति वह सब कर सकती है, जो आपका विज्ञान भी नहीं कर सकता।'

मेजर साहब पर तो भौतिकता का भूत सवार था, अँग्रेजित की शान चढ़ी हुई थी। एक हिन्दू साधु से एकाएक कैसे हार मान लेते। उन्होंने अपने पालतू कुत्तों को आवाज देकर पुकारा और साधु की और संकेत करके उन्हें बढ़ावा दिया कि वे साधु पर झपट पड़ें ओर काट खायें पर जैसे उन्हें लकवा मार गया हो, दोनों खूँख्वार कुत्तों ने एक बार मेजर की ओर देखा दूसरी बार साधु की ओर और सिर झुकाकर ऐसे खड़े हो गये, जैसे कोई द्वारपाल किसी सम्राट के अभिवादन के लिये खड़े हों । पदार्थ की शक्ति पर चेतना की बड़ी भारी विजय थी। कुत्तों के शरीर तो क्या चेतना तक जवाब दे गई। काटना तो दूर वे भूँक तक नहीं सके।

मेजर के सारे शरीर से पसीना छूट गया। बुद्धि फेल हो गई। साधु ने कमण्डल से थोड़ा जल लिया और कहा—"साहब! मुझे आपसे कोई द्वेष नहीं पर अब चूँकि यह हमारे धर्म को अपमानित करने की बात थी, इसलिये यदि आपको कुछ दण्ड दिया जाय तो यह कोई दोष न होगा। मैं तुम्हें श्राप देता हूँ, आज से ठीक एक महीने पीछे तुम मेरी तरह भूख से तड़पोगे, इस सारे शहर में माँगने पर भी तुम्हें रोटी न मिलेगी। तुम इस शहर में रह भी नहीं सकोगे।" यह कर उसने जल एक ओर छिड़क दिया और वहाँ से चुपचाप चल दिया। मेजर साहब का अभिमान अभी भी दूर नहीं हुआ था तो भी उनके मुख पर भय के भाव निश्चित रूप से दिखाई दे रहे थे।

साधु वहाँ से चलकर लगभग एक फर्लांग दूर उसी लाइन के एक अन्य बँगले में प्रविष्ट हुये। यह बंगला कर्नल जार्ज का था। उनकी पुत्री इला बरामदे में बैठी अँग्रेजी का समाचार-पत्र पढ़ रही थी। साधु उधर ही मुड़ गये।

बेटी! मुझे भूख सता रही है, कुछ खाने को मिलेगा क्या? साधु ने उसी विनय पूर्ण भाव और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भाषा में पूछा, जिसका प्रयोग उन्होंने मेजर डिक के साथ किया था। इला को उन पर दया आ गई। भले ही उसने यह न समझा हो कि यह साधु कोई सिद्ध महापुरुष है पर उसे मानवता की सिद्धि का मूल्यांकन करना आता था। उसने सोचा यह किसी न किसी तरह धर्म और आस्तिकता का भाव तो जागृत करते ही हैं । समाज को इस तरह प्रकाश देने वाले को यदि थोड़ा भी दान दे दिया जाय तो बुरा क्या। केवल मात्र भिक्षा ही जिनका व्यवसाय है, भगाना और फटकारना तो उन्हें चाहिये।

इला ने कहा—बाबा जी ! बैठिये अभी आती हूँ। यह कहकर वह अन्दर गई। थोड़ा दूध, टोस्ट और कुछ फल लाकर साधु को दिये। साधु ने उन्हें खाया और पानी पिया। भूख शांत हुई।

कृतज्ञता संसार का सबसे पहला पुण्य है। कोई हमारे साथ उपकार करे, हम उसका मूल्य न चुकायें तो यह सबसे बड़ा पाप ही होगा। लड़की की यह दया यों एक कर्त्तव्य मात्र थी तो भी साधु और महान् व्यक्ति किसी का ऋण अपने ऊपर नहीं रखते। यदि वे कुछ भौतिक वस्तु नहीं भी दे सकते तो भी अपनी आत्म-शक्ति से औरों का भला करने से वे चूकते नहीं।

उन्होंने अपनी पोटली से एक फल निकाला। फिर कर्नल जॉर्ज की पुत्री की ओर देखकर कहा—"बेटी ! तू नहीं जानती हम योगी वह बात आगे से आगे देख और जान लेते हैं, जो किन्हीं व्यक्तियों के साथ बाद में घटित होने को होती है। तुम्हारे घर में ठीक तीन सप्ताह बाद कोई बीमार पड़ेगा। डॉक्टर और हकीम भी उसका इलाज नहीं कर सकेंगे। हमारे आयुर्वेद पर आपको विश्वास तो न होगा पर मैं तुम्हें एक दुर्लभ औषधि देता हूँ, यह फल हिमालय में मिलता है। जब सारा उत्तराखण्ड बर्फ से ढँक जाता है, तब यह बड़ी कठिनाई से मिलता है। यह फल ही तुम्हें चमत्कार दिखायेगा।

जब तुम्हारे घर में कोई बीमार हो, डॉक्टर हार जायें तब तुम एक अँगीठी में कोयले फूँकना जब कोयले दहकने लगें, तब उसमें यह फल रख देना। थोड़ा धुआँ छूटेगा और पटाखे की आवाज की तरह वह फूट जायेगा। उसके तुरन्त बाद देखोगी कि बीमार की हालत में आश्चर्यजनक सुधार होगा और वह थोड़ी देर में ही अच्छा हो जायेगा।

लड़की की थोड़ा विस्मय हुआ, थोड़ा कौतूहल। फल उसने यों ले लिया कि उसने कई भारतीय सहेलियों से सुना था—भारतीय योगी-साधु सचमुच चमत्कारी होते हैं। वैसे उसका इस पर कोई विश्वास न था। फल लेकर उसने अपनी पुस्तकों के बीच कहीं छुपाकर रख दिया।

तीन सप्ताह बीते कोई अनहोनी बात नहीं हुई। पर उसके अगले ही दिन कर्नल जॉर्ज आफिस में काम करते हुए एकाएक गम्भीर रूप से बीमार हो गये। काम छोड़कर उन्हें बीच में ही कार से घर पहुँचाया गया। इला बहुत हैरान थी, कुछ अपने पिता का बीमारी पर कुछ उस साधु की बात की स्मरण करके।

कई सुयोग्य मिलिटरी डॉक्टरों ने उपचार किया पर कोई लाभ न हुआ। बम्बई से भी एक डॉक्टर बुलाये गये वह भी बीमारी ठीक न कर सके। कर्नल जॉर्ज की स्थिति मरणासन्न हो चली।

उसी दिन अपराह्न वह साधु एकाएक फिर कर्नल साहब के बँगले पर दिखाई दिया । उस समय इला अपनी सहेली मेजर डिक की पुत्री के साथ अपनी रसोई में थी। साधु को देखते ही इला बाहर आ गई। साधु ने कहा—"बेटी ! मुझे पता था तुम मुझ पर विश्वास नहीं करोगी तो भी तुम्हारे किये हुये उपकार का फल चुकाना मेरा कर्त्तव्य था, इसलिये दुबारा फिर आना पड़ा।"

आगे की बात प्रारम्भ रखते हुये उन्होंने कहा—"तुम्हारे पिताजी अस्वस्थ हैं, अब अन्तिम समय है, तुम उस फल का प्रयोग करो तभी कर्नल साहब अच्छे हो सकेंगे।

इला अपने पढ़ाई के कमरे में गई। वह फल निकाला अँगीठी जलाई। जब कोयला अंगार हो गये तो वह फल उस पर रख दिया। थोड़ा धुआँ छूटा और फिर पटाखे की आवाज हुई। डॉक्टर ने आगे बढ़ना चाहा पर देखा सब कुछ ठीक है, इसलिये वहाँ से वापस लौट पड़ा।

इधर बम्बई से आये हुए डॉक्टर कर्नल साहब की नब्ज टटोल रहे थे। जो शरीर कुछ क्षण पहले शव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हुआ चाहता था, एकाएक उसमें गर्मी और स्फूर्ति दिखाई दी। डॉक्टरों ने निश्चय किया, यह मृत्यु के पूर्व की अन्तिम और तीव्र ज्योति है पर वे यह देखकर हैरान रह गये कि कर्नल साहब ने धीरे-धीरे आँखें खोल दीं। हल्के-हल्के मुस्कराने लगे। थोड़ी ही देर में स्थिति सामान्य हो चली। भयंकर स्थिति से देखते-देखते सामान्य स्वस्थ मनुष्य की सी स्थिति में आ जाना सचमुच बड़े आश्चर्य की बात थी। डॉक्टर हक्के-बक्के रह गये पर उस स्थिति का विश्लेषण कर सकना उनके लिये सम्भव कहाँ था। तो भी उन्होंने स्वीकार किया सचमुच अध्यात्म में कोई शक्ति है अवश्य, जो पदार्थ की और भौतिक विज्ञान के नियमों का भी उल्लंघन कर सकती है। उन्होंने भारतीयों के योग की महत्ता भी स्वीकार की—तब, जब इला ने और उसकी सहेली ने सारी घटना आद्योपान्त विस्तार से डॉक्टरों को बताई।

साधु चले गये तब मेजर कुछ आश्वस्त हुए। हेकड़ी अभी भी गई नहीं थी। नौकर को डाँटते हुये बोले—"मूर्ख तूने मेरी आज्ञा का पालन क्यों नहीं किया।" नौकर पहले तो बन्दरों की तरह खों-खों करने लगा फिर धीरे-धीरे वह मनुष्यों की सी भाषा में बोल पाया—"कैसी आज्ञा साहब! आपने मुझसे कुछ कहा था क्या?"

मेजर सकपका गये। क्या साधु सचमुच इतना समर्थ था कि वह किसी भी मनुष्य के मन, प्राण और चेतना पर पूर्ण अधिकार कर सकता था। वह सब कुछ सच-सच अपनी आँखों से देख रहा था। जो कुत्ते अभी तक बुत बने खड़े थे, साधु के वहाँ से हटते ही चल-फिर सकने की स्थिति में आ सके। मेजर ने अपनी मेम साहब को सारी घटना सुनाई। वे बेचारी कोमल हृदय थीं, इसलिये एकदम भयभीत होकर बोलीं "आपको इतना क्रोध नहीं करना था, मुझे बुला लिया होता, मैं हीं साधु को कुछ खाने के लिये दे देती या फिर कुछ पैसे ही दे देती।

जैसे-तैसे एक महीना बीता। मेजर डिक साहब उस दिन प्रातःकाल समय पर ही उठे पर वह हैरान थे कि आज न तो कोई नौकर 'बेड-टी' (सबेरे की चाय) ही लाया और न स्नान के लिये पानी ही, श्रीमती डिक ने बहुतेरी आवाजें लगाईं पर वहाँ कोई सुनने वाला हो तब तो। मेजर उठे नौकरों के कमरों में जाकर देखा तो सब खाली पड़े थे। एक ही नौकर बचा था, सो उसने भीतर से ही चिल्लाकर कहा—"साहब! इधर मत आना, इस मुहल्ले में प्लेग फैल चुकी है। इन कमरों में भी चूहे मरे हैं, इसीलिये नौकर घर छोड़कर भाग गये। मुझे तो प्लेग हो गया है, इसलिये मैं तो भाग कर जा भी नहीं सका।"

मेजर ने पुलिस और स्वास्थ्य विभाग से सेवायें माँगी। नौकर को दवा का प्रबन्ध कराया और स्वयं सारा सामान बाँधकर वह बँगला छोड़ देने की तैयारी करने लगे।

सायंकाल होने से पहले ही वे डाक-बंगले पहुँच गये। इस आपा-धापी में प्रातःकाल से चाय भी नहीं मिली थी। डाक-बँगले के नौकर को आदेश दिया—"तीन कप चाय लाना।" चाय आई, मेजर साहब, उनकी धर्मपत्नी और पुत्री तीनं ने एक बार ही मुख लगाया और तीनों ने एक साथ अपने-अपने चाय के प्याले एक ओर सरका दिये। सात यह थी कि उनमें बुरी तरह मिट्टी के तेल की दुर्गन्ध आ रही थी।

अभी वे कुछ कहें इसी बीच सबका ध्यान कैप्टेनिस्मथ नामक एक और अँग्रेज अफसर ने आकर बँटा दिया। जेब से पत्र निकालकर मेजर डिक को देते हुए स्मिथ ने बताय—"छावनी के मेडिकल आफिसर ने कहा है कि चूँकि आप लोगों के बाँगले में प्लेग फैल गई है, इसलिये आप सबको छावनी एरिया से बाहर जाना पड़ेगा।" मेजर डिक का माथा ठनका। उन्हें एक माह पूर्व हुई दुर्घटना याद आ गई। साधु का श्राप क्या वस्तुतः सत्य होने जा रहा है, यह सोचते ही उनकी देह से पसीना फूट पड़ा।

अब जिस कोठी में उन्हें जाना था, उसका पता स्मिथ ने हाथ में थमा दिया। मेजर डिक बोले—"स्मिथ! मैं वहाँ अभी चला जाता हूँ, किन्तु हममें से किसी ने भी दिन भर हो गया, खाना नहीं खाया। पहले हमें खाना खा लेने दें।"

नौकरी तो नौकरी ठहरी। कोई उद्यम कर रहा होता तो भला अपने साथी को एक असहाय व्यक्ति को दो टूक उत्तर देने की नौबत क्यों आती। स्मिथ को नौकरी चले जाने का भय था सो उसने कहा—'मेजर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साहब ! आप उस बँगले पर अभी चले जायें, आपके लिये भोजन का प्रबन्ध हम पीछे से करके ला रहे हैं।"

मेजर डिक वहाँ से तुरन्त रवाना हो गये। नये बँगले में सामान पहुँच गया पर उन्हें तो भूख सता रही थी। थोड़ी देर में कैप्टेन स्मिथ अपनी पत्नी सहित वहाँ पहुँचे, देर के लिये क्षमा माँगते हुए उन्होंने बताया—खाना तो बहुत पहले ही नौकर के हाथ ताँगे से भेज दिया था पर ताँगा किसी ट्रक से टकरा गया। खाना बिखर गया, नौकर अस्पताल में है, हमें दुःख है कि आप भूखे हैं, इसलिये आप हमारे साथ चलिये घर से खाना खिलाकर लाते हैं।

सिनेमा के पर्दे पर जिस तरह रीलें घूमती हैं, उसी तरह मेजर कार्ल डिक के मस्तिष्क में इस समय एक महीने पहले घटी साधु वाली घटना के दृश्य याद आ रहे थे। उन्हें अब पूरी तरह सन्देह और विश्वास हो गया था कि खाना मिलेगा नहीं। अपनी आशंका और श्राप वाली बात उन्होंने कप्तान स्मिथ को भी बताई पर स्मिथ ने उसे बहम बताया और मेजर साहब उनकी पत्नी और पुत्रों को लेकर अपने घर की ओर चल पड़े।

मार्ग में श्रीमती डिक ने मेजर से कहा—"हम मन ही मन उन साधु से क्षमा क्यों न माँग लें सम्भव है इससे ही संकट टल जाय पर भावनाओं का मूल्य न समझने वाले मेजर डिक के लिये यह सोचना भी असह्य था। उन्होंने कहा—"एक साधारण मनुष्य से हम क्षमा नहीं माँग सकते"। उन बेचारों को क्या पता था कि मनुष्य साधारण नहीं होता, उसमें देवत्व और देवतत्व का भाण्डागार भरा पड़ा है। योगी उसी का विकास करके ईश्वरीय शक्तियों के समान काम करते हैं।

सब लोग स्मिथ की कोठी पर पहुँच कर खाने की मेज पर बैठ गये। अभी एक-एक प्लेट ही परोसी गई थी, नौकर पकाया हुआ माँस ला रहा था। मेजर डिक के पास आते-आते पैर में किसी वस्तु की ठोकर लगी और वह मेजर साहब पर ही झूल गया। सारा शोरबा मेजर डिक पर ऐसे बिखर गया जैसे उनके साथ होली खेली गई हो। लाज के मारे मेजर चूहा-बिल्ली बन गये। उधर भूख के मारे बुरा हाल। सारी दिमागी ठसक निकल गई।

कप्तान स्मिथ ने उनके कपड़े बदलवाये। गर्दन में चोट आ गई थी सो दवा मली। दुबारा फिर खाने की मेज पर बैठे। नौकर एक ढँके हुये बर्तन में कुछ लाया और मेजर डिक के सामने रख गया। मेजर ने ढक्कन खोला तो अजीब दुर्गन्ध आई। प्लेट में सड़ी हुई घास और पेड़ों के पत्ते रखे थे। कप्तान स्मिथ नौकरों पर बरस पड़े। नौकर आश्चर्यचकित थे कि हम तो अच्छा खाना लेकर आये थे, मार्ग में ही यह क्या हो गया। मेजर ने चुपचाप स्वीकार कर लिया कि यह सब उन संन्यासी के श्राप का ही फल है।

वे चुपचाप उठ पड़े। स्मिथ ने खाने के लिये बहुत मनाया और इस अपराध जैसे काम के लिये क्षमा भी माँगी, पर मेजर डिक वहाँ रुके नहीं। अपमान की हद हो गई थी। वह दिन यों ही गया। उन्हें पानी पीकर ही रात काटनी पड़ी।

दूसरे दिन वे रेलवे स्टेशन इस आशा से पहुँचे कि वहाँ के होटल में खाना मिल जायेगा। किन्तु कहते हैं आफत जब आती है तो साथ-साथ घूमती है—होटल बन्द पड़ा मिला। डिक महोदय स्टेशन मास्टर के पास गये तो उसने बताया कि प्लेग का असर हो जाने के कारण होटल बन्द कर दिया गया है। उसने कहा—अगले स्टेशन पर भोजन का अस्थायी प्रबन्ध कर दिया है, आप वहाँ जाकर भोजन कर आयें। किन्तु दुर्भाग्य कि वहाँ के लिये कार का मार्ग था नहीं और रेलगाड़ी छूट चूकी थी। दूसरी गाड़ी दूसरे दिन जा सकती थी, उस दिन कोई और गाड़ी वहाँ जाने वाली भी नहीं थी।

मेजर साहब घर की ओर लौटे-मार्ग में एक मिठाई वाले की दुकान से थोड़ी मिठाई खरीदी उन्होंने पर वहाँ पर मिठाई खाना उन्हें अपने स्वाभिमान के प्रतिकूल जान पड़ा। मिठाई कार में रखकर वे आगे बढ़ गये। आगे एक पीपल का पेड़ था, वहीं मेजर साहब रुके । तीनों व्यक्तियों ने मिठाई जैसे ही हाथ में ली कि उसे फेंकते ही बना। मिट्टी के तेल की ऐसी बदबू जैसे वह मिठाई बनी ही मिट्टी के तेल की हो। मिठाई तीनों ने फेंक दी।

तभी वही साधु कार की ओर आते दिखाई दिये। मेजर का अभिमान हवा हो चुका था। वे समझ चुके थे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि आत्मा की भी कोई शक्ति होती है, तीनों ने उन्हें प्रणाम कर क्षमा माँगी।

साधु ने हँसकर कहा—"मुझे दुःख है कि आप लोगों को बड़ा दुःख हुआ पर मैं करता क्या, यदि आपको इतना सबक न सिखाया जाय तो आप न जाने क्या-क्या दुर्व्यवहार करें। अब आपके लिये अच्छा यही है कि यह शहर छोड़कर कहीं और चले जायें। इस शहर में आपको खाना नहीं मिल सकता।

साधु तीनों को लेकर पास ही एक कुटी थी वहाँ गया। तीनों को बैठाकर उसने तीन पत्तलें सजाई, शुद्ध शाकाहारी भोजन उन्होंने हाथ से परोसा। झोंपड़ी में और कोई था भी नहीं, चूल्हा-चौका भी नहीं था पर भोजन बिलकुल गर्म-गर्म। तीनों ने भरपेट खाना खाया। बड़ा स्वादिष्ट भोजन था।

भोजन कर चुकने के पीछे उन्होंने फिर साधु से क्षमा माँगी और अपने घर आये। सामान लादकर वे उसी रात बम्बई के लिये चले गये। यह घटना बाद में अनेक समाचार-पत्रों में छपी थी। इस घटना का ही प्रभाव था कि अँग्रेज अधिकारियों ने भारतीय साधुओं का, हिन्दू-धर्म का उपहास करना बन्द कर दिया था। ३१ अगस्त १९६९ के साप्ताहिक हिन्दुस्तान में मेजर डिक के एक मित्र ह्यूबर्ट बसचाक हैनिंग ने भी इस घटना का उल्लेख किया था।

मन्त्र साधना में वाक् शक्ति का विनियोग

आयुर्वेद विज्ञान में अनेक प्राणघातक विषों को शुद्ध करके उनके द्वारा कठिन रोगों को अच्छा कर सकने वाली रसायनों के निर्माण का विधान है। सामान्य धातुओं का भी जारण-मारण करके उनसे आरोग्यवर्धक भस्में बनती हैं। होम्योपैथी में "विषस्य विषमौषधम्" सिद्धान्त के अनुसार प्रायः सभी औषधियाँ विष पदार्थों से ही बनाई जाती हैं। संशोधित विष मारण का नहीं जीवन प्रदान करने का काम करते हैं। वाणी के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है। असंस्कृत वाणी विष है, पर यदि उसे सुसंस्कृत बना लिया जाय तो वही अमृत का काम करती है। कटु, कर्कश, निन्दा, भर्त्सना, व्यंग, उपहास, अपमान, तिरस्कार आदि का सम्मिश्रिण होने से वाणी इतनी विघातक सिद्ध होती है जिसकी हानि का कोई वारापार नहीं रहता। कहते हैं कि "तलवार का घाव भर जाता है पर जीभ का घाव नहीं भरता।" द्रौपदी की जीभ से निकले थोड़े से कटु शब्दों के फलस्वरूप असंख्यों का सर्वनाश उत्पन्न करने वाला महाभारत खड़ा हो गया था। मधुर भाषा सज्जनता, शालीनता और सद्भावना से युक्त होने के कारण सुनने वालों पर चमत्कारी प्रभाव डालती है। शान्ति और दिशा प्रदान करती है। संसार के महान परिवर्तनों में मनस्वी लोगों की वाणी ने अपनी प्रमुख भूमिका सम्पन्न की है। साधु और ब्राह्मणों ने सत्य और ज्ञान के उद्घोषकर्त्ताओं ने अपने दिव्य वचनों से असंख्य प्राणियों का कल्याण किया है।

मन्त्र विद्या में शब्द शक्ति की महान् गरिमा प्रकट होती है। पर यह विशेषता मात्र उच्चारण भर की नहीं होती वरन् उसके पीछे अन्तःकरण की ऐसी विशेषताएँ जुड़ी रहती हैं; जिनके कारण उसमें असाधारण एवं चमत्कारी क्षमता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। मौन, सत्य, सत्प्रयोजन, सन्तुलन, सद्भाव जुड़े रहने से वाणी की श्रेष्ठता सामान्य व्यवहार से उभरती हुई देखी जाती है। प्याज, मूली, शराब, हींग आदि खाने से मुख से उस प्रकार की गंध आती है। इसी प्रकार अन्तःक्षेत्र में जो कुछ भरा होता है वह वाणी के साथ लिपटकर बाहर आता और प्रभाव उत्पन्न करता है।

चिन्तन, चरित्र, इतिहास, उद्देश्य एवं संस्कार के समन्वय से व्यक्तित्व का निर्माण होता है। यह व्यक्तित्व मुख खोलते ही वाणी के माध्यम से सहज ही निस्रत होते देखा जा सकता है। बात जो भी कही गई हो उसका प्रत्यक्ष अर्थ या उद्देश्य कुछ भी होता हो, प्रभाव उतने भर से ही नहीं पड़ता; उसके साथ व्यक्तित्व की एक अनौखी छाप भी जुड़ी होती है, वस्तुतः भला या बुरा प्रभाव उसी का पड़ता है। अनेक प्रसंगों में लम्बे-चौड़े अनुरोध या प्रतिपादन तर्क और प्रमाण संगत होने पर भी प्रभावहीन एवं अविश्वस्त ठहरते हैं। उन्हें आशंका की दृष्टि से देखा जाता है और दुरभि संधि की गंध-सूँघी जाती है। इसके विपरीत किन्हीं के सीधे सादे थोड़े से शब्द ही प्रामाणिक माने जाते और प्रभाव डालते देखे जाते हैं। इस अन्तर में बोलने वाले के व्यक्तित्व की छाप ही सन्निहित रहती है। कहे हुए शब्दों का जो अर्थ है, सुनने वाले उसका प्रभाव वैसा ही अनुभव करें यह आवश्यक नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन्त्र केवल शब्द गुच्छक नहीं हैं। उनके साथ देवत्व की प्राणधारा जुड़ती है, तब उनका प्रभाव उभरता है। यदि उसके साथ साधक अपने देवत्व को विकसित करके संयुक्त कर सकने में सफल न हो सके तो समझना चाहिए कि उस शब्द समुच्चय का वह प्रभाव उत्पन्न न हो सकेगा जो शास्त्रकारों ने उसका माहात्म्य एवं प्रतिफल बताया है। धनुष का चमत्कार उस पर चढ़ाकर चलाये गये वाण से ही उत्पन्न होता है। मनुष्य धनुष है और साधक का व्यक्तित्व बाण। दोनों का स्तर ऊँचा रहे तो ही लक्ष्य बेध की सफलता मिलेगी।

मन्त्र साधक को अपना व्यक्तित्व इस स्तर का विनिर्मित करना होता है, जिससे जिह्वा से उच्चारण किये गये मन्त्र अक्षरों में प्रयुक्त होने वाली वाणी मात्र ध्वनि न रहकर 'वाक्' शक्ति के रूप में प्रकट हो सकें। उसके प्रकट से सूक्ष्म जगत में ऐसी हलचलें उत्पन्न हो सकें जो मन्त्र उद्देश्य के अनुरूप परिस्थिति एवं वातावरण उत्पन्न कर सकने में समर्थ हो सके।

मन्त्र की चमत्कारी क्षमता जिस उच्चारण पर निर्भर रहती है; उसे 'वाक्' कहा गया है। इसमें शब्द का जितना प्रभाव रहता है उससे असंख्य गुना प्रभाव साधक के व्यक्तित्व का रहता है। इसी आधार पर मन्त्रों की विशेषता उभरती है।

मन्त्र साधना में 'वाक्' शक्ति को विकसित करने के लिए मन, वचन और कर्म में ऐसी उत्कृष्टता उत्पन्न करनी पड़ती है कि जिह्वा को दग्ध करने वाला कोई कारण शेष न रह जाय। इतना कर लेने के उपरान्त जपा हुआ मन्त्र सहज ही सिद्ध होता है और उच्चारण किया हुआ शब्द असंदिग्ध रूप से सफल होता है। यदि वाणी दूषित, कलुषित, दग्ध स्थिति में पड़ी रहे तो उसके द्वारा उच्चारित मन्त्र भी जल जायेंगे। तब बहुत संख्या में बहुत समय तक जप, स्तवन, पाठ आदि करते रहने पर भी अभीष्ट सत्परिणाम उपलब्ध न हो सकेगा। परिष्कृत जिह्वा में ही वह शक्ति रहती है जिसके बल पर किसी भी भाषा का—किसी भी धर्म सम्प्रदाय का —कोई भी मन्त्र प्रचण्ड और प्रभावशाली हो उठता है। परिष्कृत जिह्वा द्वारा उच्चारित मन्त्र मनुष्यों के अन्तस्तल को--असीम अन्तरिक्ष को—प्रभावित किये बिना नहीं रहता। ऐसी परिष्कृत वाणी को— 'वाक्' को-मन्त्र साधना का प्राण कह सकते हैं। उसे साधक की कामधेनु एवं तपस्वी का ब्रह्मास्त्र कहने में तनिक भी अत्युक्ति नहीं है। इसी की परिमार्जित जिह्वा को 'सरस्वती' कहते हैं। मन्त्र की आत्मा वही है। सिद्धियों की उद्गम स्थली उसी को मानना चाहिए।

'वाक्' शक्ति की गरिमा की ओर संकेत करने वाले अनेकों ऋचा, प्रमाण तथा शास्त्र वचन उपलब्ध होते हैं।

तीक्ष्णेषनो ब्राह्मणा हेति गन्तो
यामस्यन्ति शख्यं न सा मृषा।
अनुहाय तपसा मन्युनाचोत्
दूरादेव भिन्दत्येतम् ॥

— अथर्व ५ ।१८ ।९

अर्थात्—जिसकी जीभ प्रत्यंचा है। उच्चारण किया हुआ मन्त्र जिसका वाण है। संयम जिसका वाणाग्र है। तप से जिसे तीक्ष्ण किया गया है। आत्मबल जिसका धनुष है, ऐसा साधक अपने मन्त्र बल से समस्त देव द्रोही तत्वों को बेध डालता है।

जिह्वा ज्या भवति कुल्मलं वाक्
नाड़ीका दन्तास्तपसाभि दग्धाः।
तेभिर्ब्रह्मा विध्यति देवपीयून्
हृद् बलैर्धनुभिर्देवजूतेः ॥

—अथर्व० ५ ।१८ ।८

अर्थात्—आत्म बल रूपी धनुष, तप रूपी तीक्ष्ण वाण लेकर तप और मन्यु के सहारे जब यह तपस्वी ब्रह्मवेत्ता मन्त्र शक्ति का प्रहार करते हैं तो अनात्म तत्वों को पूरी तरह बेधकर रख देते हैं।

अस्मानं चिद् ये विभिदुर्वचोभिः।

—ऋग्वेद० ४ ।१५ ।६

उस मन्त्र शक्ति ने पत्थरों को भी चूरा बनाकर रख दिया।

स योवाचं ब्रह्मेत्वपास्ते यावद्वाचो गतं तत्रास्य यथा कामाचारो भवति।

—छान्दोग्य ७ ।२ ।२

जो वाणी को ब्रह्म समझकर उसकी उपासना करता है। उसकी गति इच्छित क्षेत्र तक हो जाती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वागेव विश्वा भुवनानि जज्ञे वाच उत्सर्वममृत यच्च मर्त्यम्।

—शतपथ

यह 'वाक्' ही सृष्टि का मूल तत्व है। यही मनुष्य लोक का अमृत है। इसके द्वारा उच्चारित शब्दों में अद्‌भुत शक्तियाँ भरी होती हैं।

परिष्कृत चरित्र और चिन्तन के आधार पर साधना की गई वाक् शक्ति की क्षमता असीम है। मन्त्राराधन उसी के बलबूते सफल होता है।

मन्त्र में निहित शक्ति एवं उसकी जागृति

शब्द का साधारण प्रभाव जानकारी देने तक सीमित रहता है। पैरों की चाप सुनकर अमुक प्राणी के आगमन का पता चल जाता है। बादलों की गड़-गड़ाहट, पत्तों की खड़-खड़ाहट, हवा की सन-सनाहट सुनकर बिना देखे भी मौसम का अनुमान लगा लिया जाता है। मुख की आवाज सुनकर यह पता चलता है कि यह शब्द किस प्राणी का है और वह कहाँ चलता है? बात-चीत से घटनाओं, परिस्थितियों एवं समस्याओं की जानकारी मिलती है। सामान्यतया शब्दोच्चार जानकारी के आदान-प्रदान में प्रयुक्त होता है। उसकी बौद्धिक उपयोगिता इतनी ही है। स्थूलों में, कारखानों में, यात्राओं में, व्यवसाय में, कुटुम्ब में, मित्रों में प्राय: इसी प्रकार का वार्तालाप होता पाया जाता है।

शब्द की एक विशेष स्थिति है, जिसमें जानकारी के आदान-प्रदान की मस्तिष्कीय आवश्यकता तो कम पूरी होती है, पर उसमें अन्तरात्मा की भाव सम्वेदनाएँ पर्याप्त मात्रा में जुड़ी रहती हैं। ऐसे शब्दों को 'गान' कहते हैं। स्थूल शरीर हलचलें करता है और आवाज निकालता है। सूक्ष्म शरीर द्वारा जानकारियों का आदान-प्रदान करता है। कारण शरीर की सत्ता भाव परक है। जब अन्त:करण बोलता है तो उसमें भावनाएँ भरी रहती हैं । 'गान' का यही स्वरूप है। 'गान' का प्रत्यक्ष स्वरूप शब्दों को लयबद्ध करके गाया या गुन-गुनाया जाना — उसमें भावनात्मक मस्ती का जुड़ा रहना 'गान' है। इसे और भी अधिक सुसंस्कृत किया जाता है तो ताल स्वर आदि का समावेश हो जाता है। ऐसी स्थित में उसे छन्द नाम दे दिया जाता है। काव्य या कविता भी इसी लयबद्ध भाव प्रवाह को कहते हैं। उसे जब वाद्य यन्त्रों के साथ मिला दिया जाता है तो संगीत बन जाता है।

वेदों की ऋचाएँ छन्द कही जाती हैं। मन्त्रों की शक्ति में शब्द गुंथन का असाधारण महत्त्व है। गायत्री मन्त्र को ही लें। उसका शब्दार्थ बहुत सामान्य-सा है। तेजरूप भगवान से सद्‌बुद्धि की याचना भर उसमें की गई है। इस अर्थ की बोधक अनेक कविताएँ प्राय: सभी भाषाओं में मौजूद हैं अथवा बन सकती हैं। इनका प्रभाव वह नहीं हो सकता जो गायत्री मन्त्र का है। कारण कि उन कविताओं में शब्द विज्ञान और भाव विज्ञान का उतना अद्‌भुत समन्वय सम्भव नहीं है। सूक्ष्मदर्शी तत्व-वेत्ताओं की विशेष मन:स्थिति में ही ऐसे दिव्य अवरतण सम्भव होते हैं। इसलिए वेद मन्त्रों की संरचना को 'अपौरुषेय' कहा गया है।

गायत्री वह है जो गाई जाने पर अपना चमत्कार प्रस्तुत करे। इस तथ्य का रहस्योद्घाटन करने वाले अनेकों प्रमाण मौजूद हैं। यहाँ गायन का अर्थ संगीत से नहीं, वरन् यह है कि भावनापूर्वक—भाव-भरी मन:स्थिति में उसका उपासना क्रम चलना चाहिए। साधक के अन्तस् में मस्ती छाई रहनी चाहिए और बेगार भुगतने की तोता रटन्त की तरह नहीं, भाव तरंगों में लहराते हुए उसे गाया, गुन-गुनाया जाना चाहिए। जिह्वा का शब्दोच्चार मात्र तो बकवास कहलाता है। अन्य प्राणी, छोटे बच्चे अथवा अविकसित मस्तिष्क वाले प्राय: बेसिलसिले की बक-झक करते रहते हैं। वाणी की प्रौढ़ता, सुविज्ञ मस्तिष्क की ज्ञान सम्पदा जुड़ जाने से बनती है; वह प्रखर भी होती है और प्रभावशाली भी। इस उच्चारण से बोलने वाले का भी लाभ होता है और सुनने वाले का भी । इसके बाद दिव्य वाणी है, जिसमें परिष्कृत व्यक्तित्व के साथ जुड़ी रहने वाली उच्चस्तरीय भाव सम्वेदना का समावेश होता है। ऋचाओं का यही स्तर है। उनकी विशेषता साम गान को निखारती है। उपासना प्रक्रिया में भी मन्त्रोच्चार के साथ श्रद्धा भरी अनन्य तन्मयता का समावेश होना चाहिए। ऐसा समावेश जिसमें क्रमबद्ध,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लयबद्ध गुन-गुनाहट तो हो ही साथ ही इष्ट के साथ एकाकार होने की आकुलता भी हो। इसी को भक्ति भावना कहते हैं। मन्त्रों का वास्तविक लाभ इसी 'गान' मन:स्थिति में मिलता है।

'गायत्री' शब्द के अनेक अर्थ हैं। 'गय' प्राण को भी कहते हैं, "गीत" को भी। गीता में भगवान ने "गायत्रीच्छन्दसामहम्" वाक्य में गायत्री छन्द को अपना रूप बताया है। यहाँ छन्द से तात्पर्य 'गीत' से है। यह मनोरंजन के लिए नहीं। दिव्य तन्मयता की भाव भरी लहरों में लहराने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला 'नाद ब्रह्म' है। यह 'गान' गायनकर्त्ता को ऐसी भाव भूमिका में उड़ा ले जाता है, जो सर्वतोमुखी कल्याण का अनुदान दे सके। गाने वाले का त्राण करने वाली मन्त्र शक्ति को गायत्री कहा गया है। प्राण का त्राण करने वाली भी उसका एक अर्थ है जिस पर अन्यत्र चर्चा होगी यहाँ तो उसके उस स्वरूप पर विचार करना है जिसमें उसे 'गाने वाला' का त्राण करने वाली कहा गया है।

बसन्त: प्राणायनो गायत्री बासन्ती।

—यजु० १३।२५

गायत्री वह है जो बसन्त में गाई जाती है और गाने वाले की रक्षा करती है।

गायन्ति त्वागायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किण:।

—ऋग्वेद १।१०।१

गायत्री का गान करने वाले तेरे ही गुण गाते हैं। तेज के उपासक उसी से सूर्य की उपासना करते हैं।

यद्गयत्रे अधिगायत्र माहितम्।

—ऋग्वेद १।१६४।२३

जिसका गायन करते हैं, उसे गायत्री कहते हैं।

यद् गायत तद् गायत्री।

—शत.०

जिसे गाते हैं, वह गायत्री है।

गायन्तं त्रायतं इति गायत्री।

—गोपथ.०

जो गाने वाले का त्राण करे वह गायत्री है।

त्रायन्ती गायत: सर्वानन् गायत्रीत्यभिधीयते।

—आन० बु० स० ३।१६

सभी गान करने वालों की रक्षा करती है इससे गायत्री कहते हैं।

तमेत देव गायत्रं साम गायत्र त्रायत।

यद् गायन्न त्रायत तद् गायत्र स्य गायत्रत्वम्॥

—जै० ब्रा० ३।३८।४

जो गायत्री का गान करता है, गायत्री उसकी रक्षा करती है।

गायत्री प्रोच्यते तस्यात् गायन्तं त्रायते यत:।

गायनात् त्रायते यस्मात् गायत्री तेन कथ्यते।

गायन करने वाले का त्राण-उद्धार करती है इसलिए इस महाशक्ति को गायत्री कहते हैं।

गायन्तं त्रायते यस्माद् गायत्री तिस्मृता बुधै।

—भारद्वाज स्मृति ६।१४६

अर्थात्—"गायन करने वाले का त्राण करने वाली होने से यह गायत्री कहलाती है।"

गातार त्रायते यस्माद् गायत्री ते न गीयते।

—स्कन्द पुराण० काशी खण्ड

"गाने वाले की रक्षा करती है, इसीसे इसको गायत्री कहा जाता है।"

गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायंतं त्रायंते यत:।

गायनात् त्रायते यस्मात् गायत्री तेन कथ्यते।

गायन करने वाले के प्राणों उद्धार करती है। जिसका गान करने से उत्कर्ष होता है, उसे गायत्री कहते हैं।

गायतो मुखाद् उदपतदिति गायत्री।

—निरुक्ति० ७।१२

सबसे प्रथम गान करते हुए परमेश्वर के मुख से जो गीत निकला वही गायत्री है।

सर्वेषामेव वेदानां गुह्योपनिषदां तथा।

सारभूता तु गायत्री निर्गता ब्रह्मणो मुखम्।

सब वेदों और गुह्य उपनिषदों का सार रूप ब्रह्माजी के मुख से गायत्री मन्त्र प्रकट हुआ।

मन्त्र छन्द की दो विशेषताएँ हैं, एक तो उसमें साधक की अन्तरात्मा के गहन मर्मस्थल से निकलने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाली दिव्य सम्वेदनाएँ घुली रहती हैं, दूसरे विशिष्ट शब्द गुंथन के आधार पर रचे हुए मन्त्र जब गुन-गुनाये जाते हैं तो उनसे अलौकिक ध्वनि तरंगें निसृत होती हैं। इस दुहरे समन्वय से शब्द की अणु विस्फोट स्तर जैसी प्रचण्ड शक्ति का उद्भव होता है। इसका प्रभाव साधक के समूचे व्यक्तित्व पर छा जाता है और समीपवर्ती वातावरण के विशेष रूप में तथा दूरवर्ती वातावरण को सामान्य रूप में प्रभावित करता चला जाता है। इसी मन्त्र साधना से व्यष्ट और समष्टि को समान रूप से लाभ मिलता है।

मन्त्रों में अक्षरों का गुंथन स्वर-शास्त्र की विशिष्ट प्रक्रिया के साथ सम्पन्न हुआ है। उनके उच्चारण में जो ध्वनि तरंगें निकलती हैं वे न केवल साधनकर्त्ता को वरन् समस्त वातावरण को प्रभावित करती हैं। किसी विशेष प्रयोजन के लिए भी उनका प्रयोग हो सकता है। जिस चूल्हे में आग जलाई जाती है वह गरम हो जाता है। उसके निकट बैठने वाला शीत कष्ट से मुक्त होता है। चूल्हे के समीपवर्ती वातावरण में गर्मी आती है और फिर उस आग पर दाल पकाने जैसा कोई काम लेना हो तो वह भी पूरा होता है। मन्त्रानुष्ठान को चूल्हा जलाने की उपमा दी जाती है जिससे कई प्रयोजन एक साथ सिद्ध होते हैं।

सर्प को संगीत शास्त्र का ज्ञान नहीं होता और न वह उस वादन के साथ गाये जा रहे गीत का भाव समझता है इस पर भी स्वर लहरी मात्र से वह तरंगित हो उठता है। बहेलियों द्वारा बजाये हुए मधुर वादन पर मोहित होकर हिरन खड़े हो जाते हैं और उस सरसता पर मुग्ध होकर अपने तन की सुधि-बुधि गँवा बैठने से पकड़े जाते हैं। छोटे बच्चे तथा अन्य प्राणी जिन्हें संगीत के रहस्यों की जानकारियाँ नहीं हैं वे भी उन मधुर ध्वनि तरंगों पर प्रसन्नता व्यक्त करते देखे जाते हैं। यह स्वर लहरी अपने आप में अतीव उल्लास भरी होती है और अपनी अदृश्य क्षमता से प्राणधारियों में अद्भुत हलचल उत्पन्न करती है। यह भौतिक वाद्य यन्त्रों और उनके द्वारा निसृत कानों द्वारा सुनी जा सकने वाली संगीत ध्वनियों की बात हुई। मानव शरीर रूपी वाद्य यन्त्र अपने ढंग का अद्भुत है, इसमें षट्चक्र और सप्तम सहस्रार कमल सात स्वर दिव्य संगीत के आधार हैं। इस वीणा का मध्य भाग मेरुदंड, ऊर्ध भाग सिर और नीचे का हिस्सा नितम्ब क्षेत्र है। नासिका द्वारा पहुँचने वाली वायु इड़ा, पिंगला के रूप में दो उँगलियों के सहारे इससे जो दिव्य ध्वनियाँ प्रवाहित करती हैं उनका संगीत यदि सुना जा सके तो प्रतीत होगा कि नाद ब्रह्म के श्रवण का ब्रह्मानन्द कितना दिव्य एवं कितना आह्लादकारी है। इससे न केवल साधक वरन् सृष्टि का कण-कण गुंजित और प्रतिध्वनित होता है।

गायत्री मन्त्र तारवाद्य से निनादित जो स्वर लहरी उत्पन्न करता है उसे एक शब्द में अलौकिक ही कह सकते हैं। मेरुदण्ड में लगे कोटि-कोटि तार जब झंकृत होते हैं और चक्र संस्थानों में जब अनाहत नादों का गुंजन होता है तो उसे नादयोग के साधनकर्त्ता सुनते-सुनते मन्त्र मुग्ध बनकर रह जाते हैं।

संगीत वाद्य यन्त्रों में स्वर सप्तक एक व्यवस्थित क्रम शृंखला से लगाये जाते हैं और अमुक ध्वनि बजाने के लिए उँगलियों का संचालन एक विशेष क्रम से किया जाता है ठीक वही प्रक्रिया शरीर में लगे सूक्ष्म स्रोतों की मूर्छना जगाकर प्रखरता उत्पन्न करने के लिए कार्यान्वित की जाती है। गायत्री मन्त्र में अक्षर इसी क्रम से जुड़े हुए हैं कि उनका उच्चारण सूक्ष्म शक्तियों के जागरण में आवश्यक गतिशीलता उत्पन्न कर सकें। उसका उच्चारण क्रम भी अपने आप में ऐसा अद्भुत है कि उससे उत्पन्न गतिशीलता एक नहीं अनेक दिव्य उत्पादनों के रूप में परिलक्षित हो सकती है।

जानुदघ्नं चिन्वीत प्रथमं चिन्वानो गायत्रियवेमं लोकम-भ्यारोहित नाभिदघ्नं चिन्वीत।

—तै॰ स॰ ५।६।८

गायत्री का उच्चारण मुख से लेकर नाभि पर्यन्त अपना प्रभाव विस्तीर्ण करता है।

एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुष्ठु प्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग् भवति।

—(श्रुति)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"शब्द के अर्थ का सम्यक् ज्ञान होने और उसका उचित रीति से प्रयोग करने से स्वर्गलोक और समस्त मनोरथों की पूर्ति होती है।"

शतपथ ब्राह्मण की उक्ति है—

शब्दो वै ब्रह्म्।

अर्थात्—शब्द निश्चित रूप से ब्रह्म है।

तीक्ष्णेषवो ब्राह्मणा हेतिमनतो,
यामस्यन्ति शरव्यां न सा मृषा।
अनुहाय तपसा मन्युना चोत,
दूरादेव भिन्दन्त्येनम्॥

—अथर्व० ५।१८।९

जीभ जिसकी प्रत्यंचा है। उच्चारण किया हुआ शब्द जिसका वाण है। संयम जिसका वाणाग्र है, तप से जिसे तीक्ष्ण किया गया है। आत्मबल जिसका धनुष है। ऐसा ब्राह्मण अपने मन्त्र बल से समस्त देवद्रोही तत्वों को वेध डालता है।

शब्द को ब्रह्म कहा गया है। श्रीमद् भागवत के छटे स्कन्द के सोलहवें अध्याय में आता है—

"शब्द ब्रह्म परब्रह्म मागेभ्यां शाश्वती तनु"

अर्थात् 'शब्द ब्रह्म' और 'परब्रह्म' यह दोनों ही भगवान के नित्य और चिन्मय शरीर हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थों में, समस्त लोकों में संव्याप्त और उसका निर्धारण, नियन्त्रण करने वाली प्रकृति सत्ता को गायत्री कहा गया है—

"तमेत देव साम गायन्न त्रायत।"
यद् गायन्न त्रायत तद् गायत्रस्य गायत्र त्वम्।

—जै० उ० ३।३८।४

अर्थात्—समस्त लोकों में संव्याप्त साम गान को ऋषियों ने गायत्र्य कहा है।

वाणी का स्थान मुख है। इसलिए मुख को भी गायत्री कहा गया है।

मुखं गायत्री। —को० ११।२

मुखमेव गायत्री

—ताण्ड० ७।३।७

मुख भी गायत्री ही है।

वाग्वै गायत्री; गायत्री वा इदं सर्वभूतम्।

—शतपथ

वाणी गायत्री है। सम्पूर्ण विश्व गायत्री से ओत प्रोत है।

गायत्री की शब्द-शक्ति लय एवं ताल शक्ति से उत्पन्न ध्वनि प्रवाह के प्रभाव परिणाम को देखते हुए उसे वाक् देवी के नाम से पुकारा गया है। शब्द शक्ति की महिमा तथा गायत्री से निसृत ध्वनि प्रवाह की चर्चा शास्त्रों में इस प्रकार आती है।

गायत्री वा इदं ॐसर्वं भूतं यदिदं किंचेवाग्वें।
गायत्रा वाग्वा इदμ सर्वं भूतं गायत्री च त्रायेत्रे च।

—(छन्दोग्य—३)

"यह जो कुछ है, निश्चत ही गायत्री है। गायत्री ही समस्त जगत की सार और वाणी है। वाणी ही सारे संसार को गाती है और बचाती है।"

गायत्री में सन्निहित शब्द के साथ जो ब्रह्म वर्चस् जुड़ा हुआ है उसका लाभ श्रद्धापूर्वक साधना करने वाला सहज ही उठा लेता है।

आज हम उस महान विज्ञान को भुला बैठे और मणिहीन सर्प की तरह अधःपतित स्थिति में जा पहुँचे। नवजागरण की इस पुण्य-बेला में हमें अपने वर्चस्व का मूल स्रोत पुनः खोजना और उपलब्ध करना होगा। वह स्रोत एक ही है—'शब्द'। शास्त्राकार ने 'शब्दों वै ब्रह्म' शब्द को ब्रह्म कहा है। ब्रह्म में-परमात्मा में जो कला, जो विभूति, जो महत्ता विद्यमान है, वे सभी शब्द शक्ति के माध्यम से प्राप्त की जा सकती हैं। 'मन्त्र' शब्द-शक्ति का उच्चस्तरीय उपयोग इसका उपयोग यदि हम जान सकें तो निःसन्देह सच्चे ज्ञानी और सच्चे विज्ञानी बना जा सकता है। मन्त्र विद्या का भांडागार वेद हैं और उनका उद्भव वेदमाता—विश्वमाता, गायत्री महाशक्ति के द्वारा ही हुआ है। इस अनुपम अद्भुत, अनंत और प्रमेय विभूति का सान्निध्य प्राप्त कर कोई भी व्यक्ति या समाज अपना सर्वतोमुखी विकास, भौतिक सुख-सुविधाओं की वृद्धि और नैतिक जीवन की प्रतिष्ठापना कर सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन्त्र—सिद्धि के प्रमुख आधार स्तंभ

कई व्यक्ति मन्त्र, जप या पूजा पत्री के विधि-विधानों को ही उपासना की समग्रता समझ बैठते हैं और जब कोई सत्परिणाम हाथ नहीं लगता तो उसकी निरर्थकता की शिकायत करते हैं। इन दिनों आस्तिकता पर दुहरी मार पड़ रही है। एक ओर विज्ञान और बुद्धिवाद ईश्वरीय सत्ता को प्रत्यक्ष न देख पाने से उसकी सत्ता को अस्वीकार करता है। अधिक से अधिक यह मानता है कि प्रकृति या 'इकॉलॉजी' संदर्भ किसी प्रकार पदार्थ और प्राणी समुदाय का व्यवस्था-परक संतुलन बिठाये हुए है। इसमें भक्ति, करुणा, अनुकम्पा जैसा कोई तत्व नहीं है और न कर्म फल का सिद्धांत कसौटी पर खरा उतरता है। आत्मा को वह चलते-फिरते पौधे की हलचल गिनता है। इस प्रकार भौतिकवाद को नास्तिकवाद के समीप ही मानना चाहिए।

दूसरी ओर प्रच्छत्र नास्तिकवादी हैं जो पूजा, पुजापे की रिश्वत देकर या जीभ की लपालपी से उलटे सीधे सभी कामों की मनोकामना पूरी कराना चाहते हैं। साथ ही स्वर्गलोक में राजशाही मौज-मजा करने के रंग-बिरंगे सपने देखते हैं। सपने की अवधि तो किसी प्रकार कट जाती है, पर जब विलंब होने लगता है तो प्रत्यक्ष वैभव हाथ आया न देखकर परोक्ष स्वर्ग पर से भी आस्था खो बैठते हैं। साहस के अभाव में मन की बात तो नहीं कह पाते, पर मानने लगते हैं कि ईश्वर का पल्ला पकड़ना बेकार है, मन्त्र जप या पूजापत्री के झंझट में कोई सार नहीं है।

वस्तुत: यहाँ यह भुला दिया जाता है कि मन्त्र जप का लाभ मात्र जीभ की नोक हिला देने भर से नहीं मिलता और न ही छिट-पुट पूजा-पत्री की भेंट चढ़ा देने भर से उपासना पूरी हो जाती है। मन्त्र उपचार में जहाँ शब्द शक्ति का महत्व है, वहाँ उसके प्रयोक्ता का स्तर भी आवश्यक है। बारूद, गोली, कारतूस अपनी जगह अपना काम करते है, इस पर भी बन्दूक का अपना स्तर है। बढ़िया बन्दूकें सही और लम्बा निशाना लगाती हैं, जबकि गाँव के लुहारों द्वारा बनाये हुए तमंचे उतना काम नहीं कर पाते। इसलिए मन्त्र का उपयुक्त चुनाव करना तो आवश्यक है ही, पर इससे भी अधिक आवश्यकता इस बात की है कि प्रयोक्ता ने अपना स्तर पवित्र और प्रखर बना लिया हो। इसके लिए उसने आवश्यक तपश्चर्या की हो। मन्त्र जप का सत्परिणाम तभी मिलता है।

मन्त्र जप में श्रद्धा भी एक पक्ष है। जिस उपासना, देवसत्ता एवं क्रियाकृत्य पर अटूट श्रद्धा और अडिग विश्वास हो, उसका प्रतिफल भी चमत्कारी होगा। किन्तु यदि अन्यमनस्कता, उपेक्षापूर्वक, बेगार भुगतने, लकीर पीटने की तरह उसे किसी तरह निबाहते रहा जाय तो वही मन्त्र एक प्रकार से निष्फल, निरर्थक जैसा बन जायगा नाम मात्र का प्रतिफल ही उससे दृष्टिगोचर होगा।

श्रद्धा होने पर किसी संत की दी हुई भभूत भी बहुमूल्य औषधि जैसा, पुण्य प्रसाद जैसा फल देती है, किन्तु उसी को यदि अविश्वास-उपहासपूर्वक कौतूहल की तरह काम में ले लिया जाय तो उससे किसी बड़ी संभावना की आशा नहीं की जा सकती। श्रद्धा से पत्थर में भी देवता जैसी सामर्थ्य उत्पन्न हो जाती है। उसका अभाव हो तो प्रतिमा का खिलौने से बढ़कर और कोई अर्थ नहीं रह जाता।

कहा जाता है कि "शंका डायन और मनसा भूत"। झाड़ी से भूत इसी प्रकार उत्पन्न होते हैं। रात्रि के सुनसान जंगल में पीपल के पत्तों का खड़खड़ाना और उल्लू जैसे पक्षियों का विचित्र शब्दों में बोलना किसी डरपोक को भूतों की उपस्थिति का अनुभव कराता है और वह उतने भर से घबरा जाता है। इसी प्रकार गले में गायत्री का रक्षा कवच बाँधकर मनुष्य भयानक विपत्तियों के बीच में से गुजर जाता है। यह श्रद्धा का ही प्रतिफल है। अनेक व्यक्तियों को गायत्री महामन्त्र की उपासना के फलस्वरूप अनेक प्रकार के कष्टों से छुटकारा पाते और अनेक सुविधायें उपलब्ध करते हुए देखकर हमें यही अनुमान लगाना चाहिए कि उस मन्त्र जप में ऐसे वैज्ञानिक तथ्यों का समावेश अवश्य है—जिनके कारण उपासक की अंत: भूमि में आवश्यक हेर फेर होते हैं और वह असफलताओं एवं शोक-संतापों पर विजय प्राप्त करते हुए तेजी से समुन्नत, समर्थ एवं सफल जीवन की ओर अग्रसर होता है।

रामायणकार ने "मन्त्र परम लघु जासु बस" कहकर मन्त्र की सर्वोपरि शक्ति और महत्ता का वर्णन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया है। मन्त्र शक्ति की इतनी महत्ता होने पर भी सभी लोग वह सामर्थ्य नहीं जुटा पाते, उसकी सफलता में उन्हें संदेह बना ही रहता है। उसका कारण और कुछ नहीं, अंत: करण का गहरा और उथला होना अर्थात् श्रद्धा और विश्वास की कमी का होना ही है। मन्त्र में सन्निहित भावनाओं को प्रखर बनाने के लिए जिस परिष्कृत और समर्थ व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है, वह न जुटा पाने से मन्त्र अपना सामान्य प्रभाव ही अभिव्यक्त करके रह जाता है। उससे कुछ विशेष लाभ मिलता नहीं। व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने का कार्य वाणी की सत्यनिष्ठा, सरलता और मधुरता से प्रारंभ होता है और जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप में छा जाता है। जिस तरह मैले शीशे पर पड़ने वाली प्रकाश की किरणें अपना कोई प्रभाव नहीं दिखा पातीं, उसी तरह मलिन अंत:करण में पड़ने वाले मन्त्र का प्रकाश केवल मात्र उसी सफाई में लगा रहेगा। यदि व्यक्ति की जीवन दिशा अपने दोष-दुर्गुणों को ढूँढ़ निकालने और उनके स्थान पर सद्गुणों की प्रतिष्ठा की हुई हो तब तो उस परिमार्जन का भी महत्व है और उस स्थिति में मन्त्र जप का प्रभाव विलंब से ही सही देखने को मिल जाता है। पर यदि आहार-विहार, रहन-सहन, वाणी-व्यवहार द्वारा अंत:करण को मल-विक्षेप से लादते रहा गया हो तो कितना ही अच्छा और अधिक मन्त्र जप भी कोई प्रभाव-परिणाम प्रस्तुत न कर सकेगा।

सितार के तारों पर क्रम विशेष से उँगलियाँ रखने से उसमें से भिन्न-भिन्न प्रकार की ध्वनि-तरंगें स्वर-लहरियाँ निकलती हैं। उसी प्रकार मन्त्र के अक्षरों का क्रम जिस क्रम से ऋषियों ने बिठाया है, उसका अपना वैज्ञानिक महत्व है। गायत्री का अर्थ तो सीधा सादा है—भगवान हमारी बुद्धि को निर्मल कर दें, पर उसके अक्षरों का गुंथन इस प्रकार का है कि उसके जप से विशेष प्रकार के प्रभाव उत्पन्न करने वाली क्षमता प्रादर्भूत होती है। गायत्री महामन्त्र के जप से उत्पन्न पराध्वनि सृष्टि के सारे वातावरण के परणामुओं को कँपा देने की शक्ति से ओतप्रोत है, साथ ही जपकर्ता की भावना के अनुरूप अदृश्यलोक से प्रेरणा, शक्ति और सहायता भी खींच लाने में समर्थ है। गायत्री मन्त्र के अर्थ का भाव लिए अनेकों छन्द वेदों में विद्यमान हैं और सद्बुद्धि के निमित्त प्रार्थना करने वाली भी अनेकानेक ऋचायें हैं, किन्तु जो विशेषता आद्यशक्ति गायत्री में है वह और किसी में नहीं। यह शब्द गुंथन की ही विशेषता है।

मुख से निकलने वाली शब्द प्रक्रिया द्वारा दिन भर बातचीत का क्रम चलता रहता है, पर उससे मात्र विचारों, का, जानकारियों का, आदान-प्रदान होता है। कुछ बातें ऐसी ही बकवास-हँसी-ठिठोली जैसी भी होती हैं, जो अपने को यह सुनने वालों को मूर्ख बनाती या निरर्थक समय नष्ट करती रहती हैं। उनमें काम का सार तत्व बहुत कम होता है।

किन्तु मन्त्रोच्चार में प्रयुक्त होने वाली वाणी का प्रभाव भारी भरकम होता है। वह शब्द भेद का काम करती है। परिमार्जित व्यक्तित्वों की परिमार्जित वाणी को "वाक्" या "परावाक" कहते हैं। उसका प्रभाव सुनिश्चित रूप से होता है। नारदजी ने वाल्मीकि, ध्रुव, प्रहलाद, पार्वती, सावित्री आदि को जो परामर्श दिया, वह उनके पुराने जीवन-प्रवाह को उलट देने में समर्थ हुआ। यदि कोई दूसरा इसी प्रकार की सलाह देता तो उसका प्रभाव कदाचित ही कुछ पड़ता।

योगीजन मात्र वैखरी वाणी का ही प्रयोग नहीं करते। मात्र जीभ से शब्दों का उच्चारण ही नहीं करते। उनकी शेष तीन वाणियाँ भी मुखर रहती हैं "मध्यमा, परा पश्यंती वाणियाँ," जो मुँह से उच्चारित नहीं होतीं। इनमें मध्यमा चेहरे की भाव-भंगिमाओं से नेत्रों से प्रकट होती है। परावाणी के साथ विचार शक्ति और प्राणशक्ति जुड़ी होती है। वह कानों से सुनी तो नहीं जाती, पर प्रभाव इतना अधिक करती है जितना घंटों बोलते रहते पर भी नहीं हो सकता। पश्यंती वाणी अन्त:करण से अन्तरात्मा से निकलती है। उसी में शाप-वरदान देने की ऊँचा उठाने आगे बढ़ाने की सामर्थ्य होती है। बैखरी वाणी से बोलना तो परिवारी लोगों के बीच रहकर ही बालक सीख लेता है, पर अन्य उच्चस्तरीय तीन वाणियों को मुखर बनाने के लिए सात्विक आहार, सत्यवचन, मौन आदि से लेकर अन्यान्य कई प्रकार की साधनाएँ करनी पड़ती हैं।

ब्रह्मदेव के चार मुख हैं। उन्होंने उन चारों से चार वेदों का सृजन किया। यह चतुर्था प्रकटीकरण वस्तुत: बैखरी, मध्यमा, परा और पश्यंती इस चार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाणियों के ऊर्ध्वगामी उभार का अलंकारिक वर्णन है। यह कार्य ब्रह्मदेवता ने किया सो उसे आत्म देवता भी सम्पन्न कर सकता है। पुराणों की कथा है कि विष्णु भगवान की नाभि से उत्पन्न कमल नाल पर ब्रह्मा जी कई बार उतरे और ऊपर चढ़े । मन्त्र साधना में यही होता है उच्चारित होने के उपरांत स्थूल शब्द अन्तःकरण में मर्मस्थल की गहराई में उतरता है और उस शक्ति स्रोत की ऊर्जा से सम्पन्न होकर ऊपर आता है। जब वह ऊपर-आता है तो बैखरी में पश्यंती का वैसा ही प्रभाव होता है जैसा कि बिजली के सम्पर्क से धातु के तार में । वह मन्त्रवत् शब्द समस्त सृष्टि में हलचल उत्पन्न करता है। सूक्ष्म जगत को स्पंदित करता है और व्यक्ति को सामान्य न रहने देकर उसे दैवी शक्ति से समपन्न बना देता है।

अध्यात्म क्षेत्र में मन्त्र विद्या का जो कुछ भी चमत्कार कहा, सुना और देखा जाता है, उसे परिष्कृत एवं संयमित वाणी का ही प्रतिफल कह सकते हैं। इसके लिए मन्त्र साधक को, जपकर्ता को अपना व्यक्तित्व इस स्तर का विनिर्मित करना होता है, जिससे जिह्वा से उच्चारण किये मन्त्र अक्षरों में प्रयुक्त होने वाली वाणी मात्र ध्वनि न रहकर "वाक्" शक्ति के रूप में प्रकट हो सके और उसके प्रभाव से सूक्ष्म जगत में ऐसी हलचलें उत्पन्न हो सकें जो मन्त्र उद्देश्य के अनुरूप परिस्थिति एवं वातावरण उत्पन्न कर सकने में समर्थ हो सके।

मन्त्र-साधना में 'वाक्' शक्ति को विकसित करने के लिए मन, वचन और कर्म में ऐसी उत्कृष्टता उत्पन्न करनी पड़ती है कि जीभ को दग्ध करने वाला कोई कारण शेष न रह जाय। इतना कर लेने के उपरान्त जपा हुआ मन्त्र सहज ही सिद्ध होता है और उच्चारण किया हुआ शब्द असंदिग्ध रूप से सफल होता है। यदि वाणी दूषित, कलुषित, दग्ध स्थिति में पड़ी रहे तो उसके द्वारा उच्चारित मन्त्र भी जल जायेंगे । तब बहुत संख्या में बहुत समय तक जप, स्तवन, पूजा-पाठ आदि करते रहने पर भी अभीष्ट सत्परिणाम उपलब्ध न हो सकेगा। परिष्कृत जिह्वा में ही वह शक्ति रहती है कि उसके द्वारा उच्चारित मन्त्र प्रचण्ड और प्रभावशाली होता है और मनुष्यों के अंतःस्तल तथा अनन्त अन्तरिक्ष को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। ऐसे परिष्कृत वाणी को, "वाक्" को मन्त्र-साधना का प्राण कह सकते हैं। उसे साधक की कामधेनु एवं तपस्वी का ब्रह्मास्त्र कहने में तनिक भी अत्युक्ति नहीं है। इसी परिमार्जित जिह्वा को सरस्वती कहते हैं। मन्त्र की आत्मा वही है। सिद्धियों का उद्गम स्थल उसी को मानना चाहिए। इसी आधार पर मन्त्रों की चमत्कारी विशेषता उभरती है और चपकर्ता को ऋद्धि-सिद्धियों का स्वामी बनने का अवसर मिलता है।

वस्तुतः मंत्र सिद्धि में चार तथ्य सम्मिश्रित रूप से काम करते हैं—(१) ध्वनि विज्ञान के आधार पर विनिर्मित शब्द शृंखला का चयन और उसका विधिवत् उच्चारण, (२) साधक की संयम द्वारा निग्रहीत प्राण शक्ति और मानसिक एकाग्रता का संयुक्त समावेश, (३) उपासना प्रयोग में प्रयुक्ति होने वाले पदार्थ उपकरणों की भौतिक किन्तु सूक्ष्म शक्ति, (४) भावनाप्रवाह, श्रद्धा, विश्वास एवं उच्चस्तरीय लक्ष्य दृष्टिकोण। इन चारों का जहाँ जितने अंश में समावेश होगा वहाँ उतने ही अनुपात से मन्त्र शक्ति का प्रतिफल एवं चमत्कार दिखाई पड़ेगा। इन तथ्यों की जहाँ उपेक्षा की जा रही होगी और ऐसे ही अन्धाधुन्ध गाड़ी धकेली जा रही होगी—-जल्दी-जल्दी वरदान पाने की धक लग रही होगी वहाँ निराशा एवं असफलता ही हाथ लगेगी।

मन्त्र विज्ञान भी अन्यान्य विज्ञानों की तरह ही एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसे धैर्य एवं सावधानी के साथ अपनाना पड़ता है। उसके हर अंग उपांग को यथास्थान नियोजित करना पड़ता है। घड़ी का हर कल- पुर्जा अपने स्थान पर सही रूप से फिट हो तभी वह ठीक तरह चलती और समय बताती है। इसी प्रकार मन्त्र विज्ञान के उपरोक्त तीनों आधार यदि सतर्कतापूर्वक व्यवस्थित किये जा सकें तो कोई कारण नहीं कि अभीष्ट परिणाम प्राप्त न किया जा सके। मन्त्र विद्या निष्फल एवं उपहासास्पद इसीलिए बनती जाती है कि कुपात्र, उतावले और अवैज्ञानिक दृष्टिवाले लोग साधना की विडम्बना रचते हैं और हथेली पर सरसों न जमे तो तरह-तरह के लांछन लगाते हैं।

मन्त्र शक्ति में ध्वनि-प्रवाह का सही होना प्रथम आधार है। सर्वविदित हैं कि बहते पानी में किन्हीं आघातों के कारण लहरें उत्पन्न होती हैं और वे प्रवाह की दिशा में ही बहती हैं । रुके जल में वे चारों ओर भी फैलती हैं। वायु बहती तो है, पर उसकी लहरें प्रवाह की ओर ही नहीं वरन् सभी दिशाओं में फैलती हैं। शब्द वस्तुतः एक प्रकार की कम्पन लहरें ही हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य के मन में कोई विचार उत्पन्न होता है। मस्तिष्क को अभ्यास है कि किस विचार से बाह्य जगत को परिचित कराने के लिए किन स्वर यन्त्रों में किस प्रकार की हलचल की जानी चाहिए? इच्छा शक्ति से प्रेरित पूर्वाभ्यास उच्चारण यन्त्रों में जो उभार उत्पन्न करता है उससे मुख में भरी हुई तथा बाहर की वायु को आघात लगता है, और उससे ध्वनि-तरगें उत्पन्न होनी आरम्भ हो जाती हैं। हमारे कान उन्हें ही सुनते हैं और उनका विश्लेषण करके मस्तिष्क यह निर्णय करता है कि किसने, किस प्रयोजन के लिए क्या कहा?

इच्छा से गति और गति से तरंगें उत्पन्न होती हैं। यह कम्पन मोटे शब्दों में वायु से हुए कहे जा सकते हैं, पर वस्तुत: वे वायु के भीतर रहने वाले एक सूक्ष्म तत्व 'ईथर' से होते हैं। साधारणतया एक सैकिण्ड में ३२ तक होने वाले कम्पनों को हमारे कान सुन लेते हैं, इससे कम होंगे तो सुने न जा सकेंगे इस प्रकार अधिक से अधिक ६८ तक सुन सकते हैं इससे ज्यादा होंगे तो भी कानों को उन्हें सुन-समझ सकना सम्भव न होगा। ईथर तत्व के परमाणु अत्यन्त सूक्ष्म और अति सम्वेदनशील हैं। वे एक सैकिण्ड में ३४ अरब तक कम्पन उत्पन्न कर सकते हैं। जब यह कम्पन चरमसीमा पर पहुँचते हैं तो उनसे एक अखण्ड प्रकाश की किरणें निकलने लगती हैं। इन्हीं किरणों को 'एक्सरेज' कहा जाता है।

इन किरणों में अद्‌भुत गतिशीलता होती है, वे एक सैकिण्ड में प्राय: एक करोड़ मील चल लेती हैं। रेडियो टेलीविजन आदि का निर्माण इसी विज्ञान के आधार पर सम्भव हुआ है। वायु के कम्पन नष्ट हो जाते हैं, पर ईथर के कम्पनों को कभी नाश नहीं होता वे सदा अमर रहते हैं। जैसे-जैसे वे पुराने होते जाते हैं वैसे-वैसे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की सतह पर जाकर स्थिर हो जाते हैं। जहाँ वे बलिष्ठ होने पर अपने समानधर्मी अन्य कम्पनों को अपनी ओर खींचते हैं अथवा दुर्बल होने पर दूसरों की ओर खिंच जाते हैं। इस प्रकार जीर्ण होने पर भी एक नई चेतना को संघ शक्ति के आधार पर जन्म देते हैं और ऐसे चुम्बकत्व का सृजन करते हैं, जो उन शब्दों के साथ जुड़ी हुई चेतनाओं से मनुष्यों को प्रभावित कर सके। यहाँ भी सहधर्मिता का नियम लागू होता है जिन मनुष्यों के मस्तिष्क की स्थिति उन प्राचीन किन्तु संगठित शब्द कम्पन शक्ति से मिलती-जुलती होगी। असमानता की स्थिति में कोई विचार या शब्द प्रभाव किसी को प्रभावित नहीं कर सकता केवल अपनी उपस्थिति का परिचय दे सकता है।

ध्वनि एक प्रत्यक्ष शक्ति है। वह यों निराकार है; पर साकार बनाई जा सकती है। अब ध्वनियों के फोटो लिये जाने लगे हैं और उस आधार पर उस व्यक्ति की आकृति पहचानी जा सकती है जिसने अमुक ध्वनि अपने मुँह से निकाली थी। आवाज की फोटोग्राफी के विज्ञान ने इस सचाई को सामने रख दिया है कि शब्द एक शक्तिशाली पदार्थ है; जिस पर अणु शक्ति का, बिजली का, ताप का उपयोग होता है वैसा ही शब्द का भी हो सकता है। मन्त्रों के शब्द-प्रवाह का जो चित्र बनता है उसी के आधार पर उनके अधिष्ठाता देवताओं की आकृतियों का निर्धारण किया गया है और मन्त्र सिद्धि में उन देवताओं के पूजन ध्यान से निर्धारित ध्वनि प्रवाह को सशक्त बनाने का अध्यात्म विज्ञानियों द्वारा निर्देश किया गया है।

कैलिफोर्निया के वायु सेना ट्रेविस केन्द्र के एक २५ वर्षीय वायु सैनिक का क्रोर्ट मार्शल हुआ। वह टेलीफोन केन्द्र पर एक्सचेंज पर नियुक्त लड़कियों के साथ अश्लील छेड़-छाड़ करने का अपराधी पाया गया। यों वह अपना नाम पता प्रकट न होने देने के सम्बन्ध में पूरी सतर्कता बरत रहा था तो भी पुलिस ने वैज्ञानिक उपकरणों को सहायता से उसे पकड़ लेने में सफलता प्राप्त कर ही ली।

आवाज की फोटोग्राफी का प्रयोग इस प्रयोजन के लिए किया गया। जो आवाज टेलीफोन पर आती थी उसका फोटो लिया गया। फिर सम्भावित अपराधी की आवाज से उसे मिलाया गया तो वे प्रिन्ट बिल्कुल मिल गये। यद्यपि अपराधी इन्कार करता रहा तो भी अदालत ने सबूत को प्रामाणिक माना और उसे सजा सुना दी।

आवाज का फोटो, विज्ञान की अनौखी देन है। इस पद्धति के आविष्कारक हैं डा. कर्स्टा उन्होंने ध्वनि अंकन—ब्वाइस स्पेक्ट्रोग्राम की तीन आयाम वाली ऐसी प्रक्रिया ढूँढ़ निकाली है। जिसके अनुसार किसी की भी आवाज का फोटो लिया जा सकता है। उनका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहना है कि जिस प्रकार किसी की अँगूठा छाप किसी दूसरे से नहीं मिलती उसमें भिन्नता अवश्य होती है उसी प्रकार किसी की आवाज भी दूसरे से नहीं मिलती। अस्तु आवाज के फोटोग्राफ भी किसी अन्य की आवाज के समान नहीं होते। इस पद्धति के अनुसार खींचे गये आवाज के फोटो पूर्णतया प्रामाणिक माने जाते हैं और उनके आधार पर महत्वपूर्ण गुप्त रहस्यों को जानने एवं अपराधियों को पकड़वाने में बहुत सहायता मिलती है।

डा. कर्स्टा के अनुसार हर बालक बोलना सीखते समय अपने होट, दाँत, जीभ, तालू, कण्ठ आदि का प्रयोग एक विशेष ढंग से करता है और उच्चारण की व्यवस्था बनाता है; इससे मांस—पेशियों में जो हलचल होती है। उसका दवाब मुँह में भरी तथा बाहर फैली हवा पर पड़ता है। इस दवाब से ध्वनि उत्पन्न होती है। चूँकि उच्चारण यन्त्रों की हलचल का उतार-चढ़ाव, हर किसी का स्वनिर्मित एवं अलग होता है इसलिए मुख से निकले शब्दों में भी कुछ न कुछ अन्तर रहता है। यह अन्तर ही ध्वनि-भिन्नता का आधार बनता है और किसी की आवाज किसी से न मिलने का क्रम चल पड़ता है।

न्यूजर्सी के डा. मार्टिमर श्वार्ज ने शरीर की आन्तरिक स्थिति का पता लगाने और रुग्णता के कारणों का विश्लेषण करने के लिए मनुष्य की आवाज को महत्वपूर्ण आधार माना है वे कहते हैं जब स्वेस्थेस्कोप के माध्यम से हृदय की धड़कन में रहने वाले अन्तर जानकर रक्त-संचार की स्थिति जानी जा सकती है तो शरीर की भीतरी स्थिति से प्रभावित होने वाले उच्चारण को बारीकी से समझने पर किसी की अन्त: व्यथा एवं स्थिति को समझना क्यों अशक्य होगा? उनके प्रयोगों ने रोग निदान के क्षेत्र मे एक नया आधार खड़ा किया है।

बीज मन्त्रों का अर्थ कुछ नहीं उनकी शक्ति परिधि अवश्य है। मन्त्र शास्त्र में ह्रीं, श्रीं, क्लीं, यं, वं, रं, लं, ऐं ओं, हुँ आदि अनुस्वारान्त एकाक्षरी कितने ही बीज मन्त्रों का उल्लेख और उनके प्रभाव तथा विधान का वर्णन। यह बीज विज्ञान विशुद्ध रूप से शब्द शक्ति पर अवलम्बित है। शब्द की अपनी शक्ति एवं प्रक्रिया है।

पदार्थ विज्ञान के अनुसार शब्द से कम्पन उत्पन्न होते हैं। साथ ही यह भी एक तथ्य है कि मुख अथवा किसी पदार्थ विशेष में शक्ति का प्रयोग होने से शब्द प्रवाह विनिसृत होता है। शब्द अपने आप में कम्पन प्रवाह की एक स्थिति विशेष है। बाहरी वायु से जब हमारी भीतरी वायु की टक्कर होती है तो शब्दोच्चार—स्वर प्रवाह आरम्भ होता है।

तीर्थ स्थान किसी समय साधना पीठ के रूप में बने विकसित हुए थे। वहाँ अमुक साधना के अभीष्ट उपयुक्त वातावरण—आवश्यक साधन एवं अनुभूत मार्ग-दर्शन प्रस्तुत रहता था। अभीष्ट लक्ष्य की पूर्ति को लोग वहाँ जाते थे और सफल मनोरथ होकर आते थे। आज तीर्थों की दुर्दशा सर्वविदित है। यह उस मूल प्रयोजन से सर्वथा भिन्न है जिनके लिए इनकी रचना की गई थी।

यों शरीर भी एक छोटा किन्तु पूरा विश्व है। इसमें सभी तीर्थों के बीज पीठ विद्यमान हैं। इनमें से कोई एक अथवा एक साथ अनेक पीठों को जागृत एवं प्रखर बनाया जा सकता है। कोई-कोई व्यक्तित्व मूर्तिमान शक्ति पीठ होते हैं इन्हीं सिद्ध पुरुष मानवी चेतना में घुसा हुआ विजातीय तत्व है उसे निकालने हटाने में थोड़ा-सा ही प्रबल प्रयत्न सफल हो सकता है। साधना इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिये है। साधन समर में यदि आत्म-तत्व बाजी ले गया तो फिर पौराणिक समुद्र मंथन में प्राप्त १४ रत्नों से भी अधिक मूल्य की अगणित दैवी सम्पदाएँ प्राप्त होती हैं। उन्हें पाकर मनुष्य आप्त काम हो जाता है फिर और कुछ पाना शेष नहीं रह जाता। साधन काल दैवी आसुरी संघर्षों की तुमुल युद्ध की—अवधि है। इसमें पूरे कौशल-चातुर्य एवम् साहस का प्रयोग करना पड़ता है। यह युद्ध उपेक्षा पूर्वक—ज्यों-ज्यों करके—ढीले-पोले मन से बेगार भुगतने की तरह नहीं लड़ा जा सकता है। उसमें पूरे मनोयोग एवम् प्रबल पराक्रम की आवश्यकता पड़ती है।

श्रेय पथ पर गतिशील ऊर्ध्वगामी मन:स्थिति को दैवी कहते हैं और पतनोन्मुख वासना, तृष्णा में निरत आकांक्षा स्तर को 'आसुरी' कहा जाता है। इनमें से प्रथम आकर्षक और द्वितीय विकर्षक चेतना-प्रवाह है। व्यक्ति सत और तम का सम्मिलित उत्पादन है। रज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दोनों की मध्य स्थिति हैं। तम को सत की ओर ले जाने में मध्यवर्ती स्थिति की समुद्र-मंथन से तुलना की जाती है। दोनों ओर रस्साकसी होती है। चिर अभ्यस्त पतन क्रम अपने बन्धनों को ढीला नहीं करना चाहता। साधक उसे उत्थान की ओर बढ़ाने में प्रयत्नशील है फलतः समुद्र मंथन की—महाभारत की—संघर्षात्मक स्थिति हमारे आन्तरिक धर्म-क्षेत्र, कर्म क्षेत्र में उत्पन्न हो जाती है। असुरता को सौभाग्य मिल गया।

साधना जब साधक का सर्वप्रिय विषय बन जाय—उसमें निरत रहने को स्वयमेव मन चले—उन क्षणों को घटाने की नहीं बढ़ाने की ललक रहे—उपासना से उठने पर शरीर में स्फूर्ति और मन में सरसता लगे तो समझना चाहिए कि परिपक्वता आ गई और इसका श्रेयस्कर सत्परिणाम अत्यन्त सन्निकट है। आरम्भ में यह स्थिति बलपूर्वक उत्पन्न करनी पड़ती है। कल्पना और संकल्प शक्ति का उपयोग करके वैसी मानसिक स्थिति नकली रूप में बनानी पड़ती है। थोड़े समय में वह स्थिति स्वाभाविक बन जाती है। बलपूर्वक मारधाड़ और धड़पकड़ द्वारा बलात्कारपूर्वक उच्चस्तरीय मनःस्थिति बनाने के काल को ही साधना काल कहते हैं। जब वह स्थिति सहज बनी रहने लगे तो रामझना चाहिए कि सिद्धावस्था प्राप्त हो गई।

आत्मा का परमात्म सत्ता के साथ घनिष्ट—एकाकार—तादात्म्य तन्मय होने की स्थिति को साधना की प्रखरता कहते हैं। जब दोनों का सघन मिलन होता है तो आत्म-विभोर स्थिति को समाधि कहा जाता है। आवश्यक नहीं कि उस स्थिति में योगनिद्रा अथवा मूर्छा ही आवे। ज्ञान-साधना में स्थिति प्रज्ञ की—कर्म साधना में अनासक्त कर्त्तव्य-परायण की—भक्ति साधना में व्यापक स्नेह-सौजन्य की—स्थिति प्राप्त होती है। इससे मूर्छा तो नहीं आती पर आत्मज्ञान का आलोक एवं सन्तोष समाधान का अनवरत अनुभव होता है। साधक अपने को भगवान में और भगवान को अपने में एकाकार देखता है। दोनो की इच्छाएँ एवं क्रियाएँ एक ही स्तर की होती हैं। परमात्मा का क्षेत्र व्यापक है और आत्मा का सीमित। एक अणु है—दूसरा विभु—इतने पर भी दोनों के स्तर में अद्भुत साम्य रहता है। परमात्मा को अपने सुख की चिन्ता नहीं वह मात्र ब्रह्माण्ड चेतना को सुस्थिर, सुविकसित बनाने के लिए जुटा रहता है और उस कर्तृत्व में खोया, समाया दीखता है। साधक की परिष्कृत आत्मा बिलकुल इसी स्तर की होती है। उसे अपने धन कुटुम्ब की—यश वर्चस्व की नहीं—लोकमंगल की चिन्ता रहती है। वही उसे अपना सुखद कर्तृत्व परिलक्षित होता है। उसी में निरत रहना और स्वाभाविक एवं सन्तोषजनक प्रतीत होता है। जब मान्यता, निष्ठा, श्रद्धा विकसित होकर गुण, कर्म, स्वभाव में ओत-प्रोत हो जाय—कर्म में परिलक्षित होने लगे तो समझना चाहिए कि नाली और गंगा के मिलन में जैसा एकाकार होता है वैसा ही आत्मा और परमात्मा का सुखद मिलन है।

इन्द्रिय संयम और मानसिक एकाग्रता की दोनों धाराएँ मिलकर मानवी विद्युत शक्ति का निर्माण करती हैं। बिजली ठण्डे और गरम दो तारों के द्वारा प्रवाहित होती है। इसी प्रकार शरीर और मन की शक्तियों को वासना और तृष्णा में बिखरने न देने से वह सामर्थ्य जमा होती है जिस प्राण शक्ति अथवा ओजस् कहा जाता है। योगशास्त्र में साधना क्षेत्र के छात्रों को यह नियम बरतने का शारीरिक और मानसिक समय बरतने की प्राथमिक तैयारी करने के लिए कहा गया है। यदि इन दोनों बड़े छेदों में होकर मात्र विद्युत नष्ट होती रहे तो फिर मन्त्र रूपी इन्जन चलाने के लिए तेल, कोयला, ईंधन—कहाँ से आवेगा मात्र शब्दोच्चारण का नाम ही तो मन्त्र-साधना नहीं है।

प्राण स्वसंचालित है और मन्त्र पर संचालित अपनी प्राण शक्ति को उग्र बनाना साधक का प्रथम कर्म है। मन्त्र वह कमान है जिस पर चढ़ाकर विभिन्न स्तर के तीर फेंके जा सकते हैं। फेंकना धनुष का अर्थात् परिष्कृत व्यक्तित्व का काम है। यदि वह सही रूप काम न कर रही होगी तो मन्त्र की विधि एवं विद्या के सही काम करने पर भी अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति हो सकेगी। इसी प्रकार प्राण शक्ति अकेली महत्वपूर्ण होते हुए भी मन्त्र शक्ति का उपयोग किये बिना प्रसुप्त शक्तियों के जागरण का कार्य न कर सकेगी।

योग और तप की मानसिक और शारीरिक साधन में शक्ति का उद्भव होता है। पर यदि यह उपार्जन काल में अथवा उत्पन्न होने के पश्चात् सुरक्षित न रखा गया तो वह देखते-देखते बारूद की तरह जलकर भस्म हो जाती है। खुली बोतल में रखी हुई स्प्रिट उड़ जाती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है इसी प्रकार असुरक्षित रखी हुई शक्ति यों ही निरर्थक चली जाती है।

उपार्जन काल में सात्विक आहार-विहार, ब्रह्मचर्य, मौन, एकान्त सेवन, परिमार्जित दिनचर्या, मनन-चिन्तन द्वारा साधन को सींचा जाता है। उसके उपरान्त उसे सस्ती प्रशंसा लूटने के लिए दिखाये जाने वाले चमत्कारों से बचाया जाता है। सिद्धियों को लोभ, मोह के उथले प्रयोजन पूरा करने में भी खर्च किया जा सकता है और अपने को तथा दूसरों को आत्म-कल्याण की दिशा में प्रेरित करने के लिए भी उसका उपयोग हो सकता है। स्वल्प श्रम में अधिक भौतिक सफलताएँ पाना कर्म विज्ञान के विपरीत है। उसके लिए यदि मन्त्र शक्ति का प्रयोग किया जायेगा तो वह देर तक टिक न सकेगी और उसी खिलवाड़ में नष्ट हो जायेगी। हाँ यदि आत्म-कल्याण के लिये उसका प्रयोग होगा तो उससे उसमें और भी तीव्रता आयेगी जैसे कि चाकू को पत्थर पर रगड़ने से उसकी धार तेज होती है और जंग छूटकर चमक आती है।

मन्त्र सिद्धि के लिए साधक के शरीर को पोषण देने वाली उसका रक्त और ओजज् बनाने वाली वस्तुओं का विशेष महत्व है। आहार से शरीर और विहार से मन परिपुष्ट होता है। पदार्थों में परसंचालित शक्ति है, जिसे स्वसंचालित शक्ति के सहारे गतिशील किया जा सकता है। कोयला, तेल और पानी में भाप बनाने की शक्ति, पर वह आग एवं प्रयोक्ता की स्वंसंचालित शक्ति के सहारे ही प्रकट हो सकती है। पदार्थों की शक्ति को भी साधना काल में प्रयोग किया जाता है। अनेक विधि निषेध एवं वस्तु प्रयोग इसी दृष्टि से बने हैं। किस मन्त्र की सिद्धि के लिये किन पदार्थों से हवन किया जाय आहार में क्या वस्तुएँ प्रयुक्त की जायें ? पूजा के उपकरणों में किस स्तर को प्रधानता दी जाय। आदि की विधियाँ—परसंचालित शक्ति को स्वसंचालित शक्ति का साथ देने के लिए उभारने के लिए है। इन्जन में भाप बनाने और उसे पहिये घुमाने में लगाने की प्रक्रिया इसी प्रकार सम्पन्न होती है।

आहार की परिधि बिहार तक विस्तृत है। इसलिए साधन सफलता के क्षेत्र में उसे भी सम्मिलित रखा गया है। किन्तु साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जो खाया जाता है वही आहार नहीं है। नासिका और रोम कूपों द्वारा साँस ली जाती है, उसमें ऑक्सीजन आदि कितने ही तत्व घुले रहते हैं, वह भी आहार ही है। इन्जेक्शनों द्वारा आहार शरीर में पहुँचाने की बात सर्वविदित है। हवन, यज्ञ को भी नासिका मार्ग से पहुँचाया गया इन्जेक्शन ही माना जाना चाहिए। अनुष्ठानों में हवन, यज्ञ का विधान जोड़कर रखा गया है वह औषधि का सूक्ष्म एवं कारण भाग शरीर द्वारा सोखे जाने की प्रक्रिया ही है। अमुक वृक्ष के तले—अमुक वनस्पतियों का रस का सेवन या स्नान, उवटन, मालिश आदि के प्रयोग भी इसी प्रयोजन की पूर्ति करते हैं।

आहार में विशिष्ट सूक्ष्म गुणों से युक्त धान्य, शाक, फल, दूध आदि का ग्रहण करना—जहाँ से उन्हें प्राप्त किया गया है, उन स्रोतों को अधिकाधिक पवित्र एवं प्रखर बनाना यह भी साधना का ही एक अंग है। किस वृक्ष की लकड़ियों से, किन उपकरणों से, किन व्यक्तियों के सहयोग से वह आहार बनाया गया है और किस मनःस्थिति में उसे खाया गया है यह प्रक्रिया साधक के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अभक्ष्य एवं निकृष्ट स्तर का निकृष्ट वातावरण में—निकृष्ट व्यक्तियों द्वारा पकाया, परोसा भोजन साधक के सारे श्रम को निरर्थक बनाकर रख देता है। इसलिए उपासना काल में आहार पर सर्वप्रथम ध्यान देना पड़ता है। बिहार भी इसी कोटि में आता है—विहार का तात्पर्य समग्र दिनचर्या से है उसे सात्विक रहना चाहिए।

आहार के भले-बुरे, घटिया-बढ़िया होने का परिणाम शरीर पर सहज ही देखा जाता है। हमारा प्रमुख आहार वनस्पतियाँ ही हैं। दूध, शहद एवं मांस आदि भी प्राणियों द्वारा किया गया वनस्पतियों का रूपान्तरण ही है। वस्तुतः शरीर का निर्वाह वनस्पतियं द्वारा ही होता है। मनुष्य में जिस प्रकार स्थूल—सूक्ष्म और कारण शक्तियाँ होती हैं, उसी प्रकार वनस्पतियों की भी होती हैं। तुलसी, पीपल, आँवला आदि को, महत्व उनकी दिव्य-करण शक्ति को देखते हुए दिया गया है। चिकित्सकों द्वारा वनस्पतियों की—रासायनिक सूक्ष्म शक्तियों का लाभ उठाया जाता है। स्थूल रूप उनका वह है जो रंग, रूप, गन्ध, स्वाद आदि के आधार पर जाना जाता है।

विहार का एक अत्यन्त शक्तिशाली पक्ष है—ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य का मोटा अर्थ वीर्यपात न करना माना जाता है वस्तुतः उसका अभिप्राय शरीर और मन की समस्त चेतनाओं— आकांक्षाओं एवं वासनाओं को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अस्त-व्यस्त होने से रोकना है। बन्दूक की नली में थोड़ी-सी बारूद की शक्ति को एक दिशा में प्रयुक्त किया जाता है। तभी वह अपनी प्रचण्ड शक्ति का परिचय देती है। यदि उतना ही बारूद खुले मैदान में बखेरकर आग लगाई जाय तो वह भक्क से जल जायगी और विनोद मात्र प्रस्तुत करेगी। इन्द्रियों की—मानसिक चेतना की—उपभोगों को अन्य दिशाओं में अस्त-व्यस्त न करके अभीष्ट अध्यात्म प्रयोजन में लगा दिया जाय तो निस्सन्देह चमत्कार होता है। औषधि परिधि में आहार के साथ विहार को भी लिया गया है। शरीर के साथ मन का घोषणा भी अभीष्ट है।

ब्रह्मचर्य विज्ञान को एक प्रकार से मानवी विद्युत विज्ञान कहना चाहिए। काम-क्रीड़ा का प्रत्येक क्रिया कलाप मात्र इन्द्रिय सुख या मानसिक उल्लास ही उत्पन्न नहीं करता वरन् नर-नारी की विद्युत शक्ति का भी एक दूसरे में आवान्तरण करता है। नारी शरीर की विद्युत आकर्षक और नर-शरीर की विकर्षक होती है। रति के स्खलन-क्षेत्रों में नारी खींचती है और नर फेंकता है यह प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। यही क्रम शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों के बारे में भी है। काम-क्रीड़ा में निरत होकर साधक यदि नर हो तो उसे गँवाना हीं पड़ेगा । सहयोगिनी नारी को यत्कंचित लाभ भी हो सकता है, पर साधक की दिव्य-क्षमता क्षीण होती और उसकी सफलता का मार्ग लम्बा हो जायेगा। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए ब्रह्मचर्य को महत्त्व दिया गया है।

सिद्धि का चौथा आधार है औषधि । अर्थात् उपचार में प्रयुक्त होने वाली वस्तुएँ । औषधि का अर्थ यहाँ वह नहीं है जो रोगी को ज्वर आदि रोगों के निवारण के लिए चिकित्सकों द्वारा दी जाती है। अध्यात्म प्रयोजनों में औषधि शब्द उन वनस्पतियों के अर्थ में आता है जो मुख नासिका रोमकूप आदि छिद्रों द्वारा शरीर में प्रवेश कराई जाती हैं और उनकी सूक्ष्म शक्तियों का अपनी चेतना में समाविष्ट करके आत्म-सत्ता को इस योग्य बनाया जाता है कि वह मन्त्र शक्ति से ठीक तरह लाभान्वित हो सके।

साधना ग्रन्थों से वनस्पतियों के अनेकानेक विधि-विधान शास्त्रकारों ने बताये हैं। माला किस वृक्ष के फल, मूल या मध्य भाग की बनी हो—आसन, कुशा, खजूर आदि किसका बना हो?कमण्डल, नारियल, लौकी आदि किसके फल से बना हो? बालों को धोने में—शरीर पर लेपन में—किस मिट्टी या किस वनस्पति का उपयोग किया जाय? हवन-सामग्री में किस प्रयोजन के लिए किन वनस्पतियों का और किन समिधाओं का किस प्रकार प्रयोग किया जाय?यह सारे विधान वस्तुतः साधक ही आहार-प्रक्रिया में हो सम्मिलित होते हैं।

मन्त्र विद्या में प्रयुक्त होने वाला चौथा तत्व है—भावना। साधना की श्रद्धा, उपासना विज्ञान पर इतनी गहरी होनी चाहिए के उसमें संशय की—अविश्वास की कहीं कोई गुञ्जायश न रहे। परीक्षा बुद्धि, कौतूहल एवं शंकालु मन लेकर की गई साधना निष्फल चली जाती है। श्रद्धा अपने आप में एक शक्ति है। पैट्रोल, भाप, बिजली की तरह उसकी भी अपनी सामर्थ्य है। श्रद्धालु साधक पूर्णरूपेण सफल होकर रहते हैं जबकि शंकाशीलों को खाली हाथ रहना पड़ता है। विश्वास और संकल्प का सत्परिणाम भौतिक जीवन में पग-पग पर देखा जा सकता है आध्यात्मिक प्रगति एवं सफलता के लिए तो उसे प्राण ही कहना चाहिए। साधक का मन्त्र कि पर अटूट विश्वा, होना चाहिए और उसे पूर्ण श्रद्धा, एकाग्रता, मनोयोग एवं भावनापूर्वक अपने क्रिया कृत्य में संलग्न होना चाहिए।

उपासना जिस प्रयोजन कि लिए की जा रही हो वह उच्चस्तरीय होना चाहिए। भौतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए उसे प्रयुक्त नहीं करना चाहिए। संसार सुख तो योग्यता, कुशलता एवं पुरुषार्थ की कीमत पर पाये जाते हैं, उन्हें उसी आधार पर खरीदना चाहिए। आध्यात्मिक शक्तियों का उपयोग सम्पत्ति बढ़ाने के लिए विभूतियों के अभिवर्धन में ही किया जाना चाहिए। उनके आधार पर आन्तरिक क्षमताएँ विकसित की जानी चाहिए।

साधक को अपना व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व उत्कृष्ट रखना चाहिए। उसका दृष्टिकोण सिद्धियों का-चमत्कारों का प्रदर्शन करने के लिये बाल-कौतूहल नहीं अपनाना चाहिए वरन् देव मानव की तरह आत्म-कल्याण एवं विश्व-कल्याण के लिए सच्चे हृदय से इतना निष्ठावान होना चाहिए कि लिप्सा-लालसाओं से विरत होकर अन्तरात्मा, ज्ञान-विज्ञान में रस लेने लगे। जिसका चिन्तन और कर्तृत्व महान् है वस्तुतः उसी की भावना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शिव की जटाओं की तरह स्तर की मानी जा सकती है कि उस पर मन्त्र शक्ति रूपा अध्यात्म गढ़ा का अवतरण सम्भव हो सके।

मन्त्र साधना के आधार और चमत्कार

मन्त्र साधना भी यन्त्र साधना की तरह ही एक विशुद्ध विज्ञान है। यन्त्रों के सिद्धान्त, निर्माण, सञ्चालन, सुधार में दक्षता प्रस्तुत करना ही यन्त्र विद्या का आधार है। यह प्रक्रिया ठीक रहे तो यन्त्रों की क्षमता से समुचित लाभ उठाया जा सकता है। पर यदि इन प्रकरणों में त्रुटि रहे तो मशीनें समय और धन की बर्बादी ही करती हैं। ठीक इसी प्रकार मन्त्र साधना के सभी प्रयोग, प्रकरण सही हों तो उनका लाभ प्राप्त किया जा सकता है अन्यथा अधूरा और अस्त-व्यस्त साधना क्रम अपनाने पर निराशा और उपहार का ही भाजन बनना पड़ता है।

भौतिक विज्ञान वाह्य जगत को प्रभावित करता है और जड़ प्रकृति में सन्निहित शक्तियों को उपयोग योग्य बनाकर लाभकारी परिणाम उपस्थित करता है। अध्यात्म विज्ञान अन्तरंग क्षेत्र को प्रभावित करता है और चेतन प्रकृति को प्रदीप्त कर उससे सर्व समर्थ व्यक्तित्व का निर्माण करता है। भौतिक विज्ञान सुख साधनों का उत्पादन करता है। शरीर को अधिक सुविधाजनक स्थिति में रखने के आधार जुटाता है। यही उसकी परिधि है। अन्तः चेतना तक न तो उसकी पहुँच है और न उस स्तर की क्षमता ही वह उत्पन्न कर सकता है।

यह जगत जड़ और चेतन का सम्मिश्रण है। प्राणधारियों के भीतर चेतना रहती है और बाहर पञ्च भौतिक कलेवर चढ़ा होता है। दोनों के सम्मिश्रण से ही प्राणि जगत की विविध हलचलें दिखाई पड़ती हैं। नदी, पर्वत जैसे सर्वथा जड़ पदार्थों की बात अलग है—जहाँ चेतना है वहाँ इस बात की भी आवश्यकता अनुभव की जाती है कि वस्तुओं और शरीरों की तरह ही चेतना को भी स्वच्छ, स्वस्थ और सुविकसित रखा जाय। इसी क्रिया-कलाप को अध्यात्म कहते हैं।

जड़ प्रकृति की शक्तियों का अधिकाधिक परिचय भौतिक विज्ञान ने सर्वसाधारण के लिए सुलभ किया है। अग्नि, विद्युत, ईथर, अणु-शक्ति तरंगें, चुम्बक आदि भौतिक शक्तियों का उपयोग कितना चमत्कारी परिणाम प्रस्तुत करता है यह सर्वविदित है। चेतन प्रकृति का स्तर और भी ऊँचा है। वस्तुतः चेतन का ही जड़ के ऊपर अधिकार है। जलयान कितना ही बड़ा क्यों न हो चेतन सञ्चालक के बिना कुछ कर न सकेगा। अन्तरिक्ष में मानव रहित राकेट स्वसञ्चालित लगते भर हैं वस्तुतः उन्हें भी धरती पर बैठे हुए वैज्ञानिक ही दिशा देते और नियन्त्रण करते हैं। रेलगाड़ी कितनी ही कीमती क्यों न हों, जीवित ड्राइवर के बिना वह टूटी चट्टान की तरह निरर्थक है। प्राण के बिना शरीर का क्या उपभोग? उपभोक्ता रहित सम्पदा तो समुद्र तल और भूगर्भ में न जाने कितनी दबी पड़ी है। महत्व उतनी का ही है जितनी कि चेतन प्राणी उसका उपयोग कर सके। जड़ पदार्थों की तरह जड़ विज्ञान भी तभी उपयोगी हो सकता है जब उसका चेतन प्राणी द्वारा नियन्त्रण एवं उपयोग किया जाय। तात्पर्य यह है कि जड़ की तुलना में चेतन का मूल्य महत्व अत्यधिक है। इसी अनुपात से भौतिक विज्ञान से अध्यात्म विज्ञान की महत्ता एवं उपयोगिता बढ़ी-चढ़ी है।

भौतिक विज्ञान के प्रत्यक्षीकरण में प्रयुक्त होने वाले उपकरण 'यन्त्र' कहलाते हैं और आत्म विज्ञान से लाभान्वित होने के माध्यम 'मन्त्र' कहे जाते हैं। यन्त्रों के बिना वैज्ञानिक तथ्यों से लाभ नहीं उठाया जा सकेगा। इसी प्रकार मन्त्र रहित अध्यात्म सिद्धान्त मात्र बनकर रह जायगा उसे प्रत्यक्ष न किया जा सकेगा।

समग्र विज्ञान को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—एक पिण्डव्यापी दूसरा ब्रह्माण्डव्यापी। एक अन्तरंग दूसरा बहिरंग। जिस प्रकार थ्योरी और प्रक्टिस के आधार पर बहिरंग शिक्षा पद्धति चलती है, उसी प्रकार अध्यात्म प्रगति के लिए आस्था और साधना दो माध्यम हैं। आस्था के अन्तर्गत नीति, धर्म, दर्शन, आत्म-ज्ञान, ब्रह्म एवं सूक्ष्म जगत का वर्णन विवेचन आता है। शास्त्रों में उसी का वर्णन है। आत्मबोध, लोक व्यवहार, चिन्तन परिष्कार को अध्यात्म 'निष्ठा' पक्ष में लिया जायगा। संयम, नियम, व्रत, तप, साधन प्रभृति क्रियाकलापों को साधना माना जायगा। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरी अपूर्ण रह जायगी। ज्ञान क्रम के समन्वय से ही उपलब्धियाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त होती हैं। ज्ञान के बिना कर्म और कर्म के बिना ज्ञान निर्जीव निष्प्राण रहेगा। तत्व दर्शन के बिना तपस्या और तप साधना के बिना तत्व दर्शन समग्र अध्यात्म का प्रयोजन पूरा नहीं कर सकते।

विश्वव्यापी ब्रह्म चेतना के साथ मनुष्य का सघन और सुनिश्चित सम्बन्ध है। पर उसमें मल आवरण विक्षेप जैसे अवरोधों ने एक प्रकार से विच्छेद जैसी स्थिति उत्पन्न कर दी है। बिजली घर और कमरे के पंखे के बीच लगे हुए तारों में यदि कहीं गड़बड़ी उत्पन्न हो जाये तो पंखा और बिजली घर दोनों ही अपने-अपने स्थान पर वहीं रहते हुए भी सन्नाटा छाया रहेगा। पंखा चलेगा नहीं निःचेष्ट पड़ा रहेगा। इन अवरोधों को साफ करना ही मन्त्र साधना का उद्देश्य है। नाली के प्रवाह में कोई रोड़ा आ जाय तो पानी इधर-उधर फैलेगा और नाली सूखी पड़ी रहेगी। यही बात हमारे जीवन-प्रवाह में भी दृष्टगोचर होती है। अन्न, जल पर जीवित रहने वाला शरीर तो अपना आहार प्राप्त करके गतिशील बना रहता है पर अन्तः चेतना की खुराक न मिलने से वह दिन-दिन दुर्बल एवं मरणासन्न होती चली जाती है। यही है हम सबकी आन्तरिक दयनीय दुर्दशा का कारण।

नवजात शिशु माता के दूध पर अवलम्बित रहता है। आत्मा का पोषण परमात्मा के साथ प्रत्यावर्तन बने रहने पर ही होता है। बादल तभी बरसते हैं जब समुद्र से उन्हें भरपूर पानी मिले। यदि समुद्र से सम्बन्ध टूट जाय तो बादलों का बरसना तो दूर उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जायगा। तब केवल धूलिकण ही यदाकदा बदली बनकर घूमते दृष्टिगोचर होंगे। परमात्मा से सम्बन्ध टूट जाने पर आत्मा अपना वर्चस्व खो बैठती है, आत्म बल के लक्षण दिखाई नहीं पड़ते, महानता तिरोहित हो जाती है केवल काय-कलेवर ही छिपकली की कटी हुई पूँछ की तरह उछल-कूद करता रहता है। हममें से अधिकांश को शरीर मात्र बनकर जीना पड़ रहा है। आत्मा की गरिमा के वर्णित कोई चिह्न अपने में दीखते नहीं। इस आत्मा और परमात्मा के बीच गतिरोध ही समझा जाना चाहिए। परित्यक्ता पत्नी की भाँति उस पर उदासीनता ही छाई रहती है।

साधना इन शिथिल सम्बन्धों को पुनः प्रतिष्ठापित करने की सुनिश्चित पद्धति है। मन्त्र साधन उसका कर्म पक्ष है। यों आत्म ज्ञान भी कम महत्व का नहीं, उसकी भी अपनी गरिमा है। फिर भी वह पूर्ण नहीं। कोई व्यक्ति विद्वान, ज्ञानी, दार्शनिक, शास्त्रज्ञ, वेदान्ती होने भर से आत्मबल सम्पन्न नहीं हो सकता। इसके लिए उसे साधनात्मक कर्मकाण्ड अपनाने की अनिवार्य रूप से आवश्यकता होगी। विश्व चेतना के साथ व्यक्ति चेतना को जोड़ने का यही मार्ग है। मन्त्र साधन इसी राज मार्ग की तरह समझा जाना चाहिए।

मन्त्र का प्रत्यक्ष रूप ध्वनि है। ध्वनि भी क्रमबद्ध—लयबद्ध और वृत्ताकार। एक क्रम से निरन्तर एक ही शब्द-विन्यास का उच्चारण किया जाता रहे तो उसका एक गति चक्र बन जाता है। तब शब्द तरंगें सीधी चलने की अपेक्षा वृत्ताकार घूमने लगती हैं। रस्सी में पत्थर का टुकड़ा बाँधकर उसे तेजी से चारों ओर घुमाया जाय तो दो परिणाम होंगे एक यह कि वह एक गोल घेरा में दीखेगा। रस्सी और ढेले का एक स्थानीय स्वरूप बदलकर गतिशील चक्र के रूप में बदल जाना एक दृश्य चमत्कार है। दूसरा परिणाम यह होगा कि उस वृत्ताकार घुमाव से एक असाधारण शक्ति उत्पन्न होगी। इस तेज घूमते हुए पत्थर के छोटे टुकड़े से किसी पर प्रहार किया जाय तो उसकी जान ले सकता है। इसी प्रकार यदि उसे फेंक दिया जाय तो तीर की तरह सनसनाता हुआ बहुत दूर निकल जायगा। मन्त्र जप से यही होता है। कुछ शब्दों को रस, एक स्वर, एक लय के अनुसार बार-बार दुहराते रहने से उत्पन्न हुई ध्वनि तरंगें—सीधी या साधारण नहीं जातीं। वृत्ताकार उनका घुमाया जाना अन्तरंग पिण्ड तथा बहिरंग ब्रह्माण्ड में एक असाधारण शक्ति-प्रवाह उत्पन्न करता है। उसके फलस्वरूप उत्पन्न हुए परिणामों को मन्त्र का चमत्कार कहा जा सकता है।

मन्त्रों का शब्द चयन योग विद्या में निष्णा तत्ववेत्ताओं से दिव्य चेतना एवं सघन अनुभूतियों के आधार पर किया होता है। यों उस शब्द-विन्यास में कुछ प्रेरणाप्रद अर्थ और सन्देश भी होते हैं पर उनकी महत्ता उतनी नहीं, जितनी शब्द-गुंथन की। अर्थ की दृष्टि से भी उनसे भी अधिक भाव पूर्ण कविताएँ हैं और हो सकती हैं। फिर सूत्र जैसे छोटे मन्त्रों में उतनी विस्तृत भाव शृंखला भरी भी नहीं जा सकती जितनी मनःक्षेत्र को प्रभावित करने के लिए आवश्यक है। वस्तुतः मन्त्र की महत्ता, उसके 'स्फोट' में है। स्फोट का अर्थ है ईश्वर तत्व में होने वाला ध्वनि विशेष का

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

असाधारण प्रभाव। तालाब में छोटा ढेला फेंकने से थोड़ी और छोटी लहरें उत्पन्न होती हैं पर यदि बहुत ऊँचाई से बहुत जोर से कोई बहुत बड़ा पत्थर पटका जाय तो उसका शब्द और स्पन्दन दोनों ही अपेक्षाकृत बड़े होंगे और उसकी प्रतिक्रिया प्रतिध्वनि भी बड़ी लहरों के साथ दिखाई देगी। मन्त्र विद्या के सन्दर्भ में इसी को स्फोट कहा जाता है। इसकी तुलना बारूद, कारतूस विस्फोट से उत्पन्न ध्वनि के साथ अथवा अणु बम फटने के साथ की जा सकती है। मन्त्र साधक को यह मानना और जताना पड़ता है कि स्फोट की कितनी मात्रा शिष्ट है। असन्तुलित विस्फोट बन्दूक या तोप तक को फाड़ सकता है। असंगत साधना से लक्ष्य प्राप्त होना तो दूर उल्टा अनिष्ट उत्पन्न हो सकता है।

मन्त्र की तीसरी धारा है लय। उसे किस स्वर में—किस प्रवाह में—उच्चारित किया जा रहा है इसे लय कहते हैं—साधारणतया मानसिक, वाचिक और उपांशु नाम से लय की न्यूनाधिकता का वर्गीकरण किया जाता है। वेद मन्त्रों में इसे उदात्त, अनुदात्त और स्वरित कहते हैं। साम गान में सप्त स्वरों तथा उनके आरोह-अवरोह को तन में रखा जाता है। यह लय क्रम ही संगीत का आधार है इसकी व्याख्या 'शब्द ब्रह्म' कहकर की जाती है। जानकारी का पता है कि शास्त्र सम्मत संगीत का शरीर और मन पर ही नहीं बाह्य वस्तुओं और परिस्थितियों पर भी प्रभाव पड़ता है। दीपक राग से बुझे दीपक जलने, मेघराग से वर्षा होने की कथा गाथाएँ सर्वथा अविश्वस्त नहीं हैं। संगीत के वृक्ष, वनस्पतियों, फसलों और दुधारू पशुओं पर होने वाले प्रभाव को वैज्ञानिक मान्यता मिल चुकी है। रोगों की निवृत्ति में संगीत की भूमिका निकट भविष्य में और भी अधिक मिलेगी और उसे चिकित्सा में प्रमुख स्थान मिलेगा। वैदिक और तांत्रिक मन्त्रों का सारा वाङ्मय लय तथ्य को अपने गर्भ में छिपाये बैठा है। किसी भी रीति से—किसी भी ध्वनि में मन्त्र साधना भावात्मक आकांक्षा भले ही पूरी करे उससे वैज्ञानिक लाभों का प्रयोजन पूरा न होगा।

चुम्बक लोहे को अपनी ओर आकर्षित करता है लकड़ी को नहीं। बिजली का प्रवाह भी धातु के तारों के सहारे ही चलता है। रबड़ आदि आधातु पदार्थों में बिजली नहीं दौड़ सकती। इसी प्रकार मन्त्र साधक को अपनी शारीरिक और मानसिक स्वच्छता एवं समर्थता के लिए प्रयास करते हुए अपना व्यक्तित्व इस योग्य बनाना पड़ता है कि अन्तरिक्ष से अवतरित होने वाला शक्ति प्रवाह धारण कर सकना सम्भव हो सके। राज योग से यम नियमों की साधना मानसिक परिष्कार के लिए और आसन प्राणायाम का अभ्यास शारीरिक सुव्यवस्था के लिए है। यदि इन आरम्भिक चरणों को पूरा न किया जाय तो फिर प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि की उच्च स्तरीय साधना सम्भव ही न होगी। आहार-विहार के प्रतिबन्ध—व्रत, संयम का विधान व्यक्तित्व के परिष्कार के लिए ही है। स्वच्छ दर्पण में ही मुँह साफ दीखता है, साफ कपड़े पर ही ठीक से रंग चढ़ता है। यदि जीवन क्रम दुष्ट और दुराचारी बना रहे तो फिर मन्त्र साधना का कर्म-काण्ड कितना ही विधि विधान युक्त क्यों न हो उसका अभीष्ट परिणाम निकलेगा नहीं।

इसके अतिरिक्त पाँचवीं शर्त हैं—भाव भरी मनःस्थिति। इसे दूसरे शब्दों में श्रद्धा कह सकते हैं। जिस प्रकार भौतिक जगत अग्रगन्य है उसी प्रकार आत्मिक जगत में सशक्त उपलब्धियाँ श्रद्धा की उत्कृष्टता पर निर्भर हैं। मनोविज्ञान वेत्ता विचारों की क्षमता और संकल्प शक्ति का गुणगान मुक्त कण्ठ से करते रहे हैं। मनुष्य को उठाने-गिराने और बनाने में निष्ठा एवं आस्था का महत्व असाधारण है। आत्मबल और मनोबल का चमत्कार सामान्य व्यक्ति को महामानव के रूप में परणित कर देने में समर्थ होता है। संसार की महान् घटनाओं की पृष्ठभूमि प्रचुर साधनों पर नहीं प्रचण्ड संकल्प शक्ति पर ही रखी गई है। सफलताओं का समग्र इतिहास दृढ़ निश्चय के साथ जुड़े हुए प्रचण्ड पुरुषार्थ की लेखनी से ही लिखा गया है। मैस्मरेजम, हिप्नोटिज्म, क्लेरो वायेन्स, टैलेपैथी, आदि योग विद्या के छुटपुट खेल-सकंल्प शक्ति की ही फुलझड़ियाँ हैं। इसी तथ्य को साधना का प्राण कह सकते हैं।

अविश्वासी और अन्यमनस्क व्यक्ति उपेक्षा और उदासीनता के साथ कोई साधन करते रहें तो चिरकाल व्यतीत हो जाने और लम्बा कष्ट साध्य अनुष्ठान कर लेने पर भी अभीष्ट लाभ न होगा। किन्तु यदि भाव भरी मनोभूमि में थोड़ा भी साधन विधान अटूट श्रद्धा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विश्वास के साथ सम्पन्न किया जाय तो उसका परिणाम तत्काल दृष्टिगोचर होगा। संदिग्ध और आशंका ग्रस्त मनोभूमि मानसिक धरातल को बहुत ही उथला बनाये रखती है, उससे कोई बड़े दैवी अनुदान सँजोये नहीं जा सकते। साधनात्मक विधि विधान का अपना महत्व है पर यह तथ्य ध्यान रखने योग्य है कि श्रद्धा को आत्मिक उपलब्धियों का 'प्राण' ही माना जायगा। प्राण रहित शरीर को कितना ही सँजोया सँभाला जाय उससे कुछ काम न बनेगा। भावना रहित मनोभूमि मरुस्थल के समान है, जहाँ सफलता की हरी-भरी खेती लहलहाने का स्वप्न कदाचित ही सफल होता है। अस्तु साधना की सफलता चाहने वाले साधकों को अपनी प्रकृति और प्रवृत्ति को श्रद्धा शक्ति ही बनाना पड़ता है।

अध्यात्म विज्ञान की गरिमा भौतिक विज्ञान से असंख्य गुनी बढ़ी-चढ़ी है। मन्त्र बहुमूल्य हो सकते हैं पर मन्त्रों की महत्ता से उन्हें तोला नहीं जा सकता। संसार की सम्पदाएँ—आत्मिक विभूतियों की तुलना में नगण्य हैं। जड़ और चेतन की गरिमा में जमीन आसमान जितना अन्तर है। इसे ध्यान में रखा जाये तो इस निष्कर्ष पर पहुँचना होगा कि हमें भौतिक सम्पदाओं के लिए ही लालायित नहीं रहना चाहिए वरन् आत्मिक विभूतियों को भी उपार्जित करना चाहिए। आत्मबल संग्रह करने के लिए कदम बढ़ाना सूर्य की ओर मुँह करके चलने की बराबर है। इससे सम्पत्ति रूपी छाया पीछे-पीछे चलेगी। किन्तु यदि छाया की ओर मुँह करके दौड़ा जाय तो वह पकड़ में नहीं आयेगी और जितनी तेज दौड़ होगी वह भी आगे उतनी ही तेजी के साथ दौड़ती चली जायगी। विभूतिवान सम्पत्ति का लाभ अनायास ही उठा लेते हैं, जबकि सम्पत्तिवानों को भौतिक विक्षोभ और आत्मिक असन्तोष की दुहरी हानि उठानी पड़ती है।

हम आत्मिक प्रगति के पथ पर बढ़ें। आत्म विज्ञान की सहायता लें। आत्मबोध से दृष्टिकोण परिष्कृत कर और साधना निरत रहकर विभूतियों के अधिकारी बनें। इस सन्दर्भ में मन्त्र साधना का आश्रय लेना एक प्रकार से अनिवार्य ही है।

मन्त्र साधना की सफलता के लिए साधक का उपयुक्त व्यक्तित्व निर्माण करना एक ऐसा कार्य है जिस पर जितना अधिक ध्यान दिया जाय उतना ही उत्तम है। शरीर के क्रिया-कलाप ऐसे हों, जिनसे इंद्रिय शक्ति कलुषित एवं विकृत न होती हो। इस दृष्टि से इन्द्रियनिग्रह, संयम और सदाचार पर अत्यधिक जोर दिया जाना चाहिए। साथ ही भावनाओं की उत्कृष्टता मन्त्र शक्ति में प्राण फूँकती है इस बात को भी ध्यान में रखा जाय। साधना के लक्ष्य एवं साधन विधान की यथार्थता एवं सफलता के बारे में मन सुनिश्चित और संशयरहित रहना चाहिए। इसके लिए सतत् प्रयत्न करते रहने और तत्काल फल प्राप्ति के लिए उतावली न करने का धैर्य भी आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत जीवन की रीति-नीति एवं लोक व्यवहार में सौम्य उदात्त एवं निर्मल दृष्टिकोण रहना चाहिए स्नेह, सदभावना, सज्जनता, करुणा एवं उदारता का अन्त: करण में जितना अधिक समावेश होगा, उसी अनुपात में साधना की सफलता के लिए उपयुक्त मनोभूमि बनेगी। इस प्रकार का शारीरिक और मानसिक निर्माण आध्यात्मिक प्रगति की कुंजी समझी जानी चाहिए। साधक की सफलता का तीन चौथाई श्रेय इसी तथ्य पर निर्भर है। विधि-विधान को तो एक चौथाई ही महत्व दिया जा सकता है। इन दिनों साधन पथ के पथिकों को जो असफलता जन्य निराशा ही हाथ लगती है, उसका एक बहुत बड़ा कारण जीवन-साधना की उपेक्षा और विधि-विधान को ही सब कुछ मान बैठने की भूल है यदि यह भूल सुधार ली जाय और साधना के राज मार्ग पर चलने की सर्वांगपूर्ण तैयारी की जाय तो उसकी सफलता भी उतनी ही निश्चित है जितनी सही ढंग से किये गये भौतिक विज्ञान सम्बन्धी क्रिया-कलापों की।

साधन विधान के अन्य माध्यम भी हैं पर मन्त्र साधना सर्वत्र अनिवार्य है। कारण कि इससे संकल्प शक्ति जागृत एवं नियन्त्रत होती है, साथ ही शब्द विज्ञान का ऐसा सुन्दर सुयोग भी जुड़ता है, जो साधक की प्रसुप्त किन्तु अति अद्‌भुत शक्तियों को जागृत कर उसे आत्मबल सम्पन्न बनाता है और बाह्य जगत को प्रभावित करने की रहस्यमयी हलचलों का सृजन करता है।

मन्त्र क्या है इसके बारे आज की स्थिति, सार्वभौम और सर्वजनीन दृष्टि से कुछ कह सकना कठिन है कारण यह है कि इन दिनों साम्प्रदायिक पक्षपात और पूर्वाग्रहों का बोलवाला है। हर सम्प्रदाय अपनी परम्परा को प्रधानता देता है। अन्य मत वालों की बात उसके गले नहीं उतरती। किसी प्रकार समझा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी दिया जाय तो श्रद्धा नहीं जमती। ऐसी दशा में सामयिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए यही कहना ठीक होगा कि साधक अपनी मान्यताओं के आधार पर कोई मन्त्र अपना ले और उसी पर श्रद्धा केन्द्रित करे तथा उसी को साधना का माध्यम बनाये। ऐसी दशा में विधि विधान भी अपनी-अपनी परम्पराओं के अनुसार अपनाना होगा। यों यह मार्ग भी देर सबेर में लक्ष्य तक पहुँचा ही देगा, और अश्रद्धा, संदेह एवं आशंका के वातावरण में किये गये उपयुक्त मन्त्र की अपेक्षा अधिक अच्छा रहेगा। पर यह काम चलाऊ समझौता है, तथ्य नहीं। यदि लेखक को हिन्दू धर्मानुयायी होने और एक मन्त्र विशेष पर उसका पक्षपात होने के दोष से मुक्त किया जा सके तो उसे यह कहने में कोई संकोच न होगा कि गायत्री मन्त्र की शब्द संरचना अनुपम और अद्‌भुत है। आगम और निगम का समस्त भारतीय अध्यात्म इसी पृष्ठ भूमि पर खड़ा है। मन्त्र और तंत्र की अगणित शाखा-प्रशाखाएँ इसी का विस्तार परिवार हैं। अन्य धर्मावलम्बियों के अन्य मन्त्र हो सकते हैं पर जब कभी सार्वभौम एवं सर्वजनीन मन्त्र की खोज पूर्वाग्रहों को दूर रखकर निष्पक्ष भाव से उसकी निजी महत्ता के आधार पर की जायगी तो उसका निष्कर्ष गायत्री मन्त्र ही निकलेगा। पर इन दिनों इसी के लिए आग्रह करना साधना के क्षेत्र में गतिरोध उत्पन्न करना होगा। अभी तो सरल प्रतिपादन यही है कि अपनी श्रद्धानुरूप मन्त्र और परम्परानुसार विधि-विधान अपना लिया जाय। यह तरीका भी बुरा नहीं है। प्रगति धीमी भले ही रहे पर प्रगति लक्ष्य की ही ओर होती रहेगी।

मन्त्र साधन के संदर्भ में गत मास, ध्वनि और लय की चर्चा की जा चुकी है और जप का प्रयोजन समझाया जा चुका है। श्रद्धा और एकाग्रता युक्त मनोभूमि में स्वच्छ शरीर मन, वस्त्र स्थान और उपकरणों का ध्यान रखते हुए किया हुआ जप तुरन्त स्फूर्ति प्रदान करता है और जिस प्रकार चाय आदि उत्तेजक पदार्थ पीने पर तत्काल फुरती दिखाई पड़ती है वैसा ही अनुभव साधना काल एवं उसके उपरान्त होता है। लगता है कुछ अतिरिक्त और महत्वपूर्ण शक्ति कहीं से मिलती है और वह अपेक्षा कृत अधिक आत्म बल सम्पन्न बना है। हर्ष, सन्तोष और प्रकाश के रूप में मन्त्र की उपलब्धि को सहज ही परखा जा सकता है। कहना न होगा कि इसका लाभ अपने तक ही सीमित नहीं रहता। उसका प्रभाव बाह्यजगत पर भी पड़ता है। किसी व्यक्ति, वस्तु या परिस्थिति को इस उपलब्धि से प्रभावित और परिवर्तित किया जा सकता है। सिद्धि इसी का नाम है।

स्वामी रामतीर्थ ने एक बार कहा था—ईश्वर बना जा सकता है उसे देख या दिखाया नहीं जा सकता। सूक्ष्म तत्व के बारे में भी यही बात है। ईश्वर तत्व में शब्द-प्रवाह के संचार को रेडियो यंत्र अनुभव करा सकता है पर 'ईश्वर' को उसके असली रूप में देखा जा सकना संभव नहीं। गर्मी, सर्दी, सुख, दुःख की अनुभूति होती है उन्हें पदार्थ की तरह प्रत्यक्ष नहीं देख जा सकता। मन्त्र में उच्चारित शब्दावली मन्त्र की मूल शक्ति नहीं वरन् उसको सजग करने का उपकरण है। किसी सोते को हाथ से झकझोर कर जगाया जा सकता है। पर यह हाथ 'जागृति' नहीं। अधिक से अधिक उसे जागृति का निमित होने का श्रेय ही मिल सकता है। मन्त्रोच्चार भी अन्तरंग में और अन्तरिक्ष में भरी पड़ी अगणित चेतन शक्तियों में से कुछ को जागृति करने का एक निर्मित कारण भर है।

किस मन्त्र से किस शक्ति को, किस आधार पर जगाया जाय इसका संकेत हर मन्त्र के साथ जुड़े हुए विनियोग में बताया जाता है। वैदिक और तांत्रिक सभी मन्त्रों का विनियोग होता है। आगम और निगम शास्त्रों में मन्त्र विधान के साथ ही उसका उल्लेख रहता है। जप तो मूल मन्त्र का ही किया जाता है पर उसे आरंभ करते समय विनियोग को पढ़ लेना अथवा स्मरण कर लेना आवश्यक होता है। इससे मन्त्र के स्वरूप और लक्ष्य के प्रति साधना काल में जागरूकता बनी रहती है और कदम सही दिशा में बढ़ता रहता है।

मन्त्र विनियोग के पाँच अंग हैं। (१) ऋषि, (२) छन्द, (३) देवता, (४) बीज, (५) तत्व। इन्हीं से मिलकर मन्त्र शक्ति सर्वांगपूर्ण बनती है। पंच तत्वों के सम्मिश्रण से विभिन्न शरीर और पदार्थ बनते हैं। इसी प्रकार विनियोग के पाँच अंग उसे प्रत्यक्ष और सजीव बनाने वाले आधार माने जाते हैं। हमारे सूक्ष्म शरीर की पाँच परते हैं इन्हें आवरण या कोश भी कहते हैं। प्याज के भीतर जिस तरह परतें होती हैं हमारी अन्तः चेतना में भी वैसी ही हैं उन्हें (१) अन्नमय कोश, (२)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राणमय कोश, (३) मनोमय कोश, (४) विज्ञानमय कोश, और (५) आनन्दमय कोश कहते हैं। इन्हें पाँच शक्ति भण्डार भी कह सकते हैं। पृथ्वी पर जैसे पांच महाद्वीप हैं उसी प्रकार चेतन सत्ता को स्थूल एवं सूक्ष्म प्रकृति की मनुष्य काया में इन पाँच माध्यमों से देखा समझा जा सकता है। मन्त्र विनियोग के पाँचों अंग ऋषि, छन्द, देवता, बीज और तत्व इन पाँचों आधारों को प्रस्फुटित, प्रदीप्त एवं प्रयुक्त कैसे किया जाय इसका पथ प्रदर्शन करते हैं। अस्तु किसी मन्त्र की साधना करते हुए उसके विनियोग भाग को भी जानना समझना और अपनाना आवश्यक है।

'ऋषि' तत्व का संकेत है—मार्ग दर्शक गुरू। ऐसा व्यक्ति जिसने उस मन्त्र में पारंगतता प्राप्त की हो सर्जरी, संगीत जैसे क्रिया-कलाप अनुभवी शिक्षक ही सिखा सकता है। पुस्तकीय ज्ञान से नौकानयन नहीं सीखा जा सकता इसके लिए किसी मल्लाह का प्रत्यक्ष पथ प्रदर्शन चाहिए। चिकित्सा ग्रन्थ और औषधि भण्डार उपलब्ध रहने पर भी चिकित्सक की आवश्यकता रहती है। विभिन्न मनोभूमियों के कारण साधना पथिकों के मार्ग में भी कई प्रकार के उतार-चढ़ाव आते हैं, उस स्थिति में सही निर्देशन और उलझनों का समाधान केवल वही कर सकता है जो उस विषय में पारंगत हो। गुरु का यह कर्तव्य भी हो जाता है कि शिष्य को न केवल पथ प्रदर्शन करे वरन उसे अपनी शक्ति का एक अंश अनुदान देकर प्रगति पथ को सरल भी बनाये। अस्तु ऋषि का आश्रय मन्त्र साधना की प्रथम सीढ़ी बताई गई है।

छन्द का अर्थ है—लय । काव्य में प्रयुक्त होने वाली पिंगल प्रक्रिया के आधार पर भी छन्दों का वर्गीकरण होता है, यहाँ उसका कोई प्रयोजन नहीं मन्त्र रचना से काव्य प्रक्रिया अनिवार्य नहीं है। फिर यदि हो भी तो उसके जानने न जानने से कुछ बनता बिगड़ता नहीं। यहाँ लय को ही छन्द समझा जाना चाहिए किस स्वर में किस क्रम से, किस उतार-चढ़ाव के साथ मन्त्रोच्चारण किया जाय यह एक स्वतंत्र शास्त्र है सितार में तार तो उतने ही होते हैं, उँगलियाँ चलने का क्रम भी हर वादन में चलता है, पर बजाने का कौशल तारों पर आघात करने के क्रम में हेर-फेर करके विभिन्न राग रागनियों का ध्वनि-प्रवाह उत्पन्न करता है। मानसिक, वाचिक, उपांशु, उदात्त, अनुदात्त स्वरित ही नहीं मन्त्रोच्चार के और भी भेद-प्रभेद हैं, जिनके आधार पर उसी मन्त्र द्वारा अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न की जा सकती हैं।

ध्वनि-तरंगों के कम्पन्न इस लय पर ही निर्भर हैं। साधना विज्ञान में इसे यति कहा जाता है। मन्त्रों की एक यति सब के लिए उचित नहीं। व्यक्ति की स्थिति और उसकी आकांक्षा को ध्यान में रखकर यति का—लय का—निर्धारण करना पड़ता है। साधक को उचित है कि मन्त्र साधना में प्रवृत्त होने से पूर्व अपने लिये उपयुक्त छन्द की लय का निर्धारण करले।

विनियोग का तीसरा चरण है—देवता। देवता का अर्थ है—चेतना सागर में से अपने अभीष्ट शक्ति प्रवाह का चयन। आकाश में एक ही समय में अनेक रेडियो स्टेशन बोलते रहते हैं पर हर अंक की फ्रीक्वेन्सी अलग होती है। ऐसा न होता तो ब्राडकाष्ट किये गये सभी शब्द मिलकर एक हो जाते। शब्द धाराओं की पृथकता और उनसे सम्बन्ध स्थापित करने के पृथक् माध्यमों का उपयोग करके ही किसी रेडियो सेट के लिए यह संभव होता है कि अपनी पसंद का रेडियो प्रोग्राम सुने और अन्यत्र में चल रहे प्रोगामों को बोलने से रोकदें। निखिल ब्रह्माण्ड में ब्रह्म चेतना की अनेक धाराएँ समुद्री लहरों की तरह अपना पृथक अस्तित्व लेकर भी चलती हैं। भूमि एक ही होने पर भी उसमें परतें अलग-अलग तरह की निकलती हैं। समुद्रीय अगाध जल में पानी की परतें तथा असीम आकाश में वायु से लेकर किरणों तक की अनेक परतें होती हैं। इसी प्रकार ब्रह्म चेतना के अनेक प्रयोजनों के लिए उद्भूत अनेक शक्ति तरंगें निखिल ब्रह्माण्ड में प्रवाहित होती रहती हैं। उनके स्वरूप और प्रयोजनों को ध्यान में रखते हुए ही उन्हें देवता कहा जाता है। साकार उपासना पक्ष इनकी अलंकारिक प्रतिमा भी बना लेता है और निराकार पक्ष प्रकाश किरणों के रूप में उसको पकड़ता है। सूर्य की सात रंग की किरणों में से हम जिसे चाहें उसे रंगीन शीशे के माध्यम से उपलब्ध कर सकते हैं। एक्सरे मशीन अल्ट्रा वायलेट उपकरण आकाश में से अपनी अभीष्ट किरणों को ही प्रयुक्त करते हैं। हंस दूध पीता है, पानी छोड़ देता है। इसी प्रकार किस मन्त्र के लिए ब्रह्म चेतना की किस दिव्य तरंग का प्रयोग किया जाय इसके लिए विधान निर्धारित है। स्थापन, पूजन, स्तवन आदि क्रियाएँ इसी प्रयोजन के लिए होती हैं। निराकारी साधक ध्यान द्वारा उस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शक्ति को अपने अंग प्रत्यंगों में तथा समीपवर्ती वातावरण में ओत-प्रोत होने की भावना करते है। किसके के लिए देव सम्पर्क का क्या तरीका ठीक रहेगा यह निश्चय करके ही मन्त्र साधक को प्रगति पथ पर अग्रसर होना होता है।

बीज का अर्थ है उद्गम । मानवी काय-कलेवर में विभिन्न शक्तियों के लिए विभिन्न स्थान निर्धारित हैं। षटचक्रों, १०८ उपत्यिकाओं, सहस्र शक्ति नदियों का निर्धारित स्थान हैं। उन स्थानों को शक्ति सम्पर्क के स्विच बोर्ड कह सकते हैं। स्विच दबाने पर बत्ती जलने लगती है। किसी मन्त्र के देवता का शरीर में सम्पर्क स्थान कहाँ है और उसे किस विधि से प्रभावित किया जाय इसी जानकारी को बीज विज्ञान कहते हैं। ह्रीं, श्रीं, क्लीं, ऐं, हुँ, यं, वं, रं, लं आदि बीज अक्षर भी हैं, जिन्हें किसी मन्त्र में अतिरिक्त शक्ति भरने का सूक्ष्म इंजेक्शन कह सकते हैं। आवश्यकतानुसार मन्त्रों के साथ इन अतिरिक्त बीजों को भी जोड़ दिया जाता है। गायत्री मन्त्र और मृत्यंजय मन्त्र में इसी आधार पर कई बीज उलट-पुलट कर लगाये जाते हैं। यद्यपि उन्हें लगना अनिवार्य नहीं पर मन्त्र के उद्गम स्थान को तो जानना ही चाहिए। टेलीफोन के डायल को घुमाकर अभीष्ट नम्बर से बातें की जा सकती हैं। बीज स्थान और बीज शक्ति का प्रयोग करके मन्त्र को समर्थ बनाने वाली ब्रह्म चेतना के साथ सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है और उसका समुचित लाभ उठाया जा सकता है।

तत्व को मन्त्र की कुंजी कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में इसे लक्ष्य भी कहा जा सकता है। अक्सर साधना करने से पूर्व संकल्प पढ़े जाते हैं। उनमें यह प्रतिज्ञा रहती है कि इस साधना का उद्देश्य क्या है? इसके माध्यम से हमें जाना कहाँ है—और प्राप्त करना क्या है? स्थूल रूप से पंच तत्वों एवं तीन गुणों के रूप में भी मन्त्रों की प्रवृत्ति मिलती रहती है और उस तत्व के अनुरूप पूजा उपकरण इकट्ठे करके भी तत्व साधना की जाती है।

आयुर्वेद शास्त्र में वस्तुओं के स्थूल, सूक्ष्म और कारण प्रकृतियों का वर्णन है। सामान्य तथ्य अन्न का स्थूल भाग रक्त मांस बनता है, सूक्ष्म भाग से बुद्धि और मनःचेतना विकसित होती है और कारण प्रभाव से अन्तरात्मा का पोषण मिलता है। योग शास्त्र में आहार का सात्विक राजस, तामस वर्गों में वर्गी करण किया गया है। मनुष्यों के तीन शरीर होते हैं —स्थूल, सूक्ष्म और कारण। इसी प्रकार हर वस्तु के अन्तराल में उपरोक्त प्रकृतियों की न्यूनाधिकता भरी रहती है। पेड़ों में से यज्ञ कार्य के लिए केवल वही प्रयुक्त होते हैं, जिनकी सूक्ष्म और कारण शक्ति अभीष्ट प्रयोजन में सहायक होती है। इसी आधार पर यह निर्माण निर्धारण किया जाता है कि किस मन्त्र की, किस उद्देश्य के लिए, किस स्थिति का व्यक्ति, साधना करे तो उसे आहार, वस्त्र, रहन-सहन, माला, दीपक, धूप, नैवेद्य आदि में किस प्रकार का चयन करना चाहिये? तत्व निर्धारण में इन्हीं बातों का ध्यान रखा जाता है।

दबी हुई प्रसुप्त क्षमता को प्रखर करने के लिये ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। यंत्रों को चलाने के लिये ईंधन चाहिये। हाथ या पैर से चलने वाले यंत्रों के लिये न सही उन्हें चलाने वाले हाथ-पैरों को काम करते रहने के लिये ऊर्जा की जरूरत रहती है। यह तापमान जुटाने पर ही यन्त्र काम करते हैं। मन्त्रों की सफलता भी इसी ऊर्जा उत्पादन पर निर्भर है। साधना विधान का सारा कलेवर इसी आधार पर खड़ा किया गया है। आयुर्वेद में भी नाड़ी-शोधन के लिये वमन, विरेचन, स्नेहन, स्वेदन, नस्व यह पंच कर्म शरीर शोधन के लिये हैं। मन्त्र साधन में व्यक्तित्व के परिष्कार के अतिरिक्ति पाँच आधार—ऋषि, छंद, देवता, बीज और तत्व हैं। जो इन सब साधनों को जुटा कर मन्त्र साधन कर सके उसे अभीष्ट प्रयोजन की प्राप्ति होकर ही रहती है।

मन्त्रों की चमत्कारी शक्ति के दो उद्गम स्त्रोत—जिह्वा और हृदय

जीभ और हृदय का कोई सीधा तारतम्य शरीर शास्त्र की दृष्टि से मालूम नहीं पड़ता। यों तो सभी अंग एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। मस्तिष्क सभी अंगों को चेतना देता है, हृदय, रक्त और फेफड़े वायु, आमाशय रस, इस प्रकार यह चारों ही संस्थागत महत्वपूर्ण हुए और परस्पर एक-दूसरे का सम्बन्ध भी बना। पर जहाँ तक अति निकटता और सघनता का सम्बन्ध है, जीभ और हृदय के बीच कोई असाधारण एवं अतिरिक्त घनिष्ठता नहीं है।

पर आत्म-विज्ञान की दृष्टि से इनमें अत्यधिक सम्बन्ध है। शब्द विज्ञान की गहन शक्ति इन दोनों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समन्वय से ही उत्पन्न होती है। यों जीभ स्वादेन्द्रिय भी है और शब्दोच्चारण का प्रयोन भी पूरा करती है पर उसमें एक विशेष क्षमता है शब्दों के साथ जुड़े हुए असामान्य प्रभाव की। यदि वह तत्व न हो तो फिर वह ग्रामोफोन के रिकार्ड की तरह केवल जानकारी देने भर का ही काम दे सकती है और उसमें किसी व्यक्ति को अथवा व्यापक अन्तरिक्षीय वातावरण को प्रभावित नहीं किया जा सकता .

शारीरिक विज्ञान जिह्वा की मोटी जानकारी देकर और मोटी मांसल परिभाषा प्रस्तुत करके चुप ही हो जाता है। उसकी थोड़ी-सी जानकारी यह है कि जीभ स्वादेन्द्रिय और वाणी दोनों का काम करती हैं। पर वह एकाकी नहीं है अनेक घटकों का समूह है। जीभ एक परिवार है, जिसके अनेक विभाग हैं और वे सब परस्पर मिला जुलकर काम करते हैं तभी जिह्वा अपना प्रयोजन पूरा कर पाती है।

जीभ की नोंक पर कोई चीज रखदी जाय तो वह उसका स्वाद का पता न लगा सकेगी। इस जाँच-पड़ताल में उसे अपने अन्य सहायकों का सहायोग लेना पड़ता है। पदार्थ के साथ मुँह की लार का सम्मिश्रण होता है वह गीला पदार्थ स्वाद कलिकाओं को स्पर्श करता है वे अपनी प्रतिक्रिया मस्तिष्क तक पहुँचाती हैं। इतना हो चुकने के बाद ही यह पता चलता है कि जो पदार्थ मुँह में है वह किस स्वाद का है। यदि लार का मिश्रण न हो और सूखी वस्तु जीभ पर रखी रहे तो उसके स्वाद का कुछ भी पता न चल सकेगा।

स्वाद अनेक होते हुए भी वैज्ञानिक वर्गीकरण के अनुसार वे केवल चार हैं—(१) मीठा, (२) खट्टा, (३) कडुआ, (४) खारा। इन्हें परखने के स्थान भी मुँह में अलग स्थानों पर हैं। जीभ के अग्र भाग में मीठा, पिछले भाग में कडुआ, दोनों पार्श्वों में खट्टा और खारा परखने के सम्वेदक तन्तु हैं।

नासिका और जिह्वा के संवेदक तन्तुओं में परस्पर घना सम्बन्ध है। जुकाम हो जाने पर मुँह का जायका बिगड़ जाता है और वस्तुओं का स्वाद ठीक से पहचानने में नहीं आता स्वादिष्ट व्यञ्जनों की गन्ध जीभ को प्रभावित करती है। मुँह में पानी भर आता है और पता चलता है कि किस स्वाद के व्यंजन कितनी दूरी पर बन रहे हैं? मिर्च-मसालों के छोंक बघार नासिका की गन्ध शक्ति द्वारा मुँह को उनके स्वाद का परिचय कराते हैं। खरबूजा, आम आदि फलों को सूँघकर उनके खट्टे-मीठे होने का निर्णय किया जा सकता है। यह नासिका और जिह्वा के सम्वेदकों में परस्पर घनिष्टता होने का ही प्रमाण है।

जीभ का संरचना का यदि वर्गीकरण किया जाय तो उसे लम्ब पेशियाँ, जीनियो ग्लोसस पेशियाँ, जिह्वा ग्रन्थि, जिह्वावरण, लेपिक्स, तन्त्रिकाएँ, स्वाद कलिकाएँ, स्वाद कोशिकाएँ, स्पिन्डल कोशिकाओं के विभागों में विभक्त किया जा सकता है। इन सबका सहयोग ही जीभ को अपना काम ठीक तरह करते रह सकने के योग्य बनाता है।

जीभ का यह भौतिक परिचय हुआ। उसका आत्मक परिचय भगवती सरस्वती के प्रतीक रूप में है। जिह्वा शब्दोच्चारण करती है और उस उच्चारण के पीछे मनुष्य के मस्तिष्क और अन्तःकरण को ही नहीं शरीर को भी प्रभावित करने की शक्ति रहती है। इससे भी आगे बढ़कर वह शक्ति वस्तुओं को भी प्रभावित करती है। इसी रहस्यमय शक्ति को चमत्कारी ढंग से प्रयुक्त करने के विधान का नाम मन्त्र शास्त्र है। सामान्य जानकारी का आदान-प्रदान तो वाणी से होता ही रहता है, पर जब वह एकाग्र—समग्र और शब्द शास्त्र के अनुसार कुछ विशेष शब्दों का विशेष स्वर साधना के साथ उच्चारण करती है तो उस शब्द-समूह को 'मन्त्र' कहते हैं। मन्त्रों की चमत्कारी शक्ति से अध्यात्म विज्ञान का पन्ना-पन्ना भरा पड़ा है। जप के बिना किसी धर्म, सम्प्रदाय की कोई साधना नहीं हो सकती। इसे आत्म शक्ति सम्वर्धन का आधारभूत स्रोत माना गया है।

जहाँ तक मन्त्रोच्चारण का सम्बन्ध है यह कह सकते हैं कि जिह्वा-तन्तुओं का सम्बन्ध जिन चक्रों, उपत्यिकाओं मातृकाओं से है वे इस उच्चारण के साथ वैसे ही प्रभावित होती है जैसे टाइप राइटर की कुन्जियाँ दबाने से उससे सम्बन्धित तीलियाँ उछलती हैं और कागज पर अक्षर छप जाता है। शरीर के विभिन्न स्थानों पर विभिन्न सूक्ष्म शक्तियों के भण्डार दबे पड़े हैं, वाणी का प्रभाव बाहर ही नहीं निकलता भीतर भी चलता है। शब्दोच्चारण के साथ-साथ जिह्वा की नस नाड़ियाँ और ध्वनि-लहरियाँ उन प्रसुप्त संस्थानों को जगाती हैं। क्रम विशेष से सितार के तारों को बजाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से उसमें से विभिन्न स्वर लहरियाँ निकलती हैं, इसी प्रकार शब्दों का उच्चारण तथा स्वर क्रम मिलकर एक ऐसी मूँज उत्पन्न करते हैं जिससे शरीरगत सूक्ष्म संस्थान में हलचल मच जाती है और जो मन्त्र जिस प्रयोजन के लिए निर्धारित है, उसके अनुकूल ध्वनि कम्पनों का—ऊर्जा तरंगों का निर्माण होता है।

इस प्रकार मन्त्र शक्ति काम करती है। मन्त्रोच्चारण के अवसर पर सारा स्वर संस्थान एक शक्ति-स्रोत के रूप में परिणत हो जाता है और अपने भीतर लक्ष्य किए हुए मनुष्य या देवता के ऊपर अथवा अनन्त आकाश में एक प्रभाव उत्पन्न करता है, जिससे शास्त्रोक्त अभीष्ट परिणाम उत्पन्न होने की सम्भावना बन जाय।

पर इतना ही पर्याप्त नहीं माना जाता। इस मन्त्रोच्चार की शब्द शृंखला के पीछे हृदयगत ऊर्जा का प्रचण्ड शक्ति धाराओं का सम्मिश्रण भी होना चाहिए। हृदय का अर्थ दो प्रकार का होता है, जिह्वा की तरह वह भी दो प्रयोजन पूरे करता है। एक तो रक्ताभिषरण का केन्द्र बिन्दु होने से वहाँ उत्पन्न होने वाली प्रचण्ड ऊर्जा का वह भण्डार बना होता है। दूसरे उसे भाव संस्थान का केन्द्र बिन्दु भी माना गया है। धड़कन से उत्पन्न ऊर्जा और श्रद्धा, निष्ठा, भक्ति एवं विश्वास की समन्वयात्मक भाव गरिमा। इन दोनों का समन्वय ही मन्त्र का प्राण है। उच्चारण को मन्त्र का कलेवर और भावनाओं को उनका प्राण कहा गया है। इस प्रकार जहाँ तक आत्म-साधना के विज्ञान का सम्बन्ध है जिह्वा और हृदय दोनों को एक ही रथ के दो पहिये माना गया है। मन्त्र साधना में दोनों का सहयोगात्मक समन्वय समान रूप से रहने पर ही अभीष्ट प्रयोजन सिद्ध होता है।

शरीर विज्ञान की दृष्टि से जिह्वा की तरह ही थोड़ा परिचय यह है—

हृदय को शरीर नगर की जल व्यवस्था—रक्त संचार प्रणाली को सुचारु रूप से व्यवस्थित रखने वाला 'पम्पिग स्टेशन' कहना चाहिए। हृदय का फेंका हुआ रक्त समस्त शरीर के अंग-प्रत्यंगों में धमनियों द्वारा भ्रमण करता है। वायु एवं पोषण से उन अंगों को पुष्टि करता हुए वहाँ की विकृतियों को भी अपने साथ समेटता लाता है और वापस हृदय में आ जाता है। फेफड़े उस संग्रहीत कूड़े-कचरे को साँस के द्वारा बाहर निकालकर उसमें ऑक्सीजन—प्राण वायु घोल देते हैं। इसके बाद रक्त का वही भ्रमण क्रम फिर चल पड़ता है। हृदय इसी रक्त संचार प्रक्रिया का निर्वाह करते रहने वाला प्रधान अंग है।

यों हृदय में रक्त सदा ही भरा रहता है पर वह उसमें से सीधा एक बूँद भी ग्रहण नहीं करता। उसे जो मिलता है वह एक कायदे कान—प्रथा प्रक्रिया के अनुसार मिलता है। इसके लिए हृदय की मांसपेशियों को खुराक देने वाली छोटी-छोटी धमनियाँ अलग से विनिर्मित हैं। वस्तुत: वे ही हृदय की धाय हैं, उन्हीं के माध्यम से उसे पोषण मिलता है। यह किसी प्रकार थक जाय या गड़बड़ा जाय तो हृदय को या उसके किसी भाग को खुराक मिलनी बन्द हो जाती है या कम पड़ जाती है। इस थोड़े से अवरोध का प्रभाव बहुत भयंकर होता है। हृदय को उसके किसी भाग को ही उस कमी से कष्ट नहीं होता वरन् शरीर के अन्य भागों को भी खुराक मिलनी बन्द हो जाती है। मस्तिष्क को तो यह कमी तनिक भी बर्दाश्त नहीं होती है और सारे शरीर में भयंकर हलचल मच जाती है। इसका नाम हृदय का दौरा है। यदि यह अवरोध १० मिनट भी बना रहे तो मरण निश्चित ही समझना चाहिए। इस भयंकर आपत्ति के समय हृदय—ग्राह के मुख में पड़े हुए गज की तरह करुण-क्रन्दन करता हुआ चिल्लाता है। इसी को हृदय का दर्द कहा जाता है।

हृदय क्या है? साड़े तीन इंच चौड़ी—पाँच इंच लम्बी पान के पत्ते जैसे आकार की १२ ॥ ओंस भारी छाती को दाहिनी और आठवीं पसली के बीच की एक मांसल थैली। जो सदा धड़कती रहती है। यह चार कोष्ठों में विभाजित है। दो ऊपर वाले भाग आरीकिल (अलिंद) कहलाते हैं । नीचे के दो भाग वेन्ट्रीकिल (निलय) कहे जाते हैं। शरीर में रक्त संचार और नियन्त्रण उनका काम है।

बन्द मुट्ठी जैसी आकृति के इस नरम और मुलायम हृदय की धड़कन हर मिनट में ७०-७५ बार होती है। हर सैकिण्ड में प्राय: ८ बार धड़कन होती है। इस प्रकार वह एक साल में प्राय: तीन करोड़ सत्तर लाख बार धड़क लेता है। नवजात शिशु के हृदय की धड़कन प्रति मिनट १२० से १४० बार तक होती है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर जैसे-जैसे आयु बढ़ती है यह धड़कन घटती जाती है और अन्त में प्रायः ६०-७० तक रह जाती है। इसका कारण आयु वृद्धि के साथ-साथ ऑक्सीजन युक्त नीले खून वाली शिराओं को लचक घटते जाना है उनकी दीवारें मोटी होती जाती हैं। जिससे धमनियों के फैलने सिकुड़न की क्षमती घटती जाती है। तदनुसार धड़कन का क्रम भी कम होता चला जाता है।

अपने आकार और वजन को देखते हुए शरीर के अन्य अवयवों की तुलना में हृदय को कहीं अधिक काम करना पड़ता है। वह एक मिनट में ७२ बार धड़कता है। वर्ष में ३ करोड़ ७० लाख बार। यदि कोई व्यक्ति ६० वर्ष जीवित रहे तो उसका हृदय २२० करोड़ बार धड़क चुका होगा। १८००० टन रक्त बहा चुका होगा। ६२००० मील रक्त रक्त नलिकाओं की सड़क पगडण्डियों पर चल चुका होगा। यह लम्बाई समस्त पृथ्वी की परिक्रमा से ढाई गुनी अधिक है। इस कार्य में उसे इतनी शक्ति खर्च करनी पड़ती है, जितने में कि संसार का सबसे भारी युद्ध पोत धरती से पाँच गज ऊँचा उठाकर अधर टाँगा जा सकता है। मनुष्य की बनाई अब तक की कोई मशीन इतने लम्बे समय तक—बिना टूट-फूट विश्राम लिए चल सकेगा ऐसी नही बनी है।

यों यह कर्तृत्व भी इस छोटी-सी माँस थैली का आश्चर्यजनक है। पर बात इतनी-सी ही नहीं है।अपने आकार को देखते हुए हृदय जितना काम करता है इसके अनुपात को देखते हुए उसकी कार्य क्षमता को तुलना में संसार का कोई यन्त्र नहीं बैठता। आकार और साधन स्वल्प होते हुए वह जितना बड़ा उत्तर दायित्व सँभालता है निस्सन्देह उसी अनुपात का मनुष्य कृति यन्त्र बन सकना अभी तक सम्भव नहीं हुआ। इतनी प्रचण्ड ऊर्जा का योगदान मन्त्र शक्ति से मिल जाता है तो उसकी शक्ति को करोड़ों गुना अधिकार बढ़ना ही चाहिए।

आकाशवाणी के उच्चारण किये हुए शब्द इसलिए प्रखर हो उठते हैं कि उनमें विद्युत शक्ति का सम्मिश्रण किया जाता है। उसी के अभाव में हमारी अवाज हजार गज पर भी नहीं सुनी जाती जबकि रेडियो की आवाज सारा संसार सुनता है। ठीक मन्त्रोच्चारण को प्रचण्ड और व्यापक बनाने के लिए हृदय की विद्युत धारा का उपयेाग करना पड़ता है। साथ ही श्रद्ध; विश्वास और भक्ति का समन्वय करके उसकी जप शब्दावली को इतना प्रखर बनाना पड़ता है कि वह साधारण उच्चारण न रहकर एक शक्ति प्रवाह के रूप में प्रादुर्भूत होकर अपना अभीष्ट प्रयोजन पूरा कर सके।

आत्मिक क्षेत्र में हृदय का सूक्ष्म अर्थ 'सहृदयता' लिया गया है। निष्ठुर प्रकृति के दुष्ट-दुराचारियों को 'हृदय हीन' कहा जाता है। इसका अर्थ खून फैंकने वाली थैली का होना या न होना नहीं । वरन् यह है कि उच्च स्तरीय संयम, सदाचार, निर्मलता, निष्कपटता, ममता, आत्मीयता, उदारता जैसी सद्भावनाओं का उद्गम केन्द्र है या नहीं। यदि यह परिप्लावित हो तो अन्य आत्मिक शक्तियाँ भी उगेंगी, फलेंगी, फूलेंगी। यदि श्मशान जैसी निष्ठुरता और प्रेत-पिशाचों जैसी दुष्टता भर रही होगी तो उस मरघट की जली हुई भूमि में कोई भी आत्मिक विभूति पल्लवित और फलित न होगी। इसके अतिरिक्त उच्च सत्ता पर—आत्मा की महत्ता पर—साधन-प्रक्रिया तथा उसकी परिणति पर गहन श्रद्धा और विश्वास का होना भी हृदयवान हाने का चिह्न है। इन विशेषताओं से जो सम्पन्न हों उनकी हृदयगत भाव शक्ति—जिह्वा गत स्वर शक्ति को सम्मिश्रित करके समग्र मन्त्र शक्ति उत्पन्न करेगी और उसका प्रभाव परिणाम निश्चित रूप से आशाजनक हेगा।

हृदय को शिव और जिह्वा को शक्ति कहते हैं। हृदय को अग्नि और जिह्वा को सोम कहते हैं। दोनों का समन्वय धन और ऋण विद्युत धाराओं के मिलने से जो शक्ति-प्रवाह उत्पन्न करता है, वही मन्त्र के चमत्कार रूप में देखा जा सकता है।

मन्त्र की एक प्रकट ध्वनि होती है एक अप्रकट। शब्दोच्चार के साथ-साथ एक प्रतिध्वनि और उत्पन्न होती है, जो प्रत्यक्ष उच्चारण से अधिक सूक्ष्म होने के कारण और भी अधिक बलवती होती है। कान की पकड़ में न आने वाली ध्वनियों को आजकल वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा पकड़ा और प्रयुक्त किया जा रहा है। उनकी अद्भुत सामर्थ्य ने विज्ञान जगत को आश्चर्यान्वित कर दिया है।

आवाज उतनी ही नहीं है जितनी कानों से सुनी जाती है। कानों की एक सीमित मर्यादा है, वे अपनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पकड़ में आने वाली आवाजों को ही सुन पाते हैं। पर ऐसा नहीं समझना चाहिए कि जो हम सुन सकें उतनी ही ध्वनि होती है। शब्द तरंगों का बहुत बड़ा भाग वह है जो कानों की पकड़ में नहीं आता पर वह इस आकाश में चलती निरन्तर रहती हैं। रेडियो तरंगों के साथ मिली हुई आवाजें आकश में हर घड़ी गूँजती रहती हैं पर हम उन्हें सुन तभी पाते हैं, जब रेडियो यन्त्र पास में हो और उस कानों की पकड़ से बाहर की आवाज को बिजली के सहारे तीव्र करें। शब्द तरंगों की अपनी स्वतन्त्र सत्ता है वे इस संसार में चल रही अनेक हलचलों के कारण जो ध्वनियाँ होती हैं उन्हें इधर से उधर लाती ले जाती रहती हैं। योगाभ्यास में 'नादानुसन्धान' की पद्धति से इन्हीं ध्वनियों को सुना अपनाया जाता है।

ध्वनि-तरंगें केवल आवाज को कान तक पहुँचाकर उसके द्वारा जानकारी बढ़ाने का ही काम नहीं करतीं, उनमें एक प्रचण्ड बिजली भी भरी रहती है और वह इतनी सामर्थ्यवान होती है कि डाइनामाइट जैसी पुल और किले उड़ा देने वाली बारूद को पीछे छोड़ दें। अब इन ध्वनि-तरंगों का वह प्रवाह भी वैज्ञानिकां की पकड़ में आ गया है तो कानों द्वारा सुने जाने की मर्यादा से कहीं अधिक सूक्ष्म है। उनका उपयोग सुनने के लिए नहीं वरन् उन कार्यों के लिए सफलतापूर्वक किया जा रहा है, जो बिजली की सामर्थ्य से भी कहीं अधिक गहरी शक्ति की अपेक्षा करते हैं। अभी इनके प्रयोग का प्रथम चरण है आगे चलकर सोचा यह जा रहा है कि इन तरंगों द्वारा संसार की शक्ति आवश्यकता, सस्तेपन और सरलता के साथ सम्पन्न की जाय।

जिन कर्ण कुहरों से आगे की ध्वनि-तरंगों की यहाँ चर्चा हो रही है। उन्हें विज्ञान की भाषा में 'अति स्वन' कहा जाता है, इन्हें छुट-पुट अनेक उद्योगों में प्रयुक्त किया जा रहा है। कपड़ों को धोना, सुखाना, सफाई, तेल निकालना, कागज बनाना जैसे छोटे-मोटे उद्योगों में इनका सफल प्रयोग किया है। जर्मनी में उन्हें धातुओं की ढलाई के काम में लाया जा रहा है। ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने धागे के सम्बन्ध में उनका प्रयोग किया है। बी. एफ. गुडरिच कम्पनी का अनुसन्धान विभाग इस अन्वेषण में लगा हुआ है कि इन ध्वनि-तरंगों को किस उद्योग में किस प्रकार—काम में लगाया जा सकता है। रेथ्यान कम्पनी का बना होमोजिना इंजिंग यन्त्र दुग्ध साधनों के लिए इसी आधार पर बना है और हजारों की संख्या में बिक रहा है।

ध्वनि तरंगें कम्पन के रूप में होतीं हैं। वे गैसों द्रवों एवं ठोस पदार्थ में वास्तविक धड़कनों की तरह हैं। रेडियो तरंगों में और इनमें मुख्य अन्तर यह है कि रेडियो तरंगें शून्य में यात्रा करती हैं पर ये ध्वनि तरंगें वैसा नहीं करतीं। इन दिनों तीन प्रकार के ध्वनि तरंग यन्त्र बने हैं। एक वे उच्च दवाब पर वायु के उपयोग से उच्च आवृत्ति के कम्पन उत्पन्न करते हैं। दो किस्म की शक्ति के लिए विद्युत ऊर्जा का उपयोग करते हैं। अमेरिका की अल्ट्रा सोनिक कारपोरेशन गैसों के लिए साइरन औद्योगिक स्तर पर उत्पादन करता है। इन तरंगों के उपकरण अल्ट्रासोनिक (अतिस्वन) और सुपरसानिक (महास्वन) नाम से पुकारे जाते हैं। वैज्ञानिकों ने खौज तो निकाला है पर इनसे इनकी गौरव गरिमा के उपयुक्त काम लिया जा सके यह प्रयोग करना शेष है।

मन्त्र विद्या के महान् विज्ञान को यदि ठीक से समझा जा सके, शब्द ब्रह्म की भावनापूर्वक साधना की जा सके तो अदृश्य और अप्रत्यक्ष विभूतियों को हम सामने खड़ी दृश्य और प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं।

इस तरह मन्त्र-शक्ति में प्रथम आधार है-ध्वनि प्रवाह का सही होना। शब्द वस्तुतः एक तरह की कम्पन-तरंगें ही हैं। मस्तिष्क में यह जानकारी व अभ्यास संचित है कि किन स्वर-यन्त्रों में किस तरह की हलचल करने से बाह्य-जगत में कौन-से शब्द तथा विचार सम्प्रेषित होंगे। व्यक्ति की इच्छा-शक्ति से प्रेरित होकर उच्चारण-मन्त्रों में पूर्वाभास के अनुसार उभार पैदा होता है, उस उभार से मुँह में भरी हुई वायु को तथा बाहर की वायु को आघात लगता है और ध्वनि-तरंगें पैदा होने लगती हैं। सुनने वाले व्यक्ति के कान इन ध्वनि-तरंगों को सुनकर उनका मस्तिष्कीय जानकारी एवं अभ्यास के आधार पर विश्लेषण कर उन शब्दों का अर्थ व प्रयोजन निश्चित करते हैं। इस तरह इच्छा से गति तथा गति से तरंगें उत्पन्न होती हैं। ये ध्वनि-कम्पन वायु के भीतर रहने वाले एक सूक्ष्म तत्व 'ईथर' से होते हैं। ईथर तत्व के परमाणु अत्यन्त सूक्ष्म और अति सम्वेदनशील हैं तथा एक सेकिण्ड से ३४ अरब तक कम्पन उत्पन्न कर सकते हैं। यद्यपि हमारे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कान एक सैकिण्ड में ३२ से ६८ तक ही कम्पन सुन-समझ सकते हैं। ३२ से कम नहीं और ६८ से अधिक नहीं। जब ईथर तत्व के परमाणुओं द्वारा उत्पन्न कम्पन चरम सीमा पर अर्थात् ३४ अरब के प्रति सैकिण्ड के आस-पास पहुँचते हैं, तो उनसे एक अखण्ड प्रकाश की किरणें प्रवाहित होने लगती हैं। यही प्रकाश-किरणें 'एक्स-रेज' कहलाती हैं। ये किरणें अद्‌भुत गतिशील होती हैं, एक सैकिण्ड में ये प्राय: एक करोड़ मील चल लेती हैं। इसी आधार पर रेडियो, टेलीविजन बने हैं । वायु के कम्पन नष्ट हो जाते हैं, किन्तु ईथर के कम्पन कभी भी नष्ट नहीं होते। हाँ, पुराने होने पर वे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की सतह पर जाकर स्थिर हो जाते हैं। वहाँ वे बलिष्ठ हो जाने पर अपने समानधर्मी अन्य कम्पनों को अपनी ओर खींचते हैं और दुर्बल होने पर समानधर्मी किन्तु शक्तिशाली अन्य कम्पनों की ओर ख जाते हैं। इस तरह संघ-शक्ति के आधार पर वे एक चुम्बकत्व का सृजन कर सकते हैं। यह चुम्बकत्व एक चेतना जैसा होता है, जो समानधर्मी चेतना वाले मनुष्यों को प्रभावित करता है। जिन मनुष्यों के मस्तिष्क की स्थिति उन प्राचीन, सुसंगठित शब्दों की कम्पन-शक्ति से मिलती-जुलती होगी, उन पर इस चुम्बकत्व शक्ति का, इस चेतना का सीधा प्रभाव पड़ेगा। यदि स्थिति समान न हुई, तो समान शब्दों का उच्चारण उस प्रभाव की उपस्थिति का परिचय तो दे सकता है, किन्तु उस पर गहरा प्रभाव नहीं डाल सकता। इसीलिए मन्त्र-जपकर्ता की अन्तश्चेतना का परिष्कार अत्यावश्यक है। तभी पूर्वज ऋषियों की चेतना से उसकी सम्वेदना जुड़ सकती है।

ध्वनि एक प्रत्यक्ष शक्ति है। अणु-शक्ति, विद्युत-शक्ति, ताप-शक्ति आदि की तरह ही शब्द-शक्ति का भी उपयोग सम्भव है।

शब्द से कम्पन उत्पन्न होता है। मुख अथवा किसी पदार्थ विशेष में शक्ति का प्रयोग होने से शब्द, प्रवाह निःसृत होता है। इस प्रकार शब्द अपने आप में कम्पन-प्रवाह की एक स्थिति विशेष है। बाह्य वायु से आन्तरिक वायु की टक्कर होने से ध्वनि का यह कम्पन-प्रवाह प्रारम्भ होता है।

मन्त्रों के शब्द-प्रवाह का जो चित्र बनता है, उसी के आधार पर उनके अधियनता देवताओं की आकृति का आकलन किया गया है।

शब्दों की भावोत्तेजक क्षमता सुविदित है। साथ ही उनमें वह सामर्थ्य भी विद्यमान है जो स्वयं को भी तथा अन्यों को—सम्पूर्ण सूक्ष्म जगत को प्रभावित कर सके। मन्त्र विज्ञान में इसी सामर्थ्य का उपयोग होता है।

जिस प्रकार सितार के तारों पर एक निश्चित क्रम से उँगलियाँ रखने पर सुनिश्चित स्वर लहरियाँ निकलती हैं, उसी प्रकार शब्दों के उच्चारण का एक लयवद्ध-क्रम विशिष्ट कम्पनों को उत्पन्न करता है, जो विशेष शक्तिशाली व प्रभावोत्पादक होते हैं।

इसीलिए मन्त्रों में महत्व मात्र शब्दार्थ का नहीं। हमारे मुख के तार षट्‌चक्रों, दिव्य-ग्रन्थियों आदि सूक्ष्म शरीर-संस्थानों से जुड़े हैं। टाइपराइटर की चाबियाँ दबाते चलने से अक्षरों के टाइप होते चलने की ही तरह विशेष वैज्ञानिक प्रक्रिया से विनिर्मित मन्त्र-गुम्फन मनुष्य के सूक्ष्म शरीर-संस्थानों पर सीधा असर डालते हैं और वहाँ एक अतिरिक्त शक्ति-प्रवाह उत्पन्न करते हैं। भीतर गूँजते हुए मन्त्र-कम्पन स्वयं मन्त्र-विज्ञानी को लाभ पहुँचाते हैं और बाहर निकलने पर वे वातावरण को प्रभावित करते हैं। वे सूक्ष्म जगत में अभीष्ट परिस्थितियों की सम्भावनों का सृजन करते हैं तथा चाहे जाने पर किसी व्यक्ति-विशेष को भी प्रभावित करते हैं।

शब्द-शक्ति का चिन्तन-मनन उसकी महत्ता व गरिमा का स्मरण कराता है। आज चारों ओर बढ़ रहे शोर से प्रदूषण उत्पन्न होने की चिन्ता चारों ओर व्यक्त की जा रही है तथा इस शोर की सामाजिक तनाव, बेचैनी और विकृति के कारणों में से एक कहा—बताया जा रहा है। ध्वनियों के अप्रत्याशित आश्चर्यजनक परिणामों की लगातार जानकारी मिल रही है। सभी जानते हैं कि वर्तमान यान्त्रिक सभ्यता का शोर सम्पूर्ण मानव जाति पर गहरा दुष्प्रभाव डाल रहा है।

संगीत के प्रभाव पर भी इधर अधिकाधिक खोजें हुई हैं। पशुओं का दूध बढ़ाने, पौधों के विकास, बच्चों में अनुशासन का विकास, समूह में विशिष्ट भावोत्तेजना की सृष्टि आदि के लिए संगीत के प्रभावों की बात अब सर्वविदित है। संगीत वस्तुत: ध्वनि-प्रवाह का एक क्रम विशेष मात्र है। उसकी शक्ति शब्द व ध्वनि की ही शक्ति है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन्त्र भी इसी शक्ति के पुञ्ज हैं। उनके अक्षरों का चयन-क्रम एवं उच्चारण की अनुशासित-व्यवस्था, दोनों का समन्वित प्रभाव साधक को अतिरिक्ति विशेषताओं से सम्पन्न बनाता है। उसके आत्मबल को प्रखर प्रबल बनाता है और अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति का मार्ग-प्रशस्त करता है। मन्त्रों के शब्दों का चयन-गुंथन विशिष्ट होता है। वे ध्वनि विज्ञान के विशेष नियम-क्रम के अनुरूप गढ़े होते हैं। इसीसे उनको देर तक एक ही प्रवाह से उच्चारण करने पर एक विशेष स्तर की ऊर्जा उत्पन्न होती है। यह ऊर्जा विकसित होने पर साधक को उसकी विशिष्ट अनुभूति स्वाभाविक व अनिवार्य है। यह कई तरह की हो सकती है। शरीर-मन में स्फूर्ति, उत्साह, विश्वास की वृद्धि होती है। किसी-किसी को मन्त्र-देवता का साक्षात्कार होता है और सफलता का आशीर्वाद सुनाई पड़ता है। ये अनुभूतियाँ सूक्ष्म इन्द्रियों द्वारा ही होती हैं, तो भी प्रबलता एक प्रखरता की स्थिति में कई बार स्थूल दर्शन-श्रवण जैसा अनुभव हो सकता है, यद्यपि यह हर एक के साथ होना अनिवार्य नहीं। किन्तु विश्वास एवं निष्ठा को परिपक्वता, उत्साह तथा मनोबल की अनुभूति का आधार अवश्य मिलता है। ये अनुभूतियाँ ही मन्त्र का स्फोट कही जाती है। मन्त्र की भाव-भूमिका चुम्बकत्व उत्पन्न करती और स्फोट इस चुम्बकत्व को कई गुना विस्तृत एवं सशक्त बनाता है। निष्ठावान साधक इन उपलब्धियों को प्राप्त कर बढ़ता जाता है।

मन्त्र साधना के साथ-साथ कई प्रकार के व्रत नियमों का पालन करना पड़ता है। साधक को आहार-विहार का संयम बरतना पड़ता है। ब्रह्मचर्य से रहना पड़ता है तथा ऐसी मर्यादाओं का पालन करना होता है जो साधक को चरित्रवान, सज्जन, सद्गुणी बनाने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। क्रोध, द्वेष आदि दुर्गुणों का निषेध इसीलिए किया जाता है कि मन्त्र शक्ति उत्पन्न करने वाले शरीर तथा मन को कषाय-कल्मषों से रहित होना चाहिए। मैले कपड़े पर रंग नहीं चढ़ता। रँगाई से पहले धुलाई आवश्यक होती है। मन्त्र की शक्ति का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए साधक के इन्द्रिय समूह तथा अन्तःकरण चतुष्ट का परिष्कृत होना आवश्यक है। देखा जाता है कि चरित्रवान साधक स्वल्प जप-तप से ही आशाजनक सफलता प्राप्त कर लेते हैं, जब कि दोष, दुर्गुणों को चरितार्थ करते रहने वालों की लम्बी और कष्टसाध्य साधना भी निरर्थक चली जाती है।

मन्त्र विज्ञान में जिह्वा के साथ-साथ हृदय की शक्ति के समावेश का भी वर्णन है। कहा गया है मन्त्र की प्रखरता के स्रोत हृदय से भी उद्भूत होते हैं। यहाँ हृदय से तात्पर्य रक्त-संचार करने वाली उस थैली से नहीं है, जो अहिर्निशि धड़कती और कण-कण को पोषण प्रदान करती है। यों शरीर में जीवन की विभिन्न गतिविधियों के सञ्चालन में प्रयुक्त होने वाली ऊर्जा इसी बिजली घर से मिलती है, और उसका प्रभाव अध्यात्म क्षेत्र पर भी पड़ता है। इसीलिए फेंफड़ों के माध्यम से हृदय को प्रभावित करने वाले प्राणायामों का विधान बनाया गया है और उसे साधना प्रयोजनों का आवश्यक अंग माना गया है। इतने पर भी मन्त्र शक्ति को प्रखर बनाने में जहाँ 'हृदय' के उपयोग की चर्चा है, वहाँ उसका प्रयोजन भावना शक्ति से है। शरीर विज्ञान में 'हृदय' रक्त-संञ्चार में संलग्न बाई पसलियों के मध्य अवस्थित मुट्ठी जितने आकार की थैली को कहा जाता है, पर आध्यात्मिक विवेचना में 'उसे' भाव संस्थान समझा जाना चाहिए। भावना का—श्रद्धा सम्वेदना का जितना उच्चस्तरीय समावेश मन्त्र साधना में होता है, अश्रद्धा, उपेक्षा और अन्य मनस्क भाव से बेगार टालने की तरह किसी प्रकार अमुक अक्षरों को रटते रहा जाय तो उससे न तो जिह्वा की शक्ति का उपयोग हुआ माना जायगा और न हृदय शक्ति का समावेश हुआ कहा जायगा।

जिह्वा की शक्ति को अन्तरिक्ष में बलपूर्वक उड़ाता है, इसका तात्पर्य वाक् शक्ति से है, जो सस्वर, उच्चारण और पवित्र सिंचन के उत्पन्न होती है। पवित्र सिंचन का अर्थ है अनीति, उपार्जित अभक्ष्य आहार और कटुभाषण असत्य एवं गिराने वाले परामर्श का परित्याग। जिस जिह्वा से कुधान्य नहीं खाया जाता और पशु-प्रवृत्तियों को नहीं भड़काया जाता, उससे उच्चारण की हुई वाणी वाक् कहलाती है और वह प्रत्यक्ष सरस्वती बनकर मन्त्र की शक्ति को प्रचण्ड बना सकने में समर्थ होती है।

हृदय स्थान पर प्रकाश का ध्यान करने—वहाँ न्यास कृत्य करके पवित्रता की आस्था जमाने एवं प्राणायाम के माध्यम से सशक्त बनाने का जो उपक्रम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया जाता है उसे स्थानीय उपचार नहीं समझना चाहिए, वरन् यह तात्पर्य समझ लेना चाहिए कि भावना को उत्कृष्ट बनाने के लिए अँगुलि निर्देश किया जा रहा है। 'सहृदय' उसे नहीं कहा जाता जिसकी छाती में हृदय की थैली हो वह तो हर मनुष्य में होती ही है। इससे तो हर व्यक्ति सहृदय कहा जा सकता है। इसी प्रकार 'हृदयहीन' का अर्थ निष्ठुर भावनारहित को कहा जाता है, ऐसा तो कोई भी व्यक्ति न होगा जिसके वक्षस्थल में रक्त-सञ्चार करने वाली 'हार्ट' नामक थैली न हो, वरन् ऐसा भावना के केन्द्र बिन्दु से है। प्रामाणिक उच्चस्तरीय स्तर पर विनिर्मित-स्वर विज्ञान के अनुरूप व्यवहृत-पवित्र जिह्वा द्वारा उच्चरित और सद्भाव सम्पन्न अन्तःकरण द्वारा सुसंस्कारित मन्त्राराधन अभीष्ट प्रयोजन में सफल होकर रहता है यह निश्चित है।

वाक्शक्ति एवं मन्त्रसिद्धि

मन्त्र विद्या में दो तत्वों का समावेश है शब्द शक्ति का सूक्ष्म चेतना विज्ञान के आधार पर उपयोग एवं व्यक्ति की आन्तरिक एवं भावोल्लास से उत्पन्न दिव्य क्षमता का समन्वय। इन दोनों के मिलन से एक तीसरी ऐसी अद्भुत शक्ति उत्पन्न होती है, जो कितने ही बड़े भौतिक साधनों से उपलब्ध नहीं हो सकती।

मन्त्रों में अक्षरों के क्रम तथा उनके उच्चारण की विशेष विधिव्यवस्था का ही अधिक महत्व है। कण्ठ, तालु, दाँत, होठ, मूर्धा आदि जिन स्थानों से शब्दोच्चारण होता है, उनका सीधा सम्बन्ध मानव-शरीर के सूक्ष्म-संस्थानों से है। षट्चक्र, उपात्मक एवं दिव्य वादियों, ग्रन्थियों का सूक्ष्म शरीर संस्थान अपने आप में अद्भुत है। इन दिव्य अंगों के साथ हमारे मुख यन्त्र के तार जुड़े हुए हैं। जिस प्रकार टाइपराइटर की चाबियाँ दबाते चलने से ऊपर अक्षर टाइप होते चलते हैं ठीक इसी प्रकार मुख में उच्चारण किये हुए विशेष वैज्ञानिक-प्रक्रिया के साथ विनिर्मित मन्त्र गुम्फन का सीधा प्रभाव उपरोक्त संस्थानों पर पड़ता है और वहाँ तत्काल एक अतिरिक्ति शक्ति तरंगों का प्रवाह चल पड़ता है। यह प्रवाह मन्त्र विज्ञानी को स्वयं लाभान्वित करता है। उसकी प्रसुप्त क्षमताओं को जगाता है। भीतर गूँजते हुए वे मन्त्र कम्पन यही काम करते हैं और जब वे बाहर निकलते हैं तो वातावरण को प्रभावित करते हैं। सूक्ष्म जगत में अभीष्ट परिस्थितियों की सम्भावनाओं का सृजन करते हैं और यदि किसी व्यक्ति विशेष को प्रभावित करना है तो उस पर भी असर डालते हैं। मन्त्र विद्या इन तीनों प्रयोजनों को पूरा करती है।

साधारणतया ध्वनि चारों दिशाओं में फैलती है पर मन्त्रों में शब्द इस प्रकार गुम्फित होते हैं कि उसकी ध्वयि-तरंगें विशेष प्रकार की हो जाती हैं। गायत्री मन्त्र की ध्वनि-तरगें तार के छल्ले जैसी ऊपर उठती हैं और यह सूक्ष्म अन्तराल के परमाणुओं के माध्यम से सूर्य तक पहुँचती हैं और जब यही ध्वनि सूर्य के अन्तराल में प्रतिध्वनित होकर लौटती हैं तो अपने साथ प्रकाश अणुओं की (गर्मी, प्रकाश व विद्युत सहित) फौज जप करने वाले के शरीर में उतरती चली चली जाती है। साधक उन अणुओं से शरीर ही नहीं मन और आत्मा की शक्तियों का विकास करता चला जाता है और कई बार वह लाभ प्राप्त करता है, जो सांसारिक प्रयत्नों द्वारा कभी भी संभव न हो सके।

शब्द की शक्ति पर जितना गहरा चिन्तन किया जाय उतनी ही उसकी गरिमा और विलक्षणता स्पष्ट होती चली जाती है। बादलों की गरज से ऊँची इमारतें फट जाती हैं। आज की यांत्रिक सभ्यता जितना शोर उत्पन्न कर रही है, उसके दुष्परिणामों से मानव जाति की पूरी न हो सकने वाली क्षति उठानी पड़ेगी। इस तथ्य से समस्त संसार चिन्तित है। अतिस्वन और जेट विमान आकाश में जितनी आवाज करते हैं, उससे उत्पन्न होने वाली हानिकारक प्रतिक्रिया को सर्वत्र समझा जा रहा है और इन विशालकाय द्रुतगामी वायुयानों को कोलाहलरहित बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

शब्द की सामर्थ्य सभी भौतिक शक्तियों से बढ़कर सूक्ष्म और विभेदन क्षमता वाली है। इस बात की निश्चित जानकारी होने के बाद ही मन्त्र विद्या का विकास भारतीय तत्वदर्शियों ने किया। यों हम जो कुछ बोलते हैं उसका प्रभाव व्यक्तिगत और समष्टिगत रूप से सारे ब्रह्माण्ड पर पड़ता है, तालाब के जल में फैंके गये कंपन की लहरें भी दूर तक जाती हैं, उसी प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारे मुख से निकला हुआ प्रत्येक शब्द आकाश के सूक्ष्म परमाणुओं में कम्पन उत्पन्न करता है, उस कम्पन से लोगों में अदृश्य प्रेरणाएँ जागृत होती हैं, हमारे मस्तिष्क में विचार न जाने कहाँ से आते हैं, हम समझ नहीं पाते, मन्त्र विद जानते हैं कि मस्तिष्क में विचारों की उपज कोई आकस्मिक घटना नहीं वरन् शक्ति के परतों में आदिकाल से एकत्रित सूक्ष्म कम्पन हैं, जो मस्तिष्क के ज्ञानकोषों से टकराना विचार के रूप में प्रकट हो उठते हैं, तथापि अपने मस्तिष्क में एक तरह के विचारों की लगातार धारा को पकड़ने या प्रवाहित करने की क्षमता है।

एक ही धारा में मनोगति के द्वारा एक-सी विचारधारा निरन्तर प्रवाहित करके सारे ब्रह्माण्ड के विचार—जगत में क्रान्ति उत्पन्न की जा सकती है, उसके लिए यह आवश्यक नहीं कि उन विचारों को वाणी या सम्भाषण के द्वारा व्यक्त ही किया जाये।

'उच्चारण' और 'स्वर' में यही अन्तर है कि उच्चारण कंठ, जीभ, तालु, दाँतों की संचालन प्रक्रिया से निकलता है और वह विचारों का आदान-प्रदान कर सकने भर में समर्थ होता है। पर स्वर अन्तःकरण से निकलता है। उसमें व्यक्तित्व, दृष्टिकोण और भाव समुच्चय भी ओत-प्रोत रहता है। इसीलिए ये मन्त्र को स्वर कहा गया है। वेद पाठ में उदात्त-अनुदात्त स्वारित की उच्चारण प्रक्रिया का शुद्ध होना ही ओर संकेत करता है। साधना क्षेत्र में स्वर का अर्थ वाक्शक्ति के माध्यम से किये जाने वाले सशक्त जप अनुष्ठान से ही हैं।

मन्त्र की जो कुछ महिमा है उसका आधार वाणी को 'वाक्' के रूप में परिणत कर देना है। इसके लिए मन, वचन और कर्म में ऐसी उत्कृष्टता का समन्वय करना पड़ता हैं कि वाणी को दुग्ध करने वाला कोई कारण शेष न रह जाय। इतना करने के उपरान्त उसके द्वारा जपा हुआ मन्त्र सहज ही सिद्ध होता है और उच्चारण किया हुआ शब्द असंदिग्ध रूप से सफल होता है। यदि वाणी दूषित, कलुषित, दग्ध स्थिति में पड़ी रहे तो उसके द्वारा जप किये हुए मन्त्र भी जल जायेंगे और बहुत संख्या में बहुत समय तक जप, स्तवन, पाठ आदि करते रहने पर भी अभीष्ट फल न मिलेगा।

परिष्कृत जिह्वा में वह शक्ति रहती है जिसके बल पर किसी भी भाषा का-कोई भी मन्त्र प्रचण्ड और प्रभावशाली हो उठता है उसके द्वारा उच्चारित शब्द मनुष्यों के अन्तस्तल को असीम अन्तरिक्ष को प्रभावित किये बिना नहीं रहता। ऐसी परिष्कृत वाणी-वाक् को अध्यात्म का प्राण कह सकते हैं। उसे साधक की कामधेनु एवं तपस्वी का ब्रह्मास्त्र कहने में तनिक भी अत्युक्ति नहीं है। इसी से परिमार्जित जिह्वा को 'सरस्वती' कहते हैं। साधना क्षेत्र में प्रवेश करने वाले व्यक्ति को उस मन्त्रशक्ति की—दीक्षा की महत्ता समझनी चाहिए। मन्त्र की माता उसे ही मानना चाहिये, सिद्धियों का उद्गम-स्थल, भगवान को द्रवित एवं प्रभावित कर सकने का माध्यम उसे ही मानना चाहिए।

मन्त्र सिद्धि में चार तथ्य सम्मिश्रित रूप से काम करते हैं—ध्वनि-विज्ञान के आधार पर विनिर्मित शब्द शृंखला का चयन और उसका विधिवत् उच्चारण, साधक की संयम द्वारा निग्रहीत प्राण शक्ति और मानसिक एकाग्रता का संयुक्त समावेश, उपासना प्रयोग में प्रयुक्त होने वाले पदार्थ उपकरणों की भौतिक किन्तु सूक्ष्म शक्ति भावना-प्रवाह, श्रद्धा, विश्वास एवं उच्चस्तरीय लक्ष्य दृष्टिकोण। इन चारों का जहाँ जितने अंश में समावेश होगा वहाँ उतने ही अनुपात से मन्त्र शक्ति का प्रतिफल एवं चमत्कार दिखाई पड़ेगा। इन तथ्यों की जहाँ उपेक्षा की जा रही होगी और ऐसे ही अन्धाधुन्ध—गाड़ी धकेली ही जा रही होगी जल्दी-जल्दी वरदान पाने की धक लग रही होगी, वहाँ निराशा एवं असफलता ही हाथ लगेगी।

यों शरीर भी एक छोटा किन्तु पूरा विश्व है। इसमें सभी तीर्थों के बीज पीठ विद्यमान हैं। इनमें से कोई एक साथ अनेक पीठों को जागृत एवं प्रखर बनाया जा सकता है। कोई-कोई व्यक्तित्व मूर्तिमान शक्ति पीठ होते हैं। यही सिद्ध पुरुष मानवी चेतना में घुसा हुआ विजातीय तत्व है, उसे निकालने, हटाने में थोड़ा-सा ही प्रबल प्रयत्न सफल हो सकता है। साधना इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए है। साधना समर में यदि आत्म तत्व बाजी ले गया तो फिर पौराणिक समुद्र मंथन में प्राप्त १४ रत्नों से भी अधिक मूल्य की अगणित दैवी सम्पदाएँ प्राप्त होती हैं। उन्हें पाकर मनुष्य आप्त काम हो जाता है फिर और कुछ पाना शेष नहीं रह जाता है साधनाकाल दैवी आसुरी संघर्षों की,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तुमुल युद्ध की—अवधि है। इसमें पूरे कौशल, चातुर्य एवं साहस का प्रयोग करना पड़ता है। यह युद्ध उपेक्षा पूर्वक-ज्यों-त्यों करके ढीले-पोले मन से बेगार भुगतने की तरह नहीं लड़ा जा सकता है। उसमें पूरे मनोयोग एवं प्रबल पराक्रम की आवश्यकता पड़ती है।

आत्मा का परमात्म सत्ता के साथ घनिष्ठ—एकाकार-तादात्म्य तन्मय होने की स्थिति को साधना की प्रखरता कहते हैं। जब दोनों का सघन मिलन होता है तो आत्म-विभोर स्थिति को समाधि कहा जाता है। आवश्यक नहीं कि उस स्थिति में योगनिद्रा अथवा मूर्छा ही आवे। ज्ञान-साधना में स्थिति प्रज्ञा की—कर्म साधना में अनासक्त कर्त्तव्य-परायण की—भक्ति साधना में व्यापक स्नेह सौजन्य की—स्थिति प्राप्त होती है। इससे मूर्छा तो नहीं आती पर आत्म-ज्ञान का आलोक एवं सन्तोष समाधान का अनवरत्य अनुभव होता है। साधक अपने को भगवान में और भगवान को अपने में एकाकार देखता है। दोनों की इच्छाएँ एवं क्रियाएँ एक ही स्तर की होती हैं।

इन्द्रिय संयम और मानसिक एकाग्रता की दोनों धारायें मिलकर मानवी विद्युत शक्ति का निर्माण करती है। बिजली ठण्डे और गरम दो तारों के द्वारा प्रवाहित होती है। इसी प्रकार शरीर और मन की शक्तियों को वासना और तृष्णा में बिखरने न देने से वह सामर्थ्य जमा होती है, जिसे प्राण शक्ति अथवा ओजस् कहा जाता है। योगशास्त्र में साधना क्षेत्र के छात्रों को यह, नियम बरतने का शारीरिक और मानसिक संयम बरतने की प्राथमिक तैयारी करने के लिए कहा गया है। यदि इन दोनों बड़े छेदों में होकर मानवीय विद्युत नष्ट होती रहे तो फिर मन्त्र रूपी इन्जन को चलाने के लिए तेल, कोयला, ईंधन—कहाँ से आयेगा। मात्र शब्दोच्चारण का नाम ही तो मन्त्र साधना नहीं है।

उपार्जन काल में सात्विक आहार-विहार, ब्रह्मचर्य, मौन, एकान्त सेवन, परिमार्जित दिनचर्या, मनन-चिंतन द्वारा साधना को सींचा जाता है। उसके उपरान्त उसे सस्ती प्रशंसा लूटने के लिए दिखाये जाने वाले चमत्कारों से बचाया जाता है। सिद्धियों को लोभ, मोह के प्रयोजन पूरे करने में भी खर्च किया जा सकता है और अपने को तथा दूसरों को आत्म-कल्याण की दिशा मे प्रेरित करने के लिए भी उसका उपयोग हो सकता है। स्वल्पश्रम में अधिक भौतिक सफलतायें पाना कर्म विज्ञान के विपरीत है। उसके लिए यदि मन्त्र शक्ति का प्रयोग किया जाएगा तो वह देर टिक न सकेगी और उसी खिलवाड़ में नष्ट हो जायगी। हाँ यदि आत्मकल्याण के लिए उसका प्रयोग होगा तो उससे उसमें और भी तीव्रता आयेगी जैसे कि चाकू को पत्थर पर रगड़ने से उसकी धार तेज होती है और जंग छूटकर चमक आती है।

मन्त्र सिद्धि के लिए साधक के शरीर को पोषण देने वाली उसका रक्त ओजस् बनाने वाली वस्तुओं का विशेष महत्व है। आहार से शरीर और विहार से मन परिपुष्ट होता है। पदार्थों में परसंचालित शक्ति है, जिसे स्वसंचालित शक्ति के सहारे गतिशील किया जा सकता है। कोयला तेल और पानी में भाप बनाने की शक्ति है, पर वह आग एवं प्रयोक्ता की स्वसंचालित शक्ति के सहारे ही प्रकट हो सकती है। पदार्थों की शक्ति को भी साधना काल में प्रयोग किया जाता है। अनेक विधि-निषेध एवं वस्तु प्रयोग इसी दृष्टि से बने हैं।

हृदय को शिव और जिह्वा को शक्ति कहते हैं। हृदय प्राण और जिह्वा को सोम कहते हैं। दोनों का समन्वय धन और ऋण विद्युत धाराओं के मिलने से जो शक्ति-प्रवाह उत्पन्न करता है, वही मन्त्री के चमत्कार रूप में देखा जा सकता है।

वाणी से उपासना करना पर्याप्त नहीं, उसे, वाक्' बनाकर ही इस योग्य बनाया जा सकता है कि अध्यात्म पथ पर बढ़ते हुए साधक को कुछ कहने लायक सफलता मिल सके। आयुर्वेद में सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, अभ्रक पारद आदि भी भस्म बनाकर उनके सेवन का विधान है। विष का भी बड़ा लाभ बताया गया है पर वह सम्भव तभी होता है, जब उन विषों को विधान-पूर्वक शुद्ध किया जाय। वाणी एक मूल पदार्थ है। शोधित होने पर वह अमृत बन जाती है और विकृत होने पर विष का काम करती है। शोधित वाणी को ही 'वाक्' कहा गया है।

मन्त्र की शक्ति का विकास जप से होता है। जितनी अधिक घिसाई-पिसाई की जाती है उतनी ही पदार्थ की शक्ति उभरती है। ढेले को तोड़ते-तोड़ते उसे अणु की स्थिति में ले जाया तो वह अणु—ढेले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की तुलना में अत्यधिक सामर्थ्यवान होगा। घोंटने और पीसने की प्रक्रिया बहुत समय में चलते रहने पर ही आयुर्वेदिक दवायें गुणकारी होती हैं। बार-बार घिसने से गर्मी पैदा होती है। बार-बार रगड़ने से चमक उत्पन्न होती है। इस तथ्य को हर कोई जानता है। मन्त्र की शक्ति उसके क्रमबद्ध रूप से बहुत समय तक जप करने से उभरती है। अनुष्ठान एवं पुरश्चरण विज्ञान का यही रहस्य है।

मन्त्र का प्रत्यक्ष रूप ध्वनि है। ध्वनि भी क्रमबद्ध-लयबद्ध और वृत्ताकार क्रम से निरन्तर एक ही शब्द-विन्यास का उच्चारण किया जाता रहे तो उसका एक गति चक्र बन जाता है। तब शब्द तरंगें सीधी चलने की अपेक्षा वृत्ताकार घूमने लगती है। रस्सी में पत्थर का टुकड़ा बांधकर उसे तेजी से चारों ओर घुमाया जाय तो उसके दो परिणाम होंगे एक यह कि वह एक गोल घेरा जैसा दीखेगा। रस्सी और ढेले का एक स्थानीय स्वरूप बदलकर गतिशील चक्र के रूप में बदल जाना एक दृश्य चमत्कार है। दूसरा परिणाम यह होगा कि उस वृत्ताकार घुमाव से एक असाधारण शक्ति उत्पन्न होगी। इसे तेजी से घुमाते हुए पत्थर के छोटे टुकड़े से किसी पर प्रहार किया जाय तो उसकी जान ले सकता है। इसी प्रकार यदि उसे फेंक दिया जाय तो तीर की तरह सनसनाता हुआ बहुत दूर निकल जायगा। मन्त्र जप से यही होता है। कुछ शब्दों को क रस, एक स्वर एक लय के अनुसार बार-बार दुहराते रहने से उत्पन्न हुई ध्वनि-तरंगें—सीधी या साधारण नहीं रह जातीं। वृत्ताकार उसका घुमाया जाना अन्तरंग पिण्ड में तथा बहिरंग ब्रह्माण्ड में एक असाधारण प्रवाह उत्पन्न करता है। उसके फलस्वरूप उत्पन्न हुए परिणामों को मन्त्र का चमत्कार कहा जा सकता है।

शब्द ब्रह्म की सिद्धि

मुख से शब्द का उच्चारण न हो तो चेहरा कितना ही सुन्दर क्यों न हो, उसका कुछ महत्व नहीं रह जाता। गूँगा व्यक्ति संकेतों के बल पर कुछ काम चलाऊ इशारे भले ही करले मनोभावों का आदान-प्रदान करने में किसी प्रकार समर्थ नहीं हो सकता? वाणी भावनाओं का परिवहन करती है। दूसरा क्या कहता है इसे समझती है और स्वयं क्या कहना चाहते हैं, इसका प्रकटीकरण करती है। सूरदास अन्धे थे तो भी वाणी की दृष्टि से मुखर होने के कारण सूर सागर लिख सके। नेत्रों की उपयोगिता अपने लिए जानकारियाँ एकत्रित कर देने के लिए है, पर वाणी का महत्व उससे अधिक है। उसके माध्यम से पढ़ा और पढ़ाया जा सकता है। स्वामी दयानन्द के गुरु विरजानन्द नेत्र विहीन थे तो भी वे चारों वेदों के ज्ञाता और उद्भट विद्वान थे। मनुष्य की काया में पाँच ज्ञानन्द्रियाँ हैं। इन्हें पाँच देवता कहते हैं। इनमें वाणी प्रमुख है। उसे सरस्वती कहा जाता है। सब इन्द्रियाँ एक ओर, और वाणी एक तुला पर रखी जा सकती है।

यह सामान्य व्यवहार की बात हुई। अध्यात्म प्रयोजनों में भी वाणी की महिमा अगाध बताई गई है। सत्संग उसी के माध्यम से होता है। मन्त्र धारण की माध्यम जिह्वा ही है। प्रत्यक्ष ब्रह्म के दो स्वरूप हैं। एक शब्द ब्रह्म दूसरा नाद ब्रह्म। वार्तालाप में शब्द ब्रह्म का प्रयोग होता है। संगीत में—गीत वाद्य में नाद ब्रह्म का प्रयोग है। मन्त्र शब्द ब्रह्म है। सत्संग शब्द ब्रह्म है। शिक्षा का समस्त प्रयोजन इसी माध्यम से होता है। योगाभ्यास ने नादयोग से परब्रह्म की परावाणी इसी माध्यम से सुनी जाती है। देवताओं की वाणी नाद माध्यम से ही प्रकट होती है। शिव का डमरू, कृष्ण की वंशी, नारद का तमूरा, चैतन्य की खरताल, मीरा के मजीरा, सरस्वती का सितार यह सभी दिव्य वाणी बोलते थे। कोकिल, भ्रमर आदि वाणी के माध्यम से ही प्रख्यात हुए हैं। जन-मानस को उद्वेलित करने में वाणी का ही प्रयोग होता है। इसे वशीकरण मन्त्र कहा गया है। मीठे वचनों की तुलना वशीकरण मन्त्र से की गई है। इसमें सहस्र तलवारें भी सन्निहित हैं। द्रौपदी के मुख से आठ अक्षर कड़ुए निकले थे कि उतने भर से महाभारत खड़ा हो गया और अक्षौहिणी सेना का सफाया हो गया।

सामान्य क्रिया-कलाप से लेकर आध्यात्मिक एवं उच्चस्तरीय प्रयोजनों में वाणी के माध्यम से व्यक्ति ज्ञानवान तो बनता ही है, शक्तिवान भी बनता है। वाणी में शक्ति की भी अवधारणा है। वचन देने और वचन निभाने में जीवन निछावर कर दिये जाते हैं। कन्यादान बागदान ही है। संकल्प करके राजा हरिश्चन्द्र ने अपना राज्य और स्त्री बच्चे दान कर दिये थे। "भुज उठाय प्रण कीन्ह" राम ने असुर कुल का संहार करने में कितना बड़ा जोखिम उठाया, क्या नहीं किया? गुरु दीक्षा में गुरु अपनी शक्ति हस्तान्तरित करता है और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुरु दक्षिणा में शिष्य अपनी जीवन सम्पदा निछावर कर देता है। वाणी से विनोद, आक्रोश, स्नेह समर्पण सब कुछ है। उतना करते ही मनुष्य की मूर्खता, विद्वता, तत्काल प्रकट होती है। मित्रता और शत्रुता दोनों ही रंग बदलती हैं। जिह्वा से बढ़कर मनुष्य के पास दैवी वरदान और कुछ है नहीं। यह छिन गई हो तो समझना चाहिए कि जीवन का भयंकर अभिशाप है। गूँगा व्यक्ति न अपने मन की कह सकता है और न दूसरे की समझ सकता है। इस एक ही अभाव में सारे अभाव सन्निहित हैं। जिसे दिव्य वाणी मिली है उसे सब कुछ मिला है। इसलिए उसे मधुवती कहा गया है। जिह्वा को परिष्कृत करना सरस्वती की साधना कही जाती है।

शाप और वरदान इसी द्वारा दिये जाते हैं। संयम में अस्वाद और मौन दो उच्चस्तरीय साधना बताया है। आहार के समय से आरोग्य और दीर्घ जीवन दोनों मिलते हैं। मौन धारण का अभ्यास समस्त तपों में उच्चकोटि का है। एकाग्रता और एकात्मता को दोनों ही साधनाएँ मौन धारण से बनी हैं, जिससे जिह्वा की यह दोनों साधनाएँ करलीं समझना चाहिए कि उसका इन्द्रिय संयम समग्र हो गया। जिसका इन्द्रिय संयम पूर्ण हो गया वह सच्चे अर्थों में तपस्वी है। तपस्वी की वाणी अमोद्य होती है। वह शब्द वेध—बोलता है। बैखरी वाणी रोकने पर मध्यमा परा और पश्यन्ती वाणियाँ भी वशवर्ती हो जाती हैं । उसमें मन्त्र सिद्ध होते हैं। उसके दिये हुए वरदान सफल होते हैं।

नाद ब्रह्म का सिद्ध पुरुष परमात्मा की वाणी सुनता है। दूर श्रवण और दूर विचार प्रेरणा नाद योग की सिद्धियाँ है। विचारों को पढ़ना इसी माध्यम से होता है। मन्त्र में स्वर प्राण है। केवल अक्षर मन्त्र नहीं है। सस्वर पाठ करने को ही मन्त्र पाठ कहते हैं। सामगान को सिद्धियों का स्रोत कहा गया है। सामगान सहित गाये हुए मन्त्र नाद ब्रह्म बनते हैं। मन्त्र का जो फल एवं माहात्म्य बताया गया है, वह सस्वर उच्चारण का है। स्वर विहीन मन्त्र उच्चारणकर्ता के लिए घातक बताया गया है।

उद्गता जिन मन्त्रों का यजन एवं गायन करते हैं उनके फल यथावत् प्राप्त होते हैं। रोग निवारण, मानसिक संशोधन, वातावरण परिष्कार एवं अदृश्य जगत पर अधिकार यह प्रतिफल जिन मन्त्रों के बताये गये हैं, वे यजन और स्वर से संयुक्त होने पर ही होते हैं।

भगवान मनु ने कहा है—"महा यज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियर्त तनुः।" अर्थात्—यज्ञ तथा महायज्ञ का आश्रय लेने पर मनुष्य शरीर ब्राह्मण बनता है। इसके अभाव में याचक एवं उद्गता मात्र बनकर रह जाता है। अध्वर्यु वह है जिसने मन्त्रों को सिद्ध किया है। सिद्ध मन्त्र अनायास नहीं हो जाता उसे सस्वर प्रवीण पारंगत करना पड़ता है। सिद्ध पुरुषार्थ ग्रहण किया हुआ और उसके संरक्षण में अभ्यास किया हुआ मन्त्र फलित होता है। माली के संरक्षण में फूलने-फलने वाले उद्यान की तरह मन्त्र की सफलता भी सिद्ध पुरुष के संरक्षण में होती है।

मन्त्र का शुद्ध उच्चारण, तपश्चर्यापूर्वक संयम साधना, गुरु के संरक्षण, अटूट श्रद्धा यह सभी बातें जिस साधना में जुड़ जाती हैं। उसकी सफलता असंदिग्ध होती है, जो ऐसे ही उलटे-सीधे अक्षर दुहराते रहते हैं, जिन्हें शास्त्र विधि का ज्ञान नहीं है, जो मर्यादा पालन नहीं करते, जो व्रत धारण नहीं करते उनके मन्तर सफल नहीं होते।

मन्त्र को शब्द वेध कहा गया है। जैसे शब्द बेध वाण निशाने पर लगाकर चलाने वाले के पास वापस लौट आता है उसी प्रकार सिद्ध किया हुआ मन्त्र लक्ष वेध करता है और फिर सशब्ध स्थिति में प्रयुक्तों के शरीर में प्रवेश कर जाता है, उसका भण्डार कभी खाली नहीं होगा।

पुस्तक में लिखे हुए शब्दों को याद कर लेना मन्त्र नहीं है। उन्हें अक्षरों की पंक्ति कहना चाहिए। उसे याद कर लेना कविता याद कर लेने के समान है। ऐसे मन्त्र का प्रयोग कौतूहल मनोरंजन के समान है। मन्त्र को साधना और विचार और स्वर के साथ सिद्ध करना होता है। इसके लिए प्रवीण पारंगत का संरक्षण चाहिए। जो इन बातों की अपेक्षा करते हैं। स्वेच्छाचार बरतते उनके मन्त्र उपहासास्पद ही बनकर रह जाते हैं। वैसा फल नहीं मिलता जैसाकि शास्त्रों में लिखा हुआ है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन्त्र शक्ति का अद्‌भुत चमत्कार

भारतीय धर्म में मन्त्रशक्ति का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण और हमारे वेद-शास्त्र पुराण सभी मन्त्रों की महिमा से भरे हैं। उनका मत यह है कि मन्त्रों में शक्ति का अपार भंडार भरा है और जो कोई उनका विधिवत् साधन करेगा। वह उनकी शक्ति से अपना और दूसरों का कल्याण कर सकेगा। पर काल प्रभाव से अब मन्त्रों पर लोगों की वैसी श्रद्धा नहीं रही है और मन्त्रों द्वारा प्रत्यक्ष कार्य कराने वाले साधक भी नाम मात्र को ही मिलते हैं। इसके विपरीत अनेक धूर्तों में इस विद्या के नाम पर लोगों को ठगना शुरू कर दिया है और वे तरह-तरह की चालें और हाथ की सफाई करके दर्शकों को धोखे में डाल देते हैं, इन बातों का परिणाम यह हुआ है कि जनता का विश्वास मन्त्रों पर से हट गया है और कोई समझदार व्यक्ति मन्त्र-शक्ति की सत्यता को मानने के लिये तैयार नहीं होता। यह स्थिति लोगों के लिये ही नहीं धर्म की दृष्टि से भी हानिकर है, क्योंकि मन्त्रों का मुख्य उद्देश्य चमत्कार दिखलाना नहीं, वरन् आत्मोन्नति के क्षेत्र में प्रगति करना है। सन्तोष का विषय है कि अब भारतीय राष्ट्र में जो नवीन चेतना की लहर उत्पन्न हुई है, उसमें अन्य बातों के साथ इस ओर भी अधिकारी पुरुषों का ध्यान गया है और इस विद्या का विधिवत् साधन करने के कितने ही उदाहरण सम्मुख आ रहे हैं। इस सम्बन्ध में एक प्रमाणिक वर्णन गोरखपुर के सहयोगी "कल्याण" के वर्ष २६ संख्या १२ पृष्ठ १४९८ में प्रकाशित हुआ है। जिसे हम पाठकों के हितार्थ ज्यों का त्यों उद्‌धृत कर रहे हैं—

बिरला हाउस, नई दिल्ली से मास्टर श्रीराम जी लिखते हैं—दिल्ली में अनुमान दो-ढाई मास से एक वैष्णव साधु आये हुये थे, जिनका नाम बाबा गोपालदास है। वे यहाँ पर आर्यनिवास नं. १ डाक्टर लेन पर ठहरे थे। छत के ऊपर एक गोल-सा छोटा कमरा है, उसी में वे रहते थे। उन्होंने कृष्ण भगवान का एक चित्र काष्ठ की चौकी पर रख छोड़ा था। उस चित्र के चारों तरफ कनेर के पुष्प चढ़ाये हुए रक्खे रहते थे। गोपालदास बाबा उस चौकी के पास ही एक दरी पर बैठे तुलसी की माला फेरते थे। जो लोग उनके पास जाते, वे भी उसी दरी पर बैठ जाते थे। उनके पास जाने वालों को प्रसाद देने के लिये बाबाजी ईंट के छोटे-छोटे टुकड़े अनुमान ४, ५ तोले वजन के एक हरे केले के टुकड़े में गोपाल की मूर्ति के सामने आधा मिनट रखकर उठा लेते थे, ईंट के टुकड़े सफेद मिश्री के टुकड़ों में बदल जाते थे और वे उन मिश्री के टुकड़ों को उन लोगों को दे देते थे, जो उनके दर्शन के लिये जाते। कभी-कभी ईंट का टुकड़ा कलाकन्द में बदल जाता था। यह अद्‌भुत परिवर्तन कैसे हो जाता है? सो तो वह बाबाजी ही जानते हैं और किसी को पता चला नहीं है। विज्ञानवेत्ता इस कारण को ढूँढ़ निकालें तो दूसरी बात है।

उस बाबाजी के पास जर्मन-राजदूत, जापानी-राजदूत, (संसद के अध्यक्ष) श्रीमावलंकर, श्रीसत्यनारायणसिंह, रायबहादुर लक्ष्मीकान्त मिश्र आदि गये थे। इनको भी इसी प्रकार का प्रसाद दिया गया था। जर्मन-राजदूत के साथ एक जर्मन महाशय भी थे। उन्होंने तो यह चमत्कार देखकर बाबाजी से अपना शिष्य बना लेने की प्रार्थना भी की।

इन दो प्रकार के चमत्कारों के अतिरिक्त तीन चमत्कार विशेष उल्लेखनीय हैं। पहला चमत्कार तो यह है कि श्री जुगलकिशोर जी बिरला ने एक ताँबे की चमची को एक केले के हरे पत्ते में लपेटकर अपने हाथ में लिया और बाबाजी के कहने के अनुसार श्री बिरला जी सूर्य के सामने खड़े हो गये। बाबाजी भी पास में खड़े कुछ मन्त्र जपते रहे। दो तीन मिनट बाद ही चमची निकाली गई तो सोने की बन गई थी। अभी तक वह चमची भी बिरला जी के मुनीम डालूराम जी के पास उसी आय भवन में रक्खी हुई है।

दूसरा चमत्कार यह हुआ कि इस मिश्री के प्रसाद का वृतान्त सुनकर एक महाशय ने बाबाजी के पास जाने वालों में से किसी को यह बात कह दी कि हम तो बाबाजी की मन्त्रसिद्धि तब मानें जब कि वे पूरी-की-पूरी एक नंबरी ईंट को मिश्री को ईंट बना दें। ऐसी बात बाबाजी को सुनाई गई तो बाबाजी ने झट कह दिया कि गोपाल जी की कृपा से मिट्टी की ईंट के टुकड़े मिश्री के टुकड़े बन जाते हैं तो पूरी मिट्टी की ईंट बन जाना कौन बड़ी बात है। अतएव १८ सितम्बर बृहस्पतिवार को रात्रि के ८ बजे श्री बिरलाजी के तथा और कई सज्जनों के सामने एक नंबरी ईंट मँगाई गई और उसको धो-पौंछकर एक सज्जन के हाथ से काष्ठ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की एक चौकी पर वह ईंट रखवा दी गई तथा एक केले के पत्ते से उस ईंट को ढक दिया गया। तीन-चार मिनट तक बाबाजी कुछ मन्त्र जपते रहे। फिर उस ईंट को उठाया गया तो केले के पत्ते में से एक दम श्वेत मिश्री की ईंट निकली। वह ईंट (बिरला-हाउस, दिल्ली में) श्री जुगलकिशोर जी बिरला के पास रक्खी हुई है, सो ये दोनों चीजें तो मौजूद हैं, कोई भी देख सकता है।

एक अन्य अद्भुत घटना इस प्रकार है। उस घटना में जुगल किशोर जी बिरला, गायनाचार्य पंडित रमेश जी ठाकुर तथा 'नवनीत' के संचालक श्री श्रीगोपालजी नेवटिया उपस्थित थे। अनुमान दिन के दस बजे होंगे। उस समय किसी ने बाबाजी से कहा कि 'एक दिन आपने पानी से दूध बनाया था, परन्तु उस दिन प्रभुदयाल जी हिम्मतसिंह का, माधवप्रसाद जी बिरला आदि जो सज्जन देखते थे, उनको सन्तोष नहीं हुआ था। बाबाजी इस प्रकार से दूध बनायें कि किसी को भी सन्देह न रहे। इस पर बाबाजी बहुत हँसे और बोले, उन लोगों की श्रद्धा की शायद, परीक्षा की गई होगी। इसके बाद बाबाजी ने कहा, 'अच्छा एक काठ का पट्टा बाहर रक्खो और उस पर यह पानी की बाल्टी रख दो।' बाबाजी ने जैसा कहा वैसा ही किया गया। बाबाजी ने अपनी चद्दर, जो ओढ़ रखी थी, वह भी उतार दी और एक कौपीन तथा उस पर एक तौलिया ही रक्खो और स्वयं दूर खड़े हो गये तथा सबको कह दिया कि उस बाल्टी को एक दफे फिर अपनी आँखों से देख लो। सबने वैसा ही किया। बाबाजी ने एक आदमी से कहा कि 'तुम इस पट्टे पर बाल्टी के पास बैठकर ओम का जप करते रहो। फिर बाबाजी उस बाल्टी के पास गये और उसमें से कटोरी पानी की भरी और सबको वह पानी दिया गया। सबने कहा, यह तो पानी ही है। फिर बाबाजी श्री गोपाल जी की मूर्ति के पास जा बैठे और वह बाल्टी अपने पास मँगा ली। बाल्टी गमछे से ढक दी गई और एक लाल फूल, श्री गोपाल जी की मूर्ति पर चढ़ा हुआ था, अपने हाथ से बाल्टी में डाल दिया। उसके पश्चात् जब गमछा हटाया गया, तब एक दम सफेद दूध देखने में आया। सबको एक-एक कटोरी दूध दिया गया। शेष दूध बिरला-हाउस पहुँचाया गया, जो अनुमानतः ढाई सेर था। वह दूध गरम करके जमाया गया और दूसरे दिन उसमें से मक्खन निकाला गया।

मन्त्र शक्ति के चमत्कार का यह एक छोटा-सा उदाहरण है। वस्तुतः आत्मोत्कर्ष के अतिरिक्त श्री मन्त्र विद्या से दैनिक जीवन में भी अनेकों लाभ उठाये जा सकते हैं।

परिष्कृत वाणी द्वारा दिये गये शाप—वरदान की कहानियाँ प्रायः सुनने को मिलती हैं दिव्यात्माओं के वरदान से सामान्य मनुष्य भी निहाल होते देखे गये हैं। पुराणों में ऐसी असंख्य कथा-गाथाएँ भरी पड़ी हैं, जिनमें देवताओं एवं ऋषियों के अनुग्रह से लोगों ने ऐसी महत्वपूर्ण उपलब्धियों प्राप्त कीं, जिन्हें वे अपने सामान्य प्रयत्नों एवं साधनों से नहीं ही प्राप्त कर सकते थे। कभी-कभी गुरुजनों का आशीर्वाद भी फलता है और किसी दीन-दुःखी की सहायता करके गिरे को उठा कर उपकार किया होगा तो उसकी कृतज्ञता अभिवृद्धि भी उपकार कर्ता के लिए कल्याणकारी परिणाम उपस्थित कर सकती है। न तो इतिहास के पृष्ठों पर वरदानों के सत्परिणाम बताने वाली घटनाओं की कमी है और न वर्तमान में भी ऐसे प्रसंग कम हैं, जिनसे वरदान के प्रत्यक्ष परिणाम सामने आते हैं।

विशिष्ट संवेदनाओं के साथ प्रकट हुई सद्भावनाएँ ही आशीर्वाद बनकर प्रस्फुटित होती हैं। ऐसे आदान-प्रदान मात्र शिष्टाचार अथवा माँगने देने के उपक्रम से सम्भव नहीं होते क्योंकि गहरी संवेदनाएँ ऐसे ही अकारण नहीं उपज पड़तीं। किसान, माली, विद्यार्थी, व्यापारी, कलाकार आदि को अभीष्ट अफलताएँ प्राप्त करने के लिए आवश्यक मूल्य चुकाना पड़ता है। धरती की करुणा सुप्रसिद्ध है, पर बिना उर्वरक प्रयत्न किये वह भी किसी को अपनी हरितमा एवं खनिज सम्पदा से लाभान्वित नहीं करती। गाय को दुहे बिना दूध निकालना कठिन है। वरदान प्राप्त करने की प्रक्रिया में वाचालता एवं बाल-उपहारों के सहारे प्राप्त करने की बात नहीं सोची जानी चाहिए। पात्रता और प्रामाणिकता के सहारे ही महत्वपूर्ण व्यक्तियों पर छाप छोड़ी जा सकती है। उदार होते हुए भी वे पारखी होती हैं और आशीर्वाद रूप में परिणित होने वाली अपनी तप सम्पदा का कहाँ, कितनी मात्रा में और किस निमित्त, अनुदान दिया जाना चाहिए, उसे विवेकपूर्वक देखते समझते हैं और वही करते हैं, जो औचित्य की दृष्टि से सही सिद्ध होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अब तक की इस प्रकार की घटनाएँ एक ही सुनिश्चित तथ्य उपस्थित करती हैं कि तप के मूल्य पर ही वरदान मिले हैं। तप का अर्थ शरीर उत्पीड़न नहीं वरन् आदर्शों के लिए त्याग बलिदान प्रस्तुत कर सकने एवं कष्ट सह सकने की उदात्त निष्ठा का परिचय देना है। दूसरे शब्दों में इसी वर्चस्व को उस स्तर की प्रामाणिकता कहा जा सकता है, जिससे द्रवित होकर उच्चस्तरीय आत्माएँ अपनी दिव्य सम्पदा का पय-पान कराती है। मात्र दर्शन, प्रणाम, पुष्प अक्षत एवं गिड़गिड़ाने की कीमत पर कोई छुटपुट भीख मिल सकती है, पर कोई कहने योग्य लाभ इस उथली विडम्बना द्वारा प्राप्त कर सकना सम्भव नहीं होता। मात्र भिक्षुक की यातना ही तो सब कुछ नहीं है। दानी को अपनी जेब, याचक का स्तर और दान के सदुपयोग आदि तथ्यों का ध्यान रखना होता है। दुःखी, दरिद्र, लोभी, लोलुप भी यत्किंचित वरदान जहाँ तहाँ से बटोर सकते हैं, पर वे होते उतने ही हैं, जितने समुद्र तट पर बिखरे सीप, घोंघे बीनना। महत्वपूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्राप्तकर्ता को भी उसी स्तर की उदारता का परिचय देना पड़ता है जैसा कि दाता से उदार अनुग्रह करने की अपेक्षा की गई है। आदान के साथ प्रदान का ध्यान न रखने वाले सामान्य व्यवहार की दृष्टि से भी घाटे में रहते हैं और उच्चस्तरीय अनुदान पाने की ओंधी-तिरछी तिकड़में भी व्यर्थ चली जाती हैं। स्वयं संकीर्ण स्वार्थपरता से बेतरह जकड़े हुए लोग जब किन्हीं दिव्यात्माओं से अपनी कष्ट संचित सम्पदा मुफ्त में ही—बिना औचित्य का ध्यान दिये ही उड़ेल देने की अपेक्षा करते हैं तो वे विश्व की सुनियोजित विधि व्यवस्था को ही झुठलाते हैं।

वरदान एक तथ्य है, आशीर्वाद का सत्परिणाम सुनिश्चित है, पर वह निकलना गहन अन्तस्तल से चाहिए। दिव्य शक्तियों को प्रसन्न करने के लिए बलिदान और दिव्यात्माओं का अनुग्रह पाने के लिए तप करना पड़ता है। इन शब्दों का सही अर्थ न समझने वाले प्राणी बध जैसे क्रूर कर्म को बलिदान से जोड़ते और शरीर उत्पीड़न को तप मान बैठते हैं, जब कि यह दोनों ही प्रयोग आदर्शों के लिए उदारतापूर्वक कुछ महत्वपूर्ण त्याग करने और कष्ट सहने की गतिविधियाँ अपनाने पर ही क्रियान्वित होते हैं।

वरदान की तरह आत्मबल सम्पन्न व्यक्तियों के रोष अभिशाप बनकर भी सामने आते हैं। गुरुजनों का असन्तोष भी कष्ट कारक होता है। अभिभावकों के साथ दुष्टता बरतने वाली सन्तानें अभिशप्तों की तरह दुःखपाती हैं। निर्दोष को सताने, छल और विश्वासघातपूर्वक किसी को तिलमिला देने वाले लोग भी उनकी 'हाय' के शिकार बनते हैं और अपना बोया आप काटते हैं। ऐसे लोगों को इस प्रकार के शोक-सन्ताप सहन करने ही पड़ते हैं।

अभिशापों के दुःखद परिणामों की घटनाएँ भी वरदान अनुदानों की तरह ही सुविस्तृत हैं। शाप-सन्तप्त लोगों को क्या-क्या सहना पड़ा इसका अगणित घटनाएँ प्राचीन काल की भी मौजूद हैं और आज भी उनकी कमी नहीं है।

सगर पुत्रों का कपिल मुनि के शाप से भस्म हो जाना, शृंगी ऋषि के शाप से परीक्षित को साँप द्वारा काटा जाना, मेघदूत वर्णन में यक्ष का वियोग दुःख सहना, गन्धारी के शाप से यदुकुल का लड़-मरकर समाप्त होना, नहुष का सर्प बनना, त्रिशुंक का उलटा लटकना, दमयन्ती के शाप से व्याध की दुर्गति होना जैसी असंख्य पुराण कथाएँ सुनी जाती हैं।

शाप प्रकरण के वर्तमान घटनाक्रम भी कम नहीं हैं। विगतकाल के अनेकों प्रमाण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि अभिशाप न केवल व्यक्तियों के पीछे पड़ कर उन्हें भाँति-भाँति के कष्ट देता है वरन् पदार्थों तक पर छा जाता है और उन वस्तुओं के सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति भी आग छूने पर जलने की तरह कष्ट भुगतते हैं।

मिस्र के पिरामिड समूह में एक कब्र वहाँ के किसी तूतन खामन नामक राजकुमार की है। उसके बाहर एक शिलालेख पर लिखा है—"इस कब्र से छेड़खानी करने वाले को बेमौत मरना पड़ेगा।" पुरातत्ववेत्ताओं ने कुछ समय से इसकी खोज-बीन करने के सिलसिले में उखाड़-पछाड़ की और उनमें से अधिकांश को सचमुच ही बेमौत मरना पड़ा।

यूरोप भर में 'होप हीरा, अपनी मनहूसियत के लिए बहुत समय चर्चा का विषय बना रहा है। यह हीरा वर्मा के एक बौद्ध मन्दिर की प्रतिमा में जड़ा था। इसे वहीं से वेपटिस्ट अर्वानियर नामक अँग्रेज ने चुराया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था। इसे 'टामस होप' नामक जौहरी ने खरीदा और वह कुछ ही दिन में दिवालिया हो गया। वहाँ से उसे वाशिंगटन की कोई धनी युवती—इवलिन मेक्वीन रेनाल्ड खरीद ले गई। कुछ महीने के भीतर ही उस पर ऐसा उद्वेग छाया कि नींद की गोलियाँ खाकर आत्म-हत्या कर ली। वहाँ से वह 'एण्यनर' नामक ठेकेदार के पास पहुँचा। परस्पर के झगड़ों में शत्रुओं ने उसका सिर ही काट लिया।

यहाँ से वह आगे बढ़ा राजकुमारी लम्बल उसे खरीद ले गई, उनकी भी हत्या हो गई। अब 'होप' एक नये जौहरी फास की दुकान में पहुँचा और चोरी चला गया। चोर की भी खैर नहीं रही उसने भी एक सप्ताह के भीतर ही आत्म-हत्या कर ली। पीछे अभिनेत्री फालीजवर्गन उसे खरीद ले गई। वह उसे पहनकर पहली बार ही रंगमञ्च पर उतरी थी कि किसी दर्शक ने गोली मारकर उसे ढेर कर दिया। स्टाक मार्केट के करोड़पति व्यापारी ने उसे खरीदा तो उसका भी दिवाला निकल गया। वहाँ से 'होप' अरब के सुल्तान अब्दुलहमीद के यहाँ पहुँचा और उन्हें भी गद्दी से उतरना पड़ा। एक धनी महिला बाल्य मैकलीन ने उसे जिस दिन खरीदा ठीक उसी दिन उनका लड़का किसी मोटर की चपेट में कुचलकर मर गया।

कुछ दिन तो यह घटनाएँ व्यक्तिगत जानकारी तक सीमित बनी रहीं, पर पीछे जब सारे सूत्र मिलाये गये तो पता चला कि वह हीरा कितना दुर्भाग्यग्रस्त था।

कराँची (पाकिस्तान) के एक भूमिप्लाट के दुर्भाग्यग्रस्त होने का विवरण कितने ही पत्रों में छपा था। कहते हैं कि उस जमीन में किसी पीर की कब्र है। वह आत्मा नहीं चाहती कि उस भूमिका कोई उपयोग करे। इस जमीन पर जो भी अधिकार करता है वही भारी विपत्ति में फँसता है। इस जमीन को खरीदकर एक पारसी ने बँगला बनाया। वह स्वयं—उसके दोनों पुत्र दुर्घटनाग्रस्त होकर कुछ ही दिन में मर गये। फिर उसे एक अंग्रेज ने खरीदा वह पागल हुआ और उसकी स्त्री ने आत्म-हत्या कर ली। इसके बाद चार अंग्रेज सेनाधिकारी उसमें रहे और वे भी दुर्घटनाग्रस्त होकर मर गये। इसके बाद वहाँ अमेरिकी दूतावास बना तो राजदूतों को आये दिन विपत्तियों का सामना करना पड़ा। इसके बाद उन्होंने भी अन्यत्र दूतावास बना लिया।

आस्ट्रिया के सामन्त राजकुमार 'आर्कड्यूक फ्रांज फडिनेड' ने एक आलीशान यात्री कार बनवाई। जिसमें छै: यात्री आराम से सफर कर सकते थे। २८ जून, १९१४ को ड्यूक और डचेज उस लाल रंग के छोटे से होटल पर सवार होकर निकले। वे लोग कार पर सवार होकर सेराजेवो नगर के लिए रवाना हुए। निश्चित स्थान तक पहुँचने से पूर्व ही कहीं से सनसनाता हुआ एक बम उनकी कार के समीप गिरा और उससे कार तो बच गई, पर अंगरक्षक घुड़सवार बेतरह घायल हो गये। यात्रा आगे बढ़ी। ड्राइवर रास्ता चूककर किसी अपरिचित मार्ग पर मुड़ गया वहाँ डाकुओं ने उन्हें घेरकर गोलियाँ चलायी और ड्यूक और डचेज की हत्या हो गई।

बहुत समय तक यह का सेराजेवो के गवर्नर के महल में रखी रही। पीछे उसे सेनापति पोत्थोरेक द्वारा अपने प्रयोग में लाया जाने लगा। सेनापति पर दुर्भाग्य बरसा। वे एक छोटी लड़ाई हार जाने के कारण पदच्युत कर दिये। अन्त में दुर्दिन गुजारते हुए वियना में एक भिखारी के यहाँ आश्रय पाकर मौत के मुँह में चले गये।

एक दिन एक कप्तान उसकी जाँच-पड़ताल करने सड़क पर ले गया तो वह एक पुलिया से जा टकराई और उसी दुर्घटना में उस बेचारे का भी प्राणान्त हो गया।

पीछे वह यूगोस्लाविया के गवर्नर के स्वामित्व में पहुँची। एक महीने के भीतर ही उसने पाँच दुर्घटनाएँ की और अन्तिम में तो गवर्नर का दाहिना हाथ ही कट गया। गवर्नर ने उसे मनहूस को नष्ट कर देने का हुक्म दिया था, पर एक हुस्साहसी डाक्टर ने अनुरोधपूर्वक उस लाखों रुपये की सम्पत्ति को कौड़ी मोल एक हजार रुपये में खरीद लिया। खरीदार का नाम था सरकिस। वह मनहूसी को अन्ध-विश्वास कहता था और वैसा समझने वालों का उपहास उड़ाता था। कोई ड्राइवर उसे चलाने को तैयार न हुआ तो स्वयं ही चलाने लगा। एक दिन वह कार न जाने कैसे बेलन की तरह लुढ़की और एक खड्ड में गिर पड़ी। वह बनी बहुत मजबूत थी इसलिए इतनी दुर्घटनाओं के बाद भी वह जीवित बनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

रही और मामूली-सी मरहम पट्टी कराने के बाद स्वस्थ होती रही। यहाँ से बिकी उसे एक व्यापारी ने खरीदा और आत्महत्या करके अपनी जान गँवा बैठा। पीछे एक और डाक्टर ने खरीदा जिसका धन्धा ही चौपट हो गया। उन्हीं दिनों स्विटजरलैण्ड में कार दौड़ प्रतियोगिता हो रही थी। एक ड्राइवर ने इसके लिए उस गाड़ी को अधिक उपयुक्त समझा और खरीद लिया। दौड़ में अन्य गाड़ियाँ तो आगे-पीछे रहने का रिकार्ड बनती रही, पर यह शाही कार एक दीवार से जा टकराई और ड्राइवर का प्राण लेकर एकान्त में बैठी रही।

एक मनचले किसान ने उसे सस्तेपन के लोभ में खरीद लिया। एक दिन वह बीच रास्ते में ही अड़ गई। सारे प्रयत्न करने पर भी उसे आगे न धकेला जा सका तो अन्ततः मजबूत बैलों से मोटे रस्सों के सहारे घसीट ले चलने का प्रबन्ध किया गया। इस प्रकार कुछ ही दूर खिसकी होगी कि वह अचानक स्टार्ट हो गई और बैलों को कुचलती हुई मालिक को भी डकार गई।

कार के साथ जुड़ा दुर्भाग्य लोगों को विदित तो था फिर भी दुस्साहसियों की कमी नहीं। 'टाइवर हर्शफील्ड' नामक एक मिस्त्री ने उसे खरीदा और अपने हाथों नये सिरे से मरम्मत करके उसे काम में लाने लगा। एक दिन हर्शफील्ड अपने चार मित्रों समेत किसी भोज में उसी पर सवार होकर जा रहा था कि सामने से आती एक मोटर से भयंकर टक्कर हो गई। दूसरी गाड़ी को तो कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ, पर वे पाँचों व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गये। उनमें से एक ही किसी प्रकार जीवित बच सका।

इस दुर्भाग्यग्रस्त कार का क्या हो ? वह बहुत कीमती भी थी और आकर्षण भी। अन्ततः उसे सरकार द्वारा आस्ट्रिया के अजायबघर में रखवा दिया गया। उन दिनों प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था। शत्रु के वायुयानों ने उस अजायबघर पर बम गिराये और इमारत के साथ उस कार की भी धज्जियाँ उड़ादीं। इस प्रकार उस कार के साथ-साथ महायुद्ध का भी अन्त हो गया।

स्पेन का एक प्रतापी बादशाह हुआ है—'एल्फँसो'। वह जन्मतः शाप सन्तप्त पैदा हुआ और जब भी उसने कभी कोई प्रयास आरम्भ किया तभी बुरी तरह असफल हुआ। उसके बारे में यह घोषणा सूक्ष्मदर्शियों ने आरम्भ से ही कर दी थी कि उसे चुपचाप किसी प्रकार दिन काटने चाहिए। अन्यथा हर हलचल में उसे विपत्ति का सामना करना पड़ेगा।

इक्कीस वर्ष की आयु तक पहुँचते-पहुँचते उसे छै: बार प्राणघातक हमलों का सामना करना पड़ा। जब वे कहीं गये तब वहाँ भी विपत्ति आई। एकबार वे इटली गये तो ठीक उन्हीं दिनों उस देश की पाँच नावें, एक पनडुब्बी तथा दर्जनों नाविक पनी में समा गये। यही उनकी पहली और अन्तिम यात्रा थी। जब भी उन्होंने कोई नया काम किया तभी उसमें भारी हानि उठानी पड़ी। वे डरे, सहमे महल में अपने दिन गुजारते थे। उनके शासन काल में प्रजा पर भी संकटों के बादल मँडड़राते रहे।

आधुनिक युग में भी विभिन्न सच्ची शाप कथाएँ सामने आई हैं और परामनोवैज्ञानिक उन पर खोजकर रहे हैं। उनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध है हिटलर में घनिष्ठतम सहयोगी रुडोल्फ हैस को मैक्सको के एक गुप्त विधाविद् विशारद् डॉक्टर द्वारा दिया गया स्मृति-भ्रंश का शाप।

रुडोल्फ, हैस हिटलर का रणनीति-निर्धारक परामर्शदाता था। सर्वाधिक तीक्ष्ण बुद्धि। विश्व युद्ध के दौरान मित्रराष्ट्रों के राजनेता जर्मनी के इस कूटनतिज्ञ के चातुर्य से भयभीत हो उठे और उसे किसी भी तरह अरक्षम बनाने का विचार करने लगे। पर यह सम्भव कहाँ था।

अन्त में ये राजनीतिज्ञ मेक्लिको के उक्त गुप्त विछाविशारद डाक्टर को यह समझाने में सफल हुए कि विश्व शान्ति के लिए हैस को अक्षम बनाना आवश्यक है। डाक्टर ने स्मृति-भ्रंश का शाप दिया और महान् कूटवेत्ता, अप्रतिम मेधावी रुडोल्फ हैस स्मृति खो बैठा। पैराशूट से वह अपने शत्रु राष्ट्र इण्लैण्ड में जा उतरा। उसका आंतक इतना था कि इंगलैंडवासी यह मानते रहे कि यह उन लोगों के गुप्त सैनिक भेद लेने के लिए स्मृति-भ्रंश का बहाना बना रहा होगा। पर धीरे-धीरे वास्तविकता स्पष्ट हो गई। हैस एक ही वाक्य अक्सर कहता—"पता नहीं क्या हो गया मेरी स्मण-शक्ति को ? जैसे किसी ने उस पर एक आवरण डाल दिया हो।" न्यूरेम्वर्ग जेल, जहाँ नाजी कैदियों को

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रखा गया था, वहाँ के मानस-रोग विशषेज्ञ डॉक्टर जी. एम. गिलवर्ट ने 'न्यूरेमबर्ग डायरी' नामक अपनी पुस्तक में रुडोल्फ हैस के इस आकस्मिक स्मृति-भ्रंश पर प्रकाश डाला है। डा. गिलवर्ट स्वयं भी इसका कोई कारण नहीं जान पाये। काफी समय बाद उन्हें यह शाप वाली बात मालूम हुई।

यहाँ स्मरणीय तथ्य यह है कि शाप अकारण ही किसी को नहीं दिया जा सकता। जब तक कोई तिलमिला देने वाली करारी चोट किसी को न लगे तक इस हास-परिहास में शाप नहीं दिया जा सकता। उसके पीछे कोई ठोस कारण होना चाहिए। दुष्टता एवं अनीति के बदले ही शाप दिये जा सकते हैं। यदि भूल या भ्रम वश उतावली में शाप दिया गया है तो वह उलटकर देने वाले का ही विनाश करता है। निर्दोष अम्बरीष को अकारण क्रोधाविष्ठ होकर दुर्वासा ने शाप दिया था। वह उलटकर दुर्वासा पर ही संकट बनकर लौट पड़ा अन्यत्र भी ऐसा ही होता है। निर्दोष को शाप दिया जाना सम्भव नहीं। आत्मबल सम्पन्न भी वैसा नहीं कर सकते। वैसा प्रयास करने वाले तान्त्रिक, अघोरी, काल्पनिक स्तर के ओछे लोग अपनी संचित शक्ति तो गँवा ही बैठते हैं अनीति अपनाने का दण्ड भुगतने के लिए प्रकृति व्यवस्था द्वारा बाध्य किये जाते हैं।

शब्द शक्ति और वातावरण संशोधन

शब्द शक्ति की सबसे बड़ी सामर्थ्य है, वातावरण का संशोधन। वातावरण जिसमें हम रहते हैं, चेतनात्मक है। उसका सम्बन्ध प्राण-प्रवाह के स्तर से है। ऐसी मान्यता है कि सतयुग में ऐसा अदृश्य प्राण-प्रवाह चलता था, जिससे व्यक्तित्वों की भावना, मान्यता प्रभावित होती थी। इसी कारण उनके गुण, कर्म, स्वभाव में उत्कृष्टता भरी होती थी। चिन्तन, चरित्र और व्यवहार में आदर्शवादिता का समावेश रहता था। मानवी पुरुषार्थ का भी इसमें योगदान रहता था, पर इस प्रयोजन को सफल बनाने में अदृश्य वातावरण की भूमिका—अनुकूलता का भी भारी योगदान रहता था। परिस्थितियाँ मनःस्थिति के आधार पर इतने बड़े करवट लेती हैं कि उसे भाग्य विधान, ईश्वरेच्छा जैसा नाम देना होता है। इसलिये अदृश्य जगत में संव्याप्त वायुमण्डल की तरह ही उसका दूसरा पक्ष वातावरण भी कम महत्वपूर्ण नहीं होता।

इन दिनों बढ़ती विषाक्तता एवं उससे वायुमण्डल तथा वातावरण दोनों के ही प्रभावित होने की बड़ी चर्चा है। इसका गम्भीर पर्यवेक्षण करें तो ज्ञात होता है कि इसका मूल कारण प्रचलन-प्रवाह तक ही नहीं है। इसकी जड़ें अदृश्य वातावरण में बड़ी गहराई तक घुसी दृष्टिगोचर होती हैं। दुश्चिन्तन की भरमार से विषाक्त अदृश्य वातावरण और इससे फिर लोक-मानस में असुरता—निकृष्टता का बढ़ना। यह एक ऐसा कुचक्र है जो एक बार चल पड़ने पर फिर टूटने का नाम नहीं लेता। लोक चिन्तन व प्रवाह का अदृश्य वातावरण से अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है।

इस कुचक्र को संघबद्ध प्रयासों द्वारा तोड़ना ही होगा। परमात्मा की तरह आत्मा को भी अपना उत्तरदायित्व निभाना होगा। अवतार प्रकरण की सूक्ष्म प्रक्रिया अपने स्थान पर है लेकिन सुधार प्रयोजन का दूसरा पक्ष मनुष्यकृत है, जिसे जागृत व्यक्ति आपत्ति धर्म की तरह अपनाते और सृष्टा के प्रयोजन में हाथ बँटाते हैं। उन्हें अध्यात्म उपचारों का आश्रय लेना पड़ता है। विशालकाय सामूहिक धर्मानुष्ठान प्रायः इसी प्रयोजन के लिए किये जाते हैं।

लंका विजय में असुरों का संहार तो हुआ पर अदृश्य वातावरण में विषाक्तता भरी होने के कारण लगा कि सामयिक समाधान पर पर्याप्त नहीं, अदृश्य का भी संशोधन होना चाहिए। श्रीराम ने दस अश्वमेधों का नियोजन इसी निमित्त किया। कुरुक्षेत्र में महाभारत विजय के उपरान्त कंस, दुर्योधन, जरासंधु से तो पीछा छूटा पर अदृश्य की विषाक्तता यथावत् रहने से स्थायी समाधान न सूझा। अन्ततः अध्यात्म उपचार का आश्रय लिया गया एवं विशालकाय राजसूय यज्ञ की भी ऐसी ही अध्यात्मपरक योजना बनाई गई।

सामूहिक धर्मानुष्ठानों से अदृश्य वातावरण की संशुद्धि के और भी अगणित प्रमाण—उदाहरण इतिहास पुराणों में भरे पड़े हैं। आसुरी सत्ता से भयभीत देवगणों को रक्षा का आश्वासन ऋषिरत के संचय से बनी सीता के माध्यम से मिला था। इसी प्रकार देवता जब संयुक्त रूप से प्रजापति के पास पहुँचे, एक स्वर से प्रार्थना की तो महाकाली प्रकट हुई जिन्होंने असुरों का संहार किया। संघशक्ति की ही यह परिणति थी। जिस समय राम-रावण युद्ध हो रहा था, अगणित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अयोध्यावासी मौन धर्मानुष्ठानरत थे ताकि अन्य परास्त हो, नीति की विजय हो। ये सभी उदाहरण सामूहिकता के माध्यम से वातावरण को संशोधित करने के घटनाक्रमों पर लागू होते हैं।

सामूहिकता में असाधारण शक्ति है। दो निर्जीव वस्तुएँ मिलकर एक + एक = दो ही बनती हैं, जबकि प्राणवानों की एकात्मकता कई गुना हो जाती है। तिनके-तिनके मिलकर रस्सा बँटने, धागों के बुन जाने से कपड़ा बनने, ईंटों से इमारत, बूँदों से समुद्र तथा सींकों से बुहारी बनने के उदाहरण यही बताते हैं कि मिलकर एक हो जाने की परिणति कितनी महान् होती है। एक लय-ताल से जब संघात किया जाता है तो बड़ी विस्फोटक परिणति की सम्भावनाएँ दृश्यमान होने लगती हैं। तालबद्ध ढंग से परेड करती फौज-ध्वनि शक्ति द्वारा पुल तोड़ सकती है तथा एक छोटा-सा पेण्डुलम निरन्तर संघात से गर्डर तोड़कर भवन धराशायी कर सकता है। समूहबद्ध ढंग से की गयी प्रार्थना में वह प्रभाव है, जो वातावरण के प्रवाह को बदल-उलटकर असम्भव को भी सम्भव बना सकता है। आज जो परिस्थितियाँ हैं, वे न रहकर सतयुग के अरुणोदय जैसी स्वर्गीय परिस्थितियाँ उभर सकें, जैसी दिव्यदर्शियों ने अपने भविष्य कथन में व्यक्त की हैं, तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

मानव निर्मित वातावरण की जहाँ चर्चा की जा रही है, वहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि अवसर आने पर इसकी भूमिका बड़ी विशिष्ट होती है। एक चिन्तन एक प्रयास जब आँधी की तरह चलता है, सारे वातावरण को हिलाकर रख देता है। इसका एक उदाहरण 'युद्धोन्माद', "मॉब मेन्टलिटी" के रूप में देखा जा सकता है। ऐसी स्थिति में दिमाग पर मात्र लड़ने का आवेश छाया होता है। हवा में तेजी और गर्मी कुछ ऐसी होती है, जिसके कारण सामान्य व्यक्ति भी सम्मोहित होकर, असामान्य पुरुषार्थ करते देखे जाते हैं।

महात्मा गाँधी का सत्याग्रह आन्दोलन, दाण्डी यात्रा मानव निर्मित प्रवाह का एक स्वरूप है। अगणित व्यक्ति स्वेच्छा से जेल गए। मस्ती की इस जुग में अनेक शहीद हो गए। स्वतन्त्रता इस आँधी प्रवाह की परिणति थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय विस्टन चर्चिल ने हाथ की दो उँगलियों से अंग्रेजी का 'वी' (V) बनाते हुए एक नया नारा दिया था—"वी फॉर विक्ट्री।" इस नारे ने जनसाधारण का आत्मबल ऐसा बढ़ाया कि अन्ततः जीत नाजीवाद से संघर्ष करने वाली समूह शक्ति की ही हुई।

नियाग्रा जल-प्रपात के बारे में अमरीका की जन-जातियों में यह मान्यता संव्याप्त है कि जिस दिन यह झरना बन्द हो गया, प्रलय आ जाएगी। योगवश इसी सदी में एक बार हिम ग्लेशियर के नदी के उद्गम स्रोत पर जम जाने से कुछ घण्टों के लिए झरने से पानी गिरना बन्द हो गया। विश्व के सबसे बड़े प्रपात के थम जाने से सारा अमरीकन समुदाय अनायास ही शंकित हो उठा। सारे राष्ट्र में चर्चों में घण्टियाँ बजने लगीं एवं सामूहिक प्रार्थना की जाने लगी। कुछ ही घण्टों में वह प्रपात फिर बहने लगा। पर्यावरण विशेषज्ञों का कथन है कि सामान्यतः ऐसा होता नहीं (ग्लेशियर का जमना)। परन्तु होने पर इतना शीघ्र पूरे प्रवाह से नदी का शीत ऋतु में भी बह निकलना अपने आप में अविज्ञात रहस्य है। स्कायलैब के गिरने व सारे विश्व में उसके गिरने से होने वाली क्षति से आशंकित जनसाधारण द्वारा प्रार्थना व उसके समुद्र पर गिरकर नष्ट होने का वर्णन तो अभी-अभी का ही है।

मुस्लिमों की नमाज का एक सुनिश्चित समय होता है। अजान का समय होते ही जो व्यक्ति जहाँ भी है, तुरन्त अपनी उपासना का शुभारम्भ कर देता है। ईसाई रविवार प्रातः एकत्र होते हैं तथा चर्च में सामूहिक प्रार्थना करते हैं। मिलिट्री की 'रिट्रीट' जब भी होती है, जो व्यक्ति जहाँ होता है, वहीं सावधान मुद्रा में खड़ा हो जाता है। ये सारे उदाहरण एक समय एवं सामूहिकता की शक्ति की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये बताए जा रहे हैं।

प्रज्ञा अभियान को सामूहिक धर्मानुष्ठान रूपी प्रयास पुरुषार्थ कई विशेषताएँ लिए हुए हैं। अगणित व्यक्तियों की प्राण ऊर्जा, एक-सा चिन्तन, शब्द शक्ति की अपरिमित क्षमता एक समय-एक साथ जप ध्यान तथा महाप्रज्ञा की प्रेरणा का चिन्तन—इन सभी का प्रज्ञा पुरश्चरण में समावेश है। साधक पाँच मिनट तक सूर्योदय के साथ ही गायत्री मन्त्र का मौन-जप करते हैं। अन्तरिक्ष में परिशोधन हेतु आहुतियों का यह परोक्ष यज्ञ है। जितना अधिक उच्चारण इस मन्त्र का सृष्टि के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि से अभी तक हुआ है, उतना किसी का नहीं हुआ। शब्द शक्ति ओंकार गुंजन के रूप में समग्र अन्तरिक्ष में संव्याप्त है। ऐसी स्थिति में उच्चारित मन्त्र की शक्ति का प्रभाव द्विगुणित हो जाता है। समधर्मी कम्पन परस्पर एक-दूसरे को प्रभावित करते ही हैं।

शब्द-शक्ति सूक्ष्म मानव शरीर तथा परोक्ष अन्त:करण रिक्षीय संसार को प्रभावित करने वाली एक समर्थ ऊर्जा शक्ति है। यह जीभ से नहीं, मन व अन्त:करण से निकलती है। लोक प्रवाह को निकृष्टता से उलटकर उत्कृष्टता की ओर मोड़ने के लिए उच्चस्तरीय शब्द सामर्थ्य चाहिए। साधक स्तर की उत्कृष्ट जीवनचर्या वाले मात्रिक जब एक साथ पुरश्चरण सम्पादित करते हैं तो ऋषि कल्प महामानवों जैसी वातावरण की आमूल-चूलन बदल देने की सामर्थ्य विकसित होने लगती है। तप:तूप उच्चारण ही मन्त्र जाप है। सदाशयता को संघबद्ध करने और एक दिशा में चल पड़ने की व्यवस्था बनाने के लिए इस जप का सामूहिक इस अनुष्ठान स्वरूप ही आदर्श है। श्रुति ने आदेश भी दिया है—"सहस्र सा कमर्चत्" अर्थात्—"हे पुरुषों तुम सभी सहस्रों मिलकर देवार्चन करो।" वस्तुत: सामवेद और ऋग्वेद की समस्त ऋचाएँ सामूहिक गान ही तो हैं।

लोहे का लम्बा गर्डर, सीमेन्ट का एक बड़ा पिलर अकेला एक व्यक्ति नहीं उठा पाता। जब कई व्यक्ति मिलकर "हईशा" के निनाद के साथ जोर लगाते हैं तो वे उसे उठाकर खड़ा कर देते हैं। बड़े-बड़े भवन इससे बन जाते हैं। लेकिन जब यही शब्द शक्ति शुभकामना का चिन्तन लिए एक साथ कई व्यक्तियों द्वारा उच्चारित होता है, एक-सी तरंगें जन्म लेती हैं और बदले में शुभ विचारों की वर्षा ऊपर से करती हैं। "धियो यो न: प्रचोदयात्", "अग्नेनय सुपथा राये अस्मान्", "आनो भद्रा कृणवो यन्तु विश्वत:"—इन सभी मन्त्रों में सारे समूह के लिए श्रेष्ठ विचारों की—सन्मार्ग पर चलने की भारी प्रार्थना की गयी है। एक-सी भाव लहरें एक ही चित्त वृत्त को जन्म देती हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक फ्रिक्वेन्सी पर तरंगें उत्पन्न होने पर व अप्रत्याशित परिवर्तन लाती हैं। अल्ट्रासोनिक तरंगों से रोगों का निदान व चिकित्सा की जाने लगी है। माइक्रोवेव्स से केवल सम्पर्क वरन् ऊर्जा उत्पन्न करने में भी सफलता मिली है। गायत्री मन्त्र की विशेषता उसे वह स्तर प्रदान करती है, जिससे वह सामूहिक उच्चारण के माध्यम से अन्तरिक्ष को मथने में समर्थ हो सके। "सिम्पेथेटिक वाइब्रेशन" के सिद्धान्त पर आधारित यह प्रक्रिया "लाइटनिंग" (तड़ित विद्युत) जैसी सामर्थ्य रखती है।

वैज्ञानिकों का कथन है कि शब्द-शक्ति से इलेक्ट्रोमैग्नेटिक लहरें उत्पन्न होती हैं, जो स्नायु प्रवाह पर वाँछित प्रभाव डालकर उनकी सक्रियता ही नहीं बढ़ातीं—वरन् विकृत चिन्तन को रोकती व मनोविकार मिटाती हैं। एक अन्य निष्कर्ष के अनुसार संसार के पचास व्यक्ति यदि एक साथ एक शब्द का तीन घण्टे तक उच्चारण करें तो उससे छह हजार खरब वाट विद्युत शक्ति पैदा होगी। सारे विश्व में इससे घण्टों तक प्रकाश किया जा सकता है।

विशिष्ट बात यह है कि पृथ्वी जिसका चुम्बकत्व ०.५ गाँस है, हमेशा ०.१ से १०० साइकल्स प्रति सेकण्ड की गति से स्पन्दन छोड़ती रहती है। इन चुम्बकीय धाराओं को "शूमैन्स रेजोनेन्स" कहा जाता है। इसकी गति साढ़े सात साइकल्स प्रति सैकण्ड है। यह चुम्बकीय प्रभाव लगभग उतना ही है जितना कि मस्तिष्क के विद्युत उद्भव। ब्रेन वेव्स की तरंग भी अल्फा एवं थीटावेव्स के मध्य साढ़े सात साइकल्स की होती है। यह तथ्य व्यष्टि चेतना के उस महत् चेतना से विद्युत चुम्बकीय सम्बन्धों को सिद्ध करता है। मन्त्र शक्ति शक्ति के कम्पन दोनों ही चेतन धाराओं को "इनटयून" करके, उन्हें बड़े विस्तार से समग्र ब्रह्माण्ड में फैला देते हैं।

प्रात:कालीन सामूहिक मन्त्रोच्चार का अपना वैज्ञानिक महत्व है। शोध निष्कर्ष बताते हैं कि शरीर में प्राण शक्ति को प्रवाहित रखने के लिये उत्तरादायी "सिरोटोनिन" नामक हारमोन "पीनियल" ग्रन्थि से इसी समय प्रवाहित होता है। मन:सक्रियता, काया की स्फूर्ति सार्थक मन्त्रोच्चार हेतु अनिवार्य मानी जाती है। इसी कारण ब्राह्म मुहूर्त में सामूहिक मन्त्रोच्चार का इतना अधिक महत्व है।

गायत्री मन्त्र के सामूहिक जप-अनुष्ठान में ऐसी क्या विशेषता है? मात्र इसी को इतनी महत्ता क्यों दी गयी, इस सम्बन्ध में अनेक समाधान हमें आप्तवचनों एवं आधुनिक प्रयोग निष्कर्षों, मनीषी गणों के वचनों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

से मिलते हैं। पहले एक मवीषी के सम्बन्ध में एक रोचक घटना प्रसंग की चर्चा कर ली जाय। कुछ समय पूर्व बम्बई के प्रख्यात साप्ताहिक 'ब्लिट्ज' के सम्पादक संचालक श्री करेंजिया लन्दन गये थे। वहाँ रह रहे विश्वविख्यात विचारक आर्थर कौयस्लर से भेंट की। इस भेंट में अन्य विषयों के अतिरिक्त परमाणु युद्ध की सम्भावना और उसकी विश्वव्यापी प्रतिक्रिया पर लम्बा वार्तालाप हुआ। इस सन्दर्भ में वे बहुत चिन्तित दिखाई पड़े। श्री करेंजिया ने पूछा—"यदि अणु आक्रमण हुआ तो हम अपनी रक्षा कैसे करेंगे ?

इसके उत्तर में कोयस्लर ने कहा—"गायत्री मन्त्र में हजार परमाणु बमों से अधिक शक्ति है। यदि भारतवासी सामूहिक रूप से इस उपासना को आरम्भ कर दें तो उससे प्रकट होने वाली शक्ति आक्रमणकारियों के होसले पस्त कर सकती है।"

गायत्री मन्त्र के अर्थ स्वरूप और प्रभाव से अनेक लोग परिचित हैं पर उसकी भौतिक क्षेत्र में असाधारण रूप से कार्य कर सकने वाली क्षमता का अनुभव दूसरे लोगों ने नहीं किया जैसा कि उपरोक्त महान् दार्शनिक ने।

साम्यवादी से अध्यात्मवादी के रूप में बदल जाने वाले इन महा विद्वान का परिचय पाठक जानना चाहेंगे। इसलिए उनके सम्बन्ध की कुछ संक्षिप्त जानकारियाँ नीचे की पंक्तियों में दी जा रही हैं।

आर्थर कोयस्लर बुडापेस्ट हंगरी में जन्मे। उनका परिवार सुसम्पन्न था, फिर भी रूसी हलचलों के उतार-चढ़ाव में उस परिवार को बुरे दिन भी देखने पड़े। कोयस्लर लम्बे समय तक साम्यवादी प्रचारक भी रहे और पत्रकार भी। उन दिनों साम्यवाद की सर्वोत्कृष्टता का जूनून उन पर सवार था और वे उसे जनता के उद्धार का एक मात्र उपाय मानते रहे।

कोयस्लर ने मात्र वाणी और लेखनी से ही प्रचार कार्य नहीं किया। वरन् समय जाने पर उसने बन्दूक भी कन्धे पर उठाई और सेना में एक वरिष्ठ योद्धा की तरह काम करते रहे। वे जनरल फ्रेंको के विरुद्ध लड़े और पकड़े जाने पर जेल में बन्द भी रहे। वहाँ से किसी प्रकार भागे तो पैरिस में पकड़े गये। बाद में वे ब्रिटिश सेना में भर्ती हुए और साम्यवाद के समर्थन में जो कुछ कर सकते करते रहे।

इस बीच उन्हें स्वतन्त्र चिन्तन का अवसर मिला और उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि प्रचलित शासन प्रणालियों में से एक भी पूर्ण निर्दोष नहीं है। इन्हें मथ-कर नवनीत निकाला जाना चाहिए और समाज-व्यवस्था तथा शासन प्रणाली का अभिनव गठन इसी आधार पर किया जाना चाहिए। व्यक्ति के चिन्तन चरित्र और व्यवहार का स्वरूप भी नये ढाँचे में ढाला जाना चाहिए। वर्तमान मनुष्य की उपर्युक्त जीवनचर्या अपनाने की मनःस्थिति में नहीं है। ऐसी दशा में व्यक्तियों के अनुरूप ही समाज एवं शासन का स्तर हो सकता है। इस चिन्तन ने उन्हें साम्यवादी परिधि में अवरुद्ध नहीं रहने दिया वरन् मानवतावादी बन गये। उनने इंग्लैण्ड की नागरिकता ग्रहण करली। इसके उपरान्त के क्रमशः अध्यात्मवाद की ओर अधिकाधिक झुकते चले गये।

अध्यात्मवाद का उद्गम उन्हें भारत लगा और वे एक बार लम्बी भारत यात्रा पर निकले। यहाँ उनका उद्देश्य किसी राजनैतिक पर्यवेक्षण का न था वरन् यह था कि गुप्त भारत की विशिष्टताओं को खोज निकाला जाय।

इस शोध प्रयास में अनेकों विशिष्ट व्यक्तित्वों से मिले। अनेकों पुरातन इतिहास का अवशेषों के आधार पर अध्ययन किया। हिमालय के रहस्यमय क्षेत्रों की यात्रा की और इस देश की पुरातन स्थिति और आधुनिक परिवर्तन का भी गम्भीर अध्ययन किया। यह यात्रा प्रयास उन्हें बहुत ही उपयोगी प्रतीत हुआ और उसका विवरण भी सार संक्षेप में प्रकाशित किया वे स्वयं एक गायत्री उपासक थे। नियमित रूप से वे साधना करते थे।

कोयस्लर के प्रकाशित ग्रन्थों में कितने ही बहुचर्चित और सारगर्भित हैं। उनमें से कुछ प्रमुख हैं—(१) दि योगी एण्ड कनिसार, (२) इन साइड एण्ड आउटलुक, (३) लाइक आफ्टर डैथ, (४) एक्ट आफ क्रियेशन, (५) लोटस एण्ड दि रावो, (६) एरायवल्स एण्ड डिपार्चस्, (७) पोस्ट इन दि मशीन, (८) गाड दैट फेल्ड, (९) डार्कनेस एट नून, (१०) जेन्स ए समिंग अप', (११) क्रिक्स टू वायवल आदि। इनमें से 'डार्कनेस एट नून' का समस्त संसार में अत्यधिक प्रचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुआ। इन पुस्तकों में उनने अपने दृष्टकोण को निर्भीकतापूर्वक व्यक्त किया है और भारत की वर्तमान धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में चल रहे पाखण्ड की कटु भर्त्सना भी की है। कारण कि उनका मौलिक चिन्तन बहुत अंश तक साम्यवादी प्रभाव से ही किसी हद तक प्रभावित बना रहा और उनने श्रद्धा की तुलना में आलोचना को अधिक मान्यता दी। इस पर भी उनने वे भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं अतीत के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है और उसे मानव जाति के उत्कर्ष में उपयुक्त योगदान दे सकने योग्य कहा है।

मूर्धा ब्रह्मा शिखान्तो विष्णुर्ललाट रुद्रश्चक्षुषी चन्द्रादित्यौ कर्णौ शुक्रवृहस्पती नासापुटे अश्विनी दन्तोष्ठावुभे सन्ध्ये मुखं मरुतः स्तनौ वस्वादयो हृदयं पर्जन्य उदरमाकाशो नाभिरग्निः कटिरिन्द्राग्नी जघनं प्राजापत्यमूरू कैलासमूलं जानुनी विश्वेदेवी जंघे शिशिरः गुल्फानि पृथिवीवनिस्पत्यादीनि नखानि महती अस्थीनि नवग्रहा असृक्के तुर्मारामृतुसन्धयः कालद्रुमास्फालन् संवत्सरोनिभे षपोऽहोरात्रमिति वान्देवी गायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये।

य इदं गायत्रीरहस्यमधाते तेन ऋतसहस्त्रभिष्टं भवति। य इदं गायत्रीरहस्यमधीते विसकृत पापं नाशयति। सर्वान् वेदानधीतो भवति। सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति।

—गायत्री रहस्योपनिषद्

गायत्री वाणी की अधिष्ठात्री देवी है। उसका सिर ब्रह्ममय, शिखान्त विष्णु, ललाट रुद्र, दोनों नेत्र—सूर्य, चन्द्र, कानों के दो छेद—शुक्राचार्य, बृहस्पति, नाक के दो छेद—दोनों अश्विनी कुमार, दाँत-होठ—दोनों संध्याएँ मुख—मरुत, स्तन-वसु, हृदय—मेघ, पेट-आकाश, नाभि, अग्नि, कटि—इन्द्र, जंघा—प्रजापति, उरु—कैलाश, घुटने—विश्वदेव, जंघा—शिशिर, गुल्फ—पृथ्वी, नख—महतत्व, अस्थि—नवग्रह, आँते—केतु, माँस—ऋतु सन्धि, दोनों काल वर्ष निभेष—दिन-रात। ऐसी विराट् ब्रह्म स्वरूपिणी महाशक्ति गायत्री की शरण में अपने को समर्पित करता हूँ।

इस गायत्री उद्य रहस्य का जो अवगाहन करता है सो हजारों यज्ञ करने वाले की तरह श्रेयाधिकारी बनता है। उसके पाप नष्ट हो जाते हैं। जिसने यह रहस्य जाना उसने मानी समस्त वेदों का अध्ययन कर लिया। सब तीर्थों में स्नान कर लिया।

अनाहत ध्वनि श्रवणेन्द्रियों से परे है, पर सूक्ष्म अन्तरिक्ष में संव्याप्त इस ऊर्जी स्रोत से सामूहिक ध्यान प्रक्रिया द्वारा सम्बन्ध जोड़ सकना सम्भव है। वैज्ञानिकों ने परीक्षण द्वारा पाया है कि गायत्री मन्त्र के उच्चारण से मानवी मस्तिष्क से जो विचार तरंगें निकलती हैं, उनके कारण एक विशिष्ट प्रकार तेजोवलय बनता जाता है। थियासाफिस्ट श्री लेडबीटर ने अपनी पुस्तक "मैन-विजीबुल अनविजीबुल" में इसका वर्णन करते हुए सामूहिक ध्यान की महत्ता पर विशेष बल दिया है।

वस्तुतः मन्त्रोच्चारण में कर्णातीत ध्वनि के निरंतर कम्पन को ध्यान द्वारा, "नाभिकीय रसायन" बहुत दूर से दूर प्रज्ञात स्थान तक पहुँचाने तक समर्थ हो जाता है। ध्यान उखड़ा हो तो पता भले न चले पर यह इतना प्रगाढ़ होता जाता है कि लक्ष्य के सन्देश, प्राण और प्रकाश अन्तः करण में उतरने लगते हैं, इसे ही अपने इष्ट का स्वप्न, संदेश, सहायता आदि जो भी कहें मान सकते हैं।

गायत्री मन्त्र की ध्वनि-तरंगें तार के छल्ले की तरह ऊपर उठती हैं और ब्रह्माण्ड के सूक्ष्म अन्तराल को माध्यम बनाकर सूर्य तक जा पहुँचती हैं। यह ध्वनि वहाँ से प्रतिध्वनित होकर अपने साथ गर्मी प्रकाश और विद्युत अणुओं की फौज जप करने वाले के शरीर में उतारती चली जाती है और ध्येय का प्रतिबिम्ब मस्तिष्क में छाया चित्र की तरह उभरता चला आता है।

सिद्धावस्था न भी प्राप्त हो तो भी क्रमिक मन्त्र जप, उपासना और ध्यान से साधक उसी मात्रा में प्रत्यावर्तित प्राण, और आत्मबल होता चलता है। गायत्री उपासना में जप के साथ सविता देवता के ध्यान के पीछे यही महाविज्ञान काम करता है। जिसे न जानने वाला भी लाभान्वित होता है और जानने वाला तो लाभन्वित होता ही है।

गायत्री मन्त्र की शब्द रचना की विलक्षणता ही उसके सर्वोपरि होने का आधार है। इसी अनुसन्धान पर महाऋषि विश्वामित्र को अभिलम्ब ब्रह्मर्षि पद पर पदोन्नति कर दिया गया था। समझने वाली बात है कि राजर्षि की सामर्थ्य की तुलना राजाओं—महाराजाओं से की जाती है तो ब्रह्मर्षि की शक्ति की तुलना—ब्रह्म से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की जाती है। जिसका अर्थ यह हो सकता है कि वह सृष्टि के स्वामी संचालक और नियन्त्रक की क्षमताओं से ओत-प्रोत होता है।

मन्त्र में इतनी शक्ति हो सकती है यह आश्चर्य का विषय हो सकता है अयथार्थ नहीं। भारतीय मन्त्र विद्या में शब्दों की जिस "संवहन शक्ति" का उपयोग किया जाता है, उसका एक छोटा-सा रूप पराध्वनि (अल्ट्रासाउण्ड) के रूप में भौतिक शास्त्रियों ने भी जान लिया है और उसके विभिन्न प्रकार के चिकित्सकीय उपयोग होने लगे हैं। इसे चिकित्सा जगत में क्रान्ति की संज्ञा दी गई है।

विज्ञान ने श्रवणातीत ध्वनियों को एक अति प्रभावोत्पादक शक्ति माना है और उनसे अनेक प्रकार के महत्वपूर्ण काम लेने की व्यवस्था बनाई है। इन दिनों वस्तुओं की सही मोटाई, गहराई नापने में—धातुओं के गुण, दोष परखने में इनका प्रयोग होता है। कार्बन ब्लैक का उत्पादन, वस्त्रों की धुलाई, रासायनिक सम्मिश्रण वस्तुओं की कटाई, पिसाई, गीली वस्तुओं को सुखाना, धातुओं की ढलाई, प्लास्टिक धागों का निर्माण जैसे अनेकों उद्योग-ध्वनि तरंगों की सामर्थ्य का उपयोग करके चल रहे हैं। अयोवा स्टेट कालेज, अल्ट्रासोनिक कारपोरेशन, बी. एफ. गुडरिच कम्पनी आदि कितने ही व्यापार-संस्थानों ने ऐसे यन्त्र बनाये हैं जिनमें श्रवणातीत ध्वनियों की सामर्थ्य का उपयोग होगा है और उससे महत्वपूर्ण लाभ कमाये जाते हैं।

ध्वनियों को आकाश से पकड़कर उन्हें ऊर्जा के रूप में परिणत करने की तैयारियों भी बड़े जोरों से हो रही हैं। उन्हें ताप, प्रकाश, चुम्बक एवं बिजली के रूप में परिणत किया जा सकेगा और इस आधार पर ईंधन का एक सस्ता और सुविस्तृत स्रोत हाथ में आ जायगा। कान के माध्यम से मस्तिष्क में ध्वनियाँ पहुँचती हैं और हमें शब्दश्रवण का लाभ मिलता है। जिनके कानों की झिल्ली खराब हो गई है, उन बहरे लोगों को दृष्टि मार्ग से ध्वनि-तरंगों को मस्तिष्क तक पहुँचाने और सुनने का लाभ देने के लिए चल रहे प्रयोग सफल होने के निकट पहुँचते जा रहे है। इसी प्रकार 'गूँगें, बहरे, अन्धे व्यक्ति भी अपनी आवश्यकता अन्य छिद्रों के सहारे पूरी कर लिया करेंगे। राडार जैसे यन्त्र अभी भी ध्वनि-प्रवाह को पकड़कर ही बहुमूल्य जानकारियाँ संग्रह करते हैं।

मन्त्रों में भी ध्वनि-शक्ति का ही स्वरूप कार्य करता है जिसके उपयोग की विधि आप्त महर्षियों ने अपने ढंग से खोजी थी। मन्त्र शक्ति की इतनी महत्ता होते हुए भी सभी लोग उसके द्वारा वह सामर्थ्य नही जुटा पाते। यह प्रश्न अक्सर उठा करता है और मन्त्र शक्ति में सन्देह का कारण बना रहता है। उसका कारण और कुछ नहीं अन्तःकरण का गहरा और उथला होना ही है। मन्त्र में सन्निहित भावनाओं को प्रखर बनाने के लिए जिस परिष्कृत और समर्थ व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है। वह न जुट पाने से मन्त्र अपना सामान्य प्रभाव ही अभिव्यक्त करके रह जाता है। उससे विशेष कुछ लाभ मिलता नहीं। व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने की कार्य वाणी की सत्यनिष्ठा, सरलता और मधुरता से प्रारम्भ होता है और जीवन के प्रत्येक क्रिया-कलाप में छा जाता है। जिस तरह मैले शीशे पर पड़ने वाली प्रकाश की किरणें अपना कोई प्रभाव दिखा नहीं पातीं, उसी तरह मलिन अन्तःकरण में पड़ने वाले मन्त्र का प्रकाश केवल मात्र उसी सफाई में ही लगा रहेगा, यदि व्यक्ति की जीवन दिशा अपने दोष, दुर्गुणों को ढूँढ़ निकालने और उनके स्थान सद्गुणों की प्रतिष्ठा की हुई हो, तब तो इस परिमार्जन का भी महत्व है और उस स्थिति में मन्त्र जप का प्रभाव अविलम्ब ही सही देखने को मिल जाता है, पर यदि आहार-विहार, रहन-सहन, वाणी-व्यवहार द्वारा अन्तःकरण को मल विक्षेप से लादते रहा गया हो तो कितना ही अच्छा और अधिक मन्त्र जप भी कोई प्रभाव परिणाम प्रस्तुत न कर सकेगा।

गायत्री महामन्त्र के जप से उत्पन्न पराध्वनि सारे वातावरण के परमाणुओं को कँपा देने की शक्ति से ओत-प्रोत है। इस महामन्त्र की अपार शक्ति का कोई ठिकाना तब नहीं रहता जब वह सामूहिक रूप से संयुक्त रूप से किसी लक्ष्य विशेष के लिये प्रयुक्त किया जाता है।

एकाकीपन की अपेक्षा सामूहिक अधिक बलशाली—सामर्थ्यवान है। लोहे का लम्बा गर्डर एक व्यक्ति अकेला नहीं उठा पाता, पर जब कई व्यक्ति मिलकर 'हईशा' के निनाद के साथ जोर लगाते हैं तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वे समूह शक्ति के सहारे कई गर्डरों को जोड़कर बाँध का ढाँचा तैयार कर देते हैं। बड़े-बड़े पहाड़ काटकर नहरें निकालना व गगन-चुम्बी भवन बना सकना समूह शक्ति का ही काम है। बड़ी शक्तियों को भी कुचल सकना केवल समूह बल द्वारा ही सम्भव है। एक से चार का बल हमेशा बड़ा है होता है।

जब वातावरण को परिष्कृत करने—युग-परिवर्तन की बात सामने आती है तो सामूहिक प्रयासों को ही महत्ता दी जाती है। उस तूफानी प्रवाह में सामान्यजन भी असामान्य भूमिका सम्पादित कर दिखाते हैं। व्यापक परिवर्तन पड़े परिमाण में चिरस्थायी उद्देश्यों के लिये करने हों तो उसके लिये ऐसे सामूहिक प्रयासों की ही आवश्यकता पड़ती है। ऐसे सामूहिक आध्यात्मिक प्रयास जिन्हें प्रार्थना, धर्मानुष्ठान अथवा ध्यान धारणा किसी भी रूप में किया जा सकता है। अपने दिव्य प्रवाह से सूक्ष्य जगत को अनुप्राणित कर सकने में समर्थ होते हैं।

आये दिन देखा जाता है कि एकाकी और सम्मिलित शक्ति में कितना अन्तर है बुहारी की अलग-अलग सींके चाहे हजारों-लाखों क्यों न हों अलग रहकर किसी स्थान की सफाई नहीं कर सकतीं। वे मिल जायें तो ही समर्थ झाड़ू बन पायेगी। धागे परस्पर गुंथें तो कपड़ा बने व तन ढक पाये। अलग-अलग दीपक तो सदा जलते हैं, पर जब वे योजनाबद्ध रूप से नियत समय पर पंक्तिबद्ध प्रकाशित होते हैं—दीपावली का उत्सव अपनी निराली छटा लिये अलग ही दृष्टिगोचर होता है। अलग-अलग रहकर शूरवीर योद्धा कोई बड़ा प्रयोजन पूरा नहीं कर पाते। उनका सम्मिलित स्वरूप—सेना का प्रदर्शन जब 'मार्च पास्ट' अथवा गणतन्त्र की परेड के रूप में देखते हैं तो लगता है युद्ध मोर्चे पर इनका पराक्रम अवश्य सफल होगा। उपासना के सम्बन्ध में भी यही बात है। सामूहिक और सुगठित स्वरूप की उपासना के विशालकाय आयोजन वातावरण को बदलने—आमूलचूल रूप से सुधारने का महत् प्रयोजन पूरा करते हैं।

आत्म-कल्याण के लिये की गई करुण आर्त्त पुकार पर परमात्मा द्रवित होता है, पर जब इस पुकार में सैकड़ों मनुष्यों का करुण स्वर समा जाता है तो अनन्त गुनी शक्ति प्रादुर्भूत होती है। संघ-शक्ति की प्रतीक दुर्गा शक्ति का रहस्य भी यही है कि परमात्मा एकाकी की अपेक्षा अनेकों की पुकार पर अधिक ध्यान देते हैं। सामूहिकता का प्रभाव तुरन्त होता है।

श्रुति का आदेश है—"सहस्र साकमर्चत्"—अर्थात्—"हे पुरुषों! तुम सब सहस्रों मिलकर देवार्चन करो।" समगान व ऋग्वेद की समस्त ऋचाएँ सामूहिक गान ही हैं।

देव प्रयोजनों में सामूहिकता का ही प्रवाधान है। यज्ञ प्रक्रिया एक सनातन धर्मानुष्ठान परम्परा है। देवाराधन के समस्त तत्वों का उसमें समावेश है। प्रत्यक्ष है कि यज्ञ का समूचा क्रिया-कलाप सामूहिकता पर ही निर्भर है। ब्रह्मा, आचार्य, अध्वर्यु, उद्गाता, यजमान, ऋत्विक आदि यज्ञ पदाधिकारियों की मण्डली उसका सूत्र संचालन करती है। संगतिकरण-सामूहिकता यज्ञ का एक अर्थ भी है तथा उसके हर कृत्य में सहकारिता—सामूहिकता का समावेश है। राजनैतिक उद्देश्यों के लिये राजसूय, एवं धार्मिक उद्देश्यों के लिये बाजपेय यज्ञों की परम्परा अनादिकाल से चली आ रही है। अश्वमेध जैसे आयोजन राजसूय तथा गायत्री यज्ञ जैसे आयोजन बाजपेय कहलाते रहे हैं। इनमें राजनेताओं व धर्मवेत्ताओं को बड़ी संख्या में एकत्र कर उनके प्रयत्नों में एकरूपता का सामूहिक शक्ति से सामयिक प्रयोजन पूरे किये जाते थे। नैमिषारण्य आदि आरण्यकों में सूत-शौनिक कथा-प्रसंगों जैसे विशाल काय ज्ञान सत्र सम्पन्न होते थे, जिनमें हजारों ऋषि आत्माएँ श्रद्धापूर्वक भाग लेकर अनुष्ठान को सफल बनाती थीं।

ऋषियों ने रावणकालीन अनाचार से जूझने के लिये सूक्ष्म शक्ति उत्पन्न करने हेतु सामूहिक साधना की व सबने मिल-जुलकर अपना-अपना रक्त संचय किया। उसे एक घड़े में बन्द करके भूमि में गाड़ दिया, जिससे सीताजी उत्पन्न हुईं और उनकी भूमिका के फलस्वरूप तत्कालीन अनाचारों का निराकरण सम्भव हो सका।

सामूहिक साधना, उपासना, प्रार्थना में महत्वपूर्ण प्रयोजन यही है कि सदाशयता को संघबद्ध होने और एक दिशाधारा में चल पड़ने की व्यवस्था बन सके। महत्व तो व्यक्तिगत उपासना का भी है और वैयक्तिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परिष्कार के लिये अलग-अलग एकान्त उपासना की आवश्यकता भी पड़ती है किन्तु सूक्ष्म जगत को प्रभावित करने के लिये अध्यात्म पुरुषार्थ की आवश्यकता पड़ती है। वह एकाकी तो अपने स्थान पर चले ही, उसे सामूहिक स्तर का भी बनाया जाना चाहिए।

सन्त मैकिरियस ने लिखा है—"तुम अकेले गाओगे तो तुम्हारी आवाज थोड़ी दूर जाकर नष्ट हो जायेगी। मिलकर प्रार्थना करोगे तो उसका नाद प्रत्येक दिशा में व्याप्त होगा।" प्रार्थना का वैज्ञानिक रहस्य यही है कि हमारे पास अपनी उतनी सामर्थ्य नहीं है जितने से बाधाओं से टकरा सकें। इसलिये अन्ततः सब मिलकर अनन्त शक्तिशाली परमात्मा से शक्ति तत्व खींचकर हम समष्टिगत कल्याण की—सफलता की कामना करते हैं। आवाज जितने अधिक लोगों की होगी उतनी ही बुलन्द होगी। जितने अधिक भावपूर्ण स्वर उसमें जुड़ेंगे उतनी ही अधिक शक्ति प्रादुर्भूत होगी।

शास्त्रकार कहते हैं—

बहूनामल्य साराणां समवायो हि दुर्जनः।
तृणैरा वेष्टयते रज्जुः बध्यन्ते तेन दन्तिनः॥

अर्थात्—"क्षुद्र और कमजोर आदमियों की सामूहिकता भी अजेय बन जाती है। कमजोर तिनकों से बनाई गयी रस्सीपररचर मिल जाने के कारण इतनी मजबूत हो जाती है कि उससे हाथी भी बंध जाता है।"

वेद भगवान ने इसीलिये मानवों को एक होकर प्रार्थना करने का आदेश दिया है। सम्पूर्ण मानव समाज एक-दूसरे से इस तरह सम्बद्ध है कि अपने स्वार्थ को सर्वोपरि समझकर सबके हित की भावना का तिरस्कार नहीं किया जा सकता। जब-जब एकाकीपन की यह संकीर्णता उभर कर आयी है, मानवता की बड़ी हानि हुई है। देवासुर संग्रामों के कई वर्णन शास्त्रों में मिलते हैं। असंगठित देवताओं पर संघबद्ध असुरों की जीत से यही प्रेरणा मिलती है कि जब तक संगठन के प्रतीक रूप में युग वितरण का पुरुषार्थ न होगा असुरता हमेशा हावी रहेगी। स्वार्थ से समाज में निकृष्टता, जड़ता, अशांति व असन्तोष फैलता है इसीलिये वेद भगवान कहते हैं—"धियो यो नः प्रचोदयात्।" अर्थात्—"हे भगवान, हमारी बुद्धि को आप सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें।" यहाँ जो "नः" शब्द का प्रयोग किया गया है, वह बड़ा महत्वपूर्ण है। नः अर्थात् हमारी—हम सबकी, अकेले एक की नहीं। इसीलिये गाँधीजी कहा करते थे—"जब तक एकता स्थापित न हो तब तक प्रार्थना, उपवास, जप-तप निर्जीव समान है।"

यहाँ सामूहिक उपासना-साधना की चर्चा इसलिये का जा रही है कि समय विशेष को—संक्रान्तिकाल को देखते हुए यह आवश्यक है। सामूहिकता में जो शक्ति है उसे यदि अपने अन्तः से सब लोग मिलकर उभार सकें तो इस धरती पर स्वर्ग का अवतरण होने में जरा भी देर न लगे।

जहाँ तक परम्परा की बात है—यह स्पष्टतः देखा जा सकता है कि प्राचीन काल में साधना के सामूहिक स्वरूप से अलग हटकर किसी अन्य स्वरूप की कल्पना भी नहीं की जाती थी। वैदिक साहित्य में समस्त स्तुतियाँ बहुवचन में हैं। 'आ नो भद्राः क्रनवो यन्तु विश्वतः' अर्थात्-विश्व भर से श्रेष्ठ विचार हमारे भीतर आएँ। प्रार्थना और साधना का सर्वोत्कृष्ट मन्त्र इससे बढ़कर और क्या हो सकता है कि साधक गायत्री मन्त्र में अकेले अपनी ही नहीं, पूरे समूह की बुद्धि की प्रेरित करने की प्रार्थना सविता देवता से करता है। ईशोपनिषद्य में साधक अपनी अनुभूति बताता है—"हे प्रकाश पुंज! मैं आपके परम कल्याणकारी तेजोमय स्वरूप को देख रहा हूँ। वह मैं स्वयं ही हूँ।" और तुरन्त इसके बाद कहता है—"अग्नेनय सुपथा राये अस्मान्।" अर्थात्—हे तेज पुंज! हम सबको सन्मार्ग की ओर खींच लीजिये।

जहाँ सामूहिक साधना की जाती है, वहाँ तादात्म्य की चरम सीमा में एक ओर जहाँ साधक की अनुभूति मुक्त रूप में फूट पड़ती है वहीं उसे समष्टि का भी ध्यान रहता है। इसीलिये ऋषि कहते हैं—

संगच्छध्वं, सं वदध्वं सं वो मनांस जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे, संजानाना उपासते॥

अर्थात्—'हम सब साथ-साथ चलें, साथ-साथ बात-चीत—विचार-विमर्श करें व एक से मनोभावों से युक्त रहें।"

समानी व आकूतिः समाना हृदयानिवः।
समानमस्तु वे मनो यथा वः सुसहासति॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात्—'हमारी चित्त वृत्तियाँ समान हों, हृदय और मन समान हो, हो जिससे सौहार्द्र रह सके।

इन पंक्तियों में सामूहिक साधना की अनिवार्यता ही प्रकट हुई है। समान चित्त वृत्ति तभी होगी, जब समान साधना की जायेगी। एक सी विचार तरंगें और भाव तरंगें एक-सी चित्त-वृत्तियों को जन्म देती हैं। एकाग्रता का अर्थ यही है कि मन का प्रवाह एक ही दिशाधारा में चलने लगे। चारों तरफ चित्त बिखरे नहीं। जब व्यक्ति समुदाय एक ही भावधारा को एक साथ अपनाता है तो ध्यान धारणा प्रगाढ़ होती है, उससे एकाग्रता बलवती होती है।

सामूहिक उत्कर्ष के प्रयास सामूहिक साधना द्वारा ही सम्भव विरत हुआ है तब-तब व्यक्तिवाद की प्रवृत्तियाँ पनपीं व बढ़ीं हैं, समाज की अवनति हुई है। समुद्र-मंथन एक सामूहिक साधना ही थी जो देवों और असुरों की सम्मिलित उपासना द्वारा पूरी हो सकीं और चौदह रत्न रूपी सिद्धियों की उपलब्धि सम्भव हो सकी। रावण विजय भी सीता रूपी सिद्धि की प्राप्ति—राम की रीछ वानरों सहित सामूहिक साधना ही थी। श्रीकृष्ण का महारास तत्ववेत्ताओं द्वारा सामूहिक साधना का एक स्वरूप ही माना जाता है। जिसमें वृत्तियों का सामूहिक विलय, विसर्जन समष्टि सत्ता में किया गया है। बुद्ध ने सामूहिक साधना के विशाल आयाजनों को व्यापक स्तर पर आयोजित कर लोक जागरण किया। महात्मा गाँधी ने भी सामूहिक प्रार्थना सभाओं को जागृति विस्तार का एक अनिवार्य अंग माना व उसे हमेशा महत्व देते रहे।

इसी प्रकार इन मतों का समर्थन करते हुए 'ब्राह्मण' ग्रन्थ कहते हैं कि—"देवता सामूहिक रूप से सबके कल्याण की इच्छा करते हैं। एक व्यक्ति के हित के लिए अनेकों के हित का मर्दन उन्हें हैं प्रिय नहीं होता।" सम्भवत: इसीलिए हमारी संस्कृति में ही सर्वप्रथम सामूहिक उपासना का प्रचलन हुआ। वातावरण के अनुकूलन एवं सूक्ष्म जगत के परिशोधन में ऐसी ही संयुक्त उपासना शक्ति सफल कारगर सिद्ध होती है। सामूहिक रूप से नियत समय और नियत क्रम से विधि व्यवस्था से की गयी उपासना प्रचण्ड शक्ति का उत्पादन कर सकने में समर्थ हो सकती है। इस तथ्य को इन दिनों प्रत्यक्षत: कारगर होते देखा जा सकता है।

आज का समय एकाकी साधना—एकाकी मुक्ति का नहीं अपितु समष्टिगत सुरक्षा—सबकी आत्मिक समृद्धि हेतु सामूहिक पुरुषार्थ का है। नवयुग की सुखद परिस्थितियों की सम्भावना का एकमात्र आधार यही है कि व्यक्ति का अन्तराल उत्कृष्ट बने, दृष्टिकोण में उदारता और चरित्र में शालीनता का समावेश हो। यह एक के नहीं, समग्र मानवता के परिवार से सम्भव है। आस्थाओं के दुर्भिक्ष का निवारण अन्त:क्षेत्र में उत्कृष्टता की मान्यताओं को स्थापित करके ही सम्भव है सामूहिक उपासना का उद्देश्य अन्त:क्षेत्र में उच्चस्तरीय श्रद्धा का अरोपण, परिपोषण एवं अभिवर्धन। इस प्रचण्ड सामर्थ्य से देव शक्तियों को भी आह्वान आमंत्रण ताकि उनकी तप: शक्ति से असुरों से संघर्ष किया जा सके।

सामूहिक धर्मानुष्ठानों की शक्ति से वातावरण गरम होता है और उस गर्मी से परिस्थितियों के प्रवाह में असाधारण मोड़ आते और परिवर्तन होते देखे गये हैं। समय के प्रवाह में तिनकों और पत्तों की तरह अगणित व्यक्ति बहते चले जाते हैं। आँधी के साथ धूल से लेकर छत-छप्पर तक न जाने क्या-क्या उड़ता चला जाता है। आँधी का रुख जिधर होता है उधर ही पेड़ों की डालियाँ और पौधों की कमरें झुकी दिखाई पड़ती हैं। इसे प्रवाह का दबाव ही कहेंगे यह भी उस वातावरण का ही प्रभाव है, जो सामूहिक शक्ति के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। गायत्री महा पुरश्चरणों, नवरात्रि अनुष्ठानों यज्ञायोजनों के पीछे युगान्तरकारी चेतन सत्ता का यही उद्देश्य छिपा होता है कि समय-समय पर एकत्र होने वाली अनाचार, अज्ञान, अभावरूपी अवांछनीयताओं की कालिमा धुलती रहे।

तत्वदर्शी ऋषियों ने उपासना विज्ञान के निर्धारण में इस तथ्य को बहुत महत्ता दी है कि नियत समय, नियत क्रम से निर्धारित मनोभूमिक की व्यवस्था बनाकर उपासना की जाय ताकि सूक्ष्म जगत का उद्देश्य पूरा होता रहे। सूर्योदय और सूर्यास्त काल को ही संध्यावन्दन के लिए क्यों निर्धारित किया गया, इसका एक ही उत्तर है कि इससे संयुक्त शक्ति की अत्यन्त प्रभावशाली प्रचण्ड धारा उत्पन्न होती है। यह शक्ति के केन्द्रीयकरण का चमत्कार है। गायत्री उपासना में वे सारे तत्व विद्यमान हैं, जो व्यक्ति को लौकिक दृष्टि से स्वास्थ्य, सुखी, सन्तुष्ट, समुद्र बनाने वाला प्राण तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फूँकते ही हैं, साथ ही उसे आत्मिक दृष्टि से इतना अधिक सक्षम और समर्थ बना देते हैं, जिससे कोई भी अवांछनीयता, अनैतिकता उसका कोई अनिष्ट न कर सके। इस शक्ति का सामूहिक उत्पादन तो और भी अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियों के द्वार खोलता है।

एकाकी प्रयत्न व पुरुषार्थ का भी अपनी जगह महत्व है व ऐसे भागीरथी प्रयासों को सम्मानित—प्रोत्साहित किया ही जाना चाहिए। ईश्वर का अंश राजकुमार अपने रचयिता सृष्टा की समस्त विभूतियाँ साथ लेकर आया है और यदि वह चाहे तो अपनी प्रसुप्ति को जागृति में बदलकर—प्रखरता को अपनाकर समष्टि क्षेत्र में भी इतना कुछ कर सकता है जिसे चमत्कारी कहा जा सके। तेजस्वी, मनस्वी, तपस्वी स्तर के व्यक्ति ऐसा ही कुछ कर गुजरते हैं। इतने पर भी वातावरण की महत्ता अपने स्थान पर यथावत् बनी रहती है। उसके प्रभाव की प्रचण्डता पग-पग पर परिलक्षित होती है। हमेशा आवश्यकता प्रतीत होती है कि किसी प्रकार समूचे वातावरण का अनुकूलन सम्भव बनाया जाय। इसके लिए सुनिश्चित उपचार समूहिक साधना को ही जाना माना जाता रहा है।

विभिन्न धर्मों में प्रचलित उपासनाओं को भी सामूहिकता की शृंखला में ही बाँधा गया है। मुसलमानों की नमाज का समय नियत है व प्रत्येक धर्मानुयायी कड़ाई के साथ उसका पालन करता है। जुम्मे की, ईद की नमाज पर एकत्र समुदाय की उपासना सामूहिक धर्मानुष्ठान का ही एक स्वरूप है। ईसाई रविवार को चर्च में एकत्र होते व सामूहिक प्रार्थना करते पाये जाते हैं। कोई भी ईश्वर-विश्वासी इस समय को चूकता नहीं। जब उद्देश्य सभी का समष्टिगत कल्याण की प्रार्थना ही है तो क्यों न उसे एक समय पर एक साथ किया जाय। इसका अर्थ यह नहीं कि एक स्थान पर बैठा जाना ही अनिवार्य है। सन्धिकाल की नैष्ठिक साधना नियत समय पर ध्यान धारणा के रूप में नियमित रूप से प्रातः सायं की जा सकती है। इसे युग परिवर्तन के लिए समर्थ मार्ग-दर्शन में दैवी प्रवाक् के द्वारा युगशक्ति के प्रचण्ड उत्पादन हेतु प्रेरित की गयी विशिष्ट साधना समझा जा सकता है। इसके आधार पर ही सूक्ष्म जगत के अदृश्य वातावरण के अनुकूलन व प्रसुप्त की जागृति की अपेक्षा की जा सकती है।

महत्वपूर्ण कार्यों और प्रयत्नों के लिए संयुक्त शक्ति का जुटाना आवश्यक होता है। भौतिक क्षेत्र में तो ऐसा ही हो सकता है कि तोप का एक बड़ा गोला सौ गोलियों जितना काम कर दे, किन्तु अध्यात्म क्षेत्र में वैसा नहीं है। एक बड़ी मशाल की अपेक्षा यहाँ सौ दीपकों का महत्व अधिक माना जाता है। यों भौतिक क्षेत्र में भी छोटी-छोटी इकाइयाँ मिलकर एक बड़ी संरचना बनने की बात को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता । रुई का एक गट्ठा मरोड़कर वैसा मजबूत रस्सा या कोड़ा नहीं बन सकता जैसा कि पतले धागों के संयोग से बनता है। सभी जानते हैं कि ईंटों से चुनकर मकान बनते हैं। कणों के सम्मिश्रण से पदार्थों की रचना होती है। चक्रवात की तुलना में हवा के छोट-छोटे झोंके सन्तुलन बिठाते हैं। ज्वार-भाटों पर नहीं समुद्र की शोभा व्यवस्था सामान्य लहरों पर टिकी हुई है।

मनुष्यों में शरीर और प्राण दोनों हैं। शरीर में बल और प्राण में जीवन रहता है। शरीर की संयुक्त शक्ति जितनी बनती है, उसकी समता से एक यन्त्र मानव बन सकता है। किन्तु हर व्यक्ति की जो अपनी-अपनी सूझ-बूझ जीवट होती है, उसका भी तो महत्व है। इसलिए सेना में अधिकाधिक सुयोग्य सैनिकों की आवश्यकता पड़ती है। अस्त्र-शस्त्रों की न्यूनाधिकता उतनी महत्वपूर्ण नहीं जितनी कि सैनिकों का कौशल, साहस और पराक्रम। यह जीवन्तों की विशेषताएँ हैं। इसलिए प्रीतिभोजों में, जुलूसों में, उत्सव आयोजनों में जन-शक्ति के सहारे शोभा बनती है। एक दो सेनापति, नेता, विद्वान, धनाढ्य को विराजमान कर देने से न जुलूस बनता है न समारोह। व्यक्ति की प्राण शक्ति की अपनी गरिमा है। उसका गणित अलग है। एक और एक मिलकर जड़ पदार्थ दो होते हैं पर जीवन्तों के विषय में एक और एक मिलकर ग्यारह होने की उक्ति ही सार्थक होती है। भावनात्मक मिलन का अपना महत्व है। मुसाफिरखानों की भीड़ में भावनात्मक एकता न होने से उसका महत्व भले ही नहीं पर एक स्वभाव, एक शिक्षण, एक लक्ष्य वाले सैनिकों की संयुक्त शक्ति कैसा गजब ढाती है, यह किसी से छिपा नहीं है। शरीर संरचना छोटे जीवाणुओं और अवयवों के संयुक्त समन्वय से ही बनती है।

अदृश्य परिशोधन की सामयिक आवश्यकता पूरी करने के लिए आदर्शवादी भावनाशीलों की संयुक्त सामर्थ्य शीलों की संयुक्त सामर्थ्य सदा अपेक्षित रही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। उसका कोई और विकल्प नहीं हो सकता है। सीता अवतरण के लिए ऋषियों का एक-एक बूँद रक्त संग्रह करके वह घड़ा भरा गया था। जिसे हल चलाते समय जनक ने सीता समेत खेत में पड़ा पाया था। यह प्रयोजन एक व्यक्ति का सिर काटकर रक्त से घड़ा भर लेने से पूरा नहीं हो सकता था। उससे प्राणवानों की संयुक्त शक्ति वाला उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता था। यह बात दुर्गा अवतरण के सम्बन्ध में भी है। सभी देवताओं की संयुक्त शक्ति से प्रजापति ने महाकाली की संरचना की थी। इन्द्र, कुबेर जैसे एक दो वरिष्ठों को मिला देने भर से वह कार्य पूरा नहीं हो सकता था।

एक प्रकृति की अनेक प्राणवान् इकाइयों को एक लक्ष्य के लिए नियोजित कर देने कितनी प्रचंड शक्ति उत्पन्न होती है, उसे सभी विज्ञजन भली-भाँति जानते हैं। प्रजापति ने ऋषि रक्त की बूँद-बूँद संग्रह करके घड़ा भरने का इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए परामर्श दिया था। दुर्गावतरण में देवताओं की थोड़ी-थोड़ी शक्ति का संग्रह करने का प्रबन्ध स्वयं भी इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए किया था।

राम लक्ष्मण में बल कम न था। समुद्र को सुखा देने वाले बाण के धनी रावण को भी मार सकते थे। पर्वत उखाड़ने वाले हनुमान लंका को भी पानी में डुबा सकते थे, किन्तु यह पर्याप्त न समझा गया। व्यवस्था यह बनी कि अधिक संख्या में रीछ, वानरों की उमंगों का रिक्षीय संसार को प्रभावित करने वाली एक समर्थ ऊर्जा शक्ति है। यह जीभ से नहीं, मन व अन्तःकरण से निकलती है। लोक-प्रवाह को निकृष्टता से उलटकर उत्कृष्टता की ओर मोड़ने के लिए उच्चस्तरीय शब्द सामर्थ्य चाहिए। साधक स्तर की उत्कृष्ट जीवन चर्या वाले मांत्रिक जब एक साथ पुरश्चरण सम्पादित करते हैं तो ऋषि कल्प महामानवों जैसी वातावरण की आमूल चूल बदल देने की सामर्थ्य विकसित होने लगती है तपःपूत उच्चारण ही मन्त्र जाप है। सदाशयता को संघ बद्ध करने और एक दिशा में चल पड़ने की व्यवस्था बनाने के लिए इस जप का सामूहिक अनुष्ठान स्वरूप ही आदर्श है। श्रुति ने आदेश भी दिया है—"सहस्र सा कमर्चत्" अर्थात्—"हे पुरुषों तु सभी सहस्त्रों मिलकर देवार्चन करो।" वस्तुतः सामवेद और ऋग्वेद की समस्त ऋचाएँ सामूहिक गान ही तो हैं।

ध्वनि शक्ति के संदर्भ में शोध कार्य वैज्ञानिक क्षेत्रों में चल रहा है, उससे सामूहिक उच्चारण की प्रतिक्रिया के सम्बन्ध में नये तथ्य सामने आये हैं हैं। एक निष्कर्ष यह निकला है कि संसार के ५० प्रतिशत व्यक्ति भी यदि सक्रिय हों तो वे शब्दों तथा ध्वनियों द्वारा ३ घण्टे में छः हजार खरब वाट विद्युत शक्ति पैदा करते हैं, जो भारत में पैदा की जाने वाली कुल ऊर्जा से ८ गुना ज्यादा है। सम्पूर्ण विश्व में इस ऊर्जा से घण्टों प्रकाश किया जा सकता है।

साधारणतया वाणी का उपयोग बातचीत के एवं जानकारियों के आदान-प्रदान हेतु ही होता है। वह उसका अति स्थूल प्रयोग है। शब्द की सूक्ष्म शक्ति और उसके उपयोग की विधि को जाना जा सके तो उससे जितने गुना लाभ आमतौर से उठाया जाता है, उससे असंख्य गुना उठाया जाना सम्भव हो सकता है।

शब्द के साथ जुड़ा विद्युत-प्रवाह कितना प्रचण्ड है, इसे पदार्थ विज्ञानवेत्ता जानते हैं और उसी ज्ञान के आधार पर रेडियो, टेलीविजन, राडार आदि यंत्रों का निर्माण करते हैं। आज इसी शब्द शक्ति के आधार पर शरीर की विभिन्न गहन पर्तों में छुपी व्याधियों का निदान भी सम्भव है। इकोएनसेफेलोग्राफ द्वारा प्रतिध्वनि प्राप्त कर मस्तिष्क की बीमारियों का पता लगाया जा सकता है तो उसी तरह इकोकार्डियोग्राफ द्वारा हृदय की व्याधियों का। आवाज मुँह से निकलने वाली 'हवा' मात्र ही नहीं है। वह एक शक्तिशाली ऊर्जा (एनर्जी) की तरह है।

उच्चारित शब्द कान व त्वचा पर सीधा प्रभाव डालते हैं। कान एक प्रकार का माइक्रोफोन है जिसमें ०२ से २०,००० आवृत्तियों का प्रवेश होते ही एक धारा प्रवाहित होने लगती है। सीधे मस्तिष्क तक पहुँचकर यह शरीर के सभी भागों एवं ग्रंथियों को क्रियाशील बना देती है। मनुष्य के शरीर, विचारणा एवं भाव स्थिति की त्रिविधि क्षमताओं का समन्वय करके जो विद्युत प्रवाह प्रस्तुत होता है; उसकी क्षमता को अध्यात्म तत्ववेत्ताओं ने समझा है और उसी आधार पर मन्त्रविद्या का आविष्कार किया है।

उच्चारित शब्दों का श्रोता के मस्तिष्क पर दो तरह से प्रभाव पड़ता है। पहला—मुख से शब्द निकलने के पूर्व वक्ता के मस्तिष्क से कुछ उसी प्रकार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

की विद्युतचुम्बकीय लहरें निकलती हैं, जिन्हें श्रोता का मस्तिष्क ग्रहण करने का प्रयत्न करता है। दूसरा—उच्चारित शब्द वायुकम्पनों के माध्यम से विद्युत संचार के रूप में कर्णरन्ध्रों से होते हुए मस्तिष्क तक पहुँचकर विभिन्न आवेग उत्पन्न करते हैं। अपमान सूचक शब्द कहने से दूसरों को किस तरह-क्रोध आता है एवं फलस्वरूप अनर्थ होता है— इसका उदाहरण द्रौपदी के थोड़े शब्दों से महाभारत का हो जाना है। दुःखद शोकसंताप की घटना सुनकर कैसा बुरा हाल हो जाता है? शब्दों की भावोत्तेजक क्षमता स्पष्ट है। भावनाओं को उभारते तथा तरंगति करने का काम संगीत कितनी अच्छी तरह करता है, यह सर्वविदित है।

मन्त्रविज्ञान द्वारा समस्त सूक्ष्म जगत को प्रभावित करना सम्भव है। सितार के तारों पर क्रमबद्ध, उँगलियाँ रखने से जिस तरह विभिन्न प्रकार की स्वर-लहरियाँ निकलती हैं उसी प्रकार शब्दों के उच्चारण का एक लयबद्ध क्रम रहने से उसमें भी विशेष प्रकार के, विशेष शक्तिशाली कम्पन उत्पन्न होते हैं। मन्त्रों में अक्षरों के क्रम तथा उनके उच्चारण की विशेष विधि-व्यवस्था का ही अधिक महत्व है। कण्ठ, तालु, दाँत, होठ, मूर्धा आदि जिन स्थानों से शब्दोच्चारण होता है उनका सीधा सम्बन्ध मानव शरीर के सूक्ष्म संस्थानों से है। षटचक्र, उपात्मक एवं दिव्य नाड़ियों, ग्रन्थियों का सूक्ष्म संस्थान है, जिनसे हमारे मुखयंत्र के तार जुड़े हुए हैं। जब मन्त्र-गुंफनों का प्रभाव उक्त संस्थानों पर पड़ता है तब एक अतिरिक्त शक्ति-तरंगों का प्रवाह चल पड़ता है। जो मन्त्र-विज्ञानी को लाभान्वित करता है, उसकी प्रसुप्त क्षमताओं को जगाता है। जब वे कम्पन बाहर निकलते हैं तो वातावरण को प्रभावित करते हैं। ये कम्पन सूक्ष्म जगत में अभीष्ट परिस्थितियों का सृजन करते हैं और व्यक्ति विशेष को प्रभावित करना हो तो उस पर भी असर डालते हैं।

भारतीय संस्कृति के प्राचीन ग्रन्थों में शब्दों की इन्हीं प्रक्रियाओं को ध्यान में रखकर विविध शब्द प्रक्रियाओं का विधान किया गया है। आज के वैज्ञानिक युग में यह सब मनोवैज्ञानिक युद्ध यानी "सायकोलॉजीकल वार" (या स्नायुविक युद्ध) के अंतर्गत आता है।

इसी शब्द-शक्ति का उपयोग करके पिछले दिनों कनाडा के उत्तरी भाग में हजारों वर्गमील के क्षेत्र में सोवियत रूस द्वारा रोगवर्धक तरंगें फैलायी गयी थीं। जिनसे वहाँ के निवासियों में चिड़चिड़ापन, मानसिक तनाव, डिप्रेशन, आत्महत्या की वृत्ति देखने में आयीं। विश्लेषण करने पर मालूम हुआ कि किसी स्थान विशेष से तरंगें छोड़ी जा रही हैं, जो किन्हीं निश्चित आवृत्तियों में होने से मानसिक क्षमताओं पर ऐसा प्रभाव छोड़ रही है। इस तरह शब्द शक्ति का दुरुपयोग कर 'साउण्ड वार' भी आरम्भ हो गया है। दूसरी ओर चिकित्सकों ने ध्वनिविज्ञान का सहारा लेकर 'साउण्ड थेरेपी' नामक एक नयी ही चिकित्सा पद्धति का आविष्कार किया है, जिससे शरीर के विभिन्न भागों में दर्द आदि कष्टों का इलाज किया जाता है। ध्वनि के कम्पनों द्वारा परमाणु को सूक्ष्मतम भागों में विभाजित करना अब सम्भव है। इन सबके मूल में हमारे ऋषि-मनीषियों द्वारा प्रतिपादित मन्त्रशक्ति है, जिसमें ध्वनि विज्ञान का आश्रय लेकर सूक्ष्म- संस्थानों व वातावरण को प्रभावित किया जाता है।

पाश्चात्य देशों में शब्द-शक्ति के एक रूप को सम्मोहन (हिप्नोटिज्म) और आत्म परामर्श (आटो सजेशन) की संज्ञा प्रदान की गई है। प्रसिद्ध रूसी मनोवैज्ञानिक आई. पी. पावलोव ने शब्दों को अत्यन्त शक्तिशाली अनुकूलित प्रतिवर्त्त (उत्तेजक) 'कन्डीशन्ड रिपलेक्स' की संज्ञा दी है। शब्द-शक्ति पर पावलोव ने विशद् कार्य किया है, जो विश्व प्रसिद्ध है। शब्द-शक्ति का महत्व वैज्ञानिक जानते हैं व उसे उपयोग में भी अब लाने लगे हैं। यदि यह सब संभव है तो मन्त्र-विद्या की सामर्थ्य को समझकर हम उसका समुचित उपयोग कर भौतिक उन्नति से कम नहीं बल्कि कई गुनी अधिक लाभदायक आध्यात्मिक उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं।

यह शब्द-शक्ति तब और भी अधिक प्रखर हो उठती है। जब उसका भावनात्मक तारतम्य एवं उच्चारण का प्रवाह सामूहिकता को अपनाले। वेद मन्त्रों को सामगान के स्वर क्रम में गाने वाले उद्गाता अपने उपक्रम से चमत्कारी परिणाम उत्पन्न करते हैं। यज्ञानुष्ठानों में भी यही शब्द सहकार एक महत्वपूर्ण तथ्य होता है और उसका प्रभाव भी असाधारण ही होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामूहिक मन्त्र साधना की महान फलश्रुति

पृष्ठभूमि सुदृढ़ हो तो छोटे साधन भी बड़े चमत्कार प्रस्तुत कर सकते हैं। अंगद ने रावण की सभा में पैर जमाकर समस्त असुरों को उसे उखाड़ने की चुनौती दी थी। यह अंगद का पराक्रम नहीं, राम का समर्थन था। जस्ते-का तनिक सा टुकड़ा गोली बनकर इसलिए लक्ष्य वेध करता है कि उसके पीछे बन्दूक में उत्पन्न हुई प्रचण्ड शक्ति काम करती है। इसके बिना वह गोली बच्चों के खेल-खिलवाड़ से अधिक और कोई प्रयोजन पूरा नहीं कर सकती। योगियों का अभिमन्त्रित जल या भस्म से होने वाले चमत्कारों के पीछे उसे पानी या राख की नहीं योगियों की सामर्थ्य काम करती है। प्रज्ञा पुरश्चरण का विधान तनिक-सा ही क़र्मकाण्ड के हल्का-फुलके होने के कारण किसी को यह सन्देह नहीं करना चाहिए कि इतने भर से क्या प्रयोजन सधेगा। देखना उस पृष्ठभूमि को है, जिसके कारण इस प्रयोग के असाधारण परिणाम की आशा एवं घोषणा की गई है।

प्रज्ञा परिवार से इन दिनों प्रायः पचास लाख व्यक्ति सम्बद्ध हैं। उनका चिन्तन, विश्वास, स्वभाव एवं निर्धारण एक निश्चित दिशा में प्रवाहित अग्रसर होता है। इतने लोगों द्वारा नियत समय पर नियत विधान एक विश्वास के आधार पर किया गया साधना उपचार यदि चमत्कारी परिणाम उत्पन्न करता है तो उसमें सन्देह की गुंजायश नहीं होनी चाहिए।

किसी बड़े पुल पर से यदि सैनिकों की एक टुकड़ी कदम से कदम मिलाकर इस प्रकार चले कि उनकी ध्वनि तालबद्ध होकर उठे तो इतने भर से वह पुल धाराशायी हो सकता है। संगीत यन्त्र साधारण रीति से बजता और मनोरंजन करता रहता है, किन्तु यदि उसके ताल स्वर क्रमबद्ध कर दिये जायें तो दीपक राग, मेघ मल्हार, मृग सम्मोहन जैसे जमत्कृत करने वाले परिणाम सामने आ सकते हैं। रोग-निवारण में, दूध बढ़ाने में, पौधे बढ़ाने में, प्रजनन सुधारने में इन दिनों संगीत के अद्‌भुत परिणाम सामने आये हैं। उन शोध प्रयोजनों से यह निष्कर्ष निकला है कि स्वर और ताल की क्रमबद्धता से ध्वनि प्रवाह को सामर्थ्य स्रोत के रूप में विकसित किया जा सकता है।

मन्त्र विज्ञान के आधार पर उत्पन्न होती परिणतियों का कारण स्वर विज्ञान में खोजा जा सकता है। उनके साम गान के आधार पर और विज्ञानी परोक्ष विधा के आधार पर असाधारण प्रभाव परिणाम उत्पन्न करते थे। उन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रज्ञा पुरश्चरण की छोटी-सी सर्वसुलभ साधना को महत्वपूर्ण बनाया गया है। गायत्री मन्त्र के चौबीस अक्षर जब एक समय में, एक साथ, एक प्रकार, एक प्रयोजन के लिए ध्वनित होंगे, तो उसमें सामूहिकता की प्राणशक्ति का आश्चर्यजनक समावेश होगा। बीस लाख व्यक्तियों की प्राण-ऊर्जा जब तालबद्ध, समयबद्ध, क्रमबद्ध, अनुशासनबद्ध, विधानबद्ध होकर विस्तृत होगी तो उसके आशातीत परिणामों की अपेक्षा करने में तनिक भी अतिवाद नहीं है।

उपासना विज्ञान के रहस्यवेत्ता एक समय पर एक प्रक्रिया के क्रियान्वित होने की परिणति का अनुमान ही नहीं अनुभव भी प्रस्तुत करते रहे हैं कि मन्त्र शक्ति की पृष्ठभूमि में इस एकता, एकरूपता, एक समय निर्धारण का कम महत्व नहीं है। भारतीय धर्म में प्रातः सायं—सूर्योदय और सूर्यास्त का समय संध्या काल बताया गया है। इस समय के संध्या-वन्दन को अन्य समयों की अपेक्षा कहीं अधिक सत्परिणाम प्रस्तुत करने वाला बताया गया है। इस्लाम धर्म में नमाज के मन्त्रों का जितना महत्व है, उतना ही उस प्रक्रिया का नियत समय पर करने का भी अनुशासन है। मस्जिदों में अजान दी जाती है। मन्दिरों में शंख-ध्वनि होती है, ताकि नियत समय पर सभी साधक अपनी विधान प्रक्रिया सम्पन्न करें। गिरजाघरों में भी नियत समय पर 'प्रेशर' के लिए उपस्थित होने को अनुशासन है। इसके लिए घन्टे बजते हैं और घड़ी में नियत विधान का परिपालन होता है। सभी महत्वपूर्ण धर्मों में अपने-अपने ढंग से उपासना कृत्यों को नियत समय पर सम्पन्न करने का अनुशासन है उसके निर्वाह का कठोर निर्धारण भी।

अस्त-व्यस्त ढंग से मनमौजी ढंग से की गई महत्वपूर्ण उपासना भी निरर्थक चली जाती है, जबकि निर्धारित अनुशासन का परिपालन सामान्य विधि-विधानों की भी अद्‌भुत परिणति उत्पन्न करता देखा गया है। इस सन्दर्भ में न केवल समय का वरन् विधान की एकरूपता का भी अपना महत्व है। जीवन्त धर्मों में उपासनात्मक एकरूपता को बहुत महत्व दिया गया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उनमें एक मन्त्र, एक विधान, एक अनुगमन पर बहुत जोर दिया गया है। एक विशृंखलित हिन्दू धर्म ही है जिसमें साम्प्रदायिक विभ्रमों ने सब कुछ अस्त-व्यस्त अव्यवस्थित करके रख दिया है। धार्मिक क्षेत्र की इस अराजकता को दूर करना अनिवार्य रूप से आवश्यक है। अन्यथा विपरीत के रहते साधना-विधानों का सत्परिणाम न तो व्यक्ति विशेष को मिल सकता और न उससे अदृश्य वातावरण-अदृश्य जगत पर कोई कारगर प्रभाव पड़ सकेगा। फलतः वह प्रयास एक प्रकार से निरर्थक जैसा बनकर रह जायेगा।

इन विश्व संकट के दिनों में जबकि अध्यात्म उपचारों का आश्रय लिया जा रहा है, समय, विधान एवं अनुशासन की समस्वरता पर ध्यान केन्द्रित करने की विशेष रूप से आवश्यकता है। यह सार्वभौम प्रश्न है। इस ओर साधना क्षेत्र से सम्बन्ध रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान आकर्षित किया जाना चाहिए । अन्य धर्मों की तुलना में सुकुड़ते हुए हिन्दू धर्म की विच्छृंखलता अधिक चिन्ताजनक है। न केवल इस समुदाय को सम्भाला सुधारा जाना चाहिए वरन् विश्व के समस्त धर्मप्रेमियों, आस्तिकों, उपासनाप्रिय लोगों को यह समझाना जाना चाहिए कि उपासना में भावना का, विधान का जितना महत्व है उससे अनुशासन पालन की गरिमा किसी बकार कम नहीं इस सन्दर्भ में असावधानी बरती गईं तो चिह्न-पूजा भर चलती रहेगी जिन तीक्ष्ण परिणामों की आशा की गईं है उस सम्बन्ध में निराश ही रहना पड़ेगा।

इस विश्व संकट के दिनों में ५०० करोड़ मनुष्यों में से प्रत्येक तो युग साधना के रूप में—प्रज्ञा पुरश्चरण की भागीदारी ग्रहण करने के लिए कहा और सहमत किया जाना है। यह प्रयत्न न तो हिन्दू धर्मानुयायियों तक सीमित है और न परिणामों को उन्हीं लोगों तक रहना है। ऐसी दशा में प्रज्ञा पुरश्चरण को सार्वजनीन ही समझा जाना चाहिए । गायत्री मन्त्र से सम्बन्ध में यह रहस्य समझा और समझाया जाना चाहिए कि वह किसी सम्प्रदाय विशेष की पूजा पत्री नहीं हैं वरन् उसके अक्षरों में ध्वनि विज्ञान के ऐसे रहस्यों का भी समावेश है, जिससे साधक की सत्ता में उपतरंगें उत्पन्न होती हैऔर समूचे अदृष्य जगत में विषाक्तता को निरस्त करने की सशक्त प्रक्रिया विनिर्मित होती है। साथ हा अन्तरिक्ष में देव-तत्वों के अभिवर्धन-परिपोषण का ऐसा प्रमाण बन पड़ता है जैसे कि किसान और माली फसल उद्यान के निमित्त अपनाया करते हैं।

सृष्टि के आदि से लेकर अद्यावधि गायत्री मन्त्र की जितनी आवृतियाँ हुई हैं, उतनी और किसी उपासना प्रयोजन में प्रयुक्त होने वाले शब्द गुच्छक की नहीं। सृष्टि में अनेकों विभूतियाँ हैं, उनमें से एक गायत्री भी है। उसका शब्द गुंथन इस प्रकार हुआ है, जो भावार्थ और सामर्थ्य की दृष्टि से विलक्षण है। उससे व्यक्ति और समाज को सुसम्पन्न, सुसंस्कृत एवं समृद्ध बनाने वाले अनेकानेक रहस्यम तत्वो का समावेश है। त्रिपदा के तीन चरणों में समझदारी, ईमानदारी और जिम्मेदारी के सिद्धान्त की साँगोपांग विवेचना भरी पड़ी है। विश्व का यह सबसे छोटा किन्तु सबसे सारगर्भित धर्मशास्त्र तत्व-दर्शन एवं अध्यात्म विज्ञान है। सतुयुगी विश्व व्यवस्था के समस्त सूत्र संकेत इसमें बीज रूप में कूट-कूटकर भरे हुए। इसे नवयुग का संविधान कहें तो भी 'अत्युक्ति न होगी। नई दुनिया का—प्रज्ञा युग अब भी ढाँचा खड़ा होगा जब तक उसका सम्विधान बनाने के लिए इसी चिर पुरातन एवं नित नवीन बीज मन्त्र का आश्रय लेना पड़ेगा। ज्ञान और विज्ञान की दोनों धाराएँ इसमें समान रूप से समाहित हैं। उपासना की दृष्टि से उसके दोनों ही प्रभाव प्रत्यक्ष देखे जा सकते हैं। साधक के स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण शरीर का परिशोधन, परिष्कार करे की व्यक्तिगत जितनी सामर्थ्य इसमें है उतनी कदाचित ही किसी अन्य उपासना आधार से मिल सके। साथ ही इस शब्द प्रवाह के साथ जुड़ी हुई सामर्थ्य अदृश्य जगत् में अन्तरिक्ष में भरी विषाक्तताओं का निराकरण कर सकने में भी समर्थ है।

ऐसे ही अनेक तथ्यों को ध्यान में रखते हुए गायत्री को पुरातन काल की तरह भविष्य में भी विश्व मानव की समग्र प्रगति में सहायक माना जायेगा। समय रहते उसका ज्ञान-विज्ञान जन-साधारण को समझना और समझाया जाना चाहिए। सामयिक आवश्यकताओं की दृष्टि से उसे तात्कालिक उपचार के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

इन दिनों की प्रत्यक्ष विभीषिकाओं के पीछे अदृश्य जगत का परिमार्जन आवश्यक हो गया है। इसके लिए गायत्री मन्त्र के शब्द वेधी वाण का—नाद

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म का आश्रय लेना आवश्यक है। प्रज्ञा अनुष्ठान की सुनियोजित अत्यधिक व्यापक योजना इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए बनाई गई है और उसमें गायत्री मन्त्र को हर दृष्टि से उपयुक्त पाकर आधार बनाया गया है।

एक समय में, एक विधान अनुशासनसहित एक लक्ष्य की पूर्ति की लिए यदि पचास लाख व्यक्तियों द्वारा एक अध्यात्म उपक्रम अपनाया जाता है तो उसका प्रतिफल भी आयोजन के अनुरूप ही होना चाहिए। भूतकाल में भी ऐसा ही होता रहा है। देवताओं पर जब-जब विपत्ति आई है और वे अपने निजी प्रयत्नों द्वारा उसे टालने में असफल रहे हैं। तब-तब वे एकत्रित होकर विधाता के पास गये हैं। एक स्वर में बोले—एक प्रयास के लिए सहमत हुए और एक अनुशासन के अन्तर्गत काम करने के लिए सहमत हुए हैं। बाण उन्हें इससे कम में मिला भी नहीं और मिल भी नहीं सकता था। एक दो शक्ति कितनी ही प्रखर क्यों न हो, रहेगी अकेली ही। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता वाली कहावत यों लागू तो अनेक प्रसंगों पर होती है, पर सामूहिक विपत्ति के टालने के सन्दर्भ में तो यह एक प्रकार से अनिवार्य ही हो जाता है कि सज्जनों की संयुक्त शक्ति विकसित करने का सरंजाम जुटाया जाय।

समय संकट से जूझने के लिए अध्यात्म उपचार के रूप में जहाँ सामूहिक मन्त्राराधन का आयोजन है, उसका एक सामान्य लाभ यह भी है कि समय की पाबन्दी और नियत समय पर नियत काम करने की आदत का नये सिरे से शुभारम्भ होगा। कार्य चाहे भौतिक हो या आध्यात्मिक स्वार्थ के हों या परमार्थ के—हर प्रसंग में समय, कार्य और अनुशासन का तालमेल बिठा सकने की प्रवृत्ति ऐसी है, जिससे सफलताओं के सुनिश्चित आधार खड़े होते हैं। असफलताओं के अन्यान्य कारणों में प्रमुख मनुष्य की स्वभावगत अस्त-व्यस्तता है, उस सुधारने, बदलने से भी गायत्री महामन्त्र की साधना का बहुत बड़ा योगदान सम्भव हो सकेगा। सामूहिक मन्त्रोच्चार में न केवल आत्मकल्याण की, वरन् विश्व कल्याण की संभावनायें सन्निहित हैं।

यह ब्रह्माण्ड गोल है। सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा आदि सभी ग्रह उपग्रहों की बनावट गोल है। घूमते अथवा लुढ़कते रहने वाली हर वस्तु गोल बन जाती है। पहिये गोल ही बन सकते हैं चौकोर नहीं। पहाड़ों पर से पत्थर के टुकड़े टूटकर नहीं प्रवाह से गिरते और धारा के दबाव से आगे आगे लुढ़कते हैं फलतः वे गोल बन जाते हैं। अधिक छोटे टुकड़े बालू के कणों के रूप में दिखाई पड़ते हैं, होते वे भी गोल ही हैं। घूमने की प्रतिक्रिया गोलाई ही हो सकती है।

गोलाई और गति का सम्मिश्रण कर देने पर एक चक्र बन जाता है। पहिया घूमता है—आगे बढ़ता है और बढ़ता-बढ़ता अन्ततः अपने पुराने स्थान पर ही लौट आता है। यदि गति को अनवरत क्रम से जारी रखा जाय तो पदार्थ अपनी जगह पर वापिस लौट आता है और फिर वही आगे बढ़ने और पुराने स्थान पर लौटने का क्रम जारी रहता है। ग्रह-नक्षत्र इसी आधार पर अपनी कक्षाएँ बनाते और उनमें परिभ्रमण करते रहते हैं। परमाणु के अन्तर में काम करने वाले इलेक्ट्रोन आदि घटक अपनी धुरी पर कक्षा में ग्रह-नक्षत्रों की भाँति ही घूमते हैं।

यही बात शब्द-कम्पनों के सम्बन्ध में भी है वे जिस उद्गम स्रोत से निस्तृत होते हैं, वहाँ से निकलकर द्रुतगति से आगे-आगे भागते हैं, पर यह भागना अन्ततः गोलाई के चक्र की पकड़ में आ जाता है और फिर सुदूर अन्तरिक्ष की लम्बी यात्रा करते हुए अपने मूल स्थान पर लौट आता है। वहाँ से फिर आगे बढ़ता और फिर वापस लौटता है। यदि हम नाक की सीध में आगे ही आगे बढ़ते चले जाएँ तो अन्त में उसी स्थान पर वापस आ जायेंगें, जहाँ से यात्रा आरम्भ की थी। शब्दों की यात्रा इसी चक्र गति से होती है। वे दूसरों को भी प्रभावित करते हैं, पर सबसे अधिक प्रभाव अपने ही ऊपर होता है क्योंकि उनका प्रत्येक यात्रा चक्र अपने मूल उद्गम को चिरकाल तक प्रभावित करता रहता है जबकि बाहरी व्यक्तयों एवं वस्तुओं को प्रभावित तो वह मुख्यतः एक बार ही करता है।

प्राचीन काल में शब्दवेधी वाण चलते थे, वे लक्ष्य से टकराते थे—लक्ष्य वेध करते थे और फिर लौटकर प्रयोक्ता के तरकस में ही आ घुसते थे। ऐसे अस्त्रों को किम्वदन्ती मानने की आवश्यकता नहीं है। उनका एक भोंडा रूप अभी भी अपने जमाने में मौजूद है और उसे आस्ट्रेलियायी आदिवासी प्रयोग करते हैं। उस अस्त्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का नाम है—'बूमरेंग' मन्त्राराधन में विशेष शब्द-संरचना के आधार पर बने और विशेष मनः स्थिति में—विशेष विधि-विधान के साथ जिस शब्दावली को अनवरत् रूप से दुहराया जाता है वह निखिल ब्रह्माण्ड में भ्रमण करते हुए मूल प्रयोक्ता के पास वापस लौट आती है और उसके लिए अति महत्वपूर्ण सत्परिणाम उत्पन्न करती है।

मन्त्र विज्ञान के दो आधार हैं। एक आत्मिक दूसरा मौलिक। इन दोनों के समन्वय से मन्त्र प्रक्रिया का आधार बनता है।

आत्मिक पक्ष वह है जिसमें साधक का चारित्रिक एवं भावनात्मक परिष्कार काम करता है, उससे व्यक्तित्व की उत्कृष्टता निखरती है और शक्ति का ऐसा प्रचण्ड स्रोत अन्तः चेतना में प्रादुर्भूत होता है, जिसे किसी भी दिशा में किसी भी प्रयोजन के लिए प्रयुक्त किया जा सके। परिष्कृत व्यक्तित्व की पूँजी से ही आत्मिक क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की विभूतियाँ उपलब्ध होती हैं और उन्हीं को भौतिक कार्यों में लगा देने पर सांसारिक सफलताएँ हाथ बाँधकर आगे आ खड़ी होती हैं। ओछे व्यक्तित्व पग-पग पर ठोकरें खाते और दीन-दरिद्रों की तरह निरन्तर असफलताओं का मुँह जोहते हैं। उन्हें न भौतिक उन्नति का अवसर मिलता है और न आत्मिक प्रगति की दिशा में आगे बढ़ सकना सम्भव होता है। नैपोलियन, सिकन्दर जैसे सांसारिक सफलताएँ पाने वाले मनस्वी लोगों के पास उनके व्यक्तित्व की प्रखरता ही होती है।

साधन क्षेत्र में अग्रसर होने वाले के लिए यह आवश्यक होता है कि वह अपने शारीरिक और मानसिक क्षेत्र में आवश्यक संयम बरतकर बिखराव में नष्ट होने वाली शक्तियों का संचय करते हुए सामर्थवान बनें। दूसरा पक्ष व्यक्तित्व के विकास का यह है कि गुण, कर्म, स्वभाव को अधिकाधिक उच्चस्तरीय बनाते हुए स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर में अवस्थित विभिन्न दिव्य शक्तियों को सुविकसित एवं परिपुष्ट होने का अवसर प्रदान करें। संचय और संग्रह के उभय-पक्षीय कदम बढ़ाते हुए आत्मिक प्रगति के पथ पर चलने वाला पथिक क्रमशः समुन्नत व्यक्तित्व प्राप्त करता है और उस आधार पर ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग किसी भी दिशा में आशाजनक सफलता प्राप्त कर सकना सम्भव हो जाता है। मन्त्राराधन की सफलता का आत्मिक स्रोत एवं पक्ष भी यही है।

मन्त्र साधना का भौतिक पक्ष शब्द संरचना—स्वर विनयोग—उपचार विधान एवं उपकरणों का स्तर जैसी व्यवस्थाओं से सम्बन्धित है। इन सब का सही आधार बन जाने से आत्मिक प्रगति के उत्तरार्ध की पूर्ति होती है। उभय-पक्षीय समन्वय से आत्मिक प्रगति का वह आधार खड़ा होता है जो अन्तः चेतना का स्तर ऊँचा उठा कर भौतिक क्षेत्र में बहुमुखी सफलताएँ प्रस्तुत कर सके।

मात्र आत्मिक सन्तोष के लिए ज्ञान और भक्तियोग की साधनाओं से भी काम चल सकता है। ब्रह्म-विद्या के मान्यतत्व दर्शन को स्वाध्याय, सत्संग एवं मनःचिन्तन के आधार पर हृदयंगम किया जाता रहे तो आत्मबोध की स्थिति उत्पन्न हो सकती है और ज्ञान वैराग्य का प्रकाश अन्तरात्मा में परिलक्षित हो सकता है। वेदान्त साधनाओं की अहं-ब्रह्मादिकपरक—सोऽहम् शिवोहम् की उद्बोधक वृत्ति ज्ञान योग का प्रयोजन पूरा कर सकती है। उसे आत्मबोध की स्थिति जागृत करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

भक्तियोग में प्रेम तत्व को विकसित करके आनन्द की अनुभूति का रसास्वादन है। अपने को जिसमें समर्पित किया जाता है या जिसको अपना बनाया जाता है उसमें सहज ही आकर्षण उत्पन्न हो जाता है और उस आकर्षण को आत्मसात् करते हुए आनन्द की अनुभूति होती है। दैनिक जीवन में यही चलता है। अपनी सम्पत्ति प्राणप्रिय लगती है। अपना शरीर परिवार, यश, वैभव, वर्चस्व यह सब कुछ इसलिए प्यारा लगता है कि उसके साथ अपनेपन की भावना जुड़ जाती है। स्त्री, पुत्रों में यह भावना अधिक घनिष्ठ होती है तो वे प्यारे भी अधिक लगते हैं। जिस वस्तु या व्यक्ति पर से यह आत्मभाव समेट लिया जाय वह उतना ही अरुचिकर, उपेक्षित बन जायगा। भले ही यह स्तर की दृष्टि से उत्तम ही क्यों न हो। इसके विपरीत जो वस्तु या व्यक्ति जितना अधिक अपनेपन की पकड़ में कसा जायगा वह गुणहीन होने पर भी परमप्रिय लगता चला जायगा। प्रिय में आनन्द होता है यह सभी जानते हैं। प्रिय क्या है उसका विश्लेषण करने पर इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रिय-अप्रिय नाम के कोई तत्व इस संसार में नहीं मात्र अपनेपन और विरानेपन की ही वे दोनों प्रतिक्रियाएँ भर हैं।

ईश्वर महान् है—सद्गुण सम्पन्न—शक्ति का स्रोत और आत्मा का उद्गम केन्द्र है। उससे प्रेम करने लगे तो ईश्वर को इससे कोई लाभ हो या न हो अपने अन्तःकरण में प्रेम तत्व की अभिवृद्धि होती है। आग जहाँ रहती है उस स्थान की जगह गरम रहती है। प्रेम तत्व जहाँ रहेगा वहाँ अनायास ही आनन्द का निर्झर झरता रहेगा। ईश्वर के माध्यम से प्रेम तत्व को अन्तरात्मा में उसी प्रकार विकसित किया जाता है जिस प्रकार व्यायामशाला और उसमें उपस्थित विभिन्न उपकरणों की सहायता से शरीर की मांसपेशियाँ परिपुष्ट की जाती हैं। विकसित प्रेम तत्व अपने शरीर, मन, परिवार और समाज पर जब आलोकित होता है, तब वे सभी प्रेम पात्र लगते और आनन्द प्रदान करते हैं। प्रेम में देना ही देना है—अन्तरात्मा जहाँ भी हुलसती है, वहीं कुछ देने के लिए मचलती है। प्रेमी व्यक्ति अपने समूचे सम्पर्क क्षेत्र में कुछ अनुदान प्रस्तुत करते रहने की ही बात सोचता है फलतः वह सदा सर्वदा सेवा सहायता के लिए प्रयत्नशील रहता है। कहना न होगा कि उदारता सदा अनेक गुनी श्रद्धा सद्भावना और सहायता लेकर वापस लौटती है। ईश्वर के माध्यम से विकसित हुआ भक्तियोग किसी काल्पनिक प्रतिमा के इर्द-गिर्द ही नहीं घूमता रहता, वह वहाँ प्रयोगशाला में विकसित होकर समूचे जीवन क्षेत्र को आच्छादित करता है और हर घड़ी अन्तःकरण को आनन्द विभोर बनाये रहता है।

ज्ञानयोग और भक्तियोग बिना सामान्य क्रियाकाण्ड के सहारे, मात्र भाव संवेदना के सहारे विकसित होते रहते हैं। बाह्य साधनों की उनमें कम सहायता लेनी पड़ती है। यह सरलता रहते हुए भी यह दोनों ही क्षेत्र अपनेपन की छोटी सीमा तक ही सीमित रहते हैं। ज्ञानी और भक्त प्रायः अपने आप में ही खोये रहते हैं अस्तु उनके लाभ भी स्वर्ग मुक्ति, आत्मा-साक्षात्कार—ब्रह्म साक्षात्कार जैसी व्यक्तिगत परिधि में अपना प्रभाव उत्पन्न कर पाते हैं।

कर्मयोग की महिमा अत्यधिक बताई गई है और उसे सर्वोपयोगी कहा गया है। कर्म अपने आपके लिए भी होते है, पर वे नित्यक्रम कहलाते हैं। दूसरों को साथ लेकर चलने वाले, दूसरों को प्रभावित करने वाले—सत्कर्म कर्मयोग की परिधि में गिने जाते हैं। गीता कर्मयोग का प्रधान ग्रन्थ है। अन्यत्र भी कर्मयोग की महिमा है। ज्ञानी और भक्त भी कर्मयोग के सहारे ही जीवन यात्रा सम्पन्न करते हैं। उसमें व्यक्ति और समाज का उभय पक्षीय हित साधन होता है। उसके लिए एकान्त तलाश करने या एकाकी रहने की आवश्यकता नहीं होती। सामूहिकता का निर्वाह कर्मयोग में ही होता है। उससे व्यक्ति और समाज को समान रूप से लाभान्वित होने का अवसर मिलता है।

मन्त्राराधन कर्मयोग की ही एक प्रक्रिया है। उसकी क्रिया-प्रक्रिया में भौतिक और आत्मिक तत्व समान रूप से मिले हुए हैं। भावनात्मक विकास की योगसाधना और चारित्रिक परिष्कार की तपश्चर्या व्यक्तित्व को निखारने के लिए है। यह विशुद्ध आध्यात्म पक्ष हुआ। दूसरा पक्ष भौतिक है, जिस के शब्द और स्वर दोनों ऐसे हैं, जिन्हें पंचतत्वों से बने शरीर अवयवों की प्रतिक्रिया कह सकते हैं। शब्द मूलतः पदार्थ हैं। उसे रेंगने, धकेलने और प्रभावी बनाने में आत्म शक्ति का उपयोग होता है, पर स्वतः शब्द तो भौतिक हलचलों से उत्पन्न, भौतिक उपकरणों से नापा-तोला जा सकने वाला पदार्थ मात्र है। स्वर भी शब्द का ही एक प्रकार है। दोनों की गणना भौतिक विज्ञान की परिधि में ही की जाती हैं। पूजा उपचार में प्रयुक्त होने वाले पदार्थ स्पष्टतः भौतिक हैं। देव प्रतिमा—पूजा उपकरण, एवं पदार्थ—चन्दन, धूप, अक्षत, जल, हवन सामग्री आदि की गणना इसी क्षेत्र से है। साधन का स्थान, आहार, वस्त्र आदि भी भौतिक पदार्थों से ही विनिर्मित हैं।

मन्त्राराधन में प्रयुक्त होने वाले साधनों में साधक की भावनात्मक स्थिति आध्यात्मिक और शारीरिक एवं उपचारात्मक सामग्री भौतिक है। अस्तु उसे समन्वित प्रक्रिया कह सकते हैं। इसे आधी अध्यात्मिक और आधी भौतिक कहा जाय तो समझने में सुविधा ही रहेगी। परिणाम की दृष्टि से भी वह दोनों ही क्षेत्रों को प्रभावित करती है। उससे साधक का आत्मबल बढ़ना सुनिश्चित है। साथ ही जो प्रखरता, प्रतिमा उत्पन्न होती है उससे लोक-व्यवहार के क्षेत्र में बहुमुखी प्रगति की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सम्भावनाएँ विकसित होती हैं। इस प्रकार व्यक्तिगत जीवन के अन्तरंग और बहिरंग दोनों क्षेत्रों का मन्त्राराधन की प्रक्रिया प्रभावित करती है।

मन्त्र-विज्ञान की प्रतिक्रिया व्यक्तियों के उलझने-सुलझने और प्रगति की सम्भावनाएँ बढ़ाने में सहायक होती हैं। उसके सहारे कई कष्ट पीड़ितों को सहारा दिया जा सकता है और लड़खड़ाने वालों को तन कर खड़ा होने योग्य बनाया जा सकता है। इसी प्रकार प्रकृति को, वस्तुओं को, परिस्थितियों को, वातावरण को प्रभावित करने की क्षमता भी इस उपचार में विद्यमान है। मन्त्र से उत्पन्न शक्ति से सूक्ष्म जगत् की हलचलों को स्थूल जगत के लिए उपयोगी और अनुकूल बनाया जा सकता है।

इसी महत्ता को ध्यान में रखते हुए भौतिक प्रगति के लिए किये जाने वाले अनेकानेक प्रयत्न पुरुषार्थों की तरह आत्मिक प्रगति के लिए अति महत्वपूर्ण उपाय-उपचार मन्त्राराधन बताया गया है। यदि उसे सही व्यक्तियों द्वारा सही रीति से कार्यान्वित किया जा सके तो परिणाम वैसा हो सकता है, जिसके आधार पर उसे बुद्धिमत्तापूर्ण एवं अतीव श्रेयस्कर प्रक्रिया के रूप में स्वीकार कर सकना किसी के लिए भी कठिन न पड़े।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नाद ब्रह्म की साधना—नादयोग

अनाहत नाद ब्रह्मकी साधना ॐकार के माध्यम से

ब्रह्माण्डीय चेतना एवं सशक्तता का उद्गम स्रोत कहाँ है? इसकी तलाश करते हुए तत्वदर्शी-ऋषि अपने गहन अनुसंधानों के सहारे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह समस्त हलचलें जिस आधार पर चलती हैं, वह शक्ति स्रोत शब्द है। अचिन्त्य, अगम्य, अगोचर, परब्रह्म को जगत चेतना के साथ अपना स्वरूप निर्धारित करते हुए शब्दब्रह्म के रूप में प्रकट होना पड़ा। सृष्टि पूर्व यहाँ कुछ नहीं था। कुछ से सब कुछ को उत्पन्न होने का प्रथम चरण शब्द-ब्रह्म था, उसी को नादब्रह्म कहते हैं। उसकी परमसत्ता का आरम्भ-अवरतण इसी प्रकार होता है, उसके अस्तित्व एवं प्रभाव का परिचय प्राप्त करना सर्वप्रथम शब्द के रूप में ही सम्भव हो सका।

यह विश्व अनन्त प्रकाश के गर्भ में पलने वाला और उसी की गोदी में खेलने वाला बालक है। ग्रह-नक्षत्रों का, निहारिकाओं का, प्राणी और पदार्थों का निर्वाह इस आकाश की छत्र-छाया में ही हो रहा है। सृष्टि से पूर्व आकाश ही था, आकाश में ऊर्जा रूप में हलचलें उत्पन्न हुईं। हलचलें सघन होकर पदार्थ बन गयीं। पदार्थ से पंचतत्व और पंचप्राण बने। इन्हीं के सम्मिश्रण से विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनीं और प्राण बने। सृष्टि के इस आरम्भ क्रम से आत्मविज्ञानी और भौतिक विज्ञानी प्रायः सभी समान रूप से सहमत हो चले।

आरम्भिक हलचल शब्द रूप में हुई होगी, इस कल्पना को अब मान्यता के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। आकाश की तन्त्रमात्रा शब्द ही है। शब्द और आकाश का पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध है। स्थूल आकाश 'ईथर' के रूप में जाना जाता है। ध्वनि प्रवाह भी उसे कहते हैं। प्रकाश की, भौतिक जगत की एक बड़ी शक्ति है। विद्युत चुम्बक आदि का नम्बर इसके बाद आता है। शक्ति का प्रथम स्रोत ध्वनि है, ध्वनि से प्रकाश के संयोग-वियोगों से तत्वों, प्रवाहों एवं चेतनाओं का उद्भव। सृष्टि का आधार-कारण इसी प्रकार समझा जा सकता है।

शब्द का आरम्भ जिस रूप में हुआ उसी स्थिति में वह अनन्तकाल तक बना रहेगा। आरम्भ शब्द ओउम् माना गया है। यह कांस्य पात्र पर हथौड़ी पड़ने से उत्पन्न झनझनाहट-थरथराहट की तरह का प्रवाह है। घड़ियाल पर लकड़ी की हथौड़ी मारकर आरती के समय जो ध्वनि उत्पन्न की जाती है, उसे ओउमकार के समतुल्य माना जा सकता है। ओ शब्द का आरम्भ और उसके प्रवाह में अर्थ अनुस्वरों की श्रृंखला जोड़ दी जाये तो यही ओउम बन जायेगा। उसके उच्चारण का स्वरूप समझाते हुए 'ओ' शब्द के आगे ३ का अंक लिखा जाता है।, तदुपरान्त आधा 'म्' लिखते हैं। ३ का अंक लिखने का अर्थ है उसे अपेक्षाकृत अधिक जोर से बोला जाये। ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत के संकेतों से ३ गुनी शक्ति से बोले जाने वाले अक्षर को प्लुत कहते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि 'ओ' शब्द को सामान्य की अपेक्षा तीन गुनी क्षमता से बोला जाये, तदुपरान्त उसके साथ अर्ध 'म्' की अर्धबिन्दु अर्ध अनुस्वरों की एक कड़ी जोड़ दी जाये, यही 'ओ३म्' का उच्चारण है। 'ओ, ३, म्' इन तीनों का संक्षिप्त स्वरूप मोनोग्राम ॐ के रूप में लिखा जाता है। यही वह स्वरूप है जिसका सृष्टि आरम्भ के लिए उद्भव हुआ और उसी की पुनरावृत्ति परा प्रकृति के अन्तराल में यथावत् होती आ रही है। जागतिक समस्त विधि-व्यवस्थायें उसी उद्गम से आरम्भ होती हैं और गतिशील रहती हैं।

घड़ी में पेण्डुलम हिलता है, उससे अनायास ही एक स्वसंचालित प्रवाह बनता है, जिसके आधार पर न केवल पेण्डुलम की अपनी क्रिया-प्रक्रिया चलती है वरन् घड़ी के अन्य पुर्जों को गतिशील बनाने के लिए अभीष्ट क्षमता की आवश्यकता की पूर्ति होती है। परा और अपरा, चेतन और जड़ प्रकृति को यदि एक घड़ी यंत्र माना जाये, तो उसके संचालन की उद्गम व्यवस्था बनाने वाली शक्ति को ओ३मकार का ध्वनि प्रवाह कह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकते हैं, यह अनवरत रूप से होता रहता है। एक के बाद दूसरे आघात का क्रम चलता रहता है। इन आघातों को प्रकृति पुरुष के संयोग समागम की उत्पत्ति कहा गया है। श्रृंगारिक अलंकारों में इसे काम-क्रीड़ा की विविध प्रवृत्तियों के रूप में भी सरस वर्णनों के साथ समझने का प्रयत्न चलता रहता है, इसे दार्शनिकता और कवित्व का सम्मिश्रण कह सकते हैं।

शक्ति की धारायें अनेक हैं, पर यदि उनके उद्‌गम केन्द्र तक पहुँचा जा सके तो उन सभी धाराओं पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है, जो उस केन्द्र संस्थान से उद्‌भूत होती हैं। राजधानी पर, राजा के किले पर कब्जा हो जाने से उस प्रवाह में चलने वाले सारे क्षेत्र पर अधिकार हो जाता है। सहसार चक्र की साधना में सफलता मिलने पर समूची, जीवन सत्ता वशवर्ती हो जाती है। सृष्टि का उद्‌गम केन्द्र ब्रह्मओउम्‌कार यदि सिद्ध किया जा सके तो समूचे सृष्टि प्रवाह के साथ तारतम्य मिलना सम्भव हो जाता है, तब इस विश्व वैभव का अभीष्ट सत्प्रयोजनों के लिए उपयोग कर सकने में कठिनाई नहीं रहती। विशेषतया आत्म-विश्वास पर तो पूरी तरह अधिकार हो ही जाता है। विश्व नियन्ता परमात्मा के लिए विश्व व्यवस्था की बात जितनी महत्वपूर्ण है, आत्म-नियन्ता आत्मा के लिए उतना ही गरिमामय आत्मसत्ता के क्षेत्र में सुव्यवस्था बना सकना है।

शब्द ब्रह्म प्रकृति और पुरुष का मध्यवर्ती सम्बन्ध सूत्र है। इस पर अधिकार होने से दोनों ही क्षेत्रों में घनिष्ठता सध जाती है। प्रकृति क्षेत्र की शक्तियाँ और ब्रह्म क्षेत्र की चेतनाएँ करतलगत हो सकें तो ऋद्धियों और सिद्धियों का, सम्पदाओं और विभूतियों का उभयपक्षीय वैभव उपलब्ध हो सकता है।

ओम्‌कार साधना नादयोग की उच्चस्तरीय साधना है। आरम्भिक अभ्यासी को प्रकृति प्रवाह से उत्पन्न विविध स्तर की आहत-परिचित ध्वनियाँ सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय से सुनाई पड़ती हैं। इनके सहारे मन को वशवर्ती बनाने तथा प्रकृति क्षेत्र में चल रही हलचलों को जानने तथा उन्हें मोड़ने-मरोड़ने की सामर्थ्य मिलती है, आगे चलकर 'अनाहत' क्षेत्र आ जाता है। स्वयंभू-ध्वनि प्रवाह जिसे परब्रह्म का अनुभव में आ सकने वाला स्वरूप कह सकते हैं यदि किसी के सघन सम्पर्क में आ सके तो अध्यात्म क्षेत्र का सिद्ध पुरुष भी कह सकते हैं।

भगवान का सर्वश्रेष्ठ नाम ओ३म् है। यह स्वयं भू है। पेट भरा होने पर जब डकार लेते हैं तब पूर्णता का प्रतीक 'ओ३म्' शब्द अनायास ही निकलता है जिसकी ध्वनि नाभि देश से आरम्भ होकर कण्ठमूल और मुखाग्र तक चली जाती है। यह ओ३म् साढ़े तीन अक्षरों का विनिर्मित है—(१) ओ (२) उ (३) म्-ओं के उच्चारण में अर्धबिन्दु लगा है, इसे चन्द्रबिन्दु अथवा अर्धमात्रा कहते हैं। उसे आधा अक्षर माना गया है, इस प्रकार साढ़े तीन अक्षर का मंत्रराज यों कहलाता है। इसका उच्चारण कण्ठ, होठ, मुख, जिह्वा से होता है, पर इसका बीज कुण्डलिनी में सन्निहित है। जब ध्वनि और प्राण दोनों मिल जाते हैं तब उसका समग्र प्रभाव उत्पन्न होता है।

माण्डूक्योपनिषद् में परमात्मा के समग्र रूप का तत्व समझाने के लिए उनके चार पादों की कल्पना की गई है। नाम और नामी की एकता प्रतिपादन करने के लिए भी और नादशक्ति के परिचय रूप में अ, उ और म इन तीन मात्राओं के साथ और मात्रा रहित उसके अव्यक्त रूप के साथ परब्रह्म परमात्मा के एक-एक पाद की समता दिखलाई गई है और ओंकार को ही परमात्मा का अभिन्न स्वरूप मानकर यह बताया गया है—

ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्‌भविष्यदिति सर्वमोंकार एव। यच्चान्यत् त्रिकालातीतं तदप्योंकार एव।

—माण्डूक्योपनिषद्-१

'ओउम्' यह अक्षर ही पूर्ण अविनाशी परमात्मा है। यह प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला जड़-चेतन का समुदाय रूप जगत उन्हीं का उपव्याख्यान अर्थात् उन्हीं की निकटतम् महिमा का निर्देशक है। जो स्थूल एवं सूक्ष्म जगत पहले उत्पन्न होकर उसमें विलीन हो चुका है। जो वर्तमान है, जो भविष्य में उत्पन्न होगा वह सबका सब ओंकार (ब्रह्म का नाद स्वरूप) ही है, तीनों कालों से अतीत इससे भिन्न है, वह भी ओंकार ही है।

स्थूल, सूक्ष्म और कारण जो कुछ भी दृश्य-अदृश्य है उसका संचालन ओंकार की स्फुरणा से ही हो रहा है। यह जो उनका अभिव्यक्त अंश और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उससे अतीत भी जो कुछ है वह सब मिलकर ही परब्रह्म परमात्मा का समग्र रूप है, पूर्ण ब्रह्म की प्राप्ति के लिए। अतएव उनकी नादशक्ति का परिचय प्राप्त करना आवश्यक है।

परमात्मा के नाद रूप के साक्षात्कार के लिए किए गए ध्यान के सम्बन्ध में नाद बिन्दुपनिषद् के ३३ से ४१ वें मन्त्रों में बड़ी सूक्ष्म अनुभूतियों का विवरण मिलता है। इन मंत्रों में बताया गया है कि जब पहले-पहले अभ्यास किया जाता है तो 'नाद' कई तरह का और बड़े जोर-जोर से सुनाई देता है। आरम्भ में नाद की ध्वनि नागरी, झरना, भेरी, मेघ और समद्र की हरहराहट की तरह होती है बाद में भ्रमर, वीणा, वंशी और किंकिणी की तरह गुन्जन पूर्ण और मधुर होती है। ध्यान को धीरे-धीरे बढ़ाया जाता है और उससे मानसिक ताप का शमन होना भी बताया गया है। तैत्तिरीयोपनिषद् के तृतीय अनुवाक् में ऋषि ने लिखा है—'वाणी में शारीरिक और आत्म—विषयक दोनों तरह की उन्नति करने की सामर्थ्य भरी हुई है जो इस रहस्य को जानता है वह वाक्शक्ति पाकर उसके द्वारा अभीष्ट फल प्राप्त करने में समर्थ होता है।

ओउम्कार ध्वनि से प्रस्फुटित होने वाला ब्रह्म इतना सशक्त और सर्वशक्तिमान है कि वह सृष्टि के किसी भी कण को स्थिर नहीं होने देता। समुद्रों को मथ डालने से लेकर भयंकर आँधी-तूफान और ज्वालामुखी पैदा करने तक, परस्पर विचार-विनिमय की व्यवस्था से लेकर ग्रह-नक्षत्रों के सूक्ष्म कम्पनों को पकड़ने तक का एक सुविस्तृत विज्ञान किसी समय भारतवर्ष में प्रचलित था। नादब्रह्म की उपासना के फलस्वरूप यहाँ के साधक इन्द्रियातीत क्षमताओं के अधिपति और स्वर्ग सम्पदा के अधिकारी देवमानव कहलाते रहे हैं।

अनाहत नाद की उपासना विश्वव्यापी है। पाश्चात्य विद्वानों तथा साधकों ने उसके वर्णन के लिए इन शब्दों का प्रयोग किया है—'वेर्ड लोगोस', 'हिवस्पर्स' 'फ्राम द अननोन', 'इनर हवासय,' 'द लेंग्वेज ऑफ सोल', 'प्रिमार्डियल साउण्ड', 'द ह्वायस फ्राम हैवन', 'द ह्वायस आफ सोल' आदि।

गणितज्ञ, दार्शनिक पाइथागोरस ने इसे सृष्टि का संगीत (म्यूजिक ऑफ द स्फियर्स) कहा गया है। व्यष्टि (माइक्रोकाज्म) को समष्टि (मेक्रोकाज्म) से जोड़ने से नाद साधना अतीव उपयोगी सिद्ध होती है।

स्वामी विवेकानन्द ने ओउम् शब्द को समस्त नाम तथा रूपान्तरों की एक जननी (मदर ऑफ नेम्स एण्ड फार्मस) कहा है। भारतीय मनीषियों ने इस प्रणव ध्वनि, उद्गीथ, स्टोफ आदि नाम अनाहत, ब्रह्मनाद आदि अनेक नामों से पुकारा है।

बाइबिल में कहा गया है—'आरम्भ में शब्द था। शब्द ईश्वर के साथ था और शब्द ईश्वर था।' इन दि विगिनिंग वाज दि वर्ड, दि वर्ड वाज विद गॉड, दि वर्ड वाज गॉड।

शिव पुराण के उमा संहिता खण्ड के २६ वें अध्याय में अनाहत नाद सम्बन्धी विशेष विवरण और माहात्म्य मिलता है। भगवान् शिव-पार्वती से कहते हैं—'अनाहत नाद कालजयी है। इसकी साधना करने वाला इच्छानुसार मृत्यु को जीत लेता है। सर्वज्ञाता और सम्पूर्ण सिद्धियों का अधिपति बनता है, उसकी सूक्ष्मता बढ़ जाती है और भवसागर के बन्धन कट जाते हैं। जागरूक योगी शब्द ब्रह्म की साधना करे—यह परम कल्याणकारी योग है।

नादयोग के दस मण्डल साधना ग्रन्थों में गिनाये गये हैं। कहीं-कहीं इन्हें लोक भी कहा गया है। एक ओ३म्कार ध्वनि और शेष नौ शब्द इन्हें मिलाकर दस शब्द बनते हैं। इन्हीं की श्रवण साधना शब्द ब्रह्म की नाद साधना कहलाती है।

सन्त मत के मध्यकालीन आचार्यों ने नादब्रह्म की साधना की 'सुरति' कहा है। कबीर, रैदास, नानक, पलटू और राधास्वामी एवं नाथ सम्प्रदाय में इसका विशेष रूप से प्रचलन है। सुरति का एक अर्थ प्रकृति-पुरुष के बीच अनवरत क्रम से चलने वाली दिव्य मिलन-बिछुड़न क्रिया की ओर संकेत करता है। दूसरा अर्थ स्रोत शब्द के अपभ्रंश रूप में भी 'सुरति' को ले सकते हैं। शास्त्रों में अध्यात्म स्रोत अनवरत शब्द प्रवाह को माना गया है। सूक्ष्म नाद प्रकृति के अन्तराल में सर्वव्यापी बनकर गूँज रहा है, उसे अपने काय घट में भी सुना जा सकता है। इसकी श्रवण विधियाँ साधना शास्त्र में विभिन्न प्रकार से बताई गई हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

४.४ शब्द ब्रह्म —नाद ब्रह्म

आत्मोत्थान के लिए हमारे वेद-शास्त्रों में जितने भी उपायों का प्रतिपादन किया गया है, उनमें नादयोग को उत्कृष्ठ की संज्ञा दी गई है क्योंकि मन की स्थिरता के लिए यह उपयोगी साधन सिद्ध हुआ है। योग और तांत्रिक सभी प्रकार की साधनाओं में इसका। उच्च स्थान है। तांत्रिक आचार्यों का मत है कि "जब (आणव शब्द) नाद सुनने में नहीं आता, वह विक्षिप्त, क्षिप्त अथवा मूढ़ दशा है, किन्तु जब नाद श्रुतिगोचर होता है, वह एकाग्र अवस्था ज्ञान की अवस्था है और जब नाद-श्रवण स्थगित हो जाता है—वह चित्त की निरोध अवस्था है, तब मन की वृत्ति नहीं रहती। संस्कार-मात्र रूप से मन विद्यमान रहता है, किन्तु यह संस्कार भी जब नहीं रहता, तब चिन्मात्र या शुद्ध आत्मा की स्वरूप स्थिति जाननी चाहिए।

हठयोग में भी नाद-साधना का प्रतिपादन किया गया है। यहाँ इसे श्रेष्ठ साधना माना जाता है। इस योग में चार नाद-भूमियों का आरम्भ, घट, परिचय और निष्पत्ति का उल्लेख आता है। अन्तिम भूमि को सिद्धावस्था माना जाता है।

योगियों का विचार है कि जिस तरह गंगा का अवतरण विष्णु पद से शिव के मस्तक पर हुआ था, उसी तरह यह नाद-गंगा के प्रवाह का अवरतण भी विश्व-कल्याण के लिए हुआ है। तांत्रिकाचार्यों का कथन है कि यह नाद प्रवाह ऊपर से भूमध्य में गिरता है। इसी से सारे विश्व की उत्पत्ति होती है और उत्पन्न होकर सारे जगत् में यही प्राण और जीवनी शक्ति के रूप में विद्यमान रहती है। मानव-शरीर में श्वास-प्रश्वास का खेल प्राण करता है। तांत्रिक भाषा में इसे हंस कहते हैं। 'हं' शिव या पुरुष-तत्व का और 'स' शक्ति या प्रकृति-तत्व का पर्याय है। जहाँ इन दोनों का मिलन होता है, वहीं नाद की अनुभूति होती है। तभी शिव-सहिता में कहा गया है—

न नादसदृशो लयः।

"मन को लय करने वाले साधनों में, नाद की तुलना करने वाला और कोई साधन नहीं है।"

भगवान शंकराचार्य ने भी 'योग तारावली' में नाद-तत्व की प्रशंसा की है—

सदा शिवोक्तानि सपादलक्ष—
लयावधानानि वसन्ति लोके।
नादानुसन्धानसमाधिमेकं
मन्यामहे मान्यतमं लयानाम्॥
नादानुसन्धान नमोऽस्तु तुभ्यं
त्वांमन्महे तत्वपदं लयानाम्।
भवत्प्रसादात् पवनेन साधं
विलीयते विष्णुपदे मनो मे॥
सर्वचिन्तां परित्यज्य सावधानेन चेतसा।
नाद एवानुसन्धेयो योगसाम्राज्यमिच्छता॥

"भगवान शिव ने मन के लय के लिये सवा लक्ष साधनों का निर्देश किया है, परन्तु उन सबमें नादानुसन्धान सुलभ और श्रेष्ठ है। हे नादानुसन्धान ! आपको नमस्कार करता हूँ। आप परमपद में स्थिति-लाभ कराते हैं। आपकी कृपा से मेरे प्राण और मन दोनों विष्णु के परम पद में लीन हो जायेंगे। यदि योग-साम्राज्य में गति प्राप्त करने की आकांक्षा हो, तो समस्त चिन्ताओं से मुक्त होकर सावधानी से मन को एकाग्र करके अनहद नाद का श्रवण करो।"

परिभाषा—

ब्रह्मविन्दोपनिषद् में नाद-साधक को वेदज्ञ की संज्ञा दी गई है।

'शब्द' को ब्रह्म कहा है क्योंकि ईश्वर और जीव को एक श्रृंखला में बाँधने का काम शब्द द्वारा ही होता है। सृष्टि की उत्पत्ति का प्रारम्भ भी शब्द से हुआ है। पंच तत्वों में सबसे पहले आकाश बना, आकश की तन्मात्रा शब्द हैं। अन्य समस्त पदार्थों की भाँति शब्द भी दो प्रकार का है सूक्ष्म और स्थूल। सूक्ष्म शब्द को विचार कहते हैं और स्थूल शब्द को नाद।

ब्रह्म लोक से हमारे लिये ईश्वरीय शब्द-प्रवाह सदैव प्रवाहित होता है ईश्वर हमारे साथ वार्तालाप करना चाहता है, पर हम में से बहुत कम लोग ऐसे हैं जो उसे सुनना चाहते हैं या सुनने की इच्छा करते हैं। ईश्वर निरन्तर एक ऐसी विचारधारा प्रेरित करता है, जो हमारे लिए अतीव कल्याणकारी होती है। उसको यदि सुना और समझा जा सके तथा उसके अनुसार मार्ग निर्धारित किया जा सके तो निःसन्देह जीवनोद्देश्य की

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओर द्रुत गति से अग्रसर हुआ जा सकता है। यह विचारधारा हमारी आत्मा से टकराती है।

हमारा अन्तःकरण एक रेडियो है, जिसकी ओर यदि अभिमुख हुआ जाय, अपनी वृत्तियों को अन्तर्मुख बनाकर आत्मा में प्रस्फुटित होने वाली दिव्य विचार-लहरियों को सुना जाय, तो ईश्वरीय वाणी हमें प्रत्यक्ष में सुनाई पड़ सकती है। इसी को आकाशवाणी कहते हैं। हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं ? हमें क्या उचित है और क्या अनुचित ? इसका प्रत्यक्ष सन्देश ईश्वर की ओर से प्राप्त होता है। अन्तःकरण की पुकार आत्मा का आवेश, ईश्वरीय सन्देश, आकाशवाणी विज्ञान आदि नामों से इसी विचारधारा को पुकारते हैं। अपनी आत्मा के मंत्र को स्वच्छ करके जो इस दिव्य संकेत को सुनने में सफलता प्राप्त कर लेते हैं, वे आत्मदर्शी एवं ईश्वर-परायण कहलाते हैं।

ईश्वर उनके लिए बिल्कुल समीप होता है, वे ईश्वर की बातें सुनते हैं और अपनी उससे कहते हैं। इस दिव्य मिलन के लिए हाड़-माँस के स्थूल नेत्र या कानों का उपयोग करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। आत्मा की समीपता में बैठा हुआ अन्तःकरण अपनी दिव्य इन्द्रियों की सहायता से इस कार्य को आसानी से पूरा कर लेता है। यह अत्यन्त सूक्ष्म ब्रह्म शब्द, विचार तब तक धुँधले रूप में दिखाई पड़ता है, जब तक कषाय-कल्मष आत्मा में बने रहते हैं। जितनी अन्तरिक पवित्रता बढ़ती जाती है, उतने ही वह दिव्य सन्देश बिल्कुल स्पष्ट रूप से सामने आते हैं। आरम्भ में अपने लिंए कर्तव्य का बोध होता है, पाप-पुण्य का संकेत होता है। बुरा कर्म करते समय अन्तर में भय, घृणा, लज्जा, संकोच आदि का होना तथा उत्तम कार्य करते समय आत्मसन्तोष, प्रसन्नता, उत्साह आदि का होना इसी स्थिति का बोधक है।

यह दिव्य सन्देश आगे चलकर भूत, भविष्य, वर्तमान की सभी घटनाओं को प्रकट करता है, किसके लिये क्या मन्तव्य बन रहा है और भविष्य में किसके लिए क्या घटना घटित होने वाली है, यह सब कुछ उससे प्रकट हो जाता है। और भी ऊँची स्थिति पर पहुँचने पर उसके लिए सृष्टि के सब रहस्य खुल जाते हैं। कोई ऐसी बात नहीं होती, जो उससे छिपी हो, परन्तु जैसे ही इतना बड़ा ज्ञान उसे मिलता है, वैसे ही वह उसका उपयोग करने में अत्यन्त सावधान हो जाता है। बाल-बुद्धि के लोगों के हाथों में यह दिव्य ज्ञान पड़ जाय, तो उसे बाजीगरी के खिलवाड़ खड़े करने में ही नष्ट कर दें, पर अधिकारी पुरुष अपनी इस शक्ति का किसी को परिचय नहीं होने देते और उसे भौतिक बखेड़ों से पूर्णतया बचाकर अपनी तथा दूसरों की आत्मोन्नति में लगाते हैं।

शब्द ब्रह्म का दूसरा रूप जो विचार-सन्देश की अपेक्षा कुछ सूक्ष्म है, वह नाद है। प्रकृति के अन्तराल में एक ध्वनि प्रतिक्षण उठती रहती है, जिसकी प्रेरणा से आघातों के द्वारा परमाणुओं में गति उत्पन्न होती है और सृष्टि का समस्त क्रिया-कलाप चलता है। यह प्रारम्भिक शब्द 'ॐ' है। यह ॐ ध्वनि जैसे-जैसे अन्य तत्वों के क्षेत्र में होकर गुजरती है, वैसे ही उसकी ध्वनि में अन्तर आता है। वंशी के छिद्रों में हवा फूँकते हैं, तो उसमें एक ध्वनि उत्पन्न होती है। पर आगे छिद्रों में से जिस छिद्र में जितनी हवा निकाली जाती, उसी के अनुसार भिन्न-भिन्न स्वरों की ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं, इसी प्रकार ॐ ध्वनि भी विभिन्न तत्वों के सम्पर्क में आकर विविध प्रकार की स्वर-लहरियों में परिणित हो जाती है। इन स्वर लहरियों का सुनना ही नादयोग है।

मूर्धन्य मनीषी डा. सम्पूर्णानन्द ने नाद तत्व की व्याख्या करते हुए कहा है—"इस जगत् में पंचीकृत महाभूत काम कर रहे हैं। उनके एक-एक अणु में कम्पन है। उस कम्पन से यह जगत् शब्दायमान हो रहा है। जहाँ कम्पन है, वहाँ शब्द है। सूक्ष्मभूत अपंचीकृत है, पर उनके परमाणुओं में भी कम्पन है और उस कम्पन से एक सूक्ष्म शब्द-राशि उत्पन्न होती है। जो साधक को 'अनाहत शब्द' प्रतीत होता है।" कबीर ने कहा है—"तत्व झंकार ब्रह्मंडमाही।" उस शब्द-राशि का नाम अनाहत नाद है, पीछे के महात्माओं के शब्दों में भी अनहद नाद है। जिस समय तक अभ्यासी इस अनाहत नाद को नहीं सुन पाता, तब तक उसका अभ्यास कच्चा है। पुनः कबीर के शब्दों में—'जोग जगा अनहद धुनि सुनिके।' जब अनाहत सुन पड़ने लगा, तब इसका अर्थ यह है कि योगी का धीरे-धीरे अन्तर्जगत में प्रवेश होने लगा। वह अपने भूले हुए स्वरूप को कुछ-कुछ पहचानने लगा। शक्ति, वैभव और ज्ञान के भण्डार की झलक पाने लगा अर्थात् महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के दर्शन पाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लगा, जो अभ्यासी वहीं उलझकर रह गया—और दुःख का विषय है कि सचमुच बहुत से अभ्यासी इसके आगे नहीं बढ़ते। पर जो तल्लीनता के साथ बढ़ता जाता है, वह क्रमशः ऊपर के लोकों में प्रवेश करता जाता है। अन्त में वह अवस्था आती है, जहाँ वह आकाश की सीमा का उल्लंघन करने का अधिकारी हो जाता है। वही शब्द का अन्त है।

शिव और शक्ति का संयोग और पारस्परिक सम्बन्ध ही "नाद" कहलाता है। इसे अव्यक्त ध्वनि और अचल अक्षर मात्र भी कहा जाता है।

मध्यम वाणी को नाद की संज्ञा दी जाती है। नवनादों की समष्टि को भास्कर राय ने मध्यमा कहा है। यह परा-वाणी की तरह न तो अत्यन्त सूक्ष्म है और न बैखरी की तरह अत्यन्त स्थूल। इसलिए इसे मध्यमा कहते हैं। (वरिवस्या रहस्य १. १७)।

नाद को सदाशिव कहा जाता है। प्रपंचसार विवरण (प्रथम पटल) में कहा है—

विन्दुरीश्वर नादस्तस्याश्चिन्मिश्रं रुपं पुरुषाख्यम। बीजमचिदंशः।

अर्थात् "बिन्दु ईश्वर का नाद है। उससे मिश्रित चित् स्वयं पुरुष नाम वाला अचित् का अंश है।"

एक तंत्रशास्त्री के अनुसार "यह शिव बिन्दु, सम्पूर्ण प्राणियों में नादात्मक शब्द के रूप में विद्यमान रहता है। अपने से अभिन्न विश्व का परामृष्ट करने वाला परावग्रुप विमर्श ही शब्द है। सब भूतों में 'जीवकर्ता' के रूप में स्फुरित होने के कारण उसे नाद कहते हैं।"

अनहद नाद का शुद्ध रूप है—प्रताहत नाद। 'आहत' नाद वे होते हैं, जो किसी प्रेरणा या आघात से उत्पन्न होते हैं। वाणी के आकाश तत्व से टकराने अथवा किन्हीं दो वस्तुओं के टकराने वाले शब्द 'आहत' कहे जाते हैं। बिना किसी आघात के दिव्य प्रकृति के अन्तराल से जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं, उन्हें 'अनाहत' या 'अनहद' कहते हैं। इस शब्द को सुनने की साधना को 'सुख' कहते हैं। अनहद नाद एक बिना नाद की दैवी सन्देश-प्रणाली है। साधक इसे जानकर सब कुछ जान सकता है। इन शब्दों में 'ॐ' ध्वनि आत्म-कल्याण कारक और विभिन्न प्रकार की सिद्धियों की जननी है।

तंत्र का मत है कि प्राणात्मक उच्चार से जो एक अव्यक्त ध्वनि निकलती है, उसी को अनाहत नाद कहा जाता है। इसका कर्ता और बाधक कोई नहीं है। यह नाद हर प्राणी के हृदय में अपने आप ध्वनित होता रहता है—

एको नादात्मको वर्णः सर्ववणीविभागवान्।
सोऽनस्तमितरूपत्वाद् अनातन इवोदितः॥

अर्थात् "एक ही नाद के स्वरूप वाला वर्ण है, जो सब वर्णों के अभिभाग वाला है। वह अन्स्तमित रूप वाला होने से अनाहत की भाँति उदित होता है।"

नाद-प्रवाह का प्रतिपादित करते हुए 'सेतुब ध' में कहा गया है—"नाद सबसे पहले परा-स्वरूप होकर मूलाधार से उठकर मणिपूर और अनाहत चक्रों में आता है। वहाँ प्राण और मन से मिलकर पश्यन्ती और मध्यमा का रूप ग्रहण करता है। फिर गले में आकर वैखरी रूप वर्णों में परिणित हो जाता है। नाद को समस्त वर्णों का कारण रूप कहा गया है। जिस तरह बीज में फल और पुष्प रहते हैं, उसी तरह नाद में सूक्ष्म रूप से वर्ण रहते हैं।

संगीत रत्नाकर-ग्रन्थ में नाद-ब्रह्म की गरिमा पर प्रकाश डालते हुए कुछ ऊहा-पोह किया गया है—

चैतन्यं सर्व भूतानां विवृतं जगदात्मना।
नादोब्रह्म तदानन्दंमन्दिलीयमुपास्महे॥
नाद पासनयादेवा ब्रह्मविष्णु महेश्वराः।
भवन्त्युपासितानूनं यस्मादेते तदात्मकाः॥

नाद-ब्रह्म समस्त प्राणियों में चैतन्य और आनन्दमय है। उसकी उपासना करने से ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों की सम्मिलित उपासना हो जाती है। वे तीनों नाद-ब्रह्म के साथ बँधे हुए हैं।

नकारं प्राण नामानं दकारमनलंविदुः।
ज्ञातः प्राणाभिसंयोगा तेननाहैऽभिधीयते॥

प्राण का नाम 'ना' है और अग्नि को 'द' कहते हैं। अग्नि और प्राण के संयोग से जो ध्वनि उत्पन्न होती है, उसे नाद कहते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संगीत रत्नाकर में नाद को बाईस श्रुतियों में विभक्त किया गया है। ये श्रुतियाँ कान से अनुभव की जाने वाली विशिष्ट शक्तियाँ हैं। इनका प्रभाव मानवीकाया और चेतना पर होता है। इन बाईस शब्द-श्रुतियों के नाम हैं—(१) तीव्रा, (२) कुमत्वति, (३) मन्दा, (४) छन्दोवती, (५) दयावती, (६) रंजनी, (७) रब्तिका, (८) रौही, (९) क्रोधा, (१०) बडिनका, (११) प्रसारिणी, (१२) प्रीति, (१३) यार्जनि, (१४) क्षति, (१५) रक्ता, (१६) संदीपिनी, (१७) अलापिनी, (१८) मदन्ति, (१९) रोहिणी, (२०) रम्या, (२१) उग्रा, (२२) क्षोभिणी।

इन बाईस ध्वनि-शक्तियों को सप्त स्वरों के साथ सम्बद्ध किया गया है। यह विभाजन इस प्रकार है—

—षडज (स) तीव्रा, कुमत्वात, मन्दा, छन्दोवती।

—रिषव (रे) दयावती, रन्जनी, रब्तिका।

—गान्धार (ग) रौही, क्रोधा।

—मध्यम (म) बड़िनका, प्रसारिणी, प्रीति, मार्जनि।

—पंचम (प) क्षिति, रक्ता, संदीपिनी, अलापिनी।

—धैवत (ध) मदन्ति, रोहणी, रम्या।

—निषाद (नि) उग्रा, क्षोभिणी।

इन बाईस शक्तियों की ध्वनि के द्वारा उत्पन्न होने वाले भौतिक एवं चेतनात्मक प्रभाव ही समझना चाहिए। औषधियाँ जिस प्रकार मूल द्रव्यों के रासायनिक सम्मिश्रण से उत्पन्न होने वाले अतिरिक्त प्रभाव के कारण विभिन्न रोगों पर अपना प्रभाव डालती हैं। इसी प्रकार इन बाईस शक्तियों का उनके सम्मिश्रण का वस्तुओं तथा प्राणियों पर प्रभाव पड़ता है। प्राचीन काल में इस रहस्यमय विज्ञान के ज्ञाता नाद-ब्रह्म के उपासक कहलाते थे। वे विभिन्न गीत-वाद्यों के भाव मुद्राओं के और रसानुभूतियों के आधार पर अपने अन्तराल में दबी हुई शक्तियों को जगाते थे और सम्पर्क में आने वाले श्रोताओं की व्यथा वेदनाएं हरते थे। जड़-चेतन प्रकृति को प्रभावित करके वे अवांछनीय परिस्थितियोंको बदल कर अनुकूनल वातावरण उत्पन्न करने में भी चमत्कारी सफलता प्राप्त करते थे। नाद-योग का स्थान किसी भी उच्चकोटि की योग-साधना से कम न था।

नाद-योग में अनाहत स्वर सूर्य ॐकार का आश्रय लिया जाता है, और उसके वाहन अन्य स्वरों को घन्टा, शंख, बंशी, भेरी, मृदंग, गुन्जन, कम्पन, गर्जन आदि के रूप में सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय के माध्यम से सुना जाता है। इस आधार अवलम्बन के सहारे योगीजन भगवद्-वाणी का अवगाहन करते हैं। प्रकृति के अन्तराल में चल रही हलचलों को समझते हुए वर्तमान और भविष्य की स्थिति एवं सम्भावनाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

प्रकार

ब्रह्माण्ड में चल रहे स्वर-प्रवाह की तरह ही पिण्डरूपी सितार के तार भी अपने क्रम से झंकृत होते रहते हैं। मेरु-दण्ड स्पष्टतः वीणा-दण्ड है। सात धातुओं के सात तार इसमें जुड़े हैं। सप्त-विधि अग्नियों का पाचन परिपाक चलते रहने से ही तो प्राण को पोषण मिलता है और जीवन को स्थिर रखा जाता है। यह अग्नियाँ सात धातुओं को पकाती हैं और परिपाक को तेजस् में बदलती हैं। (१) पेशियों का आकुन्चन-प्रकुन्चन, (२) नाड़ियों का रक्ताभिषरण, (३) फ्फुसों का श्वास-प्रश्वास, (४) हृदय की धड़कन, (५) मस्तिष्कीय विद्युत का ऋण धन, आरोह-अवरोह, (६) चित्त का विश्राम जागरण, (७) कोशिकाओं का जन्म-मरण यह सात क्रियाकलाप ही जीवन-विधा के मूलभूत आधार हैं। इन्हीं को सप्त-ऋषि, सप्त-लोक, सप्त-द्वीप, सप्त-सागर, सप्त-मेरु, सप्त-सरित, सप्त-शक्ति के नाम से पुकारते हैं। शब्द सूर्य के यही सप्तअश्व हैं। स्वर-सप्तक इन्हीं की प्रत्यक्ष अनुभूति हैं। ब्रह्माण्ड-व्यापी शब्द-ब्रह्म का गुन्जन काय-पिण्ड के अन्तर्गत भी सुना जा सकता है।

नाद के दो भेद हैं—आहात और अनाहत। स्वच्छन्द तंत्र ग्रन्थ में इन दोनों के अनेकों भेद-उपभेद बताये हैं। आहात और नाद को आठ भागों में विभक्त किया है। घोष, राव, स्वन, शब्द, स्फुट, ध्वनि, झंकार, ध्वंकृति। अनाहत की चर्चा महाशब्द के नाम से की गई है। इन्हें स्थल-कर्णेन्द्रिय नहीं सुन पातीं, वरन् ध्यान धारणा द्वारा अन्तःचेतना में ही इनकी अनुभूति होती है।

विकृत, वादी, संवादी, अनुवादी और विवादी स्वरों का—उनके ग्रह अंश और न्यास-पक्षों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का—तिरेसठ अलंकारों का—उनचास कूट तानों का संगीत रत्नाकर में उल्लेख है। मध्य-काल में राज्याश्रय पाकर संगीत का स्वर पक्ष काफी विकसित हुआ था। इससे पूर्व वह सन्तों और योगियों का प्रिय विषय था। तब उसकी गणना श्रेय-साधना के रूप में की जाती थी।

दीपक-राग, मेघ-राग जैसे स्वर ब्रह्म के नगण्य से स्थूल प्रकृति से सम्बन्धित चमत्कार है। सूक्ष्म प्रकृति को तरंगित और उत्तेजित करने में उसकी धाराएँ बदलने में भी संगीत का प्रभाव स्वल्प दृष्टिगोचर नहीं होगा। अन्य योगों की साधना का अवलम्बन लेकर जिस प्रकार उच्चकोटि की सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं, उसी प्रकार स्वर-योग की साधना से भी उच्च अध्यात्म की भूमिका में प्रवेश करके दिव्य विभूतियों को करतलगत किया जा सकता है। जिस प्रकार ब्रह्माण्ड के अन्तराल में नाद-ब्रह्म का गुंजन संव्याप्त है, उसकी प्रतिध्वनि से पिण्ड की अन्तःस्थिति भी गूँजती रहती है। संगीत की स्वर-साधना इस अव्यक्त गुंजन को व्यक्त बनाती है—मुखर करती है। गान यदि उच्च स्तर का हो तो अन्तरात्मा की भावसत्ता को तरंगित करके ब्रह्मानन्द की आत्मानन्द की रसानुभूति करा सकता है।

प्रसिद्ध है कि तानसेन दीपक-राग गाकर बुझे हुए दीपक जलाते थे और मेघ-राग गाकर छितराये बादलों को घटा बनाकर बरसाते थे। यह विद्या उन्होंने स्वामी हरिदास के चरणों में बैठकर योग-साधना के रूप में सीखी थी। प्राणायाम के उच्च-स्तरीय अभ्यास ने उन्हें शब्द-ब्रह्म का वेत्ता बनाया था। आहात-नाद और अनाहत-नाद की अत्यन्त सूक्ष्म प्रवाह श्रृंखला को नादयोग के आधार पर ही अनुभव में लाया जाता है। स्वर-साधना प्रकारान्तर से नाद-ब्रह्म की वैसी ही आराधना है, जैसी ब्रह्म-विद्या के अन्तर्गत अद्वैत-ब्रह्म चिन्तन की।

अनाहत या अनहद शब्द प्रमुखतः दस माने जाते हैं, जिनकी ध्वनियाँ अलग-अलग हैं—१. संहारक की पायजेब की झंकार जैसी, २. पालक की सागर की लहर-सी, ३. सृजक की मृदंग-सी, ४. सहस्रदल कमल की शंख-सी, ५. चिदानन्दमंडल की मुरली-सी, ६. सच्चिदानंद मंडल कीर बीन-सी ७. अंखड अर्द्धमात्रा की सिंह-गर्जन-सी ८. अगम मंडल की नफीरी-सी, ९. अलखमंडन की बुलबुल-सी।१०. नम्बर की ध्वनि गायब है पता करें।

जैसे अनेक रेडियो-स्टेशनों से एक ही समय में अनेक प्रोग्राम ब्राडकास्ट होते रहते हैं, वैसे ही अनेक प्रकार के अनाहत शब्द भी प्रस्फुटित होते रहते हैं। उनके कारण, उपयोग और रहस्य अनेक प्रकार के हैं। चौंसठ अनाहत अब तक गिने गये हैं, पर उन्हें सुनना हर किसी के लिये सम्भव नहीं। जिनकी आत्मिक शक्ति जितनी ऊँची होगी वे उतने ही सूक्ष्म शब्दों को सुनेंगे। पर उपयुक्त दस शब्द सामान्य आत्म-बल वाले भी आसानी से सुन सकते हैं।

विराट रूप—

नाद के विराट रूप का वर्णन करते हुए स्वामी नयनानन्द सरस्वती ने लिखा है—

"विराट् में जितने मण्डल हैं—उनमें से दस मण्डलों ने शब्द भी जारी किए हैं। इन मण्डलों में प्रत्येक मंडल अपना एक शब्द रखता है। विराट में कुल छत्तीस मंडल हैं और वे सब अपना-अपना एक-एक शब्द रखते हैं। परन्तु केवल दस का शब्द प्रकट स्वर में चालू है और शेष छब्बीस मंडलों के शब्द स्वर रूप से गुप्त आवाज में चालू रहते हैं। उपर्युक्त ३६ मंडल अलग-अलग अपना रंग, रूप, शब्द और अधिकार रखते हैं। उन सबकी अर्द्ध मात्राएँ अलग हैं, उनके बीज यानी शिव भी अलग-अलग हैं। प्रत्येक मंडल से जो सूत्र यहाँ आता है, वह स्वर या शब्द के रूप में ही होता है। इसराज़ नामक बाजे में जो ३६ तार होते हैं, वे ३६ मंजिल के स्मारक हैं और ३६ प्रकार के अनाहत नाद के द्योतक हैं। दस प्रकार का अनहद कान से सुना जाता है। बाकी २६ प्रकार का अनहद—जो स्वर-रूप है—केवल अनुभव के कान से सुनाई पड़ता है। वे लोग यथार्थ नहीं जानते। जो अनहद को केवल दस ही प्रकार का जानते या मानते हैं। कारण यह कि जो दस मण्डल अखंड अर्द्धमात्रा के नीचे अर्द्ध चन्द्राकार घेरे में आबाद हैं—वहीं से प्रकट शब्द हुआ करता है और अनहद नाद के जितने प्रचारक संसार में आये, वे सब उन मंडलों के ही 'शिव' लोग थे। अखण्ड अर्द्धमात्रा से लेकर पूर्ण मात्रा तक जितनी मंजिले हैं—या जितने मंडल हैं, उनके शिव या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण—शरीर इस मायिक भूमिका पर नहीं आये। इसीलिए उनके मंडलों का स्वर लोगों को सुनाई नहीं पड़ा। हाँ, परमरम्य भविष्य महाकाल में वे सब इस भूमि पर अवतार लेगें, उसी समय छत्तीस तार वाला इसराज बजेगा।"

लाभ—

पंच-तत्वों से प्रतिध्वनित हुई ॐकार की स्वर-लहरियों की सुनने की नाद योग-साधना कई दृष्टियों से बड़ी महत्वपूर्ण है। प्रथम तो इस दिव्य संगीत को सुनने में इतना आनन्द आता है, जितना किसी मधुर से मधुर वाद्य या गायन सुनने में नहीं आता। दूसरे, इस नाद-श्रवण से मानसिक तन्तुओं का प्रस्फुटन होता है। साँप जब संगीत सुनता है, तो उसकी नाड़ियों में एक विद्युत-लहर प्रवाहित हो उठी है, मृग का मस्तिष्क मधुर संगीत सुनकर इतना उत्साहित हो जाता है कि उसे तन-वदन का होश नहीं रहता। यूरोप में गायें दुहते समय मधुर बाजे बजाये जाते हैं जिससे उनका स्नायु-समूह उत्तेजित होकर अधिक मात्रा में दूध उत्पन्न करता है। नाद का दिव्य संगीत सुनकर मानव-मस्तिष्क में भी ऐसी स्फुरणा होती है, जिसके कारण अनेक गुप्त मानसिक शक्तियाँ विकसित होती हैं, इस प्रकार भौतिक और आत्मिक दोनों ही दिशाओं में प्रगति होती है।

तीसरा लाभ एकाग्रता है। एक वस्तु पर—नाद पर ध्यान एकाग्र होने से मन की बिखरी हुई शक्तियाँ एकत्रित होती हैं और इस प्रकार मन को वश में करने तथा निश्चित कार्य पर उसे पूरी तरह दान देने की साधना सफल हो जाती है। यह सफलता कितनी शानदार है, इसे प्रत्येक अध्यात्म-मार्ग का जिज्ञासु भली प्रकार जानता है। आतशी काँच द्वारा एक-दो इंच जगह की सूर्य-किरणें एकत्रित कर देने से अग्नि उत्पन्न हो जाती है। मानव प्राणी अपने सुविस्तृत शरीर में बिखरी हुई अनन्त दिव्य-शक्तियों का एकीकरण कर ऐसी महान शक्ति उत्पन्न करता है, जिसके द्वारा इस संसार को हिलाया जा सकता है और अपने लिए आकाश में मार्ग बनाया जा सकता है।

नाद-मण्डल यमलोक से बहुत ऊँचे बताए जाते हैं। इसलिए नाद साधक को यमदूत पकड़ने की सामर्थ्य नहीं रखते।

नाद-साधक की बुद्धि का विकास इतना होता रहता है, जिससे वह सत्य का अन्वेषण करता रह सके और विवेक की अनुभूति प्राप्त कर सके।

नाद-मंडलों का विवरण ऊपर दिया गया है। उनमें से साधक जिस स्तर तक पहुँच जाता है और मृत्यु-समय जिस शब्द को पकड़ने की स्थिति में होता है, उसकी आत्मा उसी मंडल में जा पहुँचती है।

नाद-साधक का इतना आत्मिक उत्थान हो जाता है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि षट्रिपु उस पर कोई प्रभाव नहीं दिखा सकते। आक्रमण करना तो इनका स्वभाव ही है, परन्तु नादसाधक पर यह विजय प्राप्त नहीं कर सकते। वह सदा इनसे अप्रभावित ही रहता है, इसलिए दिनों-दिन उसकी शक्तियों का विकास होता चलता है।नाद-साधना से अन्तिम सीढ़ी तक पहुँचना सम्भव है।

नाद योग और उसकी आर्ष परम्परा

माण्डूक्योपनिषद् में उल्लेख है कि 'ओउम् अर्थात प्रणव ही पूर्ण अविनाशी परमात्मा है जो जड़ और चेतन में—सृष्टि के कण-कण में संव्याप्त है। सर्वत्र वह नाद रूप में गुंजायमान है। योगशास्त्र का लक्ष्य इसी ब्रह्माण्डव्यापी मूल सत्ता से जोड़ना है। नादयोग योगशास्त्रों की अनेकानेक साधना विधियों में से सर्व प्रमुख धारा है। कुण्डलिनी साधना के प्राण प्रयोग में इसी का आश्रय लिया जाता है। कुण्डलिनी साधना को प्रणव विद्या भी कहा गया है। उसके जागरण में जहाँ अन्यान्य विधि-विधानों का प्रयोग होता है, वहाँ उस सन्दर्भ में प्रणव तत्व को प्रायः प्रमुखता ही दी जाती है।

प्रकृतिः निश्चला परावाग्रूपिणी परप्रणवात्मिका कुण्डलिनीशक्तिः।

—प्रपंच सारतत्

कुण्डलिनी जागरण प्रयोग गायत्री महाविद्या के अन्तर्गत ही आता है। पंचमुखी गायत्री में पंचकोशों की साधना पंचाग्नि विद्या कही जाती है, यही गायत्री के पाँच मुख हैं। गायत्री की प्राण साधना का नाम सावित्री विद्या है, सावित्री ही कुण्डलिनी है। गायत्री मंत्र में,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

४.१० शब्द ब्रह्म —नाद ब्रह्म

गायत्री साधना में प्राण तत्व का अविच्छिन्न समावेश है। कहा गया है—

ॐकार पितृरूपेण गायत्री मातरं तथा।
पितरौ यो न जानाति ब्राह्मणः सोऽन्यवीर्यजः॥

योग संध्या

ओंकार रूपी पिता और गायत्री रूपी माता को जो ब्राह्मण नहीं जानता है, वह वर्णशंकर है।

गायत्री ही क्या किसी भी स्तुति, वेदमंत्र का शक्ति जागरण ओ३म्कार का समावेश किए बिना सम्भव नहीं होता। हर वेदमंत्र के उच्चारण में पहले ओ३म्कार संयुक्त करना पड़ता है, तभी वह जागृत होता है अन्यथा वह निर्जीव ही बना रहेगा।

न मामनीरयित्वा ब्राह्मणा ब्रह्म वदेयुः।
यदि वदेयुः अब्रह्म तत् स्यात्॥

—गोपथ पूर्व २३

ओंकार ने कहा कि मुझको उच्चारण किए बिना ब्राह्मण वेद मंत्र न बोलें, यदि बोलें तो वह वेद न रहे।

साधना मार्ग पर जिस लक्ष्यवेध के लिए चला जाता है उसमें ओ३म्कार को धनुष की तरह और आत्मा को बाण की तरह प्रयोग किया जाता है। आत्मा का अग्रगमन प्रणव धनुष की सहायता से ही होता है। कहा गया है—

प्रणवो धनुः शरोह्यात्मा ब्रह्मतल्लक्ष्यमुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्॥

ओ३म्कार रूपी धनुष में आत्मा का बाण चढ़ाकर स्फूर्तिपूर्वक ब्रह्मलक्ष्य में वेध देना चाहिए।

कुण्डलिनी प्रणवरूपतिणी॥

—शक्ति तंत्र

महाकुण्डलिनी प्रोक्ता परब्रह्मस्वरूपिणी।
शब्दब्रह्ममयी देवी एकानेकाक्षराऽकृतिः॥

—योग कुण्डलिनी उपनिषद्

अर्थात्—कुण्डलिनी प्रणव रूप है। महाकुण्डलिनी को परब्रह्म स्वरूपिणी कहा गया है। यह शब्द ब्रह्ममय है। एक ओ३म् से अनेक अक्षरों की आकृतियाँ उत्पन्न हुई हैं।

कुण्डलिनी का आकार सर्पिणी जैसा बताया गया है। वह कुंडली मारे सोती हुई पड़ी है और पूँछ को अपने मुँह में दबाये हुए है। इस आकृति को घसीटकर बनाने से ओ३म् शब्द बन जाता है। अस्तु, प्राण और उच्चारण सहित समर्थ प्रणव को कुण्डलिनी कहा गया है और उसी सजीव ओ३म् के उच्चारण का पूरा फल बताया गया है, जिसमें कुण्डलिनी जागृति शक्ति का समन्वय हुआ है।

तंत्र में कुण्डलिनी का विस्तृत वर्णन है। शारदा तिलक (१/५१-५७) में कुण्डलिनी-शक्ति को चैतन्यरूप, सर्वव्यापी, विद्युत सरीखी, सब तत्वों और देवों में व्याप्त और शब्द-ब्रह्म कहा है। (५८-१०७) में कहा है कि वह किस तरह मंत्रों, यंत्रों और हर वस्तु में है। १०८-१०९ में कहा है कि कुण्डलिनी से, जो कि शब्दब्रह्म है और सर्वव्यापी है, स्त्री, शक्ति, ध्वनि, नाद, निरोधिका, आदधेन्दु, बिन्दु की उत्पत्ति होती है। बिन्दु से परावाणी, फिर पश्यन्ति, मध्यमा और वैखरी वाणी। २६ वें अध्याय में परा से पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी तक पहुँचने के साधन भी दिए गए हैं।

कुण्डलिनी जागरण और नादयोग का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध बताते हुए कहा गया है—

कला कुण्डलिनी चैव नाद शक्ति समन्विता।

—षट्चक्र निरूपण

कला कुण्डलिनी नाद शक्ति से संयुकत है।(२)

कुण्डल्येव भवेच्छक्तिस्तां तु संचालयेत् वुधः।
स्वश्थनादाभ्रु वोर्मध्यं, शक्तिचालन मुच्यते।

—योग कुण्डलयुपनिषद्

बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिए कि वह उस सोयी हुई अपनी आत्म-शक्ति को चैतन्य करे, गतिशील करे। मूलाधार से स्फूर्ति तरंग उठकर भूमध्य में दिव्य नाद की अनुभूति (श्रवण) कराने लगे, तभी समझना चाहिए कि कुण्डलिनी शक्ति जागृत-संचालित हो गई है।

कुण्डलिनी साधना में लययोग का महत्वपूर्ण स्थान है। लय का अर्थ-विलीन है। आत्मसत्ता का परमात्मा सत्ता में विलीनीकरण ही परम लक्ष्य है। इसे प्राप्त करने पर आत्मा को—परमात्मा स्तर का बन

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकना सम्भव हो जाता है। 'लय' के लिए नादयोग की साधना करनी पड़ती है। इसी आधार पर कुण्डलिनी जागरण का उद्देश्य भी पूरा होता है।

श्री आदिनाथेन सपाद कोटिलय
प्रकाराः कथिता जयन्ति।
नादानुसंधान कमेकमेंव मन्माहे
मुख्यतं लयानाम्॥

—हठयोग प्रदीपिका

श्री आदिनाथ के बतलाये हुए सवा करोड़ 'लय' के प्रकार सर्वोत्कर्ष से विद्यमान हैं, हम उन सब लयों में से नादानुसन्धान को ही मुख्य मानते हैं।

लय नादे यता चित्तं रमते योगिनो भृशम्।
विस्मृत्य सकले वाह्यं नादेन सह शाम्यति॥

—शिव सं.

अर्थ—जब योगी का चित्त उस नाद में निरन्तर रमण करेगा तब सब प्रकार के विषय से स्मरण रहित होकर चित्त समाधि में 'लय' हो जायेगा।

एतदभ्यासयोगेन जित्वा सम्यक गुणान् बहून।
सर्वारम्भपरित्यागी चिदाकाशे विलीयते॥

—शिव सं.

अर्थ—इस प्रकार अभ्यास द्वारा सर्व गुणों को जीत कर और सब कार्यों के आरम्भ को त्याग कर योगी का चित्त आनन्दपूर्वक चैतन्य स्वरूप हृदयाकाश में 'लय' हो जाता है।

इन्द्रियाणां मनोनाथो मनोनाथस्तु मारुतः।
मारुतस्य लयो नाथः सलयो नादमाश्रितः॥

—हठयोग प्रदीपिका

अर्थ—मन ही इन्द्रियों का स्वामी है, क्योंकि मन का संयोग न होने से कोई भी इन्द्रिय काम करने में समर्थ नहीं रहती। फिर मन, प्राण, वायु के आधीन है, अतः वायु वशीभूत होते ही मन का 'लय' हो जाता है। मन लय होकर नाद में अवस्थान करता है।

नासनं सिद्धसदृशं न कुम्भसदृशं बलम्।
न खेचरीसमा मुद्रा न नादसदृशो लयः॥

—शिव संहिता ५।२३

सिद्धासन के समान कोई आसन नहीं, कुम्भक के समान कोई बल नहीं, खेचरी के समान मुद्रा नहीं और नाद के समान लय नहीं।

भगवान् शंकराचार्य ने भी "योग तारावली" में नाद-तत्व की प्रसंशा की है—

"सदा शिवोक्तानि सपादलक्ष-
लयावधामानि वसन्ति लोके।
नादानुसन्धान समाधिमेक
मन्यामहे मान्यरमं लयानाम्॥
नादानुसन्धान नमोऽस्तु तुभ्यं
लांमन्हे तत्वपदं लयानाम।
भवत्प्रसादात् पवनेन साधं
विलीयते विष्णुपदे मनो में॥

भगवान् शिव ने मन के लय के लिए सवा लक्ष साधनों का निर्देश किया है, परन्तु उन सब में नादानुसन्धान सुलभ और श्रेष्ठ है। हे नादानुसन्धान ! आपको नमस्कार करता हूँ। आप परम पद में स्थित लाभ कराते हैं। आपकी कृपा से मेरे प्राण और मन दोनों विष्णु के परम पद में लीन हो जायेंगे।

न नादेन विना ज्ञान न नादेन विना शिवः।
नादरूपं पर ज्योतिर्नाद रूपी परो हरिः॥

—योग तरंगिनी

नाद के बिना ज्ञान नहीं होता—नाद के बिना शिव नहीं मिलते, नाद के बिना ज्योति का दर्शन सम्भव नहीं, नाद ही परब्रह्म है।

योग साधनों में नादयोग की गरिमा अत्यधिक है। उसकी विधि सरलता एवं श्रेष्ठ सत्परिणाम उत्पन्न करने वाली प्रतिक्रिया को देखते हुए नादयोग को जो प्रमुखता मिली है व उचित ही है—

यत्किंचिन्नादरूपेण श्रूयते शक्तिरेव सा।
यस्तत्त्वान्तो निराकारः स एव परमेश्वरः॥

—हठयोग प्र.

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

४.१२ शब्द ब्रह्म —नाद ब्रह्म

जो कुछ नाद रूप से सुना जाता है वह शक्ति ही है और जिसमें तत्वों का लय होता है वह निराकार परमेश्वर है ।

अशक्य तत्वबोधानां मूढ़ानामपि संमतम् ।

प्रोक्त गोरक्षनाथेन नादोपासन मुच्यते ॥

—हठयोग प्र.

अर्थ—जिनको तत्वज्ञान नहीं हो सकता ऐसे मूर्ख लोगों के लिए भी उपयोगी, गोरक्षनाथ जी द्वारा वर्णित नाद की उपासना कही जा रही है। यह नादोपासना शास्त्रों के जानने वाले एवं मूढ़ दोनों लोगों के लिए उपयोगी है ।

"सर्वचिन्तां परित्यज्य सावधानेन चेतसा ।

नाद एवानुसन्धेयो योगसाम्राज्यमिच्छता ॥"

—वाराहोपनिषद

सब चिन्ताएँ छोड़कर—मन को स्थिर करना नाद योग की साधना में लगना चाहिए। यह योग साधनाओं का सम्राट् है ।

हठयोग प्रदीपिका में नादयोग का महत्व एवं प्रतिफल बताते हुए उसे साधनाओं में अत्यन्त ऊँचा स्थान दिया है। निम्न श्लोक उसी के पृष्ठों से लिए गये हैं—

नादश्रवणतः क्षिप्रमन्तरंग भुजंगमः ।

सिस्मृत्य सर्वमेकाग्रः कुमचिन्न हि धावति ॥

यह मन रूपी सर्प नाद को श्रवण करने से शीघ्र ही सम्पूर्ण संसार को भूलकर एकाग्र होकर फिर विषयों की तरफ नहीं जाता है ।

बद्धं विमुक्त चान्चल्यं नादगन्धक जारणात् ।

मनः पारदभाप्नोति निरालम्बाख्यखेऽटनम् ॥

नाद रूपी गन्धक द्वारा भस्म किये जाने से बँधा हुआ और चंचलता से विमुक्त हुआ मन रूपी पारा निराश्रय होने पर ब्रह्मरूपी आकाश में भ्रमण करता है ।

सदा नादानुसन्धानात्क्षीयन्ते पापसंचयाः ।

निरंजने विलीयते निश्चितं चित्तमारुतौ ॥

अर्थ—सदा नाद के अनुसन्धान करने से संचित पापों के समूह भी नष्ट हो जाते हैं और उसके अनन्तर निर्गुण एवं चैतन्य ब्रह्म में मन व प्राण दोनों निश्चय ही विलीन हो जाते हैं ।

नादोऽन्तरङ्गसारङ्गबन्धने वागुरुयते ।

अन्तरङ्गकुरङ्गस्य वधे व्याधायतेऽपि च ॥

जैसे व्याध मृग बन्धन के जाल में मृग को हतता है इसी प्रकार अपने में आसक्त हुए मन को नाद भी हतता है अर्थात् मन के जो संकल्प विकल्पादिक धर्म हैं वे नष्ट हो जाते हैं ।

काष्ठे प्रवर्तियो वह्निः काष्ठेन सह शाम्यति ।

नादे प्रवर्तितं चित्तं नादेन सं लीयते ॥

काष्ठ में प्रवेश हुई अग्नि काठ को जलाकर ही शान्त होती है। इसी प्रकार नाद में प्रवृत्त हुआ अन्तःकरण नाद में ही विलीन हो जाता है ।

अभ्यस्यमानो नादोऽयं बाह्यमातृणुते ध्वनिम् ।

पक्षाद्विपक्षेपमखिलं जित्वा योगी सुखी भवेत् ॥

अर्थ—अभ्यास किया गया यह नाद बाहर की ध्वनि को भी ढक देता है, इस प्रकार एक पक्ष में ही योगी चित्त की समस्त चंचलता को जीत कर सुखी हो जाता है ।

चित्तानन्द तदा जित्वा सहजानन्द सम्भवः ।

दोष दुःख जरा व्याधि क्षुधा निद्रा विवर्जितः ॥

अर्थ—तब नाद के विषयीभूत अन्तःकरण की वृत्ति से प्राप्त सुख को जीतकर स्वाभाविक आत्मा के सुख का आविर्भाव होता है। वात, पित्त, कफ, रूप दोष, दुःख, वृद्धावस्था, ज्वरादिक व्याधि, भूख, प्यास, निद्रा इन सबसे रहित वह आत्म-सुखी हो जाता है ।

दिव्यदेहश्च तेजस्वी दिव्यगंधस्त्व रोगवान् ।

सम्पूर्णहृदयः शून्य आरम्भो योगवान्भवेत् ॥

हृदयाकाश में नाद के आरम्भ होने पर प्राण वायु से पूर्ण हृदय वाला योगी रूप, लावण्य आदिकों से युक्त दिव्य देह वाला हो जाता है। वह प्रतापी हो जाता है और उसके शरीर से दिव्य गन्ध प्रकट हुआ करती है तथा वह योगी रोगों से भी रहित हो जाता है ।

अन्तरङ्गस्य यमिनो वाजिनः परिधायते ।

नादोपास्तिरतो नित्यमवधार्या हि योगिना ॥

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थ—नादयोगी के मन रूपी घोड़े के लिए अश्वशाला के दर्वाजा के अर्गला के समान है। इसलिए योगी को प्रतिदिन नाद की उपासना करनी चाहिए।

बुद्धं तु नादबन्धेन मनः संत्यक्त चापलम्।
प्रयाति सुतरां स्थैर्यं छिन्नपक्षः खगोयथा॥

अर्थ—नाद रूपी बन्धन से बँधा हुआ जिसने चंचलता का त्याग कर दिया है, ऐसा मन जिस पक्षी के पंख कट गये हों उस पक्षी के समान अत्यन्त स्थिर होकर रहता है।

इन्द्रियाणां मनोनाथो मनोनास्थतु मारुतः।
मारुतस्य लयोनाथः स लयोनादमाश्रितः॥

इन्द्रियों का स्वामी मन। मन का स्वामी प्राण। प्राण का स्वामी लय और यह लय-नाद के आश्रित है।

अथ नादानुसंधानं प्रवक्ष्यामि यथाक्रमम्।
यस्यानुष्ठानतो योगी परं ब्रह्माधिगच्छति॥

—योग रसायनम्

अब नादानुसन्धान का यथाक्रम वर्णन करते हैं, जिसके अनुष्ठान से योगी परं ब्रह्म को प्राप्त होता है।

नादश्रवणतो योऽसावानंदो योगिनो भवेत्।
शक्यते स गिरा वक्तुं मया नात्र कथंचन॥

—योग रसायनम्

नाद-श्रवण से यह जो आनन्द योगी को होता है, उसका वाणी से वर्णन सम्भव नहीं।

अथवा नादयोगेन शरीरे कृशतां गते।
सर्वांगेभ्यो भवेत्तूर्णं प्राणस्याकर्षणं ध्रुवम्।
तं ध्यानेनोर्ध्वमानीय ब्रह्मरंधे प्रवेशयेत्।
तत्रैव स्थिरतां नीत्वा समाधिस्थो भवेन्नरः॥

—योग रसायनम्

अथवा नादयोग से शरीर कृश हो जाता है और प्राणाकर्षण सहज होता है। ध्यान से इस प्राण को ऊपर ले जाकर ब्रह्मरन्ध में प्रविष्ट कर वहीं स्थिर करना चाहिए। इससे व्यक्ति समाधिस्थ हो जाता है।

उक्तात्ममानतः पूर्व पश्चात् च विविधः कपे।
अभिव्यजन्त एतस्य नादास्तत्सिद्धि सूचकाः॥
अनाहतमनुच्चार्यं शब्दब्रह्म परं शिवम्।
ब्रह्मरध्रंगतेवायौ नादश्चोत्पद्येतेऽनघ।
शंख ध्वनि निभश्चादौ मध्ये मेघध्वनिर्यथा॥
पवने व्योम सम्प्राप्ते ध्वनिरुत्पद्यते महान्।
घण्टादीनां प्रवाद्यानां ततः सिद्धिरदूरतः॥

—महायोग विज्ञान

जब अन्तर में ज्योति स्वरूप आत्मा का प्रकाश जागता है तब साधक को कई प्रकार के नाद सुनाई पड़ते हैं। इसमें से एक व्यक्त होते हैं, दूसरे अव्यक्त। जिन्हें किसी बाहर के शब्द से उपमा न दी जा सके, उन्हें अव्यक्त कहते हैं यह अन्तर में सुनाई पड़ते हैं और उनकी अनुभूति मात्र होती है। जो घण्टा आदि की तरह कर्णेन्द्रियों को अनाहत अथवा शब्दब्रह्म भी कहा जाता है।

नादयोग के अभ्यास से मनोनिग्रह जैसा कठिन कार्य सरल हो जाता है। मन के एकाग्र होने पर योगाभ्यास की सफलता निर्भर है। चित्त की चंचलता ही साधना की प्रगति में प्रमुख बाधा है। नादानुसन्धान से यह बाधा सरलतापूर्वक हल हो जाती है।

नाद मेवानुसन्दध्यान्नादे चित्तं विलीयते।
नादासक्तं सदा चित्तं विषय नहि कांक्षति॥

—नाद बिन्दोपनिषद

नादानुसन्धान से चित्त शान्त हो जाता है। उस साधना में लगा हुआ चित्त विषयों की आकांक्षा नहीं करता।

मकरन्दं पिबन्भृंगो गन्धान् नापेक्षते यथा।
नादासक्तं सदा चित्तं विषयं न हि काङ्क्षाति।
बद्धः सुनादगन्धेन सद्यः संत्यक्त चापलम्।
नादग्रहणतश्चित्तमन्तरंग भुजगम्॥
विस्मृत्य विश्व मेकाग्रं कुत्रचिन्न हि धावति।
मनोन्मत्तगजेन्द्रस्य विषयोद्यानचारिणः॥
नियामनसमर्थोऽयं निनादो निशिताङ्कुशः।

—नाद विन्दोपनिषद्

भ्रमर जिस तरह फूलों का रस तो लेता है, परन्तु पुष्पों की गन्ध की अपेक्षा नहीं करता। उसी तरह नाद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से रुचि लेने वाला चित्त विषय-वासना के दुर्गन्ध की इच्छा नहीं रखता। जिस तरह सर्प नाद को सुनकर मस्त हो जाता है, उसी प्रकार चित्त नाद में आसक्त हो जाने पर सभी प्रकार की चपलताएँ भूल जाता है। संसार की चपलताएँ भूलने पर उसमें एकाग्रता आने लगी है और वह इधर-उधर विषयों की ओर नहीं भागता। विषय-वासनाओं के बन में घूमने वाला मन रूपी हाथी नाद के अभ्यास रूपी तेज अंकुश से ही काबू में आ पाता है। यदि हम मन को हिरन और तरंग की संज्ञा दें तो यद नाद उस हिरन को फाँसने के लिए जाल का और तरंग को रोकने के लिए तट का काम देता है।

नादयोग का अभ्यास कैसे करना चाहिए ? इसका उत्तर देते हुए—शिव संहिता और हठयोग प्रदीपिका में दोनों कान, दोनों नेत्र एवं दोनों नासिका छिद्र बन्द करने की विधि बताई गई है। ऐसी दशा में साँस मुख से ही लिया जा सकता है। कहा गया है—

अंगुष्ठाभ्यामुभे श्रोत्रे तर्जनीभ्यां द्विलोचने।
नासारन्ध्रे च मध्याभ्याम नामाभ्यां मुखं दृढ़म्॥
निरुध्य मारुतं योगी यदैव कुरुते भृशम्।
तदा तत्क्षणमात्मानं ज्योति रूपं स पश्यति॥

—शिव सं.

अर्थ—दोनों हस्त अँगूठों से दोनों कर्ण बन्द करें और दोनों तर्जनी से, दोनों नेत्रों को दोनों मध्यमा अँगुलियों से, दोनों नासारन्ध्र को बन्द करें और दोनों अनामिका अँगुली और कनिष्ठा से मुख को बन्द करें। यदि इस प्रकार योगी वायु को निरोध करके इसका बारम्बार अभ्यास करे तो आत्मा ज्योति स्वरूप का हृदयाकाश में भान होता है।

कर्णेपिधाय हस्ताभ्यां यं श्रृणोति ध्वनिं मुनिः।
तत्र चित्तं स्थिरीकुर्याद्यावत्स्थिर पदं व्रजेत्॥

—हठयोग

अर्थ—मननशील योगी दोनों हाथों से दोनों कानों को बन्द कर जिस ध्वनि को सुनता है, जब तक स्थिर पद को प्राप्त न हो जाय, तब तक उस ध्वनि में चित्त को स्थिर करे।

श्रवणपुटनयन युगल घ्राण मुखानां निरोधनं कार्यम्।
शुद्ध सुषुम्नासरणौ स्फुटममलः श्रूयते नादः॥

—हठयोग

अर्थ—दोनों कान, आँख, नासिका और मुख इन सबका निरोध करना चाहिए, तब शुद्ध सुषुम्ना नाड़ी के मार्ग में शुद्ध नाद प्रगट रूप से सुनाई पड़ने लगता है।

'योग रसायन' में सभी छेद बन्द करने की आवश्यकता नहीं समझी गई। मात्र कान के छेद बन्द करने को ही कहा गया है। साथ ही यह भी कहा गया है कि यदि साधक चाहे तो छेदों को बीच-बीच में खोलता भी रह सकता है लगातार बन्द रखने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार एक दक्षिण कान से ही नाद श्रवण का भी परामर्श दिया गया है।

पद्मासनं समास्थाय स्वस्तिकं वा यथासुखम्।
कर्णरंध्रयुगं पश्चादंगलिभ्यां निरोधयेत्॥

—योग रसायनम्

पद्मासन या स्वस्तिक आसन में सुखपूर्वक बैठकर दोनों कर्णरन्धों को अँगुलियों से बन्द कर ले।

कर्णयोस्त्वेकतानेन रोधनं नैव कारयत्।
त्यवक्वात्यक्त्वांगुर्लिमध्येनादाभ्यासं समाचरेत्।

—योग रसायनम्

दोनों कानों को लगातार बन्द नहीं किये रहना चाहिए। अँगुली बीच-बीच में छोड़ते रहकर नाद का अभ्यास करना चाहिए।

निमील्य नयने चित्तं कृत्वैकाग्रमनन्यधीः।
श्रृणुभाद्दक्षिणे कर्णे नादमंतर्गत् शुभम्॥

—योग रसायनम्

नयन निमीलित कर चित्त को एकाग्र कर अनन्य बुद्धि से दाहिने कान में शुभ नाद सुनना चाहिए।

आहत ध्वनियाँ वे हैं जो किन्हीं पदार्थों या प्राणियों की हलचलों के कारण उत्पन्न होती है। अनाहत वे हैं जो प्रकृति प्रवाह एवं सूक्ष्म जगत से सम्बन्धित है। इन्हें सुनने से परा और अपरा प्रकृति के संकेत सन्देशों को सुनने, समझने की क्षमता उत्पन्न होती है। नाद को ब्रह्मवाणी, आकाश वाणी भी कहा गया है इनको पकड़ने, पहचानने का अभ्यास होने पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिव्य लोकों से सम्पर्क साधना एवं आदान-प्रदान करना सम्भव हो जाता है। वे ध्वनियाँ किस प्रकार की होती हैं। इसका उल्लेख इस प्रकर है—

ब्रह्मरन्ध्रं चते वायोद नादश्चोत्पद्यतेऽनघ।
शङ्खध्वनिनिभश्चादौ मध्ये मेघध्वनिर्यथा॥
शिरोमध्यगते वायौ गिरिप्रस्रवण यथा।
पश्चात्प्रीतो महाप्राज्ञः साक्षादात्मीन्मुखो भवेत्॥

—जाबाल दर्शनोपनिषद्

जब ब्रह्मरन्ध में प्राणवायु का प्रवेश हो जाता है, तब प्रथम शंख ध्वनि के समान नाद सुनाई पड़ता है। फिर मेघ ध्वनि की तरह मन्द्र, गम्भीर नाद सुन पड़ता है। जब यह प्राणवायु शिर के मध्य में स्थित होती है, तब ऐसा लगता है मानो पर्वत से कोई झरना कल-कल नाद करता स्रवित हो रहा है। तदुपरान्त अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव होता है और साधक सूक्ष्म आत्म-तत्व की ओर उन्मुख हो जाता है।

शिव पुराण में ॐकार के अतिरिक्त नौ ध्वनियाँ इस प्रकार गिनाई गई हैं।

घोषं, कास्यं तथा श्रंग, घंटां वीणा—

दिवंशजम्।

दुन्दुभिं, शंख शब्दं तु नवम् मेघगर्जितम्॥

—शिव पुराण

अर्थात्—(१) समुद्र गर्जन जैसा घोष (२) काँसे की थाली पर चोट लगाने जैसी झंझनाहट (३) श्रृंग अर्थात् तुरही बजने जैसी आवाज (४) घन्टे बजने जैसी (५) वीणा बजने जैसी (६) वंशज वंशी जैसी (७) दुन्दुभि नगाड़े बजने के समान (८) शंख ध्वनि (९) मेघ गर्जन जैसी नौ ध्वनियाँ नादयोग में सुनी जाती हैं।

कहीं-कहीं पायल बजने, बुलबुल की चह-चहाहट जैसी मधुर ध्वनियों का भी वर्णन है यह वीणावादन से मिलती-जुलती है। सिंह गर्जन का उल्लेख मेघ गर्जन जैसा है।

मत्तभृंग वीणा सदृशः प्रथमो ध्वनिः।
एवमभ्यासतः पश्चात् संचार ध्वान्तनाशनम्॥
घण्टा नादसमः पश्चात् ध्वनिर्मेघरवोपमः।
ध्वनौ तस्मिन्मनो दत्वा यदा तिष्ठति निर्भरः।
तदा संयाते तस्य लयस्य मम बल्लभे॥

—शिव सं.

अर्थ—योगाभ्यास द्वारा प्रथम मत्त भ्रमर की नाई शब्दवेणु और वाणी के समान शब्द उत्पन्न होगा। इस प्रकार योगाभ्यास संसारतम नाशक से फिर घन्टा, नाद समान शब्द होगा, फिर मेघ गर्जना के समान ध्वनि होगी। इस ध्वनि में यदि मन निश्चल स्थित हो जाय, तब मोक्ष का दाता लय उत्पन्न होगा।

घंटानादसमः पूर्वं ततः शंखसमो ध्वनिः
वीणारवसमः पश्चात् तालनादोपमस्ततः॥

—योग रसायनम्

पहले घन्टा नाद-सी ध्वनि आती है, फिर शंख के समान, फिर वीणा ध्वनि के समान और तब तालमय ध्वनि सुनाई पड़ती है।

वंशीशब्दनिभश्चाथो मृदंगसदृशो ध्वनिः।
भेरीरवसमः पश्चान्मेघगर्जनसंनिभः॥

—योग रसायनम्

फिर वंशी ध्वनि सी, तदुपरान्तर मृदंग सदृश इसके आगे भेरी रव जैसा और तत्पश्चात् मेघ गर्जन के समान नाद सुनाई पड़ता है।

श्रूयते प्रथमाभ्यासे ध्वनिर्नादस्य मिश्रितः।
ततोभ्यासे स्थिरी भूते श्रूयते तु पृथक्-पृथक्।

—योग रसायनम् २५०

प्रथमतः अभ्यास के समय ध्वनि-नाद की मिश्रित रूप में ही सुनना चाहिए। जब अभ्यास दृढ़ हो जाय, तो पृथक्-पृथक् सुनना चाहिए।

नाद श्रवण की पूर्णता अनाहत ध्वनि की अनुभूति में मानी गई है। साधक अन्य दिव्य धवनियों को सुनते-सुनते अन्त में अनाहत लक्ष्य तक जा पहुँचता है।

प्राणे मूर्धनि संप्राप्ते नादध्वनिरनुत्तमः।
श्रूयते योगिनो वक्रे सस्त्रवेदमृतं तथा॥

—योग रसायनम्

प्राण के मस्तक में पहुँचने पर योगी को सुन्दर अनाहत नाद की ध्वनि सुनाई पड़ती है।

ध्यान बिन्दुपनिषद में नादयोग के सम्बन्ध में लिखा है—

अनाहतं तू यच्छब्दं तस्यू शब्दस्य यत्परम्।
तत्परं विन्यते यस्तु स योगी छिन्नसंशयः॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनाहत शब्द—उससे परे और उससे परे जो है उसे प्राप्त करके योगी समस्त संशयों से मुक्त हो जाता है।

स्वे महिम्नि स्वयं स्थित्वा स्वयमेव प्रकाशते।

"नाद और बिन्दु का साधक अपनी महिमा में स्वयं स्थित होकर स्वयं प्रकाशता है।"

नादब्रह्म–'ओउम्' शब्द की प्रचण्ड शक्ति

प्राचीन काल के ऋषि, मुनियों, मनोवैज्ञानिकों और तत्ववेत्ताओं को स्वर विज्ञान का बड़ा अनुभव और अध्ययन था। उन्होंने एक-एक स्वर की बड़ी खोजबीन की थी। इन अनुसन्धानों में नाद ब्रह्म अर्थात् "ओऽम्" शब्द प्रमुख है इस शब्द के बड़े आश्यात्मिक अर्थ है। प्रत्येक हिन्दू किसी न किसी रूप में इस शब्द को दैनिक पूजा आराधना या दैनिक जीवन में प्रयोग में लाता है।

"ओम" शक्ति, सामर्थ्य और ईश्वरीय संप्रदाओं का रूप है। एक बार असुरों ने इन्द्रपुरी को घेर लिया। इन्द्र को भय हुआ कि यों तो मेरी इन्द्रपुरी ही छिन जायेगी। किसी बाह्य दैवी शक्ति से सहायता लेनी चाहिए। अपनी सीमिम शक्तियों से तो इन्द्रपुरी की रक्षा होती नहीं दीखती। असुर कैसे मारे जाँये ? उन्हें "ओम" मिला।

इन्द्र ने कहा "हे शक्तिरूप ! हम आपको प्रमुख बनाकर असुरों को जीतना चाहते हैं। आप ईश्वर की शक्ति और समर्थ्य के रूप हैं। आपकी सहायता से हम देवताओं में नई शक्ति, स्फूर्ति आयेगी। आपके साथ रहने से हम में साहस का प्रादुर्भाव होगा। इस संकट के समय में हमारे नेत्र आप पर लगे हैं। हे देवशक्ति सम्पन्न महात्मन् ! हमारी रक्षा कीजिए।"

"ओम्" सोचते रहे। यह निश्चय था कि उनकी अध्यक्षता में देव असुरों को जीत सकते थे। वे सब ऋद्धि सिद्धियों के पुंज थे। देवता उनसे अनुपम विनय कर रहे थे।

ओम् एक शर्त पर सहायता देने को तैयार हो गए।

"ओम्" ने कहा—"मैं इस शर्त पर आपकी सहायता करने को तैयार हूँ "न मामनीरयित्वा ब्राह्मणा ब्रह्म वदेयुः यदि वेदयुः अब्रह्म तत् स्यादिति (गोपथब्रा. १।१।२३) अर्थात् मुझ 'ओम्' को पहिले पढ़े बिना ब्राह्मण वेदोच्चारण न करें। मेरे नाम का उच्चारण सब से पहले किया जाया करे। यदि कोई ब्राह्मण मेरा नाम लिये बिना वेदपाठ कर दें, तो वह देवताओं द्वारा स्वीकार न किया जाये।"

"ओम्" के बनि असुर जीते नहीं जा सकते थे अतः देवताओं ने यह शर्त मान ली।

"ओम्" ने देवताओं का सैन्य संचालन किया। पूरी देवसेना के सामने वह बोले, "देवताओ ! मेरा नाम लेकर आगे बढिये। आप सिन्धु की थाह नाम लेंगे। तिमिर दूर होगा और अपनी दिव्य शक्तियों का ज्ञान होगा। शिथिल पदों में अटल विश्वास की शक्ति आयेगी। आज आप अपनी शक्ति को पहचान लीजिए। मेरा नाम उच्चारण कर बढ़िये, विजय आपकी है।"

देवता "ओम्" "ओम्" शब्द का उच्चारण कर युद्ध करते रहे। आश्चर्य ! उस शब्द की शक्ति से उनमें नया उत्साह और नव प्रेरणा उत्पन्न हुई। नई ताकत का संचार हुआ। जैसे-जैसे वे "ओम्" का उच्चारण करते थे, वैसे-वैसे थके हारे सैनिकों में खोई हुई ताकत फिर आ जाती थी। उनकी ताकत जैसे अक्षय हो गई थी। इस शब्द का चमत्कार संजीवनी शक्ति के समान था।

"ओम्" की सहायता से असुर हार गये।

तब से "ओम्" अमर हो गया। थके हारे, जीवन में निराश, उत्साहीन व्यक्तियों को नवजीवन, नई प्रेरणा और शक्ति देने के लिए ओम् का प्रयोग प्रचलित हुआ।

संकट में, विपत्ति में, युग-युग मैंने, "ओम्" शब्द के उच्चारण से आत्म-विश्वास प्राप्त किया। नये सिरे से वे जीवन के मोर्चों पर आरूढ़ हुए। हर एक विपत्ति में मनुष्य को साहस देने वाला ओम है। "ओम्" ब्रह्मबीज है। त्रिविद ओंकार रूपी ब्रह्म का संक्षिप्त रूप है। अतः इसे धारण कर लेने से नई दैवी शक्ति का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रादुर्भाव होना साधारण सी बात है। प्रत्येक बुद्धिवादी इसे आसानी से समझ सकता है।

गहराई से "ओम्" शब्द को परख लीजिए अ, उ, म् के संयोग से यह शब्द बना हुआ है ।"ओम्" परमात्मा का सर्वोत्तम नाम है। वेदादि शास्त्रों में परमात्मा का—मुख्य नाम 'ओम्' ही बतायागया है।

माण्डूक्योपनिषद् में लिखा है—

"ओमित्येतदक्षरम् इदं सर्वं तस्योपाख्यानं भूतं भवद् भविष्यदिति सर्वमोंकार एव ।"

"ओउम्" वह अक्षर है जिनमें सम्पूर्ण भूत, वर्तमान तथा भविष्यत् ओंकार का छोटा सा व्याख्यान है। सभी शक्तियाँ, ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ इस ओंकार में भरी हुई है

छान्दोग्य–उपनिषद् में "ओउम्" की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा गया है:—

"ओम इत्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत्, ओम् इति हद्गायति तस्योपाख्यानम् ॥ १ ॥ एषां भूतानां पृथिवी रसः, पृथिव्याः आपो रसः, आपोमोषधयो रसः, ओषधीनां पुरूषो रसः, पुरूषस्य वाग्रसः, वाचः ऋगारसः, ऋचः साम रसः, साम्नः उद्गीथो रसः ॥ २ ॥ स एष रसनां रसातमः परमः पराध्योंअष्टमोयदुद्गीथः ॥ ३ ॥

(१-१-१-३)

अर्थात् 'ओम्' अक्षर उद्गीथ है । अतः उसकी उपासना करनी चाहिए । सब भूतों का रस सार पृथ्वी है । पृथ्वी का रस जल है । जल का सार औषधियाँ हैं । औषधियों का सार मानव देह है । मानव देह का सार वाणी है । वाणी का ऋचा = वेद है । ऋचा का सार सामवेद द्वारा भगवान का यशोगान है । सामवेद का सार उद्गीथ है । यह जो उद्गीथ है, वह सब रसों में से रसतम = सारतम, सर्वोत्कृष्ट है ।

कठोपनिषद् में यमराज ने नचिकेता को ओंकार की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है—

"सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति,
तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति ।
तत्ते पदं सं ग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् ॥

(१-२-१५)

सारे वेद जिस भगवान् का वर्णन करते हैं, समस्त तपों को जिसकी प्राप्ति के लिए साधक करते हैं, जिसकी इच्छा से मुमुक्षु जन ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उस पद को मैं संक्षेप में कहता हूँ। 'ओम्' यही पद है और भी कहा गया है—

"एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् ।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥

यही "ओम्" सब का श्रेष्ठ अवलम्बन है। यही सर्वोत्कृष्ट आलम्बन है। इसी शक्तिपूर्ण श्ब्द का सहारा लेकर ब्रह्मलोक में महिमान्वित होता है।

"ओम्" की शक्ति अपार है । इसके उच्चारण से मनुष्य में शुद्ध सात्विक दैवी भाव उत्पन्न होते हैं, क्योंकि ओम् परमब्रह्म का शक्तिदायक नाम है। विराट्, अग्नि, विश्व आदि परमात्मा के नाम 'अ' के अन्तर्गत हैं, हिरण्यगर्भ, वायु, तेजस आदि 'उ' के अन्तर्गत हैं तथा ईश्वर, आदित्य और अज्ञादि परमात्मा के नाम मकार से जाने जाते हैं ।

जिसके पास 'ओम्' है, उसके पास अनन्त दैवी शक्तियाँ हैं । बल है, बुद्धि है, जीवन है । इन्द्रियों का संयम है ।

भगवान् श्री कृष्ण ने "ओउम्" की महिमा का वर्णन करते हुए गीता के आठवें अध्याय में लिखा है—

"ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥

अर्थात्, जो साधक मन और इन्द्रियों को वश में कर 'ओम्' अक्षर ब्रह्म का जप करता है, वह ब्रह्म का स्मरण करता हुआ इस भौतिक देह को त्याग कर परम पद को प्राप्त होता है । इस पद को प्राप्त करने के उपरान्त जीवात्मा जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है ।

ओउम् का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

व्याकरण की रीति से "अ-उ-म्" इन तीनों के मेल से 'ओम्' शब्द सिद्ध होता है, यह अव्युत्पन्न है । द्वितीय 'अव्' धातु से औणादिक 'मन्' प्रत्यय के विधान से ओम् बनता है। इसको व्युत्पन्न कहते हैं । अतएव 'अव्' धातु के जितने अर्थ हैं उन सबका यह बोधक है। अव् धातु के अर्थ यह हैं—रक्षण, गति, कान्ति, प्रीति,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तृप्ति, अवगम, प्रवेश, श्रवण, स्वाम्यर्थ, याचन क्रिया, इच्छा, दीप्ति, वाप्ति, आलिंगन, हिंसा, दान भाग और वृद्धि यह १९ अर्थ हैं । इनका साधरण विवरण यह है। (१) रक्षण-साक्षात् अथवा परम्परा सम्बन्ध से सब का रक्षक । (२) गति के तीन अर्थ हैं 'ज्ञान, गमन और प्राप्ति' ज्ञान सर्वदा याथात्म्यभाव से सर्ववस्तु का ज्ञाता, गमन-सदा स्थिर स्वभाव होने पर भी संसार-चक्र के चलाने का हेतु, प्राप्ति व्यापक होने से सर्वत्र विद्यमान, सदा सबको प्राप्त। समस्त गति शब्द का अर्थ प्रयत्न भी है, गति-ज्ञान पूर्वक संसार मर्यादा को चलाने के लिए सर्वत्र प्रयत्न का प्रसारक। (३) कान्ति-इच्छा रहित होने पर भी जीवों की इच्छा पूर्ति का निमित्त, (४) प्रीति—आनन्द स्वरूप होने से सबकी प्राप्ति का स्थान, (५) तृप्ति—स्वयं शान्तस्वरूप होने से सदा भक्तों के लिए हर्षोत्पादक, (६) अवगम—मंगल स्वरूप होने से मोक्ष का दाता, (७) प्रवेश—सूक्ष्मतम होने से सबका अन्तरात्मा, (८) श्रवण—श्रोत्र इन्द्रिय का निर्माता होने से स्थूल, सूक्ष्म, गुप्त और प्रकट शब्दों का श्रावक, (९) स्वाम्यर्थ—सबका स्वयं सिद्ध अधिपति होने के स्वामी, (१०) याचन—सर्वैश्वर्यसम्पन्न होने से सदा सबका सहायक और सबकी याचना का स्थान, (११) क्रिया—क्रियमाण जगत् का निर्माकण होने से ज्ञान पूर्वक क्रिया का संचारक । स्थूल प्रयत्न का नाम ही क्रिया है ।उपर्युक्त प्रयत्न से ही यह भेद है, (१२) इच्छा—स्वयं इच्छा रहित होने पर भी जीवों के निमित्त शुभ इच्छा का प्रकाशक, (१३) दीप्ति—तेजस्वरूप होने से अविद्या-अन्धकार का विनाशक, (१४) व्याप्ति —अतीन्द्रिय, अति सूक्ष्म और अप्रतीयमान होने से भी शुद्धान्तःकरण में स्वस्वरूप प्रदर्शक, (१५) आलिंगन—व्याप्य-व्यापक भाव सम्बन्ध से सदा सर्वत्र पूर्ण होने से सबका, सम्बन्धी, (१६) हिंसा—यथार्थ रूप से वेद-मर्यादा को पालन करने वाले पुरूषों के अज्ञान, विपरीत ज्ञान, वैर, विरोधादि दुःखोत्पादक दोषों का ध्वंसक, (१७) दान—सृष्टि समकान्त से ही सुख साधन पदार्थों और उनको उपयोग में लाने के निमित्त यथार्थ बोध का दाता, (१८) भाग—प्रलय के समय संसार का विभाजक। अर्थात् दृश्यमान स्थूल जगत् को सूक्ष्म-अदृश्य करने का हेतु, (१९) वृद्धि—उत्पत्ति काल में संसार-रचनार्थ सूक्ष्म प्रकृति को बढ़ाने, स्थूल पथ में लाने और जीवों के कर्म-फल भुगाने का निमित्त ।

यदि इन अर्थों का व्याकरण की रीति से विस्तार किया जावे तो यह 'ओम्' शब्द अनन्तार्थ का द्योतक हो सकता है ।

किसी भी पुरूष में इन अर्थों का समावेश नहीं हो सकता, क्योंकि वह अल्पज्ञ, एकदेशी, न्यूनता सहित और पूर्णता रहित है, अतएव पूर्ण परमात्मा का ही यह मुख्य नाम है । इस 'ओम्' शब्द का विभक्ति से भेद, वचन से व्यत्यव और लिंगसूचक प्रत्यय से परिवर्तन कभी भी नहीं हो सकता है । यह वृद्धि-ह्रासशून्य-सदा एकरस रहने से अव्यय संज्ञक है । इसके आगे विभक्ति आते ही अपने रूप को खो देती है, अतएव यह अभेद्य है ।

'अ' से विराट् अग्नि और विश्व का ज्ञान, 'उ' से हिरण्य गर्म वायु और तेजस का बोध, 'म्' से ईश्वर आदित्य और प्राज्ञ का परिज्ञान होता है । यह परमात्मा के पवित्र नाम 'ऊँ' में विद्यमान है ।

यजुर्वेद ४० वे अध्याय के १५ वे मंत्र का एक अंश है—ओउम स्मरण, ओम् का स्मरण कर कठोपनिषद में नचिकेता ने यमराज से ब्रह्म के संबंध में पूछा कि वह क्या है ? इसका उत्तर देते हुए यम ने कहा 'ओम् इमेत्त्' अर्थात् वह ओम् नाम वाला परमेश्वर है ।

गीता ने ओम् इत्येकाक्षरं ब्रह्म एकाक्षरी ॐ को ब्रह्म कहा है।

तैत्तरीयोपनिषद् में 'ओउम् इति ब्रह्म' ओम् ब्रह्म बताया है। आगे चलकर वहीं 'ओउम् इति सर्वम्' पद आता है जिसमें सर्वव्यापी परमात्मा को ओम् कहा है । हमें परमात्मा के इस वैदिक नाम 'ओउम्' का नित्य जप करना और नाद योग द्वारा आत्मानुसंधान करना चाहिए। कारण—स्थूल, सूक्ष्म और कारण जो कुछ भी, दृश्य, अदृश्य है, उसका संचालन 'ओंकार' की ही स्फुरणा से हो रहा है । यही प्रणव का अर्थ भी है ।

योगसूत्र (१-२८) में "तज्जपस्तदर्थभवनम्" कहकर प्रणव के इसी अर्थ की भावना का निर्देश किया गया है । यही वह मन्त्र है, जिसका जप जप योग और नादयोग दोनों की सिद्धि करता है, दोनों के परिणाम साथ-साथ उपलब्ध कराता है । तीव्र संवेग के साथ प्रणव जप से शुसिद्धि सुनिश्चित है—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शम्भोः प्रणववाच्चस्य भावना तज्जपादापि ।
आशु सिद्धि परा प्राप्या भवत्येव न संशयः ॥"

(लिंग पुराण २ ।९ ।५१)

अर्थात्—प्रणव-जप और उसकी भावना से निस्सन्देह परा सिद्धि शीघ्र ही प्राप्त होती है । प्रणव सहित ही मन्त्र जाप किया जाता है । गायत्री-साधना के विविध प्रयोगों में प्रणव की भिन्न-भिन्न संख्या की आवृत्तियाँ विशेष स्थान रखती है । जिस स्तर की, जिस मात्रा में शक्ति प्रयोग में लानी होती है, उसी दृष्टि से गायत्री मन्त्र के साथ प्रणव की संख्या घटाई बढ़ाई जाती है । गायत्री-साधना में प्रणव-तत्व का अविच्छिन्न समावेश है । किसी भी वेद मन्त्र का शक्ति-जागरण प्रणव के समावेश बिना सम्भव नहीं होगा। हर वेद मन्त्र के उच्चारण में पहले ओंकार संयुक्त करना पड़ता है, तभी वह जागृत हो जाता है ।

जप के समय प्रणव का यथार्थ संकेत रहने पर साधक के चित्त में ईश्वर भावना सहज ही उठती रहती है । इससे जप की सिद्धि का लक्ष्य शीघ्रता से प्राप्त होता हैं और साधना-पथ के अवरोध हटते जाते हैं । इस प्रकार जप-साधना में प्रणव ही सर्वोत्तम अवलम्बन है ।

नाद-साधना में भी इसी प्रणव का गुंजन सुनने से प्रगति क्षिप्र होती है । आगे चलकर, जब अन्तरिक्ष में प्रवाहमान दिव्य ध्वनियाँ सुनी जाने लगती हैं, तब उनके नौ मण्डलों को पार करते हुए दशम मण्डल में पहुँचा जाता है, जहाँ सर्वोत्तम अनाहत नाद 'ओम्' ही सतत सुनाई पड़ता है । नाद साधना की यही चरम परिणति है । इस तल तक पहुँचने वाले साधक सृष्टि के उद्गम केन्द्र तक पहुँच पाते हैं और विश्व-वैभव का अभीष्ट सत्प्रयोजनों के लिए उपयोग करने में समर्थ होते हैं । नाद-सिद्धि साधक इन्द्रियातीत क्षमताओं के अधिपति देव मानव कहे जाते रहे हैं । अन्तर्नाद की भी सर्वोत्तम अभिव्यक्ति प्रणव ही है । चैतन्य ऊर्जा कुण्डलिनी के जागरण में प्राणवतत्व की प्रमुख भूमिका रहती है । इसीलिए कुण्डलिनी-साधना को प्रणवविद्या भी कहा गया है ।

इस प्रकार प्रणव समस्त आध्यात्मिक साधनाओं का सर्वश्रेष्ठ अवलम्बन है ।

सृष्टि की उत्पत्ति विद्युत से हुई या नाद से ?

वृक्ष का मूल बीज है, तो जीवधारियों के संदर्भ में सृजन की भूमिका रज-वीर्य की मानी गई है । चिन्गारी में जहाँ विशाल दावानल प्रच्छन्न होता है, वहीं धन एवं ऋण धाराओं के संयोग से विद्युत की उत्पत्ति कोई छिपा तथ्य नहीं। आत्मा परमात्मा की अंशधर है, उसी से प्रकट होकर अंततः उसी में विलीन हो जाती है, इसे भी सब जानते हैं। जहाँ बिंब होगा, वहाँ वस्तु का होना भी अनिवार्य है। इस दृष्टि से सृष्टि का उद्गम विंदु भी कोई न कोई होना चाहिए।

यहाँ विज्ञान और अध्यात्म में तनिक मतभेद है। विज्ञानवेत्ताओं का कहना है कि सृष्टि की अंतिम इकाई 'विद्युत' है, जबकि अध्यात्म के पक्षधर मनीषियों का मानना है कि यह इकाई विद्युत न होकर 'ध्वनि' है। उल्लेखनीय है कि भौतिकशास्त्र पदार्थगत है, जबकि अध्यात्म शास्त्र चेतनागत। भौतिक विज्ञानियों ने अंतिम अथवा मूल इकाई के संबंध में जब अपना निर्णय प्रस्तुत किया, तो उनका आधार पदार्थपरक अध्ययन था। अध्यात्म-वेत्ताओं ने चेतना की गहराई में उतरकर मूल इकाई की खोज की, तो उन्होंने उसे ध्वनि के रूप में पाया। यों दोनों के निष्कर्ष अपने-अपने स्थान पर एक प्रकार से ठीक हैं। विज्ञानवादी यदि विद्युत को मूल इकाई मानते हैं, तो वह इसलिए सही है कि उनका अनुसंधान पदार्थगत जगत में हुआ है। पदार्थ सत्ता की मूल इकाई विद्युत ही हो सकती है, इसलिए यह अवधारणा सत्य है। मिथ्या इस कारण है कि पदार्थ के मूल में चेतना काम करती है, अतएव विद्युत को अंतिम इकाई नहीं माना जा सकता। यहाँ कोई पदार्थ वादी दृष्टिकोण रखने वाला यह कह सकता है कि विद्युत और ध्वनि प्रायः एक ही ऊर्जा के दो रूप हैं। उनका पारस्परिक रूपांतरण होता रहता है, अतः वे अभिन्न हैं, किंतु इस प्रकार की विचारधारा रखने वालों को यह भलीभाँति समझ लेना चाहिए कि अध्यात्मवाद में जिस नाद से सृष्टि का उद्भव होना माना गया है, वह प्रचलित ध्वनि से भिन्न है। ज्ञातव्य है कि भौतिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जगत में ध्वनि की उत्पत्ति पदार्थों के पारस्परिक टकराव या घर्षण का परिणाम है। इसे 'आहत' नाद या ध्वनि कहते हैं, जबकि चेतना जगत की ध्वनि 'अनाहत' होती है। यह किसी रगड़ या टकराहट की परिणति नहीं, वरन् स्वत: स्फूर्त है, इसलिए इसे अनाहत या अनहद नाद कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि यह सार्वकालिक, सार्वदेशिक एवं शाश्वत है। इसीसे अनंत विश्व की सृष्टि होती है और सृष्ट विश्व के अंतर में यह नाद ही प्राण या जीवनी-शक्ति के रूप में निहित रहता है। प्राणियों के हृदय में यही स्पंदित होता रहता है। यह इंद्रियगम्य नहीं, फलत: इसे कानों से नहीं सुना जा सकता। ध्यानावस्था में जाकर इसकी अनुभूति की जा सकती है। अंतराल में जितना गहरा उतरा जायेगा, नाद भी तदनुरूप सूक्ष्म होता जाता है। अंतत: एक ऐसी अवस्था आती है, जब सभी प्रकार की ध्वनियों का लोप होकर मात्र शून्य रह जाता है। तत्ववेत्ताओं के अनुसार यह शून्य भी ठीक नहीं। यहाँ भी एक नाद होता रहता है। इसे ही आत्मवेत्ता "अनहद नाद" के नाम से पुकारते हैं। अनहद नाद का तात्पर्य है उस शून्य की नीरवता की अंतिम पकड़। मानव चेतना में अंतिम वस्तु, निराकार में अवस्थान करने के पूर्व की यह अनहद ध्वनि ही है। इसीलिए तत्वदर्शियों ने एकमात्र ध्वनि को ही अंतिम तत्व के रूप में स्वीकार किया है। उनके अनुसार चेतना जगत का आखिरी तत्व ध्वनि के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता।

इस विवेचना के उपरांत ध्वनि और नाद के बीच का अंतर स्पष्ट हो जाता है। ध्वनि भौतिक है, जबकि नाद आत्मिक है। यह उस ध्वनि से पूर्णत: भिन्न है, जो पदार्थ जगत में आये दिन हम सुनते रहते हैं। जब दोनों में इतना फर्क है, तो विद्युत और नाद में समानता कैसे हो सकती है? जब असमानता है, तो दोनों के मध्य रूपांतरण भी संभव नहीं। हाँ, भौतिक ध्वनि और विद्युत निश्चय ही एक ही ऊर्जा के दो रूप हैं, उनका एक-से-दूसरे रूप में परिवर्तन होता रहता है। आवश्यकता पड़ने पर ध्वनि विद्युत में बदल सकती है। इसी प्रकार विद्युत भी मौका आने पर ध्वनि में रूपांतरित हो जाती है, किंतु उसका नाद में परिवर्तन संभव नहीं, कारण कि इनमें से एक की प्रवृति भौतिक और दूसरे की अभौतिक है। एक का संबंध अपरा प्रकृति से है, तो दूसरे का परा प्रकृति से। एक का स्वरूप व्यक्त है, तो दूसरा अव्यक्त स्तर वाला है, पर यह सच है कि अव्यक्त स्तर तक पहुँचने के लिए व्यक्त माध्यम का ही सहारा लेना पड़ता है। यही कारण है कि अध्यात्म क्षेत्र में कीर्तन, भजन, संगीत, प्रार्थना, मन्त्र, जप आदि बहुत महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। यह स्थूल ध्वनियाँ ही हमें सूक्ष्म नाद तक पहुँचा पाने में समर्थ होती हैं, इसलिए अध्यात्म पथ के पथिकों को यात्रा की शुरूआत यहीं से करनी पड़ती है। सफर जहाँ समाप्त होता है, वह भूमिका भी ध्वनि की ही है, अंतर मात्र इतना है कि वहाँ ध्वनि नाद का रूप ग्रहण कर लेती है। इस प्रकार ध्वनि से यात्रा आरंभ होकर फिर ध्वनि में ही समाप्त होती है। अंतर्यात्रा का यह अंतिम विंदु और आखिरी सोपान है। इसे 'शब्द-ब्रह्म' कहा गया है। यह ध्वनि लोक लोकांतरों में सर्वत्र गुंजायमान है। यही सृष्टि का आदि केन्द्र है, किंतु हृदय में स्थित इस विंदु तक पहुँचने के लिए साधनात्मक प्रवृत्तियों एवं मंत्र जप और भजन-कीर्तन संबंधी उपासनात्मक उपचारों का लंबे काल तक आश्रय लेना पड़ता है। कारण कि चेतना और मन को प्रभावित करने की जितनी सामर्थ्य शब्द और संकल्प में है, उतना सरल और समर्थ उपाय शायद और कोई नहीं। मन्त्र ध्वनि के बार-बार के आघात से चेतना केन्द्र परिष्कृत होने लगते हैं और मन विगलित होकर विकसित होता जाता है। फिर एक शून्य जैसी स्थिति पैदा होती है। इसीसे नाद का स्फुरण होता है। यह नाद पवित्र ओंकार है। जप के मध्य जब इसका उच्चारण करते हैं, तो जिस ओम की ध्वनि होती है, वह वास्तविक उद्गीथ नहीं है, क्योंकि इस प्रक्रिया में उसका उच्चारणकर्ता द्वारा संपन्न होता है। हम मुँह बंद कर लें, होठों को न हिलायें, जीभ बिल्कुल निश्चल रहे और अंदर-ही अंदर उच्चारण करें, तो यह भी वास्तविक उच्चारण नहीं होगा। इन दोनों ही प्रकारों में इसका एक निमित्त विद्यमान होता है, अतएव ऐसी दशा में जिस ॐ का ज्ञान होगा, वह वास्तविक न होकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवास्तविक और कृत्रिम होगा, क्योंकि मानिसक स्तर के उच्चारण में भले ही हमारी बाह्य क्रियाएँ और चेष्टाएँ निष्क्रिय स्तर की बनी रहें, तो इस पर भी माँसपेशियों का स्पंदन तो बना ही रहता है। जब बाहर की तरह भीतर मन में भी कोई प्रयास न हो, तो एक ऐसी ध्वनि सुनायी पड़ेगी, जो अनायास उत्पन्न हो रही होगी, हम उसके कर्ता न होंगे, मात्र साक्षी होंगे। यही जगत का आदि उद्गम है। यह आंतरिक जगत का अनुसंधान हुआ।

विज्ञान चूँकि बाह्य जगत को सर्वोपरि और महत्वपूर्ण मानता है, इसलिए उसकी शोध पदार्थ सत्ता को लेकर प्रारंभ हुई। इस क्रम में जिन विद्युतीय कणों (इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन एवं इनके प्रतिपक्षियों) की खोज हुई, वह विज्ञान की ससीमता की दृष्टि से अंतिम इकाई हो सकती है, किंतु सूक्ष्मता की दृष्टि से विचार करने पर यह अभिमत निरस्त हो जाता है। विद्युत निश्चय ही सूक्ष्म है, पर उतनी नहीं, जिसे अंतिम कहा जा सके। उसे पदार्थ और चेतना की मध्यवर्ती कड़ी के रूप में मान्यता मिल सकती है। पदार्थ की श्रेणी में उसे इसलिए नहीं रखा जा सकता, क्योंकि वह सूक्ष्म है और चेतना स्तर की वह इस कारण नहीं मानी जा सकती, क्योंकि द्रव्य जैसी उसकी अनुभूति होती है। विवेकानंद ने "राजयोग" में कहा है कि संसार में जितनी भौतिक शक्तियाँ हैं, वह सब प्राण से उद्भूत हैं। जिस प्रकार चेतना की अभिव्यक्ति प्राणी और पदार्थ के कलेवर रूप में इस संसार में हुई है, उसी प्रकार प्राण का व्यक्त रूप विद्युत है। जैसे शरीर के भीतर की खोज द्वारा हम चेतना जगत में पहुँच जाते हैं, वैसे ही यदि पदार्थ की विद्युत इकाइयों के अंतराल में उतरकर यात्रा प्रारम्भ की जाय, तो उसके मूल स्रोत प्राण तक पहुँच जाना असंभव भी नहीं। यदि विज्ञान की किन्हीं खोजों द्वारा ऐसा कर पाना शक्य हुआ, तो फिर प्राण-चेतना के गर्भ-गह्वर में उतर पाना भी कोई कठिन नहीं रह जायगा। यदि भविष्य में ऐसा हो सका, तो उस नाद को सुन पाना विज्ञान के लिए भी सरल हो जायगा, जो संपूर्ण आकाश में, चाहे वह बाह्य जगत का विस्तृत आकाश हो अथवा प्राणी और पदार्थ के अंदर का पोला स्थान, सर्वत्र संव्याप्त है। यदि ऐसा हुआ, तो विज्ञान और अध्यात्म के मध्य की असहमति देर तक टिकी नहीं रहेगी और दोनों ही इस एक तथ्य को स्वीकार कर सकेंगे कि सृष्टि संरचना के मूल में वह अव्यक्त 'नाद' ही सर्वोपरि तत्व है। दोनों के बीच वर्तमान मतभेद का एक ही कारण समझ में आता है कि वर्षों की मेहनत से विज्ञान ने जिस तथ्य को खोजा है, उसे उसने अंतिम मान लिया और आगे की गवेषणा बंद कर दी। ऐसी स्थिति में जो सत्य अधूरा है, उसे संपूर्ण स्वीकार कर लिया गया। भूल यहीं हुई। होना यह चाहिए था कि अनंत संभावनाओं को देखते हुए शोध जारी रखनी और मूल तत्व तक पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए थी, क्योंकि भारतीय दर्शन इसको आरंभ से स्वीकारता रहा है कि पदार्थ का जो अंतिम अणु है, वह अप्रकट मन है और मन का जो अंतिम अणु है, वह अप्रकट पदार्थ है। इसका मतलब यह हुआ कि पदार्थ और मन अर्थात् चेतना एक दूसरे से गुँथे हुए हैं। दोनों में ही एक-दूसरे की संभावना पूरी-पूरी विद्यमान है। पदार्थ से यात्रा आरम्भ कर मन तक पहुँच पाना सम्भव है और मन से चलकर पदार्थ (अथवा जगत) के आदि कारण के दर्शन करना भी अशक्य नहीं। स्पष्ट है विज्ञान ने अब तक जो रास्ता तय किया है, वह अधूरा और एकांगी है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे द्रव्य के मूल में विद्यमान चेतना को भी ध्यान में रखना होगा और अनुसंधान उसका भी करना होगा, तभी उसकी खोज पूरी हो सकेगी। विज्ञानवेत्ताओं ने अभी तक मात्र पदार्थ वाले हिस्से का अन्वेषण किया है, उसका चेतना वाला भाग शेष है। अंतिम निष्कर्ष इस आखिरी भाग के अध्ययन से ही उपलब्ध हो सकेगा। आगे वही होना है।

मतभेद की गुंजायश वहाँ उत्पन्न होती है, जहाँ दोनों पक्षों का स्तर समान हो। जब एक पक्ष छोटा, अल्पज्ञ और स्थूल दृष्टि वाला और दूसरा विराट् ज्ञान एवं विशाल और सूक्ष्म दृष्टिकोणयुक्त हो, वहाँ असहमति नहीं, अज्ञान आड़े आता है। पदार्थ विज्ञान चूँकि स्थूल जगत का प्रतिनिधित्व करता है, इसलिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसका ज्ञान वहीं तक परिमित है । अध्यात्म विज्ञान की गति प्रत्यक्ष से परे परोक्ष जगत में भी है, इसलिए ज्ञान की उसकी सीमा अनंत और अपरिमित है। ऐसी स्थिति में विज्ञान को अपना दुराग्रह त्यागकर उन संभावनाओं पर विचार करना आंरभ कर देना चाहिए, जिसे अध्यात्म अति आरम्भ से प्रकट करता आ रहा है। आगामी समय में यदि ऐसा हुआ, तो विज्ञानवादी यह स्पष्ट अनुभव कर सकेंगे कि प्रत्यक्षवाद पर आधारित उनका निष्कर्ष अधूरा नही नहीं, अपंग एवं असमर्थ भी था ।

अज्ञानी की गति ज्ञान को अंगीकार कर लेने में है। अध्यात्म के अंगुलिनिर्देश पर विज्ञान यदि चल सका, तो अगले ही दिनों वह इस सत्य को प्रत्यक्ष और प्रमाणित कर सकेगा कि सृष्टि का आदि मूल विद्युत नहीं, नाद है, वह नाद, जिसे तत्ववेत्ता 'अनहद नाद' के नाम से पुकारते हैं ।

ध्वनिशक्ति के रूप में शब्द शक्ति को लेसर से भी अधिक सामर्थ्यवान एवं शक्तिपुंज माना गया है। इसी आधार पर विज्ञान ने खगोल जगत में ब्रह्मांडीय आदान-प्रदान की संभावना अभिव्यक्त की है, जबकि सूक्ष्म जगत में चलने वाले घटनाक्रमों की पूर्व जानकारी को अध्यात्म ने संभव बनाया है ।

अध्यात्मवेत्ताओं ने वाणी के चार रूपों का वर्णन किया है—परा, पश्यंति, मध्यमा और वैखरी। वैखरी वाणी स्थूल है जो मुँह से जिह्वा द्वारा शब्दोच्चारण के रूप में बोली जाती है। जीभ की वाणी को कान सुनते हैं। परिष्कृत मन की वाणी 'माध्यमा' कहलाती है। मन माध्यमा वाणी में बोलता है और इसे नेत्र सुनते हैं। हृदय की वाणी 'पश्यंति' कहलाती है । हृदय की वाणी हृदय ही सुनता है। आत्मा के अंतरंग क्षेत्र से जो अनहद ध्वनि उत्पन्न होती है, उस संदेश को दूसरी आत्मायें सुनती हैं । यह संतों की, ऋषियों की, सिद्ध महापुरुषों की, देवताओं की वाणी है, जो सीधे मनुष्य के अंत:करण में प्रविष्ट हो जाती है। यह सब ध्वनियों के ही प्रकार हैं जो सूक्ष्म से सूक्ष्मतम होती गयी हैं ।

स्थूल वाणी के रूप में प्रयुक्त वैखरी को छोड़कर यदि हम शेष तीन सूक्ष्म वाणियों पर गंभीरतापूर्वक विचार करें, तो पायेंगे कि इन्द्रियातीत अनाहत, शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म के रूप में शब्द शक्ति की महिमा को शास्त्रकारों ने बड़ी गंभीरता से प्रस्तुत किया है। अब जबकि विज्ञान ने पराध्वनि के रूप में अश्रव्यध्वनियों को ढूँढ़ निकाला है, तो ऋषियों को वह प्रतिपादन सत्य प्रतीत होने लगा है जिसमें कहा गया है कि इस सृष्टि की उत्पत्ति ही 'शब्द शक्ति' से हुई है। विज्ञान ने भी अब इस तथ्य को स्वीकार लिया है कि हम ध्वनि तरंगों के लहराते अनंत सागर में रह रहे हैं । हम जो कुछ भी बोलते हैं उसका विनाश नहीं होता, वरन् वह सूक्ष्म ध्वनि तरंग के रूप में हमारे चारों ओर उमड़ते-घुमड़ते रहते हैं और अनंत काल तक अस्तित्व में बने रहते हैं। इस संसार में शब्द के रूप में अब तक जितने विचार प्रकट किये गये हैं, वह सभी सूक्ष्म तरंगों के रूप में अब भी अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं। गंभीर चिंतन की स्थिति में यदा-कदा यही सूक्ष्म तरंगें हमारे मस्तिष्क की पकड़ में आकर अकस्मात् नये विचार दे जाती हैं। पर इसके लिए मस्तिष्कीय तरंगों की फ्रीक्रेंसी ब्रह्मांडव्यापी सूक्ष्म तरंगों से ट्यूण्ड होनी चाहिए। मूर्द्धन्य मनीषी लायल वाटसन ने इस संदर्भ में उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपनी प्रसिद्ध कृति 'सुपरनेचर' में कहा है कि गहन चिंतन की स्थिति और कठिन गणितीय प्रश्नों के हल के समय में भी आइन्स्टीन के मस्तिष्क से सदा 'अल्फा तरंगें' ही निकला करती थीं और ऐसे समय अचानक ही उनके मस्तिष्क में प्रश्नों के हल कौंध जाया करते थे। सापेक्षवाद का प्रसिद्ध सिद्धांत भी ऐसे ही एक अवसर की देन बताया जाता है ।

ज्ञातव्य है कि अलग-अलग स्थितियों में मानवी मस्तिष्क से अल्फा, बीटा, थीटा, डेल्टा नामक विभिन्न प्रकार की गस्तिकीय तरंगें-(ब्रेन-वेक्स) निकलती हैं। ध्यान की गहनतम् अवस्था में प्राय: अल्फा तरंगें ही निस्सृत होती हैं। ऐसी स्थिति में सूक्ष्म संसार से साधक जब अपना सम्पर्क सूत्र स्थापित कर विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ हस्तगत करता है तब भी मस्तिष्कीय तरंगें अल्फा ही होती हैं । ऋषियों ने ध्यान की ऐसी ही गहन स्थिति में वेदों को उपलब्ध किया था, इसलिए उन्हें 'श्रुति'भी कहा गया है। 'श्रुति' अर्थात् सुना हुआ। शब्द शक्ति की यह अत्यंत सूक्ष्म तरंगें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होती हैं जो स्थूल कर्णेन्द्रियों की पकड़ से परे हैं । तंत्र और मन्त्र शास्त्र में इसी शक्ति का उपयोग कर अनेकानेक विलक्षण कार्य संपन्न किये जाते हैं। मन्त्रों के माध्यम से विषैले जीवों के जहर को निर्विष किया जाता है, जबकि तंत्र-शास्त्र में और भी अद्‌भुत कार्य संपन्न किये जाते हैं। प्राचीनकाल में जिन दिव्य अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग होता था, उनमें शब्द-शक्ति की ऊर्जा से चालित उपचारों के प्रयोगों का उल्लेख मिलता है। जिससे ज्ञात होता है कि यह कितनी सूक्ष्म और सामर्थ्यवान शक्ति है । इस सूक्ष्म शक्ति से निकटस्थ अथवा दूरस्थ किसी भी व्यक्ति को प्रभावित किया जा सकता है।

आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों ने भी अब इस तथ्य को प्रमाणित कर दिखाया है कि सूक्ष्म ध्वनि तरंगों को पृथ्वी अथवा अंतरिक्ष के किसी भी हिस्से तक अपने मूल रूप में प्रसारित-संचारित किया जा सकता है।रेडियो स्टेशनों से प्रसारणों को जब 'सुपरइम्पोजिशन ऑफ साउण्ड वेव' के सिद्धांत पर तीव्र बना दिया जाता है, तो क्षण मात्र में वे तरंगें समस्त भू-मण्डल में फैल जाती हैं। अंतरिक्ष में गतिमान भू-उपग्रहों की गतिविधियों की जानकारी पृथ्वी स्थित प्रेक्षक इसी आधार पर लेते और चालक दल से बातचीत करते हैं। इसी आधार पर अंतर्ग्रही सभ्यताओं-लोकोत्तर वासियों की ढूँढ़ खोज चल रही है और उनके संकेतों को ग्रहण करने और उनके लिए संकेत प्रेषित करने के प्रयत्न किये जा रहे हैं। सन् १३८० में कलिकोवो युद्ध के समय रूस के युवराज दमित्री दान्स्काय ने शत्रुओं की टोह ऐसी ही सूक्ष्म तरंगों के माध्यम से ली थी।

मनुष्य की कर्णेन्द्रियाँ २० से लेकर २०००० हर्टज् आवृत्ति वाली ध्वनि तरंगों को सुन सकती हैं। इससे ऊपर अथवा कम आवृत्ति वाली अश्रव्य ध्वनियों को "पराध्वनि" कहते हैं। सुप्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी बी. कुद्रयावत्सेव का कहना है कि अब जब कि पराध्वनियों के रिसीवर बना लिये गये और उनसे श्रव्य ध्वनियों को सुना गया तो यह ज्ञात हुआ कि श्रव्य ध्वनियों के साथ-साथ आवाज में अश्रव्य ध्वनियाँ भी मिली होती हैं । मंत्रों में अश्रव्य ध्वनियों के समावेश से उनमें विभिन्न प्रकार के प्रभाव, परिणाम उत्पन्न करने की सामर्थ्य होती है। पराध्वनियाँ दो प्रकार की होती हैं—(१) निम्न आवृत्ति वाली—'इन्फ्रासोनिक' एवं (२) उच्च आवृत्तियों वाली—'अल्ट्रासोनिक'। कम आवृत्ति की होने के कारण इन्फ्रासोनिक ध्वनियाँ सभी दिशाओं में गति कर सकती हैं, साथ ही कम शक्ति की होने के कारण वे मनुष्य एवं अन्य प्राणियों तथा वनस्पतियों के लाभदायक भी हो सकती हैं। इस संबंध में फ्राँस के मूर्द्धन्य वैज्ञानिक वाल्दीमीर गैब्रियू ने अपने लंबे अध्ययन-अनुसंधान के पश्चात् बताया है कि ७ हर्टज आवृत्ति वाली इन्फ्रासोनिक ध्वनि के संपर्क क्षेत्र में जब व्यक्तियों को नियमित रूप से कई दिनों तक कुछ समय के लिए बिठाया गया, तो पाया गया कि उनकी मानसिक क्षमता में असाधारण रूप से परिवर्तन दृष्टिगोचर हुआ। सभी के मस्तिष्क 'अल्फा' एवं 'बीटा' स्टेट में पाये गये जो ध्यान की उच्च अवस्थाओं में ही संभव हो पाता है।

वस्तुतः हमसें कितनी ही ध्वनि तरंगें हर समय टकराती रहती हैं, पर इनमें से उन्हें ही हम सुन पाते हैं जो श्रवण सीमा के अंतर्गत आती हैं। श्रवणातीत अत्यंत सूक्ष्म अल्ट्रासोनिक ध्वनियाँ १० लाख से एक हजार करोड़ तक की कंपन उत्पन्न करती हैं । परन्तु इस विश्व ब्रह्मांड में संव्याप्त अनाहत नाद इससे भी सूक्ष्म स्तर का होता है। अल्ट्रासोनिक ध्वनियों का संप्रेषण और ग्रहण तो 'राडार' जैसे यंत्र-उपकरणों के माध्यम से संभव है, पर सूक्ष्म नाद को जानने-समझने के लिए स्थूल इन्द्रियों का योग और तप द्वारा सूक्ष्मीकरण करना ही एक मात्र साधन है। अब विज्ञान ने पराध्वनियों को समझने के लिए कुछ विशेष प्रकार की विधियाँ भी विकसित कर ली हैं। इन युक्तियों के प्रयोग से अब यह ज्ञात कर पाना संभव हो सका है कि पराध्वनि किस मार्ग से गुजर रही है। इस युक्ति से उनका फोटो लिया जाना भी शक्य हुआ है।

गर्मी के दिनों में जमीन के संपर्क में रहने वाली हवा प्रायः ऊपर उठती दिखाई पड़ती है। इन ऊर्ध्वरोहण करती धाराओं के दीखने का कारण यह है कि वायु गर्म होने पर फैलती है, उसका घनत्व कम हो जाता है और उसके प्रकाशीय गुण जैसे अपवर्तन गुणांक बदल जाते हैं। ऐसे ही संपीड़ित वायु की उन धाराओं को भी देखा जा सकता है जिनका घनत्व आसपास की वायु के घनत्व से अधिक हो। इसी तरह जब पराध्वनि तरंगों का संचरण होता है, तब वायु में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संपीडन, विरलन एकान्तर क्रम से पैदा हो जाते हैं। वायु के ये परिवर्तन गर्मी के कारण होने वाले परिवर्तन के सदृश्य ही होते हैं। इस प्रकार ध्वनि तरंगों की छायाकृति भी उसी प्रकार प्राप्त की जा सकती है जिस प्रकार विभिन्न तापमान वाली जलधाराओं का प्रतिबिंब। पर्दे की जगह फोटोप्लेट रखकर पराध्वनि तरंगों का चित्र लिया जा सकता है। परंतु नाद योग की सूक्ष्मातिसूक्ष्म तरंगों को देखने-सुनने की सामर्थ्य अभी विज्ञान को नहीं मिल पायी है। इसे तो योग साधना द्वारा ही जाना समझा जा सकता है।

अध्यात्म में नादयोग के रूप में पराध्वनियों का उपयोग आत्मिक विकास के लिए प्रयुक्त करने की व्यवस्था है, पर विज्ञान ने इनका उपयोग विभिन्न प्रकार के रोगोपचार और सुरक्षा उपाय जैसे अन्यान्य क्षेत्रों में कर लोगों की साधन सुविधाओं में अभिवृद्धि की है। इन तरंगों का वैज्ञानिकों ने उपयोग कर अब एक ऐसी सुरक्षा घंटी विकसित की है कि यदि इन तरंगों को रात के वक्त घर में फैला दिया जाय तो चोर अथवा अन्य किसी भी प्रकार की हलचल इनकी तीक्ष्ण आँखों की पकड़ से बच नहीं सकती और तुरंत घंटी बजाकर इसकी सूचना मालिक को दे देती हैं। इसी तरह शल्य चिकित्सा, कीटाणु-नाशक, ऋतु परिवर्तन, मोटे धातु खंडों का विलगन आदि क्षेत्रों में इसे विद्युत एवं अणु शक्ति के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है। इन कार्यों को देखते हुए इसकी विलक्षण सामर्थ्य का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

दक्षिण मार्गी साधनाओं में शब्द शक्ति का उपयोग जहाँ आत्मोत्थान एवं जनकल्याण के लिए किया जाता है, वहीं वाममार्गी साधनाओं में इस पराशक्ति का दुरुपयोग प्रायः दूसरों को क्षति पहुँचाने में भी होता रहा है। विज्ञानवेत्ताओं ने भी ध्वनि तरंगों में सन्निहित इन क्षमताओं को अब ढूँढ निकाला है और पाया है कि मनुष्यों सहित प्राणियों एवं जड़ इमारतों पर इनका प्रभाव बुरा होता है। पिछले दिनों चेकोस्लोवाकिया के एक इंजीनियर प्रो. गावराड ने पराध्वनि उत्पादक एक ऐसा यंत्र विकसित किया जो प्रयोग के दौरान अपनी शक्तिशाली तरंगों के कारण प्राणघातक सिद्ध हुआ। जब उसकी तरंगें एक बैल पर डाली गयीं तो वह तड़प कर तुरंत वहीं मर गया। मृत्यु का कारण जानने के लिए जब उसकी चीर-फाड़ की गयी तो देखा गया कि आंतरिक अवयव बिलकुल विकृत हो गये थे। डॉक्टरों का कहना था कि ध्वनि तरंगों की मार इतनी तीव्र थी कि अंग अवयव अर्धतरल की स्तिथि में आ गये और यही उसकी मृत्यु का कारण बना। इसी तरह के प्रयोग-परीक्षण, मछलियों, मेढ़कों एवं कीड़े मकोड़ों पर किये और पाया गया कि इन सभी पर पराध्वनियाँ प्राण घातक प्रभाव छोड़ती हैं।

यह भी देखा गया है कि इन तरंगों का प्रभाव सदा बुरा ही नहीं होता। फूलमटर के बीजों पर जब पराध्वनियाँ डाली जाती हैं तो उनमें तेजी से अंकुर फूटने लगते हैं।

आर्ष वाङ्मय में ओंकार शब्द का महत्वपूर्ण स्थान है। सृष्टि की उत्पत्ति इसी से हुई बतायी गयी है। इसके तीन अक्षर अ, उ, म समस्त ब्रह्माड का बोध कराते हैं। यह सत्, रज, तम रूपी तीन गुणों, वर्तमान, भूत और भविष्य रूपी तीनों कालों तथा ब्रह्मा, विष्णु, महेश की तीन सर्वोपरि शक्तियों के परिचायक हैं। समूचे विश्व-ब्रह्मांड के कण-कण का मूल यही अनाहत स्वर है। नाद-ब्रह्म के साधक इसी पराध्वनि की साधना करते और समाधि स्तिथि तक जा पहुँचते हैं।

अन्तरिक्ष के शब्द संकेतों की श्रवण सामर्थ्य

अन्तरिक्ष से निरन्तर आती ध्वनियों के अनुसंधान क्रम में भिन्न-भिन्न प्रकार की लहरें खोजी, पकड़ी गई है। ज्ञात यह हुआ है कि सौर मण्डल तथा मन्दाकिनी आकाश गंगा से प्रकाश ही नहीं, शब्द-प्रवाह भी पृथ्वी पर निरन्तर झर रहा है। अन्तरिक्ष की इन आवाजों का रहस्य वैज्ञानिक ढूँढने में जुटे हैं। आशा है, निकट भविष्य में वे ऐसे समर्थ और संनेदनशील यन्त्र बना सकेंगे, जो इन शब्दों को सुन सकें।'

दिव्य ध्वनियों का रहस्य भारतीय मनीषियों को शताब्दियों पूर्व ज्ञात था। महर्षि पातंजलि ने योगसूत्र में विभूतिवाद [४१] में लिखा है—

"श्रौत्राकाशयोः सम्बन्ध संयमाद्धिव्यं श्रोत्रम्॥"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थात्—श्रवणोन्द्रिय तथा आकाश के सम्बन्ध पर संयम करने से दिव्य ध्वनियों को सुनने की शक्ति प्राप्त होती है।

वस्तुत: प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर ने जो कान दिये हैं, उनकी सामर्थ्य अनुपम है। प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि कानों की मदद से मनुष्य लगभग ५ लाख आवाजें सुनकर पहचान सकता है। जबकि सैकड़ों फुट ऊँचे एण्टीना, ट्रान्समीटर, रिसीवर, सुपर फ्रीक्वेन्सी वाली रेडियो ऊर्जा इन्डिकेटर, माडुलेटर, सिन्क्रोनाइजर जैसे अनेकानेक यन्त्र-प्रणालियों से सज्जित राडारों में इससे बहुत कम क्षमता होती है। सामान्यत: कानों की बाह्यमुखी संवेदनधर्मिता और प्रखर एकाग्रता का अभाव व्यक्ति की श्रवण सामर्थ्य को सीमित रखता है। परन्तु कर्णेन्द्रिय की शक्ति को योग-साधना द्वारा जगाया जा सकता है और तब अनन्त ब्रह्माण्ड में होने वाली हलचल, पृथ्वी के चलने की आवाज, और घोष, मन्दाकिनियों के बहने का स्वर, उल्काओं की टक्कर के भीषण निनाद सभी कुछ किसी भी स्थान में बैठकर सुने जा सकते हैं। परन्तु ऐसा सम्भव तभी है, जब सूक्ष्म और कारण शरीर में सन्निहति श्रवण-शक्ति को विकसित किया जाय।

भारतीय मनीषियों ने 'शब्द-ब्रह्म' एवं नाद-ब्रह्म की बात कही है। अकूत, अनन्त, विराट्, सर्वव्यापी सत्ता का एक रूप शब्द और नाद भी है। ओंकार शब्द भी है, नाद भी। शब्द और उसके निहितार्थ दोनों का अपना महत्त्व है। नादानुसंधान सूक्ष्म शब्द-प्रवाह को सुनने की क्षमता विकसित करने वाला साधन-विधान ही है। परा प्रकृति से सम्बन्धित सूक्ष्म जगत की सचेतन हलचलें ध्वनि रूप में भी परिभ्रमण करती है और शब्द रूप में भी। ये हलचलें नादयोग के अभ्यास से सुनी-समझी जा सकती हैं। ब्रह्माण्ड के अज्ञात केन्द्र से धरती पर आने वाले विलक्षण अन्तर्ग्रही ध्वनि प्रवाह से भूलोक के विभिन्न पदार्थों एवं क्रिया-कलापों का सूत्र संचालन होता है, ऐसा इन अन्तरिक्षीय ध्वनि प्रवाहों के अध्ययन के उपरान्त विज्ञानियों ने माना है।

प्रकृति में संव्याप्त इन सूक्ष्म हलचलों को भली-भाँति समझने की क्षमता भारतीय अन्तरंग में विद्यमान है। दृश्य रूप में इन हलचलों को देख सकने में समर्थ बनाने वाली साधना को अनाहत योग कहते हैं। नाद और शब्द रूप में भी उन्हें जाना-समझा जा सकता है और इस साधना को ही नाद-योग कहा जाता है। इन सूक्ष्म शब्दों को और उनमें छिपे भावों—दोनों को उसके द्वारा पकड़ा जा सकता है। उस हेतु सूक्ष्म शरीर के संयंत्र को विकसित करना होता है। सूक्ष्म-जगत से अनुभूतियों के आदान-प्रदान की भी अनेक विधियाँ हैं। इनमें से ध्वनियों और शब्दों के माध्यम से किये जाने वाले सूक्ष्म सम्पर्क को अध्यात्म विज्ञान में नादानुसंधान कहा जाता है।

जिस प्रकार इन अन्तरिक्षीय ध्वनि प्रवाहों का अध्ययन आधुनिक वैज्ञानिक कर रहे हैं, उसी प्रकार अध्यात्म-वैज्ञानिकों ने भी इस दिशा में व्यापक और विस्तृत अनुसंधान किये हैं और नादयोग का ढाँचा खड़ा किया है। उस साधना-विधान द्वारा चेतन और जड़ दोनों से सम्बन्धित जानकारियाँ मशीनों की तुलना में अधिक अच्छी तरह प्राप्त की जा सकती हैं।

नादयोग का अभ्यासी साधक थोड़े अभ्यास के उपरान्त अपने शरीरगत अवयवों की हलचल, रक्त प्रवाह, हृदय की धड़कन, पाचन-संस्थान आदि की जानकारी उसी भाँति प्राप्त कर सकता है, जैसे डाक्टर स्टेथिस्कोप आदि उपकरणों द्वारा प्राप्त करते हैं। अभ्यास बढ़ने पर दूसरों के शरीर की स्थिति का विश्लेषण भी संभव है। 'सूक्ष्म शरीर' की कर्णेन्द्रिय का विकास कर नादयोगी मनुष्य, पशु-पक्षियों और जीव जन्तुओं की मन:स्थिति को भी जान सकता है और संसार में घटित होने वाले घटनाक्रम को भी।

सूक्ष्म प्रकृति में हो रही हलचलों के संकेत शब्द—तरंगों को पकड़कर समझे जाते हैं। दूरवर्ती घटनाक्रमों के संकेत प्रकट करने वाली सूक्ष्म आवाजें पकड़कर उनसे घटना का देशकाल क्रम समझा जा सकता है। बिना उच्चारण के एक मन से दूसरे मन का परिचय, आदान-प्रदान हो सकता है। प्रकृतिगत संकेतों को पकड़ा जाना और अपने इच्छित संकेतों द्वारा प्रकृति में हलचलें पैदा कर सकना भी सम्भव है। दैवी संकेतों को समझने, ईश्वर के साथ वार्तालाप और भावनात्मक आदान-प्रदान करने में समर्थ बनाने वाली साधना ही नाद-साधना कही जाती है। सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय और अन्त:करण के संयुक्त प्रयास से यह सम्भव होता है। स्थूल कर्णेन्द्रिय की ग्रहण शक्ति तो स्वल्प और सीमित ही है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अतिस्वन ध्वनि-तरंगों का महत्व विज्ञानी जान चुके हैं और उनका उपयोग आज कपड़े धोने, सुखाने, सफाई तेल निकालने, कागज बनाने से लेकर इस्पात की मोटी चादरें काटने तथा अतिस्वन [अल्ट्रासोनिक] और महास्वन [सुपरसोनिक] विमानों के निर्माण तक में भिन्न-भिन्न ढंग से किया जा रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में अश्रव्य ध्वनियों के प्रयोग से शरीर के कोमल ऊतकों की जानकारी पाने और रोग-निवारण करने के कार्य हो रहे हैं। सुपर सानिक माइक्रोस्कोप प्रकाश सिद्धान्त पर बने माइक्रोस्कोपों से अधिक शक्तिशाली होते हैं। यह सब तो अश्रव्य ध्वनियों का रहस्य जानने का परिणाम है। अज्ञात लोकों से बरसने वाले ध्वनि प्रवाहों की जानकारियों की उपयोगिता इससे बढ़ी-चढ़ी होना स्वाभाविक ही है।

यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि नाद-ध्वनियाँ स्थूल कर्णेन्द्रियों से नहीं, सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय से सुनी जाती हैं। सूक्ष्म कानों की यह शक्ति अभ्यास और तन्मयतापूर्वक साधना द्वारा जगाई जाती है। सूक्ष्म कर्णेन्द्रियों के सिद्धान्त सूत्र योगदर्शन में निर्दिष्ट हैं—

"शब्दार्थ प्रत्ययानामितरेतराध्यासात् संकरस्तत् प्रविभाग संयमात् सर्वभूतरुत्ज्ञानम्।"

—योग सूत्र [३।१७]

अर्थात्—शब्द, अर्थ तथा प्रत्यय के परस्पर अभ्यास के कारण अभिन्न भास होता है। उनके प्रविभाग में संयम करने से सभी प्राणियों के उच्चारित शब्दों को अर्थ ज्ञान होता है।

वाक्-इन्द्रिय के विषय हैं—वर्ण समूह और कानों से सुनी जाती हैं ध्वनियाँ। कान वर्ण की ध्वनि ग्रहण करता है। इन ध्वनियों के क्रम को समझ के साथ ग्रहण करने की सूक्ष्म सामर्थ्य विकसित हो जाने पर ध्वनियों के संघात का मूल अभिप्राय हृदयंगम हो जाता है। इसी सामर्थ्य के बल पर योगी इच्छानुसार किसी भी प्राणी की उच्चारित वाणी का अभिप्राय समझ सकते हैं। यह हुआ सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय की प्रक्रिया का विश्लेषण, अर्थात् जब शब्द तन्मात्रा की साधना में सिद्धि प्राप्त हो जाती है और शब्दों की ध्वनियों के क्रम को अलग-अलग समझ सकने की विश्लेषण क्षमता आ जाती है, तब सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय विकसित समझनी चाहिए। इसे ही शब्द शक्ति सम्बन्धी संयम कह सकते हैं।

यह संयम-शक्ति विकसित होने पर जब श्रोत्रेन्द्रिय और आकाश के सम्बन्ध पर उसे केन्द्रित किया जाता है, तब आकाश में सतत् प्रवाहमान दिव्य ध्वनि-कम्पनों का कानों से ग्रहण सम्भव होता है।

ये दिव्य ध्वनियाँ उच्चस्तरीय प्रेरणाओं और प्रकाश द्वारा साधक के व्यक्तित्व को ऊपर उठाती और आगे बढ़ाती हैं। नाद संकेतों के सूत्रों के सहारे परमात्म-शक्ति से जुड़ा साधक अपूर्णता से पूर्णता की ओर बढ़ता चला जाता है।

प्रकृति और पुरुष का जिस स्थल पर संयोग होता है वहाँ से एक अनाहत ध्वनि निरन्तर प्रसृत और निनादित होती रहती है। योगियों, ऋषियों ने उस ध्वनि प्रवाह को ॐकार गुंजन—ब्रह्मनाद कहा है। उसी से सप्त-स्वर प्रस्फुटित हुए। श्रुति-शास्त्रों में प्रयुक्त होने वाले उदात्त अनुदान स्वरूप उसी के आरोह-अवरोह हैं। संगीत शास्त्र में वे ही आगे चलकर सा, रे, ग, म, प, ध, नि के स्वर सप्तक बन गये। जिस प्रकार सूर्यरथ के सप्त—अश्व उसके प्रभा किरणों में सन्निहित रंग हैं, उसी तरह ब्रह्मनाद का ध्वनि गुंजन सप्तधा स्वर लहरी में निनादित होता रहता है। प्रकृति के अन्तराल में एक प्रकार का ध्वनि स्पन्दन होता रहता है, जिसकी तुलना घड़ियाल में हथौड़ी मारने से उत्पन्न होने वाली टंकार से कर सकते हैं। टंकार के उपरान्त तो झनझनाहट होती है उसे दिव्यदर्शियों ने ॐकार ध्वनि कहा है। उनका मत है कि प्रकृति और ब्रह्म के संयोग से निस्सृत होने वाले ध्वनि प्रवाह के आघात प्रतिघात से ही सृष्टि की समस्त हलचलों का आरम्भ एवं अग्रगमन होता है। अणु सत्ता की गति यहीं से मिलती है। ऊर्जा की तरंग शृंखला इसी केन्द्र से उत्पन्न होकर ब्रह्माण्डव्यापी बनती है।

एकोऽहम् बहुस्यामि की उक्ति का आरम्भ इसी मर्म बिन्दु से आरम्भ होता है। नादयोग की नाभि यही है। शब्द ब्रह्म का अपनी माया स्फुरणा इच्छा के साथ चल रहा यही संयोग ॐकार के रूप में निस्सृत होकर परा और अपरा प्रकृति के गह्वर में जड़ चेतन की हलचलों एवं गतिविधियों का कारण बनता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दीवार में लटकी घड़ी का पेन्डुलम एक बार हिला दिया जाय तो घड़ी की चाबी रहते वह अपने क्रम में निरन्तर हिलता रहता है। ठीक इसी प्रकार एक बार आरम्भ हुई सृष्टि एवं संचालित प्रक्रिया के अनुसार अपना कार्य करती अपनी धुरी पर एक बार घुमाये गये लट्टू की तरह देरी तक घूमती रहती है। इसकी संचालक सत्ता शब्द ब्रह्म की वह ध्वनि है जिसे ॐकार कहते हैं। यों सुनने में ध्वनि के सप्त स्वर और उनके आरोह-अवरोह शब्दों का उतार-चढ़ाव भर प्रतीत होते हैं। उनका उपयोग वाद्य-गायन में प्रयुक्त होना भर लगता है पर वस्तुतः उनकी सीमा इतनी स्वल्प नहीं है। मनुष्यकृत स्वर लहरी के अतिरिक्त प्रकृतिगत स्वर प्रवाह और जीवधारियों द्वारा विविध प्रकार के उच्चारण भी कम महत्व के नहीं है। मेघ-गर्जन, समुद्र की लहरों का विद्युत शोर की कड़क, वायु की सनसनाहट तथा पक्षियों का कलरव सुनकर ऐसा लगता है कि स्वर ब्रह्म अपने अगणित ध्वनि प्रवाहों में न जाने कितने भाव भरे संकेतों और सन्देशों की इस विश्व ब्रह्माण्ड में भरता रहता है।

यह सब आहत ध्वनियाँ हैं जो कानों से सुनी जा सकती हैं। वे ध्वनियाँ भी विज्ञान की पकड़ में आ गयी हैं जो मनुष्य के कानों से सुनी जा सकने वाली मर्यादा से या तो ऊँची हैं या नीची। आविष्कृत साधन उपकरणों द्वारा उन्हें उसी प्रकार सुना जा सकता है जैसे खुली आँख से न दीखने वाले लघु जीवाणु सूक्ष्मदर्शक यन्त्रों से भली प्रकार देखे जा सकते हैं। ये प्रकृतिगत ध्वनियाँ हैं जो जड़ अणुओं के परस्पर आघात से उत्पन्न होती हैं।

इससे उच्चस्तर की ध्वनियाँ वे हैं जिन्हें जड़ परमाणुओं द्वारा स्पन्दित नहीं कहा जा सकता। उनका सीधा सम्बन्ध चेतना जगत के जीवन प्रवाह से है—मूल स्रोत चेतना तत्व है। इसीलिए उन्हें ब्रह्म वाणी भी कहते हैं। इसी का अलंकारिक वर्णन कृष्ण की बंशी, शंकर के डमरू, सरस्वती की वीणा के रूप में किया जाता है। सरस्वती की वीणा मानवी काया का मेरुदण्ड, कृष्ण बंशी की कण्ठ स्थित स्वर नलिका, शंकर का डमरू धड़कता हुआ हृदय कहा जा सकता है। लप-ढप को, धड़कन को शंकर का डिमडिम घोष कहा जाता है। श्वास नलिका में वायु का आवागमन 'सोऽहम्' की ध्वनि में कृष्ण-बाँसुरी के रूप में निनादित होता है।

कृष्ण द्वारा रात्रि की नीरवता में बंशी बजाये जाने और गोपियों के घर-बार छोड़कर उस रास आह्वान को सुनकर निकल पड़ने का सविस्तार वर्णन भागवत आदि पुराणों में मिलता है। यह सामाजिक एवं व्यावहारिक मर्यादाओं की दृष्टि से प्रतिकूल लगता है, पर अध्यात्म परम्परा के सर्वथा अनुकूल है। वस्तुतः कथा-गाथाओं में रहस्यमय पहेली की तरह गूढ़ आध्यात्मिक रहस्यों का उद्घाटन किया गया है। रास-लीला के पीछे नादयोग की व्याख्या, विवेचना ही सन्निहित है। भगवान बंशी बजाते हैं अर्थात् मधुर दिव्य रसास्वादन के लिए आह्वान करते हैं। गोपियाँ समस्त सांसारिक बन्धनों को तोड़कर उस ओर दौड़ पड़ती हैं। संकेत आह्वान का स्वागत करती हैं और उसी के लिए आकुल-व्याकुल होकर अपना समर्पण कर देती हैं। अपना आपा खोकर दिव्य ध्वनि के साथ थिरकन, नाचना आरम्भ कर देती हैं। यही रास लीला है। कृष्ण अर्थात् परमात्मा, बंशी ध्वनि अर्थात् ईश्वरीय प्रयोजनों के लिए चल पड़ने का संकेत, गोपियाँ अर्थात् जीव सत्ता की भौतिक एवं आत्मिक सम्पदाएँ रास-नृत्य अर्थात् दिव्य संकेतों के अनुरूप कठपुतली जैसा भाव-विभोर आचरण एवं समर्पण।

वर्णन मिलता है, कि रासलीला में सम्मिलित गोपियाँ आनन्द विमग्न हो जाती थीं। यों एक पुरुष के साथ इतनी नारियों का सहवास एवं नृत्य न तो अभिनन्दनीय हो सकता है और न ही सामाजिक मर्यादाओं के अनुकूल। पर आत्मा और परमात्मा के बीच आदान-प्रदान का जो भावभरा अलंकारिक चित्रण रासलीला में किया गया है वह पहेली जैसा लगते हुए भी आध्यात्मिक दृष्टि से अर्थपूर्ण तथा तथ्यपूर्ण है। रास की प्रधान नायिका राधा है और अन्य सभी सखियाँ सहेलियाँ। वे उनके साथ पूर्ण स्नेह—सहयोग के साथ नृत्य में तल्लीन होती हैं। राधा अर्थात् आत्मा, उनकी सहयोगिनी सखियाँ, अन्तरंग की सत्प्रवृत्तियाँ, बौद्धिक विभूतियाँ और सांसारिक सम्पदाएँ। ये सभी आत्मा का आकांक्षा में सहयोग देती हैं। आत्मा और परमात्मा के मिलन सत्प्रयत्नों में कोई अवरोध नहीं उत्पन्न करतीं वरन् उसे सफल बनाने के लिए अपना पूर्ण समर्पण प्रस्तुत करती हैं। आत्मा की दिव्य आकांक्षा की पूर्ति में उनका पूरा-पूरा सहयोग समर्थन मिलता है। यह स्थिति प्राप्त हो सके तो हर राधा को—हर आत्मा को रासलीला का—जीव ब्रह्म मिलन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का दिव्य आनन्द मिल सकता है। नादयोग की साधना इसी उपलब्धि के लिए की जाती है।

नादयोग के साधक सूक्ष्म कर्णेन्द्रियों के माध्यम से घण्टा, शंख, नाद, बाँसुरी, वेणु, मेघनाद, निर्झर प्रवाह आदि के रूप में सुनने का प्रयास करते हैं और उसी आधार पर सूक्ष्म प्रकृति के अन्तराल में चल रही अगणित गतिविधियों के ज्ञाता बन जाते हैं। इन स्वर निनादों के साथ जो अपना सम्बन्ध जोड़ लेता है, वह प्रकृति पर आधिपत्य स्थापित करने और उसके अनुदानों का लाभ उठाने में सफल हो जाता है। नादयोग की साधना में कानों को सूक्ष्म चेतना की दिव्य ध्वनियाँ सुनाई देती हैं। कई बार ये मन्द होती हैं और कई बार अत्यन्त प्रखर। ध्वनियों को श्रवण करने के साथ-साथ उच्चस्तरीय विचारों एवं भावनाओं का समन्वय भी उनके साथ होना चाहिए। कृष्ण की बाँसुरी सुनने की भाव भूमिका का वर्णन किया जा चुका है। बंशी के अतिरिक्ति भी कई प्रकार की ध्वनियाँ साधकों को सुनाई पड़ती हैं। उनका तत्व दर्शन समझना भी नादयोग के साधकों के लिए आवश्यक है।

अन्य स्वर लहरियों की भी तात्विक संगति बिठायी जाती है। भगवती सरस्वती अपनी वीणा झंकृत करते हुए ऋतम्भरा प्रज्ञा और अनासक्त भूमा के मृदुल मनोरम तारों को झनझना रही हैं और अपनी अन्तःचेतना में वही दिव्य तत्व उभर रहे हैं। साधक को वीणा की झंकार सुनते समय यह भावना करनी चाहिए। भगवान शंकर का डमरू बज रहा है—उससे प्रलय के—मरण के संकेत आ रहे हैं और सुझाया जा रहा है कि इस नश्वर काया का अन्त करने वाला ताण्डव किसी भी क्षण सम्मुख आ सकता है, इसलिए प्रमाद में न उलझा जाय। माया-मोह से निकला एवं यथार्थता को समझा जाय। शंखनाद की ध्वनि को महाभारत के पाञ्चजन्य का, महाकाल के भैरव नाद का उद्घोष माना जाय और ऐसा अनुभव किया जाय कि अब महाप्रयाण का ऐसा समय आ पहुँचा है जिसमें आनाकानी करने की गुँजाइश नहीं है। युग की—कर्त्तव्य की—पुकार गुंजित हो रही है कि अविलम्ब जीवनोद्देश्य की दिशा में कदम बढ़ाया जाय।

नादयोग का अभ्यास जब परिपक्व होने लगता है तो भावोत्कर्ष से आगे बढ़कर सुविस्तृत अन्तरिक्ष में संव्याप्त हलचलों को समझने का अवसर मिलता है। 'ब्रह्माण्ड' में संसार को प्रभावित करने वाली अगणित ब्रह्म प्रेरणाओं के प्रवाह बहते रहते हैं। उनके स्पन्दन हमारी कर्णेन्द्रियों से शब्द रूप में टकराते हैं। उन्हें पहचानने और पकड़ने की क्षमता साधना में परिपक्वता के साथ-साथ सहज ही बढ़ने लगती है। सूक्ष्म जगत की अदृश्य घटनाओं का बोध होने लगता है। क्या हो रहा है और क्या होने वाला है, उसकी जानकारी नादयोग के साधक को मिल जाती है। इस अविज्ञान स्तर को ज्ञात स्तर पर उतारने में नादयोग की साधना बहुत ही उपयोगी एवं प्रभावशाली सिद्ध होती है।

नाद साधना में मिलने वाले संकेत सूत्र ऐसे होते हैं, जिनके सहारे परमात्मा के विभिन्न शक्ति स्रोतों के साथ आदान-प्रदान कर सकना सम्भव है। जिस प्रकार टेलीग्राम, टेलीफोन, वायरलेस, टेलीविजन पद्धतियों का आश्रय लेकर हम दूरवर्ती व्यक्तियों से सम्पर्क साध सकते तथा परस्पर विचार-विनिमय कर सकते हैं। ठीक उसी तरह ईश्वर के विभिन्न शक्ति केन्द्रों के साथ इन ध्वनियों के माध्यम से सम्बन्ध मिला सकते हैं और उस स्थिति पर पहुँच सकते हैं कि अपनी बात ईश्वर तक पहुँचा सकें और उससे आवश्यक निर्देश प्राप्त कर सकें। सिद्ध पुरुषों एवं योगियों में यह विशेषता दिखायी पड़ती है। वे ऐसे ही माध्यमों के आधार पर अपने को परमेश्वर के साथ जोड़कर अभीष्ट आदान-प्रदान का लाभ प्राप्त करते हैं।

नादयोग की महिमा से शास्त्रों के पन्ने भरे पड़े हैं—

उक्तात्ममानतः पूर्वं पश्चात् च विविधः कंपे।
अभिव्यंजन्त एतस्य नादास्तत्सिद्धि सूचकाः॥
अनाहतमनुच्चार्य शब्द ब्रह्म परं शिवम्।
ब्रह्मरध्रं गतेवायौ नादश्चोत्पद्यतेऽनघ॥
शंख ध्वनि निभश्चादो मध्ये मेघध्वनिर्यथा॥
पवने व्यौम सम्प्राप्ते ध्वनि रुत्पद्यते महान्।
घण्टादीनां प्रवाद्यानां ततः सिद्धिरदूरतः॥

—महायोग विज्ञान

भावार्थ यह है कि जब अन्तर में ज्योति स्वरूप आत्मा का प्रकाश जागता है तब साधक को कई प्रकार के नाद सुनाई पड़ते हैं। इसमें से एक व्यक्त होते हैं दूसरे अव्यक्त। जिन्हें किसी बाहर के शब्द से उपमा न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दी जा सके उन्हें अव्यक्त कहते हैं, यह अन्तर में सुनायी पड़ते हैं और उनकी अनुभूति मात्र होती है। जो घण्टा आदि की तरह कर्णेन्द्रियों द्वारा अनुभव में आवें उन्हें व्यक्त कहते हैं। अव्यक्त ध्वनियों को अनाहत अथवा शब्दब्रह्म भी कहा जाता है।

चित्त की चंचलता की रोकथाम करने में नादयोग की साधना विशेष रूप से सहायक सिद्ध होती है। नादयोग चंचल मन के निग्रह एवं प्राणों के निरोध में उसी प्रकार सफल सिद्ध होता है, जिस तरह सपेरा विषधर चंचल सर्प को पकड़ने में। इस अभ्यास में चित्तवृत्ति नाद श्रवण में लीन हो जाती है। फलस्वरूप मन की चंचलता अपने आप रुक जाती है। इससे चित्त में शान्त भाव प्रबल होता है और वासना की मादकता से विरक्ति होती चली जाती है। शास्त्रकार इसी तथ्य को स्पष्ट करता है—

बद्धः सुनाद-गन्धेन सद्यः संत्यक्त चापलम्।
नाद ग्रहणतश्चिन्तमतरंग भुजंगम्॥
विस्मृत्य विश्वमेकाग्रं कुत्रचिन्नहि धावति।
मदोन्मत गजेन्द्रस्य विषयोद्यान चारिणः॥
नियामन समर्थोऽयं निनादो निशितांकुशः।

अर्थात्—सपेरे की बीन से सुध-बुध खो देने वाले सर्प की तरह नाद साधना से चित्त स्थिर हो जाता है और अपनी चपलताएँ भूल जाता है। वह कहीं दौड़ता भागता नहीं। विषय वासनाओं के उद्यान में मदोन्मत्त गजेन्द्र की तरह विचरण करने वाले मन के नियमन में यह नाद का अंकुश ही समर्थ है।

मस्तिष्क को ज्ञान का केन्द्र माना गया है। वस्तुतः वह ज्ञान ग्रहण की क्षमता का केन्द्र है, ज्ञान का नहीं। ज्ञान तो बाहर से आता है। उसे प्रधानतया नेत्रों और कानों के माध्यम से ग्रहण किया जाता है। दृश्य जगत से सम्पर्क साधकर संसार के स्वरूप को समझने में सहायता मिलती है और कानों के माध्यम से उपलब्ध होने वाली ध्वनियों, विचारों और हलचलों की अदृश्य स्थिति का परिचय देती है। सामान्य जीवन में मनुष्य को अपने को समर्थ, समझदार बनाने एवं सफल सम्पन्न बनाने में इन्हीं माध्यमों का सहारा लेना पड़ता है।

इन्द्रियों की शक्ति सामान्य है। प्रकृति ने हर प्राणी को उतनी ही क्षमताएँ प्रदान की हैं, जितनी से कि वह अपनी सामान्य जीवन-चर्या एवं निर्वाह आवश्यकता पूरी कर सके। आवश्यकता एवं पात्रता से जो बाहर है उसे उपलब्ध करना आमतौर से हानिकारक ही सिद्ध होता है। अतएव प्रकृति ने अपने विपुल भण्डार में से उतने ही देने की उदारता दिखाई है जितने से कि दुरुपयोग से उत्पन्न संकटों का सामना न करना पड़े।

जितना चक्षुओं से दीखता है, वस्तुतः उसकी तुलना में दृश्य जगत असंख्य गुना विस्तृत है। इसी प्रकार कान जो सुनते हैं, उसकी तुलना में संसार में विद्यमान ध्वनि प्रवाह का विस्तार ही नहीं स्तर भी बड़ा है। विज्ञानी इस अदृश्य को सूक्ष्मदर्शी एवं दूरदर्शी यन्त्रों से एक सीमा तक देखते हैं। उसी प्रकार वे कानों की पकड़ से बाहर की ध्वनियों को भी सुनते हैं। इस अदृश्य दर्शन और अश्रव्य श्रवण से मनुष्य ने अत्यधिक लाभ उठाया है। टेलीविजन और रेडियो के माध्यम से अदृश्य देखना और अश्रव्य सुनना सर्वधारण के लिए सम्भव हो गया है।

अब इससे आगे बढ़ने की बात है। भौतिक विज्ञानी प्रकृति के अंचल में छिपे हुए उन विशिष्ट साधनों को उपलब्ध करने के लिए बेचैन हैं, जिनके आधार पर दर्शन और श्रवण क्षमता बढ़ सके और उस आधार से अविज्ञात को जानने तथा उस जानकारी से लाभ उठाने का अवसर मिल सके।

पाया गया है कि इस संसार में अगणित ध्वनियाँ प्रवाहित होती हैं। जिनमें से कुछ तो प्राणियों द्वारा उत्पन्न की गई हलचलों की होती हैं और कुछ बादल गरजने जैसे घटनाक्रमों की, किन्तु कुछ ऐसी भी होती हैं जो पृथ्वी को अन्तरिक्ष की—वातावरण की सम्भावनाओं की वह जानकारियाँ देती हैं जो सामान्यतया विदित नहीं होती। इन्हें सुनना या समझना सम्भव हो सके तो मनुष्य निकटवर्ती भूत एवं भविष्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ जान सकता है। उस आधार पर संकटों से बचने एवं सम्भावनाओं का लाभ उठाने में भारी सहायता मिल सकती है। इस सन्दर्भ में हुई प्रगति से आशा बँधती है कि योगाभ्यास स्तर पर इस दिशा में यदि ठोस प्रयत्न किये जा सकें तो मानवी ज्ञान की परिधि सामान्य से आगे बढ़कर असामान्य तक पहुँच सकती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अयन मण्डल में प्रतिक्षण सीटी की सी आवाज सुनाई देती है। यह ध्वनि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मित्र राष्ट्रों की सेना के रडार विभाग ने पकड़ी थी। उसके बाद सुप्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक बेर्कहासिन तथा ब्रिटिश वैज्ञानिक एकर्स्ली ने उस ध्वनि के स्रोतों का पता लगाया और पाया कि अयन मण्डल में विद्युत कणों में अनौखे राजपथ बने हुए हैं। पृथ्वी को चुम्बक मानकर ग्राफ बनाया जाय तो जिस स्थान पर चुम्बकीय विषुवत् रेखा बनती है ठीक उसी के ऊपर विद्युतकण ७ हजार मील की आश्चर्यजनक ऊँचाई से गुजरते हैं। अर्थात् अभी तक सृष्टि के उन पोले भागों को जिन्हें शून्य समझा जाता है, अत्यधिक समर्थ समझा जाने लगा है यह ध्वनि उन विद्युत तरंगों की गोलार्द्धों की ओर उछाली गई प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उत्पन्न होती हैं। तड़ित तरंग पहले विस्फोट के रूप में फूटती हैं या उसमें चटाका होता है जिससे एक आवाज होती है। यही लम्बे चुम्बकीय पथ पर फैलकर सीटी की ध्वनि ग्रहण कर लेती है। कई बार अन्य विलक्षण प्रकार के शोर भी सुनाई पड़ते हैं जिससे देव-दानवों के युद्ध का सा दृश्य उत्पन्न हुआ प्रतीत होता है। ध्रुवों पर आने वाले इस ध्वनि प्रवाह ने तो उसे और अधिक विस्मयकारी बना दिया है।

चेशायर इंगलैड की जोड्रेल वेधशाला में दुनियाँ का सबसे बड़ा रेडियो दूरदर्शी यन्त्र लगा है यह आकाश गंगा तथा सूर्य की सापेक्षता में उसके ग्रह-नक्षत्रों की ध्वनियाँ सुन सकता है और उनका ग्राफ भी बनाता है। इस ध्वनि की परावर्ती शक्ति द्वारा वैज्ञानिक किसी भी क्षेत्र का रेडियो चित्र बना देने में समर्थ हुये हैं। फैदम मीटर ऐसा ही एक यन्त्र है जो इस ध्वनि के आघात-प्रतिघात के द्वारा समुद्री जहाजों को यह सूचना देता रहता है कि उस स्थान से खाड़ी, द्वीप, अन्य जहाज या प्रायद्वीप कितनी दूरी पर हैं।

१९४२ की २८ फरवरी को इंगलैण्ड के सैनिकों को अपने रडार यन्त्र में एकाएक एक विलक्षण ध्वनि सुनाई दी। उसे सुनकर वे सम्मोहित से हो गये किन्तु तभी उनके ध्यान में आया कि कहीं ऐसा न हो यह जर्मनी जहाजों की कोई करामात हो। अतएव उस ध्वनि का पीछा किया गया। वैज्ञानिक उस समय आश्चर्यचकित और आविर्भूत हो उठे जब उन्होंने पाया कि वे सूर्य और उसके समूचे जगत में एक बार में जो ध्वनि उत्पन्न हो रही है उसे सुन रहे हैं। केवल उसी दिन इस तरह का दिव्य नाद सुन पाने का कारण यह था कि उसी दिन सूर्य के मध्यवर्ती क्षेत्र में एक तेज विस्फोट हुआ था।

वर्जीनिया अमेरिका के फोर्ट बेलबोइट में इसी उददेश्य के लिए विश्व सूचना केन्द्र स्थापित है जब भी कोई सूर्य विस्फोट होता है वह दुनियाँ भर को सूचना देकर चुम्बक क्षेत्र के अध्ययन की प्रेरणा देता है। इन स्फोटों के अध्ययन की प्रणाली विकसित हो जाने के कारण ही आज रेडियो कारपोरेशन ऑफ अमेरिका कई दिन पूर्व ही यह भविष्यवाणी कर सकने में सक्षम हो गया है कि किस दिन पृथ्वी के किस भाग में कैसी स्थिति होगी। आज तो प्राय: हर देश में मौसम कार्यालय विकसित हो रहे हैं ज्योर्तिविज्ञान के क्षेत्र की यह "क" स्तर की उपलब्धि है "ज्ञ" तक पहुँचने तक मनुष्य के सामने आज खड़ी काल, दिक् और ब्रह्माण्डों की सीमायें टूट जायेंगी और वह यान्त्रिकी के सहारे भी त्रिकालदर्शी हो सकता है। वस्तुत: कुण्डलिनी विज्ञान यान्त्रिकी ही है जिसमें शरीर जैसे सर्व शक्ति सम्पन्न यन्त्र को गतिशील बनाकर उस स्थिति को प्राप्त किया जाता है।

भूकम्प के क्षणों में होने वाले परिवर्तनों की जाँच के लिए १९५८ के सक्रिय सौर कलक वर्ष में भू भौतिक शास्त्रियों ने बेधशालाओं में अनेक तरह के उपकरण लगाये थे उन उपकरणों से ज्ञात हुआ कि भूकम्प के क्षणों में पृथ्वी अनेक प्रकार की ध्वनियाँ करती है। यह कराहने जैसी, वायु की सी, साँय-साँय अथवा हाथी के चिंघाड़ने जैसी, कईबार तो यह ध्वनियाँ पिस्तौल और तोप छूटने जैसी वीभत्स होती हैं। हमारी पृथ्वी सूर्य और आकाश से बरसने वाली ऊर्जा तरंगों के प्रति अधिक सम्वेदनशील है। यह ध्वनियाँ उसी का परिणाम है। इन ध्वनियों की समीक्षा प्रसिद्ध भूगर्भ शास्त्री अलक्जेडर मारशैक ने इन शब्दों में की है "सूर्य का प्रत्यक्ष क्रियांओं के कारण पृथ्वी के गहन अन्तराल में उत्पन्न बलों के कारण यह शोर सुनाई देते हैं इन्हें न देखा जा सकता है न अनुभव किया जा सकता है।

साइबेरिया प्रायद्वीप के प्रशान्त तट पर एल्युशन द्वीप समूह फैला हुआ है उसीमें एक स्थान कामचत्मा भी है। १९५२ में वहाँ एक भयानक भूकम्प आया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूकम्प की तरंगे इतनी लम्बी थी कि उसकी तरंगें का एक सिरे से दूसरे सिरे का अन्तर कोई १२०० मील था। प्रत्येक साढ़े ६ मिनट बाद एक तरंग आती थी और बीस तरंगे मिलकर पृथ्वी का घेरा डाल लेती थीं। यह स्थिति प्रायः २४ घन्टे तक बनी रही। इन २४ घण्टों में सामान्य पृथ्वी के निवासी तो भयग्रस्त अवस्था में बने रहे किन्तु वैज्ञानिकों ने सूक्ष्ममापी यन्त्रों से पृथ्वी के थरथराने की जो ध्वनि सुनी वह पुराणों के उस आख्यान से सर्वथा मेल खाती हैं जिसमें प्रलय के दृश्य का चित्रण करते हुए लिखा गया है कि पृथ्वी इस तरह उद्वेलित होती है जैसे कोई विशालकाय घंटा। उससे घंटा निनाद की सी प्रलयंकर ध्वनि सुनाई देती है। वैज्ञानिकों ने जो आवाज सुनी वह भी घन्टे के झनझनाने की सी ध्वनि थी। इस नियम बद्ध आन्दोलन के पीछे और किसी का नहीं सूर्य के अन्तः आन्दोलन का ही हाथ था।

योगाभ्यास से मानवी अन्तराल में छिपे अति महत्वपूर्ण उपकरणों को जागृत किया जाय तो वे इतने सक्षम हो सकते हैं जितने कि अब तक के बने उपकरणों में से कम भी नहीं हैं। चेतना की प्रयोगशाला सूक्ष्म शरीर है उसमें इतने बहुमूल्य यन्त्र जुड़े हुए हैं कि प्रयोग का अभ्यास होते ही चमत्कार प्रस्तुत करने लगते हैं। सूक्ष्मदर्शी के लिए आज्ञाचक्र में सन्निहित तृतीय नेत्र त्राटक के अभ्यास से जागृत किया जाता है और उससे अदृश्य दर्शन का लाभ मिलता है। उसी प्रकार सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय के सहारे नाद योग की साधना द्वारा दिव्य श्रवण की क्षमता प्राप्त होती है। साधना से पात्रता बढ़ती है। और तदनुसार प्रकृति का रहस्यमय भण्डार साधक को करतल गत होता है। इन्हीं उपलब्धियों में सूक्ष्म ध्वनियों को सुन सकने की सफलता का अपना स्थान और महत्व है।

ब्रह्माण्ड में कान लगाइये मनोवांछित खबरें पाइये

उस समय की बात है, जब सिकन्दर पंजाब की सीमा पर आ पहुँचा था एक दिन, रात को उसने अपने पहरेदारों को बुलाया और पूछा—यह गाने की आवाज कहाँ से आ रही हैं? पहरेदारों ने बहुत ध्यान लगाकर सुनने की कोशिश की पर उन्हें तो झींगुर की भी आवाज सुनाई न दी। भौंचक्के पहरे दार एक दूसरे का मुँह देखने लगे, बोले महाराज! हमें तो कहीं से भी गाने की आवाज सुनाई नहीं दे रही।

दूसरे दिन सिकन्दर को फिर वही ध्वनि सुनाई दी, उसने अपने सेनापित को बुलाकर कहा—देखो जी! किसी के गाने की आवाज से मेरी नींद टूट जाती है। पता तो लगाना यह रात को कौन गाता है। सेनापति ने भी बहुतेरा ध्यान से सुनने का प्रयत्न किया किन्तु उसे भी कहीं से कोई आवाज सुनाई नहीं दी। मन में तो आया कि कह दें आपको भ्रम हो रहा है पर सिकन्दर का भय क्या कम था, धीरे से बोला—महाराज! बहुत प्रयत्न करने पर भी कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा, लेकिन अभी सैनिकों को आपकी बताई दिशा में भेजता हूँ अभी पता लगा कर लाते हैं कौन गा रहा है।

चुस्त घुड़सवार दौड़ाये गये। जिस दिशा से सिकन्दर ने आवाज का आना बताया था—घुड़सवार सैनिक उधर ही बढ़ते गये बहुत पास जाने पर उन्हें एक ग्रामीण के गाने का स्वर सुनाई पड़ा। पता चला कि वह स्थान सिकन्दर के राज प्रासाद से १० मील दूर है। इतनी दूर की आवाज सिकन्दर ने कैसे सुनली सैनिक-सेनापति सभी इस बांत के लिये स्तब्ध थे। ग्रामीण एक निर्जन स्थान की झोंपड़ी पर से गाता था और आवाज इतना लम्बा मार्ग तय करके सिकन्दर तक पहुँच जाती थी। प्रश्न है कि सिकन्दर इतनी दूर की आवाज कैसे सुन लेता था दूसरे लोग क्यों नहीं सुन पाते थे? सेनापति ने स्वीकार किया कि सचमुच ही अपनी ज्ञानेन्द्रियों को सन्तुष्ट करके केवल वही सत्य नहीं कही जा सकती है। अतीन्द्रय सत्य भी संसार में है उन्हें पहचाने बिना मनुष्य जीवन की कोई उपयोगिता नहीं।

दूर की आवाज सुनना विज्ञान के वर्तमान युग में कोई बड़े आश्चर्य की बात नहीं है 'रेडियो डिटेक्शन एण्ड रेन्जिग' अर्थात 'रडार' नाम जिन लोगों ने सुना है वे यह भी जानते होंगे कि यह एक ऐसा यंत्र है जो सैकड़ों मील दूर से आ रही आवाज, आवाज ही नहीं वस्तु की तस्वीर का भी पता दे देता है। हवाई जहाज उड़ते हैं तब उनके आवश्यक निर्देश, संवाद और मौसम आदि की जानकारियाँ 'रड़ार' द्वारा ही भेजी जाती हैं और उनके संदेश रडार द्वारा ही प्राप्त होते है। बादल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छाये हैं, कोहरा घना हो रहा है, हवाई पट्टी में धुँआ छाया है रडार की आँख उसे भी बेध कर देख सकती है और जहाज को रास्ता बताकर उसे कुशलता पूर्वक हवाई अड्डे पर उतारा जा सकता है। छोटे रडार १५० मील तक की आवाज सुन सकते हैं। जापान ने ५०० मील तक की आवाज सुन सकने वाले रडार बनाये हैं। अमेरिका के पास तो ऐसे भी रडार है जो 'ह्यूटन' के चन्द्र वैज्ञानिकों को चन्द्रमा में उतरे हुए यात्रियों तक से बातचीत करा देते हैं। रडार यंत्र की इस क्षमता पर और उसकी खोज व निर्माण करने वाले वैज्ञानिकों के वुद्धि कौशल पर जितना ही आश्चर्य किया जाय कम है।

किसी विज्ञान जानने वाले विद्यार्थी से यह बात कही जाये तो वह हँस कर कहेगा—भाई साहब इसमें आश्चर्य की क्या बात—साधारण सा रेडियो-तरंगों का सिद्धान्त है। जब ध्वनि लहरियाँ किसी माध्यम से टकराती हैं तो वे फिर वापस लौट आती हैं उस स्थान वस्तु आदि का पता दे देती हैं। हवाई जहाज की ध्वनि को रेडियो तरंगों द्वारा पकड़ कर यह पता लगा लिया जाता है कि वे किस दिशा में कितनी दूर पर हैं। यह कार्य प्रकाश की गति अर्थात् १८६००० मील प्रति सैकिण्ड की गति से होता है। रेडियो तरंगों की भी यही गति होती है तात्पर्य यह है कि यदि उपयुक्त संवेदनशीलता वाला रडार जैसा कोई यंत्र हो तो बड़ी से भी बड़ी दूरी की आवाज को भी सैकेण्डों में सुना जा सकता है। देखा जा सकता है। प्रकाश से भी तीव्रगामी तत्वों की खोज ने अब इस सम्भावना को और भी बढ़ा दिया है और अब सारे ब्रह्माण्ड को भी कान लगा कर सुने जाने की बात को भी कोई बड़ा आश्चर्य नहीं माना जाता।

मुश्किल इतनी ही है कि कोई भी यंत्र इतने संवेदनशील नहीं बन पाते कि दशों दिशाओं से आने वाली करोड़ों आवाजों में से किसी भी पतली से पतली आवाज को जान सकें और भयंकर से भी भयंकर निनाद में भी टूटने-फूटने के भय से बची रहें। रडार इतना उपयोगी है पर इतना भारी भरकम कि उसे एक स्थान पर स्थापित करने में वर्षों लग जाते हैं। सैकड़ों फुट ऊँचे एण्टीना, ट्रान्समीटर, रिसीवर, बहुत अधिक कंपन वाली (सुपर फ्रिक्वेन्सी) रेडियो ऊर्जा, इंडिकेटर, आस्मीलेटर, माडुलेटर, सिंकोनाइजर आदि अनेकों यंत्र प्रणालियाँ मिलकर एक रडार काम करने योग्य हो पाता है। उस पर भी अनेक कर्मचारी काम करते हैं, लाखों रुपयों का खर्च आता है, तब कहीं वह काम करने के योग्य हो पाता है। कहीं बिजली का बहुत तेज धमाका हो जाय तो यह 'रडार' बेकार भी ही जाते हैं और जहाज यदि ऐसे हों जो अपनी ध्वनि को बाहर फैलने ही न दें तो 'रडार' उनको पहचान भी नहीं सकें। यह सब देखकर इतने भारी मानवीय प्रयत्न और मानवीय बुद्धि कौशल तुच्छ और नगण्य ही दिखाई देते हैं।

दूसरी तरफ एक दूसरा रडार—मनुष्य का छोटा सा कान एक सर्वशक्तिमान कलाकार—विधाता की याद दिलाता है जिसकी बराबरी का रडार संभवतः मनुष्य कभी भी बना न पाये। कान हलकी से हलकी आवाज को भी सुन और भयंकर घोष को भी बर्दास्त कर सकते हैं। प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि कानों की मदद से मनुष्य लगभग ५ लाख आवाजें सुनकर पहचान सकता है जबकि रडार का उपयोग अभी तक सीमित ही है।

कान के भीतरी भाग में, जो संदशों को मष्तिष्क में पहुँचाने का काम करता है ३०५०० रोयें पाये जाते हैं यह रोयें जिस श्रवण झिल्ली से जुड़े होते हैं वह तो १/२५०००००००००००००० इंच से भी छोटा अर्थात् इलेक्ट्रॉनिक माइक्रोस्कोप से भी मुश्किल से दिखाई दे सकने वाला होता है। वैज्ञानिकों का भी अनुमान है कि इतने सूक्ष्म व संवेदनशील यंत्र को बनाने में मनुष्य जाति एक बार पूरी तरह सभ्य होकर नष्ट हो जाने के बाद फिर नये सिरे से जन्म लेकर विज्ञान की दिशा में प्रगति करे तो ही हो सकती है (अर्थात मानवीय क्षमता से परे की बात है) इस झिल्ली का यदि पूर्ण उपयोग संभव हो सके तो संसार की सूक्ष्म से सूक्ष्म हल-चलों को, लाखों मील दूर की आवाज को भी ऐसे सुना जा सकता है मानों वह यहीं कहीं अपने पास ही हो या पास बैठे मित्र से ही बातचीत हो रही हो महर्षि पातंजलि ने लिखा है—

श्रोभाकाशयोः संबन्ध संयमाद्दिव्यं श्रोत्रम्

(पयो सूत्र ४०)

अर्थात्—श्रवणेन्द्रिय (कानों) तथा आकाश के संबंध पर संयम करने से दिव्य ध्वनियों को सुनने की शक्ति प्राप्त होती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह बात अब विभिन्न प्रयोगों से भी सिद्ध हो गई है। सामान्यत: हम ६ फुट की दूरी की आवाज का भी अधिकतम १/३०००००० वाँ हिस्सा ही सुन पाते हैं शेष कितनी ही मंद ध्वनि क्यों न हो वायुभूत हो जाती है। संसार के प्रत्येक पदार्थ में ऊर्जा विद्यमान है और चूँकि कोई भी स्थान ऊर्जा से रिक्त नहीं अतएव प्रत्येक ध्वनि कुछ ही समय में सारे ब्रह्माण्ड में उसी प्रकार फैल जाती है जिस प्रकार जल में फेंके गये कंकड़ से उत्पन्न लहरें जहाँ तक जल होता है वहाँ तक चली जाती हैं।

न्यूजर्सी अमेरिका की बेल टेलेफोन प्रयोगशाला के इंजीनियरों और वैज्ञानिकों ने एक ऐसे 'भवन' का निर्माण किया जो पूरी तरह शब्द प्रूफ था अर्थात् उसके अन्दर बैठने वाले को बाहर की कैसी भी कोई भी ध्वनि सुनाई नहीं पड़ सकती थी। वैज्ञानिकों को अनुमान था कि उस समय निस्तब्ध, नीरवता का आभास होगा पर जब एक व्यक्ति को प्रयोग के तौर पर उसके अन्दर बैठाया गया तो उसे यह सुनकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि विचित्र प्रकार की ध्वनियाँ उसके कानों में गूँजने लगीं। एक ध्वनि किसी के सीटी बजाने की थी, एक ध्वनि प्रेस मशीन चलने की तरह धड़-धड़ की थी, एक ध्वनि चट-चट चटखने की सी। पहले तो वह व्यक्ति डरा पर पीछे ध्यान देने पर मालूम हुआ कि सीटी की आवाज नसों में दौड़ने वाले रक्त प्रवाह की ध्वनि थी। आमाशय में पाचनरसों की चट-चट और हड्डियों की कड़कहाट की ध्वनियाँ भी अलग-अलग सुनाई पड़ने लगीं मानों शरीर न हो पूरा कारखाना ही हो।

सामान्यत: यह ध्वनि हर व्यक्ति के शरीर से होती है पर अपने कानों की वाह्यमुखी संवेदनशीलता और एकाग्रता की कमी के कारण कोई भी उन्हें सुन नहीं पाता। पर यदि अभ्यास किया जाय और सूक्ष्म कानों की शक्ति जगाई जा सके तो अनन्त ब्रह्माण्ड में होने वाली हलचल पृथ्वी के चलने का आवाज, सौरघोष, उल्काओं की टक्कर के भीषण निनाद मन्दाकिनियों के बहने का स्वर, जीव-जन्तुओं के कलरव सब कुछ किसी भी स्थान में बैठकर उसी प्रकार सुने जा सकते हैं। जिस प्रकार बेल टेलेफोन, लैबोरेटरी के प्रयोग के समय।

योगी पातञ्जलि ने लिखा है—**'तत: प्रतिभ श्रावण जायन्ते'** अर्थात् 'स्वार्थ संयम के अभ्यास से प्रतिभ अर्थात् भूत और भविष्य ज्ञान और दूरस्थ शब्द सुनने की सिद्धि प्राप्त होती है।' योग विभूति में लिखा है—

'शब्दार्थ प्रत्ययानामितरेतराध्यासात् संकरस्तत्प्रतिभाग संयमात् सर्व भूतरुतज्ञानम्' ।१७॥

अर्थात्—शब्द, अर्थ और ज्ञान के अभ्यास से अभेद भासता है और उसके विभाग में संयम करने से सभी प्राणियों के शब्दों में निहित भावनाओं का भी ज्ञान होता है।'—यह सूत्र सिद्धान्त सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय की महान महत्ता का प्रतिपादन करते हैं और बताते हैं कि जब तक मनुष्य के पास ऐसा क्षमता सम्पन्न शरीर है उसे भौतिक शक्तियों की ओर आकर्षित होने की आवश्यकता नहीं। सिकन्दर १० मील तक ही सुन सकता था योगी तो अपने कान लगाकर सारे ब्रह्माण्ड को सुन सकता है। यह बात अब विज्ञान भी स्वीकार करता है कान की बनावट की नकल करके वैज्ञानिक ऐसे रडार बनाने के प्रयत्न में हैं जो शुक्र, मंगल और उससे आगे की भी गतिविधियों का पता लगा सकें। यह संभव हो जायगा पर कान का मुकाबला बेचारे यंत्र क्या कर सकेंगे। कानों से तो सारे ब्रह्माण्ड को सुना जा सकता है।

यह विश्व अनन्त आकाश की गोदी में क्रीड़ारत शिशु है। नीहारिकाओं, तारकमण्डलों, ग्रहपिण्डों का पिता और पोषक यह आकाश ही है। सृष्टि से पूर्व आकाश ही था। इसमें आरम्भिक हलचल ध्वनि और शब्द के ही रूप में ही हुई। ध्वनि प्रवाह ही आकाश का तन्मात्र रूप है। वही ऊर्जा का आदि स्रोत है। ध्वनि से प्रकाश, फिर इन दोनों के संयोगों-वियोगों से विविधस्तरीय तत्वों प्रवाहों एव चेतनाओं का उद्भव।

हमारी यह सृष्टि ध्वनि की झंकृत तरंगों की ही अभिव्यक्ति है। शक्ति का उद्गम केन्द्र शब्द ही है। उसी शक्ति की तरंगें विश्व-व्यापार को सम्भव बना रही हैं ये तरंगें ध्वनिमय हैं। चेतन हैं।

इन्ही चेतन तरंगों की थिरकन पर ही संसार गतिशील है। ऋण और धन कणों से विनिर्मित प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित सीमा में प्रकाशित हो रहे हैं। उन स्पन्दनों की अनुभूति सबको भले न हो पर है यह एक तथ्य। दृश्यमान जगत और कुछ नहीं तरंगों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकम्पन ही तो है। ऊर्जा उद्गम स्रोत यह कम्पन ही है। ये तरंगें ही घनीभूत होकर दृश्य जगत का निर्माण करती है। ब्रह्माण्ड के प्रत्येक परमाणु ध्वनि प्रकम्पनों से ही शक्ति प्राप्त करते हैं। असीम गति से घूमते हुए प्रोटॉन, इलेक्ट्रॉन के प्रकम्पन ही परमाणु की प्रचण्ड ऊर्जा के कारण हैं।

आधुनिक भौतिक विज्ञान के अनुसार भी किसी पदार्थ में विद्यमान शक्ति दूसरी वस्तुओं पर अपना प्रभाव दबाव तरंग के रूप में ही डालती है। यह प्रभाव तरंग के स्वरूप एवं आन्दोलन संख्या पर निर्भर करता है।

ध्वनि प्रकम्पन के सिद्धान्त का ही प्रयोग करके तरंगों द्वारा अन्तरिक्ष में विस्फोट किया जाता है। जड़ प्रकृति एवं मानवी चेतना दोनों को ही ध्वनि तरंगों द्वारा प्रभावित किया जा सकता है। जड़ के अन्तराल में विद्यमान भौतिक शक्ति एवं चेतना के गर्भ में छिपी आत्मिक शक्ति को इनसे जगाया जा सकता है। तेज वायुयानों के ध्वनि तरंगों से या बिजली के तेजी से कड़कने से कभी-कभी ऊँचे मकानों की काँच की खिड़कियाँ टूट जाती हैं। यह तो उन तरंगों की बात हुई जो सर्व सामान्य द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव की जाती हैं। ऐसी भी ध्वनि तरंगें अन्तरिक्ष में सदा चलती रहती हैं जिनको सुनने में हमारे कान असमर्थ हैं। क्योंकि निश्चित तरंगदैर्ध्य वाली ध्वनि तरंगों को ही मनुष्य के कान सुनने में समर्थ हैं। न्यूनाधिक होने पर वे सुनायी नहीं पड़ती, तो भी उनके अस्तित्व और मानव शरीर एवं वस्तुओं पर पढ़ने वाले उनके प्रभाव से इन्कार नहीं किया जा सकता।

कानों से सुनीं जाने वाली ध्वनियाँ इतनी उथली और हल्की होती हैं कि उनका किसी प्राणी या पदार्थ पर जानकारी देने के अतिरिक्त और कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। यों श्रवण ध्वनियों के साथ जुड़े हुए घटनाक्रम एवम् घुले हुए भाव प्रवाह अपना महत्व रखते हैं और नाम मात्र का प्रभाव भी डालते हैं पर वह सब मिलाकर भी श्रवणातीत ध्वनियों की क्षमता के समतुल्य नहीं हो सकता। प्रकृति का यह विनम्र अनुग्रह ही है कि वे सूक्ष्म ध्वनियाँ हमारे कानों, जीव सत्ता को बिना प्रभावित किये ही अन्तरिक्ष में उड़ती रहती हैं। यदि वे सुनाई देने लगती तो कोलाहल से कान बहरे हो जाते।

हमारे कान मात्र एक सैकिण्ड में २० से लेकर २० हजार तक कम्पन उत्पन्न करने वाली ध्वनियों को ही सुन सकते हैं। इससे न्यूनाधिक कम्पनों की ध्वनियाँ पकड़ में नहीं आती श्रवणातीत अतिस्वन ध्वनियाँ १० लाख से लेकर १००० करोड़ कम्पनों तक की तरंगें पर सेकिण्ड उत्पन्न करने वाली पाई गई है। इनकी सामर्थ्य उनकी सूक्ष्मता के आधार पर अधिकाधिक होती चली जाती है और अब भौतिक विज्ञानी इन अतिस्वन ध्वनियों के प्रयोगों द्वारा विविध भौतिक लाभों का सम्पादन सम्भव बना चुके हैं।

श्रवणातीत ध्वनियों का उपयोग जबसे वैज्ञानिकों ने जाना है तब से उनका अत्यन्त प्रभावशाली उपयोग करने लगे हैं। शल्य चिकित्सा, कीटाणु संहार, ऋतु परिवर्तन, मोटे धातु खण्डों को गला देना, जैसे प्रचण्ड कार्य उनसे लिये जा रहे हैं। कल-कारखानों के लिये तो उन्हें बिजली एवं अणु शक्ति की तरह काम में लाया जा रहा है।

यह भी खोज की जा चुकी है कि अतिस्वन ध्वनियों का एक विशेष रीति से उपयोग मनुष्य के शरीर, मन पर भी उत्तम प्रभाव डाल सकता है। देखा गया है कि इनसे शरीर की चयापचय प्रक्रिया में आश्चर्यजनक लाभकारी प्रभाव पड़ता है। शरीर के कोषों की प्रक्रिया इनके प्रभाव से तीव्र हो जाती तथा रक्त में ओषजन ग्रहण करने की गति क्षमता भी तीव्र हो जाती है। चिकित्सा शास्त्र में इसीलिए इनका प्रयोग होने लगा है। टूटी हड्डियों को जोड़ने की क्षमता बढ़ाने—शरीर के घातक जीवाणुओं को परिवर्तित परिष्कृत करने के लिए अतिस्वन ध्वनि तरंगों का प्रयोग होने लगा है।

जहाँ अतिस्वन ध्वनि तरंगों से स्वास्थ्य सम्वर्धन का लाभ मिलता है, वहीं ऐसी ध्वनि तरंगें भी हैं जो हानिकारक हैं। श्रवण सीमा के नीचे वाली ध्वनि तरंगों को इन्फ्रासाउंड कहते हैं। इनकी आन्दोलन संख्या १ से लेकर १० साइक्लिस तक प्रति सेकिण्ड होती है। ब्रिटिश एसोशिएशन ने इन निम्न आवृत्ति वाली ध्वनि तरंगों के घातक प्रभाव से जन सामान्य को सचेत किया है। उनका कहना है कि इन ध्वनि तरंगों से मानसिक असन्तुलन पैदा होता तथा मानसिक बीमारियों का जन्म हो सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस प्रकार ध्वनि के इन प्रवाहों और प्रयोगों की जानकारियाँ भौतिकी में भी अब बढ़ रही हैं तथा उनका प्रयोग विविध उद्देश्यों से किया जाता है। प्रत्येक पदार्थ की ध्वनि-तरंगों को ग्रहण करने की एक सीमा होती है और उसी सीमा के आसपास के ध्वनि—कम्पन ही उसके लिए अनुकूल होते हैं। अपनी सीमा से बहुत अधिक आवृत्तियों वाले अथवा बहुत कम आवृत्तियों वाले ध्वनि कम्पन-समूह उस पदार्थ—सत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

ध्वनि कम्पनों का जो क्रम मनुष्य मात्र के भीतर अविराम गति से चलता रहता है उसकी भी जानकारी की कहानी दिलचस्प है।

न्यूजर्सी अमेरिका की वेल टेलेफोन प्रयोगशाला के इंजीनियरों और वैज्ञानिकों ने एक ऐसे 'भवन' का निर्माण किया जो पूरी तरह शब्द-प्रूफ था अर्थात् उसके अन्दर बैठने वाले को बाहर की कैसी भी, कोई भी ध्वनि नहीं सुनाई पड़ती। वैज्ञानिकों का अनुमान था कि उस समय निस्तब्ध नीरवता का आभास होगा, पर जब एक व्यक्ति को प्रयोग के तौर पर उसके अन्दर बैठाया गया तो उसे यह अनुभव कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि विचित्र प्रकार की ध्वनियाँ उसके कानों में गुँजने लगीं। एक ध्वनि किसी के सीटी बजाने की थी। दूसरी ध्वनि प्रेस मशीन चलने की तरह धड़-धड़ की थी, एक तीसरी ध्वनि चटाचट चटखने की सी थी। पहले तो वह व्यक्ति डरा, पर पीछे ध्यान देने पर मालूम हुआ कि सीटी की आवाज नसों में दौड़ने वाले रक्त प्रवाह की ध्वनि थी। आमाशय में पाचन रसों की चट-चट और हड्डियों की कड़कड़ाहट की ध्वनियाँ भी अलग-अलग सुनाई पड़ने लगीं। मानों शरीर न हो, पूरा कारखाना ही हो जो निरन्तर ध्वनि संघातों के विविध रूप उत्पन्न कर रहा हो।

ध्वनियों के इन स्वरूपों तथा प्रभावों की जानकारी हमारे पूर्वज मनीषियों को बहुत पहले से रही है और वे हानिकर ध्वनि प्रवाहों से बचने तथा लाभकारी ध्वनि प्रवाहों का उपयोग करने में भी कुशल रहे हैं तथा इसके उपाय भी बता गये हैं। कीर्तन, भजन, श्लोक गान, साम संगीत, प्रार्थना-संगीत आदि द्वारा ध्वनि का उपयोग आन्तरिक स्तर ऊँचा उठाने में होता रहा है।

ध्वनियों के ग्रहण की इस दिव्य क्षमता का अभिवर्धन कर उससे आध्यात्मिक उत्कर्ष में सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए ही नाद साधना का सारा ढाँचा खड़ा किया गया है। साधक गण उससे लाभ उठाते और अपना व्यक्तित्व विकसित करते तथा जीवन लक्ष्य प्राप्त करने में समर्थ होते हैं।

नादब्रह्म की साधना शरीर और मन के संयोग से बन पड़ने वाली क्रिया का नाम है। इस माध्यम से हम पहले प्रकृति को पकड़ते हैं, इसके बाद पुरुष को पकड़ते हैं। साधना के क्रिया-कृत्यों में प्रथम भूमिका शरीर की होती है, शरीर के साथ मन की भी। क्योंकि मन और शरीर दोनों ही प्रकृति विनिर्मित है। मन को ग्यारहवीं इन्द्रिय माना गया है उसकी ऊँची भूमिका भावात्मक है, जो रसरूप परब्रह्म को अपने चंगुल में जकड़ती है।

ज्ञानेन्द्रियों के सहारे सांसारिक ही नहीं आध्यात्मिक प्रयोजन भी सिद्ध होते हैं। शब्द नेत्रों का विषय है। उसकी सूक्ष्म भूमिका प्रत्यक्ष देव प्रतिमा दर्शन अथवा ध्यान योग के माध्यम से निभती है। इसके बाद दो धाराओं वाली जिव्हा को वश में करना पड़ता है। जिव्हा स्वाद एवं संभाषण की दुहरी कार्यपद्धति सम्पन्न करती है। इसलिए उसे द्विधा कहा गया है। इस निमित्त अस्वाद व्रत, मौनधारण, उपवास के अतिरिक्त खेचरी मुद्रा का विधान है। उससे शरीर मन और आत्मा के तीनों क्षेत्र सधते हैं।

कर्णेन्द्रियों का शब्द मध्यम है। इसे सत्संग के द्वारा विकसित किया जाता है। प्रवचन, उपदेश, संगीत कीर्तन आदि के अतिरिक्त नाद योग की साधना करनी होती है। स्थल और सूक्ष्म नाद इस समूचे ब्रह्माण्ड में संव्याप्त है। वह संभाषण में ही नहीं घटनाओं से भी उत्पन्न होता है। भगदड़, मारपीट, धमाका, चीत्कार आदि ध्वनियाँ हैं, पर उनके सहारे यह जान लिया जाता है कि क्या घटना घटित हो रही है। आग लगने, आँधी चलने, पानी बरसने आदि की घटनाओं को अन्धे भी जान लेते हैं। शब्दों की अपनी भाषा है। भाषा न समझाने वाले संकेतों से भी अपने मनोभाव व्यक्त कर देते हैं।

स्थूल जगत की तरह सूक्ष्म जगत भी है और सूक्ष्म जगत में जो ध्वनियाँ गूँजती हैं वे हमारे कानों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पकड़ में नहीं आती। यदि उन्हें सुना समझा जा सके तो उनके आधार पर यह जाना जाता है कि कहाँ क्या घटना क्रम घटित हो रहा है और उसका प्रभाव अपने पर तथा अपने क्षेत्र पर क्या पड़ेगा?

कानों की ग्रहण शक्ति बहुत सीमित और भौंडी है। हमारे कान एक सैकिण्ड में बीस से लेकर बीस हजार तक कम्पन उत्पन्न करने वाली ध्वनियों को ही सुन सकते हैं इससे न्यूनाधिक शक्ति वाली ध्वनियाँ उनकी पकड़ में नहीं आती। श्रवणातीत सुपरसोनिक ध्वनियाँ १० लाख से लेकर १००० करोड़ तक के कम्पन हर सैकिण्ड उत्पन्न करती पाई गई हैं। वे हमारे कानो के इर्द गिर्द लेकर ही निकल जाने पर भी सुनाई नहीं देतीं। तात्पर्य यह है कि महाशब्द सागर में से हम अपने लिए उतना ही सुन पाते हैं, जितना कि जीवन निर्वाह के लिए नितान्त आवश्यक है।

श्रवणातीत ध्वनियों का उपयोग जब से वैज्ञानिकों ने जाना है तब से वे उनके प्रभावशाली उपयोग करने लगे हैं। शल्य चिकित्सा, कीटाणु, ऋतु परिवर्तन, मोटे धातु खण्डों को गला देना, जैसे प्रचण्ड कार्य उनसे लिये जा रहे हैं। उन्हें प्रकारान्तर से बिजली या अणु शक्ति की तरह काम में लाया जाने लगा है।

ताप और प्रकाश की गति का अपना महत्व है। उनकी गति भी कम नहीं है। किन्तु जहाँ तक घटनाक्रमों एवं विचार चेतना का सम्बन्ध है, वहाँ तक ध्वनि ही मनुष्य की ज्ञानवृद्धि में अत्यधिक सहायक पाई गई। समुद्र तल में होने वाली हलचलों या चलने वाली पनडुब्बियों की स्थिति एवं दूरी को जानने के लिए ध्वनि तरंगों के आधार पर नाप-तौल करने वाले यन्त्र ही काम करते हैं।

अन्तरिक्ष में संव्याप्त अदृश्य जगत की हलचलों की ध्वनि श्रवण की क्षमता समुन्नत करने की स्थिति को जाना जा सकता है। वे अभ्यस्त के लिए टेलीफोन, रेडियो स्तर की भूमिका निभा सकती हैं। यों कान से शब्द थोड़ी ही दूर तक सुनाई पड़ता है। पर रेडियो स्टेशनों से प्रसारणों को "सुपर इम्पोजिशन ऑफ साउण्ड वैव्स" के सिद्धान्त पर तीव्र बना दिया जाता है, तो एक सैकिण्ड से भी कम समय में वे तरंगें समूची पृथ्वी का चक्कर लगा लेती हैं। अन्तरिक्ष में उड़ रहे कृत्रिम उपग्रहों की गतिविधियों के सम्बन्ध में इसी आधार पर जानकारी मिलती या चालकों से बात-चीत होती है।

ध्वनि कहने-सुनने में एक प्रतीत होती है पर उसके कई भाग विभाग होते हैं। अल्ट्रा सोनिक, इन्फ्रा सोनिक, सोनिक, हाइपर सोनिक, सुपर सोनिक आदि के रूप में उनका वर्गीकरण एवं विभिन्न प्रयोजनों के लिए उनका प्रयोग होता है। फिर भी जितना जाना जा सका है, वह स्थूल जगत से सम्बद्ध है। अभी अदृश्य जगत और सुपर यूनिवर्स में काम करने वाली ध्वनियों का स्वरूप और क्रियाकलाप जानना बाकी है। यह कार्य शायद भौतिक उपकरणों के सहारे न हो सके। उसे मनुष्य के कानों में काम करने वाली झिल्ली को अधिक शक्तिशाली बनाकर साथ ही उसके साथ मानसिक अतीन्द्रिय क्षमताओं का समावेश करके ही उस स्थिति तक पहुँचा जा सकता है कि आकाश में भ्रमण करने वाले ग्रह, नक्षत्रों की हलचलों से अवगत हो सकें। जो घटनाक्रम घटित हो चुका अथवा भविष्य में घटित होने वाला है, उसकी सम्भावना का सही अनुमान लगा सके। पितरलोक, देवलोक या ब्रह्मलोक की सत्ताओं से उसी प्रकार विचार-विनिमय कर सकें, जैसे कि टेलीफोन द्वारा मनुष्य के बीच किया जाता है।

नाद का आरम्भिक अभ्यास कोलाहल रहित शान्त एकान्त स्थान में किया जाता है। दोनों कानों में उँगलियाँ, शीशियों के कार्क की, कपड़े की कड़ी गोली लगाई जाती है। जिससे बाहर के शब्द भीतर न पहुँचे। पालथी मारकर मेरुदंड और ग्रीवा को एक सीध में रखना आवश्यक है। प्रथम चरण में अन्तर्मुखी होना पड़ता है और तरह-तरह की आवाजें जो भीतर से अंग-प्रत्यंगों की हलचलों द्वारा उठती हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक सुनना पड़ता है। डाक्टर स्टेथोस्कोप को कान में लगाकर रोगी के हृदय की धड़कन सुनते हैं और उन्हें "लप-डप" के रूप में धड़कन तथा खरकराहट (मरमर) के रूप में उस क्षेत्र की विकृतियाँ समझ में आती हैं। नादयोग के आधार पर उन्हें सुना और अभ्यास द्वारा यह जाना जा सकता है कि शरीर के भीतर किस अंग अवयव में क्या सही और क्या गलत हो रहा है। यह नाद योग द्वारा अन्तर निदान की विधि है, जिसके द्वारा वर्तमान का ही नहीं शरीर का भावी घटनाक्रम भी जाना जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

टोरोण्टो के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा साउण्ड प्रूफ केबिन बनाया। जिसमें साँस लेने की व्यवस्था तो रहे पर बाहर का कोई शब्द सुनाई न पड़े। पाया गया कि उस स्थिति में बैठे हुए व्यक्ति को श्वाँस-प्रश्वाँस की क्रिया आँधी तूफान चलने जैसे-हृदय की धड़कन पत्थर तोड़ने जैसी, पेट भीतर के पाचन तंत्र की क्रियाऐं रेलगाड़ी चलने जैसी सुनाई पड़ रही थी। इस आधार पर अब एक नये विधान विज्ञान का अन्वेषण हो रहा है। जिसके सहारे हर व्यक्ति अपने भीतरी अंगों की गतिविधियाँ सुन सके और रोग के स्वरूप की स्वयं ही दूसरों के निरीक्षण-परीक्षण के बिना ही आत्म पर्यवेक्षण कर सके।

योग विज्ञान ने नादयोग के द्वारा न केवल स्थूल शरीर को समझने में सफलता पाई थी वरन् सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर की स्थिति जानने, सुधारने एवं वलिष्ठ करने की विधा खोज निकालने में भी सफलता पाई है। यह अनुभूतियाँ अन्तराल की गहन परतों में पहुँचती तथा यह बताती हैं कि विकृति का कहाँ क्या स्वरूप है और उसके निराकरण के लिए भौतिक एवं आत्मिक स्तर का क्या उपचार होना चाहिए? यह प्रथम चरण ऐसा है जिसे नाद योग की आत्म-निरीक्षण प्रक्रिया के साथ जोड़ा जा सकता है।

शब्द ब्रह्म की साधना के दो चरण!

स्थूल जगत में चल रही ध्वनि धाराओं के लाभ-हानि से विज्ञान के विद्यार्थी परिचित हैं कि अवांछनीय कोलाहल से अन्तरिक्ष कितना विक्षुब्ध होता है और उसका भयानक प्रभाव प्राणियों और पदार्थों पर किस प्रकार विपत्ति बरसाता है? बड़े शहरों और कारखानों से उत्पन्न कोलाहल के दुष्परिणामों को अब भली प्रकार समझा जाने लगा है और उसकी रोकथाम के लिए गम्भीर विचार हो रहा है। दूसरी ओर उपयोगी ध्वनियों का लाभ उठाने के लिए भी एक से एक बढ़े-चढ़े आविष्कारों की शृंखला सामने आ रही है। रेडियो जैसे उपकरणों से सम्वाद प्रेरणा आदि के कार्य लिये जा रहे हैं। इस प्रकार ध्वनियों को समझने, पकड़ने, रोकने एवं प्रेषण के लिए भी भरपूर प्रयत्न हो रहे हैं। लाउडस्पीकर, टेपरिकार्डर जैसे यन्त्रों की भरमार होती चली जा रही है। संगीत के प्रभाव से मनुष्यों की शारीरिक मानसिक विकृतियों के उपचार होते हैं। उनसे सुखद सम्वेदनाएँ उभारने का काम लिया जाता है। इतना ही नहीं दुधारू पशुओं का दूध बढ़ाने—बागवानी एवं कृषि कार्य के क्षेत्र में अधिक अच्छी सफलताएँ पाने के लिए लय और ताल बद्ध ध्वनि प्रवाहों का उत्साहवर्धक उपयोग हो रहा है। ध्वनि की शक्ति बारूद, भाप, बिजली, अणुशक्ति से अधिक ही आँकी गई है। प्रयत्नपूर्वक ऊर्जा उत्पन्न करना महँगा भी है और कष्ट साध्य भी। प्राकृतिक ऊर्जा जो ध्वनि प्रवाह के रूप में सर्वत्र संव्याप्त है उसको पकड़ने और उपयोग में लाने की आशा विज्ञान क्षेत्र में पुलकन उत्पन्न कर रही है। समझा जा रहा है कि इस क्षेत्र में जिस दिन विज्ञान को कुछ कहने लायक सफलता मिल सकेगी उस दिन वह अब की अपेक्षा असंख्य गुणी शक्ति का अधिपति बन जायगा।

यह तो हुई स्थूल जगत में चलने वाले ध्वनि प्रवाह की क्षमता एवं उपयोगिता की तनिक-सी झाँकी। इसके ऊपर सूक्ष्म जगत है। उसमें चलने वाले ध्वनि प्रवाह और भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। यद्यपि वे मशीनों की पकड़ में नहीं आते तो भी उनके अस्तित्व को चेतनात्मक उपकरणों की सहायता से समझा जा सकता है। समझा ही नहीं उपयोग में भी लाया जा सकता है। यन्त्रों से तो अब तक परमाणु का स्वरूप तक नहीं देखा जा सका। उसकी प्रतिक्रियाओं को देखते हुए उसका स्वरूप कल्पित किया गया है। कल्पना की यथार्थता इसलिए मान्य की गई कि परमाणु से शक्ति उत्पादन की सफलता ने उसके समर्थन में साक्षी प्रस्तुत कर दी। सूक्ष्म जगत की ध्वनियों का विज्ञान भौतिक क्षेत्र की शब्द विद्या से कम नहीं अधिक ही महत्वपूर्ण है। शरीर से प्राण की क्षमता अधिक होने का तथ्य सर्व स्वीकृत है। स्थूल जगत की तुलना में सूक्ष्म जगत की गरिमा को भी ऐसी ही वरिष्ठता देनी होगी। ध्वनि प्रवाह के सम्बन्ध में भी यही बात है। श्रवणातीत ध्वनियाँ विज्ञान जगत में अपनी गरिमा का प्रभाव समझा चुकी है। मनुष्य उनसे सम्पर्क जोड़ने के लिए बेतरह लालायित भी हो रहा है। सूक्ष्म जगत की ध्वनि सम्वेदनाओं का महत्व श्रवणातीत ध्वनियों से उच्चस्तरीय है। भौतिक जगत की ध्वनियों से मात्र भौतिक प्रयोजन ही सिद्ध हो सकते हैं। सूक्ष्म जगत के ध्वनि प्रवाह यदि मनुष्य की समझ एवं पकड़ की सीमा में आ सके तो उसके चेतनात्मक लाभ प्रचार मात्रा में उठाये जा सकते हैं।

तत्वज्ञानी महामनीषियों को मात्र धर्मोपदेशक नहीं मानना चाहिए। वे सूक्ष्म जगत के स्वरूप को समझने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और उसके साथ सम्बन्ध जोड़कर अतीन्द्रिय ज्ञान विकसित करने के प्रयास में संलग्न रहे हैं। इस प्रकार उनकी योग साधना एवं तपश्चर्या को आत्म-कल्याण और सूक्ष्म विज्ञान के अधिकरण का दुहरा प्रयास कहा जा सकता है। हमारे ऋषि ज्ञानी भी थे और विज्ञानी भी। उनकी साधनाएँ आत्म-साक्षात्कार के लिए भी थीं और सूक्ष्म जगत में प्रवेश एवं अधिकार पाने के लिए भी। योग साधना के साथ स्वर्ग मुक्ति की भावनात्मक और ऋद्धि सिद्धि की शक्ति परक सफलताएँ जुड़ी हुई हैं।

योग साधनाओं में सूक्ष्म ध्वनि क्षेत्र से सम्पर्क बनाने और लाभ उठाने के दो प्रयोग होते रहे हैं। शब्द विद्या की दो धाराएँ मानी गई हैं, एक तो पकड़ने, समझने और उनके सहारे अविज्ञात सम्भावनाओं से परिचित रहने की है, जिसे नादयोग कहा गया है। नादानुसंधान की महिमा योगशास्त्र में विस्तारपूर्वक बताई गई है। उनके सहारे सूक्ष्म जगत की हलचलों की जानकारी प्राप्त करने का लाभ बताया गया है। यह कहने-सुनने में छोटी किन्तु व्यवहार में बहुत बड़ी बात है। स्थूल जगत की वस्तु-स्थिति से जो जितना परिचित है, उसे उतना ही बड़ा ज्ञानवान कहा जाता है। इस जानकारी के आधार पर ही लोग विभिन्न क्षेत्रों में आशातीत सफलताएँ पाते हैं। जिसकी जानकारियाँ जितनी सीमित हैं वे उतने ही पिछड़े समझे जाते और घाटे में रहते हैं। सूक्ष्म जगत की अद्‌भुत जानकारियों से परिचित रहने वाले नादयोगी, अति महत्वपूर्ण वस्तु स्थिति समझ लेते हैं और उनके सहारे खतरों से बचने एवं अवसरों से लाभ उठाने का प्रयत्न करते हैं। यह लाभ वे अपने लिए भी लेते हैं और दूसरों का भी हित साधन करते हैं। नादयोग के सहारे देव तत्वों से-परब्रह्म से जो सीधा सम्बन्ध बनाता है उसका अन्तःक्षेत्र के परिष्कार में कितना बड़ा योगदान मिलता है, यह अनुभव का विषय है। नादानुसंधान के प्रवीण अभ्यासी इस क्षेत्र में प्रवेश पाने से मिली सफलताओं से चमत्कारी परिणाम प्रस्तुत करते देखे गये हैं।

नादयोग की—सूक्ष्म जगत की दिव्य ध्वनियों के साथ सम्पर्क बनाने की विद्या का महत्त्व बहुत ही है। इस विज्ञान का लाभ, स्वरूप एवं प्रयोग समझाते हुए ऋषियों ने बहुत कुछ कहा है।

नादविन्दुपनिषद में वर्णन है—

ब्रह्म प्रणव सन्धानं नादो ज्योतिर्मयः शिवः।
स्वयमाविर्भवेदात्मा मेघापायेंऽशुमानिव॥
यत्र कुत्रापि वा नादे लगति प्रथमं मनः।
तत्र-तत्र स्थिरीभूत्वा तेन सार्थं विलीयते॥
सर्वचिन्तां समुत्सृज्य सर्वचेष्टा विवर्जितः।
नाद मेवानुसन्दध्यान्नादे चित्तं विलीयते॥
नियामन समर्थोऽयं निनादो निशिताङ्कुशः।
नादोऽन्तरंगसारंगबन्धने वागुरायते॥

अर्थात्—नादयोग ज्योतिर्मय शिव है। वेदात्मा है। अशुभों का निवृत्तिकर्त्ता है। जब नाद के आधार पर मन स्थिर हो जाता है तो वह परमात्मा में विलीन हो जाता है। इसलिए समस्त चिन्ताओं और हलचलों से छुटकारा पाकर शान्तिचित्त से नादानुसंधान करना चाहिए। इस प्रयास के फलस्वरूप जो दिव्य शब्द श्रवण की अनुभूतियाँ होती हैं उससे अन्तःक्षेत्र की दुर्बलताओं और विकृतियों की निवृत्ति होती है। दिव्य क्षमता जगती है।

वायवीय संहिता में नाद को शक्ति का उद्‌भव कर्त्ता बताते हुए कहा गया है—'

'नादाच्छक्ति समुद्‌भवः"।

अन्तःकरण को निर्विषय बना लेने से उसकी दिव्य क्षमताएँ उभरती हैं। मन को निर्विषय बनाने के लिए नादयोग का अभ्यास अतीव श्रेयस्कर सिद्ध होता है। कहा गया है—

मकरन्दं पिबन् भृगों गन्धं नापेक्षते यथा।
नादा सक्तं तथा चित्तं विषया हि कांक्षते॥

—हठयोग

अर्थ—जिस प्रकार पुष्पों के मकरन्द को पान करने वाला भ्रमर दूसरे गन्ध को नहीं चाहता, उसी प्रकार नाद में आसक्त हुआ अन्तःकरण अन्य विषयों की अभिलाषा नहीं करता है।

शब्द की, नाद की, अनुभूति यदि ठीक तरह होने लगे तो उसके सत्परिणाम भौतिक और आत्मिक दोनों ही क्षेत्रों के मनोरथों को पूरा करते हैं—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुष्ठु प्रयुक्तः स्वर्गे लोके च काम धुग भवति। —श्रुति

एक ही शब्द की तात्विक अनुभूति हो जाने से समस्त मनोरथों की पूर्ति हो जाती है।

यह नादानुसंधान श्रवण पक्ष हुआ। शब्द-विद्या का दूसरा पक्ष है—ध्वनि का अभीष्ट उद्देश्य के अनुरूप उत्पादन एवं प्रयोग। इसे मन्त्र योग कहते हैं। नादयोग से ग्रहण और मन्त्रयोग से प्रेषण की क्षमता उत्पन्न होती है। दोनों को मिला देने से ही एक ऐसा स्वर विज्ञान बनता है जो सूक्ष्म जगत की ध्वनि परिस्थितियों का उभय-पक्षीय उपयोग कर सकें। घरों में रहने वाले रेडियो यन्त्र मात्र ध्वनि को पकड़ते हैं। इससे एकांगी प्रयोजन पूरा होता है। टेलीफोन की तरह ग्रहण प्रेषण की उभय-पक्षीय व्यवस्था जहाँ होती है वहीं पूर्णता मानी जा सकती है। नादयोग और मन्त्रयोग की दोनों ही धाराएँ मिलकर शब्द ब्रह्म की समग्र क्षमता प्रस्तुत करती हैं। सुने जाने वाले प्रवाह को शब्द ब्रह्म और कहे जाने वाले को परब्रह्म की संज्ञा दी गई है—

आगमोक्तं विवेकाच्य द्विधा ज्ञान तथोच्यते।
शब्दब्रह्माऽऽगमय परं ब्रह्म विवेकजम्॥

—अग्निपुराण

एक शब्द ब्रह्म है दूसरा परब्रह्म। शास्त्र और प्रवचन से शब्द ब्रह्म और विवेक, मनन, चिंतन से परब्रह्म की प्राप्ति होती है।

शब्द ब्रह्म, परब्रह्म भार्गेभ्यां शाश्वती तनु।

—भागवत

शब्द ब्रह्म और परब्रह्म यह दोनों ही भगवान के नित्य और चिन्मय शरीर हैं।

कुण्डलिनी जागरण में मन्त्राराधन एवं नादानुसंधान के रूप में इस शब्द शक्ति का ही प्रयोग करना पड़ता है। इन दोनों ही धाराओं का उपयोग करने से अन्तःऊर्जा का प्रखरीकरण—कुण्डलिनी जागरण सम्भव होता है।

चैतन्यं सर्व भूतानां शब्द ब्रह्मेति में मतिः।
तत्प्राप्य कुण्डली रूपं प्राणिनां देह मध्यगम्॥

—योग वशिष्ठ

समस्त प्राणियों में यह शब्द ब्रह्म चेतना बनकर विद्यमान है। उसे कुण्डलिनी जागरण द्वारा पाया जाता है।

मन्त्र शक्ति का माहात्म्य असीम बताया गया है। उसके उपयोग से आत्मोत्कर्ष और लोक-कल्याण के उभय पक्षीय प्रयोजन पूरे होते हैं। अनुभवी साधना विज्ञानियों ने प्रामाणिक शास्त्र साक्षियों ने मन्त्र की गरिमा समान रूप से प्रतिपादित की है। इससे उच्चस्तरीय शब्द विज्ञान द्वारा उत्पन्न ध्वनि की महत्ता पर प्रकाश पड़ता है—

अस्मानं चिद् ये विभिदुर्वचोभिः।

—ऋग्वेद ४।१६।६

उन शक्ति सम्पन्न उच्चारणों ने पत्थरों को भी फोड़ डाला।

तामेतां वाचं यथा धेनुं वत्सनोपसृज्य प्रत्तां।
दुहीतैवमेव देवा वाचं सर्वान् कामान् अदुहन्॥

—जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण

जिस प्रकार बछड़ा गाय का दूध पीता है उसी प्रकार देव पुरुष दिव्य वाणी का आश्रय लेकर समस्त कामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जिह्वा ज्या भवति कुल्मलं वाङ्,
नाड़ीका दन्तास्तपसाभिदिग्धाः।
तेभिर्ब्रह्मा विध्यति देवपीयून्,
हृद्बलैर्धनुभि र्देवजूतैः॥

—अथर्व ५।१८।८

आत्मबल रूपी धनुष, तप रूपी तीक्ष्ण वाण, लेकर तप और मन्यु के सहारे जब यह तपस्वी ब्राह्मण मन्त्रशक्ति का प्रहार करते हैं तो अनात्म तत्वों को दूर से ही वेध कर रख देते हैं।

वाक्य सिद्धिर्द्विधा प्रोक्ता शापानुग्रह कारिका।

—शक्ति पञ्चकम्

वाक् सिद्धि दो प्रकार की होती है, एक शाप देने वाली दूसरी वरदान देने वाली।

यत् त आत्मनि तन्वां घोरमस्ति ...
सर्व तद्वाचापहन्मो वयम्।

—अथर्व १।१८।३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तेरे शरीर में जो अनिष्ट हैं उन्हें मंत्रपूत वाणी से हम नष्ट करेंगे।

साधना द्वारा सधा हुआ शब्द साक्षात् ब्रह्म ही है। उसके सहारे ब्रह्म सम्पर्क सरलतापूर्वक सम्भव होता है। शतपथ ब्राह्मण की श्रुति है—

"शब्द ब्रह्माणि निष्णान्तः पर ब्रह्माधि गच्छति।"

अर्थात्—शब्द ब्रह्म का निष्णात परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

योग विभूति में शब्द गायत्री से प्राणियों की अविज्ञात अन्तःस्थिति का परिचय प्राप्त करने की सिद्धि मिलने का उल्लेख है। कहा गया है—

"शब्दार्थ प्रत्ययानामित रेताराध्यासात् संकरस्त म्प्रतिभाग संयनात् सर्व भूतरुत ज्ञानम्।"

अर्थात्, शब्द के तत्व का अभ्यास करने से अभेद भासता है और प्राणियों के शब्दों में निहित भावनाओं का ज्ञान होता है।

मन्त्राराधन में प्रयुक्त होने वाली वाणी मुख यन्त्र की हलचलों से उत्पन्न होने वाली शब्दशृंखला नहीं है। इतने भर से कुछ बड़ा प्रयोजन पूरा नहीं हो सकता है। कुछ न कुछ अन्ड-बन्ड उच्चारण तो जीभ दिन भर करती रहती है। उससे जानकारियों का आदान-प्रदान, विनोद मनोरंजन जैसे सामान्य कार्य ही बन पड़ते हैं। मन्त्र साधना जिह्वा संचालन द्वारा कुछ शब्दों की पुनरावृत्ति करते रहने भर से सम्भव नहीं हो सकती। उसके लिए परिष्कृत वाणी चाहिए ; जिसे 'वाक्' कहते हैं । वाक् से श्ब्दोच्चार के कलेवर का उत्कृष्ट व्यक्तित्व और प्रचण्ड मनोबल जुड़ा रहता है। गहन श्रद्धा और पवित्र अन्तरात्मा के समन्वय की शक्ति ही मन्त्र की श्ब्द शृंखला में प्राण भरती है। और उसी के सहारे मंत्र का प्रहार शब्द बेध की—लक्ष्य बेध की भूमिका सम्पन्न करता है। इसी समन्वय से साधा हुआ 'ब्रह्म' शक्ति से सुसम्पन्न बनाता है।

मंत्र शक्ति की महत्ता 'वाक्' शक्ति पर निर्भर है। इस वाक् को स्वर भी कहते हैं—साम भी और सरस्वती भी। यदि इसे शुद्ध एवं सिद्ध कर लिया गया तो फिर मंत्र के चमत्कार का प्रकट होना सुनिश्चित है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए मंत्र से भी बढ़कर 'वाक्' की प्रशंसा की गई है। कारण स्पष्ट है। परिष्कृत वाक् ही मंत्रों की सार्थकता बनाता है। भ्रष्ट वाणी से किये हुए मंत्रानुष्ठानों को सफलता कहाँ मिलती है ?

अस्थि वा ऋक्।

—शतपथ ७/५/२/२५

मंत्र तो हड्डियाँ मात्र है।

तथ्य को और भी स्पष्ट करते हुए कहा गया है—

वाक् वै विश्व कर्मर्षि वर्चाहीदं सर्वं कृतम्।

शतपथ,

वाणी जब उच्चारण मात्र से ही सब कुछ उत्पन्न और सम्पन्न करती है तब वह विश्वकर्मा ऋषि बन जाती है।

स यो वाचं ब्रह्मेत्वपास्ते यावद्वाचो गतं तत्रास्य तथा कामचारी भवति।

—छन्दोग्य

जो वाणी को ब्रह्म समझकर उपासना करता है, उसकी वाणी की गति इच्छित क्षेत्र तक हो जाती है।

सक्तुमिव तित्तउना उनन्तो,
यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अन्नासखायः सख्यानि जानते,
भद्रैषां लक्ष्मी र्निहिताधि वाचि॥

—ऋग्वेद.

जिस तरह चलनी से सत्तु को शुद्ध करते हैं, उसी तरह जो विद्वान ज्ञान से वाणी को शुद्धकर उसका प्रयोग करते हैं, वे लोक से भिन्न होते हैं। भिन्नता का सुख पाते हैं, उनकी वाणी में कल्याणमयी रमणीयता रहती है।

शास्त्र में जिस 'वाणी' शब्द का मंत्र साधना में प्रयोग किया है वह परम पवित्र 'वाक्' शक्ति ही है। वह अन्तःकरण के गहन अन्तराल से निकलती है। जिह्वा तो उसका संचार भर करती है। मुख का उपयोग तो उसके परिप्रेषण यंत्र की तरह ही अकिंचन होता है। उसका उद्भव साधक के उत्कृष्ट व्यक्तित्व एवं प्रखर संकल्प बल द्वारा ही सम्भव होता है। ऐसी वाणी को ही ब्रह्मतुल्य कहा गया है। उसकी गरिमा मुक्त कंठ से गाई गई है। उसी का उत्पादन और प्रयोग कर सकने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर मंत्र साधना सफल बनती है। ऐसी ही वाणी अभिनन्दनीय और शक्तिशाली होती है :

इस सन्दर्भ में अन्यत्र भी श्रुति वचन उपलब्ध होते हैं।

वाचा हीदं सर्वं कृतम्।

इस वाक् से ही विश्व की रचना हुई है।

आयो वागेवेद सर्वम्।

यह समस्त संसार वाक् ही है।

वाचीमा विश्वा भुयनान्यर्पिता।

यह समस्त विश्व वाक् से समर्पित है।

वाच इत्सर्वममृतं यच्चमर्त्यम्।

वाक् ही अमृत है तथा जो अमर होता है वह भी है।

यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्।

जितना ब्रह्म का विस्तार है। उतना ही वाक् का भी है।

वागेव विश्वा भुवनानि जसे।

यह समस्त लोक वाक् से ही विनिर्मित हुआ है।

तद्यत किंचार्वाचीनं ब्रह्मणस्तद् वागेव सर्वम्।

—जै. उ. १/१३/१/३

ब्रह्म के पश्चात् जो कुछ है सो वाक् ही है।

वाग् वै त्वष्टा।

—ऐत. २/४

वाक् ही त्वष्टा देवता है।

वाक् वैविश्वकर्मर्षिः वाचाहीदं सर्वं कृतम्।

—शतपथ ८/१/२/९

यह वाक् ही विश्वकर्मा ऋषि है। इसी से यह सारा संसार रचा गया :

यो वै तां वाचं वेद यस्मा एब विकारः स सम्प्रतिविदकारी वै सर्वा वाक्।

—ऐ. ब्रा. २/३/६

जो उस आदिमूल वाक् को जानता है वह सम्पत्तिविद् सिद्ध पुरुष कहलाता है।

प्रजापतिर्वा इदमेक आसं तस्य वागेव स्वमासीत् वाग् द्वितीया स ऐक्षतेनामेव वाच विसृजा। इयं वा इदं वा सर्वं विभवन्त्येष्यतीति।

—ता. ब्रा. २०/१४

प्रजापति अकेले थे। उनके पास वाक् ही एक सम्पत्ति थी। उसने विचार किया मैं इस वाक् को ही प्रखर करूँ। यही सब कुछ बन जायगी।

यामाहुर्वाचं कवयो विराजम्।

—अथर्व ७/२/५

समस्त संसार का निर्माण करने वाला यह विराट् वाक् ही है।

विराट् वाक्।

—अथर्व. ९/१५/२४

यह वाक् विराट् है।(रें

स्वरूप ज्योति रेवान्तः परावागत् तपायिनी।

—महाभारत

यह वाक् ज्योति रूप में परिलक्षित होती है।

तिस्रो वाचो प्रवद ज्योति राभा।

—ऋग. ७/१०१/१

उस वाक् का ज्योति रूप में दर्शन होता है।

यावद् ब्रह्म विष्ठितं तापती वाक्।

—ऋग. १०/११४/८

जहाँ तक ब्रह्म विस्तृत है, उतना ही वाक् भी विस्तृत है।

यह 'वाक्' शब्द शृंखला एवं ध्वनि प्रवाह भरी न होकर साधन के व्यक्तित्व का प्रतिनिधि रहती है। इसलिए किसकी वाणी क्या काम करेगी इसका निश्चय करते समय उच्चारणकर्ता के व्यक्तित्व को देखना होता है।

कौषीतकि उपनिषद में कहा गया है—

न वाचं विजिज्ञासीत्। वक्तारं विद्यात्।

वाणी के उच्चारण को मत देखो। उच्चारण कर्त्ता के व्यक्तित्व को समझो।

शब्द विद्या के दो आधार, दो साधन नादयोग और मंत्रयोग के नाम से प्रसिद्ध हैं। दोनों विधि-विधान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और कर्मकाण्ड सुविदित, सर्वसुलभ और अभ्यास में अति सरल हैं। किन्तु उन्हें बहिरंग आवरण ही समझा जाना चाहिए। इसमें प्राण संचार जीवन साधना द्वारा उपार्जित की गई उत्कृष्ट अन्तःस्थिति से ही सम्भव होती है। मस्तिष्क में दुर्बुद्धि-अचिन्त्य चिन्तन, विकृत विचार प्रवाह का निराकरण करने से उत्पन्न हुई चित्त स्थिरता से नादानुसंधान में सफलता मिलती है। व्यावहारिक जीवन में सत्कर्म परायणता-सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन एवं आदर्शवादी चरित्रनिष्ठा से उस वाक् शक्ति का उदय होता है जो मंत्रों को लक्ष्य वेधी वाण की तरह सामर्थ्यवान बनाती है। साधना विधियाँ सरल हैं, कठिन तो वह प्रक्रिया है जिसमें क्रिया, विचारणा और भावना को परिष्कृत परिमार्जित करने के लिए निरन्तर आत्म संघर्ष करना पड़ता है। शब्द विद्या का लाभ उठाने के लिए उसके लिए उपयुक्त यंत्र उपकरण अपना परिष्कृत व्यक्तित्व ही होता है। शब्द को शब्द-ब्रह्म बना सकना ऐसे ही व्यक्तित्व सम्पन्न साधकों के लिए सम्भव होता है।

आत्म-विद्या के पारंगतों ने मनोनिग्रह के लिए नादयोग की साधना को अमोघ अस्त्र की तरह पाया है और कहा है कि उसके आधार पर मन की चंचलता को काबू में किया जा सकता है और निग्रहीत मन अपनी एकाग्र शक्ति से भौतिक एवं आत्मिक स्तर की अनेकानेक सफलताएँ प्राप्त कर सकता है।

बाराहोपनिषद् में कहा गया है कि—जिस प्रकार सपेरा बीन बजाकर सर्प को मोहित करता और पकड़कर पिटारी में बन्द कर लेता है, उसी प्रकार नादब्रह्म श्रवण द्वारा मन को एकाग्र रहने के लिए बाधित किया जा सकता है।

मारीचि तंत्र में इसी प्रसंग में हिरण और व्याध की उपमा देते हुए कहा है, कि बंशी की ध्वनि पर मोहित मृग भी इसी प्रकार पकड़ा जाता है। उसी प्रकार मन को भी कुमार्गगामी होने से रोककर इच्छित प्रयोजन में लगाया जा सकता है।

योग रसायनम् में नादयोग का प्रत्यक्ष जीवन पर प्रभाव बताते हुए कहा है कि—नादयोग द्वारा प्राण वायु को हृदय स्थान में रोक सकने वाला योगी रूप लावण्यमयी दिव्य देह का स्वामी हो जाता है। प्रतापी बनता है। प्रतिभा निखरती है और उसके शरीर में से दिव्य गंध आने लगती है।

आगे उसी ग्रन्थ में कहा गया है कि—इन्द्रियों का स्वामी मन है। मन का स्वामी प्राण। प्राण का स्वामी लय और लय का अधिपति नाद है। इसलिए नाद की गरिमा सर्वोपरि है।

नाद विन्दु उपनिषद् में कहा गया है कि—नादानुसंधान से चित्त शान्त हो जाता है। दिव्य रस का आस्वादन करने लगता हैं। फिर उसका मन वासना एवं तृष्णा की ओर नहीं दौड़ता।

शिव पुराण में नादयोगी को सुनाई पड़ने वाली ध्वनियों का वर्णन है—(१) काँसे की थाली पर चोट मारने जैसी झनझनाहट (२) समुद्र गर्जन जैसा घोष (३) तुरही बजने जैसी आवाज (४) घण्टा बजने जैसी (५) वीणा बजने जैसी (६) बंशी जैसी (७) दुन्दुभि जैसी (८) नगाड़े जैसी (९) शंख जैसी (१०) मेघगर्जन जैसी ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं। बीच-बीच में पायल बजने, कोकिल कूकने, बुलबुल चहकने, सितार बजने और कभी सिंह दहाड़ने जैसी ध्वनियाँ भी सुनाई देती और लुप्त होती रहती हैं।

इन भिन्नताओं का कारण जावाल दर्शनोपनिषद् में बताया गया है कि नाद द्वारा प्राण अवरुद्ध होकर शरीर के किस क्षेत्र में ठहर रहा है इसी के अनुसार इन ध्वनियों का उभार होता है। जिस क्षेत्र को बलिष्ठ बनाना हो वहाँ प्राण रोककर यह जानना चाहिए कि किस प्रकार के नाद का उत्थान हुआ। उस नाद की धारण प्रगाढ़ करते रहने पर चित्त और प्राण दोनों ही उस स्थान पर रुककर सुधार एवं विकास का कार्य आरम्भ कर देते हैं।

योग शास्त्रों में ध्वनियों का विभाजन दो भागों में किया गया है; एक आहत दूसरी अनाहत। आहत उसे कहते हैं जो किसी हलचल या अकराहट के कारण होती है। अनाहत उन्हें कहते हैं जो अधिक दिव्य होती हैं। चेतना, देवता अथवा ब्रह्मरन्ध्र में दैवी सम्पर्क से जो ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं उन्हें अनाहत कहते हैं।

आहत ध्वनियों का अभ्यास साधक को इस प्रकार की सिद्धावस्था में ले जाता है जिससे वह जान सके कि दृश्य या अदृश्य जगत में पदार्थों की घटनाओं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की क्या सम्भावना पक रही है। हाँडी में चावल पकाने पर जो आवाज सुनाई पड़ती है उससे प्रतीत होता है कि हाँडी के भीतर क्या स्थित चल रही है। इसी प्रकार संसार के विभिन्न क्षेत्रों में कहाँ कुछ हो रहा है या होने जा रहा है इसका बोध आहत शब्दों के अभ्यास से होता है। तंत्र ग्रन्थों में इस साधना को 'कर्म पिशाचिनी' अथवा 'यक्षिणी' कहा गया है जो पूछने पर दूर-दूर के समाचार एवं सम्भावित आधारों का विवरण इस प्रकार बताती है मानो कान में मुँह लगाकर सारा घटनाक्रम बता गई हो।

अनाहत शब्दों का स्वरूप विशुद्ध आध्यात्मिक होता है। उसमें आत्मा और परमात्मा के बीच का आदान-प्रदान चलता है और वह इतना मादक एवं मोहक होता है कि अपने आपे का होश-हवाश भूलकर साधक समाधि जैसी योग निद्रा में चला जाता है। इस स्थिति की उपमा रात्रि के समय भौंरे के कमल पुष्प में बन्द हो जाने से दी है। वह उसके गन्ध पर इतना मुग्ध हो जाता है कि छोड़ने का, वापस जाने का मन ही नहीं करता। इस स्थिति को 'लय' कहा गया है। यह पूर्ण समाधि का पूर्व रूप है। जिस प्रकार प्राण योग में जड़ समाधि लग जाती है और शरीर जीवित रहते हुए भी मृतकवत् हो जाता है वैसी स्थिति तो नहीं आती पर सुधि-बुधि भूल बैठना स्वभाविक है। परमहंस स्तर के योगीजन की यही दशा निरन्तर बनी रहती है।

नाथ सम्प्रदाय एवं कबीर सम्प्रदाय में जिस सुरति योग का वर्णन किया है और कई ऊँचे लोकों में जा पहुँचने का अनुभव बताया है वह अध्यात्म क्षेत्र की सात भूमिकाओं में से किस तक पहुँचना हो सका इसी का वर्णन है।

अद्वैतवादी नाद साधना में 'ॐ'कार ध्वनि को प्रमुख मानते हैं। उनका कथन है कि सृष्टि के आदि में प्रकृति और पुरुष का समावेश होने पर घड़ियाल में हथौड़ा मारने पर जो थरथराहट भरी ध्वनि होती है। वही ॐकार का वास्तविक स्वरूप है। यह केन्द्र अब भी उसी प्रकार चल रहा है। घड़ी के पेण्डुलम में जिस पर एक छोर से दूसरे छोर पर पहुँचने से खट_खट_ की अवाज होती है उसी प्रकार सृष्टि क्रम चलने में भी यही घड़ियाल एवं हथौड़ी के आघात से उत्पन्न होने वाली झनझनाहट के आधार पर ही विश्व व्यवस्था चल रही है। यह परब्रह्म का अनाहत—स्वघोषित नाद है। अतएव ॐकार का उच्चारण नहीं, ध्यान किया जाना चाहिए। इसी रस्सी के सहारे उस स्थान तक पहुँचा जा सकता है जहाँ से कि प्रकृति और पुरुष में समागम हुआ है।

इस ॐकार साधना के समतुल्य ही 'सोहम्' साधना है उसमें नासिका से वायु खींचते समय 'सो' और छोड़ते समय 'हम्' का शब्द साँस के साथ होते रहने की धारणा की जाती है। इस सोहम् में भी बीज रूप में ॐकार छिपा हुआ है। वेदान्त दर्शन के प्रमुख सूत्रों का विस्तार इसी आधार पर हुआ है—शिवोहम्—सच्चिदानन्दोहम् की वेदान्त भी ॐकार मूलक है।

गायत्री मंत्र का विस्तार भी इसी आधार पर हुआ है। प्रथम ॐकार की उत्पत्ति हुई। उससे तीन व्याहृतियाँ भूः भुवः स्वः बनी। फिर इनमें से एक-एक का विस्तार गायत्री के तीन चरणों में हो गया। वेदों का कोई भी मंत्र उच्चारण करने से पूर्व उसके साथ सर्व प्रथम 'ॐ' जोड़ने का विधान है। इससे स्पष्ट है कि वेद ज्ञान के बीज ॐकार का विस्मरण न किया जाय। गायत्री का अजपा जाप भी वस्तुतः नादयोग का ही एक प्रकार है।

शंख-ध्वनि मन्दिरों में होती है। उसकी ध्वनि भी "ॐ" कार के सदृश्य है, शंख के साथ घड़ियाल बजाने की भी परम्परा है। नादयोग के अभ्यास में कई मार्गदर्शक अपने शिष्यों को शंख ध्वनि और घड़ियाल की टंकार को मन्दिर में सुनाकर उसी का अनुकृति सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय में जमाने की सलाह देते हैं। सरस्वती का सितार, शंकर का डमरू, कृष्ण की बंशी आदि को भी नादयोग का माध्यम बनाया जाता है।

नादब्रह्म, शब्दब्रह्म का योग का शास्त्रों में विशेष वर्णन है। नाद ब्रह्म से संगीत उपजा, सात स्वरों का आविर्भाव हुआ, यही सात लोक हैं। शब्द ब्रह्म में जप-नामोच्चार का प्रकरण आता है। यह सारा परिकर नाद योग से ही आविर्भूत हुआ है। उसमें प्रकारान्तर से हर क्षेत्र की ऋद्धियों और सिद्धियों का समावेश है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नाद साधना का क्रमिक अभ्यास

योग शास्त्र का लक्ष्य है ब्रह्माण्ड-व्यापी मूल सत्ता से जुड़ना। उस परम एकत्व की अविराम अनुभूति। इस अनुभूति को विकसित करने की अनेकों विधियाँ हैं, अनेकों पद्धतियाँ हैं। कोई भी विधि उस लक्ष्य तक पहुँचने की एक मात्र विधि नहीं है।

विश्व में जितने भी पदार्थ हैं, सभी के मूल में एक ही तत्व अन्तर्निहित है। मूल रूप में यह चेतन-ऊर्जा अव्याख्येय है। इस अव्याख्येय चेतना-ऊर्जा का विविध रूपों में रूपान्तरण होता रहता है तथा हो सकता है। योग-साधना की भिन्न-भिन्न प्रक्रियाओं में इस चेतनऊर्जा की किसी धारा-विशेष को लेकर विस्तृत ढाँचा खड़ा किया गया है।

योग शास्त्र के इन अनेकानेक साधना-विधानों में एक महत्वपूर्ण धारा नादयोग की भी है। कानों को उँगलियों से या शीशी वाली कॉर्क से इस प्रकार बन्द किया जाता है कि बाहर की वायु या स्थूल आवाजें भीतर प्रवेश न कर सकें। इस स्थिति में कानों को बाहरी ध्वनि-आधार से विलग किया जाता है और ध्यान को एकाग्र करके यह प्रयत्न किया जाता है कि अतीन्द्रिय जगत से आने वाले शब्द प्रवाह को अन्तःचेतना द्वारा सुना जा सके। यों इसमें भी कर्णेन्द्रिय का, उसकी शब्द तन्मात्रा का योगदान तो रहता ही है। पर वह श्रवण वस्तुतः उच्चस्तरीय चेतन जगत की ध्वनि लहरी सुनने के लिये है। कर्णेन्द्रिय और अन्तःकरण का इसे संयुक्त प्रयास भी कह सकते हैं। यह संयुक्त प्रयास जिस सूक्ष्म ध्वनि-प्रवाह में नियोजित किया जाता है, वह है तो अभिन्न ही, क्योंकि पिण्ड ब्रह्माण्ड का अभिन्न अंश है। किन्तु ध्यान के संकल्प भेद तथा चेष्टा भेद से कोई साधक अनन्त अतीन्द्रिय जगत की सूक्ष्म ध्वनियों के श्रवण का अभ्यास आरम्भ करता है, कोई अन्य अपनी ही अन्तर्ध्वनि के श्रवण का।

अपने ही सूक्ष्म एवं कारण शरीरों में सन्निहित श्रवण शक्ति को यदि विकसित किया जा सके तो अन्तरिक्ष में निरन्तर प्रवाहित होने वाली उन ध्वनियों को भी सुना जा सकता है जो चमड़े से बने कानों की पकड़ से बाहर हैं। सूक्ष्म जगत की हलचलों का आभास इन ध्वनियों के आधार पर हो सकता है। भिन्न अभ्यास पद्धति द्वारा यदि प्रारम्भ में उन सूक्ष्म ध्वनि प्रवाहों को सुनने की शक्ति अर्जित की जाती है, तो वही सामर्थ्य आगे चलकर सूक्ष्म एवं कारण शरीर में गूँजने वाली ध्वनियों की भी जानकारी पाने का माध्यम बन जाती हैं। इस प्रकार यह मात्र आरम्भिक भेद है।

नाद संकेत वे सूत्र हैं जिनके सहारे परमात्मा के विभिन्न शक्ति स्रोतों के साथ हमारे आदान-प्रदान सम्भव हो सकते हैं। टेलीग्राम, टेलीफोन, वायरलैस, टेलीविजन पद्धतियों का आश्रय लेकर हम दूरवर्ती व्यक्तियों के साथ अनुभूतियों का आदान-प्रदान करते हैं? उसी प्रकार नाद-साधना के सहारे ब्रह्मांडीय चेतना से सम्पर्क स्थापित कर उससे चेतनात्मक आदान-प्रदान किया जाता है। साधना की आरम्भिक क्रिया द्विविध है—बाह्य और अन्तरंग बैठना दोनों में एक ही तरह से होता है। अन्तर मात्र ग्रहण व प्रेषण का होता है। बाह्य-नाद को भी ब्रह्मनाद का श्रवण कहा जाता है।

नादयोग की साधना विधि का उल्लेख शिवपुराण में इस प्रकार है।

सुश्वासेन सुशय्यायां योगं पुंजीत योगवित्।
दीपं विनांधकारे त प्रजाः सुप्तेषु धारयेत्॥
तर्जन्या विहितौ कर्णौ पीडयित्वा मुहूर्त्तकम्,
तस्मात्संश्रूयते शब्द स्तुदन्वहि समुभ्दवः॥
न श्रृणोति यदा शृंचन्योगाभ्यासेन देविके।
तस्मादुत्पद्यते शब्दा मृत्युजित्सप्तभिर्दिनैः॥

अर्थात्—लोगों के सो जाने पर थोड़ी रात्रि बीत जाने पर घोर अन्धकार में अच्छे आसन पर सौम्य श्वासें लेता हुआ योगी नादयोग की साधना करे। तर्जनी उँगलियों से कानों के छेद बन्द रखे और अग्नि तत्व प्रेरित सूक्ष्म शब्दों को श्रवण करे। जब तक शब्द सुनाई न पड़े तब तक अभ्यास जारी रखे। प्रायः अभ्यास के साँतवें दिन से शब्द सुनाई पड़ता है।

नादयोग के द्वारा सुनी जाने वाली ये दिव्य ध्वनियाँ अनन्त अन्तरिक्ष में बिना किसी प्रकृतिगत हलचल का आश्रय लिये स्वयमेव विनिःसृत होती रहती हैं। ये चेतन हैं, दिव्य हैं, अलौकिक, अभौतिक और अतीन्द्रय हैं। इसीलिए इन्हें देव वाणी भी कहते हैं। उन्हें नादयोग के माध्यम से हमारा चेतन अन्तःकरण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुन सकता है। श्रवण का सम्बन्ध कर्णेन्द्रिय से है। अस्तु, सूक्ष्म एवं चेतन श्रवण भी शब्द-संस्थान के इसी प्रतिनिधि केन्द्र का सहारा लेकर सुना जाता है इस तथ्य को समझने पर ही नाद-साधना में वास्तविक प्रगति सम्भव है।

नाद संकेत वे सूत्र हैं, जिनके सहारे परमात्मा के विभिन्न शक्ति-स्रोतों के साथ सूक्ष्म सम्पर्क सम्भव है। सूक्ष्मंता को न समझा गया तो फिर स्थूल जगत की ही ध्वनियाँ सुनाई पड़ेंगी। उनसे भी कुछ भौतिक लाभ सम्भव है। किन्तु अध्यात्म का क्षेत्र सूक्ष्मता का ही है।

नाद-योग के अभ्यास से आत्मचेतना को परिष्कृत और सूक्ष्म शरीर की कर्णेन्द्रिय तन्मात्रा शब्द को परिष्कृत किया जाता है। इस आधार पर अदृश्य एवं अविज्ञात से सम्पर्क साधा जाता है और अतीन्द्रिय सामर्थ्य विकसित होती है।

नाद साधना के क्रमिक अभ्यास पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है—

श्रूयते प्रथ्माभ्यासे नादो नानाविधो महान्।
वर्धमाने तथाभ्यासे यते सूक्ष्मातिसूक्ष्मतः।
आदौ जलधि जामूतभेरी निर्झर सम्भवः।
मधे मर्दल शब्दाभो घंटाकालह जस्तथा॥
अन्ते तु किंकणीवंश वीणा भ्रमर निःस्वनः।
इति नानाविधा नादाः श्रूयन्ते सूक्ष्म सूक्ष्मतः॥
महति श्रूयमाणे तु महाभेर्यादिकध्वनौ।
तत्र सूक्ष्मं सूक्ष्मतरं नादमेव परामृशेत्॥
धनुमुत्सृजय वा सूक्ष्मे सूक्ष्ममुत्सृज्य वा घने।
रममाणमपि क्षिप्रं मनोनान्यत्र चालयेत्॥

अर्थात्—जब पहले-पहले यह अभ्यास किया जाता है, तो यह नाद कई तरह का होता है बड़े जोर-जोर से सुनाई देता है, परन्तु अभ्यास बढ़ जाने पर वह नाद धीमे से धीमा होता जाता है। शुरू में इस नाद की ध्वनि समुद्र, बादल, झरना, भेरी की तरह होती है, परन्तु बाद में भ्रमर, वीणा-सी तथा किंकिणी की तरह मधुर होती है। इस तरह से वह ध्वनि धीमी-से-धीमी होती हुई कई तरह की सुनायी देती है। भेरी आदि की ध्वनि सुनने पर उसमें धीमे-से-धीमे नाद का विचार करना चाहिए। साधक को चाहिए कि वह धीमे, से घने और घने से धीमे नाद में जाय और मन को इधर-उधर न भटकने दे।

ॐकार की स्वर लहरियों को सुनने की नादयोग साधना कई दृष्टियों से बड़ी महत्वपूर्ण है। प्रथम तो दिव्य संगीत के सुनने में इतना आनन्द आता है, जितना किसी मधुर से मधुर वाद्य या गायन को सुनने में नहीं आता। दूसरे इस नाद श्रवण से मानसिक तन्तुओं का प्रस्फुटन होता है। सर्प जब संगीत सुनता है, तो उसकी नाड़ियों में एक विद्युत-लहर प्रवाहित हो उठती है। मृग का मस्तिष्क मधुर संगीत सुनकर इतना उत्साहित हो जाता है कि उसे तन-बदन का होश नहीं रहता। योरोप में गायें दुहते समय मधुर बाजे बजाये जाते हैं जिससे उनका स्नायु समूह उत्तेजित होकर अधिक मात्रा में दूध उत्पन्न करता है। ये संगीत सूक्ष्म मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं। अनाहत नाद का प्रभाव कारण शरीर पर पड़ता है। प्रणव-नाद का दिव्य संगीत सुनकर मानव-अन्तःकरण में भी ऐसी स्फुरणा होती है, जिसके कारण अनेक गुप्त आन्तरिक शक्तियाँ विकसित होती हैं। उनके द्वारा भौतिक और आत्मिक दोनों ही दिशाओं में प्रगति होती है।

नादयोग में कितने प्रकार की ध्वनियाँ सुनाई पड़ सकती हैं, इसकी कोई सीमा नहीं। प्रायः परिचित ध्वनियाँ ही सुनाई पड़ती हैं। सूक्ष्मदर्शी साधक उनके पीछे उच्च संकेतों की विवेक बुद्धि के द्वारा सहज संगीत बिठा सकते हैं। कोयल की कूक, मुर्गे की बाग, मयूर की पीक, सिंह की दहाड़, हाथी की चिंघाड़ शब्द सुनाई पड़ें तो उनमें इन प्राणियों के उच्चारण समय की मनःस्थिति की कल्पना करते हुए अपने लिए प्रेरक संकेतों का ताल-मेल बिठाया जा सकता है। कई बार रुदन, क्रंदन, हर्षों उल्लास, अट्टहास जैसी ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं। उसे अपनी अन्तरात्मा का सन्तोष-असन्तोष समझना चाहिए। कुमार्गगामी गतिविधियों से असन्तोष और सत्प्रवृत्तियों से सन्तोष स्पष्ट है। आत्म-निरीक्षण करते हुए आत्मा को समय-समय अपनी भली-बुरी गतिविधियों पर सन्तोष-असन्तोष प्रकट करने के अवसर आते हैं। इन्हीं की प्रतिध्वनि हर्ष, क्षोभ व्यक्त करने वाले स्वरों में सुनाई पड़ती रहती हैं। किस ध्वनि के पीछे क्या संकेत सन्देश, तथ्य हो सकता है, उसे नाद योगी की सहज बुद्धि ही समयानुसार निर्णय करती चलती है। दिव्य ध्वनियों में किसी न किसी स्तर की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उच्च प्रेरणाएँ होती हैं और इन ऊपर की पंक्तियों में सर्प को बीन सुनाई पड़ने का उल्लेख करते हुए उनके अभिप्राय का संकेत किया गया है। इसके अतिरिक्त और भी कई प्रकार की ध्वनियाँ नादयोग के साधकों को सुनाई पड़ती हैं। इनकी संगति इस प्रकार बिठाई जा सकती है। भगवती सरस्वती अपनी वीणा झंकृत करते हुए ऋतम्भरा प्रज्ञा और अनासक्त भूमा के मृदुल मनोरम तारों को झनझना रही है और अपनी अन्तःचेतना में वही दिव्य तत्व उभर रहे हैं।

इन विविध ध्वनियों के जो अभिप्राय-संकेत अन्तःकरण में उभरें, उन्हें ही पर्याप्त समझना चाहिए। उनकी बहुत रहस्य भरी व्याख्याओं के लिए सिर खपाने की बजाय, यह ध्यान में रखा जाय कि इन सब का प्रयोजन एक ही रहता है कि हमें आज की स्थिति से ऊपर उठकर उच्च भूमिका के लिए द्रुतगति से अग्रसर होना चाहिए तथा साहस भरा कदम उठाना चाहिये।

नाद साधना की इन क्रमिक प्रक्रियाओं के अभ्यास की चरम सार्थकता उस मूल ॐकार ध्वनि से पूर्ण तादात्म्य में है, जो सृष्टि-मात्र के क्रिया-व्यापार का हेतु है। जो सृष्टि की समस्त शक्ति धाराओं का, ऊर्जा-प्रवाहों का केन्द्र एवं स्रोत है। व्यष्टि-सत्ता को समष्टि केन्द्र से जोड़ने में समर्थ नाद-साधना के सभी अभ्यासों का लक्ष्य उसी एक परम तत्व की अनुभूति है, जिसे भारतीय मनीषियों ने प्रणव ध्वनि, उद्गीथ, अनाहत ब्रह्मनाद आदि कहकर पुकारा है।

वस्तुतः नादयोग की साधना के दो रूप हैं। एक तो अन्तरिक्ष से सूक्ष्म जगत से आने वाली दिव्य ध्वनियों का श्रवण, दूसरा अपने अन्तरंग के शब्द ब्रह्म का जागरण और उसका अभीष्ट क्षेत्र में—अभीष्ट उद्देश्य के लिए परिप्रेषण। यह शब्द उत्थान एवं परिप्रेषण ॐकार साधना के माध्यम से ही बन पड़ता है।

साधारण रेडियो यंत्र मात्र ग्रहण करते हैं, वे मूल्य की दृष्टि से सस्ते और संरचना की दृष्टि से सरल भी होते हैं। किन्तु परिप्रेषण यंत्र-ब्राडकास्ट-ट्रान्समीटर महँगे भी होते हैं और उनकी संरचना भी जटिल होती हैं। उनके प्रयोगकरने की जानकारी भी श्रम-साध्य होती है, जबकि साधारण रेडियो का बजाना बच्चे भी जानते हैं। रेडियो की संचार प्रणाली तभी पूर्ण होती है जब दोनों पक्षों का सुयोग बन जाय। यदि ब्राडकास्ट की व्यवस्था न हो तो सुनने का साधन कहाँ से बन पड़ेगा? जिस क्षेत्र में रेडियो का लाभ जाना है वहाँ आवाज ग्रहण करने की ही नहीं आवाज पहुँचाने की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

नादयोग की पूर्णता दोनों ही प्रयोगों, प्रयोजनों से सम्बद्ध है। कानों के छिद्र बन्द करके दिव्य-लोक से आने वाले ध्वनि प्रवाहों को सुनने के साथ-साथ यह साधन भी रहना चाहिए कि साधक अपने अन्तःक्षेत्र से शब्द शक्ति का उत्थान कर सके। इसी अभ्यास के सहारे अन्यान्य मंत्रों की शक्ति सुदूर क्षेत्रों तक पहुँचाई जा सकती है। वातावरण को प्रभावित करने—परिस्थितियाँ बदलने एवं व्यक्तियों को सहायता पहुँचाने के लिए मंत्र शक्ति का प्रयोग परावाणी से होता है। चमड़े की जीभ से निकलने वाली वेखरी ध्वनि तो जानकारियों का आदान-प्रदान भर कर सकती है। मंत्र की क्षमता तो परा और प्रशन्ति वाणियों के सहारे ही प्रचण्ड बनती है और लक्ष्य तक पहुँचती हैं। परावाक् का जागरण ॐकार साधना से सम्भव होता है। कुण्डलिनी अग्नि के प्रज्वलन में ॐकार को ईधन की तरह प्रयुक्त किया जाता है—

अन्तपंगतरंगस्य रोधे वेलायतेऽपि च।
ब्रह्मप्रणवसलग्ननादो ज्योतिर्मयात्मकः॥
मनस्तत्र लयं याति तद्विष्णोः परम पद्म।

—नादविन्दोपनिषद

नाद के प्रणव में संलग्न होने पर वह ज्योतिर्मय हो जाता है उस स्थिति में मन का लय हो जाता है। उसी को भगवान विष्णु का परम पद कहा जाता है।

योग साधना में चित्र-वृत्तियों का निरोध और प्राण शक्ति की प्रखरता यह दो ही तत्व प्रधान हैं। इन दोनों ही प्रयोजनों के लिए ॐकार की शब्द साधना से अभीष्ट उद्देश्य सरलतापूर्वक सिद्ध होता है-

ओंकारोच्चारणसान्तशब्दतत्वानुभावनात्।
सुषुप्ते सविदो जाते प्राणस्पन्दो निरुध्यते॥

-योगवाशिष्ठ

ऊँचे स्वर से ओंकार का जप करने पर शान्त में जो शेष तुर्यमात्रा रूप शब्द-शब्द तत्व की अनुभूति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होती है, उसका अनुसन्धान से बाह्य चित्त-वृत्तियों का जब बिल्कुल उपराम हो जाता है तब प्राणवायु का निरोध हो जाता है।

नादयोग की साधना में प्रगति पथ पर दोनों ही चरण उठने चाहिए। यहाँ नाद श्रवण के साथ-साथ नाद उत्थान को भी साधना-क्रम में सम्मिलित रखना चाहिए। कुण्डलिनी जागरण साधना में नाद श्रवण में ॐकार की ध्वनि पकड़ने तक पहुँचना पड़ता है। अन्य शब्द तो मार्ग में मील पत्थर मात्र हैं। अनाहत ध्वनि को 'सुरति' तुर्यावस्था, समाधि आदि पूर्णता बोधक आस्थाओं के समतुल्य माना गया है और अनाहत ध्वनि ॐकार की श्रवण अनुभूति ही है। ॐकार ध्वनि का नादयोग में इसीलिए उच्च स्थान है।

नव शब्द परित्यज्य ॐकारन्तु समाश्रयेत्।
सर्वे तत्र लयं यान्ति ब्रह्म प्रणव नादके॥

—महायोग विज्ञान

नौ शब्द नादों की उपेक्षा करके ॐकार नाद का आश्रय लेना चाहिए। समस्त नाद प्रणव में ही लीन होते हैं। ॐकार की ध्वनि का नाद का आश्रय लेने वाला साधक सत्यलोक को प्राप्त करता है।

शब्द ब्रह्म के- ॐकार के उत्थान की साधना में हृदय आकाश से ॐकार ध्वनि का उद्भव करना होता है। जिह्वा से मुख ॐकार उच्चारण का आरम्भिक अभ्यास किया जाता है। पीछे उस उद्भव में परा और पशन्ति वाणियाँ ही प्रयुक्त होती हैं और उस ध्वनि से हृदयाकाश को गुंजित किया जाता है।

हृद्यविच्छिन्नमोंकारं घण्टानांद विसोर्णवत्।
प्राणोनोदीर्य तत्राथ पुनः संवेशयेत् स्वरम्॥
ध्यानेनेत्थं सुतीव्रेण युंजतो योगिनो मनः।
संपास्यत्पाशु निर्वाणं द्रव्यज्ञान क्रियाभ्रमः॥

-भागवत ११।१४।३४।४६

हृदय में घंटा नाद की तरह ओंकार का अविच्छिन्न पद्य नालवत् अखण्ड उच्चारण करना चाहिए। प्राण वायु के सहयोग से पुनः पुनः "ॐ" का जप करके बारम्बार हृदय में गिराना चाहिए। इस तीव्र ध्यान विधि से योगाभ्यास करने वाले का मन शीघ्र ही शान्त हो जाता है और सारे सांसारिक भ्रमों का निवारण हो जाता है।

नादारंभे भवेत्सर्वगात्राणां भंजनं ततः।
शिरसः कंपनं पश्चात् सर्वदेहस्य कंपनम्॥

-योग रसायनम् २५४

नाद के अभ्यास के दृढ होने पर आरम्भ में पूरे शरीर में हलचल-सी मचती है। फिर सिर में कंपन होता है, पश्चात् सम्पूर्ण देह में कंपन होता है।

क्रमेणायासतश्चैवं श्रू यतेऽनाहतो ध्वनिः।
पृथग्विमिश्रितश्चापि मनस्तत्र नियोजयेत्॥

-योग रसायनम् २५३

क्रमशः अभ्यास करते रहने पर ही अनाहत ध्वनि पहले मिश्रित तथा बाद में पृथक स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ती है। मन को वहीं नियोजित करना चाहिए।

नाद श्रवण से सफलता मिलने लगे तो भी शब्द ब्रह्म की उपलब्धि नहीं माननी चाहिए। नाद ब्रह्म तो भीतर से अनाहत रूप में उठता है और उसे ॐकार के सूक्ष्म उच्चारण अभ्यास द्वारा प्रयत्नपूर्वक उठाना पड़ता है-

बाहरी शब्द वाद्य यन्त्रों आदि के रूप में सुने जाते हैं। पर ॐकार का नाद प्रयत्नपूर्वक भीतर से उत्पन्न करना पड़ता है-

नादः संजायते तस्य क्रमेणाभ्यासतश्च चः।

-शिव सं.

अर्थ- अभ्यास करने से नाद की उत्पत्ति होती है यह शीघ्र फलदाता है।

अनाहतस्य शब्दरूप ध्वनिर्य उपलभ्यते।
ध्वनेरन्तर्गतं ज्ञेयं ज्ञेयस्यान्तर्गतं मनः॥
मनस्तय लयं यदि तद्विष्णोः परमपदम्।

—हठ.प्र.

अनाहत ध्वनि सुनाई पड़ती है, उस ध्वनि के भीतर स्वप्रकाश चैतन्य रहता है और उस ज्ञेय के भीतर मन रहता है और वह मन जिस स्थान में लय को प्राप्त होता है उसी को विष्णु का परमधाम कहते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नादयोग की महिमा बताते हुए कहा गया है कि उसके आधार पर दृष्टि की चित्त की, स्थिरता अनायास ही हो जाती है। आत्म-कल्याण का परम अवलम्बन यह नादब्रह्म ही है।

दृष्टिःस्थिरा यस्य बिना सदृश्यं,
वायुः स्थिरो यस्य विना प्रयत्नम्।
चित्तं स्थिरं यस्य विनावलम्बम्,
स ब्रह्म तारान्तरनादरूप॥

जिससे बिना दृश्य के दृष्टि स्थिर हो जाती है, जिससे बिना प्रयत्न के प्राण वायु स्थिर हो जाती है। जिससे बिना अवलम्बन के चित्त का नियमन हो जाता है वह अन्तर नाद रूपी ब्रह्म ही है।

नाद क्रिया के दो भाग हैं—बाह्य और अन्तर। बाह्य नाद में बाहर की दिव्य आवाजें सुनी जाती हैं और बाह्य जगत की हलचलों की जानकारियाँ प्राप्त की जाती हैं और ब्रह्माण्डीय शक्ति धाराओं को आकर्षित करके अपने में धारण किया जाता है। अतः नाद में भीतर से शब्द उत्पन्न करके—भीतर ही भीतर परिपक्व करते और परिपुष्टि होने पर उसे किसी लक्ष्य विशेष पर किसी व्यक्ति के अथवा क्षेत्र के लिए फेंका जाता है और उससे अभीष्ट प्रयोजन की पूर्ति की जाती है। इसे धनुष बाण चलाने के समतुल्य समझा जा सकता है।

अन्तःनाद के लिए भी बैठना तो ब्रह्मनाद की तरह ही होता है, पर अन्तर ग्रहण एवं प्रेषण का होता है। सुखासन से मेरुदंड को सीधा रखते हुए षडमुखी मुद्रा में बैठने का विधान है। षडमुखी मुदा का अर्थ है- दोनों अँगूठों से दोनों कान के छेद बन्द करना। दोनों हाथों की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से दोनों नथुनों पर दबाव डालना। नथुनों पर इतना दबाव नहीं डाला जाता कि साँस का आवागमन ही रुक जाय।

होठ बन्द, जीभ बन्द मात्र भीतर ही परा पशन्ति वाणियों से ॐकार का गुंजार-प्रयास-यही है अन्तःनाद उत्थान। इसमें कंठ से मन्द ध्वनि होती रहती है। अपने आपको उसका अनुभव होता है और अन्तःचेतना उसे सुनती है। ध्यान रहे यह ॐकार का जप या उच्चारण नहीं गुंजार है। गुंजार का तात्पर्य है, शंख जैसी ध्वनि धारा एवं घड़ियाल जैसी थरथराहट का सम्मिश्रण। इसका स्वरूप लिखकर ठीक तरह नहीं समझा, समझाया जा सकता। इसे अनुभवी साधकों से सुना और अनुकरण करके सीखा जा सकता है।

साधना आरम्भ करने के दिनों दस-दस सैकिण्ड के तीन गुंजार बीच-बीच में पाँच-पाँच सैकिण्ड रुकते हुए करने चाहिए। इस प्रकार ४० सैकिण्ड का एक शब्द उत्थान हो जायगा। इतना करके उच्चार बन्द और उसकी प्रतिध्वनि सुनने का प्रयत्न करना चाहिए। जिस प्रकार गुम्बजों में, पक्के कुओं में, विशाल भवनों में पहाड़ों की घाटियों में जोर से शब्द करने पर उसकी प्रतिध्वनि उत्पन्न होती है, उसी प्रकार अपने अन्तः क्षेत्र में ॐकार गुंजार के छोड़े हुए शब्द प्रवाह की प्रतिध्वनि उत्पन्न हुई अनुभव करनी चाहिए और पूरी तरह ध्यान एकाग्र करके इस सूक्ष्म प्रतिध्वनि का आभास होता है। आरम्भ में बहुत प्रयत्न से, बहुत थोड़ी-सी अतीव मन्द रुक-रुक कर सुनाई पड़ती हैं, किन्तु धीरे-धीरे उसका उभार बढ़ता चलता है और ॐकार की प्रतिध्वनि अपने ही अन्तराल में अधिक स्पष्ट एवं अधिक समय तक सुनाई पड़ने लगती है। स्पष्टता एवं देरी को इस साधना की सफलता का चिन्ह माना जा सकता है।

ॐकार की उठती हुई प्रतिध्वनि अन्तः क्षेत्र के प्रत्येक विभाग को, क्षेत्र को, प्रखर बनाती है। उन संस्थानों की प्रसुप्त शक्ति जगाती है। उससे आत्मबल बढ़ता है और छिपी हुई दिव्य शक्तियाँ प्रकट एवं परिपुष्ट होती हैं।

समयानुसार इसका उपयोग शब्दवेधी वाण की तरह-प्रक्षेपणास्त्र की तरह हो सकता है। भौतिक एवं आत्मिक हित-साधन के लिए इस शक्ति को समीपवर्ती अथवा दूरवर्ती व्यक्तियों तक भेजा जा सकता है और उनको कष्टों से उबारने तथा प्रगति पथ पर अग्रसर करने के लिए किया जा सकता है। वरदान देने की क्षमता परिस्थितियों में परिवर्तन कर सकने जितनी समर्थता जिस शब्द ब्रह्म के माध्यम से सम्भव होती है उसे ॐकार गुंजार के आधार पर भी उत्पन्न एवं परिपुष्ट किया जाता है।

पुरानी परिपाटी में षडमुखी मुद्रा का उल्लेख है। मध्यकाल में उसकी आवश्कता नहीं समझी गई और कान को कपड़े में बँधे मोम की पोटली से कर्ण छिद्रों का बन्द कर लेना पर्याप्त समझा गया। इससे दोनों हाथों को गोदी में रखने और नेत्र अर्धोन्मीलित रखने की ध्यान मुद्रा ठीक तरह सधती और सुविधा रहती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

थी। अब अनेक आधुनिक अनुभवी शवासन, शिथिलीकरण मुद्रा में अधिक अच्छी तरह ध्यान लगने का लाभ देखते हैं। आराम कुर्सी का सहारा लेकर शरीर को ढीला छोड़ते हुए नादानुसन्धान में अधिक सुविधा अनुभव करते हैं। कान बन्द करने के लिए ठीक नाप के शीशियों वाले कार्क का प्रयोग कर लिया जाता है। इनमें से किससे, किसे, कितनी सरलता एवं सफलता मिली यह तुलनात्मक अभ्यास करके जाना जा सकता है। इनमें से जिसे जो प्रयोग अनुकूल पड़े वह उसे अपना सकता है। सभी उपयोगी एवम् फलदायक हैं।

कबीर पंथ और राधा स्वामी मत में इस साधना की बड़ी मान्यता है। नादविन्दोपनिषद में इस नाद योग का विस्तृत वर्णन है।

जायफल का चूर्ण, मोम और थोड़ी कस्तूरी मिला कर उसे लाल रेशम की दो छोटी-छोटी गोली जैसी पोटलियों में बाँध लेना चाहिए। यह पोटली इतनी बड़ी होनी चाहिए कि कान में बोतल के कार्क की तरह फिट हो जावें और भीतर हवा जाने को स्थान न बचे। कोई-कोई साधक इन पोटलियों की बजाय तुलसी, चन्दन की लकड़ी, बोतलों के कार्क, रूई या उँगलियों का प्रयोग करते हैं। प्राचीन प्रथा तो रेशम की पोटली की है। पर सुविधानुसार अन्य चीजों से भी काम लिया जा सकता है। साधना के बाद इन्हें निकाल कर ठीक तरह से साफ कर लेना जरूरी है जिससे कि कान का मैल उससे चिपका रहकर गन्दगी की वृद्धि न करे।

इस साधना के लिए रात्रि का निस्तब्ध कोलाहल रहित समय अधिक उत्तम है। शुद्ध होकर शान्तिपूर्वक ऐसे सुविधा जनक आसन पर बैठिए जिसे कष्ट के कारण साधना समय के बीच में फिर न बदलना पड़े। गोली, पोटली, कार्क, रूई या उँगली लगाकर कान के छेदों को बन्द कर लीजिए ताकि बाहर के शब्द कानों के भीतर न पहुँचने पावें। नेत्रों को बन्द कर लीजिए, मेरुदण्ड सीधा रखिए।

नाद की स्वर-लहरियों को पकड़ते-पकड़ते साधक 'ॐ' की रस्सी पकड़ता हुआ उस उद्गम ब्रह्म तक पहुँच जाता है, जो आत्मा का अभीष्ट स्थान है। ब्रह्मलोक की प्राप्ति, दूसरे शब्दों में मुक्ति, निर्वाण, परमपद आदि नामों से पुकारी जाती है। नाद के आधार पर मनोलय करता हुआ साधक योग की अन्तिम सीढ़ी तक पहुँचता है और अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। नाद का अभ्यास किस प्रकार करना चाहिये। इस संबंध में सरल विधि इस प्रकार है—

अभ्यास के लिये ऐसा स्थान प्राप्त कीजिये, जो एकान्त हो और जहाँ बाहर की सार्थक आवाज न आती हों। तीक्ष्ण प्रकाश इस अभ्यास में बाधक है। इसलिये कोई अंधेरी कोठरी ढूँढ़नी चाहिये। एक पहर रात हो जाने के बाद से लेकर सूर्योदय से पूर्व तक का समय इसके लिये बहुत ही अच्छा है। यदि इस समय की व्यवस्था न हो तो प्रातः ९ बजे तक और शाम को दिन छिपे बाद का कोई समय नियत किया जा सकता है। नियत नियमित समय पर अभ्यास करना चाहिये। अपने नित्य कमरे में एक आसन या आराम कुर्सी बिछाकर बैठें। आसन पर बैठें तो पीठ पीछे कोई मसनद या कपड़े की गठरी आदि रखलें। यह भी न हो तो अपना आसन एक कोने में लगायें। जिस प्रकार शरीर को आराम मिले, उस तरह बैठ जायँ और शरीर को ढीला छोड़ने का प्रयत्न करें, भावना करें कि मेरा शरीर रूई का ढेर मात्र है और मैं इस समय इसे पूरी तरह स्वतन्त्र छोड़ रहा हूँ। थोड़ी देर में शरीर बिल्कुल ढीला हो जायगा और अपना भार अपने आप न सहकर इधर-उधर को लुढ़कने लगेगा। आराम कुर्सी, मसनद या दीवार का सहारा ले लेने से शरीर ठीक प्रकार अपने स्थान पर बना रहेगा। साफ रुई की मुलायम सी दो डाटें बनाकर उन्हें कानों से लगायें जिससे कि बाहर की कोई आवाज भीतर प्रवेश न कर सके। उँगलियों से कान के छेद बन्द करके भी काम चला सकते हैं। अब बाहर की कोई आवाज सुनाई न पड़ेगी अतः सब ओर से ध्यान हटाकर अपने मूर्धा स्थान पर ले जायँ और वहाँ जो शब्द हो रहे हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक सुनने का प्रयत्न करें।

आरम्भ में शायद कुछ भी सुनाई न पड़े, पर दो-चार दिन प्रयत्न करने के बाद जैसे-जैसे सूक्ष्म कर्णेन्दिय निर्मल होती जायेंगी, वैसे शब्दों की स्पष्टता बढ़ती जायगी। पहिले-पहले कई शब्द सुनाई देते हैं। शरीर मे जो रक्त प्रवाह हो रहा है, उसकी आवाज रेल की तरह धक्-धक्-धक् सुनाई पड़ती है। वायु के आने-जाने की आवाज बादल गरजने जैसी होती है, रसों के पकने और उनके आगे की ओर गति करने की आवाज चटकने की-सी होती है। यह तीन प्रकार के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

शब्द शरीर की क्रियाओं द्वारा उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार दो तरह के शब्द मानसिक क्रियाओं के हैं। मन में चंचलता की लहरें उठती हैं, वे मन पर विशिष्ट प्रक्रिया करती हैं। वे मानस-तन्तुओं पर टकराकर ऐसे शब्द करती है, मानो टीन के ऊपर मेह बरस रहा हो और जब मस्तिष्क बाह्य-ज्ञान को ग्रहण करके अपने में धारण करता है तो ऐसा मालूम होता है मानों कोई प्राणी साँस ले रहा हो। यह पाँचों शब्द शरीर और मन के हैं। कुछ ही दिन के अभ्यास से साधारणत: दो-तीन सप्ताह के प्रयत्न से यह शब्द स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ते हैं। इन शब्दों के सुनने से सूक्ष्म इन्द्रियाँ निर्मल होती जाती हैं और गुप्त शक्तियों को ग्रहण करने की उनकी योग्यता बढ़ती जाती है।

जब नाद श्रवण करने की योग्यता बढ़ जाती है, तो बंशी या सीटी से मिलती जुलती अनेक प्रकार की शब्दावलियाँ सुनाई पड़ती हैं, यह सूक्ष्म लोक में होने वाली क्रियाओं की परिचायक है। बहुत दिनों से बिछुड़े हुए बच्चे को यदि उसकी माता की गोद में पहुँचाया जाता है, तो वह आनन्द से विभोर हो जाता है- ऐसा ही आनन्द सुनने वाले को आता है।

जिन सूक्ष्म शब्द-ध्वनियों को आज वह सुन रहा है, वास्तव में यह उसी तत्व के निकट से आ रही हैं, जहाँ आत्मा और परमात्मा का विलगाव हुआ है और जहाँ पहुँचकर दोनों फिर एक हो सकते हैं। धीरे-धीरे यह शब्द स्पष्ट होने लगते हैं और अभ्यासी को उनके सुनने में अद्‌भुत आनन्द आने लगता है। कभी-कभी तो वह उन शब्दों में मस्त होकर आनन्द से विह्वल हो जाता है और अपने तन-मन की सुध भूल जाता है। अन्तिम शब्द है, यह बहुत ही सूक्ष्म है। इसकी ध्वनि घंटा-ध्वनि के समान होती है। घड़ियाल में हथोड़ी मार देने पर जैसे वह कुछ देर तक झनझनाती रहती है, उसी प्रकार 'ॐ' का घन्टा-शब्द सुनाई पड़ता है।

ॐ कार ध्वनि जब सुनाई पड़ने लगती है, तो निन्द्रा, तन्द्रा या बेहोशी जैसी दशा उत्पन्न होने लगती है। उसी स्थिति के ऊपर बढ़ने वाली आत्मा परमात्मा में प्रवेश करती जाती है और पूर्णतया परमात्म—अवस्था प्राप्त कर लेती है।

यहाँ यह जान लेना आवश्यक है कि अनुभूतियों (ध्वनि संकेतों) का जो क्रम ऊपर बताया गया है, वही शब्द उसी क्रम से सुनाई दें। इनके क्रम में उलट फेर भी हो सकता है। कभी किसी साधक को सहसा कोई ऊपर के क्रम का शब्द भी सुनाई देने लगता है और कभी वह पिछला शब्द असंयम या नाड़ी दोष से फिर आ जाता है, जिसे वह पहिले सुन चुका है।

साधन के समय हल्का सात्विक भोजन, ब्रह्मचर्य और मानसिक उत्तेजनाओं से बचना आवश्यक है। आहार-विहार सर्वथा सात्विक रखने से ही सफलता प्राप्त होती है।

साधक को अनेक प्रकार के दृश्य ध्यान में दिखलाई पड़ेंगे। अनेक प्रकार के स्वादों का अनुभव होगा। योग ग्रन्थों एवं सन्तों की वाणियों में इन दृश्यों तथा रसों का विशद वर्णन है। उन सबको देने के लिये न तो यहाँ स्थान है और न उसकी आवश्यकता।

चाहे कोई भी दृश्य दिखलाई पड़ें या कोई भी रस अनुभव में आवे, दृश्य सुन्दर हो या भयानक, रस मधुर हो या कटु साधक को उन पर ध्यान नहीं देना चाहिये। उसे न तो आकर्षित होना चाहिये और न घबड़ाना या डरना चाहिये। उसे अपना ध्यान केवल शब्द पर केन्द्रित रखना चाहिये। यदि मन बहुत चंचल हो उठे तो उसी शब्द में अपने अभीष्ट मन्त्र की कल्पना करके उसको सुनने का प्रयत्न करना चाहिये।

इस प्रकार अभ्यास करते-करते साधक का मन धीरे-धीरे तमोगुण और रजोगुण का त्याग करके शुद्ध होता है। अन्त में वह शुद्ध सात्विक रूप में स्थिर हो जाता है। तत्पश्चात् साधक समाधि को प्राप्त करता है। शुद्ध सत्व को प्राप्त मन लय होता है और साधक समाधि अवस्था में पहुँच जाता है। बिना अन्तर दिये, नित्य निश्चित समय पर संयम पूर्वक साधन करने वाला सदाचारी साधक शीघ्र ही इस मार्ग से अपने मूल लक्ष्य को प्राप्त करता है।

नादयोग—दिव्य सत्ता के साथ आदान-प्रदान

नाद ब्रह्म अथवा शब्द ब्रह्म का अभिप्राय उस अनाहत ध्वनि से है जो प्रकृति और पुरुष के संयोग स्थल से निरन्तर प्रसृत और निनादित होती रहती है। ॐकार वही स्वयंभू ब्रह्मनाद है। उससे सप्त स्वर प्रस्फुटित हुए। श्रुति शास्त्र में प्रयुक्त होने वाले उदात्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुदान स्वरूप उसी के आरोह अवरोह हैं। संगीत शास्त्र में आगे चलकर वे ही सा, रे, ग, म, प, ध, नि, के स्वर सप्तक बन गये। सूर्य रथ के सप्त उसके प्रभा किरणों में सन्निहित रंग हैं। उसी प्रकार ब्रह्मनाद का ध्वनि गुंजन सप्तधा स्वर लहरी में निनादित होता है।

यों सुनने में सप्तस्वर और उनके आरोह-अवरोह मात्र शब्द ध्वनि का उतार-चढ़ाव प्रतीत होते हैं और उनका उपयोग वाद्य गायन में प्रयुक्ति होना भर लगता है पर वस्तुतः उसकी सीमा इतनी स्वल्प नहीं है। मनुष्य कृत स्वर लहरी के अतिरिक्त प्रकृति गत, स्वर प्रवाह जीवधारियों द्वारा विविध विधि उच्चारण भी कम महत्व के नहीं हैं। मेघ गर्जन, समुद्र तर्जन, विद्युत कड़क, वायु सन-सनाहट, निर्जन की साँय-साँय, अग्नि शिखा की धू-धू, निर्झर निनाद, प्रकृति गत ध्वनियाँ हमें समय-समय पर सुनने को मिलती रहती हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न पशु, पक्षी आवश्यकतानुसार अपनी-अपनी बोलियाँ बोलते हैं। रात्रि की नीरवता में झिल्ली की झंकार सुनते ही बनती है। सूर्योदय के समय पक्षियों के कंठ कितने प्रकार की कितनी मधुर स्वर लहरियाँ प्रस्तुत करते हैं। उन्हें सुनकर मुग्ध हो जाना पड़ता है। लगता है स्वर ब्रह्म अपने अगणित ध्वनि प्रवाहों में न जाने कितने भाव भरे संकेतों और संदेशों को इस विश्व ब्रह्माण्ड में भरता बहाता रहता है।

यह सब आहत ध्वनियाँ हैं जो कानों से सुनी जा सकती हैं। विज्ञान की पकड़ में वे ध्वनियाँ भी आ गई हैं जो मनुष्य के कानों से सुनी जा सकने वाली मर्यादा से या तो ऊँची हैं या नीची। हमारे खुले कान उन्हें सुन नहीं सकते, फिर भी साधन उपकरणों द्वारा उन्हें उसी प्रकार सुना जा सकता है जैसे खुली आँख से न दीखने वाले लघुकाय जीवाणु माइक्रोस्कोप जैसे सूक्ष्म दर्शक यन्त्रों से भली प्रकार देखे जा सकते हैं। यह प्रकृतिगत ध्वनियाँ हैं। कान की पकड़ से बाहर होने के कारण ही इन्हें सूक्ष्म कहा जाता है अन्यथा वस्तुतः यह स्थूल ही हैं क्योंकि यन्त्रों के माध्यम से उन्हें हमारे कान भी सुन, समझ सकते हैं।

इसमें ऊँचे स्तर की ध्वनियाँ वे ही हैं जिन्हें जड़ जगत के अण्ड-परमाणुओं द्वारा स्पन्दित नहीं कहा जा सकता। उनका सम्बन्ध चेतन जगत के जीवन प्रवाह से है। उन्हें एक प्रकार से अतीन्द्रिय भी कह सकते हैं। उनका मूल स्रोत चेतना तत्व है। इसलिए उन्हें ब्रह्म वाणी भी कहते हैं। इन्हीं ध्वनियों का अलंकारिक वर्णन शिव के डमरू घोष, सरस्वती के वीणा वादन एवं कृष्ण के बंशी, दुर्गा के निनाद, ताल नृत्य एवं भैरव नाद जैसे सरस उपाख्यानों और घटनाक्रमों के रूप में किया गया है।

यह दिव्य ध्वनियाँ अनन्त अन्तरिक्ष में बिना किसी प्रकृतिगत हलचल का आश्रय लिये स्वयमेव विनिसृत होती रहती हैं। ये चेतन हैं, दिव्य हैं, अलौकिक, अभौतिक और अतीन्द्रिय हैं। इसलिए उन्हें देववाणी भी कहते हैं। उन्हें ध्यान योग के माध्यम से हमारा चेतन अन्तःकरण सुन सकता है। श्रवण का सम्बन्ध कर्णेन्द्रिय से है, अस्तु सूक्ष्म एवं चेतन श्रवण भी शब्द संस्थान के इस प्रतिनिधि केन्द्र का सहारा लेकर सुना जाता है। प्रत्येक इन्द्रिय की तन्मात्राएँ स्थूल से सूक्ष्म का सम्बन्ध बनाती हैं। शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श शरीर की पाँच ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से पाँच तत्व के सान्निध्य से उत्पन्न होने वाली अनुभूतियों से ही हमें यह स्थूल का सूक्ष्म की ओर गति का एक चरण हुआ। उसके अगले चरण विशुद्ध चेतन एवं अभौतिक हो जाते हैं। जिन दिव्य ध्वनि प्रवाहों की चर्चा इन पक्तियों में हो रही है वह उसी चेतन जगत के उच्चस्तर से संबन्धित हैं। ब्रह्मवाणी—देवध्वनि को इसी रूप में समझा जाय।

नादयोग का केन्द्र बिन्दु उपरोक्त पंक्तियों के आधार पर सरलतापूर्वक जाना जा सकता है। योगशास्त्र के साधना विधानों में एक महत्त्वपूर्ण धारा नादयोग की भी है। कानों को उँगलियों से, शीशी वाले कार्क से, कपड़े की गोली से इस प्रकार बन्द किया जाता है कि बाहर की वायु या स्थूल आवाजें भीतर प्रवेश न कर सकें। इस स्थिति में कानों को बाहरी ध्वनि आधार से विलग किया जाता है और ध्यान को एकाग्र करके यह प्रयत्न किया जाता है कि अतीन्द्रिय जगत से आने वाले शब्द प्रवाह को अन्तःचेतना द्वारा सुना जा सके। यों इसमें भी कर्णेन्द्रिय का, उसकी शब्द तन्मात्रा का योगदान तो रहता है पर वह श्रवण है, वस्तुतः उच्चस्तरीय चेतन जगत की ध्वनि लहरी सुनने के लिए, कर्णेन्द्रिय और अन्तःकरण का इसे संयुक्त प्रयास भी कह सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शांन्तिकुंज के साधना सत्रों में सायं ६ बजे से सवा छह बजे तक नादयोग के अभ्यास का समय है। इसका प्रथम चरण अभ्यास के लिए इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि प्रत्येक साधक के पास-लाऊडस्पीकर के माध्यम से एक सुमधुर ध्वनि प्रवाह पहुँचाया जाता है और साधक को कहा जाता है कि वह सुखासन में बैठकर शान्तिपूर्ण स्थिति में शरीर और मन को साध कर इस ध्वनि प्रवाह के साथ-साथ अपनी अन्तःचेतना को भाव-विभोर स्थिति में बहाने का प्रयत्न करे। जिस प्रकार सँपेरे द्वारा बीन बजाये जाने पर सर्प बिल में से निकल आते हैं और उस स्वर लहरी पर लहराने लगते हैं उसी प्रकार इस संगीत ध्वनि के साथ-साथ साधक अपने मन को लहराने का प्रयत्न करे।

भावना शील मनःस्थिति के लोग नादयोग जैसी सुकोमल ध्वनियाँ भाव संवेदनाओं के आधार पर सुन लेते हैं पर यह हर किसी के लिए आवश्यक, अनिवार्य नहीं कि वह उस प्रकार का दिव्य श्रवण कर ही सके। किन्हीं-किन्हीं को बहुत करने पर भी ऐसी कुछ अनुभूतियाँ नहीं होती। उन्हें निराश होने की तनिक भी आवश्यकता है नहीं; वे अपनी अन्तः चेतना को प्रत्यक्ष ध्वनियों के सहारे नादयोग जैसी स्थिति में ही उद्वेलित कर सकते हैं।

विन्दुयोग की प्रारम्भिक साधना प्रकाशदीप के माध्यम से होती है। बारबार दीप शिखा देखने, आँखें बन्द करने और भ्रूमध्य भाग में ध्यान जमाने की आवश्यकता पड़ती है जब वह भूमिका परिपक्व हो जाती है तो प्रकाश स्वतः दृष्टिगोचर होता है और दीपक की आवश्यकता नहीं रहती। ठीक इसी प्रकार बाहरी बाद्य यन्त्रों का सहारा लेकर नादयोग का साधना क्रम आगे बढ़ाया जा सकता है। टेप रिकार्डर पर संगीत ध्वनियाँ भरी रह सकती हैं और उन्हें अपने साधना कक्ष में सुनते हुए उपरोक्त अनुभूतियाँ जगाई जा सकती हैं। रिकार्ड प्लेयर पर कोई भाव स्वर प्रवाह सुने जा सकते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि एक केन्द्र स्थान पर वाद्ययन्त्र बजते रहें और समीपवर्ती कक्षों में साधनारत साधक उनका श्रवण आनन्द लेते हुए नादयोग का क्रम चलाते रहें। स्वयं भी इकतारा, सितार, जैसे मृदुल बाद्ययंत्र बजाते हुए उस स्थिति में आत्मविभोर हो सकते हैं। झीगुरों की झंकार, चिड़ियों की चह-चहाहट सुनने का प्रकृति सान्निध्य मिल सके तो वह सहज वाद्य भी उपयुक्त रहेगा। इस प्रकार के बाद्य माध्यमों का आश्रय लेकर भी नादयोग की साधना हो सकती हैं और यदि भावना स्तर प्रखर रहे तो उनसे भी उतना ही लाभ मिल सकता है जितना कि कान के छेद बन्द करके अन्तःचेतना द्वारा दिव्य नाद सुनने से उपलब्ध होता है।

विभिन्न व्यक्तियों के मनःस्तर विभिन्न प्रकार के होते हैं। किन्हीं की कल्पनाशीलता भावुकता बढ़ी-चढ़ी होती है और वे दिव्य दर्शन, दिव्य श्रवण, दिव्यरस, दिव्य स्पर्श का आनन्द अधिक कोमलता पूर्वक उठा सकते हैं पर किन्हीं का भाव स्तर काफी कठोर होता है उन्हें बहुत प्रयास करने पर भी ऐसा कुछ अनुभव नहीं होता। इसमें संरचना मात्र का अन्तर है। यह समझ बैठने का अवसर नहीं कि इनमें से आत्मिक प्रगति के क्षेत्र में कौन सफल और कौन असफल रह रहा है?

साहसिकता और प्रखर चेतना का एक स्तर है, जिसे धन विद्युत आवेशों से बनी मनोभूमि कह सकते हैं। दूसरी मनोभूमि ऋण आवेशों से बनी होती है, उससे भावुकता बढ़ी-चढ़ी होती है—संवेदनाऐं बहुत उठती हैं और भावात्मक अनुभूतियाँ सहज ही उठती रहती हैं और कई बार वे इतनी प्रबल होती हैं कि निष्ठा को प्रत्यक्ष मूर्तिमान बनने का सहज अवसर मिल जाता है। उन्हें कतिपय प्रकार की दिव्य अनुभूतियाँ निरन्तर होती रहती हैं। मृदुल और कठोर संरचनाओं का अपना-अपना महत्त्व है। पर प्रायः होता जन्मजात है। उसमें सुधार यत्किंचित ही हो पाता है।

जिनकी मानसिक संरचना कोमल होगी, उन्हें ध्यान-धारण के स्वल्प प्रयास ही बहुत कुछ अनुभव कराने लगेंगे किन्तु यदि संरचना कठोर हुई तो फिर कुछ अतिरिक्ति अनुभव न हो सकेगा। इतना होने पर भी निराशा का कोई कारण नहीं। कठोर संरचना की स्थिति अपने ध्यान प्रयोजन स्थूल उपकरणों के मध्यम से जमानी चाहिए। दिव्य दर्शन का प्रयोजन मूर्तियों अथवा चित्रों को देख कर हो सकता है। दीप शिखा, सूर्य अथवा चन्द्र का आश्रय लेकर भी वही प्रयोजन पूरा हो सकता है। दिव्य गन्ध के लिए कूपर, चन्दन इत्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि का प्रयोग हो सकता है। दिव्य रस के लिए मुख में मिश्री या कोई मिठास जैसी गोली रखी जा सकती है। स्पर्श के लिए शीत या ताप के लिए ठण्डे घड़े या गर्म अग्नि उपकरण का प्रयोग हो सकता है और नादयोग के लिए स्वयं इकतारा जैसा कोई वाद्य यन्त्र सीखकर अथवा टेपरिकॉर्डर आदि का उपयोग करके वह प्रयोजन पूरा किया जा सकता है।

वायु का दबाव हल्का होने और प्रशान्त सागर के पानी में नमक की मात्रा अधिक रहने से उसमें ऊँची लहरें नहीं उठतीं: किन्तु अटलांटिक सागर की स्थिति इससे भिन्न है, उसमें तूफानों की भरमार रहती है। कठोर मन:स्थिति की तुलना प्रशान्त महासागर से और कोमल स्थिति को अटलांटिक के समतुल्य समझा जा सकता है। दोनों में किसी को श्रेष्ठ निकृष्ठ नहीं ठहराया जा सकता, दोनों की ही अपनी विशेषताएँ हैं और दोनों को ही अपना महत्त्व प्रकट करने तथा प्रगति पथ पर अग्रसर होने का पूरा-पूरा अवसर है। साधना पद्धति में उसके माध्यम उपकरण में यह हेर-फेर किया जा सकता है कि व्यक्ति की चेतना स्थिति को ध्यान में रखते हुए उसे अन्तर्मुखी अथवा बहिर्मुखी की साधना प्रक्रिया अपनाने के लिए कहा जाय।

नादयोग से दिव्य-क्षमताओं और दिव्य-भावनाओं का विकास

कानों से सुनी जाने वाली ध्वनियाँ इतनी उथली और हल्की होती हैं कि उनका किसी प्राणी या पदार्थ पर जानकारी देने के अतिरिक्त और कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। यों श्रवण ध्वनियों के साथ जुड़े हुए घटनाक्रम एवं घुले हुए भाव-प्रवाह अपना महत्त्व रखते हैं और यत्किंचित प्रभाव भी डालते हैं, पर वह सब मिलाकर भी श्रवणातीत ध्वनियों की क्षमता के समतुल्य नहीं हो सकता। प्रकृति का अनुग्रह ही है कि वे सूक्ष्म ध्वनियाँ हमारे कानों की जीव सत्ता को बिना प्रभावित किये ही अन्तरिक्ष में उड़ती रहती हैं। यदि वे सुनाई देने लगतीं तो कोलाहल से कान बहरे हो जाते। यदि वे प्रभावित करने लगतीं तो उनके प्रहार से शरीर सत्ता का अस्तित्व ही संदिग्ध बन जाता।

कानों की ग्रहण शक्ति बहुत ही भोंड़ी और थोड़ी है। हमारे कान मात्र एक सैकिण्ड में २० से लेकर २० हजार तक कम्पन उत्पन्न करने वाली ध्वनियों को ही सुन सकते हैं। इससे न्यूनाधिक कम्पनों की ध्वनियाँ पकड़ में नहीं आतीं। श्रवणातीत अति स्वन ध्वनियाँ १० लाख से लेकर १००० करोड़ कम्पनों तक की तरंगें हर सैकिण्ड उत्पन्न करने वाली पाई गई हैं इनकी सामर्थ्य उनकी सूक्ष्मता के आधार पर अधिकाधिक होती चली जाती है।

श्रवणातीत ध्वनियों का उपयोग जब से वैज्ञानिकों ने जाना है तब से वे उनके अत्यन्त प्रभावशाली उपयोग करने लगे हैं। शल्य चिकित्सा, कीटाणु संहार, ऋतु परिवर्तन, मोटे धातु-खण्डों को गला देना, जैसे प्रचण्ड कार्य उनसे लिये जा रहे हैं। कल कारखानों के लिए तो उन्हें बिजली एवं अणुशक्ति की तरह काम में लाया जा रहा है।

वैज्ञानिक सोचते हैं कि भविष्य में मानवी आवश्यकता की अभीष्ट ऊर्जा, श्रवणातीत ध्वनि तरंगों से उपलब्ध की जा सकेगी। तब मनुष्य को परम शक्तिशाली कहला सकने का अवसर मिल जायगा।

धरती पर होरही हलचलों से जो ध्वनि तरंगें उत्पन्न होती हैं उनके अतिरिक्त ऐसी तरंगें भी पाई गई हैं, जिनका जागतिक हलचलों से सीधा सम्बन्ध नहीं है। उनका स्तर, स्वरूप एवं प्रभाव अलौकिक है। विज्ञानी सोचते हैं कि यह विलक्षण अन्तर्ग्रही ध्वनि प्रवाह ब्रह्माण्ड के किसी अज्ञात केन्द्र से धरती पर आता है और उसी की सामर्थ्य से अपने भूलोक के विभिन्न पदार्थों एवं क्रिया-कलापों का सूत्र संचालन होता है।

शब्द की महत्ता को अध्यात्म शास्त्र आरम्भ से ही प्रतिपादित करते रहे हैं। नादयोग का पूरा ढाँचा इसी निमित्त खड़ा किया गया है कि सूक्ष्म शरीर के संयंत्र को विकसित करके दिव्य ध्वनियों को पकड़ने, समझने में सफलता प्राप्त की जा सके। इस आधार पर प्रकृतिगत उन भौतिक हलचलों को जाना जा सकता है। जो सामान्य मनुष्य के ज्ञान क्षेत्र से ऊपर की हैं। इसके अतिरिक्त परा प्रकृति से सम्बन्धित सूक्ष्म जगत की वे सचेतन हलचले हैं, जो ध्वनि रूप में परिभ्रमण करती हैं और समस्त प्राणि जगत को प्रभावित करती हैं। नादयोग के अभ्यास से आत्म-चेतना को परिष्कृत और सूक्ष्म शरीर की कर्णेन्द्रिय तन्मात्रा शब्द को परिष्कृत किया जाता है। इस आधार पर अदृश्य एवं अविज्ञात से सम्पर्क साधा जाता है और अतीन्द्रिय ज्ञान प्राप्त करने का लाभ उठाया जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

नादयोग के द्वारा सुनी जाने वाली यह दिव्य ध्वनियाँ अनन्त अन्तरिक्ष में बिना किसी प्रकृतिगत हलचल का आश्रय लिए स्वयमेव विनिसृत होती रहती हैं। ये चेतन हैं, दिव्य हैं, अलौकिक, अभौतिक और अतीन्द्रिय हैं। इसलिए उन्हें देववाणी भी कहते हैं। उन्हें ध्यान-योग के माध्यम से हमारा चेतन अंत:करण सुन सकता है। श्रवण का सम्बन्ध कर्णेन्द्रिय से है, अस्तु सूक्ष्म एवं चेतन श्रवण भी शब्द संस्थान के इसी प्रतिनिधि केन्द्र का सहारा लेकर सुना जाता है।

नादयोग में कान को सूक्ष्म चेतना की दिव्य ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं। कई बार ये अतिमन्द होती हैं। कई बार कुछ प्रखर। इनमें प्राय: कृष्ण की बंशी जैसी-सर्प पकड़ने में काम आने वाले बीन जैसी ध्वनियाँ रहती हैं। रास लीला में कृष्ण का वंशी वादन और गोपियों का ताल नृत्य आत्मा और परमात्मा के बीच चलने वाला वेणुनाद ही समझा जा सकता है। कुमार्गगामी-भौतिक तृष्णा और वासना का विष पिण्ड मन - एक प्रकार से विषधर सर्प है। उसे भी आनन्द, उल्लास की, दिव्य प्रेरणाओं के अनुगमन के रूप में लहराने का अवसर इस बीन की ध्वनि सुनने से मिल सकता है। सपेरा विषधर सर्पों को पकड़ने के लिए बीन बजाता है। जब वह लहराने लगता है तो उसे चुपके से पकड़कर पिटारे में बन्द कर लेता है। मन के निग्रह में-प्राणों के निरोध में- नादयोग का ध्वनि प्रवाह बहुत सफल रहता है।

नाद साधना में दो कार्य साथ-साथ सम्पन्न किये जाते हैं पहला शरीर तथा मन का संशोधन, संतुलन और शक्ति वृद्धि। दूसरा अन्तरिक्षव्यापी ध्वनि प्रवाहों का ज्ञान एवं लाभ। इन दोनों कार्यों को सम्पन्न करने के लिए ये प्रक्रियाएँ अपनाई जाती हैं। एक तो अपने अन्तरंग में निरंतर उल्लसित शब्द ब्रह्म का जागरण, दूसरा आकाशीय दिव्य ध्वनियों का श्रवण। दोनों का निरन्तर अभ्यास करना होता है। नाद योग की पूर्णता दोनों ही प्रयोग-प्रयोजनों से सम्बद्ध है और साधक अपनी रुचि तथा प्रवृत्ति के अनुसार किसी एक मार्ग से बढ़ने का अभ्यास प्रारम्भ कर सकता है, यद्यपि विकसित स्थिति में दोनों ही मार्गों से अलग-अलग एक ही व्यक्ति अभ्यास कर सकता है।

प्रकृति के सभी पदार्थों की हलचलें सूक्ष्म रूप में किसी न किसी प्रकार की ध्वनि को जन्म देती हैं। मानवी काया भी पदार्थ विनिर्मित ही है और उसमें प्रयुक्त पदार्थों की विभिन्न गतियाँ उसी प्रकार ध्वनि समूह के विविध रूप उत्पन्न करती रहती हैं, जिस प्रकार कि सृष्टि में अन्यत्र सर्वत्र ध्वनि गुच्छकों की चिरंतन क्रीड़ाएँ गतिशील है। शरीर की इन ध्वनियों को सुन जानकर मर्मज्ञ लोग शरीर की स्थिति का, स्वस्थता, अस्वथता का पता पा जाते हैं, नाड़ी की धड़कन की संख्या और प्रकार से नाड़ी-वैद्य शरीर सम्बन्धी जानकारी दे सकते हैं। स्टेथस्कोप द्वारा डॉक्टर हृदय, फेफड़े, गुर्दे, आमाशय, उदर प्रदेश, मेरुदन्ड, पृष्ठ भाग आदि अवयवों की गतियों के उत्पन्न ध्वनि-प्रवाह को सुनकर उनमें होने वाले विकारों का अनुमान करने में समर्थ होते हैं। यह सब इन शारीरिक अवयवों की सक्रियता से उत्पन्न ध्वनियों के ही कारण सम्भव होता है।

इसी प्रकार मानव मस्तिष्क से भी निरन्तर लयबद्ध तरंगें निकलती रहती हैं। इसके आधार पर मनुष्य की मानसिक स्थिति का पता लगाया जा सकता है। इलेक्ट्रोएन सेफेलोग्राक द्वारा इन तरंगों को नापा जा सकता है। अब तक प्राप्त जानकारियों के अनुसार मस्तिष्क से चार प्रकार की तरंगें विभिन्न अवस्थाओं में निकलती रहती हैं बीटा, अल्फा, थीटा और डेल्टा। डेल्टा की गति एक से तीन साइकिल्स प्रति सेकण्ड होती है। गहरी नींद की अवस्था में यह निरर्धारित होती है। थीटा तरंगों की प्रति सेकन्ड चार से सात साइकिल्स होती है। यह विश्रामवस्था में निकलती तथा सृजनात्मक विशेषता लिए हुए होती है। अल्फा तरंगें ऊँची चेतना की प्रतीक हैं। प्रति सेकन्ड इनकी आवृति चार से बारह साइकिल्स होती है। बीटा तरंगें मस्तिष्क के अगले भाग से निकलती हैं, जहाँ से विचार उठते हैं। अब सम्भावना यह भी बन चली है कि इन मस्तिष्कीय तरंगों को बदला जा सकता है।

पदार्थ है अथवा विचार, सभी ध्वनि-ऊर्जा के प्रकम्पन की अवस्थाएँ विशेष हैं। ध्वनि आवृत्तियों के परिवर्तन के साथ ही इन अवस्थाओं में भी परिवर्तन होता जाता है।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आज भाषा-शास्त्रीय अध्ययन का एक महत्वपूर्ण अंग है ध्वनि-विज्ञान इस विज्ञान के विकास के साथ ही यह भी स्पष्ट हो गया है कि संस्कृत-भाषा का सम्पूर्ण व्याकरण इसी ध्वनि-विज्ञान की सैद्धान्तिक समझ के अनुसार सम्भव हुआ है। ध्वनि की आकृति के स्तरों तथा उनके उत्पादक उपकरणों यानी अंगों के भेद से भिन्न-भिन्न शब्द धातुएँ बनती हैं। उनका अर्थ मूलत: ध्वनि शास्त्रीय व्यंजना के ही अनुरूप होता है। बाद में, उन्हीं धातुओं में प्रत्यय, उपसर्ग आदि लगाकर शब्द बनाये जाते हैं। उच्चारण में नियोजित की जाने वाली प्राण शक्ति के मात्राभेद से भी शब्दों का स्वरूप एवं अभिप्राय बदलता रहता है।

मस्तिष्कीय तरंगों का स्वरूप भी मन:स्थिति के अनुरूप बदलता रहता है। आधुनिक वैज्ञानिक इस दिशा में व्यापक अध्ययन अनुसंधान कर रहे हैं।

मस्तिष्क की ये तरंगे, दूसरे मस्तिष्कों तथा पदार्थों से उत्सर्जित तरंगों के प्रति संवेदनापूर्ण प्रतिक्रियाएँ करती हैं। व्यक्तियों के प्रति आकर्षण या विकर्षण की अनुभूति में इन मस्तिष्कीय तरंगों का बड़ा हाथ रहता है। किसी व्यक्ति की मस्तिष्कीय तरंगों की आवृत्ति स्तर तथा स्वरूप जिस प्रकार के होंगे, उससे साम्य रखने वाली मस्तिष्कीय तरंगों वाले अन्य व्यक्ति के प्रति उस व्यक्ति को निश्चित तीव्र आकर्षण का अनुभव होगा। जब कि उससे सर्वथा भिन्न, वैसम्य पूर्ण तरंगों वाले व्यक्ति के प्रति तीव्र अरुचि का भाव अनायास उठेगा। स्थान विशेष से रूचि, अरुचि उत्पन्न होना भी उस समय में स्पन्दित हो रही तरंगों का ही प्रभाव होता है। निम्न आवृत्ति के विशृंखलित प्रकम्पन अपना-कुप्रभाव फैलाते हैं, जबकि संश्लिष्ट उच्च आवृत्तियाँ सुप्रभाव उत्पन्न करती हैं।

यूनान के दक्षिणी छोर पर एक स्थान है, सन्तोरीनी द्वीप। वहाँ जाने वाले अधिकांश व्यक्तियों का अनुभव है कि, उस स्थान पर विचित्र प्रकार की मानसिक बेचैनी उत्पन्न हो जाती है। वैज्ञानिकों के द्वारा खोज से पता चला है कि वहाँ पृथ्वी के तल में अत्यन्त निम्न आवृत्तियों वाली ध्वनि तरंगें प्रवाहित हैं जो पहुँचने वालों पर अपना कुप्रभाव छोड़ती हैं। नवीन शोधों के अनुसार ज्ञात हुआ है कि अत्यन्त निम्न आवृति की ध्वनियों के स्तर पर ही भूचाल, भूकम्प की घटनाएँ होती हैं। आने वाले तूफानों आदि के समय भी उस वातावरण में ध्वनि तरंगों की आवृति अत्यन्त निम्न हो जाती है। इस आधार पर ही जीव-जन्तु आने वाले प्राकृतिक संकटों का अनुमान लगा लेते हैं।

ध्वनि तरंगों का प्रभाव शरीर एवं मन पर असाधारण रूप से पड़ता है। ध्वनि कर्कशता व्यक्ति को उत्तेजित करती है तथा विचार एवं भाव संस्थान को भी प्रभावित करती है। कई व्यक्तियों को तो शोर-गुल थोड़ा भी सहन नहीं होता है। काण्ट, शापेनहावर, गोयथे जैसे दार्शनिक इन्हें सुनकर उत्तेजित हो जाते थे। मोजार्टनामक प्रसिद्ध संगीतज्ञ तो बिगुल की तेज आवाज सुनकर आवेशित हो उठता था। डॉ. फास्टर केनेडी का कहना है कि तेज ध्वनि स्नायु तन्त्र पर अपना कुप्रभाव डालती है। पाचन तन्त्र विकृत होता है तथा अपच जैसी बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। मानसिक विकृतियों को बढ़ाने में शोर-गुल का भी विशेष योगदान है। अमेरिका की घटना है एक महिला रेडियो की आवाज सुनकर विक्षिप्त हो जाती थी। अत: अपने पड़ोसी से वह रेडियो न बजाने का आग्रह करती थी, एक दिन कई बार उसने उस पड़ोसी को रेडियो बन्द करने के लिए कहा। न करने पर वह महिला निराशा से इतनी आन्दोलित हो उठी कि उसे गठिया हो गया तथा लँगड़ाने लगी। स्थिति यहाँ तक जा पहुँची कि उसे चलने के लिए पहियेदार कुर्सी का सहारा लेना पड़ा। यह तथ्य उसकी चिकित्सा के दौरान प्रकाश में आया और पड़ोस तथा परिवेश के बदलने के उपरान्त ही उसकी चिकित्सी सफल हो सकी।

ध्वनि का असाधारण प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य पर पड़ने का एक इतिहास प्रसिद्ध उल्लेख मिलता है, जिससे संगीत ध्वनि की चमत्कारी शक्ति का पता चलता है। अकबर की पुत्री एक बार बीमार पड़ी। चिकित्सकों के सभी उपचार असफल सिद्ध हुए। वैद्य-हकीम कोई भी उसके तेज तापक्रम को कम नहीं कर सके। राज्य ज्योतिषी ने अकबर से एक विशेष राग सुनवाने के लिए कहा। उस समय के प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन को बुलाया गया। तानसेन द्वारा उस राग के गायन को सुनकर राजकुमारी ठीक हो गई।

शरीर में चेतना के विभिन्न स्तरों पर अनन्त ध्वनि तरंगें उत्सर्जित होती रहती हैं। इस प्रकार प्रकृति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यापार में भी चेतना प्रवाह से स्तर भेद तथा प्रकृति-भेद से अनेक ध्वनि प्रवाह सक्रिय हैं।

नाद-साधना में सहायक ध्वनियाँ अनेक हैं। शास्त्रों में इनका वर्णन झींगुर ध्वनि, घन्टा ध्वनि, शंख ध्वनि, डमरू ध्वनि आदि रूपों में किया गया है। नाद-साधक को इन ध्वनियों का सुनाई पड़ना उसकी उन्नति का संकेत होता है।

ध्वनि ऊर्जा की इन बहुरूपी धाराओं का उद्गमकेन्द्र एक ही है। वह केन्द्र है ॐ कार ध्वनि। यही मूल ध्वनि है। बाइविल में भी कहा गया है "आदि में एक शब्द था।" वह शब्द यही 'ओऽम्' है। नाद साधना की सर्वोच्च परिणति इस ॐ कार ध्वनि से तादात्म्य स्थापित करना है।

नादयोग द्वारा दिव्य अनुभूतियों की उपलब्धि

नादयोग के सम्बन्ध में शास्त्रों के कुछ अभिवचन इस प्रकार हैं—

उक्तात्ममानतः पूर्व पश्चात् च विविधः कपे।
अभिव्यजन्त एतस्य नादास्तत्सिद्धि सूचकाः ॥
अनाहतमनुच्चार्यं शब्दब्रह्म परं शिवम्।
ब्रह्मरध्रंगतेवायौ नादश्चोत्पद्यतेऽनघ।
शंख ध्वनि निभश्चादौ मध्ये मेघध्वनिर्यथा ॥
पवने व्योम सम्प्राप्ते ध्वनिरुत्पद्यते महान्।
घण्टादीनां प्रवाद्यानां ततः सिद्धिरदूरतः ॥

—महायोग विज्ञान

जब अन्तर में ज्योति स्वरूप आत्मा का प्रकाश जागता है तब साधक को कई प्रकार के नाद सुनाई पड़ते हैं। इसमें से एक व्यक्त होते हैं, दूसरे अव्यक्त। जिन्हें किसी बाहर के शब्द से उपमा न दी जा सके, उन्हें अव्यक्त कहते हैं, यह अन्तर में सुनाई पड़ते हैं और उनकी अनुभूति मात्र होती है। जो घण्टा आदि की तरह कर्णेन्द्रियों द्वारा अनुभव में आवें उन्हें व्यक्त कहते हैं। अव्यक्त ध्वनियों को अनाहत अथवा शब्दब्रह्म भी कहा जाता है।

जब घण्टा जैसे शब्द सुनाई पड़े तो समझना चाहिए अब योग सिद्धि दूर नहीं।

श्रू यते प्रथमाभ्यासे नादो नानाविधो महान्।
वर्धमानस्तथाऽभ्यासे श्रूयते सूक्ष्मसूक्ष्मतः ॥३३
आदौ जलधिजीमूत भेरीनिर्झरसमभवः।
मध्ये एदलशब्दाभो घण्टाकाहलजस्तथा ॥३४
अन्ते तु किंकिणीवंशवीणाभ्रमरनिस्वनः ॥
इति नानाविधा नादाः श्रूयन्ते सूक्ष्मसूक्ष्मतः ।३५

नाद विन्दूपनिषद् ३३-३४-३५

आरम्भ में यह नाद कई प्रकार का होता है और जोर से सुनाई पड़ता है। पीछे धीमा हो जाता है। आरम्भ में यह ध्वनियाँ, नागरी, झरना, भेरी, मेघ, जैसी होती हैं, पीछे भ्रमर, वीणा, बंशी, किंकिणी जैसी मधुर प्रतीत होती हैं।

रेचकं पूरकं मुक्तवा वायुना स्थीयते स्थिरम्।
नाना नादाः प्रवर्तन्ते संस्रबेच्चन्द्रमण्डलम् ॥
समाकुंच्याभ्यसेद्योगी रसनां तालुकं प्रति।
किंचित्कालान्तरेणैव क्रमात्प्राप्नोति लम्बिकाम् ॥
ततः प्रस्रवते सा तु संस्पृष्ठा शीतलां सुधाम्।
पिबन्नेव सदा योगी सोऽमरत्वं हि गच्छति।

—महायोग विज्ञान

जब प्राणायाम द्वारा प्राण वायु स्थिर हो जाता है तो नाना प्रकार के नाद सुनाई पड़ते हैं और चन्द्रमण्डल से अमृत टपकता है।

जिह्वा को तालु में लगाकर योग साधक इस रस का पान करते हैं। कुछ काल उपरान्त जिह्वा को यह दिव्य रसास्वादन होने लगता है। यह शीतल अमृत जैसा रस साधक को अमर बना देता है।

ब्रह्मरन्ध्रं गते वायौ नादश्चोत्पद्यतेऽनघ।
शंखध्वनिनिभश्चादौ मध्ये मेघध्वनिर्यथा ॥३६
शिरोमध्यगते वायौ गिरप्रस्रवणं यथा।
पश्चात्प्रीतो महाप्राज्ञः साक्षादात्मोन्मुखो भवेत् ॥३७

जावाल दर्शनोपनिषद् ६ ।३६, ३७

ब्रह्म रन्ध में प्राण का प्रवेश होने पर शंख ध्वनि एवं मेघ गर्जन के समान नाद होता है। वायु के मस्तक में प्रवेश करने से झरने जैसी ध्वनि सुनाई पड़ती है। इससे प्रसन्नता होती है और अन्तःमुखी प्रवृत्ति बढ़ती है।

प्रथमे चिञ्चणी गात्रं द्वितीये गात्रभञ्जनम्।
तृतीये स्वेदन याति चतुर्थे कम्पते शिरः ॥
पञ्चमे स्रवते तालु षष्ठेऽमृतनिषेवणम्।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सप्तमे गूढ़विज्ञानं परा वाचा तथाष्टमे ॥
अदृश्यं नवमे देहं दिव्यं चक्षुस्तथामलम्
दशमे परमं ब्रह्म भवेद्ब्रह्मात्मसंनिधौ ॥

—महायोग विज्ञान

आदि में बादल बरसने, गरजने, झरनों के झरने, भेरी बजने जैसे शब्द होते हैं। मध्य में मर्दल, शंख, घण्टा, मृदंग जैसे अन्त में किंकिणी, बंशी, वीणा, भ्रमर गुंजन जैसे शब्द सुनाई पड़ते हैं। यह अनेक प्रकार के नाद हैं जो समय-समय पर साधक को सुनाई पड़ते रहते हैं।

मेघ नाद में शरीर में झनझनाहट होती है, चिण नाद में शरीर टूटता है, घण्टा नाद से प्रस्वेद होता है, शंखनाद से सिर झन्नाता है, तन्त्री नाद से तालु रस टपकता है, करताल नाद से मधुस्वाद मिलता है, बंशी नाद से गूढ़ विषयों का ज्ञान होता है, मृदंग नाद से परावाणी प्रस्फुटित होती है, भेरी नाद से दिव्य नेत्र खुलते हैं तथा आरोग्य बढ़ता है। उपरोक्त ९ नादों के अतिरिक्त दशमें ॐकार नाद में ब्रह्म और जीव का सम्बन्ध जुड़ता है।

मकरन्दं पिबन् भृंगो गन्धं नापेक्षते यथा।
नादासक्तं तथा चित्तं विषयान्न हि कांक्षते ॥९०
मनोमत्तगजेन्द्रस्य विषयोद्यानचारिणः।
नियन्त्रणो समर्थोऽयं निनादनिशितांकुशः ॥९१
बद्धं तु नादबन्धेन मनः संत्यक्तचापलम्।
प्रयाति सुतरां स्थैर्यं छिन्नपक्षः खगो यथा ॥९२
सर्वचिन्तां परित्यज्य सावधानेन चेतसा।
नाद एवानुसन्धेयो योगसाम्राज्यमिच्छाता ॥९३
नादोऽन्तरगंसारंमबन्धने वागुरायते।
अन्तरंगकुरंगस्य वधे व्याधायतेऽपि च ॥९४
अन्तरगंस्य यमिनो वाजिनः परिघायते।
नादोपास्तिरतो नित्यमवधार्या हि योगिना ॥९५
नादश्रवणतः क्षिप्रमन्तरं गभुजगंमः।
विस्मृत्य सर्वमेकाग्रः कुत्रचिन्न हि धावति ॥९७
काष्ठे प्रवर्तितो वह्निः काष्ठेन सह शाम्यति।
नादे प्रवर्तितं चित्तं नांदेन सह लीयते ॥९८

हठयोग प्रदीपिका ४ ।९० से ९८ तक

जिस प्रकार पुष्पों का मकरन्द पीने वाला भ्रमर अन्य गन्धों को नहीं चाहता, उसी प्रकार नाद में रस लेने वाला चित्त, विषय सुखों को आकाँक्षा नहीं करता ।९०

विषय रूपी बगीचे में मदोमत्त हाथी की तरह विचरण करने वाले मन को नाद रूपी अंकुश से नियन्त्रण में लाया जाता है ।९१

नाद रूपी बन्धन में बाँधे जाने पर पंख कटे हुए पक्षी की तरह मन स्थिर हो जाता है ॥९२

योग साम्राज्य की इच्छा करने वाले को सब ओर से मन हटाकर सावधान चित्त से नादानुसंधान में लग जाना चाहिए ।९३

मन रूपी हिरन को नाद बहेलिये की तरह अपने जाल में जकड़ लेता है ।९४

चचलता घोड़े को जिस तरह दरवाजे में लगी अर्गला रोक लेती है, उसी तरह नाद चंचल मन को दौड़ने से रोक लेता है ।९५

जिस तरह साँप बीन की ध्वनि सुनकर लहराने लगता है उसी तरह नाद की ध्वनि मन को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है ।९७

काष्ठ में लगी हुई अग्नि काष्ठ के साथ ही समाप्त होती है। उसी तरह नाद में लगा हुआ चित्त नाद के साथ ही तरंग हो जाता है ।९८

नादानुसंधान समाधि मेकम्।
मन्यामेह मान्यतमं लयानाम् ॥

—योग तारावली

लय योगों में सर्वश्रेष्ठ नादानुसंधान है। वह और समाधि एक ही है।

कहा जा चुका है कि शब्द विज्ञान में दो प्रकार की ध्वनियों की चर्चा-विवेचना होती है। एक आहत दूसरे अनाहत। आहत शब्द वे हैं जो किन्हीं वस्तुओं के टकराने से उत्पन्न होते हैं। घण्टा, घड़ियाल का उदाहरण स्पष्ट है। कोई वस्तु हाथ से गिरे तो जमीन से टकराने पर उसकी आवाज होगी। बाजे बजने-बन्दूक चलने-कपड़े धोने आदि की ध्वनियाँ, आहत ध्वनियाँ हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वार्तालाप को भी इसी श्रेणी में गिना जाता है। क्योंकि उनका स्वस्थ कण्ठ, तालु, होंठ, जिह्वा, दाँत आदि के परस्पर एक विधि विशेष में टकराने पर विभिन्न शब्दों का उच्चारण बन पड़ता है। मनुष्य की भाँति पशु-पक्षियों की वाणी, समुद्र की लहरें, बादलों की गड़गड़ाहट आदि के द्वारा भी आहत ध्वनियों का ही रूप बनता है। विभिन्न प्रकार की जानकारियों का आदान-प्रदान करने में भी शब्द विज्ञान का यही स्तर काम आता है।

अनाहत शब्द वे हैं, जो योगाभ्यास में नादयोग के द्वारा सुने और जाने जाते हैं। श्वाँस-प्रश्वाँस के समय सो एवं अहम् की ध्वनियाँ होती रहती हैं। यह स्पष्ट रूप से कानों के द्वारा तो नहीं सुनी जातीं पर ध्यान एकाग्र करने पर उस ध्वनि का आभास होता है। अभ्यास करने के वह कल्पना प्रत्यक्ष अनुभव के रूप में समझ पड़ती है। इसके बाद कानों के छेद बन्द करके ध्यान की एकाग्रता के रहते, घण्टा, घड़ियाल, शंख, बंशी, झींगुर, मेंढ़क, बादल गजीन जैसे कई प्रकार के शब्द सुनाई देने लगते हैं। आरम्भ में यह बहुत धीमे और कल्पना स्तर के ही होते हैं किन्तु पीछे एकाग्रता के अधिक घनीभूत होने से वे शब्द अधिक स्पष्ट सुनाई पड़ते हैं। इसे एकाग्रता की चरम परिणति भी कह सकते हैं और अन्तरिक्ष में अनेकानेक घटनाओं की सूचना देने वाले सूक्ष्म संकेत भी। गोरक्षपद्धति में ॐकार की ध्वनि पर ध्यान एकाग्र किया जाता है और उसे ईश्वर की स्व उच्चारित वाणी भी कहा जाता है। गोरख सम्प्रदाय के अतिरिक्त और भी कितने ही उसके भेद-उपभेद हैं जो नादयोग को प्रधानता देते और उसी आधार पर अपनी उपासनाएँ करते हैं। कबीर पंथ और राधा स्वामी पन्थ आदि में नादयोग की साधना प्रधान है।

प्राण विद्युत शरीर के विभिन्न क्रिया-कलापों का संचार करते हैं। बिजली में एक प्रकार के सूक्ष्म कम्पन होते हैं और वे विभिन्न प्रयोजनों के लिए विभिन्न मनुष्यों द्वारा प्रयुक्त किये जाने पर उन झंकृतियों में थोड़ा बहुत-अन्तर पड़ता रहता है। नादयोग में विभिन्न प्रकार की ध्वनियों का अनुभव इसी आधार पर होता है।

आकाश में उदृश्य घटनाक्रमों के कम्पन चलते रहते हैं। जो हो चुका है या होने वाला है, उसका घटनाक्रम ध्वनि तरंगों के रूप में आकाश में गूँजता रहता है। नादयोग की एकाग्रता का सही अभ्यास होने पर आकाश में गूँजने वाली विभिन्न ध्वनियों के आधार पर भूतकाल में जो घटित हो चुका है या भविष्य में जो घटित होने वाला है उसका आभास भी प्राप्त किया जा सकता है। यह एक असामान्य सिद्ध है।

किसी ध्वनि को एक बार प्रत्यक्ष रूप में करने, उसकी ध्यान धारणा बाद में करते रहने पर इस अभ्यास में सरलता पड़ती है। मन्दिरों में गुम्बज इसीलिए बनाये जाते हैं कि उनमें टँगे घण्टे की प्रतिध्वनि देर तक सुनी जा सके। ॐकार की प्रतिध्वनि भी गुम्बजदार मन्दिरों में देर तक गूँजती रहती है। इस आधार पर विभिन्न ध्वनियों को सुनने का अभ्यास किया जा सकता है। इस प्रकार आहत और अनाहत नादयोग का अभ्यास करने पर व्यक्ति अविज्ञात को ज्ञात स्तर तक खींच लाने में समर्थ हो सकता है।

नादयोग के ध्वनि संकेत

नादयोग को शब्द ब्रह्म की साधना कहा गया है। जीवन की ज्ञान चेतना शब्द, रस, रूप, गन्ध, स्पर्श की पाँच तन्मात्राओं पर आधारित है। इन्हीं से पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ बनी हैं। शब्द की इनमें प्रमुखता है। बच्चा जब जन्म लेता है तो अन्य इन्द्रियाँ तो काम नहीं करती। दिखाई भी नहीं देतीं। पर संसार में आते ही सर्वप्रथम उसकी रोने की वांणी ही सुनाई पड़ती है। शब्द ज्ञान होने पर अन्धे भी अपना काम चला लेते हैं, पर कानों के अभाव में तो उसे गूँगा भी रहना पड़ता है और बहरा भी। जीवन विकास में जिस प्रकार शब्द का प्रारम्भ है उसी प्रकार ब्रह्मा के प्रकटीकरण में भी शब्द का सर्वोपरि स्थान है। भगवान को प्राप्त करने के लिए उसके किसी नाम का अवलम्बन अपनाना पड़ता है। सृष्टि का आरम्भ भी शब्द तत्व से हुआ। विज्ञान के अनुसार इस संसार में तीन शक्तियाँ ही प्रमुख हैं— शब्द, तप, और प्रकाश। इन्हीं के मिलने-बिछुड़ने से अनेकानेक वस्तुएँ बनती और अनेकानेक घटनाएँ घटित होती हैं।

प्रकृति के अन्तराल में अगणित ध्वनियों का प्रवाह बहता है। प्रत्येक घटना सर्वप्रथम शब्दरूप से ही प्रकट होती और प्रकाश में आती है। जो कुछ विश्व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्माण्ड में हो रहा है या होने जा रहा है उसका अदृश्य रूप सर्वप्रथम शब्द के रूप में ही विनिर्मित होता है। रूप का निर्धारण तो उसके उपरान्त होता है। भूतकाल की घटनाएँ उद्देश्य रूप में तो मिट जाती हैं पर उनका स्वरूप शब्द रूप में चिरकाल तक बना रहता है।

नादयोग का अभ्यास शब्द तत्व सम्बन्धी अतीन्द्रिय क्षमताओं को जाग्रत करने के निमित्त ही किया जाता है। सामान्य शरीर में तो समीपवर्ती और स्पष्ट शब्द सुनने की ही क्षमता है। वे न तो बहुत दूर की आवाज को सुन सकते हैं और न घुस-पुस जैसी अस्पष्ट धीमी आवाज को समीप ही होते रहने पर ही समझ पाते हैं। कानों को जितनी सामान्य शक्ति मिली है, वह मात्र मनुष्य की सामान्य दैनिक निर्वाह में काम आ सकने जितनी ही है। उनके माध्यम से श्रवण भी सीमित जानकारियाँ ही देता है। पढ़कर अन्यत्र के समाचार भर जाने जा सकते हैं पर प्रत्यक्ष की तुलना में जो असंख्य गुना अप्रत्यक्ष है उसकी जानकारी प्राप्त होने का मनुष्य को कोई आधार नहीं मिला है। रेडियो, टेलीफोन, टेलीविजन, जैसे उपकरण भी मनुष्य के मुख से निकली हुई वाणी के साथ जुड़ी हुई जानकारी ही दे सकते हैं। किन्तु ऐसी सांकेतिक भाषा का प्रयोग नहीं कर सकते कि विभिन्न क्षेत्रों में जो घटित होने वाला है उसकी जानकारी मिल सके और यह पता चल सके कि कहाँ क्या हो चुका, कहाँ क्या हो रहा है या क्या होने होने जा रहा है ? इस भवितव्यता की जानकारी अनन्त अन्तरिक्ष में विचरती रहती है। हाँडी कच्ची है या पक गई इसकी जानकारी उसके भीतर चल रही हलचलों के अनुरूप निकलते रहने वाले शब्दों के आधार पर जानी जा सकती है। इसके लिए ढक्कन खोलने और उसका निरीक्षण-परीक्षण करने की भी आवश्कता नहीं पड़ती।

ऐसा ही ज्ञान नादयोग के अभ्यासी को हो सकता है। इसके लिए कानों को रूई से, शीशी को कॉर्क से, या मोम पर चढ़ी हुई कपड़े की पोटली से कानों के छेद इस प्रकार बन्द करने पड़ते हैं कि बाहर की आवाजें भीतर प्रवेश न कर सकें। ऐसा एकान्त स्थान भी ढूँढ़ा जा सकता है जहाँ बाहरी शब्द सुनाई न पड़ते हों। संगीत को टैप करने के लिए 'साउण्ड प्रूफ' कमरे भी बनाये जाते हैं जिसमें होकर भीतर की आवाज बाहर या बाहर की भीतर न पहुँच सके। शारीरिक स्थिति शान्त और चित्त एकाग्र रखने की तो हर साधना में आवश्यकता पड़ती है। उत्तेजित शरीर और अशान्त चित्त से तो कोई भी आध्यात्मिक साधना नहीं हो सकती।

इसके उपरान्त ध्यान को सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय के साथ जोड़ना पड़ता है और गहराई में उतरकर यह देखना पड़ता है कि कोई अनाहत शब्द भीतर से उभर रहा है क्या ? आरम्भिक दिनों में कोई विशेष ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती। ऐसी दशा में निराश होने की आवश्यकता नहीं है, लगातार अभ्यास करने से कुछ बहुत ही हल्की-धीमी सूक्ष्म ध्वनियाँ सुनाई पड़ने लगती हैं और आसपास के वातावरण को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि वह किसी समीपवर्ती घटनाक्रम से सम्बन्धित आवाज ही है।

नादयोग में सुनाई पड़ने वाली आवाजों में झींगुर बोलने चिड़िया चहचहाने, बादल गरजने, झरना झरने के कलख नदी जैसी बाँसुरी या डमरू या सितार बजने जैसी, शंख ध्वनि जैसी, भौरा गूंजने जैसी आवाजें होती हैं। इससे मिलती-जुलती कोई और भी आवाज हो सकती है। एक ही आवाज लगातार सुनाई देती रह सकती है, और उनमें हेर-फेर भी होता रह सकता है।

आरम्भ क्रम चलाकर इन्हें स्पष्ट होने देना चाहिए। जब आवाजें स्पष्ट हो चलें तब ध्यान को और भी अधिक गहराई में ले जाना चाहिए इनका सूक्ष्म जगत की किसी घटना से सम्बन्ध तो नहीं है। यदि ऐसा कुछ होता है तो उसके उद्देश्य मानस क्षेत्र में कल्पना पटल पर उतरने लगते हैं और प्रतीत होता है कि यह अपने सम्पर्क क्षेत्र में घटित होने वाली किसी घटना या किसी मित्र सम्बन्धी की भवितव्यता सम्बन्ध संकेत तो नहीं है। आभास को किसी से कहना नहीं चाहिए, वरन् स्वतः ही यह परीक्षण करना चाहिए कि अनुमानित संकेत सही उतरा या नहीं।

कभी-कभी अपने शरीरगत अवयवों की हलचलों से सम्बन्धित यह शब्द होते हैं। आमाशय, आँतें, यकृत, हृदय, फुफ्फुस, गुर्दे आदि की असाधारण हलचलें भी अपने आप इस आधार पर अपना परिचय देती हैं। शरीर का तापमान घटना-बढ़ना भी इस ध्वनि प्रवाह के साथ बढ़ी-घटी रोशनी के रूप में या शान्ति उत्तेजना के रूप में अनुभव होती है। इस प्रकार अपने शरीर और मन का निरीक्षण-परीक्षण भी नादयोग के आधार पर हो जाता है। मन में उठने वाले उत्तेजना, क्रोध, आवेश,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ईर्ष्या, प्रतिशोध, कामुकता जैसे विचारों से उत्तेजना रहती है और भय, सन्देह, निराश, उदासी आदि का संकेत मन्द, अस्फुट, कानाफूसी जैसी स्थिति से लगने लगता है।

आरम्भ में नादयोग में अपनी निजी कल्पना और प्रकृति प्रवाह का सम्मिश्रित परिचय हो सकता है। पर जैसे-जैसे अन्तःकरण की शान्ति एवं समस्वरता बढ़ती जाती है। सूक्ष्म जगत का परिचय मिलने लगता है। यहाँ तक कि ईश्वर की इच्छा गतिविधियों में सुधार परिवर्तन के निमित्त आदेश रूप में संकेत मिलने लगते हैं। कुछ दिन के अभ्यास से यह स्पष्ट हो जाता है कि नादयोग द्वारा जिन ध्वनियों का जैसा तात्पर्य समझा गया था वैसा हुआ या नहीं। तान्त्रिकों में इसे कर्ण पिशाचिनी सिद्ध कहते हैं। जो संसार भर की पूछी बिना पूछी वातों को चुपचाप कान में कहती रहती है।

कर्ण पिशाचिनी साधना और कुछ नहीं, मात्र आकाशतत्व और उसकी तन्मात्रा शब्द पर अधिकार कर लेना भर है। पंचतत्वों एवं उनकी पंचतन्मात्राओं में सर्वाधिक सशक्त एवं सर्वव्यापक तत्व आकाश है, जो ईथर नामक सूक्ष्म तत्व से लवालव भरा हुआ है। आकाश तत्व की तन्मात्रा 'शब्द' को साधना क्षेत्र में विशेष रूप से प्रयुक्त किया जाता है।

स्वरयोग, नादयोग, शब्दयोग इसी तन्मात्रा के अन्तर्गत आते हैं। पाठ, स्तवन, जप, कथा, प्रवचन, कीर्तन जैसे साधना उपक्रम 'शब्द' साधना कहे जा सकते हैं। नादयोग इन सब में अधिक गूढ़ और अधिक रहस्यमय है। नेत्रों के बाद दूसरी विशिष्ट संवेदनशील इन्द्रिय 'कान' है। बहरे मनुष्य गूँगे भी होते हैं। कारण है कि कान द्वारा शब्द ग्रहण करके मस्तिष्क तक न पहुँचा सकने की कठिनाई के कारण उच्चारण के ज्ञान तन्तुओं को प्रेरणा मिल ही नहीं पाती और वे बोलने में असमर्थ ही बने रहते हैं। ज्ञान सम्पादन नेत्रों के पश्चात कान से ही सम्भव होता है। समझा-बुझाकर रास्ते पर लाने का कार्य प्रधानतया शब्द शक्ति से ही सम्भव होता है। रेडियो प्रसारणों को इसी दृष्टि से अत्यधिक महत्व मिल रहा है।

कर्णेन्द्रिय की सूक्ष्म परतें दिव्य-लोकों के सन्देशों को उसी प्रकार सुन सकती हैं जिस प्रकार नेत्र गोलकों के मध्य में अवस्थित उसके केन्द्रीय उद्गम स्रोत-आज्ञाचक्र के माध्यम से 'दिव्य-दर्शन' सम्भव होता है। नादयोग के माध्यम से दिव्य ध्वनियाँ सुनी जाती हैं और उस क्षमता के विकसित होने पर शरीर और मन की हलचलों का विवरण बताने वाले संकेत सुने जा सकते हैं। अपनी स्थिति को अधिक अच्छी तरह समझा जा सकता है। इतना ही नहीं दिव्य-लोकों में जो अति महत्त्वपूर्ण शब्द संवादों का प्रवाह चल रहा है, उसे सुनने की कला विदित हो जाने पर वह सब समझा जा सकता है जो सर्वसाधारण के लिए सर्वथा अविज्ञात है। कूटनीतियों की-गुप्तचरों की सांकेतिक भाषा होती है और वे एक दूसरे तक अपनी बातें इस प्रकार पहुँचाते हैं कि अन्य किसी को उस गोपनीयता का पता न चलने पाये। दिव्य-लोकों के भी ऐसे ही संकेत हैं। वे शब्द तरंगों के आधार पर सूक्ष्म जगत में हमारे इर्द-गिर्द ही भ्रमण करते हैं, पर रहस्यों की जानकारी न होने से हम उससे सर्वथा अपरिचित ही बने रहते हैं। नादयोग के अभ्यास से उस रहस्य पर से पर्दा उठता है और साधक को उतना सुनना समझना संभव होता है जो सामान्य मनुष्यों के लिए शक्य नहीं है।

नादयोग की साधना का शास्त्रीय योगाभ्यास प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण स्थान है। मध्यकालीन सन्त परम्परा में उसे और भी अधिक प्रधानता मिली है। नाथ सम्प्रदाय, कबीर सम्प्रदाय, राधास्वामी मत, दादू मत आदि की साधनाओं में शब्द सुरत के नाम से नाद समाधि की सुविस्तृत फलश्रुति है। विज्ञान ने विश्व व्यापी शब्द शक्ति का मूल्यांकन किया है और उसके माध्यम से भौतिक एवं आत्मिक प्रगति की सम्भावनाओं का प्रतिपादन किया है।

मोटेतार से 'ध्वनि' का तात्पर्य उस मोटे शब्द प्रवाह से लिया जाता है, जो कानों से सुना जा सके, पर वैज्ञानिक पकड़ इससे कहीं आगे निकल गई है। यह बात भली प्रकार समझली गई है कि मनुष्य के कान बहुत ही भोंड़े हैं वे बहुत थोड़ी ध्वनियाँ सुन सकते हैं। उनसे अधिक तो कहीं कीड़े-मकोड़ों और पशु-पक्षियों की श्रवण शक्ति अधिक तीव्र होती है और वे अन्तरिक्ष में बहने वाली अधिक सूक्ष्म ध्वनियों को सुन सकते हैं और इस अर्थ से मनुष्य की अपेक्षा कहीं अधिक समर्थ सिद्ध होते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संसार की मूल-सत्ता और स्थिति को पिछले दिनों विद्युत प्रवाह के रूप में समझा गया था अब उसे एक कदम और आगे बढ़कर 'ध्वनि' प्रवाह की संज्ञा दी जाने लगी है। ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को समझने में अब उसका प्रकाश स्वरूप अपर्याप्त समझा जाने लगा है और प्रकाश की आत्मा को ध्वनि संज्ञा दी गई है। 'लेसर' किरणें कुछ समय पूर्व तक प्रकाश किरणों में गिनी जाती थीं, पर अब उन्हें 'शब्द' वर्ग में ही स्वीकार किया गया है और ताप से भी अधिक शब्द की सामर्थ्य को आंका गया है।

कर्णातीत-अश्रव्य ध्वनियाँ-जानकारी देने की दृष्टि से भले ही महत्त्वहीन हों, पर उनका वैज्ञानिक महत्त्व अत्यधिक है। क्योंकि सामर्थ्य की दृष्टि से वे कानों से सुनी जा सकने वाली ध्वनियों की अपेक्षा कहीं अधिक शक्तिशाली होती हैं। अस्तु, उनका प्रयोग कितने ही ऐसे कामों में किया जा सकता है जो सामान्य उपायों से पूरे नहीं हो पाते।

आजकल विज्ञान पत्रिकाओं में ऐसे वैज्ञानिक परीक्षणों के कितने ही विवरण छपते रहते हैं, जिनमें स्नायु-मण्डल की विकृतियों से कष्ट पाने वाले कितने ही रोगियों के उपचार अश्रव्य ध्वनियों के सहारे किये गये और वे औषधि उपचार एवं शल्यक्रिया की अपेक्षा कहीं अधिक सफल रहे। आज श्रवणातीत ध्वनियों का प्रयोग शल्यक्रिया की अपेक्षा अधिक सरल और सफल प्रमाणित हुआ है। साथ ही श्रवणातीत ध्वनियों के आधार पर की गई चिकित्सा में अन्य उपचारों की तुलना में अधिक अच्छे परिणाम सामने आये हैं। संसार के अनेक महत्त्वपूर्ण शोध-संस्थानों में यह परीक्षण चल रहे हैं कि अश्रव्य ध्वनियों को चिकित्सा उपचार का महत्त्वपूर्ण अंग बनाने की पद्धति का सांगोपांग विकास कैसे किया जाय ?

विश्व-ब्रह्माण्ड में प्रवाहित सूक्ष्म ध्वनि तरंगों की जानकारी अब अपेक्षाकृत अधिक गहराई तक समझी जाने लगी है और उनके कई प्रकार के प्रयोग-उपयोग कार्यरूप में परिणत हो रहे हैं। यदि हम अपनी कर्णेन्द्रिय सामर्थ्य को विकसित कर सकें तो बहुमूल्य यन्त्रों द्वारा इन श्रवणातीत ध्वनियों का ग्रहण, प्रसारण किया जाता है उसी प्रकार अपने अति समर्थ तन्त्र से भी वैसे ही प्रयोजन पूरे किये जा सकते हैं। तब भौतिक जगत के सूक्ष्म क्षेत्र पर अपना असाधारण अधिकार हो सकता है। उसकी तुलना में असंख्य गुनी शक्ति हाथ में आ सकती है। तब कान मात्र सुनने का प्रयोजन ही पूरा न करेंगे वह सूक्ष्म ध्वनियों को पकड़ने और उन्हें विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त करने में भी समर्थ हो जायेंगे।

नादयोग इसी विज्ञान का नाम है। उसके आधार पर श्रवणातीत ध्वनियों के अधिग्रहण का अभ्यास किया जाता है। सृष्टि के अन्तराल में असंख्य हलचलें ध्वनि के रूप में प्रवाहित हो रही हैं। ऊर्जा तरंगें ईथर से टकराती हुई आगे बढ़ती हैं और अपनी प्रतिक्रिया ध्वनि रूप में छोड़ती है। हवाई जहाज उड़ता है और अपनी गति दिशा तथा सत्ता का परिचय ध्वनि में बखेरता चलता है। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक ऊर्जा कम्पन अपनी प्रतिक्रिया ध्वनि रूप में बखेरता है। इन्हें समझ सकना सम्भव हो तो प्रकृति की हाँडी में क्या पक रहा है, उसे ढक्कन खोलकर आसानी से जाना, समझा जा सकता है।

शरीर को शिथिल करके शान्त चित्त से एकान्त स्थान में बैठक कर कानों के छेद तर्जनी अथवा अनामिका उँगलियों से बन्द कर लिये जाते हैं। इससे वायुमण्डल में सामान्य शब्दों का सुनाई देना बन्द हो जाता है। इस स्थिति में श्रवणातीत ध्वनियों में से कुछ का कुछ सुनाई पड़ना आरम्भ हो जाता है। प्रायः कई प्रकार के बाजों से मिलती-जुलती ध्वनियाँ नादयोग के साधकों को सुनाई पड़ती हैं। शंख, घड़ियाल, मृदंग, नफीरी, तुरही, ढोल, मजीरा बजने जैसी मिश्रित अथवा पृथक्-पृथक् प्रकार की आवाजें कान में पहुँचने का आभास होता है। बादल गरजने, झरने गिरने, आँधी, तूफान आदि जैसी तीव्र और कर्कश ध्वनियाँ भी कई बार सुनाई पड़ती हैं। झींगुर बोलने, घुँघरू बजने पैरों के थिरकने की नृत्य जैसे मन्द और मधुर ध्वनि प्रवाह भी सुने जाते हैं।

इन शब्दों पर अधिक ध्यान देने से चित्त एकाग्र होता है और अधिक दत्तचित्त होने के कारण ध्वनियाँ अधिक स्पष्ट एवं अधिक देर तक चलती रहने वाली प्रतीत होती हैं जब कि उथले और अस्थिर मन से सुनने पर वे आधी-अधूरी अस्पष्ट और बार-बार उलटती बदलती रहती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीर विज्ञानियों का कथन है कि नाड़ियों में बहने वाला रक्त प्रवाह, फेफड़ों से साँस का आवागमन, हृदय की धड़कन, माँस पेशियों का आकुंचन-प्रकुंचन आदि से उत्पन्न होने वाले घर्षण से जो आवाजें अन्तरंग क्षेत्र में उत्पन्न होती रहती हैं वे ही नादयोग के साधकों को बढ़े-चढ़े रूप में सुनाई पड़ती हैं और बाजे बजने जैसा आभास होता है। प्रकृतिवेत्ताओं का कथन है—आकाश में बहने वाली हवा पेड़-पत्तों तथा विभिन्न पदार्थों से टकराकर तरह-तरह की आवाजें उत्पन्न करती हैं। तेज हवा चलने पर छेद वाले बाँसों के झुरमुट से वँशी या सीटी बजने जैसी ध्वनियाँ पड़ती हैं। नदियों की लहरें कलकल ध्वनि उत्पन्न करती हैं। इन्हीं सब का दूरवर्ती मन्द प्रवाह नादयोग की साधना में अधिक स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ने लगता है।

मस्तिष्क अपने आप में अगणित हलचलों का केन्द्र है। उसमें वायु का आवागमन भी रहता है। हलचलें किसी भी स्तर की हों। वायुमण्डल के सम्पर्क से ध्वनि तरंगें उत्पन्न करती हैं। मस्तिष्क संस्थान भी अपनी गतिविधियों के कारण जो शब्द उत्पन्न करता है, उन्हें नादयोग के उपक्रम से सुना जाना सम्भव है।

इसके ऊपर सूक्ष्म जगत में तथा लोकान्तरों में होने वाली हलचलों का नम्बर आता है वे भी अपने क्रिया-कलाप से रेडियो तरंगें उत्पन्न करती हैं। यदि कर्णेन्द्रिय की क्षमता विकसित करली जाय, तो उन्हें भी पकड़ा जा सकता है।

कौन ध्वनि किस क्षेत्र से आ रही है और वह किस परिस्थिति का कितना किस प्रकार परिचय दे रही है। यह जटिल विज्ञान है। उसके लिए साधक की शारीरिक मानसिक क्षमता अधिक संवेदनशील होनी चाहिए। शब्द कोष जैसे ध्वनि अर्थ तो नहीं निकलते पर ध्वनि के साथ जुड़ी हुई संवेदना को आत्म- चेतना द्वारा समझा जा सकता है। यह ध्वनियाँ भूतकाल के किसी घटनाक्रम की, वर्तमान हलचलों की तथा भावी सम्भावनाओं से सम्बन्धित हो सकती हैं। उनके पीछे अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण झाँक रहा हो सकता है। विश्व की परिस्थितियों का—वर्तमान वातावरण का ऊहापोह उनमें घुला हो सकता है। ऐसी-ऐसी अनेक सम्भावनाएँ नादयोग में सुने जाने वाली ध्वनियों में पहेली की तरह धँसी रहती हैं उन्हें तत्ववेत्ता खोज निकालते हैं और उस बहुमूल्य जानकारी का लाभ स्वयं उठाते तथा दूसरों को उपलब्ध कराते हैं। 'शब्द' तन्मात्रा में ध्वनि परक अनुभूतियाँ होती हैं। उन आधारों में एकाग्रता की तथा सूक्ष्म जगत में प्रवेश करके अतीन्द्रिय विभूतियों की उपलब्धि होती है। यदि प्राकृतिक ध्वनि संकेतों के माध्यम से सूक्ष्म कर्णेन्द्रियों का विकास किया जा सके तो उसके द्वारा स्थूल और सूक्ष्म जगत की अनन्त विभूतियों के स्वामी बनकर हम मनुष्य जीवन का उच्च स्तरीय आनन्द ले सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संगीत की जीवनदायिनी सामर्थ्य

स्वर से "अक्षर" की अनुभूति

पुराणों में एक आख्यायिका आती है। देवर्षि नारद ने एक बार लम्बे समय तक यह जानने के लिये प्रव्रज्या की कि सृष्टि में आध्यात्मिक विकास की गति किस तरह चल रही है। वे जहाँ भी गये प्राय: प्रत्येक स्थान पर लोगों ने एक ही शिकायत की भगवन् ! परमात्मा की प्राप्ति अति कठिन है। कोई सरल उपाय बताइये जिससे उसे प्राप्त करने, उसकी अनुभूति में अधिक कष्ट साध्य तितीक्षा का सामना न करना पड़ता हो। नारद ने इस प्रश्न का उत्तर स्वयं भगवान से पूछ कर देने का आश्वासन दिया और स्वर्ग के लिये चल पड़े।

आपको ढूँढ़ने में तप-साधना की प्रणालियाँ बहुत कष्ट साध्य हैं भगवन् ! नारद ने वहाँ पहुँचकर विष्णु भगवान् से प्रश्न किया—ऐसा कोई सरल उपाय बताइये, जिससे भक्त-गण सहज ही में आपकी अनुभूति कर लिया करें ?

इस पर विष्णु भगवान् ने उत्तर दिया—

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न वा।
मद भक्ता: यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदा॥

—नारद संहिता,

हे नारद ! न तो मैं बैकुण्ठ में रहता हूँ और न योगियों के हृदय में, मैं तो वहाँ निवास करता हूँ, जहाँ मेरे भक्त-जन कीर्तन करते हैं। अर्थात् संगीतमय भजनों के द्वारा ईश्वर को सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है।

इन पक्तियों को गढ़ने से संगीत की महत्ता और भारतीय इतिहास का वह समय याद आ जाता है, जब यहाँ गाँव-गाँव प्रेरक मनोरंजन के रूप में संगीत का प्रयोग बहुलता से होता था। संगीत में केवल गाना या बजाना ही सम्मिलित नहीं था, नृत्य भी इसी कला का अंग था। कथा, कीर्तन, लोक-गायन और विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक पर्व-त्यौहार एवं उत्सवों पर अन्य कार्यक्रमों के साथ संगीत अनिवार्य रूप से जुड़ा रहता था। उससे व्यक्ति और समाज दोनों के जीवन में शान्ति और प्रसन्नता, उल्लास और क्रियाशीलता का अभाव नहीं होने पाता था।

अक्षर परब्रह्म परमात्मा की अनुभूति के लिये वस्तुत: संगीत साधना से बढ़कर अन्य कोई अच्छा माध्यम नहीं, यही कारण रहा है कि यहाँ की उपासना पद्धतियों से लेकर कर्मकाण्ड तक में सर्वत्र "स्वर" संयोजन अनिवार्य रहा है। मंत्र भी वस्तुत: छन्द ही है। वेदों की प्रत्येक ऋचा का कोई ऋषि, कोई देवता तो होता ही है उसका कोई न कोई छन्द जैसे त्र्युष्टुप, अनुष्टुप, गायत्री आदि भी होते हैं। उसका अर्थ ही होता है कि उस मंत्र के उच्चारण की ताल, लय और गतियाँ भी निर्धारित हैं। अमुक फ्रीक्वेंन्सी पर बजाने से ही अमुक स्टेशन बोलेगा। उसी तरह अमुक गति लय और ताल के उच्चारण से ही मंत्र सिद्धि होगी—वह उस का विज्ञान है।

कोलाहल और समस्याओं से घनीभूत संसार में यदि परमात्मा का कोई उत्तम वरदान मनुष्य का मिला है तो वह संगीत ही है। संगीत से, पीड़ित हृदय को शान्ति और संतोष मिलता है। संगीत से मनुष्य की सृजन-शक्ति का विकास और आत्मिक प्रफुल्लता मिलती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक, शादी-विवाहोत्सव से लेकर धार्मिक समारोह तक के लिये उपयुक्त संगीत-निधि देकर परमात्मा ने मनुष्य की पीड़ा को कम किया, मानवीय गुणों से प्रेम और प्रसन्नता को बढ़ाया।

शास्त्रकार कहते हैं—

"स्वरेण सल्लयेत यागी"

"स्वर साधना द्वारा योगी अपने को तल्लीन करते हैं" और एकाग्र की हुई, मन: शक्ति को विद्याध्ययन से लेकर किसी भी व्यवसाय में लगाकर चमत्कारिक सफलतायें प्राप्त की जा सकती हैं, इसलिये यह मानना पड़ेगा कि संगीत दो वर्ष के बच्चे से लेकर विद्यार्थी, व्यवसायी, किसान, मजदूर, स्त्री-पुरुष सबको उपयोगी ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं आवश्यक भी है। उससे मनुष्य की क्रिया शक्ति बढ़ती और आत्मिक आनन्द की अनुभूति होती है। यह बात ऋषि-मनीषियों ने बहुत पहले अनुभव की थी और कहा था—

"अभि स्वरन्ति बहवो मनीषियो राजा नमस्य भुवनस्य निंसते।" —(ऋग्वेद ९ ।८५ ।३)

अर्थात्—अनेक मनीषी विश्व के महाराजाधिराज भगवान् की ओर संगीतमय स्वर लगाते हैं और उसी के द्वारा उसे प्राप्त करते हैं।

एक अन्य मंत्र में बताया है कि ईश्वर प्राप्ति के लिये ज्ञान और कर्मयोग मनुष्य के लिये कठिन है। भक्ति-भावनाओं से हृदय में उत्पन्न हुई अखिल-करुणा ही सर्व सरल मार्ग है, जिससे मनुष्य बहुत शीघ्र परमात्मा की अनुभूति कर सकता है और उस प्रयोजन में—भक्ति भावनाओं के विकास में संगीत का योगदान असाधारण है—

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उकिथनः ।

—(ऋग्वेद ८ ।३३ ।२)

हे शिष्य ! तुम अपने आत्मिक उत्थान की इच्छा से मेरे पास आये हो। मैं तुम्हें ईश्वर का उपदेश करता हूँ, तुम उसे प्राप्त करने के लिये संगीत के साथ उसे पुकारोगे तो वह तुम्हारी हृदय गुहा में प्रकट होकर अपना प्यार प्रदान करेगा।

पौराणिक उपाख्यान है कि ब्रह्मा जी के हृदय में उल्लास जागृत हुआ तो वह गाने लगे। उसी अवस्था में उनके मुख से गायत्री छन्द प्रादुर्भूत हुआ—

गायत्रीमुखादुदपत दिति च ब्राह्मणम् ।

—(निरुक्त),

गान करते समय ब्रह्मा जी के मुख से निकलने के कारण गायत्री नाम पड़ा।

संगीत के अदृश्य प्रभाव को खोजते हुए भारतीय योगियों को वह सिद्धियों और अध्यात्म का विशाल क्षेत्र उपलब्ध हुआ, जिसे वर्णन करने के लिए एक पृथक् वेद की ही रचना करनी पड़ी। सामवेद में भगवान् की संगीत शक्ति के ऐसे रहस्य प्रतिपादित और पिरोये हुए हैं जिनका अवगाहन कर मनुष्य अपनी आत्मि, शक्तियों को—कितनी ही तुच्छ हों—भगवान् से मिला सकता है। अब इस सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों की मान्यतायें भी भारतीय दर्शन की पुष्टि करने लगी हैं ।

विदेशों में विज्ञान की तरह ही एक शाखा विधिवत् संगीत का अनुसन्धान कर रही है और अब तक जो निष्कर्ष निकले हैं, वह मनुष्य को इस बात की प्रबल प्रेरणा देते हैं कि यदि मानवीय गुणों और आत्मिक आनन्द को जीवित रखना है तो मनुष्य अपने आपको संगीत से जोड़े रहे। संगीत की तुलना प्रेम से की है। दोनों ही समान उत्पादक शक्तियाँ हैं, इन दोनों का ही प्रकृति (जड़-तत्व) और जीवन (चेतना-तत्व) दोनों पर ही चमत्कारिक प्रभाव पड़ता है।

"संगीत आत्मा की उन्नति का सबसे अच्छा उपाय है, इसलिये हमेशा वाद्य यंत्र के साथ गाना चाहिये।" यह पाइथा गोरस की मान्यता थी पर डा. मैक्फेडेन ने वाद्य की अपेक्षा गायन को ज्यादा लाभकारी बताया है। मानसिक प्रसन्नता की दृष्टि से पाइथागोरस की बात अधिक सही लगती है। मैक्फेडेन ने लगता है, केवल शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर ऐसा लिखा है। इससे भी आगे की कक्षा आत्मिक है, उस सम्बन्ध में, कविवर रवीन्द्रनाथ टैगोर का कथन उल्लेखनीय है, श्री टैगोर के शब्दों में—"स्वर्गीय सौन्दर्य का कोई साकार रूप और सजीव प्रदर्शन है तो उसे संगीत ही होना चाहिए।" रस्तिन ने संगीत को आत्मा के उत्थानख्, चरित्र की दृढ़ता कला और सुरुचि के विकास का महत्त्वपूर्ण साधन माना है ।

विभिन्न प्रकार की सम्मतियाँ वस्तुतः अपनी-अपनी तरह की विशेष अनुभूतियाँ हैं, अन्यथा संगीत में शरीर, मन और आत्मा तीनों को बलवान् बनाने वाले तत्व परिपूर्ण मात्रा में विद्यमान् हैं, इसी कारण भारतीय आचार्यों और मनीषियों ने संगीत शास्त्र पर सर्वाधिक जोर दिया। 'साम' वेद की स्वतन्त्र रचना उसका प्रमाण है। समस्त स्वर, ताल, लय , छन्द, गति, मंत्र, स्वर चिकित्सा, राग, नृत्य, मुद्रा, भाव आदि सामवेद से ही निकले हैं। किसी समय इस देश में भी भारतीयों ने योग सिद्धि प्राप्त करके यह दिखा दिया था कि स्वर-साधना के समकक्ष संसार की और कोई दूसरी शक्ति नहीं। उसके चमत्कारिक प्रयोग भी सैकड़ों बार हुए हैं।

अकबर की राज्य-सभा में संगीत प्रतियोगिता रखी गई। प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी थे तानसेन और बैजूबावरा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह आयोजन आगरे के पास वन में किया गया। तानसेन ने 'टोड़ी' राग गाया और कहा जाता है कि उसकी स्वर लहरियाँ जैसे ही वन-खण्ड में गुंजित हुईं मृगों का एक झुण्ड वहाँ दौड़ता हुआ चला आया। भाव-विभोर तानसेन ने अपने गले पड़ी माला एक हरिण के गले में डाल दी। इस क्रिया से संगीत प्रवाह रुक गया और तभी सब-के-सब सम्मोहित हरिण जंगल में भाग गये।

टोड़ी राग गाकर तानसेन ने यह सिद्ध कर दिया कि संगीत मनुष्यों की ही नहीं प्राणिमात्र की आत्मिक प्यास है, उसे सभी लोग पसन्द करते हैं। इसके बाद बैजूवावरा ने 'मृग-रंजनी टोड़ी' राग का अलाप किया। तब केवल एक वह मृग दौड़ता हुआ राज्य-सभा में आ गया, जिसे तानसेन ने माला पहनाई थी। इस प्रयोग से बैजूवावरा ने यह सिद्ध कर दिया कि शब्द के सूक्ष्मतम कम्पनों में कुछ ऐसी शक्ति और सम्मोहन भरा पड़ा है कि उससे किसी भी दिशा के कितनी ही दूरस्थ किसी भी प्राणी तक अपना सन्देश भेजा जा सकता है।

इसी बैजूवावरा ने अपने गुरु हरिदास की आज्ञा से चन्देरी (गुना म. प्र.) जिले स्थित के निवासी नरवर के कछवाह राजा राजसिंह को 'राग पूरिया' सुनाया था और उन्हें अनिद्रा रोग से बचाया था। दीपक राग का उपयोग बुझे हुये दीपक जला देने 'श्री राग' का क्षय रोग निवारण में, 'भैरवी राग' प्रजा की सुख-शांति वर्द्धन में, 'शंकरा राग' द्वारा युद्ध के लिये प्रस्थान करने वाले सैनिकों में अजस्र शौर्य भर देने में आदिकाल से उपयोग होता रहा है। वर्षा ऋतु में गाँव-गाँव मेघ व मल्हार राग गाया जाता था, उससे दुष्ट से दुष्ट लोगों में भी ऐसे उल्लास और आनन्द का झरना प्रवाहित होने लगता था। स्वर और लय की गति में बँधें भारतीय जीवन की सामनस्यता जो तब थी, अब वह कल्पना मात्र रह गई है। सस्ते सिनेमा संगीत ने उन महान शास्त्रीय उपलब्धियों को एक तरह से नष्ट करके रख दिया है।

संगीत एक प्रकार की योग साधना है, उसमें ध्वनि-कम्पन नाभि-प्रदेश से निकालकर ब्रह्म-रन्ध में लाये जाते हैं। यहाँ ताल में उन्हें पकड़कर मनोमय विद्युत का संयोग दिया जाता है, तब वह मुख द्वारा बाहर निकलता है। इस तरह नियन्त्रित स्वर पानी में भ्रमर अथवा गोलाकार चक्र के रूप में निकलता है, फिर उसका प्रयोग इच्छानुसार किसी भी प्रयोजन में हो सकता है। हर प्रयोजन के लिये अलग-अलग राग खोजे गये हैं, जो मंत्रवत् काम करते हैं। तंत्र में तो एक बुराई यह होती है कि यदि उसकी प्रति-क्रिया जो एक तेज झटके की तरह होती है, सहन न हो तो प्रयोगकर्ता को अनिष्ट भी कर सकती है, पर इन प्रयोगों से गायत्री उपासना, गीता के पाठ गाय के दूध और गायत्री मंत्र के जप के समान किसी भी अवस्था में हानि की कोई भी आशंका नहीं रहती। संगीत के अभ्यास से इसीलिये कभी किसी को हानि नहीं होती, किसी भी अवस्था में लाभ ही होता है।

ऊपर दी हुई घटनायें तो बहुत दिनों पूर्व की हैं, अभी कुछ दिन पूर्व ही होशियारपुर (पंजाब) जिले के प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री पं. गुज्जरराम वासुदेव जी रागी का चिन्तपूर्णी देवी के पर्वत शिखर पर गायन हुआ। भगवती चिन्तपूर्णी की भक्ति में विकल होकर होकर श्री रागी जी ने मेघ राग का आल किया। कड़ाके की धूप पड़ रही थी, पर जैसे ही उन्होंने 'मेघ राग' गाना आरम्भ किया, आकाश में बादल छाने लगे। थोड़ी ही देर में सूर्य बादलों से ढँक गया और घन गरज के साथ वृष्टि प्रारम्भ हो गई। लोगों ने अनुभव किया कि शास्त्रीय संगीत स्वर-विज्ञान के उन रहस्यों से ओत-प्रोत है जो, प्राकृतिक परमाणुओं में भयंकर हलचल उत्पन्न करके उनसे इच्छित कार्य करा सकते हैं।

रामपुर के नवाब साहब लकवे से बीमार थे। उस्ताद सूरज खाँ के कहने से उन्हें भारतीय संगीत पर श्रद्धा जम गई। सूरजखाँ सिद्ध वीणा वादक थे। उन्होंने राग 'जैजैवन्ती' के प्रयोग से लकवे से पीड़ित नवाब साहब को कुछ ही दिन में अच्छा कर दिया।

अपनी ही संस्कृति की यह महान् उपलब्धियाँ आज हमारे ही लिये किंवदन्तियाँ बन गईं। हम उन पर विश्वास नहीं करते या हमारी उन पर श्रद्धा नहीं रही। ऐसा न होता तो सिनेमाओं में प्रयुक्त सस्ते संगीत की अपेक्षा शास्त्रीय संगीत को महत्त्व दिया जाता। कुछ ऐसे प्रभावशील और साधन सम्पन्न व्यक्ति भी निकलते जो संगीत कला को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये अपने साधनों एवं प्रभाव का उपयोग स्थान-स्थान पर शास्त्रीय-संगीत खोलने, बालक-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बालिकाओं को उनमें प्रशिक्षण लेने के लिये प्रोत्साहित करने में करते। और नहीं तो कम से कम कीर्तन और भजन-मंडलियाँ और सर्वसुलभ, गुण प्रेरक नौटंकियाँ तो गाँव-गाँव स्थापित होनी ही चाहिये, ताकि हमारा लोकजीवन नीरस और आत्मिक सौन्दर्य से रहित न होने पाये।

किसी समय नृत्य भारतीय जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग था। भगवान् शंकर 'नटराज' कहे जाते हैं, वे स्वयं नृत्य विशेषज्ञ थे। नृत्य रास, मणिपुर, कत्थककली, भरत-नाट्यम् आदि नृत्य और नृत्यनाटिकाओं का आज भी अपना महत्त्व था। पं. जवाहरलाल नेहरू ऐसे नृत्य देखकर थिरक उठते थे। वह कहते थे—'लोक-नृत्यों से हमें उल्लास मिलता है और यह शिक्षा मिलती है कि जीवन का आनन्द केवल भौतिक पदार्थों की उपलब्धि में ही नहीं है।' तो भी यह कलायें हमारे लोक-जीवन से हटती जा रही हैं। हमें इन्हें फिर से अपनाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को कुछ ने कुछ गाना, कुछ न कुछ बजाना और नृत्य करना सीखना चाहिये, उससे लोक-जीवन प्रसन्नता, प्रफुल्लता, आनन्द और उल्लास का ही विकास होगा।

खेद की बात है कि जो भारतवर्ष कभी संगीत-कला विशेषज्ञ माना जाता था, आज वह तो अपनी इस विशेषता से रिक्त होता जा रहा है, जबकि दूसरे देशों में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ रही है। लोग उससे बहुमूल्य लाभ ले रहे हैं।

अमर कहानीकार मुन्शी प्रेमचन्द्र ने इसी तथ्य को व्यक्त करते हुए लिखा है—"मनोव्यथा जब असह्य हो जाती हो जाती और अपार हो जाती है, जब उसे कहीं त्राण नहीं मिलता, जब वहं रुदन और क्रन्दन की गोद में भी आश्रय नहीं पाती तो वह संगीत के चरणों में जा गिरती है।"

संगीत मनुष्य की आत्मा है, उसे अपने जीवन से अभिन्न न करें तो आत्मोत्थान के स्वर्गीय सुख से भी हम कभी वंचित न हों। शास्त्रों में शब्द और नाद को ब्रह्म कहा है। निःसन्देह स्वर साधना एक दिन अक्षर ब्रह्म तक पहुँचा देती है।

संगीत एक महाशक्ति

प्राचीनकाल में समीपवर्ती तीर्थ-यात्राओं, देव-दर्शनों और मेलों पर गाते हुये जाने की प्रथा थी। अभी भी गीत गाते हुए परिक्रमा आदि देने की प्रथा है, मथुरा यात्रा पर आने वाले कुछ बुन्देलखण्डी तीर्थ यात्री बिरहे गाते हुए और कुछ शिव उपासक 'भोला तेरी बम' गाते हुय निकलते हैं, उनका कहना है कि गीतों के माध्यम से वे यहाँ की धार्मिक भावनायें खींच ले जाते हैं। तीर्थ यात्राओं और पर्व-त्यौहारों पर गाँव-गाँव संगीत और भजनों का प्रचलन था, उससे एक बार तमाम भारतवर्ष संगीत से मुखरित हो उठता था, उसी का फल था कि वृक्ष वनस्पति अधिक और मीठे फल देते थे। दूषित तत्वों का संहार होता था और उससे बीमारियाँ आदि कम फैलती थीं।

गीत से जो उल्लास पैदा होता था, वह गन्दे स्थानों से गुजरने पर भी वहाँ की प्रतिक्रिया रोक देता था और संगीत के प्रभाव से यात्री स्वस्थ और प्रसन्नचित लौट आता था, उस पर किसी प्रकार की बीमारी का असर नहीं होता था। आज गाने का शौक कम होता जा रहा है, उसी कारण लोग तरह-तरह के दुर्गुणों में ग्रस्त होते, स्वास्थ्य खोते चले जा रहे हैं। संगीत जैसी उत्पादक सत्ता से सम्बन्ध विच्छेद कर मनुष्य जाति ने अपनी ही हानि की है।

सामूहिक संगीत के महत्त्व पर डाक्टरों का मत है कि जब कई व्यक्ति एक साथ गाते हैं तो सब लोगों का स्वर प्रवाह एवं आन्तरिक उल्लास मिलकर एक ऐसी तरंग शृंखला उत्पन्न करता है, जो वातावरण में मिलकर सबको उल्लसित कर देती है। फाल्गुन के महीने में फाग की धूम होती है, तब बच्चे-बूढ़ों में भी उल्लास फूट पड़ता है और वे युवकों की तरह उत्फुल्ल दिखाई देने लगते हैं। सामूहिक गायनों में सभी को अपने प्रयत्न से अधिक ही लाभ मिलता है और वह लाभ इतने व्यापक क्षेत्र को प्रभावित करता है कि प्रत्येक श्रोता चाहे वह गाने में भाग न भी ले रहा हो, उस आनंद सरोवर में डूब जाता है।

गाने की धुनों के साथ-साथ हाथ-पाँव अनायास ही गति करने लगते हैं, इसका तात्पर्य ही यह है कि संगीत का मनुष्य जीवन और आत्मा से सीधा सम्बन्ध है। आत्मा उसके बिना कुण्ठित हो जाती है, इसलिये आत्मिक प्रगति के प्रत्येक इच्छुक को गाने और संगीत सुनने का लाभ अवश्य लेना चाहिये।

योग-शास्त्रों में संगीत की बड़ी चर्चा है। तत्ववेत्ताओं का कथन है कि अदृश्य जगत् की सूक्ष्म

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्य प्रणाली पर जिधर भी दृष्टि डालते हैं, उधर ही यह प्रतीत होता है कि एक दिव्य संगीत से सभी दिशायें और विश्व भुवन झंकृत हो रहा है। यह स्वर लहरियाँ वीणा, भ्रमर, झरना, नागरी भेरी, बंशी आदि की तरह सुनाई देती हैं। जिस तरह सर्प नाद को सुनकर मस्त हो जाता है, उसी तरह चित्त उन स्वर लहरियों में आसक्त होकर सभी प्रकार की चपलतायें भूल जाता है। नाद से संलग्न होने पर मन ज्योतिर्मय हो जाता है और जो स्थिति कठिन साधनाओं से भी कठिनाई से मिलती है, वह स्वर योग के साधक को अनायास ही मिल जाती है।

संगीत परमात्मा के आशीर्वाद रूप में मनुष्य को मिला है, उस आशीर्वाद की वर्षा अपने ऊपर आप की जा सकती है। धन-सम्पत्ति न मिले न सही पर संगीत का आनन्द तो वायु, जल, सूर्य की ऊष्मा की तरह उन्मुक्त रूप से हर कोई प्राप्त कर सकता है। इस महाशक्ति से सम्बन्ध जोड़कर प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुणों और आत्मिक सम्पदा का विकास और दूषित तत्वों से देह, मन और आत्मा की रक्षा करनी चाहिये।

विश्व के यशस्वी गायक एनरिको कारूसो लिखते हैं—"जब कभी संगीत की स्वर लहरियाँ मेरे कानों में गूँजतीं मुझे ऐसा लगता कि मेरी आत्म-चेतना किसी अदृश्य जीवनदायिनी सत्ता से सम्बद्ध हो गई है। मैं शरीर की पीड़ा भूल जाता, भूख-प्यास और निद्रा टूट जाती, मन को विश्राम और शरीर को हल्कलापन मिलता। मैं तभी से सोचा करता था कि सृष्टि में संगीत से बढ़कर मानव-जाति के लिये और कोई दूसरा वरदान नहीं है।"

कारूसो ने जीवन भर संगीत की साधना की। जब कि एक बार एक शिक्षक ने यहाँ तक कह दिया कि तुम्हारा स्वर संगीत के योग्य है ही नहीं। तुम्हारा स्वर खड़खड़ाता है। पर निरन्तर अभ्यास और साधना से कारूसो ने संगीत साधना में अभूतपूर्व सिद्धियाँ पाईं और यह प्रमाणित कर दिया कि संगीत का संबंध स्वर से नहीं हृदय और भावनाओं से है। कोई भी मनुष्य अपने हृदय को जागृत कर परमात्मा के इस वरदान से विभूषित हो सकता है।

संगीत से मनुष्य का आध्यात्मिक विकास होता है और वह सूक्ष्म सत्ता के भाव-संस्पर्श और अनुभूति की स्थिति पाता है, यह परिणाम अन्तर्जगत से सम्बन्ध रखते हैं, इसलिये उस सम्बन्ध में विस्तृत अन्वेषण का क्षेत्र पाश्चात्य जगत के लिये अभी नितान्त खाली है, मस्तिष्क, शरीर और अन्य वनस्पति तक में संगीत के जीवनदायी प्रभाव को पाश्चात्य विद्धान और वैज्ञानिक भी मानने लगे हैं।

एक बार इंग्लैण्ड के एक अस्पताल में आपरेशन के लिये एक रोगी को ले जाया जा रहा था। उस समय बाहर के किसी मकान में संगीत की मधुर ध्वनि आ रही थी। रोगी के मन में संगीत का कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह उठ बैठा और निकलकर अस्पताल के बाहर आकर भौंचक्का सा देखने लगा कि वह स्वर झंकार कहाँ से आ रही है। डाक्टरों ने देखा संगीत के प्रभाव ने उसके रोग को ही दबा दिया है।

अमेरिका के कई दन्त चिकित्सक एक विशिष्ट संगीत लहरी, विद्युत वाद्य यंत्र से बजाकर दाँत उखाड़ते हैं। रोगियों से पूछने पर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि संगीत की मधुर ध्वनि का असर जादू जैसा होता है और वे लोग अपना कष्ट भूल जाते हैं। महिलाओं के प्रसव के समय भी इस प्रकार के प्रयोग किये गये और यह देखा गया कि जिस स्त्रियों को प्रजनन के समय बहुत पीड़ा होती थी, उन्होंने बिना कष्ट के प्रसव किया। इटली में 'टोरेन्टेला' नामक नृत्य होता है, तब अनेक प्रकार मधुर वाद्य बजते हैं, उनसे अनेक पागलपन के रोगी अच्छे होते देखे गये हैं।

भारतवर्ष में शास्त्रीय संगीत की शक्ति और महत्ता के सम्बन्ध में इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। अब उस दिशा में नई खोजें की जाने की आवश्यकता है, पर सामान्य व्यक्तियों को कथा, कीर्तन, भजन, रेडियो-संगीत, छोटे-छोटे वाद्य यन्त्रों के वादन और गायन के द्वारा उसके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का लाभ अवश्य उठाना चाहिये। संगीत स्पन्दन शरीर पर बड़ा अनुकूल प्रभाव डालते हैं।

गायन को 'योगिक स्वास्थ्य साधन' भी कहते हैं। गाते समय मुँह, जीभ और होंठ ही काम नहीं करते वरन् आवाज नाभि से खिंचती है और ब्रह्म-रन्ध्र तक पहुँचती है, फिर तालुओं से खींचकर गले से उसे निकालते हैं, इस तरह कमर से नीचे के हिस्से को छोड़कर शेष सम्पूर्ण शरीर का भीतरी व्यायाम हो जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

है, उससे बाहरी व्यायाम से भी अधिक प्रभावी परिणाम दिखाई देते हैं।

गायन से शरीर और मस्तिष्क की कमर नाड़ियों का शोधन होता है। ज्ञान-तन्तु सजग होते हैं। द्रुत, विलम्बित और मध्यम लय में गाये जाने वाले गीतों के अभ्यास से जीभ, वक्षस्थल, हृदय, श्वाँस और स्वर-वाहिनी नलिकाओं, स्नायु-मण्डल और नाड़ी संस्थान और हृदय की रक्तवाहिनी धमनियों में प्रभाव पड़ता है। यह अंग स्वस्थ, नीरोग और बलवान बनते हैं।

गाने से नाड़ी संस्थान में लहरें उठती हैं, उससे प्रभावित होकर मन भी लहराने लगता है। इस प्रकार की तरंगावली शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिये बहुत लाभदायक होती है। गाने से फेंफड़े और स्वर यंत्र मजबूत होते हैं। तपैदिक आदि बीमारियों का भय नहीं रहता। जबड़े और आमाशय का भी अच्छा व्यायाम हो जाता है और यह सभी संस्थान नीरोग हो जाते हैं। वाद्य संगीत से साथ गायन अथवा नृत्य का भी अभ्यास किया जाता है तो उससे सिर, गर्दन, कन्धा, छाती, पेट और पैर का भी व्यायाम हो जाता है और सारे शरीर में खून का संचार ठीक प्रकार से होने लगता है और शरीर में स्फूर्ति रहती है। बाँसुरी, शहनाई, बीन आदि मुँह से बजाय जाने वाले वाद्यों से जीभ, श्वाँस-नली और फेफड़े स्वस्थ और मजबूत होते हैं।

संगीत का अभ्यास करना ही लाभदायक नहीं, श्रवण करना भी उतना ही प्राणप्रद होता है। सुनने से और भी स्फूर्ति, चैतन्यता और रोमांच होता है। गायन और वादन की श्रोताओं पर जो प्रतिक्रिया होती है, उसके फलस्वरूप अधिक प्यास लगना, शरीर की जलन, नशे के प्रभाव, दुर्बलता, विष का प्रभाव, मूर्छा, नींद न आना, मानसिक विक्षिप्तता, आलस्य, बुखार, बार-बार दस्त और पेशाब होना, आन्तरिक दाह, रक्त-चाप, खाँसी, पाण्डुरोग, कान के दर्द, हृदय की धड़कन, श्वाँस रोग आदि को आराम मिलता है। कई बार कुछ रोग असाध्य हो जाते हैं और उन पर संगीत का प्रभाव धीरे-धीरे पड़ता है। धीरे-धीरे विष का शमन होता है पर यह निश्चित है कि नियमित रूप ले गायन का अभ्यास करने से इनसे छुटकारा अवश्य मिलता है।

गायन में स्तुति, मंगलाचरण, भगवान का ध्यान, माता का ध्यान, छोटे बच्चों को पास बैठाकर गाना, सजावट और सौन्दय-पूर्ण स्थान जैसे—देव मन्दिर, तीर्थ अथवा जलाशयों के किनारे सामूहिक रूप से गाने का प्रयोग और भी प्रभावोत्पादक होता है। प्राचीनकाल में ऐसे अवसरों पर्व-त्यौहार, पूजन, तीर्थ-यात्रा, मन्दिरों आदि में संगीत अभ्यास और गायन की व्यवस्था इसलिये की जाती थी कि उन पर्वों और स्थानों के सूक्ष्म प्रभाव को तरंगायित कर उसका भी लाभ उठाया जा सकता है।

संगीत का प्रभाव मनुष्यों पर ही नहीं पशु-पक्षियों पर भी पड़ता है। वेणुनाद सुनकर सर्प अपनी कुटिलता भूलकर लहराने लगता है। कई प्रान्तों में बहेलिये बीन बजाते हैं, उससे मुग्ध हुए हिरण, मृग निर्भय होकर पास चले आते हैं। हालैण्ड में गायें दुहते समय मधुर संगीत सुनाया जाता है। वहाँ की सरकार ने ऐसा प्रबन्ध किया है कि जब गायें दुहने का समय हो तब मधुर संगीत ब्राण्ड कास्ट किया जाय, ग्वाले लोग रेडियो सेट दुहने के स्थानों पर रख देते हैं। संगीत को गायें बड़ी मुग्ध होकर सुनती हैं और उनके स्नायु संस्थान पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ता है कि वे १५ से लेकर २० प्रतिशत तक अधिक दूध दे देती हैं।

अभी शक्ति तत्व के अनुसंधान का क्षेत्र बहुत विस्तृत और अव्यक्त है और जानकारी बढ़ेगी तो यह भी सम्भव हो जायेगा कि रीछ, भालू व शेर, बाघ जैसे खूँख्वार जानवरों को भी संगीत के प्रभाव से सात्विक और कोमल मनोवृत्ति का बनाया जाना सम्भव होगा। कहते है साम-संगीत को सुनकर चर-अचर सभी निर्विकार और अचेतन स्थिति को पँहुच जाते हैं, उसका लाभ भी तब मिल सकेगा।

संगीत का प्रभाव जीव जगत तक ही नहीं, वृक्ष और वनस्पति भी उससे प्रभावित होते हैं। अन्नमलय विश्व-विद्यालय के वनस्पति शास्त्र के प्रधान डा. टी. सी. एन. ने ध्वनि तरंगों के द्वारा पौधों को उत्तेजित व वर्धित किये सिंह की बात स्वीकार की।

केले और धान की खेती में संगीत की स्वर लहरियाँ डाली जायँ तो उनके वजन और उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती देखी गई है।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गाना-नाचना, गीत-संगीत निश्चित रूप से प्रसन्नता की वृद्धि करते हैं। यह शरीर की स्थूल प्रक्रिया है। संगीत को हृदय और भावनाओं में उतार लेने से तो मनुष्य का आत्मिक काया-कल्प ही हो सकता है। संगीत एक प्रकार की स्वर साधना और प्राणायाम है जिससे शरीर के भीतरी अवयवों का व्यायाम भी होता है और आक्सीजन की वृद्धि भी। फलस्वरूप पाचन-शक्ति, गहरी नींद, चौड़ी छाती और हड्डियों की मजबूती का स्थूल लाभ तो मिलता ही है। दया, प्रेम, करुणा, उदारता, ममता, आत्मीयता, सेवा और सौजन्यता के भावों का तेजी से विकास होता है। यह सद्गुण अपनी प्रसन्नता और आनन्द का कारण आप हैं, वैसे ऐसे व्यक्ति के लिये सांसारिक प्रेम और सहयोग का भी अभाव नहीं रहता।

संगीत का अब सम्मोहिनी विद्या के रूप में विदेशों में विकास किया जा रहा है। अनेक डाक्टर सर्जरी जैसी डाक्टरी आवश्यकताओं में संगीत की ध्वनि-तरंगों का उपयोग करते हैं, अमेरिका में बड़े स्तर पर संगीत की सृजनात्मक शक्ति की खोज की जा रही है। वहाँ के वैज्ञानिक ध्वनि तरंगों के माध्यम से न केवल विश्व-संसार प्रणाली को सरल और सर्वसुलभ बना रहे हैं वरन् उसके माध्यम से अनेक रहस्यों को सुलझा रहे हैं ।

संगीत शब्द ब्रह्म की स्वर साधना

अणु परिवार की गतिविधियों से आगे की शोध करने पर पता चला है कि अपनी धुरी पर तथा कक्षा पर घूमने वाले परमाणु घटकों को जो दिशा, प्रेरणा एवं क्षमता प्राप्त होती है उसका उद्गम एक अतीव सूक्ष्म शक्ति है जिसे ध्वनि का प्रारूप कह सकते हैं।

प्रकृति की प्रेरक शक्ति के अन्तराल में एक प्रकार के स्पन्दन होते हैं। इनकी घड़ियाल में हथौड़ी मारने से उत्पन्न होने वाली टंकार से तुलना कर सकते हैं। टंकार के बाद जो झनझनाहट होती है उसे दिव्य दर्शियों ने ओउम कार ध्वनि कहा है। निरन्तर यही ध्वनि सूक्ष्म प्रकृति के अन्तराल में गतिशील रहती है। इसी को प्रकृति ब्रह्म का संयोग करते हैं, इसी आघात प्रतिघात से सृष्टि की समस्त हलचलों का आरम्भ अग्रगमन होता है। अणु को गति यहीं से मिलती है। ऊर्जा की-तरंग शृंखला इसी केन्द्र से उत्पन्न होती है। एक सत्ता का बहुसंख्यक विकरण—एकोऽहम् बहुस्याम की शक्ति के अनुसार इसी मर्म बिन्दु से आरम्भ होता है। बिन्दुयोग और नादयोग की नाभि यही है, यही स्वर संस्थान नादयोग है, शब्द ब्रह्म का अपनी माया—स्फुरणा इच्छा के साथ चल रहा यही संयोग ओंकार के रूप में निसृत होकर परा और अपरा प्रकृति के गहन गव्हर में जड़ चेतना गतिविधियों का सृजन करता है।

दीवार घड़ी का चलता हुआ पेन्डुलम एक बार हिला दिया जाय तो घड़ी में चाबी रहते वह अपने क्रम से निरन्तर हिलता ही रहता है। ठीक उसी प्रकार एक बार आरम्भ हुई सृष्टि स्वसंचालित प्रक्रिया के अनुसार अपना कार्य करती रहती—अपनी धुरी पर एक बार घुमाये हुए लट्टू की तरह देर तक घूमती रहती है। इसका संचालक शब्द ब्रह्म की वह मूल ध्वनि है जिसे ओउम कार कहते हैं। जिस प्रकार एक सूर्य में सात रंग की सात किरणें निसृत होती हैं उसी प्रकार स्वर ब्रह्म अपने को सात स्वरों में विभक्त करता है। वाद्ययन्त्रों में उसे स र ग म प ध नि क्रम से बजाया जाता है। योगसाधना में राजयोग, हठयोग, प्राणयोग, शक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग का नाम दिया जाता है। शरीर में इसी को षट्चक्र और सप्तम ब्रह्मरन्ध—सहस्र कमल के रूप में गिना जाता है। सप्तऋषि, सप्तलोक, सप्तसागर, सप्तमेरु, सप्तदेव, सप्ततीर्थ, सप्तसाधना के रूप में ब्रह्मविद्या का विस्तार हुआ है । भौतिक विज्ञान भी सात भागों में ही विभक्त है।

इन सबको मिलाकर स्वसञ्चालित सृष्टि क्रम की अन्तः स्फुरणाओं को ब्रह्म संगीत कह सकते हैं। इसी का अलङ्कारिक उल्लेख कृष्ण की वंशी, शंकर के डमरू, सरस्वती की वीणा के रूप में किया जाता है। सरस्वती को वीणा मानवी काया का मेरुदण्ड—कृष्ण की बंशी कण्ठ स्थित स्वर नलिका—शंकर का डमरू धड़कता हुआ हृदय कहा जा सकता है। लप-डप को, धड़कन को, शंकर का डिमडिम घोष कहा गया है। साँस नलिका में वायु का आभागमन 'सोऽहम्' की ध्वनि में कृष्ण बाँसुरी के रूप में निनादित होता है। इड़ा, पिंगला और आरोह अवरोह मेरुदण्ड की वीणा में सप्त व्याहृतियों के सप्त स्वरों की झंकार उत्पन्न करते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और कुण्डलिनी सर्पिणी की सप्त जिह्वाओं से सप्त नादों के रूप में उद्‌भूत हुआ सुना जाता है। नादयोग के साधक सूक्ष्म कर्णेन्दिय के माध्यम से घण्टा नाद, शंख नाद, वेणु नाद, मेघ नाद, निर्झर प्रवाह आदि के रूप में सुनने का प्रयत्न करते हैं और उस आधार पर सूक्ष्म प्रकृति के अन्तराल में चल रही अगणित गतिविधियों के ज्ञाता बनते हैं। इन स्वर निनादों के साथ जो सम्बन्ध जोड़ लेता है वह प्रकृति पर आधिपत्य स्थापित करने और उसे अपनी अनुयायी—संकेतागामिनी बनाने में सफलता प्राप्त करता है। योगविद्या में स्वर विद्या का अपना स्थान है। स्वर शास्त्र स्वर योग का साधना विज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान है। नासिका द्वारा चलने वाले सूर्य चन्द्र स्वरों को माध्यम बनाकर कितने ही साधक प्रकृति के अन्तराल में प्रवेश करते हैं और वहाँ से अभीष्ट मणिमुक्तक उपलब्ध करते हैं ।

पशु-पक्षियों से लेकर छोटे कीड़े-मक्कोड़े तक के उच्चारण में एक क्रमबद्धता रहती है। संगीतकारों के गायन वादन क्रम से न सही वे सभी एक निर्धारित ध्वनि प्रवाह के अनुसार ही अपना उच्चारण करते हैं। प्रातःकाल चिड़ियों की चहचहाहट में एक स्वर क्रम रहता है उसी से वह कर्णप्रिय लगती है। मुर्गे की बाँग, कोयल की कूक, मोर, कौआ, पपीहा, तीतर आदि पक्षियों की वाणी अपने ढंग और अपने क्रम से चलती है। पशुओं में भेड़ का मिमियाना, शेर का दहाड़ना, कुत्ते का भौंकना क्रमबद्ध रहता है। किसी भी पशु की—किसी भी पक्षी की आवाजें सुनी जायें उनमें एक व्यवस्थित स्वर क्रम जुड़ा हुआ प्रतीत होता होगा। छोटे कीड़ों में भी से भी यही बात देखी जाती है, झींझुर रात भर बोलते हैं, झिल्ली की झंकार उठती है उसे सुनने वाले अनुभव कर सकता हैं कि निद्रा लाने वाली एक मनोरम स्वर लहरी इन तुच्छ से कीटकों के माध्यम से सुनाई जाती है। मनुष्य के कानों की पकड़ से बाहर की ध्वनियाँ प्रायः प्रत्येक जीवधारी द्वारा निसृत होती हैं और पेड़-पौधों से लेकर जड़ समझे जाने वाले पदार्थों तक से एक श्वांस—प्रश्वास जैसी निरन्तर स्वसंचालित स्वर क्रम निरन्तर निनादित होता रहता है।

सेनाएँ जब किसी पुल को पार करती हैं तो उन्हें आज्ञा दी जाती है कि लैफ्ट राइट क्रम के अनुसार कदल मिलाकर न चलें। क्योंकि कदम मिलाकर चलने से एक ऐसी प्रचण्ड शक्तिशाली ध्वनि उत्पन्न होती है जो अमुक स्थिति में उन पुलों को ही गिरा सकती है। शब्द शक्तिमान तत्व है। बिजली की तड़कन शब्द से बड़ी-बड़ी आलीशान इमारतें—कोठियाँ फट जाती हैं। धड़ाके की आवाज से कानों के पर्दे फट जाते हैं। इस शक्ति का यदि क्रमबद्ध व्यवस्थित रुप से उपयोग किया जा सके तो शारीरिक, मानसिक स्वस्थता के लिए ही नहीं सृष्टि के अनेक पदार्थों और संसार की बहुमुखी परिस्थितियों एवं वातावरणों को आश्चर्यजनक रीति से प्रभावित किया जा सकता है।

वेदों का अवतरण शब्द ब्रह्म के सहित हुआ है। स्वर अपौरुषेय है इसलिए वेदों को अपौरुषेय कहा जाता है। प्रत्येक वेद मन्त्र को ऋचा एवं छन्द कहा जाता है। उससे उसकी स्वरबद्धता स्पष्ट की गई है। वेदों के गायन की ध्वनि पद्धतियों को ही सामगान कहते हैं। सामवेद के अपने मंत्र तो उंगलियों पर गिनने जितने ही हैं शेष प्रायः सभी अन्य तीन वेदों के लिये गये हैं और उनका संकलन विशिष्ट स्वर लिपियों के साथ किया गया है। किसी समय सामगान ही एक हजार स्वर ध्वनियाँ थी इन्हें साम शाखाएँ कहा जाता था। जब उनमें से बहुत थोड़ी ही शेष रह गई हैं। किसी समय सामगान वैदिक साधना पद्धति का प्रधान अंग था। इसी आधार पर स्व् पर कल्याण के अनेकों प्रयोजन सिद्ध होते थे। वेद मंत्र में जो शिक्षाएँ सन्निहित हैं वे तो साधारण हैं, उनसे भी अधिक स्पष्ट और प्रभावी शिक्षाएँ, स्मृतियाँ तथा अन्याय धर्मग्रन्थों में मौजूद हैं। वेद मन्त्रों का महत्व मात्र उनके अर्थों या निर्देशों तक सीमित नहीं है वरन् उनकी गरिमा उन शक्तियों में अन्तर्निहित है जो उन ऋचाओं के सस्वर उच्चारण से प्रादुर्भूत होती है।

सुक्ष्म विज्ञानी जानते हैं कि रक्तभिषरण, श्वांस-प्रश्वांस, आकुञ्चन-प्रकुञ्चन का शरीर में निरन्तर चलने वाला क्रिया-कलाप विभिन्न प्रकार की स्वर ध्वनियाँ उत्पन्न करता है और उन्हीं के तरंग प्रवाह से जीवन गति चलती है। नादयोग के पूर्वार्ध में साधक अपनी कर्णेन्द्रिय का संयम करके इन्हीं ध्वनियों को सुनता है और सपेरे एवं अहेरों की रीति अपनाकर मन रूपी मृग एवं सर्प को वेश में करता है। कहा जा चुका है कि सृष्टि के विभिन्न क्रियाकलापों को संचालित करने वाली भौतिक शक्तियाँ तथा भावनात्मक अभिव्यंजना सूक्ष्म प्रकृति के अन्तराल में मूलतः ध्वनि प्रवाह बनकर ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कार्य कर रही हैं। यह ध्वनि प्रवाह संख्या में सात हैं। उनके परस्पर सम्मिश्रण से बहु संख्यक ध्वनि तरंगें भी बनती हैं। शरीर में भी इनकी संख्या सात है और सृष्टि के अन्तराल में भी वे सात ही हैं। वेद मंत्रों की स्वर संरचना इसी तथ्य को ध्यान में रखकर हुई है। उनका विधिवत् उच्चारण जहाँ प्राणधारियों में विभिन्न स्तर की स्फुरणाएँ उत्पन्न करता है वहाँ सृष्टिगत हलचलों के मूल में चल रहे स्पन्दनों के साथ भी अपना सम्बन्ध बनाता है। इसी आधार पर वेद मंत्रों के आश्चर्यजनक प्रभाव प्रकट होते हैं। शाप वरदान की-शुभ के अभिवर्धन और अशुभ के निराकरण की जो शब्दश्रुति में भरी पड़ी है उसका आधार यह वैदिक स्वर विज्ञान ही है। लययोग के साधक 'अनहद नाद' के नाम से इसकी व्याख्या करते हैं और नादबिन्दुयोग को आधार बनाकर परब्रह्म के साथ अपना तादात्म स्थापित करते हैं। सिद्धियाँ और विभूतियाँ स्पष्टत: इसी तादात्म्य से उत्पन्न होती हैं। शब्दयोगी-नादब्रह्म का साधक इस प्रक्रिया को अपनाकर सिद्धयोगी बन सकता है और न केवल अपना वरन् अपने श्रोताओं का भी कल्याण कर सकता है। प्राचीन काल में समय-समय पर वेद मन्त्रों से सस्वर उच्चारण का प्रयोग स्वरविद्या के रूप में-मानवी व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए उससे उत्पन्न अवरोधों का समाधान करने के लिए किया जाता है। प्रयत्न किया जाय तो उस विज्ञान को पुनर्जीवित करके वैसा ही लाभ फिर उठाया जा सकता है जिससे व्यक्तित्व में देवत्व का उदय और समाज में स्वर्गीय परिस्थितियों का अवतरण किया जा सके।

फ्रांसीसी प्राणि शास्त्री वास्तीव आन्द्रे ने थलचरों, जलचरों और नभचरों पर विभिन्न प्रवाहों की—स्वर लहरियों की होने वाली प्रतिक्रियाओं का गहरा अन्वेषण किया है। तदनुसार वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि संगीत प्राय: प्रत्येक जीवधारी के मस्तिष्क एवं नाड़ीसंस्थान पर आश्चर्यजनक प्रभाव डालता है। उनकी प्रकृति और मन:स्थिति के अनुरूप यदि संगीत बने तो उन्हें मानसिक प्रसन्नता और शारीरिक उत्साह प्राप्त होता है। किन्तु उनकी कर्णेन्द्रिय को कर्कश लगने वाली अरुचिकर ध्वनियाँ बजाई जायें तो उससे उन्हें अप्रसन्नता होती है और स्वास्थ्य सन्तुलन भी बिगड़ता है। किस प्राणी की किस स्थिति में किस प्रकार का संगीत क्या प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है उसका अध्ययन करने वाले जर्मन प्राणि शास्त्री यह आशा करते हैं कि भविष्य में विभिन्न जीवधारियों की मन: स्थिति में आशाजनक परिवर्तन समय-समय पर किया जा सकेगा। हिंस्र पशुओं को भी कुछ समय के लिए शान्त किया जा सकेगा और अवांछनीय जीवों को उनके लिए अरुचिकर सिद्ध होने वाली ध्वनियाँ करके उन्हें दूर भगाया जा सकता है। इसी प्रकार उन्हें कई प्रवृत्तियों में संलग्न एवं उदासीन बनाने का कार्य भी संगीत के माध्यम से किया जा सकता है।

साँप का बीन की नाद पर मुग्ध होकर लहराने लगना, हिरनों का अहेरी का वाद्य सुनकर खड़े हो जाना प्रसिद्ध है। वाद्य बाल वृद्ध सभी को आकर्षित करता है। उसे प्रत्येक उत्सव आयोजन में स्थान दिया जाता है। मनोरंजन में तो उसका स्थान किसी ने किसी प्रकार रहता ही है। थके-हारे लोग इस माध्यम से नवीन स्फूर्ति प्राप्त करते हैं। संगीत शब्दब्रह्म की स्वरसाधना है। उससे मनुष्यों का ही नहीं समस्त प्राणियों का श्रेय साधन हो सकता है और सर्वत्र उल्लास, आनन्द का विस्तार हो सकता है।

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है—"संगीत का मूल-तत्व अतीन्द्रिय और अति मानवी है। दैनिक-जीवन के घटना-क्रम में बँधी हुई अन्त: चेतना को वह मुक्ति की अनुभूति तक ले जाता है। क्या गायक, क्या स्रोता—दोनों ही उन क्षणों में वैराग्य की उस भूमिका के समीप जा पहुँचते हैं, जिसे ब्रह्माण्ड की नींव के रूप में तत्ववेत्ताओं ने जाना है।"

महाकवि होमर कहते थे—असह्य मनोव्यथा का समाधान या तो रुदन-क्रन्दन में होता है या फिर संगीत के गुन्जन में।

भारतीय तत्ववेत्ता संगीत की गणना मानव-जीवन की महती आवश्यकताओं में करते रहे हैं। उन्होंने इस विभूति से वंचित लोगों को पूँछ रहित पशु की संज्ञा में गिना है।

साहित्य संगीत कला विहीन:।
साक्षात् पशु: पुच्छ विषाण हीन:॥

संगीत, साहित्य और कला से रहित मनुष्य बिना पूँछ का साक्षात् पशु है।

खगा: भृगां पतगांश्च कुरगांद्यापि जन्तव:।
सर्व एव प्रगायन्ते गीतव्याप्ति दिगन्तरे॥

—नारद संहिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पक्षी, भ्रमर, पतंगे, मृग आदि जीव-जन्तु तक गायन करते रहते हैं। गीत—ब्रह्माण्ड व्यापी है।

संगीत मनुष्यों की ही नहीं, सृष्टि के समस्त प्राणधारियों की सम्पदा है। वे सभी अपने-अपने ढंग से उसका उपयोग करते हैं।

भावनाओं का उद्रेक जब गतिक्रम और लयक्रम में प्रस्फुटित होता है तो उसे गायन के रूप में उभरता देखा जाता है। गीत—भावपूर्ण ही हो, यह आवश्यक नहीं। शब्दों के अनगढ़ होते हुए भी गान अपनी विविध अभिव्यक्तियाँ प्रकट करता हुआ गुंजित रह सकता है, भले ही उसे कोई दूसरा सुनने के लिए मौजूद या तत्पर न हो।

भगवान का नाम यों किसी भी प्रकार गीतवाद्य के साथ लिया जा सकता है । पर यदि उसे गीतवाद्य के साथ लिया जाय तो शास्त्रकारों के मतानुसार उसका प्रभाव "समश्रुति-गान के समान अत्यन्त ही प्रभावोत्पादक होता है।"

विष्णु नामानि पुण्यानि सुस्वरै रन्वितानिचेत्।
भवन्ति साम तुल्यानि कीर्तितानि मनीषिभिः॥

संगीत परिजात

यदि ताल सहित सस्वर भगवान का नाम गाया जाय तो वह साम-गान की तरह फलप्रद होता है।

संगीत के आदि-इतिहास पर दृष्टि डालें तो वह विनय, भक्ति, करुणा और ममत्व की अनुभूतियों के साथ उद्भूत हुआ प्रतीत होगा। ईश्वर भक्ति के पीछे उदात्त प्रेम की—आत्मार्पण की—लय तदात्म्य की धारा बहती दिखाई देगी। संगीत का आदि उद्गम भी इसी स्रोत के सन्निकट है। कला की उत्कृष्टता ही काल-जयी बनती है। संगीत को विलास और विनोद का माध्यम बनना जरूर पड़ा, पर वस्तुतः उसकी मूल सत्ता वैसी है नहीं। आत्मा की अभिव्यंजना ने ही क्रमशः संगीत की शाखा-प्रशाखाओं के रूप में विकास किया है।

वेद-काल के ऋषियों से लेकर अद्यावधि भक्तजनों ने अपनी अनुभूतियाँ प्रायः छन्दबद्ध रूप में ही विनिर्मित की हैं। भक्तिकाल के प्रायः सभी साधनारत महामानव या तो कविताएँ रचते रहे हैं, या फिर छन्द-स्वरों में भगवान के गुणानुवाद गाते रहे हैं। महर्षि नारद से लेकर सूर, तुलसी, मीरा, कबीर तक वही परम्परा क्रमबद्ध शृंखला के रूप में चली आ गई है।

वीणा पुस्तक धारिणी—भगवती सरस्वती की दो उपकरणों में शब्द शास्त्र का विभाजन है। उनके एक हाथ में वीणा और दूसरे में पुस्तक है। इन्हें ज्ञान की दो धाराएँ कह सकते हैं। स्वर-शास्त्र और शब्द-शास्त्र के माध्यम से ही हमारी विचारधाराएँ और भावनाएँ प्रदीप्त होती हैं। आचार्य आनन्दवर्धन ने इस प्रतीक अलंकार पर अधिक प्रकाश डाला है। भगवान शकंर के डमरू और भगवान कृष्ण की बाँसुरी में भी संगीत-गरिमा का ही संकेत है।

इन दिनों शास्त्रीय-संगीत 'क्लासिकल म्यूजिक' और सुगम-संगीत —'लाइट म्यूजिक' के दो भागों में संगीत को विभक्त किया जाता है। गीत के चार अंग माने गये हैं—स्वर, पद, लय और मार्ग। स्वरवान् अर्थात—गायन के रूप में प्रयुक्त होने वाला और 'अभिधानावान्' अर्थात्—वार्तालाप के रूप में व्यक्ति होने वाला, इस रूप में भी शब्द का विभाजन है। इसी का देय पक्ष और वाक् पक्ष भी कहते हैं।

संगीत-विश्व का प्राण है

संगीत का मनुष्य जीवन को सरस बनाने में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। यदि संगीत का अस्तित्व मिट जाय तो दुनियां बड़ी ही नीरस, रूखी और कर्कश प्रतीत होने लगेगी। साधारण पशु की अपेक्षा मनुष्य को जो आनन्दमयी स्थितियाँ प्राप्त हैं उनमें संगीत, साहित्य और कला का बहुत बड़ा भाग है।

जड़ पदार्थों में गति उत्पन्न करने के लिए गर्मी का कार्य प्रधान है। अन्य तत्वों से भी गति संचार होता है परन्तु प्रधानता अग्नि तत्व की ही है। इसी प्रकार चैतन्य तत्वों में जो हलचलें होती हैं उसके कारण यद्यपि अन्य भी हैं पर संगीत की उनमें प्रधानता है। प्राणियों के अन्दर जो चैतन्य तत्व है वह संगीत के द्वारा गति प्राप्ति करता है, आगे बढ़ता है, विकसित होता है।

वैज्ञानिक खोजों से यह पता चला है कि शून्य सृष्टि की निराकार स्थिति जहाँ है वहाँ से एक प्रकार का शब्द उत्पन्न होता है। यह शब्द ऐसा है जैसे कि थाली में एक हलकी चोट मार दी जाय तो वह बहुत देर तक झनझनाती रहती है। ऐसी झंकृतियाँ पानी की लहरों की भाँति बार-बार अदृश्य अन्तराल में से उठती हैं। उनकी झंकृतियों के आघातों से इलेक्ट्रोन परमाणु (विद्युत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घटकों में गति उत्पन्न होती है और वे अपनी धुरी पर उसी प्रकार घूमने लगते हैं जैसे कि सृष्टि के बड़े-बड़े ग्रह, नक्षत्र पृथ्वी आदि अपनी-अपनी धुरी पर बड़ी तीव्र गति से घूम रहे हैं। इलेक्ट्रोन परमाणुओं में गति उत्पन्न होने से दुनियाँ का सारा काम चलने लगता है। घड़ी की चाबी का पुर्जा चलने से उसके अन्य पुर्जे भी चलने लगते हैं । इसी प्रकार इलेक्ट्रोन कणों में हरकत होने से संसार की समस्त दृश्य-अदृश्य क्रियाएँ होने लगती हैं।

इस वैज्ञानिक खोज से प्रतीत होता है कि अदृश्य झंकृति के संगीतमय कम्पन की प्रेरणा से ही समस्त सृष्टि का काम चल रहा है। यदि यह संगीत बन्द हो जाय तो प्रलय में तनिक भी विलम्ब न समझना चाहिए। संगीत द्वारा सृष्टि संचालन के उपरोक्त सिद्धान्त को आधुनिक वैज्ञानिकों ने ही ढूँढ़ निकाला है ऐसी बात नहीं है, भारतीय तत्वदर्शी आचार्य इन सब बातों को चिर प्राचीनकाल से अनुभव करते आ रहे हैं। योग की दिव्य दृष्टि द्वारा उन्होंने ढूँढ़ा कि सृष्टि को कौन चलाता है ? उन्हें मालूम हुआ कि पंच तत्वों से ऊपर की भूमिका में एक घंटा नाद के समान झंकृत हो रहा है। उसके कम्पनों की प्रेरणा से विश्व में गतिविधि जारी है। पंच तत्व जड़ हैं इसलिए वे स्वेच्छापूर्वक निरंतर ऐसी प्रेरत गति अविचल रूप से सदैव जारी नहीं रख सकते अतएव यह कार्य किसी चैतन्य और नित्य शक्ति का होना चाहिए। गुण के अनुसार नाम रखा जाता है। जैसे जिसमें शूरवीरता होती है उसे बहादुर, जो अंटसंट बकता है उसे पागल, जो चिकित्सा करता है उसे वैद्य कहते हैं । उसी प्रकार उस संचालक, चैतन्य, नित्य, ईश्वर सत्ता का नामकरण करने के लिए भी ऋषियों को उसके गुण का आश्रय लेना पड़ा। घड़ियाल में चोट मार देने के बाद जो बहुत देर तक झंकृति होती है उस झंकृति का उच्चारण करीब ॐ जैसा होता है। सृष्टि संचालक शब्द भी इसी प्रकार का है इसलिए उसका नाम ॐ रखा गया है ॐ अक्षर का प्राचीनकालिक रूप स्वास्तिक था। अब उसकी बनावट में सुधार हो जाने के कारण उस ॐ लिखा जाने लगा है। योगाभ्यास में कान बन्द करके दिव्य कर्णेन्द्रिय से 'अनहद नाद' सुनने की जो साधना है उसका तात्पर्य अपनी चेतना को सूक्ष्म परमात्म तत्व के निकटवर्ती प्रदेश तक पहुँचा देना है।

भौतिक सृष्टि का सारा खेल संगीत की शक्तिशाली झंकृतियों के आधार पर चल रहा है। चैतन्य सृष्टि की साकारिता भी संगीत के आधार पर है। मस्तिष्क के विद्युत कोषों से प्रति सैकिण्ड करीब ३० या ३१ विचार तरंगें निकलती हैं। सिनेमा के फिल्म में एक सैकिण्ड में करीब सोलह चित्र आँखों के आगे से निकल जाते हैं आँखे उन चित्रों की प्रथकता को इतनी तेजी से देखने में असमर्थ रहती है इसलिए ऐसा भ्रम होने लगता है कि एक ही तस्वीर चल फिर रही है, वास्तव में होता है कि एक तस्वीर जरा सी हरकत करती दीखती है उतनी ही देर में उसके सैकड़ों चित्र आँखों के आगे से निकल जाते हैं। इसी प्रकार मस्तिष्क में से भी प्रति सैकिण्ड करीब ३०-३१ एक प्रकार की तरंगें निकलती हैं। इनके सम्मिलन से जो एक बहुत बड़ा समूह बनता है उसे 'विचार' कहते हैं। मस्तिष्क के विद्युत कोषों का तरंगित होना भी एक सूक्ष्म संगीत के ऊपर निर्भर है। प्राण वायु सहस्रार कमल से जाकर टकराती है जिससे उसकी झंकृति से मिलता जुलता एक दूसरा शब्द उत्पन्न होता है। ऋषियों ने उसे "सोऽहम्" ध्वनि कहा है। यही अजपा जाप है। ब्रह्माण्ड में स्थिर सहस्रदल कमल से जाकर प्राण वायु न टकरावे और यह 'सोऽहम्' ध्वनि न हो तो मस्तिष्क की चेतना का-स्नायविक विद्युत शक्ति का अन्त हो जायगा और क्षण भर के अन्दर मनुष्य की मृत्यु हो जायगी।

योगी लोग जानते हैं कि शरीर का सूक्ष्म ढाँचा-सितार के ढाँचे से बिलकुल मिलता-जुलता है। भगवती सरस्वती के हाथ में वीणा का होना एक आध्यात्मिक अर्थ रखता है वह अर्थ यह है कि सद्विवेक का—सरस्वती का—प्राकट्य सितार की आकृति के बने हुए सूक्ष्म शरीर द्वारा होता है। मेरुण्दंड में इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना के तार लगे हुए हैं। मूलाधार स्थिति कुण्डलिनी में यह तार बँधे हुए हैं। षट् चक्र इस सितार के वाद्य स्थान हैं। इनमें से विभिन्न प्रकार की झंकार हर घड़ी निकलती है। प्राण विद्या के सूक्ष्म दर्शी आचार्य बतलाते हैं कि गुदा और अंड कोष के बीच मूलाधार चक्र (Pelvic Plexus)में से "लं" की ध्वनि, पेडू के नीचे जननेन्द्रिय के ऊपर स्वाधिष्ठान चक्र (Hypognstric plexus) में से "बं" की धवनि, नाभि स्थान के मणिपूर चक्र (Epigastric Plexus)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में से "रं" की ध्वनि हृदय में स्थित अनाहत चक्र (Cardiac Plexus) में से 'षं' की ध्वनि, कंठ स्थान के विशुद्ध चक्र (Carotid Plexus) में से 'हं' की ध्वनि तथा भ्रूमध्य भाग के आज्ञाचक्र में से '' को ध्वनि निकलती है। इस प्रकार यह छः झँकृतियाँ अनवरत रूप से प्रतिक्षण तरंगित होती रहती हैं। स्थूल जगत में स, रे, ग, म, प, ध, नि, के स्वर वाद्य यन्त्रों पर बजते हैं। हमारे सूक्ष्म यन्त्र का सितार अपने तारों से अपनी भाषा में दूसरी ध्वनियाँ निकालता है। यह ध्वनियाँ आपस में एक दूसरे से टकराती हैं, और मिलती है। इस संघर्षण और सम्मिलन से मनुष्य का अन्तर्जगत संगीत मंत्रय हो जाता है। इन तरंगों में असाधारण शक्ति भरी पड़ी है, इनके प्रवाह से शारीरिक और मानसिक जगत के सूक्ष्म घटक गतिशील होते हैं, तदनुसार विभिन्न प्रकार की योग्यता रुचि, इच्छा, चेष्टा, निष्ठा, भावना, कल्पना, उत्कंठा, श्रद्धा आदि का आविर्भाव होता है और फिर इन्हीं के आधार पर गुण, कर्म स्वभाव का शारीरिक, मानिसिक, स्थूल ढाँचा दृष्टिगोचर होने लगता है। यह आध्यात्मिक संगीत हमारा पथ प्रदर्शक है, हमें नीचे ऊपर, आगे पीछे, जहाँ चाहता है ले दौड़ता है।

घड़ी के पेण्डुलम की तरह हृदय की धड़कन अपना ताल ठेका अलग ही बजाती है। लप, डप, का क्रम तारवर्की की गर, गट्ट की समता करता है। इस तारवर्की से नस-नस का, पुर्जे-पुर्जे का संचालन होता है। डाक्टर लोग स्टेस्थेस्कोप यन्त्र लगाकर इस तारवर्की के संगीत की परीक्षा करते हैं कि कहीं यह संगीत बेसुरा तो नहीं हो रहा है वे जानते हैं कि जरा सा बेसुरापन आते ही नाना प्रकार के रोगों का उपद्रव खड़ा होगा। चतुर संगीतज्ञ की आँखों से पट्टी बाँधकर सितार सुनाया जाय तो वह उसके बेसुरेपन को सुनकर यह बता देगा कि इस बाजे के अमुक तार में अमुक प्रकार की खराबी है। इसी प्रकार से हृदय की धड़कन या नाड़ी की धड़कन का अनुभव करके उसके बेसुरेपन के आधार पर चिकित्सक लोग यह बताते हैं कि शरीर के किस पुर्जे में क्या खराबी आ गई है, क्या रोग हो गया है।

अदृश्य जगत की सूक्ष्म कार्य-प्रणाली पर जिधर भी हम दृष्टि डालते हैं उधर ही यह प्रतीत होता है कि एक दिव्य संगीत से ऐसी दिशाएँ झंकृत हो रही हैं, हर तरफ स्वर लहरी गूँज रही है। ऋषीकेश का पाञ्चजन्य, शंकर का डमरू, भगवान कृष्ण की मधुर मुरली, सरस्वती की वीणा का सत्य, शिव और सुन्दर संगीत निनादित हो रहा है और उसकी स्वर लहरी पर विमुग्ध होकर विश्व की जड़ चैतन्य सत्ता का प्रत्येक परमाणु नृत्य कर रहा है। प्रकृति और पुरुष की रासलीला का यह नृत्य वाद्य कितना सुन्दर कितना मोहक और कितना मादक है ?

निस्संदेह विश्व संगीतमय है। संगीत ही इसकी प्रगति, प्रेरणा और प्राणशक्ति है। यह तत्व इतना महत्वपूर्ण और शक्तिसम्पन्न है कि इसके उपयोग से हम जीवन और मृत्यु, अमृत और विष जैसे परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

मनुष्य रसप्रिय है। रस की उसे सदा प्यास रहती है क्योंकि रस पीकर ही जीवन बनता और विकसित होता है। इन रसों में संगीत सबसे प्राचीन है। एक ऐसी क्रमबद्ध स्वर लहरी को संगीत कहते हैं जो शरीर के परमाणुओं में मुग्धता और मादकतापूर्ण तरंगों का संचार करें। यह गायन और वाद्य दोनों प्रकार से होता है। जैसी ध्वनिजन्य मादकता अमुक बाजों को बजाने से उत्पन्न होती है वैसे ही गायन कला के साथ गाये हुए गीतों से भी होती है। कंठ में भी वाद्य यन्त्र हैं। जैसे स, रे, ग, म, प, ध, नि, स्वर बाजे में होते हैं वैसे ही कंठ में भी हैं। बाजे की सहायता से और बिना बाजे के केवल कंठ स्वर से, या दोनों प्रकार से संगीत का रस उत्पन्न होता है। इस रस को कवि, नर्तक, गायक, वादक, विभिन्न रीतियों से उत्पन्न करते और मानव प्राणी की एक शाश्वत पिपासा को शान्त करते हैं।

जंगली और असभ्य मनुष्यों से लेकर सभ्यता की चोटी पर पहुँचे हुए लोगों तक संगीत को एक समान प्रिय समझा जाता है। जिन सघन वनों की पिछड़ी हुई जातियों में इस बीसवीं सदी तक शिक्षा, विज्ञान आदि का प्रकाश नहीं पहुँच पाया है वहाँ भी संगीत मौजूद है और आज से नहीं अतीत काल से मौजूद है। तथ्य यह है कि संगीत अन्तःकरण की एक स्फुरणा है जो स्वयमेव उत्पन्न होती है, उसे बहुत हद तक अपने आप सीख लिया जाता है। प्रकृति ने बहुत समझ-सोचकर संगीत उत्पन्न करने और उसमें रस लेने की क्षमता मनुष्य को प्रदान की है। इस क्षमता के द्वारा प्राणी की शारीरिक और मानसिक विकृतियाँ दूर होती हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसका बाह्य एवं आभ्यन्तरिक उन्नति का मार्ग प्राप्त होता है।

वैज्ञानिक शोधों ने यह सिद्ध किया है कि संगीत एक ऐसा अदृश्य भोजन है जो अपने आश्चर्यजनक तत्वों से सुनने वालों को शारीरिक और मानसिक चेतना से भर देता है। यह तत्व और इनके लाभ ऐसे अद्भुत हैं जिनके चमत्कार देखकर आश्चर्य से दंग रह जाना पड़ता है। हालैण्ड में संगीत सुनाकर गायों से अधिक दूध निकालने की एक नई प्रणाली निकली है। गायें दुहने के समय पर बहुत ही मधुर बाजे सरकार द्वारा ब्राडकास्ट किये जाते हैं । ग्वाले लोग अपने रेडियो सैट दुहने के स्थान पर रख देते हैं। संगीत को गायें बड़ी मुग्ध होकर सुनती हैं। इससे उनके स्नायु संस्थान पर ऐसा प्रभाव पड़ता है जिससे पन्द्रह प्रतिशत से लेकर बीस प्रतिशत तक दूध अधिक देती हैं। अन्य अनेक पशु-पक्षियों से अधिक काम लेने और उनकी शक्तियाँ बढ़ाने के लिए नाना प्रकार के वैज्ञानिक प्रयोग हो रहे हैं उनके आश्चर्यजनक परिणणों को देखकर विचारक लोग यह सोच रहे हैं कि इस अद्भुत शक्ति को मनुष्य की विभिन्न प्रकार की उन्नतियों के लिए किस-किस प्रकार प्रयोग किया जाय। आश्चर्य नहीं कि कुछ ही समय में यह महाशक्ति संसार में बिजली की भाँति महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर ले। आरम्भ में जब बिजली का आविष्कार हुआ था तो उसकी पकड़ लेने और झटका देकर फेंक देने की दो ही प्रकृतियाँ मालूम हुई थीं। पर अब तो उस बिजली के द्वारा नाना प्रकार के अद्भुत कार्य होने लगे हैं। संभव है भविष्य में संगीत भी दुनियाँ की ऐसी ही शक्ति साबित हो जैसी—बिजली ।

शब्द की सामर्थ्य असीम है। बम विस्फोट के धमाके से बड़ी-बड़ी बिल्डिगें, कोठियाँ आदि फट जाती हैं, धमाके की आवाज से कानों के पर्दे फट जाते हैं। पक्के मकान में जोर से बोलने पर भी सारा मकान झनझनाने लगता है, काँसे की थाली के पास जोर से शब्द किया जाय तो थाली झंकारने लगती है, शंख की ध्वनि से बैक्टीरिया कीड़े मर जाते हैं। जीवित प्राणियों पर भी ध्वनि का ऐसा ही प्रभाव होता है। बहेलिये लोग बीन बजाकर हिरन को ऐसा मस्त कर लेते हैं कि वह भागना भूल जाता है फिर उसे पकड़कर वे मार डालते हैं। सर्प की बांबी पर सपेरे लोग बीन बजाते हैं तो वह संगीत के लोभ को संवरण न करके मुग्ध होता हुआ बांबी से बाहर निकलता है और पकड़ा जाता है। युद्ध के बाजे कायरों में भी जोश भर देते हैं। खुशी और उत्सवों के अवसर पर बाजे इसलिए बजाये जाते हैं ताकि मनोमुग्धकारी भावनाएँ और अधिक बढ़ जावें, खुशी का और अधिक मात्रा में अनुभव किया जा सके।

हमारे तत्वदर्शी ऋषि, महर्षि, संगीत के लाभों से भली प्रकार परिचित थे। उन्होंने सामवेद को गाया और जाना कि गान विद्या भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में निस्सन्देह सरसता उत्पन्न करने वाली है। वेद मन्त्रों को घास काटने की तरह नहीं पढ़ा जाता वरन् एक-एक शब्द को सस्वर उच्चारण करने का नियम है। मन्त्रों के अर्थों में जैसी महानता है वैसी ही महत्ता उनके सस्वर उच्चारण में है। इस उच्चारण से एक ऐसी स्वर लहरी का आविर्भाव होता है जो अनेक दृष्टियों से हमारे लिये लाभदायक है। इस स्वर की उपेक्षा करने से गलत रीति से उच्चारण करने पर अनिष्ट भी हो सकता है। कथा है कि त्वष्टा-ऋषी से मंत्रोच्चार में एक स्वर की गलती हुई थी उसका फल बड़ा विपरीत हुआ। त्वष्टा इन्द्र को मारने वाला पुत्र पैदा करना चाहते थे किन्तु स्वर संबंधी उच्चारण की गलती से इन्द्र जिसे मार डाले ऐसा वृत्र नाम का महाअसुर पैदा हुआ। इन सब बातों से प्रतीत होता है कि स्वर लहरियों की शक्तियाँ असाधारण हैं और उनके रहस्य को जानकर भारतीय ऋषि मंत्र शक्ति से बड़े-बड़े अर्थों का संपादन करते थे।

सर्प के काटे हुओं को कांसे की थाली बजाकर अच्छा किया जाता है। कंठ माला, विषबेल सरीखे जहरीले फोड़े भी संगीत की सहायता से अच्छे होते हैं। भूतोन्माद सरीखे मस्तिष्क संबंधी रोगों का संगीत द्वारा इलाज किया जाता है। स्नायविक बीमारियों में डाक्टर लोग संगीत सुनना बहुत लाभदायक बताते हैं। मैस्मरेजम विद्या के आविष्कार डाक्टर मैस्पर अपनी विधि के अनुसार जब रोगियों की चिकित्सा करते थे तो वे आरंभ में बड़े मधुर संगीत का वादन कराते थे जिससे पीड़ितों का स्नायु समूह कोमल हो जाय और उन पर प्रयोग करने में सुभीता रहे। ध्वनियुक्त सरस स्वर लहरी के आघात-प्रतिघातों से रक्त के श्वेत और भूरे जीवन कणों में एक नवीन चेतना आती है, एक नवीन स्फुरण होता है जिससे वे अपनी गिरी हुई अवस्था से उठने के लिए एक बार पुनः संघर्ष आरंभ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते हैं । इस प्रयत्न में अनेक बार पुनः आश्चर्यजनक सफलता मिलती है। बड़े-बड़े कठिन रोग अच्छे हो जाते हैं एवं गिरे हुए स्वास्थ्य सुधर जाते हैं।

सामूहिक संगीत का महत्व और भी अधिक है। एक साथ मिलकर जब कई व्यक्ति साथ-साथ गाते हैं तो उन सब लोगों का स्वर प्रवाह एवं आन्तरिक उल्लास, मिलकर एक ऐसी तरंग शृंखला उत्पन्न करता है जो उस वातावरण में मिलकर सबको उल्लसित कर देते हैं। जैसे थोड़ी-थोड़ी लकड़ी बहुत लोग इकट्ठी करके होली जमा करते हैं और फिर उसे जलाकर सब लोग एक बड़ी भारी अग्नि ज्वाला जलने का तमाशा देखते हैं और एक बड़े पैमाने पर गर्मी प्राप्त करते हैं। अगर सब लोगों ने पृथक्-पृथक् अपनी थोड़ी-थोड़ी लकड़ियों को जलाया होता तो उससे हर एक को जरा सी आग की लपट मिलती किन्तु सामूहिक प्रयत्न से हर एक को अपने निजी श्रम की अपेक्षा कई गुना लाभ उठाने का अर सर मिलता है। इसी प्रकार सामूहिक संगीत के द्वारा साथ-साथ गाने बजाने वालों को अपने प्रयत्न की अपेक्षा कई गुना अधिक लाभ मिल जाता है। जुलूसों में सामूहिक रूप से गीत गाये जाते हैं। झण्डाभिवादन, परेड, प्रार्थना, मंगलाचरण आदि अवसरों पर भी सामूहिक गान होते हैं, इसका फल सबको कई गुना प्राप्त होता है।

भगवन्नाम संकीर्तन करने में बड़ा आनन्द आता है। यहाँ तक कि लोग आत्म-विभोर हो जाते हैं, नृत्य आदि करने लगते हैं। यह सामूहिक स्वर लहरी का प्रवाह है। आदेशपूर्ण एवं उत्तेजनात्मक ढंग से विशिष्ट भावनाओं के साथ एक छोटी ललित शब्दों वाली पदावली को बार-बार दुहराना संकीर्तन कहलाता है इस प्रक्रिया के द्वारा नाड़ी संस्थान में एक लहर उठने लगती है। गाना गाने वालों और सुनने वालों के सिर तान के साथ साथ हिलने लगते हैं । सर्प भी तान से तरंगित होकर फन को लहराने लगता है। संकीर्तन की प्रक्रिया से नाड़ी संस्थान में लहरें उठती हैं और उससे प्रभावित होकर मन भी लहराने लगता है। इस प्रकार की तरंगावली शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। उससे कई लाभ होते हुए देखे भी गये हैं।

दूसरों का संगीत सुनते रहने की अपेक्षा यह अधिक लाभदायक है कि स्वयं भी गान वाद्य में कुछ लाभ लिया जाय। गाने से फेफड़े और स्वरयंत्र मजबूत होते हैं । ऐसा करने से तपेदिक आदि फेफड़ों की बीमारी होने का डर नहीं रहता। स्त्रियों के लिये भी गायन वाद्य वैसा ही उपयोगी है जैसा कि पुरुषों के लिये । मृगी, बन्ध्यापन, मूर्छा, सिरदर्द प्रभृति बीमारियों से संगीत प्रिय महिलाएँ बची रहती हैं। अर्ग्ध दिन, तीज त्यौहार, शादी व्यौहार के बहाने कुछ न कुछ गाते बजाते रहना स्त्रियों के लिए हिन्दू सभ्यता के अन्तर्गत एक बहुत ही अच्छी प्रथा है।

यों तो गाना रोना सबको आता है पर कलापूर्ण ढंग से गाना, बजाना सीखना दूसरी बात है। इसे ही संगीत कहते हैं। यह संगीत सब किसी के लिये लाभदायक है। कुत्सित, अश्लील और विषय विकार भरे गीतों को सर्वथा त्याग करके सुरुचिपूर्ण ऊँचा उठाने वाले गीतों को गाना और सम्भव हो तो कोई बाजा बजाना सीखने का हर मनुष्य को प्रयत्न करना चाहिये। क्योंकि इससे सरसता एवं स्वस्थता की वृद्धि होती है जोकि मनुष्य जीवन के लिये आवश्यक है।

संगीत का प्रयोग फेफड़े गले, कंठ, तालू, जबड़े और आभाशय का अच्छा व्यायाम है। रक्त संचार, क्षयी आदि का भय नहीं रहता। रंज, उदासी, चिन्ता आदि के भयानक कुप्रभावों से सहज ही बचाव हो जाता है। इस प्रकार के एक नहीं संगीत से अनेकों लाभ हैं। निस्सन्देह संगीत विश्व का प्राण है। इस प्राण शक्ति को ग्रहण करने का हमें यथाशक्ति प्रयत्न करते रहना चाहिये।

जीवन-शक्ति का अजस्र स्रोत—संगीत

संगीत को अब तक उस कला के रूप में देखा जा रहा है, जिससे मनोरंजन होता है और मन को स्फूर्ति मिलती है पर अब विज्ञान धीरे-धीरे इस विश्वास पर उतर रहा है कि संगीत एक बड़ा महत्वपूर्ण शक्ति-केन्द्र है। यदि उस शक्ति का यथेष्ट अनुसंधान एवं उपयोग किया जा सका तो अनेक आश्चर्यजनक रहस्य सामने आयेंगे और उनका मानव-जाति के कल्याण में भारी उपयोग किया जा सकेगा।

आज का संगीत एक प्रकार का सम्मोहन है जिससे मनुष्य असंयम की ओर दिग्भ्रान्त हो रहा है, परन्तु प्राचीनकाल में हमारे पुरखों ने तत्वान्वेषण के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आधार पर उसकी प्रबल शक्ति और सामर्थ्य को परखने के साथ यह भी जाना था कि संगीत शक्ति के दुरुपयोग से मानव-जाति का अहित भी हो सकता है, इसलिये उसे भी धर्म का एक अंग माना और ऐसे प्रतिबन्ध लगाये जिससे स्वर साधना का निष्कलंक रूप बना रहे और उससे मानव-जाति की भलाई होती रहे।

बीच में एक समय ऐसा आया जब शास्त्रीय संगीत में विदेशी जातियों का भी हस्तक्षेप हुआ और उन्होंने धीरे-धीरे उसे आज की स्थिति में घसीटना प्रारम्भ कर दिया। आज चारित्रिक दुर्बलता का एक कारण संगीत की सम्मोहन शक्ति भी है। मीठे स्वर से किसी भी भावुक व्यक्ति को प्रभावित कर उसे अधोगामी बनाने का कुचक्र इन दिनों बहुतायत से फैलता जा रहा है।

अन्यथा संगीत एक महान् साधना है और ब्रह्म प्राप्ति उसकी सिद्धि। नादबिन्दूपनिषद् के ४२ से ४५ मन्त्रों में बताया गया है कि भ्रमर जिस प्रकार फूलों का रस ग्रहण करता हुआ, फूलों की गन्ध की अपेक्षा नहीं करता, उसी तरह नाद में रुचि लेने वाला चित्त विषय-वासना में दुर्गन्ध की इच्छा नहीं करता। सर्प नाद को सुनकर मस्त हो जाता है, उसी प्रकार नाद में आसक्त हुआ चित्त सभी तरह की चपलतायें भूल जाता है। संसार की चपलताओं से वियुक्त मन की एकाग्रता बढ़ती है और विषय-वासनाओं से अरुचि होने लगती है। यदि मन को हिरन और तरंग की संज्ञा दें तो यह नाद उस हिरन को बाँधने और पकड़ने वाला जाला और तरंग को साधने वाला तट ही माना जायेगा।

इसी उपनिषद् में ब्रह्म की अनुभूति-शक्तियों में नाद को भी शक्ति माना है और यह बताया है कि उसका अभ्यास करते हुये साधक एक ऐसे मधुर स्वर-संगीत में निबद्ध हो जाता है, जिससे सारा संसार ही उसे एक प्राण और परमात्मा का प्रतीक अनुभव होने लगता है।

वैज्ञानिक खोजों से यह पता चला है कि शून्य सृष्टि की निराकार स्थिति जहाँ है, वहाँ से एक प्रकार का शब्द उत्पन्न होता है, जैसे कि काँसे की थाली में चोट करें तो एक प्रकार का कम्पन पैदा होता है, वह देर तक झनझनाती रहती है। ऐसी झंकृतियाँ प्रकृति के अदृश्य अन्तराल से पानी में लहरों की भाँति निरन्तर उठती रहती हैं, इन झंकृतियों के आघात से इलेक्ट्रान परमाणु (विद्युत-घटकों) में गति उत्पन्न होती है और वे अपनी धुरी पर उसी प्रकार घूमने लगते हैं, जिस तरह सृष्टि के अन्यान्य बड़े-बड़े ग्रह, उपग्रह, पृथ्वी, नक्षत्र आदि अपनी धुरी पर घूमते हैं।

इलेक्ट्रान परमाणुओं में एक विशेष गति उत्पन्न होने से सृष्टि का काम उसी तरह चलने लगती है, जिस तरह चाभी भर देने से घड़ी चलने लगती है। सृष्टि का संचालन इन अदृश्य कम्पनों से ही चल रहा है, उनमें इतनी मधुरता. दिव्यता शांति है, जिसे अमृत कहा जा सकता है। स्वर जितना सूक्ष्म और अन्तराल से प्रस्फुटित हुआ होगा, वह विश्व-नाद को उतना ही स्पर्श कर रहा होगा, अर्थात् उससे उसी अंश में मधुरता, आत्म-सुख, दिव्यता, पुलक और शांति की अनुभूति हो रही होगी।

भौतिक सृष्टि का सारा खेल संगीत की शक्तिशाली झंकृतियों के आधार पर चल रहा है। चैतन्य सृष्टि की साकारता भी संगीत के आधार पर है। मस्तिष्क के विद्युत कोषों से प्रति सेकिंड लगभग ३१ विचार-तरंगें निकलती हैं। सिनेमा के पर्दे पर एक सेकिंड में सोलह चित्र सामने से गुजर जाते हैं। इतनी तेजी से चित्र घूमने के कारण दृष्टिभ्रम होता है और ऐसा लगता है कि चित्र न होकर वह कोई जीवित प्राणी काम कर रहा है। उसी प्रकार विद्युत कोषों में ३१ कम्पन एक सेकिंड में निकलते हैं, तो उस मूल प्रेरक प्रक्रिया (नाद-ब्रह्म) का आभास नहीं हो पाता वरन् वह क्रियाशीलता एक निरन्तर चलने वाले विचार के रूप में प्रकट हो जाती है। मनुष्य कुछ न कुछ सोचता ही रहता है, यह विचार तरंगें ईश्वरीय कम्पन की मनोजन्य झंकृति ही होती है, वह जितनी स्थूल होगी, विचार भी उतने ही स्थूल होंगे, किन्तु यदि मन को एकाग्र कर लिया जाय और अधिक सूक्ष्म कम्पनों तक पहुँचने का प्रयास किया जाये तो बड़े निर्मल, दिव्य आनन्द और शांति एवं संतोषदायक विचारों का सान्निध्य मिलने लगता है। संगीत साधना का यह एक बड़ा भारी आध्यात्मिक लाभ है।

विचार की सूक्ष्मतम स्थिति में पहुँचने पर शब्द-विद्या के पण्डितों का कहना है कि—प्राण वायु जब सहस्रार कमल (मस्तिष्क स्थिति) से टकराती है तो ॐ की झंकृति से मिलता-जुलता शब्द उत्पन्न होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यही अजपा जप है, उसे शास्त्रीय भाषा में 'सोऽह' ध्वनि कहा गया है। ब्रह्माण्ड स्थित सहस्रार से जाकर प्राण वायु न टकराये और यह सोऽहम्' की ध्वनि न हो तो मस्तिष्क की चेतना का—स्नायविक विद्युत-शक्ति का अन्त हो जायेगा और क्षण भर के अन्दर मृत्यु हो जायेगी।

योगी लोग बताते हैं कि शरीर का सूक्ष्म ढाँचा बिलकुल सितार जैसा है। मेरुदण्ड में इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना के तार लगे हैं, यह तार मूलाधार स्थिति कुण्डलिनी से बँध गये हैं। आज्ञा चक्र से लेकर मूलाधार तक के ६ चक्र इसके वाद्य स्थान हैं। इनमें लं, बं, रं, षं, हं, और ॐ की ध्वनियाँ प्रतिध्वनित होती रहती हैं। अब स्थूल जगत् में सा, रे, ग, म, प, ध, नी यह स्वर जब वाद्य यन्त्र से ध्वनियाँ निकालते हैं और शरीरस्थ ध्वनियों से टकराते हैं तो इस संघर्षण और सम्मिलन से मनुष्य का अन्तर्जगत् संगीतमय हो जाता है। इन तरंगों में असाधारण शक्ति भरी पड़ी है।

इन तरंगों के प्रवाह से शारीरिक और मानसिक जगत् के सूक्ष्म प्राण गतिशील होते हैं, तदनुसार विभिन्न प्रकार की योग्यता, रुचि, इच्छा, चेष्टा, निष्ठा, भावना, कल्पना, उत्कण्ठा, श्रद्धा आदि का आविर्भाव होता है। इनके आधार पर गुण-कर्म और स्वभाव का सृजन होता है और उसी प्रकार जीवन की गतिविधियों से सुख-संतोष भी मिलता रहता है। तात्पर्य यह है कि शास्त्रीय संगीत की रचना एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया पर आधारित है कि उसका लाभ मिले बिना रहता नहीं। इसी कारण संगीत को पिछले युग में धार्मिक और सार्वजनिक समारोहों का अविच्छिन्न अंग माना जाता था। आज भी विवाह-शादियों और मंगल-पर्वों पर उसकी व्यवस्था करते और उसके लाभ प्राप्त करते हैं। हम देखते नहीं पर अदृश्य रूप से ऐसे अवसरों पर प्रस्फुटित स्वर-संगीत से लोगों को आल्हाद, शांति और प्रसन्नता मिलती है, लोग अनुशासन में बने रहते हैं।

मिलिटरी की कुछ विशेष परेडों में भी वाद्य यन्त्र प्रयुक्त होते हैं। उससे नौजवानों को कदम तोलने और मिलाकर चलने में बड़ी सहायता मिलती है। कारण उस समय सबके अन्तर्जगत् एक-सी विचार-तरंगों में आविर्भूत हो उठते हैं। ऐसे लाभों को देखकर विवाह-शादियों, व्रत, त्यौहारों, मन्दिरों में पूजन आदि के समय कथा-कीर्तन की व्यवस्था की गई थी। अब भी उनका लाभ उठाया जाना चाहिये। जहाँ यह व्यवस्था प्रतिदिन हो सके, वहाँ दैनिक व्यवस्था रहे तो उससे स्थानीय लोगों की अदृश्य रूप से आत्मिक और आध्यात्मिक सेवा की जा सकती है। संयोजनकर्ताओं को तो दुहरा लाभ मिलता ही है।

शास्त्रीय संगीत की इस विज्ञानभूत प्रक्रिया को अब पाश्चात्य देश भी अच्छी तरह समझने लगे हैं। अमेरिका, फ्रान्स, ब्रिटेन और रूस आदि सुविकसित देशों में वर्तमान पीढ़ी के युवक तेजी से भारतीय संगीत सीख रहे हैं और उसके अन्य कारणों में इसी संगीत से उत्पन्न होने वाली शारीरिक एवं मानसिक प्रतिक्रियाओं का प्रभाव मुख्य है। उससे लोगों को बड़ी शांति मिली है, फलस्वरूप भारतीय संगीत का अधिक लाभ प्राप्त करने के लिये, वे लोग भारतीय भाषायें सीखना चाहते हैं।

अमेरिका के प्रसिद्ध मानस चिकित्सक डा. जार्ज स्टीवेन्सन और डा. विन्सेन्ट पील ने स्नायविक तनाव दूर करने के लिये जो चार उपाय बताये हैं, उनमें चौथा इस प्रकार है—"इन तीन उपायों (१. क्रोध आये तो शारीरिक श्रम में लग जाना, २. विपरीत परिणाम या असफलता के समय स्वाध्याय, ३. व्यायाम की सार्थकता संगीत से सम्पन्न होती है, इसलिये संगीत साधना को हम सभी मानसिक तनावों के निराकरण की अचूक औषधि भी कहते हैं। संगीत के अभ्यास और श्रवणकाल दोनों में मन को विश्रान्ति ही नहीं, आत्म-प्रसाद भी प्राप्त होता है।

प्राचीनकाल के कुछ कथानक ऐसे मिलते हैं जिनमें संगीत की अद्भुत शक्ति का पता चलता है। राग, मल्हार गाने से वर्षा होने लगती है। दीपक राग से बुझे हुये दीपक जल उठते हैं। संगीत सम्राट तानसेन के सधे स्वरों से आकर्षित होकर वनमृग प्राणों का भय त्यागकर भागे चले आते थे। वेणुनाद सुनकर सर्प लहराने लगता है। वीररस शंकरा युद्धस्थ जवानों की वीर भावनायें उत्तेजित करने के लिये प्रयुक्त होता था। योद्धा-गण मारू संगीत सुनकर मृत्यु का भय भूल जाते थे। आनन्द के अवसर पर शृंगार और प्रातःकाल भगवान् के चरणों में भक्ति की प्रगाढ़ता के लिये भैरवी गाया जाता है। क्षयरोगों के निवारण के लिये श्रीराग का प्राचीनकाल से प्रयोग किया जाता रहा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यद्यपि यह विधायें अब लुप्त प्रायः हैं, तो भी अभी इस दिशा में सब कुछ नहीं खो गया। उत्तर प्रदेश के पूर्वी इलाकों में एक विशेष प्रकार के वाद्य से सर्प का विष दूर किया जाता है। कुछ प्रान्तों में थाली बजाकर विशेष रोगों का उपचार करने की प्रथा अभी भी है। पाँच तत्वों से बने शरीर में बात, पित्त, कफ को स्वरों और रसों के घटाने बढ़ाने से आशाजनक स्वास्थ्य लाभ मिलता है। बसन्त ऋतु में बसन्त-राग खून में एक नई जाग्रति, उमंग तथा प्रसन्नता उत्पन्न करता है। वर्षा ऋतु में राग मल्हार से आनन्द के भाव उत्पन्न होते हैं। यह प्रभाव कई बार बड़ी तीव्रता से भी होते हैं।

प्रातःकाल राग भारती और राग भैरवी आदि से भक्ति-रस का प्रादुर्भाव होता है जिससे स्वास्थ्य और मानसिक शुद्धता की प्राप्ति होती है। संगीत सुनकर कई व्यक्तियों को वैराग्य हो जाता है। दीपक-राग गाते समय भावावेश आ जाने के कारण अथवा गतिभंग के कारण तानसेन का सारा शरीर काला पड़ गया था। बाद में कुछ महिलाओं के संगीत से ही वह रोग ठीक हुआ और उसे पहले जैसी त्वचा मिल सकी थी।

युवकों के चरित्र निर्माण में संगीत को एक अत्यन्त प्रभावशाली साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। अरस्तू कहा करते थे—"स्वर और लय के योग से कैसी भी भावनायें उत्पन्न की जा सकती हैं।" महाराष्ट्र राज्य के भूतपूर्व राज्यपाल श्री प्रकाशजी ने एक बार कहा—संगीत की शिक्षा स्कूलों में अनिवार्य कर दी जानी चाहिये। इससे युवक विद्यार्थी में मानसिक एकाग्रता और जागरूकता का विकास स्वभावतः होगा। यह दो गुण स्वयं उसके व्यक्तित्व में अन्य गुणों की वृद्धि करने में सहायक बन सकते हैं।

हमारे प्रत्येक देवता के साथ संगीत का अविच्छिन्न सम्बन्ध होना यह बताता है कि विश्व की सृजन प्रक्रिया में संगीत का चमत्कारिक प्रभाव है। हृषीकेश का पाञ्चजन्य, शंकर का डमरू, भगवान कृष्ण की मुरली, भगवती वीणापाणी सरस्वती की वीणा का रहस्य एक दृष्टि से यह भी है कि सृष्टि का प्रत्येक अणु संगीत शक्ति से गतिशील हो सकता है।

विश्व संगीतमय है, संगीत ही इसकी प्रेरणा और प्राण शक्ति है। यह तत्व इतना महत्वपूर्ण और शक्ति-सम्पन्न है कि इसके उपयोग से हम मृत्यून्मुख जीवन को अमरत्व की ओर, निराश जीवन को आशा और संतोष तथा व्यथित और परिक्लान्त जीवन को शाश्वत शांति और आनन्द की ओर अग्रसर कर सकते हैं।

संगीत अर्थात् नादब्रह्म की शक्ति एवं उत्पत्ति

मंत्र को शब्द ब्रह्म एवं संगीत को नाद ब्रह्म कहा गया है। अतः स्पष्ट है कि संगीत की सृष्टि नाद से होती है। जिस प्रकार मिट्टी या पत्थर से प्रतिमा, रंग-रोगन से चित्र और ईंट से भवन तैयार होते हैं, उसी प्रकार संगीत का उपादन नाद है। इसी से उसकी रचना होती है। अध्यात्म क्षेत्र में इस नाद को ब्रह्म का स्वरूप माना गया है और इसे "शब्द-ब्रह्म—नाद-ब्रह्म" कहकर अभिहित किया गया है। यह कोई अलंकारिक अभिव्यक्ति नहीं, वरन् इसके पीछे सच्चाई छिपी है। मस्तिष्क का बुद्धि-विपर्यय और चिन्तन का विकृत विचार-प्रवाह का निराकरण करने में यह शत-प्रतिशत सफल सिद्ध होता है। जब अकेले नाद में इतनी सामर्थ्य है, तो नादों के समुच्चय-संगीत में कितनी शक्ति होगी, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। नाद की यह शक्ति सभी जीवधारियों में समान रूप से सक्रिय देखी जा सकती है।

इस तथ्य को और अच्छी तरह स्पष्ट करते हुए डार्विन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "डिसेण्ट ऑफ मैन" में अनेक वैज्ञानिक साक्षियों के आधार पर यह बताया है कि पशु-पक्षियों की ध्वनियों में मात्र एक नाद नहीं होता, वरन् अनेक नादों का उसमें सम्मिश्रण होता है, फलतः उनकी बोलियाँ संगीतमय होती हैं। वे आगे लिखते हैं कि उनकी ध्वनियों में भिन्न-भिन्न स्वरों के अन्तराल पाये जाते हैं, जिनका उपयोग मनुष्य समाज अपनी संगीत कला में शुरू से ही करता आ रहा है। उनके अनुसार कुत्ते पालतू होने के बाद पाँच स्पष्ट स्वरों में भौंकते हैं। घरेलू मुर्गे बारह स्फुट स्वरों में बोलते हैं। रेवरेण्ड लौकवुड ने अमेरिका में पाये जाने वाले एक विशेष जाति के चूहे का वर्णन किया है। उन्होंने बताया है कि यह चूहा अपने गले से अर्ध स्वर तक का सच्चा अन्तराल निकालता है। यह कभी-कभी अपने स्वर को ठीक-ठीक एक अष्टक नीचे उतारता है। उन्होंने इस चूहे के प्राकृतिक संगीत की स्वर लिपि भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तैयार की है। बहुतेरे पक्षियों में जो गायक जाति के समझे जाते हैं, गले के स्वरों को नियमानुसार ऊपर-नीचे करके संगीतमय धुन निकालने की विलक्षण क्षमता होती है।

वैज्ञानिकों का यह मत है कि पक्षियों में संगीत का उपयोग विशेष रूप से निराशा, भय, क्रोध, विजय या केवल आनन्द के भाव प्रकट करने में होता है। मनुष्यों में नर का कण्ठ रज्जु स्त्रियों के कण्ठ-रज्जु की अपेक्षा लम्बाई में तिगुना होता है। ऐसा समझा जाता है कि विकास के आदिम काल में प्रेम, क्रोध, ईर्ष्या आदि के भिन्न-भिन्न स्वरों के कारण कण्ठ के बार-बार व्यवहार से नर का कण्ठ-रज्जु लम्बा एवं स्वर कड़ा होता चला गया है। भिन्न-भिन्न भावों को प्रकट करने में पशु-पक्षी भी भिन्न-भिन्न स्वरों के संयुक्त रूपों का प्रयोग करते हैं और वहीं से संगीत का आरंभ होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जीव-जन्तुओं का संगीतमय भाव-प्रदर्शन प्रकृति की देन है।

सर जेम्स जीन्स ने अपनी पुस्तक "साइन्स एण्ड म्यूजिक" में लिखा है कि संगीत का विकास पशु-पक्षियों से लेकर मनुष्य तक लगातार होता चला आया है और इसलिए मानव संगीत का विकास भी मानव जाति के विकास के साथ ही साथ हुआ है। आदिम काल में, पशु-पक्षियों की तरह ही मानव जाति में भी संगीत की प्रेरणा प्रेम, ईर्ष्या, द्वन्द्व, विजय आदि भावों के प्रदर्शन के लिए होती थी। मैक्समूलर आदि विद्वानों, नृतत्वविदों की यह धारणा है कि भाषा की उत्पत्ति के पहले संगीत की उत्पत्ति हुई, क्योंकि विकास की दृष्टि से यह स्पष्ट है कि अन्य जीवों की भाँति मनुष्य को पहले शुद्ध और व्यापक भावों को व्यक्त करने की प्रेरणा होती है जो केवल स्वर संघातों से किया जाता है। पहले मनुष्य एक विशेष स्वर संघात से प्रेम, दूसरे स्वर संघात से ईर्ष्या और तीसरे स्वर संघात से विजय की भावना की घोषणा करता था। आगे चलकर जब मनुष्य का मस्तिष्क विकसित हुआ तो उसके एक-एक व्यापक भाव में विचारों की अनेकानेक धाराएँ खुल पड़ीं। इसी प्रकार प्रेम, ईर्ष्या, द्वन्द्व, विजय आदि शुद्ध व्यापक भाव जटिल होने लगे। यहीं से भाषा की उत्पत्ति हुई तथा भावमय स्वर संघात में स्वर के उतार-चढ़ाव में, व्यंजनयुक्त शब्दों और वाक्यों को गूँथकर किसी व्यापक भाव की, अनेक प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति होने लगी।

संगीत का अर्थ केवल प्रेम, शृंगार या प्रसन्नता के भावों से ही नहीं है। यह मनुष्य के सारे भाव, सारी कामनाओं की अभिव्यक्ति का साधन है। अब भी यह देखा जाता है कि शोक या दुःख के समय विशेष रूप से स्त्रियों का विलाप संगीत के रूप में ही होता है। अफ्रीकावासी हब्शी जब उत्तेजित होते हैं, तो उनके मुँह से वाक्य संगीत में ही निकलते हैं। दूसरा हब्शी भी उसका जवाब संगीत में ही देता है। धीरे-धीरे सारी मण्डली एक स्वर से गाने-बजाने लगती है। आरम्भ में मानव जाति के सारे भावों का संकेत संगीत के द्वारा ही किया जाता था। आगे चलकर जब भाषा प्रस्फुटित हुई, तो संगीत की उपयोगिता कम हो गई। फिर भी जहाँ समष्टि रूप से आनन्द या प्रसन्नता के भावों को अभिव्यक्त करना या सारे समुदाय को युद्ध के लिए उत्तेजित करना होता था वहाँ संगीत को ही प्रमुखता मिलती थी। इसी से आदिम जातियों में समुदाय संगीत और आगे चलकर सभ्य मानव समाज में ग्राम्य संगीत लोक संगीत का प्रादुर्भाव हुआ।

आज भी यह देखा जाता है कि जब किसी विचार को भावों से अनुप्राणित करना होता है या श्रोताओं के हृदय में विचारों के द्वारा किसी भाव की उत्तेजना पैदा करने की आवश्यकता होती है, तो वक्ता एक स्वर के बदले स्वरों के उतार-चढ़ाव या अन्तराल से काम लेता है, अर्थात् सार्थक वाक्यों में संगीत का पुट डालता है। ऐसा न करने वाला वक्ता सफल नहीं होता। ऐसे लोग भावों को एक ही धारा के द्वारा अभिव्यक्त नहीं कर पाते। साधारण बोलचाल में भी वाक्यों का उच्चारण समरसता की स्थिति में या एक स्वर में नहीं होता।

इस प्रकार यह देखा जाता है कि वार्तालाप, व्याख्या प्रक्रिया में भी संगीत के मूलभूत नियमों का ही पालन करना पड़ता है, तभी वह प्रवचन या वार्तालाप प्रभावी सिद्ध होता है और सामने वाले पर अपनी छाप छोड़ पाता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि भावों के उतार चढ़ाव के लिए स्वरों का उतार-चढ़ाव आवश्यक है। यदि कोई वक्ता एक ही प्रकार के स्वर में बोलता चला जाय तो वह भिन्न-भिन्न भावों को अभिव्यक्त करने में सर्वथा विफल रहेगा और तब उसकी वार्ता प्रायः निष्फल ही साबित होगी।

इस प्रकार संगीत स्वरों के उतार-चढ़ाव का ही दूसरा नाम है। जिस संगीत में स्वरों अथवा नादों का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आरोह-अवरोह नहीं, वह संगीत नहीं हो सकता अथवा यों कहा जाय कि वह संगीत निष्प्रभावी साबित होता है। शास्त्रों में जिस संगीत की विरुदावली गायी गई है, वह प्राकृतिक संगीत ही है। प्राकृतिक संगीत अर्थात् पशु-पक्षियों की आरोह-अवरोहयुक्त बोलियों के आधार पर विकसित संगीत। ऐसे ही संगीत के लिए शास्त्रों में नाद ब्रह्म जैसे शब्द का प्रयोग किया गया है और इसी में वह सामर्थ्य भी है, जो चिकित्सीय प्रयोजनों के लिए काम आ सके। पर दुर्भाग्यवश आज संगीत अपने उस शुद्ध और प्राकृतिक स्वरूप को खोता चला जा रहा है। अब उसकी जगह रॉक और पॉप जैसी पश्चिमी धुनें लेती जा रही हैं, जो न सिर्फ अप्राकृतिक हैं, वरन् आरोग्य लाभ देने की क्षमता से वंचित भी। इनके प्रभाव से अछूता बने रहना मुश्किल सा जान पड़ता है।

संगीत तरंगों का प्रभाव जड़, चेतन पर समान रूप से पड़ता है। लय और ताल में बँधे हुए स्वर प्रवाह को संगीत कहते हैं। यह गायन के रूप में स्वर प्रवाह के साथ भी जुड़ा हुआ हो सकता है और वाद्य यंत्रों की तदनुरूप ध्वनि भी संगीत में गिनी जा सकती है। गायन और वादन दोनों का सम्मिश्रण उसकी पूर्णता निर्मित करता है। गायन के साथ गुँथी हुई भावनाएँ चेतना को प्रभावित करती हैं। अन्तरंग में उल्लास उत्पन्न करती हैं। गायक के मनोभाव श्रवणकर्ता के कानों में प्रवेश करके गहराई तक पहुँचते हैं और तदनुरूप स्रोता के अन्तराल को प्रभावित करते हैं। चेतना क्षेत्र में इस प्रकार की हलचलें गायक के साथ उन तरंग प्रवाह को अपनाने वाले को अपने साथ चलने, उड़ने के लिए बाधित करती हैं। भक्ति भावना से लेकर जोश, आवेश या कामुक आतुरता को इसी आधार पर उभारा जा सकता है। भक्ति भाव की समर्पित आत्म-विभोरता भी उस आधार पर उत्पन्न की जा सकती है। उत्थान को पतन में और पतन को उत्थान में बदलना भी इस माध्यम के आधार पर सम्भव हो सकता है। अपराधी को संत और संत को अपराधी बनाने की क्षमता उसमें है। नदी प्रवाह में तिनके-पत्ते बहने लगते हैं। संगीत प्रवाह में तरंगित होने वालों की मनःस्थिति भी इसी प्रकार तैरने-डूबने लगती है।

इन्हीं विशेषताओं के कारण संगीत को शास्त्रकारों ने नादब्रह्म कहा है। शिव का ताण्डव नृत्य और महाप्रलय का दुर्न्ध प्रकरण साथ-साथ चलते हैं। नारद वीणा वादन के साथ-साथ भक्ति-विभोर होते हैं। संगीत कभी ब्रह्म चेतना के उच्च पद पर था, तब ईश्वर प्राणिधान में स्वरयोग का, नादयोग का समावेश होता था। पर अब तो बात ही दूसरी है। उसे कामुकता का प्रतीक प्रतिनिधि बना दिया गया है। वीर भाव उभरने और आदर्शों के प्रति समर्पित होने की चेतना उत्पन्न करने वाले न कहीं गायक दीखते हैं और उसके लिए तरसने वाले गुणी भावनाशीलों का समुदाय ही कहीं दीख पड़ता है। ऐसे ही कारणों से क्षुब्ध होकर औरंगजेब ने अपने राज्य से संगीतकारों को, गायक वादकों को उनके उपकरणों सहित देश निकाला दे दिया था। यदि वह अपनी उच्चस्तरीय गरिमा से च्युत न होता तो उसे क्यों जनसमुदाय के लिए अहितकर माना गया होता और क्यों ऐसी अवमानना की जाती ? आज भी इस वर्ग के लोगों को सम्मानितों की गणना में नहीं गिना जाता। गवैये, बजैये, नचकैये, मनोरंजनकर्ता विदूषकों की श्रेणी में ही गिने जाते हैं। यह अवमानना इसलिए हो चली है कि उसमें से उत्कृष्टता का प्राण धीरे-धीरे धीमा और तिरोहित होता चला गया। जहाँ पुरातन गरिमा को अक्षुण्ण रखा गया है वहाँ उसका अभी भी समुचित सम्मान है।

मात्र एकाकी वादन की भी अपनी महत्ता है। इस आधार पर भी सशक्त ध्वनि प्रवाह उत्पन्न होता और अपना प्रभाव प्रदर्शित करता है। युद्ध काल में आगे-आगे वीररस से भरे-पूरे गीत वादक गाते चलते थे। उससे न केवल सैनिक वरन् उस प्रयोजन में काम आने वाले घोड़े हाथी तक मस्ती में भरकर नाचने लगते थे और अपना जौहर दिखाने का प्रयत्न करते थे। दीपक राग और मेघ मल्हार की जनश्रुति सर्वविदित है। संगीत मुर्दों में प्राण फूँकता है, यह सत्य है। यह भी मिथ्या नहीं कि वह बुझों को जलाता है और समर्थों को बरस पड़ने के लिए विवश करता है। विगत चार दशाब्दियों में प्रयोगकर्ताओं ने रोग निवारण के लिए संगीत ध्वनि प्रवाहों की चमत्कारी विशेषता सिद्ध की है। शारीरिक एवं मानसिक रोगों में किन ध्वनि प्रवाहों को प्रभावी उपचार की तरह काम में लाया जा सकता है, इसकी विधा निर्धारित की गई और अपने प्रयोजन में आश्चर्यजनक परिमाण में उपयुक्त सिद्ध हुई। आगे इस संदर्भ में और भी कड़ी सम्भावनाएँ सोची जा रही हैं। समझा जा रहा है कि अन्य चिकित्सा पद्धतियों से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहीं अधिक समर्थ संगीत चिकित्सा रोगियों की असाधारण सहायता कर सकेगी।

पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं पर भी संगीत का उत्साहवर्धक प्रभाव देखा गया है। मछलियाँ और मुर्गियाँ अधिक संख्या में अधिक बड़े अण्डे देने लगीं और उनसे परिपुष्ट बच्चे प्रकट होने लगे। गायों ने अधिक दूध दिया। वे अवधि से पूर्व गर्भिणी हुईं और बच्चे देने में, दूध देने में, अन्यों की अपेक्षा अग्रणी ही रहीं। यही बात अन्य पशुओं के बारे में भी देखी गई। उनने संगीत की मस्ती में अधिक पराक्रम किया। धावकों ने दौड़ में बाजी जीती। जिन्हें संगीत के सम्पर्क में रखा गया, उनकी बुद्धिमत्ता अपेक्षाकृत अधिक विकसित हुई देखी गई।

संगीत के प्रयोगों में वनस्पतियों पर अच्छा प्रभाव पड़ते देखा गया है। घास तेजी से बढ़ी। सब्जियों में बड़े और अधिक स्वादिष्ट फल लगे। उत्पादकों को इस प्रयोग से अतिरिक्त लाभ मिला। फलदार वृक्ष भी अधिक फले। जिनसे लकड़ी ली जाती थी उनकी अभिवृद्धि से मोटाई तथा मजबूती में वादन सुनने वाले कहीं अधिक सफल रहे।

धातुएँ संगीत का प्रभाव सोखती हैं। ऐसे प्रभाव में बने आभूषण अधिक चमकते और उपकरण अधिक सुदृढ़ होते हैं। जिन इमारतों में गायन वादन होता रहता है, उनमें वह मस्ती वाला प्रभाव चिरकाल तक बना रहता है। कालान्तर में भी जो वहाँ पहुँचे और टिके उन्हें यह अनुभूति होने लगी कि यहाँ उल्लास और उत्साह का मस्ती का दौर अधिक है। उदास, निराश प्रकृति के लोगों ने भी वहाँ अपने में उमंगें उठती अनुभव कीं। ऐसे वातावरण में निराश मनों में भी आशा का संचार हुआ। आदतों में आशाजनक परिवर्तन आया।

संगीत कोलाहल को नहीं कहते। उसमें मधुरता-मृदुलता होनी चाहिए। कोलाहल तो कारखानों में भी होता रहता है। रेल के पहिये और जहाजों के डैने भी क्रमबद्ध ध्वनि करते हैं. पर उनकी कर्कशता सीमा से अधिक इस स्तर तक पहुँचती है कि कान उन्हें सहन नहीं कर पाते। इसी प्रकार विवाह बरातों में बजने वाले बाजे कई बार इतनी अधिक ध्वनि करते हैं कि रास्ता चलते लोगों को उसे सुनना भारी पड़े। शंख, घड़ियाल, ढोल, नगाड़े भी यदि विसंगत स्वर में बजें तो उनमें कर्कशता ही प्रधान होती है। ऐसा वादन लाभ के स्थान पर हानिकारक ही सिद्ध हो सकता है। अत्यधिक शोर वाले क्षेत्रों में रहने वाले जल्दी बहरे होते हैं। कई बार तो उनके मस्तिष्क को विक्षिप्तता से प्रभावित होते देखा गया है। तोप के गोलों की भयंकर आवाजों से जलाशयों में रहने वाली मझलियों का हृदय फट जाता है और वे मरकर पानी पर तैरने लगती हैं। युद्धकाल में भयंकर ध्वनि करने वाले अस्त्रों के ध्वनि कम्पन गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात कर देते हैं। उस क्षेत्र के लोगों की धड़कन बढ़ जाती है और रक्तचाप से लेकर नींद उड़ जाने, बेचैनी अनुभव होने जैसी व्यथा त्रास देने लगती है। अनेकों मनोविकार इसी कारण जन्म लेते हैं।

लाभकारी संगीत वही होता है जो मृदुल एवं मधुर हो। कर्ण-प्रिय लगे एवं आकर्षण उत्पन्न करे। निद्रा को भगाये नहीं वरन् बुलाने में सहायता करें। वादकों का कौशल इसी में है कि वे उत्साहवर्धक, आनन्ददायक स्वर लहरियाँ उत्पन्न करें। गायकों की गरिमा इसी में है कि वे अपने गीतों को पशुता से छुटकारा दिलाने वाले और देवत्व उभारने वाले तत्वों से सराबोर रखें । जो संगीत मधुरिमा उत्पन्न करे, उसे ही सराहा जाना चाहिए।

संगीत और आत्मोत्कर्ष

वेदकाल के ऋषियों से लेकर अद्यावधि भक्तजनों ने अपनी अनुभूतियाँ प्रायः छन्दबद्ध रूप में ही विनिर्मित की हैं। भक्तिकाल के प्रायः सभी साधनारत महामानव या तो कविताएँ रचते रहे हैं, या फिर छन्द-स्वरों में भगवान के गुणानुवाद गाते रहे हैं। महर्षि नारद से लेकर सूर, तुलसी, मीरा, कबीर तक की वही परम्परा क्रमबद्ध शृंखला के रूप में चली आई है।

सामूहिक संगीत के महत्व पर डाक्टरों का मत है कि जब कई व्यक्ति एक साथ गाते हैं तो सब लोगों का स्वर प्रवाह एवं आन्तरिक उल्लास मिलकर एक ऐसी तरंग शृंखला उत्पन्न करता है, जो वातावरण में मिलकर सबको उल्लसित कर देती है। यही उल्लास अन्तः की सूक्ष्म ग्रन्थियों को उत्तेजित कर रस प्रवाहित होने में सहायक भूमिका निभाता है। रसो वैसाः की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुभूति इसी कारण संकीर्तन, दिव्य संगीत में होती पायी जाती है।

गायन में स्तुति, मंगलाचरण, भगवान का ध्यान, माता का ध्यान, छोटे बच्चों को पास बैठाकर गाना, सजावट और सौन्दर्यपूर्ण स्थान जैसे—देव मन्दिर, तीर्व अथवा जलाशयों के किनारे सामूहिक रूप से गाने का प्रयोग और भी प्रभावोत्पादक होता है। प्राचीनकाल में ऐसे अवसरों पर्व-त्यौहार पूजन, तीर्थयात्रा, मन्दिरों आदि में संगीत अभ्यास और गायन की व्यवस्था इसलिये की जाती थी कि उन पर्वों और स्थानों के सूक्ष्म प्रभाव को तरंगित कर उसका भी लाभ उठाया जा सके।

यह समझा जाना चाहिए कि संगीत, मात्र मनोरंजन नहीं है यदि उसे भावनाओं और प्रेरणाओं से सुसज्जित रखा जा सके तो इसका परिणाम न केवल गाने-सुनने वालों के लिए वरन् सुविस्तृत वातावरण को श्रेयस्कर परिस्थितियों से भरा-पूरा बनाने में सहायक हो सकता है।

मनुष्य की कोमल भावनाओं को झंकृत, तरंगित करने पर उसमें देवत्व का उदय होता है। इस प्रयोजन की पूर्ति में नादयोग द्वारा शब्द ब्रह्म की साधना करना एक उत्कृष्ट योगाभ्यास है। दीपक-राग, मेघ-राग जैसे स्वर ब्रह्म के नगण्य से स्थूल प्रकृति से सम्बन्धित चमत्कार हैं। सूक्ष्म प्रकृति को तरंगित और उत्तेजित करने में, उसकी धाराएँ बदलने में भी संगीत का प्रभाव स्वल्प दृष्टिगोचर नहीं होगा। अन्य योगों की साधना का अवलम्बन लेकर जिस प्रकार उच्चकोटि की सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं, उसी प्रकार स्वर-योग की साधना से भी उच्च अध्यात्म की भूमिका में प्रवेश करके दिव्य विभूतियों को करतलगत किया जा सकता है। जिस प्रकार ब्रह्माण्ड के अन्तराल में नाद ब्रह्म का गुञ्जन संव्याप्त, उसकी प्रतिध्वनि से पिण्ड की अन्तःस्थिति भी गूँजती रहती है। संगीत की स्वर-साधना इस अव्यक्त गुञ्जन को व्यक्त बनाती है। मुखर करती है। गान यदि उच्चस्तर का हो तो अन्तरात्मा की भाव सत्ता को तरंगित करके ब्रह्मानन्द की, आत्मानन्द की रसानुभूति करा सकता है।

संगीत के अदृश्य प्रभाव को खोजते हुए भारतीय योगियों को वह सिद्धियाँ और अध्यात्म का विशाल क्षेत्र उपलब्ध हुआ, जिसे वर्णन करने के लिये एक पृथक वेद की ही रचना करनी पड़ी। सामवेद में भगवान की संगीत शक्ति के ऐसे रहस्य प्रतिपादित और पिरोये हुए हैं, जिनका अवगाहन कर मनुष्य अपनी आत्मिक शक्तियों को कितनी ही तुच्छ हों—भगवान् से मिला सकता है। अब इस सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों की मान्यतायें भी भारतीय दर्शन की पुष्टि करने लगी हैं।

योग शास्त्रों में संगीत की बड़ी चर्चा है। तत्ववेत्ताओं का कथन है कि अदृश्य जगत् की सूक्ष्म कार्य-प्रणाली पर जिधर भी दृष्टि डालते हैं, उधर ही यह प्रतीत होता है कि एक दिव्य संगीत से सभी दिशायें और विश्व-भुवन झंकृत हो रहा है। यह स्वर लहरियाँ वीणा, भ्रमर, झरना, नागरी भेरी, वंशी आदि की तरह सुनाई देती हैं। जिस तरह सर्प नाद को सुनकर मस्त हो जाता है, उसी तरह चित्त उन स्वर लहरियों में आसक्त होकर सभी प्रकार की चपलतायें भूल जाता है। नाद से संलग्न होने पर मन ज्योतिर्मय हो जाता है और जो स्थिति कठिन साधनाओं से भी कठिनाई से मिलती है, वह स्वर योग के साधक को अनायास ही मिल जाती है।

अक्षर परब्रह्म परमात्मा की अनुभूति के लिये वस्तुतः संगीत साधना से बढ़कर अन्य कोई अच्छा माध्यम नहीं, यही कारण रहा है कि देव संस्कृति की उपासना पद्धतियों से लेकर कर्मकाण्ड तक में सर्वत्र स्वर संयोजन अनिवार्य रहा है। मन्त्र भी वस्तुतः छन्द ही है। वेदों की प्रत्येक ऋचा का कोई ऋषि, कोई देवता तो होता ही है उसका कोई न कोई छन्द जैसे व्युष्टुप, अनुष्टुप, गायत्री आदि भी होते हैं। इसका अर्थ ही होता है कि उस मन्त्र के उच्चारण की ताल, लय और गतियाँ भी निर्धारित हैं। अमुक फ्रीक्वेन्सी पर बजाने से ही अमुक स्टेशन बोलेगा उसी तरह अमुक गति, लय और ताल के उच्चारण से ही मन्त्र सिद्धि होगी—यह उसका विज्ञान है।

नादयोग के साधक सूक्ष्म कर्णेन्द्रियों के माध्यम से घण्टा नाद, शंख नाद, वेणु नाद, मेघनाद, निर्झर प्रवाह आदि के रूप सुनने का प्रयत्न करते हैं और उस आधार पर सूक्ष्म प्रकृति के अन्तराल में चल रही अगणित गतिविधियों के ज्ञाता बनते हैं। इन स्वर निनादों के साथ जो अपना सम्बन्ध जोड़ लेता है वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकृति पर आधिपत्य स्थापित करने और उसे अपनी अनुयायी संकेतगामिनी बनाने में सफलता प्राप्त करता है। योगविद्या का अपना स्थान है। स्वरशास्त्र स्वरयोग का साधन विज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान है। नासिका द्वारा चलने वाले सूर्य चन्द्र स्वरों को माध्यम बनाकर कितने ही साधक प्रकृति के अन्तराल में प्रवेश करते हैं और वहाँ से अभीष्ट मणिमुक्तक उपलब्ध करते हैं।

विश्व के यशस्वी गायक एनरिकौ कारूसो लिखते हैं—जब कभी संगीत की स्वर लहरियाँ मेरे कानों में गूँजतीं, मुझे ऐसा लगता जैसे मेरी आत्म-चेतना किसी असह्य जीवनदायिनी सत्ता से सम्बद्ध हो गई है। शरीर की पीड़ा भूल जाता हूँ, भूख प्यास और निद्रा टूट जाती है, मन को विश्राम और शरीर को हल्कापन मिलता है। मैं तभी से सोचा करता था कि सृष्टि में संगीत से बढ़कर मानव जाति के लिये और कोई दूसरा वरदान नहीं है।

कारूसो ने जीवनभर संगीत की साधना की। जबकि एक बार एक शिक्षक ने यहाँ तक कह दिया कि तुम्हारा स्वर संगीत के योग्य है ही नहीं। तुम्हारा स्वर लड़खड़ाता है पर निरन्तर अभ्यास और साधना से कारूसो ने संगीत साधना में अभूतपूर्व सिद्धियाँ पाईं और यह प्रमाणित कर दिया कि संगीत का सम्बन्ध स्वर से नहीं हृदय और भावनाओं से है। कोई भी मनुष्य अपने हृदय को जाग्रत कर परमात्मा के इस वरदान से विभूषित हो सकता है।

संगीत से मनुष्य का आध्यात्मिक विकास होता है और वह सूक्ष्म सत्ता के भाव-संस्पर्श और अनुभूति की स्थिति पाता है, यह परिणाम अन्तर्जगत से सम्बन्ध रखते हैं, इसलिये उस सम्बन्ध में विस्तृत अन्वेषण का क्षेत्र पाश्चात्य जगत के लिये अभी नितान्त खाली है। मस्तिष्क, शरीर और वन्य वनस्पतियों तक में संगीत के जीवनदायी प्रभाव को पाश्चात्य विद्वान और वैज्ञानिक भी अब मानने लगे हैं। वस्तुतः संगीत का मनुष्य जीवन को सरस बनाने में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। यदि संगीत का अस्तित्व मिट जाय तो दुनियाँ बड़ी ही नीरस, रूखी और कर्कश प्रतीत होने लगेगी। साधारण पशु की अपेक्षा मनुष्य को जो आनन्दमयी स्थितियाँ प्राप्त हैं, उनमें संगीत साहित्य और कला का बहुत बड़ा भाग है।

इसके अतिरिक्त युवकों के चरित्र-निर्माण में संगीत को एक अत्यन्त प्रभावशाली साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। अरस्तू कहा करते थे—स्वर और लय के योग से कैसी भी भावनायें उत्पन्न की जा सकती हैं। महाराष्ट्र राज्य के भूतपूर्व राज्यपाल श्री प्रकाश जी ने एक बार कहा कि संगीत की शिक्षा स्कूलों में अनिवार्य कर देनी चाहिये। इससे युवक विद्यार्थी में मानसिक एकाग्रता और जागरूकता का विकास स्वभावतः होगा। यह दो गुण स्वयं उसके व्यक्तित्व में अन्य गुणों की वृद्धि करने में सहायक बन सकते हैं।

हमारे प्रत्येक देवता के साथ संगीत का अविच्छिन्न सम्बन्ध होना यह बताता है कि विश्व की सृजन प्रक्रिया में संगीत का चमत्कारिक प्रभाव है। हृषीकेश का पाञ्चजन्य, शंकर का डमरू, भगवान कृष्ण की मुरली, भगवती वीणा-पाणि सरस्वती की वीणा का रहस्य एक दृष्टि से यह भी है कि सृष्टि का प्रत्येक अणु संगीत शक्ति से गतिशील हो सकता है।

देखा जाय तो शास्त्रीय संगीत की रचना एक ऐसी वैज्ञानिक प्रक्रिया पर आधारित है कि उसका लाभ मिले बिना रहता नहीं। इसी कारण संगीत को पिछले युग में धार्मिक और सार्वजनिक समारोहों का अविच्छिन्न अंग माना जाता था। आज भी विवाह शादियों और मंगल पर्वों पर उसकी व्यवस्था करते और उसके लाभ प्राप्त करते हैं। हम देखते नहीं पर अदृश्य रूप में ऐसे अवसरों पर प्रस्फुटित स्वर संगीत से लोगों को आल्हाद, शान्ति और प्रसन्नता मिलती है, लोग अनुशासन में बने रहते हैं।

मिलिटरी की कुछ विशेष परेडों में भी वाद्य यन्त्र प्रयुक्त होते हैं। उससे नौजवानों को कदम तोलने और मिलाकर चलने में बड़ा सहायता मिलती है। कारण उस समय सबके अन्तर्जगत एक-सी विचार तरंगों से आविर्भूत हो उठते हैं।

लेकिन स्मरण रहे, संगीत की उपयोगिता तभी है जब उसे उच्च उद्देश्य के लिए प्रयुक्त किया जाय। कलाएँ दुधारी तलवारें हैं यदि उन्हें पशु प्रवृत्तियाँ भड़काने के लिए काम में लाया जाय तो वे घातक भी कम सिद्ध नहीं होतीं। इसीलिये यह कहा जाता रहा है कि संगीत का उपयोग मात्र आत्मोत्कर्ष के निमित्त किया जाना चाहिए। संगीत से ही इस सृष्टि की उत्पत्ति हुई

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। संगीत हमारे जीवन का सार है, एक अभिन्न अंग है। इसके सुनियोजन द्वारा आत्मिक प्रगति सुनिश्चित है इसमें कोई सन्देह नहीं।

संगीत द्वारा संवेदना-संचार

शान्ति की खोज में भटकता, भौतिकवादी मानव को कहीं शान्ति नहीं मिलती। पाश्चात्य भौतिकवादी राष्ट्र ने, भौतिक आवश्यकताओं से ऊबा अपने संगीत में पिरो देने का एक नया नुस्खा खोज निकाला है।

पाश्चात्य राष्ट्रों में पियानो के प्रति आकर्षण पैदा करने में जापान की "यामाहा" "कं." की भूमिका प्रमुख है। इसने ४ वर्ष के बच्चों का संगीत की शिक्षा के लिए पियानो वादन का कार्यक्रम शुरू किया था जो आज इंग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी आदि विकसित राष्ट्रों के प्रौढ़ों तक के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है। आज विश्व भर में १० हजार से भी ज्यादा यामाहा स्कूल हैं जहाँ बच्चों को स्कूल जाने के पूर्व संगीत का प्रशिक्षण दिया जाता है।

पाश्चात्य राष्ट्रों में पियानो के प्रति बढ़ता आकर्षण निम्न आँकड़ों से स्पष्ट हो जाता है। इटली के एक पियानो विक्रेता ने १९७७ ई. में २,३०० पियानो जापान से आयात किये थे जबकि १९८० में ५,५०० तथा १९८१ में अमेरिका एवं पश्चिमी राष्ट्रों में इतने अधिक पियानो बिके जितने कि १२८ वर्ष के इतिहास में। एक नया रिकार्ड बन गया। यह तो मात्र स्टाइनवे एण्ड सन्स कम्पनी की बिक्री की थी। अन्य कम्पनियों की बिक्री का हिसाब इससे बाहर है।

अभी तक पश्चिमी योरोप में संगीत के कार्यक्रम मात्र बसन्त ऋतु में ही आयोजित किए जाते थे किन्तु अब यह कार्यक्रम बारहों महीने चलते रहते हैं। १९८२ ई. में सिर्फ फ्रांस में ही २५० संगीत समारोहों का आयोजन हुआ जो हफ्तों चला करते थे। इसी प्रकार ८२ ई. में ही स्विट्जरलैण्ड में लगभग ६५०० लोग मोन्न अन्तर्राष्ट्रीय जैज समारोह में १००० जैज वादकों को श्रवण करने हेतु इकट्ठा हुए थे। इस समय पश्चिमी योरोप में कोई भी संगीत कार्यक्रम आशा से ज्यादा आर्थिक लाभ का सिद्ध हो रहा है।

पश्चिमी देशों में संगीत के प्रति बढ़ता आकर्षण इस बात से भी सिद्ध हो जाता है कि कोई भी संगीत वादक अपना खुद का बनाया संगीत बजाना एवं गाना ज्यादा पसन्द करता है। १९८२ ई. गिटार वादन का एक धारावाहिक पाठ्यक्रम मिलान समाचार पत्र वालों ने प्रकाशित करना प्रारम्भ किया जिसकी २,५०,००० प्रतियाँ प्रथम संस्करण की बिक गईं। बाध्य होकर इससे बड़ी संख्या में दूसरा संस्करण उन्हें छपवाना पड़ा था।

गत १० वर्षों में ब्रिटेन में भी संगीत के प्रति आशातीत आकर्षण पैदा हुआ है। इस समय यहाँ पर संगीत केन्द्रों की संख्या हजारों में है। जहाँ से १९८१ ई. में म्यूजिक से सम्बन्धित बोर्ड परीक्षा में ३,५०,००० के करीब परीक्षार्थी बैठे थे। इसी प्रकार फ्रांस में ५००० के लगभग संगीत विद्यालय हैं। पश्चिमी जर्मनी में ६७५ संगीत विद्यालयों में २४,००० संगीत शिक्षक तथा ६,५०, ००० विद्यार्थी हैं तथा ५०, ०००. से ज्यादा संगीत शिक्षा प्रेमी स्कूलों की तलाश में हैं।

युवाओं द्वारा संगीत सृजन कार्यक्रम के अन्तर्गत पश्चिमी जर्मनी में प्रति वर्ष १०,००० छात्र, छात्राओं को प्रादेशिक परीक्षा में भाग लेने दिया जाता है। अन्ततः १०० युवा विजेताओं को राष्ट्रीय युवा वाद्य संघ में वादन के लिए चुना जाता है जो देश-विदेश में अपना कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

पाश्चात्य राष्ट्रों में संगीत के प्रति बढ़ रहे आकर्षण को ध्यान में रखते हुए जापान ने एक कम्प्यूटर प्रणाली विकसित की है जिसमें अशिक्षित भी संगीत की रचना कर सकेंगे। एक नमूना, वी एल—टोन नाम से निकाला गया है जो १९८१ में ही ४० लाख से ज्यादा की संख्या में बिक चुका है।

संगीत से रोने वाले को हँसाया जा सकता है तथा हँसने वालों को करुणाकर रोते भी संगीत के प्रभाव से देखा गया है। संगीत की इस अनुपम क्षमता का वैज्ञानिकों ने वनस्पति जगत पर पड़ने वाले प्रभावों का भी अध्ययन किया है। सोवियत विशेषज्ञों ने इस विषय पर काफी शोध कार्य किया है। अपने शोध में इन वैज्ञानिकों ने गेहूँ पर कर्णातीत ध्वनि का प्रयोग किया। इस ध्वनि का प्रयोग १० मिनट तक कई दिनों तक गेहूँ के खेतों में किया गया तो पाया गया इस ध्वनि के प्रभाव से गेहूँ में पालारोधक क्षमता पैदा हो जाती है। साथ ही उसी खाद-पानी एवं सुरक्षा के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

उपायों के समान रहने पर संगीत के प्रभाव वाले गेहूँ की पैदावार भी बढ़ी हुई पायी गई है। संगीत से मनुष्य की सृजन-शक्ति का विकास और आत्मिक प्रफुल्लता मिलती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक, शादी-विवाहोत्सव से लेकर धार्मिक समारोह तक के लिए उपयुक्त संगीत निधि देकर परमात्मा ने मनुष्य की पीड़ा को कम किया, मानवीय गुणों से प्रेम और प्रसन्नता को बढ़ाया।

ब्रिटिश सर्जन चीफ डान मैककैनसी का कथन है कि विगत युद्धों में परोक्ष रूप से ध्वनि के प्रभाव से जितने व्यक्ति मरे हैं, उतने बम की मार से नहीं। वैज्ञानिक भविष्य में ध्वनि को युद्धों में मारक अस्त्र की भाँति प्रयुक्त करने का विचार कर रहे हैं। केवल धीमी आवाज एक नियत फ्रिक्वेन्सी में धीरे-धीरे फेंककर किस प्रकार एक समूह विशेष में मानसिक तनाव फैलाया जा सकता है, इसका उदाहरण पिछले दिनों कैनाडा पर रशिया द्वारा किये गये "ध्वनि आक्रमण" के रूप में देखा गया। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि कोलाहल रूप में ध्वनि पागलपन व मनोविकारों को बढ़ाती एवं मधुर समवेत स्वर प्रवाह के रूप में संचरित होने पर रोग निवारण करती है—मनःशक्तियों को बढ़ाती है। संगीत एवं सामूहिक गान को अब विदेशों में चिकित्सा के रूप में प्रयुक्त किया जाने लगा है।

संगीत का मनुष्य जीवन को सरस बनाने में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। यह मात्र मनोरंजन नहीं है। यदि उसे भावनाओं और प्रेरणाओं से अनुप्राणित किया जा सके तो इसका परिणाम न केवल गाने-सुनने वालों के लिए वरन् सुविस्तृत वातावरण को श्रेयस्कर परिस्थितियों में भरा-पूरा बनाने में सहायक हो सकता है। मानव की मोल भावनाओं को झंकृत, तरंगित करने और उसमें देवत्व का उदय करने में गायन वादन महती भूमिका निभा सकता है। यदि संगीत का अस्तित्व मिट जाय तो दुनिया बड़ी नीरस, रूखी और कर्कश प्रतीत होने लगेगी। सामान्य पशुओं की अपेक्षा मनुष्य को जो आनन्दमयी स्थितियाँ प्राप्त हैं उनमें साहित्य, संगीत और कला का बहुत बड़ा योगदान है।

कोलाहल और समस्याओं से घनीभूत संसार में यदि ईश्वर का कोई उत्तम वरदान मनुष्य को मिला है तो वह संगीत ही है। इससे पीड़ित हृदय को शान्ति और सन्तोष मिलता है। भाव प्रवण गायन से मनुष्य की सृजन शक्ति का विकास होता और आत्मिक प्रफुल्लता मिलती है। सामूहिक संगीत के महत्व पर अनुसंधानरत चिकित्साविदों का मत है कि जब कई व्यक्ति एक साथ गाते हैं तो सब लोगों का स्वर प्रवाह एवं आन्तरिक उल्लास मिलकर एक ऐसी तरंग श्रृंखला उत्पन्न करता है जो वातावरण में मिलकर सबको उल्लसित कर देता है। फाल्गुन के महीने में फाग की धूम होती है तब बच्चे, बूढ़ों में भी उल्लास फूट पड़ता है और वे युवकों की तरह प्रफुल्ल दिखायी देने लगते हैं। सामूहिक गायनों में सभी को अपने प्रयत्न से अधिक ही लाभ मिलता है परन्तु उन स्वर लहरियों से वातावरण में जो प्रकंपन पैदा होता है वह व्यापक क्षेत्र को प्रभावित करता है जिससे प्रत्येक श्रोता चाहे वह गाने में भाग न भी ले रहा हो, उस आनन्द सरोवर में डूब जाता है। कभी वर्षा ऋतु में भारत के गाँव-गाँव में मेघ मल्हार राग गाया जाता था जो कठोरतम हृदय में भी प्रेम और उल्लास-आनन्द का झरना प्रस्फुटित-प्रवाहित करने में सफल होता था।

गाने की धुनों के साथ-साथ हाथ-पाँव अनायास ही गति करने लगते हैं, इसका तात्पर्य ही यह है कि संगीत का मनुष्य जीवन और आत्मा से सीधा सम्बन्ध है। आत्मा उसके बिना कुण्ठित हो जाती है। इसलिए आत्मिक प्रगति के प्रत्येक इच्छुक को गाने और संगीत सुनने का लाभ अवश्य लेना चाहिए। वैज्ञानिकों का भी ध्यान अब इस ओर आकृष्ट हुआ है। पाश्चात्य जगत में विज्ञान की तरह ही संगीत पर भी अनुसंधान चल रहा है और अब तक जो निष्कर्ष निकले हैं वह मनुष्य को इस बात की प्रेरणा देते हैं कि यदि मानवी गुणों और आत्मिक आनन्द को जीवित रखना है तो उसे अपने आपको संगीत से जोड़े रहना चाहिए। इसकी तुलना प्रेम से की गई है। दोनों ही समान उत्पादक शक्तियाँ हैं। जड़ एवं चेतन तत्व दोनों पर ही इनका चमत्कारिक प्रभाव पड़ता है।

संगीत में शरीर, मन और आत्मा तीनों को बलवान बनाने वाले तत्व परिपूर्ण मात्रा में विद्यमान हैं। इसी कारण भारतीय आचार्यों और मनीषियों ने संगीत शास्त्र पर सर्वाधिक जोर दिया है। सामवेद की स्वतन्त्र रचना उसका प्रमाण है। भक्ति भावनाओं के विकास में संगीत का योगदान असाधारण है। ऋग्वेद (८/३३/२) में कहा गया है "कि तुम यदि संगीत के साथ ईश्वर

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को पुकारोगे तो वह तुम्हारा हृदय गुहा में प्रकट होकर अपना प्यार प्रदान करेगा।" शास्त्रों में उल्लेख है" स्वरेण सल्लयेत योगी" अर्थात् स्वर साधना द्वारा योगी अपने को तल्लीन करते हैं। इस प्रकार एकाग्र की हुई मनःशक्ति को विद्याध्यन से लेकर किसी भी उच्चस्तरीय प्रयोजन में लगाकर चमत्कारिक सफलतायें प्राप्त की जा सकती हैं। ईश्वर प्राप्ति का उपयुक्त साधन बताते हुए ऋग्वेद में आगे (८/७५/३) में कहा गया है कि "अनेक मनीषिगण परमात्मा की ओर संगीतमय स्वर लगाते हैं और उसी के द्वारा उसे प्राप्त करते हैं।" कार्लाइल भी कहा करते थे "संगीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है।"

योगशास्त्रों में संगीत की बड़ी चर्चा है। तत्त्वेत्ताओं का कथन है कि आदृश्य जगत की सूक्ष्म प्रणाली पर जिधर भी दृष्टि डालते हैं उधर ही यह प्रतीत होता है कि एक दिव्य नाद से सभी दिशाएँ और विश्व भुवन झंकृत हो रहा है। यह स्वर लहरियाँ वीणा, भ्रमर, झरना, वंशी आदि की तरह सुनाई देती हैं। जिस तरह सर्प बीन की धुन को सुनकर मस्त हो जाता है। उसी तरह चित्त उन स्वर लहरियों में आसक्त होकर सभी प्रकार की चपलताएँ भूल जाता है। नाद में संलग्न होने पर मन ज्योतिर्मय हो जाता है और जो शक्ति कठिन साधनाओं से भी कठिनाई से मिली है वह स्वर योग के साधक को अनायास ही मिल जाती है।

अब इस सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों की मान्यतायें भी भारतीय दर्शन की पुष्टि करने लगी हैं। विश्व विख्यात गायक एनरिको कारूसो लिखते हैं— जब कभी गायन की मधुर स्वर लहरियाँ मेरे कानों में गूँजतीं, मुझे ऐसा लगता मानो आत्म चेतना किसी अदृश्य जीवनदायिनी सत्ता से सम्बद्ध हो गयी है। मैं शरीर की पीड़ा भूल जाता, भूख-प्यास और निद्रा टूट जाती, मन को विश्राम और हल्कापन मिलता। मैं तभी से सोचा करता था कि सृष्टि में संगीत से बढ़कर मानव जाति के लिए और कोई दूसरा वरदान नहीं है। कारूसो ने जीवन भर इसकी साधना की और उसमें अभूतपूर्व सिद्धियाँ पायीं। उन्होंने स्वर मधुर न होने पर भी यह प्रमाणित कर दिखाया कि संगीत का सम्बन्ध स्वर से नहीं, हृदय और भावनाओं से होता है। कोई भी मनुष्य अपने हृदय को जाग्रत कर परमात्मा के इस वरदान से विभूषित हो सकता है। इस सन्दर्भ में डॉ० लीक का कथन है कि यदि संगीत को एक दैनिक शारीरिक एवं मानसिक आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया जा सके तो मनुष्य जाति का बहुहित साधन हो सकता है।

प्रख्यात दार्शनिक पाइथागोरस की मान्यता थी कि संगीत स्वास्थ्य संरक्षण, चरित्र गठन और आत्मिक प्रगति के इन तीनों प्रयोजनों को पूरा कर सकने में समर्थ है। यह आत्मोन्नति का, भाव सम्वेदनाओं के उन्नयन का, मानसिक प्रसन्नता का सबसे अच्छा उपाय है, इसलिए हमेशा वाद्ययंत्र के साथ गाना चाहिए। इस सम्बन्ध में महर्षि रवीन्द्रनाथ टैगोर का कहना है—"स्वर्गीय सौन्दर्य का कोई साकार रूप और सजीव प्रदर्शन है तो उसे संगीत ही होना चाहिए।" वे कहा करते थे—"संसार मुझसे चित्रों में बात करता है—मेरी आत्मा उसका उत्तर संगीत में देती है।" रस्किन ने गायन को आत्मा के उत्थान, चरित्र की दृढ़ता और सुरुचि के विकास का महत्वपूर्ण साधन माना है।

संगीत की प्रेरणा और प्राणशक्ति इतनी महत्वपूर्ण एवं क्षमता-सम्पन्न है कि इसके उपयोग से निराश जीवन को आशा और सन्तोष तथा व्यथित और परिक्लान्त जीवन को शाश्वत शान्ति की ओर अग्रसर किया जा सकता है। विद्वान ए हन्ट के अनुसार संगीत टूटे हुए हृदय की औषधि है। कहा जाता है कि विश्वविख्यात भौतिकविद् आइन्स्टीन ने जब अपने आविष्कारों का दुरुपयोग परमाणु विभीषिका के रूप में देखा तो वह अन्दर से टूट गये। निराश जीवन के अन्तिम क्षणों को उनहोंने वायलिन वादन के सहारे काटा। मानसिक एकाग्रता और जागरूकता के विस में गायन वादन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

हास्य रस, वीर रस, शृंगार रस, शान्त रस आदि नौ रस गायन के माने गये हैं। उनके लिए विशेष राग-रागनियाँ और विशेष समय का निर्देश किया गया है। समय, राग और रस-इनके समिश्रण से एक विशेष प्रकार का ध्वनि प्रवाह उत्पन्न होता है और उससे अनेकों मानसिक रोगों की चिकित्सा हो सकती है। प्रातःकाल गाये जाने वाले राग भारतीय और राग भैरवी आदि से भक्ति-रस का प्रादुर्भाव होता है जिससे स्वास्थ्य और मानसिक शुद्धता की प्राप्ति होती है। संगीत सुनकर कई व्यक्तियों को वैराग्य हो जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युद्धों में तो वीर रस युक्त संगीत का सदा से प्रयोग होता रहा है। सैनिकों में शौर्य, साहस एवं लड़ने का उत्साह-पराक्रम जगाने में वाद्यों की उपयोगिता सदैव स्वीकारी जाती रही है। युद्ध वाद्यों की शृंखला में अब ऐसे वाद्य उपकरणों का भी आविष्कार कर लिया गया है जिनकी ध्वनि प्रवाह से सैनिकों को मानसिक रूप से पंगु बनाया जा सकता है। महाभारत के सूत्रधार भगवान कृष्ण ने स्वयं पांचजन्य नामक शंख बजाकर कौरव दल का दिल दहला दिया था।

मनुष्यों तक ही संगीत का प्रभाव सीमित नहीं है वरन् उसे पशु-पक्षी भी बड़े चाव से पसन्द करते हैं और प्रभावित होते हैं। गायन-वादन सुनकर प्रसन्नता व्यक्त करना और उसका आनन्द लने के लिए ठहरे रहना यही सिद्ध करता है कि तुच्छ समझे जाने वाले प्राणियों को भी वह रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होता है। बीन की धुन पर सर्पों एवं हिरन-मृगों के नाचने-सम्मोहित होने की बात सर्वविदित है। नारद संहिता में कहा भी गया है—"पक्षी, भ्रमर, पतंगे, मृग आदि जीव-जन्तुओं को संगीत से प्रेम होता है। संगीत ब्रह्माण्ड व्यापी है।"

देखा गया है कि बेहिसाब उछल-कूद करने वाले चंचल प्रकृति के चूहों को भी मुधर वाद्ययंत्र मुग्ध कर चुप कर देते हैं। मूर्धन्य विकित्सा विज्ञानी डा. जार्ज केरविट्स ने पियानो की मधुर ध्वनि सुनाकर चूहों को शान्तिपूर्वक पड़े रहने के लिए बाधित करने के कितने ही प्रयोग किये हैं। सील मछली का संगीत प्रेम प्रसिद्ध है। कुछ समय पूर्व पुर्तगाल के नाविक वायलिन की धुन सुना-सुनाकर इन मछलियों को आकर्षित करते थे। नाव के इर्दगिर्द मंत्र मुग्ध एकत्र मछलियों को तब वे आसानी से पकड़ लेते थे। वन विशेषज्ञ जार्ज हेस्टे ने अफ्रीका के कांगो के जंगलों में पाये जाने वाले चिम्पाजी तथा गोरिल्ला जाति के बन्दरों को वाद्ययंत्रों के साथ गायन के प्रति सहज ही आकर्षित होने वाली प्रकृति का पाया है। उनमें से कितनों को उनने इसके प्रभाव से पालतू जैसी स्थिति का अभ्यस्त बनाने में सफलता पाई है। दुधारू पशुओं को दुहते समय सरस ध्वनि के प्रभाव से अधिक दूध देते देखा गया है।

संगीत का कठोर मन वालों पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। त्रावणकोर के प्रसिद्ध वायलिन वादक कडिवेल्लु के जीवन में घटित एक घटना से इस तथ्य को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। वह प्रवास में कहीं जा रहे थे कि रास्ते में डाकुओं ने उन्हें लूट लिया। किसी तरह अनुनय-विनय करके उनने डाकुओं से अपना वायलिन वापस ले लिया और वहीं बैठकर बजाने लगे। स्वर लहरी पर विमोहित डाकू भाव विभोर हो गये और लूटा हुआ सारा सामान उन्हें लौटा दिया। कटिवेल्लु को कई दिन अपने साथ रखकर उस वादन का रसपान करते रहे और अन्त में बहुत सा पुरस्कर देकर सम्मान उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया। वस्तुतः संगीत से मनुष्य की किसी भी भावना को उत्तेजित किया जा सकता है और समाज में व्यवस्था स्थापित की जा सकती है। युवकों के चरित्र-निर्माण में इसे एक अत्यन्त प्रभावशाली साधन के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।

यहाँ यह स्मरण रखने योग्य है कि संगीत की उपयोगिता तभी जब उसे उच्च उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त किया जाय। कलाएँ दुधारी तलवार के समान हैं। यदि उन्हें पशु प्रवृत्तियों को भड़काने के लिए काम में लिया जाय तो वे घातक कम सिद्ध नहीं होती। प्रायः आज यही स्थिति है। सस्ते सिनेमा संगीत ने उन महान शास्त्रीय उपलब्धियों को एक तरह से नष्ट करके रख दिया है। स्वर और लय की गति में बँधे भारतीय जीवन की समस्वरता जो तब थी, अब वह कल्पना मात्र रह गई है। संगीत के दुरुपयोग ने समाज में अवांछनीय परिस्थितियाँ उत्पन्न की हैं। वह कामुकता एवं कुत्साओं का पर्यायवाची बनता जा रहा है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि गायन-वादन के सनातन स्वरूप को स्थिर रखने के पूरे प्रयत्न किये जायँ एवं उसे सदुद्देश्य के लिए प्रयुक्त होने दिया जाय।

संगीत की स्वर लहरियों में असाधारण शक्ति है। उसका दुरुपयोग करके जनमानस और समाज को दिग्भ्रान्त किया जा सकता है और सदुपयोग करके लोगों को कल्याण की, प्रगृति की दिशा में अग्रसर किया जा सकता है। कभी सूरदास, मीराबाई, चैतन्य महाप्रभु जैसे महान संतों ने इस सम्मोहनी शक्ति का सुदपयोग करके जन-जन के मन में उत्कृष्टता के भक्ति-भाव के बीज बोये थे। लोगों को अपने गुण, कर्म स्वभाव को परिष्कृत करने को प्रेरित किया था। उनने गायन को सदाशयता से जोड़ा और उसे नीति सदाचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं मर्यादा पालन का पक्षधर बनाया था। सद्भावनाओं को उत्प्रेरित एवं विकसित करने वाला नृत्य एवं संगीत का सनातन तथा उज्ज्वल पक्ष ही ग्राह्य है। गायन-वादन, गीत-संगीत निश्चित रूप से प्रसन्नता की अभिवृद्धि करते हैं। इससे जहाँ शरीर को स्फूर्ति और बल की प्राप्ति होती है, वहीं हृदय, स्नायुओं, मन और भावनाओं को भी स्निग्धता से अनुप्राणित होने का अवसर मिलता है। मानसिक तनावों के निराकरण की यह अचूक औषधि भी है। सरस एवं भाव प्रधान गीत, भजन, कीर्तन, प्रार्थना आदि मानव हृदय को तरंगित कर उसमें दया, प्रेम, करुणा, उदारता, ममता, आत्मीयता, सेवा और सद्गुणों को जीवन का अनिवार्य अंग बना लेने पर तो आत्मिक कायाकल्प ही हो जाता है। संगीत आत्मा की प्यास है। इसके सुनियोजित उपयोग द्वारा जन-जन के मन को तरंगित कर सत्प्रेरणाएँ उभारी जा सकती हैं।

बात उन दिनों की है जब ट्रावनकोर में स्वातितिरुनालू राजा राज्य करते थे। उनके दरबार में वडिवेलु नाम के एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ रहते थे। संगीत के क्षेत्र में उनका यश सारे देश में फैला हुआ था।

रस ही तो है, एक दिन वडिवेलू अपनी संगीत-साधना में इतने तन्मय हो गये कि उन्हें राज-दरबार में उपस्थित होने की भी सुधि न रही। इस पर स्वातितिरुनालु बहुत कुद्ध हुए और उन्होंने वडिवेलु को राज्याश्रय से बाहर निकाल दिया। मंत्रियों तथा सभासदों ने कहा—महाराज ! संगीत तो भगवान् का स्वरूप है। यदि कोई संगीत-आराधना में इतना निमग्न हो गया कि उसे राज दरबार में आने का ध्यान न रहा, तो उसे ईश्वर-भक्ति मानकर क्षमा ही नहीं करना चाहिये, वरन् श्रद्धा व्यक्त करनी चाहिये। यदि संगीत न रहेगा महाराज, तो जीवन नीरस हो जायेगा। फिर कौन आत्मा इस धरती पर आना चाहेगी प्रेम, सौन्दर्य और संगीत यही तो आत्मा के आकर्षण हैं, इन्हीं पर तो संसार टिका हुआ है।

अहंकार प्रबल हो तो मनुष्य न्याय की बात सोच भी कैसे सकता है। स्वातिनिरुनालु ने एक न सुनी। उन्होंने वडिवेलु को राज्य-आश्रय से निकाल ही दिया।

अपना थोड़ा-सा सामान बाँधकर वीतराग संगीतज्ञ वहाँ से निकल पड़ा। साथ में वेला की पेटी भी थी। जब वह हार-थक जाते, तो वेला बजाते और अपनी सारी थकावट को दूर कर लेते। सचमुच संगीत मनुष्य को ताजगी और नया जीवन देता है। हम पाश्चात्य संगीत की कामुक धारा में बहे न होते और अपने संगीत के भाव-पक्ष को जीवित रख सके होते, तो आज जैसी नीरसता के शिकार न हुए होते।

वडिवेलु एक जंगल पार कर रहे थे, तभी कुछ डाकुओं ने उन्हें आ घेरा। उनका सारा सामान छीन लिया और साथ में वेला-वादन पेटी भी। वडिवेलु ने प्रार्थना की 'भाइयो ! तुम सब कुछ ले जाओ, पर मुझे मेरी वेला दे दो। तुम नहीं जानते, संगीत मेरा प्राण है। मेरा ही क्यों, यह तो मानव-मात्र की आत्मा है। देखा नहीं-गाँवों के कृषक मजदूर दिन भर के थक माँदे आते हैं, शाम को एक स्थान पर बैठकर संगीत के साथ लोक-धुनों में मस्त हो जाते हैं, उनकी पीड़ायें हर लेता है संगीत। कृपा करो, मेरी वेला मुझे दे दो ताकि कभी कुछ न हो, तो अपनी आत्मा की प्यास और थकावट तो दूर कर लिया करूँगा।'

डाकुओं को दया आ गई। उन्होंने वेला वडिवेलु को लौटा दी। जैसे छोटा बच्चा अपनी माँ को पाकर गद्गद हो जाता है और उसके स्तनों से चिपक जाता है, वैसे ही वेला मिलते ही बड़िवेलु की आंतरिक भावनायें प्रवाहित हो उठीं। वहीं बैठ गये। ढीले तार कसे और वेला का मधुर राग हवा में गुँजाने लगे।

डाकुओं को वह स्वर-लहरियाँ बहुत मीठी लगीं। परिस्थितियवश कोई कितना ही बुरा क्यों न हो जाये, उसकी करुणा थोड़े ही मर जाती है। वेला की स्वर-झंकृति ने उन डाकुओं के हृदयों को छुआ और उनसे कोमलता फूट पड़ी। डाकू श्रोता बनकर बैठ गये। वडिवेलु पूरी तन्मयता से वेला के तारों को गति देने लगा। डाकुओं का चित्त संगीत की रस-धारा में ऐसा वह गया कि उन्हें अपने आप का भी ध्यान न रहा। इसका पता तो उन्हें तब लगा जब वाद्य बन्द हुआ। सबकी आँखों में प्रेम और पश्चात्ताप के आँसू। पश्चाताप अपने दुष्कर्म पर और प्रेम संगीत से, मानव की आत्मा से, जो अब तक उनसे छिपी थी और संगीत-स्वरों ने जिसे फूँककर जग दिया था।

डाकुओं ने वडिवेलु का सारा सामान लौटा दिया। उन्हें जंगल से बाहर तक छोड़ भी आये। उनके पैर छुए और प्रतिज्ञा की कि अब वे कभी भी किसी को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न लूटा करेंगे। यह बात स्वातितिरुनालु से सुनी, तो उनका भी अहंकार दूर हो गया। उन्होंने वडिवेलु को सादर वापिस बुलाया और ट्रावनकोर में फिर से संगीत की रसधारा लोक-जीवन को अनुप्राणित करने लगी।

संगीत न केवल विद्या है, वरन् एक महाशक्ति है। मन-मस्तिष्क की परितृप्ति के अनेकानेक दृश्य-अदृश्य साधन हैं, पर भावनाओं की तृप्ति संगीत के माध्यम से होती है। प्राचीनकाल में संगीत के बल पर प्राकृतिक शक्तियों को भी मनचाही दिशा में मोड़ा-मरोड़ा जा सकना सम्भव था। वह नाद ब्रह्म की साधना थी, उथले मनोरजन का माध्यम नहीं। जब तक यह साधना का विषय रहा, तब तक न केवल उसका प्रभाव मनुष्य पर देखा गया, वरन् पशुओं को मुग्ध करने, साँपों का शमन करने, पागल, जंगली हाथियों को वश में करने से लेकर फूल खिला देने, वर्षा कराने, पत्थर पिला देने जैसे असम्भव कार्य तक सम्पन्न कर सकना सम्भव था। पर कालान्तर में इसे मात्र मनोरंजन का साधन बना दिया गया। इतने पर भी इसकी प्रभावोत्पादक क्षमता कम नहीं हुई। मधुर स्वर लहरियों का प्रत्यक्ष प्रभाव आज भी देखा और अनुभव किया जा सकता है।

अन्त: सम्वेदनाओं को उभारने में कला, साहित्य, भाषण, उद्‌बोधन की अपक्षा संगीत कहीं अधिक समर्थ है। इसकी पहुँच अन्त:करण के मर्मस्थल तक है। मनुष्य तो क्या पशुपक्षी तक संगीत की सुमधुर ध्वनि पर थिरकने लगते हैं तथा उस प्रभाव से प्रकृति प्रदत्त स्वभाव के विपरीत आचरण करते देख जाते हैं। इतिहास की प्रख्यात घटना है कि मुगल शासक अकबर किसी कारण से तत्कालीन प्रसिद्ध लोक कवि माघ से क्रुद्ध हो गया था। आवेश की स्थिति में उसने सेनापति को आदेश दिया कि महाकवि को दूसरे दिन भरे दरबार के सामने मदमस्त हाथी से कुचलवा दिया जाय। सभासदों को राजनिर्णय अनुसूचित जान पड़ा। पर विरोध कौन करता और स्वयं के लिए आपत्ति मोल लेता। महाकवि को इस तरह मृत्युदण्ड देना भी उन्हें उचित नहीं लगा क्योंकि वे बेगुनाह थे। महामंत्री सहित सभासदों की एक गुप्त सभा राजा की अनुपस्थिति में हुई। लम्बे विचार विमर्श के बाद आम सहमति हुई कि संगीत सम्राट तानसेन की मदद ली जाय। योजना गुप्त रखी गई तथा यह निश्चय हुआ कि जिस समय क्रुद्ध हाथी माघ को मारने के लिए छूटे, ठीक उसी समय तानसेन अपनी संगीत लहरी छेड़ें।

निर्धारित समय पर दूसरे दिन हाथी हुँकार भरता माद्य को मारने चला । इसी बीच विलक्षण घटना घटी। तबले के ध्रुपदताल की तरंगति ध्वनि लहरी ने हाथी को सम्मोहित कर दिया । बढ़ते हुए उसके कदम रुक गये । वह उसी स्थान पर शराबी की भाँति झूमने और नृत्य करने लगा। आये दर्शक भी मन्त्रमुग्ध बने इस अविश्वसनीय दृश्य को देख रहे थे। जब तक संगीत चलता रहा हाथी अपने स्थान से टस से मस महीं हुआ। अकबर को पूरी बात मालूम हुई। साथ ही अपने गलत निर्णय का भान भी हुआ । संगीत की चमत्कारी शक्ति के कारण पागल हाथी से महान कवि की रक्षा हुई ।

बैजू बावरा के सम्बन्ध में विख्यात है कि जब वह रागिनियाँ छेड़ते थे, तो तपती धूड़प में भी घने बादल आकाश में मँडराने लगते और वर्षा आरम्भ हो जाती थी। दीपक राग की उच्चस्तरीय सिद्धि के अभ्यास से बुझे हुए दीपकों को भी अपने आप जल उठना होता था। अब तो वे घटनायें मात्र किम्वदन्ती भर बनकर रह गयी हैं। ऐसे नादयोग के साधक अब कहाँ मिलते हैं ? तो भी संगीत की शक्ति का अस्तित्व भले-बुरे रूपों में एक शक्ति के रूप में आज भी संसार में विद्यमान है।

जनमानस में भली-बुरी प्रेरणाएँ भरने-भावनायें उभारने का यह सबसे सशक्त मनोवैज्ञानिक माध्यम है। संगीत का सदुपयेाग जहाँ एक ओर नवनिर्माण के आधार खड़ा करता है, वहीं दूसरी ओर इसका दुरुपयोग ध्वंसात्मकता-आक्रामकता जैसी पतनोन्मुखी प्रवृत्तियों को जन्म देता है। इन दिनों प्राय: यही हो भी रहा है। पश्चिमी देशों में कुत्सित भावना को भड़काने वाला संगीत ही लोकप्रिय हुआ है जिसने युवा पीढ़ी को उच्छृंखल, स्वेच्छाचारी बनाने में विशेष भूमिका निभाई है। इस प्रकार के उत्तेजक संगीत का आविष्कार विलहेले नामक एक अमेरिकी संगीतज्ञ ने तीस वर्ष पूर्व किया था। पाप-पाप की तीव्र ध्वनि के कारण यह संगीत 'पाप संगीत' के नाम से विख्यात हुआ जिसकी आज सर्वत्र धूम मची है। इसका वास्तविक नाम है "वैवोपालु पॉप।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस शृंखला में कितनी ही अश्लील कड़ियाँ जुड़ती जा रही हैं। 'रॉक एण्ड रॉल, तथा डिस्को जैसे कितने ही नृत्य सम्मिलित संगीत का आविष्कार हुआ है। इसके आविष्कार एल्विस प्रेस्ले को इस क्षेत्र में भारी सफलता मिली। जिसमें युवावर्ग अपनी सुध-बुध खोकर स्वच्छन्द आचरण, वीभत्स चेष्टायें करते हुए नृत्य करने लगे। इससे उत्साहित होकर प्रेस्ले ने शब्द विज्ञान का विशद अध्ययन कर संगीत के साथ उसके उत्तेजक प्रभावों का परिचय प्राप्त किया और पॉप संगीत की रचना की। संगीत शास्त्र के विशेषज्ञों का कहना है कि रॉक एण्ड रॉल पर उच्चारित ध्वनि 'ऊ ऊ ऊ' की कराहें सुनने वालों में यौन भावना को असाधारण रूप से बढ़ा देती हैं। इसमें ड्रम आदि को पीट-पीटकर गला फाड़कर चिल्लाने लगना तथा फूहड़ ढंग से कूल्हे मटकाने जैसा क्रम और जुड़ गया जिसने पॉप को जन्म दिया। इस संगीत ने स्वेच्छाचार को अत्यधिक बढ़ावा दिया।

पाश्चात्य देशों में शरीर और मन में उत्तेजना भरने वाले इस प्रकार के संगीत की इन दिनों सर्वत्र धूम है। अनुसंधानकर्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि सौम्य सुमधुर संगीत की स्वर लहरियाँ जहाँ शरीर, मन और आत्मा के विकास में सहायक होती हैं, वहीं इस तरह दुरुपयोग चल पड़ने पर संगीत अधःपतन का कारण बन सकता है। उत्तेजक ध्वनि तरंगों का प्रवाह अगणित समस्याओं को जन्म दे सकता है।

पिछले दिनों पेरिस में एक ऐसा ही उदाहरण सामने आया जहाँ का ओलम्पिया म्यूजिक हाल श्रोताओं से खचाखच भरा था। संगीत का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मधुर स्वरलहरी के मादक प्रभाव से श्रोतागण झूमने लगे। अचानक एक विलक्षण घटना घटी। संगीत की धुन बदली। म्यूजिक कार्यक्रम में उस धुन को बजाये जाने का वह पहला अवसर था। शान्तिचित्त दर्शक जो संगीत प्रोगाम को सुनने में तल्लीन थे, उस परिवर्तित धुन को सुनकर बेचैनी अनुभव करने लगे। उनकी उत्तेजना बढ़ती ही गयी और अनियंत्रण की स्थिति में जा पहुँची। पागलों की तरह श्रोता अपनी-अपनी कुर्सियों को छोड़कर एक-दूसरे से संघर्ष पर उतारू हो गये। हॉल की कुर्सियाँ उनने तोड़-फोड़ डालीं और खिड़कियों में लगे शीशे चकनाचूर कर दिये। संगीत सुन रही महिलाएँ भी अपना मनःसन्तुलन खो बैठीं और उत्तेजना की स्थिति में स्वयं अपने वस्त्र फाड़ने-चीड़ने लगीं। निर्वस्त्र अवस्था में उनके चीखने-चिल्लाने से हॉल गूँज उठा। देखते ही देखते वहाँ अच्छा खासा हंगामा खड़ा हो गया। आक्रामक आचरण के कारण अधिकांश व्यक्ति घायल हो गये। संगीत आयोजकों को बिगड़ती हालत पर काबू पाने के लिए मदद के लिए पुलिस बुलानी पड़ी। तब कहीं जाकर स्थिति पर नियंत्रण पाया जा सका। घायलों को अस्पताल की शरण लेनी पड़ी।

घटना के कारणों की खोजबीन आरम्भ हुई। जाँच-पड़ताल के दौरान संगीत की धुन की भी परीक्षा की गयी तो मालूम हुआ कि सारी घटनाओं के लिए जिम्मेदार वह उत्तेजक धुन थी जो पहली बार प्रयोग के तौर पर बजायी गयी थी। रॉक एण्ड पॉप के सम्मिलित स्वरूप से बनी उस संगीत धुन को बजाने पर शासन द्वारा पाबन्दी लगा दी गई।

ध्वनि विज्ञान के विशेषज्ञों ने अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए कहा कि मनुष्य के स्नायु संस्थान को असाधारण रूप से उत्तेजित करने में ऐसी धुनें पूर्ण समर्थ हैं। जिस पिच और फ्रीक्वेन्सी पर वह धुन तैयार की गयी थी, वह मानवी मस्तिष्क पर भारी दुष्प्रभाव डालती है। आक्रामक एवं कामुक मनोवृत्ति को भड़काने में वह विशेष रूप से सहायक है। इस घटना से वैज्ञानिकों को संगीत विद्या पर गहन अनुसंधान करने की प्रेरणा मिली। तालबद्ध, लयबद्ध अनेकानेक ध्वनियों एवं धुनों का प्रयोग परीक्षण किया गया तो विदित हुआ कि उनमें दोनों तरह की सामर्थ्य विद्यमान है।

संगीत आदिकाल से ही मनुष्य के साथ जुड़ा हुआ है और अपनी सुमधुर तरंगों द्वारा मानसिक तुष्टि का लक्ष्य पूरा करता रहा है। संगीत की शक्ति का नियोजन जनमानस की कुत्सा भड़काने, मानसिक असन्तुलन पैदा करने का कारण बन सकता है जबकि शारीरिक स्वास्थ्य एवं मनः विकास का श्रेष्ठतम् साधन वह है ही। ताल लय के उतार चढ़ाव, फ्रिक्वेन्सी तथा धुन में परिवर्तन करके संगीत द्वारा रचनात्मक और ध्वंसात्मक दोनों ही तरह के प्रयोजन पूरे किये जा सकते हैं। इसकी स्वस्थ परम्परा ही मानवी क्षमताओं के विकास में सहायक है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा जाता है कि एक दिन तानसेन के एक गाने से प्रसन्न होकर बादशाह अकबर ने पूछा—इतना सुन्दर गीत तुमने किससे सीखा ? तानसेन ने जवाब दिया—'अपने गुरु हरिदासजी से।' अकबर ने कहा—'चलो उनके पास चलें।' इसके बाद अकबर तानसेन को लेकर अपनी सारी मंडली के साथ हरिदास जी के घर गया। हरिदास जी नित्य ईश्वर भक्ति में मस्त रहते थे। वे ईश्वर भजन के सिवाय और कोई गाना नहीं गाते थे। बादशाह ने हरिदास जी से कोई गाना सुनाने की प्रार्थना की। बादशाह की विनती से उन्होंने एक सुन्दर भजन गाया। बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उनका यथोचित् सत्कार करके लौट आया। एक रोज कचहरी में अकबर ने तानसेन से उस दिन वाला भजन गाने को कहा। तानसेन ने गाया जरूर पर बादशाह को उस दिन जैसा आनन्द नहीं मिला।

अकबर ने उनसे पूछा—'उस दिन जैसा आनन्द आज क्यों नहीं मिला ?' तानसेन ने जवाब दिया कि 'मैं आपको प्रसन्न करने के लिए गाता हूँ। किन्तु हमारे गुरुजी ने आपको राजी करने के लिये नहीं गाया था, बल्कि बादशाहों के बादशाह को प्रसन्न करने के लिये गाया था। इसी कारण यह अन्तर मालूम देता है अन्यथा भजन तो वही है।

संगीत के ताल एवं लयबद्ध स्वर प्रवाह का प्रभाव परिणाम मनुष्यों की भाव सम्वेदना को तरंगति करने में ही नहीं अन्यान्य क्षेत्रों में भी आश्चर्यजनक कार्य करता देखा गया है। प्राणियों को एक स्थान पर खींच बुलाना, उनकी मनःस्थिति बदल देना, प्रजनन शक्ति बढ़ जाना जैसे सफल प्रयोग थलचरों, जलचरों, नभचरों पर किये जाते रहे हैं। दुधारू पशुओं का दूध इस माध्यम से काफी बढ़ा है। खूँखारों का स्वभाव नरम किया गया है। इसी प्रकार वनस्पतियाँ संगीत सुनकर जल्दी बढ़ी हैं। वृक्षों ने अधिक फल दिये हैं। प्राचीन काल से संगीत के ऐसे ही लाभों के सम्बन्ध में कितनी ही किम्बदन्तियाँ प्रचलित हैं। बीन की आवाज सुनकर साँप एवं हिरन का मोहित हो जाना, मेघ-मल्हार से बादल बरसने लगना, दीपक राग से बुझे दीपक जल जाना आदि अनेकों बातें सुनने को मिलती रहती हैं। उन्हें छोड़ भी दिया जाय तो भी आज के युग में संगीत की शक्ति से न केवल भावना लहराने का वरन् अन्य प्रकार के भौतिक लाभों को भी प्राप्त किया जा रहा है। रोग निवारण में संगीत ने, ध्वनि ऊर्जा ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करनी आरम्भ कर दी है और लगता है कि अगले दिनों औषधि उपचार, शल्य क्रिया आदि की तरह चिकित्सा प्रयोजनों में एक नया प्रयोग संगीत का भी सम्मिलित हो जायगा। मानसिक रोगों के निवारण में तो उसका और भी अधिक चमत्कारी परिणाम देखा गया है। यह संगीत कण्ठ और वाद्य यन्त्रों के समन्वित उपयोग से विस्तृत होता है। अध्यात्म विज्ञान में यही कार्य अधिक शक्तिशाली रूप से मंत्र शक्ति एवं यज्ञीय ऊर्जा के संयुक्त उपचार से बन पड़ता है।

संगीत और आध्यात्मिकता का सम्बन्ध

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद का कहना है संगीत और आध्यात्मिकता का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस सन्दर्भ में कि—"इतिहास से विरासत में हमको भारतीय संगीत जैसी अमूल्य निधि मिली है। अन्य देशों के संगीतों की अपेक्षा इसमें जो विशिष्टता है वह मान्यताओं के कारण है, जो संगीत के सम्बन्ध में हमारे पूर्वजों की थी। भारत में संगीत क्षणिक आमोद-प्रमोद व अतृप्त तृष्णा की वस्तु न होकर समस्त ब्रह्माण्ड अथवा व्यक्त जगत् से ऐक्य का आभास है, चिरानन्द प्रदान करने वाली आध्यात्मिक साधना है और सांसारिक दुखों से मुक्ति प्रदान करने और सांसारिक दुखों से मुक्ति प्रदान करने और ब्रह्म तक मानव को ले जाने वाला मार्ग है। संगीत के इस स्वभाव और ध्येय को हमारे लोगों ने हमारी सभ्यता के प्रभात में पहचान लिया था और जान-बूझकर संगीत का विकास इन्हीं आदर्शों के अनुकूल किया था। उन्होंने संगीत और जीवन में किसी प्रकार की खाई न खोदी, किसी प्रकार की दीवार न खड़ी की। यह कहना अनुचित न होगा कि उन्होंने संगीत को हमारे जीवन में इस प्रकार बुन-दिया कि सहस्र शताब्दियों के पश्चात् भी वह उसका अविच्छिन्न अंग बना हुआ है। संसार में असम्भवतः ऐसा अन्य कोई देश नहीं है जहाँ संगीत इतने पुराने युग से जन-जीवन में इतना व्याप्त हो जितना कि वह भारत में सहस्रों वर्षों से रहा है। संसार की सब जातियों की अपेक्षा भारतवासियों के कहीं अधिक संगीत प्रेमी होने की बात का जिक्र मैगस्थनीज भी कहा गया है। ईसामसीह पूर्व १५० लगभग लिखे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गये इण्डिका नामी अपने ग्रन्थ में आर्यन ने मैंगस्थनीज का यह कथन उद्धृत किया है कि "सब जातियों की अपेक्षा भारतीय लोग संगीत के कहीं अधिक प्रेमी हैं।" सहस्त्रों वर्षों से हमारे घरेलू और दुनियावी जीवन में लगभग सभी काम किसी न किसी प्रकार के संगीत से आरम्भ होते रहे हैं।

"जन्म से लेकर मृत्यु तक यह संगीत हमारे साथ बना रहता है। जिस दिन बालक संसार में अपनी आँखें खोलता है उस दिन से ही संगीत से भी उसका परिचय हो जाता है। नामकरण, कन्छेद, विवाह आदि में तो संगीत होता ही है। ऐसा कोई तीज त्यौहार नहीं होता, ऐसा कोई पर्व और संस्कार नहीं होता, जिसमें संगीत न हो। घर में ही क्यों ? हमारे यही खेत में और चौपाल में, चक्की चलाने और धान कूटने में संगीत चलता ही रहता है।" अतः यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि हमारे जन-जीवन के उल्लास को प्रकट करने का तो यह प्रभावी साधन है ही, साथ ही यह उसको गतिमान बनाने का भी प्रबल अस्त्र है। संगीत उनको रचनात्मक कार्यों में अग्रसर होने की सामूहिक स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करता है और उनको वह सामूहिक शक्ति देता है जो उन्हें उन कामों के करने के योग्य बना देती है जो वे अकेले या समूह में संगीत की प्रेरणा के बिना न कर पा सकते।

"इतना ही क्यों ? भारत में संगीत ने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में वह काम किया है जो सम्भवता : और कोई शक्ति शताब्दियों के परिश्रम के पश्चात् भी न कर पाती। यद्यपि भारत का साधारण जन वर्णमाला से सर्वथा अपरिचित ही है। किन्तु फिर भी वह आध्यात्मिक ज्ञान से शून्य नहीं है। देश के किसी भी दूर से दूर के ग्राम में आप चले जाइए आपको वहाँ का साधारण कृषक भी अनेक आध्यात्मिक तथ्यों से पूर्णतया परिचित मिलेगा।

श्री कजिन्स ने अपने ऐसे ही एक अनुभव का जिक्र कुछ दिन पूर्व परिजन पत्रिका में किया था। उन्होंने लिखा था कि एक ग्राम में वह एक सज्जन से कई घण्टे गूढ़ दार्शनिक तत्वों की बातचीत करते रहे। उस सज्जन के ज्ञान से अत्यन्त प्रभावित होकर चलते समय उन्होंने उक्त सज्जन से कहा कि वह अपना पता लिखकर उनको दे दें। किन्तु उनके आश्चर्य की उस समय कोई सीमा नहीं रही जब तक सज्जन ने ऐसा करने में इस कारण अपनी असमर्थता प्रकट की क्योंकि वह वर्णमाला से सर्वथा अपरिचित था। मेरे विचार से कि वर्णमाला से अपरिचित होने पर यदि हमारा साधारण जन इस प्रकार का ज्ञान रखता है तो उसका एक प्रमुख कारण यही है कि संगीतमय गाथाओं और कथाओं ने उसके हृदय में उस ज्ञान को बैठा दिया है। मैं कभी कभी सोचा करता हूँ कि क्या कारण है कि भारत ही एक ऐसा देश है जिसमें तुलसी या कबीरदास जैसे कवियों की कृतियों से अनपढ़ लोग भी करोड़ों की संख्या में परिचित हैं । पर मैं समझता हूँ कि इस रहस्य का हल यही है कि हमारे जीवन में इतना बुरा हुआ है कि सहज, में ही इन कवियों के मधुर पद घर-घर और ग्राम-ग्राम की सम्पत्ति बन गये। आज भी ऐसे अनेक लोग मिल जायेंगे जो सर्वथा अपढ़ होते हुए भी तुलसी के रामचरित-मानस के अनेक पद गाकर सुना सकते हैं, और कबीर के पदों का तो कहना ही क्या है ! अतः भारत के सांस्कृतिक आध्यात्मिक विकास में संगीत का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हमारे देश के प्राचीन युग में संगीत शास्त्रियों और संगीतज्ञों का भी बड़ा ऊँचा दर्जा होता था जैसा कि संगीत शास्त्रियों की मुनि और ऋषि की उपाधियों से पूर्ण तथा स्पष्ट है। इन संगीत शास्त्रियों का देश के मानसिक निर्माण में इसलिए भी पर्याप्त भाग होता था क्योंकि प्राचीन युग में संगीत शास्त्र का अध्ययन शब्द शास्त्र के अध्ययन के साथ ही वैदिक शिक्षा व्यवस्था का अनिवार्य अंग था।

भारतीय संगीत कल्याण साधना का एक मार्ग है और सामूहिक शिक्षा का एक ढंग है। अतः यह आवश्यक है कि अपने संगीत को पुनः अनुप्राणित करने के लिये हम इन दोनों पक्षों से इसका सम्बन्ध फिर जोड़ दें। मुझे शंका है कि इस बारे में उतना विचार नहीं किया गया है जितना कि होना चाहिये।

आज का भारतीय संगीत जन जीवन की गंगा से कुछ दूर ही है। वह तो कुछ नगरों की सम्पत्ति बन गया है। मैं यह मानने के लिए प्रस्तुत नहीं हूँ कि उस संगीत की अच्छाई-बुराई को नागर की परख सकते हैं। हमारे यहाँ तो संगीत की कसौटी यही है जड़ दीप उससे जल उठें। तब फिर भला यह कैसे कहा जा सकता है कि ग्रामवासी का हृदय उससे प्रफुल्लित न हो जायेगा ? यदि तुलसी और कबीर ने अपने संगीत से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्तर भारत के ग्राम्य जीवन को आध्यात्मिकता से प्लावित कर दिया और अनपढ़ों को पण्डित बना दिया था तो कोई कारण नहीं है कि आज का संगीतज्ञ वैसा क्यों नहीं कर सकता है। इस लोक तंत्र के युग में यह आवश्यक है कि हमारे संगीतज्ञ हमारी जनता से अपना सम्बन्ध पुन: वैसा ही स्थापित करें जैसा पहले युग में था और जो अँग्रेजी युग की नगर प्रधान प्रवृत्तियों के कारण टूट गया था। यह इसलिए आवश्यक है कि आज हमारे संगीतज्ञों को वैसा अवकाश-पूर्ण जीवन व्यतीत करने की सुविधा और आर्थिक साधन नहीं है जो इन्हें सामन्तों और राजाओं के युग में प्राप्त थी।

आवश्यकता है कि आज फिर से संगीतज्ञ मीरा और तुलसी की परम्परा को पुनर्जीवित करें। आज भी मीरा और तुलसी के पदों के लिए जनता के हृदय में आदर है। श्रद्धा के और उनके लिए गरीब अमीर सभी खर्चा करने को भी तैयार होते हैं। अत: मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि हमारे संगीत का जन-जीवन की गंगा से सम्बन्ध हो गया तो वह नवजीवन प्राप्त कर लेगा और अपने को सार्थक और सफल बना लेगा।

"किन्तु जनजीवन के सम्पर्क का यह अर्थ कदापि नहीं है कि संगीत के स्वरूप को विकृत कर दिया जाए। यदि ऐसा हुआ तो वह अपना मिशन कदापि पूरा नहीं कर सकेगा। हमारे संगीत का स्वरूप अपने स्वभावगत उद्देश्य के अनुकूल ही बना है। उदाहरणार्थ, हमारे संगीत में रागों का स्थान प्रधान है। यदि राग नहीं तो हमारा संगीत भी नहीं। किन्तु रागों का यह महत्व अन्य बातों के अतिरिक्त इसलिये भी तो है कि हमारे संगीत का मन में एक और केवल एक रस का उद्रेक करना है। मानसिक शिक्षा और समय का यह बड़ा प्रभावी तरीका है। अत: स्पष्ट है कि हमारे संगीत का जो ऐतिहासिक स्वरूप है उसको विकृत करके हम उसे जीवन के लिए नहीं रख सकते जैसा कि वह है और होना चाहिये। मुझे इस बात का दुख और खेद है कि हमारे देश की प्रचलित परिपरियाँ संगीत की परम्परा को विकृत कर रही हैं और इस प्रकार हमारी भारी हानि कर रही हैं। मैं तो यही आशा करता हूँ कि इस प्रश्न पर संजीदगी से विचार किया जायगा और देश और जाति के लिए संगीत को मानसिक और चारित्रिक उन्नति का एक साधन और जबरदस्त साधन बनाने का प्रयत्न किया जायगा न कि केवल मन बहलाव और विलास का एक जरिया।

अब समय आ गया है कि संगीत का हमारी शिक्षा व्यवस्था से घनिष्ट सम्बन्ध कायम किया जाए। उसका यह अर्थ नहीं कि यह विश्व-विद्यालयों की परीक्षाओं के लिए एक विषय मात्र हो जाए। इसका अर्थ यह है कि हमारे विद्यार्थियों की सामाजिक या सामूहिक चेतना के निर्माण में संगीत का भी अंश हो। हमारे यहाँ तो भगवान भी बिना मुरली या डमरू के पूरे नहीं समझे गए हैं। मानव का तो प्रश्न ही क्या ? यह अकारण ही नहीं है कि विद्या की अधिदेवी सरस्वती के हाथ में पुस्तक के साथ-साथ वीणा भी बताई जाती है। उसका यही अर्थ है कि किसी भी व्यक्ति की शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान से ही नहीं पूरी होती वरन् उसके लिए यह भी आवश्यक है कि उसकी मानसिक वृत्तियों का भी ऐसा परिमार्जन हो गया हो कि उसे वैराग की कोई भी बात अच्छी न लगे और उसके हृदय-तन्त्री के तार सर्वदा की मधुर राग से गूँजते रहें । आज हमारी शिक्षा ऐसी नहीं है और इसीलिए आप हमारे यहाँ मस्तिष्क और हृदय का ताल-मेल ठीक नहीं दिखाई देता। प्लैटो ने भी इस बात पर जोर दिया था कि संगीत के बिना मानव की शिक्षा पूरी नहीं मानी जा सकती। अत: हमानरे संगीत शास्त्रियों और शिक्षा शास्त्रियों दोनों को ही यह विचार करना है कि यह सम्बन्ध कैसा हो और किस प्रकार कायम किया जाय। अनेक युग बीते तब भारतीय संगीत का उद्भव भगवान शिव से हुआ था। तब से समय के प्रांगण में अनेक राजा महाराजा, सेना जी और विजेता आए और विलुप्त हो गये, अनेक साम्राज्य बने और बिगड़े, अनेक दुर्दिन आये और दु:ख के पहाड़ टूटे किन्तु भारत बना रहा और भारतीय संगीत बना रहा। इस मृत्युशील संसार में हमारे इतने दीर्घ जीवन का यही रहस्य है कि हमने आध्यात्मिकता का दामन नहीं छोड़ा है—ऐसी आध्यात्मिकता का जो दार्शनिक की शुष्कता से कहीं दूर भगवान की गीता में है और भक्तों के गान में है। यदि इस ओर ध्यान दिया गया तो निश्चय ही भगवान शिव का यह वरदान, यह भारतीय संगीत, हमारे जातीय जीवन को सर्वदा गंगामृत के समान असर बनाने वाला बना रहेगा।

पैराणिक कथा है कि एक बार देव-दनुजों में भयंकर युद्ध हुआ। इस बार देवताओं की शक्ति क्षीण हो गई थी इसलिये उनहें असुरों के द्वारा पराजित होना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ा। आत्म-रक्षा के लिए देवताओं ने पृथ्वी, समुद्र आकाश जहाँ भी छिपने का प्रयत्न किया, असुरों ने उन्हें ढूँढ़ निकाला। पीड़ित देवगण ब्रह्माजी के पास गये और बोले—भगवन् आप ही हमारी सुरक्षा के लिए कुछ उपाय बतायें ?

प्रजापति ने कहा—देवगणों ! विशाल ब्रह्माण्ड में फैली स्वरचेतना में लीन हो जाओ तभी मुक्ति मिलेगी। देवताओं परस्पर विचार किया और भगवती सरस्वती के पास जाकर शरण देने की प्रार्थना की। देवी ने देवताओं को अपनी संगीत चेतना में छिपा लिया। उस दिन से संगीत रूप में देवताओं की उपासना होने लगी। जो लोग श्रद्धापूर्वक संगीत में लीन हो जाते हैं उनकी देवता रक्षा करते हैं। इतना ही नहीं संगीत अर्थात् नादब्रह्म की साधना करने वाले—स्वर ब्रह्म के उपासक आत्मोत्कर्ष का लक्ष्य भी प्राप्त कर लेते हैं।

संगीत से सरसता की अभिवृद्धि

सम्पन्नता, बलिष्ठता, सुन्दरता, विद्वता, प्रतिभा आदि विभूतियों की क्षमता से सभी परिचित हैं। जिनके पास यह विशिषताएँ जितनी अधिक मात्रा में हैं वह उतना ही अधिक गौरवान्वित होता और प्रसन्नता अनुभव करता है। इनमें से जो जितनी मात्रा में कम है, उन्हें उतना ही दरिद्र या पिछड़ा हुआ समझा जाता है।

पर यह सभी ऐसी हैं जो प्रयत्न और परिस्थितियों के तालमेल से हस्तगत होती हैं । जिन्हें अवसर नहीं मिलता वे इच्छा रखते हुए भी उनमें से किन्हीं को भी प्राप्त नहीं कर पाते।

पर इन सबसे बढ़कर एक और सम्पन्न है, वह है प्रसन्नता। यह पूर्णतया अपने व्यक्तित्व पर निर्भर है। उसे प्राप्त करने के लिए सरसता की आवश्यकता है न कि साधनों की। उमंगें ही स्वभाव को भावनाशील बनाकर इस विभूति को अभीष्ट मात्रा में उपलब्ध कराती हैं। अपनी परिस्थितियों, उपलब्धियों पर सन्तोष करके और पिछड़ों के साथ अपनी तुलना करते हुए यह सोचा जा सकता है कि जो असंख्यों को नहीं मिला, वह हमें मिला है। पूर्णता तो किसी को भी नहीं मिली, पर जो जिसे जितना मिला है उसके लिए भी हो सकता है कि अनेकों तरसते हों। यह विचार सन्तुलन है, जो सहज ही प्रसन्नता प्रदान कर सकता है। अपने से सम्पन्नों के साथ अपनी तुलना की जायेगी तो सदा अपनी दरिद्रता का ही भान होता रहेगा और खिन्नता बनी रहेगी।

विचारणा से भी अन्तराल की गहराई में है—भावना। भावनाएँ प्रत्यक्ष विशेषताओं की तुलना में कहीं अधिक गहराई पर हैं । वे यदि उच्चस्तरीय हों तो संसार में जहाँ कहीं भी आनन्द है, उसमें से अपना भाग ले सकती हैं। फूलों में प्रत्यक्ष नहीं, उनके अप्रत्यक्ष कलेवर में ऐसा मधुर रस होता है जिसे मधुमक्खी अपने मुख स्राव के साथ सम्मिलित करके मीठा बना लेती है। यों प्रत्यक्षत: फूल मीठे नहीं होते परन्तु वे जैसे भी कुछ हैं, मधुमक्खी के मुख में पहुँचने भर से मीठे बन जाते हैं।

अनेक सुखद वस्तुओं के साथ-साथ प्राकृतिक सौन्दर्य भी ऐसा है कि यदि उसे भावनापूर्वक निहारते रहा जाय तो सब ओर आनन्द का निर्झर झरता दिखाई पड़ेगा। वन्य जीवन, घोंसले के पक्षी, एकान्तसेवी साधु इसी को भावनापूर्वक देखते और फूले नहीं समाते। बालकों को भी अपनी निश्छलता और निश्चिन्तता के कारण यह प्रकृति सौन्दर्य लिपटने के लिए आमन्त्रित करता है और वे उसके निकट दौड़े चले जाते हैं।

आनन्ददायक अनेक प्रयोजनों में एक है—संगीत। वह यों वाद्य यंत्रों और कण्ठ की मधुरता के साथ निस्सृत होता है। किन्तु बिना इनके भी आन्तरिक मस्ती के साथ अपने आपको लहराया जा सकता है। तरंगित करके उमंगों से भरा जा सकता है। प्रतयक्ष साधनों से अपने अन्तरंग में उभरने वाली मस्ती अपने को ही नहीं, दर्शकों को भी तरंगित करती है। गायन, वादन, अभिनय तीनों को मिलाने से संगीत बनता है। इसका प्रयत्नपूर्वक अभ्यास भी किया जा सकता है अथवा जहाँ इसका माहौल हो, वहाँ जाकर उस रस वर्षा का आनन्द लिया जा सकता है।

प्रसन्नता भरे अवसरों पर अक्सर संगीत का प्रबन्ध किया जाता है क्योंकि यह लागत की तुलना में लाभदायक अधिक है। भीतर से भावनापूर्वक संगीत की तरंगें उभारना निजी कौशल है। पर जिनमें यह स्वत: उद्भूत नहीं होता, वे संगीत के वातावरण में जाकर उसका आनन्द लाभ कर सकते हैं।

यो अमृत में भी विष मिलाया जा सकता है। दूध में खटाई डालकर उसे फाड़ा जा सकता है। रस में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विष मिलाकर उसे मृत्युदूत बनाया जा सकता है। संगीत में कामुकता से मिलाकर उसे उत्तेजक तो बनाया जा सकता है, पर वह उत्तेजना ऐसी होती है जैसी कि मद्यपान से मिलती है। क्षणिक उल्लास उत्पन्न करके मनुष्य की दशा वैसी हेय बना देती है जैसे नशे की खुमारी उतरने पर शराबी की होती है।

संगीत यदि निर्दोष हो तो उसमें मनुष्य की भावुकता भरी प्रसन्नता थिरकती है और वह नाड़ी समूह में सम्मिलित होकर एक ऐसा पोषण प्रदान करती है जो मन को हलका बनाने और उत्साह को जगाने में विशेष रूप से काम आता है।

थके हुओं की थकान उतारने के लिए विवाह शादियों में मंगल आयोजनों पर संगीत चलता है। लड़ाई में जाने वाले सैनिकों में उत्साह भरने के लिए बाजे बजाये जाते हैं। कथा के साथ कीर्तन जुड़ता है क्योंकि उत्तेजित भावनाओं में धर्मश्रद्धा का समावेश करना कहीं अधिक सरल पड़ता है। मध्यकालीन सन्तों ने अपनी प्रचार प्रक्रिया को सजीव, समर्थ और अन्तराल के मर्मस्थलों तक पहुँचाने के लिए संगीत का माध्यम अपनाया था। मीरा, सूर, कबीर आदि अधिकांश भाव जागृति के क्षेत्र में काम करने वालों ने संगीत का माध्यम अपनाया था। जो बड़ी मण्डली बना सकते थे वे चैतन्य महाप्रभु की तरह शानदार माहौल बनाते थे। जिन्हें उतना सरंजाम जुटाने की सुविधा नहीं थी, वे नारद की तरह एकाकी गायन-वादन के दोनों कृत्य कर लेते थे।

शंकर का डमरू, सरस्वती की वीणा, कृष्ण की मुरली देवता और अवतारों के साथ भी आ जुड़ी थी। सच्चिदानन्द को, परब्रह्म की प्राप्ति में आनन्द का महत्वपूर्ण स्थान है और उसे जगाने बढ़ाने के लिए संगीत को भली प्रकार माध्यम बनाया जा सकता है।

शब्द ब्रह्म, नाद ब्रह्म की अध्यात्म तत्वज्ञान और साधना विधान में गहरी चर्चा है। इस साधना के प्रवीण पारंगत मेघ मल्हार गाकर वर्षा कराते और दीपक राग गाकर बुझी हुई ज्योति जलाते रहे हैं। यह प्रत्यक्ष भी हो सकता है और अलंकारिक भी। संगीत से शुष्क नीरस मनों में सरसता बरस सकती है और बुझे हुए उत्साह में नए सिरे से स्फूर्ति की ज्योति का उभार दृष्टिगोचर हो सकता है।

संगीत पर साँप लहराता है और हिरन चौकड़ी भरना भूल जाता है। यह उदाहरण मन की चंचलता और उद्दण्डता को भी नियन्त्रण में लाने के लिए प्रयुक्त हो सकता है। उद्विग्न, चिन्तित और असन्तुष्ट खिन्न विपन्न मनःस्थिति में संगीत का उपचार की तरह प्रयोग किया जा सकता है।

चिकित्सा विज्ञान के शोध सन्दर्भ में यह एक नया अध्याय जुड़ा है कि शारीरिक रोगों को संगीत की सहायता से सरलतापूर्वक अच्छा किया जा सकता है। इससे रक्त संचार और स्नायु शैथिल्य पर चमत्कारी प्रभाव प्रस्तुत होता देखा गया है। मानसिक रोगों में तो इसका प्रभाव और भी अधिक उत्साहवर्धक देखा गया है।

मन्दबुद्धि, विक्षिप्त, उद्विग्न, सनकी, आतुर, आवेशग्रस्त लोगों को विशेष प्रकार की संगीत ध्वनियाँ सुनाकर रोगमुक्त किया गया है।

जापान में संगीत को बाल कक्षाओं में एक अनिवार्य विषय बना दिया गया है और बड़ी कक्षाओं में उसकी प्रवीणता प्राप्त करने के लिए कहा जाता है। सद्भावनाओं को उभारने और जीवन दिशा को आनन्द की ओर अग्रसर करने के लिए संगीत का महत्व सर्वत्र माना गया है।

संगीत सृष्टि का भाव भरा उल्लास

संगीत में ध्वनि तरंगों के कितने ही मोड़-तोड़ और घुमाव ऐसे होते हैं जो उन्हें एक विशेष प्रकार के प्रवाह में निस्सृत करते हैं। ताल वाद्यों का भी क्रम साथ-साथ चलने पर अपने तरह के "रिद्म" बनते हैं। न केवल तरंग प्रवाह वरन् "रिद्म" क्रम का समावेश होने से ध्वनि तरंगों का एक ऐसा विशिष्ट उपक्रम बन पड़ता है जो न केवल चेतन वरन् जड़ को भी प्रभावित करता है।

लोहे के पुलों पर सैनिकों को कदम मिलाकर चलने की मनाही होती है। कारण कि उस संयुक्त तालबद्धता में पुल के टूट गिरने का खतरा रहता है। इतना ही नहीं एक विशिष्ट प्रकार के रिद्मों में मकानों की छतों में लगे हुए लोहे के गर्डर टूट कर गिर सकते हैं। इसी प्रकार ताल या सप्त सुरों के अनुरूप उत्पन्न हुआ स्वर प्रवाह ही धातुओं, इमारतों तक को प्रवाहित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता है। इन उपक्रमों से जलाशय तक प्रभावित हो सकते हैं।

सचेतनों पर तो संगीत का जो प्रभाव पड़ता है उसका तो कहना ही क्या ? वनस्पतियों पर उसका बहुत अच्छा प्रभाव पाया गया है। पौधे अधिक तेजी से बढ़ते हैं, और फसल का उत्पादन भी अधिक होता है। संगीत के रिकार्ड बजाकर कृषि और बागवानी दोनों पर ही उस प्रभाव का लाभ उठाया जा रहा है।

जल-जन्तुओं को स्तब्ध एवं आकर्षित करने की संगीत की क्षमता भी वैज्ञानिक कसौटियों पर कसी और खरी पाई गई है। मछलियाँ मोहित होकर भाग-दौड़ बन्द कर देती हैं और मछुओं के जाल में आसानी से फँस जाती हैं। मछलियों की प्रजनन शक्ति अधिक बढ़ जाती है। वे उन अण्डों में बर्वाद कम होती हैं और पकती अधिक हैं।

पक्षियों में यह प्रभाव मुर्गियों और कबूतरों पर जाँचा गया है। संगीत के शौकीन पक्षी उत्तेजित होते हैं उनकी अभिवृद्धि और कुशलता में बढ़ोत्तरी होती है। वे अण्डे संख्या में और भार में अधिक होते हैं इसलिए उस वातावरण में पलने वाले पक्षी जहाँ जल्दी प्रौढ़ होते हैं वहाँ उनकी प्रजनन शक्ति भी बढ़ती है। बतखों पर भी यह प्रयोग सफल हुआ। उन्हें इस प्रभाव से प्रभावित होने का अवसर मिलता है।

पाश्चात्य देशों में गायों को दुहते समय उन्हें संगीत के रिकार्ड सुनाकर तन्मय किया जाता है फलतः अधिक दूध मिलता है। भेड, बकरियों के सम्बन्ध में यह बात है। मात्र भैंस ही ऐसा कम बुद्धि वाला जानवर है जिस पर संगीत का कम प्रभाव पड़ता है। विदेशों के चिड़ियाघरों में यह प्रयोग बहुत सफल रहा है कि उदास रहने वाले जानवरों को प्रसन्न रखने के लिए उन्हें समय-समय पर संगीत रिकार्ड सुनाये जाते रहें। हाथी, घोड़े जैसे बुद्धिमान समझे जाने वाले प्राणी इसमें बहुत रस लेते और खुश रहते हैं।

सपेरे बीन के आधार पर ही उनका तमाशा दिखाते हैं और इस आधार पर उन्हें बिलों से बाहर निकालकर पकड़ भी लेतें हैं। हिरनों को वेणुवादन की कला से मुग्ध करके उन्हें पकड़ने की कला बहेलिये लोग जानते थे और जाल बिछाकर पकड़ने के आदी थे। जो इस कला को जानते थे वे इसी उपाय को अपनाने में सरलता अनुभव करते थे।

कहा तो यहाँ तक जाता है कि बुझे हुए दीपकों को जलाने में दीपक राग और बादलों को बरसाने में मेघ मल्हार बहुत हद तक संफल होता था। आज की परिस्थितियों में यह कहाँ तक सफल होगा, कहा नहीं जा सकता।

संगीत की उपयोगिता इसी हद तक सीमित नहीं है कि वह मनुष्यों के मनोरंजन के साथ-साथ भावना तरंगित करने का आनन्द भी देता है वरन् इसमें भी है कि उसका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन पररोग निवारण पर, अच्छा असर पड़ता है और उसे एक विशेष चिकित्सा पद्धति के रूप में भी विकसित किया जा सकता है। उससे दुर्बलता सुधारने में और रोग कीटाणुओं को नष्ट करने में सहायता मिलती है। संगीत एक बलवर्धक टॉनिक भी है।

अनिद्रा दूर करने में संगीत उपचार बहुत कारगर सिद्ध हुआ है। बच्चों को सुलाने के लिए पुरातन काल की माताएँ लोरियाँ गाया करती थीं। अब उस झंझट से बचने के लिए हलके संगीत रिकार्ड लगा दिए जाते हैं। इतना ही नहीं, जिन वयस्कों को भी देर में नींद आती है उनके लिए बिना गीत का संगीत जिसमें ध्वनि तरंगें ही काम करती हों, एक उपयोगी उपचार सिद्ध हो रही है। शिकागो के डाक्टर मैकमूलर ने तो मानसिक रोगों की चिकित्सा प्रक्रिया में संगीत को ही एक माध्यम बनाया और अच्छी ख्याति प्राप्त की है। डाक्टर ऐटकिंसन का वह तरीका इस उपचार के सामने फीका पड़ गया है। जिसमें वे अनिद्रा के रोगियों को एक से दस तक गिनती गिनने की पुनरावृत्ति करते हुए ऐसे रोगियों का उपचार किया करते थे। आध्यात्मिक चिकित्सा में राम या ॐ जैसा मानसिक जप करने पर भी जल्दी नींद आने की बात कही है। कुछ लोग पुस्तकें पढ़ते ही नींद आ धमकने की बात कहते हैं।

सर्दी या गर्मी का ऋतु प्रभाव बढ़ने पर कई प्रकार के रोग खड़े होते हैं। जाड़े के दिनों में खाँसी, जुकाम, दर्द, निमोनिया आदि की शिकायतें खड़ी होती हैं। गर्मी में लू मारना, भूखं न लगना, सिर दर्द, अनिद्रा , जलन आदि की व्यथाएँ खड़ी होती हैं इनके लिए उन रोगों के अनुरूप ध्वनि तरंगों का प्रयोग वैज्ञानिकों ने किया है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और उनका सत्परिणाम सामान्य दवा-दारू की अपेक्षा कम नहीं, अधिक प्रभावोत्पादक ही पाया है।

चित्त की एकाग्रता के लिए, भाव समाधि के लिए नाद ब्रह्म का उपाय सरलतम और नवीनतम उपचार है। प्राचीन काल के योगीजन अन्तरिक्षीय दिव्य ध्वनियों को सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय को जागृत करके सुना करते थे। अब वह कार्य स्थूल ध्वनि प्रवाहों में भी सम्भव हो गया है। इस प्रकार ध्यान धारणा में निर्यात्त अब कई विशिष्ट प्रकार के ध्वनि प्रवाहों का सफल प्रयोग किया जा सकता है। इसमें अपेक्षाकृत सरलता भी रहती है। यह नादब्रह्म की साधना है।

हर्षोल्लास के वातावरण को कई गुना बढ़ा देने की क्षमता संगीत में है। यही कारण है कि त्यौहारों, संस्कारों, पर्वों पर विशेष रूप से गीत वाद्यों का आयोजन किया जाता है। विवाह शादियों में महिलाएँ इसी प्रयोजन में विशेष रूप से दत्त-चित्त रहती हैं और अपनों तथा उपस्थित जनों का मन प्रफुल्लित करती हैं। पुरुष गायक भी अपने अनुभवों के आधार पर इस विद्या का अपने ढंग से उपयोग करते हैं और उल्लास की अभिवृद्धि में सहायक होते हैं।

कुछ पक्षी अपनी कर्णप्रिय मधुरता के लिए प्रख्यात हैं। कोयल की कूक, मोर का उद्घोष, भ्रमरों का गुंजन यह सभी प्रसिद्ध हैं। झींगुर की झंकार ही नहीं, मेंढकों की टर्र-टर्र भी प्रकृति के अन्तराल को उत्तेजित करती है और श्रवणकर्त्ताओं का मन मोहती है। इस प्रकार के और भी अनेक पक्षी हैं, जिनके कलरव से सृष्टि के आनन्ददायक तत्वों का अभिवर्धन होता है। उससे सभी जड़ चेतन प्रभावित होते हैं।

वैज्ञानिकों के मतानुसार मानवी संरचना के निकटवर्त्ती प्राणियों में बन्दर, खरगोश प्रमुख हैं। चूहों की संरचना में ही मनुष्य संरचना से बहुत कुछ समानता मिलती है। इस आधार पर संगीत के प्रभाव को जाँचने के लिए उपरोक्त जन्तुओं पर विशेष रूप से परीक्षण किये गये हैं। इन परीक्षणकर्त्ताओं में डा० जार्ज फैर विल्सन अग्रणी रहे हैं। उनके प्रकृति भेद से पृथक्-पृथक् संकेतों का प्रभाव जाँचा और कहा है कि यदि सही चुनाव बन पड़े तो यह प्राणी विभिन्न स्तर के लाभ संगीत द्वारा उठा सकते हैं। उनकी अभिवृद्धि और प्रसन्नता में निश्चित रूप से उत्साहवर्धक प्रभाव पड़ता है।

कई प्राणियों को कई संगीतों के प्रति ३४ दिन के अभ्यास से इस प्रकार प्रशिक्षित किया जा सकता है कि उनकी प्रिय ध्वनि तरंगें निस्सृत हो जाने पर वह भोजन की तलाश की बात को भी छोड़कर उस मधुर स्वर को सुनने के लिए अत्यन्त आतुर होते हैं। ध्वनि बन्द हो जाने पर अप्रसन्नता और खीज प्रकट करते हैं। देखा गया है कि प्राणी प्राय: उस स्वर को अधिक पसन्द करते हैं जो उनके अपने स्वर से मिलता-जुलता हो।

वनमानुष, चिपांजी, गोरिल्ला जाति के बन्दर मनुष्य जैसे स्वभावों के अभ्यस्त होते हैं। उन्हें प्रिय संगीत सुनाकर उत्साहित किया जा सकता है। उस वर्ण के प्राणियों को वंशी और वायलिन का स्वर अन्य वाद्य यंत्रों की तुलना में अधिक पसन्द आता है।

दरियाई घोड़ा और गेंडा अपनी गहरी नींद के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हें बेचैन करने वाली भूख ही नींद से उठा सकती है। उनके जगाने में संगीत का बहुत अच्छा प्रभाव होता देखा गया है। वे सुनते ही चौकन्ने हो जाते हैं और इधर-उधर भागने की अपेक्षा अपने स्थान पर बैठे-बैठे तब तक संगीत सुनते रहते हैं जब तक कि वह बन्द नहीं हो जाता। सरोद वादन पर तो उन्हें मुँह बनाये झूमता हुआ देखा गया है। हाथी, घोड़ों को वाद्य यंत्रों की ध्वनि पर नाचता देखा गया है। रीछ, बन्दर इसी का अनुसरण करते हैं। वन विलावों को पाइप बैण्ड अन्य वादनों की अपेक्षा अधिक उत्साह प्रदान करते देखा गया है। मगर घड़ियालों को भी संगीत सुनने का चस्का पड़ जाता है, तब वे भी लहराने लगते हैं और अपनी अनुकूल प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार कुत्तों और लोमड़ियों को भी प्रभावित होते देखा गया है।

विचारणीय है कि जब सामान्य पशु-पक्षी, साँप बिच्छू तक संगीत से प्रभावित होते हैं तो उसका प्रभाव मनुष्य जैसे भावनाशील प्राणी पर क्यों न पड़ेगा। यह प्रभाव प्राय: उपयोगी ही सिद्ध होता है।

संगीत-ध्वनि की एक सुनिश्चित भौतिक प्रक्रिया है और जिस प्रकार प्रकृति और प्राणि जगत् में प्रकाश और गर्मी का प्रभाव होता है, उससे उनके शरीर बढ़ते, पुष्ट और स्वस्थ होते हैं। उसी प्रकार ध्वनि में भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तापीय और प्रकाशीय ऊर्जा होती है और वह प्राणियों के विकास में इतना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है, जितना अन्न और जल। पीड़ित व्यक्ति के लिये तो संगीत उस रामबाण औषधि की तरह है, जिसका श्रवण पान करते ही तात्कालिक शांति मिलती है।

लोग कहेंगे यह भावुक अभिव्यक्ति मात्र है, किन्तु वैज्ञानिकों और शोधकर्त्ताओं ने संगीत की उन विलक्षण बातों का पता लगाया है, जो मनुष्य शरीर में शाश्वत चेतना को और भी स्पष्ट प्रमाणित करती हैं।

इस सम्बन्ध में अन्नामलाई विश्वविद्यालय में वनस्पति शास्त्र के विभागाध्यक्ष डा० टी० सी० एन. सिंह और उनकी सहयोगिनी कुमारी स्टेला पुनैया के वनस्पति और प्राणियों पर किये गये संगीत के परीक्षण बहुत उल्लेखनीय हैं। सच बात तो यह है कि ईश्वर, आत्मा, जीवन-व्यवस्था, समाज व्यवस्था पर अनेक लोग अनेक जातियों के अनेक मत हो सकते हैं, किन्तु संगीत की उपयोगिता और सम्मोहिनी शक्ति पर किसी भी देश के किसी भी व्यक्ति को विरोध नहीं। शायद ही कोई ऐसा अपवाद हो, जिसे संगीत, वाद्य और नृत्य अच्छे न लगते हों। मानव का संगीत के प्रति स्वाभाविक प्रेम ही इस बात का प्रमाण है कि वह कोई नैसर्गिक तत्व और प्रक्रिया है।

उपनिषद कहते हैं—

ब्रह्म प्रणव संधानं नादो ज्योतिर्मयः शिवः स्वयमाविर्भ वेदात्मा मेधापायेऽशुमानिव सिद्धासने स्थितो योगी मुद्रां संधाम बैष्णवीम् शृणुयाद्दक्षिणे कर्णे नादभन्नर्गतं सदा अभ्यस्यमानो नादोऽयं वाह्यमाबृणुते ध्वनिम् पक्षाद्विपर्क्षाखलं जित्वा तुर्यपदं व्रजेत। —नाद्विन्दुपनिषद् ३० ३१/३२

वत्स ! आत्मा और ब्रह्म की एकता का जब चिन्तन करते हैं, तब कल्याणकारी ज्योतिस्वरूप परमात्मा का नाद रूप में साक्षात्कार होता है। (यह संगीत ध्वनि बहुत मुधर होती है) योगी को सिद्धासन से बैठकर वैष्णवी मुद्रा धारणकर अनाहत ध्वनि को सुनना चाहिये, इस अभ्यास से बाहरी कोलाहल शून्य होकर अन्तरंग तुर्य पद प्राप्त होता है।

उपरोक्त कथन में संगीत और ब्रह्म का सायुज्य प्रतिपादित किया गया है, इसलिये उसके अभ्यास से निःसन्देह मानव आत्मा में उन शक्तियों और गुणों का विकास सम्भव है, जो परमात्मा में हैं। "जीवर भर जीवित बने रहिये" (स्टे अलाइव आल योर लाइफ) के लेखक नार्मन बिन्सेन्ट पील नामक विद्वान ने इस पुस्तक में मृत्यु के उपरान्त जीवन की शास्त्रीय पुष्टि के अमेंक महत्त्वपूर्ण उद्धरण दिये हैं—उन्होंने लिखा है कि "मुझे एक नर्स ने जिसने अनेकों व्यक्तियों को मरते देखा था, बताया कि मृत्यु के क्षणों में जीवन को कुछ अलौकिक दर्शन और श्रवण होता है। कुछ मरने वालों ने बताया कि उन्हें आश्चर्यजनक ज्योति और संगीत सुनाई दे रहा है।

यह दो उद्धरण संगीत को जीवन का शाश्वत उपादान ही प्रमाणित करते हैं पर प्रश्न यह हो सकता है, साधारण गायक और श्रोता, नृत्य या अभिनय द्वारा अपनी चेतना को लय में बाँधने वाला उस असीम सुख को प्राप्त क्यों नहीं करता। दरअसल यह विषय मन ही तन्मयता से सम्बन्धित है पर उतनी तन्मयता न हो तो भी संगीत का मनुष्य के मस्तिष्क, हृदय और शरीर पर विलक्षण प्रभाव अवश्य होता है और उससे मूल-चेतना के प्रति आकर्षण और अनुराग ही बढ़ता है। नास्तिक स्वभाव से जितने रूखे और कटु होते हैं, यह एक विलक्षण सत्य है कि उन्हें संगीत से उतना ही कम प्रेम होता है। कला के प्रति अनुराग ही अध्यात्म की प्रथम सीढ़ी है, ऐसे व्यक्ति में भावनायें होना स्वाभाविक ही है।

देखा गया है कि शरीर में प्रातःकाल और सायंकाल ही अधिक शिथिलता रहती है, उसका कारण प्रोटोप्लाज्मा की शक्ति का ह्रास है। यों प्रातःकाल शरीर थकावट रहित होता है पर पिछले दिन की थकावट का प्रभाव आलस्य के रूप में उभरा हुआ रहता है। प्रोटोप्लाज्मा जिससे जीवित शरीर की रचना होती है, इन दोनों समयों में अस्त-व्यस्त हो जाता है, उस समय यदि भारी काम करें तो शिथिलता के कारण शरीर पर भारी दबाव पड़ता है और मानसिक खीझ और उद्विग्नता बढ़ती है। थकावट में ऐसा हर किसी को होता है। यदि कोई गर्म-गर्म पदार्थ खाये तो कुछ क्षण के लिये प्रोटोप्लाज्मा के अण तरंगायित तो होते हैं पर वह तरंग उस तूफान की तरह तेज होती है, जो थोड़ी देर के लिये सारे पेड-पौधों को झकझोर कर रख देती है। उसके बाद चारों ओर सुनसान भयानकता-सी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

छा जाती है, उत्तेजक पदार्थों के सेवन से दिन में बुद्धि विभ्रम और रात में दुःस्वप्न शारीरिक प्रोटोप्लाज्मा प्रकृति में इसी तरह के तूफान का प्रभाव होता है, इसलिये इस समय नशापान स्वास्थ्य को बुरी तरह चौपट करने वाला होता है।

संगीत की लहरियाँ शिथिल हुए प्रोटोप्लाज्मा की उस तरह की हल्की मालिश करती हैं, जिस तरह किसी बहुत प्रियजन के समीप आने पर हृदय में मस्ती और सुहावनापन छलकता है, इसलिये प्रातःकाल का संगीत जहाँ शरीर को स्फूर्ति और बल प्रदान करता है, हृदय, स्नायुओं, मन और भावनाओं को भी स्निग्धता से आप्लावित कर देता है। इसलिये प्रातःकाल और सांयकाल दो समय तो प्रत्येक व्यक्ति को गाना, प्रार्थना, पुकारना अवश्य चाहिये। सामूहिक कीर्तनों और भजन बन पड़े तो अच्छा अन्यथा किसी भी माध्यम से सरस और भाव प्रधान गीत तो इस अवश्य ही सुनना चाहिये।

डा० सिंह ने दस वर्ष तक एक बाग को दो हिस्सों में बाँटकर एक परीक्षण किया। एक हिस्से के पौधों को कु० स्टेला पुनैया वायलिन बजाकर गीत सुनाती दूसरे को खाद, पानी, धूप की सुविधायें तो समान रूप से दी गईं, किन्तु उन्हें स्वर-माधुर्य से वंचित रखकर दोनों का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिस भाग को संगीत सुनने को मिला उनके फूल, पौधे घने सीधे, अधिक फूल, फलदार सुन्दर हुए। उनके फूल अधिक दिन तक रहे और बीज निर्माण द्रुतगति से हुआ। डा० सिंह ने बताया कि वृक्षों में प्रोटोप्लाज्मा गड्ढे भरे द्रव की तरह उथल-पुथल की स्थिति में रहता है, संगीत की लहरियाँ उसे उस तरह लहरा देती हैं, जिस तरह वेणुनाद सुनकर सर्प प्रसन्नता से झूमने और लहराने लगता है। मनुष्य शरीर में भी ठीक वैसी ही प्रतिक्रिया होती है। गन्ना, चावल, शकरकन्द जैसे मोटे अनाजों पर जब संगीत अपना चिरस्थायी प्रभाव छोड़ सकता है तो मनुष्य के मन पर उसके प्रभाव का तो कहना ही क्या ?

कनाडा के किसान अपने खेतों के चारों ओर लाउडस्पीकर लगाकर रखते हैं, उनका सम्बन्ध रेडियो से जोड़ दिया जाता है और संगीत कार्यक्रम प्रसारण प्रारम्भ कर दिया जाता है। देवातीसा (विस्कानिसन) के संगीत शक्ति के व्यापक शोधकर्त्ता श्री आर्थरलाकर का कहना है कि संगीत से जिस तरह पौधों को रोगाणुओं से बचाया जा सकता है, उसकी प्रकार मनुष्यों की रोग-निरोधत शक्ति का विकास भी किया जा सकता है।

गाना-नाचना, गीत-संगीत निश्चित रूप से प्रसन्नता की वृद्धि करते हैं, यह शरीर की स्थूल प्रक्रिया है। संगीत को हृदय और भावनाओं में उतार लेने से तो मनुष्य का आत्मिक काया-कल्प ही हो सकता है। संगीत एक प्रकार की स्वर साधना और प्राणायाम है जिससे शरीर के भीतरी अवयवों का व्यायाम भी होता है और ऑक्सीजन की वृद्धि भी। फलस्वरूप पाचन-शक्ति, गहरी नींद, चौड़ी छाती और हड्डियों की मजबूती का स्थूल लाभ तो मिलता ही है। दया, प्रेम, करुणा, उदारता, ममता, आत्मीयता सेवा और सौजन्यता के भावों का तेजी से विकास होता है । यह सद्गुण अपनी प्रसन्नता और आनन्द का कारण आप है, वैसे ऐसे व्यक्ति के लिये सांसारिक प्रेम और सहयोग का भी अभाव नहीं रहता।

संगीत का अब सम्मोहिनी विद्या के रूप में विदेशों में विकास किया जा रहा है। अनेक डाक्टर सर्जरी जैसी डाक्टरी आश्यकताओं में संगीत की ध्वनि-तरंगों का उपयोग कर रहे हैं। आज विश्व भर में विशाल स्तर पर संगीत की सृजनात्मक शक्ति की खोज की जा रही है।

संगीत की सामर्थ्य

गायन को एक प्रकार का योगाभ्यास एवं वक्ष तथा कण्ठ संस्थान के समीपवर्ती अवयवों का महत्त्वपूर्ण व्यायाम माना गया है। भारतीय संगीत शास्त्र के आचार्यों के अनुसार गायन में आवाज नाभिकेन्द्र से उठती है ब्रह्मरंध्र तक पहुँचती है, तालू, कंठ, फुफ्फुस, हृदय, आमाशय, यकृत एवं आँतों को प्रभावित करती हुई—एकगति चक्र बनाती हुई पुनः अपने उद्गम स्थान नाभि तक पहुँचती है। यह गतिचक्र अपने प्रभाव क्षेत्र के सभी अवयवों का न केवल व्यायाम प्रयोजन पूरा करती है, वरन् उनमें प्राणवायु का अतिरिक्त अनुदान भी देती है।

यों मोटे तौर से यही प्रतीत होता है कि आवाज कंठ, तालू , जिह्वा, ओष्ठ आदि के सम्मिलित संचालन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से निकलती है पर यह बात मात्र वार्तालाप के बारे में ही सत्य है। गायन में एक विशेष प्रकार के खिंचाव तनाव एवं उल्लास की जरूरत पड़ती है और वह एक स्नायु विद्युत के रूप में नाभि केन्द्र से उद्भुत होती है। उस उद्भव के साथ न केवल स्वर संधान होता है वरन् षट्चक्रों के-उपत्यिकाओं के त्रिविध ग्रन्थियों के सुप्त संस्थान भी जागृत होते हैं। इस प्रकार गायन न केवल गायक के लिए भावोद्दोलित करके आनन्दित करता है वरन् आन्तरिक अवयवों का व्यायाम होते रहने से उसके स्वास्थ्य संरक्षण एवं आन्तरिक दिव्य शक्तियों की प्रसुप्त स्थिति को जागरण में परिवर्तित करने का लाभ भी मिलता है। शरीर और मन को उभयपक्षी शक्ति प्रदान करने की जिस सरलता और अधिकता भरी क्षमता गायन में है उतनी और किसी में नहीं। भावनात्मक उल्लास के प्रभाव में उसके मानसिक तनावों एवं अवसादों का भी निवारण होता रहनी है।

गायन की तीन लय हैं—द्रुत, विलम्बित, मध्यमाद्रुत अर्थात् तीव्र गति का गायन। इससे जीभ, कंठ, वक्ष और हृदय का विशेष व्यायाम होता है। विलम्बित—अर्थात् स्वर को खींच कर गाना। इसका प्रभाव स्वर वाहिनी नलिकाओं को खोलता और सुदृढ़ बनाता है। मध्यम एवं सामान्य गायन। इसी प्रतिक्रिया-स्नायु मण्डल नाड़ी संस्थान, हृदय एवं रक्त वाहनियों पर होती है। जिनके जो अवयव दुर्लभ हैं वे उसके अनुरूप लय चुनकर इस प्रकार से आन्तरिक अवयवों की सहज चिकित्सा कर सकते हैं।

हास्यरस, वीररस, श्रृंगाररस, शान्तरस आदि नौ रस गायन के माने गये हैं, उनके लिये विशेष राग रागनियाँ और विशेष समय का निर्देश किया गया है। समय राग और रस इनके सम्मिश्रण से एक विशेष प्रकार का ध्वनि प्रवाह उत्पन्न होता है और उससे अगणित मानसिक रोगों की चिकित्सा हो सकती है।

शरीर पाँच तत्वों से बना माना जाता है। आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार उसकी गतिविधियाँ बात, पित्त, कफ के अनुसार दबती, उभरती रहती हैं। बायोकैमिक चिकित्सा से बारह नमक शरीर के संचालक और आयोग्य के आधार हैं। होम्योपैथी में विष तत्वों की विवेचना की गई है। क्रोमापैथी (सूर्य चिकित्सा) में सत रंगों की न्यूनाधिकता स्वास्थ्य के सन्तुलन असन्तुलन का कारण है। स्वर शास्त्र के अनुसार काय-कलेवर में साप्त सूक्ष्म नाद उठते रहते हैं। इन्हें जगत में सप्त स्वरों से पहचाना जाता है। सूक्ष्म स्वरूप के दबने उभरने से जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य असन्तुलन उत्पन्न होता है उसे स्वर विज्ञान के आधार पर उपयुक्त गायनों के विधान से सन्तुलित किया जा सकता है।

ऋतुओं के अनुरूप विशिष्ठ गायनों के विधान में भी ऐसे ही रहस्य छिपे पड़े हैं। वंसन्त ऋतु में बंसन्त राग, वर्षा में मेघ मल्हार आदि के लिये संकेत है। जिस प्रकार प्रातःकाल प्रभात राग एवं भक्ति रस की उपयोगिता मानी गई है, उसी प्रकार दिन-रात के विभिन्न समयों में विभिन्न राग एवं रस उपयोगी माने गये हैं यह व्यवस्था ऐसे ही मनमानी नहीं है वरन् इसके पीछे शारीरिक एवं मानसिक आरोग्य के महत्वपूर्ण आधारों का समावेश है।

सामान्यतया गायन को एक आकर्षक, मनोरंजन मात्र माना जाता है। पर यदि उसके सम्बन्धों अधिक गहराई तक उतरा जाय तो प्रतीत होगा कि वह शारीरिक एवं मानसिक रोग निवारण एवं शक्ति सम्वर्धन का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। विभिन्न रोगों में ग्रस्त व्यक्तियों को समय तथा कष्ट के अनुरूप गायन विद्या बताकर लाभान्वित किया जा सकता है। जिनका स्वास्थ्य साधारणतया ठीक है किन्तु हृदय, फुफ्फस आदि विशेष अवयवों को परिपुष्ट करना हो तो उसके लिए ही गायनों का अवलम्बन लिया जा सकता है। खिलाड़ी एवं पहलवानों की सफलता हृदय एवं फुफ्फसों की बलिष्ठता पर निर्भर रहती है, यह प्रयोजन वे उपयुक्त गायन विधि अपनाकर पूरी कर सकते हैं।

गायन के अतिरिक्त वाद्य संगीत की अपनी महत्ता है। गायन जिन्हें नहीं आता वे वाद्य की ध्वनि लहरियों के सहारे उपर्युक्त लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि स्वयं बजाना आता हो तो उनके सहारे सिर, गर्दन, कन्धे, छाती, पेट आदि का उपयोगी व्यायाम हो सकता है। क्रमबद्ध और तालबद्ध क्रिया-कलाप से उत्पन्न होने वाली शक्ति धाराओं के सम्बन्ध में जिन्होंने पढ़ा सुना है वे सहज ही यह समझ सकते हैं कि वाद्य यंत्र बजाने के साथ-साथ जो ताल क्रम चलता है, उसके कैसी उपयोगी स्पन्दन उठते हैं और उससे किस प्रकार मनुष्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लाभान्वित होता है। बाँसुरी, शहनाई प्रभृति बाजे तो एक प्रकार से गायन द्वारा प्राप्त हो सकने वाले लाभों की ही आवश्यकता पूरी करते हैं। जो लाभ गायन का है वह मुँह से बजाये जाने वाले बाजे भी दे सकते हैं।

गायन और वाद्य यदि स्वर शास्त्र के अनुरूप हों तो उसका सुनने वालों पर उपयोगी प्रभाव पड़ता है। जो न गाना जानते हैं न बजाना वे अपनी शारीरिक मानसिक स्थिति के अनुरूप स्वर लहरी उपयुक्त मात्रा में सुनकर भी बहुत हद तक लाभान्वित हो सकते हैं। संगीत के सम्बन्ध में यदि आवश्यक शोध की जाय तो उससे शारीरिक एवं मानसिक आरोग्य के अभिवर्द्धन में बहुत सहायता ली जा सकती है। इस प्रकार के प्रयोग योरोप एवं अमेरिका के वैज्ञानिक कर भी रहे हैं और उन्हें आशाजनक सफलता भी मिली है। दुधारू पशुओं को दुहते समय अमुक ध्वनि का संगीत सुनाकर अधिक दूध प्राप्त करने में बहुत सहायता मिली है। मानसिक रोगियों पर भी संगीत से आश्चर्यजनक लाभकारी प्रभाव होने का निष्कर्ष सामने आया है। पेड़-पौधों की उन्नति में भी संगीत की प्रभावी शक्ति सिद्ध हुई है। अन्ना मलय विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञानी डा. टी. सी० एन० सिंह ने अपने प्रयोगों से यह सिद्ध किया है कि ध्वनि तरंगों द्वारा पेड़-पौधों की—फसलों की उन्नति में आशजनक सहायता मिल सकती है।

अमेरिका संगीत चिकित्सक डा० हार्ल्स एस्टले ने अपनी उस प्रक्रिया को अधिक व्यवस्थित करने का प्रयत्न किया है। उनने लगातार बीस वर्ष इसी पद्धति से चिकित्सा की है और बताया है कि ऐलोपैथी द्वारा रोग मुक्त होने वालों की अपेक्षा संगीत उपचार से अच्छे होने वालों का अनुपात कहीं अधिक है। माँस पेशियों और नाड़ी संस्थान की गड़बड़ी तो निश्चित रूप से अन्य उपायों की अपेक्षा संगीत द्वारा अधिक सफलतापूर्वक और अधिकं जल्दी अच्छी की जा सकती है।

पूर्व जर्मनी के गोटिंगन नगर के संगीत द्वारा चिकित्सा करने वाले जौहान्म शूमिलिन ने अपने प्रयोगों और अनुसन्धानों से यह सिद्ध किया है कि मनुष्यों की तरह ही बीमार पशुओं को भी संगीत उपचार से रोग मुक्त किया जा सकता है। उन्होंने अनुभवों और परीक्षणों का विस्तृत विवरण प्रकाशित करते हुए यह बताया है कि किस प्रकार बिना दवा-दारू के ही कितने कष्ट साध्य रोगों से ग्रस्त मनुष्यों ने ही नहीं वरन् पशुओं ने भी रुग्णता से छुटकारा पाया।

चिकित्सा शास्त्र के साथ-साथ भूतकाल में विभिन्न प्रकार से संगीत का उपयोग होता रहा है। मिस्र के चिकित्सक दवा-दारू करने के अतिरिक्त सगीतमय मंत्रों का भी उच्चारण करते थे। अफ्रीका के वन्य प्रदेशों की आदिवासी जातियाँ विशेष प्रकार की ध्वनियाँ, मुख से उच्चारण करके विभिन्न रोगों का उपचार करने में दक्ष रही हैं। डेविट हार्प नामक संगीतकार सम्राट साँल को असाध्य रोग से मुक्त करने में अपनी वाद्यकला को पूर्णतया सफल सिद्ध कर चुका है। होमर के अनुसार यूलीसेस को प्राणघातक रोग से संगीत उपचार से ही मुक्ति मिली थी।

इटालियन नृत्य 'टैरेनटेला' के बारे में प्रसिद्ध है कि जब वह नृत्य आरम्भ होता है तो दर्शक आवेश में आ जाते हैं और वे स्वयं भी अपनी मान-मर्यादा को छोड़कर नृत्य करने लगते हैं। इस नृत्य में विशेष प्रकार के संगीत की ही प्रधानता रहती है।

मानसोपचार में अब संगीत ध्वनि प्रवाह को बहुत महत्त्व दिया जाने लगा है। पाश्चात्य देशों के प्राय: सभी मानसिक रोगों के अस्पतालों में इस प्रकार का प्रबन्ध है कि विभिन्न स्तर के पागलों एवं सनकियों को विशेष प्रकार की संगीत ध्वनियों से भाव विभोर कर दिया जाय। इससे उनका उन्माद घटता हैं और मन:स्थिति में आशाजनक सुधार होता है। दन्त चिकित्सकों ने भी अब इस पद्धति को अपने व्यवसाय में उपयोग करना आरम्भ किया है। दाँत उखाड़ने, इन्जेक्शन लगाने एवं ऑपरेशन करने की कठिन घड़ियों में संगीत उनका मानसिक स्तर सान्तलित बनाये रहता है और दन्त चिकित्सा के कठिन क्षण सहज ही निकल जाते हैं।

संगीत की विशेष प्रकार की ध्वनि तरंगों के साथ नृत्य मुद्रायें मिलकर सोना सुगन्ध के सम्मिश्रण जैसा प्रभाव उत्पन्न करती हैं। घुँघरूओं की पायलों की झंकारें, नृत्य प्रवाह में थिकरते हुए चरण जब विशेष प्रकार की संगीत लहरियों के साथ लहराती हैं तो उससे नर्तक ही नहीं दर्शक भी किसी अति मानवी लोक में विचरण करते हुए पाते हैं। उस भाव विभोरता की स्थिति में मन पर जमे हुए तनावों का भार सहज ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हलका होता है और उलझी हुई मनःस्थिति सहज ही सुलझने लगती है। यों नृत्य का एक स्वतन्त्र शास्त्र भी है पर वस्तुतः वह संगीत के साथ ही जुड़ा हुआ है। यों गायन और वाद्य व्याकरण और साहित्य की तरह दो अलग-अलग पक्ष भी हैं फिर भी उन्हें परस्पर सम्बद्ध एवम् पूरक ही माना जाता है। सो शृंखला की तीसरी कड़ी नृत्य भी है। यह समन्वय एक विशेष प्रकार के ऐसे प्राणायाम का सृजन करता है जो जीवन में उल्लास भरी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है। आमतौर से गायक, वादन और नर्तक स्वस्थ ही नहीं प्रफुल्लित, स्फूर्तिवान, सुकोमल एवं सुरम्य मनोहर भी होते हैं।

युद्धों में संगीत का सदा से प्रयोग होता रहा है। सैनिकों में शौर्य, साहस एवम् लड़ने का उत्साह पराक्रम जगाने में वाद्यों की उपयोगिता सदैव स्वीकार की जाती रही है। महाभारत के सूत्रधार भगवान कृष्ण ने स्वयं पांचजन्य शंख बजाकर युद्ध उद्घोष किया था। विगुल, नगाड़े, भेरी, मृदंग, बीन, झाँझ जैसे बाजों के उपयोग का वर्णन युद्ध इतिहासों मिलता है। वर्तमान शताब्दी में इस दिशा में और भी अधिक प्रगति हुई है। युद्ध वाद्यों की शृंखला में ऐसे बाजे विनिर्मित हुए हैं जो भयभीत और कायरों की नसों में भी मरने मारने का आवेश भर सकें।

इतना ही नहीं, शत्रु पक्ष के सैनिक में निराशा, शिथिलता एवं भयग्रस्तता उत्पन्न करने वाली ध्वनि लहरियाँ भी उत्पन्न की गई हैं और उनसे प्रतिपक्षी को परास्त करने में एक सीमा तक अच्छी सफलता मिली है। युद्धबन्दियों के बीच ऐसी ध्वनियाँ बजाई जाती हैं जिससे वे भविष्य में युद्ध करने योग्य ही न रह जाएँ और उनसे भविष्य में किसी पराक्रम की आशा न की जाय।

नाद ब्रह्म की प्रभावोत्पादक सामर्थ्य

नाद्रब्रह्म—शब्दब्रह्म की विधा का अध्यात्म क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। आत्मोत्वर्ष के लिए किये जाने वाले अनेकानेक उपक्रमों में से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण इसे ही माना जाता है। शब्द शक्ति को चेतना का ईंधन माना गया है जब इस ईंधन की पूर्ति में कमोवेशी होने लगती है तो व्यक्ति का समूचा व्यक्तित्व ही असन्तुलित हो जाता है। मानसिक बिखराव, उद्विग्नता, संक्षोभ विक्षोभों के रूप में इसे देखा जा सकता है। इसकी पूर्ति हेतु किये जाने वाले अनेकों प्रयोगों में से संगीत की सृजनात्मक शक्ति द्वारा किया जाने वाला उपचार भी एक है।

प्राचीन काल में समग्र-समय पर वेदमंत्रों के सस्वर उच्चारण का प्रयोग स्वर विद्या के रूप में—मानवी विकास के लिए एवं उसके मार्ग में शारीरिक रोगों तथा मनोविकारों के रूप में उत्पन्न अवरोधों का समाधान करने के लिए किया जाता रहा है। स्वर शास्त्र के अनुसार काय-कलेवर में सात सूक्ष्मनाद सतत् उठते रहते हैं। इन्हें स्थूल जगत में सपतस्वरों सा, रे,ग, म, प, ध, नि, के रूप में पहचाना जाता है। सूक्ष्म स्वरूप के दबने उभरने से जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य असन्तुलन उत्पन्न होता है उसे स्वर-विज्ञान के आधार पर उपयुक्त स्वरों के समुचित सम्मिश्रण व उनके गायन के विधान से सन्तुलित किया जा सकता है। स्वर-योग की साधना कर मनुष्य मात्र सुन्दरम् को ही नहीं सत्यम एवं शिवम् को भी प्राप्त कर लेता है, ऐसी मनीषियों की मान्यता है।

मनुष्य जाति को भगवान ने अनेक दिव्य वरदान दिये हैं। उनमें से स्वर योग-संगीत भी एक है। संगीत की विशिष्ट ध्वनि तरंगें मानसिक और शारीरिक रोगों के निवारण में चमत्कारी लाभ प्रस्तुत करती रहीं हैं। संगीत अब मनोरंजन मात्र नहीं रहा वरन् उसे एक महत्वपूर्ण शक्ति स्वीकार कर लिया गया है। गायन को एक प्रकार का योगाभ्यास एवं वक्ष तथा कंठ संस्थान के समीपवर्ती अवयवों का महत्त्वपूर्ण व्यायाम माना गया है। भारतीय संगीत शास्त्र के आचार्यों के अनुसार गायन में आवाज नाभि केन्द्र (सोलर प्लेक्सस) से उठती है और अनाहत चक्र से होती हुई ब्रह्मरन्ध तक पहुँचती है। इस मध्य तालु , कंठ, फुफ्फुस, हृदय, आमाशय, यकृत एवं आँतों को प्रभावित करती हुई एक गतिचक बनाती हुई पुनः अपने उद्गम स्थान नाभि तक पहुँचाती है। यह गतिचय न केवल सूक्ष्म अंग-प्रत्यंग के व्यायाम के प्रयोजन को पूरा करता है, वरन् उनको प्राणचेतना का अतिरिक्त अनुदान देता है। सम्भवतः इन्हीं कारणों से प्राचीन समय में संगीत को एक महत्त्वपूर्ण और अनिवार्य विद्या के रूप में अपनाया गया था। यद्यपि अब वह बात नहीं रही, पर धीरे-धीरे लोग उसकी उस सामर्थ्य से परिचित होते जा रहे हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संगीत की सामर्थ्य को अब न केवल भारत में अपितु, संसार के अधिकांश देशों में समझा, स्वीकारा और उपयोग में लाया जा रहा है। जिस प्रकार भारत में प्राचीन समय में संगीत को चिकित्सा क्षेत्र में प्रयुक्त किया जाता रहा है, उसी प्रकार पाश्चात्य जगत में इसे चिकित्सा के एक प्रमुख साधन के रूप में पूर्वकाल में अपनाया गया था। मिश्र के संगीत के सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ "मेडिकल पेपिरी" में इस बात का उल्लेख है कि प्राचीन समय में मिश्र में संगीत का उपयोग महिलाओं सहित अन्य पालतू जानवरों की प्रजनन क्षमता बढ़ाने में किया जाता था। संगीतज्ञ टिमथियस ने अपने एक ग्रन्थ में लिखा है कि एक बार जब सिकन्दर अचेत हो गया था और अन्य कोई उपचार कारगर नहीं हो रहा हाथा तो "लायर" नामक वाद्य यन्त्र बजाकर उसकी चेतना को वापस लाया गया था। बाइबिल में भी संगीत चिकित्सा का विवरण मिलता है उसमें डेविड नामक एक संगीतज्ञ का सन्दर्भ देते हुए कहा गया है कि जब राजा साओल का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरने लगा, तो डेविड ने ही संगीत-चिकित्सा द्वारा उसे स्वस्थ बनाया था।

प० जर्मनी में भी संगीत—चिकित्सा का इतिहास काफी पुराना माना जाता है। वहाँ एक वाद्य यन्त्र पर अंकित है कि किसी भी प्रकार के दु:ख-दर्द को मिटाने में जब सभी प्रकार की औषधियाँ असफल हो जाती हैं, तो संगीत उपचार ही काम आता है। पूर्वी जर्मनी के "कार्लमारिया बोन बेवर संगीत कॉलेज" में एक विशेष प्रकार की विंग अलग से खोली गई है, जिसमें बुखार तथा अन्यान्य प्रकार की पीड़ाजनक बीमारियों के इलाज के लिए संगीत का ही इस्तेमाल किया जाता है। वहाँ के हृदय क्लीनिक और दंत चिकित्सा केन्द्रों में संगीत की ध्वनियों का ही अब प्रयोग होने लगा है क्योंकि इस चिकित्सा से दाँत उखाड़ने में जरा सी भी तकलीफ रोगी को नहीं होती है। वहाँ एक प्रसूति विशेषज्ञ ने प्रसव पीड़ा से पीड़ित महिलाओं पर भी इस तरह के सफल प्रयोग कर दिखाये हैं जिससे वहाँ के कई प्रसूतिगृहों में मोजार्ट द्वारा रचित भावनात्मक संगीत की धुनों को सुनाने का कार्य प्रारम्भ किया गया है। डर, तनाव, आतंक एवं मन: दौर्बल्य में तो संगीत को रामबाण औषधि माना जाता है।

पूर्वी जर्मनी के गोटिंग शहर के डा० जौहान्स शूमिलिन ने संगीत उपचार द्वारा अनेक कष्टसाध्य रोगों से ग्रस्त मनुष्यों को ही नहीं, पशुओं को भी रुग्णता से छुटकारा दिलाया है। इस कार्य के लिए मिश्र के चिकित्सक दवा के अतिरिक्त संगीतमय मन्त्रों का भी उच्चारण करते थे। अफ्रीका के आदिवासी आज भी मुख से विशेष प्रकार की सुरीली ध्वनि का उच्चारण करके अथवा उन्हीं के बनाये वाद्ययन्त्र बजाकर रोगोपचार किया करते हैं। पाश्चात्य देशों में प्राय: सभी मानसिक रोगों के अस्पतालों में पागलों और सनकियों भ्रान्तिग्रस्त व्यक्तियों की चिकित्सा संगीत ध्वनियों से भाव-विभोर कर की जाती है। इससे उनका उन्माद घटता है और मन:स्थिति में आशाजनक सुधार होता है। अमेरिका के डा० एस० जे० लोडन ने गायकों-वादकों एवं संगीत में रुचि लेने वालों का स्वास्थ्य-परीक्षण करने पर यह पाया कि वे वह दूसरों की अपेक्षा कहीं कम बीमार पड़ते हैं। न्यूयार्क के डॉ० एडवर्ड पोडोलॉस्की के अनुसार स्वास्थ्य-रक्षा की दृष्टि से संगीत एक बहुत मृदुल और सुन्दर व्यायाम है। उसका लाभ बाल-वृद्ध, दुर्बल—समर्थ सभी अपने, अपने ढंग से प्राप्त कर सकते हैं इंग्लैण्ड की डॉ. मीड के अनुसार संगीत से नाड़ी संस्थान में एक विशेष प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न होती है तथा कुछ विशेष धुनों-प्रकम्पनों द्वारा पाचन संस्थान सम्बन्धी शिथिलता दूर होती है। जापान के संगीतकार शिनीची सुजुकी का कहना है कि संगीत मनुष्य में भाव-संवेदन, अनुशासन, सहिष्णुता और कोमलता जगाता है। फ्रांसीसी प्राणिशास्त्री वास्तोव आन्द्रे के अनुसार संगीत प्राय: प्रत्येक जीवधारी के मस्तिष्क एवं नाड़ी संस्थान पर आश्चर्यजनक मर्मस्पर्शी प्रभाव डालता है। उनकी प्रकृति और मन:स्थिति के अनुरूप यदि संगीत बजे, तो उन्हें मानसिक प्रसन्नता और शारीरिक उत्साह प्राप्त होता है। इसी प्रकार अमेरिका के राल्फ लारेन्स और उनकी पत्नी जब आत्मविभोर होकर गाते तो हाथ-पैरों की जकड़न से रुग्ण एक महिला इतनी मुग्ध हो जाती कि अधिक व्यधित होने पर उनके गीत सुनकर ही इसे आराम मिल जाता था।

संगीत में शामक ही नहीं, उत्तेजक शक्ति भी है। युद्धों में तो सदा से ही इसके इस स्वरूप का उपयोग होता रहा है। भगवान कृष्ण ने शंख बजाकर महाभारत-युद्ध का उद्घोष किया था। बिगुल, नगाड़े, भेरी, मृदंग, बीन, झाँझ जैसे वाद्यों के उपयोग का वर्णन युद्ध इतिहासों में मिलता है। वर्तमान समय में भी शत्रु पक्ष के सैनिकों में भयग्रस्तता उत्पन्न करने वाली ध्वनि लहरियाँ उत्पन्न की जाती हैं जिससे प्रतिपक्षी को परास्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया जा सके। युद्धबन्दियों के बीच ऐसी ध्वनियाँ बजाई जाती हैं जिससे वे भविष्य में युद्ध करने योग्य ही न रहें और उनसे किसी पराक्रम की आशा न की जा सके। विज्ञान के विकास के साथ-साथ एक ध्वंसात्मक अभिशाप यह भी जन्मा है कि मस्तिष्कीय तरंगों को अस्त व्यस्त कर बेचैनी, उद्विग्नता को जन्म देने वाली ध्वनि तरंगों, का प्रयोग अब विभिन्न राष्ट्र करने लगे हैं। रूस ने तो एक बार ध्वनि युद्ध का यह प्रयोग उत्तरी कनाडा के एक बहुत बड़े क्षेत्र पर कर भी डाला। परिणामस्वरूप अगणित नागरिकों में अकारण बेचैनी, तनाव, चिड़चिड़ापन आदि के चिन्ह विकसित होते देखे गये। आत्महत्या करने वालों की संख्या अचानक बढ़ गई। पता चला कि एक विशिष्ट फ्रिक्वेन्सी पर उत्तरीध्रुव के एक द्वीप से सोवियत रूस द्वारा प्रसारित रेडियो तरंगों के कारण यह विनाशा कारी स्थिति उत्पन्न हुई है। यह ध्वनि तरंगों का निषेधात्मक उपयोग है। वस्तुतः धवनि का उपयोग तो सृजनात्मक प्रयोजनों में मनःशक्ति संवर्धन, मनोविकारों से मुक्त करने में होना चाहिए।

जिस प्रकार रसों में हास्यरस, वीर, श्रंगार, शान्त, रौद्र आदि नौ रसों को प्रमुखता मिली है, उसी प्रकार संगीत में भी इन्हीं के आधार पर नौ रस गायन विधा के अन्तर्गत आते हैं। प्रत्येक के लिए विशेष राग-रागनियों और विशेष समय पर ही बजाये जाने का विधान है। समय राग और रस के सम्मिश्रण से एक विशेष प्रकार का ध्वनि-प्रवाह उत्पन्न होता है, जिससे मानसिक रोगों की चिकित्सा होती है।

संगीत के साथ जब नृत्य का समन्वय होता हैं, तो उससे कितने ही स्थूल-सूक्ष्म अंग अवयवों का व्यायाम होता है, जो जीवन में उल्लास भरी परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं। इसी कारण गायक, वादक और नर्तक सामान्य रूप से स्वच्छ तो होते ही हैं, प्रफुल्लित और स्फूर्तिवान भी देखे जाते हैं यह संगीत-नृत्य का प्रत्यक्ष अनुदान है।

संगीत के ऐसे अन्य चिकित्सीय लाभों को उपलब्ध करने के लिए वेल्स विश्विद्यालय में विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी संस्थान के डा० डायलौन जोन्स को ३१ हजार पौण्ड का सरकारी अनुदान मिला है, ताकि वह संगीत की रोगनिवारक क्षमता को जनसाधारण के समक्ष प्रस्तुत करने से पूरव प्रयोग-पीरक्षण द्वारा भली भाँति जाँच सकें। डॉ० जोन्स ने ध्वनि तरंगों के शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों का बड़ी गहनता से अध्ययन किया है। उनके मतानुसार मन ही मन गुनगुनाने का भी उतना ही प्रभाव शरीर एवं मन पर पड़ता है, प्रातः सायं की बेला में मंद स्वर में गाने की महत्ता बताते हैं व कहते हैं कि इससे व्यक्ति सदैव नीरोग बना रहता है। "सोहम्" जप व भजन की महत्ता इसीलिए बतायी गयी है।

केन्द्रीय इलैक्ट्रो रसायन अनुसंधान संस्थान कराई-कुडी के वैज्ञानिक डॉ० पी० वी० माथुर के अनुसार संगीत के सातों स्वरों की संरचना काल्पनिक नहीं, एक गणितीय सिद्धान्त के आधार पर ही सम्भव हुई है। उन्हें संगीत की २२ श्रुतियों का भी रहहस्योद्घाटन किया है। प्रत्येक राग में इनमें से १४ की उपस्थिति होना नितान्त आवश्यक है। संगीत के स्वरों में एक क्रमबद्धता और लयबद्धता है। उसी का सरगम के नाम से जाना जाता है। श्रुतियों का प्रमुख कार्य स्वरों में भावतरंगें उत्पन्न करने का होता है। प्रायः देखने में आता है कि भारतीय रागों में १३ स्वरों का ही प्रयोग होता चला आरहा है और शेष स्वर क्रम को किसी भी राग में नहीं जोड़ा जाता। यदि इस क्रम को भी मिला लिया जाय तो संगीत से भाव-संवेदनाओं का उभार कई गुना बढ़ सकता है और उसकी आरोग्य-वर्धिनी-शक्ति भी तदनुरूप बढ़ जाती है।

इसे दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिए कि आजकल संगीत नट विद्या गलेबाजी की कला मात्र बनकर रह गया है। भोग-विलास की तृप्ति के काम आने वाला एक नशा बन गया है। एक ऐसा नशा जो धुत्त स्थिति में व्यक्ति को पतन-पराभव की ओर ले जाता है। स्वर-साधना को पहले कला के अन्तर्गत रखा गया था, पर आज ऐसी बात नहीं रही। वह अब गायकी बन गई है। कुत्साओं के उभार के लिए उसका प्रस्तुत किया जाना जनजीवन को मात्र विषपान ही कराता है।

जिस प्रकार हर वस्तु के भला और बुरा, अच्छा और खराब दो पक्ष होते हैं, उसी प्रकार संगीत के भी दो पहलू हैं। पिछले दिनों उसके बुरे स्वरूप को ही उभारा गया था, जिसके कारण उसकी क्षमताएँ कुंठित हुईं, वह बदनाम हो गया। अगला समय भावप्रधान आने वाला है, जिसमें संगीत की अहम् भूमिका होगी। भाव-चेतना को झकझोरने और जगाने के लिए उसे एक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महत्त्वपूर्ण उपचार के रूप में अपनाया जायेगा। इसके लिए आवश्यक है कि उसके स्वस्थ स्वरूप को उभारा जाय, तभी वह अपनी रोगनिवारक क्षमता का सही-सही परिचय दे सकता है और नादयोग के रूप में शिवत्व प्राप्ति का पाथेय बन सकता है। शास्त्रों में उसकी इसी क्षमता विशेषता के कारण इसका इतना गुणगान किया गया है। इसके इसी स्वरूप की प्रतिष्ठा की आज महती आवश्यकता है। इस क्षेत्र में और भी गहन अनुसंधान कर उन निष्कर्षों से जन-जन को लाभान्वित किया जा सकता है।

शब्द शक्ति से होगी, अब रोगों की चिकित्सा

ध्वनि अपने आप में एक बहुत महत्त्वपूर्ण शक्ति है। जहाँ प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर यह एक ओर नाद-ब्रह्म, शब्द-ब्रह्म संगीत का रूप लेकर मनुष्य की आत्मिक प्रगति का पथ प्रशस्त करती है, वहाँ दूसरी ओर प्रकृति के विरुद्ध होने पर यह मनुष्य को पागल बना सकती है, प्रलय ला सकती है, ध्वनि प्रदूषण द्वारा समष्टिगत हानि पहुँचा सकती है। शब्द शक्ति को, ध्वनि को चेतना की ऊर्जा ईंधन माना गया है। कभी इससे मात्र जानकारी प्राप्त करने व आदान-प्रदान का प्रयोजन भर पूरा होता था, किन्तु अब विज्ञान के विकास ने उसे एक उच्चस्तरीय शक्ति के रूप में ला खड़ा कर दिया है। शब्द शक्ति को लेसर से भी अधिक सामर्थ्य भरा शक्तिपुंज कहा गया है एवं इसी के आधार पर विज्ञान ने खगोल जगत में ब्रह्माण्डीय आदान-प्रदान की तथा कार्य जगत में सूक्ष्म तत्वों की जानकारी एवं चिकित्सा की शोध उपलब्धि अर्जित की है।

वार्तालाप-परामर्श में प्रयुक्त बैखरी वाणी का प्रसंग छोड़ हम ऊँचे सोपान पर चढ़ मध्यमा, परा पश्यन्ती का साधना क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में विवेचन करें तो पाते हैं कि इन्द्रियातीत, अनाहत, बिन्दु रूप में शब्द-ब्रह्म नाद-ब्रह्म के रूप में शास्त्रकारों ने इसकी महिमा को बड़ी गंभीरता से प्रस्तुत किया है। उनका यह विवेचन पूर्णत विज्ञान सम्मत भी हैं। शब्द-ब्रह्म अर्थात् गद्य उच्चारण नाद-ब्रह्म अर्थात् संगीत के रूप में तालबद्ध वादन-गायन। मंत्र विज्ञान इसी क्षेत्र से उद्‌भूत विधा है, जिसका अवलम्बन लेकर आत्मिक प्रगति का पथ प्रशस्त किया जाता है। यही शक्ति शाप व वरदान के रूप में परिलक्षित होती देखी जा सकती है। प्राचीनकाल में जिन दिव्य अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग होता था उनमें शब्द शक्ति की ऊर्जा से चालित उपचारों के प्रयोगों का उल्लेख होता है कि यह कितनी सूक्ष्म किन्तु सामर्थ्यवान शक्ति है।

ओम शब्द का आर्षवाग्मय में महत्त्वपूर्ण स्थान है। ओम शब्द के उच्चारण से सूक्ष्म किन्तु शक्तिशाली तरंगों की उत्पत्ति होती है। जिसे मौलिक ध्वनि माना गया है। अ उ एवं म से मिलकर बना ओम शब्द इस घटाकाश, निखिल ब्रह्माण्ड का बोध कराता है। यह अविनाशी परब्रह्म, सत, रज, तम रूपी तीन गुणों, तीनों कालों एवं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, त्रिदेवों का परिचायक भी है। प्रत्येक मन्त्रोच्चार ऊँकार के बिना अपूर्ण है। इसके बिना शब्द शक्ति की चर्चा ही अपूर्ण है।

मन्त्र शक्ति एवं संगीत शक्ति इन दोनों का ही विशिष्ट माहात्यमं के साथ विज्ञान-सम्मत विवेचन हमारे आर्ष ग्रन्थों में हुआ है। वस्तुतः शब्द विज्ञान की इन दो महत्त्वपूर्ण विधाओं को इस मन्त्र युग में जाना एवं महत्त्व नहीं दिया गया है। यदि चेतना के इस अनुसंधान की गहराई में जाना संभव हुआ तो मनुष्य को इतने महत्त्वपूर्ण रत्न हस्तगत हुए होते, जिनकी तुलना भौतिक वैभव से कभी भी नहीं की जा सकती। ऋग्वेद और सामवेद के साथ-साथ आयुर्वेद एवं गांधर्ववेद का उल्लेख इस प्रसंग में किया जाता है। आयुर्वेद ऋग्वेद का उपवेद है एवं गांधर्ववेद सामवेद का। आयुर्वेद के पितामह माने जाने वाले अश्विनी कुमार विरचित भैषज तन्त्र में इस सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण संकेत दिये गये हैं।

भैषज तन्त्र में चार प्रकार के भैषज बताये गये हैं। पवनौकष, जलौकष, वनौकष और शाब्दिक। इसमें अंतिम शाब्दिक भैषज से द्विदेवों का आशय है—मन्त्रोच्चारण एवं लयबद्ध गायन। जहाँ आयुर्वेद के प्रमुख ग्रन्थ चरक संहिता, सुश्रुत संहिता आदि में सन्निपात, ज्वर, दमा, मधुमेह, हृदयरोग, ट्यूबरकुलोसिस, पीलिया, अल्पसमंदता आदि रोगों में मन्त्रों से उपचार का उल्लेख हुआ है, वहाँ सामवेद में ऋचाओं के गायन द्वारा रोग-मुक्ति का माहात्म्य बताया गया है। मन्त्रोच्चार से उत्पन्न ध्वनि प्रवाह व्यक्ति की समग्र चेतना को प्रभावित करता है और उसके कम्पन अंतरिक्ष में बिखरकर समष्टि चेतन सत्ता को प्रभावित कर परिस्थितियों में अनुकूलन लाते हैं। कण्ठ, जिव्हा, तालू

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आदि मुख्य अवययों को सोद्देश्य विरचित, सुगठित शब्द समुच्चय के उच्चारण में भिन्न-भिन्न प्रकार की हलचलें करनी पड़ती हैं जिनका प्रभाव स्थूल शरीर के अंग-प्रत्यंग पर तो पड़ता ही है, सूक्ष्म शरीर स्थित उपत्यिकाओं, नाड़ी गुच्छकों, विद्युत प्रवाहों पर भी इनका प्रभाव पड़ता है। कोई भी शक्ति सबसे पहले अपनी उत्पादन स्थली को प्रभावित करती है। आग जहाँ जन्मती है, गरमी पहले वहीं जन्मती है, विस्तार उसका पूरे क्षेत्र में बाद में होता है। इसी प्रकार मन्त्रोच्चारण से उद्भूत ऊर्जा से साधक का व्यक्तित्व सबसे पहले एवं सर्वाधिक प्रभावित होता है। मंत्र शक्ति को शब्दभेदी बाण की तरह माना जा सकता है जो कायसत्ता के सूक्ष्म अवयवों से टकराते व उन्हें प्रभावित करते हैं। किस अवयव को किस सीमा तक प्रभावित किया जाय, यही ध्यान रखते हुए मन्त्रों का गठन एवं उच्चारण द्वारा सुनियोजन किया जाता है।

वैज्ञानिकों ने पाया है कि समवेत स्वर में उच्चरित मन्त्र पृथ्वी के आयन मण्डल को घेरे विशाल भू चुम्बकीय प्रवाह शूमेन्स रेजोनेन्स से टकराते व लौटकर समग्र पृथ्वी के वायुमण्डल को प्रभावित करते हैं। यह एक विचित्र साम्य है कि शूमेन्स रेजोनेन्स के अंतर्गत जो गति तरंगों की रहती है, वही गति मन्त्रोच्चारण करने वाले साधकों की एकाग्रता-तन्मयता की स्थिति में मस्तिष्क से रिकार्ड की जाने वाली अल्फा तरंगों की (७ से १३ सायकल प्रति सेकण्ड) होती है। व्यक्ति चेतना व समष्टि चेतना में कितना सघन तादात्म्य है, इसकी साक्षी यह वैज्ञानिक उपलब्धि देती है। यही नहीं अध्यात्म विज्ञान के प्रवक्ता मन्त्र द्वारा शाप-वरदान-रोग-मुक्ति, मारण, मोहन, उच्चाटन, अभिचार, कृत्याघात आदि प्रयोगों का दावा करते हैं एवं कर भी दिखाते हैं।

लय-ताल बद्ध गायन संगीत के रूप में दूसरी शब्द शक्ति की महत्त्वपूर्ण विधा है, जिसका यदि सुनियोजन किया जा सके तो प्रकृति में वांछित परिवर्तन एवं काय सत्ता को रोगमुक्त करना संभव है। संगीत न केवल तनाव शैथिल्य लाता है, अनेकानेक मनोविकारों के उपचार की एक विज्ञान सम्मत विधा भी है। ताल और लय के समुच्चय को ही स्वर विज्ञान कहते हैं। थपकी ताल कहलाती है और आलाप को स्वर कहते हैं। दोनों के मिलन से समग्र संगीत बनता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की धरामा परम्परा के अन्तर्गत विभिन्न राग रागिनियों का आलाप-एवं वीणा, सितार तबला, तानपूरा, मृदंग आदि यंत्रों के माध्यम से गायन-वादन का क्रम काफी समय से चलता आया है। इसका मध्यकाल में प्रायः मनोरंजन हेतु प्रयोग होता था, नहीं तो इसमें अपरिमित सामर्थ्य विद्यमान है। संगीत के सुनियोजन से रोग निवारण भावनात्मक अभ्युदय स्फूर्ति-वर्धन, वनस्पति उन्नयन एवं प्राणियों की कार्य क्षमता में विकास जैसे महत्त्वपूर्ण लाभ संभव हैं। इस माध्यम से आनन्द भरी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर संवेदनाओं को भाव-तरंगों से जोड़कर मनःस्थिति में वांछित परिवर्तन भी लाया जा सकता है। जड़-चेतन सभी पर संगीत शक्ति का प्रभाव पड़ता है, यह अब प्रमाणित किया जा चुका है।

गायन-वादन के अंतर्गत संगीत के छह प्रमुख राग हैं, जिनका गान्धर्ववेद में उल्लेख आता है? ये हैं- श्रीराग, भैरवराग, हिंडोल राग, मालकौंस राग, विहार राग एवं मेघराग। इन्हीं की पाँच से छह तक भिन्न जातियाँ एवं पुत्र राग भी हैं। इनके अतिरिक्त भी विभिन्न विद्वानों ने समय-समय पर भिन्न रागों के सम्मिश्रण से नये राग तैयार किये है। इन्हें कब, किस समय, किस ऋतु में बजाया जाय, इसका शास्त्रोक्त विधान है। वांछित प्रतिफल तभी मिलता है, जब इन नियमा-उपनिमों का पालन किया जाय। यही नहीं गायक की पात्रता भी उतनी ही अनिवार्य है। गान्धर्ववेद में कहा गया है—

जपादि अष्टगुणम ध्यानः ध्यानादि अष्ट गुणं तपः।
तपसा अष्ट गुणम् गानम् गानात परत्परम्॥

वक्ता और श्रोता दोनों के ही चेतना के स्तर का विकसित होना गायन की सफलता के लिए अनिवार्य माना गया है। यही सब शर्तें पूरी होने पर प्राचीन काल में संगीत शास्त्र के ध्वनि प्रवाहों के प्रभाव भी देखे जाते थे। दीपक राग से बुझे दीपक जल जाते थे, मेघ-मल्हार राग बादलों को बरसने के लिये विवश कर देता था, मोहन राग साँपों को लहराता व हिरनों को स्तब्ध कर देता था, राग शंकर मदोन्मत्त हाथियों को वशवर्त्ती करने में समर्थ था, श्रीराग सूखे वृक्षों को हरा बनाने की सामर्थ्य रखता था। यह सब लोकोक्ति नहीं, वास्तविकता है। अब तो रोगोपचार में गान्धर्ववेद के विभिन्न प्रयोगों का अनुसंधान भी किया जाने लगा है। इससे लगता है आने वाले वर्षों में सम्भवत डिस्क

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आडियो कैसेट बनाने वाली कम्पनियाँ भिन्न-भिन्न रोगों के लिये वैदिक सूक्तों को रागों में लयबद्ध कर प्रस्तुत करने लगें एवं सैनिटेरियमों में उनका उपयोग होने लगे। यह प्रयोग ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान द्वारा तो किये ही जा रहे हैं, भारत में महर्षि गान्धर्व वेद विश्वविद्यापीठ तथा विदेश में भी विभिन्न विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हो रहे हैं।

रोग निवारण में संगीत शक्ति किस प्रकार अपनी भूमिका निभाती है, इसका स्पष्टीकरण करते हुए विद्वान बताते हैं कि जिस प्रकार आयुर्वेद में बात, पित्त, कफ की मान्यता द्वारा निदान किया जाता है, उसी प्रकार गान्धर्ववेद में बात की "सम्यक तारता" पित्त की "सभ्यक तीव्रता" एवं कफ के "सम्यक माधुर्य" का प्रावधान है। जिस प्रकार कायगत वायु, अग्नि एवं जल में असंतुलन से भिन्न रोग उत्पन्न होते बताये जाते हैं। उसी प्रकार विभिन्न रागों का सुनियोजन कर मानव की प्रवृत्ति का सही निदान एवं उपचार किया जाना संभव है। यही नहीं वैद्यक एवं संगीत की जानकारी रखने वाला विशेषज्ञ आयुर्वेद एवं गान्धर्ववेद का पर्याप्त संतुलन बनाये रख मात्र वनौषधि सेवन एवं संगीत शक्ति से असाध्य से असाध्य रोगों की चिकित्सा कर सकता है। संभवत: इसीलिए शास्त्रों में वैद्यों के लिए संगीत का ज्ञान अनिवार्य बताया गया है।

विद्वान बताते हैं कि कफ के कुपित होने से सम्भावित रोगों में राग भैरवी, मानसिक चंचलता एवं क्रोध की स्थिति में राग मल्हार सौरत एवं जैजैवन्ती तथा रक्त की अशुद्धि की स्थिति में राग आस्सावरी का प्रयोग होना चाहिए। श्वांस सम्बन्धी असह्य कष्ट, तपेदिक, खाँसी-दमा आदि में राग भैरवी के प्रयोग का तथा मेदा वृद्धि यकृत प्लीहा वृद्धि में राग हिंडोल का प्रावधान है। जठराशय सम्बन्धी रोगों से मुक्ति हेतु पंचम राग गाये जाने का उल्लेख है। कहा जाता है कि तानसेन के गुरुभाई बैजू वावरा ने राग पूरिया सुनाकर राजा राजसिंह को अभिद्रा रोग से मुक्ति दिलाई थी। भारत के प्रसिद्ध संगीतज्ञ ओंकार नाथ ठाकुर ने इटली के तानाशाह मुसोलिनी, जिसे अनिद्रा रोग था, को अपने गायन से ही सुला दिया था। यही बात पंडित पलुस्कर एवं डागर बंधु के बारे में भी कही जाती है।

एलोपैथी ने अल्ट्रासाउण्ड को मान्यता देकर शब्द शक्ति की महत्ता को मान ली है किन्तु वे उसकी उतनी गहराई तक नहीं पहुँच पाये हैं। जहाँ तक हमारे ऋषि गण मंत्र विधा एवं संगीत शक्ति के माध्यम से पहुँचने में सफल हुए थे। अमेरीका के पिट्सवर्ग शहर के समीप डा॰ राल्फ लरिन्सने भी संगीत से रोग निवारण की आर्थ पद्धति के आधार पर एक आश्रम की स्थापना कर अनेक रोगियों को कष्टों से मुक्ति दिलाई है। डा. पोडोलोस्की एवं डा. बर्नर मैकफेडेन भी इस विधा में सक्रिय हैं एवं वे सारा उपचार सोनोथेरेपी के माध्यम से ही करते हैं।

वस्तुत: शब्द तत्व में असाधारण जीवनदात्री क्षमता है। मंत्रोच्चारण एवं संगीत द्वारा इनका सही उपयोग यदि किया जा सके तो विज्ञान की प्रगति की दिशा में अग्रसर मानव को चेतना को मथ देने वाली एक महत्त्वपूर्ण शक्ति का स्रोत हाथ लग सकता है। हम इस चिरपुरातन किन्तु विज्ञान सम्मत पद्धति को अपनाकर निश्चित उज्ज्वल भविष्य की नई संभावनाएँ विनिर्मित कर सकते हैं।

यद्यपि संगीत के बारे में प्राय: जन साधारण की मान्यता है कि यह मन बहलाने अथवा मनोरंजन का साधन है, अथवा भजन, पूजन में कविताएँ, छन्द आदि भगवान के गुणानुवाद की काम की चीज है। वस्तुत: संगीत के और भी उपयोग हैं। यह मनुष्य की ही नहीं मूक पशु पक्षियों तक की भावनाओं को प्रेरित करने में सक्षम है। मनुष्य समझदार होने के कारण और अधिक लाभान्वित होता है। उसकी कोमल भावनाएँ झंकृत और तरंगित होती हैं। इसमें उसके अन्दर करुणा, रौद्र, वीर, वात्सल्य, ममता, दया, उदारता आदि की प्रसुप्त भावनाएँ उभरती हैं। शारीरिक, मानसिक रोगों के निवारण एवं उत्कृष्टता की दिशा में बढ़ चलने की प्रेरणा प्रवाह उमगाने का अद्‌भुत समन्वय संगीत की मधुर स्वर लहरियों में भरा पड़ा है। आवश्यकता सदुपयोग कर उससे लाभान्वित होने भर की है।

मन के बोझ को, हताशा, निराशा, उद्विग्नता को कम करने या छुटकारा दिलाने में संगीत सर्वोत्तम साधन है। इस तथ्य से प्रख्यात ग्रीक दार्शनिक प्लेटो भी भलीभाँति सुपरिचित थे। वह लोगों के मन की सड़ाँध के विरेचन के लिए संगीत को एक अच्छा माध्यम मानते थे। संगीत की स्वर लहरियों से सुसुप्त एवं निष्क्रिय माँस-पेशियों, नस-नाड़ियों को जाग्रत एवं उत्तेजित किया जा सकता है। भावनाओं में रची, पची, कटुता को मधुरता में, तनाव को शिथिलता और शान्ति में परिणित करने का संगीत एक सशक्त एवं कारगर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपाय उपचार है। मानसिक रोगों में संगीत उपचार एक सफल माध्यम है।

अनुसंधानकर्त्ता वैज्ञानिकों ने आलस्य प्रमाद को दूर करने में सरस एवं कोमल रागों का प्रलाप उपयुक्ति पाया है। यदि ये राग लयबद्ध, शुद्ध और नियत समय पर गाये बजाये जाते हैं तो इनके लाभ की अधिक सुनिश्चितता और सम्भावना रहती है। पाश्चात्य देशों में कितने ही अस्पतालों में औषधियों के साथ सुमधुर संगीत का प्रयोग किया जाता है। कितने ही डाक्टर विशुद्ध संगीत के सहारे ही इलाज करते हैं। म्यूनिख के डाक्टर लुडविन ने मानसिक रोगियों के लिए विशेषतया किशोर बच्चों के लिए एक अलग से संगीत अस्पताल बनाया है। जिनमें न केवल रोगों की चिकित्सा की जाती है, वरन् ध्वनि विशेष के आधार पर उनकी कुटेबों को भी दूर किया जाता है।

मूर्धन्य मनोरोग चिकित्सक पीटर न्यूमैन और माइकेल सेन्डर्स, ने एक ऐसा मनोरोग चिकित्सालय आरम्भ किया है जहाँ उपचार में संगीत वादन का ही प्रयोग किया जाता है। रूस में भी प्रो॰ एस॰ बी॰ कोदाफ स्नायविक रोगों की चिकित्सा में संगीत का प्रयोग कर रहे हैं। शिकागों में डॉ॰ बेकर तथा डॉ॰ वर्ड मैन और बुकलिंग ने आपरेशन के समय संगीत के अच्छे परिणाम देखे हैं। अमेरिका, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, और जापान में संगीत चिकित्सा सामान्य हो गई है। उसे न केवल स्वास्थ संवर्धन के लिए वरन् शारीरिक और मानसिक दृष्टि से दुर्बल व्यक्तियों के लिए शक्ति संचार के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाने लगा है। जिन रोगियों को असाध्य मानकर समाज से बहिष्कृत, तिरस्कृत और निष्कासित कर दिया जाता है। वास्तव में वे पूर्णरूप से बेकार नहीं हो जाते। प्राय: ऐसे लोग भावनाओं को गहरा आघात अथवा ठेस लगने के कारण अपना सन्तुलन खो बैठते हैं। ऐसे दयनीय रोगियों की भावनाओं को जाग्रत करने की आवश्यकता होती है। संगीत चिकित्सकों ने ऐसे कार्यों में संगीत को एक सफल उपचार के रूप में पाया है।

संगीत लहिरयों के माध्यम से प्रसुप्त निष्क्रिय माँस-पेशियों को जगाया व उत्तेजित किया जा सकता है। दुर्भावनाओं को मिटाकर मधुर रस का अभिसंचार किया जा सकता है। यही कारण है कि तनाव दूर करने एवं मनश्चिकित्सा का पूरा समग्र तंत्र स्थापित करने में इसकी महत्ता को अब समझा जा रहा है।

संगीत का विज्ञान क्षेत्र में उपयोग

अगोचर, इन्द्रियातीत, परब्रह्म परमात्मा का जब सृष्टि के आदिकाल में प्रकटीकरण हुआ तो वह शब्द ब्रह्म के रूप में अविज्ञात से विज्ञात हुआ।

भारतीय तत्व ज्ञान के अनुसार प्रकृति और पुरुष का जब समागम हुआ तो उससे एक ध्वनि उत्पन्न हुई। जिसे शब्द ब्रह्म कहा गया। शब्द ब्रह्म अर्थात् 'ॐ'कार, प्रणव, अनहत नाद।

घड़ियाल पर जब हथौड़ी की चोट लगती है और वह 'टन' के उपरान्त बहुत देर तक थरथराहट के रूप में बनी रहती हैं। यही क्रम निरन्तर चलता रहता है और जिस प्रकार पेण्डुलम के हिलने से घड़ी के पुर्जे चलते रहते हैं। उसी प्रकार एक आघात पुरुष प्रकृति के साथ करता है। दूसरा उलटकर प्रज्ञा प्रकृति पुरुष के साथ अपनी प्रसन्नता भरी अभिव्यक्ति करती है। इसी चुम्बन-आलिंगन की क्रमबद्धता के अनुरूप एक पेण्डुलम गति बन जाती है और उसके आधार पर सृष्टि क्रम के अनेकानेक कल-पुर्जे चल पड़ते हैं। पंचतत्व, पंच प्राण आदि के माध्यम से जड़-चेतन जगत में असंख्यों हलचलें अनवरत गति से चलती रहती हैं उन्हें आधार पर गतिशील रहते माना गया है।

प्रकृति पुरुष के मिलन समाग की इस गति को "ॐ" कार की थरथराहट भरी ध्वनि के रूप में मानवी भाषा में अधिक समीपवर्ती पाया गया है। यों उस स्वर की सूक्ष्मता का यथावत् अनुकरण योगीजनों के लिए शब्द ब्रह्म की साधना करते हुए ही सम्भव है। फिर भी बाल-बोध की दृष्टि से उस मनुष्य द्वारा उच्चारित शब्दों में 'ॐ' कार ही कह सकते हैं। 'ॐ' कार का अधिक सरल उच्चारण 'ऊ + उ + म्' के संयोग से बेनता है। पर यह पृथक कारण भी समग्र स्थिति का परिचय नहीं देता इसलिए उसे शब्द के साथ ही रूप में भी चित्रित किया गया है। यही है—"ॐ"। भाषा विकास के आरम्भिक दिनों में इस 'ॐ' का स्वरूप स्वस्तिक (卐) जैसा था। पीछे इसमें और भी अधिक कलाकारिता का समावेश किया गया तो वह गणेश की गजानन प्रतिमा के रूप में विकसित हुआ। एक दन्त हाथी जैसी सूँड आदि की संगति इसी 'ॐ' कार या गणेश आकृति के साथ मिला दी गई।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनादि 'ॐ' कार की थरथराहट के ऊँचे-नीचे आरोहन अवरोहों का ध्यान रखते हुए तत्वज्ञानियों ने उसे सप्त स्वरों में विभाजित किया स, रे, ग, म, प, ध, नि, उसी ओंकार ध्वनि का वर्गीकरण है। इन्हीं स्वरों में समग्र स्वर शास्त्र का आर्विभाव हुआ और उसके उदाहरण प्रस्तुत करने के हेतु अनेकों राग-रागनियों का प्रादुर्भाव हुआ। इन्हीं स्वरों की क्षेत्रीय ध्वनिप्रियता के आधार पर अनेकों वाद्य यन्त्रों का निर्माण हुआ। गले का क्रमबद्ध गुंजन-गायन और वाद्य यन्त्रों की सहगति को वादन कहा गया। गायन और वादन को मिलाकर समय संगीत बनता है पर यह अनिवार्य नहीं कि दोनों दोनों को मिलाकर समय संगति साथ-साथ ही होनी चाहिए। अकेला गायन भी हो सकता है और अकेला वादन भी। जहाँ जैसी सुविधा एवं आवश्यकता होती है वहाँ वैसा तालमेल बिठा लिया जाता है।

गायन के आधार पर मन्त्र विज्ञान विकसित हुआ है। उसमें शब्दों का ऐसा गुंथन ही प्रधान है, जिसकी बार-बार पुनरावृत्ति करने, जप करने पर एक विशिष्ट प्रकार के कम्पन होते और साधनकर्त्ता को प्रभावित करें। इन मन्त्र तरंगों को किसी विशेष व्यक्ति के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है और विशेष प्रयोजन के लिए भी। वह एक समूचा एवं सुविस्तृत विज्ञान है। इसे जानने के लिए मन्त्र महाविज्ञान और तन्त्र महाविज्ञान का सांगोपांग अध्ययन आवश्यक है और उन मन्त्रों को सिद्ध करने के लिए जिन अनुष्ठानों की आवश्यकता पड़ती है उनका सही प्रकार अभ्यास कराने के लिए व्यवहार में अनुभवी और व्यक्तित्व में अतीय पवित्र परिष्कृत मार्गदर्शक की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे सिद्ध मन्त्र ही अपना चमत्कार दिखाते हैं अन्यथा पुस्तकों में से किसी मन्त्र शब्द गुंथन का ही अनगढ़ प्रयोग करने पर निराशा ही हाथ लगती है।

यहाँ चर्चा गायन परक उच्चस्तरीय 'मन्त्र विद्या' की नहीं हो रही है। इन पंक्तियों का प्रयोजन उस संगीत की चर्चा से है जो वादन प्रधान है, जिसमें ध्वनि तरंगें उत्पन्न की जाती हैं और उन्हें विभिन्न प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। साधारण तथा 'संगीत' शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में होता है। मन्त्र विज्ञान को "शब्द ब्रह्म" और स्वर लहरी एवं ताल वाद्यों के समुच्चय को "नाद ब्रह्म" कहते हैं। संगीत का सामान्य अभिप्राय इस वाद्य विधा से ही समझा जाना चाहिए। उसमें गायन का समावेश आवश्यक नहीं। किन्तु यदि यह संयोग किसी प्रकार बैठ सके तो अच्छा ही है।

सामवेद में वेद मन्त्रों को संगीत प्रवाह के साथ जोड़ा जाता है। वेद तो वस्तुतः तीन ही हैं —ऋक, अजु, अथर्व। प्रायः इन्हीं में वर्णित मन्त्रों की अनेकानेक विधाओं के अनुरूप गाया जाता है तब उसे सामगान कहते हैं। यह छन्द विद्या अपने आप में अनौखी है। पर अब उस विद्या का प्रायः एक प्रकार से लोप ही हो गया है। कहते हैं कि कभी सामगान की सहस्र शाखाएँ थीं। पर अब उनमें से थोड़ी ही उपलब्ध हैं—जटा पाठ, घन पाठ आदि उसी प्रकरण में प्रयुक्त होते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उस लुप्त साम विधा का फिर से अन्वेषण किया जाय और उसकी लुप्त कड़ियों को नये सिरे से जोड़कर प्रस्तुत अस्त-व्यस्तता को सांगोपांग किया जाय और उस आधार पर अगणित प्रकार के लाभ उठाने का सुयोग प्राप्त किया जाय।

विज्ञान का ऊहापोह इन दिनों पाश्चात्य मनीषियों द्वारा ही हो रहा है। उनने संगीत पर प्रयोग वादन तक ही हाथ में लिया है और उसी पर कतिपय प्रकार के प्रयोग किये हैं। पाश्चात्य भौतिकवादी दृष्टिकोण यह है कि उन्हीं कार्यों में उसी हद तक हाथ डाला जाय, जिस हद तक वे मनुष्य के प्रत्यक्ष लाभ में सहायक होते हों। वहाँ संगीत विद्या का अतिरिक्ति अन्वेषण भी इसी आधार पर हुआ है। जल जन्तुओं में वे कृषि, शाक, फल की तरह ही खाद्य मानते हैं इसलिए मछलियों को सरलतापूर्वक पकड़ने और उनका प्रजनन बढ़ाने के लिये प्रयोग हुए हैं। मुर्गी, बत्तख आदि के अण्डे तथा माँस भी उनके लिए गाय के दूध की तरह ही आहार में सम्मिलित होते हैं इसलिए उनके लिए भी प्रयत्न हुए हैं। हिरन, खरगोश, बकरी, भेड़ आदि को भी इसी वर्ग में सम्मिलित करके उन्हें संगीत सुनाकर प्रभावित करने और उनसे स्वयं लाभान्वित होने की चेष्टा भी इसी आधार पर हुई है। उस प्रयत्न में उनने समुचित लाभ भी उठाया है।

मनोरंजन पक्ष में दूसरे लोग बहुत हैं जो गोष्ठियों में, उत्सवों में, नाटकों में, फिल्मों में बजने वाले तरह-तरह के गायनों और वादनों का उपयोग करते रहते हैं। इस विषय में विज्ञान ने इतना ही किया है कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इलेक्ट्रॉनिक मल्टीट्यून, हाई-फी—वाद्य यन्त्र बनाये हैं जो मनुष्य के अभ्यास श्रम को बचाते हैं और हारमोनियम की तरह उँगलियाँ बदलने भर से स्वासन यन्त्रों, तार यन्त्रों, ताल वाद्यों की बाल सुलभ सरलता से बढ़ा देते हैं। यह श्रम की बचत हुई। इसके अतिरिक्ति संगीत का उपयोग वैज्ञानिकों ने इस निमित भी किया है कि उसके आधार पर शारीरिक और मानसिक रोगों का निदान भी किया जा सके एवं छुटकारा भी पाया जाय। उपरोक्त सभी प्रयोजनों की तुलना में यह अधिक महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। अब संगीत उपचार भी एक चिकित्सा पद्धति बन गई है और उसका उपयोग सफलतापूर्वक सम्पन्न हो रहा है।

चिकित्सा की अनेकानेक पद्धतियाँ हैं और उनके अपने-अपने आधार हैं। आयुर्वेद शरीर में वात, पित्त, कफ का असन्तुलन मानता है। यूनानी में आवी, वादी, खादी प्रकृति की अस्त-व्यस्तता को रोगों का कारण मानता है। ऐलोपैथी में जीवाणु, विषाणुओं के आक्रमण, जीवनी शक्ति के शिथिल होने तथा रासायनिक पदार्थों की न्यूनाधिकता की निमित्त कारण बताया गया है। होम्योपैथी में उत्पन्न हुए विषों को लक्षणों के आधार पर विष उपचार में मानने का विधान है। बायोकैमीक में बारह प्रमुख लवणों की घट-बढ़ को निमित्त माना गया है और उन्हें औषधि रूप में देकर क्षति पूर्ति करने की परम्परा है। क्रोमोपैथी में सूर्य किरणों के सात रंगों में से किसी रंग की कमीबेशी को रंगीन काँचों द्वारा उन किरणों का शरीर में प्रवेश कराकर पूरा कराया जाता है। यूनानी तिब्बी प्राय: आयुर्वेद की तरह जड़ी-बूटी खनिज, उद्भिज उपचार पर अवलम्बित हैं।

संगीत चिकित्सा से यह मानकर चला जाता है कि स्नायु संस्थान में विद्युत प्रवाह की न्यूनता या शिथिलता उत्पन्न होने से कतिपय शारीरिक और मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं। अस्तु नाड़ी संस्थान को तरंगगित, उत्तेजित करना सम्भव हो तो शिथिलताजन्य विकृतियों से छुटकारा पाया जा सकता है और अस्त-व्यस्तताओं को दूर किया जा सकता है नाड़ी संस्थान को उत्तेजित करने की क्षमता संगीत में है अतएव उसे मनीषी रोगों से छुटकारा पाने में लाभ उठाया जा सकता है। विशेषतया मानसिक रोगों में। क्योंकि संगीत का मन:संस्थान को शिथिल कर लहराने में अधिक जल्दी एवं अधिक आसानी से प्रभाव पड़ता है।

अब अस्पतालों में चिकित्सा का एक माध्यम संगीत मान लिया गया है। अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, जापान, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, इटली आदि देशों में अस्पतालों में एक विधा के अनुरूप संगीत के—विभिन्न स्तर के रिकार्ड बनकर उपचार में सहायता ली जाती है। मानसिक अस्पतालों में तो इस प्रयोग को अब एक प्रकार से अनिवार्य ही माना जाने लगा है। सरकारी अस्पतालों के अतिरिक्त कितने ही चिकित्सकों ने अपनी उपचार पद्धति पूरी तरह संगीत चिकित्सा पर केन्द्रित की है। वे रोगियों को अमुक ध्वनि के संगीत, उतने समय सुनाये और उन ध्वनि तरंगों के शरीर में प्रवेश करके आवश्यक हेर-फेर करने का सिद्धान्त लैसर किरणों की प्रक्रिया से समतुल्य बताकर समझाते हैं। इसका प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों ही प्रकार का लाभ रोगी को मिलता है और वे इस सहज सुलभ सस्ती और मनोरंजन पद्धति के सहारे अपेक्षाकृत अधिक जल्दी अच्छे होते हैं। अतएव उसका लोकप्रिय होना स्वाभाविक है। वह लोकप्रिय ही नहीं उत्साहवर्धक गति से सफल भी हो रही है।

संगीत विद्या का मुख्य उपयोग आजकल गाने-बजाने और मनोरंजन करने में ही किया जाता है। लेकिन इसका उपयोग इतना मात्र ही नहीं है। संगीत को नादब्रह्म कहा गया है, उसकी साधना कर मनीषियों ने ब्रह्म प्राप्ति, ईश्वर साक्षात्कार का मार्ग भी सुझाया है। योगविद्या के ग्रन्थों में उल्लेख आता है कि जिन मन्त्रों का प्रयोग कर साधक साधना की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ लक्ष्य तक पहुँचता है उनमें मन्त्रों का उच्चारण तो गौण है। मुख्य तो उस उच्चारण में लय को साधना है। मन्त्रों के प्रत्येक अक्षर का एक लक्ष्य नियत किया गया है। उसका सफल अभ्यास करने के बाद ही मन्त्र सिद्धि की कक्षा उत्तीर्ण की जाती है।

गुरुमुख होकर मन्त्र साधना करने का विधान भी इसी उद्देश्य से किया गया है। गुरुमुख से मन्त्र लेने का अर्थ है उसकी लय को अधिकारी सिद्ध पुरुष से सुनना व समझना ताकि उसे लक्ष्य बनाकर अपना साधन अभ्यास आरम्भ किया जाय। वेद मन्त्रों का प्रभाव तभी दृष्टिगोचर होता है; जब उन्हें निर्धारित क्रम से—लयबद्ध रूप में गाया जाय। वस्तुत: मन्त्र साधनाओं में संगीत की सूक्ष्म शक्ति का महत् प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जाता है। इस तथ्य को अन्यान्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहस्यों की भाँति भले ही हम लोगों ने भुला दिया हो परन्तु विज्ञान पुनः इस दिशा में बढ़ रहा है। अब यह तो सिद्ध हो गया है कि संगीत का मनुष्य के मन मस्तिष्क पर अद्‌भुत प्रभाव पड़ता है। यह भी सिद्ध हो गया है कि न केवल मन मस्तिष्क पर वरन् मनुष्य के स्वास्थ्य पर संगीत का अद्‌भुत प्रभाव पड़ता है।

ऐलोपैथी, नैचरोपैथी, होम्योपैथी, बायोकेमिकल चिकित्सा पद्धति आदि चिकित्सा प्रणालियों की तरह पश्चिमी देशों में संगीत से भी रोगों के उपचार की विधि खोज ली गयी है और उसका सफलतापूर्वक उपयोग किया जाने लगा है। पश्चिम जर्मनी के कुछ अस्पतालों में इस चिकित्सा पद्धति का सफलतापूर्वक उपयोग किया जाने लगा है। वहाँ के एक मानसिक चिकित्सालय में जो बर्लिन में स्थित है दो असाध्य मानसिक रोगी लड़कियों का संगीत से पहली बार १९६२ में इलाज किया गया। ये दोनों लड़कियाँ जुड़वाँ बहनें थीं और दोनों ही जटिल रोगों से ग्रस्त थीं।

डॉक्टर उन पर सभी चिकित्सा प्रयोग आजमा चुके थे। दोनों ही शारीरिक रोगों के अतिरिक्ति मानसिक रोगों से भी ग्रस्त थीं। कहना चाहिए उनके रोग शारीरिक कम मानसिक अधिक थे। किसी भी प्रकार के रोग में जब कोई फायदा नहीं हुआ तो एक लड़की पर डा॰ कुर्त्त ने सर्वथा नया प्रयोग किया। उस लड़की को एक ऐसे ग्रुप में शामिल किया गया जिसमें रहने वाले सभी रोगी असाध्य मान लिये गये थे और काफी शोरगुल करते थे । वह लड़की भी इस ग्रुप में शामिल हो गयी। ग्रुप के सभी मरीज काफी शोरगुल करते थे। इस लड़की को शोरगुल पसन्द नहीं आया और वह अस्पताल में पड़ा हुआ ड्रम बजाने लगी। जब भी रोगी चीखते, चिल्लाते, शोरगुल मचाते तभी वह लड़की ड्रम बजाने लगती।

डा॰ कुर्त्त का लड़की की इस हरकत पर ध्यान गया और उन्होंने रोगिणी लड़की को कुछ ठप्पे दिये। अब उसने ड्रम बजाना छोड़ दिया और और उन लकड़ी के ठप्पों को ही धीरे-धीरे किसी वाद्य यन्त्र की तरह बजाती । इससे डॉक्टर को संगीत द्वारा उसका उपचार करने की सूझी तथा कुछ ही समय बाद उसे बाद्ययन्त्र खेलने के लिए दिये जाने लगे। धीरे-धीरे वह वाद्ययन्त्रों को बजाने लगी। उसका आत्मविश्वास लौटने लगा था। शीघ्र ही उसमें इतना आत्मविश्वास पैदा हो गया कि वह उन ध्वनियों का संगीत के माध्यम से उत्तर देने लगी।

इस प्रगति से डा॰ कुर्त्त को सन्तोष हुआ और उनका उत्साह भी बढ़ा। उन्होंने निश्चय किया कि संगीत द्वारा ही उसे रोग मुक्त करने का प्रयास किया जाय। यह प्रयास प्रयोग के तौर पर ही किये गये थे, पर उनमें आश्चर्यजनक सफलता मिली। धीरे-धीरे लड़की की बीमारी दूर होती गयी और वह अपनी परिधि से निकलकर स्वस्थ लोगों के सम्पर्क में आती गयी। संगीत द्वारा मनोरोगों के उपचार का बर्लिन में यह पहला प्रयोग था। अन्य देशों में तो इससे पूर्व भी संगीत द्वारा मनोरोगों की चिकित्सा के सफल प्रयोग किये जा चुके थे। लेकिन ये प्रयोग सामान्य रोगियों पर ही किये गये थे। जटिल तथा असाध्य समझे जाने वाले मानसिक रोगों के उपचार का यह पहला प्रयोग था।

अब तो संगीत को मानसिक रोगों से मुक्ति दिलाने वाली अचूक औषधि समझा जाने लगा है। पश्चिमी देशों में संगीत चिकित्सा दिनोंदिन लोकप्रिय होती जा रही है। इस चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत रोगियों को एक-दूसरे के साजों से निकलने वाली ध्वनियों का उत्तर धुनों के माध्यम से ही देने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। पागल और विक्षिप्त समझे जाने वाले व्यक्तियों की मस्तिष्कीय क्षमता पहले ही प्रयास में इस योग्य तो नहीं बन पाती कि वे बतायी गयी विधि का अक्षरशः पालन कर लें। लेकिन धीरे-धीरे वे एक-दूसरे के साजों से निकलने वाली धुनों को द्वारा ही उत्तर देने लगते हैं। धुनों के माध्यम से उत्तर देने का यह क्रम धीरे-धीरे शब्दों तक भी पहुँच जाता है और परिणामतः रोगी के रोगमुक्त होने में दिनोंदिन सफलता प्राप्त होने लगती है।

पिछले दिनों बर्लिन में ही सम्पन्न हुई 'अन्तर्राष्ट्रीय संगीत चिकित्सा परिषद' में कहा गया था कि—जिन व्यक्तियों को विक्षिप्त मान लिया जाता है और पागल समझकर समाज से अलग कर दिया जाता है, ऐसे व्यक्ति का दिमाग वास्तव में बेकार नहीं हो जाता है। वस्तुतः लोग भावनाओं पर अत्यधिक ठेस लगने के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण मस्तिष्कीय सन्तुलन खो बैठते हैं। कभी-कभी यह असर इतना गहरा हो जाता है कि वह व्यक्ति समाज की धारा से पूरी तरह कट-पिट कर अपने आप में सिमट जाता है।

संगीत में भावनाओं को जाग्रत करने और सम्बल देने की ही नहीं उनके परिष्कृत बनाने तथा उनका सन्तुलन साधने की भी प्रभावशाली क्षमता है। शरीर शास्त्रियों की मान्यता है कि मस्तिष्क के कुछ भाग भावनाओं को उत्तेजित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संगीत का उन अंगों पर बहुत अच्छा और अनुकूल प्रभाव पड़ता है। संगीत द्वारा मस्तिष्क की उन सिकुड़ी हुई माँस-पेशियों को शक्ति मिलती है फलतः व्यक्ति को भावनात्मक बल और आनन्द मिलता है। वे पेशियाँ जो कारणवश निष्क्रिय हो जाती हैं पुनः सक्रिय हो उठती हैं। संगीत की स्वर लहरियों से तनाव हल्का होने की बात तो आम है। लोग संगीत का यह प्रयोग तो आमतौर पर करते हैं। इसी नियम को एक विधि व्यवस्था के साथ रोग चिकित्सा के लिए अपनाया जाता है और अब तो जटिल से जटिल रोगों का उपचार भी संगीत द्वारा किये जाने की विधियाँ खोज ली गयी हैं।

वाद्ययंत्रों के माध्यम से रोगोपचार की यह पद्धति तो कुछ वर्षों पूर्व ही अविष्कृत की गयी है। अब चिकित्साशास्त्रियों का ध्यान इस दिशा में भी गया है कि वाद्ययन्त्रों के अलावा गायन का शरीर व स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है। बाहरी उपकरण इतना प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं तो स्वयं अपनी ही वाणी, शब्द और स्वर तो और अधिक प्रभाव उत्पन्न करते होंगे। इस विषय पर चिकित्साशास्त्रियों का ध्यान भले ही अभी गया हो परन्तु यह तो पिछले काफी समय से जान समझ लिया है कि प्रेरक गीतों का सस्वर उच्चारण मनुष्य को न केवल हल्का-फुल्का व प्रफुल्लित कर देता है वरन् उसकी कई चिन्ताओं, दबाव और तनावों तथा समस्याओं के बोझ को भी बड़ी सीमा तक समाप्त कर देता है।

भारतीय मनीषियों ने संगीत की इस शक्ति को हजारों वर्ष पूर्व पहचानकर उसका उच्च उद्देश्यों के लिए प्रयोग करना आरम्भ कर दिया था। मंत्र साधना का अपना एक स्वतन्त्र विज्ञान तो है ही पर उसमें लय और गति का तालमेल बहुत कुछ संगीत की इस जीवनदात्री क्षमता के प्रयोग का उदाहरण है। कोई आश्चर्य नहीं कि संगीत का स्वास्थ्य प्रयोजन के लिए उपयोग करते-करते विज्ञान इस तथ्य को भी बहुत जल्दी स्वीकार करने की स्थिति में आ जाय।

संगीत की जीवनदात्री सामर्थ्य

संगीत को कभी मनोरंजन का एक साधन समझा जाता था, पर अब वैसी स्थिति नहीं रही। वैज्ञानिकों का ध्यान उसकी जीवनदात्री क्षमता की ओर गया है और उसे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की विकृतियों के निराकरण के लिए प्रयुक्त करने के प्रयोग बड़े उत्साहपूर्वक हो रहे हैं। पीड़ित व्यक्ति के लिए तो संगीत उस रामबाण औषधि की तरह सिद्ध हुई है जिसका श्रवण पान करते ही तात्कालिक शान्ति मिलती है। संगीत की स्वर लहरियों की कोमलता और लयबद्धता में कुछ ऐसी शक्ति है जो शारीरिक और मानसिक लाभ पहुँचाने के साथ सहज ही आत्मा को भी ऊर्ध्वमुखी बना देती है।

पाश्चात्य देशों में पिछले दिनों संगीत द्वारा रोग निवारण की दिशा में बहुत शोध कार्य हुआ है। तदनुसार ऐसे सूत्र ढूँढ़ निकाले गये हैं जिनके सहारे विभिन्न रोगों के रोगियों की चिकित्सा विभिन्न स्वर प्रवाहों और वाद्य यंत्रों की सहायता से की जाती है। इंग्लैण्ड के चिकित्सा विज्ञानी डा॰ मीड और अमेरिका के एडवर्ड पोडीलास्की ने अपने अनुसंधान का सार निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए बताया है कि संगीत से तोड़ी संस्थान में एक विशेष प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न होती है जिसके सहारे शरीरगत मल विसर्जन की-दूषित तत्वों की शिथिलता दूर होती है। पश्चिम जर्मनी के डा. रोनाल्ड ड्रोह के अनुसार संगीत के द्वारा रुग्ण शरीर में उत्पन्न एड्रिनेलिन की मात्रा में कमी हो जाती है। इससे रोगियों के दर्द को एकदम शांत किया जा सकता है। उन्होंने बच्चों के मानसिक रोगों को इस विधि से दूर करने में काफी सफलता पाई है। अमेरिका के ही प्रख्यात मनःचिकित्सक डॉ॰ जार्ज स्टीवेन्सन एवं डा. नार्मन विन्सेन्ट पील ने संगीत को स्नायविक-मानसिक तनाव के निराकरण की अचूक औषधि कहा है। संगीत के अभ्यास और श्रवणकाल दोनों में मन को विश्रान्ति ही नहीं, आनन्द भी प्राप्त होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गायन और वाद्य यदि स्वर शास्त्र के अनुरूप हों तो उसका सुनने वालों पर उपयोगी प्रभाव पड़ता है। अमेरिका के संगीत चिकित्सक डॉ॰ हार्ल्स एस्टले ने इस प्रक्रिया पर अधिक व्यवस्थित अनुसंधान किया है। उनने लगातार बीस वर्ष इसी पद्धति से उपचार किया है और बताया है कि एलोपैथी द्वारा रोग-मुक्त होने वालों की अपेक्षा संगीत उपचार से अच्छे होने वालों का अनुपात कहीं अधिक है। विशेषतया मानसिक रोगों में तो वह अचूक काम करती है। माँसपेशियों और नाड़ी संस्थान की गड़बड़ी तो निश्चित रूप से अन्य उपायों की अपेक्षा संगीत द्वारा अधिक सफलतापूर्वक और अधिक जल्दी अच्छी की जा सकती है। उनके अनुसार जो न गाना जानते हैं न बजाना वे भी अपनी शारीरिक-मानसिक स्थिति के अनुरूप स्वर लहरी उपयुक्त मात्रा में सुनकर बहुत हद तक लाभान्वित हो सकते हैं।

पिट्सवर्ग (अमेरिका) की एक एल्युमिनियम कम्पनी (अल्कोआ) के फिल्म डाइरेक्टर राल्फ लारेन्स हॉय संगीत से बड़ा प्रेम रखते हैं। वे स्वयं एक सुप्रसिद्ध वायलिन वादक और उनकी धर्मपत्नी ग्रेश्चेन अच्छी पियानो वादिका हैं। दोनों एक दिन संगीत का अभ्यास कर रहे थे । एकाएक उन्हें एक महिला की याद आई। इस परिवार से उनका घनिष्ट सम्बन्ध था पर इधर बहुत दिनों से उनकी भेंट नहीं हो सकी थी।

दूसरे दिन उन्होंने विस्तृत छान-बीन को तो पता चला कि वह महिला रुधिर नाड़ियों की किसी भयंकर बीमारी से पीड़ित रोग शैया पर पड़ी दिन काट रही हैं। अगले दिन लारेन्स हॉय अपनी धर्मपत्नी सहित उनसे मिलने गये । रोगियों का उपचार करने वाले डाक्टरों से पूछताछ करने पर पता चला कि रोग असाध्य हो चुका है और उसके अच्छा होने की कोई सम्भावना नहीं है।

कितने दिनों से वह इस तरह का कष्ट भुगत रही हैं। इस बीच उनकी आत्मा ने शायद ही कभी प्रफुल्लता अनुभव की हो। शरीर आधि-व्याधि से पीड़ित होता है तो भला यह संसार किसे अच्छे लगता है पर एक वस्तु परमात्मा ने ऐसी भी बनाई —लारेन्स हॉय ने विचार किया कि वह कैसे भी पीड़ित हृदय को भी प्रसन्नता प्रदान करती है। संगीत, उन्होंने सोचा —सबको आत्मा-सन्तोष देता है, क्यों न आज इन्हें संगीत सुनाऊँ सम्भव: उससे इन्हें कुछ शीतलता मिले।

पति-पत्नी रोगिणी के पास बैठ गये । पति ने बायलिन उठाया, पत्नी ने पियानो पर संगीत दी। धीरे-धीरे संगीत लहरियाँ उस क्रन्दन भरे कमरे में गूँजने लगीं । रोगिणी को ऐसा लगा जैसे कष्ट पीड़ित अंगों पर कोई हल्की-हल्की मालिश कर रहा है। कर्ण-प्रिय मधुर संगीत धारा प्राण-प्रिय वस्तु की तरह मिली। मन्त्र-मुग्ध की तरह वे उन स्वर लहरियों का आनन्द लेती रहीं और उसी में आत्म-विभोर होकर सो गईं। रोगिणी होने के बाद ऐसी प्रगाढ़ निद्रा उन्हें कभी नहीं आई थी। जागीं आँखें खोलीं तो उन्होंने अपने मन में विलक्षण शांति और विश्राम की अनुभूति की। इस कृपा के लिये उन्होंने लारेन्स हॉय को हार्दिक धन्यवाद प्रदान किया। उन्हें रोग में भी बड़ा आराम मिला।

लारेन्स हॉय घर लौट आये और कई दिन तक इस घटना पर विचार करते रहे। उसकी पत्नी ने सुझाया क्यों न ऐसी कोई व्यवस्था करें कि इन्हें प्रतिदिन ऐसा संगीत सुनने को मिल जाया करे। बहुत देर तक उन्होंने विचार-विनियम कर एक योजना बनाई। उसके अनुसार कई तरह के गीतों को विभिन्न मनमोहक ताल, स्वरों पर टेप-रिकार्ड करा लिया और वह सारे टेप उस महिला को भेज दिये, जो वर्षों से स्नायु रोग से पीड़ित थी। यह टेप पाकर महिला को मानो अमृत मिला। वह नियमित रूप से यह संगीत भरे टेप-रिकार्ड सुना करती और उन स्वरों में तन्मय हो जाती। जब स्वर समाप्त होते तो लगता, शरीर के रोगी परमाणु शरीर से निकल गये हैं और वह हलकापन अनुभव कर रही है। सचमुच कुछ ही दिनों में वह पूर्ण स्वस्थ हो गई। संगीत-शक्ति की यह बड़ी भारी विजय थी, जिसने भौतिक विज्ञान (डाक्टरी) को भी पछाड़कर रख दिया।

राल्फ लारेन्स हॉय इस घटना से इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने रोगियों के लिये संगीत-चिकित्सा की एक नई दिशा ही खोल दी। 'आर फोर आर' (रिकार्डिंग फार रिलैग्जेशन, रिफ्लेक्शन, रेस्पांस एण्ड रिकवरी) नाम से यह प्रतिष्ठान आज सारे अमेरिका और यूरोप में छाई हुई है। इस संस्थान की संगीत-चिकित्सा ने हजारों रोगियों को अच्छा किया है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और अब वह एक अति साधन सम्पन्न संस्था की तरह विकसित होकर लोक-कल्याण की दिशा में प्रवृत्त है।

उसके इतिहास और उसकी उपलब्धियों से पता चलेगा कि सचमुच संगीत मानव-मन, शरीर एवं आत्मा को प्रभावित करने वाली आयु, प्राण, बल और आरोग्यबर्द्धक शक्ति है। हम भारतवासी अपनी इस बिरासत को खोते चले जा रहे हैं, जबकि योरोपवासी उसके लिये हर तरह का त्याग करने को प्रस्तुत हो रहे हैं।

राल्फ लारेन्स हॉय इस तरह का प्रयोग करने वाले कोई प्रथम व्यक्ति नहीं हैं। उन्हें मिशन बद्ध काम करने में ख्याति मिली है, वैसे इनसे पूर्व डा० एडवर्ड पोडोलास्की (न्यूयार्क) भी प्रसिद्ध चिकित्सक और संगीतज्ञ हो चुके हैं उन्होंने लिखा है—गाने से रक्त संचालन बढ़ता है, शिराओं में नवजीवन संचार होता है। जो लोग गाने-बजाने और नाचने आदि में से किसी का भी नियमित अभ्यास करते हैं, उनमें फेफड़े और जिगर सम्बन्धी रोग बहुत कम पाये जाते हैं। शरीर के विजातीय द्रव्य और विषैले पदार्थों को निकाल बाहर करने में संगीत का असाधारण महत्त्व है, यदि सहायता ली जाय तो उससे अनेक प्रकार के रोगों का उपचार किया जा सकता है।

यह शारीरिक लाभ किसी श्रद्धा या विश्वास के परिणाम हों सो बात नहीं। श्रद्धा और विश्वास से लाभ की मात्रा तो आश्चर्यजनक ढंग से बढ़ती है पर यदि वह न हो तो भी लाभ मिलने का सुनिश्चित विज्ञान है, उसे समझने के लिये हमें शब्द की उत्पत्ति और उसके विज्ञान को जानना पड़ेगा।

एक वस्तु का दूसरी वस्तु से आघात होता है, तब 'शब्द' की उत्पत्ति होती है। जिस वस्तु पर चोट की जाती है उसके परमाणुओं में कम्पन उत्पन्न होता है। वह कम्पन आस-पास की वायु को भी प्रकम्पित करता है। हवा में उत्पन्न कम्पन की लहरें मण्डलाकार गति से फैलती हैं और कुछ ही समय में सारे संसार में छाहर जाती हैं। यही कम्पन कान के पर्दे से टकराते हैं तो कान की भीतरी झिल्ली समानुपाती गति से हिलने-डुलने लगती है और विद्युत चुम्बकीय तरंगों के रूप में कान की नसों से होती हुई मस्तिष्क के श्रवण-केन्द्र तक जा पहुँचती है।

हम जानते हैं कि शरीर में नाड़ियों की संख्या और बनावट इतनी अधिक और सघन है कि प्रत्येक अवयव का सम्बन्ध शरीर के रत्ती-रत्ती भर स्थान से है। कभी कान में कोई पतली लकड़ी या और कोई वस्तु चली जाती है तो सारे शरीर में विद्युत आवेश दौड़ जाने की तरह की सिहरन होती है। बाह्याघात से परमाणुओं के कम्पन जब मस्तिष्क के श्रवण-केन्द्र तक पहुँचते हैं, तब वे इसी सिद्धान्त के आधार पर शरीर के सम्पूर्ण परमाणुओं में थिरकन उत्पन्न कर देते हैं पर यह थिरकन, कम्पन या सिहरन शब्द के ताल-सुर और गति पर अवलम्बित होती है, इसीलिये प्रत्येक शब्द का एक-सा प्रभाव शरीर पर नहीं पड़ता वरन् जो कुछ भी बोला और सुना जाता है, उसका भिन्न-भिन्न तरह का प्रभाव शरीर पर पड़ता है।

शरीर की सम्वेदनशीलता परमाणुओं में स्थित सबसे कोमल भाग में कम्पन के कारण होती है। वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि शब्द के ४५००० बार तक के कम्पन को हम सुन सकते हैं, उससे अधिक और १४ कम्पनों से कम के शब्द को हम नहीं सुन सकते। इस बीच के ध्वनि-तरंगों में दो तरंगों के बीच में जितना समय लगता है, ध्वनि-तरंगें यदि उसी समय को स्थिर रखकर बराबर प्रवाहित होती रहें तो शरीर स्थित परमाणुओं के कोमल तन्तुओं का आकुंय-प्रकुंय (फैलना और सिमटना) होता है, उससे उन कोशों में स्थित भारी-अणु अर्थात् रोग और गन्दगी के कीटाणु निकलने लगते हैं। समान समय वाले यह कम्पन ही संगीत में सुर कहे जाते हैं। उनका जीवन विज्ञान से घनिष्टतम सम्बन्ध माना गया है। यदि कोई प्रतिदिन मधुर संगीत सुनता, बजाता, गाता अथवा ताल और गति के साथ नृत्य करता है तो उसका शरीर अपने दूषित तत्व बराबर निकालता रहता है, इस तरह रोगों के कीटाणु भी घुल जाते हैं और शरीर भी स्वस्थ बना रहता है। मन को विश्राम और प्रसन्नता मिलना शरीर के हल्केपन का ही दूसरा नाम है, अर्थात् यही ध्वनि-कम्पन आत्मा तक को प्रभावित करने का काम करते हैं।

अमेरिका के पथरी के एक रोगी पर डा० पोडोलास्की ने प्रयोग करके देखा कि संगीत की सूक्ष्म ध्वनि-तरंगों के आघात से पथरी के कुछ कण प्रतिदिन टूटकर उससे अलग हो जाते और मूत्र के साथ मिलकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बाहर निकल आते हैं। प्रयोग के दौरान प्रतिदिन मूत्र का परीक्षण किया जाता रहा। देखा गया कि जिस दिन संगीत का प्रयोग थोड़ी देर हुआ, उस दिन थोड़ी मात्रा में ही पथरी टूटी जबकि जिस दिन संगीत बिलकुल नहीं बजा उस दिन के मूत्रपरीक्षण में पथरी का एक भी टुकड़ा नहीं मिला। इसके बाद यह क्रम बीच में कभी बन्द नहीं किया गया तो उससे पथरी घुलकर पूरी की पूरी घुल गई।

'आमेलिता गलिगुर कुर्सी' नामक एक लड़की बाल्यःकाल से ही लकवे का शिकार हो गई। न तो उसके हाथ काम करते थे, न पाँव। उसके इलाज के लिये अच्छे-अच्छे डाक्टर लगाये गये, फिर भी कोई लाभ न हुआ। कहीं से उसे संगीत का प्रेम जाग गया। वह नियमित रूप से गाने का अभ्यास करने लगी। जब तक वह बजा नहीं सकती थी, वाद्य-यन्त्र कोई और बजा देता था। वह घण्टों भावविभोर गाती रहती और उसका प्रभाव यह हुआ कि उसका शरीर धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगा। वह स्वयं भी बजाने लगी। फिर चलने-फिरने और दौड़ने भी लगी। पूर्ण स्वस्थ होने के अठारह वर्ष बाद उसने अपने एक संस्मरण में बताया कि—"विगत अठारह वर्षों से मैं एक भी दिन बीमार नहीं पड़ी। मैं प्रतिदिन गाने का आधा घण्टा अभ्यास करती हूँ।"

केलेफोर्नियाँ के एक व्यक्ति की जबान बन्द हो गई थी। वह कुछ भी बोल नहीं सकता था। चिकित्सकों ने उसे 'मनोरोगी' कहकर असाध्य ठहरा दिया था पर ऊपर अमेरिका की जिस संस्था का नाम दिया गया है, एक स्वयं-सेविका ने उसके रिकार्ड दो वर्ष तक लगातार इस व्यक्ति को सुनाये और एक दिन लोग यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये कि संगीत-ध्वनि के कारण वह इतना आल्हादित हो उठा कि एकाएक उसकी जबान फूट पड़ी और धीरे-धीरे वह सब की तरह खूब अच्छी तरह बोलने और बातचीत करने लगा।

यह घटनायें देखकर नारद संहिता का वह श्लोक याद आ जाता है, जो भगवान् विष्णु ने नारद जी से कहा था—

खगाः भृंगाः पतंगाश्च कुरश्रखाद्योपिजन्तवः।
सर्व एव प्रगीयन्ते गीतव्याप्तिर्दिगन्तरे॥

हे नारद! पक्षी, भौंरे, पतंगे, हिरण आदि जीव-जन्तुओं को भी संगीत से प्रेम होता है। संगीत से संसार का कोई भी स्थान रिक्त नहीं। अर्थात् संगीत एक सर्वव्यापी ईश्वरीय तत्व है और वह परमात्मा के समान ही सम्पूर्ण संसार को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक आरोग्य प्रदान करता है।

अमर कहानीकार मुन्शी प्रेमचन्द्र ने इसी तथ्य को व्यक्त करते हुए लिखा है—"मनोव्यथा जब असह्य हो जाती और अपार हो जाती है, जब उसे कहीं त्राण नहीं मिलता, जब वह रुदन और क्रन्दन की गोद में भी आश्रय नहीं पाती तो वह संगीत के चरणों में जा गिरती है।"

संगीत मनुष्य की आत्मा है, उसे अपने जीवन से अभिन्न न करें तो आत्मोत्थान के स्वर्गीय सुख से भी हम कभी वंचित न हों।

ऐसी असाध्य रोग से ग्रसित महिला को संगीत के द्वारा स्वस्थ होते देखा तो राल्फ लारेन्स हॉय का मन संगीत के प्रति श्रद्धा से भर गया। यही नहीं अपनी पत्नी श्रीमती ग्रेश्चेन के साथ विचारविमर्श करके उन्होंने यह भी निश्चित किया कि भगवान् की दी हुई इस बहुमूल्य निधि का मानवीय सेवा के रूप में सदुपयोग क्यों न किया जाय? शब्द शक्ति के वैज्ञानिक पहलू पर ध्यान देते तो इस योजना के लिए उन्हें और भी विकलता होती। अन्ततः उन्होंने इस परियोजना को मूर्त रूप दे ही दिया। पहली बार "आर फोर आर" रिफ्लेक्शन (रिकार्डिंग फार रिलेग्जेशन, रिफ्लेक्शन रेस्पाँस एण्ड रिकवरी) नाम से एक संस्था ने संगीत आन्दोलन के लिए हिम्मत की और थोड़े ही समय में वह सफलता के जिस चरम बिन्दु तक पहुँची उससे भी संगीत की महाशक्ति और उसके प्राण बर्द्धक स्वरूप का परिचय मिलता है।

प्रारम्भ में उन्होंने कुछ शास्त्रीय धुनें तैयार की और उन्हें पिट्स वर्ग के अस्पतालों में जहाँ वृद्धि लोग रहते थे वहाँ तथा घायल सैनिकों के अस्पतालों में जाकर सुनाना प्रारम्भ किया। उससे रोगियों को जो शारीरिक तथा मानसिक लाभ हुआ उससे उनका उत्साह और भी बढ़ गया। इस दृष्टि से देखें तो विदेशी हम भारतीयों से हजार गुना अच्छे। जो वस्तु उन्हें उपयोगी और मानवीय हित में दिखाई दी उसके प्रति निष्ठा और कार्यान्वयन का साहस हमें विदेशियों से ही सीखना होगा। उस तरह की हिम्मत हममें भी आ गई होती तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न केवल दहेज, जाति-भेद, ऊँच-नीच, छूआछूत, अन्ध-विश्वास, पलायनवाद जैसी सामाजिक बुराइयों को पूरी तरह समाज से उखाड़ चुके होते वरन् ज्ञान-विज्ञान, भाषा, भेष, साहित्य और संस्कृति के पुनर्निर्माण में भी बहुत आगे बढ़ चुके होते।

सेवा-भाव और परिश्रम के साथ संगीत सत्ता के समन्वय ने एक ऐसा प्रभाव उत्पन्न किया कि कुछ ही समय में न केवल पिट्सवर्ग वरन् अमरीका के दूसरे शहरों में भी इस संस्था की चर्चा होने लगी। एक लड़का जिसके हाथ पाँव लकवे से मारे गये थे। स्वस्थ होने की कोई आशा नहीं थी किन्तु उसे लारेन्स हाय का शास्त्रीय संगीत सुनने का सौभाग्य मिला। उसके फलस्वरूप उसका रोग अच्छा हो गया अब यह युवक कम्पनी में टाइपिस्ट का काम करता है।

अस्पताल में एक ऐसी वृद्ध महिला प्रविष्ट की गई जिसका मस्तिष्क लगभग शून्य हो गया था। वह न तो बोल सकती थी और न ही चल फिर सकती थी। भीतर का कष्ट आँसुओं से ही दिखाई देता था। डाक्टर अनुभव करते थे कि रोगों की प्रक्रिया शारीरिक ही नहीं मानसिक भी है, मानसिक ही नहीं वह आत्मिक भी है क्योंकि बाह्य परिस्थितियाँ ही नहीं अपने स्वभाव और संस्कार भी कई बार ऐसे कर्म करने को विवश कर देते हैं जो हमारे शरीर को रोगाणुओं से भर देते हैं। इतना सोचने पर भी चिकित्सा का कोई विकल्प उनके पास नहीं था।

डा. हॉय ने कहा—तब जबकि मनुष्य का रोग सब ओर से असाध्य हो गया हो उसकी चेतना के अन्तिम स्रोत तक को संगीत की अदृश्य स्वर लहरियों से प्रभावित और ठीक किया जा सकता है। फलस्वरूप यह मामला भी उन्हें सौंपा गया। श्री हाय ने कुछ पुराने लोकप्रिय गीतों के टेप उस महिला को सुनाये। थोड़े ही समय में वह स्त्री न केवल गुनगुनाने और बोलने लगी वरन् जब भी 'टेप' बजाये जाते उसके पाँव भी नाचने की मुद्रा में गति देने लगते।

एक और रोगी जो उठकर चल भी नहीं सकता था जिसका सदैव आत्म-हत्या करने का प्रयत्न रहता था वह भी श्री हॉय के संगीत से अच्छा हो गया। नार्वे का एक मरीज भी ऐसी ही निराशाजनक स्थिति में हॉय के पास आया। दिक्कत यह थी कि डॉ० हॉय के पास नार्वे संगीत के रिकार्ड नहीं थे, फलस्वरूप उन्होंने वहाँ के शासनाध्यक्ष को पत्र लिखा। उस पत्र में उन्होंने संगीत की शोध सम्बन्धी उपलब्धियों का भी वर्णन किया उससे नार्वे का राजा बड़ा प्रभावित हुआ उसने अच्छे-अच्छे रिकार्ड हॉय को भिजवा दिये। हॉय के प्रयोग से यह रोगी भी अच्छा हो गया।

अब हॉय के समक्ष एक दूसरा ही जीवन था—संगीत विद्या का प्रसार। हम में से सैकड़ों ऐसे हैं जो अपनी अमूल्य संगीत निधि के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं हम स्वार्थ, संकीर्णता और हिम्मत के अभाव में चाहते हुए भी कुछ कर नहीं पाते, लेकिन डॉ० ने जैसे ही यह निश्चित समझ लिया कि संगीत मनुष्य के लिए एक ईश्वरीय वरदान के समान है उन्होंने 'अल्कोआ' कम्पनी के सम्मानास्पद पद से त्याग पत्र दे दिया। इन दिनों वे न्यूयार्क राज्य के एक गाँव ब्रेनाड्र्स विल में रहते हैं। यह स्थान शेटुगे लेक (झील) के पास है। यहाँ उनका सब प्रकार के आधुनिक साधनों से सज्जित आर्केस्ट्रा तथा साउण्ड रिकार्डिंग थियेटर है। एक छोटा सा आश्रम जैसा है वहीं से सब कार्यक्रमों का संचालन, पत्र व्यवहार तथा शोध कार्य सम्पन्न होता है। श्री हॉय का विश्वास है कि एक दिन वह भी आयेगा जब मानवीय आदर्शों का नियमन सचमुच संगीत द्वारा होने लगेगा क्योंकि उसमें आश्चर्यजनक आकर्षण और मधुरता है।

इस कार्य में अकेले श्री हॉय संलग्न हों सो बात नहीं वहाँ के अधिकांश लोग शास्त्रीय संगीत की महत्ता अनुभव करने लगे हैं यही कारण है कि सार्वजनिक संस्था के रूप में इस संस्थान को साधनों का कभी अभाव नहीं अखरा। न्यूयार्क फिलहार्मोनिक आर्चेस्ट्रा प्रसिद्ध अभिनेता डैनी तथा मार्मन टैबर्नेक क्बार, जो कि अमरीका की एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्ति धार्मिक भजनों को गाने और प्रसार करने वाली मंडली है, ने अपने सामान और कार्यक्रमों के टेप हॉय को दिये हैं। स्व० राष्ट्रपति कैनेडी ने ह्वाइट हाउस में जो भी संगीत कार्यक्रमों के टेप थे उन सबकी नकल कराके डॉ० हॉय को भेंट कर दी। प्रसिद्ध संगीतकार जेनिस हरसांटी ने अपना स्वर बिना मूल्य हॉय को मानवीय सेवाओं के लिए दिया। नार्वे के अतिरिक्त लिस्बन (पुर्तगाल) के कैलूस्ट गुल्बेकियन फाउन्डेशन ने भी बहुत से पुर्तगाली रिकार्ड दिये हैं। अब तक इस संस्था के पास ७०० से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी अधिक टेप तथा २००० से अधिक ऐसी संस्थाएँ हैं जो इस कार्य में नियमित सहयोग देती हैं। जन-सहयोग इससे भिन्न है। हम भी चाहें तो अपने देश के प्रभावशील व्यक्तियों से अथवा जन-सहयोग से कोई इस तरह का आन्दोलन खड़ा करके लोक जीवन को सरस और प्राणवान् बना सकते हैं।

डॉ० हॉय को तो शोध कार्य भी करना पड़ता है हमारे शास्त्रीय संगीत में तो सबकुछ पहले से ही उपलब्ध है। टोड़ी, दीपक, मेघ, मल्हार, पचड़ा आदि राग, भेरी, शंख, बंशी, मृदंग, पटह, कलह, पणव, कोण, वीणा, सितार, किलकिला, क्रकच स्वेड आदि वाद्ययन्त्र उसके प्रमाण हैं। इनके प्रसार भर की आवश्यकता है यदि कुछ लोग शास्त्रीय संगीत की प्रतिष्ठा के लिए डा० हॉय की तरह ही सेवा व्रत लेकर जुट जायें तो अपनी महान्तम लोक-कला को फिर से नया जीवन दिया जा सकता है। व्यक्तिगत रूप से तो संगीत जैसी ललित कला के प्रति अभिरुचि सभी को रखनी चाहिये।

लारेन्स की इस उपचार पद्धति ने अब तक मानसिक अवसाद, निराशा, पोलियो, रक्तवाही नाड़ियों की बीमारियों से ग्रस्त हजारों लोगों को अच्छा कर नवजीवन प्रदान किया है। उनका कहना है कि संगीत मनुष्य के लिए एक ईश्वरीय वरदान के समान है और तब जबकि मनुष्य का रोग सब ओर से असाध्य हो गया हो, उसकी चेतना के अंतिम स्रोत तक को संगीत की अदृश्य स्वर लहरियों से प्रभावित और ठीक किया जा सकता है। लारेंस का पूरा जीवन इसी के लिए समर्पित है।

संगीत के संबन्ध में यदि आधुनिक यन्त्रों द्वारा गम्भीरता-पूर्वक शोध की जाय तो उससे प्रस्तुत समय के अगणित शारीरिक, मानसिक रुग्णता को दूर किया और आरोग्य के अभिवर्धन में महत्त्वपूर्ण सहायता ली जा सकती है। इस प्रकार के प्रयोग योरोप एवं अमेरिका के वैज्ञानिक कर भी रहे हैं और उन्हें आशाजनक सफलता भी मिली है। मानसिक व्याधियों से ग्रस्त लोगों पर संगीत से आश्चर्यजनक लाभकारी प्रभाव होने का निष्कर्ष सामने आया है। सोवियत रूस के क्रीमिया स्वास्थ्य केन्द्र ने चिकित्सा में औषधि उपचार के साथ-साथ संगीत को भी एक उपाय माना है। इस संदर्भ में वहाँ देर से प्रयोग चल रहे हैं जिनमें उत्साहवर्धक सफलता मिल रही है। अनिद्रा, उदासी, सनक जैसे मस्तिष्कीय रोगों में तो इस उपचार को बड़ी सफलता मिली है। वहाँ के अस्पतालों में मूर्धन्य वैज्ञानिक प्रो० एस० वी० फैकफ ने संगीत के प्रभाव का अन्वेषण करके यह निष्कर्ष निकाला है कि उस उपचार का प्रभाव नाड़ी संस्थान की विकृतियों पर और मनोविकारों पर बहुत ही सन्तोषजनक मात्रा में होता है। डा० वाल्टर एच० वालेस के अनुसार जुकाम, पीलिया, यकृतशोथ, रक्तचाप जैसे रोगों की स्थिति में उपयोगी संगीत का अच्छा प्रभाव होता है। प० जर्मनी के मनोरोग चिकित्सक डा० वाल्टर क्यूग का कथन है कि पागलपन-हिस्टीरिया, अन्यमनस्कता-भेलेने कोलिया जैसे मनोविकारों के निवारण में संगीत को सफल उपचार के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। इटली में एक विशिष्ट नृत्य होता है, तब अनेक मधुर वाद्य बजते हैं, उनसे अनेक पागलपन के रोगी अच्छे होते देखे गये हैं।

भारतवर्ष में शास्त्रीय संगीत की शक्ति और महत्ता के सम्बन्ध में इतिहास के पन्ने भर पड़े हैं। अब उस दिशा में नई खोजें की जाने की आवश्यकता है, पर सामान्य व्यक्तियों को कथा-कीर्तन, भजन, संगीत एवं छोटे-छोटे वाद्य यंत्रों के वादन और गायन के द्वारा उसके स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का लाभ अवश्य उठाना चाहिए। संगीत स्पन्दन शरीर पर बड़ा अनुकूल प्रभाव डालते हैं। चेतना को लय में बाँधने वाले गायन में तन्मयता आवश्यक है पर उतनी तन्मयता न हो तो भी संगीत का मनुष्य के मस्तिष्क, हृदय और शरीर पर विलक्षण प्रभाव अवश्य पड़ता है। नास्तिक और रूखे स्वभाव के समझे जाने वाले व्यक्ति भी उसकी तरंग में बहते देखे जाते हैं। अमेरिका की प्रमुख कला पत्रिका 'दि अदर ईस्ट विलेज' ने भारतीय संगीत की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए लिखा है कि-मनुष्य की भीतरी सत्ता को राहत देने और तंरगित करने की भारतीय संगीत के ध्वनि प्रवाह में अपने ढंग की अनौखी क्षमता है। उसकी उपयोगिता और सम्मोहिनी शक्ति अपने आपमें विलक्षण और अद्वितीय है जिस पर किसी भी देश के किसी भी व्यक्ति को विरोध नहीं। वस्तुत: मानव का संगीत के प्रति स्वाभाविक प्रेम ही इस बात का प्रमाण है कि वह कोई नैसर्गिक तत्व और प्रक्रिया है।

इस संदर्भ में अन्नामलाई विश्वविद्यालय के मूर्धन्य वनस्पतिशास्त्री डॉ० टी० एन० सिंह ने अपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहयोगियों के साथ वनस्पति एवं प्राणियों पर उल्लेखनीय परीक्षण किये हैं। उन्होंने अपने प्रयोगों से यह सिद्ध किया है कि संगीत की मधुर ध्वनि तरंगों द्वारा पेड़-पौधों की-फसलों की उन्नति में आशाजनक सहायता मिल सकती है। संगीत एक प्रभावी शक्ति सिद्ध हो सकती है। जिस प्रकार प्रकृति और प्राणि जगत में प्रकाश और गर्मी का प्रभाव होता है। उससे उनके शरीर बढ़ते, पृष्ट और स्वस्थ होते हैं। उसी प्रकार ध्वनि में भी तापीय और प्रकाशीय ऊर्जा होती है और वह प्राणियों के विकास में इतना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है जितना कि पोषक तत्व और जल। रोग निवारण में संगीत की विशिष्ट भूमिका होती है। जोधपुर मेडिकल कालेज के चिकित्सकों ने भी रोगियों पर संगीत चिकित्सा के प्रभाव का अध्ययन किया है। उनके अनुसार संगीत के मधुर प्रभाव के कारण रोगी अपनी चिन्ताएँ तथा दुःख भूल जाते हैं तथा जल्दी ठीक होते हैं।

बंगलौर में 'पवानी' नामक एक संस्था है जो संगीत का मनुष्य पर मनोवैज्ञानिक तथा जैव-वैज्ञानिक रूप से पड़ने वाले प्रभावों पर अनुसंधान कर रही है। अब तक जो निष्कर्ष सामने आये हैं उसके अनुसार संगीत की अभूतपूर्व आरोग्यकर क्षमता की पुष्टि हुई है। चयापचय, बायोरिदम एवं न्यूरोकेमीकल्स में संगीत महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाता है। जब मृदुध्वनियों के प्रभाव से मस्तिष्क शांतिमय स्थिति में पहुँचता है तो रक्त शर्करा का स्तर कम हो जाता है और त्वचा के तापमान में उतार-चढ़ाव आता है। इसी तरह भिन्न-भिन्न प्रकार के राग अलग-अलग भावों को उत्पन्न करते हैं तथा उनसे प्रसारित होने वाली ऊर्जा श्रोताओं के तंत्रिका तन्त्र एवं रसायन तन्त्र को प्रभावित करती है। इसका विस्मयकारी परिणाम रोगशमन के रूप में परिलक्षित होता है। चिकित्सा विज्ञानियों का कहना है कि संगीत द्वारा एक विशेष प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न होती है जिससे मनुष्य अपनी शक्ति पर आधारित हो जाता है। यही वह तथ्य है जो रोगी को स्वस्थ बनाता है।

लन्दन के कुछ अनुभवी चिकित्सक गर्भस्थ शिशु के लिए संगीत की धुनें बजाकर यह पता लगाने की चेष्टा कर रहे हैं कि गर्भस्थ शिशु की श्रवण शक्ति का विकास किस प्रकार होता है और मधुर ध्वनियों से स्नायविक प्रणाली पर क्या प्रभाव होता है? देखा गया है कि यदि गर्भवती स्त्री को नियमित रूप से संगीत सुनने को मिले तो उससे न केवल प्रसव काल का कष्ट कम किया जा सकता है वरन् आने वाली सन्तति को भी शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक दृष्टि से दृढ़ और बलवान बनाया जा सकता है। मनः चिकित्सकों का कथन है कि गर्भवती महिलाओं को संगीत का अभ्यास अथवा रसास्वादन अवश्य करना चाहिए। जो गा-बजा नहीं सकतीं उन्हें अच्छे भजन-कीर्तन, भक्ति, करुणा, प्रेम, दया, साहस और सेवा के प्रेरक गीत सुनने के लिए कोई साधन अवश्य बनाना चाहिए।

पूर्व जर्मनी के गोटिंगन नगर के संगीत द्वारा चिकित्सा करने वाले जौहान्स शूमिलिन नामक वैज्ञानिक ने अपने प्रयोगों और अनुसंधानों से यह सिद्ध किया है कि मनुष्यों की तरह ही बीमार पशुओं को भी संगीत उपचार से रोगमुक्त किया जा सकता है। उन्होंने अनुभवों और परीक्षणों का विस्तृत विवरण प्रकाशित करते हुए यह बताया है कि किस प्रकार बिना औषधि के ही कितने कष्टसाध्य रोगों से ग्रस्त मनुष्यों ने ही नहीं पशुओं ने भी रुग्णता से छुटकारा पाया। दुधारू पशुओं को दुहते समय अमुक ध्वनि का संगीत सुनाकर अधिक दूध प्राप्त करने में भी वैज्ञानिकों को सफलता मिली है।

स्वस्थ एवं प्रेरणाप्रद मधुर संगीत गायन एवं श्रवण के अनेकों लाभ हैं। शरीर के विजातीय द्रव्य और विषैले पदार्थों को निकाल बाहर करने में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। गायन और वादन की श्रोताओं पर जो प्रतिक्रिया होती है उसके फलस्वरूप मानसिक विकृतियाँ, विक्षिप्तता, आलस्य, पीड़ा, मूर्च्छा, निद्रा का अभाव, रक्तचाप, कान के दर्द, हृदय की धड़कन और श्वांस रोग आदि में आराम मिलता है। कई बार कुछ रोग असाध्य हो जाते हैं और उन पर संगीत का असर धीरे-धीरे पड़ता है। धीरे-धीरे विकारों का शमन होता है पर यह निश्चित है कि नियमित रूप से गायन का अभ्यास करने अथवा सुमधुर भावप्रवण संगीत सुनने से इनसे छुटकारा अवश्य मिलता है।

अनुसंधानकर्त्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि संगीत चिकित्सा का प्रचलन अब क्रमशः बढ़ता ही जा रहा है। मनोविकारों के समाधान में उसके आधार पर भारी सफलता मिल रही है। शरीरगत रुग्णता पर नियंत्रण प्राप्त करने में भी निकट भविष्य में संगीत की स्वर लहरियाँ महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करने जा रही हैं। इन दिनों गीत वाद्य का उथला उपयोग मनोरंजन और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोकरंजन तक सीमित होकर रह गया है। भविष्य में उसे एक कदम आगे बढ़कर मनुष्य की शारीरिक और मानसिक स्वस्थता का सन्तुलन बनाये रखने का उत्तरदायित्व वहन करना है। इससे आगे उसे आत्मा के महासागर में से उल्लास और आनन्द के मणिमुक्तक ढूँढ़कर बाहर लाने हैं, निश्चित ही संगीत की सृजनात्मक शक्ति द्वारा यह कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किया जा सकेगा।

पाश्चात्य देशों में पिछले दिनों संगीत द्वारा रोग निवारण की दिशा में बहुत शोध कार्य हुआ है। तद्नुसार ऐसे सूत्र ढूँढ़ निकाले गये हैं जिनके सहारे विभिन्न रोगों के रोगियों की चिकित्सा विभिन्न स्वर प्रवाहों और वाद्य यन्त्रों की सहायता से की जाती है। इंग्लैण्ड के डाक्टर मीड़ और अमेरिका के एडवर्ड पोडीलास्की ने अपनी लम्बी शोध का निष्कर्ष यह बताया कि संगीत से नाड़ी संस्थान में एक विशेष प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न होंती है जिसके सहारे शरीरगत मल विसर्जन की शिथिलता दूर होती है। मल, मूत्र, स्वेद, कफ आदि मल जब मन्द गति से रुक-रुक कर निकलते हैं तो ही विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। यदि मलों का विसर्जन ठीक तरह होने लगे तो फिर रोगों की जड़ ही कट जाय। इस सन्दर्भ में किस मल का विसर्जन आवश्यक है इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए तद्नुरूप गीत-वाद्य की व्यवस्था की जा सके तो रोगों के निवारण में सहज ही सफलता मिलेगी। संगीत चिकित्सा का यही आधार है।

सोवियत रूस के अस्पतालों में प्रो॰ एस॰ वी॰ फैकफ ने संगीत के प्रभाव का अन्वेषण करके यह पाया है कि उस-उपचार का प्रभाव नाड़ी संस्थान की विकृतियों पर और मनोविकारों पर बहुत ही सन्तोष जनक मात्रा में होता है। डा॰ वाल्टर एच॰ वालसे के अनुसार जुकाम, पीलिया अपच, यकृत शोथ, रक्तचाप जैसे रोगों की स्थिति में उपयोगी संगीत का अच्छा प्रभाव होता है। जर्मनी के मनःरोग चिकित्सक डा॰ वाल्टर क्यूग का कथन है कि मनोविकारों के निवारण में संगीत को सफल उपचार के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है।

लन्दन की हास्पिटल एण्ड हैल्थमैन मैनेजमेंट' नामक पत्रिका में इंग्लैण्ड के छः ऐसे अस्पतालों द्वारा संगीत का रोगियों पर प्रभाव विषय पर किये गये प्रयोग, परीक्षणों का विवरण छपा है जिसमें बताया गया है प्रसूति गृहों में जच्चा-बच्चा की मनःस्थिति में उत्साह बनाये रहने में संगीत ने बहुत योगदान दिया और अन्य कष्ट पीड़ितों की उदासी दूर करके उनकी जीवनी शक्ति को रोग निवारण कर सकने की दृष्टि से अधिक समर्थ बनाया। अमेरिका के डाक्टर एस॰ षे॰ लोडन् ने गायकों, वादकों के स्वास्थ्य का परीक्षण करके यह पाया है कि वे दूसरों की अपेक्षा कहीं कम बीमार पड़ते हैं।

संगीत को कभी मनोरंजन का एक साधन समझा जाता था पर अब वैसी स्थिति नहीं रही। वैज्ञानिकों का ध्यान उसकी जीवनदात्री क्षमता की ओर गया है और शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की विकृतियों के निराकरण के लिए प्रयुक्त करने के प्रयोग बड़े उत्साहपूर्वक हो रहे हैं।

संगीत चिकित्सा का प्रचलन अब क्रमशः बढ़ता ही जा रहा है। मनोविकारों के समाधान में उसके आधार पर भारी सफलता मिल रही है। शरीरगत रुग्णता पर नियन्त्रण प्राप्त करने में भी निकट भविष्य में संगीत की स्वर लहरियाँ महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करने जा रही हैं। इन दिनों गीत-वाद्य का उथला उपयोग मनोरंजन और लोक तक सीमित होकर रह गया है। भविष्य में उसे एक कदम आगे बढ़कर मनुष्य की शारीरिक और मानसिक स्वस्थता का सन्तुलन बनाये रखने का उत्तरदायित्व वहन करना है। इससे आगे उसे आत्मा के महासागर में से उल्लास और आनन्द के मणिमुक्तक ढूँढ़कर बाहर लाने हैं।

डा॰ ऐरोल्ड आईवर का एक लेख लन्दन की मेडीकल न्यूज पत्रिका में छपा है। जिसमें उन्होंने संगीत द्वारा स्वास्थ्य संरक्षण और दीर्घ जीवन की सम्भावनाओं पर शोधपूर्ण प्रकाश डाला है। उन्होंने कुछ विश्व प्रसिद्ध गायकों की सूची प्रस्तुत की है और बताया है कि पूछने पर वे लोग अपने अच्छे स्वास्थ्य का आधार अपनी संगीत प्रिय अभिरुचि को ही बताते हैं। ऐसे लोगों में उन्होंने स्विटजरलैण्ड के ८८ वर्षीय पियेरे मोन्टी, जर्मनी के ७८ वर्षीय ओट्टो क्लेंपर, इटली के ८० वर्षीय सरकेट वेर्डी के नाम का विशेष रूप से उल्लेख किया है। इन लोगों ने न केवल सिद्धान्त रूप से वरन् प्रयोग परीक्षणों द्वारा भी यह सिद्ध किया है कि संगीत को स्वास्थ्य संवर्धन का एक महत्त्वपूर्ण आधार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बनाया जा सकता है और उससे औषधि उपचार जैसा ही लाभ उठाया जा सकता है।

रूस के क्रीजिया स्वास्थ्य केन्द्र ने चिकित्सा में औषधि उपचार के साथ-साथ संगीत को भी एक उपाय माना है। इस संदर्भ में वहाँ देर से प्रयोग चल रहे हैं जिनमें उत्साहवर्धक सफलता मिल रही है। अनिद्रा, उदासी, सनक जैसे मस्तिष्कीय रोगों में तो इस उपचार ने औषधि प्रयोग की सफलता को कहीं पीछे छोड़ दिया है।

शरीर पर संगीत का प्रभाव पड़ता है यह तथ्य स्वीकार करने के साथ-साथ मनोविज्ञानवेत्ताओं का प्रतिपादन यह है कि इस आधार पर मनोविकारों के नियन्त्रण पर अधिक और अच्छी सफलता प्राप्त की जा सकती है। सनक और पागलपन के निवारण में संगीत को आवश्यक उपचार क्रम में सम्मिलित करने के लिए जोर दिया जा रहा है।

न्यूयार्क के ख्याति नामा चिकित्सक डा० एडवर्ड पोडीलास्की ने अपने रोगियों को गायन की शिक्षा देकर उनके फेफड़ों को मजबूत बनाने और रक्त संचार को व्यवस्थित बनाने में अच्छी सफलता पाई। वे कहते हैं स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से संगीत एक बहुत मृदुल और सुखद् व्यायाम है उसका लाभ बाल-बृद्ध, दुर्बल-समर्थ सभी अपने-अपने ढंग से प्राप्त कर सकते हैं।

एक दूसरे डाक्टर वाल्टर एच० वालसे ने जिगर आमाशय, आतें और गुर्दे की बीमारी पर संगीत का उपयोगी प्रभाव स्वीकार किया है। पाचन और मल विसर्जन की क्रिया को उत्तेजित और व्यवस्थित करने में उन्होंने संगीत के प्रभाव को स्वीकार किया है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञ डा० वर्नर मैकफेडन भी संगीत को उपयोगी व्यायाम मानते थे। डा० लीक का कथन है कि यदि संगीत को एक दैनिक शारीरिक एवं मानसिक आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया जा सके तो मनुष्य जाति का बहुत हित साधन हो सकता है। दार्शनिक पैथगोरस ने संगीत की उपयोगिता स्वास्थ्य संरक्षण, चरित्र गठन और आत्मिक प्रगति के इन तीनों प्रयोजनों को पूरा कर सकने की तीनों दृष्टियों से स्वीरकार किया है।

आमेलिटा नामक एक गायिका योरोप और अमेरिका में बहुत ख्याति प्राप्त कर चुकी है। वह जितनी मधुर कंठी थी उतनी ही सुन्दर और सुडौल भी। वह जीवन में कभी बीमार नहीं पड़ी। अपने स्वास्थ्य की स्थिरता का आधार वह तन्मय गायन को ही बताया करती थी। उसकी अन्य सहेलियाँ भी स्वास्थ्य, सौन्दर्य और दीर्घ-जीवन का लाभ उठा सकीं। वे भी इसे संगीत देवता का वरदान मानती थीं।

यूनान के चिकित्सक गोलमन तथा मेरिनन अपने समय के प्रख्यात संगीत चिकित्सक थे और गायन और वाद्य के विविध उतार-चढ़ावों का आश्रय लेकर कतिपय रोगों के कष्टसाध्य बीमारी को व्यथाग्रस्त स्थिति से छुड़ाते थे। सर्प, बिच्छू जैसे विषैले जन्तुओं के काटने पर उसके दुष्प्रभाव से मुक्ति दिलाने के लिए अभी भी विशेष वाद्य यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है।

योरोप के इतिहास में ऐसे तीन सम्राटों का वर्णन मिलता है जिन्हें पागलपन की स्थिति से छुटकारा दिलाने में औषधियाँ असफल रहीं किन्तु संगीत ने उस प्रयोजन को पूरा किया। इंग्लैण्ड के सम्राट् जार्ज तृतीय को अन्यमनस्कता-मेलेन कोलिया—ने धर दबोचा था। इसी प्रकार इजराइल के शासक-साल और स्पेन के बादशाह फिलिप पंचम लगभग पागल ही हो चुके थे। उनकी चिकित्सा कुशल कलावन्तों ने संगीत के माध्यम से की—फलस्वरूप उन्हें विपत्ति से छुटकारा भी मिल गया।

सुप्रसिद्ध संगीतकार तानसेन के बारे में यह कहा जाता है कि वे जन्मत: गूँगे थे। सात वर्ष की आयु तक उन्हें बोलना बिलकुल भी नहीं आता था। उनके पिता मकरन्द और माता कालन्दीबाई ने अपने पुत्र के गूंगेपन का उपचार करने के लिए सामर्थ्य भर उपाय कर लिया पर कोई सफलता न मिली। अन्त में एक उपाय कारगर हुआ जिन्हें तत्कालीन मूर्धन्य गायक मुहम्मद गोस की कृपा प्राप्त हुई। वे अपने साथ-साथ तानसेन को भी गाने के लिए प्रोत्साहित करते थे इस पर बच्चे की वाणी खुली, वह न केवल बोलने ही लगा वरन् मधुर कंठ से गाने भी लगा। मुहम्मद गोस के बारे में कहा जाता है कि उनने अन्य कई कष्टसाध्य रोगों से ग्रसित व्यक्तियों को अपने संगीत की मधुर ध्वनियाँ सुनाने का उपचार करके रोग मुक्त किया था।

उत्तर प्रदेश की रामपुर स्टेट के नबाव के यहाँ सूरज खाँ नामक एक गायक आते थे। उन्होंने संगीत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के आधार पर नबाव को लकवे से मुक्ति दिलाई थी। इसी प्रकार उनने अन्य कितने ही रोगी विभिन्न राग-रागनियाँ सुनाकर रोग मुक्त किये थे।

संगीत उपचार की सम्भावनाएँ

वेद चार हैं। ऋग्वेद ज्ञान परक। यजुर्वेद कर्मकाण्ड परक। अथर्ववेद विज्ञान परक। सामवेद संगीत परक। वैसे वेदत्रयी भी कही जाती है। अर्थात् ऋगु, यजु, अथर्व, सामवेद में इन्हीं तीनों के मन्त्र हैं और व हैं संगीत परक। एक-एक मन्त्र को अनेक प्रयोजनों के लिए अनेक प्रकार से गाया जाता है। इनका गायन मनोरंजन के निमित्त नहीं है वरन् उनका उद्देश्य विषेश है। पुरातन काल में सामवेद की ऋचाओं को अनेक प्रकार गाया जाता था। वे ध्वनियाँ अब लुप्त प्रायः हो गईं। उपलब्ध सामवेद में एक ही प्रकार का गायन क्रम है।

संगीत मात्र पद्य रचना नहीं है। उसमें अनेकानेक ध्वनियों का समावेश है। यह ध्वनियाँ कानों को मिठास देने मात्र के लिए नहीं वरन् उनके द्वारा विसृत होने वाली तरंगों के प्रभावों को देखते हुए बनाई गई हैं। इनके आध्यात्मिक भावना परक उद्देश्य भी हैं। साथ ही उनमें शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सम्वर्धन के गुण भी हैं। उन्हें चिकित्सा प्रयोजन के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है। यज्ञ कर्म के कार्यकर्त्ताओं में एक उद्गाता की नियुक्ति भी होती थी वह उस ध्वनि में मन्त्रों का गायन करता था जिसके निमित्त कि वह यज्ञ कृत्य किया जा रहा है।

इस विद्या के जानकार अब बहुत कम बचे हैं। वह लुप्त प्रायः हो चली है। उसका वैज्ञानिक परिशोधन नये सिरे से हो रहा है और देखा जा रहा है कि किस ध्वनि लहरी का मनुष्य पर, पशुओं पर, वनस्पति पर और वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है। पिछली शताब्दी में बुझे हुए दीपक को जला देने वाला दीपक राग, उठते हुए बादलों को बरसने के लिए बाधित करने वाला मेघ मल्हार, हिरन आदि पशुओं को मन्त्र-मुग्ध कर देने वाला मृग राग; सर्पों को बिल में से बाहर निकालकर नर्तन कि लिए बाध्य करने में सर्प-रोग बहु प्रचलित थे। उनसे अब साँपों को नचाने वाला सर्प राग ही सपेरों के पास बचा है।

वैज्ञानिकों ने ऐसे ध्वनि प्रवाह निकाले हैं जिनसे तरंगित होकर दुधारू पशु अपेक्षाकृत अधिक दूध देते हैं। फसलें जल्दी बढ़ती और अधिक फलती-फूलती हैं। युद्ध के नगाड़े पहले भी एक खास तरह के होते थे। अभी भी सैनिकों में युद्धोन्माद उत्पन्न करने वाले बैन्ड विशेष ध्वनियों पर बजते हैं।

भक्ति भावना को उमंगाने के लिए देवालयों में विशेष ध्वनियों पर गीत वाद्य गाये जाते हैं। कामुकता भड़काने वाले गीत वाद्यों के आयोजन राजा रईसों के यहाँ होते रहते थे। होटलों में अभी भी ऐसे नृत्य गीतों का प्रचलन है।

अब चिकित्सा प्रयोजन के लिए संगीत का नया उपयोग आरम्भ हुआ है। इन प्रयोगों में जापान सबसे आगे है। अमेरिका में भी उसका अनुकरण किया है। मानसिक रोगों में कुछ ध्वनि तरंगें विशेष रूप से लाभदायक सिद्ध हुई है। स्नायविक रोगों तथा रक्तचाप के असन्तुलन को ठीक करने में भी उसका विशेष प्रतिफल देखा गया है।

कुछ डॉक्टरों ने, मनोवैज्ञानिकों ने तथा संगीत शास्त्रियों ने मिल-जुलकर ऐसे पर्यवेक्षण किये हैं कि किस रोग में किस प्रकार का ध्वनि प्रवाह लाभदायक सिद्ध होता है। इस आधार पर संगीत चिकित्सा एक स्वतन्त्र विज्ञान ही बनता जा रहा है।

पाश्चात्य देशों के कई अस्पतालों में औषधियों के साथ संगीत का प्रयोग किया जा रहा है। कई डाक्टर विशुद्ध संगीत के सहारे ही इलाज करते हैं और कहते हैं कि यह प्रणाली इतनी सशक्त है कि वह अकेली ही आश्चर्यजनक प्रतिफल प्रस्तुत कर सकती है। इसके साथ औषधि का समावेश करके उनका श्रेय बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है।

म्यूनिख के डा॰ लुडविन ने मानसिक रोगियों के लिए विशेषतया किशोर बच्चों के लिए एक संगीत अस्पताल बनाया है जिसमें न केवल रोगों की चिकित्सा होती है वरन् ध्वनि विशेष के आधार पर उनकी कुटेबों को भी दूर किया जाता है।

मनोरोग चिकित्सक पीटर न्यूमेन और माइकेल सेन्डर्ड ने संयुक्त रूप से ऐसे ही अस्पताल का शुभारम्भ किया है जिसमें मनोरोगों के चिकित्सा उपचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में एक संगीतवादन भी सम्मिलित किया गया है। इससे पहले की अपेक्षा अब अधिक सफलता मिलने लगी है।

रूसी वैज्ञानिक प्रो॰. एस॰ बी॰ कोदाफ अभी इस परीक्षण में ही लगे हैं। पर अब तक के अनुभव से उन्हें विश्वास हो चला है कि स्नायविक रोगों के लिए संगीत चिकित्सा विशेष रूप से लाभदायक है।

शिकागो के मानसिक चिकित्सालय में डा॰ बेंकर के संगीत प्रयोग बहुत सफल रहे हैं। डा॰ वर्डमैन और बुकलिंग ने आपरेशनों के समय संगीत उपचार का अच्छा प्रभाव देखा है।

अमेरिका, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी और जापान में संगीत चिकित्सा एक सामान्य हो गई है। उसे न केवल चिकित्सा के लिए वरन् शारीरिक और मानसिक दृष्टि से दुर्बल व्यक्तियों के लिए शक्ति संचार की तरह संगीत का प्रयोग किया जा रहा है। अभी यह शोध प्रारम्भिक स्तर पर है पर आशा की जाती है वह एक स्वतन्त्र विज्ञान की तरह विकसित होगी और न केवल रोगियों का वरन् कृषि की अभिवृद्धि और दुधारू पशुओं के लिए भी विशेष रूप से लाभदायक सिद्ध होगी।

सामान्यजनों के लिए मनोरंजन तथा तनाव, रक्तचाप दूर करने की दृष्टि से संगीत उपचार में बड़ी-बड़ी आशाएँ की जा रही है।

चिकित्सा और अभिवर्धन दो अलग-अलग प्रसंग होते हुए भी दोनों में परस्पर सघन सम्बन्ध है। संगीत को व्यायाम की श्रेणी में गिना जा रहा है और उसके ऐसे तौर-तरीके निकाले जा रहे हैं जो स्वस्थता को ही नहीं प्रसन्नता को भी बढ़ायें । प्रसन्नता एक मानसोपचार है जिससे कल्पना शक्ति, बुद्धिमत्ता और प्रतिभा के तीनों ही पक्ष विकसित होते हैं। इस धारणा को अनेक कसोटियों पर सही पाने के उपरान्त जापान में व्यायाम की तरह संगीत को भी शिक्षा का आवश्यक अंग घोषित किया गया है। पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी में राजनैतिक मतभेद होते हुए भी इस विषय में दोनों एक मत हैं कि संगीत विलासिता एवं मनोरंजन नहीं है वरन् वह मानसिक स्वास्थ्य बढ़ाने एवं प्रतिभा निखारने का अच्छा तरीका है।

कहने में संगीत एक विषय प्रतीत होता है, पर उसके अनेकों भेद-उपभेद हैं। उनके प्रभाव भी पृथक्-पृथक् हैं। जिस प्रकार रोगों के निदान के अनुरूप चिकित्सा का निर्धारण किया जाता है वैसे ही शारीरिक एवं मानसिक आवश्यकताओं को देखते हुए अलग-अलग ध्वनियों का व्यक्ति विशेष के लिए निर्धारण किया जाता है। इस प्रसंग को अधिक बल इसलिए मिला है कि आधुनिक खोजों के मानसिक कारणों से शारीरिक रोगों का उत्पन्न होना माना है और मात्र दवा-दारू पर निर्भर रहने के विचार परिशोधन को हर रोग के लिए आवश्यक माना है। इस हेतु प्रशिक्षण, परामर्श की अपेक्षा संगीत को अधिक प्रभावी माना गया है। दूसरी बात यह है कि इन दिनों मानसिक रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है। उसमें संगीत से उत्पन्न विद्युत प्रवाह मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों पर विभिन्न स्तर के उपयोगी प्रभाव डालते देखा गया है। यह सस्ता भी है और बिना जोखिम का भी। इसीलिए शरीरशास्त्रियों और मनोविज्ञान वेत्ताओं का ध्यान इस ओर विशेष रूप से गया है कि मन: क्षेत्र को प्रभावित करने वाली अनेक प्रकार की संगीत तरंगों का अन्वेषण एवं प्रयोग किया जाय।

यहाँ यह जान लेना आवश्यक है कि केवल स्वरवद्ध-लय-तालयुक्त स्वर लहरियों का ही उपयुक्त प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि वैदिक ऋचाओं का उच्चारण स्वरबद्ध और तालबद्ध ही किया जाने का इन शास्त्रों में निर्देशन है। समगान के रूप से उसकी सुनियोजित विधिव्यवस्था भी है। कुरान की आयतों के सम्बन्ध में भी ऐसा ही अनुशासन है कि उन्हें निर्धारित स्वर प्रवाह में ही पढ़ा जाय। इनमें सन्निहित अर्थ उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना कि उनका शब्द गुंथन—स्वर सन्धान। इसी माध्यम से वेद पाठ के द्वारा व्यक्ति और वातावरण में उच्चस्तरीय परिवर्तन होने की बात कही गई है।

कांग्रोव कहते थे—"संगीत अन्तराल में मर्मस्थल का निर्झर है। चट्टानों की कठोरता को कोमल बना सकता है।" उसमें मानवी अन्तराल को झंकृत और प्रकृति प्रवाह को दिशा विशेष में तरंगित करने की विशेष क्षमता है।

गान्धीजी ने अपने अनुभवों में लिखा है—"संगीत मुझे शान्ति देता रहा है। मैंने कठिन प्रसंगों में उससे सहारा लिया है। दक्षिण अफ्रीका में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुए आक्रमण से जब मैं घायल कराहता था तब ओलाइव ने मुझे एक मार्मिक भक्ति गीत सुनाया—"लीड काइण्डली लाइट" मेरी व्यथा शान्त हो गई।" शब्दार्थ की दृष्टि से उस गीत का अर्थ सामान्य था, पर जिस स्वर लहरी के साथ उसे गाया गया उसने सुनने वाले को भाव-विभोर कर दिया।

विद्वान वी॰ फिजी ने कहते थे—संगीत हर जीवित वस्तु को उत्साह प्रदान करता है। तालबद्ध ध्वनियाँ स्नायु तन्तुओं की सम्वेदनशीलता और गतिशीलता बढ़ाती हैं। संगीत मंनोरंजन ही नहीं ऐसा कुछ भी है जो व्यक्ति के अन्तराल को तरंगित, प्रभावित और परिवर्तित कर सके।

ग्रीस के प्रख्यात चिकित्सक हिपोक्रेटीज ने अपनी चिकित्सा पद्धति में संगीत को भी सम्मिलित रखा था। इस देश के एक और मनीषी एस्कुलोपियस ने भी रोगोपचार में संगीत को उपयोगी पाया और चिकित्सा विधि में सम्मिलित रखा। प्राचीन काल में मिस्र में संगीत से प्रसव वेदना हलकी होने की मान्यता तथा प्रथा थी। उन दिनों विष उतारने और विक्षप्तों को सही स्थिति में लाने के लिए विभिन्न प्रकार के संगीतों का उपयोग होता था।

डा॰ ए॰ हुगेल के उन अनुसन्धानों की लम्बी शृंखला है जिसमें वे आरोग्य लाभ में संगीत को औषधि उपचार से कम लाभदायक नहीं मानते। वे कहते हैं कि संगीत का आरोग्य से सघन सम्बन्ध है।

दक्षिण भारत के तिरुपति की प्रसिद्ध वेंकटेश्वर देवालय की गोशाला में प्रात: काल सुप्रभात में रिकार्ड बजाया जाता है। साथ ही कई अन्य गायन वादन भी चलते रहते हैं। प्रबन्धकों का कहना है कि इस संगीत को सुनकर गायें जो संगीत नहीं सुनतीं उसकी तुलना में अपेक्षाकृत अधिक दूध देती हैं। जब संगीत बन्द करके देखा गया तो दूध भी घट गया। एक बार सूखा पड़ने से हरा चारा बन्द करना पड़ा। दुधारू गायें भी सूखे चारे पर ही गुजर करती थीं। इसी दशा में स्वभावत: दूध घटना चाहिए पर देखा यह गया कि संगीत सुनने वाली गायें उतना ही दूध देती रहीं जितना कि हरा चारा खाने पर दिया करती थीं । संगीत सुनते वाली गायों में अधिकांश ने बछड़े जन्मे और वे बड़े होने पर मजबूत फुर्तीले बैल बने।

जापान के अस्पतालों में इन दिनों मानसिक रोगियों को दिये जाने वाले उपचारों में संगीत को प्रमुखता दी गई है। इस उपचार का वहाँ दन्त चिकित्सा तथा प्रसव कक्षों में भी सफलतापूर्वक प्रयोग ही रहा है।

मनोरोगियों पर संगीत इतना प्रभाव डालता है जितना कि अन्य किसी उपचार विधि से सम्भव नहीं हो सका। अनिद्रा, सिर दर्द, सनक, उन्माद के आवेशग्रस्त रोगियों को विशेष विधि से बजाये गये संगीतों द्वारा तुरन्त राहत मिली।

उद्यानों और गीतों में भी एक विशेष प्रकार की स्वर लहरी लाउडस्पीकरों से बजाते रहने का यह प्रभाव देखा गया है कि पौधे जल्दी बढ़े और अधिक मात्रा में अच्छे फल लगे। सचमुच संगीत एक समग्र उपचार है, मात्र मनोरंजन नहीं।

संगीत के सुनियोजित प्रयोग से रोगनिवारण भावनात्मक परिष्कार, स्फूर्तिवर्धन एव प्रतिभा उन्नयन जैसे महत्त्वपूर्ण लाभ संभव हैं। इस माध्यम से आनन्दभरी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सम्वेदनाओं को भाव तरंगों से जोड़कर मन:स्थिति में वांछित परिवर्तन लाया जा सकता है। वनस्पतियों एवं प्राणियों के अभिवर्धन एवं कार्यक्षमता बढ़ाने के कितने ही सफल प्रयोग भी हुए हैं। अब यह प्रमाणित हो चुका है कि जड़चेतन सभी पर संगीत का चमत्कारी प्रभाव पड़ता है।

संगीत के माध्यम से जो ध्वनि तंरगें उत्पन्न होती हैं, वे स्नायु प्रवाह पर वांछित प्रभाव डालकर न केवल उनकी सक्रियता को बढ़ाती हैं, वरन् विकृत चिन्तन को रोकती और मनोविकारों को मिटाती हैं। स्वर शक्ति की इस सृजनात्मक सामर्थ्य की ओर अब वैज्ञानिकों का भी ध्यान आकृष्ट हुआ है। जहाँ एक ओर अब शब्दचालित यंत्र उपकरण, बम एवं रोबोट आदि तैयार हो रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ प्रदूषण निवारण मनोविकार शमन, कायिक-रोगनिवारण में ध्वनि-तरंगों का-संगीत स्पन्दन का प्रयोग हो रहा है।

मानवी मन-मस्तिष्क पर पड़ने वाले संगीत के प्रभाव विषय पर वैज्ञानिकों ने गहन अनुसंधान किया है और पाया है कि दोनों के मध्य घनिष्ट सम्बन्ध है। मूर्धन्य मन:चिकित्सकों एवं संगीत विशेषज्ञों ने इस तथ्य की पुष्टि के लिए कितने ही प्रयोग किये हैं। निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए वे कहते हैं कि स्वर माधुर्य के प्रभाव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

से ध्यान की गहराई में प्रवेश करने जैसी मानसिक अवस्था का निर्माण होता और मस्तिष्क 'अल्फा-स्टेट' की स्थिति तक जा पहुँचता है। इसका प्रतिफल शान्तचित्त एवं आन्तरिक प्रफुल्लता के रूप में हस्तगत होता है, साथ ही मनोविकृतियों से पीछा छूटता है। परीक्षणों में पाया गया है कि तेज शोर करने वाले वाहनों एवं जेटविमानों के चालक स्नायिवक उत्तेजना के प्राय: शिकार बनते रहते हैं। उनकी नाड़ी प्रगति भी सामान्यों की अपेक्षा कहीं अधिक चढ़ी रहती है। किन्तु जब उन्हें उपयुक्त राग-रागिनियों के सम्पर्क में रखा गया तो वे पूर्णत: स्वस्थ हो गये। मन—मस्तिष्क में नवीन स्फूर्ति का संचार होते देर न लगी। उक्त अनुसंधानकर्त्ताओं ने इसे मानवी चेतना को मथ डालने वाली विश्व की एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण शक्ति माना है।

हृदय स्थल को मानवी भाव संवेदनाओं, विभूतियों एवं सद्गुणों का केन्द्र माना गया है। इस अंतस्तल पर संगीत का असाधारण प्रभाव पड़ता है। डॉ. बारबरा ब्राउन के अनुसार हृदय स्पंदन की गति संगीतलय से अपना तालमेल बहुत जल्दी बिठा लेती है। प्रयोग परीक्षणों में देखा गया है कि संगीत के मधुर प्रकंपन हृदयगति को परिवर्तित कर देते हैं। इतना ही नहीं स्वर लहरियों के साथ उसे थिरकते हुए भी देखा गया है। स्वीडिश वैज्ञानिक डॉ॰ हिल ने इस संदर्भ में पर्याप्त खोजें की हैं। वैज्ञानिक उपकरणों यथा पॉलीग्राफ आदि के माध्यम से हृदय के विद्युतीय एवं ध्वनि संकेतों की रिकार्डिंग करने के पश्चात् उनने निष्कर्ष निकाला है कि ३० मिनट तक यदि कर्णप्रिय ध्वनि तरंगों को सुनते रहा जाय तो हृदय की गति क्रमश: धीमी पड़ती जाती है और एक स्थिति ऐसी भी आती है जब श्रोता ध्यानस्थ हो जाता है इसकी तुलना उनसे योगियों की अनाहतनाद साधना द्वारा प्राप्त समाधि अवस्था से की है।

मिडिल सेक्स हॉस्पिटल, लन्दन के सुप्रसिद्ध शल्य चिकित्सक डा॰ जे॰ डी॰ टॉयलर ने इस विधा को अपनाकर मूर्च्छा की स्थिति में पहुँचे हुए व्यक्तियों का उपचार करने में आशातीत सफलता पाई है। उनका कहना है कि भविष्य में इस विधा को अपनाकर चिकित्सा जगत में एक नवीन क्रान्ति की जा सकेगी और हृदय तथा मस्तिष्क सम्बन्धी विकृतियों को दूर किया जा सकेगा।

संगीत मनुष्य सहित प्रत्येक जीवधारी के मस्तिष्क, हृदय एवं स्नायुतन्त्र पर आश्चर्यजनक प्रभाव डालता है। मानवी प्रकृति और मन:स्थिति के अनुरूप उत्कृष्टता की पक्षधर भाव सम्पन्नता से युक्त संगीत विद्या यदि विकसित हो सके, तो उससे न केवल मानसिक प्रसन्नता एवं शारीरिक क्षमता-सक्रियता प्राप्त हो सकेगी, वरन् स्वास्थ्य सन्तुलन के साथ ही आन्तरिक विभूतियों-अतीन्द्रिय समार्थ्यों को भी हस्तगत किया जा सकेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संगीत का प्रबल प्रभाव

स्वास्थ्य का मनोरंजक श्रेष्ठ साधन--संगीत

शारीरिक अथवा मानसिक कोई भी विकृति ऐसी नहीं जिसकी चिकित्सा संगीत की स्वर-लहरियों द्वारा न हो सके, यह बात बड़े-बड़े वैज्ञानिकों तथा स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने विभिन्न प्रकार के रोगियों पर, पागलखानों आदि में प्रयोग करके सिद्ध कर दिया है। उनका कहना है कि सम्पूर्ण शरीर में जो तनाव या विकृति पैदा होती है, उसका मूलाधार मस्तिष्क के ज्ञान-तन्तु हैं। संगीत के कानों पर लगी नैसर्गिक झिल्ली प्रकम्पित होती है, जो सीधा मस्तिष्क को प्रभावित करती है। मस्तिष्क स्नायु-तन्तुओं के सजग होने से सम्पूर्ण शरीर में चेतना दौड़ जाती है और शक्ति प्रदान करती है, जिससे सरलतापूर्वक आरोग्य लाभ मिलने लगता है। संगीताभ्यास के समय चित्त को न केवल विश्रान्ति मिलती है वरन् आत्मिक शक्तियाँ भी जागृत होती हैं।

संगीत तीन उपविभागों में विभक्त हैं। १. गायन, २. गायन और ३. नृत्य। ये तीनों ही शरीर, मन और आत्मा को प्रभावित करते हैं। गायन और वादन के स्वर कम्पन विशेष रूप से प्राणियों को प्रभावित करते हैं। सर्प, मोर, हिरण, कोयल आदि तक संगीत के सुमधुर स्वर कम्पनों से मस्त होकर सुध-बुध खो बैठते हैं, मनुष्य पर उस्को प्रतिक्रिया का कहना ही क्या साम-शास्त्रों में तो इसे उत्पत्ति स्थिति ओर प्रलय का भी कारण माना है।

गायन एक उच्चकोटि का मृदु व्यायाम है। कुश्ती, दौड़ आदि से फेफड़ों की कभी तीव्र, कभी मन्द उत्तेजना उठती है जो हानिकारक भी हो सकती है। किन्तु गाने से हल्की-हल्की मालिश जैसी क्रिया फेफड़ों में होती है, इससे रुधिर में प्राकृतिक विद्युत का अनुपम संचार होने लगता है। **डा. लीक** का मत है कि "शारीरिक अवयवों को प्रभावित करने वाली संगीत से बढ़कर कोई दूसरी वस्तु नहीं।"

प्रसिद्ध स्वास्थ्य विशेषज्ञ **श्री बर्नर मैकफेडेन** ने लिखा है "गाने से शरीर के विभिन्न अवयवों को श्रम करना पड़ता है जिससे रक्त-संचार में वृद्धि होती है। पाचन-क्रिया में सुधार होता है। इससे पेट और छाती की माँसपेशियाँ फैलती हैं। यही क्रिया फेफड़ों में भी होती है जिससे नियमित और बिना रुकावट फेफड़ों का प्रभावशाली व्यायाम हो जाता है। वक्षि-प्रदेश के सभी अवयवों को इससे स्फूर्ति, चैतन्यता और मर्दन प्राप्त होता है।"

न्यूयार्क के प्रसिद्ध चिकित्स **डा. एडवर्ड पोडोलास्की** ने भी अनेकों प्रयोगों से स्वास्थ्य पर पड़ने वाली सूक्ष्म प्रतिक्रियाओं का गम्भीर अध्ययन किया। उन्होंने लिखा है "गाने से रक्त-संचालन में तीव्रता आती है, शिराओं में नव-जीवन का संचार होता है। शरीर के विषैले पदार्थ व मल दूर होते हैं गाने से फेफड़े और कलेजे की कोई भी बीमारी नहीं होती। जिगर सम्बन्धी रोग ठीक करने में इससे बड़ी मदद मिलती है।" पहले रोगी को बेहोश करके इलाज करने की हानिकारक पद्धति के बजाय अब रूस और अमेरिका के डाक्टर तक यह कार्य संगीत द्वारा पूरा कर देते हैं और आसानी से बड़े-बड़े आपरेशन तक कर डालने में सफल हुए हैं। **डा. वाल्टर एच वालसे** का कथन है कि पाण्डु, यकृत तथा अपच में संगीत का मन्त्रवत प्रभाव पड़ता है।" आमेलिटा गलि कुर्से नामक एक अंगरेज युवती ने लिखा है "कि यह गाने के प्रयोग के कारण निरन्तर १८ वर्ष तक पूर्ण स्वस्थ व निरोग रही। इस अवधि में उसे कोई भी रोग नहीं हुआ। उसने सभी स्वास्थ्य चाहने वालों को यह सलाह दी है कि वे नियमित रूप से गाने का अभ्यास किया करें।" यदि आपका गला सुरीला नहीं है तो भी कोई बात नहीं, आप एकान्त में सिर्फ आन्तरिक अवयवों के व्यायाम एवं मालिश के लिए ही गा लिया करें तो स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव पड़े बिना न रहेगा।

स्वास्थ्य दरअसल उत्तम चरित्र और आत्म संयम पर आधारित है। संगीत का चुनाव यदि इसके अनुरूप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया जाय तो निःसन्देह इससे हर कोई लाभान्वित हो सकता है। पाईथागोरस ने एक स्थान पर लिखा है "संगीत रोगों से छुटकारा दिलाता है वह चरित्र निर्माण में सहायक है आत्मोन्नति का प्रबल कारण है ।

स्नायु-दौर्बल्य, बहुमूत्र, सिर-दर्द, क्षय, अतिसार, तन्द्रा, दाह, विष का प्रभाव, अनिन्द्रा, हृदय की बीमारियाँ, कुष्ट, पाण्डु, रक्तचाप, मूर्छा व मानसिक अशान्ति आदि प्रायः सभी रोगों में गायन से तत्काल शान्ति मिलती है। दुःखी मन ही रोग-शोक का कारण होता है, उसे संगीत से प्रसन्नता मिलती है जिससे शारीरिक स्वास्थ्य स्थिर बना रहता है । इससे जीभ, कण्ठ और जबड़ों तथा श्वांस, प्रश्वांस की क्रिया से फेफड़े विशेष रुप से मजबूत बनते हैं।

वाद्य-संगीत यद्यपि उतना प्रभावशील नहीं होता जितना गायन, किन्तु इससे भी हाथों, छाती व हृदय का व्यायाम हो जाता है । इनमें से कुछ वाद्य-यन्त्र ऐसे भी होते हैं, जिनसे मानसिक अशान्ति व चित्तविभ्रम आदि ऐसे ही दूर होते हैं जैसे गाने से। वीणा तानपूरा सितार की स्वर-लहरियाँ बड़ी ही मधुर होती हैं । हारमोनियम बाँसुरी आदि से चित्त बड़ा प्रसन्न होता है। मुँह से फूँककर बजाये जाने वाले यन्त्र जैसे बाँसुरी आदि से भी छाती की माँसपेशियाँ फैलती हैं और उससे भी फेफड़ों का व्यायाम भी होता है ।

गायन के साथ यदि वाद्य की संगति कर दी जाय तो और भी अच्छा हो । इससे दोनों के समिश्रण का आनन्द भी मिलती है और अवयवों का व्यायाम भी हो, जाता है । कुछ रोगों का तो सम्बन्ध ही वाद्यों से है । आसावरी राग से सिर दर्द दूर होने, वीणा पर जैजैवन्ती राग से लकवे की शिकायत दूर होने के कई उदाहरण सामने आ चुके हैं । कई स्थानों पर अभी भी माली लोग एक विशेष प्रकार से ताल वाला "पचड़ा" राग गाकर चेचक रोगियों को अच्छा कर देते हैं । यह राग ढोल झाँझ और मजीरा बजाकर गाया जाता है । इसमें वाद्य-यन्त्रों से उत्पन्न हुई स्वर-लहरियाँ ही काम करती हैं। साँप के काटने पर कांसे की थाली बजाकर उपचार करने की पद्धति अभी भी गाँवों में प्रचलित है। विषैले फोड़े भी इस पद्धति में अच्छे किये जाते हैं।

गायन और वाद्य मिलकर भोजन पचाने की अभूतपूर्व क्षमता रखते हैं । पौष्टिक से पौष्टिक आहार भी इससे सुगमता से पच जाते हैं इसलिये भोजन के उपरान्त संगीत का आयोजन रखना विशेष लाभदायक होता है । बच्चों में इससे भूख बढ़ती है । एक डाक्टर का तो यह मत है कि "इससे बच्चों को घोड़ों जैसी भूख लगती है ।"

नृत्य भी गायन-वादन के समान ही मृदु-व्यायाम माना जाता है । इससे शारीरिक अंग-सञ्चालन की आवश्यकता पड़ती है, उसे से शरीर का पूर्ण व्यायाम हो जाता है । भारतीय नृत्यों में कत्थक मणिपुरी, लास्य, ताण्डव आदि बड़े महत्वपूर्ण हैं। इनका प्रभाव न केवल बाह्य-शरीर पर पड़ता है अपितु इससे आत्म-जगत भी क्रियाशील होता है ।

शरीर की सम्पूर्ण माँसपेशियों का एक साथ व्यायाम नृत्य से पूरा होता है । इससे शरीर बढ़ता है और माँसपेशियाँ मजबूत होती हैं । श्वांस-प्रश्वांस की क्रिया में तीव्रता आती है, जिससे रक्त-संचालन बढ़ जाता है। फेफड़े और हृदय का पूर्ण व्यायाम हो जाता है। नृत्य से भूख खूब खुलकर लगती है। आहार ठीक प्रकार पच जाता है। इससे हाथ, पाँव, वक्ष, उदर, नेत्र, ग्रीवा, कण्ठ, कमर आदि का पूर्ण व्यायाम हो जाता है और किसी एक स्थान पर चर्बी जमा नहीं होने पाती जिससे शरीर सुडौल बना रहता है ।

इस प्रकार संगीत मानव-जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी वस्तु है । शरीरगत पंच-वायु पर भी इसका प्रभाव होता है जिससे विष निकालने की क्रिया तीव्र होती है और प्राण-विद्युत बढ़ती है । संगीत का सम्बन्ध आत्मा के सूक्ष्म जगत के साथ होने से उसका प्रभाव सर्वोपरि माना गया है । **डा० जार्ज स्टीवन्सन** ने लिखा है "क्रोध उत्पन्न हो तो शारीरिक श्रम में लगें ।" "विक्षिप्त मन स्वाध्याय से शान्त होता है ।" "शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम की आवश्यकता अनिवार्य है।" इन तीनां के लिए एक और सार्थक उपाय संगीत है। इससे मानसिक तनाव दूर होता है शान्ति मिलती है और स्वास्थ्य स्थिर रहता है। अतएव अपने जीवन को संगीतमय बनाने का प्रयत्न सभी को करना चाहिये ।

संगीत में शरीर और मन को उत्तेजित-आन्दोलित करने तथा उसे स्वस्थता और शक्ति प्रदान करने वाले तत्वों का बाहुल्य है। प्राचीन भारतीय आचार्यों ने इसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण संगीतशास्त्र के विकास में अधिक रुचि दिखाई थी। भारतीय संगीत उस समय विकास की किन ऊँचाइयों को छू चुका था, इसका अनुमान उसकी विभिन्न राग-रागिनियों की अद्‌भुत सामर्थ्य को देखकर लगाया जा सकता है।

राग-रागिनियाँ आंदोलित करती हैं शरीर व मन को

इनके निर्माण के पीछे मात्र मनोरंजन प्रदान करना जैसा स्थूल दृष्टिकोण नहीं था, वरन् इसके द्वारा मानवी अन्तराल में सन्निहित सूक्ष्म भावनाओं और विशिष्टताओं को उभारना, हृदयतंत्र को झंकृत करना ही प्रधान लक्ष्य था। विविध मनोदशाओं की द्योतक राग-रागिनियाँ मनुष्य में रसानुभूति का संचार तो करती ही हैं, अनेकानेक शारीरिक-मानसिक-व्याधियों से भी छुटकारा दिलाती हैं। संगीत-ध्वनि विज्ञान की एक शाखा है, जिसमें भिन्न-भिन्न राग-रागिनियों के माध्यम से मानवी चिन्तन और व्यवहार तथा वातावरण को प्रभावित किया जाता है, संगीत में अनेकों राग-रागनियाँ हैं, पर वे सभी सात स्वरों से ही बने होते हैं। किन्हीं-किन्हीं में मात्र पाँच स्वरों को प्रयोग होता है। वाद्य-यंत्रों के साथ रागों में स्वरों और अलापों में परिवर्तन के आधार पर उत्पन्न प्रकम्पन शरीर और मन को अलग-अलग प्रकार से प्रभावित करते हैं।

संगीत शास्त्रों में कितनी ही राग-रागिनियों का वर्णन है और उन सबके पृथक्-पृथक् प्रभाव बताये गये हैं। "संगीत मकरंद" के संगीताध्याय के चतुर्थ पाद के सूत्र ८०-८३ में देवर्षि नारद ने कहा है कि सम्पूर्ण रागों के गायन से आयु, धर्म, यश, बुद्धि धन-धान्य आदि की अभिवृद्धि होती है। संतानें सद्‌गुणी बनती हैं। इसी ग्रंथ में बताया गया है कि 'षाडव' रोगों के गायन-वादन से शोक-संताप दूर होते हैं और रूप लावण्य बढ़ता है। 'पूर्ण' राग के गायन से आयुष्य और बुद्धि की अभिवृद्धि बतायी गई है। जबकि 'औडव' से शरीरिक-मानसिक व्याधियों का शमन होता है। 'मालकोष' सद्‌भावना उत्पन्न करता है, तो जैजैवन्ती राग से प्राण ऊर्जा का अभिवर्धन होता है। इसी प्रकार कई राग ऐसे हैं जिनके शरीर और मन पर तीव्र स्तर के प्रभाव पड़ते हैं। 'दीपक राग' गर्मी उत्पन्न करता है तो 'कालिगंड़ा राग' गाने-बजाने से गायक एवं श्रोताओं के दिल की धड़कनें बढ़ने लगती हैं। इसी तरह 'पीलू राग' के प्रभाव से कई व्यक्तियों को रोने की तीव्र इच्छा होने लगती है और कइयों की आँखों से आँसू भी बहने लगते हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि संगीत की विभिन्न राग-रागिनियाँ इन्फ्रा और अल्ट्रासोनिक स्तर की ध्वनियाँ हैं, जो अपने में समाहित तीव्रता, मधुरता और कर्कशता के कारण अलग-अलग प्रकार के परिणाम प्रस्तुत करती हैं। इस संदर्भ में वैज्ञानिकों ने विविध प्रयोग परीक्षण भी किये हैं। वैज्ञानिक द्वय **चार्ल्स कील** एवं **ऑगोलिकी** ने विभिन्न स्थर माधुर्य वाले संगीत के प्रभाव को मानसिक रोगियों पर जाँचा परखा है। रोगियों को दो वर्गों में बाँटकर उन्होंने एक समूह को विदेशी संगीत जैसे—पाप म्यूजिक सुनाया और दूसरे समूह को भारतीय संगीत के राग आदि। इस प्रयोग में उत्साहवर्धक और प्रफुल्लतादायक राग चुने गये थे। परिणामतः उनने पाया कि भावोत्पादक भारतीय संगीत के प्रभाव से ८० प्रतिशत मनोरोगी स्वस्थ्य हो गये, जबकि विदेशी संगीत का असर ठीक उसके विपरीत रहा। इस तरह के कई प्रयोग-परीक्षणों का विवरण उनने अपनी पुस्तक 'द म्यूजिकल मीनिंग' में प्रकाशित भी किया है। "म्यूजिक थेरैपी" नामक पुस्तक में मूर्धन्य चिकित्सा विज्ञानी जूलियट एल्विन ने अपना अनुसंधान निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए बताया है कि संगीत हमारे मन मस्तिष्क, संवेगों एवं शरीर पर अच्छा प्रभाव डालती है।

संगीत से कठोर मन भी द्रवित हो जाता है। इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण श्रावणकोर के स्वातितिरू नालु राजा के प्रसिद्ध दरबारी संगीतकार वडिवेलु के जीवन का है। घटना उन दिनों की है जब राजा ने किसी कारणवश नाराज होकर उन्हें अपने राज्य से निष्कासित कर दिया था। वह अपना सामान और एक पुराना वायलिन लिए जंगल से गुजर रहे थे, तभी डाकुओं ने उन्हें आ घेरा। उनका सारा सामान छीन लिया और साथ में वाद्ययन्त्र भी। वडिवेलु उच्चकोटि के वायलिनवादक थे। उन्हें अपने इस पुराने वाद्ययन्त्र से बहुत प्यार था, अतः किसी प्रकार अनुनय-विनय कर उसे लेने में वे सफल हो गये और वहीं बैठकर बजाने लगे। उससे निनादित स्वर लहरी का लुटेरों पर ऐसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आश्चर्यजनक प्रभाव हुआ कि उनने न केवल सारा सामान लौटा दिया, वरन् उन्हें पुरस्कृत भी किया और सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दिया।

संगीत में अपनी एक विशिष्ट शक्ति है जिसे अब विज्ञानवेत्ता भी स्वीकारते हैं। इसकी इस क्षमता का उल्लेख करते हुए अमेरिका के सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक **आस्टिन एम. डे लारियर्स** ने "व्हाट इज थेरैपी इन म्यूजिक थेरैपी" में कहा है कि संगीत अपनी विशिष्ट और सूक्ष्म आन्तरिक संरचना के माध्यम से इन महत्वपूर्ण तत्वों को उपस्थित करता है, जिन्हें मानसोपचार के लिए किसी भी आधुनिक चिकित्सा पद्धति में आवश्यक माना जाता है।

इसमें भावनाओं को उद्दीप्त करने की अद्भुत क्षमता है। इससे उत्पन्न शरीर के विभिन्न कायिकीय परिवर्तनों—जैसे रक्तचाप, नाड़ी गति, श्वसनदर, मस्कुलर एनर्जी आदि को वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता से मापा जा सकता है। कुछ ध्वनियाँ मनुष्य एवं अन्य जीवजन्तुओं के लिए सत्परिणमदायक होती हैं, तो कुछ उसके विपरीत। इस आधार पर संगीत के प्रभाव परिणाम भी दोनों प्रकार के होते हैं। विभिन्न रोगों पर अलग-अलग होती है। इस सम्बन्ध में अमेरिका के प्रख्यात शरीर विज्ञानी **डॉ. कीथ वैलेस** ने अपने सहयोगियों के साथ गहन खोजें की हैं और पाया है कि रुग्ण व्यक्ति विभिन्न रागों के प्रति अपनी अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करता है। यह भी देखा गया है कि यदि वह व्यक्ति संगीत के प्रति संवेदनशील नहीं हुआ तो रोग के ठीक होने की संभावना भी न्यून ही रहती है।

यूरोप और अमेरिका के चिकित्सा विज्ञानी संगीत द्वारा रोगोपचार में अब गहरी अभिरुचि दिखा रहे हैं। मधुर स्वर लहरियों को कैसेटों में बंद करके व्यक्तिगत या सामूहित रूप से रोगियों को सुनाया जाता है। पूर्वी जर्मनी के डॉ. जोहोंस अमेरिका के डॉ. पोडोलास्की तथा डॉ. दर्चिसन ने इस क्षेत्र में काफी ख्याति अर्जित की है। चीन के शंघाई कन्जरवेटरी ऑफ म्यूजिक के चिकित्सकों ने "इलेक्ट्रो म्यूजिक थेरैपी" नामक एक प्रभावशाली उपचार पद्धति विकसित की है जिसमें भिन्न-भिन्न बीमारियों के लिए पृथक्-पृथक् संगीत ध्वनियाँ प्रयुक्त की जाती हैं।

इस क्षेत्र में विकास की अनन्त संभावनाएँ हैं। इतिहास के बैजूबावरा, तानसेन, बाजबहादुर जैसी अनगिनत हस्तियों के नाम देखने को मिलते हैं, जिनमें जड़ व चेतना दोनों ने जगत को संगीत से प्रभावित कर इस कला को शिखर तक पहुँचा दिया था। आज इस पर विज्ञान सम्मत शोध की आवश्यकता है। ऑसीलोस्कोप, हारमोनी एनलायजर, डेसीबल मीटर, बायोफीड बैक एवं पॉलीग्राफ का संयुक्त प्रयोगकर ध्वनि-तरंगों का स्वरूप व उनके प्रभाव को जाँचा मापा जा सकता है।

वस्तुतः विद्युत-प्रकाश और ताप की तरह ध्वनि-शब्द शक्ति भी प्रकृति की एक विशिष्ट शक्ति है। इसमें सृजनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों ही क्षमताएँ विद्यमान हैं। मधुर स्वर लहरियों के रूप में इसमें जहाँ मनुष्यों सहित समस्त प्राणियों एवं वनस्पतियों के पोषण-अभिवर्धन की सामर्थ्य सन्निहित है। वहीं अदृश्य एवं अश्रव्य ध्वनियों के प्रयोग से विनाशकारी दृश्य भी उपस्थित किये जा सकते हैं। कर्णप्रिय भावोत्पादक ध्वनियों का उपयोग रोग-निवारण में अन्यान्य चिकित्सा उपचारों से कम प्रभावी नहीं है। संगीत इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

रोगोपचार प्रक्रिया में अब संगीत को वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में विकसित किया जा रहा है। साउण्ड थेरैपी के विशेषज्ञों का कहना है कि संगीत के सात स्वरों की सात भिन्न स्वर लहरियों के अपने पृथक् सात रंग होते हैं। प्रत्येक स्वर की तरंगें अपने विशिष्ट रंग के साथ मानवी काया और मन को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार रोग की प्रकृति के अनुरूप ध्वनि तरंग का निर्धारण कर उसे व्याधिग्रस्त पर डाला और रोग का निवारण किया जाता है। इस उपचार पद्धति के लिए वैज्ञानिकों ने "ओरोटोन" नामक एक ऐसा ध्वनि यन्त्र विकसित किया है, जिसमें सप्त स्वरों के साथ सात रंग भी उत्सर्जित होते हैं । यन्त्र के 'सी' रीड से लाल रंग, 'ई' से पीला और 'जी' से नीला वर्ण निकलता है। आवश्यकतानुसार रुग्ण व्यक्ति को जैसा रंग अभीष्ट होता है उसी रंग के स्वर का संगीत उसे सुनाया जाता है ।

संगीत में विद्यमान सूक्ष्म ध्वनि-तरंगों का मनुष्य की मनोदशा पर गहरा प्रभाव पड़ता है । फलतः

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

शरीर-रसायन तंत्र में भारी परिवर्तन परिलक्षित होने लगते हैं । रूसी वैज्ञानिक कुद्रयावत्सेव के अनुसार इन ध्वनि-तरंगों से शरीर की अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ सक्रिय हो उठती हैं और उनसे रिसने वाले हारमोन रसायन मानसिक स्थिति में परिवर्तन का स्पष्ट संकेत देते हैं । मधुर स्वर प्रकंपनों के प्रभाव से व्यक्ति जब प्रसन्नता की स्थिति में होता है, उस समय का रस-स्राव भिन्न प्रकार का होता है और जब कर्कश, कोलाहल युक्त ध्वनि सुनने को मिलती है, वह आवेश से भर उठता है। ऐसी स्थिति में काया में भिन्न प्रकार के रसायन उत्पन्न होते हैं । ध्वनियों में रासायनिक परिवर्तन की इस प्रचण्ड क्षमता को देखते हुए रसायनशास्त्रियों ने "ध्वनि-रसायन" नामक विज्ञान की एक अभिनव शाखा का ही विकास कर लिया है । प्रयोग-परीक्षणों के दौरान उनने पोटेशियम आयोडाइड के घोल में जब शक्तिशाली परातरंगें डाली तो उसका रंग हल्का पीला हो गया। इसी तरह मरक्यूरिक क्लोराइड का घोल गंदले रंग के रसायन में परिवर्तित हो गया । उनका कहना है कि ध्वनि की उपयुक्त सूक्ष तरंगें न केवल मनुष्य में लाभकारी परिवर्तन प्रस्तुत करती हैं वरन् वनस्पतियों के लिए भी हितकारी सिद्ध होती हैं । इसके प्रभाव से बीजों के अंकुरण की प्रक्रिया तेज हो जाती है । मास्को के कृषि वैज्ञानिकों ने इस प्रक्रिया द्वारा गेंहूँ और जौ में ९० से ५० प्रतिशत उत्पादकता, बढ़ाने में सफलता पाई है ।

पिछले दिनों जापान के ओसाका शहर के कृषि विज्ञानी योशितो ओशाई ने अपने बगीचे में लगी टमाटर, चुकंदर और तरबूज जैसी फसलों पर संगीत ध्वनि का प्रयोग किया । पाया गया कि इससे न केवल फलों के आकार और वजन में अभिवृद्धि हुई वरन् उनके स्वाद के पौष्टक गुणों में भी बढ़ोत्तरी हुई । कुछ ऐसे ही प्रयोग कनाडा के ओंटारियो क्षेत्र में वैज्ञानिकों ने गेहूँ की फसल पर किये और ६० प्रतिशत से अधिक उत्पादन प्राप्त किया था। भारतीय कृषि वैज्ञानिकों ने इस क्षेत्र में गहन अनुसंधान किये हैं । तमिलनाडु के अन्नामलायी स्कूल आफ बॉटनी, कोयम्बटूर के सरकारी कृषि विद्यालय एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों नें अपने विभिन्न प्रयोगों के आधार पर यह सिद्ध कर दिखाया है कि पेड़-पौधों के विकास पर क्रमबद्ध संगीत का उत्साहवर्धक प्रभाव पड़ता है। इनके अनुसार कृषि क्षेत्र की फसलों व अन्यान्य वृक्ष-वनस्पतियों पर संगीत की उपयुक्त स्वर लहरियाँ डाली जायँ तो न केवल उनके फलने-फूलने की रफ्तार में तेजी आयेगी वरन् उनके वजन, गुणवत्ता एवं उत्पादन क्षमता में भी बढ़ोत्तरी की जा सकेगी । विस्कासिन यूनिवर्सिटी में संगीत-शक्ति पर अनुसंधानरत सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्थारलाकर का तो यहाँ तक कहना है कि इसकी प्रभाव क्षमता से पौधे को ही नहीं मानव को भी रोगाणुओं से बचाया जा सकता है ।

भारत सहित अनेक देशों में अब ध्वनि-तरंगों द्वारा व्याधि-निवारण के चिकित्सकीय कार्य सम्पन्न किये जा रहे हैं । चिकित्सा विज्ञानी अब इस दिशा में प्रयासरत हैं कि किसी भी प्रकार के आपरेशन कार्य सम्पत्र करने के लिए औजारों की आवश्यकता ही न रहे। ध्वनि-तरंगों से ही यह सब सम्पत्र होने लगे। फिलीपीन्स मे ऐसे प्रयोग चल भी रहे हैं । अपने देश के दिल्ली सहित कितने ही अस्पतालों एवं क्लीनिकों में अल्ट्रासाउण्ड के माध्यम से शरीर की अन्दरूनी विकृतियाँ का पता कैटस्कैनर की भाँति लगाया जाता है। नेत्र रोग, उदर रोग, हृदय रोग, अंतःस्रावी ग्रन्थियों से सम्बन्धित रोगों एवं प्रसूति चिकित्सा मे रोग निदान तथा उसके उपचार मे इसका उपयोग हानिरहित चिकित्सा के रुप मे लाभकारी सिद्ध हुआ है।

गत वर्ष चीन के वैज्ञानिकों ने एक ऐसी म्यूजिक मशीन का विकास किया है, जिसकी मधुर स्वर लहरियों से पाचन संस्थान, हृदय और स्नायुतंत्र की बीमारियों का उपचार किया जाता है। यह श्रव्य ध्वनियों के चमत्कारिक परिणाम हैं जो मनःसंस्थान के भावना क्षेत्र को प्रभावित करके अपना परिणाम प्रस्तुत करती है। किन्तु एक से पाँच मेगाहर्ट्ज आवृत्ति की श्रवणातीत अश्रव्य ध्वनियों को अनुसंधानहकर्ताओं ने काय चिकित्सा के लिए अधिक उपयुक्त पाया है। इन सूक्ष्म तरंगों के आघात से शरीर के अन्दर गुर्दे या पित्ताशय की पथरी को बारीक कणों में बदल देने में उनने सफलता प्राप्त कर ली है। पश्चिम जर्मनी के म्यूनिख स्थित डोर्नियर मेडिकल टेक्नालाजी के विज्ञानियों ने "लिथोट्रिप्टर" नामक एक यन्त्र विकसित किया है जिससे निकलने वाले ध्वनि प्रकंपन ३०-४० मिनट के अन्दर पित्ताशय एवं गुर्दे की पथरी को चूर्ण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप में बदल देती है, जो बाद में शरीर से बाहर निकल जाता है। यह उपकरण भारत में अब उपलब्ध है।

इसी प्रकार आँखों के मोतियाबिन्द का आपरेशन पराश्रव्य ध्वनियों से सरलतापूर्वक बिना किसी रुधिर स्राव के किया जाने लगा है। यह ध्वनि-तरंगें न केवल आँख के लेन्स के अपारदर्शी भाग को सूक्ष्म कणों में परिवर्तित कर निकाल बाहर करती हैं, वरन् आँख की अन्यान्य बीमारियों की भी जानकारी दे देती हैं। अब इन्हीं ध्वनि-तरंगों का उपयोग करके अंधों को राह दिखाने वाले उपकरण विकसित किये गये हैं।

समुद्रों में छिपी पनडुब्बियों का पता एक विशेष प्रकार के "सोनार तंत्र" द्वारा लगाया जाता है। इनमें पराध्वनि का ही प्रयोग होता है। इसी तरह वायुयानों की जानकारी 'राडार' द्वारा प्राप्त की जाती है। अब अमेरिकी वैज्ञानिक इन ध्वनि-तरंगों को शक्तिशाली हथियार के रूप में प्रयुक्त करने में अनुसंधानरत हैं। वाशिंगटन के हेरीडायमण्ड प्रयोगशाला के अनुसंधान विभाग के निदेशक जान रूसडो का कहना है कि यह तरंगें इतनी शक्तिशाली होंगी कि शत्रु क्षेत्र में इनकी बौछार करने मात्र से उनके समस्त शस्त्रास्त्र नाकाम हो जायेंगे। इनसे विमानों और टैंकों तक को पंगु बनाया जा सकेगा। उनका मत है कि पराश्रव्य ध्वनियों की क्षमता १० अरब वाट के बराबर होगी जो किसी भी सीमित क्षेत्र के जन जीवन को क्षत विक्षत कर सकती है।

ध्वनि सिर्फ मनुष्यों, जीवधारियों अथवा वनस्पतियों को ही प्रभावित करती हो, ऐसी बात नहीं। उसका प्रभाव जड़ पदार्थों पर भी पड़ता है। हीरे जैसी कठोर वस्तु को काटने में इसकी सूक्ष्म तरंगें प्रयुक्त होती हैं। ध्वनिकंपन से बड़े-बड़े पुल टूट जाते हैं। खिड़कियों के शीशे चटककर बिखर जाते हैं। वियना के 'मारसिल्स' इंस्टीट्यूट के विज्ञानवेत्ता प्रो. गावरॉड ने इस सम्बन्ध में गहन खोजें की हैं। उनने स्वनिर्मित पराध्वनि उत्पादक यन्त्र से कुछ प्रयोग किये और पाया कि उससे निस्सृत तरंगें आधे मील की परिधि तक में खिड़कियों के काँच तोड़ देती हैं। बाइबिल में उल्लेख है कि जेरिको की तुरहियों की ध्वनि से एक समूचा नगर नष्ट हो गया था। ज्यूरिच के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डा. हेन्स जेनी ने अपनी पुस्तक-'सिमेटिक्स' में इस तथ्य की पुष्टि की है और कहा है कि ध्वनि में निर्माणकारी तथा ध्वंस करने वाली दोनों ही क्षमताएँ विद्यमान हैं। यह पदार्थ का रूपान्तरण करने में भी सक्षम है।

शारीरिक मानसिक विकारों के उपचार में मधुर स्वर लहरियाँ अपनी कारगर भूमिका तो निभाती ही हैं, परिष्कार-सुधार का भी कार्य सम्पन्न करती हैं। आवश्यकता उसके सृजनात्मक पक्ष को विकसित करने और उस शक्ति से लाभान्वित होने की है। मानव स्वभाव को नियंत्रित करने एवं अन्तराल में सन्निहित शक्तियों को उभारने का संगीत सर्वोत्तम माध्यम है। यों तो प्रायः संगीत व गायन को मात्र मनोरंजन की विधा माना जाता है पर वस्तुतः यह मान्यता त्रुटिपूर्ण है। इसका उपयोग पिछले दिनों स्वास्थ्य संवर्धन के क्षेत्र में हुआ है व इस चिकित्सा से कई व्यक्तियों को व्याधियों से मुक्ति भी मिली है। इन दिनों जो शोध कार्य चल रहा है, उससे यह स्पष्ट हो गया है कि संगीत का शरीर व मन पर असाधारण प्रभाव पड़ता है व सही निदान कर उपयुक्त स्वर लहरियों का व्यक्तियों के लिए चयन कर उन्हें मनोविकारों-विभिन्न शारीरिक रोगों से मुक्ति भी दिलायी जा सकती है।

इंग्लैण्ड के चिकित्साशास्त्री डा. एडवीना मीड और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के शरीर शास्त्री एडवर्ड पोडीलॉस्की ने लम्बे समय तक शरीर व मन पर संगीत के प्रभावों का अध्ययन कर अपना शोध निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए कहा है कि संगीत की शक्ति से स्नायु संस्थान में एक विशेष प्रकार की हलचलें उत्पन्न होती हैं, जो चिन्तन और भावना क्षेत्र की विकृतियों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनके अनुसार संगीत के स्वरों से शरीर मन को संचालित करने वाली अन्तःस्रावी ग्रन्थियों को भी प्रभावित उत्तेजित किया जा सकता है। यह कहकर उन्होंने प्रकारान्तर से संगीतशास्त्र की रोग निवारक क्षमता का ही समर्थन किया है, जिसमें शरीर-मन की विभिन्न अवस्थाओं को प्रभावित करने के लिए विभिन्न राग रागिनियों का निर्धारण है। पश्चिम जर्मनी के डॉ. डोनाल्ड ड्रोह एवं पूना विश्वविद्यालय के डॉ. तम्हाने का मत है कि एड्रिनेलिन के कारण उत्पन्न होने वाले विकारों को संगीत द्वारा उसके स्राव को सामान्य संतुलित बनाकर सही किया जा सकता है। उन्होंने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बच्चों पर इसका प्रयोग कर उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त किया। चार्ल्स कील एवं आंगेलिकी नामक वैज्ञानिकों द्वारा भी ऐसे ही परिणाम प्राप्त किये गये, जिसका उल्लेख सन् १९६६ में "म्यूजिकल मीनिंग ए प्रिलीमिनरी रिपोर्ट" नाम से अथेडी की पत्रिका "जनरल ऑफ इण्टोनोम्यूजिकोलॉजी" में किया गया है। डॉ. हर्बर्ट स्पेंसर ने भी रोग और रोगियों पर संगीत उपचार के कुछ प्रयोग-परीक्षण किये थे। उन्होंने अपने प्रयोग में पाया कि द्रुतगति व तीव्र स्वर में बजती धुनों के प्रयोग से निम्न रक्तचाप वाले रोगियों तथा हल्के स्वर में बजती धुनों से उच्च रक्तचाप वाले मरीजों को लाभ पहुँचता है।

संगीत से मात्र शारीरिक-मानसिक रोगों को ही ठीक किया जा सकता है, ऐसी बात नहीं है। यह भावनाओं को भी परिवर्तित परिष्कृत एवं उद्वेलित करने की सामर्थ्य रखता है। त्रावणकोर के प्रसिद्ध संगीतकार वडिवेल्लु के जीवन की वह घटना प्रसिद्ध है, जिसमें उनने-अपने संगीत के माध्यम से डाकुओं के कठोर हृदय को भी विगलित कर दिया था।

संगीत की इसी शक्ति का समर्थन डॉ. लुई वैरमोन ने अपनी पुस्तक "दि ग्लैण्ड रेग्युलेटिंग पर्सनालिटी" में किया है। स्वर विज्ञान का विवेचन करते हुए अपनी उक्त पुस्तक में उन्होंने कण्ठ नली से सम्बन्धित ग्रन्थि का उल्लेख किया है और कहा है कि थायरायड ग्रन्थि न केवल रक्ततात व चाप का नियंत्रण करती है, वरन् प्रेम और सहानुभूति बढ़ाने एवं असामान्य व विकृत स्थिति में ईर्ष्या द्वेष उभारने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनने अपनी पुस्तक में आगे लिखा है कि सामान्य परिमाण में रक्तचाप बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि थायरायड से निकलने वाला रसस्राव थायरोक्सिन का अनुपात सही हो। उसका संतुलन बिगड़ने से न केवल रक्त की ऊष्मा और गति में गड़बड़ी उत्पन्न होती है, वरन् तरह-तरह की भावनाओं संबंधी विकृतियों का भी मनुष्य शिकार बन जाता है। संगीत के माध्यम से इसके इसी रसस्राव को नियंत्रित कर व्यक्ति को भावनात्मक दृष्टि से उदात्त बनाया जाता है। संभव है संगीत से मस्तिष्क के एण्डार्फिन्स व एन्केफिलिन्स आदि रसस्राव भी प्रभावित होते हों जो भाव संस्थान से जुड़े होते हैं।

रूसी वैज्ञानिक और संगीतज्ञ डॉ. गोर्जिएल ने भी इसी प्रकार का मन्तव्य प्रकट करते हुए कहा है कि संगीत न सिर्फ रक्तचाप को प्रभावित करता है, वरन् इससे व्यक्ति की भावनाएँ भी बदली जा सकती हैं।

किन्तु संगीत के रूप में वर्तमान चिकित्सा पद्धति की गति अभी उतनी गहरी नहीं हो पायी है, जितनी प्राचीनकाल में कभी थी। तब भिन्न-भिन्न आधि-व्याधियों के निवारण के लिए पृथक्-पृथक् राग-रागिनियों का निर्धारण था। उदाहरण के लिए मानसिक अस्थिरता एवं क्रोध शमन के लिए मल्हार, सौरत एवं जैजेवन्ती रागों की व्यवस्था थी। श्वांस संबंधी तकलीफ, खांसी, दमा, तपेदिक आदि में राग भैरव, रक्त अशुद्धि की स्थिति में राग अस्सावरी तथा मेदा, यकृत, प्लीहा वृद्धि में राग हिंडोल का प्रावधान था, पर रोगोपचार के क्षेत्र में आज विभिन्न प्रकार की पद्धतियों के प्रचलन से अब इनका प्रयोग लुप्तप्राय हो चला है। सत्य तो यह है कि संगीत की इस विधा को आज लोग शंकित दृष्टि से देखते हैं। प्राचीन भारतीय शास्त्रों में वर्णित इसकी विलक्षण शक्ति की सच्चाई जानने के लिए विज्ञान का आश्रय लिया जाता तो यह शंका तो मिटती।

प्राचीन भारतीय संगीतशास्त्रियों ने आयुर्वेदीय सिद्धान्त के आधार पर कंठनाद की भी तीन प्रकृति-कफ, वात, पित्त निर्धारित की हैं। उनके अनुसार कफ प्रधान कंठ से उत्पन्न नाद स्वर अथवा शब्द गंभीरता के लिये, स्थिर व मधुर होता है। इस प्रकार के कंठ से तरंगित स्वर को काहुल या कफज कहा गया है। पित्त प्रकृति युक्त कंठ तीव्र नाद पैदा करता है। वह कर्कश व कर्णकटु होता है। ऐसे नाद को संगीत शास्त्र की भाषा में "नारट" की संज्ञा दी गई है, जबकि वात की अधिकता होने पर इस प्रकार के कंठ से उद्भूत स्वर माधुर्य रहित व उच्च होते हैं। ऐसे कंठ वाले गायक चाहकर भी अपने स्वर को स्थिर नहीं रख पाते, फलतः गायन बेसुरा हो जाता है। ऐसे स्वर को "बोंबर" नाम दिया गया है। इसी प्रकार वात-कफ वात-पित्त और कफ-पित्त प्रधान कंठ अथवा स्वर भी होते हैं।

आयुर्वेदशास्त्र में जिस प्रकार वात, पित्त, कफ की त्रिधातुओं को गति, चेतन और मंदता के लिए जिम्मेदार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माना गया है, वैसे ही संगीत के आचार्यों ने इनके आधार पर स्वरों की तारता, तीव्रता और मधुरता के तीन भेदों का निर्धारण किया है। तारता (पिच) वात गुण का द्योतक है। तीव्रता (लाउडनेस) पित्त गुण को इंगित करती है और मधुरता (टोनल क्वालिटी) कफ-गुण का संकेत करती है। आयुर्वेद के अनुसार पिण्ड से ब्रह्माण्ड तक के सारे प्राणी-पदार्थ इन्हीं तीन गुणों का विभिन्न अनुपात में सम्मिश्रण लिये होते हैं। काया में इनकी साम्यावस्था या विषमता से जो अवस्था उत्पन्न होती है, उसका प्रभाव हृदय-नाड़ियों और स्नायु तंतुओं से लेकर समस्त अंग अवयवों पर पड़ता है, जिसके झंकार को स्वर कहते हैं। धातु-भेद के आधार पर इन स्वरों के प्रभाव-परिणाम भी श्रोताओं पर भिन्न प्रकार के होते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए रोगग्रस्त स्थिति में शरीर में इन तीन गुणों में से जिसकी कमी-अथवा अधिकता होती है, संगीत के माध्यम से उसे साम्य बनाया जाता है।

डॉ. वि. वि. गोरे ने अपने लेख "संगीत और आयुर्वेद (संगीत पत्रिका फरवरी ९१६२) में लिखा है कि यदि शरीर और मन पर सुस्ती छा जाय आलस्य आ जाये एवं आवाज मन्द आने लगे पंचम स्वर की पपिनी मंदती रोहिणी रम्या, स्वरों का कंठ पर वर्चस्व हो, तो ऐसे व्यक्ति को (कफ प्रकृति की मंदता) स्वस्थ बनाने के लिए रौद्री, क्रोधी वज्रिका श्रुतियाँ, ऋषभ स्वर शब्द को या ऋषभवादी स्वर वाले राग को सुनाया जाना चाहिए। इसी प्रकार पित्त और वात प्रकृति वाले व्यक्ति को साम्यावस्था मे लाने के लिए कफ प्रकृति स्वर अर्थात् शृंगार रस के राग समाज, तिलंग, देश आदि सुनाने चाहिए।

शास्त्रों में संगीत की महता का वर्णन अनेक स्थानो पर किया गया है । पाराशर ऋषि ने इसके माहात्म्य का उल्लेख करते हुए कहा है—

न नादेन बिना ज्ञानं न वादेन बिना शिवः

नाद रूपं परं ज्योतिर्नादरूपी स्वयं हरिः ॥

अर्थात् "नाद के बिना ज्ञान नहीं होता। वादन के बिना शिव नहीं होता। परम ज्योति नाद रूप ही है। स्वयं विष्णु नाद रूप हैं।" नारद विरचित "संगीत मकरंद" में भी संगीत का गुणगान करते हुए कहा गया है कि आयु, धर्म, यश, बुद्धि, धन, धान्य, संतान की अभिवृद्धि—यह सब रोगों के गायन द्वारा संभव है।

ऐसी बात नहीं कि संगीत की यह विधा प्राचीन समय में पुस्तकीय ज्ञान के रूप में ही सीमित होकर रह गई थी अपितु इसका सफल प्रयोग भी होता रहा था। इसके अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं। कहा जाता है कि प्रसिद्ध संगीतज्ञ बैजूबावरा ने राग पूरिया सुनाकर राजा राजसिंह की अनिद्रा की बीमारी दूर की थी। ऐसी ही शक्ति पं. पलुस्कर और डागरबन्धु के गायन-वादन में बतायी जाती थी, अब तो क्रमशः यह पीढ़ी भी लुप्त होती जा रही है। फिर भी कुछ घराने ऐसे हैं, जहाँ इन रागों को जिन्दा रखा गया है। इटली के शासक मुसोलिनी की निद्रा संबंधी बीमारी भी, कहा जाता है कि एक भारतीय संगीतकार ने ही संगीत के माध्यम से दूर की थी।

अब जैसे-जैसे विज्ञान इसकी गहराई में उतरता जा रहा है, उसे संगीत की अपरिमित शक्ति और क्षमता का ज्ञान विदित होता जा रहा है। आज "ओरोटोन" जैसे कई ऐसे विशेष वाद्य यन्त्र-उपकरण विकसित कर लिये गये हैं, जिसमें भिन्न-भिन्न रोगों में व्यक्ति को भिन्न-भिन्न राग सुनाकर स्वस्थ करने की व्यवस्था है। इसे देखते हुए आने वाले समय में संगीत को यदि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में विकसित किया गया, तो इसमें आश्चर्य जैसी कोई बात नहीं होनी चाहिए। इसके लिए प्रयोग परीक्षण का एक व्यापक तंत्र बनाना होगा। हमारे पास संगीत रूपी पूँजी का अभाव नहीं है। उसे विभिन्न आधुनिक यन्त्रों की कसौटी पर कसे जाने भर की आवश्यकता है।

विभिन्न नादों रागों-रागनियों को सुनाने के पूर्व शरीर व मन से जुड़े रसायनों की क्या स्थिति थी व बाद में क्या हो गयी ? यदि यह तुलनात्मक अध्ययन संभव हो गया तो कोई संगीत शक्ति की वैज्ञानिकता पर उँगली न उठा सकेगा। ब्रह्मवर्चस शोध-संस्थान ने इस दिशा में प्रारंभिक कदम उठाये हैं और पाया है कि मनुष्य की भावनाओं को जगाकर उन्हें ऊर्ध्वगामी बनाने और परमात्मा की अनुभूति कराने, प्रेम, करुणा, दया, वात्सल्य, साहस आदि गुणों को विकसित कर मनुष्य जीवन को दिव्यता प्रदान करने की अपूर्व शक्ति संगीत में है। संगीत के द्वारा कई प्रकार के शारीरिक मानसिक रोगों का उपचार किया जा सकता है। दुर्बलता को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सशक्तता में बदला जा सकता है। उत्तेजना उत्पन्न करने और भाव-संवेदना जगाने के अतिरिक्त इसके सहारे मनुष्य की आदतों को बदला और स्वभाव में आमूल चूल परिवर्तन किया जा सकता है। इसे उत्कर्ष का माध्यम बनाया जा सकता है।

चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार संगीत के स्वर ताल, लय, रिद्म के अपने विशिष्ट प्रभाव होते हैं। स्वरशास्त्र एवं नादयोग की अपनी स्वतंत्र विद्या है। विभिन्न राग-रागनियों के अलाप से विभिन्न प्रकार के चमत्कारों का वर्णन हमारे शास्त्रों और धर्मग्रन्थों में मिलता है। सामवेद का तो विषय ही संगीत है। उसमें संगीत के सूक्ष्मतम विज्ञान का विवेचन हुआ है, जिसका कुछ अंश प्राप्त कर बाद में तत्वदर्शियों ने अनेक चमत्कार पैदा किये। कहा जाता है कि 'दीपक राग' गाने से बुझे हुए दीपक जल उठते हैं। मालकोश गाने से पत्थर भी पिघल जाते हैं। तानसेन ने टोड़ी राग गाकर मृगों को संगीत मुग्ध कर अपने पास बुला लिया था। उसके राग की विस्तीर्ण-ध्वनियाँ जहाँ तक पहुँची वहाँ तक सारे वन्य मृग मृत्यु का भय भूलकर राज दरबार में आ गये थे। सुविख्यात संगीतकार बैजू ने मृगरंजिनी टोड़ी गाकर केवल हार पहने हुए एक ही मृग को जंगल से बुलाकर अपने पास बिठा लिया था। भावनापूर्ण तन्मयता से युक्त मेघ-राग का गायन चिलचिलाती धूप में भी तत्क्षण वृष्टि कराने में समर्थ माना जाता था।

आधुनिक अनुसंधानकर्ता वैज्ञानिकों ने भी मानव जीवन के लिए संगीत को अत्यन्त प्रभावकारी पाया है। उनके अनुसार शरीरगत पाँच प्राणों पर भी इसका प्रभाव पड़ता है, जिससे शरीर में भरी विषाक्तता के बाहर निकलने की क्रिया तीव्र होती है और प्राण ऊर्जा बढ़ती है। लन्दन के चिकित्सा विशेषज्ञों ने "हास्पीटल एण्ड हेल्थ, मैन मैनेजमेंट" नामक पत्रिका में कहा है कि रुग्ण प्रकृति के व्यक्ति संगीत से बड़ी जल्दी स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं। इससे मानसिक तनाव दूर होता है, शान्ति मिलती है और स्वास्थ्य स्थिर रहता है। डा. वाल्टर एच. वालेस के कथनानुसार—पीलिया, यकृत रोग और अपच में भी संगीत का सुनिश्चित विधेयात्मक प्रभाव पड़ता है।

चिकित्सकों ने अपने अनुसंधान निष्कर्षों में बताया है कि कुछ रागनियाँ ऐसी हैं, जो शरीर के भीतर इतना कम्पन उत्पन्न करती हैं जिसे रक्तप्रवाह की गति तीव्र हो जाती है। इससे शरीर के भीतर जो विषैले पदार्थ चिपके हुए होते हैं वे उत्तेजित होकर निसर्ग मार्ग से बाहर निकल जाते हैं और रोगी को शीघ्र आराम मिलता है। इन विशेषज्ञों के अनुसार विभिन्न राग-रागनियों एवं वाद्ययन्त्रों के माध्यम से मनुष्य की जटिल से जटिल मनोवैज्ञानिक समस्याओं का समाधान भी संभव है। मानसिक असंतुलन, क्रोध, आवेश, जैसे मनोरोगों का शमन संगीत की मधुर स्वर-लहरियों के द्वारा तो होता ही है-साथ ही माइग्रेन, सिरदर्द, उच्च रक्त चाप, अनिद्रा आदि रोगों से भी संगीत-चिकित्सा द्वारा सहज ही छुटकारा पाया जा सकता है। चिकित्सकों का मत है कि शरीर में जो तनाव या विकृति पैदा होती है उसका मूलाधार मस्तिष्क के ज्ञान तन्तु हैं। संगीत से कानों में लगी नैसर्गिक झिल्ली प्रकम्पित होती है, जिससे सम्बद्ध स्नायु तंतुओं के सजग होने से सम्पूर्ण शरीर में नवीन प्राण चेतना दौड़ जाती है और शक्ति उत्पन्न कर आरोग्य लाभ प्रदान करती है। संगीत से न केवल चित्त को विश्रान्ति मिलती है, वरन् अनाहत चक्र के जागरण द्वारा आत्मिक शक्तियों, अतीन्द्रिय क्षमताओं की जाग्रति भी होती है।

विभिन्न राग-रागनियों तथा वाद्य यन्त्रों के आधार पर उत्पन्न हुई ध्वनियाँ अद्‌भुत प्रभाव छोड़ती हैं। संगीत प्रवाह के माध्यम से न केवल शारीरिक-मानसिक रोगों का उपचार संभव है, वरन् भावना क्षेत्र में भी उपयोगी परिवर्तन किये जा सकते हैं। यह एक अतिशय प्रभावशाली शक्ति है, पर उसे सामान्यतया मनोरंजन के लिए ही प्रयुक्त किया जाता रहा है। यदि इस रहस्य को समझा जा सके कि किस-किस तरह के गानों और रागिनियों का मनुष्य के मन-मस्तिष्क पर कैसा-कैसा प्रभाव पड़ता है, तो उससे मानवी प्रगति में चार चाँद लग सकते हैं।

संगीत की सृजन सामर्थ्य एवं उसका उपयोग

पेरिस का ओलिम्पिया म्यूजिक हाल श्रोताओं से खचाखच भरा था। संगीत का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। मधुर स्वर लहरी के मादक प्रभाव से श्रोतागण झूमने लगे। अचानक एक विलक्षण घटना घटी। संगीत की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धुन बदली। म्यूजिक कार्यक्रम में उस धुन को बजाये जाने का वह पहला अवसर था। शान्तचित्त दर्शक जो संगीत प्रोग्राम को सुनने में तल्लीन थे, उस परिवर्तित धुन को सुनकर बेचैनी अनुभव करने लगे। उनकी उत्तेजना बढ़ती ही गयी और अनियंत्रण की स्थिति में जा पहुँची। पागलों की तरह श्रोता अपनी-अपनी कुर्सियों को छोड़कर एक-दूसरे से संघर्ष पर उतारू हो गये। हाल की कुर्सियाँ उन्होंने फाड़ एवं तोड़ डाली और खिड़कियों में लगे शीशों को चकनाचूर कर दिया। प्रोग्राम सुन रही महिलाएँ भी अपना मनः संतुलन खो बैठीं और उत्तेजना की स्थिति में स्वयं अपने वस्त्र फाड़ने-चीखने लगी। विवस्त्र अवस्था में उनके चीखने-चिल्लाने से हाल गूँज उठा। देखते ही देखते म्यूजिक हाल में अच्छा खासा हंगामा खड़ा हो गया। आक्रामक आचरण के कारण श्रोताओं में से अधिकांश घायल हुए। संगीत आयोजकों को बिगड़ती हालत पर काबू पाने के लिए मदद के लिए पुलिस बुलानी पड़ी। तब कहीं जाकर स्थिति पर नियंत्रण पाया जा सका। घायल व्यक्तियों को अस्पताल की शरण लेनी पड़ी।

घटना के कारणों की खोजबीन आरम्भ हुई। संगीत आयोजकों के ऊपर घायलों के सगे-सम्बन्धियों ने हर्जाने के लिए मुकदमा दायर किया। जाँच पड़ताल के दौरान संगीत की धुन की परीक्षा की गयी तो मालूम हुआ कि सारी घटनाओं के लिए जिम्मेदार वह उत्तेजक धुन थी जो पहली बार प्रयोग के तौर पर बजायी गयी थी। रॉक एण्ड पॉप के सम्मिलित स्वरूप से बनी उस संगीत धुन को बजाने पर शासन द्वारा पाबन्दी लगा दी गयी।

ध्वनि विज्ञान के विशेषज्ञों ने अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए कहा कि मनुष्य के स्नायु संस्थान को असाधारण रूप से उत्तेजित करने में वह धुन समर्थ है, जिस पिच और फ्रिक्वेन्सी पर वह धुन तैयार की गयी है, वे मन एवं मस्तिष्क पर भारी दुष्प्रभाव डालते हैं। आक्रामक एवं कामुक मनोवृत्ति को भड़काने में वह विशेष रूप से सहायक है। इस घटना से वैज्ञानिकों को संगीत विद्या पर गहन शोध की प्रेरणा मिली। तालबद्ध, लयबद्ध अनेकानेक ध्वनियों एवं धुनों का प्रयोग परीक्षण किया गया तो मालूम हुआ कि उनमें दोनों तरह की सामर्थ्य विद्यमान है। संगीत शारीरिक स्वास्थ्य और मनः विकास का श्रेष्ठ माध्यम बन सकता है और मानसिक असन्तुलन का कारण भी। ताल, लय के उतार-चढ़ाव फ्रिक्वेन्सी तथा धुन में परिवर्तन करके संगीत द्वारा रचनात्मक और ध्वंशात्मक दोनों ही तरह के प्रयोजन पूरे किये जा सकते हैं।

संगीत आदि काल से ही मनुष्य के साथ जुड़ा हुआ है तथा मानसिक तुष्टि का लक्ष्य अपने सुमधुर तरंगों द्वारा पूरा करता रहा है। दैनन्दिन अन्य आवश्यकताओं की भाँति आन्तरिक परितृप्ति में संगीत का असाधारण महत्व है। बाँसुरी, बीन, शहनाई, सितार की मादक धुन अनायास ही हर किसी को आकर्षित करती तथा उनके मन मस्तिष्क और हृदय को पुलकित, प्रमुदित करती है। पर्व, त्योंहारों, संस्कारों से लेकर जीवन के हर खुशी एवं शोक के अवसर पर गायन एवं वादन की परम्परा है। यह स्वस्थ परम्परा मनुष्य की मानसिक शक्तियों के विकास में सहायक है।

कहा जा चुका है कि लोकरंजन का यह सशक्त माध्यम रचनात्मक और ध्वंशात्मक दोनों ही प्रयोजन पूरा कर सकता है। साहित्य, चित्रकला की भाँति संगीत जैसे तन्त्र का पिछले कुछ दशकों से भारी दुरुपयोग हो रहा है। पश्चिमी देशों का बढ़ता हुआ प्रभाव संगीत के उस स्वस्थ और सृजनात्मक स्वरूप को नष्ट कर रहा है जो मानवी विकास में विशेष रूप से सहायक सिद्ध हो सकता है। पश्चिमी देशों में कुत्सित भावना को भड़काने वाला संगीत अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है, जिसने युवा पीढ़ी को उच्छृंखल स्वेच्छाचारी बनाने में विशेष भूमिका निभायी है। दो दशक पूर्व अमेरिका में सर्वप्रथम विल हेले एन्ड कॉमेट्स नामक नृत्य संगीत की एक मन्डली तैयार हुई जिसने ऐसी संगीत की परम्परा आरम्भ की। दिग्भ्रान्त युवकों, युवतियों ने उसे विशेष रूप से पसन्द किया। आविष्कारक हेले की ख्याति बढ़ी। वह रेडियो स्टेशन पर इलैक्ट्रिक गिटार तथा सैक्सोफोन नामक वाद्ययन्त्र पर संगीत की शिक्षा देने लगा। नाम के अनुरूप सैक्सोफोन वाद्ययन्त्र की यह विशेषता है कि वह सैक्स भावना असाधारण रूप से बढ़ा देता है। क्रमशः इस उत्तेजक संगीत की लोकप्रियता बढ़ती ही गयी और कुछ ही समय में अमेरिका की गली-गली में उसकी धूम मच गयी। पॉप-पॉप की तेज आवाज के कारण यह संगीत पॉप संगीत के नाम से विख्यात हुआ जबकि इसका वास्तविक नाम है 'वैवोपालु पॉप'।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस संगीत की बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर ओहियो राज्य के एक संगीतज्ञ ने एक नयी तर्ज बनायी और उसका नाम दिया 'मून डॉग रॉक एण्ड रॉल' जिसमें युवा वर्ग अपनी सुध-बुध भुलाकर स्वछन्द आचरण एवं वीभत्स चेष्टाएँ करते हुए नृत्य करते थे। युवकों में बढ़ती उद्दण्डता, उच्छृंखलता तथा स्वेच्छाचार की प्रवृत्ति ने अमेरिका के विचारशील वर्ग का ध्यान आकर्षित किया। पर उनके अनेकों प्रकार के प्रयासों के बावजूद भी उन पर रोकथाम नहीं हो सकी। संगीत के माध्यम से स्वछन्दतावाद का जो स्वरूप एक बार प्रकट हुआ वह फूलता और फलता गया। उससे निकले विष बीज देश की सीमाओं को लांघकर अन्य प्रगतिशील देशों में जा पहुँचे और जन मानस की प्रसुप्तहीन वृत्ति का खाद पाकर अंकुरित विकसित होने लगे। पश्चिमी देशों में शरीर ओर मन में उत्तेजना भरने वाले संगीत की इन दिनों धूम है। फिल्में तो इसके बिना सफलता नहीं प्राप्त करतीं।

पिछले कुछ वर्षों से भारतीय सिनेमा निर्माताओं ने भी फिल्मों की सफलता एवं धनोपार्जन के लिए उस संगीत नृत्य एवं वादन का अन्धानुकरण आरम्भ कर दिया है जो जन मानस की हीन वृत्तियों को जमाने और उत्तेजित करने की भूमिका निभाते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार विगत दो वर्षों में भारत में जितने सिनेमा बने उनमें से पचहत्तर प्रतिशत में किसी न किसी रूप में ऐसे संगीत एवं नृत्य का समावेश था। अब वह संगीत सिनेमा जगत तक ही सीमित नहीं रहा है। भारत के बड़े शहरों में कितने ही नाइट क्लब एशोसिएशन, बार खुल चुके हैं जिनकी रोजी रोटी मात्र ऐसे उत्तेजक अश्लील गायन, वादन एवं नृत्यों के द्वारा चल रही है।

अपने देश में संगीत नाद ब्रह्म की साधना का प्रयोजन पूरा करता रहा है। उसकी सुमधुर, सौम्य स्वर लहरी शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास में आज भी सहायक हो सकती है। पर तब, जबकि संगीत का पावन स्वस्थ स्वरूप प्रचलन में रहे, मनोरंजन के नाम पर अश्लीलता को बढ़ाने वाले आधुनिक उत्तेजक, वीभत्स गायन, वादन और नृत्य की रोकथाम हो। इस दिशा में उन स्वर साधकों और कला के पुजारियों का भी सहयोग आवश्यक है, जो मात्र पैसे के लिए संगीत की शक्ति को अश्लीलता अभिवृद्धि में नियोजित कर रहे हैं उनका भी कर्तव्य है कि अपनी कुचेष्टा को रोकें। साथ ही जनमानस का भी दायित्व है कि वह कुत्सित मनोरंजन को प्रश्रय देने वाले तत्वों का सामूहिक रूप से विरोध करें।

संगीत को जीवन में स्थान दीजिये

कार्य के साथ संगीत को जोड़ दिया जाय तो थकान तथा नीरसता को बहुत अंशों में समाप्त किया जा सकता है। शरीर और मस्तिष्क तो श्रमरत रहते हैं पर मन संगीत की सुरम्य घाटियों में भ्रमण करता रहने से थकान का अनुभव नहीं करता।

महिलाएँ इस तथ्य को जानती हैं। आज तो मनुष्य कलों का दास हो गया है। किन्तु जब मशीन की चक्कियाँ नहीं चली थीं, महिलाएँ हाथ चक्की पीसती थीं तथा पिसाई करते समय कोई मधुर गीत गाती रहती थीं। उन दिनों संयुक्त परिवार प्रथा थी। किसी महिला के लिये चार पाँच सेर आटा पीस लेना साधारण बात थी। इसकी पिसाई में उन्हें काफी परिश्रम करना पड़ता था किन्तु वह परिश्रम संगीत के सुरों में रम जाता था।

रेल पर काम करने वाले हम्मालों तथा कठोर श्रम करने वाले श्रमिकों को भी जोर लगाओ-हेईशा-के स्वर पर बिना थके काम करते हुए देखा जा सकता है। अब तो वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा भी संगीत की शक्ति को सिद्ध किया जा चुका है। संगीत सुनकर पौधे भी शीघ्र बढ़ते हैं तथा अधिक फल-फूल देते हैं। गायों को संगीत सुनाया गया तो उन्होंने अधिक दूध दिया।

संगीत को जीवन के दैनिक कार्यों में स्थान दिया जा सके तो जो काम रोज-रोज करने से नीरस से लगते हैं उनकी नीरसता समाप्त की जा सकती है। धोबी रोज कपड़े धोता है फिर भी उसे कभी ऊबते हुए नहीं देखा। वह कपड़े धोने के साथ ..... छई .....छई की धुन पर कपड़े पत्थर और पानी के संगीत में अपने श्रम को धो देता है।

शरीर तो तब थकता है पर जब मन की बागडोर ढीली होती है वह पहले ही थक जाता है। यही मन जब सधा लिया जाता है तो शरीर की शक्ति नहीं होते हुए भी उससे काम करा लेता है। संगीत मन को थकने तथा ऊबने से बचाता है। मन को यह संगीत हारने नहीं देता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

महिलाओं को घर गृहस्थी के एक ही जैसे जीवन क्रम को दोहराना पड़ता है। मन कोई नया काम चाहता है। उसे विभिन्नता नहीं मिलती तो वह ऊबने लगता है। क्यों न संगीत का सहारा लेकर इस ऊब से बचा जाय। काम करते हुए थोड़ा गुनगुनाते रहें तो यही काम, थकाने वाला नहीं रह जाता। जो महिलाएँ इसे जानती हैं वे स्वयं भी प्रसन्न तथा हँसती मुस्कराती रहती हैं तथा परिवार में एक स्वर्गीय वातावरण प्रस्तुत करती हैं। उन महिलाओं का अनुसरण हम भी करें तो जो काम हमें बेगार लगता है वही रोचक हो सकता है।

संस्कृत में श्लोकों (मन्त्रों) में जो संगीतात्मकता है वह असंदिग्ध है। इन मन्त्रों के साथ भावनाओं को जोड़कर काम करते समय मन को इनके जप में लगा दिया जाय तो काम की नीरसता से ही नहीं बचा जा सकता वरन् सद्गुणों तथा चरित्र का विकास करने की प्रेरणा तथा संकल्प भी दोहराये जा सकते हैं।

काम तो करना ही है। चाहे उसे रोते-झींकते मशीन की तरह करो अथवा उत्साह लगन तथा धैर्य के साथ करो। कोई उसे रोते झींकते करते हैं तो कई उसे उत्साह और उल्लास के साथ करते हैं पर यदि साथ में संगीतात्मक जप को जोड़ दिया जाय तो मनुष्य के काम के साथ मानवीय महत्ता के सोपानों पर अनायास ही चढ़ता जाता है।

जो व्यक्ति स्वर्ग के सुखों को यहीं धरती पर भोगना चाहते हैं तो उनके लिये यह आदत एक वरदान सिद्ध हो सकती है। संगीत के साथ-साथ जीवनोत्थान की जो प्रेरणाएँ आदि संगीत दृष्टा कवियों ने इन ऋचाओं में भरी है, गुनगुनाने के लिये इनसे उत्तम और क्या हो सकता है।

आज के सर्वश्रेष्ठ सरोद वादक उस्ताद अली अकबर खाँ कभी जोधपुर रियासत के दरबारी संगीतज्ञ थे। उन्हीं दिनों की बात है, वे अपनी बेगम व एक शिष्य के साथ रात्री का भोजन करने को प्रस्तुत ही होने जा रहे थे कि उनकी नजर आज ही नया चमड़ा मढ़ कर आये सरोद पर पड़ी और वे उसे थोड़ी देर बजाकर देख लेने का लोभ संवरण न कर सके।

वे कोई पाँच-दस मिनट उसे बजाकर देखने के उद्देश्य से कि मढ़ाई ठीक हुई है या नहीं, लेकर बैठ गये फिर तो संगीत के सुरों में वे ऐसे खोये की तन्मय हो बजाते ही रह गये। बेगम और शिष्य भी उस सुर सरिता के अविरल प्रवाह क्रम में कुछ ऐसे खोये कि समय की गति ही मानों अवरुद्ध हो गयी। शरीर की कारा और आसपास के परिवेश को भूल कर वे उस सूक्ष्म कल्पना लोक में जा पहुँचे जहाँ अमृत वर्षा हो रही थी, पीड़ा का पर्वत पिघल कर करुणा-सुरसरि बन बह रहा था।

उनकी यह पाँच सात मिनट बजाकर देख लेने का क्रम कुछ ऐसा लम्बा खिंचा कि रात की नौ बजे से आरंभ होकर मध्यरात्रि के एक बजे तक पहुँच गया। जब उन्होंने सरोद हाथ से रखा और घड़ी की ओर देखा जो एक बजा रही है तो उन्हें सहज ही विश्वास नहीं हुआ। कहीं घड़ी तो बन्द नहीं हो गयी इस भाव से वे देर तक उसे घूरते रहे किन्तु उसके हिलते पेन्डुलम ने घड़ी चलने की गवाही दी तो वे स्वयं चकित रह गये। उनकी यह तल्लीनता ही उन्हें अपने समय का सर्वश्रेष्ठ सरोदवादक बनाकर रही।

बड़े-बड़े कलाकार उनके बारे में एक स्वर से यही कहते हैं—'सरोद बजाने में अली अकबर खाँ जैसा वादक कलाकार आज तक तो पैदा नहीं हुआ आगे की ईश्वर ही जानता है।" उनके शिष्य आज संगीत की दुनिया में अपना कमाल दिखा रहे हैं। सरोद वादन में भी कई कलाकार विख्यात हो रहे हैं किन्तु उनकी सानी का कोई नहीं उपजा आज तक तो।

कलाकार की इस तन्मयता पर हम दाद, देकर ही रह जाँय या उनकी कला पर बिस्मित रह जाय, यहीं तक बात समाप्त न करके यदि उस तन्मयता का थोड़ा अंश हम अपने नित्य प्रति के जीवन में अपने काम में भी उतारें तो आज प्रायः जो हम कहते रहते हैं क्या करें काम करते करते हम तो थक गये वैसा कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़े।

थकान कब आती है जब काम का और हमारा अस्तित्व पृथक्-पृथक् रहता है। यदि उसे कलाकार की सी तन्मयता से करें—साधना समझकर करें तो वही काम हमारे लिए इतना रोचक और उल्लासदायक लगे कि पलक झपकते ही समय व्यतीत हो जाय। वह काम जो पहले बेगार लगता था अब वही हमारे लिये सहज हो जाएगा। इस तल्लीनता और तन्मयता से किया गया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काम भी उच्च स्तर का होगा और करने वालों के लिए प्रगति की सीढ़ियाँ बन जाएगा।

संगीतकार नित्य घण्टों 'रियाज' किया करते हैं। इस अभ्यास क्रम में जितनी तल्लीनता रहेगी उतनी ही उसे हर बार कुछ नयी जानकारी नयी कुशलता मिलती रहेगी और एक दिन वे चोटी के कलाकार बन जायेगा। यदि सत्य को हम भी स्वीकार कर अपने जीवन में उतारें तो काम कितना ही छोटा क्यों न हो हमें निरन्तर ऊँचा उठाता ही जायगा। उसमें कुछ नूतन कुछ अनूठा हस्तगत होता जाएगा और जीवन से सफलता, सार्थकता की दिशा में लाभकारी सिद्ध होगा। छोटे से छोटे काम को भी, चाहे वह बेगार ही क्यों हो, साधना समझकर किया जाय तो उसमें मनुष्य की दक्षता, कुशलता में वृद्धि ही होती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति हर काम को साधना समझकर करे तभी उसे कर्म की सच्ची उपासना का लाभ मिलता है। कलाकार की यह दृष्टि उपयोगी भी है और आवश्यक भी।

संगीत कला विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छ हीनः

"संगीत कला विहीन मनुष्य पुच्छहीन पशु की तरह है।" उपर्युक्त श्लोक में एक तरह से संगीत से प्रति श्रद्धा और प्रेम न रखने वाले व्यक्ति की निन्दा की गई है, पर ऐसा लगता है श्लोककार ने यह पंक्तियाँ लिखते हुए यह ध्यान नहीं दिया कि संगीत एक ऐसी वस्तु है, पशु-पक्षी भी जिसके प्रति अपार आदर और प्रेम रखते हैं।

फ्रान्सी की लेखक पेलीसन को एक बार किसी अपराध में पकड़कर जेल भेज दिया गया। अपने जेल-जीवन का एक रोमांचकारी संस्मरण प्रस्तुत करते हुए श्री पेलीसन ने लिखा है—एक दिन जब मैं अपने बाँसुरी बजाने में मग्न था तब मैंने देखा जाले के भीतर से एक मकड़ी निकली और बाँसुरी के स्वर-तालों के साथ ऐसे घूमने लगी मानो वह नृत्य करना चाहती हो। मैंने उस दिन से अनुभव किया कि संगीत कोई एक ऐसी शक्ति है जो प्रधानतया शरीर में रहने वाली चेतना से संसर्ग करती है, तभी तो सृष्टि का इतना तुच्छ जीव भी उसे सुनकर फड़क उठता है।

संगीत एक पराशक्ति है और उसे प्रयोग करने के विविध उपायों का नाम है "शास्त्रीय संगीत।" संगीत से मनुष्य की किसी भी भावना को उत्तेजित किया जा सकता है और समाज में व्यंवस्था स्थापित की जा सकती है।

मियामी विश्वविद्यालय अमेरिका के वैज्ञानिक डॉ. जे. डी. रिचार्डचन ने समुद्री मछलियों को पकड़ने के लिये एक विशेष संगीत-ध्वनि का आविष्कार किया है। उनका कहना है कि समुद्र के किनारे चारा लगी वंशियाँ डाल दी जायें और फिर वह स्वर बजाया जाये तो उसे सुनने के लिये सैकड़ों की संख्या में मछलियाँ दौड़ी चली आती हैं। उससे इस सिद्धान्त की पुष्टि अवश्य होती है कि संगीत विश्व की एक आध्यात्मिक सत्ता है। संसार का प्रत्येक जीवधारी उसे पसन्द करता है। मनुष्य को तो मानवीय सद्भावनाओं के उत्प्रेरण में उसका सदुपयोग करना ही चाहिए।

समुद्र में पाया जाने वाला शेरो जन्तु तो संगीत की स्वर लहरियों पर इतना आसक्त हो जाता है कि यदि उसे कहीं से मधुर स्वर सुनाई दे जाये तो वह अपने जीवन की चिन्ता किये बिना प्राकृतिक प्रकोप और अवरोधों को भी पार करता हुआ वहाँ पहुँचेगा अवश्य। पाश्चात्य देशों में विद्युत में बजने वाला क ऐसा यन्त्र बनाया गया हैं, जिसकी स्वर-तरंगें सुनकर मच्छर दौड़े चले आते हैं और उस यन्त्र से टकरा-टकरा कर ऐसे प्राण होम होते हैं जैसे दीपक की ज्योति पर पतंगे प्राण अर्पण कर देते हैं।

अभी कुछ दिन पूर्व न्यूयार्क मेट्रोपोलिटन (म्युनिस्पैलिटी की तरह नगर प्रशासक संस्था को मेट्रोपोलियन कहते हैं, यह बड़े-बड़े नगरों में जैसे दिल्ली आदि में होती है।) के संग्रहालय में अफगानिस्तान के डॉ. एम फरीदी से १८ हजार पौण्ड में एक पुस्तक खरीदी है। यह पुस्तक एक भारतीय सूफी संत ख्वाजा फरीदुद्दीन खट्टर द्वारा लिखी गई है उसका नाम है "सन्त कुबेर"। इस पुस्तक में लिखा है कि संसार के सैकड़ों जीव विधिवत गाते भी हैं। उनके द्वारा गाये जाने वाले गीत भी ३६२ पृष्ठों वाली इस पुस्तक में दिये हैं। इस पुस्तक की दो प्रतियाँ—एक काश्मीर में दूसरी वाराणसी में उपलब्ध बताई जाती है।

जापान में कई सम्पन्न व्यक्तियों के पास विभिन्न जीव-जन्तुओं का रिकार्ड किया हुआ संगीत उपलब्ध है, जब किसी सार्वजनिक उत्सव या किसी विदेशी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अभ्यागत का स्वागत होता है तो उसे सुनाया भी जाता है। मादा मेढ़क जब प्रसवकाल में होती है तो वह बड़े मधुर स्वर में गाती है। कहते हैं कि गर्भिणी मेंढ़क का विश्वास होता है कि गाने से उसका प्रसव बिना कष्ट के होगा साथ ही पैदा होने वाला नया मेंढ़क भी स्वस्थ और बलवान् होगा। इस किंवदन्ती में कितना अंस सच है, यह तो निश्चित नहीं कहा जा सकता किन्तु मनुष्य के बारे में यह निर्विवाद सत्य है कि गर्भावस्था में माता के हाव-भाव और विचारों का गर्भस्थ बालक पर प्रभाव पड़ता है। यदि गर्भवती स्त्री को नियमित रूप से संगीत सुनने को मिले तो उससे न केवल प्रसवकाल का कष्ट कम किया जा सकता है वरन् आने वाली संन्तति को भी शारीरिक मानसिक तथा आत्मिक दृष्टि से दृढ़ और बलवान् बनाया जा सकता है।

प्रसव के तत्काल बाद "सोहर" संगीत गाने की भारतीय लोक जीवन में अभी भी व्यवस्था है, वह इस बात की प्रतीक है कि यदि बच्चा बुरे संस्कार भी लेकर आया है तो यदि उसे संगीत के प्रभाव में रखा जो तो पूर्व जन्मों के असत् और दूषित संस्कारों का पूर्ण प्रच्छालन किया जा सकता है।

कहते हैं कि तानसेन जिन दिनों अपने गुरु सन्त हरिदास के पास संगीत विद्या का अभ्यास कर रहे थे, एक दिन वह जंगल गये। उन्होंने देखा एक वृक्ष पर अग्नि जलती है और फिर बुझ जाती है। अग्नि के जलने और बुझने की यह घटना तानसेन ने आश्रम में आकर गुरुदेव को सुनाई और उसका रहस्य पूछा। स्वामी हरिदास ने बताया—उस वृक्ष पर एक ऐसा पक्षी रहता है, जिसके कण्ठ से निकले हुये, स्वर-कम्पन दीपक राग के स्वर कम्पनों के समान हैं । जिस तरह कोयल एक विशेष लय में "कुहू-कुहू" गाती है, जिस तरह पीहरा एक आहत ध्वनि प्रसारित करता है, उसी प्रकार जब वह चिड़िया बोलती है तो वह स्वर लहरियाँ फूटती हैं, उसी से अग्नि जलती और बुझती है।

इस विशेष घटना से ही प्रेरित होकर तानसेन ने "दीपक राग" का मनोयोगपूर्वक अभ्यास कर उसमें सिद्धि प्राप्त की।

देखने सुनने में यह घटनायें अतिरंजित होती है, पर जो लोग शब्द और स्वर विज्ञान को जानते हैं, उन्हें पता है कि प्राकृतिक परमाणुओं में अग्नि आदि तत्व नैसर्गिक रूप में विद्यमान हैं, उन्हें शब्द-तरंगों के आघात द्वारा प्रज्ज्वलित भी किया जा सकता है। आज पाश्चात्य देशों में शब्द शक्ति के द्वारा जो आश्चर्यजनक कार्य हो रहे हैं वह सब स्वर-कम्पनों पर ही आधारित हैं और उनसे वहाँ कई प्रकार की औद्योगिक क्रान्तियाँ उठ खड़ी हुई हैं। हम उधर ध्यान न दें तो भी इन आख्यानों को पढ़कर यह तो पता लगा ही सकते हैं कि जीव मात्र में फैली हुई आत्म-चेतना आनन्द को प्राप्ति के एक सर्व मान्य लक्ष्य से बँधी हुई है। उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये योग-साधनायें कठिन हो सकती हैं, पर स्वरों की कोमलता और लयबद्धता में कुछ ऐसी शक्ति है कि वह सहज ही में आत्मा को ऊर्ध्वमुखी बना देती है। उससे शारीरिक, मानसिक लाभ भी हैं, पर आत्मोत्थान का लाभ सबसे बड़ा है। संगीत कला का उपयोग उसी में किया भी जाना चाहिये।

संगीत का प्राणियों और वनस्पतियों पर प्रभाव

संगीत के माध्यम से इलैक्ट्रो मैग्नेटिक लहरें उत्पन्न होती हैं जो स्नायु प्रवाह पर बांछित प्रभाव डालकर उनकी सक्रियता ही नहीं बढ़ातीं—विकृत चिन्तन को रोकती व मनोविकार मिटाती है।

स्वर शक्ति की सृजनात्मक सामर्थ्य पर अब वैज्ञानिक धीरे-धीरे ध्यान देने लगे हैं। जहाँ एक ओर शब्द शक्ति चालित बम एवं रॉवॉट तैयार हो रहे हैं, यहाँ प्रदूषण निवारण, मनोविकार शमन, शरीर रोग निवारण में तरंगों का प्रयोग हो रहा है। पशुओं की प्रजनन शक्ति बढ़ाने, पौधों के बढ़ने की गति तीव्र करने तथा अधिक फसल उगा सकने में भी वैज्ञानिकों को मदद मिली है।

पराध्वनि (अल्ट्रासोनिक) तरंगों के ऊपर वैज्ञानिकों द्वारा अब तेजी से प्रयोग किये जा रहे हैं। इसकी सामर्थ्य को उन्होंने लेसर किरणें से भी अधिक शक्तिशाली पाया है। कर्णातीत—श्रवणातीत—अनसुनी ध्वनियों की सामर्थ्य के परिमाण को अभी पूरा जाना भी नही जा सका है। "सुपर सोनिक रेडियो मीटर" बना सकने में वैज्ञानिक सफल अवश्य हो गए हैं, जिसमें अन्तरिक्ष में संव्याप्त अगणित ध्वनि-प्रवाहों को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुना-जाना जा सकता है। वैज्ञानिक का ऐसा कथन है कि ध्वनि ऊर्जा की बहुमूल्य सम्पदा अन्तरिक्ष में बिखरी पड़ी है जिसका यदि सही उपयोग किया जा सके तो मनुष्य समुदाय की सारी आवश्यकताएँ पूरी की जा सकती हैं।

गायत्री महामन्त्र के समवेत स्वरित जप से उत्पन्न पराध्वनि में सारे वातावरण को कंपा देने की सामर्थ्य विद्यमान है, ऐसा विभिन्न स्वर वैज्ञानिकों को मत है।

मनुष्यों तक ही संगीत प्रभाव सीमित नहीं है वरन् उसे पशु-पक्षी भी उसी चाव से पसन्द करते हैं और प्रभावित होते हैं। संगीत सुनकर प्रसन्नता व्यक्त करना और उसका आनन्द लेने के लिए ठहरे रहना यही सिद्ध करता है कि वह उन्हें रुचिकर एवं उपयोगी प्रतीत होता है। अन्य जीवों की जन्मजात प्रवृत्ति यही होती है कि उनकी स्वाभाविक पसन्दगी उनके लिये लाभदायक ही सिद्ध होती है। पशु-पक्षियों पर संगीत का अच्छा प्रभाव देखते हुए इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि वह मनुष्यों की तरह अन्य जीवों के लिये भी न केवल प्रिय वरन् उपयोगी भी है।

पशु मनोविज्ञानी डॉ. जार्जकेर विल्स ने छोटे जीव-जन्तुओं की शारीरिक और मानसिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का लम्बे समय तक अध्ययन किया है। घर में बजने वाले पियानो की आवाज सुनकर चूहों को अपने बिलों में शान्तिपूर्वक पड़े हुए उन्होंने कितनी ही बार देखा है। बेहिसाब उछल-कूद करने वाली चूहों की चाण्डाल चौकड़ी मधुर वाद्य यन्त्र सुनकर किस प्रकार मन्त्र मुग्ध होकर चुप हो जाती है यह देखते ही बनता है।

फ्रांसीसी प्राणि शास्त्री वास्तोव आन्द्रे ने थलचरों, जलचरों और नभचरों पर विभिन्न ध्वनि-प्रवाहों की स्वर लहरियों की होने वाली प्रतिक्रियाओं का गहरा अन्वेषण किया है तदनुसार वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि संगीत प्रायः प्रत्येक जीवधारी के मस्तिष्क एवं नाड़ी संस्थान पर आश्चर्यजनक प्रभाव डालता है। उनकी प्रकृति और मनःस्थिति के अनुरूप यदि संगीत बने तो उन्हें मानसिक प्रसन्नता और शारीरिक उत्साह प्राप्त होता है। किन्तु उनकी कर्मेन्द्रिय को कर्कश लगने वाली अरुचिकर ध्वनियाँ बजाई जायें तो उससे उन्हें अप्रसन्नता होती है और स्वास्थ्य सन्तुलन भी बिगड़ता है। किस प्राणी की किस स्थिति में किस प्रकार का संगीत क्या प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है इसका अध्ययन करने वाले जर्मन प्राणि शास्त्री यह आशा करते हैं कि भविष्य में विभिन्न जीवधारियों की मनःस्थिति में आशाजनक परिवर्तन समय-समय पर किया जा सकेगा। हिंस्र पशुओं को भी कुछ समय के लिये शान्त किया जा सकेगा और अवांछनीय जीवों को उनके लिए अरुचिकर सिद्ध होने वाली ध्वनियाँ करके उन्हें दूर भगाया जा सकता है। इसी प्रकार उन्हें कई प्रवृत्तियों में संलग्न एवं उदासीन बनाने का कार्य भी संगीत के माध्यम से किया जा सकता है।

संगीत का प्रभाव पशु-पक्षियों पर गहरा पड़ता है। वेणु नाद सुनकर सर्प अपनी कुटिलता भूलकर लहराने लगता है। कई प्रान्तों में बहेलिये बीन बजाते हैं, उससे मुग्ध हुए हिरण, मृग निर्भय होकर पास चले आते हैं। हालैण्ड में गायें दुहते समय मधुर संगीत सुनाया जाता है। यहाँ की सरकार ने ऐसा प्रबन्ध किया है कि जब गायें दुहने का समय हो तब मधुर संगीत ब्राडकास्ट किया जाये, ग्वाले लोग रेडियो सैट दुहने के स्थानों पर रख देते हैं। संगीत को गायें बड़ी मुग्ध होकर सुनती हैं कि वे १५ से लेकर २० प्रतिशत तक अधिक दूध दे देती हैं। ये प्रयोग भारत में भी किए गये हैं।

दुधारू पशुओं को दुहते समय यदि संगीत ध्वनि होती रहे तो वे अपेक्षाकृत दूध देते हैं। ऐसा देखा गया है।

सील मछली का संगीत प्रेम प्रसिद्ध है। कुछ समय पूर्व पुर्तगाल के मछहारें अपनी नावों पर वायलिन बजाने की व्यवस्था बनाकर निकलते थे। समुद्र में दूर-दूर तक यह ध्वनि फैलती तो सील मछलियाँ सहज ही नाव के इर्द-गर्द इकट्ठी हो जातीं और मछहारे उन्हें जाल में पकड़ लेते।

घरेलू कुत्ते संगीत को ध्यानपूर्वक सुनते और प्रसन्नता व्यक्त करते पाये जाते हैं। वन विशेषज्ञ जार्ज ह्वेस्हे ने अफ्रीका के काँगों देश में चिपाँजी तथा गुरिल्ला वन मानुष को संगीत के प्रति सहज ही आकर्षित होने वाली प्रकृति का पाया है। उन्होंने इन वानरों से सम्पर्क बढ़ाने में मधुर ध्वनि वाले टैप रिकार्डरों का प्रयोग किया और उनमें से कितनों को ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पालतू जैसी स्थिति का अभ्यस्त बनाया। नार्वे के कीट विज्ञानी डा. हडसन शहद की मक्खियों को अधिक मात्रा में शहद उत्पन्न करने के लिए संगीत को अच्छा उपाय सिद्ध किया है। अन्य कीड़ों पर भी वाद्य-यन्त्रों के भले-बुरे प्रभावों का उन्होंने विस्तृत अध्ययन किया है और बताया है कि कीड़े भी संगीत से बिना प्रभावित हुए नहीं रहते।

ह्यूज फ्रेयर ने जुलूलेण्ड फार्म हाउस की एक घटना का विवरण छपाया है, जिसके अनुसार एक महिला वायलिन वादन को उस जंगल की झोपड़ी में दो भयंकर सर्पों का सामना करना पड़ा था और वह मरते-मरते बची थी। बात यों है कि उसे आधी रात बीत जाने पर भी नींद न आई तो उठकर वायलिन बजाने लगी इतने में कोबरा सर्पों का एक अधेड़ जोड़ा उस स्वर लहरी पर मुग्ध होकर घर में घुस आया और फन फैलाकर नाचने लगा। वादन में व्यस्त महिला को पहले तो कुछ पता न चला पर जब उसे दो छायाएँ लगातार हिलती-जुलती दिखीं तो उसने पीछे मुँह मोड़ कर देखा और पाया कि दोनों सर्प मस्ती के साथ संगीत पर मुग्ध होकर लहरा रहे हैं।

महिला एक बार तो काँप उठी पीछे उसने विवेक से काम लिया और खड़े होकर वायलिन बजाती हुई उलटे पैरों दरवाजे की ओर चलने लगी। दोनों साँप भी साथ-साथ चल रहे थे। दूसरे कमरे में उसका पति सो रहा था। वहाँ उसने जोर से वायलिन बजाया—वह जगा। इशारे में महिला ने वस्तुस्थिति समझाई। पति ने बन्दूक भरी और किवाड़ों के पीछे निशाना साधकर बैठा। साँप जब सीध में आ गये तब उसने गोली चलाई एक तत्काल मर गया। दूसरा घायल हो गया तब कहीं उस काल रज्जु के रूप में आये हुए मृत्यु से महिला का पीछा छूटा।

भीलवाड़ा राजस्थान के एक गाँव सलेमपुर का समाचार है कि वहाँ का निवासी एक युवक ट्रांजिस्टर बजाता हुआ गाँव लौट रहा था तो संगीत की ध्वनि से मोहित एक सर्प पीछे-पीछे चलने लगा। बहुत दूर साथ चलने पर जब साँप का आभास युवक को हुआ तो वह डर गया और ट्रांजिस्टर पटकर कर भागा। सर्प ट्रांजिस्टर के निकट बैठा रहा जब तक कि संगीत बजता रहा। बन्द होने पर चला गया। पीछे सर्प की लकीर देखने से प्रतीत हुआ कि वह मील तक इस संगीत श्रवण के लिए पीछे-पीछे चला आया था।

यह घटनाएँ बताती हैं कि सर्प जैसे भयंकर और क्रोधी प्रकृति के प्राणी को संगीत कितना अधिक प्रभावित एवं भाव-विभोर बना देने में समर्थ है।

पूर्वी जर्मनी के गोटिंगन नगर के संगीत से इलाज करने वाले प्रो. डॉ. जोहोंस एन. शूमिलिन ने यह सिद्ध कर दिया है को बीमार पशु भी मानव की भाँति संगीत से लाभ नहीं उठा सकते वरन् उन्हें रोग-मुक्त भी किया जा सकता है। उन पर संगीत का अनुकूल प्रभाव पड़ता है। गोटिंगन से प्रकाशित एक पत्रिका में उन्होंने लिखा है—"दुःखती आँखों में संगीत प्रसन्नता की चमक पैदा कर देता है। मैंने ऐसे कुत्ते और बिल्ली देखे हैं, जो लोमवाद्यों के साथ थिरकने लगे हैं। यदि मनुष्येतर प्राणियों के जीवन-स्पन्दन को संगीत की सामर्थ से मोड़ा जा सकता है जब तो मनुष्य जैसे भावनाशील प्राणी पर उसके प्रभाव का तो कहना ही क्या ?"

यह घटनायें देखकर नारद संहिता का वह श्लोक याद आ जाता है, जो भगवान् विष्णु ने नारद जी से कहा था—

खगाः भृगां पत्तगांश्च कुरश्वाद्योपिजन्तवः।

सर्व एव प्रगीयन्ते गीतव्याप्तर्दिगन्तरे॥

हे नारद ! पक्षी, भौंरे, पतंगे, हिरण आदि जीव जन्तुओं को भी संगीत से प्रेम होता है। संगीत से संसार का कोई भी स्थान रिक्त नहीं।

भारतीय संगीत शास्त्र में अन्य राग-रागनियों के साथ दीपक-राग और मेघ-मल्लार-राग का नाम भी पढ़ने को मिलते हैं। जानकारों का कथन है कि दीपक-राग के गाने से दीपक स्वयंमेव जल जाते थे और मेघ-मल्लार के गाने से वर्षा होने लगती थी। वर्तमान समय में संगीतज्ञ उस विधि को भूल गये हैं और कोई उस क्रिया को प्रत्यक्ष करके नहीं दिखा सकता। इससे कुछ लोग इन्हें मनगढ़न्त कल्पना बताने लगे हैं। पर यदि संगीत की ध्वनि के प्रभाव से पौधों की वृद्धि हो सकती है और गायें अधिक दूध दे सकती है तो कोई कारण नहीं कि दीपक-राग और मेघ-मल्लार की बात को गपोड़ा माना जाय। शब्द-शक्ति के सिद्धान्त की दृष्टि से दोनों घटनायें एक-सी हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कुछ समय से संगीत के विविध राग-रागनियों द्वारा अनेक प्रकार के रोगों को मिटाने की चर्चा भी सुनाई देने लगी है। वास्तव में यह भी भारतीय संगीत-शास्त्र की एक प्राचीन उपलब्धि है। कुछ वर्ष पहले बीकानेर के राजकीय पुस्तकालय में एक हस्तलिखित ग्रन्थ मिला जिसमें बतलाया गया था कि किस राग-रागिनी के द्वारा कौन-सा रोग अच्छा किया जा सकता है? अब विदेशों के कितने ही अस्पतालों में इस विधि का प्रयोग किया जाना आरम्भ हो गया है। वहाँ जिस रोग के लिये जिस प्रकार की संगीत-ध्वनि उपयोगी मानी जाती है, उसी का रिकार्ड ग्रामोफोन पर लगाकर रोगी के पास रखा दिया जाता है। स्नायु और मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों का प्रयोग विशेष फलदायक सिद्ध हो रहा है।

स्नायुविक रोगों तथा मानसिक विक्षेपों में संगीत के विशेष ध्वनि-प्रवाहों के माध्यम से चिकित्सा का एक नया प्रचलन इन्हीं दिनों चला है और बहुत सफल हुआ है। शोक, क्रोध, उद्वेग, तनाव, रक्तचाप आदि को शान्त करने में भी उससे बड़ी सहायता मिलती देखी गई है। सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि अन्यान्य चिकित्सा पद्धतियों की तरह अगले दिनों संगीत उपचार भी उभर कर आवेगा और जन स्वास्थ्य के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका सम्पन्न करेगा।

इसके अतिरिक्त उसका प्रभाव पशु-पक्षियों को उल्लसित एवं वृक्ष वनस्पतियों को अधिक विकसित करने की दृष्टि से भी बहुत लाभदायक पाया गया है। दुधारू पशु अधिक दूध देने लगे। बैल घोड़े बिना थके अधिक परिश्रम करने में समर्थ रहे। मुर्गियों और मछलियों ने अधिक अण्डे बच्चे दिये। डरते रहने और असहयोग करने वाले अन्य प्राणी इस आधार पर नरम पड़े और मनुष्य के अधिक निकट आये। इस आधार पर हिंस्र पशुओं को भी किसी हद तक सौम्य बनाने में सफलता मिली है। सरकस वाले अब पशुओं को कलाकार बनाने के लिए साधने में मात्र हण्टर या लालच का ही उपयोग नहीं करते वरन् संगीत का सम्मोहन चलाकर भी चक्रवर्ती बनाने का एक नया उपाय अपनाने लगे हैं। यह प्रयोग वृक्ष वनस्पतियों पर भी बहुत प्रभावकारी सिद्ध हुआ है।

वेस्ट विल अमेरिका की कृषि प्रयोगशाला में ऐसे परीक्षण हुए हैं, जिनमें संगीत के प्रभाव से खेती की फसलों को अधिक फैलने तथा फूलने फलने वाली बनाने में सफलता प्राप्त की गई है। इस सम्बन्ध में विस्कोन्सन के आर्थर लाके के प्रयोगों की उस देश के वनस्पति विशेषज्ञों में बहुत चर्चा है, उसने फूलों को जल्दी तथा भारी बनाने में इसी आधार पर सफलता पाई। जिन खेतों को संगीत सुनाये गये वे अधिक समुन्नत हुए और जिन्हें इससे वंचित रखा गया वे खाद पानी की दृष्टि से समान लाभ प्राप्त करने पर भी पिछड़े रह गये।

संगीत मनुष्यों की तरह पेड़-पौधों को भी पसन्द है। सुनियोजित संगीत तरंगों से वे प्रसन्न पुलकित होते हैं और उत्साह भरे वातावरण में अधिक जल्दी अच्छा विकास करने लगते हैं। ब्रिटिश विज्ञानी जार्ज मिलसटान इस सन्दर्भ में अधिक रुचि लेते रहे हैं। उन्होंने सिद्ध किया है कि संगीत में पौधों को भी उल्लसित करने की क्षमता है। न्यूयार्क के डाक्टर डोरोवो रेटालक ने रुग्ण वृक्षों में चिकित्सा से संगीत की ध्वनि-लहरों का उपयोग किया है और कहा है कि जिनका भविष्य संदिग्ध हो रहा था जिन्हें रुग्ण समझा जा रहा था ऐसे पौधों को भी संगीत चिकित्सा के माध्यम से रोगमुक्त किया और नया जीवन दिया गया।

कनाडा, ब्रिटेन, इसराइल तथा पश्चिमी जर्मनी में भी यह प्रयोग हुए हैं। प्रयोगकर्ताओं ने कुछ खेतों और उद्यानों में खाद-पानी के अतिरिक्ति संगीत सुनाने का भी प्रबन्ध किया। इस पर जो अतिरिक्त खर्च पड़ा उसकी तुलना में अच्छी फसल का लाभ कहीं अधिक था। इसके विपरीत यह भी देखा गया कि कर्कश स्वर और कोलाहल कुहराम का बुरा असर भी पड़ता है। धड़धड़ाते रहने वाले कारखानों के इर्द-गिर्द के बगीचे सदा मुरझाये कुम्हलाये पाये गये।

वनस्पतियों के संगीत पर प्रभाव के सम्बन्ध में महाकौशल महाविद्यालय के रसायन शास्त्री प्रो. गोरे ने लम्बे समय तक परीक्षण करने के बाद अपना मत यही बनाया है कि जिस प्रकार मनुष्यों को संगीत प्रिय है उसी प्रकार उसके द्वारा वनस्पति को भी उल्लसित ही नहीं विकसित भी किया जा सकता है।

वस्तुतः ध्वनि (साउन्ड) एक निश्चित भौतिक प्रक्रिया है और जिस प्रकार प्रकृति और प्राणि जगत् में प्रकाश और गर्मी का प्रभाव होता है, उससे उनके शरीर

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बढ़ते, पुष्ट और स्वस्थ होते हैं। उसी प्रकार ध्वनि में भी तापीय और प्रकाशीय ऊर्जा होती है और वह प्राणियों के विकास में इतना महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जितना अन्न और जल। पीड़ित व्यक्ति के लिये तो संगीत उस रामबाण औषधि की तरह है, जिसका श्रवण पान करते ही तात्कालिक शांति मिलती है।

लोग कहेंगे यह भावुक अभिव्यक्ति मात्र है, किन्तु वैज्ञानिकों और शोधकर्त्ताओं ने संगीत की उन विलक्षण बातों का पता लगाया है, जो मनुष्य शरीर में शाश्वत चेतना को और भी स्पष्ट प्रमाणित करती है। सच बात तो यह है कि ईश्वर, आत्मा, जीवन-व्यवस्था, समाज व्यवस्था पर अनेक लोग अनेक जातियों के अनेक मत हो सकते हैं, किन्तु संगीत की उपयोगिता और सम्मोहिनी शक्ति पर किसी भी देश के किसी भी व्यक्ति को विरोध नहीं। शायद ही कोई ऐसा अपवाद हो, जिसे संगीत, वाद्य और नृत्य अच्छे न लगते हों। मानव का संगीत के प्रति स्वाभाविक प्रेम ही इस बात का प्रमाण है कि वह कोई नैसर्गिक तत्व और प्रक्रिया है।

उपनिषद कहते हैं—

ब्रह्म प्रणव संधानं नादो ज्योतिर्भयः शिवः स्वयमाविर्भ वेदात्मा मेधापायेऽशुमानिव सिद्धासने स्थितो योगी मुद्रां संधाम वैष्णावीम् शृणुयादिक्षणे कर्णे नादभन्तर्गतं सदा अभ्यस्यमानो नादोऽयं वाह्यमावृणुते ध्वनिम् पक्षाद्विपक्षखिलं जित्वा तुर्यपदं ब्रजेत। —नाद्विन्दुपनिषत् ३० ३१ । ३२,

वत्स! आत्मा और ब्रह्म की एकता का जब चिन्तन करते हैं, तब कल्याणकारी ज्योतिस्वरूप परमात्मा का नाद रूप में साक्षात्कार होता है। (यह संगीत-ध्वनि बहुत मधुर होती है) योगी को सिद्धांसन से बैठकर वैष्णवी मुद्रा धारण कर अनाहत ध्वनि को सुनना चाहिये, इस अभ्यास से बाहरी कोलाहल शून्य होकर अन्तरंग तुर्य पद प्राप्त होता है।

उपरोक्त कथन में संगीत और ब्रह्म का सायुज्य प्रतिपादित किया गया हैं, इसलिये उसके अभ्यास से निःसन्देह मानव आत्मा में उन शक्तियों और गुणों का विकास संभव है, जो परमात्मा में है। "जीवन भर जीवित बने रहिये" (स्टे अलाइव आल योर लाइफ) के लेखक नार्मन बिन्सेन्ट पील नामक विद्वान् ने इस पुस्तक में मृत्यु के उपरान्त जीवन की शास्त्रीय पुष्टि के अनेक महत्वपूर्ण उद्धरण दिये हैं—उन्होंने लिखा है कि "मुझे एक नर्स ने, जिसने अनेकों व्यक्तियों को मरते देखा था, बताया कि मृत्यु के क्षणों में जीव को कुछ अलौकिक दर्शन और श्रवण होता है। कुछ मरने वालों ने बताया कि उन्हें आश्चर्यजनक ज्योति और संगीत सुनाई दे रहा है।

यह दो उद्धरण संगीत को जीवन का शाश्वत उपादान ही प्रमाणित करते हैं पर प्रश्न यह हो सकता है, साधारण गायक और श्रोता, नृत्य या अभिनय द्वारा अपनी चेतना को लय में बाँधने वाला उस असीम सुख को प्राप्त क्यों नहीं करता दरअसल यह विषय मन की तन्मयता से सम्बन्धित है पर उतनी तन्मयता न हो तो भी संगीत का मनुष्य के मस्तिष्क, हृदय और शरीर पर विलक्षण प्रभाव अवश्य होता है और उससे मूल-चेतना के प्रति आकर्षण और अनुराग ही बढ़ता है। नास्तिक स्वभाव से जितने रूखे और कटु होते हैं, यह एक विलक्षण सत्य है कि उन्हें संगीत से उतना ही कम प्रेम होता है। कला के प्रति अनुराग ही अध्यात्म की प्रथम सीढ़ी है, ऐसे व्यक्ति में भावनायें होना स्वाभाविक ही है।

देखा गया है कि शरीर में प्रातःकाल और सायंकाल ही अधिक शिथिलता रहती है उसका कारण प्रोटोप्लाज्मा की शक्ति का ह्रास है। यों प्रातःकाल शरीर थकावटरहित होता है पर पिछले दिन की थकावट का प्रभाव आलस्य के रूप में उभरा हुआ रहता है। प्रोटोप्लाज्मा जिससे जीवित शरीर की रचना होती है, इन दोनों समयों में अस्तव्यस्त हो जाता हैं, उस समय यदि भारी काम करे तो शिथिलता के कारण शरीर पर भारी दबाब पड़ता है और मानसिक खीझ और उद्विग्नता बढ़ती है। थकावट में ऐसा हर किसी को होता है। यदि कोई गर्म-गर्म पदार्थ खाये तो कुछ क्षण के लिये प्रोटोप्लाज्मा के अणु तरंगायित हैं तो होते हैं पर वह तरंग उस तूफान की तरह तेज होती है, जो थोड़ी देर के लिये सारे पेड़-पौधों को झकझोरकर रख देती है। उसके बाद चारों ओर सुनसान भयानकता-सी छा जाती है, उत्तेजक पदार्थों के सेवन से जिनमें बुद्धि विभ्रम और रात में दुःस्वप्न शारीरिक प्रोटोप्लाज्मा प्रकृति में इसी तरह के तूफान का प्रभाव होता है, इसलिये इस समय नशापान स्वास्थ्य को बुरी तरह चौपट करने वाला होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संगीत की लहरियाँ शिथिल हुए प्रोटोप्लाज्मा की उस तरह की हल्की मालिश करती हैं, जिस तरह किसी बहुत प्रियजन के समीप आने पर हृदय में मस्ती और सुहावनापन छलकता है, इसलिये प्रातःकाल का संगीत जहाँ शरीर को स्फूर्ति और बल प्रदान करता है, हृदय, स्नायुओं, मन और भावनाओं को भी स्निग्धता से आप्लावित कर देता है। इसलिये प्रातःकाल और सायंकाल दो समय तो प्रत्येक व्यक्ति को गाना, प्रार्थना पुकारना अवश्य चाहिये। सामूहिक कीर्तनों और भजन बन पड़े तो और अच्छा अन्यथा किसी भी माध्यम से सरस और भाव प्रधान गीत तो इस अवश्य ही सुनना चाहिये।

गाना-नाचना, गीत-संगीत निश्चित रूप से प्रसन्नता की वृद्धि करते हैं यह शरीर की स्थूल-प्रक्रिया है। संगीत को हृदय और भावनाओं में उतार लेने से तो मनुष्य का आत्मिक काया-कल्प ही हो सकता है। संगीत एक प्रकार की स्वर साधना और प्राणायाम है जिससे शरीर के भीतरी अवयवों का व्यायाम भी होता है और ऑक्सीजन की वृद्धि भी, फलस्वरूप पाचन-शक्ति, गहरी नींद, चौड़ी छाती और हड्डियों की मजबूती का स्थूल लाभ तो मिलता ही है। दया, प्रेम, करुणा, उदारता, ममता, आत्मीयता सेवा और सौजन्यता के भावों का तेजी से विकास होता है, यह सद्गुण अपनी प्रसन्नता और आनन्द का कारण आप है, वैसे ऐसे व्यक्ति के लिये सांसारिक प्रेम और सहयोग का भी अभाव नहीं रहता।

संगीत का अब सम्मोहिनी विद्या के रूप में विदेशों में विकास किया जा रहा है। अनेक डाक्टर सर्जरी जैसी डाक्टरी आवश्यकताओं में संगीत की ध्वनि-तरंगों का उपयोग करते हैं, अमेरिका में बड़े स्तर पर संगीत की सृजनात्मक शक्ति की खोज की जा रही है। वहाँ के वैज्ञानिक ध्वनि-तरंगों के माध्यम से न केवल विश्व-संसार प्रणाली को सरल और सर्वसुलभ बना रहे हैं वरन् उसके माध्यम से अनेक रहस्यों का पता लगा रहे हैं, अन्तरिक्ष यात्रा से लौटे सभी यात्रियों ने बताया कि ऊपर पृथ्वी के घूमने की आवाज बहुत मधुर सुनाई देती है। कदाचित कर्ण-शक्ति या आत्मिक स्थिति का ऐसा विकास किया जा सके, जबकि प्रत्येक ग्रह की गति-ध्वनि उसमें निवास करने वाले प्राणियों का कोलाहल उस प्रकार सुना जा सके, जिस तरह किसी मेले के बाहर खड़े होकर वहाँ की ध्वनि सुनी जाती है तो वह स्थिति जीव के लिये कितनी सुखद और तन्मयता की होगी, उस सम्बन्ध में मनुष्यता की साधारण वृद्धि कल्पना भी नहीं कर सकती, उस शक्ति का परिचय पाना तो और भी कठिन है।

संगीत-स्वरों की मन्त्र शक्ति सबके लिये सुलभ है, न समय माध्य है पर उसके सहज रूप का हृदयंगम और उसका लाभ तो हर कोई पा सकता है। अच्छे गीतों का चुनाव करना, उन्हें कण्ठस्थ करना और कोई न हो तो एकान्त में काम करते हुए या बैठकर अकेले ही गाना, लोगों को सुनाना, कीर्तन करना यह ऐसी सुलभ संगीत साधनायें हैं, जिनसे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक प्रगति की जा सकती है। नृत्य और अभिनय का संयोग कर उसे और भी सरस बनाया जा सकता है। नाचना, गाना और बजाना मनुष्य समाज की सुखद कलायें हैं, यदि यह न हो तो मनुष्य जीवन जैसा नीरस और कुछ न रह जाये।

रेडियो तरंगों की तरह ही संगीत की भी शक्तिशाली तरंगें होती हैं। वे अपने प्रभाव क्षेत्र को प्रभावित करती हैं। उनसे वातावरण अनुप्रमाणित होता है। पदार्थों में हलचल मचती है और प्राणियों की मनोदशा पर उसका अनौखा प्रभाव पड़ता है। प्राणियों में मनुष्य की बौद्धिक एवं सम्वेदनात्मक क्षमता अन्य प्राणियों से विशिष्ट है। इसलिए संगीत का उस पर असाधारण प्रभाव पड़ता है। यों भाव सम्वेदना प्राणि मात्र पर पड़ती है। वे अपने सामान्य क्रिया कलाप रोक कर वादन ध्वनि के साथ लहराने लगते हैं। उनमें शब्द ज्ञान तो होता नहीं इसलिए गायनों का अर्थ समझने में असमर्थ रहने पर भी ये गीतों के साथ जुड़े हुए भाव संचार को ग्रहण करते और उससे अनुप्राणित होते हैं।

कभी संगीत एक मनोरंजन था। इसी निमित्त उसका सरंजाम जुटाया जाता था। पर समय बदलने के साथ उसका महत्व समझा गया और विज्ञान की एक प्रभावशाली शाखा के रूप में उसे स्थान दिया जाने लगा। उसका प्रभाव भाव संचार में तो प्रत्यक्ष ही देखा जाता है, पर परोक्ष रूप से उसकी प्रतिक्रिया स्नायु समूह में हलचल उत्पन्न करने के रूप मे भी देखी गई है। उसका प्रभाव मनुष्य पर क्या पड़ता है? इसका अन्वेषण करने पर पता चला है कि ज्ञान तन्तु, तथा नाड़ी-संस्थान के सभी छोटे-बड़े घटक उनसे झंकृत होते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं और शिथिलता को सक्रियता में परिणित करते है। इससे सर्वतोमुखी प्रतिभा जगती है। युद्ध सैनिकों से लेकर कामुकों तक उसकी उत्तेजना प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होती है।

यह प्रयोग मनुष्य कें शारीरिक और मानसिक रोग निवारण में अपना जादुई प्रभाव दिखाता दृष्टगोचर हो रहा है। मनोविज्ञान शास्त्र और स्वर शास्त्र के विशेषज्ञों द्वारा यह निर्धारित किया जाता है कि किस रोग में किस संगीत-प्रवाह से क्या प्रभाव किस प्रकार से पड़ता है और उसका प्रयोग कब किस निमित्त किस प्रकार करना चाहिए? अस्पतालों में पहले मात्र मानसिक रोगियों को ही संगीत टैप सुनाकर बिजली का झटका देने या नींद की गोलियाँ देने जैसे प्रयोग होते थे। उनसे मिलने वाले लाभों को देखते हुए शारीरिक रोगों के निमित्त भी कितने ही प्रकार के टैप बने और उन्हें सुनने पर रोगी इतने अधिक लाभान्वित होने लगे जितने दवादारू से भी नहीं होते थे ।

अब संसार के अभूतपूर्व विद्यालयों में यह प्रयोग चल रहे हैं कि संगीत को चिकित्सा विज्ञान का महत्वपूर्ण अंग किस प्रकार बनाया जाय? वह दिन दूर नहीं, जिसमें संगीत को रोग निवारण के लिए ही नहीं वरन् स्वास्थ्य सम्वर्धक, बुद्धि विकास एवं प्रतिभा उभार के लिए भी प्रयुक्त किया जाने लगेगा। अब तक उसे खुशी के अवसरों पर प्रयुक्त किया जाता था। अब उसे शोक, क्रोध, चिन्ता, भय आदि के समाधान के लिए भी प्रयुक्त किया जाने लगेगा। भाव-सम्वेदना और मस्तिष्कीय सन्तुलन के लिए संगीत उतना लाभ प्रस्तुत करने लगेगा जितना कि अन्य उपचार विधान अभी तक प्रस्तुत नहीं कर सके है।

पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं पर भी यह प्रयोग आजमाया गया है और उसका समुचित प्रतिफल भी सामने आया है। वैज्ञानिकों ने चिड़ियाघरों मे बन्द पक्षियों पर यह प्रयोग करने में सुविधा समझी। इसलिए उनके कटघरों से बाहर विविध प्रकार के संगीत टैप बजाये जाते हैं। देखा गया कि वे इसे सुनकर मन्त्र मुग्ध होते हैं। अपने-अपने सामान्य काम छोड़कर वे इकट्ठे हो गये। जहाँ से वह ध्वनि निस्तृत हो रही थी। पर जैसे ही वादन बन्द हुआ वैसे ही वह उदास हो गये और मुँह लटकाकर इस आशा में बैठे रहे कि कदाचित उसे सुनने का अवसर फिर मिले। बन्दर जैसे चंचल और ऊधमी जीव आपस में चेंचें करना तक भूल कर उस अवसर पर भोले कबूतरों की तरह बैठे रहे। यह मन्द और मादक संगीत का प्रभाव था, पर जब उत्तेजक आक्रोश भरे और डरावने बाजे बजाये गये तो वे भी उत्तेजित हो उठते। चंचलता बढ़ी और आक्रोश में एक दूसरे पर हमला करने लगे। कुछ ने दीवारों से टक्करें मारना और उपयोगी वस्तुओं को तोड़ना-फोड़ना शुरू कर दिया। किन्तु वादन बदल देने पर उन्हें शान्त होने में भी देर न लगी। बच्चे जो बहुत देर से इस प्रभाव से भर गये थे, थक कर अपने-अपने कटघरों मे घुस गये और झपकियाँ लेने लगे ।

चिली के चिड़ियाघरों में यह प्रयोग पक्षियों पर किया गया। सामान्य संगीत से तो वे भी उड़ना और चुगना छोड़कर उन पेड़ों पर बड़ी संख्या में आ जमे जहाँ लहराने वाला संगीत स्पष्ट सुनाई दे रहा था। उड़ाने, भगाने पर भी वे गये नहीं, एक डाली से दूसरी पर फुदकते भर रहे।

ऐसे विचित्र संगीत भी ढूँढ निकाले गये हैं, जो निराश निठाल, उदास एवं प्रतिभारहित कर देते हैं । उन्हें सुनते रहने पर मांसाहारी हिंस्र-जन्तुओं ने भूखे होने पर भी किसी पर आक्रमण का बड़ा साहस नहीं किया । आसपास के कीड़े-मकोड़े खाकर ही सन्तोष करते रहे । दुर्बल जीव जन्तु स्थिरता ही नहीं अपना बैठे वरन् आँखों से आँसू भी बहाने लगे। शायद वे उनकी प्रसन्नता के सूचक थे।

संगीत का प्रयोग जलचरों पर भी वैसा ही प्रभावशाली सिद्ध हुआ है। आकर्षक संगीत टैप से मछलियाँ कछुए, केंकड़े तक उस क्षेत्र में दौड़ते चले आये और बिना किसी झिझक आशंका के वहाँ तक बढ़ते चले गये जहाँ से उसे संगीत की आवाज आरम्भ हो रही थी । इसके बाद दूसरा प्रयोग डरावने भयंकर स्वर बदलकर किया गया तो उस क्षेत्र में जीव-जन्तु थे, वे अपनी जान बचाकर दूर-दूर चले गये। मछली मारों ने उस प्रयोग का शिकार पकड़ने मे लाभ उठाया।

पशु-पक्षियों की अपनी भाषा होती है। यद्यपि उन में थोड़े-थोड़े ध्वनि शब्द ही होते हैं, पर उन्हीं के सहारे वे आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते रहते हैं। विभिन्न जीरों के उच्चारण विभिन्न प्रकार के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं। इन संकेत स्वरों को टैप करने सुनाने पर उस वर्ग के प्राणी वैसी ही हरकतें करके लगे जैसे कि उनको संकेत उपलब्ध हुए। प्रणय निवेदन के स्वर सुनाकर उस वर्ग की नर-मादाओं को बड़ी संख्या में एकत्रित होते और सम्बन्ध बनाने के लिए आतुर होते देखा गया।

संगीत का पेड़-पौधों पर भी अच्छा प्रभाव देखा गया है। बर्लिन के एक उद्यान मे दाहिने पक्ष में संगीत बजाये जाने का क्रम बना और उत्तरी पक्ष को नहीं छेड़ा गया । देखा गया कि संगीत वाली क्यारियों में फूल और फल अधिक उगे और उनकी बढ़ोत्तरी गति भी तेज हुई।

अब पशु पालक दूध दुहते समय ऐसे संगीत टैप बजाने लगे हैं, जिन्हें सुनकर उनका दूध अधिक मात्रा में स्रवित होने लगता है। किसान भी इस विद्या को अपना कर रोगी कीटकों को मारने तथा अच्छी फसल उपजाने में सफल हो रहे हैं। फसल को अधिक उपजाऊ बनाने, फल-फूल आने का प्रभाव कितने ही परीक्षणों में देखा गया है।

पिछले दिनों अन्नामलाई विश्वविद्यालय में वनस्पतिशास्त्र के एक वैज्ञानिक डॉक्टर सी. टी. एम० सिंह ने स्लाइडों के द्वारा यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया था कि गायें, भैसें संगीत सुनकर अधिक दूध देने लगते हैं। कटक और दिल्ली के कृषि अनुसंधान केन्द्रों में भी ऐसे प्रयोग और परीक्षण हुए है. और यह देखा गया है। संगीत का प्रभाव पेड़-पौधों तक मे उत्पादन शक्ति के रूप में होता है। कोयम्बटूर के सरकारी कॉलेज में भी इस प्रकार के परीक्षण चल रहे हैं। विदेशों से ऐसे समाचार मिल रहे हैं, जिनमें दावा किया जाता है कि राग-रागनियों का प्रभाव गन्ने,धान, सकरकन्द, नारियल आदि पर भी पड़ता है। उत्तर भारत में अभी भी धान की रोपाई के लिए विशेष रूप से गाँव की उन स्त्रियों को ले जाया जाता है, जो अच्छे और मधुर-स्वरों में गीत गा सकती हों और फिर सामूहिक स्वरों में गीत गाते हुए, धान की रोपाई की जाती है। ऐसे खेतों की अपेक्षा फसल अच्छी तैयार होती है।

डॉ० सिंह ने दस वर्ष तक एक बाग का दो हिस्सों में परीक्षण किया । एक के पौधों को कु० स्टेला पुनैया वीयलिन बजाकर गीत सुनाती दूसरे को खाईं पानी, धूप की सुविधाएँ तो समान रूप से दी गईं किन्तु उन्हे स्वर माधुर्य से वंचित रखकर दोनों का तुलनात्मक अध्ययन किया । जिस भाग को संगीत सुनने को मिला उनके फूल, पौधे, सीधे, घने अधिक फूल फलदार सुन्दर हुए। उनके फूल अधिक दिन तक रहे और बीज निर्माण द्रुतगति से हुआ । डा० सिंह ने बताया कि वृक्षों में प्रोटोप्लाज्मा गड्ढे भरे द्रव की तरह उथल-पुथल की स्थिति में रहता है संगीत की लहरियाँ उसे उस तरह लहरा देती हैं, जिस तरह वेणुनाद सुनकर सर्प प्रसन्नता से झूमने और लहराने लगता है। मनुष्य शरीर मे भी ठीक वैसी ही प्रतिक्रिया होती है। गन्ना चावल शकरकन्द जैसे मोटे अनाजों पर जब संगीत अपना चिरस्थायी प्रभाव छोड़ सकता है तो मनुष्य के मन पर उसके प्रभाव का तो कहना ही क्या।

गन्ना ,धान शकरकन्द आदि के पौधों और पेड़ों के विकास पर क्रमबद्ध संगीत का उत्साहवर्धक प्रभाव पड़ता है यह प्रयोग भारत के मूर्धन्य कृषि विज्ञानी संगीतकार डा० टी० एन० सिंह ने कुछ समय पूर्व किया था । कोयम्बटूर के सरकारी कृषि कालेज के अन्वेषण ने पौधों पर संगीत के अनुकूल प्रभाव की रिपोर्ट दी है।

इस समय संसार के कई अन्य देशों में भी संगीत की शक्ति के सम्बन्ध में इस प्रकार के परीक्षण हो रहे हैं। कनाडा में गेहूँ के एक खेत के चारों ओर दूरभाषी पत्र लाउडस्पीकर लगे हुये हैं, जो प्रातःकाल सूर्योदय होते ही वायलिन के संगीत को प्रसारित करते हैं। अमरीका में भी कई किसान संगीत के भाव से अपनी फसलें बढ़ाने के प्रयत्न में लगे हैं । दोवातोसा के श्री आर्थर लाकर की राय है कि संगीत के प्रभाव से उनके बगीचे के फूल-पौधे, सीधे, घने, ज्यादा फल-फूलदार और सुन्दर होने लगे है। उनमें फूल काफी अर्से तक लगे रहे और बीज निर्माण भी द्रुतगति से हुआ। अमरीका की कितनी ही गौशालाओ मे संगीत के प्रभाव से गायों के दूध की मात्रा बढ़ाई गई है, यह समाचार भी सामयिक पत्रों में प्रकाशित हुआ है।

लन्दन विश्वविद्यालय के एक वनस्पति इन्जीनियर जेम्स स्मिथ ने पौधों के साथ किये गये दुर्व्यवहार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

और सदव्यवहार की प्रतिक्रियाओं को जानने के लिए लम्बी अवधि तक अनेक क्षेत्र उद्यानों में विभिन्न प्रकार के पर्यवेक्षण किये हैं। उनने पाया है कि वनस्पतियाँ प्रताड़ना तथा प्रतिकूलता उत्पन्न करने में खिन्न होती है उनके यह मनोभाव कुम्हलाने मुरझाने के रूप मे देखा गया । इसी प्रकार खाद पानी ऋतु प्रभाव की तरह वे सज्जनोचित व्यवहार से भी पोषण प्राप्त करती, बढ़ती और सुखी रहती पाई गई है। हँसी-खुशी का वातावरण जिस प्रकार मनुष्यों को पसन्द है वैसा ही अनुभव पेड़-पौधे भी करते है। शोक सन्ताप जहाँ छाया रहता है, वहाँ पौधे भी दुःखी निराश एवं कुरूप कठोर स्थिति में रहते हैं । श्मसानों, कसाई घरों के नये और तेजी से बढ़ने वाले पौधों की विकास गति अपेक्षाकृत अधिक मन्द और असन्तोषजनक पाई गई है।

वनस्पति विज्ञानियों का यह मत बनता जा रहा है कि संगीत की प्रतिक्रिया। पौधों पर स्नेह सद्भाव जैसी होती है। वे गायन-वादन से प्रसन्न होते उत्साहित रहते और जल्दी बढ़ते तथा फूलते-फूलते हैं ।

इस तरह मनुष्य, पशु-पक्षी कीड़े मकोड़े ही नही वृक्ष वनस्पतियों पर भी संगीत का उपयोगी प्रभाव पड़ता है। इतना ही नहीं समस्त चेतन सृष्टि की तरह जड़ सृष्टि भी उससे प्रभावित होती है। इन्हीं तथ्यों के आधार पर संगीत को विश्व का प्राण कहा गया है।

नादयोग एवं संगीत की प्रभावोत्पादक सामर्थ्य

जापान में संगीत की शिक्षा को एक अनिवार्य विषय बनाया गया है। वहाँ प्राथमिकशाला से लेकर हाईस्कूल शिक्षा तक के सभी विद्यार्थियों को अन्यान्य विषयों के साथ संगीत भी अनिवार्य रूप लेना पड़ता है। वहाँ के शिक्षार्थी भारत की तरह नौकरी पाने के लिए नहीं पढ़ते वरन् व्यक्तित्व और प्रतिभा के धनी होने की दृष्टि से पढ़ते हैं। इन दोनों कोर्यों में संगीत भी अन्य विषयों से कम कारगर नहीं होता। उससे मनोबल बढ़ता है। कलाकारिता से अभ्यस्त होने का उत्साह बढ़ता है। सामाजिक बनने तथा दूसरे के सामने अपनी अभिव्यक्तियाँ प्रकट करने का अवसर न मिलता है। ऐसे-ऐसे अनेक लाभों की दृष्टि रखकर संगीत को इस प्रकार की प्रमुखता दी गई है। वह पारिवारिक जीवन का सर्वसुलभ और मोद मंगल भरा मनोरंजन है। थकन और उदासी उससे सहज ही दूर होती है। यदा-कदा पारस्परिक मनो-मालिन्य चल पड़े तो भी वह इन तरंगों में सहज ही उड़ जाता है। इस प्रकार वह वैयक्तिक और पारिवारिक दोनों ही जीवन प्रसंगों में अपनी उपयोगिता प्रमाणित करता है। व्यक्ति और परिवार से मिलकर ही समाज बनता है। संगीत व्यक्ति और परिवार को भी प्रभावित करे पर सामाजिक सत्वृत्तियों की सहकारिता की—हँसी-खुशी की प्रवृत्ति को उभारने में योगदान न दे ऐसा हो ही नहीं सकता।

वह दिन दूर नहीं जब संगीत को शिक्षा क्षेत्रों में ऐच्छिक विषय न रहने देकर संसार भर में उसको अनिवार्य स्तर की मान्यता मिलेगी।

शिक्षा के उपरान्त चिकित्सा का विषय आता है। रोगी को कुछ क्षण मरहम पट्टी, सुई, सफाई, भोजन आदि दैनिक कार्यों से कुछ ही घण्टे में निपट लेने के उपरान्त प्रायः सारे दिन बेकार पलंग पर पड़ा रहना पड़ता है। घर कुटुम्ब के लोग के लिए जब तब ही आ सकते हैं। उन्हें भी तो अपने आजीविका उपार्जन, व्यवस्था, आदि के काम करने पड़ते हैं। मनोरंजन करने के लिए समय काटने के लिए हर घड़ी वे भी पास बैठे नहीं रह सकते। ऐसी दशा में अकेला पड़ा हुआ रोगी, शारीरिक दृष्टि से रोगी होने के कारण मानसिक दृष्टि से भी रोगी रहता है और पड़ा-पड़ा ऐसी कल्पना करता रहता है जो उसे बीमारी की तरह ही कष्ट देती और दुःखी करती है। परिचर्या के लिए ही अस्पताल के कर्मचारी उपलब्ध हो सकते हैं। एक रोगी के लिए एक परिचारिका का होना भी सुगम नहीं ऐसी दशा में सूनेपन की व्यवस्था से छुटकारा पाने के लिए सुगम सरल संगीत की अपनी उपयोगिता है। पर सूनेपन का अच्छा साथी बनकर इच्छित समय तक साथ रह सकता है। टैप रिकार्डर के माध्यम से अच्छे संगीत या उपयोगी परामर्श सुनते रहने के लिए यह व्यवस्था एक ऐसे मनोवैज्ञानिक डाक्टर का काम दे सकती है जो हर समय अपना काम छोड़कर हाजिर रह सकता है।

यह कार्य अच्छी पुस्तकों में भी हो सकता है। पर उतनी मात्रा में उपयोगी साहित्य भी कहाँ उपलब्ध होता है।

संगीत चिकित्सा अपने आप में एक श्रेष्ठ उपचार पद्धति है। सबसे बड़ी विषमता उसकी यह है कि अन्य

किसी उपचार प्रक्रिया में वह बाधक नहीं होता । जबकि अन्य चिकित्सा विधियों में यह सुविधा नहीं है। होम्योपैथी चिकित्सा के साथ ऐलोपैथी नहीं चल सकती है। एक-दूसरे की दवाओं को काटती है और एक को भी समुचित लाभ नहीं मिलता। पर यह दोष संगीत चिकित्सा में नहीं है उसका निर्वाह किसी भी पद्धति के साथ भली प्रकार हो सकता है।

स्नायु समूह को—प्राण विद्युत को प्रोत्साहित करना उसका प्रधान कार्य है। इस विद्या में जितना सम्भव हो सकता होगा उतना लाभ ही होगा उसमें ऐन्टी वायोटिक्स जैसा कोई मारक गुण नही है जो किसी भी रोगी को किसी भी दृष्टि से कुछ भी हानि पहुँचावे। रोगी के लिए चित्त को प्रसन्न रखने के साधन अपने आप में रोग निवारक विशेषताएँ हैं। रोते या उदास मचलते बच्चे को जिस प्रकार अच्छे खिलौने देकर मूड़ बदला जा सकंता है उसी प्रकार संगीत भी सबके लिए विशेषतया रोगी के लिए अच्छा मनोरंजन है। उसकी शर्त एक ही है कि वह उद्देश्य के अनुरूप ऊँचे स्तर का होना चाहिए। यह गुण प्रयत्नपूर्वक उत्पन्न करने पड़ते हैं वे बाजारू फिल्मी या दूसरे तरह के बिछोह भर, शिकायत भरे, अश्लील संगीत में नहीं हो सकता। फिर बाजारू रिकार्ड गायन भरे होते हैं। जबकि चिकित्सा-प्रयोजन के लिए स्नायु-संस्थान में उपयोगी हलचलें उत्पन्न करने वाली ध्वनि तरंगों की ही आवश्यकता है। यह कार्य विशेषतया इसी प्रयोजन के लिए विचारपूर्वक किये गये संगीत टैप ही सम्पन्न कर सकते हैं।

रोगों की भिन्नता के अनुरूप स्नायु-संस्थान में गड़बड़ियाँ भी भिन्न प्रकार की होती हैं । इसलिए हर रोगी के लिए उसकी स्थिति के अनुरूप दवा का चयन करने की ही तरह उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए—संगीत को प्रभाव ध्यान में रखते हुए ऐसा चुनाव करना पड़ता है जो रोगी की स्थिति के अनुरूप हो। सबके लिए जिस प्रकार एक दवा देने से काम नहीं चलता । उसी प्रकार प्रत्येक रोगी को—बिना उसकी विशिष्ट स्थिति एवं आवश्यकता को समझे किसी भी संगीत को सुनने की छूट नहीं मिल सकती। ऐसी छूट मनोरंजन मात्र के लिए मिल सकती है चिकित्सा के लिए नहीं।

जिस प्रकार रसायन चिकित्सा के लिए रक्त, मूत्र आदि विभिन्न माध्यमों से रोगी की स्थिति का विश्लेषण के उपरान्त औषधि का निर्णय करना पड़ता है उसी प्रकार स्नायुविक एवं नाड़ी-संस्थान की वर्तमान स्थिति जानने के लिए इस प्रयोजन के लिए आवश्यक उपकरणों द्वारा जाँच-पड़ताल करनी पड़ती है। रोग का इतिहास एवं वर्तमान स्तर प्रश्नोत्तर प्रणाली से भी जाँचना पड़ता है, तभी यह स्पष्ट होता है क्रि शरीर के किस भेजे में कितनी निष्क्रियता छाई है और इसके लिए इतनी शक्ति का संगीत—कितनी देर—किस समय उपयोग में लाना ठीक पड़ेगा। निदान के बिना उपचार आरम्भ कर देना तो सब धान बाईस पसेरी के भाव बेचने की तरह है। उससे लाभ के साथ निराशा भी हाथ लग सकती है और हानि भी हो सकती है।

संगीत चिकित्सा का सांगोपांगस्वरूप वर्णन करना उसके भेद उपभेदों का बताना इस छोटे लेख में सम्भव नहीं इसके लिए एक परीक्षित, और अनुकूल पद्धति के समस्त भेद उपभेदों का जानना—जनाना आवश्यक है। इसके लिए अगले दिनों ही एक उपयुक्त प्रक्रिया पाठकों के हाथ पहुँचेगी। यहाँ तो उसका संकेत भर जान लेना और पृष्ठभूमि समझ लेने से ही काम चल सकेंगे।

विदेशों में—विशेषकर अमेरिका में—इस प्रकार के संगीत अस्पतालों की स्थापना हुई है जो दूरस्थ रोगी की भी घर बैठे सेवा करते हैं। वे प्रश्नोत्तरों द्वारा रोगी की जाँच पड़ताल करते हैं और समाधान के हेतु अमुक संगीत श्रवण की सलाह देते हैं। वे टैप डाक में भेज दिये जाते है और उद्देश्य पूरा हाने पर वापस मँगा लिया जाते हैं। ऐसे अस्पतालों की पृष्ठभूमि में ईसाई मिशनों का हाथ है जो अपनी लोकसेवा प्रवृत्ति, वैज्ञानिकता एवं ईसाई धर्म तत्वों को जन-जन के मन-मन में गहराई तक बिठाने के लिए प्रयत्नशील हैं। इसकी प्रगति समीक्षा पढ़ने से प्रतीत होता है कि वह योजना लोकप्रिय होने के साथ-साथ सफल भी सिद्ध हुई है। अन्य देशों में भी इस योजना का विस्तार हो रहा है और मानसिक रोगियों को विशेष रूप से लाभ हो रहा है। जो अस्पताल में दाखिल होने की स्थिति में नहीं पहुँचे हैं, मात्र सनकी और कुकल्पनाओं से ग्रस्त हैं, वे परिवारी लोग अपने-अपने घरों पर इस योजना का विशेषतया लाभ उठा रहे हैं।

संगीत भारत का उत्पत्ति केन्द्र है। यहाँ के अधिकांश देवी देवता संगीत उपकरणों से सुसज्जित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हैं। सामगान का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। विवाह जैसे उत्सव तो उस आयोजन के बिना सम्पन्न ही नहीं होते। लोक गीतों के रूप में हर सम्पन्न और पिछले क्षेत्र में अपने अपने ढंग से उसका प्रचलन है। देवी-देवताओं की अभ्यर्थना में संकीर्तन जैसे आयोजनों की व्यवस्था देश के कोने-कोने में होती है। भूत-प्रेत भगाने और साँप का विष उतारने में अपने ढंग के आयोजन सर्वत्र होते रहते हैं। अब आवश्यकता इस बात की है कि जन-मानस के विकास, लोक शिक्षण के अतिरिक्त इस प्रक्रिया का उपयोग शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य सम्बर्धन एवं रोग निवारण के निमित्त किया जाय। यह कार्य भारत की सांस्कृतिक परम्परा के अनुरूप भी है और व्यवहार में सरल भी। अथर्ववेद आयुर्विज्ञान का प्रधान ग्रन्थ है। उसकी समस्त संरचना छन्द विद्या के अनुरूप हुई है। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि उन मन्त्रों का अर्थ ही रोग निवारण शिक्षाओं से परिपूर्ण हो ऐसी बात नहीं है। रहस्य यह भी है कि उनका उच्चारण यदि सामवेदीय परम्परा के अनुरूप गायन क्रम से हो तो उसका असाधारण लाभ मिल सकता है। मन्त्रों के पाठ, जप परम्परा ही नहीं है उनका विधिवत् गायन भी होगा और साथ में वादन का भी संयोग रहता है। यज्ञ कृत्यों में एक अधिकारी उद्गाता भी होता है। जिसका उत्तरदायित्व वेद मन्त्रों की प्रक्रिया में गायन विद्या का उपयोग त्रुटिपूर्ण न रहने पाये।

इस सुविस्तृत विज्ञान में विलम्ब लगता दृष्टिगोचर हो तो एकाकी वेदमाता गायत्री का उपयोग समस्त शारीरिक मानसिक उपचारों के निमित्त हो सकता है। अन्तर इतना ही है कि उसके साथ उपयुक्त वादन विधियों का भी समावेश हो। उच्चारण मानसिक हो सकता है। रोगी को मन ही मन वेदमाता का ध्यान और मानसिक जप करने में किसी प्रकार के प्रतिबन्धों जैसी कोई बात नहीं है।

ब्रहावर्चस् शोध संस्थान हरिद्वार की यह शोध प्रक्रिया कई वर्ष से चल रही है कि किस शारीरिक और किस मानसिक रोग में गायत्री मन्त्र को किस राग रागिनी में ढाल जाय तो संगीतकारों के भी अनुकूल हो और साम विद्या के अनुरूप भी वह प्रयोग लम्बे समय से चलने के उपरान्त अब उस स्थिति में आ गया है। कि उसे सार्वजनिक प्रयोग के लिए प्रस्तुत किया जा सके।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में यज्ञ प्रक्रिया का छोटा एवं आरम्भिक रूप अग्निहोत्र तो हाथ में लिया ही गया है, उसे सार्वभौम एवं सार्वजनीन भी बनाया गया है। इसलिए उसके साथ सुगम संगीतों का ही समावेश किया गया है जो सभी के लिए, विशेषतया भारतीय परिस्थितियों के, उसके देशवासियों की मनोदशा के अनुकूल पड़ते हैं। यह संगीत शक्ति, सामर्थ्य से भरी-पूरी है तथा इसकी प्रतिक्रिया सरलता पूर्वक जाँची जा सकती है। वेदमंत्रों के बारे में अन्यान्य धर्मवालों को आपत्ति हो सकती थी, इसलिए यही उपयुक्त समझा गया कि मात्र संगीत विज्ञान को ही शोध का विषय बनाया जाय और देखा जाय कि संगीत की शब्द शक्ति की कितनी विधाएँ मनुष्य के शारीरिक-मानसिक रोगों के निवारण में काम आ सकती है।

संगीत का सीधा सम्बन्ध भावनाओं को तरंगित करने से है। इसलिए वह स्थूल और सूक्ष्म शरीर के साथ-साथ कारण शरीर के उत्कर्ष-उन्नयन का आधार भी बन जाता है। तनाव मिटाने, मनःशक्ति संवर्धन में उसकी उपयोगिता देखी गई है। संगीत का प्रभाव जलचर, थलचर, नभचर वर्ग के प्राणियों पर भी पड़ता देखा गया है। वायुमंडल के परिशोधन संबन्धी प्रभाव भी उत्पन्न होते हुए देखे गये हैं। गेय मन्त्रों के उच्चारण का जो महत्व है उसमें उसकी स्वर लहरी का प्रभाव विशेष रूप से देखा और सरलता पूर्वक जाना जा सकता है। वृक्ष वनस्पतियाँ तक भी उससे प्रभावित होते हैं। अधिक फसल उत्पन्न होने , वृक्षों पर अधिक फल लगने, प्राणीवर्ग में उपयोगी समर्थता बढ़ाने की पृष्ठभूमि बनती है।

यों संगीत प्रभाव एक स्वतंत्र विषय है और उसकी सर्वतोमुखी परिणिति के सत्परिणाम शोध उपकरणों तथा अनभवों के आधार पर देखे-पाये जा सकते हैं। अनेक देशों में इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयोग चल रहे हैं और उनके उपयोगी सत्परिणामों को देखते हुए संगीत को मानव जीवन की एक उपयोगी विधा के रूप में स्वीकारा जाने लगा है। शांति कुन्ज के शोध प्रयासों में यह जाँचा-परखा जा रहा है कि किस संगीत से मानव-जीवन की किस कठिनाई को घटाया और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किस आवश्यकता की पूर्ति का सुयोग किस सीमा तक बढ़ाया जा सकता है। संगीत की तरंगों को ऑसीलोस्कोप के माध्यम से देखा परखा जाता है एवं विभिन्न स्वर लहरीयों की पिच, एम्प्लीट्युड तथा वेवलेंग्थ को मापा जाता है। शोर एवं संगीत की ध्वनि तरंगों के स्वरूप के अंतर के माध्यम से यह दर्शाया जाता है कि शब्द शक्ति के विकृत रूप के भिन्न-भिन्न प्रभाव होते हैं। इसके लिए बड़ी क्षमता वाला ड्यूअलबीमस्टोरेज ऑसीलोस्कोप विदेश से मँगाकर मीटर इस उपकरण की सहायता करते हैं। संगीत के माध्यम से तनाव शैथिल्य कैसे लाया जा सकता है, इसे (पॉलीग्राफ) यंत्र से दर्शाया तथा बायोफीडबैक द्वारा साधकों को प्रशिक्षित करने की विधा का भी यहाँ समावेश किया गया है।

अग्नि होत्र से भी संगीत चिकित्सा की संगति इस प्रकार बैठती है कि जब गायत्री मंत्र को स्टीरियों डेक द्वारा सुनाया जाता है तब गायन वादन के माहौल को प्रभावित करने के लिए अग्निहोत्र के प्रयोग भी चल रहे हैं। इस प्रकार ध्वनि के साथ ताप भी जुड़ जाता है और उचारण में ऐसा सूक्ष्म अंतर विकसित हाता है जिसकी प्रभावोत्पादक शक्ति कहीं अधिक होती है।

शब्द, ताप एवं प्रकाश यही तीन तरंगे प्रकृति का सूक्ष्मरूप है। अग्निहोत्र में इन तीनों का समुचित समन्वय हो जाता है। इस संतुलित ऊर्जा का प्रभाव मानवी काया, मन, जीवजगत, पर्यावरण एवं वृक्ष वनस्पतियों पर बढ़ चढ़कर सत्परिणाम उत्पन्न करते देखा जा सकता है। जहाँ सम्भव होता है, वहाँ गायन-वादन मण्डली अग्निहोत्र के सुरभित वातावरण में अमुक प्रयोजन के लिए अमुक विधान अपनाने जाने की रीति नीति अपनाती है। जिन्हें उस प्रभाव की विशेष आवश्यकता है, वे वहाँ शान्त चित्त से बैठते हैं। उन्हें केन्द्र बनाया जाता है। आज के यांत्रिक युग में वह प्रयोजन ऑडियो कैसेट द्वारा पूरा किया जा सकता है।

शांति कुंज द्वारा संगीत प्रवाहों के कुछ ऐसे टैप आविष्कृत किये जा रहे हैं जो विभिन्न प्रयोजनों के लिए विभिन्न प्रकार की भूमिकायें निबाहाते हैं। वनस्पतियों को अधिक बढ़ने और फलने फूलने में योगदान देने वाले एक प्रकार के संगीत टेप हैं, तो थलचरों नभचरों को प्रभावित करने वाले अन्य प्रकार के। मनुष्यों के लिए तीन प्रयोजनों को पूरा करने वाले अलग-अलग प्रवाहों वाले टैप बनाये गये हैं। (१) शारीरिक स्वस्थता, (२) मानसिक प्रखरता, (३) भाव संवेदना क्षेत्र की उत्कृष्टता।

संगीत चिकित्सा को एक स्वतंत्र विषय माना जा सकता है। उसमें अग्निहोत्र का पुट किसी प्रकार लग जाने से प्रभाव क्षमता का और भी अधिक विस्तार होते देखा गया है। अब तक उपरोक्त वर्गीकरणों के अनुरूप संगीत टेपों का निर्धारण किया जा चुका है। अगले दिनों इनके भेद-उपभेदों का ध्यान रखते हुए ऐसे वाद्यवृन्दों के समुच्चय तैयार किए जायेंगे जो विभिन्न प्रकार की व्याधियें के निराकरण में अपना प्रभाव दिखा सकें। कोई व्यक्ति किस दिशा विशेष में अपने व्यक्तित्व को अग्रसर करना, शक्ति संवर्धन करना चाहता है ? यह एक स्वतंत्र प्रयोजन है। संगीतों टैपों का अगले दिनों इस प्रकार काह प्रयोग परीक्षण होने जा रहा है जिसके आधार पर अभीष्ट प्रगति का द्वार खुल सके।

मान्यता है कि सृष्टि के आदि में शब्द उत्पन्न हुआ। उसका ध्वनि प्रवाह ॐकार जैसा था। इसके बाद अन्यान्य तत्व उत्पन्न होते गये और सृष्टि की परोक्ष सत्ता प्रत्यक्ष कलेवर धारण करती चली गई। 'ओंकार' ध्वनि शास्त्र का बीज है। उस अकेले को ही इतने अनेक प्रवाहों में गाया जा सकता है कि सतों स्वरों का परिचय उस अकेले से ही प्रादुर्भूत् हो सके। संगीत चिकित्सा के अनुसंधान में अगले दिनों ऐसे प्रयोग भी चल सकेंगे कि समस्त श्रुति ऋचाओं का बीज मंत्र ओंकार ही विभिन्न ध्वनि लहरियों में प्रयुक्त करके संगीत चिकित्सा का ढाँचा खड़ा किया जा सके।

संगीत की ध्वनि लहरियाँ शरीर संस्थान, मनः संस्थान और भाव संस्थान के तीनों ही क्षेत्रों को तरंगित करती है। ध्वनि प्रवाह शरीर के अवयव पर प अपना प्रभाव छोड़ते हैं। इन तरंग लहरों में ज्वार-भाटे जैसे गुण पाये जाते हैं। उनमें शमन कारी और उत्तेजक दोनों ही क्षमताएँ प्रचुर परिणाम में विद्यमान पायी जाती हैं। मनुष्य ने विद्युत, लेसर बारूद, अग्नि आदि का दिव्य वरदानों के रूप में उपयोग किया है। संगीत ऊर्जा का भी सृजनात्मक उपयोग कर उसने मानव मात्र को लाभान्वित किया है। अब इसकी व्यापक क्षमता का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयोग समष्टिगत वातावरण परिशोधन के रूप में होना चाहिए। वातावरण में सौम्य सात्विकता का समावेश करने के लिए संगीत का सामूहिक सहगान-संकीर्तन के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

शान्ति कुन्ज की संगीत शोध प्रक्रिया में विभिन्न भाव संवेदनाओं के साथ गाये जाने वाले गीत वाद्यों का क्या प्रभाव चेतना जगत एवम् जड़ जगत पर होता है, इसका प्रयोग परीक्षण इन दिनों सफलता पूर्वक किया जा रहा है। इसके निष्कर्ष सामने आने पर यह सिद्ध होने की संभावना है कि विधि विशेष से किये गये सामूहिक दिव्य संकीर्तन, संगीत एवं मन्त्रोच्चार अपने माहौल में तो उत्कृष्टता उत्पन्न करते ही हैं, विश्व व्यापरी वातावरण पर भी उसका उपयोगी प्रभाव पड़ता है

स्वरसाधना, जनजागरण का माध्यम भी

"तोम दिर दिर, नादिर दिर दिर तोम" "त दिर न"। वातावरण संगीतमय हो उठा। स्वर लहरियाँ हवा के साथ लहराती हुई बल खाने लगीं। कभी बलवती सागर की तरंगों की तरह घोर गर्जना करती हुई प्रतीत होतीं तो कभी कान्त कुसुम की तरह कोमल बनकर हवा पर पग रखती हुई उड़ जातीं। सुनने वाले विभोर थे। चारों ओर भावों का सागर उमड़ पड़ा। ऐसा कीर्तन-संगीत और गीत की यह कलुष-नाशनीधारा जिसमें दोषों के मैल स्वत: धुलते जा रहे थे। यत्किंचित मन की गंदगी बचती भी तो वह गायिका की टिप्पणियों की पटकन से पलायन कर जाती । खड़े हुए लोग मानों अपना अस्तित्व खोने लगे। लगा जैसे सभी कुछ सौन्दर्य, समस्वरता और सामंजस्य के सागर में विलीन हो जायेगा। कहीं कोई विषम स्वर न था और न लय टूटती थी।

"जीवन भी एक वाद्य यन्त्र है, जो समस्वरता और सामंजस्य के अभाव में बेसुरा हो रहा है। बटतीं-बिखरती, टूटती जिन्दगी को यदि सँवारा जा सके, मन्द तार और मध्यम सप्तक के रूप में शरीर, आत्मा और मन भली प्रकार सक्रिय हो सकें तो होने वाली अनोखी स्वरसृष्टि जिन्दगी की सार्थकता सिद्ध किए बिना न रहेगी"। वाद्य यन्त्र एक ओर रखते हुए उसने अपनी बात कही।

जन समुदाय मन्त्र-मुग्ध हो सुन रहा था। सुनने वालों में से कई ऐसे थे जिन्होंने राजदरबारों में श्रेष्ठतम कलाकारों के गायन-वादन का रस लिया था। किन्तु वहाँ उन्माद था, यहाँ पी शान्ति। वहाँ दोष उद्दीप्त होते थे, यहाँ विलय हो रहे थे। वहाँ विलासिता का नर्तन था, यहाँ वैराग्य की सृष्टि, कैसा विरोधाभास है। शायद इसी कारण कुछ ने संगीत और विलासिता दोनों को एक-दूसरे का पर्याय मान लिया था। अब तब उसके मन में संगीत के सम्बन्ध में जो भ्रान्तियों थीं, वे मिटती जा रही थीं क्योंकि सामने थी वैराग्य मण्डित दिव्य भावों की जीवन भूर्ति-पच्चीस वर्ष की दय की गेरुए वस्त्रों से मण्डित गौरवर्ण, तपश्चर्या के प्रखर तेज से युक्त उस देवी का दीप्तिमान मुखमण्डल जनश्रद्धा को बरबरा अपनी ओर खींच लेता था।

तभी एक ने पूछ लिया—"देवी जी मैं आपके संगीत कीर्तन की बात कहना चाहता था। दरबारी संगीत की अपेक्षा यह.....।" अच्छा ! अच्छा !! यह बात है, उसने सामने खड़े व्यक्ति के मनोभावों को पढ़ते हुए कहा-दोषी संगीत नहीं है। यह तो सिर्फ भावों का वाहन है। इसके माध्यम से लोक जीवन को कामुकता और विलासिता की कैद में डाला जा सकता है और इसी के माध्यम से जनजागरण भी किया जा सकता है—"जनजाग्रति भी।" आश्चर्य प्रकट करने के साथ वह स्वयं में झेंप-सा गया। झेंपा इसलिए, क्योंकि उसने इस जाग्रति को अभी कुछ क्षणों पूर्व अनुभव किया था। वहीं क्यों, सभी ने अपने अन्दर के सच्चे इंसान को अंगड़ाइयाँ लेते हुए महसूस किया था। फिर पूछने की क्या जरूरत थी, पर अब तो पूछ ही लिया।

उसकी इस सोच-विचार से अनजान वह बोल उठी, "हाँ जनजाग्रति"। स्वर में तेजी थी, अंगुलियों की थिरकन संगीत सृष्टि नहीं करती। इसमें प्राण भरने के लिए स्वयं के प्राणों की प्रखरता चाहिए। आज के संगीत को तो विलासियों और व्यसनियों की गुलामी करनी पड़ रही है। उसकी पीड़ा देखकर स्वरों की देवी शारदा व्यथित है वे आसमान के उद्‌गाता ऋषिगण, जिन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि उनके द्वारा की गई स्वरों की सृष्टि को हतभाग्य मनुष्य पाशविकता की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ओर मोड़ कर तहस-नहस कर देगा।" हृदय की पीड़ा आँखों में छलछलाने लगी—प्रश्नकर्ता ही क्यों पास खड़े सभी इस दृश्य परिवर्तन को देखकर हतप्रभ थे।

इधर वह भावाविष्ट हो बोले जो रही थी—"संगीत अब बनकर रहेगा-जनजाग्रति का माध्यम। ऐसा होगा और अवश्य होगा। शुरूआत मैंने कर दी है। मेरे काम को पूर्णता देने के लिए प्रभु स्वयं अनेकानेक रूप धर कर आयेंगे-तीसरी सहस्राब्दी में प्रवेश होने के पूर्व ही।" जैसे वह अन्तर्चक्षुओं से भविष्य निहारने लगी, "धरती पर प्रेम-सुन्दरता और सामंजस्य एक साम्राज्य होगा। तब तक एक-एक कदम आगे बढ़ने की कोशिश तो करो। लो उठो ! अपने प्रयास में लग जाओ"—।

अन्तरचेतना की अतुल गहराइयों से निकले इन वाक्यों ने सब के मनों में चेतन्य ऊर्जा भर दी। संगीत द्वारा लोकजीवन में जाग्रति की शुरूआत करने वाली यह तपस्विनी थी मीराबाई। जिन्होंने अपने महान उद्देश्य के लिए राजरानी का वैभव छोड़कर वैराग्य का बाना पहना था। उनका कार्य इन्हीं दिनों पूर्णता प्राप्त करने वाला है। तोड़ फैकें उन बेड़ियों को जिनसे संगीत की आत्मा संतप्त है, कलेवर जकड़ा पड़ा है। सुगम संगीत की स्वर-लहरियों से झंकृत हो उठे जनचेतना। नगर-नगर, गाँव-गाँव, घर-घर और हर दिल में, नए जीवन का नया तराना गूँज उठे।

विश्व विख्यात संगीत मर्मज्ञ पाब्लोकासाल्स कहा करते थे—दुनियाँ को मरने से बचाने के लिए संगीत ही सबसे बड़ा संरक्षण हो सकता है। मार्टिगंलूथर का यह कथन भी प्रख्यात है कि संगीत मनुष्य जाति को भगवान द्वारा दिये गये सबसे भव्य वरदानों में से एक संगीत भी है।

ऐसे ही अनेक कथनों को जापान के एक संगीत विद्यार्थी शिनीची सुजुकी ने अपना जीवन दर्शन बनाया और वह उसी के लिए आत्माहुत हो गया। उसने ने केवल संगीत विद्यालय खोलकर इस महा विज्ञान के जीवन उत्कर्षकारी पक्ष को विकसित किया वरन् जन-साधारण को संगीत की आत्मा से परिचित कराने के लिए द्वार-द्वार पर अलख भी जगाया।

संगीत एक व्यवसाय या मनोरंजन मात्र बनकर जिये। श्रोताओं की, दया पर संगीतकारों की आजीविका निर्भर रह और यह सब भी दूसरे धन्धों की तरह श्रमिक और मालिक की धुरी पर ही घूमता रहे तो आत्मा के उल्लास के तरंगित करने वाली गीत कला को जन जीवन में वह स्थान न मिल सकेगा जो मिलना चाहिए। सुजुकी सदा इसी विचार में डूबे रहते और उपाय खोजते कि जीवन और संगीत को जोड़ने वाली कड़ी आखिर क्या हो सकती है ? रेडियो या ग्रामोफोन की कुछ ध्वनियाँ भर सुन सकते हैं। संगीत के साथ जुड़ी हुई उन सजीव अभिव्यक्तियों का तो रसास्वादन नहीं करा सकते जिनमें अन्तःकरण की उल्लास उमंगों को इन्द्रिय गम्य और इन्द्रियाजीत सम्वेदनाओं के साथ हृदयंगम किया जाता है। बहुत मन्थन के बाद वे इस निर्णय पर पहुँचे कि भोजन पकाने खाने की तरह—स्नान और विश्राम की तरह पढ़ने और लिखने की तरह—हर व्यक्ति को संगीत का अभ्यास होना चाहिए भले ही उसका कण्ठ कितना ही कठोर या रूखा क्यों न हो।

इसके लिए उनने एक व्यवस्थित संगीत अभियान चलाया। घरेलू सरल संगीत शिक्षा पद्धति बनाई। माता और बालकों के बीच गान शिक्षा का आदान-प्रदान कैसे चले इसका एक क्रम बनाया। विद्यालयों में आसानी से प्रयुक्त हो सकने वाली पाठ्य पद्धति बनाई। संगीत विद्यालय खुलवाये और सस्ते वाद्य यन्त्र बनाने के कितने ही विशालकाय कारखाने सम्पन्न लोगों द्वारा खुलवाने में सफलता प्राप्त की। नगोया नगर में संसार की सबसे बड़ी वायलिन फैक्टरी आरम्भ कराने और उस उन्नति के शिखर तक पहुँचने का श्रेय सुजुकी को ही दिया जाता है।

सुजुकी ने अपनी पत्नी ऐसी ढूँढ़ी जो उसके मिशन में कन्धे से कन्धा लगाकर और कदम से कदम मिलाकर चल सके। पियानों वादन की मर्मज्ञ बाल्ट्राउड के साथ विवाह की बात इसी शर्त पर पक्की हुई कि दोनों मिलकर संगीत की सेवा करेंगे। विवाह के बाद ही टैलेन्ट एजुकेशन इन्स्टीट्यूट की स्थापना हुई और बाल्ट्राउड उसी में प्राणप्रण से निमग्न हो गई। इन विद्यालयों ने अब तक कोई डेढ़ हजार प्रख्यात संगीतकारों को विनिमित किया।

सुजुकी कहते हैं—शुद्ध संगीत मनुष्य में भाव सम्वेदना जगाता है। अनुशासन सहिष्णुता और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोमलता जगाता है हृदय को सुन्दर बनाने में संगीत की अपनी भूमिका है। उनकी पत्नी कहती थी। हम लोग चाहते हैं कि जापान का बच्चा-बच्चा सहृदय और आदर्शवादी भावनाओं से सुसम्पन्न बनें—इसी लक्ष्य के लिये हम लोगों ने अपने को एक सदुद्देश्य के लिये समर्पित किया है।

जापान के उपरोक्त संगीत साधक की तरह ही अमेरिका में भी एक ऐसे सज्जन जिन्होंने अपना समस्त समय, मनोयोग और धन इसी प्रयोजन के लिए समर्पित कर दिया और असंख्य कष्ट-पीड़ित को राहत देने में निरत रह कर अपने को धन्य बनाया, इन सज्जन को आरम्भ से स्वान्त-सुखाय ही गीत वाद्य का शौक लगा, पर पीछे उनने देखा कि संगीत की क्षमता इतनी तुच्छ नहीं है कि उसे मनोविवाद की संकीर्ण सीमा में अवरुद्ध करके रखा जा सके। वह ऐसा विज्ञान है जिसका उपयोग करके समस्त संसार को अगणित, शारीरिक एवं मानसिक सुविधाओं से सम्पन्न किया जा सकता है। इस निष्कर्ष पर पहुँचने के उपरान्त उन्होंने अपना जीवन ही इस महान मिशन के लिए नियोजित कर दिया इन सज्जन का नाम है—राल्फलारेन्स हाय और उनके मिशन का नाम है—आर फोर आर।

राल्फ लारेन्सहाय और उनकी पत्नी को संगीत का सामान्य ज्ञान था पर वे भाव-विभोर होकर गाते थे, फलतः उन्हें सुनने के लिए बाल-वृद्ध सभी को बड़ी उत्सुकता रहती थी। हाथ-पैरों की जकड़न के रुग्ण एक महिला तो उनके संगीत पर इतनी मुग्ध थी कि जब अधिक व्यथित होती तो उनके गीत सुनकर राहत पाती—कुछ दिन वह रोग मुक्त भी इस संगीत श्रवण से ही हो गई।

राल्फ महोदय पहले तो विशुद्ध मनोरंजन की दृष्टि से ही गाते थे पर पीछे उन्हें देखा कि संगीत की परिधि विनोद से बहुत आगे तक है, उसका उपयोग लोगों के भारी और व्यथित जीवन का भार हलका करने के लिये भी किया जा सकता है। अपनी इस विचार की यथार्थता जानने के लिए वे अनेक रोगग्रस्तों के यहाँ जाते और उन्हें अपने यहाँ बुलाते। इन प्रयोगों ने उनकी मान्यता को अधिकाधिक समर्थन प्रदान किया कि रोग कैसा ही क्यों न हो—संगीत से उसे मिटाने में नहीं तो घटाने में आश्चर्यजनक सफलता आश्चर्य जनक सीमा तक मिलती है। इस निष्कर्ष पर पहुँचने के उपरान्त उन्होंने आजीविका उपार्जन से बना हुआ सारा समय इसी कार्य में लगाने का कार्यक्रम बनाया उनकी पत्नी का भी इसमें पूर्ण समर्थन प्राप्त था।

अमेरिका में इस प्रकार घर-घर जाकर निःस्वार्थ सेवा करना मोटेतौर से उपहासास्पद माना जाता है। आरम्भ में राल्फ को भी सनकी कहा गया। पर धीरे-धीरे जब उनके प्रयोगों के परिणाम सामने आये तो जन-साधारण ने जाना कि वे कितना महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। अधिक कष्ट ग्रस्त रोगी उनके घर आ नहीं सकते हैं। दिन-दिन बढ़ती ख्याति के कारण उन्हें भारी मात्रा में आमन्त्रण पत्र मिलने लगे। इतनी बड़ी मांग कैसे पूरी की जाये ? इन्कार करके आशा लगाये हुए व्यक्तियों को निराश कैसे किया जाय ? इस गुत्थी को सुलझाने में बहुत माथा पच्ची करने के उपरान्त वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि उपयुक्त संगीत के टेप तैयार किये जायें और उन्हें टेपरिकार्ड यन्त्र की सहायता से रोगियों को सुविधा के समय उन्हें सुनने का अवसर दिया जाय। जिनके पास अपने टेपरिकार्डर थे वे उन्हें उपयुक्त संगीतों के टेप भेज दिये जाते। किन्तु जिनके पास मशीने नहीं थीं उनके घर राल्फ महोदय का आदमी नियत समय पर पहुँचता और अपने टेपरिकार्डर से वह संगीत सुनाता। यह क्रम-इतना लोकप्रिय हुआ कि उन्हें इस कार्य को अपने जीवन के प्रमुख प्रयोजन के रूप में परिणित करना पड़ा।

न्यूयार्क फिलहार्मोनिक जैसे आर्केस्ट्रा; मार्मन टैवर्नेकल क्वार जैसी धार्मिक भजन मंडली ने उस आन्दोलन को सहायता देने के लिए आगे आई और अनेको उच्चकोटि के कलाकारों ने अपने गीत टेप कराये अन्यान्य देशों में वहाँ के स्थानीय ध्वनियाँ लोकप्रिय होने के कारण ऐसा प्रबन्ध कराना पड़ा कि वहाँ के निवासियों द्वार गाये बजाये गये टेप तैयार कराये जाँय। सो वहाँ से भी वैसा ही उत्साहवर्धक सहयोग मिला।

"आर फोर आर संस्था के पास इस समय लगभग दस हजार टेप हैं। जिनका उपभोग ५०० से अधिक संस्थाएँ नियमित रूप से करती हैं। टेप उधार दिये जाते हैं और उनका कोई शुल्क नहीं लिया जाता। सुनाने जाने में समय देने वाले प्रायः सभी कार्यकर्ता अवैतनिक कार्य करते हैं।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धीरे-धीरे उनका मिशन एक सुनिश्चित और सुव्यवस्थित कार्यक्रम बन गया जिसका उद्देश्य बना—संगीत के माध्यम से "रुग्णता पर अंकुश" इस आन्दोलन का नाम रखा गया आर फोर आर यह मिशन के लम्बे नाम का संक्षिप्तीकरण है—"रिकार्डिंग फार फिलैगजेशन, रेफ्लेक्शन, लेस्यान्स एण्ड रिकवरी।" इस आन्दोलन को न केवल प्रख्यात गायक-वादकों को वरन् स्वास्थ्य विशेषज्ञों, मनोविज्ञान वेत्ताओं और लोक-सेवियों, धर्मपरायण व्यक्तियों और कला संस्थाओं का भी समुचित समर्थन एवं सहयोग उपलब्ध है। बात अमेरिका तक सीमित न रही वरन् उसका विस्तार संसार के दूर देशों तक हुआ और असंख्य रोगियों ने आश्चर्यजनक लाभ उठाया।

राल्फ लारेन्स हाय पहले आल्कोवा कम्पनी में एक अच्छे पद पर काम करते थे। सेवा निवृत्त होने पर उन्होंने शटग झील के किनारे ब्रेनाड़सेविल नामक गाँव में अपना स्थायी निवास बनाया। उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति और सारा समय आर फोर आर आन्दोलन के लिए समर्पित किया है। यह उसका कार्यालय है। एक साधन सज्जित साउण्ड रिकार्डिंग थियेटर साथ ही बना हुआ है। जिसमें प्रायः १०० संगीतकार हर वर्ष आते हैं और निःशुल्क अपना संगीत रिकार्ड करा जाते हैं।

मिशन के द्वारा किये जाने वाले सेवा कर्म से रोगियों को शरीर और मानसिक रोगों में जिस उत्साहवर्धक मात्रा में सफलता मिलती है, उसका विवरण जानकर सभी इस अभिनव प्रयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं और जब-जब भावी कदम उठाने एवं पिछले क्रियाकलाप पर दृष्टिपात करने के लिए सेमीनार बुलाये जाते हैं तो उसमें सम्मिलित होने के लिएँ दूर-दूर से सभ्रान्त विशेषज्ञ उत्साहपूर्वक आते हैं।

उपरोक्त दो संगीत मिशन की चर्चा की गई है। आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे ही महान् मिशन संसार के हर कोने में स्थापित हों और उन्हें चलाने के लिए परमार्थ परायण व्यक्ति निःस्वार्थ सेवा करने के लिए आगे आये गवैये नचवैये यों हर जगह मौजूद हैं पर उनके सामने कोई लक्ष्य नहीं। पैसा और बाहवाही कमाने तक ही जिनकी आकांक्षायें सीमित हैं वे गा-बजा लेने पर ही संगीत के माध्यम से विश्वमानव की कोई बड़ी सेवा नहीं कर सकते। वैसा कर सकना तो वैसी ही "मिनशरी स्प्रिट" के लोगों के लिए सम्भव है जैसे कि ऊपर चर्चा की गई है।

संगीत की भावधारा से युग चेतना जुड़ें

संगीत किसी जमाने में मात्र मनोरंजन का विषय था। उससे शरीर में उमंगें उठती थीं और मन में तरंगें। थका-उदास व्यक्ति भी अपने में नवीन स्फूर्ति अनुभव करता था और टूटी हिम्मत भी पराक्रम दिखाने के लिए मचल उठती थी। उदासी की वह रामवाण दवा समझी जाती थी। प्रसन्नता द्विगुणित होकर आनन्द भरे वातावरण को और भी अधिक उत्तेजित कर देती थी। पुरातन मान्यताएँ इतने तक ही सीमित थीं। इसीलिए गायकों-वादकों की सर्वत्र माँग रहती थी। उनका समुचित सम्मान भी होता था और निर्वाह से अधिक ही पुरस्कार मिलता था।

पुरातन मान्यताओं के अनुसार स्वर्गलोक में अप्सराएँ प्रसन्नता का वातावरण बनाये रखकर अपनी महती भूमिका से उसका प्रभाव अनेकों गुना बढ़ा देती थीं। वहाँ की अन्य सुविधाओं की तुलना में अप्सराओं की उपस्थिति के कारण विनिर्मित संगीतमय वातावरण ही था जिसका काम जादू जैसा प्रभाव बनाकर उस स्थिति का निर्माण करना था, जिसे नादब्रह्म या शब्द ब्रह्म का सान्निध्य कहा जा सकता है।

पृथ्वी के सतयुगी वातावरण में यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, वही माहौल बनाते थे, जो स्वर्ग में देवियाँ-देवताओं की पत्नियाँ या कुमारिकाएँ बनाती थीं।

पृथ्वी पर जिन देवाताओं का बहुत परिचय है, उनमें शंकर को डमरू, सरस्वती को वीणा, कुण्डलिनी को नृसिहा कृष्ण को मुरली निनादित करते हुए दिखाया गया है।

रोज हनुमान करताल बजाते थे। यह सब अपनी क्षमता को सूक्ष्म जगत में उपयोगी परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए होता था। लोग ब्रह्म-चेतना द्वारा प्रस्फुटित नादयोग का श्रवण करते थे और ब्रह्मलीन रहने की स्थिति में पहुँच जाते थे।

विषाक्तता का सम्मिश्रण मध्यकाल में हुआ, जब उसके साथ दिव्य चेतना के स्थान पर कामुकता भड़काने वाले हेय प्रयोग आरम्भ हुए। सामन्तवादी युग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में शोषण उत्पीड़न के षड्यन्त्र ही चलते रहते थे। उसकी करुणा भरी चीत्कारों से पत्थर भी हिल उठते थे। उन दिनों आत्म प्रताड़ना एवं लोक भर्त्सना से नरमेघों के कर्ता भी हिल उठते थे, आत्मा बेचैन हो उठती थी। उस प्रहार की तिलमिलाहट को हल्का करने के लिए सुरा-सुन्दरी का आश्रय लिया जाने लगा। नृशंस नीरसता की कटुता को हल्का करने के लिए संगीत में कामुकता का समावेश किया गया। अमृत को विष बनाने की यह प्रक्रिया कलाकारों से तो बन नहीं पड़ी, मात्र वेश्याओं ने लोभ-लालच के लिए उन नृशंसों का मन बहलाना शुरू किया। इसके लिए अश्लील गायन-वादन के साथ-साथ अपना शरीर भी बेचना आरम्भ कर दिया। सामन्तों के सहकारी दरबारी भी अपनी प्रचण्डता दिखाने के लिए यही सब करने लगे। अनुकरण से ही तो उनका बड़प्पन सिद्ध होता था, अस्तु उनके भी विजयोत्सव रचने लगे। लूटमार से मिला वैभव कहाँ खर्च हो, इसके लिए सुरा-सुन्दरी के साथ-साथ कामुक संगीत की भी तीसरी विद्या जुड़ गई। यह संगीत के दुर्दिनों का दर्द भरा इतिहास है। इस मादकता में शोषितों ने कुछ राह पायी और शाषकों की उद्दण्डता द्विगुणित हो उठी।

सूर्य, चन्द्र पर ग्रहण लगते तो हैं, पर वे अधिक समय टिकते नहीं। अन्धड़ उठते हैं, चक्रवात उठते, पर वे कुछ ही समय अपनी विभीषिका दिखा पाते हैं, टिकाऊपन उनमें कहाँ होता है? साधारण मौसम ही सुहाता है और उसी में देर तक टिके रहने का प्रभाव होता है। दुर्दिन आते तो हैं, पर भूत की तरह उनकी आयु थोड़ी ही होती है।

मध्यकालीन अन्धकार युग के विनाश को सम्भालने सुधारने के लिए सन्तों का उदय हुआ। जनता के गिरे हुए मनोबल और छाये हुए अज्ञान को देखते हुए उन्हें लोकशिक्षण के लिए एकमात्र संगीत माध्यम ही उपयुक्त जँचा, फलतः अधिकांश ने उसे अपनाया और कीर्तन का अवलम्बन अपनाया। नारद परम्परा को—चैतन्य महाप्रभु ने नवजीवन प्रदान किया। इसके अतिरिक्त उस सन्तकाल में प्रायः सभी ने यही एक राह अपनायी। सन्तों की मण्डलियाँ वस्तुतः कीर्तन मण्डलियाँ थीं। जिस प्रकार तीर्थयात्राएँ, धर्म प्रचार की पद यात्राएँ होती थीं, उसी पुरातन व्यवस्था को इन सन्त मण्डलियों ने अपनाया और समय की विद्रूपना से अपना बचाव करते हुए भक्ति प्रचार को आगे रखते हुए समय के अनुरूप ढलने, बदलने के लिए जन-साधारण को प्रबुद्ध किया। भक्ति को उनने शक्ति का माध्यम बनाया। संगीत से भावनाओं को उभारते हुए उसे दिशा में बहाया, जिससे विदेशियों, विधर्मियों, बेदर्दियों के विरुद्ध तन कर खड़े होने और चींटियों के मिल कर आक्रमण करने पर हाथी को गिरा देने की बात कही।

देश के सुदिन लौटाने में इस संगीत आन्दोलन ने वह भूमिका निवाही जो प्रतिकार के लिए सन्निद्ध हुई सेना कर सकती थी। मनुष्य बुद्धि प्रधान दीखता तो है, पर वस्तुतः उसकी मूल सत्ता है—भाव-प्रधान। भावनाओं से उद्वेलित व्यक्ति साधनों के अभाव में भी शिवाजी प्रताप, छत्रसाल, बन्दा बैरागी जैसी आदर्शवादिताएँ अपना सकता है। बुद्धि तो नफा-नुकसान का लेखा-जोखा ही लेती रहती है। अनाचारों से जूझने और अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करने में भावनाएँ ही उच्चस्तरीय भूमिकाएँ निभाती है। बुद्धि तो केवल योजनाएँ बनाती रहती है, लाभ पक्ष को प्रमुखता देती रहती है। पर आदर्शों को अपनाने में जो कष्ट सहन करने पड़ते हैं, उनके लिए आवश्यक प्रेरणा एवं क्षमता भाव क्षेत्र से ही उपलब्ध होता है। भावनाओं को मर्मस्थल तक पहुँचाने के लिए संगीत से बढ़कर और कोई माध्यम नहीं है। सृजनात्मक हो या संघर्षात्मक, गुरुद्वारों को विशेष रूप से यह विद्या अपनानी पड़ी, क्योंकि सन्त-सिपाही खड़े करने थे। देवालयों में अर्चना का यह एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया। कहीं-कहीं तो अखण्ड कीर्तनों का भी आयोजन होने लगा। उन्हें नारद की वीणा का वह चमत्कार ध्यान में छाया रहा, जिसमें उत्पन्न प्रवाह शक्ति ने वाल्मीकि जैसे को उलटा था और ध्रुव प्रहलाद ही नहीं, पार्वती, सुकन्या, सावित्री तक को दिशा दी थी। उसे अपनाना सामान्य आधार पर सम्भव नहीं था। जहाँ व्यक्ति का व्यक्तित्व अपनी ऊर्जा से जन-साधारण को उभारता है। वहाँ उसमें संगीत सोने में सुगन्ध का काम करता है। भावनाएँ उभरने पर ही व्यक्ति जोखिम भरे काम कर सकता है और उच्च आदर्शवादी प्रयोजनों में जुट सकता है। चन्द्रवरदायी ने पृथ्वीराज को और शिवावावनी ने शिवाजी की मृत्यु तक से जूझने को साहस दिया था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संगीत की महत्ता इसलिए घटी, उसकी अवमानना इसलिए हुई कि उसे घटिया लोगों द्वारा घटिया प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा। फिल्मी गानों से नाक भी इसलिए सिकोड़ी जाती है कि उनके प्रभाव से अपरिपक्व बुद्धि को कुमार्ग पर चल पड़ने का खतरा उठाते हुए देखा गया है। दूध में मक्खी पड़ जाने से वह रस से विष हो जाता है। कामुकता और शृंगारिकता की उत्तेजना भर देने पर उसकी गरिमा भी नष्ट होती है और उपयोगिता भी। सामन्तयुग के उपरान्त शृंगारिकता ने फिल्मों के कोंतर में छिपकर अपना व्यवसाय जारी रखा। यही कारण है कि ऐसे माहौल में समझदार लोग अपने लड़के-लड़कियों को जाने से रोकते हैं। यदि उस प्रवाह में उत्कृष्टता और आदर्शवादिता को प्रश्रय मिला होता तो संगीत ने आज की विकृतियों के निवारण और सत्प्रवृत्तियों के सम्बर्धन में महती भूमिका निभाई होती। जिनने इस तथ्य को समझा और अपनाया है। उनने आज की परिस्थितियों में भी संगीत की गरिमा को स्थिर रखा है।

युद्धों में कभी तीर कमान का प्रचलन था। बाद में तलवारें काम आने लगीं। पीछे बन्दूकें चलीं और अब बमों का जमाना है। समय और परिस्थिति के अनुसार प्रचार माध्यम भी बदलते हैं। युग सन्धि की इस प्रभात बेला में हमें संसार के तीन चौथाई अशिक्षितों को अभीष्ट जानकारियाँ और प्रेरणाएँ देने के लिए युग संगीत को ही अपनाना पड़ेगा। अभी भी लोकगीत अपने-अपने क्षेत्रों में स्थानीय संस्कृति को बचाये हुए है। मानव-संस्कृति को बचाने के लिए हमें दिशा में अधिक व्यापक रूप से अधिक योजनाबद्ध ढंग से आगे बढ़ना होगा। वही किया भी जा रहा है।

शान्ति-कुंज के युग शिल्पी सत्रों में प्राय: आधा श्रम संगीत प्रशिक्षण के लिए कराया जाता है। उसी के साथ बीच-बीच में टिप्पणियाँ लगा देने से एक नया स्वरूप निखरता है, जिसे भजनोपदेशक स्तर कहा जा सकता है। सर्वसाधारण को युग चेतना हृदयंगम कराने के लिए यह सर्व सुलभ और व्यापक क्षेत्र में अपना अलौकिक वितरण करने वाला माध्यम है।

सभी समर्थ शाखाओं में प्रज्ञा प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम चालू होने जा रहे हैं। उसमें भी प्राय: आधार संगीत ही है। नये संगीत भी गायकों को मिलते रहें, इसकी विशेष व्यवस्था की जा रही है। अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में प्रज्ञा गीतों के अनुवाद होते चलें, इसका क्रम भी चलेगा। भारत की १६ मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं। उन सभी में, यहाँ तक कि विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न आदिवासियों में बोली जाने वाली बोलियों में भी इनके अनुवाद होंगे। संगीतों के ऑडियो टेप तथा वीडियो पर दिखाये जाने वाले अभिनय समेत संगीत बनाने की भी व्यवस्था साथ ही की जा रही है।

साहित्य माध्यम से युग चेतना का प्रचार-संचार पहले से ही किया जा रहा है। अब संगीत माध्यम को भी उसके साथ जोड़कर शिक्षियों की तरह अशिक्षितों के लिए भी नया मार्ग खोला जा रहा है।

अशिक्षित, पिछड़े हुए देहातों में रहने वाली भारत की बहुसंख्यक जनता को प्रगति की सर्वतोमुखी प्रेरणा देने के लिये दो ही आधार प्रधान रूप से फलप्रद हो सकते हैं, एक कथा कहानी का और दूसरा संगीत का उपयोग। हमें इन दोनों को ही साथ लेकर चलना होगा। भावनात्मक नव निर्माण के लिये—बौद्धिक नैतिक और सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता पूरी करने के लिये इन अस्त्र-शस्त्रों का उपयोग आवश्यक है।

कथा-संस्मरणों के प्रेरक प्रसंग जुटाने के लिए मासिक युग-निर्माण योजना स्वतन्त्र रूप से निकाली जा रही है। जीवन-चरित्रों की एक लम्बी सीरीज प्रकाशित की गई है। कितनी ही पुस्तकें इस प्रयोजन के लिये छापी गई हैं ताकि प्रवचन शैली में उनका समुचित समावेश करके जन-मानस के नव-निर्माण को प्रयोजन भली प्रकार पूरा किया जा सके।

संगीत की शिक्षा पुस्तकों से नहीं प्रत्यक्ष अभ्यास से ही हो सकती है। संगीत यों, एक समय-साध्य लम्बी साधना है। उसका अभ्यास करने के लिये अवकाश भी चाहिये और सुविधा भी। अपने देश की आज जो स्थिति है उसमें लम्बे समय के उपरान्त फल देने वाले किसी कार्य को हाथ में नहीं लिया जा सकता। वर्तमान स्थिति को आपत्तिकालीन मानकर उसका मुकाबला करने के लिये हमें युद्धस्तरीय तात्कालिक उपाय काम में लाने होंगे।

लोक-मानस में प्रगतिशील चेतना उत्पन्न करने के प्रति महत्वपूर्ण अस्त्र संगीत को हमें आज ही प्रयोग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करना है और उसकी तैयारी की अवधि न्यूनतम रखनी है। ताकि अधिक सैनिक स्वल्प समय में कामचलाऊ प्रशिक्षण कर लड़ाई के मोर्चे पर भेजे जा सकें और सर्वनाश पर तुले हुए शत्रु के दाँत खट्टे कर सकें।

संगीत-शिक्षण की स्वल्पकालीन शिक्षा योजना इसी दृष्टि से बनाई गई है और एक-एक महीने के सत्रों की क्रम शृंखला कार्यान्वित की गई है। समय और उद्देश्य की संगति तो नहीं मिलती। इतनी बड़ी आवश्यकता इतने कम समय में कैसे पूरी हो सकती है? यह बात सामान्य रूप से नहीं समझी जा सकती। इसके लिए उन कुशल इन्जीनियरों का क्रिया-कलाप निकट से देखना होगा जो युद्ध कूच के लिए बढ़ती जा रही सेना के लिए दो ही दिन में नदी को पार कर करने योग्य पुल बनाकर खड़ा कर देते हैं। एक महीने के संगीत सत्र शिक्षण को इसी स्तर का प्रयोग समझा जाय।

गायनों के मीटर और ध्वनि-प्रवाह दस की संख्या में सीमित कर दिये गये हैं। उतने ही दायरे में विविध स्तर की प्रेरणाएँ देने वाले अभिनव गीत मिशन के गीतकारों से लिखाये गये हैं तथा जो अन्यत्र से मिले हैं वे संकलित किये गये हैं। अधिक समय अनेकानेक ध्वनियों में गाये जाने वाले विभिन्न मीटरों पर बने हुए गीतों के अभ्यास में लगता है। यदि उनकी संख्या सीमित हो तो अभ्यास में इतनी अधिक देर नहीं लगेगी।

पिछले कई वर्षों से साधना-सत्रों में इस सुगम संगीत शिक्षा प्रक्रिया का प्रयोग किया गया और वह अपना लक्ष्य पूरा करने में सफल सिद्ध हुई है। जिनका गला थोड़ा भी साथ देता था और जिनकी बुद्धि में थोड़ी-सी भी पकड़ थी वे एक महीने में ही इस योग्य बन गईं कि वे कीर्तनकार की—रामायण, कथावाचक की—भजनोपदेशक की कामचलाऊ आवश्यकता पूरी कर सकें।

यह स्पष्ट रूप से समझ लिया जाना चाहिए। शौकीनी के लिये तरह-तरह की कलाएँ सीखकर अपना और अपने मित्र, कुटुम्बियों को मनोरंजन करते रहने कि लिये संगीत सिखाने का हमारा इरादा बिलकुल भी नहीं है। व्यक्तिगत शौकीनी की पूर्ति के लिये अनेक लोग अपने ढंग से अपनी-अपनी सुविधाएँ जुटाते हैं वैसा ही उन्हें भी करना चाहिए। शान्ति-कुन्ज में चले रहे अन्य प्रशिक्षणों की तरह संगीत सत्र का भी यही उद्देश्य है कि सीखे हुए लोग युग गायक की भूमिका निबाहें अपने जीवोपार्जन कार्यों से बचा हुआ अवकास का समय वे अपने क्षेत्र में जन-जागृति के लिये लगाया करें। उनकी संगीत शिक्षा का—लाभ जन-मानस को ऊँचा उठाने में एक महत्त्वपूर्ण आधार मिलने के रूप में उपलब्ध होगा। जिनके मन में ऐसी सेवा भावना उठती हो—जो अपनी संगीत उपलब्धि से लोक-मगंल की दिशा में समाज को कुछ अनुदान देने की उदारता उमंगती हो उन्हीं की इन संगीत सत्रों में आने की सार्थकता है। वस्तुस्थिति को और भी अधिक स्पष्ट करने की दृष्टि से इस शिक्षण का नाम संगीत सत्र न रखकर भजनोपदेशक सत्र कर दिया है ताकि शिक्षार्थी को विदित रहे उसका यह प्रयास एक युग-गायक बनने के लिए है समाज को नवचेतना एवम् नव प्रेरणा देने के लिए उसने अपनी योग्यता विकसित करने का कदम बढ़ाया है।

एक बात और भी स्पष्ट है कि संगीत हर किसी को नहीं आ सकता। इसके लिए गले की मधुरता—स्वरताल को पकड़ सकने की आवश्यक सूझ-बूझ और लय-ताल को समझने की सूक्ष्म बुद्धि आवश्यक है। इसीलिए हर क्षेत्र से पूछा गया है कि पिछले दिनों वे अपनी संगीत अभिरुचि को कार्य रूप में परिणित करने के लिए कुछ प्रयत्न करते रहे हैं और उन प्रयासों में कितने सफल-असफल रहे है? शिक्षार्थियों को यह निर्णय स्वयं ही करना चाहिये या अपने समीपवर्ती किन्हीं संगीत ज्ञाता से पूछकर यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि वे इस शिक्षा के लिये उपयुक्त हैं या नहीं। मात्र उत्साह के आधार पर संगीत क्षेत्र में सफल नहीं हुआ जा सकता उसकी प्रकृति प्रदत्त मूल क्षमता उस स्तर की होनी चाहिए तभी प्रयत्न और परिश्रम सार्थक हो सकेगा। अपने गले तथा संगीत सम्बन्धी पकड़ की उपयुक्तता सम्बन्धी सन्तोष करने के पश्चात् ही आवदेन पत्र भेजना उचित है। आमतौर से 'टैस्ट' के बाद ही ऐसे प्रशिक्षणों में भर्ती की जाती है। वह प्रयोजन उधर ही पूरा कर लिया जाय और उपयुक्त शिक्षार्थी ही आवें तो उस थोड़ी अवधि में भी यहाँ की अति शिक्षण-प्रक्रिया का संकुचित लाभ उठाया जा सकेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हारमोनियम, ढोलक, तवला, मजीरा, घुँघरू, चिमटा, ढपली, करताल आदि बाजों को कामचलाऊ प्रशिक्षण किये जाने की बात इन तीन महीने में इतनी बन जाती है कि आगे जाकर उस आधार पर जारी रखा गया। अभ्यास संगीत में किसी को भी निपुण सुयोग्य बना सकता है।

हमारे गीत प्रेरक, विचारोत्तेजक मार्ग-दर्शक और समय की पुकार के अनुसार जनमानस को मोड़ने वाले होने चाहिए। इसी प्रकार के गीत शिक्षार्थियों को सिखाये जाते हैं कि जहाँ भी जायँ अच्छे कीर्तनकार की—तुलसीकृत एवं राधेश्याम रामायण कथा वाचक की आवश्यकता पूरी कर सकें। अच्छे कीतर्नकार सिद्ध हो सकें और जनजागरण के उपयुक्त गीतों से लोक-मानस झंकृत कर सकें।

हमारा लक्ष्य प्रधानतया देहात है तो भी यह शिक्षण शहरी अथवा सुशिक्षित वर्ग के लिये कम आकर्षक नहीं है। उसे गंवारू नहीं कहा जा सकता। उसका स्तर बनाये रखने की पूरी-पूरी सतर्कता रखी गई है। गायन के साथ-साथ गीतों की व्याख्या करने की शैली भी अपने गायनों के साथ जुड़ी हुई है। अभिनय का भी सामान्य ही ज्ञान कराया जायेगा । ताकि शिक्षार्थी जहाँ अवसर हो वहाँ अधिक आकर्षक सांस्कृतक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सके। समय ही बतावेगा कि युग-परिवर्तन में इस छोटे से प्रयास ने कितना अधिक योगदान दिया है और अपनी कितनी सार्थकता सिद्ध की है।

युग संगीत का जन-जागरण में योगदान

भाषण का पूरक है—गायन। गायन की अपनी सरसता, आकर्षण क्षमता और मस्ती है। यदि ऐसा न होता तो कोयल की कूक, भौंरे की गुंजन क्यों सराही जाती। वीणा-वादन से मनोमुग्ध होकर क्यों चौकड़ी भरते और साँप सपेरे के जाल में फँसते। दीपक राग, मेघ मल्हार के प्रवीण पारंगत तो अब नहीं रहे जो बुझे दीपों को जला दें या मेघों को बरसने के लिए विवश कर दें फिर भी गायन का जनजीवन में विशेष स्थान है और वह अनादि काल से अनन्त काल तक यथावत चलता रहेगा। योगाभ्यासी नाद ब्रह्म के कलाकार शब्द ब्रह्म की साधना करते हैं। मोर, पपीहा, समय-समय पर अपनी वाणी बोलते, पक्षी चहचहाते और कलरव सुनाते हैं। सृष्टि के अन्तराल में ॐकार का शब्द गुंजन ही काम करता और पदार्थों को—प्राणियों को गति प्रदान करता है।

ब्रह्मा ने तीन वेद रचे। चौथा सामदेव तो उन्हीं ऋचाओं को स्वरबद्ध करने की दृष्टि से सृजा गया। सामगान के बिना ऋचाएँ अन्तराल को भाव तरंगित करने में समर्थ ही नहीं हो पाती। मन्त्रों में स्वर शास्त्र का भी समावेश है। ये गायन के योग्य शब्द-गुंजन में गूँथे गये हैं। इसके अतिरिक्त भी संस्कृति साहित्य की संरचना छन्दबद्ध रूप में की गई। कथा-पुराण ही नहीं आयुर्वेद ज्योतिष जैसे विज्ञान प्रयोजन के ग्रन्थ तक पद्य रूप में लिखे गये ताकि वे गाये-गुनगुनाये और स्मरण रखे जो सकें। संस्कृत साहित्य का व्याकरण, शब्दकोष जितना महत्त्वपूर्ण है उतना ही उसका छन्द शास्त्र भी अनुपम है, उसमें भावविभोर करने वाले स्वर ताल का ऐसा समावेश है कि वर्तमान फिल्मी गायकों के ध्वनि प्रवाह को उस पर निछावर किया जा सके।

मध्यकाल में सभी संतों ने अपनी वाणियाँ छन्दबद्ध रूप में की हैं। उनका प्रचार भी भजन कीर्तनों के रूप में हुआ है। शब्दकोष और छन्दशास्त्र में जिनकी गहरी गति नहीं थी फिर भी अपने भावावेश और लोक-शिक्षण को चरितार्थ करने के लिए जैसे भी बने वैसे पद्य बनते रहे हैं। सन्त साहित्य गायन प्रधान है। चैतन्य, मीरा, सूर, कबीर, तुलसी, दादू आदि सभी की रचनाएँ इसी दृष्टि से हुईं कि वे गाईं जा सकें। उन दिनों लोकशिक्षण गायन प्रधान रहा है। भगवत् भक्ति की भाव तरंगें जोड़ने के लिए तो इसके बिना काम चलता ही नहीं। नारद को वीणा बजाते हुए इसी निमित्त सदा देश-देशान्तर में भ्रमणशील रहना पड़ा।

अपने समय में भी परम्परा घटी नहीं, बढ़ी ही है। फिल्मी रिकार्डों और गायनों को बड़े से लेकर बच्चों तक की जवान पर देखा जा सकता है। फिल्मों की सफलता बहुत कुछ उनके गीतों पर निर्भर रहती है। ग्रामोफोन और लाउडस्पीकर प्रधान रिकार्ड ही बजते रहते हैं। नाटक मंच भी गीत प्रधान होते हैं। विवाह शादी से लेकर उत्सव, आयोजनों के समारोहों में गीत वाद्य के बिना गति नहीं। सावन भर मल्हारों की—होली के दिनों में फागों की धूम रहती है। रामलीला, भजन, कीर्तन आदि में से यदि गीतवाद्य को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हटा दिया जाय तो फिर इसका प्राण ही निकल जायेगा।

प्रस्तुत विपन्नता को आस्था संकट का नाम दिया गया है। मानवी गरिमा के अनुरूप उत्कृष्ट आदर्शवादिता का परित्याग करने के फलस्वरूप ही अनेकानेक विग्रह व्यवधान एवं संताप खड़े हुए हैं। सब कुछ होते हुए भी दुर्बल, दरिद्रों और पिछड़ों से भी गई गुजरी स्थिति में लोगों को रहना पड़ा है। इसका कारण भावना स्तर की गिरावट के अतिरिक्त और कहीं नहीं खोजा जा सकता। बिखराव, टकराव, अभाव और पराभव का उद्भव केन्द्र एकमात्र भाव संकट है। अन्यथा वैज्ञानिक, आर्थिक एवं बौद्धिक प्रगति ने जितने सुविधा साधन उपलब्ध कराये हैं, उन्हें देखते हुए भूतकाल की तुलना में आज अनेक गुनी प्रसन्नता और सम्पन्नता भरा वातावरण दृष्टिगोचर होना चाहिए था। आश्चर्य की बात है कि हो सर्वथा उलटा रहा है। साधनों की कमी वाला अतीत आज के विपुल वाले समय की तुलना में कहीं अधिक सुख शान्ति से भरा-पूरा था। उपस्थित विनाश विभिषिकाएँ भावना क्षेत्र के पतन-पराभव से उपजी हैं, उनका निराकरण मानवीय अन्तराल के मर्मस्थल तक पहुँचने पर हो सकता है। बौद्धिक शिक्षण से ही अधिक इस प्रयोजन के लिये भावनाओं को तरंगित करने वाले आधार का महत्व है। कहना न होगा कि इस निमित्त वादन को—भजन संगीत को प्रमुखता देनी चाहिए।

युगसृजन के लिए वाणी की शक्ति का उपयोग करने की बात कही गई है। इसके लिए संभाषण परामर्श एवं भाषण प्रवचन का महत्त्व बताया गया है। इसी गद्य पक्ष का उत्तरार्ध पद्य है। यही कारण है कि कथा के साथ कीर्तन को अविछिन्न रूप से जोड़ा गया है। युगान्तरीय चेतना का आलोक वितरण मात्र कथनो के सहारे समग्र रूप से नहीं बन पड़ेगा, उसके साथ युग संगीत को भी समन्वित करना होगा। दो पहियों की गाड़ी तभी ठीक तरह पटरी पर चलेगी। वैयक्तिक एवं सामूहिक क्षेत्रों में भावोत्कर्ष के लिए संगीत की सहायता अनिवार्य रूप से लेनी पड़ेगी। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता।

प्रज्ञा आयोजनों में आयोजकों की जो जीप टोलियाँ भेजी जा रही हैं उसमें भेजे जाने वालों को संगीत के सहारे जन जागरण की प्रक्रिया सम्पन्न करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। समारोह प्राय: ढाई घण्टे के होते हैं इनमें डेढ़ घण्टा का संगीत और एक घण्टा का प्रज्ञा पुराण प्रवचन रखा गया है। स्पष्ट है कि संगीत माध्यम में लोकमानस की भाव संवेदना गुदगुदाना ही इस अभिनव निर्धारण का लक्ष्य है।

स्थानीय स्तर पर अनेकों आयोजन सभी जागृत केन्द्रों को बार-बार करने होते हैं। दोनों नवरात्रियों में नौ-नौ दिन के साधना सत्रों की धूम रहती है। उसमें प्रात: जप अनुष्ठान और रात्रि को ज्ञानयज्ञ, कथा कीर्तन का प्रावधान है। इन अठारह दिनों में सर्वत्र युग संगीत को भी सम्मिलित रखा जाना चाहिए। मात्र सूखे प्रवचनों से ही अभीष्ट की सिद्धि बन नहीं पड़ेगी। उसके अतिरिक्त बसंत पर्व, गायत्री जयन्ती, गुरु पूर्णिमा आदि पर्वों का भी अपना महत्त्व है। वे भी समारोह-पूर्वक मनते हैं। निर्धारित धर्मानुष्ठान के अतिरिक्त सभी में प्रवचन का निर्धारण रहता है। उनमें संगीत के समावेश की आवश्यकता भी समझी और जुटाई जानी चाहिए। जन्म-दिवसोत्सवों को प्रज्ञा चक्र घुमाने की पंचसूत्री योजना में अनिवार्य माना गया है। उस अवसर पर भी उद्बोधन कम और संगीत अधिक होना चाहिए। हर्षोल्लास के वातावरण में इसी आधार पर चार चाँद लगते हैं। विवाह-शादियों में यदि गीत मंडली को हटा दिया जाय तो फिर नीरसता छाई रहेगी। यही बात बच्चों के संस्कार—बड़ों के जन्मदिन—सामूहिक पर्व आयोजन के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। समय-समय पर गायत्री यज्ञों और युग सम्मेलनों के छोटे-बड़े आयोजन होते रहते हैं। उन सभी को संगीत प्रधान बनाने की प्रक्रिया जुड़ी रहती है। अब उसे और भी अधिक सुव्यवस्थित करने एवं स्तर बढ़ाने की आवश्यकता समझी जानी चाहिए।

इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि प्रज्ञा केन्द्र में सुगम संगीत को शिक्षण व्यवस्था हो। इसके लिए वैसा ही प्रयास किया जाय जैसा कि प्रौढ़ शिक्षा, बाल संस्कारशाला आदि के निमित किया जा रहा है। सभी वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र स्वयं संगीत का अभ्यास करें। पहले स्वयं छात्र बनें। इसके उपरान्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्पर्क क्षेत्र के अन्य कलात्मक रुचि वालों को उस प्रशिक्षण में सम्मिलित करें। इस प्रकार हर स्थान पर कुछ ही समय में एक गायक मण्डली का गठन हो सकता है।

यह कार्य शास्त्रीय संगीत की विधा अपनाने से संभव नहीं। लोकगीत के रूप में ही इसे सर्वसुलभ और लोकप्रिय बनाया जा सकता है। कम समय में काम चलाऊ अभ्यास करना हो तो पेचीदा पद्धति नहीं अपनाई जा सकती है। लम्बी अवधि में ही अच्छी प्रवीणता हस्तगत हो सकती है। इतना अवकाश प्रस्तुत परिस्थितियों में है नहीं। इस विपत्ति बेला में एक-एक क्षण भारी पड़ रहा है। ऐसी दशा में यही उपयुक्त समझा गया कि थोड़े समय में अधिक युग गायक बनाने की विधि अपनाई जाय। भले ही इस कारण कुछ हलके स्तर का गायन वादन ही सीखा और कार्यान्वित किया जा सके।

शांतिकुंज के युगशिल्पी विद्यालय में एक महीने का पाठ्यक्रम है। उसमें ढपली, मँजीरा, चीमटा, खड़ताल, बंगाली तमूरा इन चार वाद्यों का अभ्यास कराया जाता है। जिन्हें अधिक समय अभ्यास जारी रखना हो, उनका शिक्षण काल बढ़ भी सकता है। फिर भी होना यह चाहिए कि हर समर्थ प्रज्ञा संस्थान अपने यहाँ ऐसे संगीत सत्रों की व्यवस्था करें, जिससे उत्साही भावनाशीलों को यह प्रक्रिया सिखाई और प्रचारक मण्डली गठित की जा सके। स्थानीय कार्यक्रमों के लिए इस मण्डली से काम चलाना पड़ेगा। समीपवर्ती कार्यक्रमों में भी वह जाती और आयोजनों को अधिक आकर्षक बनाने में काम आती रह सकती है। प्रभातफेरी तो इस संगीत मण्डलियों द्वारा अपने-अपने नगर में नित्य भी निकाली जा सकती है। जन जागरण की दृष्टि से उसका प्रभाव भी कम न होगा। ऐसे शिक्षक हर जगह मिल सकते हैं जो एक-दो महीने का—दो-दो घण्टे का—सुगम संगीत स्तर की शिक्षा दे सकें। ढूँढ़ने और उत्साहित करने पर ऐसे छात्रों की भी कहीं कमी न रहेगी। भाग-दौड़ करने, संगति बिठाने और साधन जुटाने की आवश्यकता तो कोई भी नया ढांचा खड़ा करने में पड़ेगी ही। संगीत शिक्षा के लिए एकबार दो महीने का सत्र लगा देने, उसका खर्च किसी प्रकार वहन कर लेने भर से यह देखने में छोटा किन्तु लक्ष्य पूर्ति की दृष्टि से बहुत बड़ा कार्य सरलतापूर्वक सम्पन्न हो सकता है।

एक महीने के लिए युगशिल्पी सत्रों में आने वाले, स्वयं तो निर्धारित संगीत पाठ्यक्रम का अभ्यास अपने लिए कर सकते हैं, पर यह नहीं कहा जा सकता कि वे वापिस लौटने पर अध्यापक स्तर की भूमिका निभा सकेंगे या नहीं। ऐसी दिशा में यह अधिक अच्छा होगा कि जिन्हें पहले से ही संगीत की थोड़ी जानकारी हो और जो सेवा भावना से शाखा का संगीत सत्र चलाने की मनःस्थिति में हो, उन्हें प्रोत्साहित करके प्रशिक्षण के लिए शांतिकुंज भिजवाया जाय। लौटने पर वे दो महीने का स्थानीय सत्र चलायें। इससे पूर्व उसके लिए छात्रों की भर्ती कर रखी जाय—स्थान ढूँढ़ा जाय और सीखने के लिये वाद्ययन्त्रों का शाखा की ओर से प्रबन्ध कर रखा जाय। उपरोक्त पाँच बाजों का सैट प्रायः, सत्तर से पचहत्तर में बन जाता है। पाँच सैटों से एक छोटे विद्यालय का काम चल जाता है। हारमोनियम, तबला भी अपना हो तो विद्यालय की शान रहेगी। यह वस्तुएँ माँगकर भी संग्रह की जा सकती हैं। विद्यार्थी अपना-अपना खरीद लें यह भी हो सकता है और शाखा के पास कुछ राशि हो तो उससे भी यह सारे साधन खरीदे जा सकते हैं। रोशनी, बिछावन, बोर्ड आदि कुल मिलाकर एक हजार से भी कम में एक अच्छे विद्यालय का ढांचा खड़ा हो सकता है। अध्यापक और छात्र जुटाना ऐसा कार्य है, जिसके लिए पूँजी की आवश्यकता नहीं पड़नी चाहिए। जहाँ लोगों में इतनी भी सेवा भावना न हो, पढ़ाने और पढ़ने का भी पैसा मांगें, वहाँ लोकसेवा का वातारवण भी क्या बनेगा। फीस लेकर को भी हर जगह हर स्तर के विद्यालय चलते हैं। वही अपने को भी करना पड़े तो समझना चाहिए कि मिशन भावना के अभाव में इस प्रकार की योजना बनाना ही व्यर्थ है।

संगीत विद्या का सदुपयोग होना चाहिए

संगीत केवल विद्या है, वह एक महाशक्ति है। प्राचीन काल में संगीत के बल पर प्राकृतिक शक्तियों को भी मनचाही दिशा में मोड़ा जा सकता है। वैजूबाबरा के सम्बन्ध में विख्यात है कि वे जब अपनी रागनियाँ छेड़ते तो तपती धूप में भी घने मेघ आकाश में मण्डराने लगते और वर्षा आरम्भ हो जाती। दीपक राग की उच्चस्तरीय सिद्धि में अभ्यास से बुझे हुए दीपकों को भी अपने आप जल उठना पड़ता था।

काफी समय तक यह कला राजदरबारों और सामन्तों के पहुँच क्षेत्रों में ही रही। जनसाधारण तक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसका आस्वाद पहुँचना लगभग असम्भव ही रहा। पर जब से विज्ञान ने मानवी चेतना के प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रभाव दिखाया तब से यह विद्या जन-जन के लिए भी आस्वादनीय बनी। अब हर किसी को ट्रान्जिस्टर, रेडियो और रेकोर्डप्लेयरों के माध्यम से यह कला सुलभ हुई है।

लेकिन अभी तक यह कला केवल मनोरंजन का साधन ही बनी हुई है। हालांकि किसी भी रूप में संगीत को अपनाया जाय वह व्यक्ति के मनःक्षेत्र को तो स्पर्श करता ही है और उसके आस-पास के वातावरण को प्रभावित कर लेता है। पिछले समय में जब संगीत साधना का विषय रहा तव इसका प्रभाव न केवल मनुष्य पर ही देखा गया वरन् पशुओं को मुग्ध करने, साँपों को शयन करने; हाथियों को वश में करने से लेकर फूल खिला देने और पत्थर पिघला देने के विभिन्न रूपों में सचराचर जगत पर देखा गया।

यों तो अभी भी सपेरे बीन बजाकर सापों को बदलाते हैं, शिकारी धुँधुरूओं की आवाज से खरगोश और हिरण जैसे द्रुतगामी जानवरों का शिकार करते हैं। पर यह विशेषतायें किसी रचनात्मक प्रेमरणाओं और भावनाओं को अभी जागृत नहीं करतीं । प्राचीन काल में जब संगीत की शक्ति को पहचाना गया तो उसे स्वरब्रह्म की संज्ञा दी गयी और पूर्वजों ने इस कला को नियमबद्ध कर शास्त्रीय संगीत का रूप दिया। राग-रागनियों की खोज हुई-उनके समय और विधि की खोज की गयी ताकि इस महाशक्ति द्वारा अभिष्ट परिणाम उत्पन्न किये जा सकें। लेकिन साधनों के अभाव में यह कला एक वर्ग विशेष तक ही सीमित रही।

अब जबकि साधनों की प्रचुरता है तो यह कला मनोरंजन का साधन मात्र ही बनी हुई है। फिर भी इसका प्रत्यक्ष प्रभाव तो अभी भी देखा और अनुभव किया जा सकता है। मधुर गीत सुनकर लोग झूम उठते हैं, लाख कोशिश करते हुए भी संगीत का जादू सिर चढ़कर बोलने लगता है और अनचाहे भी व्यक्ति उस धारा में बहने लगता है जो स्वरसाधक ने बहादी हो। कोई करुणगीत सुनकर लोगों की आँखों से अपने आप आँसू उमड़ने लगते हैं। वीर रस की भावनायें प्रवाहित होती हैं तो लोगों की भुजायें फड़कने लगती हैं और आततायी के प्रति इतना आक्रोश उत्पन्न होता है कि यदि उसका बस चले तो उसे चकनाचूर ही कर डाले।

सिनेमा की लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण यह महाशक्ति ही है। चित्रपट पर दिखाये जाने वाले प्रत्येक दृश्य में संगीत द्वारा ही अभीष्ट वातावरण तैयार किया जाता है जो व्यक्ति की चेतना को भी अपने में घोल लेता है। अब तो वैज्ञानिक प्रयोगों से भी यह सिद्ध हो चुका है कि संगीत न केवल मन तथा आत्मा को प्रभावित करता है वरन् शारीरिक स्वास्थ्य पर भी उसका अनिर्वचनीय प्रभाव पड़ता है। पिछले दिनों लन्दन की एक स्वास्थ्य विज्ञान—पत्रिका ने प्रकाशित किया था कि रोगी व्यक्तियों को यदि नियमित रूप से थोड़ी देर संगीत सुनाया जाय तो वे शीघ्र ही बिना किसी उपचार के आरोग्यलाभ कर सकते हैं। न्यूयार्क के डा. एडवर्ड पौरोलासकी ने लम्बे अन्वेषण के बाद यह सिद्ध किया कि संगीत के स्वर शरीर में एक विशेष प्रकार का कम्पन उत्पन्न करते हैं। जिससे रक्त का संचरण तीव्र हो जाता है। फलस्वरूप शरीर के अन्दर स्थान-स्थान पर रुका हुआ विषैला एवं विजातीय तत्व विचलित होकर शरीर से बाहर निकल जाता है, जिससे रोगी को स्वस्थ होते जरा भी देर नहीं लगती।

मन में आत्मा और शरीर पर इस प्रकार संगीत का असाधारण प्रभाव पड़ता है। साथ ही आध्यात्मिक दृष्टि से भी संगीत का प्रभाव असाधरण है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने संगीत की तत्सम्बन्धी विशेषता को स्पष्ट करते हुए कहा है—'संगीत सुनकर तो आत्मा भी जाग उठती है। जिस मनुष्य में संगीत का गुण है, उसमें ईश्वर की शक्ति का होना भी अनिवार्य है। आध्यात्मक साधना क्षेत्र में उच्च भूमिका सम्पन्न व्यक्ति जानते है कि अनहद नाद की अनुभूति भी एक उच्च श्रेणी की सिद्धि है और यह बहुत कुछ संगीतमय ही है।

उच्चस्तरीय आत्म विकास के लिए अभि नहीं तो भी शरीर और मन की रुग्ण स्थिति में सुधार लाने के लिए संसार के कई सभ्य देशों ने संगीत चिकित्सा आरम्भ कर दी है। अन्वेषी डाक्टर इस निष्कर्ष पर पहुँचने लगे हैं कि शरीर और मन का ऐसा कोई रोग नहीं है कि जिसकी चिकित्सा संगीत द्वारा न की जा सके। उन डाक्टरों ने अपनी मान्यता की व्याख्या करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

हुए कहा है कि—'शरीर और मन की समस्त व्याधियों का केन्द्र मस्तिष्क ही होता है। संगीत के स्वर कान के परदों में एक विशेष गति से लयबद्ध कम्पन किया करते हैं और उस कम्पन का प्रभाव मस्तिष्क के स्नायु-तन्तुओं पर पड़ता है जिससे उनमें नवीन चेतना जागृत होती है तथा वह नवोन्मेषित होकर तन मन पर अनुकूल प्रभाव डालता है।

संगीत कला इतनी महिमामई और शक्ति सम्पन्न होते हुए भी आज जितनी दुर्दशाग्रस्त हो रही है उतनी दुर्दशा अन्य कला की नहीं होगी। संगीत को स्वरलहरी और गीत के भाव दोनों ही मनुष्य के मन मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं । इस कला की प्रभावशीलता का अधिकांश उपयोग बीड़ी, सिगरेट, साबुन, तेल और पाउडर सौन्दर्य प्रसाधनों के प्रचार में ही किया जाता है। बड़े शहरों से लेकर छोटे देहातों तक सड़कों और गलियों में विभिन्न कम्पनियों के प्रचारक भौण्डे और भद्दे गीत गाते बजाते घूमते देखे जा सकते हैं । यही नहीं संगीत के साथ-साथ इसकी सहोदरा नृत्यकला का भी दुरुपयोग चल रहा है और विज्ञापन प्रचार के लिए ऐसी अभद्र मुद्रायें तथा भागभंगिमायें दर्शायी जाती हैं जिन्हें देखकर किसी भी विचारशील व्यक्ति का अन्तःकरण क्षुब्ध हो उठता है और उसकी आत्मा इस कला की दुर्दशा को देखकर दुःखी हुए बिना नहीं रह सकती।

संगीत ने भारतीय कलाओं पर अपना प्रभाव छोड़ने के साथ-साथ साहित्य को भी एक नयी दिशा दी है और उसे जीवन्त बनाया है। हमारे यहाँ का लगभग सारा धार्मिक साहित्य-काव्यमय है जिसे कि गाया जा सकता है। वेदों की ऋचाये छन्दबद्ध हैं। सामवेद को तो संगीत विद्या का प्रणेता ग्रन्थ ही समझा जाता है। पुरान काव्यमय हैं, राम और कृष्ण के प्रेरक जीवन वृत्तान्त काव्यमय है। देवी देवताओं की प्रशंसा में गाये जाने वाले स्तोत्र, स्तवन भजन कीर्तन तथा आरतियां संगीत मय है। कहने का अर्थ यह कि हमारे वाङ्मर्य का नव्वे प्रतिशत भाग काव्यमय है।

इसका इतना ही कारण है कि गद्य जहाँ विचारों तक को ही प्रभावित करता है वहीं पद्य विचारों से भी अधिक गहरी मानवी व्यक्तित्व की आधार शिला भावनाओं को प्रभावित करता है। पर जब से भावनाओं को नया जीवन देने वाली इस संजीवनी विद्या ने भावनाओं के परिष्कार की अपेक्षा उन्हें विकृत करना आरम्भ किया तभी से जनमानस पर उसकी प्रतिकूल छाप भी पड़ने लगी। मुगलकाल के उतरते समय में जब संगीत ने शृंगारपरक रूप धारण किया तब भारतीय जनता की उच्च भावनाओं का पतन होने लगा और क्रमशः भारतीय जनता आलसी, अस्वस्थ, अकर्मण्य और निर्बल होने लगी और जल्दी ही वह अंग्रेजों का गुलाम बन गयी। अंग्रेजों की सफलता का एक मुख्य कारण हमारे देश में जनमानस को प्रभावित करने वाली इस महती शक्ति का दुरुपयोग भी है।

संगीत और काव्य साहित्य में शृंगार की प्रधानता धीरे-धीरे साहित्य में भी आने लगी और वह भी अश्लील तथा कामोत्तेजक होने लगा। भावनाओं और विचारों दोनों ही क्षेत्रों में होने वाली इस विध्वंस लीला के परिणामस्वरूप हमारे देशवासी धीरे-धीरे आचरण हीन, असंयमी, बिलासी और आलसी होने लगे। परिणामस्वरूप कई सामाजिक कुरीतियों ने भी जन्म लिया और भारतीय जनता कितनी ही ऊँचाइयों से अधःपतित होने लगी।

संगीत कला का उपयोग आज भी जिस ढंग से हो रहा है, उसे भी सदुपयोग नहीं कहा जा सकता। इस कला के माध्यम से अब भी भारतीय समाज में कुत्सित भावनाओं को उभार मिलता है। सामान्य घरों में व्याह शादी के अवसर पर क्या पुत्र जन्म के समय क्या सभी मौकों पर अशोभनीय गीत गाये जाते हैं। रेडियो, नाटक, रासलीला, रामलीला, कथा, धार्मिक—उत्सव और रंगमंच से—सभी माध्यमों से शृंगार प्रधान गायनों का ही प्रचार हो रहा है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक और स्त्री से लेकर पुरुष तक सबके सब अश्लील एवं अभद्र गाने गाते सुने जा सकते हैं । ऐसा लगता है मानों भारत में अश्लील और अशोभनीय गीतों का ही युग चल रहा है। जिस देश में सूर, तुलसी, मीरा, कबीर के भक्ति परक और उच्च भावनाओं को जगाने वाले गीत चल रहे हों तथा उच्च कवियों के एक से एक बढ़कर सरस एवं कल्याणकारी पद गाये जाते हों वहाँ असंस्कृत के रसिया और फिल्मी गीत गाये व प्रसारित किये जाय इससे ज्यादा खेदजनक स्थिति और क्या होगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह तो मानना ही पड़ेगा कि भारतीय जन-जीवन पग-पग पर किसी न किसी रूप में संगीत से ओत-प्रोत हैं। बच्चों के जन्म से लेकर विवाह तक और मृत्यु तक जितने भी संस्कार होते हैं, उनसे सम्बन्धित ढेरों गीत गाये जाते हैं। विवाह संस्कार का एक कार्य संगीत की ध्वनि के बीच ही पूरा होता है । भारतीय जनता खेती से लेकर सामूहिक आत्म-रक्षा के लिए रणभूमि तक के लिए प्रयाण करते समय संगीत की स्वरलहरियों से स्वयं को निमाज्जित करती है। शास्त्रीय परम्परा के अनुसार एक-एक प्रहर की अलग-अलग राग रागनियां निर्धारित हुई है। चक्की चलाने से शय्या बिछाने और सुबह उठने से रात्रि को सोने तक अपने देश में गीत गाये जाते हैं।

संगीत को जीवन में जहाँ इतना महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है वहीं यदि वह महिमामई कला विकृत हो जाय तो जनजीवन बड़ी बुरी तरह प्रभावित होगा—इंसमें कोई सन्देह नहीं है। इसके साथ ही संगीत कला के सदुपयोग की आवश्यकता को भी स्वीकार किया जाना चाहिए और अनुभव करना चाहिए कि सामाजिक जीवन में चारित्रिक उत्थान के लिए इस विडम्बना को रोकना ही पड़ेगा।

इसके लिए उन कलाकारों को निरुत्साहित किया जाय जो व्यावसायिक मनोभावना से संगीत के गंगा जल में बदबूदार सड़ा हुआ पानी मिलाते हैं। साथ ही सरस, सुरुचि और उद्देश्यपूर्ण गीतों के सृजनशील कलाकारों को प्रोत्साहन दिया जाय। उत्सव, आयोजनों, विवाह कार्यक्रमों तथा संस्कारों के समय स्त्रियों द्वारा अभद् तथा उद्देश्यहीन गीत नहीं शालीन और प्रेरणाप्रद गीत ही गवाये जायें। संगीत गाने वालों के साथ-साथ सुनने वाले श्रोतागण भी अपनी रुचि को परिमार्जित करें। वे उद्दात्त एवं उद्बोधक गीतों को ही गायें और सुनें। ऐसे गीतों को गाने और सुनाने से न केवल आनन्द और प्रसन्नता ही होगी वरन् अनुभूतियों का स्तर भी बढ़ेगा तथा जीवन और चरित्र भी प्रभावित होगा। पहली आवश्यकता तो इतनी भर है कि इस कला के महत्व को समझा जाय और इस महाशक्ति को विध्वंस में प्रयुक्त करने के स्थान पर सृजन में नियोजित करने की उपयोगिता स्वीकारी जाय।

विनोद वृत्ति के पतनोन्मुखी प्रवाह को रोका जाय

संगीत की प्रभावोत्पादक क्षमता सर्वविदित है। मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी तक संगीत की सुमधुर ध्वनि पर थिरकने लगते हैं तथा उस प्रभाव से प्रकृति प्रदत्त स्वभाव के विपरीत आचरण करते देखे जाते हैं। इतिहास की प्रख्यात घटना है कि मुगल शासक अकबर किसी कारण से तत्कालीन प्रसिद्ध लोक कवि माघ से क्रुद्ध हो गया था। आवेश की स्थिति में उसने सेनापति को आदेश दिया कि माघ को दूसरे दिन भरे दरबार के सामने मदमस्त हाथी से कुचल दिया जाय। सभासदों को राजा का निर्णय अनुचित जान पड़ा। पर विरोध कौन करता? विरोध का अर्थ था स्वयं के लिए आपत्ति मोल लेना। पर राजा के अनुचित निर्णय से एक बेगुनाह और देश का महान् कवि मारा जाय सभासदों को उचित न लगा। महामन्त्री सहित सभासदों की एक गुप्त सभा राजा की अनुपस्थिति में हुई। माघ के बचाव के लिए क्या किया जाना चाहिए, राज्य के मूर्धन्य सदस्यों ने विचार-विमर्श किया। लम्बी मन्त्रणा के बाद आम सहमति इस बात पर हुई कि संगीत सम्राट तानसेन की मदद ली जाय। योजना गुप्त रखी गयी तथा यह निश्चय हुआ कि जिस समय क्रुद्ध हाथी माघ को मारने के लिए छूटे ठीक उसी समय तानसेन अपनी संगीत लहरी छेड़े। निर्धारित समय पर दूसरे दिन हाथी हुँकार भरते माघ को मारने चला। इसी बीच विलक्षण घटना घटी। तबले के धुपद ताल की तरंगित ध्वनि लहरी ने हाथी को सम्मोहित कर दिया। बढ़ते हुए उसके कदम रुक गये। वह उसी स्थान पर शराबी की भाँति झूमने और नृत्य करने लगा। आये दर्शक भी मन्त्रमुग्ध बने इस अविश्वसनीय दृश्य को देख रहे थे। पर जब तक संगीत चलता रहा हाथी अपने स्थान से टस से मस नहीं हुआ। अकबर को पूरी बात मालूम हुई। साथ ही अपने गलत निर्णय का भान भी हुआ। संगीत की चमत्कारी शक्ति के कारण पागल हाथी से महान कवि की रक्षा हुई।

बैजू बावरा के सम्बन्ध में प्रख्यात है कि जब वह रागनियां छेड़ता था तो तपती धूप में भी बने बादल आकाश में मडराने लगते और वर्षा आरम्भ हो जाती थी। दीपक राग की उच्चस्तरीय सिद्ध के अभ्यास से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बुझे हुए दीपकों को भी अपने आप जल उठना होता था। अब तो वे घटनाएँ मात्र किम्वदन्ती बनकर रह गयी हैं । ऐसे नादयोगी अब कहीं नहीं मिलते। तो भी संगीत की शक्ति का अस्तित्व भले-बुरे रूपों में एक शक्ति के रूप में आज भी संसार में मौजूद है।

अन्त: सम्वेदनाओं को उभारने में कला साहित्य भाषण उद्बोधन की अपेक्षा संगीत कहीं अधिक समर्थ होता है। विचार अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम विचार जगत को प्रभावित कर पाते हैं पर संगीत की पहुँच अन्त:करण के मर्मस्थल तक है। समस्त कलात्मक विभूतियों में उसे सर्वश्रेष्ठ माना गया है। बीन की मधुर ध्वनि हर किसी को आकर्षित करती है। विषैले सर्प तक उस आवाज से मन्त्र मुग्ध होकर दौड़ते हुए चले आते हैं। रणमेरी की आवाज सुनकर सैनिकों ही नहीं सामान्य मनुष्यों में भी वीरता एवं साहस के भाव संचरित होने लगते हैं। शहनाई की भावुकता प्रख्यात है। विवाह जैसे पुनीत अवसर पर अन्य वाद्य यन्त्रों की तुलना में उसे अधिक महत्व दिया जाता है। संगीत शास्त्र के मर्मज्ञों का मत है कि शहनाई की मादक ध्वनि नये जीवन में प्रविष्ट करने वाले युगल की भावनाओं का तरंगित करती तथा जीवन पर्यन्त परस्पर एक अविछिन्न सूत्र में बँधे रहने के लिए सूक्ष्म प्रेरणा तथा प्रभाव छोड़ती है। स्वर के उतार-चढ़ाव, गति एवं क्रम को बदल देने से कितना आश्चर्यजनक परिवर्तन हो जाता है यह संगीत में देखा जात सकता है। शहनाई विवाह के सुअवसर पर बजायी जाती और मृत्यु जैसे शोकावसर पर भी। पर एक में नव जीवन का उत्साह-उमंग उड़ता है जबकि दूसरे में सभी शोकातुर हो उठते हैं। मृत्यु पर बजने वाली शहनाई कितनों को रुला देती है?

संगीत न केवल विद्या है वरन् एक महाशक्ति है। मन मस्तिष्क की परितृप्ति के अनेकानेक दृश्य अदृश्य साधन है। स्वाध्याय, दृश्वलोकन आदि पर भावनाओं की तृप्ति संगीत के माध्यम से होती है। प्राचीन काल में संगीत के बल पर शक्तियों को भी मनचाही दिशा में मोड़ा जा सकना सम्भव था। वह नाद ब्रह्म की साधना थी— उथले मनोरंजन का मध्यम नहीं । जब तक संगीत साधना का विषय रहा तब तक न केवल उसका प्रभाव मनुष्य पर देखा गया वरन् पशुओं को मुग्ध करने साँपों का शमन करने, पागल, जंगली हाथियों को वश में करने से लेकर फूल खिला देने, पत्थर पिरघला देने जैसे असम्भव कार्य तक सम्पन्न कर सकना सम्भव था। पर कालान्तर में संगीत साधना न रहकर मात्र मनोरंजन का विषय बनकर रहा गया। तो भी उसकी प्रभावोत्पादक क्षमता कम नहीं हुई। उसका प्रत्यक्ष प्रभाव आज भी देखा और अनुभव किया जा सकता है। मधुर गीत और संगीत सुनकर लोग झूमने लगते है। अनचाहे भी अधिकांश व्यक्ति उस धारा में बहने लगते है जो स्वर साधक ने बहादी हो।

सिनेमा आज संगीत के बलबूते ही इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। संगीत को यदि उसमें से निकाल दिया जाय तो उसकी लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन घटती जायेगी। अब तो वैज्ञानिक भी स्वीकार करने लगे हैं कि संगीत न केवल भावना को तरंगित करता है वरन् शारीरिक स्वास्थ्य पर भी उसका असाधारण प्रभाव पड़ता है। साउण्ड थेरेपी चिकित्सा जगत में नयी उपचार पद्धति के रूप में विकसित हो रही है। मनोरोगों में तो संगीत चिकित्सा रामबाण समझी जा रही है। कितने ही देशों में इस पर गहन अनुसंधान चल रहे हैं।

प्राचीन काल में इन सूक्ष्म विशेषताओं के कारण ही संगीत कला को सर्वाधिक ख्याति मिली थी। दृष्टा ऋषि उन सूक्ष्म प्रभावों से सुपरिचित थे, जहाँ आज के वैज्ञानिकों के निष्कर्ष पहुँच रहे हैं। यही कारण है कि उन्होंने हर महत्वपूर्ण पक्ष में संगीत का समावेश किया था। अपने यहाँ लगभग समस्त महत्वपूर्ण धार्मिक साहित्य काव्यमय है। वेदों की ऋचायें छन्द बद्ध है। सामवेद को तो संगीत विद्या का प्रणेता ग्रन्थ समझा जाता है। पुराण काव्यमय हैं। राम एवं कृष्ण के जीवन वृतान्त काव्यमय है। देवी-देवताओं की स्तुति में गाये जाने वाले स्तोत्र स्तवन भजन-कीर्तन तथा आर्तियाँ संगीत मय है। हिन्दू धार्मिक वाङ्मय का लगभग नब्बे प्रतिशत भाग काव्यमय है।

संगीत के पतन एवं पराभव का युग मुगल काल से आरम्भ हुआ। देश में उनका आधिपत्य होते ही संगीत ने श्रृंगारपरक रूप धारण कर लिया और कुत्सा भड़काने का एक माध्यम बन गया। कहते हैं कि तत्कालीन हिन्दू राजाओं का अध:पतन उस समय से आरम्भ हुआ जब वे श्रृंगारिकता में अत्यधिक रस लेने लगे। जनमानस भी आलसी, अकर्मण्य निर्बल और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अस्वस्थ बनता गया। फलतः वीरोचित पुरुषार्थ जाता रहा। जीवट के अभाव से पराधीन की वेदियों में जकड़ना पड़ा। समीक्षकों का मत है। मुगलों के हाथों से भारत की सत्ता छीन लेने में अँग्रेज इसलिए सफल हुए कि मुगल शासकों ने भी वही गल्ती दुहरायी जो हिन्दू शासकों ने की थी। और अन्ततः अँग्रेजी भी उसी चपेट में आये। अपनी सक्रियता जागरूकता तथा कूटनीति के कारण उन्होंने बार में अँग्रेजी शासन की नीवं डाली पर विलासिता के कारण उनका मनोबल जाता रहा और भारतीय जन मानस की जागृत चेतना उन पर चढ़ दौड़ी। फलतः उन्हें यहाँ से भागना पड़ा।

पर एक बार जो संगीत की दुर्दशा आरम्भ हुई वह रुकी नहीं। व्यावसायिक क्षेत्रों में भी इस शक्ति का धड़ल्ले से उपयोग हो रहा है। बीड़ी, सिगरेट, साबुन तेल पाउडर तथा सौन्दर्य प्रसाधनों का प्रचार संगीत के माध्यम से होता है। बड़े शहरों से लेकर, छोटे देहातों तक सड़कों और गलियों में विभिन्न कम्पनियों के प्रचारक भौंडे-भद्दे और अश्लील गीत गाते बजाते घूमते देखे जा सकते है। संगीत की सहोदरा नृत्य कला है। उसका दुरुपयोग खुले रूप में देखा जा सकता है। विज्ञापन प्रचार के लिए नारियों के अभद्र, अश्लील और नग्न भाव भगिमाएँ देखकर सिर शर्म से झुक जाता है। किसी भी विचारशील की आत्मा इस कला की दुर्दशा देखकर दुःखी हुए बिना नहीं रहती रेडियो, सिनेमा टेलीविजन जैसे संचार तंत्रों ने तो लगता है कि यह संकल्प ले लिया हो कि संगीत की शक्ति का नियोजन जन मानस की कुत्सा भड़काने में ही करेंगे।

इस शृंखला में कितनी है अश्लील कड़ियाँ जुड़ती जा रही हैं। कहा जा सकता है कि सौम्य और सुमधुर संगीत की स्वर लहरियाँ शरीर मन और आत्मा के विकास में सहायक होती हैं। पर दुरुपयोग चल पड़े तो संगीत अधःपतन का कारण बन सकता है। पश्चिम की भौतिकतावदा सभ्यता का प्रभाव देश की सुशिक्षित युवा पीढ़ी पर पड़ा है। संगीत कला भी उससे प्रभावित हुई है। यूरोपीय देशों में उत्तेजक गायन वादनों को इन दिनों सर्वाधिक महत्व मिल रहा है। पिछले कुछ दर्शकों में रॉक एण्ड राल, पौप तथा डिस्कों जैसे कितने ही नृत्य सम्मिलित संगीत का आविष्कार हुआ है जिनके विषय में मनः शास्त्र विशारदों का कहना है कि वे भानवी कुत्साओं को भड़काने में सर्वाधिक सिद्ध हो रहे है। पश्चिमी संगीत परम्परा में सुरीली धुन या गायन को महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता। आमतौर पर वाद्य-यन्त्रों के साथ गायन का सामंजस्य स्थापित करके उत्तेजक रसानुभूति पैदा कर देना ही सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। मुक्ति और स्वच्छन्दता का जो मुखर स्वर 'पौप' में सुनने को मिलता है वह अन्य प्रकार के संगीत में नहीं है।

रॉक एण्ड रॉल नृत्य के आविष्कारक एल्विल प्रेस्ले को भारी सफलता पश्चिमी देशों में मिली। स्वछन्दवादी विचारधारा के समर्थक युवा पीढ़ी ने उसका भरपूर स्वागत किया। बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखते हुए रॉक एण्ड रॉल का सम्राट कहा जाने वाले प्रेस्ले के मन में यह विचार आया कि किसी नयी पद्धति की खोज करना चाहिए जो और भी उत्तेजक हो तथा सेक्स-भावना को भड़काती हो। इस विचार से प्रेरित होकर उसने शब्द विज्ञान का विशद् अध्ययन किया तथा संगीत के साथ उसके प्रभावों का परिचय प्राप्त किया तथा संगीत के साथ उसके प्रभावों का परिचय प्राप्त किया। पौप संगीत की रचना उसने तत्पश्चात् की। संगीत शास्त्र के विशेषज्ञों का मत है कि रॉक एण्ड रॉल पर बोली जाने वाली ध्वनि ऊ ऊ ऊ की कराहें सेक्स भावना को असाधारण रूप से बढ़ा देती है। इसमें टीन कनस्तर पीट-पीटकर गला फाड़कर चिल्लाने लगना तथा फूहड़ ढंग से कुल्हे मटकाने जैसा क्रम और जुड़ गया जिसने पॉप को जन्म दिया। इस संगीत ने स्वेच्छाचार को अत्यधिक बढ़ावा दिया।

दुर्भाग्यवश भारत में भी उस फूहड़ संगीत की लोक प्रियता बढ़ रही है जो यूरोपीय देशों के चारित्रिक अधः पतन का करण बन रही है। कैवरे नृत्य को प्रत्येक सिनेमा की सफलता के लिए आवश्यक समझा जा रहा है। व्यवहारिक सफलता के लिए चलचित्र निर्माता उन सारे-गुणों को अपना रहे हैं। जिनसे जनमानस की भावना को पोषण मिलता हो। निसन्देह यह युवा पीढ़ी को पतन की ओर ढकलने की एक मनोवैज्ञानिक साजिश है जो मनोरंजन के नाम पर चल चित्रों में भारी लोकप्रियता प्राप्त कर रही है।

संगीत की शक्ति जो शारीरिक मानसिक तथा आत्मिक विकास का माध्यम बन सकती है, पतनोन्मुखी प्रवृत्तियाँ भड़काने का साधन बनकर रह जाय यह दुःख

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की बात होगी। कला की शक्ति का यह अपमान एवं दुरुपयोग होगा । विचारशील वर्ग का कर्तव्य है कि संगीत के दुरुपयोग को रोकने के लिए विरोधी मोर्चा तैयार करें तथा संघर्ष के लिए जन मानस का आह्वान करें। सम्बद्ध व्यक्तियों का भी यह नैतिक कर्तव्य होता है कि बढ़ती हुई अश्लीलता को रोकने के लिए सख्ती से कदम उठायें।

संगीत को शालीनता की दिशा मिले

भाव संवेदनाओं को तरंगित करने की जितनी क्षमता संगीत में हैं, उतनी और किसी में नहीं। जिन्हें भाव क्षेत्र की उत्कृष्टता एवं क्षमता का ज्ञान है उन्हें किसी न किसी रूप में संगीत के सम्पर्क में रहना चाहिए। उसका उत्पादन कर सकना स्वयं न बन पड़े तो दूसरों के माध्यम से इस सरसता का रसास्वादन करना चाहिए। यदि रुझान और तलाश हो तो इस उपलब्धि के साथ सम्पर्क साधना कुछ कठिन नहीं है।

शरीर को भोजन चाहिए। मन को उत्साहवर्धक उपलब्धियाँ। अन्तःकरण जिसे कारण शरीर भी कहते हैं। सरसता के भाव तरंगों में लहराना चाहता है। भक्ति का तत्व ज्ञान इसी आधार पर विनिर्मित विकसित हुआ है। प्रेम को उत्कृष्ट स्तर पर चरितार्थ करने, उसे स्वभाव में सम्मिलित करने से जो उमंगें उठती हैं, उन में तृप्ति तुष्टि और शान्ति का समावेश्य होता है। आत्मीयता को जिस पर भी बखेरा जाता है वही सुन्दर, सरस, परम प्रिय लगने लगता है। सामान्यजन स्त्री, बच्चों में जिस स्तर का स्नेह बखेर पाते हैं, उसी अनुपात से उन्हें पलटकर प्रसन्नता भरी संवेदनाओं का अनुभव होता है।

यह तो हुई अन्तराल के गहन उद्गम से उत्पन्न होने वाली भाव संवेदना। इसे हर कोई उत्पन्न नहीं कर सकते। इसे भावुकता सहज संवेदना करुणा और आत्मीयता के सहारे ही उगाया जा सकता है। यह विशेषता किन्हीं-किन्हीं में होती है, जिनमें होती है वे ही भग भक्ति भी कर सकते हैं । अन्यथा नाम स्मरण की तोता रटंत करने और जप की माला घुमाने भर का कर्मकाण्ड चलता रहता है। वह बेगार किसी प्रकार भुगत तो ली जाती है, पर न उससे एकाग्रता होती है। और न भाव संवेदना ऐसी दशा में आनन्द की अनुभूति तो होगी ही कैसे? गहन अन्तराल को जिस सरसता की तड़प होती हैं। वह मिले कैसे?

अपनी ओर से प्रेम उगाकर दूसरों को अनुदान रूप में देना अपने हाथ की बात है। पर दूसरों से वह प्रक्रिया आरम्भ हो और वे उक्त आत्मीयता को वास्तविक रूप से पर्याप्त मात्रा में हमें दे सकें, इसकी अपेक्षा नहीं की जा सकती। ऐसा सुयोग तो किसी-किसी को कभी-कभी ही मिलता। फिर उसके सम्बन्ध में यह भी नही कहा जा सकता कि स्थिति देर तक वैसी ही बनी रहेगी? भावनाओं का क्षेत्र ऐसा है जिसमें जल्दी-जल्दी उथल पुथल भी होती है, जो बच्चा माता की गोद को क्षण भर के लिए नहीं छोड़ना चाहता था। वही तनिक बड़ा होने पर साथियों के साथ लिपटा रहता है। तनिक और बड़ा होने पर पत्नी पर वह प्यार केन्द्रित हो जाता है। नयापन उतरते ही वह सम्बन्ध भी काम चलाऊ भर रह जाते हैं । इसके बाद मन न जाने कहाँ-कहाँ भटकता है और अन्त में मृत्यु की शरण में जाकर जीवन अध्याय की इतिश्री होती है। दूसरे व्यक्ति या पदार्थ अन्तर की प्यास को कुछ क्षण के लिए ही सान्त्वना दे पाते हैं । किन्तु संगीत की यह विशेषता है कि उसके साथ जितने समय तक तन्मयता सध सके उतनी देर अन्तःकरण को सरसता की अनुभूति होती रहती है। यों यह बाहर से संजोई हुई होने पर प्रवाह रुकने पर समाप्त भी हो जाती है। पर यदि भीतर से गुन-गुनाते की कला हाथ लग जाय तो अपना उद्भूत संगीत इच्छित समय तक साथ देता रह सकता है और उल्लास की अनुभूत करता रह सकता है । संगीत चाहे बाहर से उपलब्ध हो रहा हो या भीतर से निकल रहा हो, दोनों ही स्थितियों में अन्तरंग को लहराता है और उसे तरंगित ही नहीं वरन् दिशा विशेष में प्रेरित प्रोत्साहित भी करता है। इन विशेषताओं को देखते हुए जिन्हें भाव-संस्थान मे उमगें उठाने आनन्द लेना है उन्हें संगीत के साथ सम्बन्ध जोड़ना पड़ता है।

देव प्रतिमाओं में वाहन और आयुध ही निर्धारित नहीं होते उनके साथ कोई वाद्य यन्त्र और जुड़ा होता है। इससे प्रकट है कि देव सत्ताओं की विशेषताओं की एक महत्वपूर्ण इकाई संगीत है। शिव का डमरू, कृष्ण की वंशी सरस्वती की वीणा की अवधारणा सर्वविदित है। अन्यान्य देवन्-देवता भी इस सरसता का सान्निध्य बनाये ही रहते हैं। उनकी पूजा-अर्चना में शंख,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घड़ियाल जैसे पुरातन काल के बाद्य यन्त्रों का प्रयोग होता ही है। धर्मोत्सवों में ढोल दमाम मृदंग, दुंदुभि आदि का सरंजाम जुटाया जाता है। ऋषियों की शास्त्र संरचना में अधिकतर पद्यों का ही प्रयोग हुआ है। यहाँ तक आयुर्वेद, ज्योतिष जैसे विषयों को भी छन्द बद्ध किया गया है। कथानकों, नाटकों की संरचना भी पद्य शैली में हुई। गद्य का उपयोग तो यन्त्र-तन्त्र ही हुआ है। गीत, संगीत, चिर प्राचीनकाल से जीवन की महती आवश्यकताओं में से एक माना जाता है। स्तोत्र पाठ में ललित छन्दों की ही भरमार है।

आज के संदर्भ में मनुष्य का शरीर वासनाओं से और मन तृष्णाओं से इतना अधिक भर गया है कि भावना क्षेत्र की उपयोगिता, आवश्यकता और गरिमा समझने तक का अवसर नही मिलता। इस क्षेत्र को खोजने, शोधने और विकसित करने की आवश्यकता समझी जाय तो इसका प्रारम्भिक उपचार संगीत सम्पर्क के रूप में हस्तगत करना होगा। जो गायन, वादन में रुचि ले सके उसका अभ्यास कर सके, उन्हें उसके लिए समय निकालना और प्रयत्न करना चाहिए। जो वैसा न कर सके उन्हें भाव भरे गीतों को गुनगुनाते रहने की आदत डालनी चाहिए। यह प्रयोजन किसी हद तक दूसरों के उत्पादन से लाभ उठाते हुए भी किसी सीमा तक पूरा किया जा सकता है। इसके लिए गीत-गोष्ठियाँ कारगर हो सकती है। आवश्यक नहीं है स्वयं ही गीत रचे ही जायँ। दूसरों की रचनाएँ गाई सुनी और गुनगुनाई जा सकती है। इन दिनों तो यह कार्य टेपरिकार्डर, और रिकार्ड प्लेयर भी किसी हद तक पूरा कर देते हैं । संगीत सम्मेलन भी जहां-तहाँ जब तब होते रहते हैं। उनमें सम्मिलित हुआ भी जा सकता है। आरम्भ से ही यह आवश्यक विषय हमारे स्कूली पाठ्यक्रम में संव्याप्त रहे और तरंगित होकर भाव क्षेत्र में प्रवेश पाने का द्वार खुले।

सन्त काल में इस संदर्भ में तत्व चिन्तन के उपरान्त संकीर्तन की शैली अपनाई गई। अधिकांश सन्तों ने अपनी भजन मण्डलियाँ गठित की। भक्ति संकीर्तन की पद्धति निर्धारित की। उनका विषय मात्र भक्ति ही नहीं वरन् ज्ञान और कर्म की उत्कृष्टता का समावेश रखना भी था। मीरा, सूर कबीर रदास, नामदेव, तुकाराम चैतन्य आदि धर्म प्रचार शैली में संकीर्तन प्रक्रिया को प्रमुखता दी गई थी। उनकी प्रव्रज्या तीर्थ यात्रा कार्य पद्धति संगीत मण्डली का माहौल भी साथ चलता था। जहाँ भी वह पहुँचते थे अपने उस कार्यक्रम में जनसाधारण को भी सम्मिलित करते थे। इस पद्धति का प्रभाव सामान्य कथा उपदेशों की अपेक्षा अनेक गुना हो जाता था। जिन तथ्यों का साधारण भाषण, प्रवचनों से हृदयगम नहीं हो पाता उतना संकीर्तन के साथ भक्ति-भावना के साथ-साथ आत्मिक गरिमा को निखारने, उभारने का असाधारण अवसर मिलता है। गरम लोह धातु को पिघलाकर उसे इच्छित दिशा में मोड़ा, मरोड़ा और ढाला जा सकता है। संकीर्तन व्यवस्था में इसी प्रकार का वातावरण बनता है। सामुदायिक उल्लास का उभार अधिक शक्तिशाली होता और एक-दूसरे को प्रभावित भी अधिक करता है. संगीत को हेय बदनाम बनाने का दुर्भाग्य इस लिए उभरा कि उसके साथ कामुक शृंगारिकता अश्लीलता की भरमार हो गई। आदर्शों के स्थान पर उन विलासी तत्वों को ठूँसा गया। जिनके मनुष्य का संयम टूटता है और लिप्साओं की ओर मन ललकता है। जिस चाकू से उपयोगी काम लिए जा सकते है। उसी से किसी पर आक्रमण करके आघात भी पहुँचाया जा सकता है। संगीत को कामुकता भड़काने के निमित्त प्रयुक्त करना ऐसा ही अनाचार है। संगीत को शालीनता की दिशा मिले तो ही कल्याण है।

संगीत के दुरुपयोग की निन्दा भर्त्सना

स्वरयोग की साधना—शब्द ब्रह्म का अभ्यास वस्तुतः एक साधना है, जिसका अवलम्ब लेकर मनुष्य अपने भीतर के 'सुन्दर' को ही नहीं 'शिव' और 'सत्य' को भी उल्लसित कर सकता है, और उस आन्तरिक तृष्णा की तृप्ति कर सकता है। जिसकी लालसा से उसे विविध विधि कामनाएँ और प्रवृत्तियाँ अपनानी पड़ती हैं। 'संगीत' के योगसूत्र में यही स्पष्ट किया गया है कि योग साधना के अनेक प्रकारों में नादयोग की स्वरसाधना का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

गीता में भगवान ने अपने को वेदों में सामवेद बताया है—

'वेदानां सामवेदोऽस्मि।'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सामवेद में भी संगीत ही है पर उसमें पवित्र उद्देश्य और आदर्शों का समावेश है इसलिए उस स्तर लहरी को वन्दनीय और उपयोगी कहा गया है—

सामवेदः स्मृतः प्रित्र्य स्तस्यात् तस्याशुचिर्ध्वनिः ।

मनु० ४ ।१२४

रुद्रः साम्मयोऽन्तेच तस्यात्तस्याशुचिर्ध्वनिः ।

मार्कण्डेय पुराण १०२ ।१०९

चिरअतीत में मनीषियों ने उसका विकास, विस्तार इस दृष्टि से किया था। लय और ताल का समन्वय करके वाद्य यन्त्रों को नहीं — अन्तरंगों की स्वरवीणा को झंकृत करने का उपक्रम किया गया था। संगीत किसी समय भगवद्‌ोपासना का ही एक माध्यम था। सुनाने वालों में वह आत्मोल्लास जगाता था और उसे कुत्सा से ऊँचा उठाकर 'भूमा' में प्रतिष्ठा करता था। अपनी इसी विशेषता के कारण वह लोकश्रद्धा का माध्यम रहा। सन्तों ने उसे प्राणप्रिया माना और उसके सहारे लक्ष्य पूर्ति की दिशा में सफल प्रयाण किया। इसमें इनका ही नहीं वरन् सुनने वाला का भी आत्मोकर्ष जुड़ा हुआ रहता था। सामगान के दिव्यदर्शियों से लेकर देवर्षि नारद तक और अन्ततः वह पवित्र धारा अनेक सन्त साधकों में प्रवाहित होती हुई हरिदास एवं तानसेन तक चली आई। यह प्रवाह यथाक्रम चलता रहता और अपना स्तर यथा स्थान बनाये रहता तो उससे—भावनात्मक महानता की स्थिति उत्कृष्ट स्थिति में ही बनी रहती।

दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि पतन के सर्वभक्षी आक्रमण से संगीत भी बच नहीं सका। वह योगाभ्यास से नीचे उतरा और कला बना। इससे भी नीचे गिरा तो नटविद्या मात्र बनकर रह गया। आज वह इसी दयनीय दुर्दशा की स्थिति में पड़ा है।

संगीत को कला इसलिए बनना पड़ा कि वह लोक रुचि के पीछे चलकर आजीविका और प्रशंसा का माध्यम बन सके। यहाँ तक भी गनीमत थी। अन्य व्यवसायों की तरह ही संगीत भी किन्हीं पेशेवरों का पेशा रहे तो उन्हें व्यावहारिक जीवन की एक आवश्यकता मानकर गायक वादकों को साधक तो नहीं पर श्रमजीवी कहा जा सकता था। दुःखद स्थिति तब उत्पन्न हुई जब वह साधना तो दूर कला भी न रही और कुत्साओं के हाथ का खिलौना बनकर व्यसनी और व्यभिचारियों की तुष्टि-पुष्टि के काम आने वाला एक नशा भर बनकर रह गया। सामन्तों और अमीरों की पशु प्रवृत्ति को अधिकाधिक उत्तेजित करने और उनके 'पशु' तो अधिकाधिक उग्र बनने भर के लिए जब उसने अपनी आत्मा को बेच दिया तो उस तत्वदर्शी की आत्मा बिलख-बिलख कर रोई होगी जिसने स्वर विज्ञान द्वारा नर को नारायण बनाने के सपने देखे होंगे।

मध्य काल में संगीत अमीरों और बादशाहों का क्रीतदास था; उसे उन्हीं के यहाँ आश्रय मिलता था। जनता की कुरुचि के बीच भी उसे स्थान मिला। इससे सङ्गीत को धन और सुविधा तो मिले—सस्ती वाहवाही भी हाथ लगी पर इसके लिए उसे महँगा मूल्य चुकाना पड़ा। पीर को बबर्ची, भिस्ती को अन्ततः 'खर' बन जाना वस्तुतः एक दुःखद प्रसंग ही है। पुरोहित का यह पतन लौकिक दृष्टि से सुविधाजनक भले ही प्रतीत हो पर स्तर में आसमान से पाताल में जा गिरने जैसी यह दुर्दशा हर दृष्टि से लज्जास्पद और दुर्भाग्यपूर्ण ही मानी जायेगी।

अपने समाज में भगवद् भक्ति का भावोद्दीपक मनुष्य के देवत्व के जागरण का अविछिन्न अवलम्बन माना जाता रहा है। तदनुसार सन्तों, ब्राह्मणों, मनीषियों धर्मोपदेशकों को भूसुर कहकर उनकी चरण धूलि मस्तक पर चढ़ाने की परम्परा रही है। संगीतकार इसी पंक्ति में बैठता था उसकी गणना इसी वर्ग में की जाती थी। स्वरसाधक को योगसाधकों के बीच ही माना जाता था। उसे वैसी ही श्रद्धा प्रदान की जाती थी। कहना न होगा कि कभी किसी श्रद्धास्पद की रोजी-रोटी की शिकायत नहीं करनी पड़ी। रोटी की चिन्ता ने उन्हीं को खाया है जो आत्म विस्मरण के गर्त में गिर चुके। रोटी के नाम पर दौलत की हविस उन्हें सताती है। जिन्होंने आन्तरिक गरिमा का विसर्जन करके विलासिताओं, लिप्साओं और अहंता की भौतिक तृप्ति के लिए व्याकुल रहने की दुष्प्रवृत्ति अपनाली। कोई भी क्यों न हो—भले ही वह संगीतकार ही क्यों न हो इस स्तर पर उतरेगा तो वह अपना ही नहीं अपने सम्पर्क में आने वालों को भी पतन के गर्त में धकेलेगा।

इन दिनों कामुकता भड़काने वाली दुष्प्रवृत्ति का ही दूसरा नाम संगीत बन गया है। स्वरसाधना अब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कला भी नहीं रही, वह नटिनी, नर्तकी, गायकी वेश्या हरजाई है। उसका तन अब हर कोठे पर किसी भी कोढ़ी के आगे समर्पित होने के लिए सजा बैठा है। सन्त परम्परा—सामन्तों के आश्रय में विकृत हुई तो अब वह कुत्साएँ भड़काने वाली विडम्बना मात्र रह गई है। धन, वैभव तो वेश्याएँ भी कमाती हैं, तालियाँ बजने और वाहवाही सुनने का लाभ तो नग्निकाओं और विष कन्याओं को भी मिल जाता है ऐसी ही प्रशंसा यदि आधुनिक गीत वाद्य की कला को मिले तो उसे नियति का क्रूर व्यंग ही समझा जाना चाहिए। सङ्गीत में सम्मोहन है। इसे ऋषियों के हाथ में ही रहना चाहिए। कुत्साओं की खिलवाड़ के लिए उसका प्रयुक्त किया जाना जनजीवन को विषपान ही करा सकता है। प्राणियों का वध करने के लिए अहेरी और सपेरे भी प्रयोग करते हैं। हिरनों को, साँपों को पकड़ने के लिए भी सङ्गीत सम्मोहन का प्रयोग होता है पर वह न शुभ है और न श्रेयस्कर। शालीनता की दृष्टि से यह उचित नहीं कहा जा सकता कि संगीत जैसे शब्द—योग को दौलत अथवा वाहवाही लूटने के प्रभोलन में लोक मानस का विनाश करने में प्रयोग किया जाय।

कामुकता एवं कुत्सा भड़काने जैसे दुष्ट प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त किया गया स्वर कितना अहितकर होता है इसकी एक कथा शतपथ ब्राह्मण में इस प्रकार आती है—त्वष्टा ऋषि ने ऋचा का उच्चारण करने में भूल की, उसका अवांछनीय रीति से दुरुपयोग किया। इसका फल बड़ा विपरीत निकला। त्वष्टा ने जिस प्रयोजन के लिए उच्चारण किया था वह तो पूरा न हुआ वरन् वृत्तासुर नामक एक देवघातों विकट महादैत्य उपजकर खड़ा हो गया और उसने भयङ्कर विभीषिकाएँ उत्पन्न कर दीं। आज ऐसे ही संगीत के दुरुपयोग ने समाज में अवांछनीय परिस्थितियाँ उत्पन्न की हैं।

जब कुत्साओं का पर्यायवाची संगीत बन गया तो विज्ञ समाज में उसकी सर्वत्र भर्त्सना की जाने लगी। औरङ्गजेब ने एक बार अपने राज्य में से वाद्ययन्त्रों का जनाजा निकाल कर उन्हें कब्रिस्तान में दफना देने का आदेश दिया था और सङ्गीतकारों को जन मानस को विलासी एवं पतनोन्मुख बनाने का अपराधी घोषित करके उन्हें देश निकाले की सजा दी थी।

पतनोन्मुख वासनाप्रिय विलासी संगीत को भारतीय धर्म-ग्रन्थों में भी घृणित त्याज्य एवं गर्हित घोषित किया है और इस प्रकार के विष मिश्रित दूध को पीने से बचने के लिए ही सर्वसाधारण को निर्देश दिया है। ऐसे अनेक अभिवचन यत्र-तत्र भरे पड़े हैं।

सभ्रान्त विज्ञ व्यक्तियों को भगवान मनु ने सङ्गीत व्यसन से दूर रहने का परामर्श दिया है।

कामं क्रोधे च लोभं च नर्तनं गीत वादनाम्।

—मनु. २।१७८

न नृत्येदथवा गायेत्र वादि-त्राणि वादयेत्।

मनु. ४।६४

इन अभिवचनों से काम, क्रोध लोभ जैसे दुर्गुणों की पंक्ति में ही गीत-नृत्य की गणना की गई है और उनसे बचने की शिक्षा दी गई है।

आगे चलकर उन्होंने सङ्गीतजीवी व्यक्ति को अनाचारी, अधम, गर्हित, बताते हुए कहा है कि न तो उनके साथ पंक्ति में बैठकर भोजन करें और न उसका अन्न जल ही ग्रहण करें। उन्हें ब्राह्मण होने पर भी शूद्रवत् समझें। यह अभिप्राय व्यक्त करने वाले मनुस्मृति में निम्न श्लोक हैं—

कुशील वोऽवकीर्णी च वृषली पति रवेच।
एतान् विगर्हिताचाराना पांक्तेयान् द्विजा धमान्।
द्विजाति प्रवरो विद्वानुभयत्र विवर्जयेत्।

—मनु. ३।१६७.१५७

स्तेन गायन योश्चान्नं तक्ष्णो वार्धुषिकस्य च।

—मनु.४।२१०

प्रेष्य न् वाधुषिकांश्चैव विप्रान् शूद्र वदाचरेत्।

८।१०२

ब्राह्माणों नैव गायेत्र नृत्येत्।

—गोपथ २।२१

ब्राह्मण न तो गाये और न नाचे।

मनुस्मृति में नृत्य गान वाद्य को 'तौर्यत्रिक' संज्ञा देते हुए उसे त्याज्य कामज व्यसन कहा गया है।

तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः।

—मनु.७।४७

व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत्।

—मनु. ७।४५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

इन दोनों ही निर्देशों में सङ्गीत की भर्त्सना की गई है और उससे बचने के लिए कहा गया है।

सङ्गीतकारों की गवाही को राजदरबारों में अप्रामाणिक मानने की बात मनु भगवान ने कही है और उन्हें अविश्वस्त ठहराया है।

न साक्षी नृपतिः कार्यो न कारुक कुशीलवौ।

—मनु ८।६५

इसका कारण बताते हुए टीकाकारों ने बताया है कि वे लोभ, मोह में पड़कर अविश्वस्त आचरण कर सकते हैं। इसलिए उन्हें अप्रामाणिक माना जाय। यही मत याज्ञवल्क्य स्मृति ३।७० में नारद स्मृति १।१५८ में पद्यपुराण पाताल खण्ड ९।५८ में एवं भविष्य पुराण १।४।१४६ में व्यक्त किया गया है।

पद्मपुराण भूमि खण्ड ७५।३० में राजा ययाति के महान व्यक्तित्व और आदर्श राज्य का वर्णन किया गया है। साथ ही उनके पतन का कारण नीति वाद्य में रुचि लेने लगना भी बताया है।

कामस्य गीत लास्येन हास्येन ललितेन च।

मोहितो राज राजेन्द्रः काम संसक्त मानसः।

—पद्मपु.भू.ख. ७७।१

कामुक गीत, वाद्य, नृत्य, हास्य बिलास में राजा ययाति का मन मोहित हो गया और वे अपनी गरिमा खो बैठे।

श्रीमद्भागवत में साधु को सङ्गीत सीखने, गाने एवं सुनने का निषेध किया गया है और कहा गया है कि इस कुचक्र में फँसकर वे अपनी हिरनों जैसी दुर्गति न करायें।

ग्राम्यगीतं न श्रणुयाद् यतिर्वनचरः क्वचित् शिक्षेत् हरिणाद् वद्धान् सृगयो गीत मोहितम्।

—भागवत् ११-८।१७

अगले श्लोक में इसका प्रमाण देते हुए भागवतकार ने बताया है कि श्रृङ्गी ऋषि का पतन इसी कुचक्र में फंसने के कारण हुआ था।

वाणभट्ट ने अपने कादम्बरी ग्रन्थ में चन्द्रापीड आदर्श राज्य का वर्णन करते हुए लिखा है कि उस राज्य में' एणकानां गीत व्यसनम्' हिरना के अतिरिक्त और किसी को सङ्गीत का व्यसन नहीं है।

वाल्मीकि रामायण में रावण की स्त्रियों के अनेक दूषणों में से एक यह भी गिनाया है कि वे सङ्गीत परायण थीं।

नृत्य वादिन्न कुशला राक्षसेन्द्र भुजाङ्गाः।

—बा. रा. सुन्दर काण्ड १०।३२

काचिद् वीणां परिष्वज्य प्रसुप्ता सम्प्रकाशिते। १०।३७

अन्या कक्ष गते नैव मङ्गु के नासिते क्षणा। १०।३८

विपंचीं परिगह्यान्यां नियता नृत्य शालिनी।

इन सभी विवरणों से राक्षसियों को नाचने, गाने वाली, अनेक प्रकार के वाद्य यन्त्रों को साथ लटकाये रहने वाली, उन्हें साथ लेकर सोने वाली बताया गया है।

एक ओर असुर ललनाओं की इस कामज संगीत व्यसन से ग्रस्त स्थिति का वर्णन है। दूसरी ओर भगवान राम भरत जी को अयोध्याकाण्ड १००।६८ में सङ्गीत व्यसन से सर्वथा दूर रहने का उपदेश देते हैं।

गायक रादकैश्चानथ्यैः संगीत कायः।

—कौटिल्य अर्थशास्त्र ८।१।४

अर्थात् गायन, वादन कामोत्तेजक और अनर्थमूलक हैं।

नट नर्तकी विट वेश्याकुनृपेष्व नृताडम्बरं वक्तव्यः।

—वार्हस्पत्य अर्थशास्त्र १-५४

आचार्य वृहस्पति ने नट, नर्तक, वेश्या, कुनृप को समतुल्य रखते हुए इन आडम्बरों की भत्यर्सना की है।

भरत नाट्य शास्त्र में सङ्गीत को तीन भागों में विभक्त माना है—

"गीतं वाद्यं नर्तनं च त्रयं संगीत मुच्यते"।

अर्थात् गाना, बजाना और नाचना तीनों को सङ्गीत कहते हैं।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी ग्रन्थ के अन्त में उल्लेख है ऋषियों ने संङ्गीत को शाप दिया और उसे शूद्रों का कार्य घोषित किया।

'निर्ब्रह्मणों निराभूतः शूद्रा चारो भविष्यति।'

—३६।३४

अर्थात् वह विज्ञ व्यक्तियों से तिरष्कृत होगा एवं शूद्रों द्वारा अपनाया जायेगा।

क्षेमेन्द्र रचित काल विलास ग्रन्थ में नृत्य गीतकारों को जनता के धन का अपव्यय कराने वाला और अर्थ व्यवस्था को नष्ट-भ्रष्ट करने वाला बताया है—

अर्थो नाम जनानां जीवित मखिल क्रिया कलापस्य।
तं संहरन्ति धूर्ता छगल गला गायका लोके ॥१॥
निःशेषं कमला कर कोषं अग्ध्वापि कुमुदमास्वाद्य।
क्षीणा गायन भृंगा मातंगा प्रणयतां यान्ति ॥२॥

अर्थात्—धन मानव जीवन की एक आवश्यकता है पर बकरे के गले में लटकने वाले निरर्थक थन की तरह यह निकम्बे गायक, नर्तक उसे ऐसे ही झटक ले जाते हैं। ये लोग लक्ष्मी का भी खजाना खाली कर सकते हैं। निरन्तर फूलों का रस चूसते रहने पर भी अतृप्त ही रहते है। मत्त लोगों को ढूँढ़कर उनके वे मित्र बने रहने का प्रपञ्च रचते हैं।

चारुचर्या ग्रन्थ में गीत, वाद्य, विलास, व्यसनों की निन्दा करते हुए इन्हें शत्रु के समान घातक बताया गया है—

न गीत वाद्यामि रितिर्विलास व्यसनी भवेत्।
वीणा विनोद व्यसनी वत्सेशः शत्रुणा हतः।

उपरोक्त अभिवचनों में केवल कुत्सित सङ्गीत की— वासना भड़काने में संलग्न कुरुचिपूर्ण संगीतकारों की ही भर्त्सना की गई है। सत्संगीत पर इस प्रकार के आक्षेप नहीं हैं। वह तो जन जीवन में भावनात्मक उत्कर्ष का ही पथ प्रशस्त कर सकता है। संसार भर के मनीषियों ने सदुद्देश्य के लिए प्रयुक्त होने वाले संगीत की महत्ता और आवश्यकता का एक स्वर से प्रतिपादन किया है। इस प्रकार के अभिवचनों में से कुछ इस प्रकार हैं—

सङ्गीत से आत्मा की मलीनता धुलती है।

—आवेर वेच

गहराई में उतरो तुम्हें हर पदार्थ के अन्तरङ्ग में एक दिव्य संगीत उभरता दिखाई देगा। —कार्लाईल

संगीत आत्मा के ताप को शान्त कर सकता है।

—महात्मा गांधी

सङ्गीत में क्रूर हृदय को भी कोमल बनाने वाला जादू भरा पड़ा है। —जेम्स वाटसन

कितने ही महामानवो ने संगीत के सम्बन्ध में अपना अभिप्राय इस प्रकार व्यक्त किया है—

सङ्गीत मानव की विश्व भाषा है। —लांग फैलो

सङ्गीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है।

—शेखसादी

संगीत टूटे हुए हृदय की औषधि है। —ए. हन्ट

संसार मुझसे चित्रों में बात करता है—मेरी आत्मा उसका उत्तर संगीत में देती है। —रवीन्द्रनाथ

संगीत अपने मूल उद्देश्य को पूरा कर सके, अपने सनातन स्वरूप को स्थिर रख सके इसके लिए हमें पूरा प्रयत्न करना चाहिए और उसे सदुद्देश्य के लिए प्रयुक्त होने देना चाहिए। स्मरण रखा जाना चाहिए कि सङ्गीत की उपयोगिता तभी है जब उसे उच्च उद्देश्य के लिए प्रयुक्त किया जाय। कलाएँ दुधारी तलवारें हैं यदि उन्हें पशु प्रवृत्तियाँ भड़काने के लिए काम में लाया जाय तो वे घातक भी कम सिद्ध नहीं होती।

महात्मा गाँधी के संस्मरणों पर प्रकाश डालने वाली मनुवहिन की डायरी में एक स्थान पर बापू का वह कथन छपा है जिसमें उन्होंने कहा था—"नृत्य कला के प्रति मेरे मन में आदर है। संगीत मुझे बहुत प्रिय है। लेकिन जिन गीत वाद्यों ने लोगों के मन विकृत कर दिये हैं उन पर तो रोक लगाऊँगा ही।'

दूध में मक्खी पड़ जाने पर वह अभक्ष्य बन जाता है। सङ्गीत भी तभी तक ग्राह्य है जब तक उसके साथ सदाशयता जुड़ी हुई है। यदि वह पशु-प्रवृत्तियों को भड़काता है—नीति सदाचार और मर्यादा पालन पर हमला करता है तो उसकी विषक्तता अग्राह्य ही होगी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तब ऐसे लक्ष्य भ्रष्ट सङ्गीत का बहिष्कार ही करना पड़ेगा।

सङ्गीत एक शक्ति है इसलिये जहाँ उसका उपयोग है, वहाँ दुरुपयोग भी सम्भव है। आज-कल सङ्गीत के नाम पर अश्लीलता और भोंड़ापन बढ़ा है, उसे अच्छे सुमधुर और शास्त्रीय-सङ्गीत से स्थानापन्न करना और उसका लाभ उठाना बहुत आवश्यक हो गया है।

ध्वनि एक वैज्ञानिक शक्ति है। एक पौराणिक कथा है कि "त्वष्टा ऋषि से मन्त्रोच्चारण में एक स्वर की गलती हुई थी और उसका परिणाम विपरीत हो गया था। त्वष्टा इन्द्र को मारने वाला पुत्र उत्पन्न करना चाहते थे, किन्तु स्वर सम्बन्धी उच्चारण की त्रुटि से जिसे इन्द्र ने ही मार डाला, ऐसा वृत्त नामक महाअसुर उत्पन्न हो गया। स्वर लहरियों की शक्तियाँ असाधारण हैं उनका दुरुपयोग करके जनमानस और समाज को दिग्भ्रान्त किया जा सकता है और लोगों को कल्याण की दिशा में भि अग्रसर किया जा सकता है। हमें चोहिये कि स्वयं भी संगीत-शक्ति का लाभ प्राप्त करें और समाज को भी उस पुण्य-धारा में स्नान का सुख प्रदान करें।

शब्द शक्ति के दुरुपयोग का दुष्परिणाम

शब्द की शक्ति सर्वविदित है। उससे भी अधिक है संगीत का प्रभाव। मन्त्र में प्रकारान्तर में शब्द ब्रह्म और नाद ब्रह्म का ही चमत्कार है। शब्द ब्रह्म अर्थात् कथन, नाद ब्रह्म अर्थात् गायन वादन। इनकी सामर्थ में कोई सन्देह नहीं। प्रश्न यह कि क्या इनका मात्र श्रेष्ठ परिणाम ही होता है या हानिकार भी। शक्ति माने शक्ति। उसका भला और बुरा दोनों ही प्रतिफल हो सकता है। चाकू कलम बनाने, शाक काटने जैसे उपयोगी कामों में ही आमतौर से उसका उपयोग होता है या हो यह भी सकता है कि किसी का अंग भंग करने के लिए उसका कुप्रयोग किया जाय।

कुछ समय पूर्व संगीत सर्व सुलभ नहीं था। कलावन्त कहीं दूर-दूर होते थे। फिर उन्हें भी आजीविका चाहिए। सुनने सुनाने के लिए उन्हें सम्पन्न व्यक्ति तलाश करने पड़ते थे। जिनके पास रोजी-रोटी के अतिरिक्त कलावन्तों को पालने के लिए समय और धन हो, ऐसे कहीं-कहीं जहाँ-तहाँ होते थे। ऐसी दशा में गायक वादक भी थोड़े ही होते थे। लाउडस्पीकर थे नहीं, सो सुनने के लिए दस-बीस की मण्डली ही जम पाती थी। उतनों से ही जिनकी आजीविका पूरी हो जाय, ऐसे गुणी लोग थोड़े ही होते थे।

देहाती भजन मण्डलियों के अतिरिक्त गुणी कलाकार कहीं-कहीं ही देखने-सुनने को मिलते थे। ऐसी दशा में उनकी लाभ-हानि भी थोड़ों तक ही सीमित थी।

अब समय बदल गया। गायन-वादन का यन्त्रीकरण हो गया। ग्रामोफोन रिकार्ड, टैपरिकार्डर, फिल्म संगीत, इस कदर व्यापक हुए हैं कि गली-कूचों में उनकी धूम है। इनका विषय मात्र कामुकता है। प्रेम, मैत्री, बिछोह जैसी निम्न भावनाओं को उत्तेजित करने वाले यन्त्र गायन इतनी अधिक मात्रा में विकसित हुए हैं कि रास्ता चलते वे जबरदस्ती कानों में घुस पड़ते हैं।

इस उथले संगीत का बाहुल्य जन-मानस में निरन्तर निकृष्टता भर रहा है। इसे सुनने के लिए पैसा भी खर्च नहीं करना पड़ता। कहीं गली- चौराहे पर खड़े हो जाइए, प्रेम गीत अनायास ही सुनने को मिलेंगे। छोटे, बड़े बच्चे इन्हें याद कर लेते हैं। बड़ों को तो वे भली प्रकार याद हैं। इसका प्रभाव पड़े बिना रहता नहीं। छवि समेत गाने सुनने हों तो सिनेमा मौजूद है। रिक्शा चलाने वाले भी दो रुपये का टिकट लेकर ढाई घण्टे अश्लील दृश्य देखते और मजे में गाने सुनते हैं।

लगातार इन गीतों के सुनने का प्रभाव मस्तिष्क को अवांछनीय ढाँचे में ढालता है। इतना ही नहीं उनसे मनोविकार और मनोरोग भी उत्पन्न होते हैं। चिन्तन, चरित्र और व्यवहार पर असर पड़ता है। कामुकताजन्य अपराधों की इन दिनों धूम है। चोरी ठगी, डकैती जैसे अपराधों की तुलना में कामुकता के अपराध कहीं अधिक बढ़ते जा रहे हैं। यह छूत की बीमारी एक से दूसरे को लगती है। दूसरे से तीसरे को। धीरे-धीरे सारे समाज का मानसिक और नैतिक स्वास्थ्य बिगड़ता जाता है।

सिनेमा के गायकों को प्रत्यक्ष देखने और उनके मुँह से गाने सुनने के लिए मँहगी टिकट वाले संगीत सम्मेलन की धूम रहती है। निकृष्ट चिन्तन का प्रतिफल मनोविकार और मनोरोगों के रूप में बढ़ता जा रहा है। कामुकता के विचार इतने सुलभ और सस्ते मिल रहे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं। इसके साथ-साथ अन्यान्य अपराधों के घटनाक्रम और दृश्य देखने को मिलते हैं है। इसका प्रभाव चारित्रिक अधःपतन के रूप में सामने आता ही है। इसके साथ-साथ मनोरोगों की अभिवृद्धि का सिलसिला भी चल पड़ता है। तनाव, अनिंद्रा, मृगी, सिर दर्द, दुःस्वप्न जैसी मानसिक बीमारियाँ बढ़ते-बढ़ते कितने ही शरीर रोग उत्पन्न करती है। प्रमेह मधुमेह बहुमूत्र, रक्तचाप, हृदय की धड़कन जैसी बीमारियों का सिलसिला चलने के बाद लोग ऐसी बीमारियों से ग्रसित होते हैं, जो अब असाध्य रोग बनकर जीवन की अवधि घटाती और आदमी को बेमौत मरने के लिए विवश करती है।

संगीत सुनने, सुनाने, गाने और बजाने का भी शौक चलता है। इन दिनों संगीत सुनने के साथ-साथ गाने बजाने और गायकों की गण्डलियाँ देखने का प्रचलन चलता और बढ़ता जा रहा है। इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि शब्द ब्रह्म और नाद ब्रह्म जिसके प्रभाव से आत्मा का उत्कर्ष, चरित्र का अभ्युत्थान और शारीरिक, मानसिक विकास के सुयोग मिलते थे। वही अब व्यक्ति के चरित्र चिन्तन और व्यवहार को नीचे गिराता जा रहा है। इस स्थिति को बदलने में ही कल्याण है।

संगीत के स्कूल खुल रहे हैं। गायन-वादन का शौक बढ़ रहा है। यदि यह कलाकारिता के अभ्युदय की दिशा में हुआ होता, गायन वादनि के साथ-साथ चिन्तन की उत्कृष्टता का भी समावेश हुआ होता तो कितनी प्रसन्नता की बात रहीं होती।

हर वस्तु भली और बुरी है। सदुपयोग करने पर वह भली बनती है। दुरुपयोग होने पर वही बुरी बन जाती है। नाद ब्रह्म संगीत का यदि सदुपयोग हो तो उसी का प्रतिफल अमृत सदृश होता है। बुरे उपयोग में वही विष बन जाती है। संगीत का दुरुपयोग कामुकता भड़काने के निमित्त हो तो शरीर और मन दोनों का सर्वनाश कर देती है। उसी को यदि मन्त्र विनियोग में—सृजनात्मक प्रयोजनों में किया जाय तो परिणाम कितना श्रेयस्कर होता है, यह प्रत्यक्ष है।

शब्द ब्रह्म और नाद ब्रह्म की साधना

प्रकृति की प्रमुख शक्तियों में ताप, प्रकाश, विद्युत की भाँति ही शब्द की भी गणना होती है। ध्वनि टकराव से उत्पन्न होती है और ईथर तथा वायु के सहारे अपने अस्तित्व का परिचय देती है। सामान्यतः उसे किसी घटना की जानकारी देने वाली समझा जाता है और सर्वाधिक उपयोग शब्द गुच्छकों के माध्यम से वार्त्तालाप में किया जाता है। पर इतने ही छोटे क्षेत्र तक सीमित नहीं मान बैठना चाहिए। शब्द की अपनी सामर्थ्य है और उसका प्रभाव, क्षमता प्राणि जगत एवं पदार्थ जगत में समान रूप से देखी जा सकती है।

जो प्राणी किसी रूप में शब्दोच्चार कर सकते हैं वे अपनी इच्छा, आवश्यकता एवं स्थिति की जानकारी अपने सहयोगियों को इसी माध्यम से देते हैं। अपने सजातियों में उनका पारस्परिक आदान-प्रदान इसी आधार पर चलता है। इस व्यवहार में मनुष्य सर्वाधिक प्रवीण है। निजी अभिव्यक्तियों से लेकर परिवार व्यवस्था, व्यवसाय एवं समाज व्यवहार के सारे काम वार्त्तालाप के माध्यम से ही सम्भव होते हैं। विचारणाओं और भावनाओं की व्यापक अभिव्यक्ति में लेखनी की तुलना में वाणी का उपयोग हजारों गुना होता है। जो गूँगा, बहरा न अपनी कह सके दूसरे की न सुन सके तो उसे एक प्रकार से अपंग ही कहना चाहिए।

ध्वनि का उपयोग भावनाओं और परिस्थितियों के माध्यम से उतना अधिक होता है जितना अन्य किसी इन्द्रिय के माध्यम से सम्भव नहीं। नेत्रों को प्रमुख माना जाता है, पर वाणी की तुलना में उनकी उपयोगिता भी नगण्य ही रह जाती है। विरजानन्द जैसे विद्वान, सूरदास जैसे कवि, के. सी. डे. जैसे गायक अन्ध समुदाय में हुए हैं किन्तु किसी मूक बधिर द्वारा कोई पुरुषार्थ प्रकट किया है ऐसा 'केलर' जैसा उदाहरण समस्त संसार खोज डालने पर भी युगों के मध्य एकाध ही मिलेगा। शिक्षा में शब्द शास्त्र की ही प्रमुखता है। लिपि और शब्दकोष के माध्यम से वह क्रमबद्ध की जो धारा बनती है उसे प्रकारान्तर से कथन के समतुल्य ही बना लिया जाता है। ज्ञान-विज्ञान का विस्तार इसी आधार पर सम्भव हो सकता है। मानवी प्रगति के योगदान में सर्वोपरि उपयोग ध्वनि शक्ति के विभिन्न रूपों को ही ठहराता है।

इन दिनों ध्वनि के असन्तुलन एवं आघात से उत्पन्न होने वाली विकृतियों की चर्चा जोरों से चल रही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है और उससे उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रिया पर विज्ञ समाज में चिन्ता व्यक्त की जा रही है। कोलाहल इन दिनों एक समस्या बनकर रह रहा है और उससे उत्पन्न होने वाले दुष्प्रभाव से बच सकने का उपाय गम्भीरतापूर्वक सोचा जा रहा है। बढ़ते हुए कोलाहल को किसी व्यापक महामारी की तरह ही शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनिष्ठ कर आँका गया है।

इंग्लैण्ड की आवाज विरोधी सभा में ब्रिटिश सैनिक सर्जन 'डान मेककेनसी' ने अपने वक्तव्य में कहा था—विगत युद्ध में बहुत आदमी ध्वनि के प्रभाव से मरे हैं। विस्फोट की ध्वनि घातक होती है। वैज्ञानिक भविष्य में ध्वनि को युद्धों में मारक अस्त्र की भाँति उपयोग करने की सोच रहे हैं। केवल भीषण आवाज ही नहीं, धीमी आवाज भी निरन्तर होते रहने से बहुत से व्यक्तियों में स्नायुविक तनाव उत्पन्न कर देती है। वर्तमान में अमेरिका जैसे सभ्य देशों में मानसिक एवं पागलपन के रोगियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। इसका एक मुख्य कारण ध्वनि का दुष्प्रभाव ही है।

अधिक आवाज वाले स्थानों, महानगरों में बसे, छापे खानों में छापने वाले, मोटर ड्राइवर आदि जो भी शोर वाले वातावरण में रहते हैं, उनमें अधिकाधिक बहरेपन की बीमारी बढ़ती जा रही है। कर्कश आवाज से मनुष्य की ध्वनि ग्रहण करने की क्षमता कम होती जाती है। स्नायु संस्थान पर बुरा प्रभाव पड़ता है। तथा स्नायु परीक्षणों से मालूम हुआ है कि आवाज नींद में बाधा डालती है, स्नायुविक संस्थान में थकान उत्पन्न कर देती है एवं पाचन शक्ति को दुर्बल कर देती है।

वैज्ञानिकों ने ध्वनि को मापने की इकाई डेसीवेल (वेल का दशांश) मानी है जिसके अनुसार उपयोगी अनुपयोगी ध्वनियों का वर्गीकरण भी किया है। सुप्रसिद्ध डा. ई. लारेंसस्मिथ ने बताया है कि ६० डेसीबेल अथवा उससे अधिक ध्वनि का पाचन क्रिया पर निश्चित ही बुरा प्रभाव पड़ता है। सामान्य रूप से बात करने की ध्वनि ४० डेसीबेल के स्तर की होती है। कार्यालयों में एक-दूसरे की आवाज मिलकर ५० डेसीवेल हो जाती है। साधारण शोरगुल वाले स्थानों में ध्वनि का स्तर ७० डेसीवेल तक पहुँच जाता है।

न्यूयार्क के मस्तिष्क विशेषज्ञ डा. फोस्टर कैनेडी ने प्रामाणित किया है कि तीव्र-तीक्ष्ण आवाज का मन पर बहुत भयंकर प्रभाव पड़ता है। उन्होंने देखा कि कागज की थैली को हवा भरने से फटने पर जो आवाज हुई उससे एक रोगी के मस्तिष्क का दबाब १ सैकिंड तक सामान्य से चार गुना हो गया।

यह दबाब मस्तिष्क का गोफिन और नाइट्रोग्लिसरीन नामक दबाब बढ़ाने वाले ड्रग्स की अपेक्षा भी अधिक था। उनका कहना है कि लगातार इस आवाज से आदमी की मृत्यु तक हो सकती है, पागल हो जाना सामान्य बात है।

ध्वनि की रचनात्मक उपयोगिता भी है। भाषण, परामर्श, शिक्षण, सत्संग आदि में शब्द के माध्यम से ज्ञान सम्वर्धन के प्रयत्न निरन्तर चलते रहते हैं। व्यवसाय जैसे पारस्परिक सहयोग पर आधारित अगणित क्रिया-कलापों में शब्द संचार की ही प्रमुख भूमिका रहती है। प्रचार एवं विनोद के लिए नियोजित विभिन्न उपाय उपचारों में कथन-गायन का ही आश्रय लिया जाता है। संगीत और अभिनय कला का अधिक विस्तार होने और विज्ञान का सहयोग मिलने से सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन जैसे नये माध्यम निकले हैं। इससे पूर्व यह कार्य छोटे-बड़े रंग मंचों द्वारा सम्पन्न होता था। ज्ञान सम्वर्धन ही नहीं, विनोद और विविध-विधि उत्तेजनाओं के लिए भी शब्द शक्ति के भरपूर उपयोग मनुष्य ने किया है।

सामान्यतः संगीत को भाव संचरण एवं मनोविनोद के लिए प्रयुक्त किया जाता है, पर यह उसका उथला उपयोग है। गहराई में उतरने पर उसे एक स्वास्थ्य संरक्षण एवं मानसिक सन्तुलन के लिए उपयोगी शक्ति के रूप में कारगर सिद्ध होते देखा जा सकता है। इतना ही नहीं इन दिनों छात्रों की प्रगति बढ़ाने के लिए संगीत का उपयोग एक महत्वपूर्ण पोषण एवं उत्तेजना की तरह ही बन पड़ता है। इस प्रकार ध्वनि शक्ति की एक शाखा संगीत की उपयोगिता में एक नई कड़ी और भी जुड़ जाती है। अब श्रमिक प्रगति में संगीत की शारीरिक एवं मानसिक चिकित्सा के लिए भी एक प्रभावी माध्यम की तरह प्रयुक्त किया जाने लगा है।

ऐसा बैकग्राउन्ड म्यूजिक तैयार करने का आर्डर दिया जिससे टाइपिंग में होने वाली अशुद्धियाँ कम हो सकें। 'मुबाक' कम्पनी ने जो बैकग्राइन्ड म्यूजिक बना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कर दिया। उसको बजाने से टाइपिस्टों से होने वाली अशुद्धियों में ३८.८ प्रतिशत कमी हुई।

हवाई अड्डों पर उड़ान करने वाले यात्री जिनके मन प्राय: अशान्त होते हैं, उनके मन को शान्त करने के लिए बैकग्राउन्ड म्यूजिक बजाया जाता है।

बड़े शहरों लन्दन में 'सुपर मार्केट' में ऐसा बैंकग्राउन्ड म्यूजिक बजाया गया, जिससे बिक्री में ४० प्रतिशत वृद्धि पाई गई।

आजकल वैंकग्राउन्ड म्यूजिक तैयार करने वाली कम्पनियाँ ग्राहकों की इच्छानुसार संगीत तर्ज बना देते हैं जिससे वांछित लाभ हो।

कुछ ही समय पूर्व की शोधों से ज्ञात हुआ है तीव्र एवं उत्तजेक संगीत से नाड़ी की गति २२ प्रतिशत तथा भ्यासोभ्यास की गति ५० प्रतिशत बढ़ जाती है।

डाक्टर लोग हमारे शरीर में होने वाली क्रियाएँ जैसे हृदय की धड़कन, आँख की पलकों का खुलना बन्द होना, साँस का निरन्तर चलना आदि क्रमबद्ध प्रक्रियाओं को बायोलोजीकल-क्लाक कहते हैं अब ग्रह निस्संदेह सिद्ध किया जा चुका है कि संगीत मन्द एवं तीव्रगति अनुलोमानुपात में इस 'व्योलोजीकल' को प्रभावित करती है।

ब्रिटेन पैराब्रिटेन की 'संगीत-चिकित्सा सोसायटी' का यह दावा है कि दगा से पीड़ित फेंफड़ों पर संगीतमय-ध्वनि से श्वांस-प्रश्वांस की गति सही तथा सक्रिय हो सकती है।

पश्चिम-जर्मनी के वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि पेट के फोड़े (स्टमक अलसर) आपरेशन एवं दवाओं, की अपेक्षा संगीत से अधिक शीघ्रता से ठीक किये जा सकते हैं ।

संगीत का सबसे अधिक सफल चिकित्सा उपयोग विभिन्न मानसिक रोगों में अस्वस्थ मन को शान्त करने में तथा बौद्धिक क्षमता प्रदान करने में पाया गया है।

संगीत-चिकित्सा का मानसिक रोगो के क्षेत्र में उतना ही सफल योगदान है जितना कि सर्जरी एवं दवाओं का है, इसमें एक विशेषता यह भी है कि इससे अवांछनीय 'साइड इफेक्ट' नहीं होते।

शस्त्र का उपयोग संरक्षण में भी होता है और आक्रमण में भी। चाकू से कलम भी बन सकती है और हत्याकांड भी हो सकता है। कोलाहल विस्फोट से उत्पन्न होने वाले प्रभाव की तरह संगीत का ऐसा उपयोग ही हो सकता है जो घातक प्रतिक्रिया उत्पन्न करे। सपेरे, सर्पों को और बधिक हिरनों को पकड़ने में संगीत का उपयोग करते रहे हैं। युद्ध भेरियाँ सैनिकों को लड़ने मरने के लिए आतुर उत्तेजना देने में एक प्रकार की मदिरा जैसी सिद्ध होती रही है। अब ऐसे संगीत निकाले गये हैं, जो मछुओं को जल क्षेत्र में बिखरी हुई मछलियों को एक स्थान पर एकत्रित करने और उन्हें सरलतापूर्वक पकड़ने में सहायता करते हैं।

वैज्ञानिक इन दिनों एक ऐसे ध्वनि यन्त्र 'रोडेटरेपे लैट' पर परीक्षण कर रहे हैं जिसकी ध्वनि सुनकर चूहों की भूख कुछ समय के लिए समाप्त हो जाती है और वे प्रजनन में अक्षम हो जाते हैं। कल्पना की गई है कि भारत में खाद्यान्न की १० प्रतिशत उपज चूहे खत्म कर जाते हैं। अब इस एलेक्ट्रानिक बीन की सहायता से यह समस्या हल की जा सकेगी। इस यन्त्र में एक धातु की छड़ लगी हुई हैं, जिसे हिलने से इलेक्ट्रोमेग्नेटिक लहरें उत्पन्न होती हैं जिसके सुनकर चूहे उत्तेजित हो जाते है और उनका व्यवहार असामान्य हो जाता है। अमरीकी फर्म का दावा है कि इसका प्रभाव केवल चूहों पर ही होता है।

चूहों की भाँति अन्य प्राणियों के विनाश में भी इस प्रक्रिया का उपयोग हो सकता है। यहाँ तक कि शत्रु देशों के सैनिक एवं प्रजाजन बिना बारूद या गैस का सहारा लिए मारक ध्वनि-प्रवाह उत्पन्न करके भी रुग्ण, दुर्बल अथवा मृतक बनाये जा सकते हैं।

यहाँ सामर्थ्य भर की चर्चा हो रही है। विनाश तो चारों ओर से ऐसे ही बरस रहा है। बात तो सृजन और उत्थान की सोचनी है और यह ढूँढ़ना है कि ध्वनि शक्ति का उपयोगी पक्ष किस प्रकार इस्तगत हो सकता है। संगीत क्षेत्र में दीपक राग और मेघ मल्हार जैसे प्रयोग हुए हैं । बुझे दीपक को जिस संगीत से जलाया जा सकता है वह बुझे मन में भी नव जीवन जगाने तथा सृजनात्मक उमंगें उठाने में भी समर्थ हो सकता है। जिस राग को सुनकर मेघ मालाएँ उमड़ और बरस सकती हैं वह प्रकृति की अन्य सामर्थ्यों को भी अनुकूलता बरसाने के लिए सहमत कर सकती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्तरिक्ष में बहुत कुछ भरा पड़ा है उन अनुदानों से ही धरातल एवं प्राणि समुदाय को सुविकसित होने का अवसर मिला है। इस क्षेत्र में अधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त करने की असीम सम्भावनाएँ अभी भी विद्यमान है। यज्ञोपच्चार के साथ किये गये मन्त्रोच्चारण का प्रभाव अभीष्ट वर्षा के रूप में उपलब्ध होने का उल्लेख कथा-पुराणों में मिलता है। ध्वनि विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा मन्त्र विद्या की लुप्त कड़ियाँ यदि ढूँढ़ी जा सकें तो मन्त्र शक्ति को श्रद्धा परिधि से आगे बढ़ाकर एक प्रचण्ड शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

संगीत के माध्यम से स्नायविक दुर्बलता एवं मानसिक विकृति के निराकरण में उत्साहवर्धक सफलता मिल रही है। उपयोगी पशु-पक्षियों में अधिक प्रजनन कर सकने की समर्थता बढ़ाई गई है। दुधारू पशुओं ने अधिक दूध दिया है। पौधों को जल्दी बढ़ने और अधिक फसल देने में भी संगीत का उत्साहवर्धक प्रतिफल उत्पन्न हुआ है।

इन भौतिक प्रयोगों से आगे का वह क्षेत्र है, जिसे प्राचीन काल में नादयोग कहते थे। उस विद्या को अपनाकर अध्यात्म क्षेत्र की रहस्यमय शक्तियों को जागृत किया जाता था और मानवी कार्यों में छिपी दिव्य सामर्थ्यों से लाभान्वित हुआ जाता था। शब्द ब्रह्म और नाद ब्रह्म की साधना का उल्लेख योग शास्त्र के साधना प्रकरणों में विस्तारपूर्वक हुआ है।

संगीत और योग दोनों ही नाद विद्या के अन्तर्गत आते हैं। योग अनाहत और संगीत आहत नाद है। नाद मन को एकाग्र करने का अच्छा साधन है। जब साधक का मन नाद पर एकाग्र हो जाता है तब यह बाहरी विषयों से मुक्त हो जाता है।

संगीत के स्वरों का सीधा सम्बन्ध सात चक्रों से है। संगीत के सात स्वर सा, रे, ग, म, प, ध, नि संगीत के आधार मानें जाते हैं । संगीत के साधक को इन सात स्वरों के अभ्यास के बिना संगीत में प्रवीयता प्राप्त नहीं हो सकती। प्रत्येक स्वर का सम्बन्ध एक चक्र से है। जैसे मूलाधार का "सा" स्वाधिष्ठान का "रे" मणिपूर का "ग" अनाहत का "म" विशुद्ध का "प" आज्ञा का "ध" महसाधार का "नि" से है।

इन्हीं चक्रों के क्रम में स्वरों का अवरोह और आरोह होता है। मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत विशुद्ध, आज्ञा, सहस्त्राधार इसी के उल्टे क्रम में अवरोह होता है। साधारणतः स्वरों के लिए हृदय, कण्ठ और मूर्धन्य तीन को ही नाद उत्पत्ति का कारण मानते है। व्यवहार में सप्त स्वर इन्हीं तीन स्थानों से प्रकट होते दिखाई देते हैं।

संगीत में तन्मयता उत्पन्न करने की महान शक्ति का कारण ऋषियों ने इन्हीं चक्रों के जागरण में अनाहद नाद के माध्यम से जाना। उपासना में भी संगीत को हृदय की वाणी का नाम दिया है।

मूलाधार से सहस्त्रार तक प्रत्येक चक्र के माध्यम से आरोह-अवरोह निरन्तर करते रहने पर कुण्डलिनी जागरण में सफलता मिल सकती है। जैसे-जैसे ध्यान में तल्लीनता बढ़ती है उसी तरह संगीत की तल्लीनता भी कुण्डलिनी जागरण के समीप साधक को ले पहुँचती है।

शब्द ब्रह्म और नाद ब्रह्म की साधना आत्मिक क्षेत्रों को और तालबद्ध, लयबद्ध संगीत लहरी से भौतिक क्षेत्र को प्रभावित करने और उससे लाभान्वित होने के लिए विशाल कार्य क्षेत्र विद्यमान है। साधना के साहसी लोगों को इसमें प्रवेश करने के लिए पदार्थ विज्ञानियों की तरह ही निष्ठापूर्वक प्रवेश करना चाहिए।

शब्द ब्रह्म की साधना और उसका प्रशिक्षण

मानवीय चेतना के विकास क्रम पर दृष्टि डालने से प्रतीत होता है कि उसके परिष्कार से स्वर ताल मेल गायन और वाद्य के रूप में परिष्कृत होता चला आया और वह एक स्वतन्त्र शास्त्र एवं विज्ञान ही बन गया। इन दोनें को मिलाकर शब्द ब्रह्म की नाद साधना कहें और अन्तरंग को उल्लसित एवं परिष्कृत करने की एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रिया समझे तो यह सब प्रकार उचित ही होगा। जन मानस को उल्लसित करने की दृष्टि से संगीत की उपयोगिता असंदिग्ध है। कण्ठ का माधुर्य और गायक का भाव प्राकट्य वाद्य यन्त्रों की सहायता से एक ऐसी लहर उत्पन्न करता है, जो सुनने वालों के कान को बेधती हुई—मस्तिष्क को छेदती हुई अन्तःकरण के मर्मस्थल से जा टकराती है। गायन का जो भी प्रयोजन है, वह जन मानस को अपनी ओर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बरबस खींचता है। पिछले दिन स्वर साधना का प्रधान लक्ष्य जन मानस में कामुकता, इन्द्रियलिप्सा और कुत्सा को भड़काना रहा है। राजदरबारों के चाटुकार गवैये बजैये धन की लालसा और दुर्बुद्धियों द्वारा मिलने वाली प्रशंसा के लिए लालायित होकर कठपुतली की तरह नाचते रहे हैं । कवियों ने अपने अन्नदाताओं की अनुकम्पा प्राप्त करने के लिए वैसी ही कविता रची जैसी कि बुद्धिविकृति भरी सत्ता ने चाही। इन दिनों गायन और वाद्य का प्रयोजन नारी की पवित्रता को पददलित करके उसे वेश्या उपयोगिता रूप में नियोजित करना और उसके प्रति वासना भरी लिप्सा दृष्टि से सोचने के लिए जन मानस तैयार करना भर शेष रह गया है। हम कहीं भी जायें लैला मजनू के अफसाने ही सुनने को मिलेंगे। कविता, गायन, वाद्य की त्रिविध धाराएँ एक ही प्रयोजन के लिये कटिबद्ध हो रही हैं । इसे एक मानवीय दुर्भाग्य की विभीशिका ही कहना चाहिए जिससे शब्द ब्रह्म को लोक मंगलकारी परमपुनीत गन्ध को नावदान की गन्दी नाली बनाकर रख दिया।

कला की सार्थकता और व्यक्ति की दुर्बलता सर्वमान्य है। शब्द ब्रह्म का उपयोग यदि पतन और सर्वनाश के लिए किया जाता है तो वैसा ही परिणाम होकर ही रहेगा। हो भी रहा है। धन, बुद्धि, बल की शक्तियों से भी बढ़कर 'शब्द' की अद्‌भुत शक्ति होती है। उसे कुत्सा भड़काने मे नियोजित किया जाय तो सार्वजनिक उत्कृष्टता और आदर्शवादिता को कौन, कैसे बचा सकेगा? स्वर और ताल का उपयोग अतीत में लोक मानस के परिष्कार में किया जाता रहा। तब शब्द का उपयोग प्रबोध के लिए सद्‌ज्ञान के लिये होता था। कण्ठ से निकलने वाले गीत गायक और स्रोता की सुप्त सत्प्रवृत्तियों को जगाते थे। स्वर और ताल की सरस्वती का अति पवित्र और अति समर्थ प्रतीक विग्रह माना जाता था सो उन देव तत्वों का उपयोग कुत्सा कामुकता भड़क़ाने वाले प्रयोजनों के लिए करने की कोई हिम्मत ही नहीं करता था। इन दिनों हम ऐसे ही युग में रह रहे हैं जिसने गायकों, वादकों, अभिनेताओं, कवियों, साहित्यकारों, चित्रकारों का एक बड़ा कलाकार वर्ग कुरुचिपूर्ण लिप्सा भड़काने में ही कला की सार्थकता अनुभव करता है। जिन्होंने अपने कण्ठ को लोक मानस की प्रसुप्त महानता जगाने के लिए समर्पित, संकल्पित और प्रतिबन्धित किया हो ऐसे शब्द योगी अब बड़ी कठिनाई से जहाँ-तहाँ ही मिलेंगे। दुरुपयोग में अमृत भी विष बनता है सो अन्तरंग से भाव गरिमा प्रदीप्त कर सकने की सामर्थ्य से भरा पूरा 'शब्द' अब अधःपतन का माध्यम बनकर रह रहा है।

आज शब्द ब्रह्म की साधना की महत्ता धूलि में मिल गई है और संगीत वह मात्र गवैये, बजैय, नचकैयों का धन्धा मात्र बनकर रह गया है। प्राचीनकाल में ऐसी स्थिति से चिढ़कर एक बार औरंगजेब ने अपने राज्य के समस्त वाद्य यन्त्रों को इकट्ठे करके जनाजा निकाला था और उन्हें जलवा दिया था तथा गवैये बजैये अपने से बाहर निकाल दिये गये थे खोज ऐसा भी कर सकती है। अनाचार खीज उत्पन्न करेगा ही। भगवान राम अपने राज्य में इन कला कोढ़ियों को अभिवृद्धि की आशंका से चिन्तित थे। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भरत जी जब चित्रकूट पर भगवान राम से मिलने गये तब उन्होंने भरत से राज्य के कुशल समाचार जानने के लिए अन्य प्रश्न पूछते हुए यह भी पूछा कि कहीं अपने राज्य में गवैये, नचकैये तो बढ़ नहीं गये हैं ? निस्सन्देह जहाँ इन कला कोढ़ियों की संख्या बढ़ेगी वहाँ छूत के रोग की तरह भ्रष्टता का दावानल भड़केगा और वहाँ सब कुछ स्वाहा होकर रहेगा।

आज का अनाचार कल मानवीय विवेक को औरंगजेब की पुनरावृत्ति करने की बात फिर सोच सकता है। इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति से तभी बचा जा सकता है, जब शब्द ब्रह्म की साधना लोक मंगल और जन मानस के परिष्कार का लक्ष्य सामने रखकर किये जाने का क्रम चल पड़े।

समय आ गया कि कला का उपयोग लोक मंगल के लिए करने के लिए कुछ साहसपूर्ण कदम उठाये जायें। सो इस प्रकार का प्रशिक्षण और प्रसार करने के लिए साहस और उत्साह के साथ कदम बढ़ाये जा रहे हैं और उसमें योगदान देने के लिये प्रत्येक स्वर, साधक को सादर आमन्त्रित किया जा रहा है। इन दिनों सङ्गीत के माध्यम से लोक शिक्षण के लिए अलख जगाने वाली मंडलियाँ बनाई जा रही हैं, उनके स्थिर अंग बनकर काम करने वाले कितने ही गायकों वादकों की जरूरत पड़ेगी और उनके निर्वाह का प्रबन्ध किया जायेगा। इसके अतिरिक्त अपने शान्तकुंज में संगीत कला को एक अनिवार्य अंग बना दिया गया है और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साथ ही इस दिशा में विशेष प्रयत्न किया जा रहा है। जिनके कण्ठ स्वर तीखे और मधुर हैं, जिन्हें गायन वाद्य से रुचि है तथा थोड़ा अभ्यास भी करते रहे हैं उन्हें यहाँ के सत्रों में सम्मिलित होने के लिए विशेष रूप से आह्वान किया जा रहा है। इससे उन्हें अपना भविष्य उज्वल बनाने का सुअवसर भली प्रकार प्राप्त करने का अवसर तो मिलेगा ही साथ ही अब सङ्गीत ज्ञान, शब्द योग की साधना का विशेष शिक्षण प्राप्त करते रहने का एक विशेष लाभ और मिलने लगेगा।

जिनके पास समय कम है, स्वर कण्ट तीखे तथा मधुर हैं एवं गायन वाद्य का थोड़ा बहुत ज्ञान पहले से ही है, उन्हें स्वल्पकालीन शिक्षण की एक अतिरिक्त व्यवस्था की गई है। यह प्रशिक्षण मात्र एक महीने के होंगे और आधावधि चलते रहेंगे। इस थोड़े समय में भी संगीतकला में रुचि रखने वाले व्यक्ति समुचित लाभ ले सकेंगे।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हंस योग—सोऽहम् साधना

सोऽहम् साधना का तत्वज्ञान

शरीर निर्वाह में अन्न और जल से भी अधिक महत्त्व वायु का है। वायु में प्राण-वायु की-ऑक्सीजन की-महत्ता सर्वोपरि है। ऑक्सीजन का महत्त्व विज्ञान के विद्यार्थी भली प्रकार जानते हैं। रक्त में लालिमा उसी की है। इसी ईंधन के लेने से शरीर का इंजन गर्म रहता है और सब कल-पुर्जे अपना-अपना काम सही रीति से करते हैं। ऑक्सीजन का एक नाम प्राण वायु भी है। वह समुचित रूप से मिलती रहे तो शरीर बलिष्ठ बना रहेगा।

ऑक्सीजन प्राण के अधिक सूक्ष्म स्तर का प्राण है, जिसे जीवनी शक्ति, प्रतिभा और प्रखरता के रूप में माना जाता है। ऑक्सीजन पाने के लिए तेज और गहरी साँस चलाने वाले, दौड़ने से लेकर दण्ड-बैठक करने तक के अनेकों व्यायाम किये जाते हैं। सूक्ष्म प्राण के रूप में 'जीवट' प्राप्त करने के लिए प्राणायाम किये जाते हैं। प्राणायामों के अनेकों विधि-विधान हैं। उन्हीं में से एक सूर्यवेधन अनुलोम-विलोम ब्रह्मवर्चस् साधना में प्राणयोग के नाम से सम्मिलित है। व्यायाम स्थूल शरीर का बलवर्धन उद्देश्य पूरा करते हैं और प्राणायाम से मनस्वी-तेजस्वी बनने का लाभ मिलता है। सूक्ष्म शरीर में प्रखरता उत्पन्न करना उसका उद्देश्य है।

स्थूल और सूक्ष्म शरीर के लिए अभीष्ट मात्रा में प्राण संचय करने की प्रक्रिया व्यायाम और प्राणायाम कहलाती है। कारण शरीर के अन्तराल को दिव्य प्राण की आवश्यकता होती है। यह 'महाप्राण' है। इसे 'ब्रह्म प्राण' भी कहा गया है। इसे हंस योग के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। सोऽहम् साधना इसी का नाम है। गायत्री उपासना के विज्ञान में इसे अजपा गायत्री कहते हैं।

इस साधना में मनःस्थिति को ब्राह्मी भूत बनाना पड़ता है। अपने को शरीर मन से ऊपर की स्थिति में अनुभव कराने वाली ब्रह्म चेतना जगानी पड़ती है। अभ्यास करते समय आत्मिक चुम्बकत्व को अधिक प्रखर बनाना होता है। इतनी भूमिका बन पड़ने पर श्वांस प्रक्रिया में इतना दिव्य आकर्षण उत्पन्न होता है जिसके सहारे अनन्त अन्तरिक्ष से दिव्य प्राण को अपने लिए आकर्षित करना और उपलब्ध अंश को धारण कर सकना सम्भव होता है। सोहम् साधना इसी का नाम है।

प्राणायाम में साँस खींचने की प्रक्रिया को पूरक कहते हैं। हंस योग में साँस खींचने के साथ अत्यन्त गहरे सूक्ष्म पर्यवेक्षण में उतरकर यह खोजना पड़ता है कि वायु के भीतर प्रवेश करते समय सीटी बजने जैसी 'सो' की ध्वनि भी उसके साथ ही घुली हुई है। यह ध्वनि प्रकृतिगत नहीं वरन् ब्राह्मी है। उसे कृष्ण के बंशी वादन के समतुल्य समझा जाय। यह ध्वनि ईश्वरीय संकेतों-सन्देशों और अनुदानों से भरी हुई है। साँस के साथ भीतर प्रवेश करती है और सम्पूर्ण जीवन सत्ता पर अपना अधिकार जमा लेती है। सोहम् के कुभंक में यही भावना रहती है कि जीवन सम्पदा पर परिपूर्ण अधिकार 'सो'—हम—परमेश्वर का हो गया। साँस छोड़ते समय सांप की फुंसकार जैसी अहम् की ध्वनि का अनुभव अभ्यास में लाना पड़ता है और भावना करनी होती है कि अहंता को विसर्जित-निरस्त कर दिया गया है। अहम् के स्थान पर 'स' (उस परमेश्वर) की प्रतिष्ठापना हो गयी। वेदान्त योग की यही एकत्व-अद्वैत स्थिति है। इसी में पहुँचने में अयमात्मा ब्रह्म-प्रज्ञान ब्रह्म-शिवोहम-सच्चिदानन्द वदो-हमे-तत्वमसि आदि बोध शब्दों में व्यक्ति की गई-भावनाओं की अनुभूति होती है।

आत्मानिरंतर परमात्मा के साथ अपने सम्बन्ध को स्मरण करने और सम्पर्क सूत्र बनाये रहने के लिए हर श्वांस के साथ सोऽहम् का अजपा जाप जारी रखा है। 'सोऽहम्' का अर्थ है—मैं वह (परमात्मा) हूँ। शिवोऽम्-सच्चिदानन्दोहम् आदि शब्दों में सोहम् का ही स्पष्टीकरण है। इस तथ्य को हर घड़ी स्मरण रखे रहने और स्मृति सूत्र को सुदृढ़ बनाने की सुविधा इसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अजपा जाप में मिलती है। ब्रह्म सान्निध्य—ब्रह्म साक्षात्कार का लाभ इस साधना में मिलता है। उसके कितने ही आध्यात्मिक क्षेत्र के ऐसे प्रतिफल हैं, जिन्हें क्रमशः आत्मा और परमात्मा की एकता के ही प्रतीक माना जा सकता है। अपूर्णता को पूर्णता में परिणत करने वाली इस हंसयोग साधना को ब्रह्मवर्चस् योगाभ्यास का महत्त्वपूर्ण अंग उसकी गरिमा को ध्यान में रखते हुए ही बनाया गया है।

साधना विधान का जिक्र आने पर यह कहा गया है कि यह उच्चस्तरीय साधनाएँ यद्यपि साधक को सामान्य उपासक की अपेक्षा अत्यधिक और शीघ्र लाभान्वित करती हैं तथापि यह पूर्णतया निरापद नहीं। कुछ विधान तो ऐसे होते हैं, जो परमाणु विखण्डन की तरह क्षण भर में अद्भुत शक्ति का भण्डार उपलब्ध करा देने वाले हैं, पर विज्ञान के विद्यार्थी जानते होंगे कि मैडम क्यूरी की मृत्यु ऐसे ही एक कठिन प्रयोग करते समय हो गई थी। उच्चस्तरीय साधनाओं की इसी कठिनाई को पार करने के लिए प्राचीन काल से आरण्यक परम्परा रही है उच्चस्तरीय साधना के इच्छुक इन आरण्यकों में रहकर योग्य मार्गदर्शकों के सान्निध्य-संरक्षण में यह साधनाएँ सम्पन्न किया करते थे। यह परम्परा आज यद्यपि रही नहीं तथापि वह स्थान अपने स्थान पर ज्यों के त्यों हैं।

आज न तो उस तरह के आरण्यक रहे, न मार्गदर्शक सद्गुरु। इस तरह के सुयोग कहीं उपलब्ध भी हों तो इस व्यस्त और अभावग्रस्त युग में हर किसी को इतना समय और सुविधा भी नहीं रहती कि वे दीर्घकाल तक बाहर रहकर साधनाएँ कर सकें। इस कठिनाई का हल उन निरापद साधनाओं के प्रशिक्षण द्वारा किया जा रहा है, जिन्हें कोई भी व्यक्ति सामान्य गृहस्थ के उत्तरदायित्वों को निबाहते हुए भी घर पर ही रहकर कर सके। तीन प्राणायामों का उल्लेख "गायत्री का पंचकोशीयसाधना:" प्रकरण में किया गया है। गायत्री कुण्डलिनी अथवा पंचकोशों का अनावरण नाम कोई भी लें वस्तुतः यह सभी प्राण साधनाओं के ही पर्याय हैं। पंचाग्नि विद्या भी उसे ही कहते हैं। सावित्री साधना भी प्राण साधना का ही दूसरा नाम है। स्पष्टतः प्राणायाम साधना की भूमिका इन साधनाओं में प्रमुख रहती है, अन्य साधनाओं के पाँच विधान भी ऐसे हैं जिनका अभ्यास कोई भी व्यक्ति घर पर रहकर भी कर सकता है। यह हैं— (१) गायत्री का अजपा जप या सोऽहं साधना (२) खेचरी मुद्रा (३) शक्तिचालिनी मुद्रा (४) त्राटक साधना तथा (५) नादयोग। इन पाँच साधनाओं में सोऽहं साधना या हंसयोग की महत्ता सर्वाधिक है।

प्राणायाम के दो आधार हैं—(१) श्वाँस-प्रश्वाँस क्रिया का विशिष्ट विधि-विधान, कृत्य-उपकर्म द्वारा मंथन। (२) प्रचण्ड शक्ति द्वारा उत्पन्न चुम्बकत्व के सहारे प्राण चेतना की खींचने और धारण करने का आकर्षण। मंथन और आकर्षण का द्विविध समन्वय ही प्राणयोग का उद्देश्य पूरा करता है। इनमें से किसी एक को ही लेकर चला जाय तो ध्यानयोग का अभीष्ट उद्देश्य पूरा न हो सकेगा। गहरी साँस लेना (डीप ब्रीदिंग) फेंफड़ों का व्यायाम भी है। इसकी कई विधियाँ शरीर शास्त्रियों ने ढूँढ़ निकाली हैं और उनका उपयोग स्वास्थ्य लाभ के लिए किया है। अमुक विधि से दौड़ने से, दण्ड-बैठक, सूर्य नमस्कार आदि क्रियायें करने से भी यह प्रयोजन एक सीमा तक पूरा हो जाता है और फेफड़े मजबूत होने के साथ-साथ स्वास्थ्य सुधारने में सहायता मिलती है। इस श्वाँस क्रिया की विविधता का साधना विज्ञान में चौंसठ प्रकार के विधानों का वर्णन हैं। भारत के बाहर इनके अतिरिक्त अन्य प्रकार की विधियों का प्रचलन है। यह प्राणायाम का एक भाग भी है और इससे उसका स्वास्थ्य सम्वर्धन वाला प्रयोजन-भी पूरा होता है ।

दूसरा पक्ष संकल्प है, जिसके निमित्त अमुक मन्त्रों का उच्चारण, अमुक आकृतियों का, अमुक ध्वनियों का ध्यान जोड़ा जाता है। इस ध्यान में दिव्य-चेतना शक्ति के रूप में प्राणतत्व के शरीर में प्रवेश करने की आस्था विकसित की जाती है। आस्था का चुम्बकत्व, संकल्प का आकर्षण मात्र कल्पना की उड़ान नहीं है, विचार विज्ञान के ज्ञाता समझते हैं कि संकल्प कितना सशक्त तत्व है। उसी आधार पर समूचा मनःसंस्थान मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार का अन्तःकरण चतुष्टय काम करता है और उसी से शरीर की विविध-विधि, क्रियाओं की हलचलें गतिशील होती हैं। शरीर और मन के संयोग से ही कर्म बनते हैं और उन्हीं के भले-बुरे परिणाम सुख-दुःख के, हानि-लाभ के रूप में सामने आते रहते हैं। संक्षेप में यहाँ जो कुछ भी बन-बिगड़ रहा है, वह संकल्प का ही फल है। प्राणी अपने संकल्प के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अनुरूप ही अपना स्तर बनाते, बढ़ाते और बदलते हैं। समष्टि के संकल्प से सार्वजनीन वातावरण बनता है। ब्रह्म के संकल्प से ही इस विश्व के सृजन, अभिवर्धन एवं परिवर्तन का क्रम चल रहा है। असंतुलन को संतुलन में बदलने की आवश्यकता जब ब्रह्म चेतना की होती है तब उसका संकल्प ही अवतार रूप में प्रकट होता है और अभीष्ट प्रयोजन पूरा करके चला जाता है।

योगाभ्यास में जिस श्रद्धा-विश्वास को आत्मिक प्रगति का आधार स्तम्भ माना गया है, वह तथ्यत: भाव भरा सुनिश्चित संकल्प भर ही है। साधनात्मक कर्मकाण्डों की शक्ति अधिक से अधिक एक-चौथाई मानी जा सकती है। तीन चौथाई सफलता तो संकल्प की प्रखरता पर अवलम्बित रहती है। संकल्प शिथिल हो तो कई तरह के क्रिया-कृत्य करते रहने पर भी योग साधना के क्षेत्र में कोई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अर्जित न की जा सकेगी।

प्राणायाम का प्राण यह संकल्प ही है। योग-कृत्य तो उसका कलेवर भर है। सफल प्राणयोग के लिए जहाँ निर्धारित विधि-विधान को तत्परतापूर्वक क्रियान्वित करना पड़ता है, वहाँ संकल्प को भी प्रखर रखते हुए उस साधना को सर्वांगपूर्ण बनाना पड़ता है।

प्राणायामों के विधान एवं स्वरूप अनेक हैं, पर इनमें से हमें दो ही पर्याप्त जँचे हैं। एक वह जो आत्मशुद्धि के षट्कर्मों में सामान्य रूप से किया जाता है, जो सर्वसुलभ और बाल कक्षा के छात्रों तक के लिए सुविधाजनक है। उसमें श्वाँस पर नियंत्रण किया जाता है। धीरे-धीरे भरपूर श्वाँस खींचना, जब तक रोका जा सके रोकना, धीरे-धीरे वायु को बाहर निकालना और फिर कुछ समय श्वाँस को बाहर रोके रहना, बिना श्वाँस लिए ही काम चलाना। वह प्राणायाम इतना भर है, उससे मनो-निग्रह की तरह श्वाँस-निग्रह का एक बड़ा प्रयोजन पूरा होता है। मन के निग्रह का प्राण-निग्रह के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्राण-निग्रह करने के लिए प्राणायाम साधक के लिए मनो-निग्रह सरल पड़ता है। उस प्राणायाम में प्राणतत्व का शरीर में प्रवेश, स्थापना, विकास, स्थिरीकरण हो रहा है, ऐसी भावना की जाती है और ध्यान किया जाता है कि जो भी विकृतियाँ तीनों शरीरों में थीं। वे सभी श्वाँस के साथ निकलकर बाहर जा रही हैं।

फेफड़े अपना कार्य संचालन करके सारे शरीर की गतिविधियों को आगे धकेलते रहने के लिए श्वाँस द्वारा हवा खींचते हैं, यह प्रथम चरण हुआ। दूसरे चरण में रक्तकोष्ठ प्रविष्ट वायु में से केवल ऑक्सीजन तत्व खींचते हैं और अपनी खुराक पाते हैं। यह दो क्रियायें शारीरिक हैं और साधारण रीति से होती रहती हैं। तीसरा चरण विशिष्ट है, संकल्प शक्ति वायु के अन्तराल में घुले हुए प्राण को खींचती है। प्राण चेतना है, वह संकल्प चेतना द्वारा ही खींचा जा सकता है। प्राणायामकर्ता का संकल्प, प्राण-सत्ता के अस्तित्व उसके खींचे जाने तथा धारण किये जाने, तीनों शरीरों पर उसकी सुखद प्रतिक्रिया होने के सम्बन्ध में जितना सघन होगा उतना ही उसका चमत्कार उत्पन्न होगा। संकल्प रहित अथवा दुर्बल, धुँधली भाव संवेदना का प्राणायाम श्वाँस व्यायाम भर बनकर रह जाता है और उसका लाभ श्वांस-संस्थान तक में मिलने तक सीमित रह जाता है। यदि प्राणतत्व का चेतनात्मक लाभ उठाना हो तो उसके लिए श्वांस क्रिया से भी अधिक महत्त्वपूर्ण प्राणायाम के लिए नितान्त आवश्यक संकल्प बल को जगाया जाना चाहिए। यह निष्ठा परिपक्व की जानी चाहिए कि प्राण का आगमन, प्रवेश, कण-कण में उसका संस्थापन एवं शक्ति-अनुदान सुनिश्चित तथ्य है, इसमें सन्देह के लिए कहीं कोई गुंजायश नहीं है।

संध्या-वन्दन के समय प्रयुक्त होने वाला प्राणायाम उपासना क्षेत्र में प्रवेश करने वाले प्रत्येक छात्र के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है। इसके बिना मनोनिग्रह में गड़बड़ी बनी रहेगी और प्रत्याहार धारणा एवं ध्यान के अगले चरण ठीक तरह से उठा सकना कठिन पड़ेगा।

उच्चस्तरीय प्राणायामों में 'सोऽहम् साधना' को सर्वोपरि माना गया है, क्योंकि उसके साथ जो संकल्प जुड़ा हुआ है, वह चेतना को उच्चतम स्तर तक उछाल देने में, जीव और ब्रह्म का समन्वय करा देने में विशेष रूप से समर्थ है। इतनी इस स्तर की भाव संवेदना और किसी प्राणायाम में नहीं है। अस्तु, उसे सामान्य प्राणायामों की पंक्ति में न रखकर स्वतंत्र नाम दिया गया है। इसे 'हंसयोग' कहा गया है. हंसयोग का माहात्म्य, प्रयोग और परिणाम इतने विस्तारपूर्वक साधना शास्त्र में लिखा है कि उसे एक स्वतन्त्र योग शाखा मानने जैसी स्थिति बन जाती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

'सोऽहम् साधना' को 'अजपा जप' अथवा प्राण गायत्री भी कहा गया है। मान्यता है कि श्वाँस के शरीर में प्रवेश करते समय 'स' जैसी, साँस रुकने के तनिक से विराम समय में 'ओ' जैसी और बाहर निकलते समय 'हं' जैसी अत्यन्त सूक्ष्म ध्वनि होती रहती है। इसे श्वाँस क्रिया पर चिरकाल तक ध्यान केन्द्रित करने की साधना द्वारा सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय द्वारा सुना जा सकता है। चूँकि ध्वनि सूक्ष्म है स्थूल नहीं, इसलिए उसे अपने छेद वाले कानों से नहीं, सूक्ष्म शरीर में रहने वाली सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय द्वारा शब्द तन्मात्रा के रूप में ही सुना जा सकता है। कोई खुले कानों से इन शब्दों को सुनने का प्रयत्न करेगा तो उसे कभी भी सफलता न मिलेगी।

नादयोग में मात्र सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय द्वारा शंख, घड़ियाल, बादल, झरना, वीणा जैसे कितने ही दिव्य शब्द सुने जाते हैं किन्तु हंसयोग में नासिका एवं कर्णेन्द्रिय की समन्वित सूक्ष्म शक्ति का दुहरा लाभ मिलता है। 'सोऽहम्" को अनाहत शब्द कहा गया है। आहत वे हैं जो कहीं कोई चोट लगने से उत्पन्न होते हैं। अनाहत वे हैं जो बिना किसी आघात के उत्पन्न होते हैं। नादयोग में जो दिव्य ध्वनियाँ सुनी जाती हैं, उनके बारे में दो मान्यताएँ हैं। एक यह है कि प्रकृति के अन्तराल सागर में पाँच तत्वों और सत्, रज्, तम् इन तीन गुणों की जो उथल-पुथल मचती रहती है यह उनकी प्रतिक्रिया है। दूसरे यह माना जाता है कि शरीर के भीतर भी रक्त-संचार, आकुंचन-प्रकुंचन, श्वाँस-प्रश्वाँस जैसी क्रियायें अनवरत रूप से चलती रहती हैं। यह शब्द उन हलचलों से उत्पन्न होते हैं, अस्तु यह आहत हैं। नादयोग को भी कई जगह अनाहत कहा गया है, पर आम मान्यता यही है कि वे आहत हैं। मुख से जो शब्द उत्पन्न होते हैं वे भी होठ, जीभ, कण्ठ, तालू आदि अवयवों की माँसपेशियों की उटक-पटक से उत्पन्न होते हैं, अस्तु जप भी आहत है। आहत से अनाहत का महत्व अधिक माना गया है। अनाहत ब्रह्मचेतना द्वारा निश्चित और आहत प्रगतिगत हलचलों से उत्पन्न होते हैं, अस्तु उनका महत्त्व भी ब्रह्म और प्रकृति की तुलना जैसा ही न्यूनाधिक है।

तत्वदर्शियों का मत है कि जीवात्मा के गहन अन्तराल में उसकी आत्म-बोध प्रज्ञा स्वयमेव जगी रहती है और उसी स्फुरणा से 'सोऽहम्' का आत्मबोध अजपा जाप बनकर स्वसंचालित बना रहता है। संस्कृत भाषा के स +अहम् शब्दों से मिलकर 'सोऽहम्' का आविर्भाव माना जाता है। यहाँ व्याकरण शास्त्र की सन्धि प्रक्रिया के झंझट में पड़ने की जरूरत नहीं है। जो सनातन ध्वनियाँ चल रही हैं, वे व्याकरण शास्त्र के अनुकूल हैं या नहीं, यह सोचना व्यर्थ है। देखना इतना भर है कि इस सनातन शब्द संचार का क्या अर्थ बैठता है? 'सो' अर्थात् 'वह', वह अर्थात् 'परमात्मा', अहम् अर्थात् जीवात्मा। दोनों का समन्वय 'सोऽहम्'। आत्मा और परमात्मा एक हैं, यह अद्वैत सिद्धान्त का समर्थन हैं। तत्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म, शिवोहम् सच्चिदानन्दोहम्, शुद्धोसि, बुद्धोसि निरंजनोसि जैसे वाक्यों में इसी दर्शन का प्रतिपादन है, उनमें जीव और ब्रह्म की तात्विक एकता का प्रतिपादन है।

'सोऽहम्' उपासना के निमित्त किए गए प्राणायाम में इसी अविज्ञात तथ्य को प्रत्यक्ष करने का, प्रसुप्त को जगाने का प्रयत्न किया जाता है। जीव अपने आपको शरीर मान बैठा है, उसी की सुविधा एवं प्रसन्नता की बात सोचता है, उसी के लाभ-प्रयत्नों में संलग्न रहता है। काया के साथ जुड़े हुए व्यक्ति और पदार्थ ही उसे अपने लगते हैं और उसी सीमित सम्बन्ध क्षेत्र तक ममत्व को सीमित करके अन्य सबको पराया समझता रहता है। 'अपनों के लाभ के लिए 'परायों' को हानि पहुँचाने में उसे संकोच नहीं होता। यही है मायामग्न, भव-बन्धनों में जकड़े हुए मोहग्रस्त जीव की स्थिति। इसी में बँधे रहने के कारण उसे स्वार्थ के, व्यर्थ के, अनर्थ के कामों में संलग्न रहना पड़ता है। यही स्थिति प्राणी को अनेकानेक आधि-व्याधियों में उलझाती और शोक-संताप के गर्त में धकेलती है, इससे बचा और उबरा जाय। इसी समस्या को हल करने के लिए आत्म-ज्ञान एवं साधना विज्ञान का ढाँचा खड़ा किया गया है।

सोऽहम् को सद्ज्ञान, तत्वज्ञान, ब्रह्मज्ञान कहा गया है। इसमें आत्मा को अपनी वास्तविक स्थिति समझने, अनुभव करने का संकेत है। 'वह परमात्मा मैं ही हूँ, इस तत्वज्ञान में मायामुक्ति स्थिति की शर्त जुड़ी हुई है। नर-कीट, नर-पशु और नर-पिशाच जैसी निकृष्ट परिस्थितियों में घिरी 'अहंता' के लिए इस पुनीत शब्द का प्रयोग नहीं हो सकता। ऐसे तो रावण, कंस, हिरण्यकश्यप जैसे अहंकारग्रस्त आततायी ही लोगों के मुख से अपने को ईश्वर कहलाने के लिए बाधित करते थे। अहंकार—उन्मत्त मनःस्थिति में वे अपने को वैसा

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझते भी थे, पर इससे बना क्या? उनका अहंकार ही ले डूबा। 'सोहम्' साधना में पंचतत्वों और तीन गुणों से बने घिरे शरीर को ईश्वर मानने के लिए नहीं कहा गया है। ऐसी मान्यता तो उल्टा अहंकार जगा देगी और उत्थान के स्थान पर पतन का नया कारण बनेगी, यह दिव्य संकेत आत्मा के शुद्ध स्वरूप का विवेचन है। वह वस्तुतः ईश्वर का अंश है। समुद्र और लहरों की, सूर्य और किरणों की मटाकाश और घटाकाश की, ब्रह्माण्ड और पिण्ड की, आग और चिन-गारी की उपमा देकर परमात्मा और आत्मा की एकता का प्रतिपादन करते हुए मनीषियों ने यही कहा है कि मल-आवरण विक्षेपों से, कषाय-कल्मषों से मुक्त हुआ जीव वस्तुतः ब्रह्म ही है। दोनों की एकता में व्यवधान मात्र अज्ञान का है, यह अज्ञान ही अहंता के रूप में विकसित होता है और संकीर्ण स्वार्थपरता में निमग्न होकर व्यर्थ चिन्तन तथा अनर्थ कार्य में निरत रहकर अपनी दुर्गति अपने आप बनाता है। साधना का उद्देश्य मनःक्षेत्र में भरी कुण्ठाओं और शरीर क्षेत्र में अभ्यस्त कुत्साओं के निराकरण के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। सर्वतोमुखी निर्मलता का अभिवर्धन ही ईश्वर प्राप्ति की दिशा में बढ़ने वाला महान् प्रयास माना गया है। सोहम् साधना की प्रतिक्रिया यही होनी चाहिए।

'ईश्वर अंश जीव अविनाशी' की उक्ति धर्मशास्त्रों में अनेक स्थानों पर लिखी पाई जाती है, अनेक धर्मोपदेशकों द्वारा आये दिन सुनी जाती है। उसे सामान्य बुद्धि जानती और मानती भी है, पर इतने भर से बनता कुछ नहीं। यह मान्यता अन्तःकरण के गहनतम स्तर की गहराई तक उतरनी चाहिए। गहन आस्था बनकर प्रतिष्ठापित होने वाली श्रद्धा ही अन्तःप्रेरणा बनती है और उसी के धकेले हुए मस्तिष्क तथा शरीर रूपी सेवकों को कार्यशील होना पड़ता है। सोहम्-तत्वज्ञान यदि अन्तरात्मा की प्रखर श्रद्धा के रूप में विकसित हो सके तो उसका परिणाम सुनिश्चित रूप में दिव्य जीवन जैसा कायाकल्प बनकर सामने आना चाहिए। तब व्यक्ति को उसी स्तर पर सोचना होगा जिस स्तर पर ईश्वर सोचता है और वही करना होगा जो ईश्वर करता है। एकता की स्थिति में दोनों का स्वरूप भी एक हो जाता है। नाला जब गंगा में मिलता है और बूँद समुद्र में घुलती है, तो दोनों का स्वरूप एवं स्तर एक हो जाता है। ब्रह्मभाव से जगा हुआ जीव अपने चिंतन और कर्मक्षेत्र में सुविकसित स्तर का देवमानव ही दृष्टिगोचर होता है।

कुण्डलिनी जागरण के लिए प्रयुक्त होने वाली सोहम् साधना अजपा गायत्री के विज्ञान एवं विधान के समन्वय को हंसयोग कहते हैं। हंसयोग साधना का महत्त्व और प्रतिफल बताते हुए योगविद्या के आचार्यों ने कहा है—

सर्वेषु देवेषु व्याप्तं वर्तते यथा ह्यग्निः काष्ठेषु तिलेषु तैलमिव। तद्विदित्वा न मृत्युमेति।

—हंसोपनिषद्

जिस प्रकार काष्ठ में अग्नि और तिलों में तेल रहता है, उसी प्रकार समस्त वेदों में 'हंस' ब्रह्म रहता है। जो उसे जान लेता है, सो मृत्यु से छूट जाता है।

सोहम् ध्वनि को निरन्तर करते रहने से उसका एक शब्द चक्र बन जाता है, जो उलटकर हंस सदृश प्रतिध्वनित होता है। इसी आधार पर उस साधना का एक नाम हंसयोग भी रखा गया है।

हंसो हंसोहमित्येवं पुनरावर्त्तनक्रमात्।
सोऽहं सोऽहं भवेन्नूनमितियोगविदो विदुः॥

—योग रसायनम्

हंसो-हंसो इस पुनरावर्तित क्रम से जप करते रहने पर शीघ्र ही 'सोहं-सोहं' ऐसा जप होने लगता है। योग वेत्ता इसे जानते हैं।

अभ्यासानन्तरं कुर्याद् गच्छँस्तिष्ठन्स्वपन्नपि।
चिंतनं हंसमन्त्रस्य योगसिद्धिकरं परम्॥

—योग रसायनम् ३०३

अभ्यास के अनन्तर चलते, बैठते और सोते समय भी हंस मन्त्र का चिंतन (साँस लेते समय 'सो', छोड़ते समय 'हंस' का चिन्तन अभ्यास) परम् सिद्धिदायक है। इसे ही 'हंस', 'हंसो', 'सोऽहम्' मन्त्र कहते हैं।

हंसस्याकृतिविस्तारं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम्। सर्वेषु देहेषु व्याप्त वर्तते यथा ह्यग्निः काष्ठेषु तिलेषु तैलमिव। तं दिवित्वा न मृत्युमेति। अग्नीषोमौ पक्षावोंकारः शिर उकारो बिन्दुस्त्रिनेत्रं मुखं रुद्रो रुद्राणि चरणौ द्विविधं कण्ठतः कुर्यादित्युन्मनाः अजघोपसंहार इत्यभिधीयते।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

तस्मान्मनो विलीने मनसि गते संकल्पविकल्पे दग्धे पुण्यपापे सदाशिवः शक्त्यात्मा सर्वत्रावस्थितः स्वयं ज्योति शुद्धो बुद्धो नित्यो निरंजनः शान्ततमः प्रकाशयतीत वेदानुवचनं भवतीत्युपनिषत्।

—हंसोपनिषद्

'हंस' तत्व का आकार विस्तार भुक्ति और मुक्ति दोनों ही देने वाला है। यह तत्व सम्पूर्ण देहधारियों में उसी तरह व्याप्त है जैसे काष्ठ में अग्नि एवं तिलों में तेल समाया रहता है।

अग्नि और सोम इस हंस के पंख हैं। ॐकार मस्तक, विन्दु नेत्र, रुद्र मुख, रुद्राणी चरण, काल भुजायें अग्नि बगली, तथा सगुण-निर्गुण ब्रह्म उसके दोनों पार्श्व हैं।

जब मन उस हंस तत्व में लीन हो जाता है तो मन के संकल्प—विकल्प समाप्त हो जाते हैं और शक्ति रूप, ज्योति रूप, शुद्ध-बुद्ध, नित्य-निरंजन ब्रह्म का प्रकाश प्रकाशित होता है।

प्राणिनां देहमध्ये तु स्थितो हंसः सदाऽच्युत्।
हंस एव परं सत्यं हंस एव तु शक्तिकम्॥
हंस एव परं वाक्यं हंस एव तु वादिकम्।
हंस एव परो रुद्रो हंस एव परात्परम्॥
सर्वदेवस्य मध्यस्थो हंस एव महेश्वरः।
हंसज्योतिरनूपम्यं देवमध्ये व्यवस्थितम्॥

—ब्रह्म विद्योपनिषद् ६०-६५

प्राणियों की देह मे भगवान् 'हंस' रूप में अवस्थित हैं। हंस ही परम् सत्य है, हंस ही परम् बल है।

समस्त देवताओं के बीच 'हंस' ही परमेश्वर है, हंस ही परम वाक्य है, हंस ही वेदों का सार है, हंस परम रुद्र है, हंस ही परात्पर ब्रह्म है।

समस्त देवों के बीच हंस अनुपम ज्योति बनकर विद्यमान है।

सदा तन्मयतापूर्वक हंस मन्त्र का जप निर्मल प्रकाश का ध्यान करते हुए करना चाहिए।

नभस्थं निष्कलं ध्यात्वा मुच्यते ावबन्धनात्।
अनाहतध्वनियुतं हंसं यो वेद हृद्गतम्॥
स्वप्रकाशचिदानन्दं स हंस इति गीयते।
नाभिकन्दे समौ कृत्वा प्रणापानौ समाहितः॥
मस्तकस्थामृतास्वादं पीत्वा ध्यानेन सादरम्।
हंसविद्यामृते लोके नास्ति नित्यत्वसाधनम्॥
यो ददाति महाविद्यां हंसाख्यां पारमेश्वरीम्।
हंसहंसेति यो ब्रूयाद्धंसो ब्रह्माहरिः शिवः।
गुरुवक्त्रात्तु लभ्येत् प्रत्यक्षं सर्वतोमुखम्॥

—ब्रह्म विद्योपनिषद् २०-३४

जो हृदय में अवस्थित अनाहत ध्वनि सहित प्रकाशवान् चिदानन्द 'हंस' तत्व को जानता है, सो 'हंस' ही कहा जाता है।

जो अमृत से अभिसिंचन करते हुए 'हंस' तत्व का जप करता है, उसे सिद्धियों और विभूतियों की प्राप्ति होती है।

इस संसार में 'हंस' विद्या के समान और कोई साधन नहीं। इस महाविद्या को देने वाला ज्ञानी सब प्रकार सेवा करने योग्य है।

जो 'हंस' तत्व की साधना करता है है वह त्रिदेव रूप है। वह सर्वव्यापी भगवान को जान ही लेता है।

मनसो हंसः सोऽहं हंस इति तन्मयं यज्ञो नादानुसंधानम्।

—पाशुपत ब्रह्मोपनिषद्

मानस ब्रह्म का रूप—हंस है। यही सोऽहम् है। यह हंस बाहर भ्रमण करता है भीतर भी। यह परमात्म स्वरूप है। इसका तन्मयता यज्ञ—नादानुसन्धान है।

हंसात्ममालिका वर्णब्रह्मकालप्रचोदिता।
परमात्मा पुमानिति ब्रह्मसंपत्तिकारिणी॥

—पाशुपत ब्रह्मोपनिषद्

हं यह वर्ण ब्रह्म है। इसीसे ब्रह्मा की प्राप्ति होती है। पुरुष और परमात्मा यही है।

हंसविद्यामविज्ञाय मुक्तौ यत्नं करोति यः।
स नभोभक्षणेनैव क्षुन्निवृत्तिं करिष्यति॥

—सूत्र संहिता

हंसयोग को जानकर जो प्रयत्न करता है वह सब प्रकार की क्षुधाओं से निवृत्त हो जाता है।

पाशान छित्त्वा यथा हंसो निर्विशंकखमुत्क्रमेत्।
छिन्नपाशस्तवथा जीवः संसारं तरते तदा॥२०

—क्षुरिकोपनिषद्

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिस प्रकार हंस स्वछन्द आकाश में उड़ता है, उसी प्रकार इस हंसयोग का साधक सर्ववन्धनों से विमुक्त होता है।

'ह' और 'स' अक्षरों की पृथक्-पृथक् विवेचना भी शास्त्रकारों ने अनेक प्रकार से की है। इन अक्षरों से कई प्रकार के अर्थ निकलते हैं और दोनों के योग से साधक को एक उपयुक्त धारा मिलती है।

हकारो निर्गमे प्रोक्तः सकारेण प्रवेशनम्।
हकारः शिवरूपेण सकारः शक्तिरुच्यते॥

—शिव स्वरोदय

श्वाँस के निकलने में 'हकार' और प्रविष्ट होने में 'सकार' होता है। हकार शिवरूप और सकार शक्ति रूप कहलाता है।

हकारेण तु सूर्यः स्यात्सकारेणेन्दुरुच्यते।
सूर्यचन्द्रमसोरैक्यं हठ इत्यभिधीयते
॥१३३॥

हठेन ग्रस्यते जाड्यं सर्वदोषसमुद्भव्।
क्षेत्रज्ञः परमात्मा च तयोरैक्यं यदाभवेत्॥१३४॥

—योग शिखोपनिषाद्

हकार से सूर्य या दक्षिण स्वर होता है और सकार से चन्द्र या वाम स्वर होता है। इस सूर्य-चन्द्र दोनों स्वरों में समता स्थापित हो जाने का नाम हठयोग है। हठ द्वारा सब दोषों का कारणभूत जड़ता का नाश हो जाता है और तब साधक क्षेत्रज्ञ (परमात्मा) से एकता प्राप्त कर लेता है।

जीवात्मा सहज स्वभाव सोऽहम् का जप श्वाँस-प्रश्वाँस क्रिया के साथ-साथ अनायास ही करता रहता है, यह संख्या औसतन चौबीस घण्टे में २१६०० के लगभग हो जाती है।

हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत्पुनः।
हंस हंसेत्युमुं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा॥
षट् शतानि त्वहोरात्रे सहस्राण्येकविंशतिः।
एतत्संख्यान्वितं मंत्रं जीवो जपति सर्वदा॥

—गोरक्ष संहिता १/४१-४२

यह जीव हकार की ध्वनि से बाहर आता है और 'स' कार की ध्वनि से भीतर जाता है, इस प्रकार वह सदा हंस-हंस जप करता रहता है। इस तरह एक दिन-एक रात में जीव इक्कीस हजार छः मन्त्र सदा जपता रहता है।

संस्कृत व्याकरण के आधार पर 'सोऽहम्' का संक्षिप्त रूप ओहम् हो जाता है।

सकारं च हकारं च लोपयित्वा प्रयोजयेत्।
सन्धिं च पूर्वरूपाख्यां ततोऽसौप्रणवो भवेत्॥

सोहम् पद में सकार और हकार का लोप करके सन्धि योजना करके वह प्रणव (ॐकार) रूप हो जाता है।

हंस योग के अभ्यास का असाधारण महत्व है, उसे कुण्डलिनी जागरण साधना का तो एक अंग ही माना गया है।

विभर्ति कुण्डलीशक्तिरात्मानं हंसयाश्रिता॥

—तन्त्र सार

कुण्डलिनी शक्ति आत्मक्षेत्र में हंसारूढ़ होकर बिचरती है।

गायत्री का वाहन हंस कहा गया है। यह पक्षी विशेष न होकर हंसयोग ही समझा जाना चाहिए। यों हंस पक्षी में भी स्वच्छ धवलता, नीर-क्षीर विवेकयुक्त आहार विशेषताओं की ओर इंगित करते हुए निर्मल जीवन, सत्-असत् निर्धारण एवं नीतियुक्त उपलब्धियों को ही अंगीकार किया जाना जैसी उत्कृष्टताओं का प्रतीक माना गया है, किन्तु तात्विक दृष्टि से गायत्री का हंसवादिता होना उसकी प्राप्ति के लिए हंसयोग की-सोहम् की साधना का निर्देश माना जाना ही उचित है।

प्रसंग आता है कि एक बार पार्वती जी ने भगवान् शंकर से सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाले योग के विषय में पूछा, तो भगवान् शंकर ने इसका उत्तर देते हुए पार्वती जी से कहा—

अजपा नाम गायत्री योगिनां मोक्षदायिनी।
अस्याः संकल्प मात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

अजपा नाम की गायत्री योगियों को मोक्ष प्रदान करने वाली है। इसके संकल्प मात्र से सभी पाप नष्ट हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जाते हैं। यह सुनकर पार्वती जी को इस विषय में और अधिक जानने की इच्छा हुई। इसके सम्पूर्ण विधि विधान को उनने जानना चाहा। तब भगवान् शंकर ने पुनः कहा—

देहो देवालयो देवि, जीवो देवः सदाशिवः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्य, सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

हे देवि ! यह देह (शरीर) ही देवालय है। जिसमें देव प्रतिमा स्वरूप जीव विद्यमान है। इसलिए अज्ञान रूपी निर्माल्य (पुराने फूल-मालाओं) को त्याग कर (साफ कर) 'सोऽहम्' भाव से उस (देव) की आराधना करनी चाहिए।

'सोऽहम्' साधना गायत्री की योग-साधना है। यह साधना व्यक्ति के श्वांस लेते-निकालते समय स्वतः होती रहती है। श्वांस बाहर निकालते समय हकार की ध्वनि और भीतर ग्रहण करते समय 'सकार' की ध्वनि होती रहती है, विद्वान लोग इसी को 'सोऽहम्' साधना कहते हैं।

श्वांसनिष्कासकाले हि हकारं परिकीर्त्यते।
पुनः प्रवेश काले च सकारः प्रोच्यते बुधैः।

अर्थात् जब श्वांस बाहर निकलती है, तब हकार वर्ण उच्चरित होता है और जब श्वास ग्रहण करते हैं तब सकार वर्ण उच्चरित होता है—इसी का ध्यान करना 'सोऽहम्' साधना है। तत्वदर्शियों का मत है कि जीवात्मा के महान् अन्तराल में उसकी आत्मबोध प्रज्ञा स्वयमेव जगी रहती है और उसी की स्फुरणा से 'सोऽहम्' का आत्म-बोध अजपा-जाप बनकर स्वसंचालित बना रहता है।

भगवान शंकर ने बताया कि जब श्वांस के समय बार-बार 'हं सः' 'हं सः' का उच्चारण होता है, तो वही उलट कर 'सोऽहम्', 'सोऽहम्' हो जाया करता है—

हं सो हंसोहमित्येवं पुनरावर्तनं क्रमात्।
सोहं सोऽहं भवेन्नूनमिति योगविदो विदुः॥

अर्थात् हं सः हं सः का बार-बार उच्चारण करने से वे ही उल्टे होकर सोऽहम्, सोऽहम् हो जाते हैं—ऐसा योग के जानकार योगी जनों का अनुभव है।

विश्वात्मा में अपनी आत्मा को होम देने की—व्यष्टि को समष्टि परायण बनाने की—अपने कण-कण में विश्वात्मा को ओत-प्रोत कर लेने की यह दिव्य-साधना है। जब साधक श्वांस के सहारे होने वाले इस उच्चारण विशेष के साथ 'हम्' के रूप में अहंकारादि दोष निकलने तथा 'सो' के रूप में श्रेष्ठताओं- सद्गुणों के प्रविष्ट होने का ध्यान और अनुभव करता है, तब यही उसके जीवन विकास में प्रधान सहायक बन जाता है और साधना-उपासना के मूल उद्देश्य—व्यक्तित्व का परिष्कार तथा सद्गुणों का विकास—को प्राप्त कर लेता है, जिसके मूल्य पर उसे प्रत्येक भौतिक व आध्यात्मिक उपलब्धियाँ हस्तगत हो जाती हैं।

इस साधना की दूसरी प्रेरणा जीवात्मा और ब्रह्म की—आत्मा और परमात्मा की तात्विक एकता का भी प्रतिपादन करती है। 'सो' अर्थात् 'वह'। अहम् अर्थात् मैं ! दोनों का मिला-जुला निष्कर्ष निकला—वह मैं हूँ। वह अर्थात् परमात्मा, मैं अर्थात् 'जीवात्मा' दोनों का समन्वय—एकीभाव— सोऽहम्। इससे आत्मा और परमात्मा एक है—इस अद्वैत सिद्धान्त का समर्थन होता है। 'तत्वमसि', अयमात्मा ब्रह्म, शिवोऽहम्, सच्चिदानन्दोऽहम्—जैसे वाक्यों में इसी का प्रतिपादन है। जीव अपने आपको शरीर मान बैठा है। उसी की सुविधा एवं प्रसन्नता की बात सोचता है, उसी के लाभ प्रयत्नों में संलग्न रहता है। 'अपने' के लाभ में 'परायों' को हानि पहुँचाने में उसे संकोच नहीं होता है। यही है माया मग्न—भव बन्धनों में जकड़े हुए—मोहग्रस्त जीव की स्थिति। यही स्थिति प्राणी को अनेकानेक आधि-व्याधियों से उलझाती और शोक-सन्ताप के गर्त में धकेलती है। इससे बचा-उबरा जाय— इसी समस्या को हल करने के लिए आत्मज्ञान एवं साधना-विज्ञान का ढाँचा खड़ा किया गया है।

इस साधना को अजप-गायत्री की साधना भी कहा जाता है। इसमें व्यक्ति का प्रयासपूर्वक मन्त्र-जप नहीं करना पड़ता है। मन्त्र का जप स्वतः श्वांस के सहारे होता रहता है। अतः इसे 'अजपा' कहा गया है। मान्यता यह है कि श्वांस के शरीर में प्रवेश करते समय 'स' जैसी, श्वांस रुकने के तनिक विराम समय 'हम्' जैसी अत्यन्त सूक्ष्मध्वनि होती रहती है। इसे श्वांस क्रिया पर चिरकाल तक ध्यान केन्द्रित करने की साधना द्वारा सूक्ष्म कर्णेन्द्रिय द्वारा शब्द तन्मात्रा के रूप में ही सुना जा सकता है। इसी को अजपा-जाप या 'प्राण-गायत्री' भी कहा गया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वत: व सहज क्रम में अनचाहे ही हुआ अजपा गायत्री का जप, जब प्राणों की रक्षा करने वाला—अध्यात्म विद्याप्रदान करने वाला -योग की सिद्धि प्रदान करने वाला है, तब यदि उसकी विधि-पूर्वक, पूर्ण मनोयोग के साथ श्रद्धा विश्वासपूर्वक साधना-उपासना की जाय, तब कितने अधिक लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं। वास्तव में गायत्री के समान न तो कोई विद्या है, न कोई जप। न कोई ज्ञान है न कोई विज्ञान। इसकी महत्ता का प्रतिपादन शास्त्रों में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है।

देवी भागवत के अनुसार हंसयोग में सभी देवताओं का समावेश है यथा—

हंसो गणेशो विधिरेवं ह्ंसो, हंसो हरिर्मयश्च शम्भु।
हंसो हि जीवो गुरुदेव हंसो,
हंसो ममात्मा परमात्म् हंसः॥
ह कारेण वहिर्याति, सकारेण विशेत् पुनः।
हंसात्मिकां भगवती जीवो जपति सर्वदा॥

अर्थात्-ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेशमय हंसयोग है। हंस ही गुरु है, हंस ही जीव ब्रह्म अर्थात् आत्मा परमात्मा है।

जीव भगवती अजपा गायत्री का जप निरन्तर करता है। सकार के रूप में वह भीतर प्रवेश करती और हकार के रूप में बाहर निकलती है।

'शारदा तिलक' में ऐसा ही शास्त्र बचन है—

हंसः परं परेशनि प्रत्यंह जपते नरः।
मोहान्धो योन जानाति, मोक्ष तस्य न विद्यते।
अजपा नाम गायत्री योगिनां मोक्ष दायिनी॥
तस्या विज्ञान मात्रेण नरः पापै प्रमुच्चयते।
अनया सादृशी विद्या चानयो सादृशो जपः।
अनया सदृशं पुण्यं न भूतं न भविष्यति॥

अर्थात्—प्रत्येक श्वांस के साथ मनुष्य सोहम् जाप करता है। जो उसे नहीं जानता उस मोहान्ध को कभी मोक्ष नहीं मिलता।

अजपा गायत्री योगियों को मोक्ष प्रदान करने वाली है। उसका विज्ञान जानने से मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। इसके समान और कोई विद्या नहीं। इसके बराबर और कोई पुण्य न भूतकाल में हुआ है न भविष्य में होगा।

ईश्वर जीव को ऊँचा उठाना चाहता है, जीव ईश्वर को नीचे गिराना चाहता है। अस्तु-दोनों के बीच रस्साकसी चलती और खींचतान होती रहती है। न ईश्वर श्रेष्ठ जीवन क्रम देखे बिना संतुष्ट होता है और न अपनी न्याय-निष्ठा, कर्म-व्यवस्था, तथाकथित पूजा-पाठ के कारण छोड़ने को तैयार होता है। वह अपनी जगह अडिग रहता है और भक्त को तरह-तरह के उलाहने देने, शिकायतें करने, लांछन लगाने की स्थिति बनी ही रहती है। भक्त ईश्वर को अपने इशारे पर नचाना भर चाहता है, उससे उचित अनुदान मनोकामनाएँ पूरी कराने की पात्रता-कुपात्रता परखने की आदत छोड़ देने का आग्रह करता रहता है। दोनों अपनी जगह पर अडिग रहें, दोनों की दिशायें एक-दूसरे की इच्छा के प्रतिकूल बनी रहीं तो फिर एकता कैसे हो? सामीप्य-सान्निध्य कैसे सधे ? ईश्वर प्राप्ति की आशा कैसे पूर्ण हो ?

इस कठिनाई का समाधान सोऽहम् साधना के साथ जुड़े हुए तत्वज्ञान में सन्निहित है। दोनों एक-दूसरे से गुँथ जायें, परस्पर विलीनीकरण हो जाये। भक्त अपने आपको अन्तकरण, आकांक्षा एवं अस्तित्व को पूरी तरह समर्पित कर दें और उसी के दिव्य संकेतों पर अपनी दिशाधाराओं का निर्धारण करे। इस स्थिति की प्रतिक्रिया द्वैत की समाप्ति और अद्वैत की प्राप्ति के रूप में होती है। जीव ने ब्रह्म को समर्पण किया है, ब्रह्म की सत्ता स्वभावत: जीवधारी में अवतरित हुई दृष्टिगोचर होने लगेगी। समर्पण एक पक्ष से आरम्भ तो होता है, पर उसकी परिणति उभयपक्षीय एकता में होती है। यही प्रेम योग का रहस्य है, यही भक्त के भगवान बनने का तत्वज्ञान है। ईंधन जब अग्नि को समर्पण करता है तो वह भी ईंधन न रहकर आग बन जाता है। बूँद जब समुद्र में विलीन होती है, तो उसकी तुच्छता असीम विशालता में परिणत हो जाती है। नमक और पानी, दूध और चीनी जब मिलते हैं तो दोनों की पृथकता समाप्त होकर सघन एकता बनकर उभरती है। यही है वेदान्त अनुमोदित जीवन लक्ष्य की पूर्ति, परमपद की प्राप्ति-इसी स्थिति को 'अद्वैत' कहते हैं। शिवोहम्, सच्चिदानन्दोहम्, तत्वमसि, अयमात्मा, ब्रह्म को अनुभूति इसी सर्वोत्कृष्ट अतिःस्थिति पर पहुँचे हुए साधक को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होती है। इसी को ईश्वर प्राप्ति, आत्म साक्षात्कार एवं ब्रह्म निर्माण आदि नामों से पूर्णता के रूप में कहा गया है

आत्मबोध का प्रथम सोपान— "सोऽहम् साधना"

प्राणायाम की एक विधा विशुद्ध आध्यात्मिक है, जिसे अजपा जप-सोऽहम् साधना या हंसयोग कहते है। इसका सामान्य प्रयोग बहुत सरल है। स्थिर शरीर और शान्ति चित्त होकर श्वांस के आवागमन की क्रिया आरम्भ की जाय। साँस लेते समय 'सो' और छोड़ते समय 'हम' की ध्वनि श्रवण पर चित्त एकाग्र किया जाय।

इस विधान में कई प्रयोजन एक साथ जुड़ जाते हैं। नादयोग में सूक्ष्म ध्वनियों के श्रवण का अभ्यास किया जाता है और उसके लिए शब्द तन्मात्रा को विकसित करके दिव्य कर्णेन्द्रियों का प्रयोग किया जाता है। अन्यथा खुले कानों से तो आस-पास की हलचलों का कोलाहल ही सुनाई पड़ता है। श्वांस के साथ धुली हुई 'सो' और 'हम्' की ध्वनियों की सुनने के लिए सूक्ष्म कर्णेन्द्रियों की साधना करनी पड़ती है। इसलिए इस योगाभ्यास में नादयोग जुड़ा हुआ माना जा सकता है।

इस साधना में ध्यानयोग भी जुड़ा हुआ है। श्वांस के आवागमन पर चित्र एकाग्र करना पड़ता है। वह न बन पड़े तो वायु प्रवेश के साथ 'सो' की और निकलने के साथ 'हम्' के श्रवण का तालमेल ही नहीं बैठता। हर साँस की गतिविधि पर ध्यान रखना पड़ता है। इतना ध्यान जम जाने के उपरान्त ही ध्वनि श्रवण का अगला कदम उठता है।

सोऽहम् वेदान्त मन्त्र है। 'सो' का अर्थ वह और 'हम्' का अर्थ में है। 'वह परमात्मा मैं हूँ' "मैं परमात्मा के समकक्ष हूँ की भावना का विकसित करना वेदान्त तत्वज्ञान का आधार है। तत्वमसि, शिवोहम्, सोहम्, सच्चिदानन्दोहम्, अयमात्मा, ब्रह्म, आदि सूत्रों में इसी तत्वज्ञान का प्रतिपादन है कि आत्मा और परमात्मा के मध्य अविच्छिन्न एकता है। दोनों के मध्य अंश, अंशी का सम्बन्ध है। चिनगारी और ज्वालमाल जैसा। इस अनुभूति का दर्शन एवं प्रयोग 'पंचदशी' आदि ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक बताया गया है। उस अद्वैत साधना का अभ्यास भी इस प्रयोग प्रयोजन में साथ जुड़ जाता है।

गायत्री मन्त्र चौबीस अक्षरों का है। उसमें तीन व्याहृतियाँ भी संयुक्त हैं। किन्तु उस महामन्त्र में अनायास ही अचेतन जप किये जाने से प्रत्येक साँस के साथ ब्रह्म साक्षात्कार का, ईश्वर दर्शन का, प्रयोजन भी सधता है। इसलिए इसे अजपा गायत्री जप भी कहा गया है। गायत्री साधना में उच्चस्तरीय भूमिका में प्रवेश करते हुए साधक को सोहम् साधना का भी अभ्यास करना पड़ता है। इसलिए यह जहाँ गायत्री का सार तत्व है वहीं सुसंचालित साधना क्रम भी। अन्य जपों में प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करना होता है, पर यह अनायास ही बन पड़ता है। साँस के साथ स्वसंचालित रीति से यह बिना प्रत्यक्ष प्रयत्न किए हुए ही अनायास होता रहता है। यह श्वसन क्रिया सोते-जागते हर समय होती रहती है और साधना क्रम भी उसके साथ जुड़ा रहता है। इसलिए उसे बिना जप किये जप—"अजपा जाप" भी कहा जाता है।

योगों के अगणित प्रयोगों और विधानों में एक हंसयोग भी है। हंस इसीलिए कहा गया है कि 'सोहं' को उलट देने पर हंस बन जाता है। जैसे लगातार बिना रुके राम-राम कहा जाय तो वह उलटकर अथवा गति चक्र के आधार पर मरा-मरा जैसा प्रतीत होने लगता है। संस्कृत में एक विधा के अनुसार 'हिंस' अर्थात् हिंसक शब्द उलटकर सिंह बन गया है। सोहम् में भी ऐसी ही बात है। 'स + अहम्' इसका वास्तविक रूप है। अ का इस मिश्रण में लोप हो गया है। उसके उलट जाने पर 'हंस' शब्द बनता है।

भगवान के चौबीस अवतारों में एक हंसावतार भी हुआ है। इसे उसकी साधना भी कहा जा सकता है। हंसयोग का प्रतिफल 'राजहंस' या परमहंस के रूप में प्रकट होता है। यह दोनों ही अध्यात्म क्षेत्र की उच्चस्थितियाँ हैं।

हंस का गुण है—नीर-क्षीर विवेक। वह दूध और पानी के सम्मिश्रण को अलग कर देता है। दूध को ग्रहण करता और पानी को छोड़ देता है। अर्थात् श्रेष्ठ को ग्रहण करने और निकृष्ट को त्याग देने की उसकी प्रवृत्ति होती है। यह प्रवृत्ति साधक में विकसित हो तो समझना चाहिए कि हंस वृत्ति का अवतरण हुआ। हंस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्वेत होता है। साधक का जीवन-क्रम वैसा ही हो तो समझना चाहिए कि कबीर की वह उक्ति सार्थक हुई, जिसमें उनने कहा था—**'दास कबीर जतन सों ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया।"**

हंस के सम्बन्ध में कहते हैं कि वह मानसरोवर में रहता है। मोती चुगता है, कीड़े नहीं खाता। यह प्रतिपादन राजहंस स्तर के साधक की मनोवृत्ति का परिचय है। अन्यथा पक्षी हंस तो अन्य जलाशयों में रहते और कीड़े खाते भी देखे गये हैं। मोती ही खाने वाले हंस उस प्रवृत्ति के प्रतीक हैं कि भले ही भूख से प्राण निकले, घोर कठिनाइयाँ सहें पर अपना स्तर नीचे नहीं गिरने देते।

'सोहम्' की ध्वनि प्रकृति और पुरुष के मिलन से प्रादुर्भूत होती है। कहा गया है कि सृष्टि के आदि में परब्रह्म की इच्छा हुई कि मैं अकेला हूँ। अकेलेपन में क्या आनन्द, इसलिए मुझे एक से बहुत हो जाना चाहिए। यह इच्छा ही प्रकृति बनगई। प्रकृति जड़ थी, पुरुष चेतन। दोनों के संयोग से ही यह विश्व ब्रह्माण्ड बन सकता था। इसलिए दोनों का मिलना शब्दब्रह्म के रूप में प्रकट हुआ। जिस प्रकार घंटा, घड़ियाल में मोगरी की चोट पड़ने से झंकार थरथराहट जैसी ध्वनि होती है, वैसी ही कुछ प्रकट होने पर उस शब्द ब्रह्म को ओंकार कहा गया। प्रकृति और पुरुष के मिलन से जब जीव की उत्पत्ति हुई तो उसका वाचक शब्द हम भी मिल गया। परमात्मा 'स' जीवन 'अहम्'। दोनों के मध्यवर्ती प्रकृति का लोप हो गया। आत्मा और परमात्मा दो ही रह गये। उस द्वैत भाव का प्रतीक सोहम् है। इस प्रकार यह भी ओंकार का सहचर है। सृष्टि के आदि से ही इसका अस्तित्व है।

सोहम् साधना में आत्मबोध, तत्वबोध का मिश्रित समावेश है। मैं कौन हूँ? उत्तर—'परमात्मा। 'इसे जीव और ईश्वर का मिलना, आत्म-दर्शन ब्रह्मदर्शन भी कह सकते हैं और आत्मा परमात्मा की एकता भी। यही ब्रह्मज्ञान है। ब्रह्मज्ञान के उदय होने पर ही आत्मज्ञान, सद्ज्ञान, तत्वज्ञान, व्यवहार ज्ञान आदि सभी की शाखाएँ-प्रशाखाएँ फूटने लगती हैं।

सोहम् साधना को अतीव उच्चकोटि की बताया गया है। उसे अद्वैत ब्रह्म की उपासना और वेदान्त दर्शन का सार संक्षेप भी कह सकते हैं।

मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को भूल जाता है और वातावरण में इतना अधिक रम जाता है कि उसे अपने-पराये का कुछ बोध नहीं रहता। छोटा बालक जहाँ भी आकर्षण देखता है वहीं का हो रहता है यहाँ तक कि अपने माता-पिता तक की याद नहीं करता और खेल-खिलौनों में ही पूरी तरह तन्मय हो जाता है। बड़ी आयु के लोग भी प्रायः यही गलती करते रहते हैं। अपने आपे के स्वरूप को समझने की भूल करते रहते हैं और शरीर आवरण, उसकी साज-सज्जा, व्यवसाय तथा स्वजन सम्बन्धियों में इतने अधिक तल्लीन हो जाते हैं कि वे ही सर्वस्व प्रतीत होने लगते हैं फलतः जो कुछ भी सोचना करना होता है, वह इस आवरण क्षेत्र से ही सम्बन्धित रहता है। बहुमूल्य जीवन सम्पदा इसी खेल खिलवाड़ में खप जाती है।

होना यह चाहिए कि अपने उस वास्तविक स्वरूप को समझने-उसकी अनुभूति करने की चेष्टा की जाती है जो शरीर आवरण के भीतर प्राण तत्व के रूप में गतिशील रहता है। उनके निकल जाते ही यह सुन्दर शरीर देखते-देखते कुरूप, मलीन, और अस्पर्श्य हो जाता है। सम्बन्धियों को उसे जल्दी ठिकाने लगाने के लिए दौड़-धूप करनी पड़ती है। विलम्ब किया जाय तो वह स्वयमेव सड़ने लगता है। अपने भीतर से कृमि उत्पन्न कर लेता है जो उसे खाकर समाप्त कर दें अथवा गिद्ध, चील, शृंगाल, कूकर गंध पाते ही उसका अस्तित्व मिटा देने के लिए आतुरतापूर्वक दौड़ पड़ते हैं।

इस आवरण के भीतर विद्यमान आत्मा ही मनुष्य का वास्तविक रूप है। हित साधन की दृष्टि से उसी को प्रमुखता दी जानी चाहिए। जीवन लक्ष्य की पूर्ति इसी आधार पर बन पड़ती है। काया तो एक छाया की तरह है। इसे तो इन्द्रिय लिप्साओं और मानसिक तृष्णाओं की पूर्ति का ही जुनून सवार रहता है। आमतौर से यह तथ्य विस्मृत ही हो जाता है कि अपना वास्तविक हित किसमें है? यों इस सन्दर्भ में धर्म शास्त्रों और आप्त वचनों में सर्वाधिक जोर इसी एक बात पर दिया जाता रहता है कि "अपने को जानो"। "मैं कौन हूँ यह समझो।"

धर्मोपदेशकों की तरह अध्यात्म क्षेत्र में रुचि रखने वाले भी मोटेतौर से यह जानते रहते हैं कि वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

"आत्मा" हैं। पर इस मोटी जानकारी से कुछ काम नहीं चलता। यह तोता रटन्त सर्वथा अपर्याप्त है। इसकी गहन अनुभूति होनी चाहिए और इस मान्यता को परिपक्व होना चाहिए कि शरीर और आत्मा सर्वथा भिन्न हैं । दोनों के बीच सवार-सवारी जैसा—मिस्त्री-उपकरण जैसा सम्बन्ध है। दोनों के स्वार्थ भी पृथक्-पृथक् हैं । शरीर स्वार्थ का समर्थक है। उसे विलास, वैभव और सम्मान चाहिए। पर आत्मा के ऊपर इन तीनों सम्पदाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इन्हें तो शरीर ही भोगता है और आश्चर्य यह भी है कि उसकी तृप्ति भी क्षणिक होती है। विलास, वैभव हस्तगत हुआ नहीं कि उसके प्रति उत्साह समाप्त हुआ नहीं। फिर नई वस्तु की, नये स्वाद की तलाश आरम्भ हो जाती है इसी प्रकार अतृप्त अशान्त स्थिति में ही सर्वसमर्थ समझे जाने वाले लोगों का जीवनकाल भी व्यतीत हो जाता है।

वह मिल ही नहीं पाता, जिसके लिए मानव जीवन के रूप में भगवान की यह सर्वश्रेष्ठ कलाकृति हस्तगत हुई थी। आत्म-कल्याण के प्रयत्न या तो हो ही नहीं पाते या बहुत ही उथले स्तर के होते हैं। कुछ शब्दों की पुनरावृत्ति करते रहने या पूजा-पत्री का बाल क्रीड़ा जैसी उठक-पटक कर लेने पर से चिन्ह पूजा भले ही निभ जाती हो। पर वह आत्मबोध नहीं हो पाता जो शरीर आत्मा की पृथक्ता अनुभव करने पर होता है। यह स्पष्ट हो जाता है कि सारा चिन्तन और क्रिया-कलाप शरीर सुख के लिए ही नियोजित न रहे, उसमें आत्मकल्याण के लिए भी समुचित स्थान रहे। ऐसी उमंगें उठने लगें तो समझना चाहिए कि 'आत्मबोध' हुआ और आत्म-कल्याण का द्वार खुला। जब तक कानों से सुनने, जीभ से कहने और हाथों से वस्तुओं की उलट-पुलट को ही अध्यात्म साधना समझा और उतने भर से ही सन्तोष किया जाता हो, तब तक यही समझना चाहिए कि अभी मन बाल-क्रीड़ाओं में रम भर रहा है।

आत्मा और शरीर के स्वार्थ पृथक्-पृथक् हैं। आत्मा के स्वार्थ को परमार्थ कहते हैं। इसे करने के लिए शरीरगत लिप्साओं को मर्यादा में रखना पड़ता है ताकि उसके निर्वाह के लिए वस्तुतः जो नितान्त आवश्यक है, उतना ही उपलब्ध कराया जाय। वितृष्णाओं से बचा जाय। इतना बन पड़ने के उपरान्त ही यह बन पड़ता है कि आत्मा की पृथक्ता और महत्ता अनुभव की जाय और उसके उत्कर्ष के लिए ऐसा कुछ किया जाय जो परमार्थ प्रयोजनों की पूर्ति के लिए उत्साह उमगाता है। यही सघन अनुभूति आत्मकल्याण के लिए जो आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है उसे करने के लिए दबाव भरी अन्तः प्रेरणा उभारती है।

इन्हीं तत्वों को ध्यान में रखते हुए "आत्म बोध" को आत्मिक प्रगति का प्रथम सोपान कहा गया है। इसके निमित प्रत्यक्ष क्रिया-कृत्यों में 'सोहम्' साधना को उच्चस्तरीय महत्त्व दिया गया है। इसके अतिरिक्त भी अन्य साधनाएँ चलती रहें, पर प्रमुखता इसी आत्मबोध की साधना को दी जानी चाहिए।

साँस खींचते समय "सो" की, रोकते समय "अ" की और निकालते समय "हम्" की सूक्ष्म ध्वनि को सुनने का प्रयास करना ही सोऽहम् साधना है। इसे किसी भी स्थिति में—किसी भी समय किया जा सकता है। जब भी अवकाश हो—जितना भी हो—उतनी ही देर उस अभ्यास क्रम को चलाया जा सकता है। यों शुद्ध शरीर, शान्त मन और एकान्त स्थान और कोलाहल रहित वातावरण में कोई भी साधना करने पर उसका प्रतिफल अधिक श्रेयस्कर होता है, अधिक सफल रहता है।

साँस निरन्तर चलती रहती है। उसमें वायु के साथ-साथ प्राण तत्व का आवागमन भी चलता रहता है। "सोहम्" ध्वनि इस प्राणतत्व के वायु के साथ घर्षण होने के साथ उत्पन्न होती है। इसलिए इस साधना में शरीर और आत्मा दोनों की सत्ता अनुभव करते हुए उनके स्तर के अनुरूप महत्त्व देने, तदनुसार जीवनक्रम का निर्धारण करने वाला विवेक जागृत होता है।

"सोऽहम्" साधना जितनी सरल है, बन्धन रहित है, उतनी ही महत्त्वपूर्ण भी है। 'सोहम्' का अर्थ है—"मैं वह हूँ" "ॐ" अर्थात् 'आत्मा'। 'वह' अर्थात् 'परमात्मा' यह आत्मा और परमात्मा का समन्वय है। शरीर और प्राण का भी। द्विधा का बोध होने पर उनकी हैसियत के अनुरूप प्रमुखता देने और आवश्यकता के अनुरूप साधन जुटाने का सन्तुलन बिठाने के लिए योजनाबद्ध कार्यपद्धति अपनाना आवश्यक हो जाता है। यह स्थिति अन्तःक्षेत्र में विनिर्मित हो रही हो तो

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझना चाहिए कि साधना मात्र कर्मकाण्ड नहीं रही वरन् उसका प्रभाव अन्तराल की गहराई तक पहुँचने और ज्योतिर्मय होने लगा।

इस स्थिति में आत्म-कल्याण के उभयपक्षीय कार्यक्रम अपनाने पड़ते हैं। शरीर कल्याण के लिए संयम और पुरुषार्थ। आत्म-कल्याण के लिए अपनी सीमा को संकीर्ण परिधि से आगे बढ़ाकर विश्वव्यापी बनाना और सृष्टि को अधिक सुन्दर, समुन्नत बनाने के प्रयास में जुट जाना। इन्हीं प्रयासों के चल पड़ने पर जाना जा सकता है कि "सोऽहम्" साधना परिपक्व और फलवती हो चली।

प्राणयोग का उच्चस्तरीय प्रयोग— सोऽहम् साधना

उच्चस्तरीय प्राणायामों में सोऽहम् साधना को सर्वोपरि माना जाता है। यह मूलतः ध्यानयोग की साधना है एवं उच्चस्तरीय प्राणयोग भी इसे कहा जाता है। इस साधना को प्राणयाम प्रक्रिया एवं प्राणयोग की प्राणाकर्षण साधना से अलग व विशिष्ट माना जाना चाहिए। प्राणायाम तो मात्र श्वांस-प्रश्वांस का एक विशिष्ट क्रिया विधान है जिससे फेफड़ों का व्यायाम—रक्त का शोधन व जीवनी शक्ति सम्वर्धन ये तीन लाभ होते पाये जाते हैं। 'डीप ब्रीदिंग' या गहरी साँस लेना भी इसी के अन्तर्गत आता है।

प्राणयोग साधना जिसका वर्णन पिछले लेख में किया गया, वह प्रक्रिया है जिसमें दिव्य चेतना शक्ति के रूप में प्राण तत्व के शरीर में प्रविष्ट होने की आस्था विकसित की जाती है। यह मूलतः संकल्प शक्ति से सम्भव हो पाता है कि साधक वायु के अन्तराल में घुले प्राण तत्व को अपने अन्दर खींचता — उसे धारण करता व पचाता है। सन्ध्या वन्दनादि के समय किये जाने वाले प्राणायामों में संकल्प एवं साधक की प्राण धारणा क्षमता का ही महत्त्व अधिक रहता है। संकल्प रहित अथवा दुर्बल—भाव संवेदना रहित प्राण का धारण मात्र एक व्यायाम भर बनकर रह जाता है। यदि प्राण तत्व का चेतनात्मक लाभ उठाना है तो श्वांस क्रिया से भी अधिक महत्त्व प्राणायाम के लिये नितान्त आवश्यक संकल्प बल को दिया जाना चाहिये। यह प्राणायाम मनोनिग्रह में—ध्यान साधना के प्रारम्भिक अभ्यास के रूप में साधना विज्ञान का एक अनिवार्य चरण माना जाता है।

सोऽहम् साधना भावोत्कर्ष व शक्ति अवतरण की साधन प्रक्रिया है। इस साधना के साथ जुड़ा संकल्प चेतना को उच्चतम स्तर तक उछाल देने में, जीव-ब्रह्म का समन्वय संयोग करा सकने में समर्थ होता है। इतनी इस स्तर की—भाव संवेदना और किसी प्राणायाम में नहीं। इसीलिये इसे प्राणयोग नाम न देकर हंसयोग भी कहते हैं एवं इसे एक स्वतन्त्र शाखा के रूप में महत्त्व दिया जाता है। इसे 'अजपा जप' अथवा प्राण गायत्री भी कहते हैं। ऐसी मान्यता है कि श्वांस के शरीर में प्रवेश करते समय 'स' जैसी और बाहर निकलते समय 'हम' जैसी अत्यन्त सूक्ष्म ध्वनि होती है। इस प्रवाह को सूक्ष्म श्रवण शक्ति के सहारे अन्त भूमिका में अनुभव करना और इस अवधि में निरन्तर प्राण द्वारा बीज रूप में गायत्री जप करना—यही संक्षेप में सोऽहम् साधना का विधान है। चूँकि ध्वनि सूक्ष्म है—इसलिये उसे अपने सूक्ष्म शरीर में रहने वाली सूक्ष्म कर्णेन्द्रियों द्वारा—शब्द सन्मात्रा के रूप में सुना जा सकता है।

प्रश्न उठता है कि इस सोहम् की प्रक्रिया ऐसा क्या परिवर्तन शरीर में लाती है जो इसे उच्चस्तरीय प्राणयोग में गिना जाता। सोहम् को तत्ववेत्ता अनाहत शब्द कहते हैं। आहत वे हैं, जो कहीं चोट लगने से उत्पन्न हुए हों। जबकि अनाहत बिना किसी आघात के उत्पन्न होते हैं। नादयोग मे सुनाई देने वाले शब्द प्रकृति के अन्तराल की उथल-पुथल व पंचतत्वों की काया के भीतर की गतिविधि, हलचलों के होने से आहत माने जाते हैं। जप भी आहत है क्योंकि मुख से जो शब्द उत्पन्न होते हैं वे वाणी संस्थान के अवयवों की गतिविधियों से उत्पन्न होते हैं। सोहम् अनाहत है। यह ब्राह्मी चेतना गतिविधियों का सूक्ष्म श्रवण है। इसीलिये इसे अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है।

वायु का प्रवाह जब तीव्र वेग से छोटे छिद्रों में होकर होता है तो घर्षण से ध्वनि प्रवाह उत्पन्न होता है। बाँसुरी में इसी सिद्धान्त के आधार पर स्वर लहरियाँ उत्पन्न होती हैं। बाँसों में विद्यमान छेदों से जब हवा निकलती है तो जंगलों में बाँसुरी जैसी ध्वनि निकलती सुनाई देती है। वृक्षों से टकराकर जब तेज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गति से हवा चलती है तो घर्षण की प्रतिक्रिया स्वरूप ऐसी ही ध्वनि सुनाई देती है। यहाँ यह तुलना इस कारण की गयी कि नासिका छिद्र भी बाँसुरी के छेदों के समान हैं। इस सीमित परिधि से होकर जब वायु भीतर प्रवेश करती है तो सूक्ष्म ध्वनि प्रवाह इस घर्षण से उत्पन्न होता है। गहरी और मन्द गति से ली गयी साँस से नासिका छिद्रों से टकराकर उत्पन्न होने वाला ध्वनि प्रवाह और भी अधिक तीव्र हो जाता है, पर इसे कर्णेन्द्रियों की सूक्ष्म चेतना में ही अनुभव किया जा सकता है।

चित्त को श्वसन क्रिया पर एकाग्र कर भावना को इस स्तर का बनाया जाता है कि श्वांस लेते समय 'सो' शब्द के ध्वनि प्रवाह की मन्द अनुभूति होने लगे। साँस छोड़ते समय यह मान्यता बनानी चाहिए कि 'हम' ध्वनि प्रवाह निसृत हो रहा है। धीरे-धीरे चित्त एकाग्र करते-करते यह अनुभूति तीव्र होती चली जाती है और एक अभूतपूर्व आनन्द की प्राप्ति इसमें होने लगती है। 'सो' का तात्पर्य परमात्मा और 'हम' का अर्थ है, जीव चेतना। निखिल विश्व ब्रह्माण्ड में संव्याप्त महाप्राण 'सो' की ध्वनि के साथ नासिका द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करता है और हमारे अंग-प्रत्यंग में-जीव कोष, तन्तु जाल तथा नाड़ी-नाडिकाओं में प्रविष्ट होकर उसको अपने सम्पर्क, संसर्ग का लाभ प्रदान करता है। यहाँ प्राणायाम के साथ यह ध्यान परक अनुभूति अनिवार्य है। 'हम' शब्द के साथ निश्वास द्वारा यह सोचा जाय कि जीव ने अपनेपन का भाव छोड़ दिया तथा काय-कलेवर से अपना आधिपत्य हटाकर उसने महाप्राण को स्थान दे दिया। प्रकारान्तर से यह परमात्म सत्ता का अपने शरीर और मनःक्षेत्र पर अधिकार स्थापित हो जाने की धारणा है।

तत्वदर्शी ऐसा मानते हैं कि जीवात्मा के गहन अन्तराल में उसकी आत्मबोध प्रज्ञा जो उसके वास्तविक 'स्व' का स्वरूप है, जागृत अवस्था में रहती है और उसी की स्फुरणा से सोऽहम् का आत्मबोध अजपा जाप बनकर स्वसंचालित रहता है। सोऽहम् का भाव स्थापित हो जाने का अर्थ है—आत्मा-परमात्मा का एकीकरण—अद्वैत की स्थापना। तत्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म —शिवोहम, सच्चिदानन्दोहम्, शुद्धोसि, बुद्धोसि, निरंजनोसि आदि विवेचनों में इसी वेदान्त दर्शन का प्रतिपादन है।

सोऽहम् उपासना की सार्थकता इसी में है कि जीव अपने आपको भ्रम जंजाल से मुक्त करे। यह मात्र प्राणायाम व ध्वनि की अनुभूति मात्र न बनकर रह जाय। स्वार्थवादी संकीर्णता, काम, क्रोध-लोभ, मोह आदि भवबन्धनों से जकड़ी यह जीवात्मा दिक्भ्रान्त बनी रहती है। इस स्थिति को ही जीव-भाव या जीव भूमिका कहा जाता है। इस भ्रम-जंजाल भरे जीव भाव को हटा दिया तो ईश्वर का विशुद्ध अंश ही अविनाशी, निश्छल आत्मा के रूप में शेष रह जाता है। अपने काय-कलेवर के कण-कण पर परमात्मा के शासन की स्थापना ही इस साधना का परम लक्ष्य है। परमात्मा अर्थात् आदर्शों का समुच्चय, जीवात्मा अर्थात् उसी का एक अंश जो भटकाव में लिप्त है, पर मार्ग नहीं खोज पा रहा। सोहम की श्वांस-प्रश्वांस प्रक्रिया के माध्यम से सो और हम् की ध्वनि के सहारे इसी भाव चेतना को जागृत किया जाता है कि अपना स्वरूप ही बदल रहा है—समूचा काया-कल्प हो रहा है। अब शरीर और मन पर से लोभ, मोह का-वासना-तृष्णा का आधिपत्य समाप्त हो रहा है। उसके स्थान पर उत्कृष्ट चिन्तन एवं आदर्श कर्तृव्य दूरदर्शी दृष्टिकोण एवं व्यवहार में सज्जनता—परमार्थ परायणता के रूप में ब्रह्म-सत्ता की स्थापना हो रही है। सोव्यू साधना इसी अनुभूति के स्तर को क्रमशः प्रगाढ करती चली जाती है और अपना अन्तःकरण यह अनुभव करने लगता है कि अब उस पर असुरता का नियन्त्रण नहीं रहा। समग्र संचालन श्रेष्ठता की प्रतीक—आदर्शों की प्रतिमा—देवसत्ता द्वारा किया जा रहा है।

इस साधना में क्रिया उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना कि उससे जुड़ा ध्यान। पन्द्रह मिनट सोहम् जप के उपरान्त आधे घण्टे यह चिन्तन किया जाय कि साँस में घुले परम पिता परमेश्वर अपनी समस्त विभूतियों—गुण सम्पदाओं के साथ काया के रोम-रोम में प्रवेश कर रहे हैं। मात्र आने जाने का ही क्रम यह नहीं है वरन् प्रत्येक अंग-अवयव पर अपनी प्राण सत्ता के अंश—अंश पर ईश्वरीय सत्ता का सघन आधिपत्य स्थापित हो रहा है, यह भावना की जानी चाहिए। एक-एक करके भाव चित्र हर अंग के मानस पटल पर लाये जायँ व यह कल्पना की जाय कि हम ईश्वर के ही एक अंश हो गये। अब हमारी कर्मेन्द्रियाँ व ज्ञानेन्द्रियाँ वही करेंगी जो ईश्वरीय अनुशासन चाहता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

है। स्वादेन्द्रियों, वाणी, जननेन्द्रियों, हाथ-पाँव, मस्तिष्क, बुद्धि, चित्त किसी से भी ऐसी गतिविधि नहीं होगी जो हम चाहते हैं, पर ईश्वरीय सत्ता नहीं चाहती। इस ध्यान प्रक्रिया में आस्था इतनी प्रगाढ़ होनी चाहिए कि यह मात्र मनो-विनोद न रहकर क्रिया में परिणित हो जाय और तब तक हमें चैन न मिले। सार्थक भी वे ही विचार होते हैं जो क्रिया रूप में बदल सकने योग्य प्रखरता से भरे हों।

सोऽहम् साधना का पूर्वार्ध इस प्रकार अपने काय-कलेव जीव चेतना पर महाप्राण की सत्ता स्थापना के चिन्तन से जुड़ा हुआ है। इसका उत्तरार्ध है पाप-निष्कासन। शरीर से अवांछनीय इन्द्रिय लिप्साओं-दुष्प्रवृत्तियों—अहंता की विकृतियों का निवारण ही इस चिन्तन का लक्ष्य हो व इसमें प्रगाढ़ भावनाएँ जुड़ी हों। हर घड़ी यह तथ्य प्रत्यक्षत: मानस पटल पर घटित होते देखा जाय कि समस्त दुर्भावनाएँ व निकृष्टताएँ हमारे अन्त: से पलायन कर रही हैं। जैसे सूर्य का प्रकाश चहुँओर व्याप्त होते ही अन्धकार मिटता चला जाता है उसी प्रकार ब्रह्म सत्ता के दिव्य प्रकाश से हमारे अन्त: के कर्म भी मिटते चले जा रहे हैं। जब इनके बाहर निकल पड़ने से प्राप्त होने वाला हल्कापन-उल्लास हमें प्रत्यक्ष अनुभव होने लगे तो समझना चाहिये उत्तरार्ध सफल रहा।

हम ईश्वर के अंश हैं व जीवात्मा अविनाशी है—यह हम निरन्तर शास्त्र वचनों में पढ़ते सुनते रहते हैं। पर जब यह मान्यता अन्त:करण की गहराई में उतर जाती है—गहन आस्था बनकर अन्त:प्रेरणा बन जाती है तो इस "मोटिव फोर्स" द्वारा धकेले हमारे मस्तिष्क व शरीर रूपी सेवकों को उत्कृष्ट कार्यों में संलग्न होना भी पड़ता है। सोऽहम् का तत्वज्ञान अन्तरात्मा की प्रखर श्रद्धा के रूप में विकसित-फलित हो सके तो इसके सत्परिणाम सुनिश्चित रूप से दिव्य क्रिया-कलापों, देवदूत-ऋषि-महामानव स्तर के चिन्तन के रूप में उभरकर सामने आते हैं। उसे अन्तरात्मा का प्रत्यक्ष काया-कल्प कहना चाहिए। तब व्यक्ति बाध्य हो जाता है, वही सोचने के लिये जो ईश्वर सारे विश्व के जीवों के विषय में सोचता है, वही करना होगा जो ईश्वर करता है।

जैसा कि स्पष्ट किया जा चुका—सामान्य प्राणायाम मात्र स्वास्थ्य संवर्धन एवं मनोगत विकास का प्रयोजन भर पूरा कर पाते हैं। उन्हें ही समग्र साधना मान लेना गलत है। जब संकल्प शक्ति का प्रखर प्रयोग उसमें जुड़ जाता है तो वह प्राणयोग की प्रारम्भिक स्थिति के रूप में विकसित हो जाता है। इससे भावनात्मक परिष्कार—आत्मबल में वृद्धि, कितनी ही अलौकिक विशेषताओं के जागरण में सहायता मिलती है। सबसे ऊँची स्थिति सोऽहम् साधना की है जिसमें आत्म चेतना का मन्थन किया जाता है व ईश्वरीय सत्ता के प्राण तत्व को इस काय-कलेवर में समाविष्ट कर स्वयं को भी उसके समान महान बनाने की भावना की जाती है। इस साधना से होने वाले लाभों की कोई सीमा नहीं।

सोऽहम् साधना द्वारा प्राणतत्व का परिपोषण

सोऽहम्-साधना भावोत्कर्ष एवं शक्ति-अवतरण की प्रक्रिया है। इसे अजपा गायत्री जाप भी कहते हैं। प्राण निरन्तर उसका बीज रूप में जप करता रहता है। श्वांस लेते समय 'सो' ध्वनि का और छोड़ते समय 'हम' ध्वनि का अन्त:भूमिका में अनुभव करना होता है।

वायु जब छोटे छिद्र में होकर वेगपूर्वक निकलती है, तो घर्षण के कारण धवनि प्रवाह उत्पन्न होता है। बाँसुरी से स्वरलहरियाँ इसी तरह निकलती हैं। जंगलों में घने बाँसों के बीच से अक्सर बाँसुरी जैसी ध्वनियाँ निकलती सुनाई देती हैं। इसका कारण बाँसों में कीड़ों द्वारा किए गये छिद्रों में वायु की वेगपूर्वक टकराहट से उत्पन्न स्वर प्रवाह ही है। वृक्षों को झकझोरकर बहने वाली हवा से भी इसीलिए कभी-कभी सनसनाहट सुनाई पड़ती है। नासिका छिद्र भी बाँसुरी के छेदों जैसे ही हैं। साधारण श्वांस-प्रश्वांस के समय भी इनमें जो वायु गुजरते समय ध्वनि उत्पन्न होती है, पर वह धीमी बहुत होती है। प्राणयोग की साधना में गहरे श्वांस-प्रश्वांस के कारण यह ध्वनि प्रवाह तीव्रतर हो जाता है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि खुले कानों से भी ये ध्वनि-प्रवाह सुने जा सकते हैं। उन्हें तो कर्णेन्द्रियों की सूक्ष्म चेतना में ही अनुभव किया जाता है।

श्वांस क्रिया पर चित्त को एकाग्र कर 'सो' के साथ परमात्म चेतना के अन्त:प्रवेश की अनुभूति तथा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'हम्' के साथ जीव-भाव के काय-कलेवर से विसर्जन की अनुभूति करनी चाहिए। इसमें प्रत्येक श्वांस-प्रश्वांस में परमात्म सत्ता का अपने शरीर और मन पर अधिकाधिक आधिपत्य होते चलने की धारणा बलवती होती जाती है। यह भाव-चेतना जागृत होने पर शरीर और मन से लोभ-मोह, वासना-तृष्णा के आधिपत्य की समाप्ति तथा उत्कृष्ट चिन्तन एवं आदर्श कर्तृत्व की, ब्रह्म-सत्ता की प्रतिष्ठापना की अनुभूति गहरी होती जाती है। अनुभूति की गहनता ही परिणामकारी होगी। अन्यथा यह सब उथली कल्पनाओं की मनोरंजक क्रीड़ा ही सिद्ध होगी। सार्थकता उन्हीं विचारो-संकल्पों की हैं, जो क्रिया रूप में परिणत है। अन्यथा सब मनमोदक मात्र हैं। शेखचिल्लीपन से कोई उपलब्धि सम्भव नहीं है।

शरीर-मन से अवांछनीय इन्द्रिय-लिप्साओं का निष्कासन और दिव्य-चेंतना के शासन की प्रक्रिया ही सोऽहम् साधना को सार्थक बनाती है। चिन्तन जीवन-प्रवाह बन जाए, तभी वह चिन्तन है। अन्यथा मानसिक रति-विनोद ही कहा जाएगा।

यों सोऽहम् साधना का चमत्कारी परिणाम भी अतुल है। यह प्राणयोग की विशिष्ट साधना है। दस प्रधान और चौवन गौण, कुल चौसठ प्राणायामों का विधि-विधान साधना विज्ञान के अन्तर्गत है। इनके विविध लाभ हैं। इन सभी प्राणायामों सोऽहम् साधना रूपी प्राणयोग सर्वोपरि है। यह अजपा गायत्री जप प्राणयोग के अनेक साधना-विधानों में सर्वोच्च है। इस एक के ही द्वारा सभी प्राणायामों का लाभ प्राप्त हो सकता है।

षटचक्र वेधन में प्राणतत्व का ही उपयोग होता है। नासिका द्वारा प्राण तत्व में जाने पर आज्ञाचक्र तक तो एक ही ढंग से कार्य चलता है, पर पीछे उसके भावपरक तथा शक्तिपरक ये दो भाग हो जाते हैं। भावपरक हिस्से में फेंफड़े में पहुँचा हुआ प्राण शरीर के समस्त अंग-प्रत्यगों में समाविष्ट होकर सत् का संस्थापन और असत् का विस्थापन करता है। शक्तिपरक प्राणधारा आज्ञाचक्र से पिछले मस्तिष्क को स्पर्श करती मेरुदण्ड में निकल जाती है, जहाँ ब्रह्मनाड़ी का महानद है। इसी ब्रह्म-नद में इड़ा-पिंगला दो विद्युत धाराएँ प्रभावित हैं, जो मूलाधार चक्र तक जाकर सुषुम्ना-सम्मिलन के बाद लौट आती हैं। मेरुदण्ड स्थित ब्रह्मनाड़ी के इस महानद में ही षटचक्र भँवर की तरह स्थित है। इन्हीं षटचक्रों में लोक-लोकान्तरों से सम्बन्ध जोड़ने वाली रहस्यमय कुन्जियाँ सुरक्षित रखी हुई हैं। जो जितने रत्न-भण्डारों से सम्बन्ध स्थापित कर ले, वह उतना ही महान।

कुण्डलिनी शक्ति भौतिक एवं आत्मिक शक्तियों की आधारपीठ है। उसका जागरण षटचक्र वेधन द्वारा ही सम्भव है। चक्रवेधन प्राणतत्व पर आधिपत्य के बिना सम्भव नहीं। प्राणतत्व के नियन्त्रण में सहायक प्राणायामों में सोऽहम् का प्राणयोग सर्वश्रेष्ठ व सहज है।

सोऽहम् साधना द्वारा एक अन्य लाभ है, दिव्य गन्धों की अनुभूति। गन्ध वायु तत्व की तन्मात्रा है। इन तन्मात्रा द्वारा देवतत्वों की अनुभूति का माध्यम है नासिका सोऽहम् साधना गन्ध तन्मात्रा को विकसित करती है, परिणामस्वरूप दिक्गन्धों की अनायास अनुभूति समय-समय पर होती रहती है। इन गन्धों को कुतूहल या मनोविनोद की दृष्टि से नहीं लेना चाहिए। अपितु इनमें सन्निहित विभूतियों का उपयोग कर दिव्य शक्तियों की प्राप्ति का प्रयास किया जाना चाहिए। उपासना स्थल में धूपबत्ती जलाकर, गुलदस्ता सजाकर, चन्दन, कपूर आदि के लेपन या इत्र-गुलाबजल के छिड़काव द्वारा सुगन्ध पैदा की जाती है और उपासना अवधि में उसी की अनुभूति को सहज बनाया जाता है। यह अनुभूति गहरी होती चले तो साधनास्थल से बाहर निकलने पर, बिना किसी गन्ध-उपकरण के भी दिक गन्ध आती रहेगी। ऐसी दिकगन्ध एकाग्रता की अभिरुचि का चिन्ह है। विभिन्न पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों में घ्रण-शक्ति का महत्त्व सर्वविदित है। उसी के सहारे वे रास्ता ढूँढ़ते, शत्रु को भाँपते और सुरक्षा का प्रबन्ध करते, प्रणय-सहचर को आमंत्रित करते, भोजन की खोज करते तथा मौसम की जानकारी प्राप्त करते हैं। इसी घ्रण-शक्ति के आधार पर प्रशिक्षित कुत्ते अपराधियों को ढूँढ़ निकालते हैं। मनुष्य अपनी घ्राण-शक्ति को विकसित कर अतीन्द्रिय संकेतों तथा अविज्ञात गतिविधियों को समझ सकते हैं। दिव्य-शक्तियों से सम्बन्ध का भी गन्धानुभूति एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। सोऽहम् साधना इसी शक्ति को विकसित करती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सोऽहम् साधना का एक अन्य विशिष्ट पक्ष स्वर साधना का है। शरीर और मन की स्थिति में ऋण एवं धन विद्युत आवेशों की घट-बढ़, इड़ा तथा पिंगला नाड़ी के माध्यम से चलने वाले चन्द्र-सूर्य स्वर के प्रभाव अनुसार होती रहती है। स्वर स्थिति का सही ज्ञान अपनी अन्त:क्षमता की दशा को जानने में सहायक होता है और तब किस समय कौन सा काम हाथ में लेना अधिक उचित होगा, यह निर्णय लेना भी सरल हो जाता है। सामान्यत: अविज्ञात जानकारियाँ भी स्वरयोग के द्वारा अधिक अच्छी तरह समझी जा सकती हैं ।

सोऽहम् जप-भावोत्कर्ष एवं शक्ति आकर्षण की साधना

उपासना की समग्रता में जप, ध्यान और भाव इन तीनों के समन्वय की आवश्यकता होती है। पूजा-अर्चना को प्रतीक परिचर्या माना जाता है। प्रतिमा की दर्शन-झाँकी एवं नमन-वन्दन के अतिरिक्त धूप, दीप, नैवेद्य, अक्षत, जल आदि के समर्पण को स्मरण प्रक्रिया के अन्तर्गत लिया जाता है। लोग भगवान को भूले रहते हैं। यह स्मरण नहीं रखते कि सर्वव्यापी और न्यायकारी भगवान सर्वत्र समाया हुआ है । वह हमारे चरित्र और चिन्तन को बारीकी से देखता है और इसी आधार पर आक्रोश एवं उपहारजन्य प्रतिक्रिया व्यक्त करता रहता है। भगवान है, इतना मान लेना पर्याप्त नहीं। उसकी प्रतिमा का दर्शन करने या नाम जपने भर से उद्धार हो जाता है यह मान्यता भी अपूर्ण है। आस्तिकता तभी सार्थक होती है जब भगवान को अपनी जीवनचर्या में स्थान दिया जाय। अपने गुण, कर्म,. स्वभाव में उसकी प्रेरणा के अनुरूप गतिविधियों का समन्वय किया जाय। यह कार्य नाम लेने या प्रतिमा की झाँकी करने भर से पूरा नहीं होता। चिन्तन और मनन में यह तथ्य भी समाविष्ट रहना चाहिए कि व्यक्तित्व का निर्धारण एवं विकास इस प्रकार किया जाय, जिससे उसका अनुशासन निभे और प्रसन्नता भरा अनुग्रह हस्तगत हो। देवालयों, तीर्थ स्थानों की दर्शन झाँकी इस तथ्य की स्मृति पटल पर गहराई के साथ जमाये रहने के लिए की जाती है। यह सामान्य क्रम है जिसे जितनी अधिक बार चरितार्थ कर सकना सम्भव हो, उतना करना चाहिए।

इससे अगला कदम उपासना का है। उसमें नाम जप, ध्यान और भाव का समन्वय होना चाहिए। इसके निमित्त विभिन्न धर्म-समुदायों में भिन्न-भिन्न प्रकार के उपाय उपचार बताये गये हैं पर एक साधना ऐसी है जिसे मत-मतान्तरों से ऊपर सार्वभौम अवथा सर्वजनीन कहा जा सकता है।

वह है सोहम् साधना। इसे हंसयोग भी कहा गया है। यह अनायास ही सधता रहता है, किन्तु लोग इसे भूले रहते हैं। इसे स्मृति पटल पर जागृत कर लिया जाय और अभ्यास में उतार लिया जाय तो बिना किसी अतिरिक्त कर्मकाण्ड के यह साधना स्वयमेव चल पड़ती है।

नासिका मार्ग से श्वांस-प्रश्वांस क्रिया अनायास ही चलती रहती है। पर इसकी ओर किसी का ध्यान विशेष रूप से नहीं जाता। जब उसे व्यवस्थित कर लिया जाता है तो वह भगवद् भक्ति की सर्वांगपूर्ण साधना बन जाती है। श्वांस-प्रश्वांस के साथ एक सूक्ष्म ध्वनि होती है। वह सहज ही सुनने में नहीं आती। ध्यान एकाग्र करने पर कुछ समय में तीन शब्द उभरने लगते हैं। साँस खींचते समय 'सो' और छोड़ते समय 'हम्' की ध्वनि होती है। थोड़े अभ्यास से ही कुछ दिनों में इन ध्वनियों की अनुभूति होने लगती है।

प्राणायाम के तीन पक्ष हैं (१) साँस खींचने को—पूरक (२) साँस रोकने को—कुम्भक और साँस छोड़ने को—रेचक कहते हैं। सोहम् साधना में यह तीनों ही क्रियाएँ होती रहती हैं। और 'शब्दब्रह्म' की साधना भी। साँस लेते समय 'सो'। रोकते समय (अ-इ) अर्ध आधार और छोड़ते समय 'हम्' की ध्वनि होती है उसे यह कुछ समय के अभ्यास से अनुभव में प्रत्यक्ष उतरने लगते हैं।

जिस तरह बाँस की पोली नली में होकर हवा भीतर जाती है तो सीटी बजने जैसी ध्वनि होती है उसी तरह नासिका छिद्र से भीतर ली जाने वाली साँस को 'सो' समझना चाहिए और नाक से साँस छोड़ते समय सभी जीवधारियों की नासिका से 'हम्' शब्द स्पष्ट होता है। साँप की फुसकार में—यह शब्द अधिक स्पष्ट होता है। जिसे फुसकार कहते हैं। साँस खींचने और निकालने के बीच में एक स्वल्प अवधि का विराम होता है। उसे (अ) (ऽ) आधा अ कहा जा सकता है। छोड़ते समय की ध्वनि "हम" जैसी प्रतीत होती है। इस प्रकार तीनों क्रियाओं को मिलाकर 'सोऽहम्' शब्द बन जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। सोहम् को उल्टा कर देने पर 'हंस' बन जाते हैं इसलिए इसे हंसयोग भी कहते हैं।

'सः' का अर्थ है—वह ! अहम् का अर्थ होता है मैं। पूरे सोहम् शब्द का अर्थ होता है। "वह मैं हूँ" वेदान्त का सार इन्हीं शब्दों में सन्निहित है। सोऽहम्-शिवोऽहम्-सच्चिदानन्दोहम् आदि शब्द इसी के पर्यायवाची हैं। तत्वमसि—अयमात्मा ब्रह्म—प्रज्ञा—'ब्रह्म' शब्दों में उद्‌बोधन कराया गया है कि तू ही ब्रह्म है। यह आत्मा ही ब्रह्म है। मैं शिव हूँ—मैं सच्चिदानन्द हूँ। यह शब्दाकार मात्र है। सबका अर्थ एक ही है—"मैं वह (परब्रह्म) हूँ। इसमें आत्मा और परमात्मा की एकता का भाव सन्निहित है। इसे अद्वैत भाव भी कह सकते हैं।

भक्त और भगवान को दो मानते हुए की जाने वाली प्रार्थना को द्वैत कहते हैं। पूजा-प्रयोजन में प्रयुक्त होने वाले कर्मकाण्ड एवं वस्तु विनियोग को अलग मानने से त्रैत सिद्धान्त बन जाता है। अद्वैत भाव में अपने आपको भगवत् समर्पण करना होता है और जिस प्रकार आग-ईंधन—नदी, नाला मिलकर एक हो जाते हैं उसी प्रकार अद्वैत भाव की साधना में भक्त और भगवान दोनों मिलकर एकत्व का अनुभव करते हैं। जिस प्रकार नमक या शक्कर पानी में घुलकर एक रूप हो जाता है यह समर्पण भाव अद्वैत है।

भगवान के प्रति "त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव" की भावना रखकर आराध्य प्रभु के सम्मुख प्रार्थना करने की प्रक्रिया द्वैत है और धूप, दीप, नैवेद्य, चन्दन, पुष्प का समर्पण करते हुए आत्म-निवेदन करने की प्रक्रिया त्रैत है। प्रकृति पदार्थों का पूजा में समावेश हो जाने से त्रैत भावना बन जाती है। उपासना के यही तीन उपचार हैं। भक्त अपनी-अपनी भावना के अनुरूप इनमें से किसी का भी चयन कर सकते हैं।

'सोहम्' उपासना को यों अद्वैत कहा जाता है। क्योंकि उसमें (स—वह) अहम् (मैं) होने के समन्वय का समर्पण का एकाकार होने के भाव हैं। किन्तु तत्व दर्शन के तीनों प्रयोजनों के अनुरूप भी इसका अर्थ हो सकता है। स-वह-अहम्-मैं, मैं और वह दोनों की स्थिति अलग-अलग मान लेने पर यह द्वैत हो जायेगी और इस ध्वनि के साथ सँस का आवागमन प्रकृति पदार्थ है, इसलिए यह त्रैत भी हो सकता है। भक्त को अपनी मान्यता और भावना के अनुरूप इनमें से किसी को भी अपना लेने की गुंजायश है।

वस्तुतः सोऽहम् साधना प्रकारान्तर से परमात्म सत्ता का अपने शरीर और मनःक्षेत्र पर आधिपत्य स्थापित हो जाने की ही धारण है। जीव भाव अर्थात् स्वार्थवादी संकीर्णता, काम, क्रोध लोभ, मोह भरी मद मत्सरता—अपने को शरीर या मन के रूप में अनुभव करते रहने वाली आत्मा भी दिग्भ्रान्त स्थिति का नाम ही जीव भूमिका है। इस भ्रमजं जाल भरे जीवन भाव को हटा दिया जाय तो फिर अपना विशुद्ध अस्तित्व ईश्वर के अविनाशी अंश आत्मा के रूप में ही शेष रह जाता है। काय-कलेवर के कण-कण पर परमात्मा के शासन की स्थापना और जीव धारणा की बेदखली यही है सोऽहम् साधना का तत्वज्ञान। श्वांस-प्रश्वांस क्रिया के माध्यम से-सो और हम् ध्वनि के सहारे इसी भाव चेतना को जागृत किया जाता है कि अपना स्वरूप ही बदल रहा है अब शरीर और मन पर से लोभ-मोह का-वासना-तृष्णा का आधिपत्य समाप्त हो रहा है और उसके स्थान पर उत्कृष्ट चिन्तन एवं आदर्श कर्तृत्व के रूप में ब्रह्मसत्ता की स्थापना हो रही है। शासन परिवर्तन जैसी राज्यक्रान्ति जैसी यह भाव भूमिका है जिसमें अनाधिकारी, अनाचारी शासनसत्ता का तख्ता उलटकर उसे स्थान पर सत्य न्याय और प्रेम संविधान वाली धर्म सत्ता का राज्याभिषेक किया जाता है। सोऽहम् साधना इसी अनुभूति स्तर को क्रमशः प्रगाढ़ करती चली जाती है और अन्तःकरण यह अनुभव करने लगता है कि अब उस पर असुरता का नियन्त्रण नहीं रहा, उसका समग्र संचालन देवसत्ता द्वारा किया जा रहा है।

सोऽहम् साधना के अभ्यास में प्रायः ४-५ मिनट प्रतिदिन लगते हैं। इसमें से आरम्भ के पन्द्रह मिनट श्वांस ध्वनि ग्रहण करते समय 'सो' और निकालते समय 'हम्' की धारणा में लगने चाहिए। प्रयत्न करना चाहिए कि इन शब्दों के आरम्भ में अति मन्द स्तर की होने वाली अनुभूति में क्रमशः प्रखरता आती चली जाय। इसके उपरान्त शेष आधा घण्टे में चिन्तन का स्तर यह होना चाहिए कि सांस में घुले हुए भगवान अपनी समस्त विभूतियों और विशेषताओं के साथ काय-कलेवर में भीतर प्रवेश कर रहे हैं। यह प्रवेश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मात्र आवागमन नहीं है वरन् प्रत्येक अवयव पर सघन आधिपत्य बन रहा है। एक-एक करके शरीर के भीतरी प्रमुख अंगों के चित्र की कल्पना करनी चाहिए और अनुभव करना चाहिए उसमें भगवान की सत्ता चिरस्थायी रूप से समाविष्ट हो गई। हृदय फुफ्फुस, आमाशय, आँतें, गुर्दे, जिगर, तिल्ली आदि में भगवान का प्रवेश हो गया। रक्त के साथ प्रत्येक नस-नाड़ी और कोशिकाओं पर भगवान ने अपना शासन स्थापित किया।

बाह्य अंगों ने पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच ज्ञानेन्द्रियों ने भगवान के अनुशासन में रहना और उनका निर्देश पालन करना स्वीकार कर लिया। जीभ वही बोलेगी जो ईश्वरीय प्रयाजनों की पूर्ति में सहायक हो। देखना, सुनना, बोलना, चखना आदि इन्द्रियजन्य गतिविधियाँ दिव्य निर्देशों का ही अनुगमन करेंगी। जननेन्द्रिय का उपयोग वासना के लिए नहीं मात्र ईश्वरीय प्रयोजनों के लिए अनिवार्य आवश्यकता का धर्म संकट सामने आ खड़ा होने पर ही किया जायगा। हाथ-पाँव मानवोचित कर्तव्य पालन के अतिरिक्त ऐसा कुछ न करेंगे जो ईश्वरीय सत्ता को कलंकित करता हो। मस्तिष्क ऐसा कुछ न सोचेगा जिसे उच्च आदर्शों के प्रतिकूल ठहराया जा सके। बुद्धि कोई अनुचित न्याय विरुद्ध एवं अदूरदर्शी अविवेक भरा निर्णय न करेगी। चित्त में अवांछनीय एवं निकृष्ट स्तरीय आकांक्षाऐं न जमने पायेंगी। अहंता का स्तर नर कीटक जैसा नहीं नर-नारायण जैसा होगा।

यही हैं वे भावनाऐं जो शरीर और मन पर भगवान के शासन स्थापित होने के तथ्य को यथार्थ सिद्ध कर सकती है। यह सब उथली कल्पनाओं की तरह मनोविनोद भर नहीं रह जाना चाहिए वरन् उसकी आस्था इतनी प्रगाढ़ होनी चाहिए कि इस भाव परिवर्तन को क्रिया रूप में परिणत हुए बिना चैन ही न पड़े। सार्थकता उन्हीं विचारों की है जो क्रिया रूप में परिणत होने की प्रखरता से भरे हों, अन्यथा स्वप्नदर्शी शेखचिल्ली ऐसे ही बैठे ठाले मन मोदक खाते रहते हैं। उनसे कुछ प्रयोजन सिद्ध हो सकता नहीं सोहम् साधना के पूर्वार्ध में अपने काय-कलेवर पर श्वसन क्रिया के साथ प्रविष्ट हुए महाप्राण की—परब्रह्म की सत्ता स्थापना का इतना गहन चिन्तन करना पड़ता है कि यह कल्पना स्तर की बात न रहकर एक व्यावहारिक यथार्थता के—प्रत्यक्ष तथ्य के—रूप में प्रस्तुत दृष्टिगोचर होने लगे।

इस साधना का उत्तरार्ध पाप निष्कासन का है। शरीर में से अवांछनीय इन्द्रिय लिप्साओं का-आलस्य, प्रमाद जैसी दुष्कृतियों की, मन से लोभ, मोह जैसी तृष्णाओं का-अन्तस्तल से जीव भावी अहन्ता का-निवारण-निराकरण हो रहा है। ऐसी भावनाएँ अत्यन्त प्रगाढ़ होनी चाहिए। दुर्भावनायें और दुष्कृतियाँ-निकृष्टतायें और दुष्टतायें-क्षुद्रतायें और हीनतायें सभी निरस्त हो रही है—सभी पलायन कर रही हैं यह तथ्य हर घड़ी सामने खड़ा दीखना चाहिए। अनुपयुक्तताओं के निरस्त होने के उपरान्त ही हलकापन जो सन्तोष—जो उल्लास स्वभावतः होता है और निरन्तर बना रहता है उसी का प्रत्यक्ष अनुभव होना ही चाहिए। तभी यह कहा जा सकेगा कि सोऽहम् साधना का उत्तरार्ध भी एक तथ्य बन गया।

भावोत्कर्ष की दृष्टि से सोहम् साधना के साथ-साथ उपरोक्त भाव चित्रों को मनः क्षेत्र पर अति सघन चित्रित किया जाना चाहिए। इससे वह चिन्तन कुछ ही समय में जीवन का एक प्रवाह बन जाता है और साधक का आन्तरिक कायाकल्प होने से बाह्य जीवन अनासक्त कर्मयोगी जैसा उत्कृष्ट दृष्टिगोचर होने लगता है। ऐसा व्यक्ति सांसारिक दृष्टि से कृषक, पशुपालक, श्रमिक, व्यवसायी जैसे सामान्य आजीविका में निरत होने के कारण छोटा भले ही समझा जाय पर वस्तुतः आन्तरिक उत्कृष्टता के कारण वह होता अत्यन्त महान ही है अध्यात्म मूल्यांकनों की कसौअ पर कसने से उसे महामानव एवं ऋषिकाय ही ठहराया जा सकता है। राजा जनक यों सांसारिक दृष्टि से क्रिया व्यस्त थे पर अपने उदात्त दृष्टिकोण के कारण वे सदा ब्रह्मवेत्ता ही माने गये। किसी को साधारण स्तर का जीविकोपार्जन करना पड़े इससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं। यदि सोहम् साधना स्तर की मान्यतायें गहराई तक अन्तःकरण में जड़ जमालें और वे कार्य रूप में परिणित होने के लिए आतुर हो उठें तो समझना चाहिए इस एक ही साधना ने जीवन लक्ष्य प्राप्त कराने का प्रयोजन पूरा कर दिया।

यों सोऽहम् साधना का चमत्कारी प्रयोजन भी कम नहीं है। यह प्राणयोग की महती साधना है। दस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रधान और चौवन गौण इस प्रकार चौंसठ प्राणायामों का साधना विज्ञान के अन्तर्गत विधि-विधान वर्णित है और उनके अनेकानेक लाभ-परिणाम बताये गये हैं। इन सबमें सर्वप्रथम और सर्वोपरि 'सोऽहम्' साधना में सन्निहित प्राणयोग ही है। जिस प्रकार मंत्रों में गायत्री सर्वोपरि है उसकी प्राणयोग के विविध साधना विधानों में सर्वोच्च मान्यता सोहम् के अजपा गायत्री जाप की है। सभी प्राणायामों का लाभ इस एक से ही उठाया जा सकता है।

षटचक्र वेधन के लिए प्राण तत्व के बरमे ही छेद करने का काम करते हैं। आज्ञाचक्र तक नासिका द्वारा प्राणतत्व खीचने का कार्य एक ही ढंग से चलता है। पीछे उसके दो भाग हो जाते हैं, एक भावपरक दूसरा शक्ति परक। भावपरक में फेफड़ों में पहुँचा हुआ प्राण समस्त शरीर के अंग-प्रत्यगों में समाविष्ट होकर सत् का संस्थापन और असत् का निवारण सम्पन्न करता है। आज्ञा चक्र में एक दूसरी प्राण धारा पिछले मस्तिष्क को स्पष्ट करती हुई मेरुदण्ड में निकल जाती है। वही ब्रह्म नाड़ी का महाशक्ति नद है। इड़ और पिंगला की दो विद्युत धारायें इसी में प्रवाहित होती हैं। वे मूलाधार चक्र तक पहुँचती हैं और सषुम्ना संमिलन के बाद वापिस लौट आती हैं। षटचक्र इसी मेरुदण्ड में स्थित ब्रह्मनाड़ी महानद के अन्तर्गत पड़ने वाले भँवर हैं। इनमें ही लोक-लोकान्तरों से—अति मानवी शक्ति संस्थाओं से—सम्बन्ध मिलाने वाली रहस्यमय कुन्जियाँ सुरक्षित रखी हुई हैं। षटचक्रों में से जो जितने रत्न भण्डारों से सम्बन्ध स्थापित करले वह उतना ही महान् बन सकता है। कुण्डलिनी शक्ति को भौतिक और आत्मिक शक्तियों का आदान-प्रदान सम्पन्न करने वाली महत्वपूर्ण भूमिका कह सकते हैं। उसका जागरण षटचक्र वेधन के उपरान्त ही होता है। चक्रवेधन के लिए प्राणतत्व पर आधिपत्य स्थापित करने वाले वेधक प्राणायामों का अभ्यास करना पड़ता है। जो प्राणायाम षटचक्र वेधन में सहायता करते हैं उनसे सोहम् का प्राणयोग सर्वप्रथम और सर्वसुलभ है। पंचकोषों के अनावरण का क्रम भी चक्रवेधन स्तर का ही है। उसके लिए भी प्राण प्रखरता बढ़ानी पड़ती है। यह प्रोजन भी सोहम् साधना से ही पूरा होता है।

कहा जा चुका है कि सोहम् की भावना साधना वाला पक्ष आज्ञाचक्र से मुड़कर फेफड़ों की तरह श्वांस प्रश्वांस का रूप धारण करता है और वहीं से दूसरी धारा मेरुदण्ड की ओर मुड़कर शक्ति जागरण का काम करती है। सोहम् साधना के हिमालय से निकलने वाली गंगा, यमुना-भावोत्कर्ष एवं शक्ति-संवर्धन के दोनों प्रयोजन पूरे करती है—इससे भौतिक और आत्मिक प्रगति के दोनों ही प्रयोजन पूरे होते हैं। शक्ति सम्पन्न और भावोत्कर्ष की उभयपक्षीय उपलब्धियाँ ही समग्र अध्यात्म है। उसे प्राप्त करने में सोहम् साधना कितनी महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करती है इसे अनुभव द्वारा ही जाना जा सकता है।

नासिका की वायु तत्व की तन्मात्रा गन्ध है। गन्ध के माध्यम से देवतत्वों की अनुभूति साधना नासिका द्वारा ही होती है। सोऽहम् द्वारा गन्ध तन्मात्रा के विकास होता है और समय-समय पर अनायस ही दिव्य गन्धों की अनुभूति होती है। इन गन्धों में मन को प्रसन्न करना या कौतूहल दीखने जैसा साधारण लाभ नहीं वरन् के विभूतियाँ भी भरी पड़ी हैं जिनसे दिव्य शक्तियों और दिव्य सिद्धियों से लाभान्वित हुआ जा सकता है। सोऽहम् साधना के लिए अगरबत्ती, धूपबत्ती, जला कर गलदस्ता सजाकर, चन्दन, कपूर आदि लेपकर इत्र लगाकर और गुलाब जल छिड़ककर उस स्थान पर सुगन्ध उत्पन्न की जाती है। साधना के समय अनुभव किया जाता है। प्रस्तुत गन्ध नासिका में-मस्तिष्क में बस रही है। उसकी अनुभूति सहज ही हो रही है। ऐसा क्रम साधना के समय चलता रहे तो आगे चलकर साधना स्थल से बाहर निकलने पर भी—गन्ध का कोई उपकरण न होने पर भी दिव्य गन्ध आती रहेगी। यह नासिका की सूक्ष्म तन्माश्रा के जागरण का—एकाग्रता की अभिवृद्धि का चिन्ह हैं, इससे-सफलता से प्रसन्नता का बढ़ना स्वाभाविक है।

मनुष्यों में नेत्र का महत्त्व बढ़ गया है इसके बाद जिह्वा तथा कर्णेन्द्रियों की बात है। दूसरी दृष्टि से देखा जाय तो नेत्र के बाद जननेन्द्रिय को आवेशोत्पादक कहा जा सकता है। किन्तु अन्य जीवधारियों में सबसे प्रबल और प्रधान नासिका ही होती है। वे गन्ध के आधार पर ही अपने जीवन संकट को गतिशील बनाये रहने में समर्थ होते हैं। आहार की खोज, यौन आमन्त्रण, शत्रु से रक्षा, मौसम की जानकारी, रास्ता ढूँढ़ना, अपने-विराने की पहचान जैसे आवश्यक कार्य पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े प्राय: नासिका के आधार पर ही पूरे करते हैं। गन्ध ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनका मार्गदर्शन करती है और भटकावों से—संकटों से बचाती है। प्रशिक्षित कुत्ते अपनी घ्राण शक्ति के आधार पर ही अपराधियों को खोज निकालने का कार्य करते हैं। इसी शक्ति को विकसित कर लिया जाय तो अविज्ञात हलचलों और अतीन्द्रिय संकेतों को समझा जा सकता है। दिव्य लोकों में-दिव्य शक्तियों से-देव आत्माओं से-सम्बन्ध मिलाने का एक अति महत्त्वपूर्ण माध्यम गन्धानुभूति भी है जिसे सोऽहम् साधना के आधार पर जाना जा सकता है।

स्वरयोग अपने आप में एक स्वतन्त्र शास्त्र है। इड़ा और पिंगला नाड़ी के माध्यम से चलने वाले चन्द्र सूर्य स्वर—शरीर और मन की स्थिति में ऋण और धन विद्युत के आवेश घटाते-बढ़ाते रहते हैं। इस स्थिति का सही ज्ञान रहने पर मनुष्य यह जान सकता है कि उसकी अन्तःक्षमता किस कार्य को कर सकने में समर्थ अथवा क्या करने में असमर्थ है। अन्तर्जगत की वस्तुस्थिति का सही ज्ञान होने पर मनुष्य के लिऐ ऐसा कदम सरल हो जाता है जिसके आधार पर सफलता का पथ अधिक प्रशस्त हो सके। किस स्वर की स्थिति में मनुष्य दूसरों की क्या सहायता कर सकता है इसकी जानकारी भी स्वरयोग से मिलती है तदनुसार दूसरों की स्वल्प सहायता करके भी उन्हें अधिक मात्रा में लाभान्वित किया जा सकता है। सामान्य बुद्धि से जो अविज्ञात जानकारियाँ प्रायः नहीं ही जानी जा सकतीं उन्हें भी स्वरयोग के माध्यम से अधिक खूबी और खूबसूरती से समझा जा सकता है।

स्वरयोग की साधना के यों कई अभ्यास हैं, पर उनमें अधिक सरल और अधिक सफल सोऽहम् साधना ही रहती है। यह विशुद्ध रूप से प्राणयोग है। उसमें प्राणायाम के, षटचक्रवेधन, ग्रन्थिवेधन, कुण्डलिनी जागरण, स्वर साधन, गन्धानुभूति भावोत्कर्ष जैसी योगाभ्यास की अनेक ऐसी धारायें समाविष्ट हैं जिनके माध्यम से साधक को उच्चस्तरीय आत्मविकास का लाभ मिल सकता है।

सोऽहं साधना का विधि-विधान

सोऽहम् साधना की प्राणयोग प्रक्रिया में ध्यान मुद्रा में अर्थात् कमर सीधी रखकर, पालथी मारकर सुखासन में बैठना पड़ता है। ध्यान साधनाओं से शरीर को ढीला और मन को खाली करना पड़ता है इसलिए उनमें आराम कुर्सी, दीवार, पेड़ का सहारा लेकर बैठने अथवा चित्त लेटने की आवश्यकता पड़ती है। गायत्री उपासना और सोऽहम् साधना जपात्मक प्रक्रियाऐं हैं। सोऽहम् साधना को अजपा गायत्री भी कहते हैं। प्राण निरन्तर उसका बीज रूप में जप करता रहता है। अस्तु उसके लिए भी मेरूदण्ड को सीधा रखकर ही एवं पालथी मारकर ही बैठना पड़ता है।

श्वांस लेते समय 'सो' ध्वनि का और छोड़ते समय 'हम्' ध्यान के प्रवाह को सूक्ष्म श्रवण शक्ति के सहारे अन्तःभूमिका में अनुभव करना यही है संक्षेप में 'सोऽहम्' साधना। इस प्रक्रिया में जब नासिका छिद्र की सीमित परिधि में होकर जब वायु भीतर प्रवेश करेगी तो वहाँ स्वभावतः ध्वनि उत्पन्न होगी। साधारण श्वांस प्रश्वांस के समय बी वह उत्पन्न होती है पर इतनी धीमी रहती है कि कानों के छिद्र उन्हें सरलतापूर्वक नहीं सुन सकते। प्राणयोग की साधना में गहरे श्वांसोच्छवास लेने पड़ते है। प्राणायाम का मूल स्वरूप ही यह है कि श्वांस जितनी अधिक गहरी, जितनी मन्दगति से ली जा सके लेनी चाहिए और फिर कुछ समय भीतर रोककर धीरे-धीरे उस वायु को पूरी तरह खाली कर देना चाहिए गहरी और पूरी साँस लेने से स्वभावतः नासिका छिद्रों से टकराकर उत्पन्न होने वाला ध्वनि प्रवाह और भी अधिक तीव्र हो जाता है। इतने पर भी वह ऐसा नहीं बन पाता कि खुले कानों से उसे सुना जा सके। कर्णेन्द्रियों की सूक्ष्म चेतना में ही उसे अनुभव किया जा सकता है।

चित्त को श्वसन क्रिया पर एकाग्र करना चाहिए। और भावना को इस स्तर की बनाना चाहिए कि उससे श्वांस लेते समय 'सो' शब्द के ध्वनि प्रवाह की मन्द अनुभूति होने लगे। उसी प्रकार जब साँस छोड़ना पड़े तो यह मान्यता परिपक्व करनी चाहिए कि 'हम्' ध्वनि प्रवाह विनिसृत हो रहा है। आरम्भ में कुछ समय यह अनुभूति उतनी स्पष्ट नहीं होती किन्तु क्रम और प्रयास जारी रखने पर कुछ ही समय उपरान्त इस प्रकार का ध्वनि प्रवाह अनुभव में आने लगता है और उसे सुनने में न केवल चित्त ही एकाग्र होता है वरन् आनन्द का अनुभव होता है।

'सो' का तात्पर्य परमात्मा और 'हम्' का जीवचेतना समझा जाना चाहिए। निखिल विश्व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्माण्ड में संव्याप्त महाप्राण नासिका द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करता है और अंग-प्रत्यंग में जीवकोष तथा नाड़ी तन्तु में प्रवेश करके उसको अपने सम्पर्क संसर्ग का लाभ प्रदान कराता है यह अनुभूति 'सो' शब्द ध्वनि के साथ अनुभूति भूमिका में उतरनी चाहिए। और 'हम्' शब्द के साथ जीव भाव द्वारा इस काय-कलेवर पर से अपना कब्जा छोड़कर चले जाने की मान्यता प्रगाढ़ की जानी चाहिए ।

साधना करते समय जब साँस भीतर जा रही हो तब 'सो' की भावना, भीतर रुक रही हो तब (अ) का और जब उसे बाहर निकाला जा रहा हो तब 'हम' ध्वनि का ध्यान करना चाहिए । इन शब्दों को मुख से बोलने की आवश्यकता नहीं है । मात्र श्वांस के आवागमन पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है और साथ ही यह भावना की जाती है कि आवागमन के साथ दोनों शब्दों की ध्वनि हो रही है ।

साँस पूरी ली जाय । जितनी फेफड़ों में गुंजायश है अतनी साँस भरी जाए । पूरी साँस भरने से पेट भी फूलने लगता है । सँस रोकने का समय खींचने की तुलना में आधा होना चाहिए । इसके बाद साँस निकाली जाय तो समय उतना लगना चाहिए जितना कि खींचने में लगाया था । इस स्थिति में जहाँ फेफड़े—सीना सरकता है वहाँ पेट भी भीतर घुस जाता है । इसे पूरी सांस लेना कह सकते हैं । यह प्रक्रिया स्वांसोच्छवास की दृष्टि से भी एक उपयोगी व्यायाम जैसी है । आमतौर से लोग अधूरी साँस लेते हैं । इससे फेफड़े का थोड़ा ही अंश काम में आता है और शेष निष्क्रिय पड़ा रहता है। उसमें क्षय आदि के कीटाणु जमा हो जाते हैं। कड़ी मेहनत करने पर दम फूल जाता है, साँस अधूरी जाने से उनके साथ शरीर को समग्र मात्रा में मिलने वाली ऑक्सीजन भी नहीं मिलती है । यह कई हानियाँ हैं जो गहरा सांस लेने से दूर होती हैं । शारीरिक दृष्टि से सोहम् साधना एक अचछा श्वास व्यायाम है इसके अतिरिक्त वह उपासना तो है ही ।

श्वांस के आवागमन के साथ-साथ ध्वनि का ध्यान करना, एकाग्रता साधने का योगाभ्यास है । साँस के आवागमन पर और उसके साथ आने वाली ध्वनि पर मन को एकाग्र करने से ध्यानयोग की साधना हो जाती है। ध्यान से मन का बिखराव दूर होता है और प्रकृति को एक केन्द्र पर केन्द्रित करने से उससे एक विशेष मानसिक शक्ति उत्पन्न होती है उससे जिस भी प्रयोजन के लिए—जिस भी केन्द्र पर केन्द्रित किया जाय उस में जाग्रति—स्फुरणा उत्पन्न होती है । मस्तिष्कीय प्रसुप्त क्षमताओं को—षट्चक्रों को—तीन ग्रन्थियों को—जिस भी केन्द्र पर केन्द्रित किया जाय वहीं सजग हो उठता है और उसके अन्तर्गत जिन सिद्धियों का समावेश है उनमें तेजस्विता आती है ।

सोऽहम् साधना के लिए किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है। न समय का न स्थान का । स्नान जैसा भी कोई प्रतिबन्ध नहीं है । जब भी अवकाश हो, सुविधा हो, भाग-दौड़ का काम न हो, मस्तिष्क चिन्ताओं से खाली हो । तभी इसे आरम्भ कर सकते हैं । यों हर उपासना के लिए स्वच्छता नियत समय, स्थिर मन के नियम हैं। सुगन्धित वस्तुओं से वातावरण को प्रसन्नतादायक बनाने की विधि है। वे अगर सुविधापूर्वक बन सकें तो श्रेष्ठ अन्यथा रात्रि को आँख खुलने पर बिस्तर पर पड़े-पड़े भी इसे किया जा सकता है । यों मेरुदण्ड को सीधा रखकर पद्मासन से बैठना हर साधना में उपयुक्त माना जाता है, पर इस हंसयोग में उन सबका अनिवार्य प्रतिबन्ध नहीं है ।

एकाग्रता के लिए हर साँस पर ध्यान और उससे भी गहराई में उतरकर सूक्ष्म ध्वनि का श्रवण इन दो प्रयोजनों के अतिरिक्त तीसरा भाव पक्ष है जिसमें यह अनुभूति जुड़ी हुई है कि "मैं वह हूँ" अर्थात् आत्मा, परमात्मा के साथ एकीभूत हो रही है इसके निमित्त वह सच्चे मन से आत्मसमर्पण कर रही है । यह समर्पण इतना गहरा है कि दोनों के मिलने से एक की सत्ता मिट जाती है और दूसरे की ही रह जाती है । दीपक जलता है तो लौ के प्रज्वलन में बत्ती ही दृष्टिगोचर होती है । तेल तो नीचे पेंदे में पड़ा अपनी सत्ता बत्ती के माध्यम से प्रकाश रूप में समाप्त ही करता चला जाता है ।

सोऽहम् साधना को हंसयोग कहते हैं । इसमें शब्दों को उलटकर सोहम् का हंस तो बना ही है । साथ ही भगवान के २४ अवतारों में एक अवतार हंस भी है जिसका रहस्य ही नीर-क्षीर विवेक । कहते हैं कि दूध और पानी मिलाकर सामने रखने पर हंस उसमें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से पानी का अंश छोड़ देता है और मात्र दूध ही ग्रहण करता है । इस उदाहरण में साधक के लिए प्रेरणा है कि मात्र औचित्य को ही ग्रहण करें । संसार में भला-बुरा सब कुछ मिला-जुला है ।विवेक के अभाव में लोग सब कुछ अपनाते रहते है। जिससे भी स्वार्थ सिद्ध होता है उसी को कर गुजरते हैं । छोड़ने और ग्रहण करने में औचित्य की कसौटी लगाना आवश्यक नहीं समझता । हंसयोग की साधना में साधक को हर कदम फूँक-फूँककर धरना होता है और मात्र उचित ही अंगीकृत करना होता है । अनुचित चाहे कितना ही आकर्षक क्यों न हो, उससे कितना ही लाभ क्यों न दीख पड़ता हो, पर उसे विषवत् त्यागना होता है। 'सोहम्' साधना को अजपा जप या अजपा गायत्री कहा जाता है । इसे जीवात्मा अनायास ही अहिर्निशि जपता रहता है । श्वांस-प्रश्वांस द्वारा। किन्तु वह ध्यान एवं भाव के अभाव में प्रसुप्त स्तर की रहती है और उनका कोई प्रतिफल नहीं मिलता जिस भूमि पर भ्रमण कर रहे हैं उसके नीचे भले ही बहुमूल्य खजाना दबा पड़ा हो, पर जानकारी के अभाव में उसे न तो निकालने का प्रयत्न बन पड़ता है और न सदुपयोग की योजना के अभाव को कोई लाभ मिलता है ।

गायत्री को आद्य शक्ति और मन्त्रों में शिरोमणि कहा गया है । उसका अपना विधि-विधान भी है और संस्कृत भाषा के आधार पर उसका अर्थ भी सद्बुद्धि प्रेरणा परक बनता है । तद्नुसार उसका महात्म्य एवं प्रतिफल भी है । इतने पर भी अब अन्य भाषा-भाषी, अन्य धर्मावलम्बी उसे उतना मान नहीं देते जितना देना चाहिए । किन्तु सोहम् (अजपा गायत्री) के सम्बन्ध में यह बात नहीं है । साँस सभी लेते हैं और उसके साथ सम्मिलित रहने वाली ध्वनि का कोई भी आभास प्राप्त कर सकता है इसलिए वह सार्वभौम भी है और सर्वजनीन भी । इसमें किसी भाषा या सम्प्रदाय का झंझट नहीं है ।

संत कबीर की 'सोऽहम्' साधना

भक्ति-काल की रचनाओं ने दो दिशा ग्रहण की। एक निर्गुण और निराकारवादी थी, दूसरी सगुण और साकारवादी । कालक्रमानुसार निर्गुण प्रथम है । यह काल ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी का था जिसमें सन्त कबीर ने प्राचीन परम्पराओं का संशोधन करते हुए सन्त सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा की । लगभग एक शताब्दी बाद सूर, तुलसीदास और मीरा ने वैष्णव भक्ति के आदर्शों को ग्रहण करते हुए सगुण सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया जिसमें राम और कृष्ण की भक्ति शतमुखी होकर जन-जीवन मन्दाकिनी की भाँति प्रवाहित हुई ।

निर्गुण सम्प्रदाय की पृष्ठभूमि में नाथ सम्प्रदाय है और समानान्तर दिशाओं में वैष्णव भक्ति का अलंकार धारण किए हुए रामानन्द द्वारा प्रचारित शंकर का अद्वैतवाद तथा सूफी सन्तों द्वारा प्रचारित सूफी मत है । सन्त कबीर पर रामानन्द की अद्वैत विचारधारा का प्रभाव सबसे अधिक है । कबीर ने साधना के क्षेत्र में योग और प्रेम को जो महत्त्व दिया है, वह क्रमशः नाथ सम्प्रदाय और सूफी मत का प्रभाव ही माना जा सकता है । यद्यपि प्रेम का महत्त्व वैष्णव भक्ति से भी संनर्थित होता है, परन्तु प्रेम की मादकता जो अनेक प्रतीकों के रूप में प्रस्तुत की गयी है, वह निश्चय ही सूफी मत से प्राप्त की हुई ज्ञात होती है ।

अद्वैतवाद के अनुसार ब्रह्म ही एक सत्य है । अविद्या अथवा अज्ञान के कारण ही यह दृश्यमान् जगत सत्य भासित होता है, जिसमें जीवन और मरण के सुख और दुख घटित होते रहते हैं। इस अज्ञान का नाम माया है। इसे नष्ट करने के लिए, आत्मा सम्बन्धी ज्ञान की आवश्यकता है क्योंकि ब्रह्म और आत्मा में कोई अन्तर नहीं है। जो अन्तर दृष्टिगत होता है वह अज्ञान जनित है। आत्मा को जानना ही निज रूप में स्थित होना है और तभी 'सोऽहम्' की स्थिति प्राप्त होती है। कबीर ने इस सोऽहम् पर विशेष बल दिया है। इस पर कुछ विस्तार से विचार करना आवश्यक है। सन्त कबीरने सोऽहम् की स्थिति योग और रहस्यवाद द्वारा सम्भव बतलाई है—

अरध उरदध मुखि लागो कासु ।
सुन मंडल माहि करि परगासु ॥
उहाँ सूरज नाहीं चन्द ।
आदि निरंजनु करे अनन्द ॥
सो ब्रह्माण्डि पिंडि सो जानु ।
मानसरोवरि करि इसनानु ॥
सोहं सो जा कउ है जाप ।
धाकल लिपत न होई पुन अरु पाप ॥
अवरन वरन धाम नहीं छाम ।
अवरन पाइअ गुरु का साय ॥
टारी न टरै आवै न जाइ ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुन सहज महि रहिओ समाइ ॥
मन मधे जौ जे कोइ ।
जो बोलै सो आपै होइ ॥
जोति मन्त्र मनि असथिरू करै ।
कहि कबीर सो प्रानी तरै ।

इसका सामान्य अर्थ इस प्रकार है—

"जिस शून्य मण्डल के नीचे और ऊपर मुख से आकाश लगा हुआ है, उसी में वह (ब्रह्म) प्रकाश कर रहा है । वहाँ न सूर्य है, न चन्द्रमा किन्तु (अपने ही प्रकाश में) वह आदि निरंजन वहाँ आनन्द की कर रहा है । उसी शून्य मण्डल को ब्रह्मांड और उसी को पिंड समझो । तुम उसी मानसरोवर में स्नान करो और सोऽहम् का जाप करो । जिस सोऽहम् के जाप में पाप और पुण्य लिप्त नहीं है (अर्थात् सोऽहम् जाप, पाप और पुण्य से परे है) उस शून्य मण्डल में वर्ण (रंग) है और न अ—वर्ण (अ-रंग), न वहाँ धूप है न छाया । वह गुरु के स्नेह के अतिरिक्त और किसी भाँति प्राप्त नहीं किया जा सकता । फिर (मन की सहन शक्ति) न टालने से टल सकती है और न किसी अन्य वस्तु में आ जा सकती है ।वह केवल सून्य में लीन होकर रहती है । जो कोई इस शून्य को अपने मन के भीतर जानता है । वह जो कुछ भी उच्चारण करता है, वह आप ही (सच्चे अन्तःकरण) का रूप हो जाता है । इस ज्योति के रहस्य में जो व्यक्ति अपना मन स्थिर करता है, कबीर कहते हैं कि वह प्राणी इस संसार से तर जाता है ।"

इस पद में कबीर ने विस्तार से सोऽहम् की स्थिति का वर्णन किया है । जब मैं वह (ब्रह्म) हूँ, जैसी सोऽहम् की अनुभूति होती है, तो ब्रह्म और जीव की सत्ता एक ही हो जाती है । कबीर ने भी सोऽहम् कह कर ब्रह्म और जीव की सता एक ही मानी है, किन्तु उन्होंने इस स्थिति में कुछ संशोधन किया है । कबीर ने दर्शन के प्रत्येक तत्व को संशोधन के साथ ग्रहण किया है, जिससे वह सामान्य जन के लिए भी व्यावहारिक बन जाय। ब्रह्म और जीव का ऐक्य उन्होंने अद्वैतवाद की अपेक्षा रहस्यवाद से ग्रहण किया है, जो आत्मा में विश्वात्मा की अनुभूति है । इसमें विश्वात्मा का मौन आस्वादन है। प्रेम के आधार पर वह आत्मा और विश्वात्मा में ऐक्य स्थापित करता है । यह ऐक्य ही है, एकीकरण नहीं। एकीकरण की भावना अद्वैतवाद में है, ऐक्य की भावना रहस्यवाद में। अद्वैतवाद में मिलाप की भावना का ज्ञान भी नहीं रहता, रहस्यवाद में यह मिलाप एक उल्लास की तरंग बनकर आत्मा में जाग्रत रहता है। जब एक जल-बिन्दु अनन्त जलराशि में मिलकर अपना व्यक्तित्व खो देता है तब उसे अपने अस्तित्व का ज्ञान भी नहीं रहता। यह भावना अद्वैतवाद ही की है। लेकिन रहस्यवाद में अस्तित्व का पूर्ण विनाश नहीं होने पाता । मिलाप की स्थिति में भी यह भावना वर्तमान रहती है कि मैं मिल रहा हूँ । आत्मा विश्वात्मा से मिलकर भी यह कह सकती है कि मैं अपने लाल की लाली, जहाँ देखती हूँ वहीं पाती हूँ । जब मैं उस लाली को देखने जाती हूँ तो मैं भी लाल हो जाती हूँ । यहाँ मैं और लाला में एकता होते हुए भी दोनों का अस्तित्व-ज्ञान अलग-अलग है । व्यक्तित्व का अभिज्ञान रहते हुए इस मिलाप की आनन्दानुभूति ही रहस्यवाद की अभिव्यक्ति है। यदि आत्मा और परमात्मा की स्थिति एक ही हो जाय तो मिलने की आनन्दानुभूति का केन्द्र किस जगह स्थित होगा? आनन्द का अनुभव करने के लिए आत्मा के व्यक्तित्व को ब्रह्म से मिलते हुए भी अलग मानना होगा। रहस्यवाद की यही विशेषता है। इस रहस्यवाद में सोऽहम् की अनुभूति प्राप्त करने पर भी आत्मा आनन्दानुभूति से वंचित नहीं होती ।

ऐसा मनोभाव प्रेम की चरम परिणति में ही सम्भव है। यह प्रेम निर्गुण और सगुण दोनों प्रकार की भक्ति में प्रतिष्ठित हो सकता है। इस प्रेम की सहानुभूति के लिए व्यक्तित्व का होना परमावश्यक है। सगुणोपासना में तो व्यक्तित्व सहज ही प्राप्त हो सकता है। राम और कृष्ण का रूप और लीलागान किसी भी भक्त को रहस्यवाद के आनन्द द्वार तक पहुँचा सकता है। सन्त तुलसीदास जी का यह कथन है कि—

प्रभु गुन सुनि मन हरिपिहै,
नीर नयनन ढरिहैं ।
तुलसिदास भयो राम को,
विश्वास प्रेम सखि आनन्द उमगि उर भरि है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अथवा मीराबाई का यह पद–

जिनके पिया परदेश बसत हैं,
लिखि-लिखि भेजें पाती ।
मेरे पिया मो माँहिं बसत हैं,
गूँज करूँ दिन-राती ॥

रहस्यवाद के आनन्द की सृष्टि करते हैं, किन्तु निर्गुण सम्प्रदाय में जहाँ ब्रह्म निराकार है और उसका व्यक्तित्व या लीला—गान सम्भव नहीं है, वह प्रेम का आश्रय क्या होगा ? अन्य से प्रेम नहीं किया जा सकता । निर्गुण भावना में प्रेम की साधना प्रतिफलित करने के लिए संत कबीर ने अपने ब्रह्म के लिए प्रतीकों का आश्रय ग्रहण किया । उन्होंने अपने ब्रह्म से मानसिक सम्बन्ध जोड़ा और ब्रह्म को अनेक प्रकार से अपने समीप लाने की विधि सोची । उन्होंने ब्रह्म को गुरु, राजा, पिता, माता, स्वामी, मित्र और पति के रूप में मानने की शैली अपनाई ।

ब्रह्म का गुरु रूप देखिए—

गुरु गोविन्द तो एक है, दूजा यहु आकार ।
आपा मेटि जीवत मरै, तो पावै करतार ॥

जननी रूप–

हरि जननी मैं बालिक तोरा ।
काहेन औगुन बकसहु मोरा ॥

स्वामी रूप–

कबरी प्रेम न चाखिया, चखि ना लीया साव ।
सूने घर का पाहुँणा, ज्यूँ आया त्यूँ जाव ॥

पति रूप–

हरि भोरा पीव भाई हरि मोरा पीव ।
हरि बिन रहि न सकै मेरा जीव ॥

इन प्रतीकों में पति या प्रियतम का रूप प्रधान है । इसी प्रतीक के माध्यम से कबीर ने रहस्यवाद का चरमोत्कर्ष प्राप्त किया है जिससे उनके सोऽहम् का अनुभव सम्भव हो सका है ।

विन्दुयोग

सोऽहम् साधना की तरह ही साधना ग्रन्थों में विन्दुयोग का उल्लेख विस्तारपूर्वक है । ध्यान के लिए किसी दाब विशेष पर मन को केन्द्रित किया जाता है । देवताओं की प्रतिमायें उसी प्रयोजन के लिए गढ़ी गई हैं । जब ध्यान साकार भूमिका की प्रथम कक्षा से ऊंचा उठकर प्रकाश तत्व पर केन्द्रित किया जाता है तो उसे विन्दुयोग कहते हैं । विन्दुयोग अर्थात् प्रकाश केन्द्र पर ध्यान धारणा को केन्द्रीभूत करके अन्तर्जगत में दिव्य आलोक का आविर्भाव करना । योगाभ्यास में इसका प्रथम पाठ त्राटक साधना के रूप में कराया जाता है । पीछे इसी का उच्चस्तर विकसित होकर आत्म-ज्योति एवं ब्रह्म-ज्योति दर्शन के रूप में परिणित विकसित हो जाता है तब फिर किसी त्राटक के लिए प्रकाशोत्पादक दीपक आदि भौतिक उपकरणों की भी आवश्यकता नहीं पड़ती ।

विन्दुयोग की साधना सोऽहम् साधना के बाद दूसरा सरल साधना क्रम है । सोऽहम् साधना के उपरान्त ही इस विन्दुयोग का ही क्रम आता है । त्राटक अभ्यास करना इस साधना का प्रथम चरण है इसे पन्द्रह मिनट करते और शेष आधा घण्टा अपनी समग्र सत्ता को दिव्य प्रकाश से ओत-प्रोत स्थिति की अनुभूति में लगाया जाता है ।

शरीर को ध्यान-मुद्रा में शान्त एवं शिथिल करके बैठते हैं । सामने प्रकाश दीप रहता है । पाँच सैकिण्ड खुली आँख से प्रकाश दीप को देखना, इसके बाद आँखें बन्द करके भ्रू मध्य भाग में उसी प्रकाश आलोक को ज्योतिर्मय देखना । जब वह ध्यान आलोक शिथिल पड़ने लगे तो फिर नेत्र खोलकर पाँच सैकिण्ड प्रकाश दीप को देखना और फिर आँखें बन्द करके पूर्ववत भ्रूमध्य भाग में प्रज्वलित ज्योति का ध्यान करने लगना । यही है त्राटक साधना का स्वरूप जो पौने नौ बजे से नौ बजे तक किया जाता है । इतने समय यों प्रायः ऐसी स्थिति बन जाती है जिसके आधार पर देर तक भ्रूमध्य भाग में प्रदीप्त किये गये प्रकाश की आभा को समस्त शरीर में विस्तृत एवं व्यापक हुआ अनुभव किया जा सके ।

पन्द्रह मिनट त्राटक कर लेने के उपरान्त प्रकाश दीप की आवश्यकता नहीं रहती । अधखुले नेत्र, दोनों हाथों की उँगलियाँ मिली हुई, हथेलियाँ ऊपर की ओर करके उन्हें गोदी में रखना, यही है । ध्यान मुद्रा—भगवान बुद्ध के चित्रों में प्रायः यही स्थिति चित्रित की जाती है । इस स्थिति में अवस्थित होकर भ्रूमध्य भाग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में अवस्थित प्रकाश पुंज की धारणा और अधिक प्रगाढ़ की जाती है। बिजली के बल्ब का मध्यवर्ती तार फ्लामेन्ट जिस प्रकार चमकता है और उसकी रोशनी बल्ब के भीतरी भाग में भरी हुई गैस में प्रतिविम्बित होती है । इससे बल्ब का पूरा गोला चमकने लगता है और उसका प्रकाश बाहर भी फैलता है। ठीक ऐसी ही भावना विन्दुयोग में करनी होती है।

भ्रू मध्य भाग में आज्ञाचक्र अवस्थित है। इसी को दिव्य नेत्र या तृतीय नेत्र कहते हैं । शंकर एवं दुर्गा के चित्रों में इसी स्थान पर तीसरा नेत्र दिखाया जाता है। पुराण कथा के अनुसार इसी नेत्र को खोलकर भगवान शिव ने अग्नि तेजस उत्पन्न किया था और उससे विघ्नकारी, मनोविकार कामदेव को जलाकर भस्म किया था । यह नेत्र हर मनुष्य में मौजूद हैं। शरीर शास्त्र के अनुसार इसे पिट्टरी ग्रन्थि कहते हैं । इसमें नेत्र जैसी सूक्ष्म संरचना मौजूद है । सूक्ष्म शरीर के विश्लेषण के यह केन्द्र विशुद्ध रूप में दिव्य नेत्र है और उससे प्रकटन अप्रकटऽदृश्य-अदृश्यऽभूत-भविष्य सभी कुछ देखा, जाना जा सकता है । ऐक्सरेज द्वारा शरीर के भीतर की टूट-फूट अथवा किसी बन्द वक्से के भीतर रखे आभूषणों का चित्र खींचा जा सकता है । इस दिव्य नेत्र की भी एक्सरेज मन्त्र से तुलना की जा सकती है—यदि वह प्रदीप्त हो उठे तो घर बैठे महाभारत के दृश्य टेलीविजन की भाँति देखने वाले संजय जैसी दिव्य दृष्टि प्राप्त की जा सकती है और वह सब देखा जा सकता है जिसका अस्तित्व तो है, पर चमड़े से बने नेत्र उसे देख सकने में समर्थ नहीं हैं।

इस नेत्र में अदृश्य देखने की ही नहीं ऐसी प्रचण्ड अग्नि उत्पन्न करने की भी शक्ति है जिसके अधार पर अवांछनीयताओं को, अवरोधों को जलाकर भस्म किया जा सके । शंकर जी ने इसी नेत्र को खोला था तो प्रचण्ड शिखायें उद्भूत हो उठी थीं । विघ्नकारी कामदेव उसी में जल-बल कर भस्म हो गया था । विन्दुयोग की साधना को, यदि इस तृतीय नेत्र को ठीक तरह ज्योतिर्मय किया जा सके तो उसमें उत्पन्न होने वाली अग्नि शिखा मनोविकारों को, अवरोधों को जलाकर भस्म कर सकती है। उसकी शक्ति व्याख्या है। यदि दार्शनिक व्याख्या करनी हो तो उसे विवेकशीलता एवं दूरदर्शिता का जागरण भी कह सकते हैं। जिसके आधार पर लोभ, मोह, वासना, तृष्णा, अहंता जैसे मनोविकारों के कारण उत्पन्न हुए अगणित शोक-संतापों और विग्रह उपद्रवों को सहज ही शमन या सहन किया जा सकता है ।

पौराणिक गाथा के अनुसार पुरातन काल में जब यह दुनिया जीर्ण-शीर्ण हो गई थी—उसकी उपयोगिता नष्ट हो गई थी—तब भगवान शिव ने अपना तीसरा नेत्र खोलकर प्रलय दावानल उत्पन्न किया था और ध्वंस के ताण्डव नृत्य में तन्मय होकर भविष्य में अभिनव विश्व के नवनिर्माण की भूमिका सम्पादित की थी। उस प्रलयकारी ताडण्व नृत्य का बाह्य स्वरूप कितना ही रोमांचकारी क्यों न रहा हो उसकी चिनगारी शिवनेत्र से ही प्रस्फुटित हुई थी । बिजली जीवन क्रम में तथा समाजगत समष्टि जीवन में भी ऐसी आवश्यकता पड़ सकती है कि प्रचलित ढर्रे में आमूल-चूल परिवर्तन आवश्यक न हो जाय—जो चल रहा है उसे उलटना अनिवार्य बन जाय । यह महापरिवर्तन भी तृतीय नेत्र से—दूरदर्शी विवेक सम्भव विचार क्रान्ति से ही सम्भव हो सकता है । शिवजी के द्वारा ताण्डव नृत्य के समय तृतीय नेत्र खोले जाने के पीछे महाक्रान्ति की सारभूत रूपरेखा का दिगदर्शन है ।

त्राटक करने के पन्द्रह मिनट पूरे हो जाने के उपरान्त भ्रू मध्य में प्रदीप्त ज्योति का ध्यान करते हुए यह धारणा करनी पड़ती है प्रत्येक जीवाणु में—कण-कण और रोम-रोम में—प्रकाश आलोक की आभा प्रदीप्त होती है । अन्धकार किसी भी कोने में छिपा नहीं रहा उसे पूर्णतया बहिष्कृत कर दिया गया है ।

जिस प्रकार सोऽहम् साधना में प्रत्येक अवयव को प्रथक्-प्रथक् ध्यान भूमिका में सम्मुख लाया जाता था और उसमें प्राणशक्ति भर जाने का भाव किया जाता था ठीक उसी प्रकार इस साधना में हृदय फुफ्फुसा, आँतें, आमाशय, वृक्क, मस्तिष्क आदि अंग-प्रत्यंग में भरी हुई ज्वलन्त ज्योति की अनुभूति की जाती है । प्रत्येक कोशिका एवं तन्तु को आलोकित देखा जाता है । मस्तिष्क के चार परत माने गये हैं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इन चारों को प्रकाश पुंज बना हुआ अनुभव किया जाता है । अपनी सत्ता के प्रत्येक पक्ष को भ्रू मध्य केन्द्र से निकलने वाले प्रकाश प्रवाह से आलोकित अनुभव करना लगभग उसी स्तर का है, जैसा कि प्रभात-कालीन सूर्य निकलने पर अन्धकार का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हर दिशा से पलायन होने लगता है और समस्त संसार आलस्य, अवसाद छोड़कर आलोक, उल्लास, स्फूर्ति एवं सक्रिय उमंगों के साथ कार्यरत हो जाता है । बिन्दु योग की साधना जीवन सत्ता के कण-कण में प्रकाश उद्भव की अनुभूति तो कराती ही है साथ ही उन अभिनव स्तर की हलचलें भी उभरती दृष्टिगोचर होती हैं ।

अध्यात्म की भाषा में प्रकाश शब्द का उपयोग मात्र चमक के अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता वरन् उसका अभिप्राय ज्ञान और क्रिया में सम्मिश्रित उल्लास भरी भावतरंगों में होता है । पंचभौतिक जगत में गर्मी और रोशनी के सम्मिश्रण को प्रकाश कह सकते हैं । किन्तु अध्यात्म क्षेत्र में गर्मी का अर्थ सक्रियता और प्रकाश का अर्थ दूरदर्शी उच्चस्तरीय ज्ञान ही किया जाता है। प्रकश की प्राप्ति की चर्चा जहाँ कहीं भी होगी वहाँ रोशनी चमकने जैसे दृश्य खुली या बन्द आँखों से दीखना भर नहीं हो सकता वहाँ इसका अभिप्राय गहरा ही रहता है। आत्मोत्कर्ष की भूमिका स्पष्टत: विवेक युक्त सक्रियता अपनाने पर ही निर्भर है—भौतिक गर्मी या रोशनी से वह महान प्रयोजन कैसे पूरा हो सकता है।

त्राटक साधना में अग्नि या बिजली के सहारे जलने वाले प्रकाशदीप का प्रयोग आरम्भिक आवश्यकता पूरी करने के लिए ही किया जाता है । ध्यान धारणा को प्रकाश का भौतिक स्वरूप भली प्रकार अपनाने का अवसर मिल जाय, बस इतनी भर आवश्यकता वह प्रत्यक्ष दीपक पूरी करता है। उससे आगे की मंजिल पूरी करने के लिए अग्नियुक्त प्रकाश को सद्ज्ञान प्रकाश में परिणत करना पड़ता है। आत्मोत्कर्ष प्रयोजन के साथ स्पष्टत: उसी का सम्बन्ध भी है ।

प्रकाश ध्यान के लिये आमतौर से घृतदीप जलाया जाता है। उसे सीने की सीध में रखा जाता है। दीपक के अभाव में मोमबत्ती जलाई जा सकती है, बिजली की मन्द प्रकाश वाली बत्ती का भी प्रयोग हो सकता है। यदि बिजली काम में लानी हो तो उस पर नीला बल्ब लगाना चाहिए इससे एक तो आँख पर अनावश्यक चमक नहीं पड़ती है, दूसरे नीला प्रकाश शान्तिदायक भी होता है उसका प्रभाव साधक पर शान्तिदायक प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है ।

प्रभात कालीन सूर्य जब तक लाल-पीला रहे त्राटक प्रयोजन के लिए काम में लाया जा सकता है । डूबते सूर्य का उपयोग नहीं हो सकता। पूर्ण चन्द्रमा भी त्राटक के लिए उपयुक्त माना गया है। वैसे इन चमकदार पदार्थों की सहायता आरम्भ में ही कुछ दिनों लेनी पड़ती है पीछे तो भ्रू मध्य भाग में प्रकाश का आभास साधना पर बैठते ही अनुभव होने लगता है । कुछ समय तो यह ज्योति कई रंगों की तथा हिलती हुई दीखती है। पीछे स्वयमेव स्थिर एवं शुभ्रवर्ण की बन जाती है ।

विन्दुयोग में आधा घण्टे तक यही धारण करनी पड़ती है कि प्रकाश रूप परमात्मा का आलोक अंग-प्रत्यंग के कण-कण में अन्त:करण के प्रत्येक कक्ष परत में प्रकाशवान होता है। दिव्य चेतना की किरणें काय-कलेवर की प्रत्येक लहर पर प्रतिविम्बित हो रही हैं। विवेक की आभा फूटी पड़ रही है—सतोगुण झिलमिला रहा है—सत्साहस प्रखर-प्रचण्ड बनकर सक्रियता की ओर अग्रसर हो रहा है। अज्ञान के आवरण तिरोहत हो रहे हैं, भ्रमाने वाले और डराने वाले दुर्भाव, संकीर्ण विचार अपनी काली चादर समेटकर चलते बने। प्रकाश भरे श्रेय पथ पर चल पड़ने का शौर्य सबल हो उठा अशुभ चिन्तन के दुर्दिन चले गये। सर्वत्र आनन्द और उल्लास ही आलोकित हो रहा है। ईश्वरीय प्रकाश शरीर में सत्प्रवृत्ति और मन की सद्भावना बनकर ज्योतिर्मय हो चला। अन्धेरे में भटकने वाली काली निशा का अन्त हो गया। भगवान की दिव्य ज्योति ने सर्वत्र अपना आधिपत्य जमा लिया।

आधा घण्टे तक इन्हीं भावनाओं की प्रकाश ज्योति के साथ संगति बिठाते हुए अपनी सत्ता के प्रत्येक पक्ष को उज्ज्वल सम्भावनाओं के साथ आलोकित करने वाली विविध कल्पनायें करनी चाहिये । यह चिन्तन आत्मिक प्रखरता को दीप्तिमान बनाने में असाधारण रूप से सहायक सिद्ध होता है ।

यह नहीं सोचा जाना चाहिए कि विन्दु साधना के समय उपरोक्त विचारधारा की सुविस्तृत शृंखला मस्तिष्क में घुमड़ते रहने से एकाग्रता नष्ट हुई । एकाग्रता की लययोग एवं समाधि प्रक्रिया में ही आवश्यकता पड़ती है । शेष सभी साधनाओं में विचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रवाह की एक दिशा बनाये रहना ही पर्याप्त होता है । गंगा हिमालय से निकलकर समुद्र में मिलने के लिए चलती है । यह दिशा निर्धारण उसे लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए पर्याप्त है । प्रवाह में लहरें उत्पन्न हों, टकराव आयें, भँवर पडें, मोड़ बनें इससे कुछ बनता बिगड़ता नहीं। एकाग्रता मुख्य नहीं दिशा प्रवाह का ही महत्त्व है।सरकस में काम करने वाले नटों की सारी सफलता उनकी एकाग्रता पर ही निर्भर रहती है। यदि वे ध्यान बटायें तो तार पर चलना, झूले पर उछलना जैसे करतब दिखा सकना सम्भव ही न हो सके। इन नटों को एकाग्रता की सिद्धि होती है पर उन्हें योगी नहीं कह सकते । मीरा, चैतन्य, सूर, कबीर, रामकृष्ण परम हंस जैसे सन्त सदा भावविह्वल स्थिति में रहते थे और "घायल की गति घायल जाने" जैसे शब्दों में अन्तर की पीड़ा व्यक्त करते थे । उाहें एकाग्रता कहाँ थी। उस पर भी उन्हें अयोगी नहीं कहा जा सकता । विन्दुयोग—प्राण योग आदि प्रत्यावर्तन उपक्रम में आने वाली प्रायः सभी साधनाओं पर यही सिद्धान्त लागू होता है। उनमें विचार विस्तार का-भाव प्रवाह का क्षेत्र अति व्यापक है। अन्तः भूमिका परिशोधन-परिमार्जन और परिष्कार इसी समुद्र मन्थन में सम्भव है इसलिए यहाँ एकाग्रता में कमी पड़ने की बात नही सोचनी चाहिए। साकार उपासना में तो पूजा-पाठ, स्तवन और जप आदि का पूरा उपक्रम ही बहुमुखी चिन्तन के साथ जुड़ा हुआ है। जहाँ क्रिया होगी वहाँ भाव विस्तार भी रहेगा ही। समग्र एकाग्रता तो पूर्ण निष्क्रियता वाली स्थिति में ही सम्भव है । ऐसी स्थिति समाधि स्थिति की पूर्ण भूमिका में ही उत्पन्न होती है ।

विन्दुयोग में तथा अन्य प्रत्यावर्तन साधना उपक्रमों में यथासमय ऐसी स्थिति स्वयमेव आती है जिसमें योग-निद्रा जैसी अनुभूति होती है। सारे क्रिया-कलाप ठप्प हो जाते हैं। जप में माला फेरना और मन्त्रोच्चार बन्द हो जाता है। जब स्थिति सुधरती है तो ऐसा प्रतीत होता है, झपकी लग गई थी, सो गये थे। पर वस्तुतः ऐसा होता ही नहीं, यह साधनायें ऊर्जा और ऊष्मा युक्त हैं । उसमें आवेश सम्भव नहीं, निद्रा की कोई सम्भावना नहीं । अस्तु, उस स्थिति को विशुद्ध रूप में योगनिद्रा—समाधि-स्तर की भूमिका ही समझा जाना चाहिए और ऐसी सहज एकाग्रता जब भी प्राप्त होती है, तब उसे सफलता का उत्साहवर्धक चिन्ह मानते हुए स्थिति को यथावत् बनाये रहना चाहिए । साधना उपक्रम भले ही रुका रहे पर उसे सहज समाधि के दैवी अनुदान को अस्त-व्यस्त न किया जाय यही उचित है । इस साधना में एकाग्रता का नहीं प्रवाह क्रम की प्रखरता का महत्त्व है । इसी विन्दु-योग की प्रकाश साधना करने वालों को अपने कलेवर के हर कक्ष में ज्योति अवतरण के साथ दिव्य भावनाओं के समावेश का चिन्तन करते हुए प्रसन्नता ही अनुभव करनी चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँच स्थापनाएँ

युगदृष्टा के स्तर की अवतारी सत्ता के रूप में परमपूज्य गुरुदेव ने अपने अस्सी वर्ष के जीवन काल में जितना भी कुछ किया, उसकी मिसाल कहीं देखने को नहीं मिलती। करोड़ों व्यक्तियों के मनों का निर्माण उनके सोचने के तरीके में बदलाव एवं युगनिर्माण की पृष्ठभूमि बनाकर रख देने का कार्य इन्हीं के स्तर की सत्ता कर सकती थी जो लाखों वर्षों में कभी-कभी धरती पर आती है। उनके द्वारा की गयी स्थापनाओं का जब प्रसंग आता है तब ईंट-गारे-चूने-सीमेंट से बने भवनों से पहले उनकी स्नेह-संवेदना से सिक्त हुए, ममत्व में स्नानकर उनके अपने हो गये लाखों व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं, जिनने उनके एक इशारे पर अपना सब कुछ उनको अर्पित कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में कभी ऐसा ही वातावरण भारत के कोने-कोने में दिखाई देता था, जब हर घर से सत्याग्रही निकलकर आ रहे थे। भावनाओं का आवेग चिरस्थायी नहीं रहता। वे ही लोग जो कभी राष्ट्रनिर्माण के लिए अपना सब कुछ छोड़ पढ़ना-लिखना छोड़ देश को आजाद बनाने के लिए कूद पड़े थे, कभी गड़बड़ाने न पाएँ, उसी के लिए बापू ने आजादी के बाद कांग्रेस भंग कर देने व सभी को एक आदर्श स्वयं सेवक की तरह दरिद्र नारायण का उत्थान कर राष्ट्र निर्माण में लग जाने की सलाह दी थी।

सभी इस तथ्य को जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ, राष्ट्र का कीर्ति स्तम्भ रूपी वह महापुरुष भी एक वर्ष के अंदर ही शहादत को प्राप्त हो चला गया। गिने-चुने उनके आदर्शों पर चलने वाले रह गये, अवसरवादियों को राजनेतृत्व भाने लगा एवं राष्ट्र आजाद होकर भी उनके हाथ में आ गया जो ब्रिटिश तो नहीं थे किन्तु, उसी रंग में रंगे सत्ता के उन्माद में काम करने वाले शासक थे- सृजेता नहीं। जिंदा रहा तो मात्र बापू का दर्शन बुनियादी आधार पर टिका-मानव को बनाने का तंत्र-आश्रम तंत्र जो सेवाग्राम-साबरमती आश्रम के रूप में कार्य करता रहा और वह भी शीर्ष-पुरुष के न रहने, बिनोबा जी के चले जाने के बाद अस्तित्त्व व महत्व की दृष्टि से गौण हो गया। परमपूज्य गुरुदेव ने अपनी दिव्य-दृष्टि से यह सब पूर्व में ही देख लिया था कि कोई भी भव्य निर्माण आश्रम या तंत्र बनाने से पूर्व राष्ट्र को सांस्कृतिक भौतिक, आध्यात्मिक आजादी दिलाने वाले अगणित व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे। १९११ में आज से ८४ वर्ष पूर्व वि. संवत् २०६८ में जन्में राष्ट्र की आजादी में उन्मत्त बने श्रीराम मत्त कहलाने वाले, आचार्य श्री ने पहले स्वयं को तपाया, वैचारिक क्रांति के निर्माण का आधारभूत तंत्र स्वयं व परमवंदनीया माता जी के रूप में खड़ा किया, 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका-अपनी लेखनी से लिखी ममत्व भरी चिट्ठियों व छोटी-छोटी एक आने की किताबों से जन-जन के मन को छुआ, तब जाकर अपने एक लक्ष के २४ गायत्री महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर उनने गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्थापना की बात १९५२-५३ में सोची। सबसे पहली मंत्र दीक्षा वहीं पर १९५३ में दी व यह मानते हुए कि बिना आध्यात्मिक आधार बनाये, मनोभूमि में, भावनाओं के स्तर पर बदलाव लाये कोई क्रांति सफल नहीं हो सकती, धीमी खुराक देते हुए हर व्यक्ति को गायत्री व यज्ञ के तत्व दर्शन से जोड़ते हुए चले गये। गायत्री परिवार रूपी विराट वट वृक्ष का मूल आधार वह स्थापना है जो जन-जन के मनों में पहले हुई- उनकी भाव संवेदनाओं के उदात्तीकरण के रूप में संपन्न हुई व उनके अंदर अपनी गुरु सत्ता को देखकर त्याग करने की यज्ञीय जीवन अपनाने की प्रेरणा बलवती होने लगी। उनने सर्वमेध के रूप में अपना सर्वस्व बलिदान एवं नरमेध के रूप में अपने आप को समाज के हित न्यौछावर करने की भावना से दो यज्ञ किये। अपनी जमींदारी के बाण्ड बेचकर एवं परमवंदनीया माताजी के कीमती सोने के जेवर (ढाई सौ तोले) बेचकर जो स्वेच्छा से संपन्न हुआ. एक स्थापना भवन के रूप में जो हुई- वह थी **गायत्री तपोभूमि, मथुरा** जो वृन्दावन रोड पर ऋषि दुर्वासा की जन्मस्थली पर बनी आज से ४२ वर्ष पूर्व १९५३ में। प्रारंभिक स्थापना यों अखण्ड ज्योति संस्थान को माना जा सकता है जहाँ अखण्ड दीपक आँवल खेड़ा से अपनी जन्मभूमि से जो वहाँ से मात्र ४० मील दूर थी, स्थापित किया गया था एवं प्रारंभिक तप-तितिक्षा वहीं पर १९४१ से, तपोभूमि की स्थापना से भी 12 वर्ष पूर्व आरंभ हो गयी थी। इस प्रकार जन-जन के मनों का निर्माण उनके अंतःस्थल में प्रवेश कर उनके अंदर देवत्व के जागरण की ललक पैदा करने वाली पृष्ठभूमि पर स्थापनाओं का क्रम बना। किराये की ऐसी हवेली जिसे भुतहा

हवेली कहा जाता था, में अखण्ड दीपक की स्थापना, उसके समक्ष तप, **अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा** के रूप में विकसित हुआ एवं एक और दूसरा निर्माण मथुरा में ही गायत्री तपोभूमि के रूप में हुआ जोकि ३ मील दूर वृन्दावन रोड पर १९५३ बनाई गई। १९५३ में एवं क्रमशः सुसंगठित गायत्री परिवार के बनने की प्रक्रिया चल पड़ी।

इस प्रारंभिक भूमिका को समझने के बाद ही परमपूज्य गुरुदेव की पाँच मूल स्थापनाओं एवं बाद में देश के कोने-कोने में बनी भव्य इमारतों के रूप में शक्तिपीठों- प्रज्ञा संस्थानों भारत व विश्वभर में घर-घर में स्थापित स्वाध्याय मण्डलों व गायत्री परिवार की शाखाओं, प्रज्ञापीठों-चरणपीठों का महत्व समझा जा सकता है। नहीं तो जैसे अन्यान्य आश्रम-संस्थान बनते हैं ऐसे इनका भी वर्णन किया जा सकता था व यह कहा जा सकता था कि यह वैभवपूर्ण स्थापनाएँ पूज्यवर ने कीं। उनमें यदि प्राण फूँके गये हों, प्राणवान व्यक्ति वहाँ रहते हों व उस शक्ति के महा-अवसान के बाद भी वे सतत उसी दिशा में चल रहे हों तो माना जाना चाहिए कि प्रारंभिक पुरुषार्थ जो किया गया, वह औचित्य पूर्ण था। ***परम पूज्य गुरुदेव की महत्वपूर्ण पाँच स्थापनाएँ, इस प्रकार हैं-***

(१) युगतीर्थ आँवलखेड़ा (२) अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा (३) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (४) शांतिकुंज, गायत्री तीर्थ, सप्तसरोवर, हरिद्वार तथा (५) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, सप्तसरोवर, हरिद्वार।

युगतीर्थ आँवलखेड़ा का नाम सबसे पहले इसलिए लिखा कि यहीं पर वह युगपुरुष जन्मा संवत् १९६८ की आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन ब्राह्म मुहूर्त में, जो अँग्रेजी तारीख से २० सितम्बर १९११ के दिन आती थी। एक श्री मंत ब्राह्मण परिवार में, जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा परिवार संस्कारों से अनुप्राणित-पिता भागवत के प्रकाण्ड पंडित बहुत बड़ी जागीर के मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्व रूपी शिलेखों की स्थापना हुई है- वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो काल प्रवाह के क्रम में गिर सी गयी थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गयी हैं- जैसी उनके समय में थी। जन्मभूमि का कण-कण उस दैवीसत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुआँ जिसे पूरे गाँव का एक मात्र मीठे जल वाला कुआँ माना गया- वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़ एवं वह बैठक जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है जहाँ दीपक के प्रकाश में से सूक्ष्म शरीर धारी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशा धारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। यह सब देखकर मस्तिष्क पटल पर वह दृश्य उभर आता था, जिसे गुरुसत्ता ने कभी देखा था व जो गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इंटर कालेज है जो उनके द्वारा दान दी गयी जमीन में प्रदत्त धन राशि द्वारा विनिर्मित्त है। १९६३ से चल रहे इस इंटर कालेज से कई मेधावी छात्र निकल कर आत्म निर्भर बने हैं व उच्च पदों पर पहुँचे हैं।

१९७९-८० में गायत्री शक्तिपीठ-एवं कन्या इंटर कालेज की स्थापना का ताना-बाना बुना जाने लगा एवं एक विशाल शक्तिपीठ तथा आसपास के दो सौ ग्रामों की बालिकाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था करने वाले, उन्हें सुशिक्षित संस्कारवान आत्मावलम्बी बनाने वाले कन्या महाविद्यालय का अब रूप ले चुका है। प्रथम पूर्णाहुति हेतु इसी भूमि को जो शक्तिपीठ-जन्मभूमि-ग्रामीण क्षेत्र के चारों ओर है, इसीलिए चुना गया कि यहाँ से उद्भूत प्राण ऊर्जा से यहाँ आने वाला हर संकल्पित साधक अनुप्राणित होकर जाए व राष्ट्र के नव निर्माण की सांस्कृतिक-भावनात्मक क्रांति की पृष्ठभूमि रख सके। यहाँ पूज्यवर १९३६-३७ तक ही रहे, कुछ दिन आगरा रहकर १९४०-४१ में मथुरा चले गये जहाँ दो-तीन मकान बदलने के बाद वर्तमान मकान किराये पर लिया जिसे आज अखण्ड-ज्योति संस्थान कहते हैं।

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीया मण्डी, मथुरा में स्थित हैं। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ यहीं रहने लगे एवं यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन-जन तक अपने क्रांतिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरंभ कर दी गयी थी, की 'गायत्री चर्चा' स्तंभ व अन्यान्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

लेखों की पंक्तियों के माध्यम से संपन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतस्तल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यहीं पर अगणित दुखी, तनाव ग्रसित व्यक्तियों ने आकर उनके स्पर्श से नये प्राण पाये तथा उनके व परम वंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गये। हाथ से बने कागज पर छोटी टेण्ड्रिल मशीनों द्वारा यहीं पर अखण्ड ज्योति पत्रिका छापी जाती थी व छोटी-छोटी किताबों द्वारा लागत मूल्य पर उसे निकालने योग्य खर्च निकलता था। बगल की एक छोटी सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, आज पूजा घर विनिर्मित है। पूरी बिल्डिंग को खरीद कर उनके सुपुत्र ने एक नया आकार व मजबूत आधार दे दिया है किन्तु यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गयी है जैसी पूज्यवर के समय में 1942-43 में रही होगी। तब से लेकर आगामी ३० वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का इसी घीयामण्डी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी, १९५८ सहस्र कुण्डीयज्ञ की आधार शिला यहीं रखी गयी, यहीं सारी योजना बनी एवं विधिवत-गायत्री परिवार बनता चला गया। रोज आने वाले पत्रों को स्वयं परम वंदनीया माताजी पढ़ती जातीं एवं पूज्यवर इतनी ही देर में जवाब लिखते जाते, यही सूत्र संबंधों के सुदृढ़ बनने का आधार बना। हर परिजन को तीन दिन में जवाब मिल जाता, शंका-समाधान होता चला जाता एवं देखते-देखते एक विराट गायत्री परिवार बनता चला गया। गायत्री महाविज्ञान के तीनों खण्ड, युग निर्माण परक साहित्य, आर्ष-ग्रन्थों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं संपन्न हुआ। जन सम्मेलनों छोटे-बड़े यज्ञों एवं १०८ कुण्डी पाँच विराट यज्ञों में पूज्यवर यहीं से गये एवं विदाई सम्मेलन की रूपरेखा बनाकर स्थायी रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर चले गये। इस संस्थान के कण-कण में जहाँ आज १० लाख से अधिक संख्या में हिन्दी सहित सभी भाषाओं में अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन विस्तार डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र स्थापित है, परमपूज्य गुरुदेव की चेतना संव्याप्त अनुभव की जा सकती है! भले ही बहिरंग का कलेवर बदल गया हो, अंदर प्रवेश करते ही परमपूज्य गुरुदेव व परम वंदनीया माताजी की सतत विद्यमान प्राणचेतना के स्पन्दन वहाँ विद्यमान हैं, यह प्रत्यक्षत: देखा जा सकता है।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा को परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गयी स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया, एक छोटी किन्तु भव्य यज्ञशाला में अखण्ड अग्नि स्थापित की गयी तथा एक गायत्री महाशक्ति का मन्दिर विनिर्मित किया गया। चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया था, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है। पू० गुरुदेव की साधना स्थली व प्रात: काल की लेखनी की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी तो उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्म-भूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहीं पर १०८ कुण्डी गायत्री महायज्ञ में १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्रकुण्डी यज्ञायोजन संपन्न हुए। श्रेष्ठ नररत्नों का चयन कर गायत्री परिवार को विनिर्मित करने का कार्य यहीं व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा संपन्न हुआ। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्य श्री ने युग निर्माण योजना के शत सूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युगनिर्माण विद्यालय के एक स्वावलम्बन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरंभ होने की घोषणा की। यह विधिवत् १९६४ से आरम्भ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है। जिस कक्ष में परमपूज्य गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अभी भी यहाँ देखा जा सकता है। भव्य निर्माण परमपूज्य गुरुदेव की १९७१ की विदाई के बाद यहाँ हो गया है किन्तु, कण-कण में उनकी प्राणचेतना का दर्शन किया जा सकता है। विराट प्रज्ञानगर, युग निर्माण विद्यालय, साहित्य की छपाई हेतु बड़ी-बड़ी ऑफसेट मशीनें तथा युगनिर्माण साहित्य जो पूज्यवर ने जीवन भर लिखा, उसका वितरण-विस्तार तंत्र यहाँ पर देखा जा सकता है।

शांतिकुंज, हरिद्वार- ऋषि परम्परा के बीजारोपण केन्द्र के रूप में १९७१ में स्थापित किया गया था, जब परमपूज्य गुरुदेव मथुरा स्थायी रूप से छोड़कर परमवंदनीया माताजी को अखण्ड दीपक की रखवाली हेतु यहाँ छोड़कर हिमालय में चले गये। गुरुसत्ता के निर्देश पर वे पुन: एक वर्ष बाद लौटे व तब शांतिकुंज को उनने एक बड़ा विराट रूप देने,

सभी ऋषिगणों की मूलभूत स्थापनाओं को यहाँ साकार बनाने का निश्चय किया। इससे पूर्व परमवंदनीया माताजी ने 24 कुमारी कन्याओं के साथ अखण्ड दीपक के समक्ष २४० करोड़ गायत्री मंत्र का अखण्ड अनुष्ठान आरंभ कर दिया था। पूज्यवर ने प्राण प्रत्यावर्त्तन सत्र जीवन साधना सत्र, वानप्रस्थ सत्र आदि के माध्यम से विभिन्न क्षेत्र में सक्रिय कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता यहीं गढ़े। यह सत्र शृंखला कल्प साधना, संजीवनी साधना सत्रों के रूप में तब से ही ९ दिवसीय सत्रों व एक माह के युग शिल्पी प्रशिक्षण सत्रों के रूप में चल रही है, अभी भी अनवरत उसमें आने वालों का तांता लगा रहता है। पहले से ही सब अपनी बुकिंग इसमें करा लेते हैं।

शांतिकुंज को गायत्री तीर्थ का रूप देकर सप्त ऋषियों की मूर्त्तियों की स्थापना १९७८-७९ में की गयी, एक देवात्मा हिमालय विनिर्मित किया गया एवं यहाँ सभी संस्कारों को संपन्न करते रहने का क्रम बन गया जो सतत चल रहा है। नित्य यहाँ दीक्षा, पुंसवन, नामकरण, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह, श्राद्ध-तर्पण आदि संस्कार संपन्न होते हैं। इस बीच परम वंदनीया माताजी ने जागरण सत्र शृंखलाएँ संपन्न करना आरम्भ रखा। देव कन्याओं को प्रशिक्षित कर पूरे भारत में जीप टोलियों में भेजा गया। इनके माध्यम से तीन वर्ष तक भारत के कोने-कोने में तुमुलनाद होता रहा।

शांतिकुंज का गायत्री नगर जो आज एक विराट स्थापना के रूप में, एक अकेडमी के रूप में नजर आता है व जिसमें एक बार में एक साथ दस हजार व्यक्ति एक साथ ठहर सकते हैं १९८१-८२ में बनना आरम्भ हुआ। विलक्षण, दुर्लभ जड़ी बूटियों के पौधे यहाँ लगाये गये तथा प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा रूपी तीर्थ स्थली का पूज्यवर ने अपने सामने निर्माण कराया। यहीं उनके निर्देशानुसार उनके शरीर छोड़ने पर दोनों सत्ताओं को अग्नि समर्पित की जानी थी। स्वावलम्बन विद्यालय से लेकर एक विशाल चौके का निर्माण एवं गायत्री विद्यापीठ से लेकर भारत के सभी सरकारी विभागों के प्रशिक्षण के तंत्र की स्थापना यहाँ पर की गयी है एवं यह एक जीता जागता तीर्थ अब बन गया है, जहाँ पर उज्ज्वल भविष्य की पूर्व झलक देखी जा सकती है। कम्प्यूटरों से सज्जित विशाल कार्यालय से लेकर पत्राचार विद्यालय जहाँ नित्य हजारों पत्रों के द्वारा पूरे तंत्र का मार्गदर्शन किया जाता है, यहाँ की विशेषता है।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान परम-पूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँचवी स्थापना है, जहाँ पर विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का अभिनव शोध कार्य चल रहा है। इसे १९७९ की गायत्री जयंती पर आरम्भ किया गया था। वर्तमान शांतिकुंज-गायत्री तीर्थ से आधा किलोमीटर दूरी पर गंगातट पर स्थित यह संस्थान अपनी आकर्षक बनावट के कारण सहज ही सबके मनों को मोहकर आमंत्रित करता रहता है। इसमें तीन मंजिलों में प्रथम तल पर एक विज्ञान के उपकरणों से सुसज्जित यज्ञशाला विनिर्मित है तथा चौबीस कक्षों में गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्त्तियाँ बीजमंत्रों व उनकी फल-श्रुतियों सहित स्थापित हैं। द्वितीय तल पर एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ ऐसे उपकरण स्थापित हैं जो यह जाँच पड़ताल करते हैं कि साधना से पूर्व व पश्चात्, यज्ञादि मंत्रोच्चारण के पूर्व व पश्चात् क्या-क्या परिवर्त्तन शरीर-मन की गतिविधियों व रक्त आदि संघटकों में देखने में आये। इनके आधार पर साधकों को साधना संबंधी परामर्श दिया जाता है। यहाँ पर वनौषधियों का विश्लेषण भी किया जाता है तथा यज्ञ ऊर्जा-मंत्र शक्ति का क्या प्रभाव साधक की मस्तिष्कीय तरंगों-जैव विद्युत आदि पर पड़ा यह देखा जाता है। विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी यहाँ किये जाते हैं। तृतीय तल पर एक विशाल ग्रंथागार स्थापित हैं, जहाँ विश्वभर के शोध प्रबंध वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर एकत्रित किये गये हैं। यहाँ प्रायः ४५००० से अधिक ग्रंथ हैं, जिनमें कई पुरातन पाण्डुलिपियाँ हैं। यह अपने आप में एक अनूठा संकलन है जो और कहीं एक साथ देखने में नहीं मिलता।

परमपूज्य गुरुदेव की उपरोक्त पाँच स्थापनाएँ किसी को भी यह परिचय दे सकती हैं कि किस विलक्षण दृष्टास्तर की वह महासत्ता थी जो हम सबके बीच अपना लीला संदोह रचकर चली गयी। प्रत्यक्ष तो यह केन्द्रीय पाँच स्थापनाएँ नजर आती हैं किन्तु ४८०० से अधिक अपने भवनों वाले प्रज्ञा संस्थान २४००० से अधिक प्रज्ञा मण्डल व स्वाध्याय मण्डल तथा अगणित गायत्री परिवार की शाखाएँ यदि इनमें मिलाई जायें तो इनका मूल्य राशि में आँका नहीं जा सकता। यही वह सब है जो उस महापुरुष को एक अवतारी स्तर की सत्ता के रूप में प्रतिष्ठापित करता है व जिसके कर्तृत्व पर श्रद्धावनत होने का मन करता है।

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

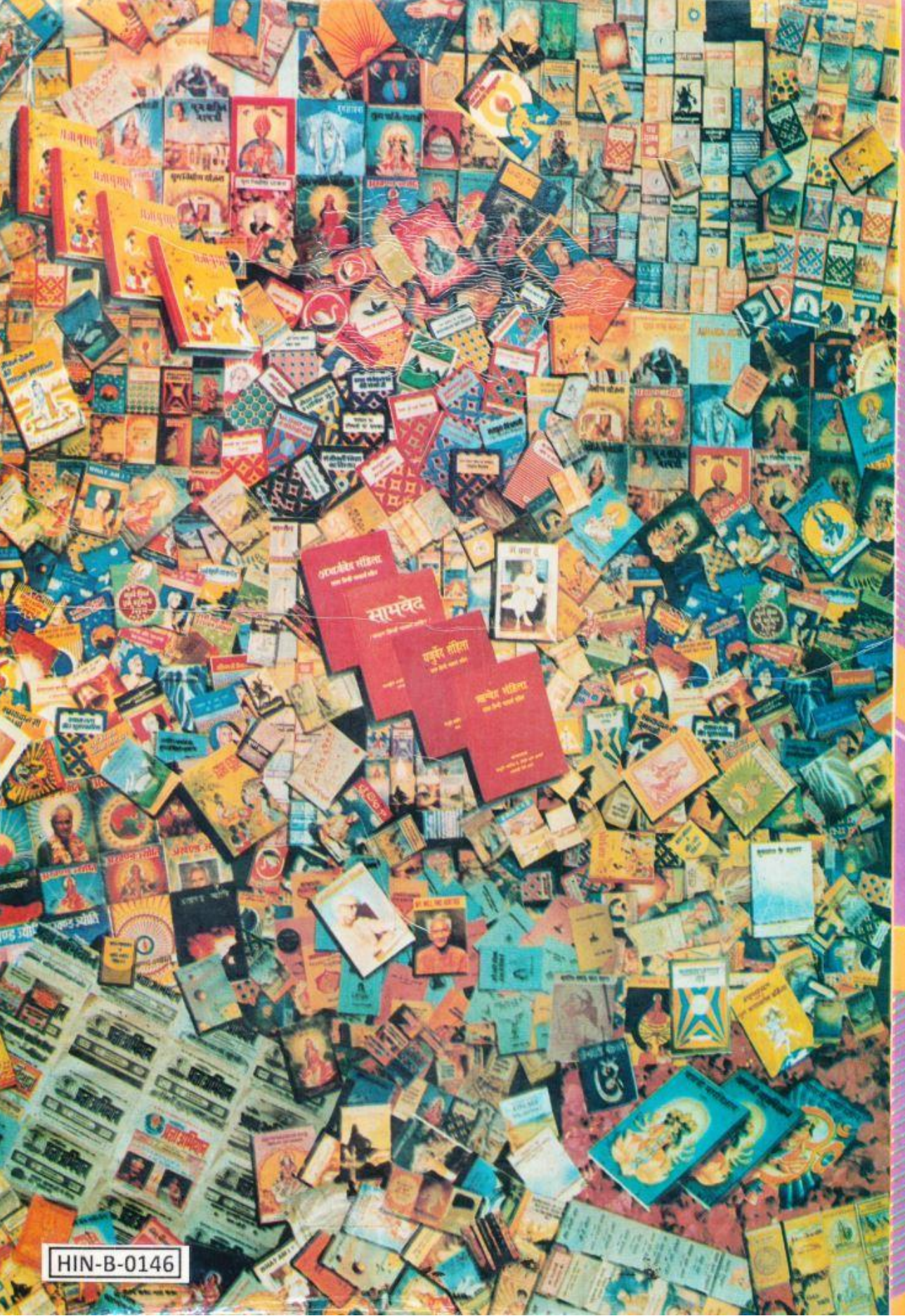
परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२
(सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६.ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे--

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण का उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवन: एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों का दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

Complete Work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org



HIN-B-0146